अलेक्सान्द्र फ़देयेव

तरुण गार्ड

प्रथम खण्ड

अलेक्सान्द्र फ़देयेव लिखित

तरुण गार्ड

यह उपन्यास परिकल्पना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाया जा रहा है। अगर आप पीडीएफ की बजाय प्रिण्ट कॉपी से पढ़ना चाहते हैं तो जनचेतना से सम्पर्क कर सकते हैं या फिर अमेजन से खरीद सकते हैं। जनचेतना को सहयोग करने के लिए नीचे दिये गये नम्बरों पर सम्पर्क करें।

अमेजन लिंक : https://www.amazon.in/dp/8187425059

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है।

तरुण गार्ड

(उपन्यास)

प्रथम खण्ड

तरुण गार्ड

(उपन्यास)

प्रथम खण्ड

अलेक्सान्द्र फ़ेदेयेव

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

बढ़ो, बढ़ो, संघर्ष-मार्ग पर, नयी ऊषा
के स्वागत को
संगीनों, गोलों से अपने, हम प्रशस्त
करते पथ को...
ताकि हमारी दुनिया का, बस श्रम
ही स्वामी बन जाये,
एक बड़े परिवार-सूत्र में, सारी दुनिया
बँध जाये,
युद्ध-क्षेत्र में बढ़ो, बढ़ो!
अरे किसानो, ओ श्रमिको!

भाग 1

अध्याय 1

"ओह, ज़रा देखो तो, वाल्या, कितना सुन्दर है! कितना मोहक! जैसे मूर्त्ति गढ़ी हो। यह न संगमरमर है, न अलबास्तर। इसमें जान है फिर भी देखो कितना सर्द है! कितना बारीक और नाजुक भी! इंसान की उँगलियाँ ऐसी कृति नहीं गढ़ सकतीं। देखो, पानी की सतह पर किस तरह टिकी है – निर्मल, भव्य और तटस्थ। ज़रा इसका प्रतिबिम्ब तो देखो : समझ में नहीं आता कौन अधिक आकर्षक है। और रंग! देखो, देखो, सफ़ेद नहीं। मतलब कि सफ़ेद तो है, लेकिन कितनी आभाएँ झिलमिल-झिलमिल कर रही हैं : पीली-पीली-सी, गुलाबी-गुलाबी-सी, आसमानी-आसमानी-सी, और बीच में जहाँ यह नमदार है, मोती का रंग खिल रहा है। ओह, कितना सुहाना! आँखें चौंधिया जाती हैं। ऐसे रंगों के भला अभी नाम ही कहाँ हैं!.."

यह आवाज़ बेदों की झाड़ियों में से आ रही थी। वहाँ एक लड़की पानी के ऊपर

झुकी हुई थी। काले लहरदार बालों की चोटियाँ उसके सफ़ेद ब्लाउज़ पर लटक रही थीं। उसकी प्यारी-प्यारी काली आँखें अचानक चमक उठीं। लगता था जैसे जल में प्रतिबिम्बित कुमुदिनी में और उस लड़की में कोई अन्तर न था।

"तुम तो खुशी से बावली हो रही हो। यह भी भूल गयीं कि वक़्त कौन-सा है! तुम भी अजीब हो, ऊल्या!" वाल्या ने टहनियों में से अपना सिर निकालते हुए जवाब दिया। उसके गालों की हड्डियाँ तनिक उभरी और नाक छोटी-सी थी, पर चेहरे पर जवानी की ताजगी थी और सहृदयता की छाप। कुल मिलाकर उसका चेहरा आकर्षक था। कुमुदिनी की ओर एक नज़र फेंके बिना ही उसकी चिन्तित आँखें तट की ओर देखने लगी। वह उन लड़कियों को ढूँढ रही थी जिनसे उनका साथ छूट गया था।

"हो-हो-हो!" वह चिल्लायी।

"य-हाँ! य-हाँ!" कुछ देर से उत्तर मिला।

"यहाँ आओ, यहाँ! ऊल्या एक को कुमुदिनी मिली है, "वाल्या अपनी सहेली की ओर स्नेहभरी नज़रों से देखती, चिढ़ाते हुए-से स्वर में चिल्लायी।

तभी दूर से बादल की गड़गड़ाहट की प्रतिध्वनि की तरह, वोरोशीलोवग्राद के पास, उत्तर-पश्चिम से तोपों के धमाके सुनायी पड़े।

"फिर शुरू हुआ!"

"फिर", धीमी आवाज़ में ऊल्या ने दोहराया। एक क्षण पहले उसकी आँखों में जो चमक आ गयी थी, वह मद्धिम पड़ गयी।

"क्या इस बार वे अन्दर घुस आयेंगे?" वाल्या ने कहा। "हे भगवान! याद है पिछले साल हम कितने चिन्तित थे? फिर भी अन्त में सब कुछ ठीक हो गया था। किन्तु पिछले साल वे इतने क़रीब नहीं पहुँच पाये थे। सुनो, यह बिल्कुल बादल की गरज जैसी आवाज़ है!"

उन्होंने मौन हो सुना।

ऊल्या ने आवेगपूर्ण आवाज़ में कहा :

"जब मैं इसे सुनती हूँ, तो मेरी आँखें नीले आकाश और पत्तों से लदे पेड़ों पर अटक जाती हैं। जब मैं धूप में गरमायी घास का स्पर्श अनुभव करती हूँ और उसकी मीठी गन्ध मुझे सुरसुराने लगती है, तो मेरे दिल को चोट पहुँचती है। लगता है जैसे ये सब हमेशा, हमेशा के लिए छूट चुके हों। लगता है कि युद्ध ने आदमी के दिल को पत्थर बना दिया है, कि उसे पिघला देने वाली हर चीज़ को उसने अपने पास फटकने न देना सीख लिया है, और अचानक प्यार और करुणा का कैसा वेग फूट पड़ता है! बेशक, तुम्हें मालूम है कि एक तुम्हीं मेरी अपनी हो, जिससे मैं ये बातें कर सकती हूँ।"

पत्तियों की ओट में उनके चेहरे इतने पास-पास थे कि उनकी साँसें घुल-मिल रही थीं। वे एक दूसरे की आँखों में देख रही थीं। वाल्या की आँखें हल्की उजली, एक दूसरे से कुछ अधिक दूर, स्नेह और अनुराग से परिपूर्ण थीं। ऊल्या की आँखें काली और बड़ी-बड़ी थीं। आँखों के कोये दूध-से सफ़ेद थे तथा बरौनियों लम्बी-लम्बी। उसकी आँखों की काली, रहस्यमयी पुतलियों में तीव्र चमक फिर से उतर आयी थी।

दूर तोपों की गड़गड़ाहट से यहाँ के पत्ते भी सरसरा उठते, काँप-से उठते। ऐसे में नदी के पास खड़ी लड़कियों के चेहरों से चिन्ता टपकने लगती।

"वाल्या, पिछली रात स्तेपी में कितना सुहाना समाँ था! था न?" ऊल्या ने कोमल स्वर में पूछा।

"ओह कितना सुहाना! और सूर्यास्त याद है?" वाल्या फुसफुसायी।

"हाँ, हाँ...देखो वैसे हमारी स्तेपी किसी को भी पसन्द नहीं। लोग इसे वीरान, पीली और नीरस कहते हैं। कहते हैं टीलों, अनन्त टीलों के अलावा वहाँ कुछ है ही नहीं। लेकिन वह मुझे बहुत अच्छी लगती है। जब माँ स्वस्थ थीं, तो मुझे अपने साथ तरबूज के खेतों में ले जाया करती थीं। तब मैं बहुत ही छोटी थी। वह काम करती रहतीं और मैं पीठ के बल लेटे-लेटे आसमान को अपनी आँखों से नापती रहती... मन चाहता देखती ही रहूँ, आकाश में जितनी दूर तक देख सकती हूँ, देखूँ... कल हम डूबते सूरज का दृश्य देख रही थीं और फिर जब हमारी नज़रों के सामने से पसीने से तर-बतर घोड़े, तोपें, गाड़ियाँ और घायल गुजरने लगे, तो मेरे दिल को गहरी चोट लगी... सैनिक धूल से सने थे और थकावट से उनके चेहरे उतरे हुए थे। और मैंने अचानक अनुभव किया कि सैनिक फिर मोर्चा लेने के लिए इकट्ठे नहीं हो रहे हैं, बल्कि उनके पाँव उखड़ गये हैं और वे पीछे हट रहे हैं। यही कारण था कि वे हमसे आँखें मिलाने की हिम्मत न कर रहे थे। तुमने यह ग़ौर किया या नहीं?"

वाल्या ने सिर हिलाकर समर्थन किया।

"कल मैंने डूबते सूरज को और स्तेपी को देखा, तो मैं अपने आँसुओं को मुश्किल से ही रोक पायी। हाँ, उसी स्तेपी को, जहाँ हमने साथ-साथ कितने गीत गाये हैं। तुमने मुझे कभी रोते देखा है?... मैं बहुत कम रोती हूँ... याद है तुम्हें?... अँधेरा छा गया था और सैनिक थे कि चले ही आ रहे थे। और उधर क्षण-प्रतिक्षण तोपें गड़गड़ा रही थीं। क्षितिज पर रोशनी बार-बार कौंध रही थी और आकाश लाल हो रहा था। लड़ाई रोवेन्की में ही हो रही होगी। सूर्यास्त की गाढ़ी लालिमा ...मैं संसार की किसी भी चीज़ से नहीं डरती, यह तुम्हें मालूम है। मैं मुसीबतों, संघर्षों या दुःखों से नहीं घबड़ाती। लेकिन काश, मैं इतना जान पाती कि मुझे क्या करना है! हमारे सिरों पर कोई भयानक विपत्ति ज़रूर मँडरा रही है," ऊल्या ने कहा और उसकी आँखों में

गहरी निराशा झलक उठी।

"हमारे दिन कितने आनन्द से कट रहे थे," वाल्या ने डबडबायी आँखों से देखते हुए कहा।

"यदि दुनिया के सब लोग चाहें और समझने लगें तो दुनिया में हर किसी का जीवन कितना सुखी हो जाये!" ऊल्या ने कहा। "लेकिन हमें क्या करना होगा? हम क्या करें?" उसने बच्चों की-सी आवाज़ में कहा। उसकी मनःस्थिति में अचानक परिवर्तन आ गया था। बाकी लड़कियों को अपनी ओर आते देखकर उसकी आँखों में शैतानी की चमक आ गयी।

उसने जल्दी से अपने जूते उतार फेंके और अपने पतले, धूप में तपे हाथ से अपने काले स्कर्ट को समेटकर पानी में उतर गयी।

"देखो, देखो। कुमुदिनी!" छरहरे बदनवाली एक सुघड़ लड़की झाड़ियों को चीरती हुई निकली। उसकी आँखों में नटखट लड़कों की-सी शरारत भरी थी। "सबसे पहले मेरी ही नज़र इस पर पड़ी। यह मेरी है।" वह चिल्लायी और दोनों हाथों से अपने स्कर्ट को समेटकर पानी में कूद पड़ी। क्षणभर के लिए उसके साँवले पाँव चमक उठे। पानी के छींटों से वह खुद तो सराबोर हो ही गयी, ऊल्या भी बची न रही। "ओह! यहाँ गहरा है!" वह हँस पड़ी। उसका एक पैर सेवार के जाल में फँस गया। वह पीछे की ओर मुड़ चली।

अन्य छह लड़कियाँ ज़ोर-ज़ोर से बातें करती हुई तट की ओर दौड़ी चली आयीं। ऊल्या, वाल्या और छरहरे बदनवाली साशा की तरह, जो अभी-अभी पानी में कूदी थी, अन्य लड़कियाँ भी छोटे स्कर्ट और सादे ब्लाउज़ पहने हुए थीं। दोनेत्स्क की जलती हवा और तीखी धूप ने हर लड़की को अलग-अलग ढंग से तपा रखा था। किसी की बाँहों, पाँवों, गर्दन और कन्धों पर सुनहरा बादामी रंग चढ़ा था, तो किसी के अंग ताँबे या लाल अंगारे जैसे दमक रहे थे।

जहाँ भी दो से अधिक लड़कियाँ मिल जायें, सब की सब एकसाथ बतियाये बिना और गला फाड़-फाड़कर चिल्लाये बिना नहीं रह सकतीं। वे दूसरों की बातें नहीं सुन रही थीं, केवल अपनी ही हाँके जा रही थी। लगता था जैसे वे ऐसा महत्वपूर्ण समाचार सुनाने जा रही थीं, जो दूसरों के लिए बिल्कुल नया हो।

"खुदा की क़सम, हवाई छतरी के सहारे कूद पड़ा। कितना सुन्दर, सजीला जवान कि पूछो मत! बाल घुँघराले और आँखें छोटे-छोटे बटनों जैसी!"

"मैं नर्स कभी नहीं बन सकती। मुझे ख़ून से बहुत डर लगता है।"

"निश्चय ही वे हमें पीछे छोड़कर नहीं चले जायेंगे। तुम भला ऐसी बात कैसे कह सकती हो? यह कभी नहीं हो सकता।!"

“ओह कितनी सुन्दर है यह कुमुदिनी!”

“लेकिन माय्या, मेरी नन्ही जिप्सी, मान लो, वे हमें छोड़कर चले जायें तो?”

“साशा को देखो। देखो तो ज़रा!”

“पहली नज़र में ही प्यार हो जाये, इसमें मुझे विश्वास नहीं।”

“अरी ऊल्या, कहाँ जा रही हो?”

“तुम सब डूबकर मर जाओगी, बेवक़ूफ़ लड़कियों!”

वे दोनबास की स्थानीय रुखी बोली में बातें कर रही थी, जो रूस के मध्य इलाक़ों की भाषा, उक्राइनी जनभाषा, दोन के कज़्ज़ाक इलाक़े की बोली और अज़ोव बन्दरगाहों – मरिऊपोल, तगनरोग और रोस्तोव की स्थानीय बोली की खिचड़ी थी। लेकिन दुनिया के किसी हिस्से में, लड़कियाँ चाहे किसी भी भाषा में बातें क्यों न करें, उनके मुँह से निकलती बातें बहुत ही मधुर लगती हैं।

“प्यारी ऊल्या, क्या तुम सचमुच उसे उखाड़ना चाहती हो?” वाल्या ने ज़ोर से पूछा। वाल्या ने देखा कि उसकी सहेली जाँघ तक पानी में घुस चुकी है, तो उसकी विनम्र आँखों में चिन्ता झलकने लगी।

ऊल्या ने सावधानी से एक पैर से तल को टटोलते हुए दूसरा क़दम बढ़ाया। उसने एक हाथ से अपना स्कर्ट और ऊपर उठा लिया। उसके काले जाँघिये की किनारी झलक उठी। उसका सुगढ़ और छरहरा बदन आगे की ओर झुक गया और उसने ख़ाली हाथ से कुमुदिनी को पकड़ लिया। उसके बालों की एक मोटी और काली चोटी कन्धों से नीचे लटक पड़ी। चोटी का खुला और घुँघराला छोर पानी को चूमने लगा। उसने आख़िरी कोशिश की और लम्बे डण्ठल के साथ कुमुदिनी को खींचकर बाहर निकाल लिया।

“शाबाश ऊल्या!” साशा चिल्ला उठी। वह अपनी गोल-गोल, भूरी और लड़कों जैसी आँखों से ऊल्या को घूर रही थी। “तुम्हें सोवियत संघ के वीर की उपाधि मिलनी चाहिए। पूरे सोवियत संघ की नहीं बल्कि ‘पेर्वोमाइका’ (मई दिवस) खान की चंचल लड़कियों के छोटे-से संघ की। लाओ, मुझे दो!” टखनों तक जल में खड़ी होकर साशा ने अपने स्कर्ट को घुटनों के बीच दबा लिया और ऊल्या से कुमुदिनी लेकर उसके काले, घुँघराले बालों में खोंस दी। “ओह, तुम्हारे बालों में यह कितनी ख़ूबसूरत लगती है! मैं तो ईर्ष्या से जली जा रही हूँ..” अचानक वह रुक गयी। उसने अपना सिर उठाया और कुछ सुनने लगी। “ठहरो, क्या तुम कुछ सुन रही हो, लड़कियों? ओह ये मरदूद!”

साशा और ऊल्या तट पर चढ़ आयीं।

सब लड़कियाँ उस भनभनाहट को सुनने लगीं, जो रह-रहकर कभी तेज़ हो जाती

और कभी मन्द। उजले तपते हुए आकाश में वे हवाई जहाज़ को देखने की कोशिश करने लगीं।

"कम-से-कम तीन तो ज़रूर हैं।"

"कहाँ? कहाँ? मुझे कुछ भी नहीं दिखायी पड़ता।"

"मुझे भी कुछ नहीं दिखायी पड़ रहा है, लेकिन आवाज़ से मैं अन्दाज़ लगा सकती हूँ।"

अब इंजनों की घरघराहट से कान के पर्दे फटे जा रहे थे। आवाज़ें अलग-अलग सुनायी दे रहीं थीं। किसी विमान की आवाज़ तीखी और किसी की धीमी पड़ गयी थी। विमान उनके सिर पर कहीं मँडरा रहे थे। वे दिखायी तो नहीं पड़ रहे थे, लेकिन लगता था जैसे क्षण भर के लिए उनके डैनों की काली छाया लड़कियों के चेहरों पर पड़ गयी थी।

"पुल पर बम बरसाने के लिए ये ज़रूर ही कामेंस्क की ओर जा रहे हैं।"

"या शायद मील्लेरोवो की ओर।"

"मील्लेरोवो? क्या बक रही हो? मील्लेरोवो अब शत्रु के क़ब्ज़े में आ चुका है। क्या पिछली रात तुमने रेडियो पर सरकारी विज्ञप्ति नहीं सुनी?"

"तो क्या हुआ! अभी भी, आगे दक्षिण में लड़ाई जारी है।"

"लड़कियों, हमें क्या करना चाहिए?" वे दूर तोपों का गरजना सुनती रहीं। लगता था जैसे वह गर्जन और भी पास सरक आया हो।

प्रसन्नता और स्वास्थ्य से उफनती जवानी, अपने भविष्य के सपनों से लिपटी और प्यार में खोयी जवानी को क्या पता कि युद्ध कितना खौफ़नाक और निर्दयी होता है, कि उससे मानवता की कितनी क्षति होती है। जब उसे झकझोरकर उसके सपने तोड़ दिये जाते हैं, जब आनन्द और मौज की लहरों पर झूलते उसके सुर-ताल अचानक टूट जाते हैं, तो उसे खतरे और भय का आभास होता है।

ऊल्या ग्रोमोवा, वाल्या फ़िलातोवा, साशा बोन्दरेवा तथा अन्य लड़कियों ने इसी वसन्त में हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की थी। वे खनिकों की 'पेर्वोमाइका' नामक बस्ती में रहती थीं।

स्कूल से विदाई किसी भी युवक या युवती के लिए जीवन की बहुत ही महत्वपूर्ण घटना होती है। लेकिन युद्ध के समय में इस घटना का महत्व और भी बढ़ जाता है।

पिछली गरमी में, युद्ध के शोले भड़कने के बाद, उच्च कक्षाओं के छात्र-छात्राओं ने क्रास्नोदोन के इर्द-गिर्द सामूहिक और सरकारी फ़ार्मों में, खानों में या वोरोशीलोवग्राद के लोकोमोटिव कारखाने में काम किया था। लोग अभी भी उन छात्र-छात्राओं को

लड़के और लड़कियाँ ही कहा करते थे। उनमें से कुछ तो ट्रैक्टर-कारख़ाने में काम करने के लिए स्तालिनग्राद तक चले थे जहाँ अब टैंक बनाये जा रहे थे।

शरद में जर्मन दोनबास के इलाक़े में घुस पड़े थे। और उन्होंने तगनरोग और रोस्तोव को अपने क़ब्ज़े में कर लिया था। पूरे उक्राइन में केवल वोरोशीलोवग्राद प्रदेश ही अभी उनके क़ब्ज़े में नहीं आ पाया था। उक्राइनी सरकार के अधिकारी, सेना के साथ-साथ कीयेव से हटकर वोरोशीलोवग्राद चले गये और वोरोशोलोवग्राद व स्तालिनो (पहले का यूज़ोव्का) के प्रादेशिक अधिकारी क्रास्नोदोन चले गये।

शरद के अन्त में, जब तक कि दक्षिणी मोर्चा सुस्थिर न हो गया, दोनबास के अधिकृत क्षेत्रों से लोगों का अनन्त प्रवाह क्रास्नोदोन से होकर गुज़रता रहा। सड़कों की लाल कीचड़ को रौंदते हुए लोगों का रेला ऐसा लगा कि कीचड़ बढ़ती ही गयी, क्योंकि स्तेपी से आनेवाले लोग उसे अपने जूतों में चिपकाये चले आ रहे थे। स्कूली बच्चों को सरातोव प्रदेश में स्थानान्तरित करने की तैयारियाँ कर ली गयी थीं। लेकिन वोरोशीलोवग्राद से काफ़ी दूर पर जर्मनों को आगे बढ़ना रोक दिये जाने के बाद उन बच्चों को वहाँ से हटाना भी स्थगित कर दिया गया। रोस्तोव को फिर से अपने अधिकार में कर लिया गया और जाड़े में, मास्को की ओर बढ़ते जर्मनों को मुँह की खानी पड़ी। अब लाल सेना ने बारम्बार हमला करना शुरू कर दिया और हर कोई यही आशा करने लगा कि अब स्थिति सुधार जायेगी।

युद्ध के पहले हफ़्तों में पिताओं और भाइयों के मोर्चे पर चले जाने से घर सूने-सूने और खाली-खाली-से लगते थे। अब उन्हीं आरामदेह घरों में अजनबी आ-आकर रातें काटने लगे थे और बच्चे उन्हें देखने के आदी हो चुके थे। क्रास्नोदोन में पक्के पत्थरों से बने घर, 'पेर्वोमोइका' बस्ती में किसानों के घर, यहाँ तक कि 'शंघाई' के पड़ोस में मिट्टी से पुते छोटे-छोटे बँगले भी बसेरा लेनेवालों से भरे रहते थे। अब इन बसेरा लेनेवालों का ताँता लगा रहता। यह हजूम हमेशा बदलता रहता। वह हजूम होता स्थानान्तरित सरकारी संस्थाओं में काम करनेवाले स्त्रियों और पुरुषों का, मोर्चे पर जानेवाले सैनिकों और फ़ौजी अफ़सरों का।

छोटे-छोटे बच्चे शीघ्र ही सेना-सेवाओं की भिन्न-भिन्न शाखाओं से तथा ओहदों और हथियारों की क़िस्मों से परिचित हो गये। अपने देश में निर्मित तथा शत्रुओं से छीनकर लायी गयी मोटर-साइकिलों, लारियों और अन्य प्रकार की मोटर-गाड़ियों के नाम जान गये। न केवल तब जब टैंक सड़क के किनारे पॉपलरों की छाया में दैत्यों की तरह सुस्ताते रहते और उनके लौह-कवचों से गरम हवा उठती रहती, बल्कि तब भी जब वोरोशीलोवग्राद के धूलभरे राजपथ पर गरजते रहते या शरद के कीचड़ और जाड़े की बर्फ़ को रौंदते हुए पश्चिम की ओर सरकते रहते, तो ये स्कूली बच्चे उन्हें

देखते ही पहचान जाते कि वे किस क़िस्म के टैंक हैं।

दोनेत्स्क का आसमान चाहे धूप से जगमगाता रहता, या धूल से लाल हो उठता, या तारों से झिलमिल करता, या अन्धड़वाले अन्धकार में लिपटा रहता, विमानों पर नज़र पड़ते ही या उनकी भनभनाहट सुनते ही ये स्कूली बच्चे जान जाते कि वे जर्मनों के यान हैं या सोवियत संघ के।

"वे 'लाग'(या 'मीग,' या 'याक') हैं," बच्चे धीरे-से कह उठते।

"ये रहे 'मेस्सेर'!..."

" 'यू-87' रोस्तोव की ओर जा रहे हैं," वे लापरवाही से कहा करते।

वे वायु-रक्षा दस्तों में शामिल होकर रात की ड्यूटी किया करते, अपने कन्धों पर गैस-मास्क लिये हुए वे खानों के पास या स्कूलों और अस्पतालों की छतों पर खड़े होकर चौकसी किया करते। अब पहले की तरह बम फटने की आवाज़ से, वोरोशीलोवग्राद के ऊपर सर्चलाइटों की चकाचौंध से या क्षितिज पर यहाँ-वहाँ लपटों की चमक से उनके हृदयों की धड़कनें बन्द होती-सी नहीं जान पड़तीं। दिन के उजाले में जब ग़ोताखोर विमान स्तेपी में बल खाती मोटर-गाड़ियों के कारवाँ पर बम बरसाने लगते, तोपें और मशीनगनें राजपथ पर आग उगलने लगतीं और लोग तथा घोड़े तितर-बितर होकर दायें-बायें भागने लगते, तो यह सब देखसुनकर बच्चे पहले की तरह काँपते नहीं थे।

वे सामूहिक फ़ार्मों तक लारियों में बैठकर लम्बा सफ़र करते, स्तेपी में हिचकोले खाती खुली लारियों में बैठ-बैठे गला खोलकर गीत गाते, पुष्ट गेहूँ के असीम खेतों में ग्रीष्मकालीन कटनी का आनन्द लेते और पुआल पर बैठे-बैठे रात की नीरवता में क़हक़हे लगाते या दिल की बातें कहते थे। यह सब वे पसन्द करते थे। उन्हें वे लम्बी, उनींदी रातें अच्छी लगती थीं, जब छत पर लड़के की खुरदरी हथेली में लड़की का गर्म हाथ घण्टों निश्चल पड़ा रहता, उदास पहाड़ियों के ऊपर पौ फटने लगती, छप्परों पर ओसकण चमकने लगते और सामने वाले बगीचे में मुरझाते हुए बबूल के पत्तों से ढुलककर धरती में समा जाते, मुरझाये फूलों की सड़ती जड़ों और दूर के अलावों के धुएँ से बसी हवा झिर-झिर करने लगती और पहला मुर्ग़ा बाँग देकर यह सूचित करता जैसे संसार में सब कुछ ढंग से चल रहा है...

फिर इस वसन्त में उन्होंने स्कूलों, शिक्षकों और स्कूल के क्लबों से विदाई ली थी। और अचानक उनका युद्ध से आमना-सामना हो गया था, मानो युद्ध उनका इन्तज़ार ही कर रहा था।

23 जून को सोवियत फ़ौज ख़ार्कोव की दिशा में पीछे हटने लगी। और 3 जुलाई को मानो वज्रपात हुआ – सूचना मिली की आठ महीने की घमासान लड़ाइयों के बाद

सेवास्तोपोल हमारे हाथ से निकल गया।

स्तारी ओस्कोल, रोस्सोश, कांतेमीरोव्का भी हाथ से गये, वोरोनेज के पास ज़बर्दस्त मुक़ाबला हुआ। 12 जुलाई – लिसिचान्स्क को छोड़ना पड़ा। और अचानक पीछे हटती फ़ौजें क्रास्नोदोन में उमड़ पड़ी।

लिसिचान्स्क एकदम नज़दीक था। इसका मतलब था कल वोरोशीलोवग्राद, परसों क्रास्नोदोन और पेर्वोमाइका बस्ती की बारी आयेगी। मतलब यह कि यहाँ हर जगह फ़ासिस्ट जर्मनों का पसारा होगा। सब कुछ तहस-नहस हो जायेगा... छोटी-छोटी सड़कें, जिनका चप्पा-चप्पा जाना-पहचाना है, घर के सामने के बाग़-बगीचे में खिलते रंग-बिरंगे फूल, दादा-परदादा के हाथ के लगाये सेब के पेड़, ठण्डे कमरे, जिनकी खिड़कियाँ धूप रोकने के लिए बन्द कर दी गयी थीं और जहाँ बाप का कोट अभी भी खूँटी पर उसी तरह लटका है, जिस तरह काम से लौटकर, मोर्चे पर जाने के पहले, वह इसे छोड़ गया था, घर का फ़र्श, जो माँ के हाथों के स्पर्श से चमचमा रहा था, खिड़की के दासे पर चीनी गुलाब के गमले, जिनमें माँ प्यार से पानी दिया करती थीं, मेज़ पर बिछा हुआ शोख रंग का गन्धाता हुआ मेज़पोश है...

विराम के समय शहर में फ़ौजी रसद अधिकारी आराम से बस गये थे मानो ज़िन्दगी भर के लिए बस गये हों। सभी मेजर थे। दाढ़ी घुटे हुए वे प्रसन्न और सतर्क रहते तथा हर तरह की पूरी जानकारी रखते थे। जब वे अपने मेज़बानों के साथ ताश का खेल खेलने बैठते तो खूब हँसी-मज़ाक़ करते तथा पूछने पर खुशी से मोर्चे की खबर सुनाते। वे बाज़ार से नमकीन तरबूज़ खरीद लाते तथा सूप बनाने के लिए अक्सर गृहिणियों को डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थ देते। खान 1(बी) के गोर्की क्लब, पार्क में लेनिन क्लब में हँसमुख लेफ्टिनेण्टों की हमेशा भीड़ लगी रहती। वे नाचने के शौक़ीन होते। कोई सुशील, तो कोई धूर्त होता। लेफ्टिनेण्ट आते और चले जाते। उनके स्थान की पूर्ति नये लेफ्टिनेण्ट कर देते। धूप में तपे पुरुषों के नये-नये चेहरों का ताँता कभी टूटता ही नहीं और लड़कियाँ उन चेहरों को देखते रहने की ऐसी आदी हो गयीं कि वे नये चेहरे भी उन्हें जाने-पहचाने-से लगते।

अचानक वे सभी चेहरे ग़ायब हो गये।

वेर्ख़्नेदुवान्नाया नामक छोटा-सा स्टेशन क्रास्नोदोन के लोगों के लिए अपने घर जैसा था, जहाँ कामकाजी दौरे, किसी रिश्तेदार के यहाँ से या साल भर पढ़ाई खत्म करने के बाद लौटने पर लोग समझते थे कि अब वे अपने घर में हैं। वह भी और लिखाया – मोरोज़ोव्स्काया – स्तालिनग्राद लाइन के अन्य सभी छोटे स्टेशन भी लोगों, गोलों, मशीनों और अनाज के बोरों से ठसाठस भर गये।

बबूल, पॉपलर और मैपल की छाया में खड़े छोटे-छोटे घरों में से स्त्रियों और

बच्चों का रोना-धोना सुनायी पड़ता। कहीं माताएँ अपने उन नन्हे बच्चों के सफ़र की तैयारी करती नज़र आतीं जो किंडरगार्टन या स्कूल की ओर से किसी सुरक्षित स्थान में ले जाये जाने वाले थे। कहीं वे अपने बेटों और बेटियों को विदा करती होती, तो कहीं अपने कारखाने के साथ शहर छोड़ रहे पति या पिता अपने परिवार से विदा ले रहे होते। बहुत-से घरों के दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द नज़र आते। ये घर अपनी खामोशी और सन्नाटे के कारण माताओं के आँसुओं से भी अधिक विचलित कर देते। वे घर या तो बिलकुल वीरान हो गये थे या उनमें केवल बूढ़ी दादियाँ भर रह गयी थी। वे काम से निढाल हाथों को गोद में रखे और घर से पूरे परिवार के विदा हो जाने के कारण अपनी उमड़ती-घुमड़ती पीड़ा को दबाये निश्चल बैठी दिखायी पड़ती। उनकी आँखों के आँसू तक सूख जाते।

सुबह दूर तोपों की गड़गड़ाहट सुनकर लड़कियाँ जग पड़ती। हर दिन अपने माँ-बाप से उनकी झड़प होती। वे चाहतीं कि उनके माँ-बाप उन्हें छोड़कर जल्द-से-जल्द किसी सुरक्षित स्थान में चले जायें और उनके माँ-बाप तर्क करते कि उनकी ज़िन्दगी तो पूरी हो चुकी है और अब कोमसोमोल की, नयी पीढ़ियों की रक्षा करना सबसे ज़रूरी है। इस तरह के रोज़मर्रा की चख़चख़ के बाद वे जल्दी-जल्दी नाश्ता करतीं और ताज़ी ख़बर जानने के लिए अपनी सहेलियों के पास दौड़ जाती। वे पक्षियों की तरह झुण्ड बनाकर जमा हो जातीं और गरमी तथा निष्क्रियता के कारण सिर लटकाये घण्टों किसी अँधेरे कमरे में या किसी सेब के पेड़ के नीचे बैठी रहतीं; या नदी किनारे की छायादार झाड़ियों और कुंजों में दौड़ लगातीं। उन पर आने वाले खतरे और बरबादी की छाया मँडराती रहती, जिसे पूर्णतया समझने के लिए उनके दिल और दिमाग़ असमर्थ होते।

और वह बरबादी अचानक हहराती हुई आ गयी।

“मैं शर्त लगाती हूँ कि अब तक वोरोशीलोवग्राद भी हमारे हाथ से निकल गया है। ये केवल हमें बताते नही,” एक लड़की ने कटुता से कहा। उस नन्ही-सी लड़की का चेहरा चौड़ा था और नाक नोकीली थी। उसके चिकने-चमकते बालों की दो चोटियाँ आगे लटक रही थीं।

उसका नाम ज़िना था लेकिन सभी उसके कुलनाम – वीरिकोवा – से उसको पुकारते थे।

“कैसी बातें कर रही हो, वीरिकोवा? यदि उन्होंने हमे बताया नहीं, तो इसका यही मतलब है कि वह अभी हमारे हाथ से निकला नहीं है,” अपने गदराये निचले होंठ को दबाते हुए माय्या पेग्लिवानोवा नामक एक खूबसूरत लड़की ने कहा। उसकी आँखें काली-काली थीं, रंग जिप्सियों जैसा था।

माय्या स्कूल में कोमसोमोल संगठन की सेक्रेटरी रह चुकी थी और लोगों को सुधारने व उपदेश देने की आदी हो गयी थी।

"हमें मालूम हैं कि तुम क्या कहने जा रही हो : 'लड़कियों, तुम द्वन्द्ववाद का क-ख-ग भी नहीं जानती!'" वीरिकोवा ने माय्या की नक़ल करते हुए कहा। सभी हँस पड़े। "वे हमें सच्ची बातें बतायें इसका सवाल ही नहीं उठता! हमने उनका विश्वास किया, काफ़ी विश्वास किया, लेकिन अब उतना नहीं रहा," वह कहती गयी। उसकी आँखें चमक रही थीं और उसकी नन्ही-नन्ही चोटियाँ आवेश से हिल रही थीं। "रोस्तोव फिर हाथ से गया होगा। अब हम जायें भी तो कहाँ! लेकिन वे हैं कि सिर पर पाँव रखकर भागे जा रहे हैं।" प्रत्यक्षतः वीरिकोवा सुनी-सुनायी अफ़वाहें दुहरा रही थी।

"कैसी बातें कर रही हो, वीरिकोवा," माय्या ने अपने स्वर को संयत रखते हुए कहा। "ऐसी बातें तुम कैसे कह सकती हो? तुम तो कोमसोमोल की सदस्या हो और पायनियरों की नेत्री भी रह चुकी हो।"

"ओह, उसके साथ दिमाग़ ख़राब करने की ज़रूरत नहीं," मितभाषी शूरा दुब्रोविना ने बुदबुदाते हुए कहा। वह अन्य लड़कियों से कुछ अधिक उम्र की थी। उसके बाल पुरुषों की तरह कटे हुए थे। उसकी अदृश्य-सी भौंहों के नीचे बर्बर और पीली आँखों के कारण उसके चेहरे से एक अजीब भाव झलकता था।

शूरा साज़ तथा जूते बनाने वाले की बेटी थी। उसका बाप क्रास्नोदोन में रहता था। वह ख़ार्कोव विश्वविद्यालय में पढ़ती थी, लेकिन जब जर्मन ख़ार्कोव की ओर बढ़ने लगे थे, तो वह अपने बाप के यहाँ क्रास्नोदोन चली आयी थी। यह एक साल पहले की बात है। अन्य लड़कियों से लगभग चार साल बड़ी होने के बावजूद वह हमेशा उन्हीं की संगत में पायी जाती। उसे माय्या पेग्लिवानोवा से बहुत स्नेह और लगाव था। लड़कियों के शब्दों में वह "पूँछ की तरह" माय्या के पीछे-पीछे लगी रहती।

"उसके साथ दिमाग़ मत ख़राब करो। यदि उसके भेजे में यही बात घुसी हुई है, तो किया ही क्या जा सकता है?" शूरा ने माय्या को सलाह दी।

"गरमी भर उन्होंने हमसे खन्दकें खुदवायीं," वीरिकोवा माय्या की बात अनसुनी करते हुए कहती गयी। "बेकार की मेहनत करनी पड़ी। उसके कारण मैं महीने भर बीमार रही। और अब ज़रा उन खन्दकों को तो देखो। वे घास-पात से भरी हुई हैं। क्या यह सच नहीं?"

साशा ने उसे आश्चर्य से देखा और अपने कन्धे उचकाकर मुँह से लम्बी सीटी बजायी।

उस वक़्त की सामान्य स्थिति ही कुछ ऐसी अनिश्चित और डाँवाडोल-सी थी कि उससे मजबूर होकर लड़कियाँ वीरिकोवा की बातें इतने ध्यान से सुन रही थीं।

“जो भी हो, स्थिति बहुत ही भयानक है,” तोन्या इवानीखिना ने वीरिकोवा और माय्या की ओर सहमी हुई नज़रों से देखते हुए कहा। उसकी आँखों में आँसू उमड़े आ रहे थे। वह लड़कियों में सबसे छोटी थी। उसे अभी भी बच्ची ही कहना उपयुक्त था, टाँगें लम्बी-पतली तथा नाक बड़ी और भारी थी। उसने अपने बादामी रंग के बाल पीछे की ओर काढ़ रखे थे। उसके कान भी बड़े-बड़े थे।

जब से उसकी बड़ी बहन लील्या, जिसे वह बहुत प्यार करती थी, फ़ेल्डूशर* बनकर युद्ध के शुरू में ख़ार्कोव के इर्द-गिर्द के मोर्चे पर चली गयी थी और लापता हो गयी थी, तभी से तोन्या को सारी दुनिया फीकी और ख़ाली-ख़ाली-सी लगने लगी थी। मामूली-सी बात से भी उसकी आँखों से आँसू छलछला पड़ते थे।

ऊल्या ही एक ऐसी लड़की थी, जो बातचीत में हिस्सा नहीं ले रही थी। उसने अपनी भीगी हुई लम्बी और काली वेणी की नोक खोली और उसे निचोड़कर फिर से गूँथा। वह अपना सिर एक ओर को झुकाये खड़ी रही, मानो उसके कान किसी आवाज़ पर लगे हों। श्वेत कुमुदिनी के कारण उसकी आँखों और बालों का कालापन और भी खिल रहा था। उसने बारी-बारी से अपने पैर फैलाकर धूप में सुखाये। जब पैर सूख गये, तो उसने सफ़ेद तलवों को झाड़ा, पंजों और एड़ियों को पोंछा और जूते पहन लिये।

मैं भी कितनी मूर्ख हूँ कि मौका दिया जाने पर भी मैं विशेष स्कूल में दाखिल न हुई!” साशा ने कहा। “गृह-मंत्रालय ने मुझे विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया था,” उसने चारों ओर लड़कों की तरह लापरवाही से देखते हुए बड़े भोलेपन से कहा। “तब मैं जर्मन पिछवाड़े में काम करती। तुम्हें इसकी तनिक खबर भी न होती। तुम हैरान-परेशान होती, मगर मुझे इसकी ज़रा भी परवाह न होती। तुम आश्चर्य से सोचती रह जातीं : ‘साशा का क्या हुआ?’ और मैं सारा वक़्त गृह-मंत्रालय का काम कर रही होती! और उस गेस्टापो के ख़रदिमाग़ों को अपनी उँगलियों पर नचाती।” वह अचानक ज़ोर से हँस पड़ी और वीरिकोवा की ओर कनखियों से देखने लगी। उसकी आँखों में शरारत और कटाक्ष का भाव आ गया।

ऊल्या ने अपना सिर उठाया और गम्भीर होकर ध्यान से साशा की ओर देखने लगी। उसके होंठ या नाज़ुक विलक्षण नासा-पुट में कुछ हरकत-सी हुई।

“गृह-मंत्रालय कहे या न कहे, लेकिन मैं यहीं रह जाऊँगी, बस,” वीरिकोवा ने अपनी वेणियाँ हिलाते हुए खीजकर कहा। “चूँकि किसी को मेरी परवाह नहीं, इसलिए मैं यहीं रुक जाऊँगी और पहले की तरह मेरी ज़िन्दगी कटती रहेगी। क्यों नहीं? मैं

---

* छोटा चिकित्सक। – सं.

एक स्कूल-छात्रा हूँ। जर्मनों के मुताबिक़ तो मैं 'जिम्नैज़ियम' स्कूल की छात्रा हूँ। आखिर वे भी तो सभ्य हैं। वे मेरा क्या अहित कर लेंगे?"

"जिम्नैज़ियम की छात्रा?" माय्या चिल्ला पड़ी। उसका चेहरा लाल हो गया।

"मैंने अभी-अभी जिम्नैज़ियम की पढ़ाई खत्म की है, क्या समझीं?" साशा ने वीरिकोवा की ऐसी नक़ल उतारी कि सब हँस पड़ीं।

तभी एक ज़ोर के धमाके से आकाश और पाताल हिल उठे। सूखी टहनियाँ और मुरझाये पत्ते पेड़ों से गिर पड़े और जल की सतह काँप उठी।

लड़कियों के चेहरे फक हो गये और वे एक दूसरे को चुपचाप देखने लगीं।

"क्या उन्होंने कुछ फेंका है?" माय्या ने पूछा।

"उन्हें इधर से गुज़रे एक ज़माना हो गया और दूसरे विमानों की आवाज़ अभी कान में नही पड़ी," तोन्या इवानीख़िना बोली। भय से उसकी आँखें फैल गयी थीं। सबसे पहले उसे ही खतरे का पूर्वाभास होता था।

और तब फिर दो बार धमाके की आवाज़ सुनायी पड़ी। एक तो बहुत ही क़रीब और दूसरी कुछ दूरी पर।

बिना कुछ बोले-चाले लड़कियाँ बस्ती की तरफ़ दौड़ पड़ीं। धूप में तपी उनकी टाँगें झाड़ियों में कौंध-सी रही थीं।

अध्याय 2

वे धूप से जलती दोनेत्स्क स्तेपी में दौड़ती रहीं। स्तेपी भेड़ों और बकरियों से इस तरह रौंदी जा चुकी थी कि लड़कियों के हर क़दम से धूल के बादल उड़ने लगते। यह विश्वास करना कठिन था कि कुछ ही देर पहले वे शीतल छाया में बैठी हुई थीं। नदी के किनारे-किनारे जंगल की सँकरी पट्टी फैली हुई थी। खड्ड इतने गहरे थे कि लड़कियों को तीन-चार सौ क़दम की दूरी तक के पेड़, नदी और खड्ड भी देखने असम्भव थे। लगता था जैसे स्तेपी उन्हें निगल गयी हो।

यहाँ स्तेपी आस्त्रख़ान या साल्स्क की स्तेपियों की तरह हमवार नहीं थी, बल्कि पहाड़ियों और खड्डों से भरी हुई थी। दूर दक्षिण और उत्तर की ओर धरती उठकर क्षितिज से सट गयी थी और एक विशाल नीला कटोरा जैसा बन गया था, जिसमें जलती और काँपती हवा मानो अवरुद्ध होकर रह गयी थी।

इस ऊबड़-खाबड़ और झुलसी स्तेपी में जगह-जगह खान कर्मियों की बस्तियाँ टेकरियों पर या घाटियों में डिब्बों की तरह बिखरी पड़ी थी। गेहूँ, मकई, सूरजमुखी और चुकन्दर के हरे और पीले आयताकार खेत उन्हें चारों ओर से घेरे हुए थे।

जहाँ-तहाँ खानों के पास इंजनघर एकाकी खड़े दिखायी पड़ते थे और उनकी बग़ल में सिर उठाये मिट्टी की चट्टानें।

बस्तियों और खानों को जोड़ने वाली सभी सड़कें शरणार्थियों से ठसाठस भरी थी जो कामेंस्क और लिखाया की तरफ बढ़े जा रहे थे।

दूर की भयंकर लड़ाई या सच कहें तो पश्चिम, उत्तर-पश्चिम और उत्तर में हो रही छोटी-बड़ी बहुत-सी लड़ाइयों का शोरगुल स्तेपी में साफ़-साफ़ सुनायी पड़ता था। दूर लगी आग का धुआँ धीरे-धीरे आसमान की ओर उठ रहा था और क्षितिज पर भारी-भरकम बादलों की तरह लटकता जा रहा था।

जंगल के खड्ड से बाहर निकलने पर लड़कियों ने तीन जगह से धुआँ उठते देखा। दो तो बिलकुल पास थी, लेकिन तीसरी कहीं दूर, क्रास्नोदोन के आस-पास थी, जो पहाड़ियों के पीछे छिपा था। धुआँ धीरे-धीरे छँट रहा था। यदि वे लाटें विस्फ़ोट के कारण न उठी होती और नगर के पास पहुँचने पर तेज़ और तीखी लहसुन की-सी गन्ध न फैली होती, तो लड़कियों ने इन पर ध्यान ही न दिया होता।

पेर्वोमोइका बस्ती के सामने एक नीची और गोल पहाड़ी थी। लड़कियाँ उस पर चढ़ गयी। टीलों पर और खाइयों में बसी बस्ती अब उनके सामने फैली थी। उसके पास वोरोशीलोवग्राद राजपथ था, जो क्रास्नोदोन और बस्ती के बीच खड़ी लम्बी पहाड़ी को काटता हुआ निकल गया था। जहाँ तक नज़र जाती थी, राजपथ फ़ौजी टुकड़ियों और शरणार्थियों से भरा दिखायी दे रहा था। साधारण असैनिक कारें, धूल से सनी और लड़ाइयों में क्षत-विक्षत हरे रंग की फ़ौजी गाड़ियाँ, लारियाँ, मोटरें, एम्बुलेंस गाड़ियाँ – सब के सब पैदल चलने वालों को पीछे छोड़ती हुई ज़ोर-ज़ोर से हॉर्न बजाती सरसराती निकल जातीं। पैरों और पहियों से उड़ी लाल धूल राजपथ के ऊपर चंदवे की तरह तनी हुई थी।

और तब एक असम्भव और अविश्वसनीय घटना घटी : खान 1(बी) के पास कंकरीट का विशाल इंजनघर – क्रास्नोदोन में एकमात्र इमारत जो राजपथ के इस तरफ़ से दिखायी पड़ती थी – अचानक डोल उठा। ऊपर उठी मिट्टी के बादल ने उसे नज़रों से ओझल कर दिया और फिर ज़मीन के नीचे से एक ज़ोर के धमाके की आवाज़ सुनायी पड़ी। आकाश और पाताल गूँज उठे, लड़कियों के दिल दहल गये। मिट्टी का बादल जब ढह गया, तो वहाँ इंजनघर का कोई नामोनिशान न था। मिट्टी का ढेर पहले की तरह धूप में चमक रहा था, लेकिन जहाँ पर पहले इंजनघर खड़ा था, वहाँ अब गन्दे, धूसर-पीले धुएँ का बादल उठ रहा था। राजपथ के ऊपर आश्चर्यचकित पेर्वोमोइका बस्ती के ऊपर, अदृश्य नगर के ऊपर, तमाम देहाती इलाक़े के ऊपर एक अजीब आवाज़ तिर रही थी, जिसमें लोगों के रोने-धोने,

चीख़ने-चिल्लाने, कराहने-कलपने की आवाज़ें घुल-मिल गयीं।

राजपथ पर शरणार्थियों की भीड़-भाड़, गाड़ियों की भाग-दौड़, विस्फोटो के धमाके, इंजनघर का मटियामेट हो जाना – इस सबका लड़कियों पर भयानक असर हुआ। लेकिन उन सारे आवेगों के भीतर से, जो उनके दिलों को कचोट रहे थे, एक ही अनुभूति उफनती-सी मालूम पड़ती थी, जो अपने आपके लिए भय की अनुभूति से अधिक सबल और गहन थी। उन्हें लगा कि ज़मीन पैरों के तले से खिसक रही है और उनकी सारी दुनिया उसमें समाकर तहस-नहस हो जाने वाली है।

"वे खानों को उड़ा रहे हैं!... लड़कियो!..."

यह किसकी चीख थी? तोन्या की होगी। लेकिन यह चीख जैसे सबके हृदय से निकली :

"वे खानों को उड़ा रहे हैं!... लड़कियो!..."

आगे एक भी शब्द किसी के मुख से नहीं निकला। सबके मुँह बन्द हो गये। लड़कियों का दल तितर-बितर हो गया। बहुत-सी लड़कियाँ अपने-अपने घर की ओर बस्ती की दिशा में भागी। माय्या, ऊल्या और साशा शीघ्र ही ज़िला कोमसोमोल समिति में पहुँचने के लिए राजपथ पार कर शहर की ओर जाने वाली पगडण्डी पर दौड़ने लगी।

लेकिन जब दोनो टोलियाँ अलग-अलग होने लगी, तो वाल्या फ़िलातोवा ने अचानक अपनी सहेली का हाथ पकड़ लिया।

"ऊल्या ... प्यारी ऊल्या!" उसने डरी आवाज़ में मनुहार करते हुए-से कहा। "ऊल्या, कहाँ जा रही हो? घर चलो," वह हकलायी, "न मालूम क्या होगा।"

ऊल्या मुड़कर उसकी ओर ख़ामोशी से देखने लगी। नहीं, वह वाल्या को नहीं देख रही थी। बल्कि वाल्या को बेधकर दूर, बहुत दूर, पर उसकी आँखें टिकी थी। उसकी काली आँखों में प्रचण्ड गति का-सा भाव झलक रहा था – ऐसा भाव जो उड़ती हुई चिड़िया की आँखों में देखा जा सकता है।

"ठहरो," वाल्या ने ऊल्या की बाँह पर हाथ रखते हुए कहा। खाली हाथ से उसने ऊल्या के काले लहरदार बालों में से कुमुदिनी निकाल कर ज़मीन पर फेंक दी।

यह सब कुछ इतनी जल्दी हो गया कि ऊल्या को इसका आभास ही न हो पाया। और अपनी दोस्ती के लम्बे अरसे में यह पहला मौक़ा था, जब वे स्वतः भिन्न-भिन्न दिशाओं में दौड़ चलीं।

हाँ, यह विश्वास करना कठिन था कि जो कुछ उन्होंने अभी-अभी देखा, वह सत्य था। लेकिन जब ऊल्या, माय्या और साशा राजपथ पार कर गयीं तो उन्हें विश्वास हो गया : खान 1(बी) के विशालकाय मिट्टी का ढेर ज्यों का त्यों खड़ा था, लेकिन उसकी बग़ल में कुछ नहीं था। शक्तिशाली घुमाव-चक्करों वाला रोबीला इंजनघर

ग़ायब था। वहाँ पर केवल काले धुएँ का बादल उठकर आसमान को ढँकता जा रहा था और हवा उसकी तीखी लहसुन की-सी गन्ध से सनी जा रही थी।

पास और दूर विस्फोटों एवं धमाकों से धरती और आकाश काँपते रहे।

नगर के इस हिस्से को, जहाँ खान 1(बी) स्थित थी, एक गहरे खड्ड ने केन्द्र से अलग कर रखा था। उस खड्ड के तल पर एक गन्दला, सेवारभरा सोता बहता था। केवल इसी खड्ड की ढलानों पर मिट्टी के घर नज़र आते थे। बाक़ी हिस्से में नगर के केन्द्र की तरह ही एकमंजिला पत्थर की बनी इमारतें खड़ी थीं। उनके छप्पर टाइल या स्लेट के बने थे और उन मकानों में दो-तीन परिवारों के रहने की व्यवस्था थी। हर मकान के सामने छोटा-सा बगीचा था, जिसमें फूल या साग-सब्जियों की क्यारियाँ नज़र आती थी। कुछ लोगों ने चेरी के पेड़, लाइलैक या चमेली के पौधे उगा लिये थे और कुछ लोगों ने घरों की बाड़ों के किनारे-किनारे बबूल या मैपल के पौधे लगा रखे थे। बाड़े बड़ी खूबसूरती से रंगे थे। अब इन छोटे-छोटे सुन्दर घरों और बगीचों की बग़ल से हर तरह के कामगारों, स्त्री-पुरुषों, क्रास्नोदोन के कारख़ानों और दफ़्तरों के साज़-सामान से लदी लारियों की क़तारें निकलती चली आ रही थीं।

बाक़ी तमाम लोग घरों से बाहर निकल पड़े थे। कुछ लोग अपने बाड़ों के पीछे खड़े होकर जाने वालों को देख रहे थे। कुछ लोगों की आँखों में सहानुभूति थी तो कुछ लोगों की आँखों में कौतूहल। औेर कुछ लोग सड़कों पर आकर अपने थैलों और गठरियों को घसीट रहे थे और घरेलू साज़-सामान से लदी ठेलागाड़ियाँ खींच रहे थे। बच्चे सामान के ऊपर बैठे थे और बहुत-सी औरतें नन्हे बच्चों को अपनी गोद में लिए चली जा रही थीं।

विस्फोट की आवाज़ सुनकर बच्चों की भीड़ खान 1(बी) की ओर दौड़ पड़ी थी, लेकिन वहाँ मिलिशिया वालों ने घेरा बना रखा था। वे किसी को आगे बढ़ने नहीं दे रहे थे। खान की ओर से लोग विपरीत दिशा में भागते आ रहे थे। इसी खलबली और घबराहट में बाज़ार से निकलने वाली तंग सड़क पर किसान स्त्रियों का रेला उमड़ आया। उनके साथ साग-सब्ज़ियों आदि से भरी टोकरियाँ और ठेलागाड़ियाँ थी। घोड़ागाड़ियों और बैलगाड़ियों का भी ताँता बँध गया।

क़तारों में लोग ख़ामोश चल रहे थे। उनके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। वे एक ही ख़याल में इस क़दर डूबे थे कि लगता था कि वे इस बात से बिलकुल बेख़बर थे कि उनके चारों ओर क्या हो रहा है। केवल मुखिये ही क़तारों के आगे-पीछे दौड़-दौड़ कर पैदल और घुड़सवार मिलिशिया वालों को शान्ति और व्यवस्था क़ायम रखने में मदद दे रहे थे। वे यह देख रहे थे कि शरणार्थियों के रुक जाने से कहीं भीड़ अटक न जाये और रास्ता जाम न हो जाये।

भीड़ में से एक औरत ने माय्या की बाँह पकड़ ली और साशा उसके इन्तज़ार में रुक गयी। लेकिन ऊल्या जल्दी-से-जल्दी ज़िला कोमसोमोल समिति में पहुँचना चाहती थी, अतः वह विपरीत दिशा से उमड़ती चली आती भीड़ में से रास्ता बनाती हुई आगे दौड़ चली।

मोड़ से एक हरी लारी घरघराती निकली। भीड़ पीछे की ओर हटी और ऊल्या एक बाड़े से जा टकरायी। यदि वहाँ पर छोटा फाटक न होता, तो उसने उस सुन्दर गोरी लड़की को धक्के से गिरा दिया होता, जो फाटक के पास लाइलैक की धूलभरी झाड़ियों के बीच खड़ी थी। लड़की बहुत ही नाज़ुक दीखती थी। उसकी छोटी नाक उठी हुई थी और धूप के कारण उसने अपनी नीली आँखें सिकोड़ रखी थी।

विचित्र बात यह थी कि इस लड़की को गिराते-गिराते ऊल्या की आँखों के आगे अचानक वाल्ज़ की धुन पर थिरकती हुई उस लड़की की तस्वीर घूम गयी। लगा जैसे वह बैंड की धुन सुन रही हो। उसके हृदय में अचानक टीस-सी उठी जैसा कि सुखद स्वप्न देखने पर होता है।

वह लड़की मंच पर नाचा-गाया करती थी, हॉल में नाचा-गाया करती थी। वह कभी न थकती, हर किसी के साथ, सब के साथ गहरी रात गये तक नाचा करती। उसकी नीली आँखें और छोटे-छोटे सफ़ेद दाँत ख़ुशी से चमकते रहते थे। ऐसा कब हुआ? अवश्य ही, युद्ध से पहले रहा होगा – किसी दूसरे जीवन में, स्वप्नलोक में।

ऊल्या लड़की का कुलनाम नहीं जानती थी। सब लोग उसे ल्यूबा ही कहकर पुकारते थे। हाँ, यही ल्यूबा थी। लड़के उसे 'अभिनेत्री ल्यूबा' कहकर पुकारते।

विस्मय की बात तो यह थी कि ल्यूबा अपने फाटक के पीछे लाइलैक की झाड़ियों के बीच इस तरह सज-धजकर आराम से खड़ी थी, मानो वह किसी क्लब में नाचने के लिए जाने वाली हो। धूप से सावधानी के साथ सुरक्षित रखा गया उसका गुलाबी चेहरा दमक रहा था और उसके सुनहरे बाल ख़ूबसूरती से सँवरे हुए थे। उसके छोटे-छोटे हाथ हाथी-दाँत के बने लगते थे और उसके नाख़ून चमकीले और सुघड़ लग रहे थे। उसने नाज़ुक पैरों में ऊँची एड़ी के पीले जूते पहन रखे थे। यह सब कुछ देखने से लगता था जैसे ल्यूबा रंगमंच पर उतरने वाली हो।

लेकिन ऊल्या को यह देखकर सबसे अधिक विस्मय हुआ कि ल्यूबा का खिला चेहरा असाधारण रूप से उत्तेजक लग रहा था, साथ ही उस पर निष्कपटता और चतुराई की छाप थी। उसकी नाक कुछ उठी हुई थी, होंठ रंगे हुए थे और चेहरे के अनुपात से उसका मुँह कुछ अधिक बड़ा था। सिकुड़ी और नीली आँखों में असाधारण रूप से ज़िन्दादिली झाँक रही थी।

ऊल्या फाटक के साथ इतने ज़ोर से टकरायी कि फाटक टूटते-टूटते बचा।

लेकिन ल्यूबा इससे बिलकुल विचलित नहीं हुई, उसने ऊल्या की ओर आँख उठा कर देखा तक नहीं। वह बड़े आराम से फाटक के पास खड़ी रही। सड़क पर जो कुछ हो रहा था, उसे तेज़ निगाहों से देख रही थी और दिमाग में जो कुछ भी आ रहा था उसे ज़ोर-ज़ोर से बके जा रही थी।

“बेवक़ूफ़!” वह एक लारी-ड्राइवर पर बरस पड़ी। “दिमाग़ का पेंच ढीला हो गया है क्या? लोगों को हटने क्यों नहीं देते? ऐ, ठहरो! किधर चले जा रहे हो, बेवक़ूफ़?”

वस्तुतः ड्राइवर अपनी लारी फाटक के पास खड़ी कर सड़क के ख़ाली होने का इन्तज़ार कर रहा था। लारी मिलिशिया के सामन से लदी थी और उसकी चौकसी के लिए मिलिशिया के कई आदमी तैनात थे।

“देखो तो क़ानून के रक्षकों ने यह कैसा जमघट लगा रखा है!” ल्यूबा चिल्ला उठी। शब्द-बाण चलाने का उसे एक और निशाना मिल गया था। “लोगों को ढाँढ़स बँधाने के बजाये तुम लोग जल्दी-जल्दी भागे जा रहे हो।” उसने अजीब ढंग से अपना नन्हा हाथ हिलाया और मुँह से लड़कों की नक़ल करते हुए सीटी बजायी।

“यह बेवक़ूफ़ मेढकी क्या टर्रा रही है?” ल्यूबा के बेबुनियाद आरोप से क्षुब्ध होकर मिलिशिया का साजेण्ट गुर्राया।

लेकिन इससे बात और बढ़ ही गयी। “अहा, भगोड़े बहादुर!” ल्यूबा फिर चिल्ला उठी। “कहाँ से तशरीफ़ ला रहे हो, मेरे बहादुर योद्धा?”

“ख़ामोश!” वह ‘बहादुर योद्धा’ बरस पड़ा और इस तरह उचका मानो अभी लारी पर से उतर पड़ेगा।

“नहीं, नहीं, तुम नहीं उतरोगे! तुम तो डर रहे हो कि कहीं पीछे न रह जाओ!” ल्यूबा ने शान्त स्वर में ही व्यंग्य कसा। “अच्छा, सफ़र मुबारक, साथी भगोड़े बहादुर!” और ग़ुस्से से तमतमाते चेहरे वाले सार्जेण्ट की ओर देखते हुए उसने उपेक्षा से हाथ हिला दिया। सचमुच सार्जेण्ट नीचे नहीं उतरा था।

भगदड़ की हालत में, ल्यूबा की बातों से, उसके साज-सिंगार से और जिस इतमीनान से वह खड़ी थी, यह ज़ाहिर हो सकता था कि वह सोवियत सत्ता की दुश्मन थी, जर्मनों के आगमन का बेताबी से इन्तज़ार कर रही थी और अपने दुखी देशवासियों पर ताने कस रही थी। लेकिन उसके चेहरे के सरल और निष्कपट भाव को देखकर यह सन्देह दूर हो जाता था। वह उन्हीं पर ताने कसती, जो उसके योग्य होते।

“ऐ, टोपवाले! अपनी छोटी-सी बीवी पर तुमने कितना बोझ लाद रखा है और ख़ुद ख़ाली हाथ झुलाते चले जा रहे हो!” वह चिल्लायी। “तुम्हारी पत्नी तो छोटी-नाटी है। ख़ुद सिर पर टोप लगा रखा है! ओह, तुम्हें देखकर कैसी घिन आती है!”

गाड़ी पर बैठी एक बुढ़िया को लक्ष्य करती हुई वह बोली :

"अहा, दादी, छिपाकर सामूहिक फार्म के खीरे भकोस रही हो? सोच रही हो कि कोई देख भी नहीं रहा है? तुम्हारा विचार है कि सोवियत सत्ता अब रहेगी नहीं, इसलिए कोई जवाब-तलब करने वाला भी नहीं? लेकिन तुम्हें भगवान का डर भी नहीं है? वह तो देख रहा है। वह ऊपर वाला सब देखता है!"

कोई भी उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था और वह इसे अच्छी तरह जानती थी। लगता था जैसे अपने को खुश करने के लिए वह लोगों को औचित्य की सीख दे रही थी। ऊल्या उसके शान्त निर्भीक व्यवहार से मुग्ध हो गयी। उसे इस लड़की में विश्वास जम गया और उसकी ओर मुड़कर बोली :

"ल्यूबा, मैं पेर्वोमोइका बस्ती की कोमसोमोल सदस्या हूँ। मेरा नाम ऊल्या ग्रोमोवा है। बताओ मुझे कि इस खलबली का कारण क्या है?"

"ओह... वही क़िस्सा है," ल्यूबा ने ऊल्या की ओर मैत्रीपूर्ण भाव से देखते हुए जवाब दिया। "आज सुबह वोरोशीलोवग्राद से हमारी फौज़ के पाँव उखड़ गये। सारे संगठनों और संस्थाओं को यहाँ से तुरन्त हट जाने के लिए आदेश दिये गये।" ल्यूबा की चमकती, नीली आँखों में साहस झलक रहा था।

"और ज़िला कोमसोमोल समिति को भी?" ऊल्या ने टूटती हुई आवाज़ में पूछा।

"निकम्मे, बदमाश, बच्ची को पीटते शर्म नहीं आती? ठहरो, मैं अभी तुम्हें मज़ा चखाती हूँ," ल्यूबा भीड़ से भरी सड़क पर चल रहे एक लड़के पर चीख़ी। "ज़िला समिति?" वह ऊल्या की ओर मुड़कर बोली। "ज़िला समिति तो पौ फटते ही सबसे आगे चली गयी... मेरी ओर इस तरह आँखें फाड़-फाड़कर क्या देख रही हो?" वह तमककर बोली। फिर ऊल्या की मनःस्थिति को भाँपकर वह मुस्करायी : "मैं तो मज़ाक़ कर रही हूँ... आदेश मिलने के बाद उन्हें यहाँ से हट जाना पड़ा। लेकिन वे भागे नहीं। समझीं?"

"लेकिन हम लोगों का क्या होगा।?" ऊल्या ने अचानक रोष से उफनकर पूछा।

"तुम भी हट जाओ। आदेश तो सुबह ही दिये जा चुके हैं। तुम दिन भर कहाँ गायब थीं?"

"और तुम?" ऊल्या ने पूछा।

"मैं?" ल्यूबा रुककर बोली। उसके चेहरे पर एक खोया-खोया-सा भाव उभर आया। "देखा जायेगा," उसने बात टालते हुए कहा।

"क्या तुम कोमसोमोल की सदस्या नहीं हो?" ऊल्या ने ज़ोर देकर पूछा। कुछ क्षण तक उसकी काली, पैनी आँखें ल्यूबा की सिकुड़ी, सतर्क आँखों में गड़ी रहीं।

"नहीं," ल्यूबा ने अपने होंठ सिकोड़ते हुए कहा और दूसरी ओर घूम गयी। अचानक "पिताजी, पिताजी" चिल्लाते हुए वह फाटक खोलकर उन लोगों की ओर

दौड़ पड़ी, जो उसके घर की ओर चले आ रहे थे। उन लोगों पर नज़र पड़ते ही भीड़ किंचित् भय से और विशेष आदर से उनके लिए रास्ता छोड़ देती।

उन लोगों के आगे-आगे दो व्यक्ति चल रहे थे। एक था वाल्को जो खान 1(बी) का संचालक था। उसकी आयु 50 के लगभग होगी। उसकी दाढ़ी घुटी हुई थी और वह जिप्सियों की तरह साँवला और उदास था। उसने कोट और ऊँचे बूट पहन रखे थे। दूसरा व्यक्ति था उसी खान का मशहूर कोयला काटने वाला ग्रिगोरी इल्यीच शेव्त्सोव। उनके पीछे कुछ खान-मज़दूर और दो वर्दीधारी व्यक्ति चले आ रहे थे। और उन सबके पीछे काफ़ी दूर पर उत्सुक लोगों की भीड़ चल रही थी। अति कठिन और असाधारण क्षणों में भी उत्सुक और जिज्ञासु व्यक्तियों की कमी नहीं रहती।

ग्रिगोरी इल्यीच तथा अन्य खान-मज़दूर अपने काम के कपड़े पहने हुए थे। उनके चेहरे, हाथ और कपड़े कोयले के चूरे से काले हो रहे थे। एक ने कन्धे पर बिजली के तार का बण्डल उठा रखा था; दूसरे के हाथ में औज़ारों का डिब्बा था। शेव्त्सोव के हाथ में अजीब-सा धातु का उपकरण था, जिसमें से नंगे तार के सिरे बाहर निकल रहे थे।

सभी चुपचाप चले आ रहे थे। लगता था जैसे वे एक दूसरे से या भीड़ के लोगों से आँख मिलाने से कतरा रहे हों। उनके चेहरों पर से पसीना चू रहा था, जिससे चेहरों पर जमी कोयले की परत में सफ़ेद रेखाएँ खिंच गयी थीं। वे इस तरह मुरझाये और थके-से दिखायी पड़ रहे थे मानो अपनी सामर्थ्य से अधिक बोझ ढोकर आये हों।

और अचानक ऊल्या की समझ में आ गया कि भीड़ ने किंचित भय से क्यों उन व्यक्तियों के लिए रास्ता छोड़ दिया था। उन्ही व्यक्तियों ने दोनेत्स्क कोयला क्षेत्र की सबसे उत्तम खान 1(बी), को अपने हाथों से उड़ा दिया था।

ल्यूबा दौड़कर ग्रिगोरी इल्यीच के पास पहुँच गयी और अपना हाथ उसके हाथ में रख दिया। काले और मज़बूत हाथ ने छोटे-से गोरे हाथ को कसकर पकड़ लिया। ल्यूबा ग्रिगोरी इल्यीच के साथ-साथ घर की ओर लौटी।

इस बीच वाल्को सहित खान-मज़दूरों की पूरी की पूरी टोली फाटक पर पहुँच गयी। राहत की साँस लेकर उन्होंने अपना सामान – तार का गोला, औज़ारों का बक्सा और धातु का विचित्र उपकरण – बाड़े के ऊपर से फूल की क्यारियों पर फेंक दिया। यह स्पष्ट हो गया कि इतने प्यार और हिफ़ाज़त से लगाये गये वे फूल जीवन के उसी ढर्रे की तरह अतीत के गर्त में समा गये थे, जिसने इन फूलों और अन्य वस्तुओं को सम्भव बनाया था।

अपना-अपना बोझ गिराकर वे कुछ देर तक सकपकाये-से खड़े रहे और एक दूसरे से आँखें मिलाने से कतराते रहे।

“अच्छा, ग्रिगोरी इल्यीच,” वाल्को आख़िर बोला, “जितनी जल्दी हो सके तैयार हो जाओ। कार तैयार है। तब तक मैं लोगों को बिठाता हूँ और फिर तुम्हें लेने के लिए पहुँचते हैं।”

वह बोलते वक़्त शेव्त्सोव की ओर नहीं देख रहा था। उसकी आँखें ज़मीन में गड़ी थीं। उसकी आँखों के ऊपर उसकी घनी, जिप्सियों की-सी काली भौंहें एक दूसरे से जुड़ी हुई थीं। वह मुड़कर सड़क पर चलने लगा और उसके साथ-साथ खान-मज़दूर और फ़ौजी वर्दी पहने दो व्यक्ति भी चल पड़े।

लम्बी, पतली टाँगोंवाला एक बूढ़ा खान-मज़दूर, जिसकी छितरी दाढ़ी और मूँछें तम्बाकू से पीली हो गयी थीं, ग्रिगोरी इल्यीच के पास ही रुका रह गया। ग्रिगोरी इल्यीच अभी भी ल्यूबा के हाथ में हाथ रखे फाटक पर ही खड़ा था। ऊल्या भी जहाँ की तहाँ खड़ी रही। उसे लगा कि यहीं, केवल यहीं उसकी समस्या सुलझायी जा सकती थी। उन लोगों का ध्यान उसकी ओर नहीं था।

“तुम्हें जैसा कहा जा रहा है, वैसा क्यों नहीं करती, ल्यूबा?” ग्रिगोरी इल्यीच ने पूछा। उसने घूरकर अपनी बेटी की ओर देखा, लेकिन अपना हाथ उसके हाथ में से नहीं छुड़ाया।

“मैं कह तो चुकी हूँ, मैं नहीं जा सकती,” ल्यूबा ने हठपूर्वक कहा।

“बेवक़ूफ़ी की बात न करो,” ग्रिगोरी इल्यीच ने रोष से लेकिन मन्द स्वर में कहा। “तुम यहाँ रह कैसे सकती हो? तुम कोमसोमोल की सदस्या हो!”

ल्यूबा ऊल्या की ओर देखकर लाल हो उठी। लेकिन तुरन्त ही उसके चेहरे पर विद्रोह और धृष्टता का भाव उभर आया।

“मैं कोमसोमोल में ना के बराबर रही,” वह बोली। “मैंने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा, इसलिए मेरा भी कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।” उसने अपने होंठ भींचे। फिर धीमी आवाज़ में बोली : “मैं माँ को नहीं छोड़ सकती।”

“इसने कोमसोमोल से नाता तोड़ लिया है!” ऊल्या ने भयभीत होकर सोचा। लेकिन साथ ही साथ अपनी बीमार माँ की याद आने से उसका हृदय भी टूक-टूक हो चला।

“अच्छा ग्रिगोरी इल्यीच,” बूढ़ा खान-मज़दूर ऐसी गम्भीरता से बोला कि यह विश्वास करना कठिन था कि उसकी आवाज़ एक कृषकाय व्यक्ति के कण्ठ से फूटी थी, “अब विदा होने का वक़्त आ गया... तुम सबको मेरी शुभकामनाएँ।” उसने सीधे शेव्त्सोव की ओर देखा, जो उसके सामने सिर नीचा किये हुए खड़ा था।

ग्रिगोरी इल्यीच ने चुपचाप अपनी टोपी उतारी। उसके बाल भूरे, आँखें नीली और चेहरा पतला तथा गहरी लकीरों से भरा था। उम्र के बोझ से लदे, बेढंगा-सा ओवरआल

पहने, चेहरा और हाथ कोयले के चूरे से काले पड़े होने पर भी उसके हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ और सुन्दर होने की छाप पड़ती थी जैसे पुराने रूसियों को देखकर पड़ा करती थी।

"शायद तुम भी हम लोगों के साथ चलकर जोखिम उठाना चाहोगे ... क्यों कोन्द्रातोविच?" उसने अपनी आँखें ऊपर उठाये बिना ही पूछा। ज़ाहिर था कि वह झेंप रहा था।

"अब हम लोग कहाँ जा सकते हैं – मैं और मेरी बुढ़िया? नहीं, हम लाल सेना के साथ अपने बच्चों के लौटने का इन्तज़ार करेंगे।"

"तुम्हारे सबसे बड़े बेटे की क्या ख़बर है?" ग्रिगोरी इल्यीच ने पूछा।

"उसकी? उसके बारे में बातें करना ही बेकार है!" बूढ़े ने उदासी से जवाब दिया। उसने इस अन्दाज़ से अपना हाथ हिलाया मानो साफ़-साफ़ कह रहा हो : "उसने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी है। उसकी चर्चा ही क्यों करते हो?"

उसने अपना पतला, खुरदुरा हाथ शेव्त्सोव की ओर बढ़ा दिया।

"अलविदा, ग्रिगोरी इल्यीच!" उसने उदासी से कहा।

शेव्त्सोव ने उसका हाथ थाम लिया और वे कुछ देर तक ख़ामोश खड़े रहे। अभी कुछ और कहना बाक़ी था।

"देखो, मेरी बुढ़िया... और मेरी बेटी भी... यहीं रुकेंगी," वह बुदबुदाया। देखते-देखते उसकी आवाज़ रुँध गयी। "हम लोग उसे उड़ा देने की हिम्मत कैसे बटोर सके, कोन्द्रातोविच? हमारी सुन्दर खान... लगभग पूरे देश की अन्नदाता..." उसने गहरी साँस ली और चमकते हुए आँसू कोयले से काले पड़े गालों पर ढुलक पड़े।

ज़ोर की सिसकी के साथ बूढ़े ने अपना सिर नीचे कर लिया। ल्यूबा के भी आँसू फूट पड़े।

अपना होंठ काटते ऊल्या पेर्वोमाइका बस्ती में अपने घर की ओर दौड़ पड़ी। अपने कुण्ठित रोष के आँसुओं को वह भी नहीं रोक पायी।

अध्याय 3

जब कि उपनगर में भाग-दौड़, वहाँ से हटने की उत्तेजना और हलचल मची हुई थी, नगर के केन्द्र के आस-पास कुछ अधिक शान्ति और व्यवस्था नज़र आ रही थी। कर्मचारियों और अपने परिवारों के साथ शरणार्थियों के कारवाँ से अब सड़कें ख़ाली हो चुकी थीं। छकड़ों और लारियों की क़तारें कार्यालय-भवनों के अहातों में या फाटकों के पास सुस्ता रही थीं। थोड़े-से लोग दफ़्तर के साज़-सामान और काग़ज़-पत्रों के बोरे गाड़ियों पर लाद रहे थे। धीमी आवाज़ में उनकी बातचीत मानो जान-बूझकर केवल

मौजूदा काम-काज तक ही सीमित थी। खुले दरवाज़ों और खिड़कियों से हथौड़ों की और रह-रहकर टाइपराइटरों के खटखटाने की आवाज़ सुनायी पड़ रही थी। अधिक सक्रिय कार्यालय-प्रबन्धक हटाये जाने वाले साज़-सामान की और वहाँ बच रहे साज़-सामान की पूरी सूचियाँ तैयार कर रहे थे।

अगर दूर की तोपें रह-रहकर गरज नहीं रही होतीं और धरती उनके धमाकों से काँप नहीं रही होती, तो यही लगता कि दफ़्तर केवल उठकर नयी इमारतों में जा रहे हैं।

नगर के बीचोंबीच एक ढलान पर एक नयी और लम्बी एकमंज़िला इमारत खड़ी थी, जिसके सामने नये पेड़ों की पाँते थीं। नगर के किसी भी हिस्से से दिखायी पड़ने वाली इस इमारत में ज़िला पार्टी समिति और ज़िला समिति की कार्यकारिणी समिति के कार्यालय थे और पिछली शरद से उसमें बोल्शेविक पार्टी की वोरोशीलोवग्राद प्रान्तीय समिति का दफ़्तर भी आ गया था।

कार्यालयों और कारख़ानों के प्रतिनिधि सीधे मुख्य दरवाज़ों से लगातार आ रहे थे और तुरन्त ही भागते-हुए से लौट रहे थे। उसकी खुली खिड़कियों से लगातार टेलीफ़ोन की घण्टी और फ़ोन पर बातचीत की आवाज़ सुनायी पड़ रही थी। बातचीत कभी दबी-दबी आवाज़ में और कभी अधिक ज़ोर से सुनायी पड़ती थी। मुख्य दरवाज़े के पास कुछ असैनिक और कुछ सैनिक कारें आधे वृत्त में खड़ी थीं। सबसे आख़िर में एक धूलभरी जीप खड़ी थी। उसकी पिछली सीट पर बदरंग फ़ौजी कोट पहने दो सैनिक बैठे थे : उनमें से एक मेजर था, जिसकी दाढ़ी बढ़ चुकी थी और दूसरा सार्जेण्ट, जो बहुत ही लम्बा युवक था। दोनों सैनिक और वस्तुतः सभी कारों के ड्राइवरों के चेहरों पर एक ही अवर्णनीय-सा भाव झलक रहा था – प्रत्याशा का भाव।

इस बीच इमारत की दाहिनी ओर एक बड़े-से कमरे में एक ऐसा दृश्य अभिनीत हो रहा था कि यदि वह बाहर से देखने में साधारण और सीधा-सादा-सा न मालूम होता, तो उसकी गम्भीरता के सामने अतीत की महान ट्रेजिडियाँ भी फीकी पड़ जातीं। प्रान्त और ज़िले के अग्रणी व्यक्ति अपने उन सहकर्मियों से विदाई ले रहे थे, जिन्हें वहाँ रुककर नगर को ख़ाली कराना था और जर्मनों के पहुँचने पर ग़ायब होकर नागरिकों में मिल जाना और भूमिगत होकर काम करना था।

कोई भी चीज़ मनुष्य को एक दूसरे के इतना क़रीब नहीं खींचती जितना कि साथ भोगी मुसीबतें।

लड़ाई शुरू हुए महीनों बीत चुके थे, परन्तु शुरू से लेकर आज तक का सारा समय इन व्यक्तियों को ऐसा एक लम्बा कार्य-दिवस-सा जान पड़ रहा था – जिसका एक-एक क्षण अतिमानवीय प्रयास से भरा था और जिसे मात्र सबसे अधिक दृढ़ और

बलिष्ठ व्यक्ति ही निभा सकते थे।

चुन-चुनकर सबसे अधिक बलिष्ठ, स्वस्थ और जवान लोगों को मोर्चे पर भेजा गया था। सभी बड़े-बड़े कल-कारख़ाने और फ़ैक्टरियाँ पूरब स्थानान्तरित कर दी गयी थीं, ताकि जर्मन उन्हें नष्ट-भ्रष्ट न कर सकें या अपने क़ब्ज़े में न ले सकें। पूरब की ओर उन्होंने हज़ारों कल-पुर्जों, लाखों कामगारों और परिवारों को भेज दिया था। और बाद में, मानो किसी चमत्कार से, उन्हें और भी अधिक कल-पुर्ज़े और कामगार हाथ लग गये थे और उन्होंने निष्क्रिय खानों और परित्यक्त कारख़ानों में नया जीवन फूँक दिया था।

उद्योग और जनता ऐसी स्थिति में थे कि किसी भी वक़्त नया संकट आने पर वे फिर से उन्हें पूरब की ओर हटा सकते थे। इस दौरान सारा समय वे बिला नाग़ा अपने कर्तव्यों का पालन करते रहे, जिनके बिना सोवियत जनता का एक दिन भी गुज़रना कठिन हो जाता। उन्होंने लोगों को खाना और कपड़ा दिया, बच्चों को शिक्षा दी, घायलों की सेवा-सुश्रूषा की, नये इंजीनियरों, शिक्षकों, कृषिविज्ञों को तैयार किया। उन्होंने भोजनालयों, आहार-गृहों, दुकानों, थियेटरों, क्लबों, क्रीड़ांगनों, सार्वजनिक स्नानगृहों, धुलाईघरों और नाई की दुकानों के दरवाज़े खुले रखे। मिलिशिया और आग बुझाने वाले कर्मचारी चौबीसों घण्टे सक्रिय रहे।

जब से युद्ध छिड़ा था, वे इस तरह काम करते रहे थे मानो वे कई महीने एक कार्य-दिवस के बराबर हों। वे अपना वैयक्तिक जीवन भूल बैठे थे : उनके परिवार उनसे दूर पूरब में थे। वे अपने घरों में नहीं, बल्कि कार्यालयों और कारख़ानों में रहकर खाते और सोते रहे थे। दिन हो या रात, वे हर समय अपने-अपने काम पर मौजूद मिलते थे।

दोनबास का एक हिस्सा दुश्मनों के हाथ में चला गया, फिर दूसरा और उसके बाद तीसरा। लेकिन फिर भी जो हिस्सा उनके क़ब्ज़े में था, उसमें जान लड़ाकर उन्होंने अपने कर्तव्यों का पालन किया। दोनबास के आख़िरी हिस्से में उन्होंने अपनी शक्ति से अधिक काम किया था, क्योंकि वह एकमात्र हिस्सा था, जो उनके हाथ से अभी भी नहीं निकला था। अन्तिम क्षण तक उन्होंने लोगों के दिलों में यह जोत जलाये रखी कि उन्हें युद्ध द्वारा लादी गयी मुसीबतों के सामने झुकना नहीं है। जब-जब लोगों के प्रयास का आगे कोई नतीजा निकलता नहीं दिखायी पड़ा, उन्होंने बार-बार खुद अपनी आत्मिक और शारीरिक शक्ति की आख़िरी बूँदें तक निचोड़ने की हिम्मत की। यह अन्दाज़ लगाना असम्भव था कि उनकी शक्ति कहाँ समाप्त होती है, क्योंकि उनकी शक्ति असीम थी।

आख़िर वह दिन भी आ पहुँचा, जब दोनबास का यह आख़िरी हिस्सा भी उनके

हाथ से निकल गया। और फिर कई दिनों तक वे गाड़ियों पर हज़ारों कल-पुर्जे, दर्जनों हज़ार लोग और लाखों टन बहुमूल्य उपकरण लादते रहे। अब आख़िरी क्षण आ पहुँचा, जब खुद उनका वहाँ टिका रहना असम्भव हो गया।

वे क्रास्नोदोन ज़िला पार्टी समिति के सचिव के लम्बे-चौड़े कमरे में एक दूसरे से सटकर खड़े थे। सम्मेलन की मेज़ से लाल कपड़ा हटा लिया गया था। वे एक दूसरे की ओर देखते हुए हँसी-मज़ाक़ करते रहे, एक दूसरे के कन्धों पर मारते रहे, परन्तु विदाई के शब्द कहने में सकुचाते रहे। जो लोग विदा हो रहे थे, उनके दिल भारी और दुःखी थे और उनमें हूक-सी उठ रही थी।

इस अवसर पर इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेंको का, जो प्रान्तीय समिति में काम करता था, महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करना स्वाभाविक ही था। उसे पिछले साल की शरद से ही, जब पहले-पहल प्रान्त के दुश्मनों के हाथ में चले जाने का ख़तरा पैदा हुआ था, गुप्त रूम से काम करने के लिए चुना गया था। लेकिन उस समय यह बात आप ही आप स्थगित हो गयी थी।

इवान प्रोत्सेंको की उम्र पैंतीस साल थी। वह मझोले क़द का एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था। उसके भूरे बाल, जो कनपटियों के पास उतने घने नहीं थे, पीछे की ओर सँवारे हुए थे। उसके लाल चेहरे पर दाढ़ी थोड़ी बढ़ आयी थी। पहले उसकी दाढ़ी हमेशा घुटी रहती थी। लेकिन इधर दो हफ़्तों से, अर्थात उस समय से जब मोर्चे पर की स्थिति से स्पष्टतः प्रगट होने लगा था कि उसे छिपकर काम करना पड़ेगा, उसने दाढ़ी को छुआ तक न था।

उसने एक लम्बे क़द के अधेड़ व्यक्ति से, जिसने बिना पद-चिह्न का फ़ौजी कोट पहन रखा था, सहृदयता और विनम्रता से हाथ मिलाया। उसके पतले, मरदाने चेहरे पर वर्षों की मेहनत और थकान की झुर्रियाँ पड़ी थीं। सादगी और अधिकार से पूर्ण उसकी शान्त भाव-भंगिमा वस्तुतः उसके एक महान नेता होने की परिचायिका थी। संसार में जो कुछ होता है उसके बारे में अच्छी जानकारी और समझ-बूझ रखने वाले व्यक्ति के चेहरे पर ही ऐसी भाव-भंगिमा देखी जा सकती है।

यह व्यक्ति उक्राइनी छापेमारों के हाल में बने मुख्यालय के नेताओं में से एक था। वह क्रास्नोदोन में कल ही पहुँचा था। वह यहाँ प्रान्त के छापेमार दस्तों और सक्रिय फ़ौजी टुकड़ियों से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए आया था।

उस समय तक यह अनुमान न था कि सोवियत फ़ौज को इतना पीछे हटना पड़ेगा। आशा थी कि लाल सैनिक दुश्मनों को दोनेत्स या दोन के निचले हिस्से से आगे नहीं बढ़ने देंगे। छापेमार-मुख्यालय ने इवान प्रोत्सेंको को आदेश दिया था कि वह अपने छापेमार दस्ते का सम्पर्क उस फ़ौजी डिवीजन से स्थापित करे, जो उत्तरी

दोनेत्स पर रक्षा-दस्तों की सहायता के लिए कामेंस्क के क्षेत्र में भेजी जा रही थी। यह डिवीजन वोरोशीलोवग्राद के इर्द-गिर्द लड़ाई में काफ़ी नुक़सान उठाकर अब क्रास्नोदोन के निकट पहुँच रही थी। डिवीजन का कमाण्डर चालीस वर्ष का एक जनरल छापेमार-मुख्यालय और दक्षिणी मोर्चे के कमिसारों के साथ कल ही यहाँ पहुँचा था। अब वह इवान प्रोत्सेंको से विदा लेने की अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहा था।

इस बीच प्रोत्सेंको एक ऐसे छापेमार नेता से बातें कर रहा था, जो युद्ध से पहले उसका वरिष्ठ अधिकारी रह चुका था, अक्सर उसके घर आया करता था और उसकी पत्नी से अच्छी तरह परिचित था।

"तुम्हारी मदद और निर्देशन के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, अन्द्रेई येफ़ीमोविच," प्रोत्सेंको कह रहा था। "यदि तुम्हें केन्द्रीय मुख्यालय में जाने का मौक़ा मिले, तो वहाँ बता देना कि वोरोशीलोवग्राद के इर्द-गिर्द भी हमारे छापेमारों का एक अच्छा-ख़ासा दस्ता तैयार हो गया है। और यदि तुम्हें प्रधान सेनापति साथी स्तालिन के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाये, तो उन्हें विश्वास दिला देना कि हम अपने कर्तव्यों का पालन अच्छी तरह करेंगे।"

प्रोत्सेंको रूसी भाषा में बोल रहा था, लेकिन जब तब उसकी मातृभाषा – उक्राइनी के शब्द बरबस उसके मुँह से निकल पड़ते।

"अपने कर्तव्य का पालन करो और लोगों को यह सब मालूम हो जायेगा। मुझे तनिक भी सन्देह नहीं कि तुम अपना कर्तव्य पूरा करोगे," अन्द्रेई येफ़ीमोविच ने कहा। उसके झुर्रीदार चेहरे पर गम्भीर मुस्कराहट कौंध गयी। अचानक वह एकत्र लोगों की ओर मुड़ा। "यह प्रोत्सेंको बड़ा ही धूर्त है," उसने कहा। "इसने अभी लड़ना भी शुरू नहीं किया है कि सीधे केन्द्रीय मुख्यालय से रसद के लिए संकेत करने लगा है।"

सब लोग हँस पड़े। केवल वह जनरल नहीं हँसा, जो पूरी बातचीत के दौरान अपने गोल और मज़बूत चेहरे पर दृढ़ता और उदासी का भाव लिए चुपचाप खड़ा था।

प्रोत्सेंको की साफ़ नीली आँखें धूर्तता से चमक उठीं और उनमें से शरारत झलकने लगी।

"ओह, मेरे पास काफ़ी रसद है। और जब वह ख़त्म हो जायेगी, तब भी हम अपना काम बूढ़े कोव्पाक* के तरीक़ों से चला लेंगे : दुश्मनों से जो कुछ भी हमें हाथ लगता है, वह हमारा ही है। फिर भी, यदि तुम इसमें कुछ और मिलाना चाहते हो तो ..." प्रोत्सेंको ने अपने हाथ फैलाये और सब लोग हँस पड़े। उसके बाद वह एक

* स.अ. कोव्पाक (1887-1967) – महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में उक्राइन में छापेमार आन्दोलन के प्रसिद्ध नेता। – सं.

बुज़ुर्ग फ़ौजी अफ़सर से हाथ मिलाने के लिए मुड़ गया। यह व्यक्ति रेजिमेण्ट का कमिसार था।

"कृपया, मोर्चे के कमिसारों से कह देना कि हम उनके बहुत आभारी हैं। उन्होंने हमें बहुत मदद दी है। और तुम नौजवानों को मैं क्या कहूँ?" भावावेश में उसने बारी-बारी से नौजवानों से गले मिलना शुरू किया।

वह बड़ी पैनी दृष्टि वाला व्यक्ति था और समझता था कि किसी कर्मचारी को, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, यदि उसने अपना उत्तरदायित्व ठीक से निभाया है, तो उसे नाराज़ नहीं करना चाहिए। अतः छापेमार दस्तों को क़ायम करने और छिपे तौर पर कार्रवाई करने में मदद करने वाली हर संस्था और हर व्यक्ति को उसने धन्यवाद दिया। प्रान्तीय समिति के अपने सहकर्मियों से विदा होते वक़्त उसका हृदय दुःख से भरा था। युद्ध के कई महीनों के दौरान मैत्री और भाग्य ने उसे उनके साथ आबद्ध कर रखा था। ये कई महीने एक दिन की तरह गुज़र गये थे।

नम हुई आँखों से वह अपने मित्रों को छोड़कर चल पड़ा और चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखा कि कहीं कोई व्यक्ति रह तो नहीं गया, जिससे उसने विदा न ली हो।

नाटे और हृष्ट-पुष्ट जनरल ने तेज़ गति से प्रोत्सेंको की ओर बढ़कर अपना हाथ बढ़ा दिया। उसके सरल रूसी चेहरे पर कुछ शिशु-सुलभ भाव था। "बहुत-बहुत धन्यवाद," प्रोत्सेंको ने भावुकता से कहा। "स्वयं आने का कष्ट करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। अब हम एक सूत्र में अच्छी तरह आबद्ध हैं।" और उसने जनरल के मज़बूत हाथ से बड़े ज़ोर से हाथ मिलाया।

जनरल के चेहरे पर से वह शिशु-सुलभ भाव तिरोहित हो गया। उसने अनजाने ही एक अजीब ढंग से अपनी बड़ी-सी फ़ौजी टोपी से ढका सिर हिलाया, मानो उसके मन में खीझ उठी हो। फिर उसकी छोटी, चतुर आँखों में वही पहले जैसा सख़्त भाव आ गया। ज़ाहिर था कि वह प्रोत्सेंको से कुछ महत्वपूर्ण बात कहना चाहता था, लेकिन उसने मुँह नहीं खोला।

विदाई का अन्तिम क्षण आ पहुँचा।

"अपना ख़्याल रखना," अन्द्रेई येफ़ीमोविच ने कहा। उसके चेहरे का भाव बदल गया था और उसने प्रोत्सेंको को गले लगा लिया।

हर किसी ने फिर प्रोत्सेंको, उसके सहायक और बाक़ी अधिकारियों से हाथ मिलाया और वे एक-एक कर विदा होने लगे। उनके चेहरों पर कुछ दोषी का-सा भाव बना हुआ था। केवल जनरल ही अपना सिर उठाकर सामान्य तेज़ चाल से बाहर निकला। वैसे हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति का उस ढंग से चलना कुछ अजीब-सा ही लग रहा था। प्रोत्सेंको उन्हें पहुँचाने के लिए दरवाज़े तक नहीं गया। उसे केवल प्रस्थान करती

कारों की घरघराहट-भर सुनायी पड़ी।

इस बीच दफ़्तर में टेलीफ़ोन की घण्टियाँ बजती रहीं और प्रोत्सेंको का सहायक कभी एक टेलीफ़ोन का, तो कभी दूसरे का चोंगा उठाकर फ़ोन करने वालों को कहता रहा कि वे कुछ देर बाद फिर फ़ोन करें। अन्तिम मुलाक़ाती विदा ही हुआ था कि सहायक ने एक चोंगा उठाकर प्रोत्सेंको की ओर बढ़ा दिया।

"बेकरी वाले। ये कई बार फ़ोन कर चुके हैं।"

प्रोत्सेंको ने चोंगा अपने छोटे-से हाथ में ले लिया और मेज़ के एक कोने पर बैठ गया। अपने मित्रों को विदा करते वक़्त उसके चेहरे पर जो भावुकता और सौम्यता दिखायी पड़ी थी, जिस तरह हँसते, मज़ाक़ करते उसने उन्हें विदा किया था, उसका अब नाम-निशान भी न था। उसके चोंगा पकड़ने के ढंग से, उसके चेहरे की भाव-भंगिमा से और उसके बोलने के लहजे से शान्तचित्त अधिकार का भाव झलकता था।

"बकवास बन्द करो और मेरी बात सुनो!" फ़ोन पर उसने कहा। दूसरी ओर से बोलने वाला फ़ौरन चुप हो गया। "मैंने तुम्हें कह दिया है कि तुम्हारे पास गाड़ी पहुँचेगी। इसका मतलब है कि गाड़ी ज़रूर पहुँचेगी। गोर्तोर्ग* तुम्हारे यहाँ से पावरोटी लेकर सड़क पर लोगों को बाँटेगा। उन पावरोटियों को बर्बाद करना एक भयानक अपराध होगा। तुम ऐसा क्यों सोचते हो जबकि तुम लोगों ने रात भर जागकर रोटियाँ पकायीं? मैं समझता हूँ, तुम भागने की जल्दबाज़ी में हो। लेकिन जब तक मैं नहीं कहूँगा, तब तक चलने की जल्दबाज़ी न करो। समझे या नहीं?" उसने चोंगा रख दिया और बग़ल में घनघनाते फ़ोन की ओर बढ़ा।

खान 1(बी) की ओर जो खिड़की खुलती थी उसमें से सड़कों पर फ़ौजी टुकड़ियों, लारियों और शरणार्थियों की क़तारें साफ़-साफ़ दिखायी पड़ती थी। पहाड़ी की चोटी पर से भीड़ की तीन धाराएँ प्रवाहित होती-सी साफ़ नज़र आ रही थीं। मुख्य धारा का रुख दक्षिण की ओर नोवोचेर्कास्क और रोस्तोव की दिशा में था। दूसरी धारा दक्षिण-पूर्व की ओर लिख़ाया की दिशा में और सबसे छोटी धारा पूर्व की ओर कामेंस्क की दिशा में बढ़ती जा रही थीं। ज़िला समिति से जो कारें रवाना हुई थीं, वे एक पाँत में नोवोचेर्कास्क की ओर जा रही थीं। केवल जनरल की धूलभरी छोटी-सी जीप वोरोशीलोवग्राद राजपथ की ओर बढ़ी जा रही थी।

अपने डिवीजन की ओर लौटते हुए जनरल के विचार अब इवान प्रोत्सेंको से बहुत दूर उमड़-घुमड़ रहे थे। जलते सूरज की आड़ी-तिरछी किरणें उसके चेहरे पर पड़ रही थीं। कार, ड्राइवर, जनरल और पिछली सीट पर बैठे ख़ामोश हो गये मेजर तथा

---

* नगर वाणिज्य संगठन। – सं.

लम्बे सार्जेण्ट सभी धूल से सने थे। दूर तोपों की गड़गड़ाहट, सड़क पर से गुज़रती मोटरकारों की घरघराहट, नगर से भागती हुई भीड़ – यह सब देख-सुनकर भिन्न-भिन्न उम्र और कोटि के इन सैनिकों के विचार बरबस इस भयानक वास्तविकता की ओर जा रहे थे।

इवान प्रोत्सेंको से विदा होने वाले व्यक्तियों में से केवल जनरल और उक्राइन छापेमार-मुख्यालय के प्रतिनिधि ही ऐसे थे, जो फ़ौज के आदमी थे। अतः केवल वे ही अच्छी तरह समझ सकते थे कि जर्मन टैंकों द्वारा मील्लेरोवो पर कब्ज़ा करने तथा स्तालिनग्राद और दोनबास को जोड़ने वाले रेल-मार्ग पर स्थित मोरोज़ोव्स्की नगर पर हमला करने से कैसी भयानक स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। इसका मतलब था कि दक्षिणी मोर्चे का दक्षिण-पूर्वी मोर्चे से सम्पर्क टूट गया था, पूरा का पूरा वोरोशीलोवग्राद प्रान्त और रोस्तोव प्रान्त का अधिकांश भाग केन्द्रीय क्षेत्रों से विलग हो गये थे, तथा स्तालिनग्राद दोनबास से।

डिवीजन के कन्धों पर अब यह जिम्मेदारी थी कि मील्लेरोवो से दक्षिण की ओर जर्मनों को आगे बढ़ने से रोका जाये, ताकि दक्षिण मोर्चे की फ़ौजें पूरी तरह नोवोचेर्कास्क और रोस्तोव की ओर पीछे हट सकें। इसका मतलब था कि जनरल के अधीन डिवीजन चन्द दिनों के अन्दर या तो बिलकुल ख़त्म ही हो जायेगा या दुश्मनों से घिर जायेगा। घिर जाने के ख़याल से उसका मस्तिष्क विद्रोह कर उठा। वह यह सोच तक नहीं सकता था कि उसके डिवीजन का अस्तित्व ही मिट जायेगा। नजीता चाहे जो भी हो, वह जानता था कि अपने कर्तव्य का पालन करके ही रहेगा। उसके मस्तिष्क को यही समस्या मथ रही थी, लेकिन कोई समाधान न सूझ रहा था।

जनरल की उम्र ऐसी न थी कि वह बुजुर्गों की पाँत में खप सके, बल्कि सोवियत सेना के नेताओं की बिचली पीढ़ी के साथ वह खड़ा हो सकता था, उस पीढ़ी के साथ, जो तरुणों या साधारण किशोरों के रूप में गृहयुद्ध के समय या तुरन्त उसके बाद फ़ौज में भर्ती हुई थी।

एक मामूली सैनिक के रूप में इसी स्तेपी को, जिसमें आज उसकी जीप सरसराती भागी जा रही थी, वह पैदल पार कर चुका था। वह कुर्स्क के एक किसान का बेटा था और चरवाहे का काम करता था। वह 19 वर्ष की उम्र में फ़ौज में भर्ती हुआ था, जब कि पेरेकोप* विजय से देश को अमर गौरव प्राप्त हो चुका था। वह सैनिक तब बना, जब उक्राइन से मख़्नो के गिरोहों को खदेड़ा जा रहा था जो क्रान्ति

---

* पेरेकोप भूडमरुमध्य पर नवम्बर सन् 1920 में लाल सेना ने श्वेत सेना को बुरी तरह हरा दिया था, जिससे रूस में गृहयुद्ध की समाप्ति हो गयी। – सं.

के दुश्मनों के ख़िलाफ़ लड़ी गयी घमासान लड़ाइयों की अन्तिम कड़ी सिद्ध हुआ। वह फ्रुन्ज़े* के नेतृत्व में लड़ा था और उन्हीं कठिन वर्षों में उसने अपने को एक दृढ़ और योग्य सैनिक साबित कर दिखाया था। लेकिन उसकी तरक़्क़ी का राज़ केवल यही नहीं था : जनता में दृढ़ता और योग्यता कोई विरल गुण तो नहीं। विनीत भाव से, धीरे-धीरे वह उन तमाम गुणों को आत्मसात करता गया, जिन्हें एक लाल सैनिक अपनी टुकड़ी और बटालियन तथा रेजिमेण्ट के कमिसारों से सीख सकता था। ये अनगिनत कमिसार राजनीतिक विभाग और लाल सेना के पार्टी-दलों की देन थे। इन व्यक्तियों की स्मृति युग-युगान्तर तक अमर रहे! उसने केवल उनका हुनर ही नहीं सीखा, बल्कि उसे आत्मसात करके अपने जीवन का अविच्छिन्न अंग बना लिया। और तब अचानक वह अपने साथियों के बीच से असाधारण राजनीतिक प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्ति की तरह उठ खड़ा हुआ।

उसके बाद वह प्रगति के मार्ग पर आसानी से आगे बढ़ता चला गया, जैसा कि उसकी पीढ़ी के अन्य फ़ौजी कमाण्डरों के साथ भी हुआ।

जब युद्ध छिड़ा, तो वह एक रेजिमेण्ट का कमाण्डर था। उस समय तक वह फ्रुन्ज़े अकादमी में और ख़ाल्ख़ीन-गोल** तथा मन्नेरहेइम*** मोर्चे पर लड़ाई में अनुभव प्राप्त कर चुका था। उसकी उम्र और साधारण ख़ानदानियत वाले व्यक्ति के लिए अनसुना होते हुए भी यह बहुत अपर्याप्त और तुच्छ मालूम पड़ता था। देशभक्तिपूर्ण युद्ध ने उसे सेनानायक बनाया। वह तो स्वयं ऊपर उठा ही था, लेकिन घटनाओं ने उसे और भी ऊपर उठाया था। अब युद्ध के अनुभवों से वह और भी ऊपर उठता जा रहा था, ठीक उसी तरह से जिस तरह सैन्य प्रशिक्षण-स्कूल और फ्रुन्ज़े अकादमी में शिक्षण से तथा बाद में दो छोटे-छोटे युद्धों के अनुभवों से ऊपर उठा था।

यह नयी अनुभूति, यह आत्मचेतना, जो पलायन की सारी कटुताओं के बावजूद युद्ध के महीनों में और सबल होती गयीं, अद्भुत थीं। नैतिक दृष्टिकोण की तो बात ही छोड़िये, फ़ौजी दृष्टिकोण से भी सोवियत सैनिक दुश्मनों से बहुत ही श्रेष्ठ थे। सोवियत कमाण्डर अपनी केवल राजनीतिक चेतना के कारण ही नहीं, बल्कि अपने सैन्य-प्रशिक्षण, नयी बातों को आत्मसात करने और अपने अनुभवों का व्यापक एवं व्यावहारिक प्रयोग करने के कारण भी श्रेष्ठतर थे। सोवियत अस्त्र-शस्त्र दुश्मनों के

---

* फ्रुन्ज़े म.व. (1885-1925) – सोवियत पार्टी, सरकारी और सैनिक कार्यकर्त्ता। – सं.

** यहाँ अभिप्राय ख़ाल्खीन-गोल नदी के क्षेत्र में 1939 में जापानी साम्राज्यवादियों के ख़िलाफ़ हुई लड़ाइयों से है। – सं.

*** 1939-1940 के जाड़े में सोवियत-फ़िनलैण्ड युद्ध के समय कारेलडमरूमध्य पर मज़बूत क़िलाबन्दियाँ। – सं.

अस्त्र-शस्त्रों के मुक़ाबले में घटिया नहीं थे और कुछ मामलों में तो उनसे श्रेष्ठ भी थे। इन सब की सृष्टि और संचालन करने वाला सैन्य-सिद्धान्त महान ऐतिहासिक अनुभवों से उद्भूत हुआ था, लेकिन साथ ही वह नया और साहसपूर्ण भी था – क्रान्ति की तरह, जिसने इसे जन्म दिया, इतिहास में सर्वप्रथम सोवियत सत्ता की तरह, जनता की प्रतिभा की तरह, जिसने इस सिद्धान्त को रचकर कार्यरूप में परिणत किया। फिर भी, अब उन्हें पीछे हटना पड़ रहा है। उस समय दुश्मन अपनी अधिक संख्या के कारण, अचानक हमले और पाशविक क्रूरता के कारण जीत रहा था; वह अपनी सारी शक्ति लगाकर रिज़र्व सेना की चिन्ता किये बिना आगे बढ़ता आ रहा था।

अन्य सोवियत सेनापतियों की तरह जनरल काफ़ी पहले समझ गया था कि यह युद्ध मानव और सामग्री, दोनों का रिज़र्व तैयार रखकर लड़ा जाने वाला युद्ध है। यह जानना ज़रूरी हो गया था कि इस रिज़र्व को युद्धकाल में कैसे तैयार किया जा सकता है। उससे भी अधिक पेचीदा सवाल यह था कि उसका उपयोग कैसे किया जाये – जहाँ ज़रूरत हो, उसे वहाँ अविलम्ब भेज दिया जाये। मास्को के आस-पास दुश्मनों की हार और दक्षिण में पराजय सोवियत सैन्य सिद्धान्त, सोवियत सैनिकों और सोवियत हथियारों की श्रेष्ठता ही नहीं बल्कि यह भी सिद्ध करती थी कि जान-शक्ति और राज्य के महान रिज़र्व मितव्ययी, योग्य और निपुण हाथों में थे। वे जानते थे कि दुश्मन की तुलना में वे हर बात में आगे हैं। फिर भी आज उन्हें फिर पीछे हटना पड़ा रहा था। और सब लोग उन्हें हटते देख रहे थे। यह उनके लिए असह्य था।

जनरल अपने विचारों में डूबा हुआ चुपचाप जा रहा था। शरणार्थियों की भीड़ के बीच से उसकी जीप को अपना रास्ता बनाने में कुछ कम कठिनाई न हुई। उसकी जीप वोरोशीलोवग्राद राजपथ पर पहुँची ही थी कि तीन जर्मन ग़ोताख़ोर बमवर्षक क़रीब-क़रीब सिर के ऊपर से गुज़र गये। उनके इंजन चीख़ रहे थे। वे अचानक इस तरह प्रगट हुए कि कार में से कोई व्यक्ति कूदकर छिप न सका। सैनिक टुकड़ियों और शरणार्थियों की धारा दो दिशाओं में बँटकर सड़क के दोनों ओर विलीन हो गयी। कुछ तो ख़न्दक़ों में कूदकर मुँह के बल लेट गये और कुछ ने मकानों की नींवों से सटकर बसेरा लिया और कुछ पास के घरों की दीवारों से चिपक गये।

उसी क्षण जनरल की नज़र एक सफ़ेद जैकेट पहने अकेली खड़ी लड़की पर पड़ी। उसकी चोटियाँ लम्बी और काली थीं। वह सड़क के किनारे खड़ी थी। जहाँ तक नज़र जाती थी सड़क ख़ाली और वीरान दिखायी पड़ती थी। अकेली वह लड़की ही सड़क पर खड़ी नज़र आ रही थी। उसके चेहरे पर निर्भीकता और क्रोध का भाव झलक रहा था। वह उन रंगीन ‘पक्षियों’ को देख रही थी, जिनके चौड़े फैले डैनों पर काले क्रास के निशान बने थे। वे इतने नीचे उड़ रहे थे कि लगता था जैसे तेज़ हवा उसे

उड़ा ही ले जायेगी।

जनरल के गले से एक अजीब-सी आवाज़ निकली और उसके साथी घबड़ाकर उसकी ओर देखने लगे। गुस्से से उसने अपना बड़ा गोल सिर झटका और नज़र फेर ली। ऐसा लगा मानो कोट का कॉलर तंग होने के कारण उसने ऐसा किया हो। लेकिन सच यह था कि सड़क पर अकेली लड़की को देखकर वह विचलित हो उठा। जीप सड़क छोड़कर तेज़ी से मुड़ चली, ख़न्दकें पार करके राजपथ के समानान्तर ऊँची-नीची स्तेपी पर दौड़ चली – कामेंस्क की ओर नहीं, बल्कि वोरोशीलोवग्राद की दिशा में, जहाँ से जनरल का डिवीजन क्रास्नोदोन की ओर कूच कर रहा था।

अध्याय 4

ऊल्या ग्रोमोवा के सिर के ऊपर जो ग़ोताख़ोर बमवर्षक विमान कौंधकर गुज़र गये, वे नगर के पार कुछ दूर जाकर अपनी मशीनगनों से राजपथ पर गोलियाँ बरसाकर चिलचिलाती धूप में ओझल हो गये थे। कुछ मिनट बीतते न बीतते दूर धमाके की आवाज़ें सुनायी पड़ने लगीं। निस्सन्देह बमवर्षक विमान दोनेत्स पर बने पुल को धराशायी कर रहे थे।

पेर्वोमाइका बस्ती में हर चीज़ भागती-दौड़ती नज़र आ रही थी। ऊल्या ने घोड़ा-गाड़ियों और पूरे परिवारों को नगर से भागते देखा। वह उन सभी व्यक्तियों को अच्छी तरह जानती थी और वे भी उसे अच्छी तरह जानते थे, लेकिन उनमें से कोई भी उससे न बोला और न ही किसी ने उसकी ओर आँख तक उठाकर देखा।

ज़िना वीरिकोवा – 'जिम्नेज़ियम-स्कूल की छात्रा' – ने तो उसे सबसे अधिक हैरत में डाल दिया। डर से सहमी हुई वह दो औरतों के बीच दुबकी हुई एक गाड़ी में बैठी थी। वह गाड़ी बक्सों, गठरियों और आटे के बोरों से भरी हुई थी। टोपी पहने हुए एक बूढ़ा आदमी उस गाड़ी को हाँक रहा था। आटे से सने ऊँचे बूटों मे उसकी टाँगें गाड़ी के बाज़ू में झूल रही थीं। टेकरी पर पहुँचने के लिए वह जी-जान लगा रहा था, बूढ़े मरियल घोड़े की पीठ को लगाम के छोर से पीटे जा रहा था। हालाँकि बड़ी ही असह्य गरमी थी, फिर भी वीरिकोवा भूरे रंग के मोटे कोट में लिपटी हुई थी, लेकिन हैट और शाल, दोनों नदारद थे। उसकी चोटियाँ कोट के खुरदरे कॉलर में से बाहर झाँक रही थीं।

इस ज़िले में पेर्वोमोइका खनिकों की सबसे पुरानी बस्ती थी और क्रास्नोदोन नगर दरअसल यहीं से शुरू होता था। पेर्वोमोइका तो बिल्कुल नया नाम था। इन हिस्सों में कोयले का पता लगने से पहले पूरा का पूरा इलाक़ा कज़्ज़ाकों के छोटे-छोटे

गाँवों से भरा हुआ था, जिनमें सोरोकिन गाँव सबसे बड़ा गाँव गिना जाता था।

कोयले का पता शताब्दी के आरम्भ में लगा। शुरू-शुरू में कोयला निकालने के लिए ज़मीन के अन्दर बहुत नीचे नहीं जाना पड़ता था। खानें छोटी होती थीं और कोयले को ढलवें रास्तों से अश्व या हस्त चालित चकरियों के ज़रिए सतह पर लाया जाता था। खानों के बहुत-से मालिक थे, लेकिन जहाँ तक लोगों को याद है, पूरे इलाक़े को सोरोकिन कोयला-क्षेत्र के नाम से पुकारा जाता था।

खनिक मूलतः मध्य रूसी प्रान्तों से और उक्राइन से आये थे। वे कज़्ज़ाकों के गाँवों में बस गये थे और उनके परिवारों में उन्होंने शादी-ब्याह भी कर लिये थे। ख़ुद कज़्ज़ाक खानों में काम करने लगे। ये परिवार फले-फूले, और इनके बाल-बच्चे भी दूसरे परिवारों के साथ-साथ यहीं पर रह-बस गये।

जिस लम्बी पहाड़ी की रीढ़ पर से राजपथ वोरोशीलोवग्राद की ओर जाता था, उसके पार कई खानों की भरमार-सी हो गयी; और क्रास्नोदोन नगर को दो असमान भागों में विभक्त करने वाले नाले के पार तो और भी अधिक खानें उभर आयीं। इन नयी खानों का मालिक यार्मान्किन नाम का एक व्यक्ति था, जिसे लोग 'पगला रईस' भी कहा करते थे। वह बिल्कुल अकेला रहा करता था। इसका नतीजा यह हुआ कि इन खानों के इर्द-गिर्द जो गाँव बस गया, उसे भी लोग यार्मान्किन या 'पगला गाँव' कहने लगे। ख़ुद रईस भूरे पत्थर के एकमंज़िला मकान में रहता था। उसके आधे भाग में एक पौधाघर था, जिसमें विदेशी पौधों और पंछियों की भरमार थी। यह मकान नाले के पार ऊँची पहाड़ी पर बना था और चारों ओर से हवा इससे टकराती थी। इसे भी लोग 'पगला' कहा करते थे।

सोवियत शासन में प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत नयी खानें खोदी गयीं और सोरोकिन कोयला-क्षेत्र का केन्द्र इस इलाक़े में आ गया। आधुनिक आवास-गृह बनाये गये और कार्यालयों, अस्पतालों, स्कूलों और क्लबों के लिए बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हो गयीं। पहाड़ी पर, 'पगले रईस' के मकान की बग़ल में ज़िला समिति की ख़ूबसूरत, लम्बी इमारत नज़र आने लगी। 'पगले रईस' का मकान 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट का डिज़ाइन विभाग बन गया। इस मकान में अपनी ज़िन्दगी का एक तिहाई हिस्सा गुज़ारने वाले वर्तमान कर्मचारियों को उस मकान के इतिहास के बारे में रत्ती-भर भी जानकारी न थी।

अतः सोरोकिन कोयला-क्षेत्र क्रास्नोदोन नगर के नाम से विख्यात हुआ।

ऊल्या और उसके स्कूल की सहेलियाँ अपने नगर के साथ-साथ बड़ी और सयानी हुई थीं। छोटी स्कूल-छात्राओं के रूप में उन्होंने वृक्षारोपण समारोह में भाग लिया था और ज़मीन की उस ख़ाली पट्टी पर पेड़-पौधे लगाने में मदद की थी, जिसे

नगरपालिका ने पार्क के लिए अलग रखा था। वह पट्टी पहले कूड़ा-करकट और जंगली घास-पात से भरी पड़ी थी। वहाँ पर पार्क बनाने का विचार प्रथम कोमसोमोल-सदस्यों के मन में उठा था। वे उस पीढ़ी में से थे, जिसे 'पगला रईस', यार्मान्किन गाँव, प्रथम जर्मन आधिपत्य और गृहयुद्ध अच्छी तरह याद थे। उनमें से कुछ अभी भी क्रास्नोदोन में काम कर रहे थे। उनके बाल और बुद्योन्नी* कट की उनकी कज़्ज़ाकी मूँछें अब सफ़ेद हो चली थीं। लेकिन ज़िन्दगी के चक्कर ने उनमें से अधिकांश को देश के अलग-अलग हिस्सों में छितरा रखा था और कुछ तो ऊँचे ओहदों तक जा पहुँचे थे। पेड़-पौधे लगवाने की देखभाल दनीलिच नामक बाग़बान किया करता था, जो उस समय भी काफ़ी बूढ़ा था। हालाँकि अब वह बिल्कुल अपाहिज हो चला था, फिर भी पार्क का मुख्य बाग़बान बना हुआ था।

अब पार्क हरा-भरा और छायादार हो गया था तथा सैर और मनोरंजन का लोकप्रिय स्थान भी। युवक समुदाय को उस पार्क से ख़ास लगाव था : उनकी नज़रों में खिली जवानी का वह प्रतीक था, क्योंकि पार्क भी उन्हीं के साथ-साथ हरा-भरा हुआ था; उन्हीं की तरह वह जवान था, उसके हरे पेड़ों की फुनगियाँ अब हवा में झूमने लगी थीं, धुपहले दिनों में पेड़ों के नीचे छायाएँ शीतल हो चली थीं और वहाँ अलग-थलग कई रहस्यमय, गुप्त ओने-कोने भी पाये जा सकते थे। लेकिन चाँदनी रात में तो उस पार्क की शोभा का कहना ही क्या! और बारिश की झड़ियों से सराबोर शरद की रातों में ज़मीन की ओर फड़फड़ाकर गिरते पीले पड़े भीगे पत्ते अन्धकार में भटकने और सरसराने लगते, तो एक अजीब सिहरन-सी होने लगती।

सो बच्चे अपने पार्क और नगर के साथ-साथ बड़े और सयाने हुए और अपनी पसन्द के अनुसार, जैसा कि बच्चों का रवैया होता है, उन्होंने मुहल्ले, उपनगरों और सड़कों के अलग-अलग नाम रखे।

जब लकड़ी के बैरकनुमा नये फ़्लैट बनने लगे, तो चट से उस पूरे इलाक़े का नाम 'नोविए बराकी' (नयी बैरकें) पड़ गया। ये बैरकें तो कब की ख़त्म हो चुकी थी और उनकी जगह अब पत्थर की इमारतें नज़र आ रही थी, फिर भी वही पुराना नाम ज्यों का त्यों चलता रहा। एक उपनगर का नाम आज भी 'गोलुब्यात्निकी' (कबूतरों का दरबा) बना हुआ है। कभी वहाँ लकड़ी की तीन झोपड़ियाँ खड़ी थी और बच्चे उनके दरबों में कबूतर रखते थे। लेकिन आज उनकी जगह आधुनिक मकान खड़े नज़र आते हैं। एक उपनगर का नाम है 'चुरीलिनो'। वहाँ पर कभी चुरीलिन नामक

---

* बुद्योन्नी – गृहयुद्ध के काल के एक विख्यात सोवियत सेनापति, जिनकी बड़ी-बड़ी मूँछें थीं। – सं.

एक खनिक का छोटा-सा मकान था। एक और जगह का नाम है 'सेन्याकी'। यह नाम इसलिए पड़ा कि वहाँ पर कभी चारे की अटारी हुआ करती थी। 'देरेव्यान्नाया' अर्थात लकड़ी की सड़क, जो रेलवे लाइन के परे थी और जिसे पार्क ने नगर से अलग रखा था, अभी भी लकड़ी के घरों से पूर्णतः मुक्त न हुई थी। 17 बरस की अभिमानी लड़की वाल्या बोर्त्स यहाँ रहती थी। उसकी आँखें गहरी भूरी थी, पीठ पर सुनहरे बालों की दो चोटियाँ लहराती थीं। 'कामेन्नाया' अर्थात पत्थरों की सड़क पर पहले-पहल पत्थरों के आधुनिक मकान बने थे। अब हर जगह वैसी आधुनिक इमारतों की भरमार थी, फिर भी सड़क का नाम ज्यों का त्यों चला आ रहा था : आख़िर सबसे पहले पत्थरों के मकान तो वहीं बने थे न। नगर के एक पूरे मुहल्ले का नाम है 'वोस्मीदोमिकी' (आठ घर)। आज वहाँ कई सड़कें हैं, लेकिन कभी वहाँ ईंट के बने केवल आठ ही घर थे।

देश के हर कोने से लोग दोनबास में उमड़ पड़ते हैं। और उनका पहला सवाल होता है : "हम रहें कहाँ?"

ली फ़ान-चा नामक एक चीनी ने ज़मीन की एक ख़ाली पट्टी चुन ली और उस पर अपने लिए मिट्टी और फूस का एक घर बना लिया। शीघ्र ही उसने उसमें दूसरा कमरा जोड़ा, फिर तीसरा, फिर चौथा और वह मधुमक्खी के छत्ते जैसा दिखने लगा। उसके बाद वह कमरों को किराये पर देने लगा। बाद में नवागन्तुकों ने महसूस किया कि ली फ़ान-चा से किराये पर कमरे लेने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि ऐसे कमरे तो वे ख़ुद ही आसानी से बना सकते हैं। इस प्रकार लम्बा-चौड़ा एक नया मुहल्ला ही पनप उठा : एक दूसरे से सटी हुई बेशुमार झोपड़ियाँ उठ खड़ी हुईं और उस मुहल्ले का नाम 'शंघाई' पड़ गया। इस प्रकार नगर को दो हिस्सों में बाँटने वाले नाले के किनारे-किनारे और नगर के इर्द-गिर्द ख़ाली पट्टियों पर मधुमक्खी के छत्तों जैसी झोपड़ियाँ उठ खड़ी हुईं और इन छोटे-छोटे दरबों को 'नन्हे शंघाई' कहा जाने लगा।

सोरोकिन फ़ार्म और भूतपूर्व यार्मान्किन गाँव के बीच आधे फ़ासले पर स्थित इस इलाक़े की सबसे बड़ी खान – खान 1(बी) थी। खान में काम शुरू होने के दिन से ही क्रास्नोदोन नगर सोरोकिन गाँव की ओर फैलने लगा था और उसमें लगभग मिलकर एक हो गया था। अतः सोरोकिन गाँव, जो मुद्दत से पास-पड़ोस के छोटे-छोटे गाँवों से जुड़ा हुआ था, अब पेर्वोमाइका नामक बस्ती के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। यह अब नगर का एक मुहल्ला समझा जाने लगा था। यह अन्य मुहल्लों से इस माने में भिन्न था कि यहाँ अभी भी कज़्ज़ाकों के मूल गृह ज्यों के त्यों खड़े थे। कोई भी मकान एक जैसा नहीं था और सब निजी मकान थे। अभी भी ऐसे कज़्ज़ाक बरक़रार थे, जो खानों में काम नहीं करते थे, बल्कि स्तेपी की जमीन में गेहूँ उगाते थे और

कई सामूहिक फ़ार्म बनाये हुए थे।

जिस छोटे-से घर में ऊल्या ग्रोमोवा रहती थी, वह बस्ती के उस सुदूर छोर पर था, जहाँ से ज़मीन ढलवीं होती हुई स्तेपी में चली गयी थी। यह गाव्रीलोव गाँव रह चुका था और वस्तुतः प्राचीन कज़्ज़ाक झोपड़ी का जीता-जागता नमूना था।

मत्वेई मक्सीमोविच ग्रोमोव का जन्म उक्राइन के पोल्तावा प्रान्त में हुआ। वह कम उम्र में ही अपने बाप के साथ यूज़ोव्का में काम करने चला गया था। उन दिनों वह एक लम्बा और हृष्ट-पुष्ट, साहसी और ख़ूबसूरत जवान था, जिसके सिर पर घुँघराले सुनहरे बाल हुआ करते थे। लड़कियाँ उसे बहुत चाहती थीं। वह अपनी रोज़ी की तलाश में इस इलाक़े में तब पहुँचा, जब पहली खानें खोदी गयी थीं। ऊल्या को वह काल अतिप्राचीन लगता था। वह एक मेहनती कोयला-खनिक के रूप में विख्यात हुआ और कोई आश्चर्य की बात नहीं कि वह मत्र्योना सवेल्येव्ना के दिल में उतर गया, जो उस समय गाव्रीलोव गाँव की काली आँखों वाली कज़्ज़ाक बालिका मत्र्योशा के नाम से मशहूर थी।

रूस-जापान युद्ध के दौरान वह मास्को ग्रेनेडियर की 9वीं रेजिमेण्ट में काम कर चुका था और छह बार घायल हो चुका था। दो बार तो वह बहुत बुरी तरह घायल हुआ था। वह कई बार पदकों से विभूषित किया जा चुका था। आख़िरी बार उसे रेजिमेण्ट के झण्डे की रक्षा करने के लिए सेण्ट जार्ज पदक से विभूषित किया गया था।

उसके बाद से उसका स्वास्थ्य गिरने लगा था। कुछ समय तक वह छोटी-छोटी खानों में काम करता रहा और बाद में किसी खान में गाड़ीवान का काम करने लगा। कुछ इधर-उधर भटकने के बाद वह गाव्रीलोव गाँव के उस छोटे मकान में बस गया था, जो मत्र्योशा को दहेज में मिला था।

ऊल्या अपने घर के छोटे-से फाटक पर पहुँच ही पायी थी कि उसका संकल्प अचानक शिथिल पड़ गया। वह अपने माँ-बाप को प्यार करती थी। वह जवान थी और हर जवान लड़के और लड़की की तरह उसने कभी न कभी कल्पना की ही थी कि एक दिन परिवार से परे अपने जीवन की अलग राह उसे पकड़नी पड़ेगी, अपने बारे में खुद फ़ैसला करना पड़ेगा। और वह क्षण अब आ पहुँचा था।

वह जानती थी कि उसके माँ-बाप अस्वस्थ और वृद्ध थे और अपने घर से उनका इतना लगाव था कि वे उसे छोड़ नहीं सकते थे। उनका बेटा फ़ौज में था और ऊल्या अभी निरी बच्ची ही थी, जिसने यह अभी निश्चय ही नहीं किया था कि वह भविष्य में क्या करेगी। वह अभी नौकरी नहीं करती थी, अतः अपने माँ-बाप की परवरिश भी नहीं कर सकती थी। दूसरी लड़की ऊल्या से बहुत बड़ी थी। उसने

खान-प्रबन्ध-कार्यालय के एक कर्मचारी से शादी की थी। उसका पति काफ़ी बड़ी उम्र का था और ग्रोमोव परिवार के साथ रहता था। उसके अपने बाल-बच्चे थे और उसने भी वहाँ से न हटने का पक्का इरादा कर लिया था। बहुत पहले ही उन सबने यह निश्चय कर रखा था कि चाहे जो भी हो, वे अपना घर-बार छोड़कर नहीं जायेंगे।

अभी तक ऊल्या के पास न कोई निश्चित योजना थी, न उसके सामने अपना कोई निश्चित उद्देश्य। वह यही सोचती रही कि दूसरे लोग बतायेंगे कि उसे क्या करना चाहिए। पहले उसकी इच्छा हुई थी कि वह वायुसेना में भर्ती हो। इसके लिए उसने अपने भाई को लिखा भी था कि क्या वह किसी विमान-चालन स्कूल में उसे दाख़िल करा सकता है क्योंकि वह ख़ुद वायु-सेना की किसी टुकड़ी में मैकेनिक था। कभी-कभी वह सोचती कि क्रास्नोदोन की अन्य लड़कियों की तरह नर्सिंग स्कूल में भर्ती हो जाना सबसे आसान है। इस रास्ते से वह शीघ्र ही अपने को मोर्चे के सैनिकों के साथ पा सकेगी। कभी-कभी वह शत्रुओं द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में छापेमारों के साथ गुप्त रूप से काम करने के सपने देखती। कभी अचानक उसके मन में यह इच्छा प्रबल हो उठती कि वह अधिक से अधिक विद्या अर्जन करे। युद्ध तो आख़िर हमेशा चलता नहीं रहेगा। एक दिन यह ख़त्म होगा ही और सब को जीना और काम तो करना ही पड़ेगा। जो लोग अपना धन्धा अच्छी तरह जानते हैं, उनकी माँग और पूछ होगी। और वह बड़ी जल्दी शिक्षिका या इंजीनियर बन सकती है। लेकिन उसका भविष्य क्या होगा, यह किसी ने निश्चय नहीं किया था, और अब वह वक़्त आ गया था कि वह फाटक खोलकर...

और तभी उसने महसूस किया कि ज़िन्दगी कितनी ख़ौफ़नाक हो सकती है। उसे अपने माँ-बाप को दुश्मनों की दया पर छोड़कर ख़ुद मुसीबतों, दर-दर भटकने और संघर्ष की अनजानी, ख़ौफ़नाक दुनिया में कूदना ही पड़ेगा... उसके घुटने काँपने लगे और उसे लगा कि जैसे अभी गिर पड़ेगी। ओह, यदि वह अपनी नन्ही-सी आरामदेह झोपड़ी तक रेंगकर पहुँच जाती, सिटकिनियाँ चढ़ा देती, धुले-धुलाये अछूते बिछावन पर पड़ जाती और अनिश्चित मन से चुपचाप पड़ी रहती! यों भी काले बालों वाली नन्ही ऊल्या की किसे परवाह थी! बस बिछावन पर पड़ जाना, पैर समेट लेना, अपने प्रिय लोगों के साथ रहना और जो कुछ होता उसे होने देना... लेकिन होगा क्या? और कब? और क्या वह मुद्दत तक बना रहेगा? शायद वह उतना ख़ौफ़नाक न हो?

लेकिन साथ ही ऐसे समाधान को स्वीकार करने के विचार से वह सिहर उठी। वह लज्जा अनुभव करने लगी। अब काफ़ी विलम्ब हो चुका था, सोचने का वक़्त चला गया था। उसे मिलने के लिए उसकी माँ दौड़ी आ रही थी। उसमें वह शक्ति

कहाँ से आ गयी थी कि वह बिछावन से उठ खड़ी हुई थी? उसके पीछे-पीछे थे ऊल्या के पिता, उसकी बहन और उसका बहनोई। बच्चे भी दौड़े चले आये। उनके चेहरों पर असाधारण उत्तेजना झलक रही थी; उसका नन्हा भतीजा रो रहा था।

“कहाँ चली गयी थी, मेरी बच्ची? हम सुबह से ही तुम्हारी तलाश कर रहे हैं,” माँ बिलख पड़ी और उसके आँसू उसके दुबले, सँवलाये और झुर्रीदार गालों पर से ढुलक चले। उन्हें पोंछने की माँ ने कोई चेष्टा नहीं की। “भागकर अनातोली के पास जाओ! कहीं वह चला न गया हो! ओह, मेरी दुलारी!”

माँ बूढ़ी हो चली थी। उसकी कमर झुक गयी थी, लेकिन बाल अभी भी काले थे। हालाँकि वह छोटे क़द की थी, पर उसकी काली आँखें अभी भी सुन्दर थीं, जिन्हें देखकर एक बड़े जंगली पक्षी की याद हो आती थी। वह बुद्धिमती थी और उसमें चारित्रिक बल था। वह जो कुछ भी कहती, उसे बूढ़ा मत्वेई मक्सीमोविच और बेटियाँ बड़े ध्यान से सुनते थे। लेकिन अब वक़्त आ गया था कि बेटी को अपना फ़ैसला खुद करना था और उसकी माँ की शक्ति जवाब दे रही थी।

“कौन मेरी तलाश कर रहा था? अनातोली?” ऊल्या ने जल्दी-जल्दी बोलते हुए पूछा।

“ज़िला समिति का कोई आदमी,” पिता ने जवाब दिया। वह माँ के पीछे खड़ा था और उसके बड़े-बड़े हाथ उसके दोनों ओर झूल रहे थे।

वह अब कितने बूढ़े दिखायी पड़ने लगे हैं! सामने से सब बाल झड़ गये हैं। केवल सिर के पिछले भाग और कनपटियों पर ही पहले के घुँघराले बालों के कुछ अवशेष दिखायी पड़ते हैं। पहले की लाल-सी ग्रेनेडियर कट मूँछें भी जहाँ-तहाँ सफ़ेद हो चली हैं और खूँटीदार दाढ़ी तो बिल्कुल ही सफ़ेद हो गयी है। ईंट के रंग जैसा चेहरा – सैनिक का चेहरा – झुर्रियों से भर गया है, और नाक का रंग नीलगूँ हो चला है।

“दौड़ो, दौड़ो, मेरी बच्ची! उसकी माँ ने फिर ज़ोर दिया। “आहे, नहीं, ठहरो! मैं अनातोली को आवाज़ देती हूँ!” छोटी-सी बूढ़ी औरत साग-सब्ज़ी की क्यारियों में बीच पगडण्डी पर पोपोव परिवार के घर की ओर दौड़ चली। पोपोव दम्पत्ति के बेटे अनातोली ने उसी साल ऊल्या के साथ स्कूल की पढ़ाई ख़त्म की थी।

“लेट जाओ, माँ, तुम आराम करो! मैं खुद ही चली जाऊँगी,” ऊल्या ने कहा, लेकिन उसकी माँ बाग़ के छोर पर चेरी के पेड़ों के बीच दौड़ती चली जा रही थी। बूढ़ी औरत और जवान लड़की दोनो भागने लगीं।

ग्रोमोव और पोपोव परिवारों के बाग़ एक दूसरे से सटे हुए थे। दोनों बाग़ ढलवाँ होते हुए सूखे नाले से मिल गये थे और वहाँ लकड़ी का बाड़ा लगा हुआ था। हालाँकि

ऊल्या और अनातोली बचपन से ही एक दूसरे के पड़ोसी थे, फिर भी वे दोनों स्कूल से या कोमसोमोल की बैठकों से बाहर कभी भी एक दूसरे के घनिष्ठ सम्पर्क में नहीं आये थे। कोमसोमोल की बैठकों में अनातोली अक्सर भाषण दिया करता था। बचपन में उसकी बपनी बालक-सुलभ अभिरुचियाँ थीं और जब उच्च कक्षाओं में वह आया, तो उसके साथी यह कहकर उसे चिढ़ाया करते थे कि वह लड़कियों से शर्माता है। और यह सच है कि जब सड़क पर या किसी के घर पर ऊल्या से या किसी अन्य लड़की से उसका आमना-सामना हो जाता, तो वह इतना झेंप जाता कि उसका अभिवादन करना भी भूल जाता। यदि अभिवादन करना उसे याद भी पड़ जाता, तो वह चुकन्दर-सा लाल हो उठता और फलस्वरूप लड़की के चेहरे पर भी सुर्ख़ी दौड़ जाती। कभी-कभी लड़कियाँ इसकी चर्चा करके आपस में उसकी खिल्ली उड़ातीं। फिर भी ऊल्या की नज़र में वह बहुत ऊँचा था : वह बहुत पढ़ा-लिखा, चतुर और आत्मसन्तुष्ट था। उसे भी वे ही कविताएँ अच्छी लगती थीं, जो ऊल्या को। वह गोबरैलों, तितलियों, पौधों और पत्थरों के नमूनों का संग्रह करने का शौक़ीन था।

"ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना, ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना!" बूढ़ी माँ लकड़ी के बाड़े के ऊपर झुककर पड़ोसी के बाग़ में झाँकते हुए चिल्लायी। "अनातोली, मेरे बच्चे, ऊल्या वापस आ गयी है!"

अनातोली की नन्ही बहन ने बाग़ में से जवाब दिया, हालाँकि पेड़ों के बीच छिपे रहने के कारण वह दिखायी नहीं पड़ रही थी। उसके बाद खुद अनातोली चेरी के पेड़ों के बीच से दौड़ता हुआ लपका। चेरी के पेड़ पके फलों से लदे थे। वह उक्राइनी क़मीज़ पहने था, जिसके दामन और आस्तीन पर कशीदे का काम था और सिर पर छोटी-सी उज़्बेकी टोपी लगाये हुए था, ताकि उसके सँवराये सुनहरे लम्बे बाल चिपके रहें।

उसका पतला और धूप में तपा, गम्भीर चेहरा गर्मी से लाल हो गया था और पसीना इस क़दर चू रहा था कि बाँहों के नीचे गोल-गोल धब्बे बन गये थे। स्पष्ट था कि वह ऊल्या से झेंपना बिल्कुल ही भूल बैठा था।

"ऊल्या," वह हाँफते हुए बोला, "तुम्हें मालूम है कि मैं सुबह से ही तुम्हारी तलाश कर रहा हूँ। मैं सब लड़के-लड़कियों के यहाँ फेरा लगा आया और तुम्हारे कारण मैंने विक्टर पेत्रोव को भी रोक रखा है। वे सब अब यहीं हैं और उसका पिता बहुत बड़बड़ा रहा है। सो फ़ौरन अपना सामान-असबाब ले आओ!"

"लेकिन हमें तो कुछ भी मालूम नहीं। आख़िर आदेश किसने दिया?"

"ज़िला समिति ने। हर किसी को जाना होगा। किसी भी क्षण जर्मन यहाँ आ पहुँचेंगे! मैंने सब को चेता दिया है, लेकिन तुम्हारी सहेलियों में से कोई भी मुझे नहीं मिली। मुझे बेहद चिन्ता हो रही थी। और इधर पोगोरेली गाँव से विक्टर पेत्रोव और

उसके पिता आ गये हैं। गृहयुद्ध के समय उसके पिता जर्मनों के ख़िलाफ़ छापेमार सैनिकों के साथ थे। उन्हें एक मिनट के लिए भी यहाँ रोकना ठीक न होगा। उधर विक्टर ख़ासतौर पर मुझे लेने के लिए आया है। ऐसे होते हैं सच्चे दोस्त! उसके पिता रेंजर हैं और उनके पास वन-विभाग के बहुत ही उम्दा घोड़े हैं। मैंने उन्हें थोड़ा रुकने के लिए कहा। उसके पिता भला-बुरा सुनाने लगे, तो मैंने कहा : 'आप खुद ही एक पुराने छापेमार सैनिक हैं। आप तो जानते ही हैं कि इस तरह एक साथी को पीछे छोड़कर जाया नहीं जा सकता। इसके अलावा आप तो बड़े बहादुर आदमी भी हैं,' और सो इस तरह हम तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं।"

अनातोली एक साँस में सब कुछ कह गया। वह ऊल्या को अपने सारे अनुभवों से वाक़िफ़ करा देने के लिए मानो अधीर हो उठा था। उसकी भूरी-नीली आँखें अचानक चमकने लगीं, जिससे उसका चेहरा आकर्षक हो उठा था। यो उसकी भौंहों का रंग बहुत हल्का था।

यह कैसे हो सका कि अब तक वह उसे भाया नहीं था? उसके चेहरे पर आत्मिक बल की आभा थी, उसके गदराये होंठों की गढ़न और नाक की बनावट में कोई ख़ास बात थी।

"अनातोली..." ऊल्या बोली। "अनातोली, तुम..." उसकी आवाज़ काँप उठी। उसने बाड़े के ऊपर से अपना पतला, सँवलाया हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

और अनातोली सचमुच लाल हो उठा।

"जल्दी करो, जल्दी," वह ऊल्या की काली आँखों से अपनी आँखें चुराते हुए बोला। ऊल्या की आँखें उसे सीधे बेधती हुई-सी लग रही थीं।

"मैंने तुम्हारा सामान-असबाब ठीक कर दिया है – तुम लोग फाटकों के पास पहुँचो। जल्दी करो, जल्दी।" ऊल्या की माँ बात पर ज़ोर देते हुए बोली। उसके गालों पर से अश्रुधारा बह रही थी।

इस आख़िरी क्षण तक ऊल्या की माँ को यह विश्वास न था कि उसकी बेटी को इस विशाल संसार में अकेले निकल पड़ना होगा। एक ऐसे संसार में, जो हर क्षण टूट रहा था। लेकिन वह जानती थी कि बेटी का यहाँ रुके रहना ख़तरे से ख़ाली नहीं है। सिवाय इसके यहाँ कुछ नेक लोग भी मिल गये थे, जो हर बात की जिम्मेवारी ले सकते थे और उनके साथ-साथ जाने वाला एक बुजुर्ग भी था, सो सब कुछ तय हो गया।

"लेकिन, अनातोली, तुमने वाल्या फ़िलातोवा को चेता दिया है न? वह मेरी सबसे अच्छी सहेली है और उसके बिना मैं जा नहीं सकती," ऊल्या ने दृढ़ता के साथ बोली।

अनातोली को सुनकर बड़ा क्लेश हुआ और वह उसे अपने चेहरे पर प्रगट होने से रोक भी न सका और न उसने इसकी कोशिश ही की।

"सुनो, ये घोड़े मेरे तो नहीं, और हम चार ही जने हैं ... मेरी तो समझ में नहीं आता," वह खोया-खोया-सा बोला।

"लेकिन तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैं वाल्या को छोड़कर कभी नहीं जा सकती।"

"मानता हूँ कि घोड़े मज़बूत हैं, लेकिन पाँच आदमी तो ..."

"अच्छी बात है, अनातोली। मेरे लिए जो तुमने इतना कुछ किया है उसके लिए तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद। तुम आगे चलो और मैं वाल्या के साथ पैदल आती हूँ," ऊल्या ने संकल्प के साथ कहा। – "अच्छा, अलविदा, अनातोली!"

"हे भगवान! निरी बच्ची है! तुम पैदल नहीं जा सकती। मैं तो तुम्हारे कपड़े-लत्ते एक बक्से में रख भी चुकी हूँ, और बिछावन का क्या होगा?" माँ के आँसू फिर बरसने लगे। वह बुरी तरह सुबकती रही और बच्चों की तरह हाथों से आँखों को मलती रही।

अपनी सहेली के प्रति ऊल्या का यह प्रेम-भाव देखकर अनातोली को आश्चर्य न हुआ। यह उसे बिल्कुल स्वाभाविक ही लगा। यदि ऊल्या का व्यवहार इसके विपरीत होता, तो अनातोली को आश्चर्य हुआ होता। अतः उसने न खीझ का भाव दिखलाया और न अधीरता का ही। वह इस स्थिति से उबरने का कोई न कोई रास्ता ढूँढ़ निकालने की कोशिश करने लगा।

"तुम उससे कम-से-कम पूछकर तो देखो," अनातोली ने सुझाव दिया। "शायद वह चली ही गयी हो या सम्भव है जाना ही न चाहे। बात यह है कि वह कोमसोमोल की सदस्या जो नहीं है।

"मैं अभी दौड़कर उसके यहाँ जाती हूँ, ऊल्या की माँ अचानक उमंगते हुए बोली। अब तक वह भुला बैठी थी कि वह कितनी कमज़ोर थी।

"जाओ, माँ, लेट रहो। मैं खुद ही सब कुछ कर लूँगी," ऊल्या बोली। उसे चिढ़ होने लगी थी।

"अनातोली! आ रहे हो!?" विक्टर पेत्रोव की ऊँची और गम्भीर आवाज़ पोपोव की झोपड़ी से सुनायी पड़ी जो बाग़ के दूसरे छोर पर थी।

अनातोली अपने विचारों में उलझे हुए ही ज़ोर से बोला : "उनके घोड़े काफ़ी मज़बूत हैं। लेकिन ज़रूरत पड़ने पर हममें से एक आदमी बारी-बारी से पैदल चल सकता है।"

ऊल्या को अपनी सहेली की खोज में जाना नहीं पड़ा। वह अपनी माँ के साथ अपने घर पहुँच ही पायी थी कि उसकी नज़र वाल्य पर पड़ी, जो ऊल्या के रिश्तेदारों

से घिरी खड़ी थी। रिश्तेदार सायबान और गोशाला तथा छोटे रसोईघर के बीच खड़े थे। उसका चेहरा धूप में तपे होने के बावजूद पीला और मुरझाया नज़र आ रहा था।

"जल्दी करो और अपना सामान-असबाब ले आओ, वाल्या! उनके पास घोड़े हैं और एक गाड़ी भी। हम उनसे अनुरोध करेंगी कि हम दोनों को वे ले चलें!" ऊल्या जल्दी-जल्दी बोली।

"ठहरो, मुझे तुमसे कुछ कहना है," वाल्या अपनी सहेली का हाथ पकड़ते हुए बोली और उसे फाटक की ओर खींचकर ले गयी।

"सुनो, ऊल्या," वह बोली और सीधे उसकी ओर देखने लगी। उसकी स्वच्छ और बड़ी-बड़ी आँखों में वेदना झलक रही थी। "ऊल्या, मैं कहीं नहीं जाऊँगी मैं... मैं.. .ऊल्या," वह दृढ़तापूर्वक कहती गयी, "तुम अन्य लोगों से किसी न किसी तरह भिन्न हो। मेरा विरोध न करो... तुममें अपनी एक महानता है, विशिष्टता है। मेरी माँ कहती है कि भगवान ने तुम्हें पंख दिये हैं और उसका कहना ठीक ही है...ऊल्या, हम साथ-साथ कितने प्रसन्न रही हैं," वह स्नेह के आवेश में बोलती गयी। "इस संसार में मेरी खुशी का आधार एक तुम्हीं रही हो, लेकिन मैं... मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। मैं एक साधारण लड़की हूँ और मेरे सारे सपने सदा साधारण बातों के बारे में ही मँडराते रहे हैं... कि मैं स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करने को बाद कोई काम करूँगी, किसी अच्छे और दयालु लड़के से मेरी मुलाक़ात होगी, शादी-ब्याह होगा और बाल-बच्चे होंगे – एक बेटा और एक बेटी; और हमारा जीवन सीधा-सादा और सुखी होगा। इससे अधिक और कुछ मैंने सोचा ही नहीं। ऊल्या, मैं संघर्ष नहीं कर सकती और इस अजनबी दुनिया में अकेले क़दम रखते मुझे डर लगता है... ओह, मैं जानती हूँ कि अब सब कुछ ख़त्म हो गया है, मेरे सारे सपने और जो भी था, वह सब कुछ। लेकिन मेरी एक बूढ़ी माँ है और मैंने किसी का कभी अपकार नहीं किया है। मेरी कोई हस्ती नहीं, और मैं... मैं यहाँ रुकी रहूँगी और... और... मुझे अफ़सोस है... "

वह उस रूमाल को अपने चेहरे पर रखकर फफक-फफककर रोने लगी, जिसे वह बातचीत के दौरान मसोसती रही थी। ऊल्या भी अचानक अपनी छाती से वाल्या का सुगन्धित, सिर सटाते हुए फूट-फूटकर रो पड़ी।

वे बचपन की सहेलियाँ थी। स्कूल में वे साथ ही एक क्लास से दूसरे क्लास में बढ़ती चली गयी थी। साथ ही उन्होंने एक दूसरे के सुख-दुख और राज़-भेद में हिस्सा लिया था। ऊल्या सामान्यतः संयमी थी और आवेश की पराकाष्ठा पर ही अपनी अनुभूतियों को उभरने देती थी, लेकिन वाल्या सहज ही मन में जो कुछ होता, कह डालती थी। कभी-कभी वह ऊल्या को समझ नहीं पाती थी, लेकिन तरुण जनों को एक-दूसरे को समझने की उतनी परवाह नहीं रहती। उनके लिए सबसे बड़ी बात

होती है विश्वास की भावना और सुख-दुख की साझेदारी। जैसा कि ज़ाहिर था, वे एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न थीं... लेकिन उनकी सुकुमार और सच्ची दोस्ती की गाँठ बहुत मज़बूत थी, दोनों ने एक-साथ इतने अच्छे दिन बिताये थे कि जुदाई का ग़म उनके दिल को चूर-चूर किये जा रहा था।

वाल्या को ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने जीवन की एक बहुत ही अनमोल और सबसे बड़ी चीज़ छोड़े जा रही है और उसके आगे कुछ ऐसी चीज़ पड़ी है, जो अन्धकारपूर्ण अनिश्चित और भयावह है। ऊल्या यह महसूस कर रही थी कि वह एक ऐसे व्यक्ति से जुदा हो रही है, जिसके सामने – चाहे वह दुख का क्षण रहा हो या सुख का – वह अपने मन की गाँठ खोलकर रख दिया करती थी। उसे यह कभी भी परवाह नहीं रही कि उसकी सहेली उसे समझ सकी या नहीं। वह तो केवल इतना भर जानती थी कि वाल्या उस पर अपनी सहृदयता, स्नेह और कम-से-कम सहानुभूति तो अवश्य ही उँडेलकर रख देगी। सो ऊल्या इसलिए रो पड़ी कि उसका बचपन जुदा हो रहा था। वह अब बड़ी हो चुकी थी। उसे अब संसार में क़दम रखना ही होगा, और अकेले ही।

और तभी ऊल्या को याद हो आया कि वाल्या ने किस तरह उसके बालों में से कुमुदिनी को निकालकर ज़मीन पर फेंक दिया था। उसने ऐसा क्यों किया था, अब उसकी समझ में आ गया। उस भयानक सदमे के क्षणों में वाल्या ने अच्छी तरह महसूस किया था कि विस्फ़ोट से उड़ती हुई कोयला-खानों की पृष्ठभूमि में अपने बालों में कुमुदिनी खोंसे ऊल्या कितनी अजीब-सी दीख पड़ेगी। नहीं, वह साधारण लड़की नहीं, उसके कहने से क्या होगा। वह बहुत-सी बातें जानती है।

उन दोनों के अन्तरतम में यह आशंका उठ खड़ी हुई थी कि उनके बीच जो कुछ भी हो रहा है, आख़िरी है। वे केवल महसूस ही नहीं कर रही थी, बल्कि जान भी रही थीं कि वे किसी विशिष्ट आत्मिक अर्थ में हमेशा, हमेशा के लिए जुदा हो रही हैं। अतः वे हृदय से रो रही थीं। उनके आँसू निर्बाध फूटे पड़ रहे थे और उनमें से किसी ने भी लाज का अनुभव कर आँसुओं को रोकने की कोशिश न की।

उन अभिशप्त वर्षों में असंख्य आँखों के आँसुओं से केवल दोनबोस ही नहीं बल्कि क्षत-विक्षत और रक्तरंजित पूरी की पूरी सोवियत भूमि ही गीली हो उठी थी। उनमें से आँसू भी थे जो शैथिल्य, त्रास और असह्य शारीरिक पीड़ा से उत्पन्न हुए थे। लेकिन कितने ही आँसू सर्वोत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ और पुनीत भावनाओं से प्रेरित होकर बहे हैं, जिनकी मिसाल मानवजाति के इतिहास में मिलनी कठिन है।

एक लम्बी-सी घोड़ा-गाड़ी, जिसमें दो मज़बूत घोड़े जुते थे, फाटक की ओर खड़खड़ाती चली आ रही थी। वह गठरियों और बक्सों से भरी थी। उसे एक मोटा

और बुजुर्ग व्यक्ति हाँक रहा था। उसके माँसल चेहरे की बनावट से अभी भी ताक़त टपकती थी। वह चमड़े की छज्जेदार टोपी और अर्धसैनिक क़मीज पहने था।

ऊल्या अपनी सहेली से अलग हो गयी। उसने अपनी लम्बी हथेली से आँसुओं को पोंछा और उसके चेहरे का स्वाभाविक भाव फिर लौट आया।

"अलविदा, वाल्या!"

"अलविदा, ऊल्या!" वाल्या ने रुँधे कण्ठ से जवाब दिया।

लड़कियों ने एक दूसरे को चूमा।

गाड़ी फाटक तक चली आयी। उसके पीछे-पीछे अनातोली की छोटी बहन नताशा अपनी माँ ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना के साथ चली आ रही थी। उसकी माँ एक लम्बी-सी, मोटी-ताज़ी कज़्ज़ाक महिला थी, जिसकी आँखें चमकीली और बाल सुनहरे रंग के थे। उसका पिता युद्ध छिड़ते ही मोर्चे पर चला गया था। माँ और बेटी आँसुओं में डूबी हुई थीं। बहुत अधिक दौड़-धूप और गरमी से उनके चेहरे लाल हो रहे थे। वे पसीने से तर-बतर थीं।

अनातोली गाड़ी में बैठा हुआ था। उसकी बग़ल में काले बालों वाला विक्टर पेत्रोव बैठा था। वह सुन्दर था और उसकी निर्भीक आँखों से विषाद झलक रहा था। वह खुले गले की क़मीज़ पहने था। किसी मुलायम चीज़ में लिपटा और तार से बँधा एक गिटार उसके हाथों में था।

ऊल्या मुड़कर अपने परिवार वालों की ओर गयी। उसके पाँव उठाये न उठते थे। उसका बक्सा, शाल और गठरी घर में से बाहर निकाल कर रख दी गयी थीं। एक बड़े जंगली पक्षी की-सी काली आँखों वाली उसकी बूढ़ी माँ ऊल्या की ओर दौड़ी।

"ओह, माँ!" ऊल्या चिल्लायी।

बूढ़ी माँ ने अपनी झुर्रीदार बाँहें फैला दी और मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी।

अध्याय 5

1942 की जुलाई में जिस तरह लोग पीछे हट और भाग रहे थे, वैसा दृश्य दोनेत्स स्तेपी ने महान निष्क्रमण के दिनों से अब तक न देखा था।

राजपथों और देहात की सड़कों पर, खुली स्तेपी में और जलती धूप में पीछे हटती हुई लाल फ़ौज की टुकड़ियों की अनन्त क़तार अपने रसद, हथियारों, तोपों और टैंकों के साथ कूच करती नज़र आती। उनके पीछे-पीछे शिशुसदनों और बालोद्यानों के बच्चे, गाडियाँ, लारियाँ, पशुओं के झुण्ड और शरणार्थियों की टोलियाँ ठेले-गाड़ियों पर अपने सामान-असबाब रखे और उनके ऊपर बच्चों को बिठाये डोलती नज़र आती।

उनके चलने से पके और अधपके अनाज की फ़सल कुचलती जा रही थी, लेकिन इसका दुःख न कुचलने वालों को था और न अनाज बोनेवालों को। क्योंकि वे जानते थे कि उस फ़सल के मालिक अब वे नहीं रहे। वे उसे छोड़कर चले जा रहे हैं और वह अब जर्मनों के हाथ लगेगी। सामूहिक और सरकारी फ़ार्मों के आलू और सब्ज़ियों के खेत सब के लिए खुले पड़े थे। शरणार्थी आलू खोदकर निकालते और पुआल तथा गाँवों के टट्टरों को जलाकर गर्म राख में आलू पकाते। वे अपने साथ खीरे, टमाटर, तरबूज़े और खरबूज़े की रसदार फाँके लिये चलते। वायुमण्डल में धूल की चादर इस तरह बिछ गयी थी कि आँखों को बिना सिकोड़े ही सूरज की ओर देखा जा सकता था।

एक ऐसे व्यक्ति को, जो इन भागने वालों के प्रवाह में बालू के एक कण की तरह आ गिरा हो, यह पलायन आकस्मिक और निरर्थक लगा होगा, क्योंकि वह अपने विचारों में इस क़दर खोया होगा कि उसे इस बात का पता ही न होगा कि उसके इर्द-गिर्द क्या हो रहा था। वस्तुतः इतने बड़े पैमाने पर लोगों और बहुमूल्य वस्तुओं का स्थानान्तरण पहले कभी नहीं देखा गया था। यह सब काम युद्ध सम्बन्धी उस सरकारी प्रबन्ध के निर्देशन में सम्पादित हो रहा था, जिसका संचालन अत्यन्त सुव्यवस्थित ढंग से और छोटे-बड़े सैकड़ों-हज़ारों व्यक्तियों की इच्छाओं से होता था।

संकट ही ऐसा आ पड़ा था कि स्थानान्तरण अति तीव्र गति से किया जा रहा था। सैनिकों और नागरिकों की मुख्य और बड़ी क़तारों के अलावा, जिनकी प्रगति कठिन होते हुए भी सुनियोजित थी, शरणार्थियों की ऐसी क़तारें भी देखी जा सकती थीं, जो सभी सड़कों पर और खुली स्तेपी में छितराकर पूरब और दक्षिण-पूरब की दिशा में बढ़ती जा रही थीं। ये शरणार्थी थे – छोटे-मोटे दफ़्तरों और कारख़ानों के कर्मचारी और मज़दूर, सामान की गाड़ियाँ और सैनिकों के दस्ते जो लड़ाई में अपनी टुकड़ियों के टूट जाने के बाद अपने मुख्यालय से सम्पर्क खो चुके थे; बीमारों और घायलों की लड़खड़ाती टोलियाँ जो यातायात की कमी के कारण पीछे छूट चुकी थीं। चूँकि छोटी-बड़ी टोलियों में इन शरणार्थियों को मोर्चे की स्थिति का पता न था, इसलिए वे अन्दाज़ से ही सही और उचित दिशा का चुनाव कर सकते थे। लेकिन उन्होंने सेना के पीछे हटने का मुख्य रास्ता, दोनेत्स पर बने नावों और बेड़ों के पुलों को जाम कर दिया। दिन और रात भर नावों के पुल और घाट के पास बने शिविर लोगों, लारियों और गाड़ियों से ठसाठस भरे रहे। ऊपर से वे सब के सब पूरी तरह बमबर्षा के शिकार हो सकते थे।

ऐसे वक़्त जब कि जर्मन फ़ौज दोनेत्स को पारकर मोरोज़ोव्स्की इलाक़े में घुस पड़ी थी, नागरिकों का कामेंस्क की ओर अग्रसर होना मूर्खतापूर्ण ही था, फिर भी बहुत

बड़ी संख्या में क्रास्नोदोन के शरणार्थियों ने इसी दिशा को चुना था, क्योंकि मील्लेरोवो के दक्षिण में दोनेत्स पर तैनात सोवियत रक्षा टुकड़ियों के लिए जो नयी कुमक भेजी गयी थी, वह इसी दिशा में अभी-अभी क्रास्नोदोन से रवाना हुई थी। संयोग से इन्हीं शरणार्थियों की क़तारों में ऊल्या ग्रोमोवा, अनातोली पोपोव, विक्टर पेत्रोव और उसके पिता भी थे। वे घोड़ा-गाड़ी में बैठे थे, जिसे दो मज़बूत कुम्मैत घोड़े खींच रहे थे।

गाँव की आख़िरी इमारतें भी नज़रों से ओझल हो चुकी थी और अन्य गाड़ियों व लारियों के कारवाँ के साथ-साथ उनकी गाड़ी भी एक पहाड़ी की ढलान पर उतरने लगी थी। तभी एकाएक इंजनों की उन्मत्त चीख़ से आसमान काँपने लगा। जर्मन बमवर्षक विमान ग़ोता लगाने लगे। उन्होंने सूरज को ढँक लिया और मशीनगनों से राजपथ को भूनने लगे।

विक्टर के पिता के मांसल चेहरे पर से रंग अचानक ही उड़ गया। वह विशालकाय और फुर्तीला आदमी था।

"ज़मीन पर लेट जाओ!" उसने भयंकर आवाज़ में चिल्लाकर कहा।

लड़के तब तक गाड़ी से कूद कर गेहूँ के खेत के बीच दुबक गये थे। विक्टर के पिता ने रास छोड़ दी और पल भर में शून्य में इस तरह विलीन हो गया, मानो वह भारी-भरकम बूट पहने एक विशालकाय रेंजर न होकर कोई प्रेतात्मा हो। केवल ऊल्या ही गाड़ी में बैठी रही। उसे खुद पता नहीं हुआ कि वह क्यों किसी आश्रय की ओर नहीं दौड़ी। उसी क्षण भयभीत घोड़े आगे की ओर झपटे और वह गाड़ी से नीचे गिरते-गिरते बची।

ऊल्या ने रास पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उसके हाथ न लगी। सामने की एक हल्की गाड़ी से टकराकर घोड़े थोड़ा भड़के और फिर बग़ल की ओर इस तेज़ी से झपटे कि जोत टूटने-टूटने को हो गयी। लम्बी और भारी-भरकम-सी गाड़ी उलटते-उलटते बची। वह अपने पहियों पर फिर स्थिर हो गयी। ऊल्या एक हाथ से गाड़ी का बाजू पकड़े रही और दूसरे हाथ से गाड़ी के भीतर रखे किसी भारी बोरे से चिपकी रही। वह जी-जान लगाकर यह कोशिश कर रही थी कि नीचे गिरने न पाये, क्योंकि डर था कि वह तत्क्षण अन्य गाड़ियों के बदहवास घोड़ों के पैरों तले कुचल जायेगी।

फेन से लथपथ विशाल कुम्मैत घोड़े बदहवासी में फुफकारते और हिनहिनाते हुए, रौंदे गेहूँ के खेत में गाड़ियों और लोगों के बीच भागे जा रहे थे। उसी क्षण नंगे सिर और चौड़े कन्धों वाला एक लम्बा-सा गोरा जवान सामने की गाड़ी से इस तरह कूदा, मानो उसने जान-बूझकर अपने को घोड़ों के खुरो के नीचे फेंक दिया हो।

ऊल्या को उस क्षण यह समझ में न आ सका कि यह सब क्या हो रहा था,

लेकिन इसके फ़ौरन बाद ही उसे घोड़ों के उड़ते हुए अयालों और खुले हुए दाँतों के बीच एक युवक का चेहरा दिखायी पड़ा, जिसके गाल लाल हो रहे थे, आँखें चमक रही थीं और चेहरे पर असाधारण तनाव और बल झलक रहा था।

फुफकारते हुए घोड़ों में से एक की लगाम के पास रास को एक हाथ से पकड़ते हुए वह घोड़े और गाड़ी के बिचले बम के बीच घुस गया। वह घोड़े की ओर दबाव डाले झुका रहा, ताकि बम से खरोंच और चोट न लगने पाये। वह खड़ा था – लम्बा क़द, चुस्त, अच्छी तरह इस्त्री किया हुआ भूरे रंग का सूट पहने और शोख़ लाल रंग की टाई बाँधे। उसके सीने पर की ज़ेब से फ़ाउण्टेन-पेन का हड्डी का बना सफ़ेद सिरा झाँक रहा था। बिचले बम के ऊपर से दूसरा हाथ बढ़ाकर वह दूसरे घोड़े की रास पकड़ने की कोशिश कर रहा था। उसके कोट की आस्तीनों के नीचे से उभरी हुई मांसपेशियों और बादामी कलाइयों पर उभरती हुई नसों को देखने से ही पता चलता था कि उसे कितना ज़ोर लगाना पड़ रहा था।

"है, है, बस, बस।" वह धीमी लेकिन अधिकारपूर्ण आवाज़ में कह रहा था।

दूसरे घोड़े की रास उसके हाथ में आते ही दोनों घोड़े शान्त होने लगे। वे अभी भी अपने अयाल झटकारते और उसकी ओर देखते हुए क्रुद्ध आँखें नचाते रहे, लेकिन युवक ने रास तब तक ढीली न की जब तक वे पूरी तरह शान्त न हो गये। उसके बाद उसने रास छोड़ दी और ऊल्या को आश्चर्य में डालते हुए बड़े-बड़े हाथों से अपने सुनहरे बालों को सँवारना शुरू किया, हालाँकि बालों की माँग तनिक भी बेतरतीब नहीं हुई थी। फिर उसने अपना दमकता चेहरा उठाया, जिस पर पसीना चुह्चुहा आया था। उसके गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थी और लम्बी, गहरी सुनहरी बरौनियों वाली बड़ी-बड़ी आँखें चमक रही थीं। उसकी आनन्द से सिक्त मुस्कराहट में एक सरलता थी।

"बड़े मज़बूत घोड़े हैं! ये तो मु-मुझे खीं-खींच ही ले गये होते।" ऊल्या की ओर देखकर दाँत निपोरते हुए उसने तनिक हकलाकर कहा। ऊल्या के नथुने फड़कने लगे थे और वह अभी भी गाड़ी के बाजू को पकड़े हुए एक भारी बोरे से चिपकी हुई थी। उसने युवक की ओर देखा। ऊल्या की आँखों में आदर झलक रहा था।

लोगों का झुण्ड फिर सड़क पर अपनी गाड़ियों और लारियों की तलाश में निकल आया था जहाँ-तहाँ स्त्रियाँ मुर्दों और घायलों के इर्द-गिर्द जमा होकर रोने-पीटने लगी थीं। वहाँ से कराहने की आवाज़ सुनायी पड़ रही थी।

"मैं तो डर रही थी कि कहीं वे तुम्हें गाड़ी के बम से घायल न कर दें।" ऊल्या बोली। उसके नथुने अभी भी फड़क रहे थे।

"मुझे भी तो यही डर था। लेकिन घोड़े चिड़चिड़े नहीं हैं और बधिया किये हुए

हैं,” उसने सादगी से जवाब दिया। उसने अपने पास वाले घोड़े की पसीने से तर-बतर, चमकीली गर्दन को लापरवाही से सहलाना शुरू किया।

दोनेत्स के पार, कहीं दूर से अभी भी बमबारी की कर्कश आवाज़ आ रही थी।

“लोगों को देखकर दिल बहुत दुखता है,” ऊल्या ने अपने चारों ओर देखते हुए कहा।

लोगों और गाड़ियों का रेला काफ़ी शोरगुल के साथ उनके अग़ल-बग़ल से गुज़र रहा था।

“हाँ, बहुत दुखता है। ख़ासकर माताओं को देखकर तो और भी ज़्यादा। कितनी मुसीबतें इन्हें झेलनी पड़ी हैं। और अभी आगे भी न जाने इन्हें कितनी मुसीबतें झेलनी हैं!” वह युवक बोला। उसका चेहरा तुरन्त गम्भीर हो गया और माथे पर रेखाएँ खिंच गयीं। जवानी में चेहरे पर ऐसी चिन्ता की छाप अक्सर देखने में नहीं आती।

“हाँ, तुम ठीक कहते हो,” ऊल्या ने बुझे स्वर में जवाब दिया। उसकी आँखों के सामने धूप में जलती ज़मीन पर चारों ख़ाने चित पड़ी अपनी माँ का चित्र उभर आया।

विक्टर पेत्रोव के पिता अचानक उसी तरह घोड़ों की बग़ल से प्रगट हुए, जिस तरह अचानक वह ग़ायब हो गये थे। उन्होंने अतिशय सावधानी से घोड़ों के साज़ों, पेटियों और रासों की जाँच करनी शुरू की। उनके बाद छोटी-सी उज़्बेकी टोपी पहने अनातोली पोपोव भी पहुँचा। वह आप ही आप हँस रहा था और अपना सिर अग़ल-बग़ल झटकार रहा था। वह तनिक दोषी-सा भी दिखायी पड़ रहा था, लेकिन उसकी स्वाभाविक गम्भीरता अभी भी ज्यों की त्यों बनी थी। उसके बाद विक्टर भी कुछ शर्माया हुआ-सा प्रगट हुआ।

“मेरा गिटार सही-सलामत है न?” विक्टर ने जल्दी से पूछा और चिन्तित आँखों से गाड़ी पर लदे सामान-असबाब का निरीक्षण करने लगा। कम्बल में ज्यों का त्यों लिपटे हुए अपने गिटार को गठरियों के बीच सही-सलामत देखकर ऊल्या की ओर घूमकर खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसकी आँखों में उदासी और साहस, दोनों का मिश्रण था।

वह युवक, जो अब तक घोड़ों के पास ही खड़ा था, गाड़ी के बिचले बम और घोड़े के सिर के नीचे झुककर निकल आया और गाड़ी के निकट आकर खड़ा हो गया। उसके चौड़े कन्धों के ऊपर उसका बड़ा-सा, सुनहरे बालों वाला सिर शान से ऊँचा उठा था।

“अनातोली!” वह प्रसन्नतापूर्वक विस्मय से चिल्ला उठा।

“ओलेग!”

उन्होंने एक दूसरे को पुराने मित्रों की तरह अपनी बाँहों में कस लिया और ओलेग ने ऊल्या की ओर देखा।

"मेरा कुलनाम कोशेवोई है," उसने परिचय देते हुए कहा और ऊल्या से हाथ मिलाया।

उसका बायाँ कन्धा कुछ ऊँचा उठा हुआ था। उसकी तरुणाई अभी अँगड़ाई ही ले रही थी। धूप में तपे उसके चेहरे, लम्बी और हल्की काठी, अच्छी तरह इस्त्री किये हुए सूट, शोख़ लाल टाई, पेन के सफ़ेद सिरे, उसकी हकलाहट और प्रत्येक गतिविधि से उसकी स्फूर्ति और बल, सहृदयता और सजगता का ऐसा स्पष्ट आभास मिलता था कि ऊल्या को तुरन्त महसूस होने लगा कि वह उसका विश्वास कर सकती है।

उस लड़के ने भी युवक-सुलभ जिज्ञासा के साथ एक नज़र में ही ऊल्या को सिर से पाँवों तक देख लिया : सफ़ेद ब्लाउज़ और घुटनों तक गहरे रंग का स्कर्ट खेतों में काम करने की अभ्यस्त, गाँव की गोरी जैसी सुघड़, लचीली कमर, नागिन-सी लम्बी चोटियाँ, नथुनों की कुछ अजीब-सी काट, सँवलायी, छरहरी टाँगें और उसकी ओर टकटकी बाँधें काली आँखें। वह लाल हो उठा, झेंपकर तुरन्त विक्टर की ओर घूम गया और उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

ओलेग कोशेवोई गोर्की स्कूल का छात्र रह चुका था। यह स्कूल क्रास्नोदोन में सबसे बड़ा स्कूल था और केन्द्रीय पार्क में स्थित था। उसकी मुलाक़ात पहले विक्टर और ऊल्या से कभी नहीं हुई थी, लेकिन वह अनातोली को जानता था। उन दोनों में उस ढंग की दोस्ती थी, जो सक्रिय कोमसोमोल-सदस्यों के बीच पायी जाती है – ऐसी दोस्ती, जो कोमसोमोल की एक बैठक से दूसरी बैठक और तीसरी बैठक में उत्तरोत्तर मज़बूत होती जाती है।

"हमारी मुलाक़ात भी हुई तो कैसी जगह!" अनातोली बोला। "और तुम्हें याद है, केवल तीन ही दिन पहले हम लोगों का पूरा का पूरा मजमा तुम्हारे साथ पानी पीने के लिए तुम्हारे घर पहुँचा था और तुमने हम सब का परिचय... अपनी नानी से कराया था!" वह हँस पड़ा। "अच्छा, क्या वह तुम्हारे साथ ही सफ़र कर रही हैं?"

"नहीं, मेरी नानी और माँ वहीं रह गयीं।" उसकी भौंहें फिर सिकुड़ गयीं। "हम कुल पाँच जने हैं : कोल्या – मेरी माँ का भाई, पर जाने क्यों, मैं उसे मामा नहीं कह पाता," वह मुस्करा दिया, "और उसकी पत्नी, उसका नन्हा बेटा और वह बूढ़ा, जो गाड़ी हाँक रहा है।" उसने सिर से बग्घी की ओर इशारा किया, जिसे कई बार हाँका जा चुका था। बग्घी जिसे सुरमई रंग का नन्हा-सा घोड़ा खींच रहा था, गाड़ी के आगे-आगे चल पड़ी। उसके पीछे-पीछे कुम्मैत घोड़े इतना सटकर चल रहे थे कि उनकी गर्म साँसें बग्घी में बैठे लोगों की गरदनों और कानों पर पड़ रही थीं।

ओलेग कोशेवोई का मामा निकोलाई कोरोस्तिल्योव 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट में भूगर्भविज्ञ इंजीनियर का काम करता था। वह सुन्दर और आलसी तबीयत का युवक था। उसकी आँखें भूरी, लेकिन भौंहें काली थीं। वह नीले रंग का सूट पहने हुए था। वह अपने भानजे से केवल सात साल बड़ा था, इस कारण दोनों भाइयों की तरह ही रहते थे। वह अपने भानजे को चिढ़ाने लगा।

"मौक़ा न खोओ, प्यारे," वह ओलेग की ओर देखे बिना ही नीरस स्वर में बोला। "मौत के मुँह से इस तरह किसी लड़की को बचा लेना कोई हँसी-खेल नहीं! इसका अन्त तो विवाह के साथ ही होगा, मैं कहे देता हूँ। क्यों मरीना?"

"बकवास बन्द करो! मैं मरते-मरते बची हूँ।"

"पर है वह बहुत ही प्यारी। है न?" ओलेग ने अपनी जवान मामी की ओर देखते हुए पूछा। "कमाल की लड़की है!"

"और तुम्हारी लेना?" मामी ने उसे अपनी काली आँखों से घूरते हुए पूछा। "ओह ओलेग, तुम भी अजीब लड़के हो!"

मामी मरीना गुड़िया जैसी खूबसूरत और नाज़ुक थी। लगता था जैसे वह किसी तस्वीर से उतरकर आयी हो : कशीदा कढ़ा उक्राइनी ब्लाउज़, गले में लड़ियाँ, दमकते हुए सफ़ेद दाँत, सिर के चारों ओर काली घटाओं-से लहराते बाल। अप्रत्याशित यात्रा के बावजूद, उसने ढंग से अपना साज-सिंगार कर ही लिया था।

उसकी गोद में तीन साल का एक मोटा-ताज़ा लड़का अपने चारों ओर की भयंकरता की तनिक भी परवाह किये बिना किलकारियाँ भर रहा था। उसे इस संसार की वीभत्सता का कुछ भी ज्ञान नहीं था, जिसमें उसने प्रवेश किया था।

"मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे ओलेग के साथ लेना की अच्छी जोड़ी बैठेगी। यह लड़की भी काफ़ी अच्छी है, पर यह हमारे ओलेग को प्यार नहीं कर सकेगी, क्योंकि ओलेग अभी बच्चा ही है और वह, साफ़ ज़ाहिर है कि पूरी तरह जवान हो चुकी है," मामी मरीना जल्दी-जल्दी बोल गयी। उसकी आँखें चंचलता से इधर-उधर दौड़ती रहीं और वह रह-रहकर आसमान की ओर भी देख लेती। "जब कोई औरत जवानी पार करने लगती है, तो वह युवा लड़कों की ओर खिंचती है, लेकिन जब वह खुद जवान हो, तो वह अपने से कम उम्र के लड़के की ओर कभी आकर्षित नहीं होती। मैं यह सब खूब अच्छी तरह जानती हूँ।" उसकी आवाज़ में थरथराहट आ गयी थी। यह स्पष्ट था कि वह काफ़ी विचलित हो उठी थी।

लेना पोज़्दूनिशेवा क्रास्नोदोन में ही रह गयी थी। वह ओलेग की सहपाठिनी थी और वह उसे प्यार करता था। ओलेग की डायरी के बहुत-से पन्ने लेना की बातों से ही भरे थे। ऊल्या के प्रति मोह जगाकर उसने शायद लेना के साथ अन्याय किया?

लेकिन इससे क्या हुआ? लेना तो उसके हृदय में सदैव बनी रहेगी। वह उसे कभी बिसार नहीं सकता। और ऊल्या? उसकी आँखों के सामने ऊल्या की मूर्ति और घोड़ों की जोड़ी कौंध गयी। अपने बायें कन्धे पर उसने घोड़े की गर्म साँस फिर से महसूस की। क्या मामी मरीना का कथन सही है कि वह लड़की उसे प्यार नहीं कर सकेगी, क्योंकि वह स्वयं अभी भी बच्चा ही है? "ओह, ओलेग, तुम भी अजीब लड़के हो!" वह बड़ा भावुक लड़का था और अन्दर ही अन्दर इसे वह अच्छी तरह महसूस भी करता था।

गाड़ी और बग्घी दोनों ही स्तेपी में बहुत देर तक क़तार के आगे निकलने की कोशिश करती रहीं। लेकिन सैकड़ों, हजारों व्यक्ति भी उसी तरह आगे निकलने की कोशिश कर रहे थे और हर जगह पैदल चलने वालों, कारों और गाड़ियों का रेला डगमगाता नज़र आ रहा था।

धीरे-धीरे ऊल्या और लेना की तस्वीरें ओलेग के दिमाग़ से ग़ायब हो गयीं और सारे ख़याल इस अनन्त जन-प्रवाह में डूब गये, जिसमें सुरमई रंग के घोड़े वाली सवारी और कुम्मैती घोड़ों वाली गाड़ी अथाह समुन्दर में डोलती हुई दो डोंगियों जैसी लग रही थीं।

स्तेपी के ओर-छोर का पता न चलता था। लगता था जैसे वह पृथ्वी की परिधि से मिल गयी हो। क्षितिज पर हर जगह गाढ़ा धुआँ लटका नज़र आता था। केवल दूर, बहुत दूर पर, पूरब के आसमान में बादल घुमड़ रहे थे। वे विचित्र रूप से निर्मल और चमकीले दिखायी पड़ रहे थे। यदि रुपहली तुरही बजाती अप्सराएँ उनमें से तैरती निकलती दिखायी पड़तीं, तो कोई आश्चर्य की बात न होती।

ओलेग को अपनी माँ और उसके कोमल, मुलायम हाथों की याद हो आयी..
.

"मुझे याद है, मेरी प्यारी माँ, अपनी चेतना प्राप्त करने के प्रथम क्षणों से ही मुझे तुम्हारे हाथ याद हैं। वे हाथ, जो गरमियों में हमेशा धूप में तप जाते थे और जाड़ों में भी उनकी सँवलाया रंग कभी हल्का न पड़ता था। चिकने, मुलायम हाथ और उनकी उभरी नीली नसें। शायद वे कभी कुछ खुरदरे भी हो उठते थे, क्योंकि न जाने कितने ढेर सारे काम उन्हें करने पड़ते थे। लेकिन मुझे तो वे हमेशा ही कोमल और चिकने लगते थे और मुझे उन नीली नसों को चूमना कितना अच्छा लगता था।!

"हाँ, अपनी चेतना के प्रथम क्षण से ही उस क्षण तक, जब मैं तुम्हें छोड़कर चला आया, जब तुमने बेदम होकर, मुझे ज़िन्दगी की कठिन राह पर विदा करते वक़्त मेरे सीने पर धीरे-से अपना सिर रख दिया था, मुझे तुम्हारे हाथों – निरन्तर कार्यारत हाथों – की ही याद बनी रही है। मुझे वे हाथ याद हैं, जो साबुन के फेन में डूबते, उतराते

ओर मेरी चादरों को रगड़-रगड़ कर साफ़ करते। वे चादरें भी कितनी छोटी थीं – नवजात शिशु को लपेटने के कपड़े जैसी। भेड़ की खाल का जैकेट पहले तुम अपने कन्धों पर जल से भरी बाल्टियों की बहँगी लेकर चलतीं और दस्ताने में छिपा तुम्हारा नन्हा हाथ बहँगी को थामे रहता। और तुम खुद इतनी छोटी और कोमल थीं जितना कि तुम्हारे हाथ का दस्ताना। मैं अभी भी तुम्हारी उँगलियाँ और ज़रा-ज़रा उभरे हुए पोरों को देख सकता हूँ।

उन उँगलियों को, जो मेरी पाठ्य-पुस्तिका की पंक्तियों के नीचे-नीचे चलती थीं, और मैं तुम्हारे पीछे-पीछे अक्षर दोहराया करता था। मैं अभी भी तुम्हारे एक सबल हाथ में कसमसाते हँसिये को देख सकता हूँ, जो दूसरे हाथ की मुट्ठी में बँधे अन्न के पौधों को काट रहा है। हँसिये की धार की चमक और नारी-सुलभ वह क्षिप्र गति भी याद है, जब अन्न के कटे पौधों के पूले सावधानी से तुम एक ओर फेंक दिया करती थीं, ताकि डण्ठल टूट न जायें।

"मुझे याद है जब हम अकेले, इस विशाल संसार में बिलकुल अकेले रहते थे, तुम्हारे हाथ बर्फ़ के पानी में कड़े और सर्द, लाल और खुरदरे हो उठते थे, क्योंकि तुम उसमें कपड़े धोती थीं। फिर भी कितनी बारीकी से वे मेरे हाथ में चुभे काँटे को निकाल सकते थे, कितनी अच्छी तरह वे सूई में धागा पिरो सकते थे। जब तुम कपड़े सीती रहतीं, तो गाती रहतीं और केवल हम दोनों के लिए ही गातीं। दुनिया में कोई भी ऐसा काम न था, जिसे तुम्हारे हाथ न कर पाते। उनके लिए कोई भी काम, भारी काम न था। मैंने उन्हें गोबर और मिट्टी मिलाते तथा उससे झोपड़ी की बाहरी दीवारों को लीपते देखा है। मैंने तुम्हारे हाथों को रेशमी आस्तीनों से बाहर झाँकते और लाल मोल्दावियन शराब के गिलास उठाते देखा है। हाँ, तुम्हारे हाथ की उँगली में अँगूठी की चमक भी याद है। जब मेरे सौतेले पिता खेल ही खेल में तुम्हें अपनी गोद में उठा लेते थे, तो तुम प्यार सहित कितनी कोमलता से अपनी गोरी और गदरायी बाँहों को उनकी गरदन में डाल दिया करती थीं। तुम्हीं ने मेरे सौतेले पिता को मुझे प्यार करना सिखाया। मैंने भी उन्हें अपना ही पिता समझा, क्योंकि तुम उन्हें प्यार करती थीं।

"मैं यह कभी नहीं भूल सकता कि जब मैं बिछावन पर नींद और जागरण के झूले में झूलता रहता, तो तुम कितने स्नेह से अपने नन्हे, शायद तनिक खुरदरे, लेकिन प्यार की गरमी से पुलकते हाथों से मेरे बालों, कपोलों और छाती को सहलाया करती थीं। और जब भी मैं अपनी आँखें खोलता था, तो तुम्हें सदा अपने निकट पाता था। कमरे में बत्ती जलती रहती और तुम अँधेरे में से अपनी थकी और अन्दर धँसी आँखों से मुझे निहारती रहतीं। तुम खुद देव-प्रतिमा की तरह शान्त और दैदीप्यमान

दिखायी पड़तीं। मैं तुम्हारे पावन और पवित्र हाथों को प्रणाम करता हूँ!

"तुमने अपने बेटों को युद्ध के लिए विदा किया है, या यदि तुमने नहीं, तो तुम्हारी ही तरह अन्य माताओं ने। अपने कुछ बेटों को तो तुम फिर कभी नहीं देख सकोगी। यदि ग़म का वह कड़वा प्याला तुम्हारे होंठो के क़रीब से गुज़र गया हो, तो दूसरी माताओं के कण्ठ के नीचे तो उतर ही गया है। फिर भी, यदि युद्धकाल में लोगों को खाने के लिए रोटी और पहनने के लिए कपड़े मिलते हों, खेतों में नाज की टालों के ढेर लगे हों, ट्रेनें दौड़ती हों, चेरी के पेड़ खिल रहे हों और कारख़ानों की भट्ठियों में आग दहक रही हो, कोई अदृश्य शक्ति ज़मीन पर से सैनिक को उठा रही हो या उसे उसकी रोग शय्या पर सहारा देकर बिठा रहा ही, तो यह सब कुछ मेरी माँ के हाथ ही कर रहे हैं, किसी दूसरे की माँ के हाथ, हर किसी की माँ के हाथ।

"मेरे युवा मित्र, तुम भी मेरी तरह ज़रा पीछे मुड़कर देखो और बताओं की किसी कि भी भावनाओं को तुमने इतनी चोट पहुँचायी है, जितनी माँ की भावनाओं को? क्या यह मेरे, तुम्हारे ओर हम सब के कारण, हमारे दुर्भाग्य, ग़लतियों और ग़मों के कारण उसके बाल सफ़ेद नहीं, हो गये हैं? क्या वह दिन नहीं आयेगा, जब हमारी माँ की क़ब्र पर हमारे ह्रदयों को ये सारी बातें सालेंगी?

"ओह माँ! मुझे माफ़ कर दो, क्योंकि इस संसार में एकमात्र तुम्हीं हो, जो मुझे माफ़ कर सकती हो। तुम अपने हाथ मेरे सिर पर रख दो, जैसा कि तुम मेरे बचपन में किया करती थीं और माफ़ कर दो..."

ये भावनाएँ और विचार ओलेग के मस्तिष्क को मथ रहे थे। यह बात भुलाये भूल नहीं रही थीं कि उसकी माँ पीछे छूट गयी थीं और नानी वेरा भी, जो एक माँ ही थीं – उसकी माँ की माँ; मामा कोल्या की माँ थीं।

ओलेग का चेहरा शान्त और गम्भीर हो गया था। घनी सुनहरी बरौनियों से ढँकी बड़ी-बड़ी आँखें आर्द्र हो चली थीं। वह कन्धे झुका कर बैठा था और उसकी टाँगे नीचे लटक रही थीं, उँगलियाँ एक दूसरे से गुँथी थीं। उसके माथे पर गहरी सिलवटें उभर आयी थीं।

मामा कोल्या, मरीना और यहाँ तक कि उनका नन्हा बेटा भी चुप हो गया था। पीछे वाली गाड़ी ने भी एक तरह से चुप्पी साध ली थी। इस कशमकश और भंयकर गरमी से सुरमई रंग का घोड़ा और कुम्मैत घोड़े थक गये और दोनों गाड़ियों की सवारियों ने अपने को फिर से उस राजपथ पर डगमगाते पाया, जिस पर मनुष्यों, गाड़ियों और लारियों का अनन्त प्रवाह आगे की ओर उमड़ा जा रहा था।

मानवी शोक के इस भयंकर तूफ़ान में चाहे लोग कुछ भी कर रहे, सोच रहे या कह रहे हों, बच्चों को खिला रहे, हँसी-मज़ाक़ कर रहे, या ऊँघ रहे हों, एक दूसरे से

जान-पहचान कर रहे हों या विरल कुओं पर अपने घोड़ों को पानी पिला रहे हों, इन सबसे परे और प्रबल, उनके पीछे से एक ऐसी काली और अदृश्य छाया बढ़ती आ रही थीं, जिसके डैनों ने उत्तर और दक्षिण की ओर फैलकर तथा जन प्रवाह की गति से आगे निकल कर पूरी स्तेपी को ढँक लिया था।

यह अनुभूति दिल पर पहाड़ बनकर छायी थी कि वे अपने घरबार, नाते-रिश्तेदार छोड़कर अनजानी राह पर चलने के लिए मजबूर किये गये हैं और जिस शक्ति ने यह मनहूस छाया फैला रखी है, वह उनका पीछा करके उन्हें कुचलकर रख सकती है।

अध्याय 6

बग्घी और गाड़ी दोनों ही राजपथ पर पहुँच गयीं, जिसके किनारे-किनारे शरणार्थियों और मोटर-गाड़ियों का कारवाँ बढ़ता जा रहा था। उनमें खान 1(बी) की वह लारी भी थी, जिसमें दफ़्तर के साज़-सामान सहित कार्यालय के कर्मचारी, संचालक वाल्को और ग्रिगोरी शेव्त्सोव सवार थे। इसी शेव्त्सोव के बगीचे के फाटक पर ऊल्या कुछ घण्टे पहले खड़ी रही थी।

'वोस्मीदोमिकी' स्थित अनाथालय के कुछ बच्चे, जिनके माता-पिता युद्ध में मारे गये थे, पैदल चले जा रहे थे। पाँच से आठ वर्ष तक के इन लड़कों और लड़कियों की देख-भाल दो जवान नर्सें और एक मेट्रन कर रही थीं। मेट्रन अधेड़ उम्र की औरत थी, पैनी आँखों वाली। वह सिर पर किसान औरतों की तरह लाल रूमाल बाँधे हुए थी, पाँवों में धूल भरे रबड़ के ऊँचे बूट चढ़ाये हुए थी।

कई गाड़ियों में अनाथालय का सामान-असबाब लदा था। बच्चे जब बहुत थक जाते थे, तो बारी-बारी से उन्हें गाड़ियों में बिठा दिया जाता था।

खनिकों की लारी ज्यों ही उनकी बग़ल से गुज़री, उसमें बैठे सब लोग नीचे कूद पड़े और उन्होंने बच्चों को उसमें बिठा दिया। ग्रिगोरी शेव्त्सोव की नज़र पर एक नन्ही लड़की इस क़दर चढ़ गयी कि वह सारा वक़्त उसे गोद में ही लिये रहा, उससे बातें करता रहा, उसके नन्हे-नन्हे हाथों और गुलगुलों जैसे गालों को चूमता रहा। लड़की की आँखें नीली और बाल सुनहरे रंग के थे, चेहरे पर गम्भीरता का भाव था, गाल फूले हुए थे। "इसके गाल तो बिलकुल गुलगुलों जैसे हैं," ग्रिगोरी इल्यीच कहता। वह खुद भी उसी नन्ही लड़की की तरह गोरा-चिट्टा और नीली आँखों वाला था।

बग्घी और गाड़ी दोनों ही अनाथालय की गाड़ियों के पीछे-पीछे चले जा रहे थे और इन दोनों के पीछे सफ़री रसोई के सामान, मशीनगनों और तोपों के साथ एक

फ़ौजी टुकड़ी डगमगाती चली आ रही थी। किसी भी अनुभवी फ़ौजी आदमी को यह तुरन्त पता चल जाता कि यह टुकड़ी टैंक-मार राइफ़लों और तोपों से सुसज्जित थी। गार्ड्स की ट्रेंच-मोर्टार तोपें स्तेपी के आसमान की पृष्ठभूमि में एक अद्भुत दृश्य उपस्थित कर रही थीं। जिन लारियों पर वे रखी गयी थीं, वे दूर से बिलकुल नज़र नहीं आ रही थीं और ये अजीब हथियार निराधार, सैनिकों और नागरिकों की कई किलोमीटर तक फैली लम्बी धारा पर तैरते हुए-से जान पड़ते थे।

सैनिकों और फ़ौजी अफ़सरों के बूटों पर धूल की मोटी परतें जम गयी थीं। वे कई दिन से मार्च करते चले आ रहे थे। टुकड़ी के आगे-आगे और गाड़ियों के ठीक पीछे टामी-गनों से सुसज्जित एक कम्पनी मार्च कर रही थी। जब गाड़ियों की रफ़्तार ढीली पड़ जाती, तो फ़ौजी उनके आजू़-बाजू़ चलने लगते। धूप से तपे हुए उनके चेहरों ने ईंट का गहरा रंग धारण कर लिया था। उनकी टामी-गनें छातियों पर झूल रही थीं, उन्हें वे एक हाथ से थामे हुए थे, मानो वे किसी मुन्ने को उठाये जा रहे हों। उनके हाथ थककर चूर हो गये थे, कइयों के हाथ घायल थे और उनमें पट्टियाँ भी बँधी थीं।

मानो किसी अलिखित आदेश के अनुसार टामी-गनधारियों की कम्पनी ऊल्या की गाड़ी के साथ-साथ चलती रही। लगता था जैसे उसकी गाड़ी उस दस्ते का ही एक अंग हो। गाड़ी आगे चलती या रुक जाती, पर हमेशा अपने को उस दस्ते के बीच में पाती। जब कभी ऊल्या अपने इर्द-गिर्द देखती, तो उसकी आँखें फ़ौजी टोपी और धूल से भरे बूट पहने युवा सैनिकों की आँखों से टकरा जातीं। कई सैनिक आँख बचाकर उसकी ओर देख रहे होते, तो कई एक निस्संकोच घूर रहे होते। पसीने और बारिश में अनगिनत बार भीगने के कारण और कल्लर, रेत, देवदार के काँटेदार पत्तों और दलदली ज़मीन पर पड़ाव डालने के कारण उनकी फ़ौजी वर्दियों का रंग उड़ गया था।

सैनिक पीछे हट तो रहे थे फिर भी वे अच्छे मूड में थे। लड़कियों की उपस्थिति के कारण उनके चेहरे खिल उठे और वे ख़ुशी से चहकने लगे। कूच करती या विश्राम करती किसी भी फ़ौजी टुकड़ी की तरह, इस कम्पनी का भी अपना ख़ास और प्रिय विदूषक था।

“ऐ, बिना आदेश के आगे कहाँ निकले जा रहे हो,” विदूषक विक्टर के पिता को सम्बोधित करके बोलता जब कभी वह देखता कि आगे निकलने का मौक़ा मिलने पर वह अपने घोड़ों को चाबुक लगा रहा है। “ओह, नहीं, मेरे प्यारे दोस्त, अब तुम हमारे बिना कहीं भी नहीं जा सकते। तुम हमारे दस्ते में आ चुके हो। अब तुम फ़ौज में हो, हमारी धरोहर हो। हमने तुम्हें अपने भोजन, बिछावन और साबुन आदि में साझीदार बना लिया है। और इस लड़की को – भगवान और फ़रिश्ते इसकी

ख़ूबसूरती की हिफ़ाज़त करें – हम हर सुबह मीठी कॉफी का प्याला पिलायेंगे!"

"यही ठीक है, कयूत्किन। दस्ते को नीचा न दिखाओ!" ऊल्या की ओर देखते हुए सैनिक प्रसन्नता से हँस पड़े।

"अच्छी बात है! हम इसकी तसदीक़ ही कर लें। साथी साजेण्ट मेजर! फेद्या! सो गया क्या? दोस्तो, देखो ज़रा वह चलते-चलते सो रहा है... सार्जेण्ट मेजर! तुमने अपना दिल खो दिया!"

"और तुमने अपनी खोपड़ी तो नहीं खो दी?"

"हाँ, वह जो कुन्द थी, मैंने खो दी। संयोग से वह अब तुम्हारे कन्धों के ऊपर शोभायमान है। और जो अक़्लमन्द थी, वह मेरे पास रह गया है। इसे तो रखा भी जा सकता है और अपनी जगह से हटाया भी जा सकता है। देखो इधर!"

और कयूत्किन ने बड़ी सफाई से अपने छोटे-से सिर को हिलाकर झट से एक हाथ अपनी ठुड्डी के नीचे लगा दिया और दूसरा हाथ अपनी गरदन के पिछले हिस्से पर जमा दिया। टोपी माथे पर सरका ली। उसके बाद आँखें निकालते हुए सिर को इस तरह घुमाने लगा मानो गरदन पर के पेंच ढीले कर रहा हो। उसकी इस हरकत से सचमुच ऐसा लगा था कि सिर उतरने जा रहा है। पूरा का पूरा दस्ता और इर्द-गिर्द के लोग हँसी से लोटपोट होने लगे। ऊल्या की गम्भीरता का बाँध टूट गया और वह भी बच्चों की तरह खिलखिलाकर हँस पड़ी। फिर अचानक वह झेंप-सी गयी। सभी सैनिकों ने ऊल्या की ओर विहँसती आँखों से देखा, मानो उन्हें यह पता हो कि कयूत्किन केवल ऊल्या को खुश करने के लिए ही यह तमाशा कर रहा है।

कयूत्किन ठिगने क़द का और अत्यन्त फुर्तीला सैनिक था। उसके चेहरे पर बारीक झुर्रियाँ पड़ी थीं, लेकिन वह इतना ज़िन्दादिल था कि उसकी उम्र का अन्दाज़ लगाना कठिन था। उसकी उम्र तीस से अधिक भी हो सकती थी और बीस के आस-पास भी। अपनी काठी और चाल-ढाल से वह छोकरा जैसा ही दीखता था। हाँ, उसकी आँखों के कोनों पर भी झुर्रियाँ पड़ गयी थीं। जब वह शान्त रहता, तो उसकी बड़ी, नीली आँखों की गहराई में से क्लान्ति झाँकती। लेकिन वह इसे लोगों की नज़र से बचाने के लिए कभी शान्त रहना नहीं चाहता था।

"तुम लोग कहाँ के रहने वाले हो, नौजवान दोस्तो?" उसने ऊल्या के साथियों से पूछा। "अच्छा! क्रास्नोदोन के," वह सन्तोष के साथ बोला। "और यह लड़की, मेरा ख़याल है, तुममें से किसी की बहन है? या माफ़ करना, बाबा, यह तुम्हारी बेटी तो नहीं? यह क्या बात है? यह अकेली लड़की – न किसी की बेटी, न बहन, और न पत्नी? कामेंस्क में इसकी भर्ती कर ली जायेगी, यह निश्चित जानो, और इससे ट्रैफिक नियंत्रण का काम कराया जायेगा। ओह, सड़क पर मोटरों, लारियों का नियंत्रण जैसा

कठिन काम!" कयूत्किन ने संकेत से ही राजपथ पर और स्तेपी के ओर-छोर तक फैली हर चीज़ की झाँकी दिखाने की कोशिश की। "हमारी टुकड़ी में भी यह अच्छी तरह खप सकेगी! ईमान से, मेरे दोस्तो, तुम तो शीघ्र ही रूस जनतंत्र पहुँच जाओगे और वहाँ तुम्हें ढेर-सी लड़कियाँ मिल जायेंगी। यहाँ, हमारी टुकड़ी में एक भी नहीं है। हमें एक ऐसी ही लड़की की ज़रूरत है, यक़ीन मानो, जो हमें सलीक़े से बातें करना सिखा सके और हमारे तौर-तरीक़े सुधार सके..."

"उसकी जैसी मर्ज़ी होगी, वैसा वह करेगी," अनातोली ने ऊल्या की ओर कनखियों से देखकर मुसकुराते हुए कहा। ऊल्या ने झेंपकर कयूत्किन की नज़रों से बचने के लिए अपना चेहरा दूसरी ओर फेर लिया।

"हम कह-सुनकर इसे मना लेंगे," कयूत्किन बोला। "हमारी कम्पनी में बड़े होशियार लड़के हैं। वे अपनी बातों से किसी भी लड़की को मना सकते हैं।"

"मान लो, कहीं मैं उनके साथ ही चली ही जाऊँ मान लो, अभी गाड़ी से कूद पड़ूँ और उनके पास पहुँच जाऊँ?" ऊल्या ने अचानक सोचा और उसके हृदय की धड़कनें बन्द होती-सी जान पड़ीं।

ओलेग कोशेवोई गाड़ी की बग़ल में चल रहा था। वह मंत्रमुग्ध दृष्टि से एकटक कयूत्किन को देख रहा था। कयूत्किन ने उसका मन मोह लिया था और ओलेग चाहता था कि दूसरों का मन भी कयूत्किन मोह ले। कयूत्किन अपना मुँह खोल ही पाता था कि ओलेग अपना सिर पीछे की ओर झटकारकर और ठठाकर हँसने लगता था। उसकी बत्तीसी झलक उठती। कयूत्किन उसकी नज़र पर इस तरह चढ़ गया कि वह आनन्द से अपने हाथ रगड़ने लगा। लेकिन कयूत्किन इससे बिलकुल बेख़बर था। ओलेग, ऊल्या या किसी की ओर देखे बिना ही वह सब का जी बहलाने की कोशिश कर रहा था।

उस क्षण जब कि कयूत्किन के मज़ेदार चुटकुले से सैनिक ख़ूब ज़ोर से हँस रहे थे, एक जीप गाड़ी, जो स्तेपी में सड़क के समानान्तर ही दौड़ी चली आ रही थी और धूल की मोटी परत से ढँकी हुई थी, इस दस्ते की बग़ल से सर्र से आगे निकली।

"सावधान!"

नसदार, लम्बी गरदन वाला एक कप्तान दस्ते के बीच में से प्रकट हुआ और एक हाथ से झूलते हुए अपने रिवाल्वर का खोल पकड़े जीप की ओर तेज़ी से दौड़ा। कप्तान की टाँगे पतली थीं। उस जीप में, अपने बड़े-से गोल सिर पर नयी टोपी पहने, एक स्थूलकाय जनरल बैठा था। वह अपने चारों ओर निगाह दौड़ाकर निरीक्षण कर रहा था।

"सावधान खड़े होने की कोई ज़रूरत नहीं," जनरल बोला। उसने जीप से नीचे

उतरकर सलामी दाग़ते कप्तान से हाथ मिलाया। उसके साथ-साथ उसने धूल के बादलों के बीच सड़क पर मार्च करते टामी-गनों वाले दस्ते की ओर तेज़ निगाह से देखा। उसकी छोटी-छोटी आँखें चमक उठीं। जनरल का चेहरा देखने में साधारण था और उस पर दृढ़ता की छाप थी।

"अच्छा, ये तो हमारे ही कुर्स्क के जवान हैं और – कयूत्किन!" वह खुशी से बोला। उसने चालक को इशारा किया कि वह जीप स्तेपी पर लाये और अपने अप्रत्याशित हल्के क़दमों से सैनिकों के क़दम से क़दम मिलाते हुए चल पड़ा। "क्यूत्किन...बहुत खूब! जब तक कयूत्किन ज़िन्दा है, तब तक फ़ौज की आत्मा भी अजेय है!" वह बोला और अपनी चमकती आँखों से कयूत्किन की ओर देखने लगा, हालाँकि ये शब्द उसके इर्द-गिर्द मार्च करते सभी सैनिकों के लिए कहे गये थे।

"मैं सोवियत संघ की सेवा करता हूँ!" कयूत्किन ने गम्भीरता से कहा। उसका मसख़रे जैसा स्वर न जाने कहाँ चला गया था।

जनरल कम्पनी के कमाण्डर की ओर मुड़ा। कमाण्डर उससे एक-दो क़दम पीछे चल रहा था। "साथी कप्तान, क्या इन सैनिकों को मालूम है कि हम कहाँ और क्यों जा रहे हैं?"

"हाँ, उन्हें मालूम है, साथी जनरल!"

"इन्होंने तो पानी-पम्प के पास कमाल कर दिखाया... याद है?" अपने इर्द-गिर्द के सैनिकों की ओर देखते हुए जनरल बोला। "और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इन्होंने अपना बाल भी बाँका नहीं होने दिया... हाँ, यही तो असल बात है," उसने इस तरह ज़ोर देकर कहा मानो किसी ने उसकी बातों का विरोध किया हो। "वरना मौत के घाट उतर जाना तो बड़ा आसान है।"

वे सब अच्छी तरह महसूस कर रहे थे कि जनरल बीते दिनों की उनकी बहादुरी के लिए उतनी दाद नहीं दे रहा था, जितना कि वह आगे की घटनाओं के लिए उन्हें तैयार कर रहा था। उनके चेहरों पर से मुसकान ग़ायब हो गयी और सबके चेहरों पर अर्थपूर्ण भाव झलकने लगा।

"तुम लोग नौजवान हो," जनरल बोलता गया, "लेकिन क्या तुम यह महसूस करते हो कि तुमने कितना अनुभव प्राप्त कर लिया है? क्या मेरी जवानी के दिनों से तुम्हारे वर्तमान की कोई तुलना की जा सकती है? एक वह भी समय था, जब मैंने इस सड़क पर मार्च किया था। लेकिन उस समय का दुश्मन भिन्न था और उसके हथियार और साधन भी भिन्न थे। इस लिहाज़ से मैंने केवल स्कूल तक ही शिक्षा पायी और तुम विश्वविद्यालय से स्नातक होकर निकले हो..."

जनरल ने अपने बड़े-से सिर को इस तरह झटकारा मानो वह किसी ख़याल को

अपने दिमाग से निकाल फेंकना चाहता हो या उसे अच्छी तरह जमाना चाहता हो। ख़ास स्थितियों में अपनी नाख़ुशी ज़ाहिर करने या सन्तोष प्रकट करने का यह उसका अपना अलग ढंग था। लेकिन इस बार ज़ाहिर था कि वह सन्तोष प्रकट कर रहा था : अपनी जवानी के दिनों की याद से और टामी-गनों से सुसज्जित सैनिकों को देखकर उसे ख़ुशी ही थी। चुस्त, फ़ौजी अन्दाज़ से चलना उनके स्वभाव का अंग बन गया था।

"माफ़ करें," कयूत्किन बोला, "क्या वे बहुत दूर तक घुस आये हैं?"

"काफ़ी दूर तक बढ़ आये हैं, शैतान उनके कान न फूँके!" जनरल ने जवाब दिया। "इतनी दूर तक कि हमें-तुम्हें तनिक झेंप होने लगी है।"

"क्या वे और भी आगे बढ़ते जायेंगे?"

जनरल कुछ क्षण तक ख़ामोश चलता रहा।

"यह तुम्हारे और मेरे ऊपर निर्भर करता है... हमने उन पर चोट पिछले जाड़े में की थी – पर इस बीच उनकी शक्ति बढ़ गयी है। उन्होंने यूरोप भर से हथियार और साधन बटोरे और उन्हें एक जगह पर... तुम पर और हम पर खर्च कर डाला। उनका ख़याल है कि हम टिक नहीं पायेंगे! लेकिन उनके पास रिज़र्व बिलकुल नहीं है। यही मुख्य बात है..."

उसकी नज़र सामने की गाड़ी और उसमें बैठे व्यक्तियों पर पड़ी। उसने अचानक ही उस अकेली लड़की को पहचान लिया, जिसे वह राजपथ पर देख चुका था, जब कि जर्मन वमवर्षकों ने हमला किया था। वह मन ही मन कल्पना करने लगा कि उतने अल्प समय में उस लड़की पर क्या बीती होगी और उसके मन में क्या-क्या विचार उठे होंगे, जितने समय में वह अपनी जीप पर डिवीजन की पिछली पंक्ति के पास पहुँचा और उसके बाद अगली टुकड़ियों के पास गया था, जो क्रास्नोदोन से आगे निकल गयी थीं। उसके चेहरे पर करुणा से भी अधिक उदासी का भाव झलक आया और वह अचानक जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाने लगा।

"अच्छा, तुम सफल हो!" वह ज़ोर से बोला। तत्पश्चात जीप को खड़ी रखने का इशारा कर हल्के क़दमों से दौड़ चला। उसकी स्थूलकाया को देखते हुए उसके इन हल्के क़दमों से लोगों को आश्चर्य हो रहा था।

जब तक जनरल दस्ते के साथ रहा तब तक कयूत्किन के सवाल और व्यवहार गम्भीरता के बोझ से दबे रहे। प्रत्यक्षतः वह इसे अनावश्यक समझता था कि जनरल के सामने वह अपने उस रूप को उजागर करे, जिसकी बदौलत वह सैनिकों के बीच विशिष्टता प्राप्त कर लेता था और उनका प्रिय पात्र बन जाता था। लेकिन आँखों से जीप के ओझल होते ही उसने फिर से ज़िन्दादिल मसख़रे का रूप धारण कर

लिया।

विशालकाय और तवे जैसे बड़े और काले हाथों वाला एक पैदल सैनिक पिछली पाँत में से बाहर निकला। वह एक चिकट चिथड़े में कोई भारी-सी चीज़ लपेटे हुए था और उसके बोझ से हाँफ रहा था।

"साथियो! खनिकों की लारी कहाँ है? उसने पूछा। "मुझे लोगों ने बताया कि वह इधर ही कहीं चली जा रही है।"

"वहाँ है वह, लेकिन वह चल नहीं रही है!" कयूत्किन ने मज़ाक़ किया और बच्चों से भरी लारी की ओर इशारा किया।

पाँत दरअसल बिलकुल रुक गयी थी, क्योंकि आगे कुछ व्यवधान आ गया था।

पैदल सेना का वह सैनिक वाल्को और ग्रिगोरी शेव्त्सोव के पास पहुँचा। शेव्त्सोव ने सुनहरे बालों वाली नन्ही-सी लड़की को गोद से नीचे उतारा। "माफ़ करे, साथियो," वह सैनिक बोला। "मैं कुछ औज़ारों से छुट्टी पाना चाहता हूँ। तुम लोग कारीगर आदमी हो, शायद ये तुम्हारे काम के निकल आयें। मेरे लिए तो ये फ़ाज़िल बोझ ही हैं।" वह अपने चीकट चिथड़े को खोलने लगा।

वाल्को और शेव्त्सोव मुआइना करने के लिए झुक गये।

"ये रहे," सैनिक ने गम्भीरता से कहा। उसके बड़े-बड़े हाथों में फैले हुए कपड़े पर फ़िटर के औज़ारों का एक नया सेट रखा था।

"मैंने समझा नहीं – क्या तुम इन्हें बेचना चाहते हो?" वाल्को ने पूछा। उसकी घनी, जड़ी हुई भौंहों के नीचे चमकती जिप्सी जैसी आँखों में अमैत्री का भाव झलक आया था।

"तुम्हारी ज़बान कैसी चल रही है!" सैनिक ने कड़ककर उत्तर दिया। ईंट के रंग जैसा उसका चेहरा लाल हो गया और उस पर पसीने की बूँदें चुहचुहा आयीं। "मुझे ये स्तेपी में पड़े मिले थे। मैं अपनी राह चला आ रहा था और ये वहाँ पड़े थे – चिथड़े में लिपटे हुए। किसी के गिर गये होंगे।"

"शायद बोझ हल्का करने के लिए किसी ने इन्हें फेंक ही दिया हो," वाल्को हँसा।

"एक होशियार कामगार अपने औज़ार कभी नहीं फेंक सकता – ये अनजाने ही गिर पड़े हैं," सैनिक ने शेव्त्सोव की ओर देखते हुए रुखाई से कहा।

"अच्छा, बहुत-बहुत धन्यवाद, मेरे दोस्त!" शेव्त्सोव बोला और औज़ारों को लपेटने में सैनिक की मदद करने लगा।

"अच्छा, तो तय रहा कि ये तुम्हारे पास रहेंगे। बड़े दुख की बात होती, अगर इन्हें रास्ते में फेंकना पड़ता। कितने अच्छे औजार हैं! तुम्हारे साथ लारी है और मैं

तो पूरे बोझ के साथ मार्च कर रहा हूँ। इन्हें मैं कहाँ रखता?" सैनिक ने और अधिक प्रसन्नता से कहा। "भला हो तुम्हारा। " उसने केवल शेव्त्सोव से हाथ मिलाया और जल्दी-जल्दी पीछे लौटकर पाँत में मिल गया।

वाल्को अपनी आँखों से कुछ देर तक उसका अनुसरण करता रहा। उसके चेहरे पर गहरा अनुमोदन का भाव झलक रहा था। "यह अच्छा आदमी है," उसने भर्राई हुई आवाज़ में कहा।

एक हाथ में औजारों की पोटली लिये और दूसरे हाथ से नन्ही लड़की के बाल सहलाते हुए शेव्त्सोव ने महसूस किया कि उसके निदेशक ने शुरू में उस सैनिक का विश्वास इसलिए नहीं किया कि वह पत्थर दिल है, बल्कि इसलिए कि वह एक ऐसी खान का प्रबन्धक रह चुका है, जिसमें हज़ारों व्यक्ति काम करते थे और जिससे रोज़ाना हज़ारों टन कोयला निकाला जाता था। वह यह सोचने का आदी हो गया है कि कभी-कभी लोग उसे धोखा दे सकते हैं। उस खान को उसने अपने ही हाथों से उड़ा दिया था। कुछ लोगों को वहाँ से हटा दिया गया था और कुछ लोग जर्मनों का मुक़ाबला करने के लिए वहीं रुके रह गये थे। और शेव्त्सोव ने पहले-पहल यह महसूस किया कि दरअसल निदेशक का हृदय अब अवश्य ही दुःखी होगा। साँझ के समय कहीं आगे से तोप छूटने की आवाज़ें आयीं। रात को वे और नज़दीक आती गयीं और अब मशीनगनों के दग़ने की आवाज़ें भी पहचानी जा सकती थीं। रात भर कामेंस्क की ओर जगह-जगह से आग की लपटें उठती रहीं। आग की बड़ी-बड़ी ज्वालाओं से कभी-कभी तो पूरी की पूरी पाँत दमक उठती थी। उनकी चमक से आसमान में शराब के रंग जैसी चौड़ी धारियाँ खिंच जाती और अँधियारी स्तेपी में क़ब्रों के टीले गहरी गुलाबी रोशनी में स्पष्ट नज़र आने लगते।

"साझी क़ब्रें," विक्टर के पिता ने कहा। वह ख़ामोश अपनी गाड़ी में बैठा था। उसकी चुरुट की चमक से बार-बार उसका मांसल चेहरा दमक उठता था। "ये पुरानी नहीं हैं, ये हमारी ही क़ब्रें हैं," उन्होंने गम्भीरता से कहा। "हम पार्ख़ोमेन्को और वोरोशीलोव की अगुआई में यहाँ दुश्मनों की सेना को खदेड़कर निकल गये थे। और यहीं पर हमने गृहयुद्ध में कमाण्डरों के साथ शहीदों को दफ़नाया था...?

अनातोली, विक्टर, ओलेग और ऊल्या ने ख़ामोशी के साथ क़ब्रों की ओर देखा, जो आग की रोशनी में नहायी थीं।

"हमने स्कूल में उस युद्ध के सम्बन्ध में न जाने कितने निबन्ध लिखे, कैसे-कैसे सपने हम इसके बारे में देखा करते थे और अपने बुज़ुर्गों से ईर्ष्या करते थे! और अब यह युद्ध हमारे सिर पर टूट पड़ा है, दूसरा युद्ध, मानो जान-बूझकर यह हमारा इम्तिहान लेने आया है। यह पता लगाने के लिए कि हम किस मिट्टी

के बने हैं। फिर भी हम इससे दूर भाग रहे हैं!" ओलेग बोला और उसने दीर्घ निश्वास छोड़ा।

रात में इस विशाल कारवाँ की गतिविधि में कुछ हेर-फेर हुआ। कारख़ानों, कार्यालयों और नागरिकों की कारें, लारियाँ और गाड़ियाँ तथा शरणार्थियों की भीड़ रुक गयी। बताया गया कि फ़ौजी टुकड़ियाँ आगे बढ़ रही थीं। टामी-गनों से सुसज्जित दस्ते की भी बारी आ गयी। इसके सैनिक अँधेरे में बढ़ चले। उनके हथियार धीरे-धीरे खनखना रहे थे। उनके पीछे-पीछे सारी यूनिट बढ़ चली। टुकड़ियों को रास्ता देने के लिए कारें और लारियाँ हटने लगीं। उनके इंजन घरघरा उठे। अन्धकार में चुरुट चमकने लगे और लगता था जैसे आसमान में नन्हे सितारे झिलमिला रहे हों।

किसी ने ऊल्या की कोहनी छुई। जब वह उधर मुड़ी, तो उसने कयूत्किन को गाड़ी की बग़ल में खड़ा पाया।

"एक मिनट के लिए सुनो!" वह फुसफुसाया। उसकी आवाज़ मुश्किल से सुनायी पड़ी। वह धीरे-से गाड़ी से उतरकर उसके पास आ गयी। वे वहाँ से थोड़ा हट गये।

"तुम्हें कष्ट देने के लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ," वह धीरे-से बोला, "लेकिन तुम्हें कामेंस्क नहीं जाना चाहिए। किसी भी क्षण वह जर्मनों के क़ब्ज़े में आ सकता है। वे दोनेत्स के पास काफ़ी दूर तक पहुँच गये हैं। किसी को यह नहीं बताना कि मैंने तुम्हें यह ख़बर दी है। मुझे बताने का अधिकार भी नहीं है, पर हम एक दूसरे पर विश्वास कर सकते हैं और यदि तुम्हें कुछ हो गया, तो मुझे बड़ा पछतावा होगा। तुम्हें दक्षिण की ओर मुड़ना चाहिए। भगवान रहम करे तो बच जायेंगे।"

कयूत्किन इस तरह धीमे-धीमे और रुक-रुककर बोल रहा था, मानो वह अपने हाथ में कोई ऐसा चिराग़ लिये हो, जो उसकी साँस से बुझ सकता हो। उसका चेहरा अँधेरे में मुश्किल से ही दिखायी पड़ता था, लेकिन वह सौम्य और गम्भीर था। उसकी आँखों में अब क्लान्ति नहीं, बल्कि चमक थी जो अँधेरे में स्पष्ट दिखायी पड़ती थी।

उसके शब्दों से अधिक उसके बोलने के ढंग का ऊल्या पर ज़ोरदार प्रभाव पड़ा। वह चुपचाप उसकी ओर देख रही थी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" कयूत्किन ने मुलायमियत से पूछा।

"ऊल्याना ग्रोमोवा।"

"तुम्हारे पास अपना फ़ोटो है?"

"नहीं।"

"मेरा अन्दाज़ भी यही था।" उसके स्वर में उदासी थी।

करुणा और शरारत की-सी लहर ऊल्या को झनझना गयी। उसने अपना चेहरा

कयूत्किन के चेहरो के बिलकुल निकट लाकर झुका लिया।

"मेरे पास फ़ोटो तो नहीं," वह फुसफुसायी, "लेकिन तुम यदि मुझे अच्छी तरह देखो, बिलकुल पास से..." वह रुक गयी और उसने अपनी काली आँखें दो-चार क्षण तक उसके चेहरे पर गड़ा दीं, "तो मुझे भूल नहीं सकोगे..."

वह कुछ क्षणों तक स्थिर खड़ा रहा। केवल उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से अँधेरे में भी उदासी झलक रही थी।

"मैं तुम्हें भूल नहीं सकता क्योंकि तुम भुलायी नहीं जा सकतीं। अलविदा," वह फुसफुसाया। उसकी आवाज़ फिर मुश्किल से सुनायी पड़ी।

जब वह अपने दस्ते में शामिल होने के लिए अँधेरे में बढ़ा, तो उसके भारी-भरकम फ़ौजी बूटों से चरमर की आवाज़ हुई। उसकी यूनिट रात के अँधेरे में बढ़ती जा रही थी और सुलगते हुए चुरुट आकाश-गंगा जैसे झिलमिला रहे थे।

ऊल्या सोचने लगी कि कयूत्किन ने उससे जो कुछ कहा, उसे वह दूसरों को बताये या नहीं। लेकिन तुरन्त ही पता चल गया कि कयूत्किन के अलावा और लोग भी यह जानते थे। यह ख़बर गाड़ियों के कारवाँ के एक छोर से दूसरे छोर तक फैल गयी थी।

जब वह अपनी गाड़ी के पास पहुँची, तो उसने देखा कि कई कारें, लारियाँ और गाड़ियाँ दक्षिण-पूर्व की दिशा में स्तेपी की ओर मुड़ने लगीं। शरणार्थियों की लम्बी पाँत भी उसी दिशा में जाने लगी।

"हमें लिख़ाया की ओर बढ़ना होगा," वाल्को ने भर्रायी आवाज़ में कहा।

विक्टर के पिता ने उससे कुछ पूछा :

"अलग-अलग क्यों? साथ-साथ चलें। जो होना होगा, सो एक साथ ही होगा," वाल्को बोला।

पौ फटते-फटते वे स्तेपी में पहुँच गये। वे सड़क से बहुत दूर निकल आये थे।

खुली स्तेपी पर प्रभात उतरा और सारी सृष्टि अपनी सुन्दरता से मन हरने लगी। शीघ्र ही आसमान साफ़ हो गया और गेहूँ के खेतों के अनन्त विस्तार के ऊपर दमकने लगा। इन हिस्सों में गेहूँ के खेतों को नुक़सान नहीं पहुँचा था। सूरज की आड़ी-तिरछी सुकुमार किरणें जन-प्रवाह और टीलों की ढलानों पर पड़ रही थीं। नयी हरी घास पर टिके नन्हे ओसकण रुपहली आभा से चमक रहे थे। लेकिन बालरवि के प्रकाश में बच्चों के उनींदे, थके और पतले चेहरे तथा वयस्कों के दुःखी, चिन्तित और शंकित चेहरे कैसा उदास और करुण दृश्य उपस्थित कर रहे थे।

ऊल्या की नज़र अनाथालय की उस मेट्रन पर पड़ी, जो ऊँचे रबड़ बूट पहने थी। व्यथा के मारे उसका चेहरा काला पड़ गया था। वह रास्ते भर पैदल चलती रही

थी और केवल रात में ही गाड़ी पर बैठी थी। दोनेत्स्क के सूरज ने मानो उसे बिलकुल ही सुखा और जला दिया था। शायद उस रात भी वह सो नहीं सकी थी। अभी वह कुछ बोल नहीं रही थी ओर उसकी प्रत्येक गतिविधि यंत्रवत लगती थी। उसकी पैनी, सूनी आँखों में इस लोक का नहीं बल्कि दूसरे लोक का भाव झलक रहा था।

तड़के से ही वायुमण्डल इंजनों की लगातार घरघराहट से गूँज रहा था। विमान तो नज़र नहीं आ रहे थे, लेकिन सामने, तनिक बायीं ओर से, बमों के फटने की कर्कश आवाज़ आ रही थी और कभी-कभी सुदूर आसमान में मशीनगनों की गोलियों के दग़ने की आवाज़ भी सुनायी पड़ती थी।

दोनेत्स और कामेंस्क के ऊपर विमानों की भिड़न्त हो रही थी, जो दिखायी तो नहीं लेकिन सुनायी ज़रूर दे रही थी। सामने केवल एक बार वे एक ऐसे जर्मन विमान को देख सके, जो अपने बमों का बोझ गिराकर नीचे उड़ता हुआ जा रहा था।

ओलेग अचानक बग्घी से कूद पड़ा और वहाँ गाड़ी के पहुँचने तक इन्तज़ार करता रहा। तब वह गाड़ी की बग़ल को पकड़े साथ-साथ चलते हुए अपनी बड़ी-बड़ी आर्द्र आँखों से अपने मित्रों की ओर देखने लगा।

"ज़रा कल्पना करो, ज़रा सोचो," वह बोला, "यदि जर्मन सचमुच दोनेत्स को पार कर गये हैं और जो यूनिट अभी-अभी हमारा साथ छोड़कर उन्हें रोकने के लिए कामेंस्क की ओर गयी है, उसके लिए कोई निकास नहीं रह जायेगा। और टामी-गनों से लैस वे सैनिक, हमारा मनोरंजन करने वाला वह अलबेला युवक, वह जनरल, इन सब के भागने के लिए कोई रास्ता नहीं बचेगा! और यह सब उन्हें मालूम था, निस्सन्देह, वे जानते थे और बढ़ते गये!" ओलेग उद्विग्नता से बोला।

यह सोचते ही कि मौत का सामना करने से पहले कयूत्किन ऊल्या से विदा लेने आया था, वह सिहर उठी। ऊल्या ने उससे जो कुछ कहा था, उसे याद कर उसे बेहद शर्म महसूस हुई। लेकिन तब उसके अन्तःकरण से आवाज़ उठी कि मरते वक़्त जब कयूत्किन को ऊल्या की याद हो आयेगी, तो इन शब्दों से कयूत्किन के दिल को ज़रा भी चोट नहीं पहुँचेगी।

अध्याय 7

शरणार्थियों का रेला क्रास्नोदोन में से होकर अभी भी बढ़ा जा रहा था। नगर के ऊपर धूल का बादल छाया था, जिसने कपड़ों, फूल-पौघों और साग-सब्ज़ी को ढँक रखा था।

पार्क के पार से रेलगाड़ी की चहल-पहल सुनायी पड़ती थी, जो बारी-बारी से हर खान से हटाये जाने लायक़ मशीनों इत्यादि को इकट्ठा करने के लिए आगे-पीछे

आ-जा रही थी। इंजन चीख़ रहा था, सीटियाँ बज रही थी और स्विचमैन बार-बार भोंपू बजा रहा था। लेवल-क्रासिंग के पास उत्तेजनापूर्ण आवाज़ें सुनायी पड़ रही थीं – अनगिनत पैरों की धमक, कारों और लारियों के इंजनों की घरघराहट, भारी तोपों के पहियों की खड़खड़ाहट। यूनिटें अभी भी नगर से बाहर मार्च करती जा रही थीं। दूर की पहाड़ियों के पार जहाँ-तहाँ से तोपों का गर्जन सुनायी पड़ता था। ऐसे लगता जैसे विशाल स्तेपी पर कोई बहुत बड़ा ख़ाली ड्रम लुढ़कता जा रहा हो।

पार्क के फाटकों के सामने 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की दुमंज़िला पत्थर की बनी इमारत के पास चौड़ी सड़क पर एक लारी अब भी खड़ी थी। मुख्य खुले दरवाज़ों में से स्त्रियाँ और पुरुष ट्रस्ट की बची-खुची सम्पत्ति बाहर निकालकर उसे लारी पर लाद रहे थे।

वे ख़ामोशी और होशियारी से अपना काम किये जा रहे थे। उनके चेहरों पर गम्भीर व्यस्तता का भाव था। हाथ वज़नी सामान ढोने-लादने की वजह से सूज और थक गये थे और गन्दगी और पसीने से लथपथ थे। वहाँ से कुछ दूर पर, इमारत की खिड़कियों के ठीक नीचे, युवक और युवती का एक जोड़ा अपनी सरस बातचीत में मशगूल था। यह ज़ाहिर था कि न लारी, न पसीने से तर-बतर काम करते लोग और न इर्द-गिर्द की घटनाएँ उन्हें उतनी महत्वपूर्ण जान पड़ रही थीं, जितनी कि उनकी बातचीत का विषय।

लड़की गुलाबी रंग का ब्लाउज़ और पीले रंग के जूते पहने थी। पैरों में मोज़े न थे। वह लम्बे क़द और भरे-पूरे शरीर की थी। उसके बाल हल्के भूरे थे। उसकी बादाम-सी आँखें काली और चमकीली थीं। वह ज़रा ऐंचा देखती थी। युवक की ओर देखते हुए वह अपना सुघड़ सिर ऊपर की ओर उठाये और गोरी गरदन को तनिक एक ओर को झुकाये थी।

युवक दुबला-पतला, ढीला-ढाला और ज़रा गोल कन्धों वाला था। उसकी फीकी नीली क़मीज़ पर पतली पेटी बँधी थी और छोटी आस्तीनों के कारण उसकी लम्बी बाँहें कुछ उघड़ी हुई थीं। वह भूरी धारियों वाला पतलून पहने था लेकिन वह भी छोटा था। उसके पैरों में मामूली चप्पल थे। बातें करते वक़्त उसके सीधे, लम्बे, भूरे बाल ललाट और कानों के ऊपर गिर पड़ते और वह सिर झटकारकर उन्हें सहेज लेता। उसका पीला-चेहरा कुछ इस तरह का था, जो धूप में विरले ही सँवला पाता है। युवक शर्मीले स्वभाव का था। उसके चेहरे पर स्वाभाविक विनोद और तीव्र उत्साह का ऐसा भाव झलक रहा था कि लगता था वह अब फूटा कि तब फूटा। लड़की की उत्तेजित आँखें उस युवक के चेहरे पर गड़ी रहीं।

लगता था जैसे इस जोड़े को यह परवाह न थी कि कोई उन्हें देख रहा और

उनकी बातें सुन रहा है या नहीं। लेकिन परायी आँखें उन पर टिकी थीं।

सड़क के दूसरी ओर, एक छोटे-से मकान के फाटक के पास बड़े ही पुराने ढर्रे की एक काली जीप खड़ी थी। कार गयी-गुज़री हालत में थी : उसके निचले हिस्से को जंग खा गया था और आजू-बाजू में गहरी खरोंचे पड़ी थीं। उसे देखकर उस ऊँट की याद हो आती थी, जिसका इंजील में उल्लेख है। जब ऊँट सूई के नाके में से निकलकर पार गया होगा, तो उसका यही कुछ बच रहा होगा। यह सोवियत मोटर उद्योग के प्रथम उत्पादन का नमूना था, जिसका नाम लोगों ने 'गाज़िक' रख छोड़ा था।

हाँ, यह कार उन 'गाज़िकों' में से थी, जिन्होंने दोन और कज़ाख़स्तान के स्तेपियों तथा उत्तर के तुन्द्रा प्रदेश को पार कर हज़ारों मील का सफ़र किया था। काकेशिया और पामीर के पहाड़ों को लाँघा था, अल्ताई और सिख़ोते-आलीन के टाइगा को पार किया था, द्नीपर बाँध, स्तालिनग्राद ट्रैक्टर कारख़ाने और माग्नीतोगोर्स्क लोहा व इस्पात कारख़ाने के निर्माण में सहयोग दिया था। हाँ, यह उन्हीं कारों में से एक थी, जिन्होंने नोबाइल अभियानदल को बचाने के लिए चुख़्नोवस्की और उसके साथियों को उत्तरी हवाई अड्डे तक पहुँचाया था। आमूर नदी के पार के भयंकर तूफ़ानों और बर्फ़ीली दीवारों में से रास्ता निकालते कोमसोमोल्स्क के प्रथम निर्माताओं को मदद पहुँचायी थीं। संक्षेप में, यह उन 'गाज़िकों' में से एक थी, जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम से प्रथम पंचवर्षीय योजना को सफल बनाया था और आधुनिक कारों के लिए पथ प्रशस्त किया था।

उस छोटे-से मकान के पास जो 'गाज़िक' खड़ी थी, वह बन्द क़िस्म की थी। उसके भीतर पिछली सीट के सामने के फ़र्श पर एक भारी बक्सा रखा था। इस बक्से के सहारे दो सूटकेस रखे थे और उनके ऊपर दो भरे-पूरे किटबेग पड़े थे। दो भरी हुई सोवियत टामी-गनें उन के सहारे टिकी हुई थीं और कारतूस-पेटियाँ साथ थीं। सीट के बचे हुए हिस्से पर एक स्त्री बैठी थी, जिसके बाल सुनहरे रंग के और चेहरा धूप में तपा हुआ था। वह मोटी सफ़री पोशाक पहने थी, जिसका रंग धूप और बारिश के कारण फीका पड़ गया था। पैर रखने के लिए जगह न थी, इसलिए उसने अपने पैर एक-दूसरे के ऊपर चढ़ा रखे थे, जो बक्से और दरवाज़े के बीच सिकुड़े हुए-से लगते थे।

यह स्त्री बेचैनी से दरवाज़े में से बाहर झाँक रही थी, जो मुद्दत से बिना शीशे के था। उसकी नज़रें सायबान से ट्रस्ट तक दौड़ रही थीं, जहाँ लारी पर सामान लादा जा रहा था। ज़ाहिर था कि वह किसी का बहुत देर से इन्तज़ार कर रही थी। उसे यह अच्छा न लग रहा था कि इस अकेली कार पर और उस पर सामान लादने वाले

व्यक्तियों की निगाह पड़ रही थी। उसके कठोर चेहरे पर छाया की तरह चिन्ता के भाव झलकते रहे। उसके बाद सीट से पीठ लगाकर वह एकटक युवक-युवती को देखने लगी, जो ट्रस्ट की खिड़की के नीचे बातों में खोये हुए थे। उसके चेहरे पर धीरे-धीरे कोमलता आने लगी। उसकी भूरी आँखों में एक स्निग्ध, किन्तु उदास-सी मुसकान झलकी और उसके बन्द होंठों पर उतर आयी।

उसकी उम्र कोई तीस साल की होगी। वह इससे बिलकुल अनजान थी कि युवक-युवती को देखते वक़्त उसके चेहरे पर जो अनुरागपूर्ण सहानुभूति और उदासी का भाव तिर आया था, उसका कारण यह था कि वह तीस साल की हो चुकी थी और अब उनकी तरह फिर कभी नहीं हो सकेगी।

युवक और युवती अपने इर्द-गिर्द की दुनिया से बिलकुल बेख़बर आपस में अपने प्यार का इज़हार कर रहे थे। उन्हें जल्द ही एक दूसरे से जुदा होना था। वे अपना प्यार भी उन सभी युवा प्रेमी-प्रेमिकाओं की तरह ज़ाहिर कर रहे थे, जो प्रेम के सिवा दुनिया के हर विषय की बड़े जोश-ख़रोश से चर्चा करते हैं।

"मुझे कितनी ख़ुशी है कि तुम आ गये, वान्या! मेरे मन का बोझ हल्का हुआ," लड़की चमकती आँखों से उसकी ओर देखते हुए बोली। उसका सिर एक ओर झुका था। उसकी यह अदा उस युवक को बहुत ही भाती थी। "मैं सोचती थी कि हम जुदा हो जायेंगे और मैं तुम्हें देख नहीं सकूँगी।"

"लेकिन तुम्हें मालूम है कि मैं इतने दिन तक तुमसे क्यों नहीं मिल सका?" वह उसकी ओर देखते हुए भारी भर्रायी आवाज़ में बोला। लड़के की नज़र कमज़ोर थी, लेकिन उसकी आँखों में उत्साह की ज्वाला, लगता था, जैसे भभक उठेगी। "मुझे यक़ीन है तुम सब कुछ जानती-समझती हो – मुझे तीन दिन पहले ही चले जाना चाहिए था। मैंने सब तैयारी पूरी कर ली थी और तुमसे विदा लेने के लिए ख़ूब बन-ठनकर आने ही वाला था कि ज़िला कोमसोमोल समिति से मेरा अचानक बुलावा आ गया। उन्हें अभी-अभी हटने का आदेश मिला था और उसके बाद सब कुछ गड़बड़ हो गया। मुझे इस बात का बड़ा खेद है कि मुझसे सम्बन्ध रखने वाले सभी लोग चले गये हैं। मैं पीछे छूट गया हूँ। साथी मदद चाहते हैं और मुझे मदद करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए... आज कामेंस्क जाने के लिए ओलेग अपनी बग्घी में मुझे बिठाने के लिए तैयार था... तुम्हें मालूम है हम कैसे दोस्त हैं... लेकिन मुझे यहाँ से चले जाना कुछ अजीब-सा लग रहा था..."

"तुम्हें मालूम है, मेरे दिमाग़ का बोझ कितना हल्का हुआ?" वह फिर बोली। उसकी आँखों में गहरी चमक थी और वह एकटक युवक की ओर देख रही थी।

"मैं भी बहुत ख़ुश हूँ कि मैं तुम्हें देख तो सका," वह बोला। लड़की से वह

अपनी आँखें हटा नहीं पा रहा था। लड़की के खिले चेहरे, भरी गरदन और गुलाबी ब्लाउज़ के नीचे धड़कते शरीर की सुहानी गरमी से वह पुलकित हो रहा था। "क्या यह कल्पना कर सकती हों," वह कहता गया, "वोरोशीलोव स्कूल, गोर्की स्कूल, लेनिन क्लब, बच्चों का अस्पताल, इन सबकी ज़िम्मेदारी अब मेरे ऊपर है! सौभाग्य से मुझे एक अच्छा सहायक भी मिल गया है – ज़ोरा अरुत्युन्यान्त्स! याद है, स्कूल में हमारे साथ पढ़ता था? लाजवाब आदमी है! अपनी मर्ज़ी से मेरा हाथ बँटा रहा है। हमें याद नहीं हमें सोये कितने दिन हो गये! सारा दिन और सारी रात हम अपने पाँवों पर काट लेते हैं : गाड़ियाँ, कारें, लारियाँ, घोड़ों के लिए चारा, सबका इन्तज़ाम करना होता है। कभी घिसा-घिसाया टायर फटा, तो कहीं बग्घी को मरम्मत के लिए लुहारख़ाना भेजना पड़ा... ओह, आफ़त है आफ़त! लेकिन मुझे मालूम था कि तुम गयी नहीं हो, पिताजी ने बताया था," वह लाजभरी मुस्कराहट के साथ बोला। "मैं पिछली रात तुम्हारे घर के पास से गुज़रा – मेरा हृदय धड़क रहा था और मैं दरवाज़ा खटखटाना चाहता था," वह ज़ोर से हँस पड़ा। "तब मुझे तुम्हारे पिताजी की याद हो आयी। नहीं, वान्या, मैंने अपने-आप से कहा, रुको ज़रा..."

"तुम्हें मालूम है, एक बहुत बड़ा बोझ हल्का हुआ..." वह बोली, लेकिन उसे आगे कुछ कहने का लड़के ने अवसर ही न दिया।

"मैंने फ़ैसला किया कि आज कोई काम नहीं करूँगा, क्योंकि मुझे डर था कि तुम चली जाओगी और मैं तुमसे मिल नहीं सकूँगा। और हुआ क्या, तुम्हें मालूम है? पता चला कि शिशुगृह अभी ख़ाली नहीं किया जा सका है – वही अनाथालय, जिसे 'वोस्मीदोमिकी' में पिछले जाड़े में खोला गया था। मेट्रन, जो हमारे मकान में ही रहती है, आँखों में आँसू लिये मेरे पास पहुँची। 'साथी ज़ेम्नुख़ोव, ' वह बोली, 'हमारी मदद करो! शायद कोमसोमोल समिति के ज़रिए से तुम हमें कोई गाड़ी दिलवा सको।' 'कोमसोमोल समिति तो जा चुकी है। तुम शिक्षा विभाग में जाकर कोशिश करो, ' मैंने कहा। वह कहने लगी : 'मैं इन दिनों शिक्षा विभाग के पास कई बार दौड़ती रही हूँ। उन्होंने हमे यहाँ से हटाने का वादा किया। आज सुबह मैं उनके पास फिर गयी। उनके पास अपने लिए भी कोई सवारी नहीं थी। उसके बाद, इधर-उधर दौड़-धूप करते रहने के बाद जब मैं वहाँ फिर पहुँची, तो शिक्षा विभाग का कोई अस्तित्व ही न था।' मैंने कहा : 'यदि उनके लिए भी कोई सवारी न थी, तो वे ग़ायब कैसे हो गये?' वह बोली : 'मैं कैसे जानूँ। अन्तर्धान हो गये हैं।' शिक्षा विभाग शून्य में खो गया!" वान्या ज़ेम्नुख़ोव अचानक इतने ज़ोर से हँसा कि उसके लम्बे, सीधे बाल ललाट और कानों पर बिखर आये, लेकिन उसने सिर झटकारकर उन्हें फिर से सहेज लिया। "सनकी कहीं के!" वह हँसते हुए बोला। " 'बस सब चौपट हो गया, ' मैंने सोचा। 'अब

मैं क्लावा से कभी भी नहीं मिल सकूँगा!' उसके बाद, जानती हो, क्या हुआ? ज़ोरा और मैं, दोनों साथ ही काम में लग गये और पाँच गाड़ियों का बन्दोबस्त हो गया। जानती हो कहाँ से? सैनिकों की मदद से! मेट्रन ने हमें बहुत धन्यवाद दिया और हम तो उसके आँसुओं में डूब-से गये। उसके बाद मैंने जोरा से कहा : 'तुम भागे-भागे घर जाओ। अपना सामान बाँधो। मैं भी यही करने जा रहा हूँ।' मैंने उसे यह भी इशारे से समझाया कि पहले मुझे एक जगह जाना है – बेशक मुझे तुम्हारे पास आना था – और कहा : 'यदि मुझे कुछ देर हो जाये, तो इन्तज़ार करना, भागना नहीं।' मैंने उसे अपना मन्तव्य बता दिया था... मैं अपना सामान बाँध-बूँधकर तैयार ही था कि अचानक कोई दौड़ता हुआ आ पहुँचा। वह था तोल्या ओर्लोव! जानती हो उसे? वही जिसे लोग 'घर्घरक' कहते हैं..."

"मेरे दिमाग़ का बोझ उतरा," वह आख़िरकार टोकते हुए बोली। "मुझे यही डर था कि तुम अब नहीं आओगे। मैं खुद जाकर तुमसे मिल भी तो नहीं सकती थी..." उसने कोमल और मन्द आवाज़ में कहा। उसकी आँखों में अनुराग तिर आया था।

"क्यों नहीं?" उसने अचानक आश्चर्य से पूछा।

"ओह, क्या तुम नहीं समझ सकते!" वह झेंप गयी। "मैं पिता जी से क्या कहती?"

इससे अधिक वह कुछ नहीं कह पायी। वह अपनी बातों से उसे यह समझाना चाहती थी कि उनका सम्बन्ध अब कोई मामूली सम्बन्ध नहीं रह गया है, उसमें कुछ रहस्य निहित है। यदि वह खुद नहीं कह सकता था, तो उसे तो किसी तरह समझाना ही था।

वह ख़ामोश हो गया और उसे इस तरह देखने लगा कि लड़की का चौड़ा चेहरा और गुलाबी ब्लाउज़ की किनारी तक उसकी भरी-पूरी गरदन लज्जा से ब्लाउज़ की ही तरह गुलाबी हो उठे।

"ऐसी बात नहीं कि वह तुम्हें पसन्द नहीं करते। ऐसा न सोचो! कई बार वह कह चुके हैं : 'ज़ेम्नुख़ोव कितना चतुर लड़का है'। और तुम्हें मालूम है।" उसकी बादाम-सी आँखें चमकने लगी। वह फिर अपनी नाज़ुक आवाज़ में बोली : "यदि तुम चाहो, तो हमारे साथ चले चलो।"

लड़के के दिमाग़ में यह ख़याल ही कभी नहीं उठा था कि वह अपनी प्रेमिका के साथ जा सकता है। इस अप्रत्याशित अवसर से वह इस तरह भौंचक हो गया कि झेंपकर मुस्कराने और उसकी ओर घूरकर देखने लगा। अचानक उसका चेहरा गम्भीर हो गया और वह खोया-खोया-सा सड़क की ओर देखने लगा। वह पार्क की ओर पीठ करके खड़ा था। उसके सामने दक्षिण की ओर जाने वाली लम्बी सड़क तीखी धूप में

चमक रही थी। जहाँ से वह ढलवाँ होकर दूसरी लेवल-क्रासिंग की ओर जाती थी, वहाँ लगता था जैसे वह एकाएक ख़त्म हो गयी है। काफ़ी दूरी पर स्तेपी की नीली पहाड़ियों के पार आग की लपेटों से निकले धुएँ के बादल लटके दिखायी पड़ रहे थे। लेकिन उसे कुछ भी नहीं दिखायी पड़ा, क्योंकि नज़र कमज़ोर होने के कारण उसे दूर की चीज़ें साफ़-साफ़ नहीं दिखायी पड़ती थीं। उसे दूर से केवल तोपों की गरज, पार्क के पीछे रेलवे इंजन की चीख़ और स्विचमैन के भोंपू की जानी-पहचानी आवाज़ भर सुनायी पड़ती रही।

"मेरा सामान मेरे साथ नहीं है, क्लावा," वह उदास आवाज़ में बोला और उसने अपनी बाँहें इस तरह हिलायीं, मानो लम्बे और अस्त-व्यस्त बालों से लदे अपने नंगे सिर, छोटी आस्तीनों वाली बदरंग छींट की क़मीज़, फटे-पुराने पतलून और बिना मोज़ों के पैरों में पड़े मामूली स्लीपर की ओर इशारा करना चाहता था। "मैं अपना चश्मा भी भूल आया हूँ और तुम्हें अच्छी तरह देख भी नहीं सकता," वह हँसते हुए, किन्तु चिन्तित आवाज़ में बोला।

"हम पिताजी से कहकर : तुम्हारा सामान लाने लारी से ही चले चलेंगे," वह अनुराग के साथ बोली। उसने वान्या को कनखियों से देखते हुए उसका हाथ अपने हाथ में लेने के लिए हाथ बढ़ाया, पर झिझक गयी।

क्लावा का पिता लारी के पीछे से प्रकट हुआ मानो वह उनकी बातें सुनता रहा हो। वह टोपी, ऊँचे बूट और पुरानी जैकेट पहने था और पसीने से तर-बतर था। उसके हाथ में दो सूटकेस थे। वह मुआइना करने लगा कि लारी में उन सूटकेसों को रखने लायक़ जगह है या नहीं, लेकिन वह ऊपर से नीचे तक लदी थी।

बक्सों और गट्ठरों के बीच खड़ा एक मज़दूर घुटने के बल एक ओर झुकते हुए बोला – "इन्हें बढ़ाओ, साथी कोवल्योव। मैं इनके लिए जगह बना लूँगा।" उसने सूटकेसों को एक-एक करके ऊपर उठाकर रख दिया।

इस बीच वान्या का पिता भी लारी के पीछे से प्रकट हो चुका था। वह अपने पतले उभरी नसों वाले हाथों में गट्ठर लिए था। जान पड़ता था गट्ठर में धुलाई के कपड़े बँधे हैं, शायद चादरें-तौलिये वग़ैरह। वह उसका बोझ नहीं सम्भाल पा रहा था। उसके क़दम लड़खड़ा रहे थे। धूप में तपा चेहरा पीला पड़ा और झुर्रियों से भरा दिखायी पड़ता था और वह पसीने से तर-बतर था। उसके मुरझाये हुए चेहरे पर जड़ी बड़ी-बड़ी आँखों की चमक भी बुझ गयी थी।

वान्या का पिता अलेक्सान्द्र ज़ेम्नुख़ोव कोयला ट्रस्ट कार्यालय में पहरेदार का काम करता था, और क्लावा का पिता कोवल्योव, उसी कार्यालय में उसका उच्च अधिकारी था। यानी वह उपप्रबन्धक था।

कोवल्योव उन अनगिनत उपप्रबन्धकों में से था, जो सामान्यतः अपने कुछेक बेईमान सहकर्मियों की करतूतों के कारण लोगों के रोष, आलोचना और निन्दा के शिकार होते हैं। साथ ही वे कठिन समय में यह साबित कर दिखाते हैं कि दरअसल बढ़िया उपप्रबन्धक होने का क्या मतलब है।

कुछ दिन पहले जब डाइरेक्टर की ओर से उसे ट्रस्ट की सम्पत्ति हटाने का आदेश मिला था, तब से वह अपनी नज़र से आँकते हुए बहुमूल्य और उपयोगी चीज़ों को बाँध-बूँध कर जल्दी-जल्दी भेजने में व्यस्त रहा था। सारा वक़्त वह अपना काम बड़ी कुशलता, धैर्य और तत्परता से करता रहा। उसने अन्य कर्मचारियों के अनुनय-विनय और शिकायतों तथा उन उच्च अधिकारियों की खुशामदी बातों की परवाह न की थी, जो साधारणतः उसे बहुत ही तुच्छ समझते थे। आज ही तड़के से ट्रस्ट को ख़ाली कराने के ज़िम्मेवार व्यक्ति की ओर से उसे आदेश मिला कि जो काग़ज़ात हटाये नहीं जा सकते, उन्हें फ़ौरन ही नष्ट कर दिया जाये और अविलम्ब पूरब की ओर रवाना हो जाया जाये।

यह आदेश मिलने के बाद उसने उसी तरह धैर्य और तत्परता से सबसे पहले उस व्यक्ति को उसके सामान-असबाब के साथ रवाना किया, जो ट्रस्ट को ख़ाली कराने के लिए ज़िम्मेवार था। उसके बाद न जाने कहाँ से हर तरह की सवारी का इन्तज़ाम करके वह ट्रस्ट की बची-खुची सम्पत्ति भेजता रहा। उसका अन्तःकरण उसे अन्यथा कुछ भी करने की आज्ञा नहीं दे सकता था। उसे इस बात का डर था कि कहीं लोग सदा की तरह उस पर यह इलज़ाम न लगा दें कि वह उसने सबसे पहले अपना हित देखा। अतः उसने निश्चय कर लिया कि वह सबसे आख़िरी कार पर अपने परिवार के साथ वहाँ से हटेगा। हाँ, इस कार का इन्तज़ाम उसने ज़रूर कर छोड़ा था।

ट्रस्ट के बूढ़े चौकीदार ज़ेम्नुख़ोव ने अपने बुढ़ापे और बीमारी के कारण जाने की कोई तैयारी नहीं की थी। उन अन्य कर्मचारियों की तरह, जो वहीं टिके रह जाने वाले थे, उसे भी कुछ दिन पहले दो हफ़्ते के बोनस सहित आख़िरी वेतन मिला था। इसका मतलब था कि ट्रस्ट से अब उसका कोई सम्बन्ध न रह गया था। लेकिन इधर कई दिन और कई रात गठिया से ग्रस्त पाँवों पर डगमगाते हुए भी उसने ट्रस्ट की सम्पत्ति को बाँधने-बूँधने और लादने में कोवल्योव की मदद की थी। वर्षों तक ट्रस्ट में काम करते रहने के कारण वह बूढ़ा ट्रस्ट की सम्पत्ति को अपनी ही सम्पत्ति समझने का आदी हो चुका था।

अलेक्सान्द्र ज़ेम्नुख़ोव दोनेत्स्क का एक पुराना खनिक था। वह निपुण बढ़ई भी था। किशोरावस्था में ही वह तम्बोव प्रान्त से खानों में काम करने के लिए यहाँ चला

आया था। दोनेत्स्क की धरती की गहराई में उतरकर, रेंगकर वह लकड़ी के खम्भे लगाता, खानों को खड़ा रखने के लिए सारी हिकमतें करता। उसकी अद्भुत कुल्हाड़ी उसके हाथों से जुदा न होती और करिश्मे दिखाती। अपनी चढ़ती जवानी के समय से ही हमेशा सीलनभरी धरती की गहराई में काम करते रहने के कारण वह भयंकर गठिया का शिकार हो गया था। उसे जब पेंशन देकर हटा दिया गया, तो वह कोयला ट्रस्ट में पहरेदार का काम करने लगा। वह यह काम इस तरह करता रहा, मानो वह अब भी सचमुच बढ़ई ही हो।

"जाओ, क्लावा काम करो! माँ की मदद करो!" अपने गन्दे हाथ की कलाई से अपनी भौंहों पर से पसीना पोंछते हुए कोवल्योव चिल्लाया। "ऐ, वान्या!" वह लापरवाही से बोला। "देखा, यह सब क्या हो रहा है?" उसने क्रोध से अपना सिर झटकारा और तुरन्त ही बूढ़े ज़ेम्नुख़ोव के गट्ठर को थामकर लारी पर चढ़ाया। "क्या यही देखने के लिए हम ज़िन्दा थे!" वह हाँफते हुए बोलता गया : "क़हर गिरे इन पर!" क्षितिज पर तोप का गोला कौंधकर गरज उठा और उसने होंठ भींच लिये। "क्यों, तुम जा रहे हो या नहीं? और वह छोकरा, अलेक्सान्द्र फ़्योदोरोविच?"

अलेक्सान्द्र ज़ेम्नुख़ोव न कुछ बोला और न उसने अपने बेटे की ओर ही आँख उठाकर देखा। वह दूसरा गट्ठर लाने चला गया। वह अपने बेटे के लिए डर रहा था और उससे चिढ़ा भी हुआ था कि वह कई दिन पहले वोरोशीलोवग्राद के उन क़ानूनी स्कूल वालों के साथ ही सरातोव क्यों न चला गया, जहाँ वह इस गरमी में अपनी पढ़ाई पूरी कर लेता।

जब क्लावा ने अपने पिता की बातें सुनीं, तो उसने आँखों से वान्या को इशारा किया, उसकी आस्तीन भी खींची और अपने पिता से कुछ बोलने ही वाली थी कि वान्या ने उसे रोक दिया।

"नहीं," वह बोला, "मैं अभी नहीं जा सकता। मुझे अभी वोलोद्या ओस्मूख़िन के लिए सवारी का प्रबन्ध करना है, जो अपेण्डिक्स के आपरेशन के बाद अभी भी बिछावन से उठने लायक नहीं है।"

क्लावा के पिता ने उसकी ओर देखा ओर मुँह से सीटी बजायी।

"तुम्हें कोई सवारी मिलेगी, मुझे तो सन्देह ही है!" उसने ऐसे लहजे में कहा, जिसमें करुणा और व्यंग्य दोनों का पुट था।

"इसके अलावा मैं अकेला तो नहीं हूँ," वान्या ने क्लावा की ओर से आँखें चुराते हुए कहा। उसके होंठों पर अचानक पीलापन उतर आया। "जोरा अरुत्युन्यान्त्स और मैं हमेशा साथ-साथ काम करते रहे हैं और हमने एक दूसरे का साथ निभाने का प्रण किया है। यहाँ से सब कुछ भेज देने के बाद हम पैदल ही रवाना हो जायेंगे।"

अब पीछे हटने का रास्ता बन्द हो चुका था। उसने क्लावा की ओर देखा, जिसकी काली आँखें डबडबा आयी थीं।

"अच्छा," कोवल्योव बोला। वह वान्या, जोरा और उसके संकल्प से ज़रा भी प्रभावित हुआ नहीं लगता था। "विदा, फिर मिलेंगे।" वह वान्या की ओर बढ़ा और पसीने से तर अपनी बड़ी हथेली बढ़ा दी। उसी समय तोपों के छूटने का ऐसा ज़बर्दस्त धमाका सुनायी पड़ा कि उसके पाँव काँप गये।

"आप कामेंस्क जा रहे हैं या लिख़ाया?" वान्या ने भारी आवाज़ में पूछा।

"कामेंस्क?" कोवल्योव गरजा। "जर्मन उस पर अब किसी भी क्षण क़ब्ज़ा कर लेंगे! हम लिख़ाया जा रहे हैं और कहीं भी नहीं। फिर दोनेत्स पारकर बेलोकलीत्वेन्स्काया की ओर बढ़ेंगे। कोशिश करना, हमारे साथ आ मिलना..."

उनके ऊपर कुछ झनझन और भड़भड़ की-सी आवाज़ हुई और ऊपर से धूल व सूखी मिट्टी की बारिश-सी होने लगी।

उन्होंने सिर उठाया, तो देखा कि दूसरी मंज़िल पर, जिस कमरे में ट्रस्ट का योजना-विभाग था, उसकी खिड़की को किसी ने धक्का देकर खोल दिया था। उसमें से एक बड़ा-सा, लाल और गंजा सिर झाँक रहा था और ऐसा लगा कि उस पर चुहचुहा आयी पसीने की बूँदें नीचे के लोगों पर टपटपा रही हैं।

"तुम क्या अभी यहीं हो, साथी स्तात्सेन्को?" कोवल्योव ने आश्चर्य से पूछा। उसने विभाग के अध्यक्ष को पहचान लिया था।

"हाँ, मैं अभी काग़ज़-पत्र छाँट रहा हूँ, ताकि महत्वपूर्ण काग़ज़ात जर्मनों के हाथ में न पड़ने पायें।" स्तात्सेन्को ने सदा की भाँति नम्र और गम्भीर आवाज़ में जवाब दिया।

"अच्छा हुआ कि हमें पता चल गया," कोवल्योव बोला। "हम दस मिनट के अन्दर-अन्दर यहाँ से चले भी गये होते।"

"लेकिन तुम बढ़ो। मैं अपने लिए कोई न कोई सवारी खोज ही लूँगा," स्तात्सेन्को ने सरलता से कहा। "अच्छा, कोवल्योव, क्या यह बता सकते हो कि वहाँ पर जो कार खड़ी है, वह किसकी है?"

कोवल्योव, उसकी बेटी, वान्या और लारी पर खड़े मज़दूर की आँखें एक साथ ही 'गाज़िक' की ओर उठ गयीं। उसके भीतर बैठी स्त्री कुछ इस तरह से दुबक गयी कि लोगों की नज़र उस पर न पड़ सके।

"वह तुम्हें नहीं ले जा सकता, साथी स्तात्सेन्को। उस गाड़ी में जगह नहीं है," कोवल्योव बोला। उन्हें मालूम था कि उस मकान में इवान प्रोत्सेन्को रहता था। वह प्रान्तीय पार्टी समिति में काम करता था। पिछले शरद में उसने अपने लिए कमरा

किराये पर लिया था। उसकी पत्नी वोरोशीलोवग्राद में काम करती थी।

"लेकिन मैं उसका एहसान लेना नहीं चाहता," स्तात्सेन्को बोला और अपनी छोटी और शराब के शौक़ के कारण लाल रहने वाली आँखों से कोवल्योव की ओर देखने लगा।

कोवल्योव ने हक्के-बक्के होकर लारी पर खड़े मज़दूर की ओर देखा कि वह कहीं स्तात्सेन्को के शब्दों में छिपा द्वेषभाव तो नहीं समझ गया!

"मैंने तो यही सोचा था कि वे बहुत पहले ही यहाँ से चले गये होंगे। पर अचानक कार पर नज़र पड़ते ही ताज्जुब हुआ कि यह किसकी कार हो सकती है!" स्तात्सेन्को ने निष्कपट मुसकान के साथ कहा।

वे 'गाज़िक' की ओर कुछ क्षण तक देखते रहे।

"देखा? अभी सब नहीं गये हैं," कोवल्योव ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

"आह, कोवल्योव, कोवल्योव!" स्तात्सेन्को उदासी से बोला। "रोम के पोप से भी बढ़कर सच्चा भक्त बनने से कोई फ़ायदा नहीं!" उसने एक मुहावरे का ग़लत प्रयोग किया, जिसको कोवल्योव बिलकुल जानता ही नहीं।

"साथी स्तात्सेन्को, मैं बहुत ही मामूली आदमी हूँ," कोवल्योव ने रूखी आवाज़ में कहा। अपनी पीठ सीधी करते हुए उसने ऊपर की ओर नहीं, बल्कि लारी पर खड़े मज़दूर की ओर देखा। "मैं बिलकुल मामूली आदमी हूँ, सो तुम्हारी गूढ़ बातें समझ नहीं सकता..."

"नाराज़ क्यों होते हो? मैंने तुम्हें चिढ़ाने वाली कोई बात नहीं कही... अच्छा, शुभ यात्रा, कोवल्योव! हम सरातोव पहुँचने से पहले शायद ही फिर मिल सकें," स्तात्सेन्को बोला और उसने ज़ोर से खिड़की बन्द कर ली।

कोवल्योव ने अधखुली आँखों से और वान्या ने आश्चर्यभरी आँखों से एक दूसरे को देखा। कोवल्योव मानो विक्षोभ से लाल हो उठा।

"चलो, हटो वहाँ से, क्लावा!" वह चिल्लाया और लारी का फेरा लगाते हुए ट्रस्ट की इमारत में घुस गया।

कोवल्योव को सन्ताप हुआ, लेकिन अपने लिए नहीं। उसे इस बात का क्षोभ हो रहा था कि एक मामूली व्यक्ति नहीं, बल्कि स्तात्सेन्को जैसा उच्च अधिकारी, जो सरकारी प्रतिनिधियों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क में था तथा अच्छे दिनों में जिनके साथ लच्छेदार और ख़ुशामदी शब्दों का प्रयोग कर चुका था, अब उन्हीं लोगों के प्रति ऐसे बुरे शब्दों का प्रयोग कर रहा था, जब कि वे उसका जवाब देने में असमर्थ थे।

अपनी ओर अटके लोगों के ध्यान से तंग आकर और संकोच तथा क्रोध से तिलमिलाकर 'गाज़िक' में बैठी स्त्री जलती आँखों से सामने के मकान के दरवाज़े की

ओर देख रही थी।

अध्याय 8

इवान प्रोत्सेन्को अन्य दो व्यक्तियों के साथ उस कमरे में बैठा था, जिसका दरवाज़ा पीछे के आँगन की ओर खुलता था। जले हुए काग़ज़ात से निकलते धुएँ को बाहर निकालने के लिए खिड़कियाँ खोल दी गयी थीं। मकान मालिक कुछ दिन पहले ही वहाँ से जा चुका था। यह कमरा अन्य कमरों की तरह ही सूना, सुविधाहीन और ख़ाली था। मकान से रौनक ही ग़ायब हो गयी थी। केवल ढाँचा भर रह गया था। चीज़ें अपने स्थान से हटा दी गयी थीं। प्रोत्सेन्को और उसके सहकर्मी मेज़ पर नहीं, बल्कि कमरे के बीच में कुर्सियों पर बैठे थे। वे आगे का कार्यक्रम बना रहे थे और गुप्त पतों का आदान-प्रदान कर रहे थे।

प्रोत्सेन्को को छापेमार-केन्द्र के लिए रवाना होना था। उसका सहायक कई घण्टे पहले ही वहाँ के लिए प्रस्थान कर चुका था। प्रान्तीय गुप्त संस्था के एक नेता के रूप में उसे मित्याकिन्स्काया गाँव के पास जंगल में स्थापित दस्ते के साथ काम करने के लिए भेजा जा रहा था। उक्त गाँव कज़्ज़ाकों का गाँव था, जो वोरोशीलोवग्राद और रोस्तोव प्रान्तों के बीच सीमान्त पर स्थित था। उसके दोनों साथियों को यहीं क्रास्नोदोन में टिके रहना था। दोनों वहीं के निवासी थे। वे दोनेत्सक के खनिक थे और गृहयुद्ध में लड़ चुके थे। तब भी यहाँ जर्मनों का क़ब्ज़ा रहा था। और ये दोनों देनीकिन के श्वेत गार्डों के विरुद्ध लड़ चुके थे।

फ़िलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव, जो गुप्त ज़िला समिति के सेक्रेटरी के रूप में काम करने वाला था, पचास के आस-पास की उम्र का था और अपने साथी से कुछ ही बड़ा था। उसके बाल घने तथा सामने की ओर और कनपटियों के पास सफ़ेद होने लगे थे। उसकी छोटी और तनी हुई मूँछें भी सफ़ेद हो चली थीं। देखने से लगता था कि वह पहले बहुत बलवान रहा होगा, लेकिन बढ़ती हुई उम्र के साथ-साथ वह स्थूलकाय होता गया। उसका चेहरा इतना भरा-पूरा था कि उसकी भारी ठुड्डी और भी अधिक भारी लगती थी। ल्यूतिकोव को ढंग से रहने की आदत थी। इस मौजूदा स्थिति में भी वह साफ़-सुथरा काला सूट और धुली सफ़ेद क़मीज़ पहने था और अच्छी तरह गाँठ देकर टाई बाँधे था। उसके सुगठित शरीर पर उसकी पोशाक ख़ूब फब रही थी।

वह एक पुराना कामगार था और गृहयुद्ध के बाद पुनरुद्धार की अवधि के आरम्भिक वर्षों में उसने श्रम-वीर की तरह काम किया था। उसने अपने को एक योग्य औद्योगिक प्रशासक सिद्ध किया। उसने पहले छोटी-छोटी औद्योगिक संस्थाओं में

संचालक के रूप में काम किया और बाद में बड़ी-बड़ी औद्योगिक संस्थाओं में। वह पन्द्रह साल तक क्रास्नोदोन में काम कर चुका था। पिछले कई वर्षों से वह 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट के केन्द्रीय मरम्मत-शॉपों में मेकेनिकल विभाग का अध्यक्ष था।

मत्वेई शुल्गा (उसका उपनाम कोस्तियेविच था, यानी कोन्स्तान्तिनोविच का उक्राइनी उच्चारण) जो गुप्त कार्रवाइयों में उसका साथी था, उन उद्योग-कर्मियों में से था जो कृषि में हाथ बँटाने के लिए कामगारों से की गयी अपील पर अमल करने के लिए सबसे पहले आगे बढ़ आये थे। वह क्रास्नोदोन में ही पैदा हुआ था और दोनेत्स्क कोयला क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में कृषि से सम्बन्धित यांत्रिक कार्य करता रहा था। युद्ध आरम्भ होने के समय से वह वोरोशीलोवग्राद प्रान्त के उत्तरी इलाक़ों में से एक की कार्यपालिका समिति का उपाध्यक्ष था।

ल्यूतिकोव को जर्मन-आधिपत्य का ख़तरा पैदा होने के समय से ही मालूम था कि उसे खुफ़िया काम करना होगा। लेकिन शुल्गा को उसकी प्रार्थना पर केवल दो दिन पहले ही काम पर लगाया गया था, अर्थात तब जब जर्मनों ने उस इलाके को अपने क़ब्ज़े में कर लिया था, जिसमें वह काम करता था। यह निश्चय कर लिया गया था कि क्रास्नोदोन ही उसकी गुप्त कार्रवाई के लिए सबसे अधिक उपयुक्त और सुविधाजनक स्थान होगा, क्योंकि एक तो वह वहीं का रहने वाला था और दूसरे क़ाफ़ी लम्बे अरसे तक वहाँ से दूर रहने के कारण वहाँ के बहुत ही कम लोग उसे जानते-पहचानते थे।

मत्वेई शुल्गा की उम्र पैंतालीस साल की थी। उसके कन्धे गोल और मज़बूत तथा चेहरा धूप में तपा और उभरा हुआ था। चेहरे पर जहाँ-तहाँ काली-काली झांइयाँ थीं, जो उसके असली पेशे की याद दिलाते थे। कुल मिलाकर ऐसे दाग़ उन व्यक्तियों के चेहरों पर देखे जाते हैं, जिन्होंने मुद्दत तक खानों के अन्दर या ढलाई के कारख़ानों में काम किया हो। उसने अपनी टोपी सिर के पीछे की ओर सरका दी थी जिससे मशीन द्वारा कटे बाल और असाधारण रूप से चौड़ी चँदिया नज़र आ रही थी। उसकी आँखें शान्त और बड़ी-बड़ी थीं।

क्रास्नोदोन नगर भर में इन तीनों को छोड़कर कोई भी व्यक्ति ऐसा न था, जो इतना शान्त और साथ ही चुस्त भी हो।

"कुछ अच्छे लोग, असल लोग तुम्हारे मातहत काम करने के लिए यहाँ पर रहेंगे। ऐसे लोगों की मदद से बड़े-बड़े काम किये जा सकते हैं," प्रोत्सेन्को बोला। "तुम कहाँ टिकने का इरादा रखते हो?"

"जहाँ मैं हमेशा रहा हूँ – पेलगेया इल्यीनिच्ना के यहाँ," ल्यूतिकोव ने जवाब दिया।

प्रोत्सेन्को ने आश्चर्य का नहीं, तनिक संशय का भाव दिखाया।

"तुम्हारी बातों को मैं ठीक ढंग से समझा नहीं," वह बोला।

"मैं छिपकर क्यों रहूँ, इवान फ़्योदोरोविच? तुम्हीं सोचो," ल्यूतिकोव ने कहा। "मुझे यहाँ लोग इतनी अच्छी तरह जानते हैं कि मेरा छिपा रहना सम्भव नहीं। यही बात बराकोव के साथ भी है।" यह गुप्त संस्था के तीसरे नेता का नाम था जो वहाँ उपस्थित न था। "जर्मन तुरन्त हमारा पता लगा लेंगे। इसके अलावा, यदि हम छिपने की कोशिश करेंगे, तो उनका सन्देह और बढ़ेगा। छिपने से कोई फ़ायदा नहीं। जर्मनों को हमारे वर्कशॉप की सख़्त ज़रूरत है और हमारे लिए वही उपयुक्त जगह है। हम उनसे कहेंगे : 'ट्रस्ट का निदेशक भाग गया है और बोल्शेविकों ने यहाँ से इंजीनियरों, मैकेनिकों को बलात हटा दिया है। लेकिन हम यहाँ रह गये हैं, आपकी ख़िदमत करने के लिए। कामगार भाग गये हैं, लेकिन उन्हें बटोर लायेंगे। पर इंजीनियर? ये रहे निकोलाई पेत्रोविच बराकोव – मेकेनिकल इंजीनियर।' सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह जर्मन भाषा भी जानते हैं! ठीक है, हम उनकी ख़िदमत करेंगे!" ल्यूतिकोव बोला, पर उसके चेहरे पर ठिठोली का भी चिह्न न था।

उसकी कड़ी और सतर्क आँखें प्रोत्सेन्को पर गड़ गयी। उसके चेहरे पर चतुराई का एक अजीब भाव झलक रहा था। ऐसा भाव उन व्यक्तियों के चेहरों पर देखा जा सकता है, जो किसी चीज़ का जल्द ही विश्वास नहीं करते और अपना निर्णय खुद करते हैं।

"बराकोव का क्या इरादा है?" प्रोत्सेन्को ने पूछा।

"यह हमारी संयुक्त योजना है।"

"क्या तुम्हें मालूम है कि तुम्हें सबसे पहले किस चीज़ का ख़तरा है?" प्रोत्सेन्को ने पूछा। वह ऐसे व्यक्तियों में से था, जो ठोंक-बजाकर आगे-पीछे हर बात का जायज़ा लेकर काम करते हैं और सोच लेते हैं कि काम का अंजाम क्या हो सकता है।

"हाँ, यह कि हम कम्युनिस्ट हैं," ल्यूतिकोव बोला।

"नहीं, यह बात नहीं। जर्मनों के लिए इससे बढ़कर खुशी और गौरव की बात क्या हो सकती है कि कम्युनिस्ट उनके लिए काम करें। लेकिन वे तुम्हें यह सब कहने का मौक़ा ही नहीं देंगे। तुम पर नज़र पड़ते ही गुस्से से पागल होकर तुम्हें गोली से उड़ा देंगे," प्रोत्सेन्को ने कहा।

"हम शुरू में कुछ दिन तक ग़ायब रहेंगे और अनुकूल समय देखकर प्रकट होंगे।"

"यही मैं तुमसे कहना चाहता था। पर यह तो बताओ, छिपोगे कहाँ?"

"पेलगेया इल्यीनिच्ना को मालूम है कि मैं कहाँ छिप सकता हूँ।" ल्यूतिकोव

बातचीत के दौरान पहली बार मुस्कुराया। उसका भारी और लटका चेहरा मुसकान से खिल उठा।

प्रोत्सेन्को के चेहरे पर से सन्देह की छाया जाती रही। वह ल्यूतिकोव से सन्तुष्ट हो गया।

"अब, शुल्गा, तुम अपने बारे में बताओ।"

"यह शुल्गा नहीं है। यह तो येव्दोकीम ओस्तपचुक है। रेलवे-इंजन बनाने वाले कारख़ाने से उसे मिली श्रम-पंजिका में यही नाम दर्ज है। इसने हाल ही में मशीन-रूम में फ़िटर का काम करना शुरू किया है। यह बिलकुल सीधी-सादी बात है : यह वोरोशीलोवग्राद में काम किया करता था; जब लड़ाई शुरू हुई, तो बीवी-बच्चों के न होने के कारण यह क्रास्नोदोन चला आया। मरम्मत-शॉप के चालू होते ही हम फ़िटर ओस्तपचुक को जर्मनों के लिए काम करने को बुला लेंगे। हाँ, हम सब उनकी ढंग से सेवा करेंगे!" ल्यूतिकोव बोला।

प्रोत्सेन्को शुल्गा को सम्बोधित करके अनजाने में ही उससे रूसी में नहीं, बल्कि रूसी और उक्राइनी मिली भाषा में बातें करने लगा। खुद शुल्गा हमेशा इसी तरह बातें किया करता था।

"यह तो बताओ, शुल्गा, कि तुमको जो गुप्त स्थानों के पते दिये गये हैं, उन पतों पर किसी को भी तुम ज़ाती तौर पर जानते हो? मतलब कि किसी व्यक्ति को, उसके परिवार को, और उसके पिछले इतिहास के बारे में कुछ भी जानते हो?"

"हाँ, समझो कि जानता हूँ," शुल्गा ने धीरे-से जवाब दिया और अपनी बड़ी आँखें प्रोत्सेन्को पर गड़ा दीं। "'गोलुब्यात्निकी' में ग्नातेन्को रहता है – इवान कोन्द्रातोविच ग्नातेन्को। वह 1918 में छापेमार रह चुका है। वह एक बढ़िया छापेमार था। 'शंघाई' मुहल्ले में इग्नात फ़ोमीन रहता है। मैं उसे ज़ाती तौर पर नहीं जानता। वह क्रास्नोदोन में हाल ही में आया है। लेकिन शायद तुमने सुना होगा कि वह खान न. 4 में स्तख़ानोव का अनुयायी रह चुका है। कहा जाता है कि वह विश्वसनीय है और उसने अपनी सहमति भी दे दी है। सुविधा की बात यह है कि वह पार्टी का मेम्बर नहीं है, वैसे वह काफ़ी प्रसिद्ध था, पर उसके बारे में लोगों का ख़याल है कि वह सार्वजनिक कार्यों में कभी सक्रिय नहीं रहा और बैठकों में उसने कभी भाषण नहीं दिया..."

"इनके यहाँ कभी गये थे तुम?" प्रोत्सेन्को ने पूछा।

"क़रीब बारह साल पहले मैं कोन्द्रातोविच यानी इवान ग्नातेन्को के यहाँ गया था। मैं फ़ोमीन के यहाँ कभी नहीं गया हूँ। जाता भी कैसे, इवान फ़्योदोरोविच? तुम तो जानते हो कि मैं कल पहुँचा और कल ही मुझे यहाँ ठहरने की इजाज़त मिली। ये गुप्त पते भी मुझे कल ही प्राप्त हुए। लेकिन इन व्यक्तियों को जिसने भी चुना

होगा, वह इनके बारे में ज़रूर जानता होगा," वह बोला। उसने इस लहजे में कहा मानो सवाल भी कर रहा हो और जवाब भी दे रहा हो।

"अब सुनो!" प्रोत्सेन्को ने एक उँगली उठायी और पहले ल्यूतिकोव की ओर और फिर शुल्गा की ओर देखा। "जो कुछ लिखा है या जो कुछ तुमसे कहा जाता है या जो आदेश तुम्हें दिये जाते हैं, उनका विश्वास न करो! हर बात की और हर व्यक्ति की तुम खुद अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करो। यह तुम्हें मालूम है कि जिन व्यक्तियों ने इन गुप्त कार्रवाइयों का संगठन किया था, वे अब यहाँ मौजूद नहीं हैं। षड्यंत्र के नियमों के अनुसार वे यहाँ से खिसक गये हैं। वे यहाँ से कोसों दूर हैं। शायद वे अब तक नोवोचेर्कास्क में हों," प्रोत्सेन्को ने रहस्यपूर्ण मुस्कुराहट के साथ कहा और उसकी नीली आँखों में चमक तिर गयी। "जो कुछ मैं कह रहा हूँ, उसका मतलब समझ गये न?" वह बोलता गया। "मतलब यह कि गुप्त कार्रवाइयों का संगठन तब किया गया था, जब कि यहाँ पर सोवियत सत्ता क़ायम थी। लेकिन अब यहाँ जर्मनों का आधिपत्य शुरू हो रहा है। लोगों की असल जाँच का समय आ रहा है, जब जीवन-मरण का सवाल होगा..."

वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया। बाहरी दरवाज़ा चरमराया, क़दमों की आहट सुनायी पड़ी और 'गाज़िक' में बैठी स्त्री कमरे में दाख़िल हुई। उसके चेहरे पर चिन्ता की स्पष्ट छाया थी।

"इन्तज़ार करते-करते थक गयी, कात्या? अभी आ रहा हूँ," प्रोत्सेन्को ने खिसियाकर अपनी बत्तीसी निपोरते हुए जवाब दिया और उठकर खड़ा हो गया। अन्य लोग भी खड़े हो गये। "मैं अपनी पत्नी का परिचय आप लोगों से करा दूँ। यह अध्यापिका है," उसने अप्रत्याशित गर्व के साथ कहा।

ल्यूतिकोव ने आदर से उससे हाथ मिलाया। वह शुल्गा को पहले ही जानती थी और उसकी ओर देखकर मुस्कुरायी :

"तुम्हारी पत्नी कहाँ हैं?"

"अ...अ...मेरा सब..." शुल्गा ने कहना शुरू किया।

"ओह, मुझे खेद है, क्षमा करो," उसने हड़बड़ाकर कहा और एक हाथ से अपना चेहरा ढँक लिया। लज्जा से उसका चेहरा लाल हो रहा था।

शुल्गा का परिवार जर्मनों द्वारा अधिकृत इलाक़े में रह गया था, अतः यह भी एक कारण था कि उसने उसी इलाक़े में गुप्त कार्रवाइयाँ करने की इच्छा प्रकट की थी। जर्मनों के अचानक आ धमकने के कारण उसका परिवार वहाँ से हट न सका था। उस समय शुल्गा आस-पास के गाँवों में गया हुआ था और मवेशियों के झुण्ड पूरब को भेज देने की व्यवस्था कर रहा था।

खुद शुल्गा की तरह उसके परिवार के लोग भी साधारण लोग थे। जब स्थानीय अधिकारियों के परिवार पूरब की ओर हटाये जाने लगे, तो मत्वेई कोस्तियेविच के परिवार ने उसकी पत्नी, सात साल का बेटा और स्कूल में पढ़ती बेटी – जाने से इनकार कर दिया और शुल्गा ने भी इसके लिए ज़ोर न दिया। गृहयुद्ध के समय, जब उसने इन स्थानों में जवान छापेमार के रूप में लड़ाई लड़ी थी, तो उसकी पत्नी ने भी उसका साथ दिया था। उनका पहला बेटा, जो अब लाल फ़ौज में अफ़सर था, उन्हीं दिनों पैदा हुआ था। उन दिनों की याद ने उनके परिवार में यह विश्वास जमा दिया था कि उन्हें साथ-साथ रहना चाहिए और कठिन समय में मिलकर ही मुसीबतों का सामना करना चाहिए। उन्होंने अपने बच्चों को भी यही शिक्षा दी थी। शुल्गा अब महसूस कर रहा था कि उसी की ग़लती के कारण उसका परिवार जर्मनों के हाथ में पड़ गया था। वह अब उस दिन के लिए जी रहा था, जब कि वह उन्हें जर्मनों के चंगुल से निकालने में समर्थ हो सकेगा – बशर्ते कि वे ज़िन्दा हों।

"क्षमा करो मुझे!" प्रोत्सेन्को की पत्नी ने पश्चात्ताप भरे शब्दों में कहा। उसने चेहरे पर से अपना हाथ हटा लिया और शुल्गा की ओर सहानुभूति एवं क्षमा-याचना के भाव से देखा।

"अच्छा तो मेरे प्यारे साथियो..." प्रोत्सेन्को बोला, लेकिन तुरन्त ही ख़ामोश हो गया।

विदा होने का समय आ गया था। लेकिन चारों व्यक्ति एक दूसरे से जुदा होना नहीं चाहते थे।

कुछ ही घण्टे पहले उनके साथी वहाँ से रवाना हुए थे। वे उन लोगों के पास गये थे, जो उनके अपने थे। उस धरती पर सफ़र करने के लिए निकल पड़े थे, जो उनकी अपनी थी। लेकिन ये चार जने एक नयी ज़िन्दगी शुरू करने के लिए यहाँ ठहर गये थे। यह ज़िन्दगी ग़ैरक़ानूनी थी, इस ज़िन्दगी का कोई भरोसा न था। चौबीस साल तक अपनी जन्मभूमि पर आज़ादी की ज़िन्दगी बसर करने के बाद अब उसी धरती पर इस तरह का जीवन उन्हें अनजाना और अजीब-सा लग रहा था। कुछ ही देर पहले उन्होंने अपने साथियों को विदा किया था। वे अभी दूर नहीं गये होंगे और अभी भी दौड़कर उनके साथ जा मिलने की सम्भावना थी। ऐसा कभी नहीं होगा। सो ये चारों के चार एक दूसरे के इतना क़रीब महसूस कर रहे थे, जितना कि एक परिवार के लोग भी महसूस नहीं करते। एक दूसरे से जुदाई उनके हृदयों को बेधे जा रही थी।

एक दूसरे से हाथ मिलाते हुए वे देर तक खड़े रहे।

"अब देखना यह है कि ये जर्मन किस मिट्टी के बने हैं। ये कैसे मालिक और

शासक हैं," प्रोत्सेन्को बोला।

"तुम अपना ख़याल रखना, इवान फ़्योदोरोविच!" ल्यूतिकोव ने संजीदगी से कहा।

"हूँह, मैं बेंत की तरह चीमड़ हूँ। तुम खुद अपना ख़याल रखना, फ़िलीप्प पेत्रोविच, और शुल्गा, तुम भी!"

"मैं तो अजर-अमर हूँ," शुल्गा बोला और उदासी से मुस्कुरा दिया।

ल्यूतिकोव ने उसकी ओर कड़ी निगाह से देखा, लेकिन कहा कुछ नहीं। उन्होंने एक दूसरे को आलिंगन में कसा और चूमा।

"विदा!" प्रोत्सेन्को की पत्नी बहुत ही गम्भीरता से बोली और उसकी आँखों में आँसू उमड़ पड़े।

सबसे पहले ल्यूतिकोव रवाना हुआ और उसके पीछे-पीछे शुल्गा। वे जिस तरह चुपके से आये थे, उसी तरह पिछले दरवाज़े से चोरी-चोरी निकल गये। अहाते में साज़-सामान रखने की कुछेक कोठरियाँ थीं। उनके पीछे पहुँचकर दोनों अलग-अलग हो गये और बग़लवाली गली में ग़ायब हो गये, जो मुख्य सड़क के साथ-साथ जाती थी। उन्हें मकान में से निकलते हुए किसी ने नहीं देखा।

इवान प्रोत्सेन्को अपनी पत्नी के साथ सामने के दरवाज़े से निकलकर सादोवाया नामक मुख्य सड़क पर पहुँचा, जो पार्क के फाटकों के पास से शुरू होती थी। ढलती दुपहरी की तप्त किरणें उनके चेहरे को झुलसा रही थीं।

सड़क के दूसरी ओर सामान से लदी 'गाज़िक' उसके ऊपर खड़े मज़दूर और जुदा होते हुए युवक-युवती पर नज़र पड़ते ही इवान प्रोत्सेन्को की समझ में आया कि उसकी पत्नी इतनी चिन्तित क्यों हो उठी थी।

वह बहुत देर तक हैण्डल मारकर इंजन चालू करने की कोशिश करता रहा लेकिन 'गाज़िक' केवल थरथराकर रह जाती थी और इंजन स्टार्ट होने का नाम न लेता था।

"कात्या, ज़रा तुम घुमाकर देखो। मैं स्टार्ट किये देता हूँ," प्रोत्सेन्को ने लजाते हुए कहा और खुद कार में कूद गया।

उसकी पत्नी ने अपने सुघड़, सँवलाये हाथ में हैण्डल पकड़ा और भरपूर ताक़त लगाकर उसे घुमाना शुरू किया। इंजन घरघरा उठा। औरत ने हथेली से अपने ललाट का पसीना पोंछा और हैण्डल को ड्राइवर की सीट के नीचे फेंककर प्रोत्सेन्को की बग़ल में जा बैठी। 'गाज़िक' ने फटफट करते हुए गन्दे-नीले धुएँ के बादल छोड़े और हिचकोले खाती हुई सड़क पर दौड़ चली। देखते-देखते वह लेवल-क्रासिंग के पास पहुँचकर आँखों से ओझल हो गयी।

"हाँ, तो उसी वक़्त तोल्या आ पहुँचा। इस तोल्या ओर्लोव को तुम जानती हो?" वान्या ज़ेम्नुख़ोव उसी वक़्त अपनी दबी और भर्रायी आवाज़ में पूछ रहा था।

"नहीं, मैं नहीं जानती। शायद वह वोरोशीलोवग्राद स्कूल का छात्र है," क्लावा ने बेसुरी आवाज़ में उत्तर दिया।

"ख़ैर, वह मेरे पास आया और कहने लगा : 'साथी ज़ेम्नुख़ोव, तुम्हारे पड़ोस में ही वोलोद्या ओस्मूख़िन रहता है। वह एक सक्रिय कोमसोमोल सदस्य है। उसके अपेण्डिक्स का आपरेशन हुआ था और उसे लोग बहुत जल्दी घर उठा ले गये थे। उसका घाव भरा नहीं था और अब सेप्टिक हो गया है। क्या उसके लिए किसी सवारी का प्रबन्ध कर सकते हो? मैं वोलोद्या को अच्छी तरह जानता हूँ। वह बहुत ही नेक है। देखा, मैं अब कैसी उलझन में पड़ गया हूँ।' सो मैंने उससे कहा : तुम वोलोद्या के पास जाओ। मुझे पहले एक जगह जाना है, उसके बाद मैं कोई न कोई सवारी ढूँढ़कर वहाँ खुद ही आ जाऊँगा।' उसके बाद मैं तुम्हारे पास दौड़ा-दौड़ा आया। अब तो समझ गयी न कि मैं तुम्हारे साथ क्यों नहीं जा सकता?" वान्या उसकी आँसुओं में डूबी आँखों में झाँकने की कोशिश करता दोषी जैसे बोला। "लेकिन जोरा और मैं. .." उसने फिर से कहना शुरू किया।

"वान्या," क्लावा ने टोका और अपना चेहरा उसके चेहरे के इतना क़रीब ला दिया कि उसकी गर्म साँस वान्या के चेहरे पर पड़ने लगी। "वान्या, मुझे तुम पर गर्व है, बहुत ही गर्व है! मैं..." उसने आहिस्ता-से आह भरी, जो लड़की की अपेक्षा किसी स्त्री की आह से मिलती-जुलती थी। साथ ही लड़की जैसी नहीं, बल्कि माँ जैसी अदा के साथ उसने अपनी लम्बी और शीतल बाँहें उसकी गरदन में डाल दी और बिना किसी झिझक-संकोच के उसके होंठों पर अपने होंठ दबा दिये।

लड़की वान्या से अलग होकर फाटक के पीछे ग़ायब हो गयी। वान्या थोड़ी देर खड़े होने के बाद हठात् सूरज की ओर मुँह करके अपने बिखरे बालों को सहेजने की ज़रा भी चेष्टा न करता और लम्बी बाँहें झुलाता हुआ तेज़ क़दमों से सड़क पर चल पड़ा। पार्क के फाटक पीछे छूटते गये।

उसके अन्दर की प्रेरणा जो हमेशा ही उसे झकझोरती रहती थी, उसके चेहरे पर जगमगा रही थी। इससे उसका चेहरा निखर आया था। लेकिन यह देखने के लिए वहाँ न क्लावा थी, न कोई और। वह अकेले ही सड़क पर लम्बे डग भरता रहा और उसकी लम्बी बाँहें झूलती रहीं। पास-पड़ोस में कहीं अभी भी लोग खानें उड़ा रहे थे, कहीं लोग भागे जा रहे थे और रो-धो रहे थे। सैनिक अभी भी पीछे लौट रहे थे, तोपों की गरज और विमानों की घरघराहट से आकश गूँज रहा था। हवा धुएँ और गर्द से लदी थी और सूरज जलते तवे की तरह तप रहा था। लेकिन वान्या इन सबसे

बिलकुल बेपरवाह और बेख़बर था। वह अपनी गरदन पर केवल भरी हुई कोमल, शीतल बाँहों का स्पर्श और अपने होंठों पर अश्रु-सिंचित, तप्त चुम्बन महसूस कर रहा था।

उसे अब कोई भी चीज़ नहीं डरा सकती थी, क्योंकि कोई भी चीज़ ऐसी न थी, जिससे निबटना सम्भव न हो। वह केवल वोलोद्या को ही नहीं, पूरे नगर – स्त्रियों, बच्चों, बूढ़ों और उनके सारे सामान-असबाब – को वहाँ से हटा सकता था।

"मुझे तुम पर गर्व है, बहुत ही गर्व है..." क्लावा ने अपनी धीमी और कोमल आवाज़ में कहा था और उस वक़्त उसे कोई दूसरी बात सोचने की फ़ुर्सत ही न थी।

वह 19वें साल में क़दम रख रहा था।

अध्याय 9

किसी को यह पता नहीं था कि जर्मनों के अधीन ज़िन्दगी कैसी होगी।

ल्यूतिकोव और शुल्गा ने वक़्त पर यह तय कर लिया था कि वे एक दूसरे से कैसे सम्पर्क बनाये रखेंगे। उनका मिलाप पूर्वनिश्चित संकेत पर और एक तीसरे व्यक्ति के ज़रिए हुआ करेगा। और क्रास्नोदोन में उस तीसरे व्यक्ति के फ़्लैट में ही मुख्यतया मुलाक़ातें हुआ करेंगी।

वे अलग-अलग ही वहाँ से रवाना हुए और अपनी-अपनी राह पकड़ी। क्या वे उस समय यह अनुमान लगा सकते थे कि वे फिर कभी नहीं मिल सकेंगे?

ल्यूतिकोव ने वही किया, जो उसने प्रोत्सेन्को से कहा था : वह ग़ायब हो गया।

शुल्गा को भी चाहिए था कि जिन लोगों के पते उसे दिये गये थे, उनमें से किसी एक के घर में जाकर चुपचाप छिप जाता। इवान ग्नातेन्को यानी कोन्द्रातोविच के घर में छिपना सबसे अच्छा था। वह एक पुराना छापेमार और उसका लँगोटिया यार था। लेकिन उससे मिले हुए बारह साल हो गये थे, अतः मौजूदा स्थिति में इवान ग्नातेन्को के यहाँ जाने की उसे तनिक भी इच्छा नहीं थी।

बाहर से तो वह आश्वस्त-सा लगता था, लेकिन उसके दिल और दिमाग़ दोनों परेशान थे। अब वह किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने के लिए लालायित था, जो उससे बहुत ही घनिष्ठ हो। वह दिमाग़ पर ज़ोर देकर सोचने लगा कि क्रास्नोदोन में कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा है या नहीं जिसने 1918-1919 की खुफ़िया कार्रवाइयों में उसका साथ निभाया हो।

उसे लीज़ा की याद हो आयी और उसके कोयले की-सी झाँइयों वाले चेहरे पर बाल-सुलभ मुसकान दौड़ गयी। लीज़ा उसके पुराने साथी लेओनीद रिबालोव की बहन

थी। लीज़ा की उन्हीं दिनों की मूर्त्ति उसकी आँखों के सामने झलक उठी : सुघड़ शरीर, सुनहरेबाल, निर्भीक स्वभाव, सजीव आँखें, चंचल गति और तीखी आवाज़। उसे याद हो आया कि कैसे वह 'सेन्याकी' में उसके और लेओनीद के लिए भोजन लाया करती थी, कैसे उसके सफ़ेद दाँत मुसकान लुटाते हुए झलक उठे थे, जब उसकी ओर देखते हुए शुल्गा ने मज़ाक़ में कहा था कि अफ़सोस है कि वह शादीशुदा है। लीज़ा उसकी पत्नी को अच्छी तरह जानती भी थी।

दस-बारह साल हुए उससे उसकी मुलाक़ात अचानक सड़क पर और एक बार एक महिला-सम्मेलन में हुई थी। जहाँ तक उसे याद है, तब तक उसकी शादी हो चुकी थी। गृहयुद्ध के ठीक बाद उसने ओस्मूख़िन नामक व्यक्ति से शादी की थी। इस ओस्मूख़िन को बाद में ट्रस्ट में नौकरी मिल गयी थी और शुल्गा को याद आया कि जिस समय ओस्मूख़िन को खान न. 5 की ओर जाने वाली सड़क पर नया फ़्लैट मिलने वाला था, उस समय वह आवास समिति का सदस्य था।

उसके सामने लीज़ा का उस समय का चित्र उभर आया, जब वे अपनी तरुणाई में एक दूसरे को जानते थे। उन दिनों की स्मृतियाँ ताज़ी हो उठीं। उसमें फिर से तरुणाई की लहर दौड़ गयी। उन्हें याद करके शुल्गा को आज की कठिनाइयाँ भी आसान लगने लगीं, जिनसे वह जूझने जा रहा था। "वह बहुत बदली न होगी," उसने सोचा, "और उसका पति भी हम लोगों जैसा ही लगता था... ओह, चाहे जो भी हो, मैं पहले लीज़ा रिबालोवा से मिलूँगा। शायद वे अभी गये न हों और भाग्य मुझे उनके पास खींचे ले जा रहा है। या शायद अब वह अकेली ही रह रही हो..." सो, लेवल-क्रासिंग की ओर जाने वाली ढलवाँ सड़क पर चलते हुए ऐसे ही विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर काटते रहे।

वह दस वर्षों से यहाँ आया ही नहीं था। इस अरसे में वहाँ आस-पास आधुनिक ढंग के पक्के मकान बन गये थे और अब यह पता लगाना मुश्किल था कि किस मकान में ओस्मूख़िन रहता था। वह अब शान्त सड़क पर बहुत देर तक चहलक़दमी करता रहा। मकानों की बन्द खिड़कियों के पास से गुज़रता, लेकिन उन्हें खटखटाने की हिम्मत न होती। आख़िरकार उसने खान न. 5 के इंजनघर को अपना लक्ष्य बनाया। वह स्तेपी के पार साफ़-साफ़ दिखायी पड़ रहा था। उसकी ओर सीधे जाने वाली सड़क पर जब वह जाने लगा, तो उसे तुरन्त ही ओस्मूख़िन का घर मिल गया।

खिड़कियाँ पूरी तरह खुली थीं और दासे पर रखे फूल के गमले दिखायी पड़ रहे थे। अन्दर से जवानों की बोली सुनायी पड़ रही थीं। जब उसने दरवाज़ा खटखटाया, तो उसके दिल की धड़कनें तेज़ हो गयीं जैसे कि जवानी के दिनों में हो जाया करती थीं। कोई उत्तर नहीं मिला। शायद उन्हें कोई भी आहट नहीं सुनायी पड़ी थी। उसने

फिर से दरवाज़ा खटखटाया। उसकी ओर बढ़ते हुए क़दमों की मन्द आहट उसे सुनायी पड़ी।

उसके सामने लीज़ा खड़ी थी, येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना रिबालोवा। वह स्लीपर पहने थी और उसके चेहरे पर क्रोध और वेदना झलक रही थीं। रोने से आँखें लाल हो गयी थीं और सूज गयी थीं। "ज़िन्दगी ने तुझे कहाँ से कहाँ ला पटका है!" शुल्गा ने सोचा।

लेकिन उसने लीज़ा को तुरन्त पहचान लिया। उसकी जवानी के दिनों में भी उसके चेहरे पर ऐसी झुँझलाहट और गुस्से का-सा भाव बना रहता था, लेकिन शुल्गा को विश्वास था कि लीज़ा का हृदय बहुत ही कोमल और उदार था। अभी भी उसके शरीर की सुघड़ता बनी हुई थी और बाल भी सफ़ेद नहीं हुए थे। लेकिन कठिन मेहनत और मुसीबतों के कारण चेहरे पर गहरी झुर्रियाँ पड़ गयी थीं। वह अब ढंग से कपड़े भी न पहने थी। पहले वह इस तरह की शिथिलता अपने में कभी न आने देती।

उसने पोर्च में खड़े अजनबी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। उसकी आँखों में वैमनस्य का भाव झलक रहा था। लेकिन अचानक उसके चेहरे पर आश्चर्य का भाव दौड़ गया और गीली आँखों में अतीत की खुशियों की लहरें उठने लगी।

"मत्वेई कोन्स्तान्तीनोविच... साथी शुल्गा!" वह बोली। उसका हाथ दरवाज़े की मूठ पर से नीचे गिर गया। "कैसे आ पहुँचे यहाँ? और ऐसे समय में!"

"माफ़ करो, लीज़ा... या, क्या मैं तुम्हें येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना कहकर सम्बोधित करूँ... मैं पूरब की ओर शरण लेने भागा जा रहा हूँ। सोचा, तुमसे मिलता चलूँ..."

"अच्छा, तो आप पूरब जा रहे हैं! हर चीज़ और हर व्यक्ति का रुख़ पूरब की ही ओर है! और हम लोगों का क्या होगा? और हमारे बच्चों का?" वह उफनती हुई बोली। उसने अपने फड़कते हाथ को अपने बालों पर फेरा और व्यथित तथा क्रुद्ध आँखों से शुल्गा की ओर देखा। "आप पूरब की ओर जा रहे हैं, साथी शुल्गा, और मेरा बेटा आपरेशन के बाद बिछावन पर पड़ा है! और आप पूरब की ओर जा रहे हैं!" उसने ये शब्द इस तरह दुहराये मानो उसने शुल्गा को चेता रखा था कि यही बात होकर रहेगी और यही बात हुई भी और यह सारी ग़लती शुल्गा की ही थी।

"मुझे अफ़सोस है। गुस्सा न करो," शुल्गा ने बड़ी ही नरमी के साथ कहा। उसकी आवाज़ में सांत्वना का पुट था, हालाँकि उसके मन में अचानक हूक-सी उठी और वह सोचने लगा : तो तुम ऐसी हो गयी हो, लीज़ा रिबालोवा! और इस ढंग से मेरा स्वागत कर रही हो, मेरी प्यारी लीज़ा!

लेकिन उसने ज़िन्दगी के चढ़ाव-उतार देखे थे, अतः अपने ऊपर संयम बनाये

रखा।

"साफ़-साफ़ बताइये तो कि आपके साथ क्या बीती है?" अपने सम्बोधन को आदरसूचक मोड़ देते हुए उसने पूछा।

"ओह, मुझे माफ़ कीजिये," लीज़ा ने कुछ अटपटे अन्दाज़ में कहा। उसके चेहरे पर उनके पुराने अच्छे सम्बन्धों की छाया फिर से झलक उठी। "अन्दर आइये। पर हमारे यहाँ सब मामला बिगड़ा हुआ है।" उसने निराशाभरे अन्दाज़ में अपना हाथ हिलाया और उसकी सूजी और सुर्ख़ आँखों में फिर आँसू उमड़ पड़े।

उसने ज़रा पीछे हटकर शुल्गा को अन्दर आने के लिए इशारा किया। शुल्गा एक अँधेरे गलियारे में उसके पीछे-पीछे चलने लगा। एक खुले दरवाज़े से उसे अपनी दाहिनी ओर धूप से उजले कमरे की झलक मिली। एक लड़की के साथ तीन-चार युवक एक पलंग को घेरकर खड़े थे। उस पर कोई सोलह-सत्रह साल का लड़का तकिये के सहारे उठँगा हुआ था। वह कमर तक चादर ओढ़े हुए था। वह बनियान पहने था। उसकी आँखें काली थीं और कभी धूप से तपा चेहरा पीला पड़ गया था।

"ये मेरे बेटे से विदा लेने आये हैं। इधर आइये," वह बोली और सामने वाले कमरे की ओर इशारा किया। यह कमरा मकान के छायादार हिस्से में था। वहाँ शीतलता थी और कुछ-कुछ अँधेरा।

"अच्छा, पहले यह बताइये कि आपके हाल-चाल कैसे हैं?" अपनी टोपी उतारते-उतारते शुल्गा बोला। महीन कटे बालों वाला उसका बड़ा सिर नज़र आया। "मुझे पता नहीं, मैं तुम्हें किस तरह सम्बोधित करूँ! लीज़ा कहकर पुकारूँ या येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना कहकर?"

"आपको जो भी उचित लगे, उसी नाम से पुकारिये। मैं औपचारिकता में विश्वास नहीं रखती। लेकिन अब 'लीज़ा' का चिह्न ही मुझमें कौन-सा रह गया है? मैं कभी लीज़ा थी, लेकिन अब..." उसने ज़ोर से हाथ झटकारा माने वह इस विषय को ही दूर फेंकना चाहती हो और उसकी ओर देखने लगी। उसकी सूजी आँखों में क्षमा-याचना और पीड़ा के भाव तथा साथ ही नारी-सुलभ भाव भी झलक रहे थे।

"मेरे लिए तो तुम हमेशा ही लीज़ा बनी रहोगी, क्योंकि मैं ख़ुद ही अब बूढ़ा हो चला हूँ," शुल्गा ने मुस्कुराते हुए कहा और स्टूल पर बैठ गया।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना उसके सामने बैठ गयी।

"चूँकि मैं बूढ़ा हूँ, इसलिए यदि मैं उपदेश देने लगूँ, तो मुझे माफ़ कर देना," शुल्गा ने मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन उसकी आवाज़ में गम्भीरता थी। "तुम्हें इस बात से नाराज़ न होना चाहिए कि मैं पूरब की ओर जा रहा हूँ और हमारे कुछ अन्य लोग भी ऐसा कर रहे हैं। इन दुष्ट जर्मनों ने हमें वक़्त ही नहीं दिया... किसी ज़माने में

तुम हमारी अपनी ही थीं, इसलिए तुम्हें बताने में कोई हर्ज नहीं कि जर्मन बहुत दूर तक अन्दर घुस आये हैं..."

"ऐसे में हमारा क्या होगा?" वह बुझे स्वर में बोली। "आप जा रहे हैं और हमें यहाँ छोड़कर जा रहे हैं..."

"क्या इसलिए हमें दोषी ठहराती हो?" वह भौंहें चढ़ाता हुआ बोला। "युद्ध छिड़ते ही हमने परिवारों को हटाना शुरू कर दिया," यहाँ उसे अपने परिवार की याद हो आयी, "और सवारी आदि से उनकी मदद की। हमने कामगारों के हज़ारों परिवारों को उराल और साइबेरिया में भेजा है। जब मौक़ा आया, तो आप लोग क्यों नहीं हटे?" शुल्गा ने पूछा। उसके अन्दर कटुता की भावना सरसरा उठी। लीज़ा ने कोई जवाब न दिया। वह सीधी-सतर और निश्चेष्ट बैठी थी। उसके बैठने के ढंग से शुल्गा ने भाँप लिया कि वह गलियारे के पार कमरे में हो रही बातों को सुनने की कोशिश कर रही थी। शुल्गा की बातों की ओर उसका ध्यान ही न था। सो बरबस वह भी कान लगाकर कमरे में हो रही बातें सुनने लगा।

उधर से जब-तब धीमे स्वर सुनायी पड़ते थे, लेकिन उनका अर्थ ठीक-ठीक समझ पाना मुश्किल था।

अपनी सारी दौड़-धूप और धैर्य के बावजूद, जिन गुणों के लिए वह अपने साथियों में मशहूर था, वान्या ज़ेम्नुख़ोव वोलोद्या ओस्मूख़िन के लिए किसी सवारी का या किसी कार में एक सीट का प्रबन्ध न कर सका। वह निराश होकर लौट आया था। घर में जोरा अरुत्युन्यान्त्स अधीरता से उसका इन्तज़ार कर रहा था। उसका पिता भी वापस आ चुका था, अतः वान्या को मालूम हो गया कि कोवल्योव परिवार भी प्रस्थान कर चुका था।

जोरा काफ़ी लम्बा था, लेकिन वान्या से कई उँगल छोटा था। उसकी उम्र सत्रह साल की थी। उसका साँवला चेहरा धूप से और भी काला हो गया था। उसकी बरौनियाँ ऐंठी हुई, आँखें काली – जैसी कि आर्मीनियाई लोगों की होती हैं – और होंठ उभरे हुए थे। वह कुछ-कुछ हब्शियों जैसा लगता था।

उम्र में फ़र्क़ होते हुए भी वे पिछले कई दिनों से एक दूसरे के घनिष्ठ मित्र बन गये थे। दोनों पढ़ने के बहुत शौक़ीन थे।

स्कूल में वान्या के दोस्त उसे प्रोफ़ेसर कहकर पुकारते। उसके पास बादामी धारियों वाला भूरे रंग का केवल एक ही बढ़िया सूट था, जिसे वह ख़ास-ख़ास मौक़ों पर पहनता था, पर वह भी उसके अन्य कपड़ों की तरह उसके जिस्म पर छोटा बैठने लगा था। लेकिन जब वह कॉलर वाली सफ़ेद क़मीज़ और बादामी रंग की टाई के साथ अपना सूट डाटता, सींग की कमानी वाला चश्मा लगाता और अपनी जेबों में

काग़ज़ ठूँसे और बग़ल में या सीने से कोई मोटी किताब दबाये खोये-खोये-से अन्दाज़ में स्कूल के गलियारे से गुज़रता, तो उसके सभी साथी, ख़ासकर निचली कक्षाओं के छात्र, पायोनियर, अग़ल-बग़ल अदब से खड़े हो जाते, मानो वह सचमुच कोई प्रोफ़ेसर हो। उस वक़्त वह गम्भीर और शान्त रहता तथा उसके अन्तर का संयमित उत्साह उसके पीले चेहरे पर आभा ला देता।

जोरा अरुत्युन्यान्त्स के पास एक ख़ास चौख़ानेदार पन्नोंवाली डायरी थी, जिसमें वह लेखकों के नाम और पढ़ी हुई किताबों के नामों के साथ-साथ अपनी टिप्पणियाँ भी लिखता जाता था। जैसे :

"नि. ओस्त्रोव्स्की। 'अग्निदीक्षा'। शाबाश!"

"अ. ब्लोक। 'सुन्दर स्त्री पर कविताएँ'। छायावादी शब्दों की बहुलता।"

"बायरन। 'चाइल्ड हेरोल्ड'। यह बात समझ में नहीं आती कि इस कृति ने लोगों के दिमाग़ को इतना झकझोर कैसे दिया। यह कितनी नीरस है।"

"व्ला. मायाकोव्स्की। 'बढ़िया!' (कोई टिप्पणी नहीं)।"

"अ. तोलस्तोय। 'पीटर प्रथम'। उत्कृष्ट! यह दिखाया गया है कि पीटर प्रगतिशील व्यक्ति था।"

उस डायरी में और भी ढेर-सी बातें पढ़ने को मिल सकती थी। साधारणतः जोरा सफ़ाई पसन्द था। वह व्यवस्था और अनुशासन पसन्द करता था तथा अपनी आस्थाओं में अटल था।

कई दिन और कई रात वे स्कूलों, क्लबों और शिशु-सदनों को ख़ाली कराने के काम में व्यस्त रहे। इस बीच वे एक मिनट के लिए भी चैन की साँस न लेते होंगे। दूसरे मोर्चे के बारे में, 'मेरी प्रतीक्षा करो' नामक कविता, उत्तरी सागर-मार्ग, लन्दन में सिकोर्स्की सरकार के अजीब रुख़, 'महान जीवन' नामक फ़िल्म, अकादमीशियन लीसेन्को की कृतियों और पायोनियर आन्दोलन की त्रुटियों के बारे में उनमें गर्म वाद-विवाद होते रहे। उन्होंने कवि श्चिपाचोव, रेडियो एनाउन्सर लेवितान, रूज़वेल्ट और चर्चिल के बारे में भी बहसें कीं। केवल एक ही बात पर वे एक दूसरे से सहमत न हुए : जोरा सोचता था कि पार्क में लड़कियों के पीछे-पीछे लगे रहने से बेहतर है किताबें और अख़बार पढ़ना, लेकिन वान्या का कहना था कि यदि उसकी नज़र अच्छी होती, तो वह ज़रूर लड़कियों के पीछे लगा रहता।

वान्या अपनी रोती माँ, बड़ी बहन और पिता से विदा ले रहा था। उसका पिता गुस्से से फुफकार और बड़बड़ा रहा था तथा आहें भर रहा था। वह अपने बेटे की ओर न देखने की कोशिश कर रहा था। पर आख़िरी क्षण में उसने अचानक अपने खुरदरे होंठों से वान्या का माथा चूमा और क्रॉस का चिह्न बनाते हुए उसे आशीर्वाद देने लगा।

उसी मौक़े पर जोरा वान्या को यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि जब उसे सवारी का बन्दोबस्त करने में कामयाबी नहीं मिली, तो ओस्मूख़िन परिवार के पास जाने से क्या फ़ायदा। लेकिन वान्या कह रहा था कि चूँकि उसने तोल्या ओर्लोव को वचन दे रखा है, इसलिए वहाँ जाकर उन्हें सारी बातें साफ़-साफ़ समझानी ही होंगी।

उन्होंने सफ़री झोले अपने कन्धों पर लटकाये। आख़िरी बार वान्या ने नज़र भरकर उस कोने को देखा, जहाँ उसका अपना पलंग रखा था : दीवार पर कार्पोव द्वारा चित्रित पुश्किन का छविचित्र लटक रहा था। पास ही तख़्ते पर पुश्किन की कृतियाँ और उनके समकालीन लेखकों की कुछ पुस्तकें रखी थीं। उन्हें सबसे ऊँचा स्थान दिया गया था। वान्या उन्हें एकटक देखता रहा। उसके बाद कुछ अजीब-से अन्दाज़ में अपनी टोपी को आँखों के ऊपर तक सरकाते हुए जोरा के साथ वोलोद्या ओस्मूख़िन से मिलने चल पड़ा।

वोलोद्या, बनियान पहने तकिये का सहारा लिये पलंग पर बैठा था। उसने चादर कमर तक ओढ़ रखी थी। उसकी बग़ल में एक किताब रखी थी, जिसका नाम था 'प्रोटेक्टिव रिलेज़'। उसका वह पृष्ठ खुला था, जहाँ तक वह सुबह तक पढ़ चुका था।

पलंग और खिड़की के बीच कोने में तरह-तरह के औज़ार, तार के गोले, हाथ का बना एक फ़िल्म प्रोजेक्टर और रेडियो के पुरज़े रखे थे। ज़ाहिर था कि इस सामान को वहाँ पर इसलिए रख दिया गया था कि कमरे की सफाई करने में दिक़्क़त न हो। वोलोद्या नयी-नयी चीज़ें बनाना पसन्द करता था और विमान-डिज़ाइनर बनने के सपने देख रहा था।

तोल्या ओर्लोव, जिसे लोग 'घर्घरक' भी कहते थे, अनाथ था और वोलोद्या का सबसे गहरा दोस्त था। वह पलंग के पास स्टूल पर बैठा था। उसे लोग 'घर्घरक' इसलिए कहते थे कि गरमी हो या जाड़ा, उसका गला बलग़मी खाँसी के कारण हमेशा घरघराता रहता था। वह कूबड़ा बैठा हुआ था और उसके बड़े-बड़े घुटने आगे की ओर निकले थे। उसके सभी जोड़ – कोहनियाँ, कलाइयाँ, घुटने और टख़ने – उभरे हुए थे और उनकी हड्डियाँ निकली हुई थीं। उसके घने, रूखे और सीधे बाल उसके गोल सिर के चारों ओर बिखरे थे। उसकी आँखों से ग़म और उदासी झाँक रही थीं।

"तो तुम पैदल बिलकुल ही नहीं चल सकते?" वान्या ने पूछा।

"पैदल? डाक्टर कहता है कि यदि मैं ऐसा करूँगा, तो घाव फट जायेगा और मेरी आँतें बाहर निकल पड़ेंगी!" वोलोद्या ने दुखी होकर कहा।

वह केवल इसलिए दुखी न था कि उसे रुकना पड़ रहा था, बल्कि इसलिए भी कि उसके कारण उसकी माँ और बहन को भी वहाँ रहना पड़ रहा था।

"अपने टाँके तो दिखाओ!" जोरा ने ज़ोर दिया।

"बेवकूफ़, उस पर पट्टी बँधी है!" ल्यूद्मीला ने सचेत होकर टोका। वह वोलोद्या की बहन थी और पलंग के पाये के ऊपर कोहनियाँ रखे झुकी हुई थी।

"घबड़ाओ नहीं, सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा," जोरा ने नम्रता से मुस्कुराते हुए कहा। उसका मधुर आर्मीनियाई उच्चारण उसके शब्दों को विशेष अर्थ प्रदान करता-सा लग रहा था। "मैंने प्राथमिक उपचार की शिक्षा पूरी की है और मैं पट्टी को खोलना और बाँधना जानता हूँ।"

"लेकिन यह अस्वास्थ्यकर है!" ल्यूद्मीला ने विरोध किया।

"लेकिन युद्ध-क्षेत्र में मरहम-पट्टी करने वाले तो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी घायलों की पट्टी खोलते और बाँधते हैं और साबित कर देते हैं कि 'अस्वास्थ्यकर' जैसी कोई चीज़ है ही नहीं। तुम्हें यह बेकार सन्देह हो गया है," जोरा दृढ़ता से बोला।

"तुम किताबी बातें हाँक रहे हो, जो तुमने कहीं पढ़ी हैं," ल्यूद्मीला ग़ुस्से में बोली। लेकिन उसने इस साँवले लड़के की ओर बढ़ती दिलचस्पी से देखा।

"छोड़ो, ल्यूद्मीला! माँ ऐसा कहें, तो मैं समझ सकता हूँ। वह तुरन्त ही घबड़ा जाती हैं, लेकिन तुम बेकार क्यों टाँग अड़ा रही हो? भागो यहाँ से!" वोलोद्या ग़ुस्सा होकर अपनी बहन से बोला। उसने चादर फेंक दी और अपनी टाँगें उघाड़ लीं। वे इतनी गठी और धूप में तपी हुई थीं कि बीमारी और इतने दिन अस्पताल में पड़े रहने पर भी उनका बादामी रंग फीका न पड़ा था और मांस-पेशियाँ ढीली न हुई थीं।

ल्यूद्मीला वहाँ से हट गयी।

तोल्या और वान्या ने वोलोद्या को सहारा दिया और जोरा उसका नीला जांघिया नीचे खिसकाकर पट्टी खोलने लगा। घाव में मवाद पड़ गया था और बेहद बुरी हालत में था। वोलोद्या दर्द से बेचैन था, लेकिन उसने मुँह भींचे रखा। उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"हालत बहुत बुरी है न?" जोरा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

"हाँ, अच्छी हालत में तो नही है," वान्या बोला।

चुपचाप और वोलोद्या की ओर न देखने की कोशिश करते हुए उन्होंने पट्टी फिर से बाँध दी। वोलोद्या की भूरी आँखें, जो सदा साहस और चतुराई से चमकती रहती थीं, अब उदास थीं और अपने साथियों की आँखों से मिलने के लिए उतावली थीं।

विदाई का कठिन क्षण आ गया था : यह जानते हुए भी कि उनका साथी ख़तरे में है, उसे छोड़कर उन्हें जाना पड़ रहा था।

"तुम्हारे पति कहाँ हैं, लीज़ा?"इस समय शुल्गा ने विषय बदलते हुए पूछा।

"मर गये,"येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने रुखाई से जवाब दिया। "पिछले साल, युद्ध के कुछ ही समय पहले, उनका देहान्त हो गया। वे लम्बे अरसे तक बीमार रहे।"

शुल्गा को लगा जैसे वह क्रोध में बोल रही थी। “आह, मत्वेई कोन्स्तान्तीनोविच!” उसने दुखी स्वर में आगे कहना शुरू किया। “अब आप भी बड़े आदमी हो गये हैं, इसलिए हर चीज़ देख नहीं पाते। यदि आप जान पाते कि हमारे लिए अब कितनी मुश्किल है! हमीं जैसे मामूली व्यक्तियों के प्रतिनिधि के नाते आप अधिकारी बने हैं। मुझे मालूम है कि आप किस तबक़े के हैं – हमारे ही तबक़े के। मुझे याद है कि आपने और मेरे भाई ने हमारी इस ज़िन्दगी के लिए कैसा संघर्ष किया था। मैं आपको तनिक भी दोष नहीं देती। मुझे मालूम है कि आपको यहाँ रुककर गोलियों का शिकार नहीं होना है। क्या आप यह नहीं देखते कि आपकी तरह ही कुछ लोग ख़ाली हाथ चले जा रहे हैं, और कुछ लोग ऐसे हैं, जो लारियों में अपना घर-बार ही लादकर भागे जा रहे हैं। उन्हें हमारे जैसे मामूली व्यक्तियों की ज़रा भी परवाह नहीं है, हालाँकि यह सब कुछ हमीं ने अपने हाथों से बनाया है। आह, मत्वेई कोन्स्तान्तीनोविच, क्या यह नहीं देखते कि ये सुअर, इस शब्द के लिए माफ़ करना, अपने सामान-असबाब को हम मामूली लोगों से ज़्यादा क़ीमती समझते हैं?” वह चीख़ पड़ी। उसके होंठ वेदना से ऐंठ गये थे। “और ऐसे में जब दूसरों को तुम पर गुस्सा आ रहा है, तो तुम्हें आश्चर्य होता है! आपको ज़िन्दगी में केवल एक बार ऐसा अनुभव होने भर की देर है और बस, फिर आपको किसी चीज़ पर विश्वास नहीं रहेगा।”

बाद में शुल्गा इस प्रसंग को दुःख और वेदना के साथ अक्सर याद करता रहा। वह मन ही मन उस नारी की भावनाओं को समझ गया था और अपनी मानसिक दृढ़ता तथा उदारता के बलपर उसके प्रति सही शब्दों का प्रयोग करना जानता था। जब वह गहरी वेदना के साथ ये बातें कह रही थी और उसके अन्तर का वैमनस्य फूटा पड़ रहा था, तो उसका पूरा व्यक्तित्व, उसका हर शब्द उस लीज़ा से भिन्न थे, जिसे वह वर्षों से जानता था। यह सब कुछ उसकी आशा के प्रतिकूल था। उसे अचानक यह अपना अपमान-सा लगा कि जब कि वह खुद रुक गया था और उसका पूरा परिवार जर्मनों के हाथ में था या सम्भव है मौत की गोद में सो गया हो, तब ऐसी हालत में भी यह स्त्री अपना ही रोना रो रही थी और उसने एक बार भी उसके परिवार के बारे में, ख़ासकर उसकी पत्नी के सम्बन्ध में नहीं पूछा, जो उसकी जवानी के दिनों की सहेली थी। सो शुल्गा ने भी कुछ ऐसे शब्द कहे जिन्हें याद कर बाद में उसे पश्चात्ताप हुआ।

“तुम बहकी-बहकी बातें कर रही हो, येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना,” वह रुखे स्वर में बोला। “इस समय अपनी सरकार में विश्वास खो देना बहुत ही आसान है, है न, क्योंकि सत्ता की बागडोर थामने के लिए जर्मन हमारे दरवाज़े पर खड़े हैं। सुन रही हो?” उसने बालों से भरी मोटी-मोटी उँगलियों वाला अपना हाथ उठाया। दूर छूटती

तोपों की गड़गड़ाहट से मानो कमरा भी गूँज उठा। "क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि हमारी आम जनता के बीच से आये हुए कितने ही होनहार व्यक्ति, जिन्होंने तुम्हारे शब्दों में 'सत्ता प्राप्त' की है, वहाँ अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं? लेकिन मैं कहूँगा कि वे मामूली व्यक्ति चैतन्य हैं। वे जनता के वीर हैं, कम्युनिस्ट हैं। यदि इन व्यक्तियों पर से तुम्हारा विश्वास उठ गया है, ख़ासकर ऐसे वक़्त जब कि जर्मन हमारी धरती को रौंद रहे हैं, तो मुझे इस बात का बहुत ही दुख है। मुझे दुःख है, और सचमुच तुम पर दया आती है!" उसने बड़ी ही गम्भीरता से ये शब्द कहे और उसके होंठ बच्चों की तरह काँप उठे।

"यह सब आप क्या कह रहे हैं? यह क्या है? क्या यह इलज़ाम लगा रहे हैं कि मैं जर्मनों के आने का इन्तज़ार कर रही हूँ?" येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने गुस्से के कारण काँपती आवाज़ में पूछा। वह चीख़ पड़ी : "आप यह कैसे... मेरे बेटे का क्या होगा, मैं आख़िर माँ हूँ! और आप..."

"क्या वे दिन तुम भूल गयीं, येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना, जब कि हम मामूली कामगार थे, जैसा कि तुम कहती हो, और हमने जर्मनों और श्वेत गार्डों का सामना किया था? क्या तब हमने पहले अपने बारे में सोचा था?" उसने कटुता से टोकते हुए कहा। "नहीं, हमने अपने बारे में नहीं, बल्कि अपने सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों – अपने नेताओं – के बारे में सोचा था। हम उन्हीं के बारे में हमेशा सोचते रहे! तुम्हें अपना भाई याद है? उसी तरह हमने – हम कामगारों ने – हमेशा सोचा और काम किया! अपने नेताओं को छिपाने के लिए, अपनी जनता के वीरों की रक्षा करने के लिए हम दुश्मनों के सामने डटकर खड़े हो गये। इसी ढंग से हर कामगार ने हमेशा तर्क किया है और अभी भी कर रहा है। किसी दूसरे ढंग से सोचना उसके लिए अपमानजनक है, हेय है। क्या सचमुच तब से तुम इतनी बदल गयी हो, येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना?"

"ठहरो!" वह अचानक बोली और तनकर बैठ गयी। गलियारे के पार कमरे से आने वाली आवाज़ों को समझने की कोशिश कर रही थी।

शुल्गा भी ध्यान से सुनने लगा। उस कमरे से कोई आवाज़ नहीं सुनायी पड़ रही थी। मातृ-सुलभ अन्तर्प्रेरणा से येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने भाँप लिया कि वहाँ कुछ ज़रूर हो रहा है। वह शुल्गा को भूल गयी, उठी और जल्दी से दरवाज़ा खोलकर अपने बेटे की ओर दौड़ी। अपने से असन्तुष्ट शुल्गा भी उदास मन उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। वह बालों से भरे बड़े-बड़े हाथों से अपनी टोपी को तोड़-मरोड़ रहा था।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना का बेटा अभी भी बिछावन पर उठँगे हुए अपने साथियों को विदाई का अभिवादन कर रहा था। वह चुपचाप एक-एक करके उनसे हाथ मिलाता रहा। उसका सिर, जिस पर महीन कटे काले बाल काफ़ी बढ़ गये थे,

उद्विग्नता से हिल रहा था। वह उत्तेजित था, लेकिन ऐसी स्थिति में यह विचित्र-सा लग रहा था कि उसके चेहरे पर प्रफुल्लता और काली आँखों में चमक थी। उसका एक साथी उसके सिरहाने खड़ा था। वह देखने में सुन्दर न था, उसके बाल बिखरे हुए और शरीर मांसल था। उसका चेहरा खिड़की की ओर घूमा हुआ था, इसलिए उसका केवल एक भाग ही दिखायी पड़ रहा था। वह खुली खिड़की से बाहर देख रहा था। उसकी आँखें विस्फारित थीं और चेहरे पर आशापूर्ण भाव झलक रहा था।

लड़की अभी भी पलंग के पायताने खड़ी होकर मरीज़ की ओर देखते हुए मुस्कुरा रही थी। लड़की में लीज़ा रिबालोवा की झाँकी पाकर शुल्गा के मन में अचानक हूक-सी उठी। हाँ, वह लीज़ा की तरह ही थी, बल्कि उस लीज़ा से कुछ अधिक कोमल, जिसे बीस वर्ष पहले वह जानता और प्यार करता था; वह लीज़ा एक कामगारिन थी, उसके हाथ ज़रा बड़े थे और वह चलते समय जैसे हाथ-पैर फेंककर चलती थी।

"तो अब चलने का समय हो गया है," उसने सोचा। उसके अन्तर में उदासी भर गयी थी। अपनी टोपी को अभी भी तोड़ते-मरोड़ते हुए वह भारी-भारी क़दमों से चल पड़ा। काठ का फ़र्श चरमरा उठा।

"जा रहे हैं?" येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने ज़ोर से पूछा और उसकी ओर दौड़ी।

"हाँ। नाराज़ न होना। जाने का समय हो गया है।" उसने टोपी पहन ली।

"अभी?" वह बोली। यह न प्रश्न था और न विस्मय का सूचक। फिर भी शुल्गा ने महसूस किया कि लीज़ा की आवाज़ में कुछ कड़वाहट भी थी और करुणा भी। "अच्छा, आप भी नाराज़ न होना... भगवान करे, यदि भगवान है, तो आप वहाँ कुशल से पहुँच जाइये। कभी-कभी हमारी भी याद कर लिया करना – हमें भूलना नहीं!" उसके हाथ बेहाल लटक गये। उसकी आवाज़ में कुछ ऐसी करुणा और ममता थी कि शुल्गा को लगा जैसे उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया हो।

"अलविदा," शुल्गा बोला और सड़क की ओर बढ़ चला।

क्यों, ओह, क्यों चले गये, साथी शुल्गा? तुमने येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना को और उस लड़की को क्यों छोड़ दिया, जो तुम्हारे बीते दिनों की लीज़ा रिबालोवा से हू-ब-हू मिलती-जुलती थी? तुमने यह सोचा या महसूस क्यों नहीं किया कि तुम्हारी आँखों के सामने उन जवानों के बीच क्या हो रहा था? तुमने यह जानने की भी कोशिश क्यों नहीं की कि वे जवान कौन थे?

यदि मत्वेई शुल्गा ने दूसरे ढंग से आचरण किया होता, तो उसकी ज़िन्दगी का रुख़ ही पलट गया होता। लेकिन उस वक़्त उसकी समझ ही नहीं मारी गयी थी, बल्कि वह अपमान और क्रोध से तिलमिला उठा था। उसके लिए दूसरा कोई चारा न रह गया था कि वह शहर के उस दूरस्थ इलाक़े की ओर – जिसे 'गोलुब्यात्निकी'

कहते थे – इवान ग्नातेन्को के छोटे-से घर की तलाश में निकल पड़े। ग्नातेन्को उसके छापेमार दिनों का साथी था और वह पिछले बारह साल से उससे मिला नहीं था। उसे क्या पता था कि जिस सड़क पर वह पहला क़दम उठा रहा था, वह उसे मौत की ओर ले जा रही थी।

जिस वक़्त शुल्गा येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना के पीछे-पीछे गलियारे में निकला, उसके क्षण भर पहले येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना के बेटे के कमरे में यही बात हुई थी।

वहाँ सब ख़ामोशी साधे हुए थे। अचानक तोल्या ओर्लोव स्टूल पर से उठा – वही तोल्या जिसे लोग 'घर्घरक' कहते थे – और बोला कि चूँकि उसका लँगोटिया दोस्त वोलोद्या वहाँ से जा नहीं सकता है, इसलिए वह ख़ुद भी वहाँ से नहीं जायेगा और वोलोद्या का साथ निभायेगा।

क्षण भर के लिए सब को काठ मार गया। तब वोलोद्या के आँसू फूट पड़े थे और उसने तोल्या को अपने आलिंगन में कसकर बाँध लिया था और क्षण भर बाद वे सब सुखद उत्तेजना से अभिभूत हो उठे थे। ल्यूद्मीला ने 'घर्घरक' के गले में अपनी बाँहें डालते हुए उसके गालों, नाक और आँखों को चूम लिया था। तोल्या को याद नहीं कि इससे अधिक सुखद क्षण उसके जीवन में कभी आया था! उसके बाद ल्यूद्मीला ने जोरा अरुत्युन्यान्त्स की ओर घूरकर देखा। उसकी बड़ी तमन्ना थी कि यह साँवला, चुस्त लड़का भी उनके साथ रुक जाता।

"शाबाश, तोल्या! इसे कहते हैं सच्ची दोस्ती! तुम धन्य हो, तोल्या!" वान्या ज़ेम्नुख़ोव ने भारी आवाज़ में कहा। "मुझे तुम पर गर्व है।" उसके बाद उसने अपने का सुधारा : "मेरा मतलब कि मुझे और जोरा दोनों को तुम पर गर्व है," और उसने तोल्या से हाथ मिलाया।

"लेकिन क्या तुम सोचते हो कि हम यूँ ही यहाँ रहने जा रहे हैं और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे?" वोलोद्या बोला। उसकी आँखें चमक रही थीं। "नहीं, हम लड़ने जा रहे हैं। यह ठीक है न, तोल्या? ज़िला पार्टी समिति ज़रूर ही कुछ लोगों को गुप्त कार्रवाई करने के लिए तैनात कर गयी होगी। हम उन्हें ढूँढ़ निकालेंगे! क्या यह सोचते हो कि हम देश के किसी काम नहीं आ सकते?"

अध्याय 10

वान्या ज़ेम्नुख़ोव और जोरा अरुत्युन्यान्त्स वोलोद्या ओस्मूख़िन से विदा होकर शरणार्थियों के उस कारवाँ में शामिल हो गये, जो रेलवे लाइन के किनारे-किनारे लिख़ाया की ओर बढ़ता जा रहा था।

उनकी प्रारम्भिक योजना नोवोचेर्कास्क जाने की थी, जहाँ जोरा अरुत्युन्यान्त्स के रिश्तेदार रहते थे और उन्हें मदद दे सकते थे। जोरा कहता था कि वहाँ उनका घनिष्ठ सम्बन्धी है। उसका चाचा वहाँ रेलवे स्टेशन में मोची का काम करता था।

वान्या को मालूम था कि कोवल्योव परिवार लिख़ाया की ओर गया है, अतः उसने आख़िर में दूसरा मार्ग पकड़ने का सुझाव दिया और कहा कि उधर जाने से कुछ ख़ास फ़ायदा होगा, हालाँकि स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बताया। जोरा अपने से बड़ी उम्रवाले दोस्त – वान्या – की मर्ज़ी पर चलने का आदी था। उसे इस बात में कोई रुचि भी नहीं थी कि वह कहाँ जाता है। अतः वह अपना निश्चित मार्ग छोड़कर वान्या द्वारा सुझाये गये अनिश्चित मार्ग पर बढ़ने को तैयार हो गया।

सड़क के एक पड़ाव पर उनके साथ एक फ़ौजी मेजर हो लिया, जो फटे-फटाये, घिसे-घिसाये बूट और बुरी तरह मुसी-मुसाई वर्दी पहने था। वर्दी की दायीं छाती पर लगे कई गार्ड्स सैनिक के बिल्ले नज़र आ रहे थे। वह ठिंगना था, उसकी टाँगें कमान-सी थीं, और मूँछें बेहद लम्बी और घनी थीं। उसने बताया कि उसकी वर्दी की ख़ास तौर पर ऐसी हालत इसलिए हो गयी थी कि जब वह अस्पताल में पड़ा था, तो यह चीज़ें भी पाँच महीने तक अस्पताल के भण्डारघर में सड़ती रही थीं।

फ़ौजी अस्पताल हाल ही में क्रास्नोदोन के प्रमुख अस्पताल की इमारत में विस्थापित था और अब ख़ाली किया जा रहा था। परिवहन का प्रबन्ध न होने के कारण चलने-फिरने लायक़ मरीज़ों को पैदल ही चले जाने का सुझाव दिया गया था। क़रीब एक सौ से अधिक मरीज़, जो बुरी तरह घायल थे, क्रास्नोदोन में ही पड़े रह गये थे और अन्यत्र उनके हटने की कोई आशा न थी।

अस्पताल की दुर्दशा और अपनी दुरवस्था के अलावा रास्ते भर मेजर कुछ नहीं बोला। वह बहुत ही अल्पभाषी और चुप्पा था। थोड़ा लँगड़ाने के बावजूद वह मुड़े-तुड़े बूटों में कसे-बँधे पाँवों को घसीटता हुआ, लड़कों का साथ नहीं छोड़ रहा था। वे तुरन्त ही उसका इतना आदर करने लगे कि जब कोई विवादास्पद विषय आता, तो वे उसे इस तरह सम्बोधित करते मानो वह विशेषज्ञ हो।

एक ओर तो अनेक बूढ़े और जवान इस असीम धारा में, जिसमें न केवल स्त्रियाँ थीं, बल्कि बन्दूक़धारी पुरुष भी, घोर कष्ट सहते हुए चले जा रहे थे, दूसरी ओर जोरा और वान्या आस्तीनें चढ़ाये, हाथों में टोपियाँ, नचाते, कन्धों से सफ़री झोले लटकाये, उत्साह और इन्द्रधनुषी आशाओं से उमंगते बढ़ चले जा रहे थे। औरों की अपेक्षा उनके दिल और दिमाग़ इसलिए हल्के थे कि वे जवानी के चढ़ाव पर थे और बिलकुल अकेले थे। उन्हें न दुश्मनों का अता-पता मालूम था, न अपनी फ़ौजी टुकड़ियों का। वे अफ़वाहों को एक कान से सुनते और दूसरे कान से निकाल देते थे। उन्हें लगता

था कि धूप से जलती, जर्मनों की तोपों और बमों के धुएँ में लिपटी इस असीम स्तेपी में, जिस पर जर्मन किसी भी वक़्त बमबारी करने लगते थे और जो शरणार्थियों के बेशुमार पैरों की धूल के बादल से ढँकी हुई थी, सारी दुनिया उनके सामने खुली पड़ी है।

उनके इर्द-गिर्द जो कुछ हो रहा था, उसके बारे में वे बात ही नहीं कर रहे थे।

"ऐसा क्यों सोचते हो कि आज-कल वकालत का पेशा कोई दिलचस्प पेशा नहीं?" वान्या ने अपनी गहरी आवाज़ में पूछा।

"क्योंकि जब तक युद्ध जारी है, तब तक हमें सैनिक बने रहना है और युद्ध खत्म होने के बाद इंजीनियर बनना है, ताकि जन-उद्यमों का पुनरुद्धार किया जा सके। फ़िलहाल विधिविद् के बिना तो काम रुकने का नहीं। यह पेशा उतना महत्व नहीं रखता," जोरा ने उसको ख़ास स्पष्ट और निर्णायक ढंग से उत्तर दिया।

"हाँ, ठीक कह रहे हो। अभी युद्ध जारी है और मैं सैनिक बनना चाहता हूँ, पर मेरी आँखें कमज़ोर होने के कारण वे मुझे लेंगे ही नहीं। तुम थोड़ी भी दूर मुझसे हट जाओ, तो मुझे एक धुँधली लम्बी-सी छाया-से नज़र आते हो," वान्या ने दाँत निपोरते हुए कहा। "मानता हूँ कि इंजीनियरों का पेशा बहुत ही उपयोगी पेशा है, लेकिन उसका रुझान भी तो होना चाहिए और मेरा रुझान, तुम तो जानते ही हो, कविता की ओर है।"

"तो तुम्हें किसी साहित्य संस्थान में जाना चाहिए," जोरा ने स्पष्ट और संक्षिप्त शब्दों में कहा और कनखियों से मेजर की ओर देखा, मानो वही एक ऐसा व्यक्ति था, जो समझ सकता था कि जोरा की बात सही है या नहीं। लेकिन मेजर चुप्पी साधे हुए था।

"लेकिन यही वह चीज़ है, जो मैं नहीं चाहता," वान्या बोला। "साहित्य संस्थान का मुँह न पुश्किन ने देखा था और न त्यूत्चेव* ने – और उन दिनों उनका नाम भी नहीं था – मेरे ख़याल से इस तरह तो कवि बनना सीखा भी नहीं जा सकता।"

"सीखा तो कुछ भी जा सकता है," जोरा ने जवाब दिया।

"नहीं, उच्च विद्यालय में पढ़कर कवि बनने की कोशिश करना तो सरासर बेवक़ूफ़ी है। हर किसी को पढ़ना और ज्ञानार्जन करना चाहिए और किसी भी साधारण पेशे से जीवन आरम्भ करना चाहिए। यदि उसमें स्वाभाविक साहित्यिक प्रतिभा प्रकट होगी, तो वह खुद विकास करती जायेगी। मैं सोचता हूँ कि पेशेवर लेखक होने का केवल यही एक तरीक़ा है। उदाहरण के लिए त्यूत्चेव कूटनीतिज्ञ था, गारिन

---

* त्यूत्चेव – कवि, पुश्किन का समकालीन। – सं.

इंजीनियर, चेख़ोव डाक्टर और तोलस्तोय जमींदार थे...”

“कितना अच्छा पेशा था!” जोरा ने अपनी काली आर्मीनियाई आँखों से धूर्ततापूर्वक वान्या को देखते हुए कहा।

दोनों हँस पड़े और मेजर भी हल्के-से मुस्कुरा दिया।

“कोई विधिविद भी था कि नहीं?” जोरा ने औपचारिक स्वर में पूछा।

यदि कोई होता, तो जोरा सहज ही वान्या की यह दलील मानने को तैयार हो जाता।

“मुझे मालूम नहीं। लेकिन विधिविद् को विज्ञान की उन सभी शाखाओं के सम्बन्ध में शिक्षा मिलती है, जो एक लेखक के लिए आवश्यक और उपयोगी हैं, जैसे सामान्य विज्ञान, इतिहास, विधि, साहित्य...”

“लेकिन मैं तो कहूँगा कि इनके बारे में अध्यापक-प्रशिक्षण विद्यालय में ही अच्छा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है,” जोरा ज़ोर देते हुए बोला।

“लेकिन मैं अध्यापक होना नहीं चाहता, हालाँकि तुम लोग हमेशा ही मुझे प्रोफ़ेसर कहकर पुकारते रहे हो।”

“लेकिन हमारे यहाँ प्रतिवादी का वकील होना भी तो पागलपन है,” जोरा ने कहा। “उन देश-द्रोहियों के गिरोह का मुक़दमा याद है? मैं प्रतिवादियों के वकीलों के बारे में हमेशा सोचता रहता हूँ। कैसी अटपटी स्थिति होती है उनकी! है न?” जोरा हँस पड़ा और उसकी बत्तीसी झलक उठी।

“बेशक, प्रतिवादी के वकील का पेशा कोई दिलचस्प पेशा नहीं, क्योंकि हमारे यहाँ जन-न्यायालय हैं। लेकिन मेरा ख़याल है कि जाँच-कर्त्ता होना काफ़ी दिलचस्प है। हर तरह के लोगों से वास्ता पड़ता है।”

“अभियोक्ता का काम सबसे बढ़िया काम है। विशीन्स्की की याद है? लाजवाब! जो भी हो, मैं तो सपने में भी विधिविद बनना नहीं चाहता।”

“लेनिन विधिविद थे,” वान्या बोला।

“तब की हालत दूसरी थी।”

“अपने भावी पेशे के बारे में मुझे तुम्हारे साथ बहस करने में कोई आपत्ति नहीं, लेकिन मुझे मालूम है कि यह विषय ही बेकार और वाहियात है,” वान्या मुस्कराते हुए बोला। “हमें शिक्षा प्राप्त करना है, अपना काम जानना है, और अपने धन्धे में रुचि पैदा करना है, और यदि मनुष्य में कवि-सुलभ प्रतिभा है, तो वह खुद उजागर होकर रहेगी।”

“तुम्हें मालूम है, वान्या, कि तुम्हारी कविताएँ भित्ति-समाचारपत्र और ‘पाल’ पत्रिका में छपती थीं, जिसे तुम और कोशेवोई निकालते थे। मुझे वे हमेशा अच्छी

लगती थीं।"

"तुम हमारी पत्रिका पढ़ते थे?" वान्या ने उल्लसित होकर पूछा।

"हाँ," जोरा ने गम्भीरता से जवाब दिया। "मैं अपने स्कूल का 'घड़ियाल' भी पढ़ता था। स्कूल से जो कुछ भी प्रकाशित होता था, उसे मैं पढ़े बिना नहीं रहता था," वह प्रसन्नतापूर्वक कहता गया, "और मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि तुममें प्रतिभा है!"

"यह भी कोई प्रतिभा हुई!" वान्या झेंप गया। उसने कनखियों से मेजर को देखा और सिर झटकारकर अपने बिखरे बालों को सहेज लिया। "दो-चार पंक्तियाँ रच लेना कोई प्रतिभा की बात नहीं। पुश्किन, महान पुश्किन... वह मेरा आदर्श है!"

"नहीं, तुम सचमुच बहुत अच्छा लिखते हो, वान्या। मुझे याद है, आइने के सामने हमेशा मुँह बनाते रहने के लिए तुमने लेना पोज़्दनिशेवा की कैसी भद्द बनायी थी," उसने ज़ोर से हँसते हुए कहा। "बहुत ही बढ़िया कविता थी वह!" उसका आर्मीनियाई उच्चारण निखरने लगा था। "क्या थी वह पहली पंक्ति? 'खोलती जब वह सुन्दर होंठों के लघु कपाट...'" और वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"कैसी बेकार की बातें कर रहे हो?" वान्या झेंपते हुए बड़बड़ाया।

"तुमने प्रेम-कविताएँ भी लिखी हैं?" जोरा ने रहस्यपूर्ण ढंग से पूछा : "चलो, दो-चार पंक्तियाँ सुनाओ तो सही," जोरा ने मेजर को आँख मारते हुए कहा।

"प्रेम-कविताएँ मैंने कभी लिखीं ही नहीं," वान्या बुरी तरह झेंप गया था।

उसने क्लावा को सम्बोधित करके कविताएँ लिखी थीं, और उनके शीर्षक पुश्किन की तरह रखे थे। "...के लिए" बिलकुल इसी ढंग से। सिर्फ़ तीन बिन्दिया और उसके आगे "के लिए" और उसे अचानक अपने और क्लावा के सम्बन्ध में सारी बातें याद आने लगीं और उनके साझे सपने झलकने लगे। वह सुखी था। हाँ, इस सर्वव्यापी विपत्ति के बीच भी वह सुखी था। लेकिन क्या इस सुख का आनन्द जोरा के साथ लेना ज़रूरी है?

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता कि तुमने कभी प्रेम-कविताएँ नहीं लिखीं। चलो, चलो; सुनाओ कुछ। शुरू करो भी।" जोरा की आँखों में शरारत झाँक रही थी।

"बकवास बन्द करो!"

"तो क्या सचमुच तुम प्रेम-कविताएँ नहीं लिखते?" जोरा अचानक गम्भीर हो गया। वह फिर स्कूल-शिक्षक के-से लहजे में बोलने लगा था। "चलो, यह अच्छी ही बात है! क्या यह समय प्रेम-कविताएँ लिखने का है – सीमोनोव की तरह? जब दुश्मनों के प्रति जनता की घृणा को उभारना है! यह राजनीतिक कविताएँ लिखने का समय है। मायाकोव्स्की की तरह और सुर्कोव की तरह! ओह ये कमाल के कवि हैं!"

"यह बात नहीं! तुम किसी भी विषय पर कविता लिख सकते हो," वान्या ने चिन्तनशील मुद्रा में कहा। "चूँकि हमने इस धरती पर जन्म लिया है और ऐसी ज़िन्दगी बिता रहे हैं, जिसके लिए सर्वोत्तम जनों की पीढ़ियों ने केवल सपने देखे और संघर्ष किये, इसलिए हम अपनी ज़िन्दगी के सारे पहलुओं के बारे में लिख सकते हैं। हमें ऐसा करने का अधिकार है, क्योंकि इसका हर पहलू महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व है।"

"अच्छा, भगवान के लिए, कुछ सुनाओ भी!" जोरा ने विनती की।

घुटनभरी गरमी से जान निकली जा रही थी। वे हँसते-बोलते बढ़ते गये। कभी-कभी कोई गुप्त बात फुसफुसाकर कहते-सुनते। हाथ हिला-हिलाकर वे बातें करते। सफ़री झोलों के नीचे उनकी पीठें पसीने से तरबतर हो गयी थीं, और धूल की मोटी परतें उनके चेहरों पर जम गयी थीं। मुँह पर से पसीना पोंछने के कारण उनके चेहरों पर कीचड़ की धारियाँ उभर आती थीं। साँवला जोरा, पीले, लम्बे चेहरे वाला वान्या और मुच्छल मेजर, सब के सब, धुआँरा साफ़ करने वालों जैसे दीख रहे थे। लेकिन उस क्षण उन तीनों के लिए पूरी की पूरी दुनिया उनकी बातचीत के अन्दर समायी हुई थी।

"अच्छी बात है, तो मैं कुछ न कुछ सुनाऊँगा ही।"

वान्या स्थिरचित, गम्भीर और शान्त आवाज़ में सुनाने लगा :

अनुभव करें न ऊब, उदासी जीवन-पथ
दृढ़ संकल्प, इरादा पक्का
हर क्षण हमें पुकार रहा।

बन विद्रोह-श्रृंखला मानो
बीत रहा सुखमय यौवन,
उमड़ रहे हैं मचल-मचलकर
मन में प्यारे, मधुर स्वप्न।

घबरा, जीवन से मुँह मोड़ें,
ऊबें, उससे कतरायें,
नहीं, न हम हैं मन के रीते
हमें न नोचें शंकायें।

हम, जग-खुशियों के दीवाने
बढ़ते जायें सदा निडर,
भावी हमें कम्यून पुकारे
वही हमारा ध्येय, शिखर।

"बहुत ख़ूब! निस्सन्देह तुममें प्रतिभा है!" जोरा ने विस्मय से कहा और अपने बुज़ुर्ग साथी की ओर प्रशंसा-सूचक दृष्टि से देखा।

उस क्षण मेजर के गले से एक अजीब-सी आवाज़ निकली और वान्या तथा जोरा का ध्यान उधर आकृष्ट हुआ।

"ए, लड़को, तुम्हें पता नहीं तुम लोग किस तरह के इंसान हो!" वह भर्राई आवाज़ में बोला। उसकी भावनाओं को जैसे किसी ने झकझोर दिया था। घनी भौंहों तले उसकी धँसी आँखें नम हो उठी थीं। "मैं कहता हूँ, हमारा देश अपने पाँवों पर खड़ा है और दृढ़ता से खड़ा रहेगा," वह बोला और अपनी छोटी काली उँगली को इस तरह हिलाया मानो शून्य में किसी को धमका रहा हो।

"दुश्मन सोचता है उसने हमारी ज़िन्दगी का ख़ात्मा कर दिया!" उसने गला साफ़ किया। "ओह, नहीं, यह तुम्हारा भ्रम है! ज़िन्दगी की धड़कन यहाँ अभी भी बन्द न हुई है। हमारा युवा-समुदाय तुम्हें प्लेग और हैज़े की तरह समझ रहा है। तुम जिस तरह देश में घुस आये हो, उसी तरह यहाँ से निकल जाओगे। हमारी ज़िन्दगी बनती रहेगी। लोग फिर से पढ़ने लगेंगे, काम करने लगेंगे। पर उसने किसकी ठानी थी?" मेजर ने ताना मारते हुए कहा। "हमारी ज़िन्दगी सदा बनती जायेगी। उसकी साँस कभी नहीं टूटेगी। और वह क्या है? स्वस्थ शरीर पर जैसे एक मस्सा। उसे काट डालो और फिर उसका कोई नामोनिशान नहीं। उस मनहूस अस्पताल में मैं जैसे अपना साहस खो बैठा था। दुश्मन कितना बलवान लगता था। लगता था कि उसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। लेकिन तुम जवानों की संगत में आते ही मेरा खोया साहस लौट आया और सोया उत्साह जग पड़ा। हज़ारों-हज़ार लोग हम सैनिकों को अब कोस रहे होंगे, लेकिन क्यों? यह सत्य है कि हमें पीछे हटना पड़ा है, लेकिन दुश्मन ने कितनी करारी चोट हम पर की थी! और सोचो, हमने कैसे दृढ़ संकल्प का परिचय दिया है! हे भगवान! यह कोई मामूली बात नहीं – दुश्मन के सामने सीना तानकर खड़े रहना, इंच भर भी पीछे न हटना और प्राणों की आहुति देना! यक़ीन मानो, तुम्हारे सरीखे बच्चों के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देना, अपनी क़ुर्बानी कर देना मैं बहुत ही गौरव की बात समझता!" मेजर का ठिंगना शरीर आवेश से थरथरा रहा था।

वान्या और जोरा ने कहा कुछ नहीं, लेकिन मेजर की ओर बड़ी ही सहृदयता से देखा। दोनों तनिक असमंजस में भी पड़ गये थे।

मेजर ने अपनी बात ख़त्म कर आँखें मिचमिचायीं, गन्दे रूमाल से मूँछें पोंछीं और फिर गहरी रात गये तक चुप्पी साधे रहा – एक शब्द भी न बोला। लेकिन जब रात हुई, तो मोटरों, लारियों, तोपों और गाड़ियों का रेला अड़ गया। वह यह कहकर

कि वह 'रास्ता साफ़ करने' जा रहा है, बड़े आवेश में लपककर वहाँ से चला गया। वान्या और जोरा की आँखों से वह हमेशा के लिए ओझल हो गया और वे तुरन्त उसे भूल भी गये।

लिख़ाया पहुँचने में उन्हें पूरे दो दिन लग गये। उस वक़्त तक यह ख़बर फैल गयी थी कि दक्षिण में जो लड़ाई चल रही थी, वह नोबोचेर्कास्क के पास-पड़ोस तक पहुँच गयी थी। जर्मन टैंकों और मोटरवाहित टुकड़ियों ने दोनेत्स के पूर्व में, दोनेत्स और दोन के बीच लम्बी-चौड़ी स्तेपी में आफ़त मचाना शुरू कर दिया था।

अफ़वाह थी कि कामेंस्क की ओर आने वाले रास्तों पर हमारी कोई टुकड़ी जान की बाज़ी लगाकर लड़ रही थी और जर्मनों को लिख़ाया तक पहुँचने से रोक रही थी। यहाँ तक कि उस टुकड़ी के जनरल का नाम भी लोग एक दूसरे के कान में फुसफुसाते देखे जाते थे। लोग उस कमाण्डर और उसकी टुकड़ी का एहसान महसूस कर रहे थे कि निचली दोनेत्स पर बने पुल अभी भी हमारे हाथ में थे, स्तेपी में गाड़ी की लीकों पर अभी भी बिना किसी रोक-टोक के चलते हुए दोन नदी तक पहुँचा जा सकता था और उसे नाव से पार भी किया जा सकता था।

दो दिन तक लगातार जलती धूप में पैदल चलते रहने के कारण वान्या और जोरा उस रात एक खलिहान में पुआल के ढेर पर निढाल होकर गिर पड़े। वे इतने थक गये थे कि उनके पैर सुन्न पड़ गये थे। दूर हो रहे बमों के बारम्बार विस्फोटों से, जिनसे पुआल का ढेल तक काँप रहा था, उनकी नींद खुल गयी।

जब जोरा और वान्या उस पड़ाव पर पहुँचे, जहाँ दोनेत्स के इस किनारे कारों, मनुष्यों और गाड़ियों का रेला लगा था, तो सूरज अभी भी स्तेपी के ऊपर लटक रहा था, लेकिन लहराते अन्न का समुन्दर जलती धूप की सुनहरी धुन्ध के पीछे ओझल हो गया था। उससे थोड़ी ही दूर पर, नदी के उस पार कज़्ज़ाकों की एक बड़ी-सी बस्ती दिखायी पड़ रही थी, जिसके हरे-भरे बाग़-बगीचे, बहुत-सी पक्की इमारतें, जिनमें सरकारी दफ़्तर, वाणिज्य-संस्थाएँ और स्कूल स्थित थे, बमवर्षा के शिकार हो चुके थे और उनके खण्डहरों से धुआँ उठ रहा था।

यह विशाल पड़ाव केवल दो हफ़्ते पहले ही क़ायम किया गया था, लेकिन अभी से यही अपने ही ढंग से जी रहा था। यह ख़ानाबदोश आबादी, जिसमें पहले से आये लोग भी शामिल थे, लगातार बढ़ती जा रही थी क्योंकि पैदल, गाड़ियों या लारियों में नदी तक आने वाले लोगों का ताँता अभी ख़त्म होने का नाम नहीं ले रहा था।

यह आबादी बची हुई फ़ौजी टुकड़ियों, कार्यालयों के कर्मचारियों और कारख़ानों के कर्मियों, हर तरह की सवारियों, हर उम्र के और हर तबक़े के शरणार्थियों की अजीब खिचड़ी-सी थी। इनकी सारी कोशिश, सारा ध्यान, सारी कार्रवाई केवल इस बात पर

केन्द्रित थी कि किसी तरह वे नदी के किनारे पर, नावों के सँकरे पुल के नाके पर जा खड़े हों।

शरणार्थियों का यह हजूम पुल तक पहुँचने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहा था। लेकिन जिन सैनिकों के ज़िम्मे पुल पार कराने का काम था, वे लोगों को आगे बढ़ने से रोककर सबसे पहले उन फ़ौजी टुकड़ियों को पुल पार करा रहे थे, जो दोनेत्स और दोन के बीच नये प्रतिरक्षा मोर्चों पर जा रही थीं।

उक्त वैयक्तिक और सार्वजनिक हितों के इस संघर्ष में, भिन्न-भिन्न भावनाओं के इस संघर्ष में, किसी भी क्षण दोनेत्स के दोनों किनारों पर दुश्मन के आ धमकने के भय और पड़ाव में ज़िन्दगी की चहल-पहल जारी थी।

अन्य दफ़्तरों के लोग पुल पार करने के लिए अपनी बारी का काफ़ी अरसे से इन्तज़ार कर रहे थे। उन्होंने हवाई हमले से बचने के लिए अपने लिए ख़न्दक़ें खोद ली थीं। कुछ लोगों ने तम्बू गाड़ लिये थे, खाना बनाने के लिए चूल्हे बना लिये थे। कैम्प में अनगिनत बच्चे थे। रात-दिन लारियों, गाड़ियों और मनुष्यों की अनन्त झीनी पाँत दोनेत्स पार करती दिखायी पड़ती। लोग डोंगियों, बेड़ों और नावों से भी नदी पार करते नज़र आते। किनारे पर हज़ारों गायें और भेड़ों रंभाती और मिमियाती आ पहुँची और फिर तैरकर नदी पार करने लगीं।

हर दिन कई बार जर्मन विमान पुल पर बमबारी करते और मशीनगन चलाते, लेकिन पुल की हिफ़ाज़त के लिए रखी गयी तोपें और विमान-भेदी मशीनगनें उन्हें निशाना बनातीं। पूरा का पूरा पड़ाव स्तेपी में ग़ायब हो जाता। विमानों के ओझल होते ही पड़ाव में ज़िन्दगी की चहल-पहल फिर शुरू हो जाती।

पड़ाव पर पहुँचते ही वान्या जी-जान से कोवल्योव की लारी ढूँढ़ निकालने की कोशिश करने लगा। उसके अन्तर में दो भावनाओं का संघर्ष हो रहा था : ख़तरे को देखते हुए वह सोच रहा था कि क्लावा अपने परिवार के साथ पुल पारकर दोन से काफ़ी दूर निकल गयी हो, तो बहुत अच्छा हो, पर साथ ही, वह यह भी सोच रहा था कि यदि क्लावा से उसकी मुलाक़ात यहीं हो जाये, तो वह बहुत भाग्यशाली होगा।

वान्या और जोरा शिविर का चक्कर लगाकर क्रास्नोदोन के लोगों की तलाश कर रहे थे कि अचानक उनका नाम लेकर किसी ने गाड़ी में से पुकारा। देखते-देखते वे अपने स्कूल के साथी ओलेग कोशेवोई की सशक्त और लम्बी बाँहों में बँध गये। ओलेग का चेहरा धूप से तपा था और वह हमेशा की ही तरह साफ़-सुथरा नज़र आ रहा था। चौड़े कन्धों वाला उसका छरहरा बदन काम की चहल-पहल से फड़क-सा रहा था और भूरी बरौनियों के नीचे से उसकी आँखें चमक रही थीं।

उन्हें खान 1(बी) की वह लारी मिल गयी, जो वाल्को और शेव्त्सोव को लायी

थी। उन्हें वे गाड़ियाँ भी मिल गयीं, जो ऊल्या को और ओलेग कोशेवोई के परिवार को और उन अनाथ बच्चों को ले आयी थीं, जो उनकी मदद से ही क्रास्नोदोन से हटाये जा सके थे, हालाँकि मेट्रन ने अब उन्हें पहचाना नहीं।

अध्याय 11

पड़ाव के उस हिस्से में, जहाँ वान्या और जोरा अभी-अभी पहुँचे थे, व्यवस्था और अनुशासन क़ायम था, क्योंकि उसके नियंत्रण की बागडोर खान 1(बी) के निदेशक वाल्को के फ़ौलादी हाथों में थी। एक तरफ़ लारियाँ और गाड़ियाँ लाइन बनाकर खड़ी थीं, चारों और छिपने के लिए खाइयाँ खोद ली गयी थी। खनिकों की लारी के पास खेतों की बाड़ें तोड़कर इकट्ठे किये गये जलावन का ढेर लगा था। मामी मरीना और ऊल्या सुअर की चर्बी वाला ताजी बन्दगोभी का सूप बनाने में व्यस्त थीं।

यह बूढ़ा 'जिप्सी' वाल्को एक योग्य संगठनकर्ता सिद्ध हुआ था। अपने साथ अपने कामगारों और आधे दर्जन कोमसोमोल-सदस्यों को लेकर वह नदी के तट की ओर चल पड़ा। घनी, काली भौंहों के नीचे उसकी तीव्र आँखें ऐसे घूरती थीं, कि देखते ही लोग रास्ता छोड़ देते थे। वह अपने साथियों के साथ भारी क़दमों से मार्च करता जा रहा था। उसे आशा थी कि पुल पार कराने की ज़िम्मेवारी उसे ही सौंप दी जायेगी।

वाल्को को सफलतापूर्वक व्यवस्था क़ायम करते देखकर ओलेग कोशेवोई उससे उतना ही प्रभावित हुआ, जितना कि कुछ ही देर पहले वह कयूत्किन से और उससे भी पहले ऊल्या से हुआ था।

ओलेग में काम करने की, अपनी क्षमता दिखाने की, लोगों की ज़िन्दगी और कार्यकलाप में हिस्सा बँटाने की तीव्र उत्कण्ठा थी, ताकि वह अपनी कुछ ऐसी चीज़ भेंट कर सके, जो अधिक पूर्ण, अधिक बहुमुखी और नवीनता से युक्त हो। उसकी आत्मिक शक्ति, जिसे वह अभी पूरी तरह समझ नहीं पाया था, उसकी काया को स्फुरित करती रहती और उसके इस स्वभाव की मूल प्रेरिका बन गयी थी।

"ओह यह कितना अ-अच्छा हुआ, वान्या, कि हम फ-फिर साथ हो गये!" वाल्को के पीछे-पीछे ज़ेम्नुख़ोव के साथ जा रहे ओलेग ने सहर्ष, पर थोड़ा हकलाते हुए कहा। "मुझे तुम्हारी कमी खलने लगी थी। देख रहे हो, क्या ह-हो रहा है? और तुम, और तुम्हारी कविताएँ!..." उसने अपनी आँखों और एक उँगली से श्रद्धा के साथ वाल्को की ओर इशारा किया। "हाँ, दोस्त," वह बोलता गया। "एक अच्छे संगठन से बढ़कर कोई चीज़ नहीं!" सुनहरी बरौनियों वाली उसकी आँखें चमक उठीं। "बिना संगठन के उत्कृष्ट और अत्यावश्यक कार्य भी बिगड़ जाता है, बुना हुआ कपड़ा एक

जगह से फट जाये, तो फटता ही चला जाता है, ठीक उसी तरह, लेकिन यदि अपने दृढ़ संकल्प के साथ तुम उसमें जुट पड़ो..."

"और तभी तुम्हारे थोबड़े पर एक थप्पड़ पड़ता है," वाल्को ने पीछे मुड़े बिना आवाज़ कसी।

लड़कों में निरानन्द टिप्पणी की उसी के अनुरूप प्रतिक्रिया हुई।

फ़ौज के दूसरे बचाव-मोर्चों पर से युद्ध के अगले मोर्चे की भयंकरता का पता लगाना कठिन होता है। उसी तरह पुल पार करने का इन्तज़ार करने वाले शरणार्थियों की आख़िरी पाँत से पुल पर की मुसीबत और आफ़त का अन्दाज़ लगाना असम्भव था।

यह भीड़ नावों के पुल के ज्यों-ज्यों क़रीब होती गयी, त्यों-त्यों स्थिति भयावह होती गयी। लोगों के अन्दर ही अन्दर घुटता हुआ तनाव और गुबार फूट पड़ा। बेचैनी और अधीरता के मारे भगदड़ मच गयी, व्यवस्था भंग हो गयी। लोग पुल के पास पहुँचने के लिए उतावले हो रहे थे। आगे-पीछे लारियों और गाड़ियों का ताँता लगा हुआ था। इन सब के बीच दबे लोग जा मिले थे। वे इस तरह कस-बँध गये थे कि उन्हें इधर-उधर हटाना असम्भव था, इसलिए केवल एक ही रास्ता था कि उन्हें धीरे-धीरे सीधे, आगे बढ़ते जाने दिया जाये।

एक तो जलती धूप, और दूसरे कसमकस भीड़। लोग पसीने से नहा उठे थे और उनके शरीर इस तरह तप रहे थे कि, लगता था, एक दूसरे का स्पर्श होते ही वे भभक उठेंगे।

फ़ौजी अफ़सर, जिन पर पुल पार कराने की ज़िम्मेवारी थी, कई दिनों से झपकी तक नहीं ले पाये थे। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक जलती धूप में भुनते रहने और लाखों पैरों और पहियों से उड़ी धूल में लगातार सनते रहने के कारण वे बिलकुल काले पड़ गये थे। चीख़ते-चिल्लाते रहने के कारण उनके गले बैठ गये थे, पलकें सूज गयी थीं और पसीने से तर-बतर, काले हाथ, इस क़दर जवाब दे गये थे कि किसी चीज़ को वे पकड़ ही नहीं पाते थे। इन सबके बावजूद वे अपना अतिमानवीय कर्तव्य पूरा करते रहे।

यह स्पष्ट था कि जो कुछ भी किया जा सकता था, वे उसे कर रहे थे। लेकिन फिर भी वाल्को भीड़ को ठेलता-ठालता पुल के सिरे पर आ पहुँचा और उसकी कर्कश आवाज़ हो-हल्ले और लारी-इंजनों की घरघराहट में खो गयी।

अपने साथियों के साथ किसी न किसी तरह तट पर पहुँचा ओलेग बच्चों की तरह टिकटिकी बाँधे, चेहरे पर आश्चर्य और निराशा का भाव लिए बेढंगे बोझ से लदी लारियों और गाड़ियों को धीरे-धीरे, एक-एक कर नीचे उतरता देखता रहा। वे धूल

और जलती धूप में रेंगती हुई-सी जान पड़ती थीं। नदी-तट का ढलान अनगिनत पैरों और पहियों की लगातार हरकत से पिलपिला हो गया था और पसीने से नहाये, मैले-कुचैले, तमतमाये और बौखलाये लोग चलते जा रहे थे, बढ़ते जा रहे थे...

केवल नदी, प्यारी दोनेत्स, जिसका पाट वहाँ चौड़ा और शान्त था और जहाँ वे बचपन में तैरने और मछलियाँ पकड़ने अक्सर आया करते थे, पहले की ही तरह अपने शान्त, ख़ुशगवार और मटमैले पानी से लबालब बह रही थी।

"फिर भी मन चाहता है कि एक ही घूँसे से किसी का मुँह सीधा कर दूँ," विक्टर पेत्रोव अचानक बोल पड़ा। अपनी आँखों में उदासी लिये वह पुल से दूर बहते जल को निहार रहा था। वह पोगोरेली गाँव से आया था और नदी तट पर ही बड़ा हुआ था।

"घूँसा खाने वाला तो शायद अब उस पार तक पहुँच गया हो," वान्या ने आवाज़ कसी।

लड़के दबी हँसी हँस पड़े।

"घूँसेबाज़ी की जगह वहाँ है, यहाँ नहीं!" अनातोली ने बेरुख़ी से कहा और उज़्बेकी टोपी पहने अपने सिर से पश्चिम की ओर इशारा किया।

"बिलकुल सही!" जोरा ने सहमति जतायी।

और तभी ज़ोर की चिल्लाहट सुनायी पड़ी : "हवाई हमला!"

फ़ौरन विमान-भेदी तोपें गरज उठीं, मशीनगनें गड़गड़ा उठीं और आसमान इंजनों की घरघराहट और गिरते बमों की सनसनाहट से गूँज उठा।

लड़के धरती से चिपक गये। पास और दूर के विस्फोटों से वहाँ की धरती काँप उठी, चारों तरफ़ मिट्टी के ढेले और खपचियाँ वग़ैरह उड़ रहे थे। एक के बाद एक बमवर्षक विमानों की लहरें आती रहीं। बमों की सनसनाहट और धड़ाके से, विमान-भेदी तोपों की गर्जन और मशीनगनों की गड़गड़ाहट से स्तेपी और आसमान के बीच का वायुमण्डल काँपने लगा।

विमान अभी गये ही थे और लोग धरती पर से उठ ही रहे थे कि अचानक उस गाँव की ओर से तोपों का गर्जन सुनायी पड़ी, जहाँ वान्या और जोरा ने रात काटी थी। और दूसरे क्षण पड़ाव पर गोले बरसने और फूटने लगे। मिट्टी और कंकड़ के ढेर उड़ने लगे। कुछ लोग धरती पर फिर औंधे लेट गये और कुछ लोग फटते गोलों का जायज़ा लेने के लिए मुड़े। साथ ही साथ उनकी आँखें पुल पर भी टिकी थीं। पुल के पास तैनात सैनिकों के चेहरों और हरकतों से ज़ाहिर था कि कोई अनहोनी बात हो गयी थी।

पुल पार कराने के ज़िम्मेवार सैनिकों ने कुछ सुनने के अन्दाज़ में क्षण भर एक

दूसरे की ओर देखा। तब उनमें से एक अचानक नाव-पुल के पास के तहख़ानों में दौड़ गया और दूसरा नदी के किनारे-किनारे चीख़ता हुआ सैनिकों को पुकारने लगा।

कुछ क्षण बाद पहला सैनिक तहख़ानों में से दो भारी ओवरकोट लिए और तसमों के सहारे कई फ़ौजी थैले घसीटते हुए बाहर निकला और पूरी की पूरी टुकड़ी, अफ़सर और सैनिक, पंक्तियाँ तोड़कर, भागती लारियों और कारों को पीछे छोड़कर नदी के उस पार पहुँचने के लिए नाव-पुल पर बेतहाशा दौड़ने लगे।

किसी को पता नहीं, उसके बाद यह सब अचानक कैसे हुआ। कुछ लोग चीख़ते-चिल्लाते सैनिकों के पीछे दौड़े। सहसा नाव-पुल के ऊपरी भाग में कारों और लारियों में खलबली मची। कुछ कारें और लारियाँ एकसाथ नाव-पुल की ओर पिल पड़ीं, आपस में टकरायीं और फँस गयीं। यह जानते हुए भी कि आपस में गुँथी हुई लारियों के कारण नाव-पुल पर रास्ता जाम है, पीछे की लारियाँ धड़धड़ाते हुए आगे की लारियों पर टूट पड़ीं। एक लारी पानी में गिरी, फिर दूसरी, और तीसरी गिरने ही गिरने को थी कि ड्राइवर ने जैसे-तैसे ब्रेक लगाकर उसे सम्भाला।

हक्का-बक्का हुआ वान्या यह सब कुछ अपनी कमज़ोर आँखों से देख रहा था कि अचानक उसके मुँह से चीख़ निकल गयी : “क्लावा!” और वह नाव-पुल की ओर झपट चला।

हाँ, यह तीसरी लारी, जो नदी में गिरते-गिरते बची थी, कोवल्योव की थी और उस पर वह खुद, उसकी पत्नी, बेटी और अन्य कई लोग सामान के ऊपर बैठे थे।

“क्लावा!” वान्या फिर चिल्लाया और किसी तरह भीड़ में से सरकता हुआ लारी के पास पहुँच गया।

लारी पर चढ़े लोग कूद-कूदकर उतरने लगे। वान्या ने अपना हाथ बढ़ाया और क्लावा कूदकर उसके पास आ खड़ी हुई।

“सब ख़त्म हो गया। मौत मुँह बाये खड़ी है!” कोवल्योव ने ऐसी आवाज़ मे कहा कि वान्या का खून जम गया।

क्लावा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए वान्या ने महसूस किया कि अब उसके हाथ को आगे नहीं थामना चाहिए। क्लावा ने वान्या की ओर कनखियों से देखा, पर उसे कुछ नहीं दिखायी दे रहा था। वह सुन्न हो गयी थी और काँप रही थी।

“क्या तुम पैदल चल सकती हो? बोलो, बोलो न!” कोवल्योव ने अपनी पत्नी से पूछा। उसकी आवाज़ रुआँसी हो रही थी। लेकिन उसकी पत्नी अपने सीने को एक हाथ से दबाये, मछली की तरह मुँह से साँस लेती-लेती ताकती रही।

“छोड़ो हमें, हमारी चिन्ता न करो। भागो यहाँ से, वे तुम्हें मार डालेंगे,” वह थरथराती हुई बोली।

"लेकिन हुआ क्या?" वान्या ने पूछा।

"जर्मन आ गये!" कोवल्योव चिल्ला पड़ा।

"भागो, भागो यहाँ से! छोड़ो हमें!" क्लावा की माँ चीख़ पड़ी।

कोवल्योव ने वान्या का हाथ पकड़ लिया। उसके चेहरे पर आँसुओं की धारा बह रही थी।

"वान्या!" वह चिल्लाया। "इन्हें बचाना चाहिए, इन्हें छोड़कर भागना नहीं। यदि बचा सको तो इन्हें नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की ले जाना। वहाँ हमारे रिश्तेदार हैं। वान्या, मैं अपनी थाती तुम्हें सौंपे जा रहा हूँ..."

भयानक धड़ाके के साथ पुल के पास लारियों और कारों के हंगामे में एक तोप का गोला फटा।

नदी-तट पर दबते-पिसते लोग – सैनिक और नागरिक – होश-हवास खोकर नाव-पुल की ओर दौड़े। कोवल्योव ने वान्या का हाथ छोड़ दिया। अपनी पत्नी और बेटी की ओर उसने झटके से एक हरकत की, मानो उनसे विदा लेना चाहता हो, पर बदहवासी में दोनों हाथ झटकारकर लोगों के साथ-साथ नाव-पुल पर दौड़ा।

ओलेग ने तट पर से वान्या को पुकारा, लेकिन वान्या ने सुना नहीं।

"जब तक साँस में साँस है, आगे बढ़ें," उसने क्लावा की माँ से दृढ़ और शान्त आवाज़ में कहा। उसने उन्हें अपनी बाँह का सहारा दिया। "चलो इस तहख़ाने में चलें। सुन रही हो? क्लावा, तुम भी चलो," उसकी आवाज़ सख़्त, पर स्नेहपूर्ण थी।

तहख़ाने में घुसने से पहले उसने देखा कि विमान-भेदी तोपों वाले सैनिक तोपों के कुछ वज़नी पुर्ज़े खोल रहे थे और उन्हें नाव-पुल पर कुछ दूर तक घसीटकर पानी में फेंक रहे थे। नाव-पुल की दोनों ओर नदी का पूरा पाट तैरते हुए मनुष्यों और मवेशियों से भरा नज़र आ रहा था। लेकिन वान्या को अब यह सब दिखायी नहीं पड़ रहा था।

वान्या और वाल्को का साथ छूट जाने पर वान्या के साथी उधर दौड़ने लगे, जिधर उनकी गाड़ियाँ खड़ी थीं। वे जी-जान से यह कोशिश कर रहे थे कि उनकी विपरीत दिशा में दौड़ते लोगों का रेला उन्हें फिर पीछे न धकेल दे।

"साथ न छूटे... हमारा साथ न छूटे!" ओलेग चिल्लाता जा रहा था और अपने चौड़े कन्धों से भीड़ को ठेलता हुआ अपने साथियों के लिए रास्ता बनाता जा रहा था। वह मुड़-मुड़कर अपने साथियों को देखता जाता था। उसकी आँखें क्रोध से जल रही थीं।

लोगों से भरा पूरा रेला अब छिन्न-भिन्न हो रहा था। लोग बिदक गये थे। लारियों और कारों के इंजन शोर मचा रहे थे। वे आगे खिसकती जा रही थीं और जो

पार करने में सफल हो सकीं, वे नदी के किनारे-किनारे नीचे की ओर चल पड़ीं।

जब हवाई हमले की पहली लहर आई थी, तो मामी मरीना कूल्हों के बल बैठी, झुककर अलाव में लकड़ियाँ डाल रही थीं और मामा कोल्या बन्दूक़ की संगीन से लकड़ियों के टुकड़े कर रहे थे। और ऊल्या पास ही घास पर बैठी हुई, विचारों में इस तरह खोई थी कि उसके नाक-नक़्शे, उसके होंठों के खिंचे कोरों और फैले नथुनों को देखने से उसकी गहरी ओजस्विता का पता चल जाता था। वह लारी पर बैठे हुए ग्रिगोरी इल्यीच को देख रही थी, जो अपनी गोद में सिमटी नीली आँखों वाली नन्ही बच्ची के, जिसे कुछ क्षणों पहले दूध पिलाया था, कानों में फुसफुसाकर कुछ कह रहा था और वह हँस रही थी। नर्सों की देख-रेख में अनाथ बच्चे उस लारी के इर्द-गिर्द खेल रहे थे, जो अलाव से कोई तीस गज़ की दूरी पर खड़ी थी। मेट्रन लारी के पास चुपचाप दुनिया से बेख़बर बैठी थी। अनाथालय की गाड़ियाँ और कोशेवोई तथा पेत्रोव परिवार की गाड़ियाँ अन्य सवारियों की पाँत में खड़ी थीं।

विमान इस तरह अचानक प्रकट हुए कि किसी को ख़न्दकों में छिपने का अवसर ही न मिला। वे जहाँ के तहाँ औंधे मुँह लेट गये। ऊल्या ज्यों ही मुँह के बल ज़मीन पर गिरी, त्यों ही गिरते हुए बम की सनसनाहट उसके कान के पर्दे को फाड़ती-सी लगी। ज्यों-ज्यों बम ज़मीन के नज़दीक आता था, यह आवाज़ तेज़ होती गयी। साथ ही उसे महसूस हुआ कि किसी तेज़ चीज़ से उसे बिजली की तरह धक्का लगा और उसका सारा शरीर झनझना उठा। सिर के ऊपर सनसनाती हवा का झोंका आया और मिट्टी के ढेर उसकी पीठ पर बिखर गये। उसे आसमान में इंजनों की घरघराहट सुनायी पड़ी और फिर गिरते बमों की सनसनाहट, लेकिन इस बार कुछ दूर पर। वह हिली नहीं और धरती से चिपकी रही।

उसे याद नहीं वह कब उठकर खड़ी हुई और किस प्रेरणा से वशीभूत हो उसने खड़े होने की कोशिश की। लेकिन अचानक उसने महसूस किया कि उसकी आँखों के सामने हर चीज़ घूम रही है और भय के मारे उसके मुँह से जंगली जानवर की-सी चीख़ निकल गयी।

वहाँ न खान 1(बी) की लारी थी, न ग्रिगोरी इल्यीच और न नीली आँखों वाली वह नन्ही बच्ची। वे लापता थे; वे कहीं दिखायी नहीं पड़ते थे। जहाँ लारी खड़ी थी, वहाँ और कुछ नहीं, केवल उखड़ी, जली मिट्टी के ढेर, गड्ढा और जहाँ-तहाँ लारी के जले-झुलसे टुकड़े और बच्चों के छितरे शरीर पड़े थे। ऊल्या से कुछ क़दम पर लाल रूमाल सहित कोई विचित्र-सी चीज़ मिट्टी से सनी ज़मीन पर रेंग रही थी। ऊल्या ने पहचान लिया कि वह अनाथालय की मेट्रन का धड़ था। रबड़ के ऊँचे बूटों सहित उसका निचला हिस्सा ग़ायब था।

आठ साल का एक बच्चा, जिसका सिर धरती से सटा था और बाँहें पीछे की ओर इस क़दर झुकी थीं मानो वह कूदने जा रहा हो। वह तड़प और चीख़ रहा था, साथ ही अपने नन्हें पाँव भी ज़मीन पर मारे जा रहा था।

ऊल्या बिना सोचे-विचारे उसे गोद में उठा लेने के लिए लपकी। लेकिन बच्चे ने चीख़ मारी और उसका शरीर ऐंठने लगा। ऊल्या ने उसका सिर उठाया और देखा कि उसका पूरा चेहरा बुरी तरह सूजकर विकृत हो गया है और आँखों के सफ़ेद ढेले बाहर निकल पड़े हैं।

ऊल्या धरती पर गिरकर, फफक-फफककर रो पड़ी।

उसके चारों तरफ़ हृदयविदारक दृश्य फैला था, लेकिन वह कुछ भी सुन-देख नहीं रही थी। उसे केवल तब होश आया, जब ओलेग उसकी बग़ल में आकर खड़ा हो गया। वह कुछ कह रहा था और ऊल्या के बालों को अपने बड़े हाथ से सहलाता जा रहा था। उसने ऊल्या को उठाने की कोशिश की, लेकिन वह अपना मुँह ढँककर रोती-बिलखती रही। उसने तोपों की गरज, गोलों के धमाके और दूर मशीनगनों की तड़तड़ाहट भी सुनी, लेकिन वह इन सबसे बिलकुल बेख़बर थी।

तब अचानक उसे ओलेग की थरथराती आवाज़ सुनायी दी :

"जर्मन!"

यह शब्द सीधे उसके मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंधा। उसने रोना बन्द किया और उठकर खड़ी हो गयी। क्षण भर में उसने ओलेग को और अपने साथियों को पहचान लिया, जो उसके पास ही खड़े थे। ओलेग के रिश्तेदार और वह बूढ़ा आदमी भी, जो ओलेग की गाड़ी हाँक रहा था, सब के सब वहाँ मौजूद थे। केवल वान्या और वाल्को ग़ायब थे।

ये सब लोग केवल एक ही दिशा में देख रहे थे और उनके चेहरों पर कुछ विचित्र-सा भाव था। ऊल्या ने भी उधर ही देखना शुरू किया। वहाँ रेले का अब कोई नामोनिशान तक नहीं था। उनके सामने चमकते आसमान के नीचे दूधिया धुन्ध-सी फैली थी और खुली स्तेपी पर जर्मनों के भूरे रंग के टैंक घरघराते हुए उनकी ओर चले आ रहे थे।

अध्याय 12

प्रयोगात्मक फ़ार्म के खेतों में भयानक लड़ाई के बाद जर्मनों ने 17 जुलाई के मध्याह्न में दो बजे लगभग वोरोशीलोवग्राद पर क़ब्ज़ा कर लिया। यहाँ रक्षा के लिए तैनात किया गया दक्षिणी मोर्चे की एक फ़ौज का दस्ता संख्या में अधिक दुश्मनों के साथ

लड़ाई में काम आया। दुश्मनों से डटकर लड़ते हुए बचे-खुचे सोवियत सैनिक वेर्ख़्नेदुवान्नाया की ओर जानेवाली रेलवे लाइनों के किनारे-किनारे बिखर गये और अपनी आख़िरी साँस तक लड़ते रहे।

इस वक़्त तक क्रास्नोदोन और आस-पड़ोस के तमाम निवासी, जो हट सकते थे या हटना चाहते थे, पूरब की ओर कूच कर चुके थे। केवल सुदूर बेलोवोद्स्क ज़िले में गोर्की स्कूल की आठवीं और नवीं कक्षाओं के छात्र, जो उस इलाके में फ़ार्म का काम कर रहे थे, अभी वहाँ से नहीं हट पाये थे, क्योंकि उन्हें वस्तुस्थिति का पता न था और न उनके लिए सवारी का ही बन्दोबस्त हो पाया था।

शिक्षा विभाग ने मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स को, जो उस स्कूल में रूसी साहित्य पढ़ाया करती थी, यह हिदायत भेजी थी कि छात्रों को जल्द से जल्द वहाँ से हटा दिया जाये। वह एक उत्साही महिला थी। वह दोनेत्स क्षेत्र की ही रहनेवाली थी, अतः वहाँ की परिस्थिति अच्छी तरह जानती थी। उसके इस काम में इतनी गर्मजोशी दिखाने का एक और कारण यह था कि उसकी बेटी वाल्या भी उन्हीं बच्चों के साथ थी। सारे बच्चों को हटाने के लिए केवल एक ही लारी की ज़रूरत थी, लेकिन मरीया अन्द्रेयेव्ना को यह हिदायत ऐसे वक़्त मिली, जब कि सवारी का बन्दोबस्त करना ही असम्भव था। कष्ट झेलते हुए किसी न किसी तरह वह सरकारी फ़ार्म पहुँची। इसी में उसे एक दिन लग गया। वहाँ का डाइरेक्टर फ़ार्म की सम्पत्ति हटाने में बुरी तरह व्यस्त था। उसकी दाढ़ी बढ़ गयी थी, बहुत चिल्लाने से गला बैठ गया था और वह कई दिन से सो नहीं सका था। अपने लम्बे सफ़र में क्लान्त और अपनी कोमसोमोल-बेटी तथा अन्य बच्चों के लिए चिन्तित मरीया अन्द्रेयेव्ना की व्यथा आनन्द के अतिरेक से आँसुओं के रूप में तब फूट पड़ी, जब डाइरेक्टर ने बिना हुज्जत के आख़िरी लारी मारीया अन्द्रेयेव्ना को दे दी।

मोर्चे की नाजुक हालत की ख़बर हालाँकि बेलोवोद्स्क ज़िले में बिजली की तरह फैल गयी थी, फिर भी बच्चे मरीया अन्द्रेयेव्ना के लौटने तक बिलकुल आश्वस्त और बेफ़िक्र-से थे। उन्हें विश्वास था कि उनके बड़े-बूढ़े उचित समय पर उन्हें वहाँ से हटाने का प्रबन्ध कर ही लेंगे। वे पहले की ही तरह हँसते-खेलते और अपने साथी-संगियों के बीच मगन रहे। प्रकृति का सुन्दर स्थल हो और बेपरवाह बच्चे एक-साथ मिल जायें, तो उनके बीच नयी-नयी दोस्तियों और प्रणयकलापों का होना तो स्वाभाविक ही है।

मरीया अन्द्रेयेव्ना बच्चों को पहले से ही घबड़ा और डरा देना नहीं चाहती थी, अतः उसने असलियत छिपाये रखने की कोशिश की। लेकिन उन्हें जिस ढंग से और जल्दी-जल्दी घर जाने को तैयार होने के लिए वह ज़ोर दे रही थी, उससे बच्चों ने भाँप

लिया कि दाल में कुछ काला ज़रूर है। उनका उत्साह जगता रहा और वे अपने घर और भविष्य की चिन्ता में डूबने-उतराने लगे।

वाल्या बोर्त्स देखने में अधिक सयानी लगती थी, लेकिन सुनहरे रोओं से भरी उसकी सँवलायी बाँहों और टाँगों से अभी भी कुछ-कुछ बचपना-सा झलकता था। उसकी काली बरौनियों से ढँकी आँखें गहरे भूरे रंग की थीं और उनसे स्वच्छन्दता तथा कुछ-कुछ उपेक्षा का भाव झलकता था। उसकी सुनहरी चोटियों और पुष्ट होंठों की काट से घमण्ड का आभास होता था। सरकारी फ़ार्म के खेतों में काम करने के दौरान उसकी दोस्ती एक ठिगने और सुनहरे बालोंवाले लड़के से हो गयी थी, जिसका नाम स्त्योपा सफ़ोनोव था। वह उसी स्कूल में पढ़ता था। उसकी नाक दबी हुई थी, चेहरे पर चित्ती के दाग़ थे और आँखों से ज़िन्दादिली और बुद्धिमानी झलकती थी।

वाल्या नौवीं कक्षा में पढ़ती थी और स्त्योपा आठवीं में। उनकी दोस्ती की राह में उनकी कक्षाओं का अन्तर बाधा डालता, अगर लड़कियों के साथ वाल्या का हेल-मेल होता। लेकिन ऐसी कोई बात न थी और न किसी दूसरे लड़के के ही प्रति उसका झुकाव या मोह था। वह बहुत पढ़ती थी और पियानो बहुत अच्छा बजाती थी। वह जानती थी कि साथ की अन्य लड़कियों की अपेक्षा उसका विकास पृथक हुआ है और अपने हमउम्र लड़के-लड़कियों के अपने प्रति आदर-भाव की अभ्यस्त हो चुकी थी। वह स्त्योपा की ओर इसलिए नहीं झुकी कि वह उसे प्यार करने लगी थी, बल्कि इसलिए कि वह उसका मनोरंजन किया करता था। वह चतुर और ईमानदार था, लेकिन बचकानी शरारतों का नक़ाब डाले रहता था। वह एक सच्चा साथी था, लेकिन बड़ा ही गप्पी। वाल्या गप्पी न थी, इसलिए अपने राज़ दूसरों को न बताती थी। वह केवल अपनी डायरी के पन्नों में ही अपने सपने और अरमान सँजो कर रखे थी। वह विमान-चालिका बनने के सपने देखती थी। मन ही मन वह अपने ऐसे नायक-जीवनसंगी-की कल्पना करती थी, जो पराक्रम और शौर्य का धनी हो। स्त्योपा अपनी दिलचस्प गप्पों और मज़ेदार चुटकुलों के कारण उसे बहुत ही भाने लगा।

वाल्या ने पहली बार उससे गम्भीर बातचीत करने का साहस किया और सीधे पूछ बैठी कि यदि जर्मन क्रास्नोदोन में आ धमके, तो वह क्या करेगा।

वाल्या ने उसकी ओर अपनी गहरी भूरी आँखों से तीक्ष्णता और खोजपूर्वक देखा। उसके अपने विचार तथा भावनाएँ उसकी आँखों से लक्षित नहीं होती थीं। बेपरवाह स्त्योपा ने, जो जीवविज्ञान और वनस्पतिविज्ञान में बेहद दिलचस्पी लेता था और हमेशा प्रख्यात वैज्ञानिक होने के सपने देखा करता था, कभी सोचा भी न था कि जर्मनों के आ धमकने पर वह क्या करेगा। वह पल भर भी सोचे-विचारे बिना झट बोल उठा कि वह दुश्मनों के ख़िलाफ़ ख़ुफ़िया कार्रवाई में जी-जान से जुट जायेगा।

"यह कोरी गप्प है या सच्ची बात?" वाल्या ने उपेक्षा से पूछा।

"गप्प कैसी? मैं तो सच्ची बात कह रहा हूँ," स्त्योपा ने छूटते ही जवाब दिया।

"क़सम खाओ..."

"तो मैं क़सम खाता हूँ... हमें और करना ही क्या चाहिए? हम कोमसोमोल जो हैं!" उसने अपनी भौंहें उठाकर वाल्या की ओर देखा और तभी वाल्या के प्रश्न का भाव उसकी समझ में आया। "और तुम?" स्त्योपा की उत्सुकता जाग पड़ी।

वाल्या अपना मुँह एकदम उसके कान के पास ले गयी और ज़ोर से फुसफुसायी :

"मैं क़-क़सम खाती हूँ..."

उसके बाद उसने अपने होंठ स्त्योपा के कान से सटा लिये और इतने ज़ोर से कूकी कि स्त्योपा को लगा जैसे उसके कान का पर्दा फट जायेगा।

"जो भी हो, स्त्योपा, तुम बुद्धू हो, बुद्धू और सिर्फ़ बातें बनाना जानते हो!" वह बोली और भाग गयी।

वे रात में रवाना हुए। आधी हेडलाइटों से निकलती मद्धिम रोशनी स्तेपी को चीरती हुई लारी के आगे-आगे दौड़ी जा रही थी। स्तेपी के ऊपर छिटके तारों से भरा काला आसमान निस्सीम फैला था। स्तेपी से सूखी घास और पकती फ़सलों की, मधु और चिरायते की मिली-जुली गन्ध उठ रही थी। उनके चेहरों पर गर्म हवा के झोंके लग रहे थे और यह विश्वास करना मुश्किल था कि उनके घरों में जर्मन उनका इन्तज़ार कर रहे होंगे।

यह लारी किशोर-किशोरियों से भरी थी। यदि कोई दूसरा मौक़ा होता तो रात भर उनके क़हक़हों और गीतों से वायुमण्डल थिरक उठता और दूसरों की आँख बचाकर लिये जानेवाले चुम्बनों से स्तेपी सराबोर हो उठती। लेकिन अब वे अपने विचारों में खोये, ख़ामोश बैठे थे। रह-रहकर कभी दबी आवाज़ में एकाध बात कर लेते। उनमें से अधिकांश शीघ्र ही अपनी गठरियों पर बैठे-बैठे ऊँघने लगे और लारी के हिचकोलों से उनके सिर अग़ल-बग़ल झटके खाने लगे।

वाल्या और स्त्योपा निगरानी करते रहने के लिए जागे रहे। वे लारी के पिछले हिस्से पर बैठे थे। स्त्योपा झपकियाँ लेने लगा था, लेकिन वाल्या अपने सफ़री थैले पर बैठी हुई स्तेपी के अन्धकार से आँखे गड़ाये थी। और चूँकि अब कोई उसे देख नहीं रहा था, उसके गदराये होंठों पर दम्भ के स्थान पर बाल-सुलभ खिन्नता और क्षोभ का भाव उतर आया था।

उसे विमान-चालन स्कूल में नहीं लिया गया। कितनी बार उसने अर्ज़ियाँ दीं और हर बार उन्होंने 'न' कर दी। बेवक़ूफ़ कहीं के! बस अब ज़िन्दगी नाकामयाब हो गयी। पता नहीं, उसका भविष्य क्या होगा? स्त्योपा गप्पी है। ठीक है, वह ख़ुफ़िया

कार्रवाई करेगी, लेकिन यह सब काम कैसे किया जाता है और इस काम का संचालन कौन करेगा? पिता जी का क्या होगा? (वाल्या का पिता यहूदी था।) और स्कूल का क्या होगा? इतना आत्मिक बल होते हुए भी वह अभी तक किसी से प्रेम नहीं कर पायी थी। क्या उसे ज़िन्दगी में यही कुछ मिलना बदा था? ज़िन्दगी सचमुच नाकामयाब होकर रह गयी थी। लोगों की नज़रों में वाल्या की क़ीमत ही क्या रह जायेगी, वह किसी बात में बढ़े-चढ़ेगी नहीं, कभी यश नहीं पायेगी और न लोगों की सराहनाएँ ही। आहत दर्प के आँसू उसकी आँखों से ढुलक पड़े, लेकिन ये आँसू अनुचित न थे, क्योंकि वह सत्रहवें में क़दम रख चुकी थी और उसके सपने संकीर्ण और स्वार्थपरक न थे, बल्कि दृढ़ संकल्पवाली तरुणी के उदार और उदात्त सपने थे।

उसे अचानक अपने पीछे एक अजीब-सी आवाज़ सुनायी पड़ी, मानो कोई बिल्ली कूदकर अपने पंजों के सहारे लारी के पिछले तख़्ते से चिपकी हो।

वह तेजी से मुड़ी और सहमकर सिहर उठी।

एक दुबला-पतला युवक, जो टोपी पहने था, लारी के तख़्ते को दोनों हाथों से पकड़े हुए था। देखते-देखते वह पेट के बल तख़्ते पर लेट भी गया। अब वह अपनी एक टाँग फेंककर लारी के भीतर चढ़ आने की कोशिश कर रहा था और साथ ही, चारों तरफ़ सरसरी निगाह से देखता भी जा रहा था।

क्या वह चोरी के इरादे से आया है? आख़िर उसकी मंशा क्या है? वाल्या को यंत्रवत् उसे पीछे धकेलकर गिराने की इच्छा हुई, लेकिन चट उसके दिमाग़ में यह बात कौंध गयी कि उसे स्त्योपा को जगा देना चाहिए, ताकि कहीं कोई बखेड़ा न उठ खड़ा हो।

लेकिन लड़का बहुत ही फुर्तीला और चौकन्ना निकला। वह लारी में चढ़कर वाल्या की बग़ल में बैठ चुका था। उसने वाल्या की ओर हँसती हुई नज़रों से देखते हुए अपने होंठों पर एक उँगली रख दी। उसे शायद पता नहीं था कि वह इस तरह किसके साथ पेश आ रहा था। क्षण भर बाद ही लड़के को पछताना पड़ता। लेकिन इसी क्षण में वाल्या ने उसे सिर से पैर तक देख लिया। वह लड़का वाल्या की ही उम्र का था। उसकी टोपी पीछे की ओर सरकी हुई थी, उसके चेहरे पर मुद्दत से पानी न लगा था। लेकिन उससे साहस झलकता था और उसकी विहँसती आँखें अँधेरे में भी चमक रही थीं। बस इसी एक क्षण में वाल्या ने उसकी ओर पैनी आँखों से देखते रहने के बाद उसके हक़ में फ़ैसला दे दिया।

वाल्या न हिली-डुली और न एक शब्द बोली ही। उसने उसे तटस्थ और सर्द भाव से देखा। जब वह और लोगों के साथ होती, तो उसके चेहरे पर यही भाव आ जाता।

"यह किसकी लारी है?" लड़का अपना मुँह उसके चेहरे के बिलकुल क़रीब लाकर फुसफुसाया।

वाल्या अब उसे अच्छी तरह देख सकती थी। उसके बाल घुँघराले और कड़े थे। होंठों की लकीर गहरी और भारी थी, हालाँकि होंठ पतले और तनिक उभरे हुए थे; अन्दर कुछ सूजन-सी लगती थी।

"क्यों? क्या यह वह लारी नहीं जिसकी तुम्हें आशा थी?" वाल्या उपेक्षा से फुसफुसाकर बोली।

लड़का मुस्कुराया।

"मेरी अपनी लारी मरम्मत के लिए पड़ी है और मैं इतना थक गया हूँ कि... " उसने अपना हाथ इस तरह झटकारा मानो कहना चाहता हो : "मेरे लिए सब बराबर है।"

"अफ़सोस, सोने की एक भी जगह ख़ाली नहीं है," वाल्या ने कहा।

"मैं छह दिन और छह रात से सो नहीं सका हूँ – एक घण्टा और सब्र कर लूँ, तो मर नहीं जाऊँगा," वह मित्रतापूर्ण स्पष्टवादिता से बोला।

साथ ही उसकी आँखें अन्धकार में डूबी सूरतों को परखने की कोशिश करने लगीं।

लारी हिचकोले खाती चल रही थी और रह-रहकर उन्हें सहारे के लिए लारी का बाजू पकड़ना पड़ता था। एक बार उसका हाथ लड़के के हाथ पर पड़ गया और वाल्या ने झट अपना हाथ खींच लिया। लड़के ने अपना सिर उठाकर उसकी ओर ध्यान से देखा।

"यह कौन सो रहा है?", अपना मुँह स्त्योपा के झटके खाते सफ़ेद-से सिर के नज़दीक लाकर लड़के ने पूछा। "स्त्योपा सफ़ोनोव!" अब वह दबी आवाज़ में नहीं बल्कि खुली आवाज़ में बोला। "अब समझा, यह किसकी लारी है। गोर्की स्कूल की। तुम लोग बेलोवोद्स्क ज़िले से वापस आ रहे हो न?"

"तुम स्त्योपा सफ़ोनोव को कैसे जानते हो?"

"हम लोग खड्ड में मिले थे।"

वाल्या उसके कुछ और कहने का इन्तज़ार करती रही, लेकिन लड़का ख़ामोश हो गया।

"तुम लोग खड्ड में क्या कर रहे थे?"

"मेढक पकड़ रहे थे।"

"मेढक?"

"हाँ।"

"किसलिए?"

"मैंने सोचा था कि वह विडाल-मछली पकड़ने के लिए चारे के रूप में मेढकों का इस्तेमाल करेगा, लेकिन वह उन्हें चीरने-फाड़ने के लिए पकड़ रहा था!" स्त्योपा सफ़ोनोव की इस अनोखी करतूत की याद कर वह लड़का व्यंग्यपूर्वक हँस पड़ा।

"और उसके बाद क्या हुआ?" वाल्या ने पूछा।

"उसके बाद मैंने उससे विडाल-मछली पकड़ने के लिए कहा। हम एक रात गये भी। मुझे दो मछलियाँ हाथ लगीं – एक लगभग पौण्ड भर की और दूसरी उससे काफ़ी वज़नी। स्त्योपा ख़ाली हाथ लौटा।"

"और उसके बाद?"

"उसके बाद सुबह के वक़्त मैंने उससे नहाने चलने के लिए कहा। वह ठिठुरता हुआ पानी में से बाहर निकला और बोला : 'मुझे ठण्ड लग रही है और मैं जम-सा गया हूँ। मेरे कानों के अन्दर पानी घुस गया है।" लड़के ने फुफकार मारी। "सो मैंने उसे बताया कि कान से पानी कैसे निकाला जाता है और साथ ही बदन में गरमी कैसे लायी जाती है।"

"कैसे?"

"एक हाथ अपने कान पर रखो और एक पैर पर ऊपर-नीचे कूदो और गुहराओ : 'कतेरीना, प्यारी कतेरीना, कान से मेरे पानी निकाल भगाओ।' फिर दूसरा कान मूँदो और उसी तरह कूदते हुए गुहार करो।"

"तो अब मालूम हुआ कि तुम लोगों की जान-पहचान कैसे हुई," वाल्या ने भौंहे नचाते हुए कहा।

उसकी बात में छिपा व्यंग्य लड़के की समझ में नहीं आया। वह अचानक गम्भीर होकर सीधे अन्धकार में देखने लगा।

"तुम लोगों को देर हो गयी," वह बोला।

"कैसे?"

"मेरा ख़याल है कि जर्मन आज रात या कल सुबह तक क्रास्नोदोन पहुँच जायेंगे।"

"और यदि पहुँच गये हों तो?" वाल्या बोली।

शायद वह उसकी परीक्षा लेना चाहती थी या यह ज़ाहिर करना चाहती थी कि वह जर्मनों से भय नहीं खाती। जो भी हो, उसे ख़ुद पता नहीं था कि उसने ऐसा क्यों कहा।

लड़के ने उस पर तुरन्त एक तेज़ निगाह डाली और बिना कुछ बोले अपनी पलकें झुका लीं।

वाल्या उसके प्रति वैमनस्य से भर उठी, और अजीब बात यह थी कि लड़के ने भी यह भाँप लिया।

"बच निकलने की कोई सूरत नहीं," तनाव कम करने के अन्दाज़ में वह बोला।

"बच निकलने की बात क्यों?" अपनी घृणा प्रकट करने के अन्दाज में वाल्या बोली।

लेकिन वह उससे झगड़ा करने पर उतारू नहीं था।

"ठीक कह रही हो," उसने समझौता करने के अन्दाज़ में कहा।

उन दोनों के बीच की तनातनी और ग़लतफ़हमी तुरन्त दूर करने के लिए लड़के को केवल अपना नाम भर बता देने की ज़रूरत थी। लेकिन या तो लड़के के दिमाग़ में यह बात आयी ही नहीं थी या फिर वह ऐसा करना ही नहीं चाहता था। वाल्या आडम्बरपूर्वक ख़ामोश बनी रही। लड़का ऊँघने लगा। लारी के हिचकोले और वाल्या के हिलने-डुलने के साथ उसका सिर लगातार झटका खा जाता था।

क्रास्नोदोन के आस-पास की इमारतें अन्धकार में से झाँकती-सी जान पड़ती थीं। पार्क के पास लेवल-क्रासिंग के सामने पहुँचकर लारी की चाल धीमी पड़ गयी। वहाँ ड्यूटी पर कोई नहीं था, बैरियर उठा हुआ था और सिग्नल की बत्ती गुल हो गयी थी। लारी स्लीपरों पर बिछे कंकड़ों पर धीरे-धीरे ढुलक चली, पटरियाँ झनझना उठीं। लड़के ने झट सँभलकर अपने कोट के नीचे छुपी चीज़ को टटोलकर देखा।

"मैं यहाँ से पैदल ही जाऊँगा। तुम्हारी मेहरबानी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!" वह बोला।

वह उठ खड़ा हुआ और वाल्या को लगा जैसे लड़के की जेबें भारी चीज़ों से बोझिल हैं।

"मैंने स्त्योपा को जगाना नहीं चाहा," वह बोला और फिर अपनी निर्भीक और विहँसती आँखें उसने वाल्या की आँखों के क़रीब लायीं। "लेकिन जब उसकी नींद टूटे, तो कह देना कि सेर्गेई त्युलेनिन ने उससे आकर मिलने के लिए कहा है।"

"मैं कोई डाकघर या टेलीफ़ोन एक्सचेंज नहीं हूँ," वाल्या बोली।

निराशा से लड़के का चेहरा उतर गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या जवाब दे। उसके होंठ पहले से अधिक फूल गये। फिर बिना कुछ बोले वह लारी से नीचे कूदकर अन्धकार में विलीन हो गया।

लड़के का जी दुखाने के कारण वाल्या बहुत उदास हो उठी। मुसीबत तो यह थी कि इस साहसी, अचानक प्रगट और अचानक ग़ायब हो जानेवाले युवक के साथ वह बेरुख़ी से पेश आयी थी। अब इसकी चर्चा वह स्त्योपा से कैसे करती? वह इस अनुचित व्यवहार का परिहार कैसे कर सकती? सो, वाल्या के दिमाग़ में दुबले-पतले

शरीर, सूजे हुए होंठों और निर्भीक, विहँसती, वाल्या के रूखे जवाब से उदास हो गयी आँखों-वाले उस लड़के की मूर्ति डूबती-उतराती रही।

पूरा नगर अन्धकार में डूबा था। प्रकाश की एक किरण तक भी कहीं नज़र नहीं आती थी – खिड़कियाँ, खान के फाटकों के पास चौकीदारों की झोपड़ियाँ, लेवल-क्रासिंग – सब के सब अन्धकार में डूबे थे। टण्डी हवा धुआँ उगलती खानों में झुलसते कोयले की महक से परिपूर्ण थी। सड़कें एकदम सुनसान थीं। खानों में या रेलवे-लाइन पर काम करनेवालों का शोरगुल न सुनायी पड़ना कुछ अजीब और असाधारण-सा लग रहा था। जहाँ-तहाँ केवल कुत्ते भूँक रहे थे।

सेर्गेई त्युलेनिन ने तेज़ और बिल्ली जैसी चाल से रेलवे-लाइन के किनारे-किनारे चलते हुए एक बड़ा-सा ख़ाली मैदान पार किया, जहाँ बाज़ार लगा करता था। उसके बाद अन्धकार में डूबी ली फ़ान-ची की मिट्टी की झोपड़ियों के पास से गुज़रा, जो चेरी वृक्षों के झुरमुट में मधुमक्खी के छत्तों जैसी एक दूसरे से गुँथी हुई थीं। वह निःशब्द अपने पिता की झोपड़ी में पहुँचा। सफ़ेदी न की जाने के बावजूद यह झोपड़ी अन्य फूस के छप्परवाली झोपड़ियों के बीच साफ़-साफ़ झलक रही थी।

किवाड़ सावधानी से बन्द करके उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी और तेज़ी से झोपड़ी में घुस गया। कुछ सेकेण्ड बाद वह हाथ में बेलचा लिये बाहर निकला। अन्धकार में भी उसे अपना रास्ता आसानी से मिलता गया और कुछ क्षण बाद वह बबूल वृक्षों के पास पहुँचकर ठिठक गया। बबूल के वृक्ष बाड़ी की पृष्ठभूमि में काली रेखा-सी दिखायी दे रहे थे।

उसने नरम ज़मीन में दो वृक्षों के बीच एक गहरा गड्ढा खोदा और उसके तल में अपनी जेबों से चीज़ें निकाल-निकालकर रखने लगा : उनमें कुछ हथगोले थे और कारतूसों सहित दो पिस्तौलें। यह चीज़े अलग-अलग कपड़ों में लिपटी थीं और सेर्गेई ने इन्हें ज्यों का त्यों गड्ढे में रख दिया। इसके बाद उसने मिट्टी से गड्ढा भर दिया और हाथों से ज़मीन समतल की ताकि सुबह होने पर सूर्य की किरणों के ताप में इसकी मेहनत के सभी निशान मिट जायें। उसने अपनी जैकेट के छोर से बेलचे को पोंछा और लौटकर उसे अपनी जगह पर रख दिया और फिर झोपड़ी का दरवाज़ धीरे-से खटखटाया।

गलियारे से सटे हुए कमरे का दरवाज़ा चरमराया और उसकी माँ ने – वह कच्चे फ़र्श पर उसके नंगे पाँवों की आहट से उसे फ़ौरन पहचान गयी थी – उनींदी, घबराहट से भरी आवाज़ में पूछा : "कौन है?"

"दरवाज़ा खोलिये," उसने धीरे-से कहा।

"हे भगवान!" वह थरथराती आवाज़ में फुसफुसायी और काँपते हाथों से

सिटकनी टटोलने लगी। आख़िरकार दरवाज़ा खुला।

वह चौखट पारकर भीतर आया। उसे अभी-अभी सोकर उठी अपनी माँ के गर्म शरीर की चिरपरिचित गन्ध महसूस हुई। वह अपना सिर उसके कन्धों से सटाकर उससे चिपट गया। माँ-बेटे एक-दूसरे को बाँहों में लिये कई क्षण तक ख़ामोश खड़े रहे।

"कहाँ भटकते फिरते हो तुम? हम सोच रहे थे कि तुम्हें यहाँ से हटा दिया गया होगा, या शायद तुम ज़िन्दा ही नहीं रहे। सब लोग वापस आ गये, लेकिन तुम्हारा कोई पता ही नहीं था। कम-से-कम किसी को बता तो देते कि तुम कहाँ हो और कैसे हो?" वह झिड़कियाँ-सी देती हुई बोली।

कुछ हफ़्ते पहले सेर्गेई त्युलेनिन को अन्य युवकों और स्त्रियों के साथ वोरोशीलोवग्राद के आस-पास ख़न्दकें खोदने और सुरक्षा-स्थल बनाने के लिए क्रास्नोदोन से भेजा गया था। दूसरे ज़िलों से भी लोगों के दल इसी काम के लिए भेजे गये थे।

"मुझे वोरोशीलोवग्राद में रुकना पड़ा," उसने संयत स्वर में कहा।

"धीरे बोलो! 'दादा' जग जायेंगे," उसने गुस्से से कहा। दादा वह अपने पति को कहती थी। उसके ग्यारह बच्चे थे और कुछ पोते-पोतियाँ तो सेर्गेई की उम्र के हो चुके थे। "नहीं तो तुम्हारी ख़बर लेंगे!..."

सेर्गेई ने इस धमकी को एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया। सेर्गेई को मालूम था कि उसके पिता अब कभी भी उसकी ख़बर नहीं लेंगे। वह एक पुराने कोयला-खनिक थे। अलमाज़्नाया स्टेशन के पास अन्नेन्स्की खान में कोयले से लदे एक डिब्बे के नीचे आ जाने से वह मरते-मरते बचे थे। तगड़े होने के कारण वह बच तो निकले थे, लेकिन बाद में उन्हें आसान काम पर लगा दिया गया था। वह अब बिलकुल अपाहिज-से हो गये थे और चलने-फिरने में उन्हें काफ़ी मुश्किल होती थी। उन्हें बैठना भी होता, तो वह एक काँख में मुलायम चमड़ा मढ़ी बैसाखी लगाकर बैठते। उनकी रीढ़ कमज़ोर हो गयी थी और वह तनकर बैठ नहीं सकते थे।

"तुम्हें तो भूख लगी होगी?" माँ ने पूछा।

"खाना तो चाहता हूँ, लेकिन बहुत थक गया हूँ, सोना ज्यादा चाहता हूँ।"

वह दबे पाँव चलता हुआ पहले कमरे से होकर गुज़रा, जहाँ उसके पिता ख़र्राटे ले रहे थे, फिर बग़ल के कमरे में घुसा, जिसमें उसकी दो बड़ी बहनें सो रही थीं : दाशा अपने डेढ़ बरस के बच्चे के साथ (उसका पति मोर्चे पर था), और नाद्या, जो दाशा से छोटी थी तथा सेर्गेई की लाड़ली।

उसकी एक और बहन थी फ़ेन्या, जो क्रास्नोदोन में ही अपने बच्चों के साथ

इस परिवार से अलग रहती थी। उसका पति भी फ़ौज में था। गव्रीला पेत्रोविच और अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना त्युलेनिना के बाक़ी बच्चे देश के भिन्न-भिन्न भागों में बिखरे हुए थे।

सेर्गेई इस घुटनभरी कोठरी को पार करता हुआ, जिसमें उसकी बहनें सो रही थीं, अपनी खाट तक पहुँचा और चट अपने कपड़े-लत्ते उतारकर एक जांघिये में कम्बल पर ही लेट गया। उसे यह परवाह न रही कि उसने हफ़्ते भर से मुँह-हाथ तक न धोया था। उसकी माँ अपने नंगे पाँवों से मिट्टी का फ़र्श लाँघती कमरे में आयी। उसने टटोलकर एक हाथ से सेर्गेई के कड़े घुँघराले बाल सहलाना शुरू कर दिया और दूसरे से घर में सेंकी ताज़ी, सुगन्धित, स्वादिष्ट रोटी का एक बड़ा टुकड़ा उसके मुँह में ठूँस दिया। सेर्गेई ने झट से टुकड़ा अपने हाथ में ले लिया और माँ का हाथ चूमा तथा उन्मत्त आँखों से अँधेरा भेदते हुए बड़े चाव से रोटी खाने लगा।

लारी में बैठी वह लड़की कैसी अनोखी थी! कैसा स्वभाव था उसका! और आँखें! लेकिन मैं उसे पसन्द नहीं आया, यह साफ़ ज़ाहिर था। काश, उसे केवल यह पता चलता कि मैं पिछले कुछ दिनों से कैसी ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ! काश इस लम्बी-चौड़ी दुनिया में एक भी इंसान ऐसा होता, जिसको मैं अपने मन की बात खोलकर कह सकता! लेकिन परिवार के बीच अपने घर में रहने, अपने बिछावन पर सोने और माँ के हाथ की सेंकी रोटियाँ खाने में क्या आनन्द है, क्या सुख है! उसे लगा कि चित लेटते ही घोड़े बेचकर सो जायेगा और दो दिन तक सोया रहेगा, लेकिन असलियत तो यह है कि अपनी आप-बीती का किसी को ब्योरेवार वर्णन किये बिना आँखों में नींद आने की नहीं। काश, वह लम्बी चोटियोंवाली लड़की ही उसकी आप-बीती सुन लेती। नहीं, उसने अच्छा ही किया कि अपने बारे में उसे कुछ नहीं बताया। भगवान जाने, वह कौन थी और कैसी थी! सम्भवतः वह स्त्योपा से कल ही मिलेगा और बातों ही बातों में उस लड़की के बारे में पूछ लेगा! लेकिन स्त्योपा गप्पी है, उसके पेट में पानी नहीं पचता। नहीं, वह केवल वीत्या लुक्यांचेन्को को ही बतायेगा, बशर्ते कि वह चला न गया हो। लेकिन कल तक इन्तज़ार करने का क्या तुक, जब कि वह आज ही, और अभी इसी वक़्त, सारी बातें अपनी बहन नाद्या के सामने खोलकर रख सकता है!

सेर्गेई बिना आहट किये अपनी बहन की खाट के पास आ धमका। वह हाथ में माँ का दिया रोटी का टुकड़ा पकड़े था।

उसने खाट की पाटी पर बैठकर धीरे-से बहन का कन्धा छुआ।

"नाद्या, नाद्या," उसने धीमे स्वर में पुकारा।

"कौन है?" नाद्या चौंककर उनींदी आवाज़ में बोली।

“श-श-श!” उसने अपनी गन्दी उँगलियाँ नाद्या के होंठों पर रख दीं।

लेकिन वह सेर्गेई को पहचानकर झट से उठ बैठी और अपने भाई को अपनी नंगी गरम बाँहों में लिये कहीं उसके कान के पास चूम लिया।

“सेर्गेई! मेरे प्यारे भाई... तुम ज़िन्दा हो!” वह निहाल होकर फुसफुसायी।

सेर्गेई उसे देख नहीं सकता था लेकिन उसने महसूस किया कि बहन के नींद के कारण तमतमाये हुए चेहरे पर सुखद मुसकान की रेखाएँ खिंच गयी हैं।

“नाद्या! मैं तेरह तारीख़ से सो नहीं सका हूँ। तेरह की सुबह से और आज साँझ तक मैं लगातार लड़ता रहा हूँ,” वह उत्तेजित होकर बोला और दाँत से रोटी का एक टुकड़ा काट लिया।

“ऐसे कैसे?” नाद्या उसका हाथ छूते हुए विस्मय से फुसफुसायी और घुटने सिकोड़कर शमीज़ में ही उकड़ूँ बैठ गयी।

“हमारे सभी साथी मारे गये और मैं चला आया... दरअसल, जब मैं वहाँ से चला, तो केवल पन्द्रह आदमी बच रहे थे, लेकिन कर्नल ने कहा : ‘चले जाओ यहाँ से, तुम्हें मरने की ज़रूरत नहीं।’ वह ख़ुद घायल था। उसके हाथ, चेहरा, पीठ, पैर-सब जख़्मी थे। पूरे शरीर में पट्टियाँ बँधी थीं और ख़ून निकल रहा था। उसने कहा : ‘हमें तो मरना ही है, पर तुम क्यों नाहक अपनी जान देते हो?’ सो, मैं वहाँ से चला आया. .. मेरा ख़याल है उनमें से अब एक भी ज़िन्दा नहीं।”

“हाय! और तुम...” लड़की फुसफुसायी।

“चलने से पहले मैंने एक सैपरों का बेलचा लिया, फिर मृतकों की कुछ राइफ़लें उठा लीं और उन्हें वेर्ख़्नेदुवान्नाया के दूसरी ओर की ख़न्दक़ों में ले जाकर गाड़ दिया। वह जगह फिर से खोज ली जा सकती है – वहाँ दो टीले और बायीं ओर पेड़ों का झुरमुट है। मैंने राइफ़लें, हथगोले, रिवाल्वर और गोला-बारूद आदि गाड़ दिये और तब चला आया। कर्नल ने मुझे गले से लगाया और कहा : ‘मेरा नाम याद रखना : निकोलाई पाव्लोविच सोमोव। जब जर्मन हट जायें या तुम हमारे आदमियों के बीच पहुँच जाओ, तो गोर्की नगर फ़ौजी कमिसारियत को यह ज़रूर लिख देना कि मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया। और वह मेरे परिवार को या जिन्हें वाजिब समझेगा उनको इसकी ख़बर दे देगा।’ और मैंने यह करने का उसे वचन दिया।”

सेर्गेई का गला रुँध गया। वह ख़ामोश हो गया और रोटी को चबाने लगा, जो अब आँसुओं से नम और नमकीन हो गयी थी।

“हाय!...” नाद्या सुबकियाँ भर्ती रही।

उसके भाई ने बहुत कुछ सहा होगा और अब उसे याद नहीं कि उसने अपने भाई को कब रोते देखा था – शायद सात साल की उम्र में वह आँसू बहाना भूल गया

था – वह कील की तरह कड़ा और सख़्त था।

"तुम्हारा और उनका साथ कैसे हुआ?" नाद्या ने पूछा।

"कैसे हुआ?" वह अब हुलसते हुए बोला। उसने खाट के पायताने की ओर अपने पैर फैला दिये। "हमने सुरक्षा-स्थल का काम ख़त्म किया और हमारी फ़ौजी टुकड़ियाँ पीछे हटती हुई वहीं जम गयीं। उसके बाद सभी क्रास्नोदोनवासी अपने-अपने घर चले गये। इस बीच मैं एक सीनियर लेफ़्टिनेण्ट के पास, जो कम्पनी का कमाण्डर था, पहुँचा और उससे अनुरोध किया कि वह मुझे भर्ती कर ले। लेकिन उसने कहा कि वह रेजिमेण्ट के कमाण्डर की अनुमति के बिना ऐसा करने में असमर्थ है। मैंने कहा : 'अनुमति लेने की कोशिश कीजिये।' मैंने आरज़ू-मिन्नत की और एक सार्जेण्टमेजर ने भी मेरा समर्थन किया। सारे सैनिक हँस पड़े, पर लेफ़्टिनेण्ट अपने ताव में ही रहा। तभी जर्मनों ने गोलाबारी शुरू कर दी। मैं उनके साथ तहख़ाने में कूद पड़ा और उन्होंने मुझे रात गये तक बाहर नहीं निकलने दिया। उन्हें मुझ पर दया आयी। गहरी रात हुई, तो उन्होंने मुझसे जाने के लिए कहा। मैं तहख़ाने से बाहर निकला लेकिन ख़न्दकों के पीछे फिर लेट गया। सुबह जर्मनों ने फिर हमला बोल दिया। मैं फिर ख़न्दक़ में कूदा और एक मरे सैनिक की राइफ़ल उठाकर औरों की तरह ही गोलियाँ दाग़ने लगा। कई दिन तक हम वहीं डटे रहे और गोलियाँ बरसाकर दुश्मनों के हमले बकार करते रहे। मुझे किसी ने भगाया नहीं। बाद में कर्नल ने मुझे पहचान लिया। 'यदि यहाँ से हमें बच निकलने का मौक़ा मिलता, तो मैं तुम्हें ज़रूर भर्ती कर लेता,' वह बोला, 'लेकिन तुम्हारे लिए दिल दुखता है – अभी तो तुम्हारी सारी ज़िन्दगी तुम्हारे सामने पड़ी है।' वह हँसकर कहने लगा : 'तुम अपने को एक छापेमार सैनिक समझो।' तो मैं उनके साथ रह गया और हम वेर्ख़्नेदुवान्नाया स्टेशन तक पीछे हटते गये। मैंने 'शैतानों' को इतने पास से देखा, जितने पास से मैं तुम्हें देख रहा हूँ," वह एकदम दबी से सिसकारती आवाज़ में फुसफुसाया। "मैंने अपने हाथों से दो को मौत के घाट उतारा, हो सकता है इससे काफ़ी अधिक को भी। लेकिन दो को तो मैंने अपनी आँखों से ढेर होते देखा।" उसके पतले होंठ ऐंठ गये थे। "और अब मैं शैतानों को जहाँ कहीं भी देखूँगा, वहीं मारकर ख़त्म कर दूँगा। यह मेरी बात गाँठ बाँध लो।"

नाद्या को पूरा विश्वास हो गया कि सेर्गेई ने दो जर्मनों को मारकर ख़त्म किया है और आगे भी ऐसा किये बिना नहीं रहेगा।

"लेकिन वे तुम्हें मार डालेंगे!" वह भयभीत स्वर में बोली।

"उनके जूते चाटने या हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से तो मर ही जाना बेहतर है।"

“हे भगवान, हम लोगों का क्या होगा?” वह गहरी निराशा से बोली। लगता था जैसे कल या आज की ही रात जो कहर ढहनेवाला है, उसकी तस्वीर साफ़-साफ़ उसके सामने झलक रही हो। “अभी भी अस्पताल में सौ से ज़्यादा घायल पड़े हुए हैं वे इतने कमज़ोर हैं कि चल-फिर नहीं सकते। डाक्टर फ़्योदोर फ़्योदोरोविच उन्हीं के साथ रह गये हैं। उधर से गुज़रते वक़्त हम यह सोचकर सिहर उठते हैं कि जर्मन उन सब को मौत के घाट उतार देंगे!” वह व्यथाभरी आवाज़ में बोली।

“ऐसी बातें मत करो। लोगों को चाहिए कि इन घायलों को अपने-अपने घरों में रख लें,” सेर्गेई ने उत्तेजित होकर कहा।

“लोग! कहा नहीं जा सकता कौन कैसा है! लोग कानाफूसी कर रहे हैं कि ‘शंघाई’ मुहल्ले में इग्नात फ़ोमीन के घर में कोई छिपा हुआ है। उसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता। कौन है वह? शायद वह जर्मनों का ख़ुफ़िया ही हो जिसे उन्होंने पहले से भेज दिया हो कि जाकर स्थिति को देख-समझ ले। फ़ोमीन किसी नेक आदमी को शरण देनेवाला नहीं।”

इग्नात फ़ोमीन एक खनिक था और अपने अच्छे काम के लिए कई बार बोनस प्राप्त कर चुका था। अख़बारों में भी कई बार उसका नाम छप चुका था। वह 1930-35 के बीच, यहाँ उस वक़्त प्रगट हुआ था, जब कि ढेर-से अजनबी क्रास्नोदोन में ही नहीं बल्कि दोनबास इलाक़े भर में बसने लगे थे। उसने ‘शंघाई’ मुहल्ले में अपना मकान बनाया था और उसके बारे में बहुत-सी अफ़वाहें उड़ी थीं। नाद्या उन्हीं की ओर संकेत कर रही थी।

सेर्गेई ने जम्भाई ली। उसने अपने मन की भड़ास निकाल ली थी और रोटी ख़त्म कर चुका था। उसे अब महसूस होने लगा था कि सचमुच घर लौट आया है और अब चैन से सो सकता है।

“अच्छा सो जाओ, नाद्या...”

“ओह, अब मुझे नींद कहाँ आयेगी?”

“मुझे तो नींद आ रही है,” सेर्गेई बोला और टटोलते हुए अपनी खाट की ओर चल पड़ा।

तकिये पर सिर रखते ही उसके दिमाग़ में लारी पर बैठी लड़की की चितवन झलकने लगी। “कोई बात नहीं, मैं तुम्हारा पता लगाकर ही रहूँगा,” वह बोला और मुस्कुरा दिया। क्षण भर बाद वह गहरी नींद सो गया।

अध्याय 13

प्रिय पाठक, यदि तुम्हारा उक़ाब जैसा हृदय हो, जिसमें साहसपूर्ण कार्य करने की तीव्र आकांक्षा हो और हिम्मत तथा उत्साह हो, पर तुम अभी भी महज़ एक बच्चे हो, नोच-खरोंच से भरे नंगे पाँव लिये तुम मारे-मारे फिरते हो, और तुम्हारी बातों और विचारों को लोग समझ न पाते हों, तो तुम ऐसी स्थिति में कैसा महसूस करोगे, किस तरह पेश आओगे?

सेर्गेई त्युलेनिन अपने परिवार में सबसे छोटा था और स्तेपी की घास की तरह बड़ा हुआ था। उसका पिता तूलावासी था और काम की तलाश में दोनबास आ गया था। खनिक के रूप में अपने चालीस साल के जीवन में उसमें एक प्रकार का सरल, आत्मसम्मानपूर्ण तथा निरंकुश अभिमान आ गया था, जो किसी अन्य पेशे के व्यक्तियों की अपेक्षा जहाज़ियों और खनिकों में ही अधिक पाया जाता है। काम करने के अयोग्य होकर घर पर बैठ जाने के बाद भी गव्रीला पेत्रोविच अपने को परिवार का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति समझता रहा। वह मुँह अँधेरे ही उठ जाता था – काम के दिनों में उसको यही आदत पड़ गयी थी – और घर के सब लोगों को भी जगाता था, क्योंकि अकेलापन उसे खलता था। अपना अकेलापन उसे खले या न खले फिर भी उसकी ज़ोर की खाँसी के दौरे से दूसरों की नींद टूट ही जाती। बिछावन से उठने के बाद वह घण्टे भर खाँसता रहता। खाँसते-खाँसते उसकी साँस फूल जाती, वह बलग़म थूकता, हाँफने और इस तरह कराहने-काँखने लगता मानो हारमोनियम की फटी हुई धौंकनी से हवा निकल रही हो।

उसके बाद वह अपने सूखे धड़ को चमड़ा मढ़ी बैसाखी के सहारे टिकाये हुए दिन भर बैठा रहता। उसकी बीच में से उठी लम्बी नाक पहले मांसल रही होगी, लेकिन अब इतनी तेज़ और पतली हो गयी थी कि किताब के पन्नों को काट सकती थी। उसके धँसे हुए गाल कड़ी, सफ़ेद खूँटियों से भरे थे। आगे की ओर निकली हुई सीधी बढ़ी मूँछें बड़ी भयानक दीखती थीं। वे नाक के नीचे से घनी थीं, पर दोनों छोरों तक पहुँचते-पहुँचते उनमें इक्के-दुक्के बाल रह गये थे। वह अपनी खाट, झोपड़ी के दरवाज़े पर या जलावनघर के पास लकड़ी काटने के लट्ठे पर अकेला बैठा-बैठा घनी भौंहों तले टिमटिमाती धुँधली आँखों से अपने चारों ओर निहारता, घर के लोगों पर हुक्म चलाता, चीखता-चिल्लाता, कड़ी और तेज़ आवाज़ में हिदायतें देता और अक्सर खाँसी का दौरा आने पर हाँफने और काँखने-कराहने लगता, जो पूरे शंघाई मुहल्ले में सुनायी पड़ता।

ज़रा सोचिये तो, बूढ़ा होने के बहुत पहले ही काम करने की आपकी आधी क्षमता और शक्ति जाती रहे और उसके कुछ दिन बाद आप बिलकुल ही अपाहिज होकर खाट से लग जायें, ऊपर से तीन बेटों और आठ बेटियों – हाँ, कुल मिलाकर

ग्यारह प्राणियों – को पालने-पोसने, पढ़ाने-लिखाने और अपने पाँवों पर खड़ा करने पर भारी बोझ आपके कन्धे पर हो, तो?... यह कोई मज़ाक़ की बात नहीं।

यह सब गव्रीला पेत्रोविच के बस की बात न होती अगर उसे अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना जैसी नेक पत्नी न मिली होती! अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना, ओर्योल किसान वंशावली की योग्य सन्तान थी – दृढ़ और अडिग, या यूँ कहें कि मार्फ़ा पोसाद्नित्सा* का दूसरा अवतार। वह अभी भी हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ थी। वह कभी बीमार नहीं पड़ी थी। वह लिखना-पढ़ना तो नहीं जानती थी, लेकिन यह अच्छी तरह जानती थी कि ज़रूरत पड़ने पर सख़्त या तिकड़मी, गुपचुप या गप्पी, कठोर, दयालु, ख़ुशामदी, मज़ाक़िया या तानेबाज़ कैसे हुआ जाता है। यदि कोई कच्चा आदमी उससे लड़ाई मोल ले बैठा, तो फिर वह उसकी क़ैंची जैसी चलनेवाली विषैली जीभ के सामने घुटने टेक देता।

दस बच्चे तो अपनी जीविका कमाने लगे थे। केवल सेर्गेई ही अभी स्कूल में था और स्तेपी में उगती घास की तरह बड़ा हो रहा था। उसके पास अपने जूते या कपड़े-लत्ते न थे। वह भाइयों की उतरन पहनता था। उनमें पहले से पैबन्द लगे होते। धूप, हवा, बारिश और पाले ने उसे चीमड़ और सख़्त बना दिया था। उसके पैरों के तलवे ऊँट के तलवे की तरह रूखे और कड़े थे। जीवन की मार, खरोंच या चोटें उस पर देर तक नहीं टिकतीं, वे तुरन्त हवा हो जातीं, मानो उससे कोई जादू का डण्डा छू गया हो।

उसका पिता, जो उस पर सबसे अधिक चीख़ता-चिल्लाता रहता, उसे औरों से बढ़कर प्यार भी करता था।

"कैसा दिलेर है, हूँह?" वह बोलता और अपनी भयानक मूँछें सहलाने लगता। "एह, शूर्का?" अपनी 60 वर्षीया जीवन-संगिनी अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना को वह इसी नाम से पुकारता। "ज़रा उसे देखो तो! कहीं पर, किसी समय उसे लड़ाई-झगड़ा से डर ही नहीं लगता! ठीक मेरी ही तरह, जब मैं लड़का था, एह?" और से खाँसी का दौरा इस तरह आता कि वह अधमरा-सा हो जाता।

प्रिय पाठक! तुम्हारा उक़ाब का-सा हृदय है, लेकिन तुम फटे-पुराने कपड़ों में लिपटे अभी बहुत छोटे हो और तुम्हारे पैरों में चोटों और खरोंचों की भरमार है। ऐसे में जीवन में अपनी भूमिका तुम कैसे अदा करोगे? निस्सन्देह पहले तो तुम कोई महान और वीरतापूर्ण कार्य की कोशिश करोगे। लेकिन बचपन में वीरतापूर्ण कार्य करने के सपने कौन नहीं देखता? ऐसे कार्य करने की कोशिश का मतलब यह तो हरगिज

---

* प्राचीन स्वतंत्र नगर नोव्गोरोद की मशहूर नगराध्यक्षा। – सं.

नहीं होता कि तुम्हें सफलता हमेशा प्राप्त हो ही जाती है।

मान लो, तुम चौथी कक्षा के एक छात्र हो। अगर गणित के पाठ के समय तुमने अपनी डेस्क से गौरेया उड़ायी, तो तुम्हारी इस करतूत को कोई नहीं सराहेगा। प्रधानाध्यापक तुम्हारे माँ-बाप को बुलाता है, और न जाने कौन-सी तुम्हारी साठवर्षीया माँ प्रधानाध्यापक के पास पहुँचती हैं। 'दादा' – सभी बच्चे सेर्गेई की माँ को देखते-देखते उसके पिता को इसी तरह सम्बोधित करने लगे हैं, – हाँ, 'दादा' फुफकारते हैं, झींकते हैं, बड़बड़ाते हैं और कान ऐंठना चाहते हैं, पर कान तक पहुँच नहीं सकते। तब गुस्से से थरथराते हुए वे अपनी बैसाखी को ज़ोर से फ़र्श पर ठोंकते हैं। अपनी बैसाखी तुम पर फेंक भी नहीं सकते, क्योंकि उसी के सहारे उनका कंकाल टिका है। लेकिन माँ स्कूल से लौटते ही ऐसा थप्पड़ जमाती हैं कि तुम्हारे कान और गाल कई दिन तक लाल रहते हैं और दुखते रहते हैं। लगता है उम्र के बढ़ने के साथ-साथ माँ के हाथ भी सबल होते जा रहे हैं।

और तुम्हारे दोस्त? सचमुच के दोस्त! कहावत मशहूर है, ख्याति धुएँ की तरह होती है। अगली सुबह तक, गौरैयावाली घटना विस्मृति के गर्भ में समा जाती है।

गरमियों में तुम अपने को धूप में सँवलाने की भरपूर कोशिश कर सकते हो, ताकि और लोगों से नम्बर ले जायें। तैरने, पानी में छलाँग लगाने, पानी में गिरे हुए वृक्षों के नीचे से कार्प मछलियाँ पकड़ने में और लोगों को मात दे सकते हो। या खाड़ी के किनारे जब लड़कियों की ज़िन्दादिल टोली नज़र आ जाये, तो किनारे-किनारे दौड़ते हुए उनके पास पहुँच सकते हो और ऊँचे कगार पर से पानी में छलाँग लगाकर ग़ोता लगा सकते हो। लड़कियाँ तुम्हारे प्रति बेपरवाही और बेरुख़ी का भाव जाहिर करने का भले ही दिखावा कर रही हों, पर भीतर ही भीतर वे कौतूहलपूर्वक इस बात का इन्तज़ार कर रही होती हैं कि तुम जल की सतह पर कब निकल आते हो। जब तुम अचानक उनके बीच में ही सतह पर निकल आते हो, तो लड़कियाँ भाग खड़ी होती हैं और तुम्हें उनकी गुलाबी एड़ियों और हवा में फरफराते उनके घाघरों की झलक देखकर ख़ुशी होती है। बाद में, धूप-स्नान करते समय तुम दूसरे लड़कों के सामने इसकी डींग मार सकते हो और दोस्तों पर रोब गाँठ सकते हो कि तुम अपनी इस हरकत से लडकियों में कितनी हलचल मचा दी थी। छोटे लड़कों का झुण्ड तुम्हारे पीछे लगा रहता है, तुम्हारी हर बात में नक़ल करता है और प्रत्येक आदेश का पालन करता है। जूलियस सीज़रों के दिन तो न जाने कब के लद चुके हैं, लेकिन ये नन्हें लड़के तुम्हें भगवान मानते हैं।

लेकिन यह सब तुम्हारे लिए कोई ख़ास मतलब नहीं रखता। और एक दिन – यह तुम्हारी ज़िन्दगी की कोई असाधारण बात नहीं – तुम अचानक स्कूल की

दूसरी मंज़िल की खिड़की पर से नीचे, स्कूल के अहाते में कूद पड़ते हो, जहाँ लड़के-लड़कियाँ ख़ाली समय में गप-शप करने या छोटे-मोटे दिलबहलाव में मग्न हैं। और हवा में जितनी देर तुम टँगे रहते हो, उतनी देर तुम अपने अन्दर अजीब सनसनी-सी महसूस करते हो, ख़ुशी की एक अजीब लहर। लगता है जैसे सारी दुनिया तुम्हारे चरणों तले लोट रही हो। साथ ही भयानक त्रास का अनुभव होता है। पहली कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक की सभी लड़कियाँ चीख़ रही है... लेकिन इन सारे करतबों का परिणाम क्या होता है? तुम्हारा सारा भ्रम टूट जाता है और गले मुसीबत पड़ जाती है।

प्रधानाध्यापक के सामने हाज़िर होने पर तुम देखते हो कि मामला संगीन है। यहाँ तक कि तुम्हें स्कूल से निकाल देने की नौबत आयी है। तुम्हें अपनी ग़लती का एहसास है और तुम अपना विवेक खोकर प्रधानाध्यापक के साथ अपनी उद्दण्डता और सीनाज़ोरी से पेश आते हो। तब वह ख़ुद शंघाई मुहल्ले में तुम्हारे माँ-बाप के पास पहुँचता है। हाँ, वह ख़ुद तुम्हारे घर पर तशरीफ़ लाता है।

"मुझे इस लड़के के घर के हालात का पता लगाना है। मुझे इन सब का कारण खोज निकालना है," वह गम्भीर और नम्र स्वर में कहता है। लेकिन उस स्वर में तुम्हारे माँ-बाप के प्रति उपेक्षा का भी पुट होता है।

माँ सिटपिटायी-सी खड़ी रहती हैं। वह एप्रिन भी नहीं पहने हुए हैं। वह नहीं जानतीं कि अपने मुलायम, मांसल हाथ को कहाँ छिपायें, जो अँगीठी की जाली साफ़ करते वक़्त कालिख से सने हुए थे। पिता हक्के-बक्के-से ताकते हैं। वह चुपचाप अपनी बैसाखी पर भार डालते हुए प्रधानाध्यापक के सम्मान में खड़ा होने की कोशिश करने से लगते हैं। दोनों के दोनों दोषी-से देखते रहते हैं, मानो यह सारा क़सूर उन्हीं का हो।

जब प्रधानाध्यापक चला जाता है, तो तुमको पहली बार कोई डाँटता-फटकारता नहीं। हर कोई तुमसे कतराना-सा चाहता है। दादा चुपचाप बैठे रहते हैं और तुम्हारी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते। वे रह-रहकर काँख देते हैं और उनकी मूँछें झुकी हुई-सी लगती हैं, उस व्यक्ति की निरीह मूँछों की तरह जो ज़िन्दगी की मार और चोटों से चूर-चूर हो चुका हो। माँ घर के काम-काज में लगी रहती हैं, मिट्टी के फ़र्श पर उसके पाँव की आहट भर सुनायी देती है। वह बरतन-भांडा खड़खड़ाती हैं और किसी चीज़ को उठाने के लिए अचानक झुकती हैं। ऐसे में उनके कालिख से सने नाज़ुक, मांसल हाथ से अपने आँसू पोंछने का दृश्य नज़र आता है। उनकी सारी भाव-भंगिमाएँ मानो तुमको पुकार-पुकारकर यही कह रही हो : "देखो, देखो ज़रा, हमारी हालत तो देखो!"

तुम पहली बार यह महसूस करते हो कि तुम्हारे बूढ़े माँ-बाप के पास त्योहार के दिन पहनने के योग्य कपड़े-लत्ते नहीं हैं। सच पूछिये तो उन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी बच्चों के साथ बैठकर खाना नहीं खाया है। वे अकेले में ही खाते-पीते आये हैं, ताकि उनके बच्चों को यह पता न चल पाये कि वे सिर्फ़ काली रोटी, आलू और कूटू का दलिया खाकर ही अपने पेट भरते रहे हैं। और यह केवल इसलिए कि उनके बच्चे एक के बाद एक सयाने हो अपने पैरों पर खड़े होते जायें और तुम, सबसे छोटे, एक पढ़े-लिखे, दुनिया देखे आदमी बन जाओ।

माँ के आँसू तुमको विचलित कर देते हैं और पहली बार तुम्हारा ध्यान इस बात पर जाता है कि पिता का चेहरा गम्भीर और उदास है। और उनका हाँफना और काँखना उपहासजनक नहीं बल्कि हृदयविदारक लगता है।

बुनाई में व्यस्त और तुम्हारी ओर आँखें तरेरती बहनों के नथुने क्रोध और तिरस्कार से फड़क उठते हैं। तुम अपने माँ-बाप और बहनों से झुँझलाये और चिड़चिड़े-से लगते हो। रात भर पलक नहीं झपकते हैं। तुम्हारे दिल को एक आन्तरिक पीड़ा सालती रहती है। तुमको यह भी एहसास होता है कि तुमने एक घोर अपराध किया है और तुम्हारा गन्दा हाथ निःशब्द, गालों की हड्डियों पर ढुलकती आँसुओं की दो नन्ही-नन्ही, जलती बूँदों को पोंछने लगता है।

और उस रात के बाद लगता है जैसे तुम कुछ सयाने हो गये हो।

उसके बाद के दुःखद दिनों में जब सभी मौन धारण करके तुम्हारे प्रति तिरस्कार प्रदर्शन करते हैं, तुम्हारी मोहित आँखों के सामने एक नयी दुनिया उभरती है, अतिसाहसिक कृत्यों से भरी दुनिया।

लोग जल के नीचे बीस हजार मील का फ़ासला तय करते हैं और नये प्रदेश ढूँढ़ते हैं; वे निर्जन द्वीपों में उतरते हैं और सब कुछ अपने हाथ से गढ़ते हैं; वे संसार के उच्चतम पर्वतों पर चढ़ते हैं; यहाँ तक कि लोग चाँद तक पहुँच जाते हैं। वे समुद्र की छाती पर भयंकर तूफ़ानों से लड़ते हैं, बवण्डर में थरथराते मस्तूलों की चोटियों पर चढ़ते हैं और गरजते समुद्र पर तेल उँडेलकर नोकीली चट्टानों पर से अपने जहाज़ भगाते निकाल ले चलते हैं; वे लकड़ी के बेड़ों पर महासागार पार करते हैं और कई दिन तक भूखे-प्यासे रहने के कारण मुँह में सीसे की गोली डालकर चूसते हैं; वे रेगिस्तान में रेतीले तूफ़ानों का सामना करते हैं, अजगरों, हिंस्र पशुओं, शेरों, घड़ियालों और हाथियों से लड़कर उन्हें पछाड़ देते हैं। उनमें से कुछ लोग ये दुष्कर कार्य अपने फ़ायदे के लिए, अपने व्यवसाय में तरक़्क़ी पाने के लिए, वीरता प्रदर्शित करने के लिए, सच्ची दोस्ती निभाने के लिए या प्रेमिका को ख़तरे से बचाने के लिए करते हैं; पर कुछ लोग यही कार्य अपने लिए नहीं, बल्कि मानवजाति के कल्याण के लिए,

अपने देश के गौरव के लिए, और विज्ञान की ज्योति को धरती पर हमेशा प्रज्ज्वलित रखने के लिए करते हैं – जैसा कि लिविंगस्टन, अमुन्ड्सन, सेदोव, नेवेल्स्कीय आदि ने किया।

युद्ध-काल में लोग क्या-क्या महान कार्य नहीं करते हैं! हज़ारों वर्ष तक लोग युद्धों का सामना करते रहे और हज़ारों व्यक्तियों ने युद्ध में अपना शौर्य दिखाकर अपने नाम अमर कर लिये हैं। तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम ऐसे समय में पैदा हुए हो, जब युद्ध का कोई अस्तित्व नहीं है। तुम उस जगह में रह रहे हो, जहाँ तुम्हारी ख़ुशियों की ख़ातिर अपनी जानें दे चुके सैनिकों की क़ब्रों पर धूलभरी घास उग आयी है। उन दिनों के जनरलों की वीर-गाथा अभी भी हमारे दिमाग़ में ताज़ी बनी हुई है। यदि आप उनकी जीवनी के पृष्ठ उलटने लगें, तो तुम्हारा हृदय एक तरह के साहसपूर्ण और प्रेरणाभरे गीत से गुँजायमान हो जाता है। तुमको इस बात की परवाह नहीं कि रात काफ़ी बीत चुकी है और तुम्हें सोना चाहिए। तुम अनुभव करते हो कि तुम उनकी ओर बारम्बार खिंचे जा रहे हो और चाहते हो कि उनकी आकृतियाँ तुम्हारे मन पर अंकित हो जायें। तुम उनके चित्र बनाते हो – नहीं, यह सफ़ेद झूठ क्यों? तुम काँच के टुकड़े पर उनका छविचित्र उतारते हो और तब एक हल्की पेंसिल से – यह एक मामूली तरीक़ा है – उसे रंगते हो; हाँ, तुम बार-बार जीभ से पेन्सिल तर करके रंग को गहराना चाहते हो, ताकि चित्र अधिक से अधिक प्रभावोत्पादक बन पाये। जब यह काम ख़त्म हुआ, तो तुम्हारी जीभ इतनी काली पड़ जाती है कि कलौंछ हटाये नहीं हटती। और उन व्यक्तियों के चित्र अभी भी तुम्हारे सिरहाने टंगे हैं।

उन व्यक्तियों के वीरतापूर्ण कार्यों और पराक्रमों ने तुम्हारी पीढ़ी का जीवन सुनिश्चित किया, जीवन को अभय-दान दिया। उनकी स्मृतियाँ अमिट हैं। उनके नाम तुम्हारी तरह साधारण व्यक्तियों के नामों जैसे ही हैं : मिख़ाईल फ्रुन्ज़े, क्लीमेन्त वोरोशीलोव, सेर्गो ओर्जोनिकीद्ज़े, सेर्गेई कीरोव, सेर्गेई त्युलेनिन... हाँ, यदि वह अपनी क्षमता और योग्यता प्रदर्शित करने में पूरा सफल हो सके, तो उसका नाम भी, कोमसोमोल के एक सीधे-सादे सदस्य का नाम भी इन नामों के बीच जगह पा सकता है। उन व्यक्तियों का जीवन कितना आकर्षक और असाधारण था! ज़ारशाही के ज़माने में उन्हें लुक-छिपकर रहने और काम करने का अनुभव हो चुका था। उन्हें पकड़ लिया जाता, क़ैद में रखा जाता और उत्तर की ओर या साइबेरिया में निर्वासित कर दिया जाता। लेकिन वे बार-बार निकल भागते और संघर्ष की ज्वाला को बुझने न देते। सेर्गो ओर्जोनिकीद्ज़े अपने निर्वासन से एक बार भाग निकले, मिख़ाइल फ्रुन्ज़े दो बार और स्तालिन – कई बार। शुरू में उनके साथी मुट्ठी भर थे, बाद में सौ हुए, सौ से हज़ार, हज़ार से लाख।

सेर्गेई त्युलेनिन ऐसे समय में पैदा हुआ था, जब लुक-छिपकर रहने का कोई सवाल ही नहीं उठता था। उसे किसी जगह से, या किसी जगह के लिए भाग निकलने की ज़रूरत ही नहीं थी। वह स्कूल की दूसरी मंज़िल की खिड़की से कूद पड़ा था, लेकिन अब वह महसूस कर रहा था कि यह सरासर उसकी बेवक़ूफ़ी थी। उसका अब एकमात्र समर्थक वीत्या लुक्यांचेन्को रह गया था।

लेकिन इंसान को आशा नहीं छोड़नी चाहिए। आर्कटिक महासागर में एक विशाल हिमखण्ड 'चेल्यूस्किन'* जहाज़ से आ टकराया। रात का सन्नाटा चीरती भयानक कड़कड़ाहट की प्रतिध्वनि सारे देश में गूँज उठी। लेकिन लोग मरे नहीं, सारे के सारे नीचे उतार लिये गये। सारा संसार धड़कते हृदय से नज़र रखता रहा कि उनके प्राणों की रक्षा की जा सकेगी या नहीं। और सब के सब बचा लिये गये। संसार में उक़ाब जैसे हृदय रखनेवालों की कमी नहीं थी। वे तुम्हारी ही तरह साधारण लोग थे। बर्फ़ीले तूफ़ानों और पालों का सामना करते हुए वे मुसीबत में फँसे व्यक्तियों को बचाने चल पड़े और अपने हवाई जहाज़ों के पंखों पर रस्सियों से बाँधकर उन्हें सुरक्षित घर लौटा लाये। और वे थे सोवियत संघ के प्रथम वीर!

च्कालोव! वह तुम्हारी ही तरह एक साधारण युवक था, लेकिन उसका नाम संसार के ओने-कोने में गूँज रहा है। उत्तरी ध्रुव से होते हुए अमेरिका तक उड़ान भरना – यह मानव-जाति का सपना ही तो था! च्कालोव। ग्रोमोव। बायदुकोव।** और हिमखण्ड पर पपानिन अभियान***।

जीवन-चक्र चलता रहता है – सपनों से और साधारण, रोज़मर्रा के कामों से भरा हुआ।

सोवियत धरती के एक छोर से दूसरे छोर तक – यहाँ क्रास्नोदोन में भी – तुम्हारी तरह कितने ही साधारण लोग भरे हैं, जो अपने साहसिक कृत्यों के कारण अपने नाम उजागर कर चुके हैं, शोहरत का सेहरा बाँध चुके हैं। हाँ, इन लोगों के बारे में अभी किसी भी किताब में नहीं लिखा गया है। दोनबास भर में – इसकी सीमा के पार भी – निकीता इज़ोतोव* और स्ताख़ानोव* के नाम कौन नहीं जानता?। कोई भी पायोनियर तुम्हें पाशा अन्गेलिना*, क्रिवोनोस* और मकार मज़ाय** के बारे में

---

* 'चेल्यूस्किन' – जहाज़ जिसने 1933-34 में उत्तरी जलमार्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक गौरवपूर्ण यात्रा की थी। – सं.

** च्कालोव, ग्रोमोव, बायदुकोव – सुविख्यात विमान-चालक। – सं.

*** पपानिन अभियान – 1937-38 में केन्द्रीय आर्कटिक के तैरते हिमखण्डों पर पहला सोवियत वैज्ञानिक अनुसन्धान केन्द्र स्थापित किया गया था। उस अभियान का नेतृत्व सुविख्यात ध्रुव अनुसन्धानकर्ता ई. पपानिन ने किया था। – सं.

बता सकता है। हर एक के दिल में इन लोगों की इज़्ज़त है। 'दादा' हमेशा अख़बार के उन हिस्सों को ही पढ़कर सुनाने के लिए कहा करते हैं, जहाँ इन व्यक्तियों की चर्चा रहती है। इसके बाद वे बहुत देर तक घरघराते और काँखते हुए विचारों में डूब जाते हैं। ज़ाहिर है कि वे अपने बुढ़ापे और अपाहिजी का ख़याल कर दुःख और अफ़सोस से भर जाते हैं। कोयले के उस डिब्बे ने उन्हें पंगु बना दिया। हाँ, 'दादा' गव्रीला त्युलेनिन ने कड़ी मेहनत से भरी ज़िन्दगी बितायी है। अब 'दादा' को यह सोचकर कि उन्हें प्रसिद्ध व्यक्तियों की पाँत में खड़ा होना नहीं बदा है, कैसा लग रहा होगा – यह सेर्गेई अच्छी तरह समझता है।

इन व्यक्तियों को गौरव सच्चा गौरव है। लेकिन सेर्गेई अभी छोटा है। अभी उसे सिर्फ़ पढ़ना चाहिए। ये बातें बाद में होंगी, जब वह बड़ा हो जायेगा। फिर भी अपने दिल में वह अनुभव करता है कि वह बड़ा हो चुका है और वीर विमान-चालकों के समान साहसपूर्ण कार्य कर ही सकता है। पर मुसीबत तो यह है कि इस दुनिया में अकेला वही है, जो यह सब समझता है और महसूस करता है। ऐसी भावनावाला मानव-जाति में वही एक मात्र व्यक्ति है।

युद्ध छिड़ने पर उसकी यह मनःस्थिति थी। न जाने कितनी बार उसने विशेष फ़ौजी स्कूल में दाख़िल होने की कोशिश की। विमान-चालक बनने के अरमान मचल-मचलकर रह जाते। लेकिन उसे दाख़िल नहीं किया गया।

सभी छात्र फ़ार्मों में काम करने चले गये, लेकिन दिल में दर्द लिये अकेला सेर्गेई ही वहाँ रहकर खानों के काम में लग गया। दो हफ़्ते बीतते न बीतते वह अनुभवी खनिकों के साथ-साथ कोयला खोदने में जुट गया।

वह यह न महसूस कर पाया कि लोगों की आँखों पर वह कितना चढ़ गया था। जब वह खान में से निकलता, तो उसके कोयले से सने चेहरे पर उसकी विहँसती आँखें और सफ़ेद दाँत चमकते रहते। वह अपने वयस्क साथियों की भारी-भरकम चाल की नक़ल करते हुए उनके साथ चल पड़ता। वह फ़व्वारे के नीचे स्नान करने के लिए खड़ा हो जाता, उनकी तरह खखारता और इसके बाद भारी क़दमों से घर की ओर नंगे पाँव चल पड़ता, क्योंकि वह खान के भण्डार-घर से जूते उधार लेकर खान में काम करता था।

वह घर पर काफ़ी देर से पहुँचता। तब तक सब परिवारवाले खा-पी चुके होते

---

* ये लोग सुविख्यात मज़दूर हैं, जिन्होंने श्रम के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन-क्षमता को बढ़ाने का आन्दोलन शुरू किया। – सं.

** मकार मज़ाय (1909-1941) – देश का सुविख्यात इस्पात-कर्मी, जो हिटलरवादी हत्यारों द्वारा मारा गया। – सं.

थे। सेर्गेई को अलग भोजन दिया जाता, क्योंकि अब वह छोकरा नहीं, वयस्क था, बड़ा था, खान-मजदूर था।

अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना कपड़े के सहारे दोनों हाथों से सूप की देगची उठाये आती और सूप से उसका कटोरा भर देती। भाप छोड़ता बोर्श्च* और घर की सेंकी सफ़ेद रोटी पहले से अधिक स्वादिष्ट मालूम होती।

गव्रीला पेत्रोविच अपनी घनी भौंहों के नीचे कमज़ोर आँखों से एकटक अपने बेटे को घूरने लगते हैं। उनकी मूँछें तनिक हिल उठती हैं। वह खाँसते या घरघराते नहीं बल्कि अपने बेटे से कोई बात छेड़ देते हैं। गव्रीला पेत्रोविच उससे इस तरह बातें करते मानो वह अपना कोई साथी हो। वह हर चीज़ बड़ी जिज्ञासापूर्वक पूछने लगते हैं : खान में काम कैसा चल रहा है, हर खनिक कितना कोयला खोदता है। वह औजारों और काम करने के लिए कपड़ों के बारे में पूछताछ करते। खान की खोहों, सुरंगों, नालियों आदि के बारे में इस तरह बातें करते, मानो वे उनके घर के कमरे, कोने और कोठरियाँ हों। दरअसल यह बुजुर्ग ज़िले की लगभग हर खान में काम कर चुके थे। अब अपाहिज होते हुए भी वह अपने पुराने साथियों से मेल-जोल क़ायम रखे हुए थे। उन्हें पता रहता था कि किस दिशा में और किस रफ़्तार से कोयले की खुदाई हो रही है। वह अपनी एक उँगली से हवा में पूरी खान का नक़्शा खींचकर रख देते और सिलसिलेवार बताते जाते कि धरती के गर्भ में कहाँ पर कौन-सा काम चल रहा है। वह यह सब हर किसी को समझा और बता सकते थे।

जाड़ों में स्कूल से लौटकर सेर्गेई बिना खाना खाये सीधा अपने किसी सैनिक मित्र के यहाँ चला जाता, जो तोपची होता या सेपर होता या विमान-चालक। अपनी नींद से बोझिल पलकें लिये वह आधी रात को पाठ याद करता और सुबह पाँच बजते न बजते चाँदमारी के मैदान में पहुँच जाता, जहाँ उसका दोस्त सार्जेण्ट ड्यूटी पर होता और अन्य सैनिकों के साथ-साथ उसे भी राइफ़ल और टामी-गन चलाना सिखाता। यह हक़ीक़त थी कि भिन्न-भिन्न तरह की पिस्तौलें और राइफ़लें चलाने में अन्य सैनिकों से वह किसी तरह भी उन्नीस न था। वह हथगोले और आग लगानेवाली बोतलें फेंकना, खाइयाँ खोदना और तोपें दाग़ना आदि अच्छी तरह सीख गया था। वह विस्फोटक सुरंगें लगा सकता था और उन्हें साफ़ कर सकता था। वह देश-विदेश के विमानों की संरचना के विस्तृत विवरण तथा बम के फ़्यूज़ सम्बन्धी बातें जानता था। वीत्या लुक्यांचेन्को हमेशा उसके पीछे लगा रहता। सेर्गेई जहाँ भी जाता, उसे अपने साथ लिये जाता। वीत्या के हृदय में सेर्गेई के लिए लगभग उतनी ही श्रद्धा

---

* बोर्श्च – बन्दगोभी और चुक़न्दर का सूप। – सं.

थी, जितनी ख़ुद सेर्गेई के हृदय में सेर्गो ओर्जोनिकीद्ज़े या सेर्गेई कीरोव के प्रति थी।

इस वसन्त में उसने फिर एक बार जवानों के विशेष विमान-चालन स्कूल में नहीं, बल्कि वयस्कों के विमान-चालक स्कूल में भर्ती होने की जी-तोड़ कोशिश की थी। लेकिन फिर निराशा ही हाथ लगी थी। उसे कहा गया कि वह अभी छोटा है और अगले साल फिर से अर्ज़ी दे।

कहाँ विमान-चालन स्कूल में भर्ती होने का अरमान, और कहाँ वोरोशीलोवग्राद के बाहर रक्षा-मोर्चेबन्दी का काम! उसने निश्चय किया कि अब वह घर लौटकर नहीं जायेगा।

उस टुकड़ी में भर्ती होने के लिए उसे कैसी तिकड़में लगानी पड़ीं! उसने जो अपमान सहे थे और जिन चालाकियों से काम लिया था, इन सब को नाद्या से उसने छुपाये रखा। अब वह ख़ुद जान चुका था कि घमासान लड़ाई क्या होती है, मौत क्या होती है और भय क्या होता है।

सेर्गेई इस तरह घोड़े बेचकर सोया कि सुबह उसके बाप की खाँसी का दौरा भी उसकी नींद तोड़ न सका। सूरज काफ़ी ऊँचा चढ़ने के बाद ही उसकी आँख खुली। खिड़कियों की झिलमिलियाँ बन्द थीं, लेकिन पाटों के बीच से छनकर आती सुनहरी किरणों की फ़र्श तथा फ़र्नीचर पर झिलमिलाती रोशनी को देखकर वक़्त का अन्दाज़ लगाने की उसकी आदत थी। वह उठ बैठा और तुरन्त भाँप गया कि जर्मन अब तक नहीं पहुँच पाये हैं।

वह मुँह-हाथ धोने के लिए बाहर आ गया। 'दादा' चौखट के पास बैठे थे और उनसे कुछ दूरी पर वीत्या लुक्यांचेन्को। माँ बगीचे में थीं। और दोनों बहनें कब की अपने-अपने काम पर जा चुकी थीं।

"अक्खाह, मेरे बहादुर सैनिक! देखें तो ज़रा," 'दादा' ने उसका अभिवादन करने के भाव में कहा और खाँसने लगे। "बता, अभी ज़िन्दा है, एह? इन दिनों यही तो सबसे मुख्य बात है। हे-हे! तेरा लँगोटिया यार दिन चढ़ते से ही तेरा इन्तज़ार कर रहा है।" 'दादा' ने सस्नेह वीत्या की ओर देखा। वीत्या निश्चल और विमुग्ध, अपने यार को काली, चमकीली, कोमल आँखों से निहार रहा था। 'नींद की ख़ुमारी अभी भी दूर नहीं हुई थी और उसका चेहरा उत्साह और जोश से दमक रहा था।

"सच्चा यार इसे ही कहते हैं," 'दादा' ने गर्वपूर्ण सन्तोष के साथ कहा। "पौ फटते न फटते वह रोज़ यहाँ आ धमकता है और बार-बार पूछता है : 'सेर्गेई वापस आ गया?' 'क्या सेर्गेई घर में है?' बिना सेर्गेई के उसे दिन भी रात जैसा लगता है।"

'दादा' ने इन्हीं शब्दों से सच्ची दोस्ती की पुष्टि की थी।

वे दोनों वोरोशीलोवग्राद के इर्द-गिर्द मोर्चाबन्दी के लिए खाइयाँ और ख़न्दक़े

खोद रहे थे। सेर्गेई के इशारे पर नाचनेवाला वीत्या अपने दोस्त के साथ ही रुका रहना और भर्ती होना चाहता था। लेकिन सेर्गेई ने उसे घर लौटा दिया था – वीत्या के लिए मोह या उसके माँ-बाप के प्रति हमदर्दी से भरकर नहीं, बल्कि यह सोचकर कि दोनों का एक साथ भर्ती होना असम्भव था। उसे अन्देशा था कि वीत्या उसके भर्ती होने में रोड़ा अटका सकता है। अपने दोस्त की इस बेरुख़ी से दुःखी होकर वीत्या वापस चले जाने को मजबूर हुआ था। उसे क़सम खानी पड़ी कि वह सेर्गेई की योजना के बारे में न सेर्गेई के और न अपने माँ-बाप को बतायेगा और न दुनिया में किसी और को। उसके अहं ने वीत्या से ऐसी शपथ लेने के लिए मजबूर किया था, क्योंकि सेर्गेई को यह यक़ीन न था कि उसे इसमें कामयाबी मिलेगी ही।

'दादा' की बातों से भी यह स्पष्ट था कि वीत्या ने अपना वचन निभाया था।

दोनों दोस्त झोपड़ी के पीछे सरपतों से भरी गन्दी नाली के किनारे बैठ गये जिसके पार लम्बा-चौड़ा चरागाह फैला था। दूर एक बड़ा-सा मकान नज़र आता था : यह खान-मज़दूरों का स्नानगृह था, जो हाल ही में बना था लेकिन अभी तक चालू नहीं किया गया था। वे वहाँ बैठे-बैठे सिगरेट पीते और एक दूसरे को ख़बरें सुनाते रहते।

ये दोनों वोरोशीलोव स्कूल में ही पढ़े थे। उनके सहपाठी – तोल्या ओर्लोव, वोलोद्या ओस्मूख़िन और ल्यूबा शेव्त्सोवा – नगर में ही रह गये थे। वीत्या ने बताया कि ल्यूबा शेव्त्सोवा ने घर से बाहर निकलना और किसी से मिलना एकदम बन्द कर दिया है। ल्यूबा जैसी लड़की का इस तरह का जीवन व्यतीत करना सचमुच एक अनोखी बात थी। ल्यूबा शेव्त्सोवा भी वोरोशीलोव स्कूल में सात वर्ष तक पढ़ी थी और युद्ध शुरू होने के पहले ही उसने स्कूल छोड़ दिया था तथा रंगमंच पर उतरने का निश्चय कर लिया था। बाद में वह ज़िले के क्लबों और थियेटरों में नाचने-गाने लगी थी। ल्यूबा वहीं रह गयी है – यह सुनकर सेर्गेई को ख़ुशी हुई। वह बहुत ही हिम्मती थी और हर माने में सेर्गेई की बराबरी करनेवाली। वस्तुतः, वह लड़की के चोले में सेर्गेई ल्युलेनिन ही थी।

वीत्या ने सेर्गेई के कान में फुसफुसाकर एक और ख़बर सुनायी, लेकिन वह ख़बर उसके लिए पुरानी थी, यानी इग्नात फ़ोमीन के घर में कोई अज्ञात छिपा हुआ है और 'शंघाई' मुहल्ले के किसी आदमी को उसका अता-पता मालूम नहीं है और सभी उससे डर रहे है।

वीत्या ने दूसरी बात यह भी फुसफुसाकर बतायी कि जल्दबाज़ी में छिपायी गयी आग लगानेवाली कई दर्जन बोतलें 'सेन्याकी' मुहल्ले के एक तहख़ाने में खुलेआम पड़ी हैं, जहाँ गोला-बारूद छिपाकर रखे जानेवाले और भी कई तहख़ाने और गड्ढे हैं।

वीत्या ने डरते-डरते यह भी सुझाव दिया कि उन बोतलों को छिपाने के लिए कोई पक्की जगह ढूँढ़ना ज़रूरी है। सेर्गेई ने कुछ नहीं कहा। अचानक उसे कोई बात याद हो आयी और उसने गम्भीरतापूर्ण स्वर में एलान किया कि उन्हें फ़ौजी अस्पताल में फ़ौरन पहुँचना होगा।

अध्याय 14

जब मोर्चा दोनबास के निकट आ गया और घायल सैनिक क्रास्नोदोन में पहुँचने लगे, तो नाद्या त्युलेनिना ने नर्सिंग का काम सीखने के लिए स्वेच्छा से अपना नाम दे दिया था। इस समय फ़ौजी अस्पताल में काम करने का उसका दूसरा साल था, जो प्रमुख अस्पताल की पूरी की पूरी की निचली मंजिल पर आ गया था।

फ़ौजी अस्पताल के कर्मचारी हटा लिये गये थे। केवल एक डाक्टर वहाँ रह गया था – फ़्योदोर फ़्योदोरोविच। अस्पताल की अधिकांश नर्सें और डाक्टर प्रधान चिकित्सक के नेतृत्व में पूरब की ओर चले गये थे। फिर भी अस्पताल का जीवन-क्रम पहले ही की तरह चलता रहा। सेर्गेई और वीत्या इस अस्पताल के प्रति तुरन्त श्रद्धा से भर उठे, क्योंकि जब वे उसके दरवाज़े पर पहुँचे, तो ड्यूटी पर बैठी नर्स ने उन्हें वहीं रोककर गीले कपड़े पर अपने पैर पोंछने और प्रतीक्षालय में इन्तज़ार करने के लिए कहा और वह ख़ुद नाद्या को बुलाने चली गयी।

कुछ देर बाद वह नर्स नाद्या के साथ वापस आयी। लेकिन नाद्या को पहचाना नहीं जा सका, वह बिलकुल बदल गयी थी। नहीं, यह वह नाद्या न थी, जिसके साथ सेर्गेई ने उस रात उसकी खाट के पास फुसफुसाकर बातें की थीं : उसके गाल की उभरी हड्डियोंवाले चेहरे पर एक विचित्र, गम्भीर भाव बना था और उसकी बारीक भौंहें प्रश्नसूचक अन्दाज़ में उठी हुई थीं। ड्यूटी पर बैठी नर्स के झुर्रीदार, दयालु चेहरे पर भी ऐसा ही गम्भीर भाव चित्रित था।

"नाद्या," सेर्गेई फुसफुसाया; उसके चेहरे पर यह नया भाव देखकर वह तनिक सहम उठा था। "नाद्या, इन्हें यहाँ से हटाना ही पड़ेगा, क्या तुम नहीं देखतीं... वीत्या और मैं एक-एक घर में से जाकर पूछ आयेंगे... तुम फ़्योदोर फ़्योदोरोविच से जाकर कह दो।"

कुछ क्षणों के लिए नाद्या सोच में पड़ गयी। वह अपने भाई की ओर देखती रही और बोली कुछ नहीं। उसके बाद उसने सन्देहपूर्वक धीरे-से अपना सिर हिलाया।

"जाओ, नाद्या, उन्हें बुला लाओ या हमें ही उनके पास ले चलो," सेर्गेई ने ज़ोर दिया और उदास हो गया।

"लूशा, इन्हें चोग़ा पहना दो," नाद्या बोली। नर्स एक ऊँची सफ़ेद आलमारी से चोग़े ले आयी और उन्हें पहना दिये।

"लड़का ठीक कह रहा है," लूशा अचानक नाद्या की ओर सहृदयता से देखकर बोली। उसके कोमल और पिचके हुए होंठ इस तरह हिल रहे थे, मानो वह कुछ चबा रही हो। "लोग ज़रूर इन्हें शरण देंगे। मैं ख़ुद एक को अपने यहाँ रखने को तैयार हूँ। इन पर किसे दया न आयेगी? मैं अकेली हूँ, मेरे बच्चे मोर्चे पर लड़ रहे हैं। मेरे साथ केवल मेरी बेटी रह गयी है। हम बस्ती में रहते हैं। यदि जर्मन आ जायेंगे, तो मैं कहूँगी कि यह मेरा बेटा है। और यही बात कहने के लिए हमें और लोगों को भी समझा देना चाहिए।"

"तुम जर्मनों को नहीं जानतीं," नाद्या बोली।

"मैं नहीं जानती, यह सही है। लेकिन मैं अपने लोगों को तो जानती हूँ," लूशा ने मुँह पहले से भी जल्दी चलाते हुए तत्परता से जवाब दिया। "मैं बस्ती के कुछ नेक लोगों के नाम तुम्हें बता सकती हूँ।"

नाद्या लड़कों को एक उजले गलियारे में से ले जाने लगी, जिसकी खिड़कियाँ नगर की ओर खुलती थीं। वार्डों के हर खुले दरवाज़े के पास से गुज़रते वक़्त उन्हें मवाद भरे, पुराने घावों और अनधुले कपड़ों की, दवा स्पिरिट आदि से भी दूर नहीं की जा सकने वाली तेज़ गन्ध नाक में लगती थी। और अचानक खिड़कियों के बाहर उन्हें नगर पहले से अधिक रौनक़दार, लुभावना और शान्त महसूस हुआ।

सभी घायल मरीज़ बिस्तरों पर लाचार पड़े थे। उनमें से कुछ ही अपनी बैसाखियों के सहारे गलियारे में दो-चार डग भर सकते थे। सब के चेहरों पर, चाहे वे बूढ़े हों या जवान, उनकी दाढ़ियाँ बढ़ी थीं या घुटी एक ही भाव बना था। यह भाव दोनों दोस्तों ने कुछ पहले नाद्या और लूशा के चेहरों पर देखे थे।

गलियारे से गुज़रते लड़कों की आहट सुनकर घायल अपना सिर उठा-उठाकर जिज्ञासापूर्ण नेत्रों से देखने लगे। उनकी आँखों से आशा की किरण झलक उठी। यह देखकर कि कठोर मुद्रावली नर्स नाद्या लड़कों को साथ ले जा रही है, क्षण भर के लिए उनके चेहरों पर एक अस्पष्ट, आहत और सन्तप्त हुलास कौंधकर रह गया।

गलियारे के छोर पर पहुँचकर तीनों एक दरवाज़े के पास रुक गये। नाद्या ने अपने नन्हे हाथ से दरवाज़ा भड़ाक से खोल दिया।

"ये आप से मिलने आये हैं, फ़्योदोर फ़्योदोरोविच," उसने लड़कों को आगे करके कहा।

दोनों लड़कों ने हिचकिचाते हुए कमरे में क़दम रखा। चौड़े कन्धों और सफ़ेद बालोंवाला विशालकाय बूढ़ा मेज़ के पास से उठा और उनकी ओर आया। वृद्ध की

दाढ़ी घुटी थी, सुग्गे-सी नाक, तीखा नाक-नक़्शा, ठुड्डी चौकोर और सँवलाये चेहरे पर लम्बी, गहरी झुर्रियाँ। लगता था जैसे वह काँसे की चलती-फिरती प्रतिभा हो। उसकी मेज़ पर काग़ज़ात और किताबें नहीं थीं और न कहीं दवाओं की शीशियाँ या बोतलें ही नज़र आती थीं। कमरा बिलकुल ख़ाली था। लड़कों ने अन्दाज़ लगाया कि फ़्योदोर फ़्योदोरोविच इस दफ़्तर में काम नहीं करते हैं। वे यहाँ अकेले बैठकर अपने विचारों में खोये रहते है और वे विचार दुःखद और शोकपूर्ण अवश्य ही होते हैं। उन्हें फ़ौजी पोशाक के बजाय मामूली पोशाक पहने देखकर भी यह स्पष्ट हो रहा था। प्रधान चिकित्सक भूरी पतलून और कोट पहने थे, जिसका कालर चोग़े के सिर के ऊपर भी उठा था और गरदन के पीछे चोग़े का फ़ीता बँधा था। पाँवों में जूते साफ़ नहीं किये गये थे।

उनके चेहरे पर भी वही गम्भीर भाव बना था।

"फ़्योदोर फ़्योदोरोविच, हम आपके घायल मरीज़ों के लिए लोगों के घरों में जगह का बन्दोबस्त करना चाहते हैं। हम आपकी मदद करना चाहते हैं," सेर्गेई बोल उठा। वह जानता था कि इस व्यक्ति से घुमा-फिराकर बातें करना ठीक नहीं।

"क्या वे इन्हें जगह देने को तैयार होंगे?" डाक्टर ने पूछा।

"ऐसे लोग ज़रूर मिल जायेंगे," नाद्या अपनी सुरीली आवाज़ में बोली। "प्रमुख अस्पताल की एक नर्स लूशा अपने यहाँ एक घायल को रखने के लिए तैयार है और उसने वचन दिया है कि वह दूसरों को भी ऐसा करने के लिए मनायेगी। इधर ये लड़के घर-घर जाकर लोगों से पूछताछ कर बन्दोबस्त करने को तैयार हैं। मैं भी इस काम में इनकी मदद कर सकती हूँ। क्रास्नोदोनवासी हमें निराश नहीं करेंगे। हम भी एक मरीज़ को अपने यहाँ ले जाते, पर... हमारे घर में जगह की कमी है," नाद्या बोली और लाल हो उठी। हालाँकि उसने सच्ची बात कही थी, फिर भी सेर्गेई का भी चेहरा लज्जा से आरक्त हो गया।

"नताल्या अलेक्सेयेव्ना को मेरे पास भेज दो," डाक्टर ने कहा।

नताल्या अलेक्सेयेव्ना प्रमुख अस्पताल की युवा चिकित्सिका थी। जब अस्पताल के कर्मचारी सुरक्षित स्थानों पर हटाये जाने लगे, तो उसने यहीं रह जाने का निश्चय किया था। कारण यह था कि उसकी माँ नगर से कोई दस मील दूर क्रास्नोदोन नामक खनिकों की बस्ती में बीमार पड़ी थी। चूँकि अस्पताल में अभी भी कुछ मरीज़, चिकित्सा-सामग्री दवाएँ व यंत्र आदि रह गये थे और साथ ही नताल्या अलेक्सेयेव्ना को कहीं न जाकर जर्मनों के अधीन रहने पर सहकर्मियों के सामने शर्म भी महसूस हो रही थी, इसलिए उसने चिकित्सक का काम अपने ज़िम्मे ले लिया था।

नाद्या कमरे से चली गयी।

डाक्टर फिर अपनी मेज़ के पास बैठ गया। बड़ी फुरती से उसने अपना एक हाथ चोग़े के भीतर डालकर तम्बाकू की डिबिया और मुड़ा-तुड़ा पुराना अख़बार निकाला। काग़ज़ का एक टुकड़ा फाड़कर उस पर थोड़ा 'मख़ोर्का'* रखा और उँगलियों तथा होंठों की सहायता से एक सिगरेट बनाया और उसे सुलगा दिया।

"हाँ, यह अच्छा सुझाव है," वह बोला और तनिक भी मुस्कुराये बिना दोनों लड़कों की ओर देखा, जो सोफ़े पर एक दूसरे की बग़ल में बैठे थे।

उसने अपनी निगाहें सेर्गेई से हटाकर वीत्या पर डालीं, इसके बाद फिर सेर्गेइ पर टिका दीं, मानो उसे पता चला हो कि अगुआ सेर्गेई है। वीत्या ने डाक्टर के दूसरी बार सेर्गेई की ओर देखने का अर्थ समझ लिया, किन्तु यह ज़रा भी उसे बुरा न लगा। उसे यह स्वीकार करने में तनिक भी संकोच नहीं होता था कि सेर्गेई ही उसका अगुआ है। वह चाहता भी यही था और सेर्गेई पर उसे गर्व था।

नाद्या पच्चीस-तीस साल की उम्रवाली छोटे क़द की एक औरत के साथ लौट आयी। अपनी उम्र से वह छोटी दिखती थी, क्योंकि उसका नन्हा-नन्हा गोल चेहरा, हाथ और पैर बाल-सुलभ ढंग से कोमल और मांसल दिखायी देते थे। इसी कारण ऐसी ग़लतफ़हमी भी होती थी कि उसका आचरण भी बच्चों का-सा है। जब नताल्या अलेक्सेयेव्ना के पिता ने उसकी डाक्टरी शिक्षा का विरोध किया था, तो यही नन्हे गोल-मटोल पाँव उसे क्रास्नोदोन से ख़ार्कोव ले गये थे; अपने इन्हीं नरम हाथों में सिलाई और धुलाई का काम करके उसने अपनी शिक्षा जारी रखी थी और जब उसके पिता की मृत्यु हो गयी, तो इन्हीं हाथों से उसने आठ जनों के परिवार का भार अपने जिम्मे लिया था। अब उसके परिवार के कुछ लोग लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे, कुछ विभिन्न नगरों में काम कर रहे थे और बाक़ी शिक्षा पर रहे थे। इन्हीं हाथों से उसने बड़ी निर्भीकता से कई ऐसे आपरेशन किये थे, जिससे बड़े-बड़े, अनुभवी पुरुष सर्जन भी हिचकिचाते थे। नताल्या अलेक्सेयेव्ना की आँखें बाल-सुलभ भोले चेहरे पर ऐसी स्वच्छ, पैनी, स्थिर और व्यावहारिक दीखती थीं कि किसी अखिल सोवियत संस्था के प्रबन्ध-अभिकर्त्ता को सहज ही ईर्ष्या हो सकती थी।

फ़्योदोर फ़्योदोरोविच स्त्री से मिलने के लिए उठ खड़े हुए।

"चिन्ता न करें, मुझे सब कुछ मालूम है," इतना कहकर उसने अपने हाथ अपने वक्ष पर रख लिये। वे उसकी आँखों के व्यावहारिक भाव तथा बोलने के रूखे ढंग से मेल नहीं खाते थे। "मुझे इसके बारे में सब कुछ मालूम है। यह अच्छी योजना है," यह कहकर उसने लड़कों की ओर इस ढंग से देखा मानो उन्हें तौल रही हो कि वे

---

* घरेलू तम्बाकू। – सं.

कितने उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, यों लड़को के प्रति उसकी दृष्टि में ज़रा भी व्यक्तिगत दिलचस्पी का भाव नहीं था। इसके बाद उसने जिज्ञासाभरी दृष्टि से डाक्टर की ओर देखा। "और आप?" उसने पूछा।

डाक्टर उसके प्रश्न का अभिप्राय समझ गया।

"मेरे लिए एक स्थानीय डाक्टर के नाते तो यही बेहतर होगा कि मैं अस्पताल में काम करता रहूँ। स्थिति चाहे जैसी भी रहे, मैं जवानों की मदद कर सकता हूँ।" यह स्पष्ट था कि उसका संकेत घायल सैनिकों से था। "क्या यह सम्भव है?"

"हाँ, क्यों नहीं?" वह बोली।

"आपके अस्पताल में लोग मेरे साथ विश्वासघात तो नहीं करेंगे?" उसने पूछा।

"हमारे अस्पताल के लोगों पर आप पूरा विश्वास कर सकते हैं," नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने जवाब दिया।

पहली बार डाक्टर की आँखों में मुस्कुराहट की झलक दिखायी पड़ी।

"तुम दोनों को बहुत-बहुत धन्यवाद," वह बोले और उन्होंने अपना मज़बूत उँगलियोंवाला बड़ा हाथ पहले सेर्गेई की ओर बढ़ाया और फिर वीत्या लुक्यांचेन्को की ओर।

"फ़्योदोर फ़्योदोरोविच," सेर्गेई ने अपनी आँखें सीधे डाक्टर के चेहरे पर गड़ाते हुए कहना शुरू किया। उसकी स्थिर और चमकीली आँखें मानो यह कहत-सी जान पड़ती थीं : "जो कुछ मैं कहने जा रहा हूँ, उसके बारे में आप या सब लोग चाहे जो कुछ भी सोचें, लेकिन मैं तो कहूँगा ही, क्योंकि यह मेरा कर्तव्य है।" "फ़्योदोर फ़्योदोरोविच, यह ध्यान में रखें कि आप मुझ पर और मेरे दोस्त वीत्या पर हमेशा भरोसा कर सकते हैं। आप नाद्या की मार्फ़त हमसे सम्पर्क बनाये रख सकते हैं। मैं और वीत्या यह कहे बिना नहीं रह सकते कि घायलों के साथ आपका यहाँ रुकना और वह भी ऐसे वक़्त... हाँ, आपका यह काम बहुत ही महान और वीरतापूर्ण कार्य है," वह सकपकाया और उसके माथे पर पसीने की बूँदें चुहचुहा आयीं।

"धन्यवाद," डाक्टर बोला। वह बहुत ही गम्भीर था। "चूँकि तुमने प्रसंग छेड़ ही दिया है, इसलिए मैं तुम्हें यह बता दूँगा : पेशा या धन्धा चाहे कोई भी हो, इंसान की ज़िन्दगी में एक ऐसी स्थिति आ सकती है, जब उसे मजबूर होकर अपने उन लोगों को छोड़ना पड़े, जो उस पर आश्रित रहे हैं या जिनकी वह अगुआई करता रहा है या जो उस पर भरोसा करते रहे हैं। हाँ, ऐसी स्थिति आ सकती है, जब उन्हें छोडकर चला जाना ही हितकर और अनिवार्य होता है। अवसर का यही तक़ाजा होता है। मैं फिर से दोहराता हूँ : यह बात सब पेशे के लोगों पर लागू होती है – यहाँ तक कि जनरलों और राजनीतिक नेताओं पर भी, लेकिन डाक्टरी पेशे के लोगों पर नहीं

और ख़ासकर फ़ौजी डाक्टर पर तो हर्गिज़ नहीं लागू हो सकती। फ़ौजी डाक्टर को तो घायलों के साथ ज़रूर ही रहना चाहिए। अन्त चाहे जो भी हो! अवसर की माँग कुछ भी हो, इस कर्तव्य को नहीं भुलाया जा सकता। यहाँ तक कि फ़ौजी आदेशों और अनुशासन का भी उल्लंघन किया जा सकता है, यदि वे उसके पालन में बाधा डालें। यदि मोर्चे का कमाण्ड करनेवाला जनरल भी मुझे इन घायलों को और अपने स्थान को छोड़कर चले जाने का आदेश दे, तो भी मैं उसका आदेश नहीं मानूँगा। लेकिन वह ऐसे आदेश नहीं दे सकता... तुम दोनों को बहुत-बहुत धन्यवाद।" उसने अपना सफ़ेद बालोंवाला सिर हिलाया।

नताल्या अलेक्सेयेव्ना ज्यों की त्यों खड़ी हुई गर्वपूर्ण दृष्टि से डाक्टर को देखती रही।

उस हाल में सेर्गेई, नाद्या, लूशा और वीत्या के बीच हुई संक्षिप्त बैठक के दौरान कार्यक्रम निश्चित कर लिये गये। इससे अधिक संक्षिप्त बैठक शायद ही पिछले पच्चीस सालों में कभी हुई होगी, क्योंकि उसमें कुल मिलाकर चोग़े उतार डालने जितना समय लगा। अपने को अब अधिक रोक पाने में असमर्थ ये लड़के अस्पताल से निकलकर जुलाई की जलती दोपहर में दौड़ पड़े। वे अवर्णनीय प्रसन्नता असाधारण गर्व और कुछ करने की तीव्र लालसा से उफन रहे थे।

"यह है न सच्चा इंसान, क्यों?" सेर्गेई ने उत्तेजित होकर कहा।

"बिलकुल!" वीत्या ने आँखें मटकाते हुए जवाब दिया।

"अब मैं यह पता लगाने जा रहा हूँ कि इग्नात फ़ोमीन के घर कौन छिपा हुआ है," सेर्गेई ने अचानक इस ढंग से कहा, मानो अभी जो कुछ वे बोल और महसूस कर रहे थे, उससे इनका कोई सम्बन्ध ही न हो।

"कैसे पता लगाओगे?"

"मैं फ़ोमीन से अनुरोध करने जा रहा हूँ कि वह भी एक घायल सैनिक को अपने घर में जगह दे।"

"लेकिन यह उसे दुश्मन के हवाले कर देगा," वीत्या ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

"तो मैं उससे मुँह पर कह दूँगा कि वह कैसा आदमी है। मैं उसके घर के अन्दर जाना चाहता हूँ।" सेर्गेई शरारती ढंग से मुस्कुरा पड़ा। उसकी आँखें और दाँत चमक रहे थे। उसने यह दृढ़ संकल्प कर लिया था कि चाहे जैसी भी हो, वह उसके घर के अन्दर घुसेगा ही।

सेर्गेई शंघाई मुहल्ले के बाज़ार से दूरवाले छोर पर इग्जात फ़ोमीन के घर की खिड़कियों के नीचे सूरजमुखियों के बीच खड़ा था।

उसने दरवाज़ा खटखटाया, लेकिन कोई जवाब न मिला। उसने अनुमान लगाया कि खिड़की से उसे कोई देखने की कोशिश कर रहा है। देखने-वाले की नज़र न पड़ने के लिए वह दरवाज़े से सटकर खड़ा हो गया। आख़िर दरवाज़ा खोलकर फ़ोमीन निकल आया और एक हाथ किवाड़ की चौखट पर टिकाये दूसरे हाथ से सिटकनी पकड़े आगे झुका। वह बाँस की तरह पतला और लम्बा था। अपनी छोटी, भूरी आँखों में उत्सुकता का भाव लिये वह सेर्गेई को देखने लगा। उसके चेहरे पर गहरी झुर्रियों की भरमार थी।

"ओह बहुत-बहुत धन्यवाद," सेर्गेई बोला और झुककर फ़ोमीन की बाँह के नीचे से अन्दर घुसा, जैसे किवाड़ उसके लिए ही खोला गया हो। पलक झपकते ही वह गलियारे में पहुँचकर शयन-कक्ष का दरवाज़ा खोलने लगा। इग्नात फ़ोमीन हक्का-बक्का-सा उसके पीछे दौड़ा।

"माफ़ कीजिये श्रीमान्," सिर झुकाते हुए सेर्गेई ने कहा। अब वह शयन-कक्ष के अन्दर घुस चुका था। फ़ोमीन उसके सामने आकर तनकर खड़ा हो गया था। वह चौख़ानेदार जैकेट और वास्कट पहने था, जिस पर पेट के ऊपर सोने का मुलम्मा चढ़ी भारी ज़ंजीर लटकी थी। उसका पतलून घुड़सवारीवाले चमचमाते बूटों के अन्दर सिमटा था। उसके लम्बे और सुघड़ चेहरे पर आश्चर्य और क्रोध का भाव बना था। चेहरे से फ़ोमीन हिजड़ा लगता था।

"क्या चाहते हो?" उसने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। उसकी आँखों के इर्द-गिर्द की सिलवटें भी हिलने लगी।

"श्रीमान्!" सेर्गेई ने अप्रत्याशित उमंग के साथ कहा और फ्रेंच क्रान्ति के समय के 'कन्वेंशन' की सदस्यों की-सी मुद्रा बना ली। "श्रीमान्! एक घायल सैनिक की रक्षा कीजिये।"

फ़ोमीन की आँखों के चारों ओर की सिलवटें स्थिर हो गयीं और वह पुतले की तरह सेर्गेई को एकटक देखने लगा।

"नहीं, नहीं, मैं घायल नहीं हूँ," सेर्गेई ने आश्चर्यचकित फ़ोमीन को देखते हुए कहा। "पीछे हटती फ़ौज का एक घायल सैनिक बाज़ार के पास पड़ा है। हम लोगों की नज़र उस पर पड़ी और मैं सीधे आपके यहाँ भागा-भागा आया।"

फ़ोमीन के विशाल चेहरे पर अन्तर्द्वन्द्व झलक उठा और उसने बन्द दरवाज़े पर नज़र टिका दी।

"लेकिन तुम सीधे मेरे पास क्यों आये?" उसने धीमी, फुसफुसाती-सी आवाज़ में पूछा और क्रोध से भरी आँखें सेर्गेई पर जमा दीं। उसकी आँखों के इर्द-गिर्द की सिलवटें फिर चंचल हो उठी थीं।

“अगर आपके पास नहीं, श्रीमान् फ़ोमीन, तो और किसके पास जाता? सारा शहर जानता है कि आप हमारे अग्रणी ‘स्ताख़ानोववादी’ हैं,” सेर्गेई बोला। यह विषैला बाण छोड़ते समय उसने फ़ोमीन की ओर बाल-सुलभ नज़रों से देखा।

“और तुम कौन हो?” फ़ोमीन ने और भी असमंजस में पड़ते हुए और हैरान होकर पूछा।

“मैं प्रोख़ोर ल्युबेज़्नोव का बेटा हूँ। मेरे पिता भी ‘स्ताख़ानोववादी हैं और शायद आप उन्हें अच्छी तरह जानते हैं,” सेर्गेई ने बड़ी दृढ़ता से कहा, हालाँकि उसे अच्छी तरह मालूम था कि प्रोख़ोर ल्युबेज़्नोव नाम के व्यक्ति का कोई अस्तित्व तक नहीं है।

“नहीं, ऐसे किसी आदमी का नाम मैंने कभी नहीं सुना। और सबसे मुख्य बात तो यह है, मेरे दोस्त...” काफ़ी सम्भल चुका फ़ोमीन अपनी लम्बी-लम्बी बाँहें बेचैनी से इधर-उधर हिलाते हुए बोला। “तुम्हारे घायल सैनिक के लिए मेरे पास जगह नहीं, क्योंकि मेरी पत्नी बीमार है और अब तुम, मेरे दोस्त...” उसने हाथ के इशारे से सड़क की ओर का रास्ता दिखाया।

“आप तो अजीब ढंग से पेश आ रहे हैं, श्रीमान्। हर कोई जानता है कि आपके पास ख़ाली जगह है,” सेर्गेई ने उलाहनाभरी आवाज़ में कहा। उसकी बच्चों जैसी स्वच्छ, निर्भीक आँखें फ़ोमीन पर गड़ी थीं।

फ़ोमीन के हिलने-डुलने और कुछ कहने के पहले ही सेर्गेई ने लपककर बन्द दरवाज़े को खोल दिया। और अन्दर चला गया।

खिड़की की झिलमिलयाँ अधखुली थीं। कमरे में मामूली फ़र्नीचर था और गमलों में उष्णजलवायुवाले पौधे लगे थे। मेज़ के पास एक मज़बूत आदमी बैठा था। उसके बाल महीन कटे थे और चेहरे पर गहरी चित्तियाँ पड़ी थीं। वह साफ़-सुथरी काम की पोशाक पहने था। उसने सिर उठाकर सेर्गेई को शान्त भाव से देखा।

पलक झपकते सेर्गेई ने समझ लिया कि उसके सामने एक भला, मज़बूत और शान्त व्यक्ति बैठा है। उसी क्षण उसकी हिम्मत उसका साथ छोड़ती-सी लगी। हाँ-हाँ, उसके उक़ाब जैसे दिल में हिम्मत का नाम तक नहीं बचा! उसे जैसे काठ मार गया – वह न हिल सकता था और न एक शब्द बोल सकता था। तभी द्वार पर फ़ोमीन का क्रोध से तमतमाया और घबराया हुआ चेहरा प्रगट हुआ।

“ठहरो, दोस्त,” वह अजनबी शान्त स्वर में बोला और सेर्गेई पर पिल पड़नेवाले बौखलाये फ़ोमीन को संयत किया। “यह तो बताओ कि तुम उस सैनिक को अपने यहाँ क्यों नहीं जगह देते?” उसने सेर्गेई से सवाल किया।

सेर्गेई कुछ नहीं बोला।

"तुम्हारे पिता यहीं हैं या चले गये?"

"चले गये," सेर्गेई झूठ बोला और शर्म से लाल हो उठा।

"और तुम्हारी माँ?"

"माँ घर पर हैं।"

"तो तुम पहले उसके पास क्यों नहीं गये?"

सेर्गेई चुप रहा।

"क्या वह घायल को जगह देने के लिए तैयार न होगी?"

सेर्गेई ने हाँ में सिर हिला दिया। उसकी अन्तरात्मा उसे कचोटने लगी। 'माँ' और 'बाप' शब्दों ने उसके सामने उसके माँ-बाप की मूर्त्ति उभारकर रख दी। उनके बारे में सफ़ेद झूठ बोलकर वह शर्म से गड़ा जा रहा था।

लेकिन, यह स्पष्ट था, वह व्यक्ति सेर्गेई पर विश्वास करता है।

"तो यह बात है," उसने सेर्गेई को पैनी आँखों से देखते हुए कहा। "फ़ोमीन ने सत्य ही कहा है कि वह घायल को अपने यहाँ रखने से इनकार करने को मजबूर है। लेकिन मुझे यक़ीन है कि तुम्हें कोई न कोई आदमी ऐसा मिल ही जायेगा, जो उसे जगह दे सके। यह बड़ा ही नेक काम तुम अपने ज़िम्मे ले रहे हो। तुम सचमुच अच्छे लड़के हो। कोशिश करो और तुम्हें सफलता मिल ही जायेगी। केवल यह ध्यान रखना – यूँ ही, बिना सोचे-समझे किसी के पास न जाना। यदि कोई जगह न दे, तो मेरे पास फिर आना। यदि जगह मिल जाये, तो न आना। लेकिन अच्छा तो यही होगा कि तुम मुझे अपना पता देते जाओ ताकि ज़रूरत पड़ने पर मैं तुम्हें ढूँढ़ सकूँ।"

अब सेर्गेई को अपनी ग़लती के लिए ऐसी सज़ा भुगतनी पड़ी कि उसी के बारे में सोच-सोचकर वह दुःखी हो रहा था। एक बार सफ़ेद झूठ बोल देने के कारण वह अपना असल पता बता भी नहीं सकता था, अतः उसके दिमाग़ में जो भी पता कौंध गया, उसने कह दिया और इस व्यक्ति से फिर मुलाक़ात होने का अवसर भी गँवा बैठा।

सेर्गेई जब सड़क पर पहुँचा, तो वह बहुत ही उद्विग्न और दुःखी था। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि फ़ोमीन के घर छिपा हुआ अजनबी सचमुच बड़ा आदमी है। इसमें भी कोई शक न था कि फ़ोमीन भला आदमी नहीं था। वह महसूस कर रहा था कि उन दोनों में कोई गहरा सम्बन्ध ज़रूर है, पर इसे साफ़-साफ़ समझने में वह अभी असमर्थ था।

अध्याय 15

उसी दिन ओस्मूख़िन परिवार की छोटी-सी झोंपड़ी से निकलकर मत्वेई शुल्गा

क्रास्नोदोन के आस-पास स्थित गोलुब्यात्निकी मुहल्ले के लिए रवाना हुआ। उसका इरादा अपने आरम्भिक छापेमार-जीवन के पुराने साथी इवान कोन्द्रातोविच ग्नातेन्को का पता लगाने और उससे मुलाकात करने का था।

क्रास्नोदोन के अन्य मुहल्लों की तरह गोलुब्यात्निकी में भी आधुनिक ढंग की पक्की इमारतें थीं। शुल्गा को मालूम था कि ग्नातेन्को अभी भी अपने निजी मकान – लकड़ी के छोटे-से घरों में से एक – में रहता था, जिनके कारण इस मुहल्ले का यह नाम पड़ा था।

शुल्गा ने खिड़की को खटखटाया। एक युवा स्त्री ने दरवाज़ा खोला। वह मोटी थी और उसका नाक-नक़्शा जिप्सियों जैसा था। देखने में वह चुस्त नहीं लगती थी, हालाँकि पोशाक वह बढ़िया पहने हुई थी। शुल्गा ने कहा कि इधर से गुज़रते समय उसने सोचा कि ग्नातेन्को से मिलता चले तो बेहतर होगा।

सो, दो पुराने साथी – मत्वेई शुल्गा और इवान ग्नातेन्को – फिर मिले और वे झोपड़ी के पीछे स्तेपी के एक खड्ड में उतरकर बातें करने लगे। वे दूसरों की नज़र से बचना चाहते थे। उनकी बातचीत तोपों की गरज के बीच चलती रही।

इवान कोन्द्रातोविच ग्नातेन्को खनिकों की उस पीढ़ी से था, जो दोनेत्स खानों का संस्थापक कहलाने का दावा कर सकती थी। उसके पिता और दादा, जो जन्म से उक्राइनी थे, आख़िरी साँस तक खनिज का काम करते रहे थे और उन्हीं जैसे व्यक्तियों ने दोनबास का विकास किया था, उसके गौरव और परम्परा का संरक्षण किया था और 1918-19 में 'खनिज रक्षकों के दस्ते' की स्थापना की थी, जिसने दोनबास में जर्मन हमलावरों और 'श्वेत गार्ड्स' के दाँत खट्टे कर दिये थे।

यह वही इवान कोन्द्रातोविच था, जिसने खानों के डाइरेक्टर अन्द्रेई वाल्को, और ग्रिगोरी शेव्त्सोव के साथ खान 1 (बी) को उड़ा दिया था।

जब वह खड्ड में शुल्गा से बातें कर रहा था, तो पश्चिम में सूरज का लाल चक्का डूबने को हो रहा था।

"क्या तुम्हें मेरे आने का कारण मालूम है, कोन्द्रातोविच?"

"कह नहीं सकता, मत्वेई कोन्स्तान्तीनोविच, लेकिन अनुमान लगा सकता हूँ," बिना उसकी ओर देखे कोन्द्रातोविच ने उदास स्वर में कहा।

स्तेपी से आती हवा के झोंके खड्ड में खड़े वृद्ध कोन्द्रातोविच की जैकेट को फड़फड़ा रहे थे। जैकेट की काट और अनगिनत पैबन्दों को देखते हुए ज़ाहिर था कि यह जैकेट बाबा आदम के ज़माने से पहनी जाती रही होगी। यह जैकेट उसकी सिकुड़ी ठठरी पर इस तरह लग रही थी, मानो वह सलीब पर पहना दी गयी हो।

"मैं यहाँ वही काम करने के लिए रह गया हूँ, जो हम 1918 में किया करते थे और यही वजह है कि मैं तुम्हारे पास आया हूँ," शुल्गा बोला।

"तुम जो भी चाहोगे, मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। मैं अपनी जान तुम्हारे हाथों सौंप दूँगा। यह तुम जानते हो, मत्वेई कोन्स्तान्तीनोविच," कोन्द्रातोविच ने शुल्गा की ओर देखे बिना कहा। वह धीमी, फुसफुसाहट की-सी आवाज़ में बोल रहा था। "किन्तु मैं तुम्हें अपने घर के अन्दर नहीं रख सकता।"

बूढ़े खनिक की बात सुनकर शुल्गा हक्का-बक्का-सा रह गया। उसे कुछ नहीं सूझ रहा था कि उसका क्या जवाब दे। और वह कई क्षणों तक निश्चल और निःशब्द रह गया। कोन्द्रातोविच ने भी चुप्पी साध ली थी।

"यह मेरा ख़्याल सही है कि तुम मुझे अपने घर ठहराने से इनकार करते हो, कोन्द्रातोविच?" शुल्गा ने नरमी से पूछा, हालाँकि दोनों में से कोई भी एक दूसरे की ओर नहीं देख रहा था।

"मैं इनकार नहीं कर रहा हूँ, मैं मजबूर हूँ," बूढ़े ने उदासी से कहा।

कुछ देर तक दोनों आँखें फेरे ख़ामोश खड़े रहे।

"क्या तुमने हाँ नहीं की थी?" शुल्गा ने पूछा। उसका क्रोध भीतर ही भीतर सुलग उठा था।

बूढ़े ने सिर झुका लिया।

"तुम जानते थे कि तुम कैसी जोखिम मोल ले रहे हो?"

कोन्द्रातोविच ने कोई जवाब नहीं दिया।

"इसका मतलब है ग़द्दारी, विश्वासघात समझे?"

"मत्वेई कोस्तियेविच," बूढ़े ने गम्भीर, खसखसी आवाज़ में कहा।

"ऐसी बात न कहो, जिसके लिए तुम्हें बाद में पछताना पड़े!" उसके लहजे में धमकी का पुट था।

"मुझे किसी का डर नहीं है," शुल्गा ने क्रोध से भभकते हुए कहा। उसने कोन्द्रातोविच के मुरझाये चेहरे की ओर देखा, जिस पर छोटी-सी दाढ़ी तम्बाकू के धुएँ से पीली हो गयी थी। उसकी आँखों में ख़ून उतर आया। "अब मैं क्यों डरूँ? जो कुछ अभी-अभी तुमने कहा है, भला उससे भी बढ़कर डरावनी कोई बात हो सकती है!"

"ज़रा ठहरो," कोन्द्रातोविच ने अपना सिर उठाया; उसने अपने टूटे नाख़ूनोंवाले सशक्त पंजे से शुल्गा की कोहनी पकड़ ली। "तुम मुझ पर विश्वास करते हो?" उसने गम्भीर पर बड़ी धीमी आवाज़ में पूछा।

शुल्गा ने बोलना चाहा, लेकिन बूढ़े ने उसकी कोहनी और ज़ोर से दबा दी। फिर अपनी पैनी आँखें उस पर जमाते हुए अनुनयभरे स्वर में फुसफुसाया :

"ठहरो... मेरी बात सुनो..."

वे अब एक दूसरे की आँखों में देख रहे थे।

"मैं अपने बड़े बेटे के कारण तुम्हें अपने घर के अन्दर नहीं रख सकता। मुझे डर है कि वह तुम्हारा भण्डा-फोड़ कर देगा," वह भर्रायी आवाज़ में फुसफुसाया और अपना चेहरा शुल्गा के चेहरे के बिलकुल क़रीब ले गया। "तुम्हें याद है, तुम यहाँ 1929 में आये थे? उस समय मैंने और मेरी बुढ़िया ने अपनी शादी की रजत जयन्ती मनायी थी। मैं नहीं सोचता कि तुम्हें हमारे सब बच्चों की याद होगी, हो भी कैसे. .." एक कटु-सी मुसकान बूढ़े के होंठों पर झलकी। "लेकिन तुम्हें मेरा सबसे बड़ा बेटा तो याद ही होगा – 1918 का ज़माना याद करो..."

शुल्गा कुछ नहीं बोला।

"वह बिगड़ गया है," कोन्द्रातोविच ने फुसफुसाकर कहा। "तुम्हें याद है, 1929 में उसकी बाँह कट गयी थी?"

शुल्गा को कुछ-कुछ याद हो आया। उसने 1918 में कोन्द्रातोविच के घर में एक युवक को देखा था। सुस्त चाल-ढाल, नाक-भौं चढ़ाये रहने-वाला एक चिड़चिड़ा-सा युवक था वह। लेकिन उसे याद नहीं कि 1929 में जिन युवकों को वह कोन्द्रातोविच के घर में देख चुका था, उनमें से वह 1918 वाला और बिना बाँहवाला युवक कौन था। उसे उस संध्या की बातें ठीक से याद नहीं थी। उनकी याद बहुत ही धुँधली थी। शायद इसका कारण यह है कि वह उस साँझ कोन्द्रातोविच से किसी ज़रूरी काम से मिला था। वह ख़ास शाम उन शामों में से एक थी, जिन्हें वह बहुत-से व्यक्तियों के साथ भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में बिता चुका था, पर कर्तव्य की भावना से अनुप्राणित होकर।

"वह लुगांस्क के एक कारख़ाने में मशीन चलाते वक़्त अपनी बाँह गँवा बैठा था।" बूढ़े ने वोरोशीलोवग्राद का पुराना नाम लिया, इसलिए शुल्गा ने समझा कि इस दुर्घटना को हुए बहुत साल बीत चुके हैं। "वह सीधे घर लौट आया और उस दिन से हम पर आश्रित है। उम्र अधिक हो जाने के कारण वह पढ़ना-लिखना भी शुरू नहीं कर सकता था और न ही उस वक़्त हमने इसके बारे में सोचा था। अपाहिज हो जाने के कारण उसे अपने पेशे में काम भी न मिल सकता था। इसलिए वह बुरी लतों की और झुकता गया। वह मेरे पैसों से दारू पीने लगा। मैं बराबर उसके साथ नरमी से पेश आता रहा। कोई लड़की उससे शादी करने को तैयार नहीं होती थी, इसलिए वह और भी ज्यादा पीने लगा। और तब 1930 में वह छोकरी, जिसे तुमने दरवाज़े पर देखा था, इसके गले पड़ गयी। उसने मेरे बेटे को अपनी चंगुल में फँसा लिया और वे कालाबाज़ारी करने लगे। वह चोरी-चोरी एक शराबख़ाना चलाती थी।

तुम्हें अपना समझकर यह सब बता रहा हूँ – उन्हें चोरी का माल ख़रीदने-बेचने में भी झिझक नहीं होती है। पहले तो मुझे अपने बेटे पर दया आती थी, लेकिन बाद में मैं बदनामी से डरने लगा। बुढ़िया और मैंने ख़ामोश रहने का फ़ैसला किया। हमने अपने सगे बच्चों तक को यह बात नहीं बतायी। अब भी मुँह बन्द रखे है। उस पर सोवियत शासन में दो बार मुक़दमा चल चुका है। सारा दोष उस डायन का है, लेकिन दोनों बार सारा क़सूर इसी ने अपने मत्थे ले लिया। तुम्हें क्या बताऊँ... जजों को मालूम है कि मैं एक पुराना छापेमार सैनिक और अग्रणी खनिक हूँ तथा जाना-माना व्यक्ति हूँ। इसलिए पहली बार तो उसे चेतावनी देकर छोड़ दिया गया और दूसरी बार ख़ास शर्तों पर रिहा किया गया। लेकिन दिन पर दिन उसका और भी पतन होता जा रहा है। तुम मुझ पर विश्वास करते हो? मैं तुम्हें अपने घर कैसे ले जा सकता हूँ? अपने रास्ते का काँटा हटाने के लिए वह हम बूढ़ों को भी धोखा दे सकता है, ताकि घर उसे मिल जाये।" गहरी लज्जा से कोन्द्रातोविच ने शुल्गा की ओर से मुँह फेर लिया।

"लेकिन तुमने हाँ कैसे की, जब यह सब कुछ तुम्हें मालूम था?" शुल्गा ने पूछा। वह उद्विग्न हो उठा था। उसने कोन्द्रातोविच के व्यग्र चेहरे की ओर देखा और सोचने लगा कि उस पर विश्वास करे या न करे। उसने अचानक महसूस किया कि अभी जिस अजीबोग़रीब स्थिति में वह आ गिरा है, उसमें उसका विवेक जवाब दे रहा है कि किस पर विश्वास करे और किस पर न करे।

"मैं इनकार कैसे कर सकता था, मत्वेई?" कोन्द्रातोविच ने पीड़ाभरे स्वर में कहा। "ज़रा सोचो, क्या इवान ग्नातेन्को कभी सहसा इनकार कर सकता था? कितनी शर्म की बात होती! इस विषय पर बातचीत हुए भी एक ज़माना हो चुका है। मुझसे इस ढंग से पूछा गया : इसकी शायद ज़रूरत न पड़े, लेकिन अगर पड़ जाये, तो अपनी सहमति दे दोगे न? यह मेरी कठिन परीक्षा थी। उस वक़्त मैं अपने बेटे के बारे में कैसे बता सकता था? वे लोग समझते कि मैं बीच में पड़ना नहीं चाहता हूँ। और मेरे बेटे को जेलख़ाने में ठूँस दिया जाता। है तो आख़िर वह मेरा ही बेटा!" बूढ़ा निराशा की पराकाष्ठ पर पहुँचकर कह उठा। "तुम जो चाहो सो मेरे साथ करो! तुम मुझे जानते हो – मैं मरते दम तक मुँह बन्द किये रह सकता हूँ। मैं मौत से नहीं डरता। मैं तुम्हारा किसी भी काम में साथ देने को तैयार हूँ। मैं तुम्हारे लिए कोई सुरक्षित स्थान खोज निकालूँगा। मैं कुछ भले लोगों को जानता हूँ। मैं ऐसे लोगों को ढूँढ़ निकालूँगा, जिन पर तुम विश्वास कर सकते हो, मेरा यक़ीन करो। उस दिन ज़िला समिति की बैठक में मेरे मन में यह विचार उठा था : मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूँ, पर जहाँ तक मेरे बेटे का सवाल है, मैं पार्टी समिति में तो अपने बेटे के बारे में

नहीं बता सकता था न! मेरा ज़मीर साफ़ है, मेरे लिए सबसे बड़ी बात यही है कि तुम मुझ पर विश्वास करो। मैं तुम्हारे लिए कहीं और जगह का बन्दोबस्त कर दूँगा," कोन्द्रातोविच के बोलने के अन्दाज़ में चापलूसी के चिह्न झलकने लगे थे।

"मुझे तुम पर विश्वास है," शुल्गा ने कहा। लेकिन यह पूर्णतया सच नहीं था। उसे बूढ़े पर विश्वास था, लेकिन पता नहीं उसका विश्वास क्यों डगमगा रहा था। उसे सन्देह था। उसने स्वीकारात्मक उत्तर इसलिए दे दिया था, क्योंकि उस समय बूढ़े के लिए यही हितकर था।

कोन्द्रातोविच की मुख-मुद्रा अचानक बदल गयी। उसके चेहरे पर कोमलता छा गयी। वह अपना सिर झुकाकर कुछ क्षण तक चुपचाप नाक सुड़कता रहा।

शुल्गा बूढ़े की ओर देखता हुआ उसकी हर बात को मन ही मन तौलता रहा। वह जानता था कि कोन्द्रातोविच पर विश्वास किया जा सकता है। वह केवल यह नहीं जानता था कि क्रोन्द्रातोविच ने पिछले बारह साल की ज़िन्दगी किस तरह बितायी है, उसकी यह ज़िन्दगी कैसी रही है। और ये वर्ष पूरे देश के लिए कितने महत्वपूर्ण रहे हैं! दूसरी तरफ़ कोन्द्रातोविच ने इतने महत्वपूर्ण अवसर पर अपने बेटे की हरकतों पर पर्दा डाल दिया। और अपने घर को जर्मनों के विरुद्ध गुप्त कार्य का अड्डा बनाये जाने के बारे में झूठ बोल दिया... वह दुविधा में पड़ा रहा। उसका मन कोन्द्रातोविच पर पूरा विश्वास करने के लिए गवाही न देता था।

"तुम यहाँ बैठो या लेटना चाहो तो लेटे रहो, मैं तुम्हारे खाने के लिए कुछ ले आता हूँ," कोन्द्रातोविच ने फुसफुसाते हुए कहा। "इसके बाद मैं तुम्हारे लिए जगह की तलाश में निकलूँगा। मुझे एक जगह मालूम है। सब ठीक-ठाक हो जायेगा।"

एक सेकेण्ड के लिए ऐसा लगा कि शुल्गा यह सुझाव मान लेगा। लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी अन्तरात्मा ने जैसे उसे सचेत किया और व्यावहारिक अनुभव ने उसे चेतावनी दी कि हर काम में भावुक होना उचित नहीं है।

"नहीं, नहीं। मेरे लिए और भी बहुत-सी जगहें हैं। मैं वहीं चला जाऊँगा," उसने बूढ़े का सुझाव टालते हुए कहा। "मैं अभी खाना भी नहीं चाहता। उस औरत के और तुम्हारे बेटे के मन में सन्देह पैदा करने से बेहतर है कि मैं कुछ देर बिना खाये ही रुक जाऊँ।"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," कोन्द्रातोविच ने निराशाभरी आवाज़ में कहा। "लेकिन मुझे पराया नहीं समझना। शायद अभी भी मैं तुम्हारे कोई काम आ सकूँ।"

"यह मुझे मालूम है, कोन्द्रातोविच," शुल्गा ने बूढ़े को दिलासा देने के लिए कह दिया।

"और चूँकि तुम मुझ पर विश्वास करते हो, इसलिए बताओ कि कहाँ जा रहे

हो और मैं तुम्हें बताऊँगा कि वह आदमी अच्छा है या नहीं, तुम्हारा जाना वहाँ उचित है या नहीं। इसके अलावा कभी ज़रूरत पड़ने पर मैं तुम से मिल भी सकूँ..."

"तुम्हें यह बताने का मुझे कोई अधिकार नहीं है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। तुम ख़ुद एक पुराने छापेमार और गुप्त कार्यकर्ता हो। हमारे क़ायदे-क़ानून तुम जानते ही हो," शुल्गा ने चालाकी से मुस्कुराते हुए कहा। "मैं अपने किसी परिचित के यहाँ जा रहा हूँ।"

कोन्द्रातोविच मानो कहना चाहता था कि मैं भी तो तुम्हारा परिचित हूँ, लेकिन मेरे बारे में तुम कितना कम जानते हो! बेहतर होता कि तुम अभी मुझसे सलाह-मशविरा कर लेते। लेकिन मत्वेई कोस्तियेविच के मुँह पर ऐसा कहने की हिम्मत वह नहीं जुटा पाया।

आख़िर उसकी समझ में यह बात आ गयी कि शुल्गा को उस पर विश्वास नहीं है। बूढ़े ने इसलिए उदास भाव से कहा : "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।"

"अच्छा, कोन्द्रातोविच, अब मुझे चलना चाहिए!" शुल्गा ने कृत्रिम उत्साह के साथ कहा।

मुँह दूसरी ओर फेरते हुए बूढ़े ने दोहराया: "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।"

वह झोपड़ी पार कर शुल्गा को सड़क की ओर ले जानेवाला था, लेकिन हठात् शुल्गा ठिठककर बोला :

"अच्छा होता, यदि तुम मुझे बगीचे से होकर ले जाते, ताकि मुझे... वह डायन न देख पाती," और वह व्यंग्यपूर्वक मुस्कुरा दिया।

कोन्द्रातोविच कहना चाहता था : "चूँकि तुम्हें क़ायदे-क़ानून मालूम हैं, इसलिए तुम्हें यह जानना चाहिए कि जिस रास्ते से तुम आये हो उसी से वापस भी जाना होगा। तभी किसी को ऐसा सन्देह नहीं होगा कि तुम गुप्त कार्यों के सम्बन्ध में बूढ़े ग्नातेन्को से मिलने आये थे।" किन्तु वह समझ गया था कि उस पर विश्वास नहीं किया जा रहा है, इसलिए उसने कुछ भी कहना बेकार समझा। वह शुल्गा को बगीचे से होकर एक छोटी सड़क तक ले गया। जब वे नुक्कड़ पर एक कोयला-घर के पास पहुँचे तो दोनों रुक गये।

शुल्गा ने पूर्ण निराश भाव से कहा : "विदा, कोन्द्रातोविच, मैं फिर तुमसे मिलूँगा।"

बूढ़े ने उत्तर दिया : "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।"

शुल्गा सड़क पर चल पड़ा और कोन्द्रातोविच कोयला-घर के पास खड़ा शुल्गा को देखता रहा। वह अपनी पुरानी जैकेट में सिकुड़ा-सिमटा-सा लग रहा था।

मृत्यु की ओर शुल्गा का यह दूसरा क़दम था।

अध्याय 16

सेर्गेई त्युलेनिन, उसकी बहन नाद्या, उसका मित्र वीत्या और बूढ़ी नर्स लूशा कुछ ही घण्टों के अन्दर क़रीब सत्तर घायल सैनिकों के लिए नगर के विभिन्न भागों में जगह खोजने में सफल हो गये। इसके बावजूद और चालीस सैनिकों का कोई ठिकाना निश्चित नहीं किया जा सका था। न सेर्गेई जानता था, न नाद्या, न वीत्या, न लूशा और न ही वे लोग, जिन्होंने उनकी मदद की थी, कि किसके पास जाकर हाथ जोड़ें। क्योंकि वे पूरी कार्रवाई के नष्ट होने की जोखिम मोल लेने से कतरा रहे थे।

वह सपने की तरह एक विचित्र दिन था। एक दिन पहले रास्ते में चलती-फिरती फ़ौजी टुकड़ियों की धमक और स्तेपी में गोलाबारी की आवाज़े शान्त हो चुकी थीं। नगर और उसके चारों ओर की स्तेपी पर अजीब ख़ामोशी छायी थी। जर्मनों के किसी भी क्षण आ धमकने की आशंका थी। किन्तु उनका कोई चिह्न नहीं दिखायी पड़ रहा था। दफ़्तरों की इमारतों और दूकानों के दरवाज़े खुले पड़े थे, न तो कोई उनमें घुसता था और न बाहर ही निकलता था। कारख़ाने शान्त और वीरान, ध्वस्त खानों के ऊपर धुएँ की एक परत लटक रही थी। नगर में किसी तरह के अधिकारी, कोई मिलिशियामैन नज़र नहीं आता था; किसी प्रकार का काम या कारोबार होता नहीं था – सब कुछ ठप्प था। सड़कें सुनसान थीं। कहीं-कहीं इक्की-दुक्की औरतें पानी के लिए नल या कुएँ की ओर या खीरे तोड़ लाने के लिए बगीचे की ओर दौड़ती दिखायी दे जाती थीं – और फिर शान्ति छा जाती थी, कोई नज़र नहीं आता था। घरों की चिमनियों से धुआँ नहीं निकल रहा था, क्योंकि किसी के घर खाना नहीं पक रहा था। यहाँ तक कि कुत्ते भी चुप थे, क्योंकि कोई ऐसा व्यक्ति न था जो उनके पास से गुज़रकर उनकी नींद में बाधा डाले। कभी-कभी कोई बिल्ली दौड़कर सड़क पार कर जाती और फिर सन्नाटा छा जाता।

19 जुलाई की रात को घरों में घायलों के लिए जगह का बन्दोबस्त किया गया। सेर्गेई तथा वीत्या ने इसमें हिस्सा नहीं लिया था। वे रात के इस अँधेरे का लाभ उठाकर आग लगानेवाली बोतलें सेन्याकी से शंघाई मुहल्ले में पहुँचाते रहे। इनमें से अधिकांश बोतलें वे खड्ड की झाड़ियों के नीचे गाड़ते रहे, किन्तु कुछ बोतलें वे अपने घर भी ले गये। उन्हें सब्ज़ी की बाड़ी में छिपा दिया, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे उनके पास ही रहें।

किन्तु जर्मनों को क्या हो गया था?

सुबह के वक़्त सेर्गेई नगर के बाहर स्तेपी में था। गुलाबी-भूरे कुहरे की ओर

से सूरज ने अपना विशाल सिर उठाया। थोड़ी देर बाद वह कुहरे के ऊपर उठा और उसकी किरणें तेज़ हो चलीं। अनगिनत ओस-कण भाँति-भाँति के रंगों की छटाएँ बिखेरते हुए झिलमिलाने लगे। जहाँ-तहाँ अपने नुकीले सिर ताने मिट्टी के काले ढेरों ने गुलाबी आभा में चमकना शुरू कर दिया। सेर्गेई के इर्द-गिर्द की सारी वस्तुएँ थिरकती और ज़िन्दगी से धड़कती जान पड़ती थीं। वह अपने को उछलते गेंद की तरह हल्का और उमंगता महसूस कर रहा था।

यहाँ पर सड़क और रेलवे लाइन कभी एक दूसरे से दूर, तो कभी नज़दीक होती समानान्तर दौड़ती चली जाती थीं। दोनों ऊँची सतह पर थीं। उनके अग़ल-बग़ल छोटी-छोटी पहाड़ियाँ थीं और पहाड़ियों के बीच खड्ड। ये पहाड़ियाँ स्तेपी की ओर ढलवाँ होती हुई काफ़ी दूर जाकर विलीन हो जाती थीं। पहाड़ियों और खड्ड झाड़ियों और तरह-तरह के पेड़ों से भरे थे। इस पूरे इलाक़े को लोग वेर्ख़्नेदुवान्नाया कुंज कहते थे।

ऊपर चढ़ता सूरज आग उगलने लगा था। सेर्गेई ने अपने चारों ओर नज़र दौड़ायी। उसके सामने पूरा का पूरा नगर पहाड़ों और घाटियों के बीच बिखरा हुआ था। खानों के मुँह के पास तथा 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट और ज़िला कार्यकारिणी समिति के इर्द-गिर्द की इमारतें काफ़ी घनी थीं। पहाड़ियों पर खड़े वृक्षों के शिखर सूरज की रोशनी में चमकने लगे थे, लेकिन घनी झाड़ियों और पेड़ों की मोटी चादर ओढ़े खड्डों को सूरज की किरणें अभी ठीक से छू नहीं पा रही थीं। वहाँ अभी भी शीतलता थी। धूप में रेलवे लाइनें चमक रही थीं और दूर जाकर एक पहाड़ी के पीछे विलीन हो गयी थीं, जहाँ पर, वेर्ख़्नेदुवान्नाया स्टेशन की दिशा में, धुएँ का छोटा-सा, गोल, सफ़ेद बादल आसमान की ओर शान्ति से उठता जा रहा था।

तभी अचानक पहाड़ी की ठीक चोटी के पास, जहाँ सड़क विलीन हो गयी थी, धुआँ-सा उठा और वह फैलते-फैलते गहरे काले रंग की पतली धारी में बदल गया। कुछ ही क्षणों में वह धारी क्षितिज से अलग होकर सेर्गेई की ओर ठोस, काले और घने पिण्ड के रूप में उतरने लगी। वह अपने पीछे लाल-बादामी रंग की धूल का बादल उड़ाती आ रही थी। इससे पहले कि वह उस अजीबोग़रीब चीज़ का आँखें गड़ाकर पता लगा सके, स्तेपी के पार से घड़घड़ की आवाज़ सुनायी पड़ी। सेर्गेई समझ गया कि मोटर-साइकिलों का दस्ता बढ़ता चला आ रहा है।

वह सड़क से नीचे उतरकर झाड़ियों में घुस गया और पेट के बल ज़मीन से चिपककर इन्तज़ार करने लगा। पन्द्रह मिनट बीतते न बीतते मोटर-साइकिलों की घरघराहट से वायुमण्डल गूँज उठा और टामी-गनों से लैस बीस-पच्चीस जर्मन सैनिक हवा से बातें करते गुज़रने लगे। जहाँ वह छिपा था : वहाँ से सैनिकों के शरीरों का केवल ऊपरी हिस्सा दिखायी पड़ता था : वे फ़ौजी टोपियाँ और जर्मन फ़ौज की मटमैली

वर्दियाँ पहने थे। उनकी आँखें, ललाट और आधी नाक विशाल, काले चश्मों के नीचे छिपी थीं। दोनेत्स स्तेपी में अचानक प्रगट हुए इन व्यक्तियों का यह हुलिया बड़ा विचित्र लगता था।

नगर के छोर पर खड़े मकानों के पास पहुँचकर वे रुक गये और अपनी मोटर-साइकिलों से उतरकर बग़ल की गलियों में घुस गये। तीन-चार जने मोटर-साइकिलों के पास ही रुके रहे। दस मिनट के अन्दर वे लौट आये और एक-एक करके फिर मोटर-साइकिलों पर सवार होकर सरपट नगर के भीतर बढ़ गये।

वे मकानों के पीछे सेर्गेई की आँखों से ओझल हो गये, लेकिन सेर्गेई जानता था कि यदि वे नगर के केन्द्र में स्थित पार्क की ओर गये, तो दूसरे क्रासिंग के पास ऊँची सतह पर वे फिर आयेंगे। वह उसी ऊँची सतह पर अपनी आँखें गड़ाये रहा। शीघ्र ही तीन-चार जर्मन सैनिक वहाँ दिखायी दिये। वे पार्क की तरफ़ नहीं, बल्कि पहाड़ी की ओर मुड़ गये, जहाँ ज़िला कार्यकारिणी समिति और 'पागल रईस' के मकान खड़े थे। कई मिनटों के बाद वे फिर क्रासिंग की ओर लौटे, और तब सेर्गेई ने देखा कि नगर के छोर के मकानों के पास से गुज़रते हुए पूरे के पूरे दस्ते ने वेर्ख़्नेदुवान्नाया की राह ली है। वह ज़मीन से फिर चिपक गया और मोटर-साइकिलों का दल उसके पास से गुज़रकर दूर चले जाने तक लेटा रहा। इसके बाद वह पेड़ों और झुरमुटों से ढँकी एक पहाड़ी पर चढ़ने लगा, जहाँ से वेर्ख़्नेदुवान्नाया पूरा नज़र आता था। वह वहाँ कई घण्टों तक एक पेड़ के नीचे पड़ा रहा। सूरज की जलती किरणें उसे खोज-खोजकर झुलस रही थीं और गर्मी से बचने के लिए वह कभी इस पेड़ के साये में रेंग रहा था, तो कभी उस पेड़ के साये में।

झाड़ियों में भनभनाती हुई मधुमक्खियाँ और भौंरे जुलाई के ग्रीष्मकालीन फूलों का रस चूसने और पेड़-पौधों के कीड़े-मकोड़ों द्वारा पत्तियों के पीछे छोड़ी लसलसी बूँदें चुराने में व्यस्त थे। खुली स्तेपी की हर चीज़ मुरझा और सूख गयी थी, लेकिन यहाँ की घनी हरियाली से ताज़गी बनी हुई थी। रह-रहकर हवा के हल्के झोंके पत्तियों को सरसरा देते। आसमान की ऊँचाई पर और धूप के उजाले में नन्हे-नन्हे बादल अठखेलियाँ कर रहे थे।

सेर्गेई के अंग-संग में अलसाहट और सुस्ती छा गयी। उसका दिलो-दिमाग़ बुझा-बुझा-सा लगने लगा। वह क्षण भर के लिए भूल बैठा कि वह वहाँ आया किस लिए है। उसके सामने शान्त स्निग्ध वायुमण्डल में अपने बचपन की मधुर स्मृतियाँ नाच उठीं – स्तेपी में कहीं नरम घास पर आँखें बन्द किये इसी तरह घण्टों पड़े रहना, सूरज का उसके शरीर को गरमाना, मधुमक्खियों का इसी तरह भनभनाना, गर्म घास की इसी गन्ध का उसकी नाक को सुरसुराना। तब सारा संसार कितना प्यारा,

लुभावना, पारदर्शक और शाश्वत लगता था! उसकी आँखों के सामने नीले आसमान की पृष्ठभूमि पर धड़धड़ाती मोटर-साइकिलों की क़तार प्रकट हुई। मोटर-साइकिलों पर विशाल काले चश्मे लगाये वही सैनिक जमे हुए थे। तभी सेर्गेई को यह महसूस हो गया कि बचपन की वह शान्त, स्वच्छन्द अनुभूतियाँ, प्रसन्नता और सुख के दुर्लभ क्षण फिर नहीं लौटेंगे। यह सोचते-सोचते उसके दिल में कभी मीठा, तो कभी कड़वा दर्द महसूस होने लगा। अब उसका रोम-रोम शत्रु के विरुद्ध लड़ने की एक बर्बर प्रेरणा से सुलग उठा।

दिन का तीसरा पहर होने को था, तभी एक बार फिर धुएँ का वह लम्बा, काला तीर दूर की पहाड़ी की चोटी पर उठता नज़र आया। उसके साथ-साथ क्षितिज पर धूल की घनी तह भी फैलती गयी। मोटर-साइकिल सवार सैनिकों की एक लम्बी, अनन्त क़तार दिखायी पड़ी। उनके पीछे-पीछे सैकड़ों, हज़ारों लारियाँ और लारियों के बीच अफ़सरों की जीप गाड़ियाँ भी थीं। पहाड़ी के पास से लारियों की अनन्त क़तार धूप में चमकते, गरजते-फुफकारते हरे दानव की तरह रेंगती चली आ रही थी। दानव का सिर सेर्गेई के क़रीब होता गया, लेकिन उसकी पूँछ अभी भी दिखायी नहीं दे रही थी। धूल के बादल ने सड़क को ढँक लिया और इंजनों की घरघराहट से पृथ्वी और आसमान गूँज रहे थे।

जर्मन क्रास्नोदोन की ओर बढ़े चले आ रहे थे। सबसे पहले उन पर सेर्गेई की नज़र पड़ी।

वह बिल्ली की तरह सरकते, फिसलते, रेंगते और दौड़ते हुए सड़क पर पहुँचा, वहाँ से रेल-लाइन पार करके खाई में उतर गया, और उसने खाई के साथ चलते हुए रेलवे बाँध के पार पहुँचकर दम लिया, जहाँ जर्मन सैनिकों को वह नज़र नहीं आ सकता था।

जर्मनों के पहुँचने से पहले ही उसने ऐसी जगह पर अपना अड्डा जमा लेने की ठान ली थी, जहाँ से वह उनकी गतिविधियों पर नज़र रख सके। इसके लिए सबसे उपयुक्त जगह पार्क में गोर्की स्कूल की छत हो सकती थी।

एक वीरान पड़ी खान के ख़ाली अहाते का चक्कर लगाते हुए वह पार्क के पीछे उस सड़क पर पहुँच गया जो देरेव्यान्नाया सड़क के नाम से मशहूर थी। यह सड़क नगर से अलग थी और अपने प्रारम्भिक काल से अब तक उसमें कोई तबदीली नहीं आयी थी।

यहाँ उसने एक इतना अद्भुत दृश्य देखा कि वह आश्चर्य से ठिठक गया। सतर्क और निःशब्द वह देरेव्यान्नाया सड़क से सटे मकानों के बगीचों के पिछवाड़े से होकर जा रहा था कि उसकी नज़र एक बगीचे में उस लड़की पर पड़ी, जिससे

वह संयोगवश दो दिन पहले रात को स्तेपी में लारी में मिला था।

लड़की कोई पाँच गज़ की दूरी पर बबूल वृक्ष के नीचे घास पर ही एक धारीदार कम्बल बिछाकर लेटी थी। सेर्गेई उसके चेहरे को बग़ल से देख सकता था। लड़की अपना सिर तकिए पर लगाये और स्लीपर पहने सँवलाये पाँवों को एक दूसरे पर रखे कोई किताब पढ़ रही थी – अपने ईर्द-गिर्द की दुनिया से बिलकुल बेपरवाह, बेख़बर। उसकी एक सुनहरी, मोटी चोटी तकिए पर फैली थी। उसका चेहरा धूप से तपा था, बरौनियाँ काली थीं और ऊपरी होंठ दर्प से उठा हुआ था... हाँ, उधर हजारों लारियाँ, पूरी की पूरी जर्मन फ़ौज इंजनों की घड़घड़ाहट से ज़मीन-आसमान को कँपाती तथा पेट्रोल के धुएँ की बू से वायुमण्डल को दूषित करती क्रोस्नोदोन की ओर बढ़ती आ रही थी, इधर यह लड़की बगीचे में कम्बल पर लेटी अपने सँवलाए, महीन रोएँदार हाथों में किताब थामे उसके पन्नों में खोयी थी।

सेर्गेई ने अपनी छाती से ज़ोर से निकल रही साँस पर क़ाबू पाने की कोशिश की। वह दोनों हाथों से बाड़े को पकड़े हुए मुग्ध और प्रसन्न भाव से कई मिनट तक उस लड़की को देखता रहा। सृष्टि के अस्तित्व के दौरान आये एक ऐसे मनहूस दिन बगीचे में लेटी और किताब के पन्नों में खोयी यह लड़की स्वयं जीवन जैसी अति सरल और मोहक लगी।

अपना सारा साहस बटोरकर सेर्गेई बाड़ा लाँघकर तत्क्षण लड़की के पायताने खड़ा हो गया। लड़की ने किताब बग़ल में रख दी और काली बरौनियोंवाली उसकी सुखद आँखें आश्चर्य के साथ सेर्गेई के चेहरे पर गड़ गयीं।

मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स बच्चों को क्रास्नोदोन वापस ले आयी। पूरा का पूरा बोर्त्स परिवार – ख़ुद मरीया अन्द्रेयेव्ना, उसका पति, बेटियाँ वाल्या और बारह बरस की ल्यूस्या – सब के सब पौ फटने तक जागते रहे।

वे ढिबरी की रोशनी में मेज़ के इर्द-गिर्द मेहमानों जैसे एक दूसरे के आमने-सामने सटकर बैठे थे। नगर का बिजलीघर सत्रह तारीख़ को ही बन्द कर दिया गया था। जो ख़बर उन्होंने एक दूसरे को सुनायी थी, वह एक मामूली बात होने के बावजूद बहुत भयानक और ख़ौफ़नाक भी थी। घर में, सड़क पर और पूरे नगर में छाये सन्नाटे में वे उसके बारे में बात तक करने में हिचकिचा रहे थे। यहाँ से चले जाने के लिए भी समय नहीं रह गया था, काफ़ी देर हो चुकी थी। पर यहाँ रुके रहने के ख़्याल तक से उनका दिल दहल उठता था। सब के सब, यहाँ तक कि ल्यूस्या भी, यही महसूस कर रहे थे कि कोई असुधार्य बात हो गयी है। ल्यूस्या का चेहरा पीला पड़ गया था और बड़ी-बड़ी आँखें गम्भीर हो गयी थीं। वाल्या के बालों की तरह उसके भी बात

सुनहरे थे, केवल उसका रंग कुछ अधिक हल्का था।

ख़ास तौर से पिता की हालत बहुत दयनीय थी। वह चुपचाप बैठा एक के बाद दूसरे काग़ज के टुकड़े पर सस्ता तम्बाकू रखकर सिगरेटें बनाकर पी रहा था। बच्चों के लिए उन दिनों की कल्पना भी मुश्किल था, जब उनका पिता उन्हें स्फूर्त्ति और शक्ति का अवतार और परिवार का संरक्षक प्रतीत हुआ करता था। वह दुबला-पतला, सिकुड़ा-सिमटा-सा वहाँ बैठा था। उसकी आँखें पहले से कमज़ोर थीं, लेकिन आख़िरी सालों में इतनी तेज़ी से आँखों की रोशनी घटती जा रही थीं कि वह अपने सबक़ भी तैयार करने में दिक़्क़त महसूस करने लगा था। मरीया अन्द्रेयेव्ना की तरह वह भी साहित्य का अध्यापक था और अधिकतर उसकी पत्नी उसके शिष्यों की कापियाँ देखा करती थी। उसकी आँखें लैम्प की रोशनी में बिलकुल बेकार रहतीं और वह मूर्तिवत टकटकी बाँधे देखता रहता।

उनके चारों ओर की हर चीज़ जानी-पहचानी और अपने पुराने क्रम में थी, फिर भी वह भिन्न लग रही थी। रंगीन मेज़पोशवाली खाने की मेज़; पियानो, जिसे वाल्या हर दिन बजाया करती थी; शीशे लगे दरवाज़ेवाली आलमारियाँ, जिनमें प्लेटें और रकाबियाँ करीने से रखी थीं; किताबों की खुली आलमारी – सब कुछ वैसा ही था, जैसा कि पहले था, इसके बावजूद वह अजीब-सा लग रहा था। वाल्या के बहुत-से प्रशंसक यह कहा करते थे कि वाल्या का घर आरामदेह और रोमांटिक है, और वाल्या जानती थी कि चूँकि वह इस घर में रहती है, इसलिए उसके चारों ओर की हर चीज़ में रोमांस का पुट आ जाता है। और अब यह सब उसके सामने नंग-धड़ंग-सा और रोमांसविहीन पड़ा था।

उन्हें लैम्प बुझाने में डर लग रहा था। वे एक दूसरे से जुदा होकर बिछावन पर जाने तथा अकेले अपने विचारों और भावनाओं में खो जाने से डर रहे थे। वे पौ फटने तक वहाँ ख़ामोश बैठे रहे – केवल घड़ी टिक-टिक करती रही। केवल सुबह जब उनके घर के सामने खड़ी टंकी से पानी लेने आये पड़ोसी का शोरग़ुल सुनायी पड़ा, तो उन्होंने लैम्प बुझा दिया और खिड़कियों की झिलमिलियाँ खोल दीं। वाल्या ने अपने कपड़े उतारते समय जानबूझकर शोरग़ुल करने की भरसक कोशिश की और सिर तक कम्बल ओढ़कर लेट गयी। शीघ्र ही उसकी आँख लग गयी। ल्यूस्या भी सो गयी। लेकिन मरीया अन्द्रेयेव्ना और उसका पति दोनों अभी भी ज्यों के त्यों बैठे रहे।

वाल्या प्यालियों की खनखनाहट से जग पड़ी। उसके माँ-बाप खाने के कमरे में चाय तैयार कर रहे थे। मरीया अन्द्रेयेव्ना समोवार जला रही थी। खिड़कियों से छनकर धूप अन्दर आ रही थी। वाल्या को अचानक रात की बातें याद आने लगीं और उसका मन खिन्न हो उठा।

इस तरह भावनाओं के साथ भटकना कितना खौफ़नाक है! आख़िर उसे इन जर्मनों से वास्ता ही क्या है? उसका अपना आत्मिक जीवन है। आशंका और भय से लोग सूख-सूखकर काँटा हो रहे हैं, तो होने दो, लेकिन वह – ओह, नहीं, कभी नहीं!

उसने बड़े शौक़ से अपने बाल गर्म पानी से धोये और चाय पी। उसके बाद उसने किताबों की आलमारी में से स्टीवनसन की कृतियों की एक जिल्द निकाली, जिनमें "अपहृत" और "कात्रिओना" भी थीं और तब बाग़ में बबूल वृक्ष के नीचे कम्बल बिछाकर पढ़ने में मग्न हो गयी।

चारों ओर निस्तब्धता छायी थी। उपेक्षित फूलों की क्यारियाँ और हरी घास से आच्छादित छोटा मैदान धूप में नहा रहे थे। भूरे रंग की एक तितली खिले फूल पर बैठी-बैठी अपने पंखों को फैला और समेट रही थी। बड़ी-बड़ी मधुमक्खियाँ भनभनाती एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ रही थीं। कई तनोंवाले इस पुराने, घने बबूल की छाया चारों ओर फैली हुई थी। उसके कहीं-कहीं पीले पड़ रहे पत्तों के बीच से नीला आसमान झाँक रहा था।

ऐसा प्रतीत हुआ मानो आसमान और सूरज, पत्तियों के हरे चंदवे, मधुमक्खियों और तितलियों का यह जीता-जागता, सलोना संसार पुस्तक में वर्णित साहस, पराक्रम, और वन्य प्रकृति, मानवी गुणों, सच्ची दोस्ती और शुद्ध प्रेम के काल्पनिक संसार के साथ घुल-मिलकर एक हो गया हो।

वाल्या रह-रहक किताब बग़ल में रखकर देर तक स्वप्निल आँखों से बबूल की डालियों के बीच से झाँकते आसमान की ओर ताक रही थी। वह क्या सपने देख रही थी? वह कह नहीं सकती थी। लेकिन इस ख़ूबसूरत बाग़ में पेड़ की घनी, शीतल छाया में लेटे रहने और किताब पढ़ते रहने में उसे कितना आनन्द आ रहा था, कितना सुख मिल रहा था!

"वे सब के सब चले गये होंगे," उसने सोचा। उसे अपने स्कूल के साथियों की याद हो आयी थी। "ओलेग भी चला गया होगा।" अपने माँ-बाप की तरह वह भी कोशेवोई परिवार को अच्छी तरह जानती थी। "हाँ, वे सब के सब वाल्या को भूल गये। और स्त्योपा – वह दिखायी क्यों नहीं देता? बड़ा दोस्त बनता था। कितनी क़समें खाता था, बातूनी कहीं का! यदि उसकी जगह वह लड़का होता, जो पिछली रात लारी पर चढ़ आया था... क्या नाम था उसका... त्युलेनिन – सेर्गेई त्युलेनिन. .. तो वह अपना वचन ज़रूर निभाता..."

उसके बाद उसने अपने को कात्रिओना समझना शुरू किया और लारी पर जो लड़का चढ़ आया था, उसे अपहृत, साहसी और बहादुर नायक। उस लड़के के बाल

शायद रूखे थे और उसकी इच्छा हुई थी कि वह उन्हें छूकर देखे। "लड़कियों जैसे कोमल, मुलायम बालोंवाला लड़का भी भला कोई लड़का होता है! लड़के के तो बाल रूखे होने चाहिए... ओह, यदि इन जर्मनों की मनहूस छाया हमारी धरती पर न पड़ी होती!" वह गहरी उदासी से सोचने लगी और किताबों की ख़याली दुनिया तथा धूप में नहाये बाग़, भूरे रंग की तितली और रोयेंदार मधुमक्खियों के सलोने संसार में खो गयी।

इस तरह उसने अपना सारा दिन काट दिया और अगली सुबह फिर वह कम्बल, तकिया और स्टीवनसन की किताब लेकर बाग़ में चली गयी। दुनिया में कुछ भी हो, उसे कोई परवाह नहीं। वह तो अपनी ज़िन्दगी का यही ढर्रा बनाये रखेगी – यही बाग़ होगा, यही बबूल और उसके नीचे किताबों में खोयी वाल्या...

दुर्भाग्य से उसके माँ-बाप ज़िन्दगी का यही ढर्रा धारण करने में असमर्थ थे। मरीया अन्द्रेयेव्ना उससे अधिक बर्दाश्त न कर सकती थी। वह एक हृष्ट-पुष्ट और शोरग़ुल मचानेवाली औरत थी। नहीं, इस तरह हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठा जा सकता! उसने आइने में ख़ुद को सँवारा ओर यह पता लगाने निकल पड़ी कि कोशेवोई परिवार शहर में है या चला गया।

कोशेवोई परिवार सादोवाया सड़क पर रहता था। यह सड़क पार्क के मुख्य फाटक के पास से शुरू होती थी। वे एक पक्के मकान के आधे हिस्से में रहते थे, जो 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की ओर से ओलेग के मामा निकोलाई निकोलायेविच कोरोस्तिलेव, यानी मामा कोल्या को मिला था। बाक़ी आधे हिस्से में एक शिक्षक अपने परिवार सहित रहता था। यह शिक्षक मरीया अन्द्रेयेव्ना के साथ काम करता था।

सादोवाया सड़क पर कुल्हाड़ी की ठक-ठक की एकमात्र आवाज़ सुनायी दे रही थी। मरीया अन्द्रेयेव्ना ने सोचा कि वह आवाज़ कोशेवोई के अहाते से आ रही है और उसके हृदय की धड़कन तेज़ हो गयी। अहाते में घुसने के पहले उसने चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखा कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा है।

एक काला, झबरा कुत्ता सायबान में लेटा था और गरमी के कारण अपनी लाल जीभ लपलपा रहा था। सड़क पर पैरों की आहट सुनकर वह खड़ा होने के लिए हिला, लेकिन मरीया अन्द्रेयेव्ना को पहचानकर फिर ज़मीन पर लेट गया।

दुबली-पतली, लम्बी और हट्टी-कट्टी नानी वेरा वसील्येव्ना लकड़ियाँ चीर रही थी। अपने हड़ीले हाथों से कुल्हाड़ी को ऊपर उठाकर वह इतनी ताक़त से नीचे दे मारती कि उसकी छाती के नीचे से ज़ोरों की एक 'हिह' की आवाज़ निकल जाती। ज़ाहिर था कि उसे कमर या पीठ की तकलीफ़ कभी नहीं रही होगी, या शायद वह

सोचती थी कि काम ही सब रोगों की दवा है। उसका पतला चेहरा धूप से तपकर बादामी हो चुका था, नाक पतली और उभरी हुई थी तथा नथुने फड़कते रहते थे। उसकी मुखाकृति मरीया अन्द्रेयेव्ना को दाँते आलीग्यारी* की याद दिलाती थी, जिसकी तसवीर वह 'डिवाइन कामेडी' के क्रान्तिपूर्व संस्करण की बहुत-सी जिल्दों में देख चुकी थी। उसका साँवला चेहरा कन्धों तक लटकते घुँघराले बादामी रंग के बालों से घिरा हुआ था। वह सदा काले सींग की कमानीवाला चश्मा पहनती थी, जिसका एक बाज़ू टूट गया था। वह उस टूटे बाज़ू के स्थान पर काला धागा जोड़कर पहना करती थी। लेकिन इस वक़्त नानी वेरा बिना चश्मे के ही थी।

वह दुगुनी या तिगुनी शक्ति और जोश के साथ काम कर रही थी। लकड़ी की छिपटियाँ उछट-उछटकर सभी दिशाओं में छितर रही थीं। उसके चेहरे की भाव-भंगिमा मानो यह कह रही थी : "अच्छा हो कि शैतान इन जर्मनों को उठा ले जाये और यदि तुम्हें उनसे डर लगता है, तो तुम्हें भी उठा ले जाये! मैं तो इन कुन्दों से ही भिड़ी रहूँगी... हिह... हिह... ये छितर रही हैं, तो छितरें, मुझे कोई परवाह नहीं! मैं इन कुन्दों पर ही कुल्हाड़ी की भरपूर चोटें बरसाती जाऊँगी, लेकिन तुम्हारी ज़िल्लतभरी ज़िन्दगी को गले न लगाऊँगी। यदि इसके चलते मुझे मरना ही है, तो शैतान मुझे उठा ले जाये। मैं बूढ़ी हो चुकी हूँ और मुझे मौत का डर नहीं... हिह...हि..."

कुल्हाड़ी एक दरार में अटक गयी। नानी वेरा ने कुन्दे सहित कुल्हाड़ी को सिर के ऊपर उठाकर पीछे की ओर से लाकर पूरी ताक़त से लकड़ी चीरने की टिकटी पर दे मारा। कुन्दा दो हिस्सों में फटकर उड़ चला। एक हिस्सा मरीया अन्द्रेयेव्ना के पैर में लगते-लगते बचा।

ऐसी ही दशा में नानी वेरा की नज़र मरीया अन्द्रेयेव्ना पर पड़ी। उसने अपनी आँखें सिकोड़ीं, उसे पहचाना और कुल्हाड़ी एक ओर फेंककर इतने ज़ोर से बोली कि उसकी आवाज़ सड़क तक सुनायी पड़ी :

"आह, मरीया अन्द्रेयेव्ना... बड़ा अच्छा हुआ। ख़ुशी की बात है कि तुम आयीं। मेरी बेटी येलेना! ओह, वह तो तीन दिन से तकिए में मुँह गाड़े बच्चों की तरह रो रही है। उसके ये आँसू न जाने कब सूखेंगे? अच्छा, अन्दर तो आओ।"

मरीया अन्द्रेयेव्ना उसकी तेज़ आवाज़ सुनकर झेंप गयी, पर फिर भी उसे कुछ ढाढ़स भी बँधी। आख़िर वह ख़ुद भी तो तेज़-तर्रार आवाज़ में बोलती थी। किन्तु इस वक़्त उसने धीमी और सहमी आवाज़ में पूछा :

"क्या हमारे दोस्त चले गये?" उसने शिक्षक के कमरों की ओर इशारा किया।

---

* दान्ते आलीग्यारी – मध्यकाल का महान इटालियन कवि (1265-1321)। – सं.

"वह तो कहीं गया हुआ है, लेकिन उसके परिवारवाले यहीं हैं ओर वे रो-धो रहे है। क्या तुम मेरे साथ थोड़ा खाना खाओगी? मैंने कितना बढ़िया बोर्श्च पकाया है, लेकिन कोई खाना ही नहीं चाहता।"

सदा की तरह इस स्थिति में भी नानी वेरा का मन पक्का था। नानी वेरा विधवा थी। वह पोल्तावा प्रान्त के एक ग्रामीण बढ़ई की बेटी थी। उसका पति कीयेववासी था और लेनिनग्राद के पुतीलोव कारख़ाने में काम कर चुका था। प्रथम विश्वयुद्ध में बुरी तरह घायल होकर वह नानी वेरा के गाँव में ही बस गया था। शादीशुदा औरत होते हुए भी नानी वेरा अपनी राह चलती गयी – वह ग्राम सोवियत की सदस्या बनी, फिर ग़रीब किसान-समिति में तथा बाद में एक अस्पताल में भी काम किया। उसके पति की मृत्यु ने उसे निष्क्रिय नहीं बनाया, बल्कि उसके स्वतंत्र स्वभाव को उत्तेजित कर दिया। वह अब काम नहीं करती थी और पेंशन पाती थी, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर अब भी अपनी तेज़-तर्रार आवाज़ से लोगों पर अपना सिक्का जमा सकती थी। नानी वेरा पिछले बारह साल से पार्टी की सदस्या थी।

ओलेग की माँ, येलेना निकोलायेव्ना तकिये में मुँह छिपाये बिछावन पर पड़ी थी। उसकी टाँगें उघड़ी हुई थीं और वह एक छींट की पोशाक पहने हुई थी, जो अब मुस गयी थी। उसकी लम्बी और सुनहरी चोटियाँ, जिनका वह जूड़ा बनाया करती थी, बिखरी हुई थीं। उसका शरीर भरा-पूरा, यौवनपूर्ण और मज़बूत था।

जब नानी वेरा और मरीया अन्द्रेयेव्ना कमरे में दाख़िल हुईं, तो येलेना निकोलायेव्ना ने तकिये पर से सिर उठाया। उसका चेहरा आँसुओं से तर हो रहा था। उसकी सूजी आँखों से सदय, सुकुमार भाव झलक रहा था। वह दहाड़ मारकर मरीया अन्द्रेयेव्ना की बाँहों में समा गयी। वे एक दूसरी से गुथी रहीं, एक दूसरी को चूमती रहीं, रोती रहीं और अन्त में ठहाका लगाकर हँस पड़ीं : ऐसे ख़ौफनाक समय में एक-दूसरे को अपने इतना क़रीब पाकर वे ख़ुश थीं। वे अपना ग़म और दुःख एक दूसरे को सुना सकती थीं, एक दूसरी को ढाढ़स बँधा सकती थीं। वे रोती रहीं, हँसती रहीं और नानी वेरा दोनों हाथ कमर पर रखे अपने घुँघराले बालोंवाले सिर को हिलाती हुई कहती रहीः

"सनकी कहीं की! बिलकुल सनकी! क्षण में रोती है, क्षण में हँस पड़ती है। आख़िर हँसने के लिए है ही क्या! गला फाड़कर तो हम बाद में भी रो लेंगी..."

वह अभी अपनी बात ख़त्म भी न कर पायी थी कि सड़क की ओर से आती एक अजीब-सी आवाज़ उनके कानों में पड़ी। अनगिनत इंजनों की घरघराहट-सी सुनायी दे रही थी। कुत्ते बदहवास और कर्कश आवाज़ में भूँक रहे थे – लगता था जैसे शहर भर के कुत्ते अचानक पगला गये हों। यह शोरगुल तेज़ी से बढ़ता जा रहा

था।

येलेना निकोलायेव्ना और मरीया अन्द्रेयेव्ना एक दूसरे से अलग हो गयीं। नानी वेरा ने भी अपने हाथ नीचे कर लिये। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था। तीनों खड़ी-खड़ी उस आवाज़ को सुनने लगीं। पर क्षण-प्रति-क्षण नज़दीक आ रही आपदा को स्वीकार करने का उनमें साहस नहीं था। हालाँकि जो कुछ हो रहा था, वह प्रत्यक्ष था फिर वे तीनों औरतें बिना आवाज़ किये अचानक बाग़ की ओर दौड़ीं। उनकी अन्तःप्रेरणा ने मानो उन्हें बाग़ के फाटक की ओर जाने से रोका, फूल की क्यारियों और सूरजमुखी के पौधों के बीच से होती हुई वे बाग़ के बाड़े के पास चमेली की झाड़ियाँ की ओर लपकीं।

नगर के निचले छोर से बहुत-सी लारियों की घरघराहट सुनायी देने लगी। अदृश्य लारियों के पहिये दूसरे लेवल-क्रासिंग की पटरियों से टकराकर खड़खड़ा और झनझना उठे। तभी सड़क के चढ़ाव पर एक भूरे रंग की फ़ौजी कार दिखायी पड़ी। उसका हुड गिरा था और मोड़ पर उसकी खिड़कियों के शीशों पर सूरज की किरणें प्रतिबिम्बित होकर आँखें चौंधिया रही थीं। वह कार सीधे चमेली की झाड़ी में छिपी औरतों की ओर बढ़ती चली आ रही थी। उसमें ख़ाकी रंग की वर्दियाँ पहने कुछ फ़ौजी अफ़सर तनकर बैठे थे। वे हिल-डुल नहीं रहे थे और उनके चेहरों पर कठोरता थी। उनकी छज्जेदार टोपियों का अगला हिस्सा ऊपर की ओर उठा था।

उस भूरी कार के पीछे-पीछे कुछ और कारें चली आ रही थीं। वे सड़क के चढ़ाव से नीचे उतरकर पार्क की ओर रेंगती-सी बढ़ रही थीं।

अपनी आँखें उन कारों पर गड़ाती येलेना निकोलायेव्ना अचानक क्षिप्र गति से अपनी चोटियों को बारी-बारी से पकड़कर जूड़ा बनाने लगी। उसने यह काम शीघ्रता से और यन्त्रवत् कर लिया, लेकिन जब उसे पता चला कि उसके पास बालों की सूइयाँ नहीं हैं, तो वह दोनों हाथों से जूड़े को पकड़े हुए चुपचाप खड़ी रही। वह अपनी आँखें सड़क पर से नहीं हटा पा रही थी।

एक दबी चीख़ के साथ मरीया अन्द्रेयेव्ना चमेली की झाड़ियों से बाहर निकलकर सामने के फाटक की ओर नहीं, बल्कि मकान की तरफ़ दौड़ी। मकान के उस हिस्से का चक्कर काटकर, जहाँ शिक्षक का परिवार रहता था, वह दूसरे फाटक से उस सड़क पर जा निकली, जो जर्मनोंवाली सड़क के समानान्तर जा रही थी और सुनसान थी। और वह अपने घर की ओर बेतहाशा दौड़ चली।

"माफ़ करो, मेरे पास ताक़त नहीं कि मैं तुम्हें इसके लिए तैयार कर सकूँ। हिम्मत से काम लो। तुम्हें तुरन्त कहीं छिप जाना चाहिए... किसी भी क्षण वे हमारी सड़क पर आ धमक सकते हैं!" मरीया अन्द्रेयेव्ना ने अपने पति से कहा।

वह अपने सीने पर हाथ रखे हाँफ रही थी। तेज़ दौड़ने से उसका मुँह लाल हो उठा था। और वह पसीने से भीग गयी थी। उसकी उत्तेजित मुख-मुद्रा उसके शब्दों का भयानक अर्थ स्पष्ट न कर सकी।

"जर्मन?" ल्यूस्या ने भयातुर आवाज़ में इस तरह पूछा कि मरीया अन्द्रेयेव्ना चुप हो गयी, वह अपनी बेटी पर एक सरसरी निगाह डालकर चारों ओर नज़र दौड़ाने लगी।

"वाल्या कहाँ है?" उसने पूछा।

उसके पति के मुँह से आवाज़ ही नहीं निकल रही थी। उसके होंठ सफ़ेद हो गये थे।

"मैं बताती हूँ – मैंने सब कुछ देखा है," ल्यूस्या ने बहुत ही धीमी और गम्भीर आवाज़ में कहा। "वह बाग़ में लेटकर किताब पढ़ रही थी कि एक लड़का बाड़ा लाँघकर अन्दर घुस आया। वह भी उसी की उम्र का रहा होगा। वाल्या उठ बैठी और वे कुछ देर तक बतियाते रहे। अन्त में वह कूदकर खड़ी हो गयी और दोनों के दोनों बाड़ा लाँघकर ग़ायब हो गये।"

"कहाँ गये?" मरीया अन्द्रेयेव्ना ने फटी-फटी आँखों से देखते हुए पूछा।

"पार्क की ओर। वह अपना कम्बल, तकिया और किताब बाग़ में ही छोड़-छोड़कर भाग गयी। मैंने सोचा कि वह फ़ौरन ही लौटेगी, इसलिए उसकी चीज़ों की रखवाली करने बाहर निकली, लेकिन जब वह लौटी नहीं, तो मैंने सब कुछ भीतर लाकर रख दिया।"

"हे भगवान..." कहते हुए मरीया अन्द्रेयेव्ना धम्म से फ़र्श पर बैठ गयी।

अध्याय 17

नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना अभी भी चमेली की झाड़ियों में खड़ी देख रही थी कि कैसे सड़क के चढ़ाव पर विशाल, लम्बी और ऊँची लारियाँ एक के बाद एक निकल रही हैं और आगे की ओर रेंग रही हैं। लारियों से सड़क भर गयी थी और उनके शोरगुल से आसमान गूँज रहा था। लारियों में धूप से तपे और पसीने से भीगे जर्मन सैनिक बैठे थे। उनकी खाकी वर्दियाँ और फ़ौजी टोपियाँ धूल से सनी थीं और बन्दूकें उनकी टाँगों की बीच दबी थी। गुस्से से पागल हुए कुत्ते लाल-भूरी धूल के घने बादल में उछल-उछलकर बेतहाशा भौंक रहे थे और सब दिशाओं से लारियों पर टूट रहे थे।

अफ़सरोंवाली कारें जब कोशेवोई परिवार के घर के ऐन सामने पहुँची, तो सहसा इन दोनों स्त्रियों को अपने पीछे कुत्ते की खौफ़नाक भौंक सुनायी पड़ी। पलक मारते

काला, झबरा कुत्ता सूरजमुखी के फूलों के बीच से निकलकर बाड़े को लाँघता हुआ सड़क पर जा पहुँचा और अगली कार के सामने उछलता-कूदता हुआ ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा।

भय से काँपती हुई दोनों महिलाओं ने एक दूसरे को देखा। उन्हें एहसास हो गया कि कोई भयंकर बात ज़रूर होकर रहेगी। लेकिन हुआ कुछ नहीं। कार पार्क की ओर बढ़ती गयी और 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की इमारत के सामने पहुँचकर खड़ी हो गयी। उसके पीछे-पीछे अन्य कारें भी पहुँच गयी। अब पूरी की पूरी सड़क जर्मन फ़ौज से भरी नज़र आने लगी। वे लारियों से उतर-उतरकर अपने हाथ-पाँव सीधे करने लगे और कर्कश आवाज़ में एक दूसरे से बातें करने लगे, जो रूसी लोगों को बहुत अजीब लगती थी। उसके बाद वे बगीचों और अहातों में घुसकर घरों के दरवाज़ें खटखटाने लगे। काला कुत्ता भौंचक-सा फाटक पर खड़ा-खड़ा हर दिशा में भौंकता रहा।

ट्रस्ट के सामने खड़े होकर अफ़सर सिगरेट फूँकने लगे, अर्दली सूटकेस उठा-उठाकर इमारत के अन्दर पहुँचाने लगे। छज्जेदार टोपी पहने एक नाटे, तोंदीले अफ़सर ने अपनी देख-रेख में जीपों से सामान उतरवाना शुरू कर दिया। उसकी टोपी का अग्रभाग इतना ऊँचा था कि उसके नीचे अफ़सर का सिर और भी ठिगना लगता था। बेडौल और बेहद लम्बी टाँगोंवाला एक नौजवान अपने साथ एक बहुत ही लम्बे-तड़ंगे फ़ौजी को लिये, जो पैरों में मोटे बूट और पुआल के रंग जैसे बालों पर फ़ौजी टोपी पहने हुए था, तेज़ी से सड़क पार करता हुआ उस घर में घुस गया, जिसमें प्रोत्सेन्को रहता था। उसके बाद वे तुरन्त बाहर निकल आये और पास के मकान में घुस गये। इस मकान में भी प्रादेशिक समिति के कर्मचारी रहते थे, लेकिन कई दिन पहले ही वे इसे खाली करके चले गये थे। इस मकान में स्थायी तौर पर रह रहे लोग भी उनके साथ चले गये थे। अब अफ़सर और सैनिक बगीचे से निकलकर कोशेवोई परिवार के सामने के फाटक की ओर क़दम बढ़ाने लगे।

झबरा कुत्ता साक्षात दुश्मन को सीधे अपनी ओर पैदल आते देख भयंकर गुर्राहट के साथ युवक अफ़सर पर टूट पड़ा। अफ़सर रुक गया और टाँगे फैलाकर खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर लड़कपन झलका। फिर उसने गालियाँ बकते हुए खोल में से पिस्तौल निकाली और कुत्ते पर गोली चला दी। कुत्ता नाक के बल ज़मीन पर गिर पड़ा। फिर वह गुर्राता हुआ अफ़सर की ओर थोड़ा रेंगा और ठण्डा हो गया।

"कुत्ते को मार डाला – अब ये आगे क्या करेंगे!" नानी वेरा बोल उठी।

ट्रस्ट की इमारत के आस-पास तथा सड़क पर खड़े अफ़सरों और सैनिकों ने गोली की आवाज़ से चौंककर उधर देखा। मरे कुत्ते पर नज़र पड़ते ही वे फिर अपने

काम में लग गये। कभी इधर से, तो कभी उधर से इक्की-दुक्की गोली चलने की आवाज़ आने लगी। अफ़सर ने कोशेवोई परिवार के बग़ीचे का फाटक खोला। पुआल के रंग जैसे बालोवाला विशालकाय अर्दली उसके साथ था।

नानी वेरा अपना सिर ताने हुए उसकी ओर बढ़ी। येलेना निकोलायेव्ना दोनों हाथों से अपनी चोटियाँ सम्भाले झाड़ी में ही रुकी रही।

नानी वेरा के सामने अफ़सर अपनी लम्बी टाँगों पर जमकर खड़ा हो गया। नानी का भी क़द लम्बा था। अफ़सर की निस्तेज आँखें झुककर उसे घूरने लगीं।

"तुम्हारा घर देखना है। हमारे साथ कौन चलेगा?" उसने पूछा।

उसे विश्वास था कि वह रूसी में बहुत अच्छा बोला है। उसकी नज़र नानी से हटकर अभी भी अपनी चोटियाँ थामे झाड़ी में खड़ी येलेना निकोलायेव्ना पर गयी। अफ़सर ने फिर नानी की ओर देखा।

"हूँह ... येलेना! इसके साथ जाओ। इसे घर दिखा दो," नानी ने भर्रायी-सी आवाज़ में कहा।

अपनी चोटियाँ पकड़े हुए येलेना निकोलायेव्ना फूल की क्यारियों से होकर घर की ओर बढ़ने लगी।

आश्चर्यचकित अफ़सर ने क्षण भर के लिए येलेना निकोलायेव्ना को देखा और फिर नानी को घूरने लगा।

"अच्छा?" वह अपनी पीली भौंहें उठाते हुए बोला। उसके तरुण, चिकने चेहरे पर चंचलता झलक उठी।

कुछ अजीब और अस्वाभाविक ढंग से ठुमक-ठुमककर चलती हुई नानी घर की ओर रवाना हुई। अफ़सर और अर्दली दोनों उसके पीछे हो लिये।

कोशेवोई परिवार के मकान में तीन कमरे थे और एक रसोईघर। रसोईघर पार करने पर एक बड़ा-सा कमरा था, जिसकी दो खिड़कियाँ उस सड़क की ओर खुलती थीं, जो सादोवाया सड़क के समानान्तर जाती थी। यह येलेना निकोलायेव्ना का सोने का कमरा था। खाना वे यहीं खाते थे। वहाँ एक सोफ़ा था, जिस पर ओलेग सोया करता था। बायें कमरे में निकोलाई कोरोस्तिलेव अपनी पत्नी और बच्चे के साथ रहता था। दायीं तरफ के कमरे में खुद नानी सोती थी। रसोईघर इसी कमरे से सटा हुआ था और चूँकि रसोईघर का चूल्हा उसकी दीवार के पास ही था, इसलिए वह ज़्यादा गरम रहता था। खासकर ग्रीष्म में इस कमरे की गरमी असह्य हो उठती थी। लेकिन देहात की सभी बूढ़ी औरतों की तरह नानी वेरा भी गरमी पसन्द करती थी। जब कभी गरमी से बेचैन हो उठती, तो वह खिड़की को खोल देती। सामने के बाग़ में लाइलैक की झाड़ियाँ थी।

अफ़सर रसोईघर में घुसा। चारों तरफ़ सरसरी निगाह दौड़ाकर वह खाने के कमरे में दाखिल हुआ। दरवाज़े में से निकलते समय चौखट से सिर न टकरा जाये, इसलिए उसने सिर झुका लिया। कमरे को उसने ग़ौर से देखा। स्पष्ट था वह उसे पसन्द आया। दीवारों की सफ़ेदी तरोताज़ा थी और हर चीज़ साफ़-सुथरी थी। पालिश से चमचमाते फ़र्श पर घर की बनी सादी नयी दरियाँ बिछी थीं। मेज़ पर बर्फ़ जैसा सफ़ेद दस्तरखान लगा हुआ था। येलेना निकोलायेव्ना के साफ़-सुथरे, उजले बिछावन पर एक के ऊपर एक छोटे-बड़े, जालीदार तकियापोश से ढँके फूले-फुलाये तकिये रखे थे। खिड़कियों के दासे पर फूलों के गमले रखे थे।

दरवाज़ा लाँघते समय अफ़सर ने फिर सिर झुका लिया और तेज़ी से कोरोस्तिलेव के कमरे में घुस गया। येलेना निकोलायेव्ना खाने के कमरे में ही रुकी रही। उसने अपने बालों में पता नहीं कब और कैसे सूइयाँ खोंस ली थी! वह चौखट पर पीठ टिकाये और सिर पीछे किये खड़ी थी। नानी वेरा जर्मन के पीछे-पीछे चली। करीने से रखी लेखन-सामग्री, छोटी-सी मेज़वाला यह कमरा भी जर्मन को बहुत पसन्द आया। मेज़ की बग़ल में टी-स्क्वेयर और ग्राफ़-रूल लटक रहे थे।

"Schon!"* वह सन्तुष्ट होकर बोला।

अचानक उसकी नज़र उस सिकुड़े-सिमटे बिछावन पर पड़ी, जिस पर पड़े-पड़े येलेना निकोलायेव्ना कुछ ही देर पहले आँसुओं में डूबी थी। जर्मन तेज़ी से खाट के निकट पहुँचा और कम्बल तथा चादर हटा, मुँह बना अपनी दो कड़ी उँगलियों से तोशक की मुलायमियत का अन्दाज़ लगाने लगा।

फिर उसने झुककर कुछ सूँघा और इसके बाद नानी की ओर मुड़ा।

"खटमल तो नहीं हैं?" भौंहें चढ़ाते हुए उसने पूछा।

"खटमल? नहीं!" नानी ने खींझ से सिर हिलाकर जवाब दिया। उसने जर्मन को अच्छी तरह समझाने के लिए जान-बूझकर ठेठ उक्राइनी लहजा इस्तेमाल किया था।

"बीवद!" जर्मन बोला। वह अपना सिर झुकाकर खाने के कमरे में वापस आया। उसने नानी वेरा के कमरे में केवल झाँककर देखा और फिर येलेना निकोलायेव्ना की ओर मुड़ा।

"यहाँ जनरल बैरन वान वेन्त्ज़ेल रहेंगे," वह बोला; "ये दोनों कमरे खाली करो।" उसने खाने के कमरे और कोरोस्तिलेव के कमरे की ओर इशारा किया। इसके बाद उसने नानी के छोटे कमरे की ओर संकेत किया। "तुम्हें इसमें रहने की इजाज़त है।

---

* अच्छा।

इन दो कमरों में से तुम्हें जो कुछ निकालना हो, अभी निकाल लो। इसे हटाओ और इसे भी।" उसने दो उँगलियों से येलेना निकोलायेव्ना की खाट पर बिछी सफ़ेद-झक चादर और रज़ाई को धीरे-से झटकार दिया। "उस कमरे में से भी... हटाओ, फ़ौरन!" वह कमरे से निकलकर येलेना निकोलायेव्ना की बग़ल से गुज़रा। वह सिमट गयी।

"खटमल, हूँह! जंगली कहीं का! क्या इस बुढ़ापे में मुझे यही देखना-सुनना बाक़ी रह गया था!" नानी ने ज़ोर-ज़ोर से कहा। "येलेना, तुम्हें काठ मार गया क्या?" वह चिल्लायी। "आओ यहाँ, बैरन के लिए हमें ये कमरे खाली करने हैं – आँखें फूट जायें उसकी! होश में आओ, समझी या नहीं! इस बैरन को हमारे यहाँ टिकाना शायद हमारे लिए अच्छा ही हो, क्योंकि वह शायद औरों से कम पागल हो।"

येलेना निकोलायेव्ना ने चुपचाप अपना बिस्तर समेटा और उसे नानी वेरा के कमरे में रखकर वहीं रह गयी। नानी वेरा ने अपने बेटे और पतोहू के कमरे में से बिछावन हटा दिये। उसने अपने बेटे और ओलेग के फ़ोटो भी दीवार और मेज़ पर से हटाकर दराज़ में रख दिये और इसके साथ-साथ वह बड़बड़ाये जा रही थी : "कहीं यह पूछ-ताछ न करने लगे कि ये फ़ोटो किसके हैं।" बाद में उसने अपने और अपनी बेटी के कपड़े-लत्ते समेटे और उन्हें अपने कमरे में ले गयी और बोलती रही : "मैं नहीं चाहती कि उनके नज़दीक भी कभी जाना पड़े – इन शैतानों को लक़वा मार जाये!" इसके बाद वह फिर भागकर बगीचे में निकल आयी। शान्त बैठे रहना उसके लिए असम्भव हो रहा था। वह आगे का हाल जानने के लिए उतावली हो रही थी।

पुआल के रंग जैसे बालों वाला विशालकाय अर्दली, जिसका मांसल चेहरा चित्तियों से भरा था, फाटक पर प्रगट हुआ। वह दोनों हाथों में चमड़े के खोल चढ़े कई लम्बे-लम्बे सूटकेस लिये हुए था। उसके पीछे-पीछे तीन टामी-गनें, दो पिस्तौलें और चाँदी की म्यान में एक तलवार लिये एक सैनिक चला आ रहा था। एक सूटकेस और एक रेडियो-रिसीवर लिये हुए दो और सैनिक दिखायी दे रहे थे। रेडियो-रिसीवर बड़ा तो नहीं था, लेकिन काफ़ी भारी मालूम होता था। वे नानी वेरा की ओर निगाह उठाये बिना ही घर में घुस गये।

उसके बाद लम्बी टाँगों वाला अफ़सर शिष्टाचार और अदब के साथ रास्ता बताता हुआ जनरल के साथ फाटक पर प्रगट हुआ। जनरल दुबला और लम्बा आदमी था। वह चमचमाते बूट पहने था, जिन पर कुछ धूल लग गयी थी। उसकी टोपी का अग्रभाग ऊँचा उठा हुआ था। सफ़ाचट चेहरे और टेंटुए पर बुढ़ापे की झुर्रियाँ थी। अफ़सर सिर झुकाये, अपने जनरल से एक क़दम पीछे चल रहा था।

जनरल के धूसर पतलून के दोनों बग़ल दोहरी धारियाँ थी। उसके फ़ौजी कोट के बटनों पर सोने का पानी चढ़ा हुआ था और काले कॉलर पर लाल फ़ीतों सहित

मुलम्मा किये ताड़-पत्र बने थे। उसकी कनपटियों के पास के बाल सफ़ेद थे और लम्बी गरदन पर लम्बोतरा, पतला सिर ऊँचा उठा हुआ नज़र आ रहा था। वह बहुत कड़ी आवाज़ में बोलता था और अफ़सर झुककर उसके शब्दों को पकड़ने की कोशिश करता-सा उसके पीछे लगा हुआ था।

बग़ीचे में घुसकर जनरल रुक गया और सिर घुमाते हुए चारों ओर का मुआइना करने लगा। वह अपनी लम्बी गरदन के कारण तथा विशेषकर ऊपर उठे अग्रभाग वाली टोपी के कारण कलहंस जैसा लग रहा था। जनरल अपनी आँखें दौड़ाता रहा, लेकिन उसके निश्चेष्ट चेहरे पर कोई भाव नहीं झलका। उसके बाद उसने अपनी झुर्रीदार उँगलियों तथा बाँह को इस तरह घुमाकर झटकारा, मानो वह हर चीज़ को कोस रहा हो। वह कुछ बुदबुदाया भी और उस पिछलग्गू अफ़सर ने अदब से सिर झुकाया।

जनरल जब अपनी पीली, थकी और चिपचिपी आँखों से नानी वेरा की ओर नज़र डालता हुआ उसके पास से गुज़रा, तो नानी वेरा की नाक में सेंट और अन्य कई मिश्रित गन्धों का झोंका-सा लगा। वह दरवाज़े पर झुककर भीतर गया। लम्बी टाँगों वाले अफ़सर ने सायबान में ही तनकर खड़े सैनिकों को रुके रहने के लिए संकेत किया, फिर खुद जनरल के पीछे-पीछे घर में घुसा। नानी वेरा बगीचे में ही खड़ी रही।

कुछ मिनट बाद वह अफ़सर बाहर निकला, उसने सैनिकों को संक्षिप्त आदेश दिया और साथ-साथ जनरल की ही तरह अपनी बाँह को बाग़ की ओर इशारा करते हुए झटकारा। सैनिक एड़ियाँ बजाकर फाटक की ओर मुड़ गये और एक-एक की पाँत में बगीचे से बाहर निकल गये। अफ़सर फिर से मकान के अन्दर चला गया।

अब तक साग-सब्ज़ी की बाड़ी में सूरजमुखी के फूल अपने सुनहरे सिर पश्चिम की ओर लटका चुके थे और फूलों की क्यारियों पर लम्बी-लम्बी परछाइयाँ पड़ने लगी थीं। चमेली की झाड़ी के पार सड़क की ओर से ऊँचा-ऊँचा हँसने के अलावा अजीब-सी आवाज़ें भी आ रही थी। दाहिनी ओर लेवल-क्रासिंग की दिशा में इंजनों की घरघराहट अभी भी जारी थी। जहाँ-तहाँ इक्की-दुक्की गोली चलने की आवाज़ सुनायी पड़ जाती। जब-तब कुत्ते भौंक उठते या मुर्ग़ियाँ कुड़कुड़ा उठती।

वे दोनों सैनिक फिर से फाटक पर दिखायी पड़े। वे चौड़ी तलवारें लिए आ रहे थे। नानी वेरा की समझ में नहीं आ रहा था कि ये तलवारें किस काम आयेंगी। तब दोनों सैनिक झपटकर फाटक के दोनों तरफ़ बाड़ के साथ-साथ चमेली की झाड़ियों को काटने लगे।

नानी अपने पर क़ाबू न रख सकी। वह अपना स्कर्ट फड़फड़ाती हुई सैनिकों की ओर दौड़ी। "यह क्या कर रहे हो – झाड़ियों को काट क्यों रहे हो? ये तुम्हारा

क्या बिगाड़ रही हैं!" वह एक सैनिक से दूसरे सैनिक की ओर तमतमायी हुई भागती-दौड़ती रही। उसका मन चाहता था कि फ़ौजियों को बालों से पकड़कर वहाँ से खींच निकाले। "ये फूल हैं, सुन्दर फूल! ये तुम्हारा क्या बिगाड़ रहे हैं!"

लेकिन सैनिक ख़ामोश रहे और नाक सुड़सुड़ाते हुए नानी की ओर आँखें उठाये बिना ही अन्धाधुन्ध झाड़ियाँ काटते रहे। उनमें से एक कुछ बोला और दोनों हँस पड़े।

"ऊपर से हँसते भी हो!" नानी ने घृणा से कहा।

उनमें से एक ने अपना क़द सीधा किया, आस्तीन से माथे का पसीना पोंछा, और मुस्कुराते हुए नानी की ओर देखा।

"यह अफ़सर का हुक्म है," वह जर्मन भाषा में बोला। "फ़ौजी ज़रूरत है। हर जगह इस हुक्म की तामील की जा रही है – देखो उधर!" उसने अपनी तलवार से पड़ोस के बगीचे की ओर इशारा किया।

नानी उसके शब्दों का अर्थ तो नहीं समझी, लेकिन आँखें दौड़ाकर उसने देखा कि पड़ोस में, आगे, पीछे, हर जगह जर्मन सैनिक पेड़ों व झाड़ियों को काट रहे हैं।

"छापेमार धाँय, धाँय!" सैनिक ने समझाने की कोशिश की। वह एक झाड़ी के पीछे रुक गया और अपनी गन्दी तथा मोटे नाखुन वाली तर्जनी निकाल कर दिखाने लगा कि छापेमार किस तरह छिपकर बन्दूक़ दाग़ते हैं।

अचानक हताश हो नानी ने अपनी बाँह झटकारी और वहाँ से हटकर पोर्च में जाकर बैठ गयी।

ख़ानसामे की टोपी और सफ़ेद एप्रिन पहने एक सैनिक फाटक पर प्रगट हुआ। एप्रिन के नीचे से उसका ख़ाकी पतलून और गन्दे, लकड़ी के तले वाले बूट नज़र आ रहे थे। एक हाथ में वह अलुमिनियम का बड़ा-सा बरतन और दूसरे हाथ में एक टोकरी लिये हुए था, जिसके अन्दर रखी तश्तरियाँ खनखना रही थी। उसके पीछे-पीछे गन्दा फ़ौजी कोट पहने एक सैनिक मिट्टी के बड़े-से कटोरे में कोई चीज़ लिये आ रहा था। वे नानी की बग़ल से गुज़रे और रसोईघर में घुस गये।

तभी अचानक, मानो किसी दूसरे लोक से टूटकर आती हुई संगीत की आवाज़ सुनायी पड़ी। उसके बाद सनसन... घरघर... हिसहिस की आवाज़ें आयी, फिर जर्मन बोली, फिर घरघर... हिसहिस और इसके बाद फिर संगीत।

सड़क पर हर जगह सैनिक बगीचों के पेड़ और झाड़ियाँ काट रहे थे। अब दूसरी लेवल-क्रासिंग से लेकर पार्क तक सड़क पर का नज़ारा साफ़-साफ़ देखा जा सकता था। हर जगह मोटर-साइकिलें और सैनिक इधर-उधर आ-जा रहे थे।

दूर से तैरकर आती हुई ताज़ी संगीत-लहरी सुनायी पड़ी। क्रास्नोदोन से दूर, बहुत दूर जीवन अपनी शान्त और नपी-तुली लीक पर चलता जा रहा था। यहाँ इस

क्षण जो कुछ हो रहा था, उससे बिल्कुल भिन्न और न्यारा जीवन! जिन व्यक्तियों के लिए ये संगीत-लहरियाँ पैदा की जा रही थीं, उनके अस्तित्व पर, उनकी ज़िन्दगी पर, युद्ध की या इन सैनिकों की छाया न पड़ रही थी, जो सड़क पर दौड़-धूप कर रहे थे और बगीचों को काट-कूटकर मिट्टी में मिला रहे थे। वह जीवन नानी के जीवन से बिल्कुल भिन्न था। वह जीवन इन सैनिकों के जीवन से भी भिन्न था, जो चमेली की झाड़ियाँ काटने में मग्न थे। उनके लिए वह एक न्यारी ज़िन्दगी थी, क्योंकि उन्होंने न सिर उठाया, न संगीत सुनने के लिए पल भर के लिए रुके और न ही घर में से आती हुई संगीत-लहरी के बारे में दो-चार बातें ही कही-सुनी।

उन्होंने बगीचे का एक-एक पेड़ और एक-एक झाड़ी काट डाली। नानी के कमरे में येलेना निकोलायेव्ना अकेली, ख़ामोश बैठी थी। सैनिक अन्त में डूबते सूरज की ओर टकटकी बाँधे सूरजमुखी के फूलों की ओर बढ़े और उन्हें जड़ से काटकर रख दिया। अब कोई पेड़ या झाड़ी बाक़ी न बची थी। अब छापेमारों की 'धाँय-धाँय' का कोई डर न रहा था।

अध्याय 18

साँझ होते ही जर्मन सैनिक और अफ़सर नगर के विभिन्न हिस्सों में पैठ गये। केवल शंघाई, और दूर के गोलुब्यात्निकी तथा देरेव्यन्नाया मुहल्ला, जिसमें वाल्या बोर्त्स रहती थी, उनसे ख़ाली रहे।

पूरा का पूरा नगर नगरवासियों की जगह गन्दी-भूरी वर्दियाँ और फ़ौजी टोपियाँ पहने अजनबी सैनिकों से ठसाठस भरा नज़र आता था। उनकी टोपियों पर चाँदी के बाज़ बने थे, जो जर्मनी का राज्य-चिह्न था। वे बगीचों और अहातों को रौंदते हुए मकानों, दुकानों, शेडों और खलिहानों में फिरते-घूमते थे।

जिस मुहल्ले में आस्मूख़िन और ज़ेम्नुख़ोव परिवार रहते थे, उसमें जर्मन सैनिकों ने सबसे पहले लारियों में आकर डेरा जमा लिया। वहाँ की सड़क चौड़ी थी, लेकिन सोवियत बमवर्षकों से डरते हुए फ़ौजी अधिकारियों ने आदेश दिया कि जर्मन सैनिक सब लारियों को मकानों और शेडों की आड में खड़ा करें। अतः हर जगह जर्मन सैनिक मकानों के सामने बगीचों की बाड़ों को तोड़-फोड़कर लारियों के अन्दर घुसने के लिए रास्ता बना रहे थे।

एक ऊँची और लम्बी लारी पर बैठे सैनिक कूद-कूदकर नीचे उतरे। लारी पीछे की ओर चलती हुई भयानक घड़घड़ाहट के साथ ओस्मूख़िन परिवार के बगीचे में घुसने लगी। चारों ओर पेट्रोल का धुआँ छोड़ती अपने भारी पहियों से फूलों और क्यारियों

को रौंदती मकान की दीवार के पास आकर रुक गयी।

एक पतला और फुर्तीला कारपोरल, जिसके साँवले चेहरे पर छोटी और काली मूँछे बर्छी की नोक-सी तनी थी, मकान की ड्योढ़ी में आ गया। उसने अपनी टोपी आँखों तक खींच ली। उसकी कनपटियों और सिर के पीछे की ओर से लटके काले खुरदरे बाल नमदे की तरह लग रहे थे। उसने ज़ोर से लात मारकर दरवाज़ा खोल दिया और कई सैनिकों के साथ ओस्मूख़िन परिवार के घर के गलियारे में दाख़िल हुआ।

एक दूसरे से मिलती-जुलती येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना और ल्यूद्मीला वोलोद्या की खाट के पास बैठी थीं। उनके चेहरों पर असाधारण तनाव झलक रहा था। वोलोद्या ठुड्डी तक चादर ओढ़े लेटा था। वह अपनी परेशानी परिवार के लोगों के सामने प्रगट करना नहीं चाहता था। दरवाज़े से शोरगुल सुनायी पड़ा। जब कारपोरल और उसके सैनिकों के धूल से सने, पसीने से तर चेहरे गलियारे के खुले दरवाज़े पर दिखायी दिये, तो येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना फुर्ती से उठ खड़ी हुई। वह सीधी तनकर तेज़ क़दमों से चलती हुई गलियारे की ओर बढ़ी और जर्मनों के सामने जा खड़ी हुई।

"बहुत अच्छा," टूटी-फूटी रूसी में कारपोरल ने हँसते हुए कहा और उस पर अपनी आँखें गड़ा दीं। जर्मन की आँखों में धृष्टता थी, लेकिन साथ ही दोस्ती भी झलक रही थी। "यहाँ हमारे सैनिक रहेंगे। केवल दो-तीन रात के लिए। छनतू्मप वकमत कतमप छंबीजमण बहुत अच्छा।"

उसके पीछे ख़ामोश खड़े सैनिक येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना को घूरते रहे। उसने उस कमरे का दरवाज़ा खोल दिया, जिसमें वह खुद और ल्यूद्मीला रहा करती थीं। जर्मनों के आने से कुछ ही देर पहले उसने निश्चय कर लिया था कि यदि वे उसके घर में ज़बर्दस्ती डेरा डालेंगे, तो वह अपना कमरा ख़ाली करके वोलोद्या के कमरे में चली जायेगी, ताकि सारा परिवार एक-साथ ही रह सके। लेकिन कारपोरल न कमरे में आया और न उसने उसमें झाँककर देखा। वोलोद्या के कमरे के खुले दरवाज़े से उसे खाट के पास निश्चल, शान्त बैठी ल्यूद्मीला नज़र आ गयी थी।

"ओह!" वह विस्मय से बोला और फिर खुशी से हँसते हुए फ़ौजी ढंग से सलाम किया। "तुम्हारा भाई है?" उसने वोलोद्या की ओर अपनी साँवली उँगली उठायी। "घायल है?"

"नहीं, बीमार है," ल्यूद्मीला ने जवाब दियाा। उसका चेहरा अंगारे-सा लाल हो उठा था।

"अरे, यह तो जर्मन बोलती है!" कारपोरल ने पीछे मुड़कर सैनिकों से हँसते हुए कहा। "क्यों यह छिपाने की कोशिश कर रही हो कि तुम्हारा भाई लाल सेना का एक घायल सैनिक है या छापेमार! हम तो पता लगा ही लेंगे!" वह ल्यूद्मीला को

बत्तीसी दिखाते और काली आँखें चमकाते हुए बोला।

"नहीं, नहीं, वह तो स्कूल का छात्र है। उसकी उम्र अभी सत्रह से भी कम है। इसका हाल ही में आपरेशन हुआ था," ल्यूद्मीला चिन्ता से बोली।

"चिन्ता न करो। हम तुम्हारे भाई को हाथ भी न लगायेंगे," कारपोरल खींसे निपोरते हुए बोला। उसने फिर फ़ौजी सलाम मारा और उस कमरे का मुआइना करने चल दिया, जिसकी ओर येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने संकेत किया था। "बहुत अच्छा, और यह दरवाज़ा?" उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही उसने रसोईघर का दरवाज़ा खोल दिया। "कितना बढ़िया! चूल्हा जलाओ, फ़ौरन! तुम्हारे पास मुर्ग़े हैं? अण्डे, अण्डे।" वह बेवक़ूफ़ों की तरह खुलकर हँसने लगा।

यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि उसने वही शब्द दोहराये, जो युद्ध के दौरान से अब तक जर्मनों के बारे में कितने ही लतीफ़ों और आँखों-देखी कहानियों का विषय बने हुए थे। ये शब्द अख़बारों के लेखों में भी चर्चा का विषय रहे थे। तथा व्यंग्य-चित्रों के शीर्षकों में भी इनका प्रयोग किया जाता था।

"फ़्रेडरीक, हमारे लिए कुछ खाने का बन्दोबस्त करो!" और वह येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना द्वारा बताये गये कमरे में घुस गया। सैनिक भी उसके पीछे-पीछे कमरे में दाख़िल हो गये। शीघ्र ही पूरा का पूरा घर उनके क़हक़हों और बातचीत से गूँजने लगा।

माँ, सुना तुमने? उन्हें अण्डे चाहिए और कहते हैं चूल्हा जला दो," ल्यूद्मीला ने फुसफुसाकर कहा।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना बिना कुछ बोले गलियारे में ही खड़ी रही।

"सुनती हो, माँ? क्या मैं जलावन ले जाऊँ?"

"सब सुन रही हूँ," उसकी माँ बोली पर टस से मस न हुई। वह बहुत ही शान्त दिखायी पड़ रही थी।

आगे निकले नुकीले जबड़े वाला एक बड़े उम्र का सैनिक कमरे से बाहर निकल आया। फ़ौजी टोपी के नीचे उसके ललाट पर घाव का गहरा चिह्न दिखायी दे रहा था।

"तुम्हीं फ़्रेडरीक हो?" येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने शान्त स्वर में पूछा।

"फ़्रेडरीक? हाँ, मैं ही हूँ... फ़्रेडरीक," वह उदास स्वर में बोला।

"आओ तब। जलावन ढोने में मेरी मदद करो। मैं खुद तुम्हें अण्डे दूँगी।"

"क्या?" वह रूसी नहीं समझा।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने उसे इशारा से बताया और चल पड़ी। सैनिक भी उसके पीछे हो लिया।

"अच्छा अब," ल्यूद्मीला की ओर देखे बिना वोलोद्या बोला। "दरवाज़ा बन्द कर

दो।"

उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया और वोलोद्या के क़रीब चली आयी। वह सोच रही थी कि वोलोद्या उससे कुछ बातें करना चाहता है।

लेकिन वह आँखें बन्द किये ख़ामोश लेटा रहा। सहसा दरवाज़ा खटखटाये बिना कारपोरल उनके कमरे में आ धमका। वह कमर तक नंगा था, उसकी छाती और पेट काले बालों से भरे थे। उसके एक हाथ में साबुनदानी थी और कन्धे पर तौलिया।

"मुँह-हाथ धोने का वाश-बेसिन कहाँ है?" उसने पूछा।

"यहाँ वाश-बेसिन नहीं है। हम अहाते में ही मुँह-हाथ धोते हैं," ल्यूद्मीला ने जवाब दिया। "हम एक दूसरे के हाथ पर पानी डालकर काम चला लेते हैं।"

"कैसा जंगलीपन है!" मोटे तलेवाले बादामी बूटों में कसे-बँधे अपने पैरों को फैलाये हुए वह बोला और खीसें काढ़ते हुए ल्यूद्मीला की ओर देखने लगा। "क्या नाम है तुम्हारा?"

"ल्यूद्मीला!"

"क्या?"

"ल्यूद्मीला!"

"मैं नहीं समझा... लु-लु?

"ल्यूद्मीला।"

"ओ, लुईज़ा!" वह सन्तोष से बोला। "तुम बोलती तो हो जर्मन, लेकिन हाथ-मुँह धोती हो अहाते में," उसने घृणा के साथ कहा। "बहुत बुरी बात है।"

ल्यूद्मीला चुप रही।

"और जाड़ों में?" कारपोरल ने पूछा। "हा-हाह! कैसा जंगलीपन है! अच्छा तो चलो, और कुछ नहीं तो मेरे मुँह-हाथ ही धुला दो।"

वह उठी और दरवाज़े की ओर चल दी। जर्मन अपने पैर फैलाये वहीं खड़ा रहा और खीसें काढ़ते हुए उसकी ओर एकटक देखता रहा।

ल्यूद्मीला उसके सामने पहुँचकर लाल हो उठी और उसने सिर झुका लिया।

"हा-हाह!" वह क्षण भर वैसे ही खड़ा रहा और इसके बाद उसे रास्ता देने के लिए एक तरफ़ को हो गया।

वे सायबान में चले गये।

वोलोद्या उनकी बातें सुनता रहा। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसके दिल की धड़कन तेज़ हो चली। यदि वह बीमार न होता, तो ल्यूद्मीला के बदले वह खुद ही जर्मन के मुँह-हाथ धुलाने जाता। वह अपनी और अपने पूरे परिवार की अपमानजनक स्थिति से मरा जा रहा था। यह स्थिति पता नहीं अभी और कितने

दिन तक बनी रहेगी! लेकिन वह अपनी मनःस्थिति प्रगट करना नहीं चाहता था।

वह गलियारे से होकर अहाते में आते-जाते जर्मनों की कीलदार बूटों की आवाज़ सुन रहा था। उसकी माँ की चुभती आवाज़ सायबान से आ रही थी। उसकी जूतियों की धमक से यह मालूम हो रहा था कि माँ सायबान से रसोईघर में आयी और फिर सायबान में वापस चली गयी। ल्यूद्मीला धीरे-से दरवाज़ा खोलकर कमरे में दाख़िल हुई और दरवाज़े को फिर से बन्द कर दिया। उसकी जगह उसकी माँ ने ले ली थी।

"वोलोद्या, कैसी मुसीबत आ पड़ी है!" वह फुसफुसाते हुए बोली। "हर तरफ़ बाड़ों को तोड़-फोड़ दिया गया है, फूलों की क्यारियाँ रौंद दी गयी हैं और सभी अहाते सैनिकों से खचाखच भरे हैं। वे अपनी क़मीज़ें उतारकर जूएँ मार रहे हैं। और हमारे सायबान के ठीक सामने ही कुछ फ़ौजी बिल्कुल नंगे-धड़ंगे खड़े बाल्टी से नहा रहे हैं। मुझे तो मतली आने लगी थी।"

वोलोद्या अभी भी आँखें बन्द किये ख़ामोश लेटा रहा।

अहाते से मुर्ग़ी के कुड़कुड़ाने की आवाज़ आयी।

"फ़्रेडरीक हमारी मुर्गियों को ख़त्म कर रहा है," ल्युस्या व्यंग्यपूर्ण लहजे में बोली।

कारपोरल उनके दरवाज़े के पास से अपने कमरे की ओर जाने लगा। उसकी नाक और मुँह से अजीब आवाज़ें निकल रही थी। ज़ाहिर था कि वह गलियारे से गुज़रते हुए तौलिये से अपना बदन पोंछ रहा था। कुछ क्षण तक वहाँ से तेज़ आवाज़ आती रही – एक अतिस्वस्थ व्यक्ति की ज़ोरदार आवाज़। इसके बाद उन्हें अपनी माँ के उत्तर सुनायी पड़े। कुछ मिनट बाद बिस्तरा लिये वह कमरे में आयी और एक कोने में डाल दिया।

रसोईघर में कुछ पकाया जा रहा था। दरवाज़ा बन्द रहने पर भी पकवान की महक उन तक पहुँच रही थी। उनका पूरा का पूरा घर जैसे बाज़ार बन गया था। जर्मनों के चलने-फिरने की आवाज़ कभी बन्द ही न होती। रसोईघर से, अहाते से, कारपोरल और सैनिकों के कमरे से क़हक़हों और जर्मन भाषा में बातचीत की कर्कश आवाज़ से इनके कान फटे जा रहे थे।

ल्यूद्मीला भाषा सीखने में बहुत ही तेज़ थी। स्कूल की पढ़ाई खत्म होने के बाद वह जर्मन, फ्रेंच और अंग्रेजी भाषा सीखने लग गयी थी। वह कूटनीतिक सेवा में भर्ती होने की आकांक्षा से मास्को के विदेशी भाषा संस्थान में पढ़ने के सपने देखती थी। सैनिकों की बातचीत का अर्थ तो वह थोड़ा-बहुत समझ ही रही थी, हालाँकि उनकी बातचीत में भद्दे मज़ाक़ और ठेठ शब्दों का भी मेल था।

"हल्लो, एडम, बूढ़े-खूसट! क्या है तुम्हारे पास?"

"सुअर की चरबी, उक्राइनी ढंग की। आओ, सब लोग साथ बैठकर खायें।"

“बहुत खूब! ब्राण्डी है? नहीं? ओह तो, hol's der Teufel*, रूसी वोद्‌का ही निकाला!”

“किसी ने मुझे बताया कि सड़क के उस छोर पर कोई बूढ़ा रहता है, जिसके पास शहद है।”

“अभी हमारा हैन्स वहाँ दौड़ा जायेगा। चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात। जमकर मौज मना लो। पता नहीं यहाँ से कब कूच करना पड़ जाये। हमारे आगे क्या होता है, यह तो शैतान ही जानता है।”

“हमारे आगे? हमारे आगे दोन और कुबान है। शायद वोल्गा भी! वहाँ भी तो अच्छा ही रहेगा।”

“यहाँ जब तक हैं, कम से कम ज़िन्दा तो हैं!”

“ओह, जहन्नुम में जाये यह कोयले का इलाक़ा। और कुछ नहीं – बस धूल, गर्द और हवा, और सब घूरते हैं भेड़ियों की तरह!”

“और दोस्त की नज़र से वे तुम्हें कहाँ देखते थे? क्या सोच रहे हो कि तुम उनके लिए खुशियों का पिटारा लेकर आये हो? हा-हा-हाह!”

कोई हॉल में दाख़िल हुआ और बैठे हुए गले से स्त्रियों के-से स्वर में बोला :

"Heil Hitler!"**

‘अहा पीटर फ़ेनबोंग! Heil Hitler!... हम पहली बार तुम्हें काली वर्दी में देख रहे हैं, verdammt noch mal*** इधर आओ। अपनी सूरत तो दिखाओ। देखो, भाइयो, यह है पीटर फ़ेनबोंग। सीमा पार करने के बाद से इसकी सूरत ही हमें नहीं दिखायी पड़ी!”

“क्या तुम लोग मेरी कमी महसूस कर रहे थे?” स्त्रियों की-सी आवाज़ फिर सुनायी दी। उसके लहजे में व्यंग्य का पुट था।

“पीटर फ़ेनबोंग! तुम कहाँ से आ धमके?”

“उल्टे यह पूछो कि मैं जा कहाँ रहा हूँ? हमें इसी मनहूस जगह में रुकने का आदेश मिला है।”

“तुम्हारे सीने पर यह क्या चमक रहा है?”

“अब मैं Rottenfuhrer (एन.सी.ओ.) बन गया हूँ।”

“ओहो! इसीलिए मोटे होते जा रहे हो। शायद एस. एस. में बेहतर खाना मिलता है।”

---

* भाड़ में जाये!

** हिटलर की जय!

*** लानत है एक बार और।

“लेकिन मैं तो यह कहूँगा कि यह अभी भी अपने कपड़े पहने-पहने सोता है और उन्हें धोता कभी नहीं। इसके बदन से जो बू की लपटें उठ रही हैं, उनसे महसूस कर रहा हूँ।”

“ऐसा मज़ाक़ न करो, जिसके लिए तुम्हें बाद में पछताना पड़े,” स्त्रियों की-सी आवाज़ फिर सुनायी दी।

“ओह, मुझे अफ़सोस है, पीटर। लेकिन हम तो पुराने दोस्त हैं, हैं न? जिस सैनिक को हँसी-मज़ाक का अधिकार नहीं, वह भी भला कोई सैनिक है! अच्छा, तुम इधर आये कैसे?”

“हमें भी कोई ठौर-ठिकाना चाहिए।”

“ठौर-ठिकाने की तलाश में? अरे तुम लोगों के लिए तो हमेशा सबसे बढ़िया जगह की व्यवस्था की जाती है।”

“हमें तो अस्पताल में बसाया गया है। जगह बहुत बड़ी है, पर मैं एक छोटे-से कमरे में रहना चाहता था।”

“हम यहाँ सात जने हैं।”

“मुझे दीख रहा है। खचाखच भरे हैं।”

“हाँ, तुम तो ज़िन्दगी की बुलन्दी पर हो! फिर भी अपने पुराने दोस्तों को न भूलना। जब तक हम यहाँ हैं मिलते रहना।”

वह स्त्रियों की-सी आवाज़ उत्तर में फिर बलबलाई। ज़ोर का ठहाका पड़ा और कीलदार बूटों की धमक गलियारे से उतरती हुई अहाते में निकल गयी।

“अजीब शख़्स है यह पीटर फ़ेनबोंग!”

“अजीब? वह तो अपनी ज़िन्दगी बना रहा है, और यह कोई बुरी बात नहीं।”

“लेकिन उसे तुमने केवल गंजी पहने कभी देखा है? वह कभी नहाता-धोता नहीं।”

“मुझे शक है कि उसे खुजली है और वह इसे दिखाने से शर्माता है। खाना कब तैयार होगा, फ़्रेडरीक?”

“मुझे लारेल की पत्तियाँ चाहिए,” फ़्रेडरीक खिन्न स्वर में बोला।

“तुम सोचते हो कि युद्ध का अन्त निकट है और अपने लिए पहले से ही विजेता की तरह ‘लारेल’ की माला तैयार कर लेना चाहते हो, एह?”

“अन्त कभी नहीं होगा, क्योंकि हम सारी दुनिया से लड़ रहे हैं,” फ़्रेडरीक बुझे स्वर में बोला।

खिड़की के दासे पर अपनी कोहनी टिकाए येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना गहरे विचारों में खोयी हुई बैठी थी। उसके सामने साँझ की धूप में चमकता हुआ बड़ा-सा,

ख़ाली मैदान फैला था। काफ़ी दूर पर दो वीरान, सफ़ेद, पक्की इमारतें नज़र आ रही थीं। बड़ी इमारत वोरोशीलोव स्कूल की थी और दूसरी इमारत बच्चों के अस्पताल की। स्कूल और अस्पताल दोनों ही ख़ाली कर दिये गये थे और उनकी इमारतें नीरस और सुनसान पड़ी थीं।

"ल्यूद्मीला, देखो तो, वह क्या है?" वह अचानक बोली और उसका ललाट खिड़की के शीशे से सट गया।

ल्यूद्मीला खिड़की की ओर दौड़ी। दोनों इमारतों की बग़ल से चौक की ओर बायीं तरफ़ से आने वाली धूलभरी सड़क पर बहुत-से व्यक्तियों की सर्पिल पंक्ति रेंगती चली आ रही थी। पहले तो ल्यूद्मीला की समझ में न आया कि ये कौन लोग हो सकते हैं। नंगे सिर और काले ड्रेसिंग गाऊनों में लिपटे स्त्री-पुरुष सड़क पर अपने को धसीटते हुए-से चले आ रहे थे; कुछ तो बैसाखियों पर लँगड़ाते चल रहे थे और कुछ घायलों या रोगियों से भरे स्ट्रेचरों को उठाये चले आ रहे थे। सफ़ेद खोल और टोपी पहने नर्सें तथा रोज़मर्रे की कपड़े-लत्ते पहने स्त्री-पुरुष अपने कन्धों पर भारी गट्ठर लिये हुए थे। ये स्त्री-पुरुष नगर के दूसरे हिस्से से आ रहे थे, वे बच्चों के अस्पताल के मुख्य द्वार के पास जमा होने लगे, जिसे खोलने में दो नर्सें व्यस्त थीं।

"ये नगर के अस्पताल के मरीज़ हैं! इन्हें निकाल दिया गया है!" ल्यूद्मीला बोली। वह अपने भाई की ओर मुड़ी। "सुनते हो? इसका मतलब समझते हो?"

"हाँ... हाँ, लेकिन केवल मरीज़ों को ही नहीं! मैं जिस वार्ड में था, उसमें मरीजों के अलावा सैनिक घायलों की भी संख्या काफ़ी थी," वोलोद्या चिन्तित स्वर में बोला।

कई मिनट तक ल्यूद्मीला और उसकी माँ अस्पताल से निकाले मरीज़ों के इस दृश्य को देखती रही और साथ-साथ वोलोद्या को फुसफुसाकर सब कुछ बताती भी रहीं। फिर जर्मन सैनिकों के हल्ले-गुल्ले से उनका ध्यान बँट गया। यह अनुमान लगाया जा सकता था कि कारपोरल के कमरे में कोई दस-बारह व्यक्ति मौजूद थे। आने-जाने वालों को ताँता कभी ख़त्म ही न होता था। उन्होंने सात बजे से ही खाना शुरू कर दिया था। अब झुटपुटा होने लगा था, पर वे अभी भी भोजन पर जुटे हुए थे। तिस पर रसोईघर में और कोई खाना पकाया जा रहा था। गलियारे में भी भारी-भरकम फ़ौजी बूटों की धमक थमी नहीं। शराब की प्यालियों की खनखनाहट और क़हक़हों से घर गूँज उठता था। उनकी बातचीत खूब ज़ोरशोर से चलने लगती, फिर ढेर से खाद्य-पदार्थों के आ जाने से कुछ ढीली पड़ जाती थी। उनकी आवाज़ें शराब के नशे में लड़खड़ाती और बहकती जा रही थीं।

रसोई की गरमी और धुआँ उस कमरे तक पहुँच रहा था, जिसमें घर के मालिक बैठे थे। कमरे में घुटन-सी थी फिर भी वे खिड़कियाँ खोलने में हिचकिचा रहे थे।

अँधेरा बढ़ते जाने पर भी बत्ती नहीं जलायी गयी, मानो उन्होंने बिना कुछ कहे-सुने ही इसका फ़ैसला कर लिया हो।

बाहर, मैदान के इर्द-गिर्द अब कोई चीज़ पहचानना मुश्किल था। दाहिनी ओर आसमान की फीकी पृष्ठभूमि में केवल वह लम्बी, काली पहाड़ी नज़र आ रही थी, जिस पर ज़िला कार्यकारिणी समिति के कार्यालय और 'पगले रईस' के मकान की धुँधली झलक दिखायी दे रही थी। जुलाई की काली रात तेज़ी से अपनी स्याह चादर फैलाती जा रही थी, फिर भी उन्होंने न बिस्तर बिछाये और न उन्हें सोने की ही इच्छा हुई।

जर्मनों ने गाना शुरू कर दिया था। वे आम पियक्कड़ों की तरह नहीं, बल्कि पियक्कड़ जर्मनों की तरह गा रहे थे : उनकी भारी, डरावनी आवाज़ें एक ही वक़्त में सब से ऊँचे और सब से नीचे स्वरों में गाने की कोशिश में बेसुरी और कर्कश हो रही थी। उसके बाद उन्होंने अपने शराब के गिलास फिर टकराये, गला फाड़कर गाया, और कुछ देर बार ख़ामोशी छा गयी, क्योंकि उन्होंने भोजन पर हाथ साफ़ करना शुरू कर दिया था।

अचानक गलियारे में भारी-भरकम बूट धमधमा उठे और घर के मालिकों के दरवाज़े के पास आकर शान्त हो गये, मानो कोई कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश कर रहा हो।

इसके बाद दरवाज़े को किसी ने ज़ोर से खटखटाया। येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने ल्यूद्मीला को इशारा किया कि सब को सोने का बहाना करना चाहिए। फिर से दरवाज़ा खटखटाया गया। उसके बाद ज़ोर के धक्के से दरवाज़ा खुल गया और एक काला सिर कमरे में दिखायी पड़ा।

"कौन है?" कारपोरल ने रूसी में पूछा। "मकान मालिकिन!"

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना अपनी कुर्सी पर से उठकर दरवाज़े की ओर बढ़ी।

"क्या चाहते हो?" उसने शान्त स्वर में पूछा।

"मैं और मेरे सैनिक चाहते हैं कि तुम हम लोगों के साथ भोजन में शरीक होओ। तुम और लुईज़ा। दो कौर ही सही! और यह लड़का! इसके लिए भी दो कौर लेती आना!"

"हम लोग खा चुके हैं। अब खाने की इच्छा नहीं," येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना बोली।

"लुईज़ा कहाँ है?" वह उसका उत्तर नहीं समझ पाया। वह ज़ोर-ज़ोर से डकारें ले रहा था और उसके मुहँ से वोद्का की बू आ रही थी। "लुईज़ा, मैंने तुम्हें देख लिया है," वह खीसें निपोरते हुए बोला। "हम लोग तुम्हें अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करते हैं। यदि बुरा न मानो तो एक-आध घूँट शराब का भी ..."

"मेरा भाई बीमार है और मैं उसे छोड़कर नहीं जा सकती," ल्यूद्मीला ने जवाब दिया।

"मैं सोचती हूँ कि तुम अब मेज़ साफ़ कराना चाहते हो," येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना बोली और बड़ी हिम्मत से उसने सैनिक का हाथ पकड़ लिया। "चलो, मैं तुम्हारी मदद करूँगी।" वह उसे खीचे-खीचे गलियारे में ले गयी और दरवाज़ा बन्द कर दिया।

रसोईघर, गलियारा और कमरा, जिसमें यह जश्न मनाया जा रहा था, सब के सब पीले-नीले धुएँ से भरे थे। येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना की आँखों से पानी निकलने लगा। मोम जैसी किसी चीज़ से भरे गोल छोटे डिब्बों मे से निकलती लौ की पीली, मद्धिम रोशनी फैल रही थी। मोम से भरे ये डिब्बे हर जगह नज़र आ रहे थे – रसोईघर में, खिड़की के दासे पर, गलियारे में कोट टाँगने के तख़्ते के ऊपर और जर्मन सैनिकों से खचाखच भरे उसे कमरे में भी, जिसमें कारपोरल के साथ येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना अभी दाख़िल हुई थी।

जर्मन खींचकर खाट से सटा दी गयी मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे थे। वे बिस्तर पर, कुर्सियों पर और स्टूलों पर एक दूसरे से सटकर बैठे थे। अकेले ग़मगीन फ़्रेडरीक ने लकड़ी चीरने में काम आने वाले कुन्दे पर आसन जमा लिया था। मेज़ पर वोद्का की कई बोतलें रखी थी। कई तो ख़ाली हो गयी थीं और बहुत-सी ख़ाली बोतलें मेज़ के नीचे और खिड़की के दासे पर पड़ी थी। पूरी की पूरी मेज़ गन्दी तश्तरियों, भेड़ और मुर्ग़ियों की हड्डियों, सब्ज़ियों की जूठन और रोटी के टुकड़ों से भरी पड़ी थीं।

जर्मन अपनी मैली-कुचैली नीचे पहनने की क़मीज़ें पहने हुए थे और उनके गले के बटन तक खुले थे। वे पसीने से तर थे और उँगलियों के नाखूनों से लेकर कोहनियों तक चिकनाई से सने हुए थे।

"फ़्रेडरीक!" कारपोरल चिल्लाया। "यहाँ बैठे-बैठे क्या झख मार रहे हो? क्या ख़ूबसूरत लड़कियों की माताओं को खुश करना नहीं जानते?" वह बड़े ज़ोर से ठहाका मारकर हँसा। जब वह होश में होता, तो इतने ज़ोर से नहीं हँसता था। अन्य सैनिकों ने भी उसका साथ दिया।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने भाँप लिया कि वे उसी पर हँस रहे हैं। उन्होंने जो कुछ कहा, उसने तो उससे भी बदतर की आशा की थी। उसका चेहरा उतर गया, लेकिन बिना एक शब्द बोले उसने मेज़ पर की जूठन उठाकर एक ख़ाली, गन्दे बरतन में डाल दी।

"तुम्हारी बेटी लुईज़ा कहाँ है? आप लोग भी हमारे साथ दो-चार जाम तो चढ़ाइये!" एक जवान सैनिक बोला। अधिक पीने से उसका चेहरा लाल हो उठा था।

उसने अपना काँपता हाथ एक बोतल की ओर बढ़ाया और साफ़ गिलास ढूँढ़ने लगा। कोई साफ़ गिलास न देखकर उसने अपने ही गिलास में शराब ढाल दी। “उसे यहाँ भेज दीजिये। जर्मन सैनिक उसे आमंत्रित कर रहे हैं। सुना है कि वह जर्मन भी बोल लेती है। उसे भेजिये यहाँ, और उससे कहिये कि वह हमें रूसी गीत सिखाये।”

हाथ में बोतल लिये ही उसने अपनी बाँह को हवा में झटकारा, तनकर बैठा और आँखें निकालते हुए फटी आवाज़ में गाने लगा :

Wolga, Wolga Mutter Wolga,
*Wolga, Wolga, Russlands Fluss...**

वह गाते-गाते उठकर खड़ा हो गया और बोतल को इस तरह झकझोरता रहा कि वोदका के छींटों से सैनिक, मेज़ और बिस्तर सब भीग गये। साँवला कारपोरल भी ठहाका मारकर हँस पड़ा और गाना उसने भी शुरू कर दिया। बाक़ी सब सैनिक दबी, पर भयानक आवाज़ मे उनके सुर में सुर मिलाने लगे।

“हाँ, हम वोल्गा तक पहुँचकर ही रहेंगे!” एक मोटा सैनिक चिल्लाया। उसके माथे से पसीने की बूँदें गिर रही थी। “वोल्गा – क्मनजेबीसंदके थ्सने जर्मन दरिया! जर्मनी की नदी! हमें यही कहकर गाना चाहिए!” उसकी आवाज़ फट गयी और उत्तेजना में उसने खाने का एक काँटा उठाकर मेज़ पर इस तरह दबाया कि उसकी नोकें मुड़ गयीं।

वे गाने में इस हद तक व्यस्त थे कि येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना कब और कैसे जूठन भरे बरतनों को मेज़ पर से उठाकर रसोईघर में ले गयी, उन्होंने देखा तक नहीं। वह बरतनों को धो देना चाहती थी, लेकिन गर्म पानी से भरी केतली चूल्हे पर न थी। “अच्छा,” उसने सोचा, “ये लोग चाय तो पीते ही नहीं है!”

फ़्रेडरीक चूल्हे के पास अपने काम में मग्न था। हाथ में कपड़ा पकड़े उसने गर्म देगची हटायी, जो चर्बी में तैरते भेड़ के माँस के टुकड़ों से भरी थी। “शायद यह स्लोनोव परिवार की भेड़ का माँस है,” येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने सोचा। नशे में चूर जर्मनों के बेसुरे गले से निकली वोल्गा-गीत की कर्कश धुन अभी भी उसके कानों में पड़ रही थी। लेकिन वह इन सब से उसी तरह उदासीन थी, जिस तरह अभी अपने चारों ओर की दुनिया से। जिन मानवी भावनाओं और मानवी व्यवहार की मिसाल को वह खुद और उसके बाल-बच्चे देखते आये थे और अपने रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में जिस

---

* वोल्गा, वोल्गा, माता वोल्गा,
वोल्गा, रूस का दरिया...

मिसाल के आदी हो चुके थे, उसकी आशा इस मौजूदा ज़िन्दगी के साथ नहीं की जा सकती थी। वह मिसाल इनके वर्तमान अस्तित्व से मेल न खाती थी। केवल बाहर से ही नहीं, बल्कि भीतर से भी वे एक ऐसी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, एक ऐसी दुनिया में रह रहे थे, जो सामान्य मानवी सम्बन्धों की दुनिया से बिल्कुल भिन्न थी। हर चीज़ उन्हें मिथ्या और अवास्तविक लग रही थी। लगता था जैसे केवल आँख भर खोलने की देर है और यह सब कुछ ओझल हो जायेगा।

चुपचाप येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना वोलोद्या के कमरे में दाख़िल हुई। बच्चे एक दूसरे से फुसफुसाकर बात कर रहे थे और माँ के आने पर ही ख़ामोश हुए।

“बेहतर होगा कि तुम अपना बिस्तर लगा लो और सो जाओ। तुम्हें आराम करना ज़रूरी है,” माँ ने ल्यूद्मीला से कहा।

“मुझे बिस्तर पर जाने में डर लगता है!” उसने धीरे-से जवाब दिया।

“यदि उस सुअर के बच्चे ने फिर तंग किया,” वोलोद्या अचानक अपनी कोहनियों के बल उठते हुए बोला, “तो मैं उसे मार डालूँगा। बाद में चाहे जो भी हो, कोई परवाह नहीं, मैं उसे मार डालूँगा!” हल्के अँधेरे में उसकी आँखें चमक उठीं।

चौखट पर फिर से खटखट हुई और दरवाज़ा आहिस्ते से खुला। बनियान पहने कारपोरल दरवाज़े पर फिर प्रगट हुआ। उसके हाथ में रखी मोमबत्ती की लौ उसके भरे-पूरे, साँवले चेहरे पर पड़ रही थी। उसने अपनी गरदन फैलायी और बिस्तर पर बैठे वोलोद्या की ओर और उसके पायताने स्टूल पर बैठी ल्यूद्मीला की ओर क्षण भर ग़ौर से देखता रहा।

“लुईज़ा!” वह नरमी से बोला। “तुम्हें इन सैनिकों को निराश नहीं करना चाहिए, जो किसी भी दिन, किसी भी क्षण मौत का ग्रास बन सकते हैं। हम तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचायेंगे। जर्मन सैनिक बड़े ऊँचे विचार वाले होते हैं – मैं तो कहूँगा कि सज्जन होते हैं। हम तो तुम्हें केवल हमारा साथ देने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। बस और कुछ नहीं।”

वोलोद्या ने उसकी ओर घृणा से देखा।

“निकल जाओ यहाँ से!” वह बोला।

“ओह, तुम बड़े ही अच्छे लड़के हो! अफ़सोस है कि बीमार हो!” कारपोरल अपनापन दिखाते हुए बोला। वह वोलोद्या की बात समझ न सका ओर न हल्के अँधेरे में उसे उसका चेहरा ही दिखायी पड़ा।

यदि येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने दौड़कर बेटे को लिटा न दिया होता, तो इसका अन्त क्या होता यह कहना असम्भव था।

“शान्त हो जा, बेटे!” उसके गर्म, सूखे होंठ वोलोद्या के कान से सट गये।

“फ़्यूरर के सैनिक तुम्हारे जवाब का इन्तज़ार कर रहे हैं,” नशे में चूर कारपोरल शान से बोला। मोमबत्ती का डिब्बा अपने हाथों में लिये वह दरवाज़े पर लड़खड़ा रहा था।

ल्यूद्मीला का चेहरा पीला पड़ गया था। वह निश्चल बैठी रही, उसे कोई जवाब ही नहीं सूझ रहा था।

“अच्छा, बहुत अच्छा!” येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने तीखी आवाज़ में कहा और अपना सिर हिलाती हुई कारपोरल के पास चली आयी। “वह एक मिनट में पहुँच जायेगी। समझे न? वह अपने कपड़े बदलेगी और आ जायेगी।” उसने कपड़े बदलने का अभिनय करके बताया।

“माँ!” ल्यूद्मीला ने थरथराती आवाज़ में पुकारा।

“चुप रहो, बेअक़्ल कहीं की!” वह बोली और कारपोरल को दरवाज़े से बाहर ले गयी। वह चला गया। हाल में से ठहाके और बड़बड़ाने तथा शराब से भरे गिलासों के खनकने की आवाज़ें आ रही थीं। उसके बाद सब के सब फिर नये उत्साह से कर्कश स्वर में गाने लगे :

"Wolga, Wolga, Mutter Wolga..."

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने फ़ौरन कपड़े की अलमारी के पास जाकर उसे खोला और फुसफुसायी : “भीतर बैठ जाओ। मैं बाहर से ताला लगा दूँगी।”

“लेकिन...”

“हम उनसे कहेंगे कि तुम अहाते में गयी हो।”

ल्यूद्मीला कपड़े की आलमारी में छिप गयी। माँ ने ताला लगाकर चाभी आलमारी के ऊपर रख दी।

जर्मन गला फाड़-फाड़कर गा रहे थे। काफ़ी रात बीत चुकी थी। बाहर अब स्कूल और अस्पताल की इमारतें तथा ज़िला कार्यकारिणी समिति के दफ़्तर एवं ‘पगले रईस’ के मकान सहित लम्बी-सी पहाड़ी घुप अँधेरे में डूब चुकी थी। प्रकाश की एक क्षीण रेखा दरवाज़े की निचली दरार से कमरे में आ रही थी। “हे भगवान,” येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने सोचा। “क्या यह सब सत्य है?”

जर्मनों का गाना बन्द हो गया और वे बहकी-बहकी, वाहियात बहसें करने लगे। वे ज़ोर-ज़ोर से ठहाके लगा रहे थे और कारपोरल को आड़े हाथ ले रहे थे, लेकिन वह ज़िन्दादिली के साथ अपनी फटी आवाज़ में अपने जवाबों से उन्हें मात दे रहा था।

कुछ देर बार कारपोरल अपने हाथ में मोमबत्ती लिये फिर से दरवाज़े पर प्रगट हुआ।

"लुईज़ा?"

"वह अहाते में गयी है... अहाते में..." येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने हाथ के इशारे से बताया।

डगमगाते क़दमों से कारपोरल गलियारे की ओर लौटा। वह मोमबत्ती के सहारे से रास्ता देखता जा रहा था। उसके बाद पोर्च के ज़ीने से उतरते हुए उसके भारी-भरकम बूटों की आवाज़ सुनायी दी। कुछ क्षण तक सैनिक बड़बड़ाते और ठहाके लगाते रहे। उसके बाद वे भी गलियारे से होकर पोर्च के ज़ीने से उतरते हुए अहाते की ओर चल पड़े। एकाएक सन्नाटा छा गया। गलियारे के पार से बरतनों और तश्तरियों के खड़खड़ाने की आवाज़ आ रही थी – शायद वह फ़्रेडरीक था। बाहर, पोर्च के पास ही, सैनिक पेशाब करने लगे थे। उनमें से कुछ तो बड़बड़ाते हुए तुरन्त कमरे में लौट आये। कारपोरल उनमें नहीं था। आख़िर उसके बूटों की आवाज़ सुनायी पड़ी। वह सायबान की सीढ़ियाँ चढ़कर गलियारे में आ रहा था। दरवाज़ा धक्के से खुल गया और इस बार बिना मोमबत्ती के ही कारपोरल रसोईघर के धुएँ और क्षीण प्रकाश की पृष्ठभूमि में चौखटे पर ठिठका दिखायी दिया।

"लुईज़ा," वह फुसफुसाया।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना छाया की तरह उठकर खड़ी हो गयी।

"क्या? वह तुम्हें मिली नहीं? वह यहाँ वापस नहीं आयी!" उसने अपना सिर हिलाया और हाथ से नहीं का संकेत किया।

कारपोरल की नशीली आँखें कमरे का चक्कर लगाने लगीं।

"ओह, तुम..." वह लड़खड़ाती आवाज़ में रोष के साथ बोला। उसकी धुँधलाई काली आँखें येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना पर गड़ी रहीं। इसके बाद उसने अपना गंदा, चौड़ा हाथ उसके चेहरे पर रखा और उँगलियों को इस तरह भींचा, मानो औरत की आँखें निकाल कर ही रहेगा। फिर उसे पीछे की ओर ज़ोर से ठेल दिया और डगमगाते और बड़बड़ाते हुए कमरे से चला गया। येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने झट दरवाज़े का ताला लगा लिया।

हॉल में से जर्मनों के चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें आती रहीं और अन्त में रोशनी गुल किये बिना ही वे सो गये।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना वोलोद्या की खाट पर ख़ामोश बैठी रही। वह अभी भी जगा हुआ था। वे असह्य मानसिक थकावट से चूर थे, फिर भी उन्हें नींद ही नहीं आ रही थी। माँ कुछ देर इन्तज़ार करती रही और इसके बाद उसने ल्यूद्मीला को आलमारी से बाहर निकाला।

"मैं तो दम घुटने से मरते-मरते बची। मेरी पीठ पसीने से बिल्कुल तर हो गयी

है, यहाँ तक कि बाल भी भीग गये," ल्यूद्मीला ने उत्तेजित स्वर में फुसफुसाते हुए कहा। इस घटना से वह कुछ साहसी हो उठी थी। "मैं आहिस्ता-से खिड़की खोल देती हूँ। मेरा दम घुटा जा रहा है।"

उसने निःशब्द वोलोद्या की खाट के पास की खिड़की खोल दी और बाहर की ओर झुकी। हवा दमघोंटू थी, लेकिन कमरे के घुटनभरे वातावरण तथा कुछ समय पहले की घटना के कारण मैदान की ओर से आने वाली हल्की-सी हवा में उन्हें ताज़गी और सुख का अनुभव हो रहा था। नगर इतना निस्तब्ध और शान्त लग रहा था कि उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसा खर्राटे ले रहे जर्मनों से भरे एकमात्र इस मकान के अलावा वहाँ और कुछ है ही नहीं। अचानक क्रासिंग के परे पार्क के ऊपर तेज़ रोशनी कौंधी और उसकी चमक से मैदान, लम्बी पहाड़ी, स्कूल और अस्पताल चमक उठे। उसके बाद दुबारा पहले से भी तेज़ रोशनी कौंधी और इस बाद अँधेरे को बेधकर सब कुछ जगमगाता-सा नज़र आने लगा; पल भर के लिए कमरा भी चमक उठा। मैदान के पार से विस्फोटों की कई आवाज़ें ही नहीं सुनायी पड़ीं, बल्कि दूर कहीं विस्फोटों के कारण यहाँ की हवा भी काँप-सी उठी और उसके बाद फिर घुप अँधेरा छा गया।

"यह क्या है?" येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने भयभीत स्वर में पूछा।

वोलाद्या अपनी खाट पर उठकर बैठ गया।

हृदय में एक विचित्र भय लिये ल्यूद्मीला ने अँधेरे में अपनी आँखें गड़ा दी थीं। रोशनी की चमक पहले मद्धिम, फिर तेज़ हुई और देखते-देखते अदृश्य अग्निज्वाला की दमक से पहाड़ी के ऊपर आसमान लाल हो उठा। ज़िला कार्यकारिणी समिति की इमारत और 'पगले रईस' के मकान की छतें भी आलोकित हो उठीं। अचानक आग की एक ऊँची लपट आसमान की ओर लपलपाती हुई उठने लगी। उसने फैलते-फैलते पूरे मैदान और नगर को अपने तेज़ प्रकाश से चौंधिया दिया। कमरे के अन्दर की सभी वस्तुएँ और चेहरे साफ़-साफ़ दिखायी पड़ने लगे।

"कहीं आग लगी है!" ल्यूद्मीला बोली। उसकी आवाज़ में अजीब उत्साह था। वह बेचैनी से कभी कमरे की ओर मुड़ती और तो कभी आग की लपलपाती ऊँची ज्वाला की ओर।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना बहुत डर गयी थी। "खिड़की बन्द करो!" वह चिल्लायीं।

"किससे डरना है – हमें कोई नहीं देख सकता," ल्यूद्मीला बोली और इस तरह सिहर गयी, मानो उसे ठण्ड लग गयी हो।

उसे ठीक से पता न चल पाया कि यह किस तरह की आग थी और कैसे लगी थी। पर आग की उस ऊँची लपलपाती विजयपूर्ण लपट में कोई ऐसी विचित्र बात

ज़रूर थी, जो उसकी आत्मा को पवित्र कर रही थी, उसे सुख और उत्साह की अनुभूति करा रही थी। ल्यूद्मीला एकटक उसे देखती रही।

आग की दमक अब नगर के केन्द्र को ही नहीं, बल्कि चारों ओर काफ़ी दूर तक फैल चुकी थी। स्कूल और अस्पताल यहाँ तक कि मैदान पार के खान 1(बी) के इर्द-गिर्द सभी इलाक़े अच्छी तरह नज़र आने लगे थे। आरक्त आसमान और छप्परों तथा पहाड़ियों पर आग की दमक ऐसा दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे, जो भयंकर और काल्पनिक था, पर साथ ही शानदार और भव्य भी।

पूरा नगर अब जग पड़ा-सा मालूम हो रहा था। मैदान में लोग भागने-दौड़ने लगे। जब-तब चिल्लाने की आवाज़ें भी सुनायी पड़ने लगी। कहीं-कहीं पर लारियाँ घरघराने लगीं। जर्मन जग गये थे और वे सड़कों पर तथा ओस्मूख़िन परिवार के बगीचे में चहलक़दमी करने लगे थे। ज़ाहिर था कि सब कुत्ते गोलियों के निशाने नहीं बने थे और अब बीते कल की विपदा और ख़तरे को भूलकर आग की ओर मुँह करके ज़ोर-ज़ोर से भूँकने लगे थे। घर के कमरे में सोये और नशे में धुत्त जर्मनों के कानों मे इस खलबली की भनक न पड़ी और वे चैन से ख़र्राटे भरते रहे।

दो घण्टे तक आग जलती रही और धीरे-धीरे शान्त होने लगी। नगर के दूरवर्ती इलाक़े और पहाड़ियों फिर अँधेरे में डूब गयीं। रह-रहकर जब कभी पल भर के लिए रोशनी कौंधती, तो टीलों की ऊँची-नीची चोटियाँ या इक्के-दुक्के मकानों की छतें अँधेरे को चीरकर चमक उठती। जब-तब पार्क और ज़िला कार्यकारिणी समिति तथा 'पगले रईस' की इमारतों के ऊपर आसमान में छायी लाली देर तक बनी रही। इसके बाद वह भी धुँधली होते-होते बिल्कुल ही ग़ायब हो गयी और तब खिड़की के बाहर मैदान और भी गहरे अन्धकार में डूब गया।

ल्यूद्मीला इस बीच खिड़की से चिपट-सी गयी थी। वह इस दृश्य से आँखें हटा ही नहीं पा रही थी। येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना और वोलोद्या भी जगे रहे।

अचानक ल्यूद्मीला को ऐसा लगा जैसे उसने मैदान की बायीं ओर एक बिल्ली को झपटते देखा हो और इसके बाद मकान की नींव के पास उसे सरसराहट-सी सुनायी दी। कोई खिड़की की ओर दबे पाँव आ रहा था। वह झट पीछे हट गयी और खिड़की बन्द करना ही चाहती थी कि किसी ने फुसफुसाकर उसका नाम लिया।

"ल्यूद्मीला... ल्यूद्मीला..."

उसका खून जम गया।

"डरो नहीं... मैं हूँ, मैं त्यूलेनिन," फुसफुसाहट की आवाज़ आयी और खिड़की के सामने सेर्गेई का घुँघराले बालों वाला सिर दिखायी पड़ा। "तुम्हारे घर में जर्मन हैं?"

"हाँ," ल्यूद्मीला ने फुसफुसाकर जवाब दिया और भय तथा प्रसन्नता से सेर्गेई

की विहँसती और निर्भीक आँखों की ओर देखा। "और तुम्हारे घर में?"

"अभी तक नहीं!"

"कौन है वहाँ?" येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने डरकर पूछा।

तभी दूर की आग की चमक में सेर्गेई का चेहरा क्षण भर के लिए झलक उठा और वोलोद्या तथा येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने उसे पहचान लिया।

"वोलोद्या कहाँ है?" दासे पर अपनी सीना टिकाते हुए सेर्गेई ने पूछा।

"मैं यहीं पर हूँ।"

"अच्छा, यहाँ और कौन रह गया है?"

"तोल्या ओर्लोव। दूसरों के बारे में मुझे पता नहीं। मैं बाहर निकला ही नहीं ... मेरा एपेंडीसाइटिस का आपरेशन हुआ है।"

"वीत्या लुक्यांचेन्को और ल्यूबा शेव्त्सोवा भी यहीं हैं," सेर्गेई बोला। "और गोर्की स्कूल के स्त्योपा सफ़ानोव को भी मैंने देखा है।"

"इतनी रात को तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"आग का तमाशा देख रहा था। पार्क से। इसके बाद शंघाई इलाक़े से होकर घर लौटने लगा कि खड्ड से तुम्हारी खिड़की खुली नज़र आ गयी।"

"आग कहाँ लगी थी?"

"ट्रस्ट की इमारत में।"

"सच?"

"जर्मन अफ़सर उसी में थे। वे जांघिये पहने ही बाहर दौड़े।" सेर्गेई होंठों ही होंठों में हँसा।

"आग किसी ने लगायी थी? तुम क्या सोचते हो?" वोलोद्या ने पूछा।

सेर्गेई ने तुरन्त जवाब नहीं दिया। उसकी आँखें अँधेरे में बिल्ली की आँखों की तरह चमक उठीं।

"लगता तो यही है कि आग अपने आप नहीं लगी होगी," वह बोला और धीरे-से हँसा। "तुम्हारी क्या योजना है, कैसे रहना चाहते हो?" वह वोलोद्या से अचानक पूछ बैठा।

"और तुम?"

"क्या तुम नहीं जानते!"

"मैं भी उसी तरह," वोलोद्या ने चैन की साँस लेते हुए कहा। "ओह, मुझे कितनी खुशी है कि तुम यहीं हो। मुझे कितनी खुशी है..."

"मुझे भी," सेर्गेई अनिच्छा से बोला। उसे भावुकता का प्रदर्शन बहुत बुरा लगता था। "अच्छा, जिन जर्मनों ने तुम्हारे घर में डेरा जमा रखा है, वे क्या बहुत बुरे हैं?

“वे रात भर पीते रहे। उन्होंने हमारी सारी मुर्ग़ियों को मार डाला। कई बार कमरे में घुस पड़े,” वोलोद्या लापरवाही से बोला। उसे उस बात पर जैसे गर्व था कि वह निजी अनुभव से जान पाया है कि जर्मन कैसे हैं। लेकिन उसने ल्यूद्मीला के प्रति कारपोरल के व्यवहार के बारे में कोई ज़िक्र नहीं किया।

“तो अभी तक यह बहुत बुरा नहीं!” सेर्गेई शान्ति से बोला। “एस. एस. ने अस्पताल पर कब्ज़ा जमा रखा है। कोई चालीस घायल अभी भी वहीं रह गये थे। जर्मन उन्हें वेर्ख़्नेदुवान्नाया कुंज में ले गये और... उन्हें मशीन-गनों से भून डाला। जब वे उन्हें अस्पताल से निकाल रहे थे, तो डाक्टर फ़्योदोर फ़्योदोरोविच से रहा नहीं गया। उन्होंने आपत्ति की तो जर्मनों ने उन्हें वहीं गलियारे में ही गोली मार दी।”

“हे भगवान! वे कितने नेक आदमी थे!” वोलोद्या ने कहा। उसकी भौंहें तन गयीं। “वहीं पर मेरा आपरेशन हुआ था!”

“हाँ, वे लाखों में एक थे,” सेर्गेई बोला।

“हे भगवान! अभी क्या होने वाला है?” येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना तड़पकर फुसफुसायी।

“उजाला होने के पहले ही मैं घर पहुँचना चाहता हूँ,” सेर्गेई बोला। “हम सम्पर्क बनाये रखेंगे।” उसने ल्यूद्मीला की ओर देखा और हाथ हिलाते हुए मज़ाक़ के-से लहजे में बोला : "Auf wieder sehen!"* वह जानता था कि ल्यूद्मीला विदेशी भाषाएँ पढ़ने के सपने देख रही थी।

तब उसकी चंचल, फुर्तीली आकृति अँधेरे में इस तरह विलीन हो गयी, मानो उसे हवा निगल गयी हो।

अध्याय 19

सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि वे इतनी जल्दी घुल-मिल गये।

“क्या यह भी किताब पढ़ने का समय है! जर्मन क्रास्नोदोन में घुसे आ रहे हैं!” सेर्गेई ने वाल्या के पायताने खड़े होकर कहा। उसका दम फूल रहा था। “क्या वेर्ख़्नेदुवान्नाया की ओर से तुम्हें उनकी लारियों की घरघराहट नहीं सुनायी पड़ती?”

वाल्या उसकी ओर ख़ामोशी और शान्त भाव से देखती रही। उसके चेहरे पर आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता प्रतिबिम्बित हो रही थी। अन्त में उसने पूछा :

“तुम भागे कहाँ जा रहे थे?”

क्षण भर के लिए वह स्तब्ध रह गया। निस्सन्देह उसने इस लड़की के बारे में

---

* विदा!

ठीक ही अन्दाज़ लगाया होगा।

"मैं तुम्हारे स्कूल की ओर दौड़ा जा रहा था, यह देखने के लिए कि वे..."

"लेकिन तुम अन्दर कैसे पैठोगे? क्या इसके पहले वहाँ कभी गये हो?"

सेर्गेई ने बताया कि कोई दो साल पहले वह एक साहित्यिक गोष्ठी में वहाँ गया था। "किसी न किसी तरह पैठ ही जाऊँगा," उसने हँसते हुए कहा।

"और यदि सबसे पहले जर्मनों ने स्कूल ही पर क़ब्ज़ा कर लिया तो?"

"तो मैं सीधे पार्क में निकल जाऊँगा," सेर्गेई ने जवाब दिया।

"जानते हो, छत की अटारी से सब कुछ नज़र आता है। वहाँ हमें कोई देख भी नहीं सकेगा," वाल्या उठकर बैठती हुई बोली। उसने झट अपने बाल सहेजे और ब्लाउज़ को ठीक किया। "वहाँ तक पहुँचने का रास्ता मुझे मालूम है। मैं तुम्हें दिखाऊँगी।"

सेर्गेई अचानक आनाकानी करने लगा।

"सुनो... बात यह है कि..." वह बोला। "यदि जर्मन अचानक स्कूल की ओर आ पहुँचे, तो दूसरी मंज़िल की खिड़की से कूदने की भी नौबत आ सकती है।"

"तो क्या हुआ?" वाल्या बोली।

"तुम कूद सकोगी?"

"कैसी बात करते हो!"

उसने वाल्या की मज़बूत, सँवलाई और सुनहरे रोओं से भरी टाँगों पर नज़र डाली। उसके हृदय में उत्साह की लहर दौड़ गयी। निस्सन्देह, यह लड़की दूसरी मंज़िल से कूद सकती है!

दूसरे क्षण वे दोनों पार्क से होकर स्कूल की ओर दौड़ते दिखायी दिये।

स्कूल की बड़ी-सी दोमंज़िला इमारत 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट के ऐन सामने, पार्क के मुख्य फाटक के भीतर थी। लाल ईंटों के उजले कमरों और विशाल व्यायामशाला में ताले जड़े थे। चारों ओर बिलकुल सन्नाटा छाया था। लेकिन अपने उच्च लक्ष्यों को ध्यान में रखकर सेर्गेई ने बिना किसी हिचकिचाहट के निचली मंज़िल की पार्क की ओर खुलनेवाली एक खिड़की का शीशा तोड़ दिया।

जब वे कक्षा के अन्दर आये और दबे पाँव गलियारे की ओर बढ़ने लगे, तो उनके हृदय आदर से भर उठे। पूरी की पूरी इमारत सुनसान थी। हल्की-सी भी आहट या आवाज़ चारों ओर गूँज उठती थी। पिछले कुछ दिनों के अन्दर दुनिया में बड़ी उथल-पुथल हो गयी थी। व्यक्तियों की तरह बहुत-सी इमारतें प्रयोजन और महत्व खो बैठी थीं। और अभी तक उनकी नयी भूमिका का पता न था। ऐसा होते हुए भी स्कूल की भूमिका अभी तक वैसी की वैसी बनी थी, जिसमें बच्चे ज्ञान की साधना

करते थे और जिसमें वाल्या अपने जीवन के न जाने कितने सुनहरे दिन बिता चुकी थी।

वे ऐसे दरवाज़ों के पास से गुजरे, जिन पर ये तख़्तियाँ लगी थीं : 'अध्यापक-कक्ष', 'प्रधानाध्यापक', 'प्रथम उपचार-कक्ष', भौतिक प्रयोगशाला', 'रसायन प्रयोगशाला', 'पुस्तकालय'। हाँ, यह स्कूल था, यहाँ बड़े लोग, अध्यापक बच्चों को यह सिखाया करते थे कि दुनिया में कैसे जीना चाहिए।

ख़ाली डेस्कोंवाली सुनसान कक्षाओं से, जिनमें स्कूल की वह ख़ास महक अभी भी बनी हुई थी, सेर्गेई और वाल्या को अचानक अपने उस संसार की स्वच्छ गन्ध मिलने लगी, जिसमें वे सयाने हुए थे, जो अविच्छिन्न रूप से उनका था और अब ऐसे लगता था जैसे हमेशा-हमेशा के लिए इतनी दूर चला गया है कि उनकी पहुँच के बिलकुल बाहर हो चुका है। एक ऐसा भी वक़्त था कि वह संसार उन्हें साधारण, सामान्य और कभी-कभी नीरस भी लगता था। और वही अब उनके सामने विलक्षण, अद्‌भुत और स्वतंत्र-सा मूर्तिमान हो उठा था, जिसमें शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच निष्कपट, सीधे और पवित्र सम्बन्ध रहा करते थे। कहाँ हैं वे अब – क़िस्मत की आँधी उन्हें कहाँ उड़ा ले गयी? क्षण भर के लिए सेर्गेई और वाल्या के हृदय उस संसार के प्रति पवित्र प्रेम से परिपूर्ण हो उठे, जो उनसे बहुत दूर चला गया था, जो पावन और भव्य था और जिसके महत्व को वे कभी आँक न सके थे।

दोनों के हृदय में एक जैसी ही भावनाएँ उठ रही थीं – वे कुछ बोले बिना यह अनुभव कर रहे थे। उन्हीं चन्द मिनटों के अन्दर वे असाधारण रूप से एक दूसरे के क़रीब आ गये।

वाल्या दूसरी मंज़िल पर जानेवाली पिछवाड़े की एक तंग सीढ़ी से चढ़ती हुई सेर्गेई को एक ऐसे छोटे-से दरवाज़े के पास ले गयी, जो छत की अटारी में खुलता था। दरवाज़े में ताला लगा था, लेकिन सेर्गेई हताश न हुआ। उसने अपने पतलून की जेब टटोलकर एक चाकू निकाला, जिसमें कई तरह के आलों-औज़ारों के साथ पेंचकश भी था। उसने दरवाज़े के दस्ते का पेच ढीला किया और फिर दस्ते को निकाल दिया, ताकि ताला खोलने में दिक़्क़त न हो।

"बहुत सफ़ाई से काम करते हो – लगता है जैसे तुम पक्के सेंधिया हो," वाल्या ने हँसते हुए कहा।

"सेंधिया के अलावा दुनिया में मिस्त्री भी तो होते है," सेर्गेई ने उसकी ओर मुड़कर धीरे-से हँसते हुए जवाब दिया।

उसने चाकू की नोक ताले के अन्दर डालकर इधर-उधर घुमाया-फिराया और ताला खुल गया। दरवाज़ा खुलते ही धूप से तपी लोहे की छत से नीचे रेत, धूल और

मकड़ी के जालों से भरी गर्म कोठरी की अजीब-सी महक उनकी नाक में समा गयी।

बल्लियों से अपने सिर को बचाते हुए वे एक खिड़की के पास पहुँच गये। उस पर धूल की मोटी परत जम गयी थी, लेकिन उसे उन्होंने हटाया नहीं, क्योंकि ऐसा करके वे नीचे से दूसरों का ध्यान आकृष्ट कर सकते थे। वे खिड़की के शीशे से मुँह सटाकर देखने लगे। उनके गाल एक दूसरे से सट-से गये।

नीचे उन्हें पार्क के फाटक के पास से शुरू होनेवाली सादोवाया सड़क दिखायी पड़ रही थी। प्रादेशिक पार्टी समिति के कर्मचारियों के मकान और उनके ठीक सामने, कोने पर 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की दोमंज़िला इमारत साफ़-साफ़ नज़र आ रही थी।

अब तक जर्मन टुकड़ियाँ नगर में घुस चुकी थीं : उनकी लारियाँ सादोवाया सड़क पर शोर मचाती जा रही थीं और जहाँ-तहाँ जर्मन सैनिक नज़र आने लगे थे।

"जर्मन! तो जर्मन ऐसे दीखते हैं। जर्मन हमारे क्रास्तोदोन में!" वाल्या सोच रही थी। उसका दिल धक-धक करने लगा।

सेर्गेई का ध्यान मामले के व्यावहारिक पक्ष पर केन्द्रित था। वह अपने सामने के दृश्य को पैनी आँखों से सूक्ष्मतापूर्वक देख रहा था और उसका हर ब्योरा याद करता जा रहा था।

स्कूल ट्रस्ट की इमारत से कोई दस गज़ की दूरी पर था और उससे ऊँचा था। सेर्गेई नीचे ट्रस्ट की लोहे की छत की ओर झांका। उसे पहली मंज़िल के कमरे, और निचली मंजिल के कमरों की खिड़कियों के पासवाला फ़र्श का हिस्सा नज़र आ रहे थे। सादोवाया सड़क के अलावा दूसरी सड़कें भी उसे दिखायी दे रही थीं, लेकिन पूरी तरह नहीं, क्योंकि वे मकानों की आड़ में थीं। जर्मन सैनिक बगीचों और अहातों में मालिकों की तरह धूम-फिर रहे थे। सेर्गेई यह सब देख रहा था और वाल्या को बताता जा रहा था।

"अरे ये तो सारी झाड़ियों को अन्धाधुन्ध काटते जा रहे हैं," वह बोला। "वे सूरजमुखी के पौधों को भी काट रहे हैं! लगता है कि वे ट्रस्ट को ही अपना हेडक्वार्टर बनायेंगे। देखो, देखो, वे कैसे मालिकों की तरह पेश आ रहे हैं!"

जर्मन अफ़सर और सैनिक – प्रत्यक्षतः कार्यालय-कर्मचारी – ट्रस्ट की इमारत की दोनों मंज़िलों पर डेरा जमाने लगे थे। सब के सब ख़ुश थे। उन्होंने खिड़कियाँ खोल दीं और अपने-अपने कमरों का मुआइना करने लगे। वे धुएँ के बादल उड़ाते दराज़ों को खोलकर देख रहे थे, और सिगरेट के अधजले टुकड़ों को बाहर, सुनसान गली में फेंक रहे थे। यह गली स्कूल और ट्रस्ट के बीच थी। कुछ देर बाद जवान और बूढ़ी रूसी औरतें कमरों में आयीं और अपने स्कर्ट ऊपर खोंसकर फ़र्श धोने-पोंछने

लगीं। और साफ़-सुथरे जर्मन क्लर्क उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे।

यह सब कुछ वाल्या और सेर्गेई के इतना क़रीब हो रहा था कि सेर्गेई के दिमाग़ में एक योजना कौंधने लगी। वह योजना अभी अस्पष्ट और अपूर्ण, क्रूर और सन्तापकारी थी, पर साथ ही आशाप्रद भी। उसने यह अन्दाज़ भी लगा लिया कि इस कोठरी की खिड़कियाँ आसानी से हटायी जा सकती हैं। खिड़कियों के शीशे चौखटों में टेढ़ी करके लगायी गयी पतली कीलों से जड़े थे।

सेर्गेई और वाल्या अटारी में बैठे इधर-उधर की बातें करने लगे।

"स्त्योपा सफ़ोनोव से फिर तुम्हारी भेंट हुई?" सेर्गेई ने पूछा।

"नहीं।"

सेर्गेई को यह सोचकर सन्तोष हुआ कि वाल्या सफ़ोनोव से कुछ कह न पायी थी।

"वह ज़रूर लौटकर आयेगा – आख़िर वह हमारा है," सेर्गेई बोला।

"अब तुम्हारी योजना क्या है, आगे कैसे जीने का विचार है?"

वाल्या ने दम्भ से कन्धे उचका दिये।

"अभी क्या कहा जा सकता है? पता नहीं, आगे क्या होगा!"

"हाँ, यह तो ठीक है," सेर्गेई बोला। "अच्छा, तुम्हारे यहाँ आकर क्या मैं तुमसे मिल सकता हूँ? तुम्हारे माँ-बाप बुरा तो नहीं मानेंगे?"

"नहीं, नहीं! कल ही आ जाओ। मैं स्त्योपा को भी बुला लूँगी।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"वाल्या बोर्त्स।"

उसी क्षण उन्हें वेर्ख़्नेदुवान्नामा कुंज की ओर से टामी-गन चलने की आवाज़ें सुनायी पड़ी। पहले देर तक चलती रहीं, फिर रुक-रुककर।

"गोलियाँ चलने लगीं, सुन रहे हो न?" वाल्या बोली।

"पता नहीं नगर में क्या हो रहा है। हम तो यहाँ बैठे हैं," सेर्गेई ने गम्भीरता से कहा। "क्या मालूम, अब तक जर्मनों ने हमारे घरों में भी अड्डा जमा लिया हो।"

तभी वाल्या को याद आया कि वह किस तरह बिना किसी से कुछ कहे-सुने घर से ग़ायब हो गयी थी। उसके माँ-बाप को कितनी चिन्ता हो रही होगी! लेकिन उसके दर्प ने उसे पहले यह कहने से रोक किया कि अब घर लौटने का वक़्त हो गया है। लेकिन सेर्गेई कभी इस बात की परवाह नहीं करता कि लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे।

"अब घर लौटने का समय हो गया है," वह बोला।

वे उसी रास्ते से बाहर निकले, जिस रास्ते से अन्दर आये थे।

कुछ क्षण तक वे बगीचे के सामने बाड़े के पास खड़े रहे। वे यह सोचकर थोड़ा झेंप-से रहे थे कि वे अटारी में इतनी देर साथ बैठे रहे।

"अच्छा तो कल मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगा," सेर्गेई बोला।

जब सेर्गेई घर पहुँचा, तो उसने वही ख़बर सुनी, जो उसने बाद में वोलोद्या ओस्मूख़िन को बतायी थी कि अस्पताल में बचे-खुचे घायलों को बाहर निकाल दिया गया है और डाक्टर फ़्योदोर फ्योदोरोविच को गोली से मार दिया गया है। यह ख़बर उसने अपनी बहन नाद्या से सुनी, जो ख़ुद अपनी आँखों से यह सब कुछ देख चुकी थी।

एस. एस. से भरी दो कारें और कई लारियाँ अस्पताल के पास आकर रुकीं। बाहर निकली नताल्या अलेक्सेयेव्ना को हुक्म मिला कि वह आधे घण्टे के अन्दर-अन्दर अस्पताल को ख़ाली कर दे। उसने चलने-फिरने लायक़ मरीजों से कहा कि वे तुरन्त बच्चों के अस्पताल में चले जायें। साथ ही उसने जर्मनों से मिन्नत की कि वे उसे थोड़ा वक़्त और दें, क्योंकि जो मरीज खाट से लगे हैं, उन्हें ले जाने के लिए कोई सवारी न रहने के कारण इतनी जल्दी नहीं हटाया जा सकता।

अफ़सर अपनी कारों में बैठ गये थे।

"फ़ेनबोंग! यह औरत क्या चाहती है?" एक सीनियर अफ़सर ने सोने के दाँतों और सींग के बने चमकीले फ़्रेम के चश्मेवाले लंबे और भारी-भरकम एन.सी.ओ. से पूछा। उसके बाद कारें चली गयीं।

चश्मा पहनने से वह एन.सी.ओ. यदि वैज्ञानिक की तरह नहीं तो कम से कम एक बुद्धिजीवी की तरह तो ज़रूर ही लगता था। जब नताल्या अलेक्सेयेव्ना उससे यह विनती करने उसके पास पहुँची और उसके साथ जर्मन भाषा में बोलने की कोशिश की, तो वह चश्मे की भीतर से टकटकी बाँधे उसे देखता रहा। ऐसा लगता था, जैसे वह नताल्या अलेक्सेयेव्ना से परे किसी और को देख रहा है। अपनी ज़नानी-सी आवाज़ में उसने अपने आदमियों को हाँक लगायी और आधा घण्टा बीतते न बीतते वे मरीज़ों को निकाल-निकालकर अहाते में इकट्ठा करने लगे।

वे मरीज़ों को उनके बिस्तरों के साथ ही बाहर घसीट लाये। और तब उन्हें पता चला कि अस्पताल में आम मरीज़ों के अलावा घायल सैनिक भी हैं।

फ़्योदोर फ़्योदोरोविच ने नगर के अस्पताल के सर्जन की हैसियत से आगे बढ़कर जर्मनों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि उन मरीज़ों की हालत इतनी बुरी है कि अब वे लड़ाई में भाग लेने के बिलकुल क़ाबिल नहीं रहे हैं। इसीलिए उन्हें नगर अस्पताल में रखा गया है। लेकिन एन.सी.ओ. ने बताया कि चूँकि वे

सैनिक हैं, इसलिए उन्हें क़ैदी बनाकर उपयुक्त स्थान में भेज दिया जायेगा। इसके बाद जर्मनों ने जांघिया और गंजी पहने हुए घायलों को बिस्तरों पर से बाहर घसीटकर एक दूसरे के ऊपर लारियों में डाल दिया।

फ़्योदोर फ़्योदोरोविच के गर्म मिज़ाज को जानते हुए नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने उनसे चले जाने का अनुरोध किया, लेकिन वे दो खिड़कियों के बीच गलियारे में ही खड़े रहे। उनका धूप में सँवलाया चेहरा राखनुमा रंग पकड़ चुका था। वे होंठों में दबा सिगरेट का टुकड़ा चबा-से रहे थे। उनके घुटने इस तरह थरथराने लगे थे कि वे जब-तब झुककर उन्हें सहलाने लगते थे। नताल्या अलेक्सेयेव्ना उन्हें छोड़कर हटने से डर रही थी और उसने नादूया को भी न जाने दिया। ख़ून से रंगी पट्टियों में अधनंगे घायलों को गलियारे में घसीट-घसीटकर ले जाने का दृश्य कितना हृदय-विदारक और कष्टकारक था। नादूया रोने का साहस न कर सकी। हालाँकि अनजाने ही आँसू की मोटी-मोटी बूँदें उसके गालों पर ढुलकने लगी थीं, वह वहाँ से हटी नहीं। उसे डाक्टर की बड़ी चिन्ता थी, उसके लिए वह बहुत डर रही थी।

दो जर्मन एक घायल को घसीटने लगे, जिसके गुर्दे में बम की किरचें घुस गयी थीं। दो हफ़्ते पहले फ़्योदोर फ़्योदोरोविच ने उसका गुर्दा निकाला था। घायल की हालत सुधरने लगी थी और डाक्टर को इस आपरेशन की सफलता से बड़ी ख़ुशी हुई थी। जर्मनों में से एक को एन.सी.ओ. फ़ेनबोंग ने आवाज़ लगायी। घायल के पैरों को छोड़कर वह वार्ड की ओर दौड़ा। तब दूसरा जर्मन अकेला ही बड़ी बेरहमी से घायल को घसीटने लगा।

फ़्योदोर फ़्योदोरोविच अचानक ही दीवार से हटे और घायल की ओर दौड़े। अन्य घायलों की तरह वह भी असहनीय पीड़ा और यातना के बावजूद नहीं कराहा था, लेकिन फ़्योदोर फ़्योदोरोविच पर नज़र पड़ते ही वह बोल उठा :

"देखिये, फ़्योदोर फ़्योदोरोविच – ये क्या कर रहे हैं! क्या वे इंसान हैं?"

और उसके आँसू फूट पड़े।

डाक्टर ने जर्मन भाषा में जर्मन सैनिक से कुछ कहा। शायद उन्होंने यह कहा होगा कि ऐसा करना उचित नहीं है। या शायद यह भी कहा हो : "मैं इस घायल को उठाने में तुम्हारी मदद करूँगा।" लेकिन जर्मन हँसा और फिर घायल को घसीटने लगा। तभी फ़ेन्बोंग वार्ड से निकलकर गलियारे में आ गया और फ़्योदोर फ़्योदोरोविच उसकी ओर बढ़े। डाक्टर का चेहरा बिल्कुल फक हो गया था और वे थरथरा रहे थे। उन्होंने एन.सी.ओ. के ऐन सामने जाकर तेज़ आवाज़ में कुछ कहा। काली वर्दी पहने एन.सी.ओ. ने, जिसकी थुलथुल छाती पर खोपड़ी और आड़ी-तिरछी हड्डियोंवाला चमकीला बिल्ला लगा था, उत्तर में गुर्राते हुए कुछ कहा और पिस्तौल निकालकर

उसकी नाल डाक्टर के मुँह से लगा दी। फ़्योदोर फ़्योदोरोविच पीछे हट गये और शायद कोई कड़ी बात बोले। तब अपने चश्मे के भीतर से डाक्टर की ओर आँख फाड़-फाड़कर देखते हुए उसने उनकी दोनों आँखों के बीच गोली दाग़ दी। डाक्टर की आँखों के बीच गहरा गड्ढा हो गया और ख़ून तेजी से बहने लगा। नाद्या ने यह दृश्य अपनी आँखों से देखा। डाक्टर फ़र्श पर गिरा पड़ा। नताल्या अलेक्सेयेव्ना और नाद्या अस्पताल के बाहर भागीं। और नाद्या को याद नहीं वह घर कैसी पहुँची।

नाद्या अस्पताल की पोशाक में ही वहाँ बैठी थी और यह किस्सा बार-बार दुहरा रही थी। वह रो नहीं रही थी। उसका चेहरा बिलकुल सफ़ेद पड़ गया था। उसके गालों की उभरी हड्डियाँ अंगारे जैसी लाल हो गयी थीं और उसकी चमकीली आँखें यह नहीं देख पा रही थीं कि वह यह सब किसे सुना रही है।

"सुन, ऐ!... आवारा!" गुस्से से खाँसते हुए उसका पिता सेर्गेई से बोला। "तेरी खाल उधेड़ दूँगा! जर्मन शहर भर में अड्डा जमाये बैठे हैं और यह शहर में मटरगश्ती कर रहा है! माँ की जान लेने में कोई क़सर छोड़ी है तूने?"

माँ रोने लगी।

"मैं तो चिन्ता के मारे मरी जा रही थी। मैंने सोचा, कहीं उन्होंने तुम्हें मार न दिया हो!"

"मुझे!" सेर्गेई अचानक घृणाभरी आवाज़ में बोला। "नहीं, उन्होंने मुझे गोली नहीं मारी। हाँ, घायलों को उन्होंने गोलियों से उड़ा दिया। उस कुंज में। मैंने अपने कानों से सुना..."

वह दूसरे कमरे में जाकर बिछावन पर पड़ गया और तकिये में मुँह छिपा लिया। उसका पूरा शरीर बदला लेने की भावना से थरथरा रहा था। उसकी साँस फूल रही थी। स्कूल की छत पर की अटारी में जो विचार उसके दिमाग़ में कौंधा था अब वह उसे कार्य-रूप में परिणत करने की सोच रहा था। उसने सोचा : "ज़रा रात होने दो तब देखेंगे!" वह बिस्तर पर छटपटाता रहा। दुनिया की कोई भी ताक़त उसे अब रोक नहीं सकती थी। वह अपनी योजना पूरी करके ही रहेगा।

उन्होंने बत्ती नहीं जलायीं और सब जल्दी ही सोने चले गये। लेकिन उनके मन में इतना तनाव था कि उन्हें नींद ही नहीं आ रही थी। नज़र बचाकर घर से बाहर निकलना असम्भव था – इसलिए सेर्गेई खुले-आम ही बाहर निकला, मानो अहाते में स्थित पाख़ाने में जा रहा हो। उसके बाद वह साग-सब्जी के बगीचे में झपटा। उसने हाथों से ही वह गड्ढा खोद डाला, जिसमें उसने आग लगानेवाली बोतलें छिपा रखी थीं – रात के समय कुदाली का इस्तेमाल करना ख़तरे से ख़ाली न था। इतने में झोपड़ी का दरवाज़ा खोलकर नाद्या बाहर निकल आयी और कुछ क़दम आगे बढ़कर धीमी

आवाज़ में पुकारने लगी :

"सेर्गेई! सेर्गेई!"

उसने क्षण भर चुप रहकर फिर आवाज़ लगायी और इसके बाद ही दरवाज़ा बन्द कर अन्दर चली गयी।

सेर्गेई ने दो बोतलें पतलून की जेबों में और तीसरी बोतल क़मीज़ के भीरत ठूँस ली और पार्क की ओर चल पड़ा। जुलाई का महीना था और हवा बन्द थी। वह शंघाई मुहल्ले की ओर से चक्कर लगाकर जाने लगा, क्योंकि वह नगर के केन्द्र से दूर रहना चाहता था।

पार्क वीरान और सुनसान था। स्कूल की इमारत के अन्दर तो और भी गहरा सन्नाटा छाया था। वह दिन में जिस खिड़की से स्कूल के भीतर दाख़िल हुआ था, उसी से फिर अन्दर घुसा। लगता था जैसे उसके हर क़दम की आहट नगर भर में प्रतिध्वनित हो रही है। बाहर से ज़ीने पर मद्धिम रोशनी पड़ रही थी और ज़ीना चढ़ते हुए सेर्गेई को ऐसा लगा जैसे अँधेरे कोने में कोई छिपा हुआ है और वह उस पर हमला कर सकता है। क्षण भर के लिए वह सहम गया, लेकिन शीघ्र ही उसने अपने पर क़ाबू रखा। वह सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ छतपर बनी कोठरी में पहुँच गया।

कई मिनट तक सेर्गेई खिड़की के सामने बैठा रहा, हालाँकि खिड़की के परे से अब कुछ नहीं नज़र आ रहा था। वह केवल दम देना चाहता था।

इसके बाद उसने टटोल-टटोलकर खिड़की के चौखटे पर गड़ी पतली कीलों को मोड़ना शुरू किया और आहिस्ता-से फ़्रेम को हटाकर नीचे रख दिया। ताज़ा बयार के झोंके उसके चेहरे को दुलराने लगे। अटारी में अभी भी घुटन और गरमी थी। स्कूल और ख़ासकर अटारी के अँधेरे के आदी हो जाने के बाद उसकी पैनी आँखें यह देखने लगीं कि नीचे, सड़क पर क्या हो रहा है। नगर में दौड़ती लारियों की घरघराहट सुनायी दे रही थी और उनकी चलती-फिरती मद्धिम बत्तियाँ भी दिखायी दे रही थीं। वेर्ख़्नेदुवान्नाया की ओर से फ़ौजी टुकड़ियों का प्रवाह रात के समय भी उसी तरह चल रहा था। पूरी सड़क पर उसे रात के अँधेरे में बत्तियाँ जगमगाती नज़र आ रही थीं। पहाड़ी की ओर से लारियों की तेज़ बत्तियाँ सर्चलाइटों की तरह आसमान को आड़े-तिरछे काटती हुई स्तेपी के किसी भाग को जगमगा देतीं और कुंज में पत्तियों का सफ़ेद पृष्ठभाग चमक उठता।

फ़ौज के रात्रिकालीन कार्यकलाप ट्रस्ट के मुख्य फाटकों के बाहर भी ज़ोर-शोर से चल रहे थे। लारियों और मोटर-साइकिलों का ताँता बँधा रहा। सैनिक और अफ़सर बूटों की एड़ियाँ टकराते तथा हथियार खनखनाते लगातार आ-जा रहे थे। रूखी, विदेशी बोली सुनायी पड़ रही थी। लेकिन ट्रस्ट की खिड़कियाँ गहरे अन्धकार में डूबी

हुई थीं।

सेर्गेई की इन्द्रियाँ इतनी सचेत थीं और उसकी बुद्धि अपने लक्ष्य पर इस तरह केन्द्रित थी कि अँधेरी खिड़कियोंवाली यह अप्रत्याशित स्थिति भी उसे हताश न कर सकी। वह अपने निर्णय पर अटल रहा। खिड़की पर बैठे-बैठे उसने कम से कम दो घण्टे और गुज़ारे। नगर में अब पूर्ण सन्नाटा छा गया था। ट्रस्ट के बाहर की चहल-पहल भी शान्त हो चुकी थी, लेकिन भीतर लोग अभी सोये नहीं थे। काले कागज़ चिपकायी खिड़कियों के किनारों से छन रही रोशनी से यह साफ़ पता चल रहा था। तभी पहली मंजिल की दो खिड़कियों की रोशनी गुल हो गयी और पहले एक खिड़की खुली, बाद में दूसरी। सेर्गेई ने भाँप लिया कि कोई व्यक्ति अँधेरी खिड़की पर खड़ा है, पर वहाँ से वह नज़र नहीं आ रहा था। निचली मंज़िल के कुछ कमरों की भी रोशनी गुल हुई और उनकी खिड़कियाँ भी खुलीं।

"Wer ist da?"* दूसरी मंज़िल की खिड़की पर से रोबदार आवाज़ सुनायी पड़ी और सेर्गेई को लगा जैसे कोई आकृति दासे पर से झुककर बाहर झाँक रही हो। "कौन है वहाँ?" वह आवाज़ फिर सुनायी पड़ी।

"लेफ़्टिनेण्ट मेयेर, Herr Oberst," नीचे से एक नौजवान की आवाज़ सुनायी दी।

"मैं आपको निचली मंज़िल की खिड़कियाँ खोलने की सलाह नहीं दूँगा," ऊपर से आवाज़ आयी।

"अन्दर तो दम घुटा जा रहा है, Herr Oberst। लेकिन यदि आप मना करते हैं, तो..."

"अच्छा, कोई बात नहीं, ज़िन्दा ही क्यों गरमी में घुट-घुटकर मरा जाये। Sie brauchen nicht zum Schmobraten werden," हँसते हुए व्यक्ति ने रोबदार आवाज़ में कहा।

सेर्गेई धड़कते दिल से उनकी बातें सुनने लगा। किन्तु जर्मन का एक भी शब्द वह समझ नहीं पाया।

अब हर जगह बिजली बुझा दी गयी थी और काले पर्दों को उठाकर खिड़कियाँ खोल दी गयी थीं। इक्की-दुक्की बातें करने की आवाज़ सुनायी दे जातीं। किसी ने सीटी बजानी शुरू कर दी। रह-रहकर दियासलाई जल उठती और कोई चेहरा एक क्षण के लिए दीख जाता, सिगरेट और उँगलियाँ चमक उठतीं। इसके बाद कमरे के अन्धकार में जलती सिगरेट की दमक काफ़ी देर तक बनी रहती।

---

* कौन वहाँ है?

“कितना विशाल देश है – अन्त का पता ही नहीं चलता।” “Da ist ja kein Ende abzuszhen”, खिड़की के पास से कोई बोला। ज़ाहिर है वह कमरे के अन्धकार में खोये अपने किसी साथी को सम्बोधित कर रहा था।

जर्मन सोने की तैयारियाँ करने लगे थे। ट्रस्ट की इमारत और नगर भर में सन्नाटा छा गया था। केवल वेर्ख़्नेदुवान्नाया की ओर से लारियाँ की घरघराहट अभी भी थमी नहीं थी। जब-तब उनकी तेज़ बत्तियाँ आसमान की चीरती-सी लग रही थी।

सेर्गेई को अपने दिल की धड़कनें सुनायी देने लगीं। उसे लगा जैसे वे पूरी अटारी में भी गूँज रही हों। वहाँ घुटन और गरमी अभी भी बनी हुई थी। वह पसीने से तर-बतर हो गया था।

उसके सामने ट्रस्ट की इमारत की धुँधली आकृति अँधेरे में ऊँघ-सी रही थी। उसकी खिड़कियाँ खुली थीं। सेर्गेई ने आँखें गड़ाकर दोनों मंज़िलों की खिड़कियों का जायज़ा लेना शुरू कर दिया – हाँ, अपना काम करने का वक़्त आ गया था... उसने अपनी बाँह दो-चार बार झटकाकर दूरी और निशाने का अन्दाज़ लगा लिया।

अटारी में पहुँचते ही उसने अपनी जेबों से बोतलें निकालकर अपनी बग़ल में ले ली थी। उसने एक बोतल की गरदन पकड़ निशाना साधा और अपनी पूरी ताक़त बटोरकर निचली मंज़िल की एक खिड़की में फेंका। पूरी की पूरी खिड़की, यहाँ तक कि स्कूल और ट्रस्ट के बीच की गली का कुछ हिस्सा भी आँखों को चौंधिया देनेवाली रोशनी से चमक उठा। साथ ही साथ काँच के टूटने जैसी ध्वनि हुई और किसी बल्ब के फूटने की-सी एक आवाज़ आयी। खिड़की से लपटें निकलने लगीं। क्षण भर बाद सेर्गेई ने दूसरी बोतल फेंकी। धड़ाके के साथ आग की लपटें उठीं, पूरा कमरा आग की लपटों में घिर गया। अब खिड़की के चौखटे जलने लगे और आग पहली मंज़िल का दीवार को भी छूने लगी। वहाँ कोई भयानक रूप से चीख़ और चिल्ला रहा था। पूरी इमारत में होहल्ला मच उठा। सेर्गेई ने तीसरी बोतल उठाकर सामनेवाली दूसरी मंज़िल की खिड़की में फेंकी।

बोतल के फटने की आवाज़ उसे सुनायी दी और इतनी तेज़ रोशनी हुई कि जिस अटारी में वह ख़ुद बैठा था उसका कोना-कोना तक चमक उठा। लेकिन तब तक सेर्गेई अटारी से भागकर अँधेरी सीढ़ियाँ उतरने लगा था। जिस रास्ते से घुसा था, उसकी तलाश करने का वक़्त न था। वह बेतहाशा भागता हुआ पहले जो भी कमरा मिला उसी में घुस गया। वह शिक्षकों का कमरा था। उसने झट एक खिड़की खोल दी और बाहर कूद पड़ा। अपनी सारी ताक़त लगाकर वह दौड़ गया और पार्क की झाड़ियों में ग़ायब हो गया।

तीसरी बोतल फेंकने के बाद से लेकर अब तक – जब कि उसे यह एहसास

हुआ कि वह पार्क की झाड़ियों में दौड़ रहा है – उसने जो कुछ किया वह बिना सोचे-समझे और अनजाने में किया। उसे मुश्किल से याद आ रहा था कि यह सब कुछ कैसे हुआ। लेकिन अब उसके मस्तिष्क में यह विचार कौंध गया कि ज़मीन पर लेटकर चुपचाप कुछ देर के लिए सुनना ज़रूरी है।

उसे पास ही घास में चूहे की सरसराहट सुनायी पड़ी। यहाँ से तो आग नहीं दिखायी देती थीं, लेकिन सड़क पर लोगों के चिल्लाने-चीख़ने और भागने-दौड़ने की आवाज़े ज़रूर सुनायी पड़ रही थीं। वह उठ खड़ा हुआ और पार्क के छोर की ओर दौड़ गया। दूसरे ही क्षण वह अब बेकार पड़ी ख़ान के मिट्टी के ढेर के पास था। उसने सोचा कि यदि पार्क चारों ओर से घेर लिया जायेगा, तो वह उधर से ही चलता बनेगा।

आसमान के एक ओर लाली तेज़ी से फैलती जा रही थी। जहाँ आग लगी थी, वहाँ से कुछ दूर स्थित विशालकाय टीले की नुकीली चोटी और पार्क के पेड़ों की फुनगियाँ नीललोहित आभा से दमकने लगी थीं। सेर्गेई का हृदय उत्साह से भर उठा और ऐसा लगा जैसे उसके पंख निकल आये हों। उसका सारा शरीर काँप रहा था। उसने अपने को संयत रखने की कोशिश की, ताकि हँसी का वेग न फूट पड़े।

"अहा, मज़ा चख लिया! Setzen Sie sich! Sprechen Sie Deutsch! Haben Sie erwas!" हृदय में अजीब उत्साह के साथ वह ये जुमले दोहरा रहा था, जिन्हें वह स्कूल में जर्मन व्याकरण से कण्ठस्थ कर चुका था।

आग की चमक और भी तेज़ होती जा रही थी और पार्क के ऊपर का आसमान लाल हो उठा था। नगर के केन्द्र में होनेवाले शोरगुल और खलबली की आवाज़ यहाँ तक पहुँच रही थी। अब उसे ज़रूर भाग जाना चाहिए। उसके मन में यह प्रबल इच्छा उठी कि वह उस बगीचे में एक बार फिर हो आये, जहाँ दिन में उसकी मुलाक़ात उस लड़की – वाल्या बोर्त्स – से हुई थी। हाँ, अब वह उसका नाम भी जान गया था।

निःशब्द वह अँधेरे में सरकता हुआ-सा देरेव्यान्नाया सड़क पर खड़े मकानों के पिछवाड़े से आगे बढ़ने लगा। उसे बगीचा मिल गया और वह टट्टर लाँघकर अन्दर आ गया। वह फाटक पार कर सड़क पर पहुँचने ही वाला था कि उसे फाटक के पास फुसफुसाहट की आवाज़ सुनायी पड़ी। जर्मनों ने अभी देरेव्यान्नाया सड़क पर क़ब्ज़ा नहीं जमाया था, इसलिए उस इलाक़े के लोग आग का तमाशा देखने के लिए सड़क पर निकल आये थे। सेर्गेई बिना आहट किये मकान की दूसरी ओर चला गया और टट्टर लाँघकर बाहर निकल आया। उसके बाद सड़क की ओर से फाटक के पास आया। वहाँ कुछ औरतें खड़ी थीं, जिनके चेहरे आग की दमक से दिखायी पड़ रहे थे। उनके बीच खड़ी वाल्या को उसने तुरन्त पहचान लिया।

"यह आग कहाँ लगी है?" उसने वाल्या को अपनी उपस्थिति का अनुभव कराने के लिए ही पूछा।

"अवश्य ही सादोवाया सड़क पर कहीं... शायद स्कूल में," एक उत्तेजित महिला ने उत्तर दिया।

"ट्रस्ट में आग लगी है," वाल्या ने चुनौती-सी देते हुए तेज़ स्वर में जवाब दिया। "मैं सोने जा रही हूँ, माँ," उसने कहा और जंभाई लेने का बहाना करती हुई फाटक के अन्दर चली गयी।

सेर्गेई उसके पीछे-पीछे जाना चाहता था, लेकिन वाल्या सायबान की सीढ़ियाँ चढ़कर अन्दर चली गयी और फटाक से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

अध्याय 20

क्रास्नोदोन तथा उसके पास-पड़ोस के शहर और गाँव आगे बढ़ती हुई जर्मन फ़ौज के रास्ते में पड़ते थे। इसलिए लगातार बहुत दिनों तक मुख्य जर्मन फ़ौजे इनमें से होकर आगे बढ़ती रहीं : टैंक, पैदल फ़ौज की लारियाँ, छोटी-बड़ी तोपें, संचार-टुकड़ियाँ, रसद-गड़ियाँ, मेडिकल और इंजीनियरिंग दस्ते, छोटे-बड़े दस्तों के अफ़सर – रात-दिन इनका ताँता लगा रहा। इंजनों की घरघराहट से लगातर ज़मीन और आसमान गूँजते रहे और नगर तथा स्तेपी के ऊपर धूल के घने बादल छाये रहे।

अनगिनत फ़ौजी टुकड़ियों और युद्ध के हथियारों की इस बोझिल ताल-लय युक्त गति में एक क्रूर व्यवस्था थी – 'Ordnung'। लगता था जैसे संसार में कोई भी ताक़त इस शक्ति से, इसकी क्रूर लौह व्यवस्था – 'Ordnung' से लोहा नहीं ले सकती।

रसद और गोला-बारूद से लदी विशालकाय लारियाँ – रेल के डिब्बों जितनी ऊँची लारियाँ – और पेट्रोल की चपटी-गोल टंकियाँ अपने भारी-वज़नी पहियों से धरती का ज़र्रा-ज़र्रा रौंदती हुई बोझिल गति से आगे को सरकती रहीं। सैनिकों की वर्दियाँ चुस्त-दुरुस्त और बढ़िया थीं। फ़ौजी अफ़सरों की वर्दियाँ तो और भी बाँकी थीं। जर्मनों के साथ-साथ रूमानियन, इतालवी और हंगेरियन भी आते रहे। इस फ़ौज की तोपों, टैंकों और हवाई जहाज़ों पर यूरोप की विभिन्न फ़ैक्टरियों के निशान थे। रूसी भाषा के अलावा अन्य भाषाएँ भी जाननेवाले लोग, लारियों और कारों पर अंकित ट्रेडमार्कों को पढ़कर इस ख़्याल से दहल जाते थे कि यूरोप के इतने बहुत-से देशों के कल-कारख़ाने जर्मन फ़ौज को साज़-सामान सप्लाई कर रहे हैं। उस जर्मन फ़ौज को, जो घहराते इंजनों की ताल-लय पर मार्च करती हुई दोनेत्स स्तेपी को पार कर

रही थी। आकाश में काले कुहासे की तरह धूल के बादल उड़ रहे थे।

फ़ौजी मामलों की थोड़ी भी जानकारी रखनेवाला अदना-सा व्यक्ति यह महसूस कर सकता था कि इस शैतानी ताक़त के सामने सोवियत फ़ौज का पीछे हटकर दूर पूरब और दक्षिण पूरब में, नोवोचेर्कास्क और रोस्तोव में, शान्त दोन के पार वोल्गा की ओर और कुबान में शरण लेना लाज़िमी ही था। और दृढ़ विश्वास के साथ कौन कह सकता था कि वह इस क्षण कहाँ होगी? केवल जर्मन विज्ञप्तियों और जर्मन सैनिकों की बातचीत से यह अन्दाज़ लगाया जा सकता था कि किन इलाक़ों में आपके बेटे, आपके पति, आपके भाई अभी भी लड़ रहे थे या शहीद होकर अपनी प्यारी जन्मभूमि की गोद में हमेशा के लिए सो चुके थे।

उधर जर्मन टुकड़ियाँ टिड्डी-दलों की तरह बचा-बचाया सब कुछ का सत्यानाश करती हुई क्रास्नोदोन से होकर आगे की ओर उमड़ती रहीं। परन्तु इन हरावल दस्तों के प्रबन्ध विभाग, हेडक्वार्टर, रसद-विभाग, रिज़र्व टुकड़ियाँ, नगर में आराम से अपना अड्डा जमाने लगीं मानो वे अपने ही घरों में डेरा डाल रहे हों।

जर्मन शासन के अधीन अपने जीवन के उन आरम्भिक दिनों में स्थानीय नागरिकों में से कोई भी यह नहीं समझ पाया था कि कौन-से जर्मन अधिकारी अस्थायी शासक थे और कौन-से स्थायी या किस तरह का शासन-तंत्र नगर में स्थापित किया गया है और नागरिकों से क्या अपेक्षा की जाती है। वे केवल इतना ही जान पाये कि उधर से गुज़रनेवाले सैनिकों और अफ़सरों के नाज़-नख़रे और रोब-दाब का ख़्याल रखते हुए वे किस तरह पेश आयें, अपने घरों में किस तरह रहें और क्या करें। हर परिवार एक दूसरे से कटा-कटा-सा रह रहा था, अपनी विवशताओं और भयावह दशा को अधिकाधिक महसूस करते हुए अपने ढंग से नयी और आतंकपूर्ण स्थिति के अनुकूल अपने को ढालने की कोशिश कर रहा था।

नानी वेरा तथा येलेना निकोलायेव्ना के जीवन में नयी और भयावह बात यह थी कि उनका घर जर्मनों का हेडक्वार्टर बना हुआ था : उसमें जनरल बैरन वान वेन्ज़ेल, उसका एडजुटेण्ट तथा लाल बालों और चित्तीदार चेहरेवाला अर्दली अड्डा जमाये बैठे थे। अब उनके घर के फाटक पर हमेशा ही एक जर्मन सन्तरी पहरा देने लगा था। उनका घर हमेशा जनरलों, अफ़सरों से भरा रहता था। वे बेहिचक इस तरह आते-जाते मानो यह उनका अपना घर हो, कमरे में मशविरा करते या केवल खाते और पीते रहते। कमरा जर्मन बोली, उनके रेडियो से प्रसारित जर्मन फ़ौजी धुनों और संवादों से गूँजता रहता। घर के मालिकों – नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना – को एक छोटे-से, घुटनभरे कमरे में ठूँस दिया गया था। वह कमरा बग़लवाले रसोईघर की गरमी से तपता रहता और इन दोनों औरतों को तड़के सुबह से देर रात गये तक

जर्मन जनरलों और अफ़सरों की जी-हुज़ूरी करनी पड़ती।

अभी कल तक नानी वेरा गाँव में अपने नेक काम-काज के कारण जाने-माने व्यक्तियों में से एक थी। वह पेंशन पाती थी और दोनबास के प्रसिद्ध भूतत्व-वेत्ता की माँ थी। येलेना निकोलायेव्ना भी एक ऐसे सुविख्यात व्यक्ति की विधवा थी, जो कानेव नगर के कृषि-विभाग का मैनेजर रह चुका था। येलेना निकोलायेव्ना क्रास्नोदोन के एक स्कूल मे पढ़नेवाले सबसे तेज और मेधावी शिष्य की माँ भी थी। कल ही की तो बात है कि इलाक़े भर में इन दोनों की कितनी प्रसिद्धि थी और कितना मान था! और आज वे चित्तीदार चेहरेवाले जर्मन नौकर के नीचे काम कर रही थीं। उनका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया था।

जनरल बैरन वान वेन्त्ज़ेल फ़ौजी मामलों में इतना व्यस्त रहता था कि वह नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना की ज़रा भी परवाह न करता था। वह घण्टों नक़्शे पर झुका हुआ सोचता रहता, अपने एडजुटेण्ट द्वारा सामने रखे गये काग़ज-पत्रों को पढ़ता, उन पर कुछ लिखता और अपने दस्तख़त करता, अन्य जनरलों के साथ ब्राण्डी पीता। कभी-कभी वह ग़ुस्से से भड़क उठता और इस तरह चिल्लाने लगता मानों फ़ौज की परेड करा रहा हो। तब दूसरे जनरल अपनी दोनों बाँहें अपने पतलून के पायंचों की लाला धारियों से सटाकर सीधे खड़े हो जाते। नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना को यह भाँपते देर न लगी कि जनरल वान वेन्त्ज़ेल की मर्ज़ी और इशारे पर ही जर्मन फ़ौजें, हवाई जहाज़, टैंक और तोपें क्रास्नोदोन से या अन्य इलाक़ों से होकर बढ़ती जा रही हैं और जनरल के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण था कि वे निश्चित स्थान में नियत समय पर पहुँच जायें। लेकिन जिधर से वे गुज़रते थे उधर कैसा क़हर ढाते जाते थे, इससे न उसे कोई वास्ता था और न कोई दिलचस्पी ही। उसी तरह जिस तरह नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना के घर में रहते हुए उसे उनके अस्तित्व तक में कोई रुचि नहीं थी।

जनरल वान वेन्त्ज़ेल के आदेश से या उसकी उपेक्षापूर्ण, गुप-चुप मंज़ूरी से सैकड़ों-हज़ारों क्रूर और अधम कार्य किये जाते। जर्मन कुछ न कुछ हर घर से छीन ले जाते – नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना के यहाँ से सुअर की चर्बी, शहद, अण्डे और मक्खन उठा ले जाते। और लाल टेंटुएवाली सख़्त गरदन पर टिका जनरल का सिर हमेशा अकड़ा ही रहता, वह इसकी ज़रा भी परवाह न करता। उसे देखने से ऐसा लगता था, जैसे इस जनरल के दिमाग में कभी कोई बुरा या नीच ख़याल घुसा ही नहीं होगा।

जनरल और एडजुटेण्ट के लिए मानो नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना का कोई अस्तित्व ही न था – उन्हें वे न व्यक्ति समझते थे न पदार्थ। जर्मन अर्दली ही

इन दोनों महिलाओं का सर्वेसर्वा और मालिक था।

इस नयी और भयावह स्थिति के अनुकूल अपने को ढालने के प्रयास में नारी वेरा को शुरू-शुरू में ऐसा लगा कि वह कभी भी इस स्थिति को स्वीकार नहीं कर सकती। चतुर नानी ने यह ताड़ लिया कि अपने अफ़सरों की उपस्थिति में वह जर्मन अर्दली इन दोनों महिलाओं को मौत के घाट उतारने की हिम्मत नहीं कर सकता और न उसे इसका पर्याप्त अधिकार ही प्राप्त है। पूरे साहस के साथ नानी वेरा उस नौकर से झगड़ बैठती और जब वह नानी वेरा पर चीख़ता-चिल्लाता, तो वह भी उलटकर उसे ख़ूब खरी-खोटी सुनाती। नानी की यह हिम्मत दिन पर दिन बढ़ती ही गयी। एक बार जब ग़ुस्से में अर्दली ने नानी वेरा को अपने भारी बूट से ठोकर मारी, तो नानी वेरा ने भी झट अपनी पूरी ताक़त लगाकर उसके सिर पर कड़ाही दे मारी। ग़ुस्से से लाल और थरथराता अर्दली – यह आश्चर्य की ही बात थी – ग़ुस्सा पीकर रह गया। सो, जर्मन अर्दली और नानी वेरा के बीच इस प्रकार के अजीब और जटिल सम्बन्ध स्थापित हो गये। दूसरी ओर, येलेना निकोलायेव्ना, अब भी मानसिक अचेतनता की स्थिति में खोयी हुई थी। वह ख़ामोश बनी रहती और उसे जो कुछ भी हुक्म दिया जाता, उसे यंत्रवत करती रहती। घने सुनहरे बालोंवाला उसका सिर उठा ही रहता।

एक दिन जब येलेना निकोलायेव्ना अपने घर के पिछवाड़े पानी लेने गयी थी, तो उसकी नज़र एक जानी-पहचानी घोड़ा-गाड़ी पर पड़ी। वह ठीक उसकी ओर चली आ रही थी। उसका बेटा ओलेग गाड़ी की बग़ल में पैदल चला आ रहा था।

उसने चारों ओर बेबस निगाहें दौड़ायी और बहंगी तथा बाल्टियाँ पटककर बाँहें फैलाये हुए बेटे की ओर दौड़ी।

“मेरे नन्हे ओलेग... मेरे बेटे!” वह बार-बार दुहराती रही। उसने पहले अपने बेटे की छाती पर अपना सिर रखा, इसके बाद धूप में चमकते उसके बालों को सहलाने लगी और साथ-साथ उसके कन्धे, छाती और पीठ थपथपाती रही।

ओलेग अपनी माँ से लम्बा था और पिछले कुछ दिनों के अन्दर वह धूप से बहुत साँवला हो गया था। उसके गाल भी अन्दर धँस गये थे। लेकिन ओलेग की इस वयस्कता और बदली हुई आकृति के पीछे भी उसकी आँखों के सामने अपने बेटे का वही रूप उभर रहा था, जो उसे तब से याद था, जब उसने अभी-अभी तुतलाकर बोलना शुरू किया था, और येलेना निकोलायेव्ना उसकी उँगली पकड़कर उसे चलना सिखाती थी। उसके गोल-मटोल पाँव उसे बग़ल की ओर ही ले जाते, मानो हवा धकेल रही हो। वह अभी भी बच्चा है – बड़ा बच्चा। उसने अपनी लम्बी, मज़बूत बाँहों में माँ को कस लिया और मोटी, भूरी भौंहों तले से झाँकती उसकी आँखों में वहीं स्वच्छ

और पवित्र ज्योति, वही मातृ-भक्ति का भाव चमकने लगा, जिसे वह साढ़े सोलह साल से देखती आयी थी।

"माँ... माँ!" वह बार-बार दुहराता रहा।

उन कुछेक क्षणों के अन्दर उन्हें न दुनिया से मतलब था, न दुनियावालों से। उन्हें इसकी परवाह ही न थी कि पास ही दरवाज़े पर दो जर्मन खड़े हैं और यह निरीक्षण कर रहे हैं कि इनकी हरकतों में कोई ऐसी बात तो नहीं है जो 'Ordnung' का उल्लंघन करती हो या उसके ख़िलाफ हो। वे इससे भी बेख़बर थे कि गाड़ी के इर्द-गिर्द जमा होकर उनके सगे-सम्बन्धी अपनी-अपनी अनुभूतियों से माँ-बेटे के पुनर्मिलन का दृश्य देख रहे थे। निकोलाई निकोलायेविच उदासीन और खोया-खोया-सा था, मामी मरीना की थकी, सुन्दर और काली आँखों में समुद्र उमड़ा पड़ रहा था, तीन साल का बच्चा चकित था और झुँझला रहा था कि बुआ येलेना ने सबसे पहले उसे गोद में उठाकर क्यों नहीं चूमा! गाड़ीवान दादा के चेहरे पर बुढ़ापे की समझदारी का भाव बना था, जिससे मानो यह ज़ाहिर हो रहा था, "हाँ... दुनिया में कैसी-कैसी बातें होती रहती हैं!" और अन्य सहृदय लोग, जो छुपे-छुपे अपनी खिड़कियों से इन दो व्यक्तियों के मिलाप को देख रहे थे, आसानी से इस भ्रम में पड़ सकते थे कि यह भाई-बहन का मिलाप था, क्योंकि वे दोनों बहुत कुछ एक दूसरे से मिलते-जुलते थे – लम्बे क़द का ओलेग नंगे सिर था और धूप में तपा उसका चेहरा बिलकुल बादामी हो गया था; और येलेना निकोलायेव्ना बिलकुल युवा स्त्री थी, जिसकी ख़ूबसूरत चोटियाँ सिर के चारों ओर लिपटी हुई थीं। लेकिन उन सहृदय लोगों को यह मालूम था कि वह ओलेग कोशेवोई था, जो हज़ारों-हज़ार क्रास्नोदोन निवासियों की तरह अपनी मुसीबतों से भाग निकलने के प्रयास में असफल होकर अपनी माँ के पास लौट आया था; सब के सब अपने परिवारों में, अपनी झोपड़ियों में लौट रहे थे, जहाँ अब जर्मनों ने अपना अड्डा जमा रखा था।

यह उन लोगों के लिए बड़ा ही कठिन समय था, जो अपने घर-बार और परिवार छोड़ चुके थे। वैसे जो जर्मनों के चंगुल से निकल भागने में सफल हो गये थे, वे अपनी धरती पर, सोवियत धरती पर चल-फिर रहे थे। लेकिन उन व्यक्तियों का कैसा दुर्भाग्य था, जो जर्मनों के चंगुल से निकल भागने के लिए ज़ी-तोड़ कोशिश करने पर भी असफल रहे थे और अब अपने सिर पर मौत को मँडराते देख रहे थे। वे अपनी उस जन्म-भूमि पर बेघर-बार और भूखे-प्यासे मारे-मारे फिर रहे थे, जो कल ही, केवल कल ही, उनकी अपनी थी और आज जर्मनों की कहला रही है! वे अब जर्मन विजेताओं के रहम पर जी रहे थे, उनके साथ अपराधियों का-सा व्यवहार किया जा रहा था।

जब ओलेग और उसके साथियों ने धूप से चमकती स्तेपी में अपने और जर्मन

टैंकों को दानवों की तरह घहराते आते देखा, तो उनके हृदय की गति बन्द होती-सी जान पड़ी। यह पहला मौक़ा था कि उन्होंने मौत को आमने-सामने देखा। लेकिन मौत उन्हें अपनाने के लिए अभी उतावली न थी।

मोटर-साइकिल सवार जर्मन सैनिकों ने उस भीड़ को चारों ओर से घेर लिया, जो दोनेत्स को पार नहीं कर सकी थी और उसे नदी के पास एक जगह जमा किया। अतः ओलेग और उसके साथियों की मुलाक़ात फिर से वान्या ज़ेम्नुख़ोव, क्लावा और उसकी माँ, तथा खान 1 (बी) के डाइरेक्टर वाल्को से हुई। वाल्को ऊपर से नीचे तक पानी से तर था। उसकी जैकेट और पतलून से पानी चूकर उसके ऊँचे बूटों में जमा हो रहा था।

आम खलबली और भगदड़ में किसी को किसी की परवाह या ख़याल न रहा था, लेकिन जब लोगों की नज़र वाल्को पर पड़ी, तो सब ने यही सोचा : "यह भी नदी तैरकर पार नहीं कर सका!" वाल्को ज़मीन पर बैठ गया और बूट उतारकर पानी निकालने लगा। उसके मज़बूत, जिप्सियों जैसे और दाढ़ी बढ़े चेहरे पर गुस्से और खीझ का भाव झलक रहा था। बाद में उसने अपने मोज़े निचोड़े और फिर से मोज़े और बूट पैरों में डाल लिये। उसने अपना उदास चेहरा युवकों की ओर घुमाया और अचानक हल्के-से आँख मारी मानो यह कह रहा हो : "हिम्मत! हिम्मत से काम लो। मैं जो तुम्हारे साथ हूँ!"

एक जर्मन टैंक अफ़सर ने, जिसका ग़ुस्से से तमतमाया चेहरा धुएँ से सना था और जो सिर पर काले रंग की बैरेट टोपी लगाये था, टूटी-फूटी रूसी में चिल्लाकर आदेश दिया कि फ़ौजी लोग भीड़ में से बाहर निकल आयें। एक-एक करके निःशस्त्र सैनिक भीड़ में से निकलकर आगे आ गये। जर्मनों ने उन्हें बन्दूक के कुन्दों से धकेलते हुए एक ओर ले जाकर उनकी अलग टोली बना दी। इनकी टोली नागरिकों की टोली से छोटी थी। धूप से चमकती स्तेपी के बीच में खड़े इन व्यक्तियों के चेहरों पर और आँखों में एक अजीब-सी उदासी एवं व्यथा झलक रही थी। वे मैले-कुचैले फ़ौजी कोट और धूल से सने बूट पहने थे।

सैनिक टोली को जर्मन एक पाँत में खड़ा करके नदी के किनारे-किनारे बहाव से विपरीत दिशा में ले गये। नागरिकों को अपने-अपने घर जाने के लिए छोड़ दिया गया।

नागरिकों की भीड़ भिन्न-भिन्न दिशाओं में छितर गयी और दोनेत्स नदी उनके पीछे छूटती गयी। अधिकांश व्यक्ति पश्चिम की ओर जानेवाली सड़क पर लिख़ाया की दिशा में चल पड़े और उस गाँव से गुज़रे, जहाँ रात में जोरा और वान्या ने शरण ली थी।

जब विक्टर पेत्रोव के पिता और दादा ने, जो कोशेवोई परिवार की बग्घी हाँक रहा था, स्तेपी में अपनी ओर घहराते आते जर्मन टैंको को देखा, तो वे तुरन्त अपने लोगों की भीड़ में शामिल हो गये। सो, अब यह पूरी की पूरी टोली, जिसमें क्लावा और उसकी माँ भी थीं, उस जन-प्रवाह में बहने लगी, जो पश्चिम की ओर जानेवाली सड़क पर लिख़ाया की दिशा में बढ़ती जा रही थी।

लोगों को कुछ समय तक यह विश्वास नहीं हुआ कि बिना किसी चालबाज़ी के उन्हें इस तरह बेदाग़ छोड़ दिया गया है। इसी कारण वे विपरीत दिशा में सड़क पर मार्च करते हुए जर्मन सैनिकों की टुकड़ियों को संशय और भय से देखते रहे। लेकिन थकावट से मुरझाये, पसीने से तर और धूल से सने जर्मन सैनिकों ने रूसी शरणार्थियों की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा। जर्मन सैनिक भी इस सोच में डूबे थे कि पता नहीं उन्हें आगे किन मुसीबतों से गुज़रना होगा।

जब शरणार्थियों के दम में थोड़ा दम आया, तो किसी ने सन्देहपूर्वक अटकल लगायी : "जर्मन कमान से ज़रूर इन्हें आदेश मिला होगा कि नागरिकों का उत्पीड़न नहीं किया जाये..."

धूप के मारे घोड़े की तरह हाँफते हुए वाल्को के मुँह से हल्की-सी हँसी निकली। उसने धूल से स्याह पड़े चेहरेवाले बदमिज़ाज जर्मनों की ओर सिर झटककर कहा :

"देखते नहीं हो कि ये ख़ुद जल्दी में है? वरना ये रुककर तुम्हें नदी के तल का मज़ा चखाते।"

"तुम तो शायद चख भी चुके हो। तुम्हारी शक्ल-सूरत से ही पता चल रहा है!" कोई मज़ाक़िया आवाज़ में बोला। बड़ी से बड़ी मुसीबत के समय में भी, जब कुछेक रूसी मिल जायें, तो हँसी-मज़ाक किये बिना नहीं रह सकते।

"हाँ, मैं मज़ा चख चुका हूँ," वाल्को ने उदासी से सोचते हुए जवाब दिया। "लेकिन अभी मेरी प्यास बुझी नहीं है।"

दरअसल जब वाल्को नदी-तट पर खड़े लड़कों को छोड़कर भीड़ को धकियाते हुए नाव-पुल की ओर बढ़ा था तो यह बात हुई थी : वाल्को के चेहरे पर तीव्र कठोरता का भाव देखकर एक सोवियत सैनिक ने उसे बताया कि घाट के लिए जिम्मेवार उच्च अधिकारी उस पार हैं। "इतने सारे सिपाही खड़े हैं, फिर भी भगदड़ मच रही है। मैं अफ़सरों से व्यवस्था करवाकर रहूँगा," वाल्को ने मन ही मन झुँझलाकर कहा और उनके पास तक पहुँचने के इरादे से नाव-पुल पर डगमगाती लारियों की बग़ल से कूदता-फाँदता दूसरे छोर की ओर बढ़ने लगा। तभी जर्मन बमवर्षक पहुँच गये और उसे अन्य व्यक्तियों की तरह वहीं लेट जाना पड़ा। जर्मन तोपें गरज उठीं और नाव-पुल पर खलबली मच गयी। इस तरह उसका निश्चय डगमगा गया।

उसे चाहिए था कि अपनी स्थिति का ख़याल कर दूसरे लोगों के साथ नदी पार करे।

ऐसा करना उसका अधिकार ही नहीं, बल्कि उसका कर्तव्य भी था। परन्तु हमें जीवन में अक्सर यह देखने में आता है कि सब से दृढ़ और विवेकशील व्यक्ति भी, जिनकी नसों में गर्म ख़ून बहता है, दूरगामी सामाजिक कर्तव्यों को भूल जाते हैं और वर्तमान कर्तव्यों को अधिक महत्व देने लगते हैं।

वाल्को को ख़्याल आया कि उसके सहकर्मी, उसका मित्र ग्रिगोरी इल्यीच शेव्त्सोव और नदी-तट पर खड़े अन्य कोमसोमोल-सदस्य उसके बारे में क्या सोचेंगे, कैसी धारणा बना लेंगे! यह ख़्याल आते ही उसका चेहरा लाल हो गया और वह पीछे लौटने के लिए मुड़ पड़ा। तभी उसने नाव-पुल पर भीड़ के रेले को अपनी ओर बेतहाशा दौड़ते देखा। अपने कपड़ों में ही वाल्को नाव-पुल से नीचे नदी में कूद पड़ा और पीछे तट की ओर तैर चला।

उधर नदी-तट पर जर्मन गोले बरसाने और भीड़ को घेरने लगे, इधर बदहवासी में भागते हुए लोगों की भीड़ नाव-पुल की पटरी पर एक दूसरे को धकियाती-दबाती दूसरे किनारे पहुँचने के लिए जान लड़ा रही थी। सैकड़ों लोगों ने तैरकर भी उस पार पहुँचने की ठान ली थी। लेकिन वाल्को अपनी मज़बूत बाँहों से धारा को चीरता हुआ विपरीत दिशा में तैर रहा था। उसे मालूम था कि वह उन लोगों में से एक होगा, जिनके साथ जर्मन पाशविक व्यवहार करेंगे, फिर भी वह तैरता रहा, क्योंकि दूसरे किनारे की ओर रुख़ करने के लिए उसकी आत्मा उसे इजाज़त नहीं दे रही थी।

लेकिन यह संयोग की ही बात थी कि जर्मनों ने वाल्को को मारा नहीं और दूसरों के साथ उसे भी छोड़ दिया। पूरब की ओर सरातोव पहुँचने के बदले, जहाँ कि उसे अपने काम पर हाज़िर होना और अपनी पत्नी एवं बच्चों से मिलना था, अब वह पश्चिम की ओर शरणार्थियों की धारा में बहता चला जा रहा था।

लिख़ाया पहुँचने के पहले शरणार्थियों की यह मिली-जुली भीड़ छितरने लगी। वाल्को ने सुझाव दिया कि क्रास्नोदोन के निवासी अपनी टुकड़ी अलग कर लें, लिख़ाया की ओर न जाकर मुख्य सड़कों को छोड़कर देहाती सड़कों और खुले मैदानों से होते हुए क्रास्नोदोन पहुँचने की कोशिश करें।

किसी राष्ट्र या राज्य के जीवन के कठिन दिनों में साधारण जनों की अपने भाग्य सम्बन्धी चिन्ताएँ हमेशा ही समस्त राष्ट्र या राज्य के प्रति चिन्ताओं से घनिष्ट रूप से आबद्ध रही हैं।

अपने हाल के अनुभवों के कारण बड़े-बूढ़े और जवान सभी दुखी थे और शायद ही कभी एक दूसरे से बोल पाते थे। वे केवल अपनी दुर्दशा और दुर्भाग्य की सोच

से ही नहीं, बल्कि अपने सोवियत देश के अनिश्चित भविष्य की चिन्ता से मरे जा रहे थे। हर कोई अपने ढंग से इस समस्या का समाधान करने के लिए सोच रहा था।

लेकिन मरीना का नन्हा बच्चा – ओलेग का ममेरा भाई – बिलकुल शान्तचित्त और निश्चिन्त था। जिस संसार में वह साँस ले रहा था, उसकी स्थिरता के बारे में उसे रत्ती-भर भी सन्देह न था, क्योंकि उसके माँ-बाप जो उसकी आँखों के सामने थे! बेशक, एक बार उसे ऐसा अनुभव हुआ था कि आसमान में कुछ अजीब गड़गड़ाहट और चमक हुई थी और चारों ओर भगदड़ मच गयी थी तथा धरती भयंकर विस्फोटों से दहल उठी थी। पर वह ऐसे ज़माने में रह रहा था, जब हर जगह गड़गड़ाहटों और धमाकों की आवाज़ से धरती धँसती जा रही थी और लोग हमेशा भागते-दौड़ते ही नज़र आते थे; सो वह तनिक किंकियाकर फिर चुप हो गया था। और अब तो सब कुछ ठीक था, बढ़िया था – केवल यह यात्रा ही काफ़ी लम्बी हो गयी थी। उसकी यह अनुभूति उसे दोपहर को धर दबोचती और वह परेशान होकर ठुनकने और रिरियाने लगता। ओह, न जाने, नानी के पास पहुँचने में अभी और कितने दिन लग जायेंगे? जब सबके सब दम मारने के लिए रुक गये, उसे खाने को दलिया मिला और पेट भर जाने के बाद वह बाँबियों में एक लकड़ी घुसेड़ता रहा और कुम्मैत घोड़ों की जोड़ी के इर्द-गिर्द सावधानी से चक्कर लगाता रहा। ये कुम्मैत घोड़े सुरमई रंग के टट्टू से दुगुना बड़े थे। उसके बाद माँ की गुदगुदी गोद में आराम से सोया और तब फिर सब कुछ सुव्यवस्थित और सामान्य जान पड़ने लगा तथा समस्त संसार फिर से चमत्कारों और प्रसन्नाताओं से खिल उठा।

दादा का ख़याल था कि उसके जैसे कमज़ोर और बूढ़े आदमी को जर्मनों से कोई ख़तरा न था। लेकिन उसे डर इस बात का था कि कहीं घर पहुँचने के पहले ही जर्मन उसका घोड़ा न छीन लें! उसे यह भी चिन्ता थी कि वे उसे उसकी पेंशन से वंचित कर देंगे, जिसे वह चालीस साल तक कोयला-खान के गाड़ीवान के रूप में काम करने के फलस्वरूप पा रहा था। फ़ौज में काम करनेवाले अपने तीन बेटों के भत्तों से भी वह वंचित किया जा सकता है। अलावा इसके उसे इसलिए भी मुसीबतें झेलनी पड़ सकती हैं कि उसके तीन बेटे लाल सेना के सैनिक हैं। क्या रूस को विजय का सेहरा मिलेगा? उसे इस बात की बड़ी चिन्ता थी और उसने जो कुछ देखा था और महसूस किया था, उसके आधार पर यह दावा नहीं किया जा सकता था कि रूस को विजय मिलेगी ही! यह छोटा-सा बूढ़ा आदमी, जो अपने सिर के पीछे छिट-पुट सफ़ेद बालों की वजह से कुछ-कुछ गौरैयों-सा लगता था, अफ़सोस करने लगा कि वह पिछले जाड़े में ही क्यों न मर गया, जबकि डाक्टर ने उसे बताया था कि उसे दिल का भयंकर दौरा पड़ा है! लेकिन कभी-कभी वह अपनी पिछली ज़िन्दगी भी याद करने लगता।

उसे याद हो आता कि किस तरह वह ख़ुद कई लड़ाइयों में लड़ा था, रूस कितना महान और सम्पन्न था और पिछले दस वर्षों के बाद आज वह और भी कितना महान और सम्पन्न है। बेशक, जर्मनों के पास इतनी ताक़त नहीं कि वे रूस को जीत सकें! यह ख़याल आते ही वह उद्विग्न हो उठता और धूप में झुलसे अपने दख़नों को खुरचने लगता। तब वह बच्चों की तरह होंठ बनाकर अपने घूसर रंग के टट्टू को जोश दिलाने के लिए तरह-तरह की आवाज़ें निकालने लगता और उसकी पीठ पर रास बरसाने लगता।

ओलेग का मामा निकोलाई निकोलायेविच एक तरुण भूतत्ववेता था, जो ट्रस्ट में कुछ ही साल तक काम करने के बाद कई उल्लेखनीय शोधकार्य सफलतापूर्वक कर चुका था। उसे सबसे बड़ा सदमा इस बात का था कि इतनी अच्छी शुरुआत के बाद उसकी ज़िन्दगी किस मनहूस घाट पर आ लगी थी और सब कुछ अचानक किस तरह ठप्प पड़ गया था। वह सोचता था कि जर्मन तो उसे मार ही डालेंगे और संयोग से यदि वह बच भी गया, तो जर्मनों के लिए वह काम हर्गिज़ न करेगा। लेकिन इसके लिए बड़े साहस की और तरह-तरह के उपाय करने की ज़रूरत होगी। उनके लिए काम करना उसके लिए उतना ही अरुचिकर और अस्वाभाविक होगा, जितना घुटनों के बल चलना।

जवान मामी मरीना जर्मनों के आने से पहले की आमदनी का हिसाब जोड़ रही थी, जो घर के लोग मिल-जुलकर कमाते थे। परिवार की आमदनी के ज़रिये थे : निकोलाई निकोलायेविच का वेतन, येलेना निकोलायेव्ना की पेंशन, जो उसे अपने पति यानी ओलेग के सौतेले पिता के मरने के बाद मिलती थी, नानी वेरा की पेंशन, ट्रस्ट से मिला मकान और अपने बगीचे में होनेवाले फल और सब्ज़ियाँ। जर्मनों के आते ही उन्हें आमदनी के प्रथम तीन ज़रियों से वंचित हो जाना पड़ा और शेष ज़रिये भी किसी क्षण हाथ से निकल सकते थे। उसे अक्सर उन बच्चों की याद हो आती, जो पुल पर मौत के शिकार हुए थे। उनके लिए आँसू बहाते वक़्त वह अपने नन्हे बच्चे को देख-देखकर फफक पड़ती। उसे दूसरों से सुनी हुई कहानियाँ याद हो आतीं कि किस तरह जर्मन स्त्रियों के पीछे पड़ जाते थे और उन पर बलात्कार किया करते थे! और तब वह भय से सिहरकर सोचने लगती कि न जाने उसकी ख़ूबसूरती के कारण उस पर क्या बीतेगी? लेकिन वह यह सोचकर ख़ुद को तसल्ली देने की कोशिश करती कि वह सादगी से रहेगी, मामूली कपड़े पहनेगी और बालों को सँवारेगी नहीं और शायद तब कोई डर न रह जायेगा।

विक्टर पेत्रोव के पिता को, जो रेंजर था, मालूम था कि लौटने पर उसकी और उसके बेटे की जान पर बन आयेगी, क्योंकि इलाके-भर के लोग उसे अच्छी तरह

जानते थे, वह 1918 में जर्मनों के ख़िलाफ़ लड़ चुका था और उसका बेटा कोमसोमोल-सदस्य है। काफ़ी सोच-विचार के बाद भी वह यह निश्चय न कर सका कि उसे कौन-सा क़दम उठाना चाहिए। उसे यह विश्वास था कि पार्टी के कुछ लोग ख़ुफ़िया कार्यों ओर छापेमार-संघर्ष का संगठन करने के लिए रुक गये होंगे। लेकिन अपने बारे में वह सोचने लगा कि अब तो वह अधेड़ उम्र का हो चुका है और पूरी ईमानदारी से मामूली रेंजर का काम करते हुए वह जीवन के अन्त तक रेंजर ही बने रहने की बात सोचता आया है। उसने अपने बेटे-बेटी को अच्छी तालीम दिला देने के बाद उन्हें उनके पैरों पर खड़ा करने की योजना बनायी थी। लेकिन जब उसके दिमाग़ में यह ख़याल उठा कि उसकी पिछली ज़िन्दगी का पर्दाफ़श नहीं भी हो सकता है और जर्मनों के अधीन वह रेंजर का काम करता रह सकता है, तो उसके मन में भयानक अन्तर्द्वन्द्व होने लगा। एक ओर काम करने की लालसा, दूसरी ओर जर्मनों के प्रति घृणा – और अन्त में, एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति होने के कारण वह स्वभावतः लड़ने की इच्छा के वशीभूत होता गया।

उसका बेटा इस बीच मन ही मन लाल फ़ौज के सपक्षी के नाते क्षोभ और अपमान की भावना से भर उठा था। अपने बचपन से ही वह लाल फ़ौज और उसके कमाण्डरों को श्रद्धा की दृष्टि से देखता आया था और युद्ध छिड़ने के बाद से ख़ुद भी लाल फ़ौज का कमाण्डर बनने के सपने ही नहीं देखता था, बल्कि उसके लिए तैयारियाँ भी करने लगा था। स्कूल में वह एक सैन्य-मण्डली का संगठन किये हुए था, सैन्य-विषयों सम्बन्धी व्याख्यानों का आयोजन किया करता था और शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण चालू किये हुए था – ठीक उसी तरह, जिस तरह सुवोरोव* ने किया था। बर्फ़ गिरती हो या बरसात होती हो, पर इस मण्डली का प्रशिक्षण बेनाग़ा चलता था। विक्टर की नज़रों में लाल फ़ौज के पीछे हटने से बेशक उसकी प्रतिष्ठा पर आँच नहीं आ सकती थी। लेकिन उसके मन को यह बात कचोटती थी कि वह शुरू से ही कमाण्डर बनने का मौक़ा नहीं मिला। उसे पक्का यक़ीन था कि यदि इस समय वह लाल फ़ौज का कमाण्डर होता, तो फ़ौज को इस दुरवस्था और संकट का सामना न करना पड़ता। जहाँ तक जर्मनों के अधीन अपने भाग्य और भविष्य का सम्बन्ध था, विक्टर ने इसके बारे में तनिक भी न सोचा था। वह पूरी तरह अपने पिता और अपने दोस्त अनातोली पोपोव पर भरोसा किये बैठा था, जो जीवन की अति कठिन स्थितियों में भी बिलकुल सही और वाजिब समाधान खोज निकालने में समर्थ थे।

---

* सुवोरोव अ. व. (1729-1800) – महान रूसी सेनापति। – सं.

इस बीच उसका दोस्त अनातोली अपनी मातृभूमि के प्रति बहुत ही चिन्तित था। अपनी उँगलियों के नाख़ूनों को कुतरता हुआ और एक शब्द भी बोले बिना उसने पूरा सफ़र तय किया था और उसका दिमाग़ इसी सोच में उलझा रहा था कि वह कौन-सा क़दम उठाये। जब से युद्ध छिड़ा, तबसे कोमसोमोल सभाओं में वह समाजवादी मातृभूमि की रक्षा के बारे में न जाने कितनी बार भाषण दे चुका था, लेकिन किसी सभा में भी वह अपनी मातृभूमि के सम्बन्ध में अपनी धारणा का ठीक-ठाक वर्णन नहीं कर पाया था। उसकी कल्पनानुसार उसकी मातृभूमि महान थी, जीवन और संगीत से स्पन्दित थी, और उसकी अपनी माँ – ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना – से मिलती-जुलती थी। हाँ, उसकी अपनी माँ से, जो लम्बी और हृष्ट-पुष्ट है, जिसके गुलाबी चेहरे पर दयालुता और ममता की छाप है, जिसके पास मोहक प्राचीन कज़्ज़ाक गीतों का ख़ज़ाना भरा पड़ा है और पालने में लेटे-लेटे वह ख़ुद जिन गीतों का रसास्वादन कर चुका है। अपनी मातृभूमि की यह मूर्ति उसके हृदय में सदा बनी रहती जब वह अपने प्रिय गीत सुनता या रौंदे हुए गेहूँ के खेत और जली हुई झोपड़ियाँ देखता, तो उसकी आँखों से बरबस आँसू ढुलक पड़ते। और अब विपत्तियों का पहाड़ मातृभूमि के सिर पर टूट पड़ा है, ऐसी विपत्तियों का पहाड़ कि सोचने मात्र से ही उसका हृदय बैठ जाता है, टूक-टूक हो जाता है। उसे कुछ करना चाहिए और तुरन्त करना चाहिए, लेकिन कैसे, कहाँ और किसके साथ?

ऐसे ही विचार थोड़ा-बहुत उसके सभी साथियों के मन में हलचल मचाये हुए थे।

केवल ऊल्या ही एक ऐसी थी, जिसके पास अपने भाग्य के बारे में सोचने की शक्ति शेष न रह गयी थी। खान 1(बी) के इंजनघर के टावर को भहराकर गिरते हुए देखने के बाद से अब तक उसने जो कुछ देखा और अनुभव किया था, उसके कारण उसका हृदय चूर-चूर हो चुका था : अपनी माँ और अपनी सब से प्यारी सहेली से जुदाई, रौंदी हुई स्तेपी में जलते आसमान के नीचे यात्रा, नदी के आस-पास और पुल पर का दृश्य, जहाँ उसने सिर में लाल रूमाल बाँधे स्त्री का ख़ून से सना ऊपरी धड़ और बाहर को लटक आये आँख के ढेलों सहित नन्हे लड़के को छटपटाते देखा था, ये सब मिल-जुलकर उसके आहत हृदय का मथते रहते थे। कभी उसे लगता जैसे उसके दिल में तेज़ चाकू चुभ रहा हो और कभी वह अपने हृदय पर पहाड़ का बोझ महसूस करती। वह खामोश और चुपचाप गाड़ी की बग़ल में सारे रास्ते चलती रही। देखने से वह आश्वस्त नज़र आती थी। केवल उसक नथुनों, होंठों और आँखों के तनाव से ही उसके हृदय में उठनेवाले तूफ़ान की झलक मिलती थी।

उधर जोरा ने यह पक्का निश्चय कर लिया कि वह जर्मनों के अधीन कैसे

रहेगा। उसने अधिकारपूर्ण स्वर में ज़ोर से बोलना शुरू किया :

"क्या तुम लोग सोचते हो कि हमारे देश के लोग इन राक्षसों को सहन कर लेंगे? वे हथियार उठाकर पिल पड़ेंगे, वे विद्रोह करेंगे, जैसा कि जर्मनों द्वारा अधिकृत इलाकों में उन्होंने शुरू भी कर दिया है। मेरे पिता शान्त प्रकृति के आदमी हैं, लेकिन मुझे विश्वास है वे भी विद्रोह करेंगे। और मेरी माँ भी। उसके दृढ़ चरित्र को देखते हुए तो वह ज़रूर हथियार उठायेगी। यदि हमारे बड़े-बूढ़े इस तरह पेश आयेंगे, तो हम नौजवानों को, नयी पीढ़ी को क्या करना चाहिए? हमें जवानों की सूची बनानी चाहिए, उन सारे युवक-युवतियों की सूची बनानी चाहिए, जो अभी गये नहीं है ओर तुरन्त ख़ुफ़िया संगठनों से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। मिसाल के लिए, मैं वोलोद्या ओस्मूखिन और तोल्या ओर्लोव को जानता हूँ, जो क्रास्नोदोन में ही रह गये हैं – आप क्या सोचते हैं कि वे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे? और वोलोद्या की बहन ल्यूद्मीला, कितनी भली लड़की है वह!" वह आवेश के साथ बोला। "वह बेकार कभी नहीं बैठ सकती!"

एक ऐसा मौक़ा देखकर जब पास में क्लावा के अलावा कोई और नहीं था, वान्या ज़ेम्नुखोव ने जोरा से कहा : "सुन, सुन, अब्रेक,* तुम्हारी बात कोई नहीं काट रहा है, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ। लेकिन अपनी ज़बान पर ताला लगाओ! पहली बात, कि यह ज़मीर का सवाल है और दूसरी, कि तुम सबकी ज़िम्मेवारी ख़ुद तो नहीं ले सकते। मान लो इनमें से कोई हमें धोखा दे दे, तो फिर तुम्हारा और हम सबका क्या होगा?"

"तुमने मुझे 'अब्रेक' क्यों कहा?" जोरा ने पूछा और उसकी काली आँखों में गहरे आत्मसन्तोष का भाव झलकने लगा।

"क्योंकि तुम साँवले हो और जंगली घुड़सवार की तरह पेश आते हो।"

"तुम्हें मालूम है, वान्या, जब मैं ख़ुफिया काम करने लगूँगा तो अपना उपनाम अवश्य ही 'अब्रेक' रखूँगा," जोरा ने फुसफुसाकर कहा।

जैसी मनःस्थिति और विचार जोरा के थे, वैसे ही वान्या के भी थे। लेकिन क्लावा को अपने इतना समीप पाकर वह ख़ुशी से फूला न समा रहा था। घाट पर अपना व्यवहार याद कर वह गर्व से भर उठा। और उसे कोवल्योव की बातें बार-बार याद आ रही थीं : "वान्या... बचाना इन्हें..." वह महसूस कर रहा था कि वस्तुतः उसे ख़ुद क्लावा को बचाना है। क्लावा की भी यही धारणा थी। इस कारण उसकी ख़ुशी चरम सीमा तक जा पहुँची। यदि क्लावा को अपने पिता की और आहें भर्ती

---

* 19वीं शताब्दी के आरम्भ में रूसी आक्रमण को रोकनेवाली काकेशस की घुड़सवार जनजातियाँ। – सं.

दुःखी माँ की चिन्ता न होती, तो धूप में नहायी दोनेत्स स्तेपी की गोद में अपने प्रियतम का साथ पाकर वह भी ख़ुशी से फूली न समाती, चाहे सुनहरे गेहूँ के खेतों को कुचलते हुए हर जगह जर्मन टैंक, विमानमार तोपें और असंख्य जर्मन सैनिकों के लोहे के टोप ही टोप नज़र क्यों न आ रहे हों और उनके पैरों तथा पहियों के नीचे से उड़ी धूल के बादल ने आसमान को ढँक क्यों न रखा हो।

अपने भाग्य और सारी जनता के भविष्य सम्बन्धी भिन्न-भिन्न विचारों में उलझे हुए इन व्यक्तियों के बीच दो जने ऐसे थे जो भिन्न-भिन्न आयु और स्वभाव के होते हुए भी विचित्र रूप से एक दूसरे से मिलते-जुलते थे। दोनों ही असाधारण उत्साह और जोशीले कार्य-कलाप से उफन रहे थे। उनमें से एक था वाल्को और दूसरा था ओलेग।

वाल्को मितभाषी था और उसकी जिप्सियों जैसी शक्ल को देखकर किसी को पता नहीं चल पाता था कि उसके मन में क्या उथल-पुथल मच रही है या वह क्या सोच रहा है। ज़ाहिर था कि औरों के साथ-साथ वह भी बदक़िस्मती का शिकार हो चुका था, फिर भी वह बहुत ही हँसमुख और ज़िन्दादिल बना रहा। सारा सफ़र उसने पैदल ही चलकर तय किया, हर किसी की देख-भाल करता रहा, लड़कों से गप्पें लड़ाता रहा और चुहलबाज़ियाँ भी करता रहा।

ओलेग भी बग्घी में शान्त नहीं बैठा सका। वह बेचैनी दिखाता रहा कि अपनी माँ और नानी से मिलने में उसे और कितने दिन लग जायेंगे। जोरा अरुत्युन्यान्त्स की बातें सुन-सुनकर वह ख़ुशी से अपनी उँगलियों के सिरे रगड़ने लगता, तो अचानक वान्या और क्लावा का मख़ौल उड़ाने लगता या भीरुतापूर्वक हकला-हकलाकर ऊल्या को सान्त्वना देने लगता या अपने छोटे ममेरे भाई को दुलराने लगता या मामी मरीना को प्यार करने लगता या बूढ़े से लम्बी-लम्बी राजनीतिक बहसें करने लगता। किसी-किसी वक़्त वह चुपचाप बग्घी की बग़ल में चलने लगता। उसकी भौंहें तन जातीं, उसके दृढ़, गदराये होंठों पर बच्चों की-सी एक हल्की मुसकान खेलने लगती और आँखें दूर क्षितिज पर लग जातीं। उसकी आँखों में दृढ़ता, मृदुता तथा चिन्ताशीलता का भाव होता।

जब वे क्रास्नोदोन पहुँचनेवाले ही थे, उनकी मुठभेड़ जर्मनों की एक छिटपुट टुकड़ी से हो गयी। रुखाई से पेश आये बिना कामकाजी अन्दाज़ में ही सैनिकों ने दोनों गाड़ियों की तलाशी ली और मरीना तथा ऊल्या के बक्सों से रेशमी कपड़े निकाल लिये, विक्टर के पिता और वाल्को के पैरों से उनके बूट उतार लिये, वाल्को से उसकी एक बहुत ही पुरानी सोने की घड़ी छीन ली, जो पानी में ग़ोता लगाने के बाद भी अच्छी तरह चल रही थी।

जर्मनों से मुठभेड़ होते ही उनके मन में यह डर समा गया कि वे बहुत ही बुरी तरह पेश आयेंगे, लेकिन जब उनकी आशा के विपरीत ये जर्मन सैनिक इतना ही करके रह गये, तो शरणार्थियों की टोली में पहले तो सब झेंप-सी महसूस करने लगे, फिर अस्वाभाविक उल्लास से भर उठे : उन्होंने गाड़ियाँ लूटते जर्मनों की नक़ल उतारी, मरीना को चिढ़ाया, जो अपने रेशमी मोज़ों के छिन जाने से उदास थी। वाल्को और विक्टर के पिता का भी मज़ाक उड़ाया गया, जो बिरजिस और स्लीपर पहने थे तथा दूसरों से अधिक उद्विग्न थे।

केवल ओलेग ही इस झूठे मनबहलाव और हँसी-ख़ुशी में शामिल न हुआ। उसके चेहरे पर बहुत देर तक क्रोध का भाव बना रहा।

वे अँधेरा होने पर क्रास्नोदोन के बाहर पहुँच गये। वाल्को ने सोचा कि रात में शहर में घूमने-फिरने पर रोक होगी, इसलिए उसने सबको पास ही एक खड्ड में पड़ाव डालने की सलाह दी। चाँदनी रात थी। वे बहुत ही उत्तेजित थे और बड़ी देर तक उन्हें नींद नहीं आयी।

खड्ड का पता लगाने के लिए वाल्को ख़ुद ही चल पड़ा। उसके बाद उसे अचानक अपने पीछे किसी के पैरों की आहट सुनायी पड़ी। उसने हठात पीछे देखा और ओस पर खिली चाँदनी में ओलेग को पहचान लिया।

"साथी वाल्को! मुझे आप से बहुत ही ज़रूरी बात करनी है। बहुत ही ज़रूरी," ओलेग तनिक हकलाते हुए-से बोला। उसकी आवाज़ में कोमलता थी।

"अच्छी बात है। लेकिन हमें खड़े-खड़े ही बात करनी पड़ेगी। ज़मीन तो ओस से तर है," वाल्को बोला और हँस पड़ा।

"इस नगर में खुफ़िया कार्रवाई करनेवाले लोगों से सम्पर्क स्थापित करने में मेरी मदद कीजिये," ओलेग ने वाल्को की घनी भौंहों के नीचे झुकी उसकी आँखों में अपनी आँखें डालते हुए कहा।

वाल्को ने झट आँखें उठायीं और कुछ देर तक ओलेग के चेहरे को पढ़ता रहा।

उसके सामने एक नयी, बिलकुल तरुण पीढ़ी का प्रतिनिधि खड़ा था।

चारित्रिक गुण, जो बाहर से बिलकुल बेमेल और असंगत से लगते थे – स्वप्न और कार्य करने की प्रेरणा, कल्पना की उड़ान और ठोस सामान्यज्ञान, निर्दयता और हर अच्छी वस्तु के प्रति प्रेम, उदारता और विवेकपूर्ण आकलन, आत्मनियन्त्रण और पार्थिव सुख में आनन्द – इन सब परस्पर विरोधी गुणों ने साथ मिलकर इस नयी पीढ़ी को एक विचित्र साँचे में ढाल रखा था।

और वाल्को इस नयी पीढ़ी को अच्छी तरह जानता था, क्योंकि काफ़ी हद तक यह उसी का अंश थी।

"मैं तो कहूँगा कि तुमने एक को तो खोज ही निकाला," वह बोला और मुस्करा दिया। "अब हम आगे के कार्यक्रम के बारे में सोच-विचार कर सकते हैं।"

ओलेग ख़ामोश खड़ा रहा।

"मेरा ख़याल है कि तुम काफ़ी पहले से ही इसके बारे में सोचते रहे हो," वाल्को बोला।

उसका ख़याल सही था। पहली बार अपनी माँ को अपने इरादे बतलाये बिना ओलेग ने ज़िला कोमसोमोल समिति के सामने अपना अनुरोध रखा था कि उसे ख़ुफ़िया दलों का संगठन करने का काम सौंपा जाये।

उसे बड़ी ही चोट पहुँची थी, जब उसे बिना किसी स्पष्टीकरण के कुछ इस तरह का जवाब मिला था :

"सुनो, नौजवान! यदि अपनी भलाई चाहते हो, तो बोरिया-बिस्तर बाँधकर नगर से इसी वक़्त कूच कर जाओ। समझे?"

उसे पता न था कि ज़िला कोमसोमोल समिति अपनी ओर से अपने स्वतंत्र दलों का संगठन नहीं कर रही थी और जो कोमसोमोल-सदस्य वहाँ रुककर ख़ुफ़िया संगठनों के अधीन काम करनेवाले थे, उनका चुनाव बहुत पहले ही कर लिया गया था। अतः इस टके-से जवाब से उसका मन ख़राब नहीं हुआ, बल्कि उसमें उसे एक साथी के प्रति चिन्ता के भाव की झलक मिली और वह नगर से कूच कर गया।

पुल पर की गोलाबारी और खलबली के तनिक शान्त होने पर ओलेग ने महसूस किया कि वह भाग निकलने में सफल नहीं हुआ और इससे उसे ख़ुशी ही हुई, क्योंकि अब उसके सपनों के सच्चे होने के सम्भावना नज़र आ रही थी। पलायन की कठिनाइयाँ, माँ से विछोह, भविष्य की संदिग्धता, ये सब बातें उसके दिमाग़ से हवा हो गयीं। उसकी सारी मानसिक शक्तियाँ, उसके सारे आवेग, सपने और आशाएँ, तरुणाई के उत्साह और जोश बाहर से फूट चले।

"चूँकि तुम्हारा संकल्प दृढ़ है, इसलिए तुम इतने संयत हो," वाल्को ने कहना शुरू किया। "मेरी भी वही हालत है। कल ही मैं चलता जा रहा था और अपने दिमाग़ से इन ख़यालों को निकाल नहीं पा रहा था : हमने खानें कैसे उड़ायीं, लाल फ़ौज किस तरह पीछे हटती जा रही है, बच्चों और शरणार्थियों की क्या दुर्दशा हो गयी है... कितने दुःखद विचार मेरे मन मे उठ रहे थे!" वह असाधारण सरलता और खरेपन से बोला। "मुझे तो ख़ुश होना चाहिए था, क्योंकि जल्द ही मैं अपने परिवार से मिलनेवाला था। जब से लड़ाई छिड़ी है, मैं उनमें से किसी से भी नहीं मिल पाया। फिर भी मेरे हृदय की गहराई से जैसे यह आवाज़ आती रही : 'और उसके बाद क्या होगा?' यह कल की बात है। और आज, जो सामने है, उसके बारे में क्या सोचता हूँ? हमारी फ़ौज

पीछे हट रही है। हम जर्मनों के चंगुल में जकड़े हैं। मैं अपने परिवार को नहीं देख सकता, हो सकता है कभी भी नहीं देख सकूँ। लेकिन मेरा मन हल्का है, शान्त है। क्यों? क्योंकि मेरे सामने एक ही राह है। और हमारे जैसे व्यक्तियों के लिए यह बड़े ही महत्व की बात है।"

ओलेग ने महसूस किया कि क्रास्नोदोन के बाहर इस खड्ड में, ओस से नहायी घास की पत्तियों पर झिलमिलाती चाँदनी में इस कठोर और मितभाषी व्यक्ति ने, जिसकी भौंहें उसकी नाक के सिरे पर एक दूसरे से मिले हुए हैं, दिल खोलकर जितने खरेपन से उससे बातें की हैं, उतने खरेपन से आज तक उसने किसी से न की होंगी।

"अच्छा सुनो! अन्य लड़कों से सम्पर्क न छोड़ना। वे अच्छे लड़के हैं," वाल्को बोला। "अपने बारे में कुछ मत बतलाना, लेकिन सम्पर्क बनाये रखना। कुछ और की भी तलाश करते रहना और यह पता लगाने की कोशिश करना कि वे यह काम करने के योग्य हैं या नहीं। उनका चट्टान की तरह अटल और ठोस होना ज़रूरी है। लेकिन कोई भी काम मेरी जानकारी के बिना न करना – यह गाँठ बाँध लो। नहीं तो सब काम गड़बड़ हो जायेगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि क्या करो और कब करो।"

"आपको मालूम है शहर में कौन-कौन लोग रह गये हैं?" ओलेग ने पूछा।

"मालूम नहीं," वाल्को ने उत्तर दिया। "मैं जानता तो नहीं, लेकिन पता लगा लूँगा।"

"और मैं आपको कहाँ मिलूँगा?"

"तुम्हें मुझे ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। यदि मेरा कोई ठौर-ठिकाना रहता, तो भी मैं तुम्हें नहीं बताता। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि अभी कोई ठौर-ठिकाना है ही नहीं!"

पति और पिता की मृत्यु की बुरी ख़बर लाने से भयंकर बात और क्या हो सकती है! फिर भी वाल्को ने निश्चय किया कि वह फ़िलहाल शेव्त्सोव परिवार के यहाँ ही शरण लेगा, क्योंकि वे उसे जानते हैं और प्यार भी करते हैं। उसने सोचा कि ल्यूबा जैसी समझदार लड़की की मदद से सम्पर्क स्थापित करना और रहने के लिए कोई निरापद स्थान ढूँढ़ निकालना आसान होगा।

"बेहतर हो कि तुम्हीं अपना पता मुझे दे दो, ताकि मैं तुमसे मिल सकूँ।"

वाल्को ने ओलेग का पता कई बार दुहराया, ताकि वह उसे अच्छी तरह याद हो जाये।

"चिन्ता न करो। मैं तुमसे मिलकर ही रहूँगा," वाल्को ने गम्भीरता से कहा। "और यदि तुरन्त मेरी खोज-ख़बर न मिले, तो चुपचाप बैठे रहना। अच्छा अब जाओ।" उसने अपने चौड़े हाथ से ओलेग के कन्धे को धीरे-से ठेल दिया।

"धन्यवाद," ओलेग आहिस्ता से बोला।

असीम उत्साह से भरा हुआ वह पड़ाव की ओर लौट पड़ा। ख़ुशी की लहर मानो उसे ओससिक्त घास पर बहाये ले जा रही थी। घोड़े अभी भी चर रहे थे, लेकिन सब लोग सो गये थे। केवल वान्या ज़ेम्नुख़ोव अपने उभरे घुटने को बाँहों में लपेटे, क्लावा और उसकी माँ के सिरहाने बैठा था।

"प्यारे वान्या," ओलेग ने सहृदयता से सोचा। उसकी यह भावना अब अपने सारे लोगों के प्रति जग पड़ी थी। वह वान्या के पास जाकर ओससिक्त घास पर ही बैठ गया। ओलेग के हृदय में उथल-पुथल मच रही थी।

वान्या ने अपना चेहरा उठाया, जो चाँदनी में पीला लग रहा था।

"तो? क्या कहा उसने?" उसने उत्तेजित होते हुए पूछा।

"कैसी बात कर रहे हो?" ओलेग बोला। वह आश्चर्यचकित और उद्विग्न हो उठा था।

"वाल्को ने क्या कहा? उसे कुछ मालूम है?"

ओलेग ने उसे सकुचाते हुए-से देखा। वान्या ने खीझ प्रगट की। "सुनो, आँख-मिचौनी न खेलो। हम बच्चे तो हैं नहीं।"

ओलेग ने उसे आश्चर्य भरी दृष्टि से देखना शुरू किया।

"तुम्हें क... कैसे मालूम हुआ?" उसने हकलाते हुए पूछा। उसकी आँखें फैल गयी थीं।

"तुम्हारी खुफ़िया सम्पर्कों को भाँप लेना कोई बहुत हिकमत की बात तो नहीं," वान्या मुस्कुराया। "हम एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं! क्या तुम सोचते हो कि मैं इसके बारे में नहीं सोचता रहा हूँ?"

"वान्या!" ओलोग ने अपने मज़बूत हाथ से वान्या का पतला हाथ झपटकर पकड़ लिया और वान्या भी उसके हाथ को कसकर हिलाने लगा।

"तब हम साथ हैं!"

"बेशक!"

"हमेशा के लिए?"

"हाँ, हमेशा के लिए!" वान्या ने बड़ी नरमी और गम्भीरता से जवाब दिया। "ज़िन्दगी की आख़िरी साँस तक।"

वे एक दूसरे की आँखों में देख रहे थे। दोनों की आँखों में चमक थी।

"सुनो, अभी तक उसे कुछ भी मालूम नहीं। लेकिन उसने बताया कि वह पता चलाकर ही रहेगा। और वह पता चला ही लेगा!" ओलेग की आवाज़ में गर्व का पुट था। "लेकिन यह ख़याल रखना कि नीजनी अलेक्सान्द्रोव्स्की गाँव की माया में न फँस

जाओ।"

"इसकी चिन्ता न करो," वान्या ने दृढ़ता से जवाब दिया। वह थोड़ा सकुचा भी गया। "वे वहाँ ठीक से जम जायें, बस मैं इतना ही चाहता हूँ।"

"उसे प्यार करते हो?" ओलेग ने फुसफुसाकर पूछा और उसके चेहरे के क़रीब झुक गया।

"छोड़ो भी, ऐसी बातें न करो।"

"शर्माओ नहीं। यह तो अच्छी बात है, बहुत ही अच्छी बात। वह बहुत ही अ... अच्छी लड़की है और तु... तुम भी क्या कम हो!" ओलेग ने अपने चेहरे पर और आवाज़ में प्रसन्नता एवं निष्कपटता का भाव झलकाते हुए कहा।

"इन मुसीबतों के बावजूद, जो हम सबों पर टूट रही हैं, ज़िन्दगी बड़ी ख़ूबसूरत है," वान्या बोला।

"यह स... सही है," ओलेग हकलाया और उसकी आँखों में आँसू छलक आये।

एक हफ़्ते से अधिक न हुआ था कि क़िस्मत का चक्कर इन सारे लोगों – सयानों और बच्चों – को स्तेपी की ओर धकेल ले गया था। और अब सूरज पहाड़ी के ऊपर से झाँककर इन सबके ऊपर आख़िरी बार चमक रहा था। लगता था जैसे वे एक पूरी ज़िन्दगी पीछे छोड़कर आये हों – जब एक दूसरे से जुदा होने का समय आया, तो उनके आँसू रुके न रुकते थे। विदाई का क्षण बहुत ही उदासी और करुणा से भरा था।

बिरजिस और स्लीपर पहने वाल्को गम्भीर मुद्रा में खड्ड के बीच खड़ा था। "अच्छा तो लड़को और लड़कियो..." उसने बोलना शुरू किया, लेकिन तब अपने सँवलाये हाथ से लाचारी का भाव प्रगट करते हुए ख़ामोश हो गया।

लड़कों ने अपने-अपने पतों का आदान-प्रदान किया, एक दूसरे से सम्पर्क बनाये रखने का वादा किया और विदा हो गये। वहाँ से अलग-अलग दिशाओं में रवाना हो जाने के बाद भी वे मुड़-मुड़कर एक दूसरे को देखते रहे और हाथ का रूमाल हिलाते रहे। उसके बाद पहाड़ी की ओट में एक-एक कर सब इस तरह ओझल हो गये, मानो उन्होंने जलते हुए आसमान के नीचे वह ख़ौफ़नाक सफ़र एक साथ कभी तय ही न किया हो।

सो, ओलेग ने अपने प्यारे घर की, उस घर की दहलीज़ पार की, जिसमें जर्मनों ने अड्डा जमा रखा था।

अध्याय 21

मरीना अपने गोद के बच्चे के साथ रसोईघर से सटे उस छोटे-से कमरे में जम गयी जिसमें नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना रह रही थीं। निकोलाई निकोलायेविच और ओलेग ने पटरों को जोड़कर दो खाटें बना लीं और जलावनघर में ही टिक गये।

नानी वेरा, जिसका पेट किसी से अपनी बातें सुनाने के लिए फूला जा रहा था – वह जर्मन अर्दली को तो अपने साथ बात करने लायक़ समझ ही नहीं सकती थी – तुरन्त ही नगर के बारे में उन्हें ढेर-सी ख़बरें सुनाने लगी।

दो दिन पहले हाथ के लिखे बोल्शेविक परचे बड़ी खानों के पास चौकीदारों की झोपड़ियों, गोर्की और वोरोशीलोव स्कूल की इमारतों, ज़िला समिति और अन्य इमारतों की दीवारों पर चिपके पाये गये थे। परचों के नीचे ये शब्द अंकित थे : "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की क्रास्नोदोन ज़िला समिति (बोल्शेविक)"। आश्चर्य की बात तो यह थी कि परचों की बग़ल में लेनिन और स्तालिन के चित्रों सहित 'प्राव्दा' के पुराने अंक भी चिपके थे। जर्मन सैनिकों के बीच होनेवाली बातचीत से यह पता चला कि छापेमार दस्तों ने प्रदेश के विभिन्न भागों में जर्मन यातायात और सैनिक टुकड़ियों पर हमले किये हैं, ख़ासकर दोनेत्स के तटवर्ती इलाक़े में, वोरीशीलोवग्राद और रोस्तोव प्रदेशों की सरहद पर तथा बोकोवो-अंत्रात्सीतोवो और क्रेमेन्स्क ज़िलों में।

एक भी कम्युनिस्ट या कोमसोमोल-सदस्य जर्मन कमाण्डेण्ट के पास 'स्पेशल रजिस्ट्रेशन' के लिए नहीं गया है, लेकिन बहुतों का पता चलाकर गिरफ़्तार कर लिया गया है। ("क्यों? मैं ख़ुद जाकर ओखली में अपना सिर दूँ? जर्मनों के पास जाने से पहले मैं उन्हें मौत के घाट क्यों नहीं उतारूँगी!" नानी वेरा कहती।) एक भी कार्यालय या कारख़ाना काम नहीं कर रहा था, फिर भी जर्मन कमाण्डेण्ट का हुक्म था कि लोग अपने-अपने काम पर जायें और पूरी पाली वहाँ बैठे रहें। नानी ने बताया कि इंजीनियर-मेकानिक बराकोव और फ़िलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट के केन्द्रीय बिजलीमशीन वर्कशॉप में अपने काम पर जाने लगे हैं। अफ़वाह है कि उन्हें किसी तरह का नुक़सान पहुँचाने के बजाय जर्मनों ने बराकोव को वर्कशॉप का मैनेजर बना दिया है और ल्यूतिकोव को मशीन-शॉप का अधीक्षक। ल्यूतिकोव पहले भी इसी पद का काम किया करता था।

"उन जैसे लोगों से ऐसी आशा न थी। वे पार्टी के पुराने सदस्य हैं! बराकोव तो लड़ाई में भाग लेकर घायल भी हो चुका है। और ल्यूतिकोव! वह सार्वजनिक कार्यकर्त्ता है। उसे हर कोई जानता है! क्या उनका दिमाग़ फिर गया है, जो वे जर्मनों के लिए काम कर रहे हैं?" नानी वेरा उद्विग्न थी और रोषपूर्वक बोल रही थी।

उसने यह भी बताया कि जर्मन यहूदियों को पकड़-पकड़कर वोरोशीलोवग्राद ले जा रहे हैं, जहाँ उन्हें अलग बस्ती में रखा जा रहा हैं। लेकिन लोगों को शक है कि

उन्हें वेर्ख़्नेदुवान्नाया कुंज तक ले जाकर गोलियों से उड़ा दिया जाता है और ज़मीन में गाड़ दिया जाता है। मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स चिन्ता से मरी जा रही है कि कहीं उसके पति पर भी यह क़हर न गिर पड़े।

ओलेग की जुदाई और जर्मनों के आगमन के बाद से येलेना निकोलायेव्ना के ऊपर जो जड़ता और उदासी छा गयी थी, वह घर में ओलेग के पाँव रखते ही मानो जादू से छू-मन्तर हो गयी। वह अब बड़े उत्साह से काम करने लगी और उसका मन हर वक़्त कुछ न कुछ सोचता रहता। यही उसके स्वभाव की विशेषता थी, जो फिर से लौट आयी। वह मादा उकाब की तरह – जिसका बच्चा घोंसले से गिर पड़ा हो – अपने बेटे के इर्द-गिर्द मँडराती रहती। अक्सर वह देखता कि माँ खड़ी उसकी ओर देखे जा रही है। माँ की आँखों में चिन्ता और व्यग्रता झलक रही होती, मानो पूछ रही हो : "यह सब क्या हो गया, मेरे बेटे? क्या तुममें इतनी शक्ति है कि तुम यह सब बर्दाश्त कर सको?"

यात्रा के दिनों में जो नैतिक उत्साह ओलेग के दिल में उमड़ने लगा था, वह अब ठण्डा गया था, उसकी भावनाओं में जड़ता आ गयी थी। असलियत वैसी नहीं थी, जैसा कि उसने सोच रखा था।

लड़ाई में उतरनेवाला युवक यह सपने देखता है कि वह हिंसा और बुराई से लगातार बहादुरी के साथ लोहा लेने जा रहा है। लेकिन यहाँ पर बुराई छलना और असह्य तथा घृणित रूप से नीरस साबित हुई।

ओलेग अपना बहुत वक़्त काले झबरे कुत्ते के साथ बिताया करता था। वह कुत्ता बड़ा नेक था। लेकिन वह अब मर चुका था। सड़क अब नंगी लगती थी, क्योंकि पिछवाड़े और सामने के बगीचों की झाड़ियाँ और पेड़-पौधे – काट डाले गये थे। और नंगी सड़क पर गश्त लगाते या चलते-फिरते जर्मन तुच्छ और नाचीज़-से लग रहे थे।

जिस तरह जनरल बैरन वान वेन्त्ज़ेल नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना की ओर कोई ध्यान नहीं देता था, उसी तरह ओलेग, मरीना और निकोलाई निकोलायेविच की ओर भी उसने कोई ध्यान नहीं दिया।

और यह सत्य था कि नानी वेरा अपने प्रति जनरल के रुख़ या बर्ताव में कोई ज़्यादती नहीं पाती थी।

"यह उनकी 'नयी व्यवस्था' है," वह बोली। "मैं एक बूढ़ी औरत हूँ और हमारे दादा जो कुछ हमें बताते थे, उसके आधार पर मैं यह दावे से कह सकती हूँ कि यह पुरानी व्यवस्था है और भूदासप्रथा के समय जो व्यवस्था थी, उससे तनिक भी भिन्न नहीं है – उस सयम भी यहाँ जर्मन ही थे; वे ज़मींदार और जागीरदार थे और इस बैरन की तरह ही कठोर और दम्भी – इसकी आँख फूट जाये! मुझे उससे क्षोभ क्यों

हो? वह तो तब तक ऐसा ही बना रहेगा, जब तक हमारी फ़ौज वापस आकर इसकी अँतड़ी-पँतड़ी नहीं निकाल देती।"

लेकिन ओलेग की नज़रों में चमचमाते बूटों और साफ़-चिकने टेंटुएवाला वह जनरल ही ओलेग, उसके परिवार और पास-पड़ोस के लोगों की दुर्दशा और अपमानजनक स्थिति का मुख्य कारण था। इस हीन-भावना से छुटकारा पाने का एक ही उपाय था कि जनरल का काम तमाम कर दिया जाये। लेकिन उसकी जगह दूसरा जनरल चला आयेगा और हो सकता है कि वह भी इसी की तरह चमचमाते बूटों और साफ़-चिकने टेंटुएवाला निकले।

लम्बी टाँगोंवाला एडजुटेण्ट मरीना के साथ नरमी दिखाने और उसकी ओर अधिक ध्यान देने लगा। वह इस बात के लिए ज़ोर देता कि मरीना अपना अधिक से अधिक वक़्त जनरल की और खुद उसकी सेवा-टहल में लगाया करे। जब वह अपनी पीली आँखों से उसे घूरता, तो उसकी दृष्टि में धृष्टता और स्कूली बच्चों जैसी उत्सुकता का मिला-जुला भाव होता। लगता जैसे वह किसी अजीबोग़रीब जानवर को देख रहा हो और सोच रहा हो कि इसे क़ाबू में कर लेने पर इसे अपने मन-बहलाब का अच्छा साधन बनाया जा सकता है।

एडजुटेण्ट का अपना मन बहलाने का खेल एक यह भी था कि वह मरीना के नन्हे बच्चे को मिठाई की गोलियाँ दिखाकर फुसलाता और जब बच्चा अपना गुलगुला हाथ बढ़ाता, तो झट वह ख़ुद अपने मुँह में गोली डाल लेता। वह ऐसा दो-तीन बार करता जब तक कि बच्चा बिलखकर रोने न लगता। तब वह बच्चे के सामने बैठ जाता, अपनी जीभ की लाल नोक, जिस पर मिठाई की गोली चिपकी होती, बार-बार निकालकर चिढ़ाता, जीभ चटकारकर उसे चूसता और चबाता तथा निस्तेज आँखें नचा-नचाकर ज़ोर-ज़ोर से हँसता।

अपन लम्बी टाँगों और अस्वाभाविक रूप से सफ़ेद नाख़ूनों के कारण मरीना को वह बहुत ही घिनौना लगता। वह मरीना की नज़र में एक नालायक़ ही नहीं बल्कि हिंस्र उससे भी गया-गुज़रा लगता – मेढक, छिपकली या किसी भी रेंगनेवाले जीव की तरह घृणित। और जब उसने मरीना को अपनी ख़िदमत में लगे रहने के लिए मजबूर किया, तो मरीना इस पशु के सामने अपने को विवश पाकर घृणा और भय से सिहर उठी।

लेकिन इन युवाजनों की नाक में दम करनेवाला कोई था, तो वह चित्तीदार चेहरेवाला जर्मन अर्दली ही था। उसके पास फ़ुरसत का वक़्त काफ़ी था, क्योंकि जनरल की वैयक्तिक सेवा में नियुक्त ख़िदमतगारों, रसोइयों और सैनिकों का वह मुखिया था। वह बार-बार इन युवाजनों से यही सवाल करता कि वे जर्मनों के चंगुल

से क्यों भाग निकलना चाहते थे और उन्हें कायमाबी कैसे नहीं मिली। अन्त में, अपनी राय ज़ाहिर करता कि केवल बेहूदे और जंगली लोग ही जर्मनों से दूर भागना चाहेंगे।

यह अर्दली जलावनघर में, जहाँ ये युवाजन अधिकतर बैठे रहते या अहाते में, जहाँ वे ताज़ी हवा खाने के लिए खड़े रहते या घर के अन्दर, जब जनरल बाहर गया होता, जहाँ कहीं भी ये होते उनके पीछे-पीछे लगा रहता और उनकी नाकों में दम किये रहता। केवल नानी वेरा के आने पर ही उससे इनका पीछा छूटता।

यह आश्चर्य की ही बात थी कि बड़े-बड़े, खुरदरे हाथोंवाला वह अर्दली भीतर ही भीतर नानी वेरा से भय खाता था, हालाँकि इसे ज़ाहिर होने देना नहीं चाहता था और अन्य व्यक्तियों की तरह उसके साथ भी ढिठाई से पेश आता था। नानी वेरा और वह दोनों ही हाथ-पैर नचाकर और आँख-मुँह बनाकर रूसी और जर्मन की खिचड़ी बोली में एक दूसरे से बातें करते। नानी बहुत ही संक्षिप्त बोलती, लेकिन ज़हर उगलकर रख देती। नौकर अपनी ओर से रुखाई, शैतानी और बेहूदगी से पेश आने में कोई क़सर उठा न रखता। पर वे एक दूसरे को अच्छी तरह समझते-बूझते थे।

परिवार के सब लोग दिन में या रात में अपना खाना उस जलावनघर में ही बैठकर खाते और इस तरह खाते मानो कहीं से चुराकर खा रहे हों। वे बिना मांस के बोर्श्च, सलाद और उबले आलू खाते। रोटी की जगह नानी छिलकों सहित गेहूँ की अलोनी टिकिया बनाती। उसके पास हर जगह के सामान का छिपा ख़ज़ाना था और जब जर्मन खुले ख़जाने को चट कर गये, तो वह यह दिखाने के लिए थोड़ी-थोड़ी मात्रा में भोजन बनाती थी कि उसके पास खाने के लिए कुछ नहीं है। लेकिन रात में, जब जर्मन सो जाते, तो नानी लुका-छिपाकर सुअर की चर्बी या अण्डे निकाल लाती। पर इसमें भी उन्हे अपमान-सा लगता – वे सोचते कि दिन के उजाले से बचकर वे रात के अँधेरे में अपनी ही चीज़ चोरी-चोरी खा रहे हैं।

वाल्को की ओर से कोई ख़बर न मिली। और वान्या भी नहीं आता था। ऐसा उपाय सोच निकालना मुश्किल था, जिससे ऐसी हालत में जबकि हर घर में जर्मन अड्डा जमाये हुए थे और हर नवागन्तुक को सन्देह की दृष्टि से देखते थे, वे एक दूसरे से मिल सकते या अपना सम्पर्क बनाये रख सकते। सड़क पर लोगों की आकस्मिक भेंट या बातचीत से भी जर्मनों के कान खड़े हो जाते थे।

जब सब लोग सो जाते, तो ओलेग अपनी बाँहों को अपने सिर के नीचे रखे हुए 'खाट' पर फैलकर पड़ा रहता और जलावनघर के खुले दरवाज़े से स्तेपी की मस्त हवा झिर-झिरकर आती हुई उसे दुलराती रहती। गोल चाँद आसमान में अपनी चाँदनी बिखेरता रहता। उसके पायताने ज़मीन पर चाँदनी का एक समकोण झिलमिलाता

रहता। ऐसे वक़्त ओलेग को यह सोचकर बहुत ही ख़ुशी होती कि लेना पोज़्दनिशेवा फ़िलहाल नगर में ही है। लेना की धुँधली, अस्पष्ट और अपूर्ण प्रतिमा ओलेग की आँखों के सामने उभर आती – चेरी जैसी आँखें और उनमें चाँदनी की सुनहरी चमक (हाँ, वसन्त में वह पार्क में ऐसी ही चमक देखा करता था या हो सकता है कि केवल सपने में ही देखता हो), उसकी हँसी दूर से सुनायी पड़नेवाली मधुर स्वरलहरियों की तरह गूँजती और लगता जैसे वह कृत्रिम हँसी हो, क्योंकि हर स्वरलहरी एक दूसरी से भिन्न होती, जैसे बग़ल के कमरे में कोई चमचे खनखना रहा हो। यह अनुभूति कि वह यहीं पास ही है, फिर भी वह उससे दूर है, उसके अन्तर को इस इच्छा से झकझोर देती कि वह उसे देखकर अपनी आँखें कब तृप्त कर सकेगा। ऐसी निष्काम तथा अनुताप-हीन लालसा युवा-हृदय में ही उठ सकती है।

जब जनरल या उसका एडजुटेण्ट घर में न होते, तो ओलेग और निकोलाई निकोलायेविच अपने प्यारे घर में क़दम रखते। घर में से भिन्न-भिन्न तरह की मिली-जुली गन्ध आ रही होती : इत्र, विदेशी तम्बाकू की महक और वह गन्ध, जो अविवाहित युवकों या परिवार से दूर रहनेवाले जनरलों या मामूली सैनिकों के रहने के स्थान में पायी जाती है और जिसे इत्र या तम्बाकू का धुआँ भी हटा नहीं सकते।

ऐसे ही वक़्त एक बार ओलेग घर के अन्दर अपनी माँ से मिलने गया। रसोईघर में जर्मन रसोईया और नानी वेरा दोनों ही चुपचाप अपना-अपना भोजन बनाने में व्यस्त थे। बड़े कमरे में, जो अब खाने का कमरा बना लिया गया था, जर्मन अर्दली बूट और टोपी पहने ही सोफ़े पर फैलकर लेटा हुआ सिगरेट पी रहा था। ज़ाहिर था कि ऊब महसूस कर रहा था। इसी सोफ़े पर पहले ओलेग सोया करता था। अर्दली की सुस्त और ऊब से भरी आँखें जब कमरे में घुसते ओलेग पर पड़ीं, तो वह चिल्ला उठा।

"हाल्ट!" और उठकर बैठ गया और भारी तलोंवाले बूट को फ़र्श पर जमाते हुए कहने लगा : "लगता है कि तुम्हें घमण्ड होता जा रहा है – हाँ, इधर मैं यह कई दिनों से देख रहा हूँ। अपने हाथ बग़ल में और पैरों को सटाकर खड़े होओ – जानते नहीं, तुम अपने से बड़े से बातें कर रहे हो!" वह ताव और रोब में बोलने या खीझ दिखाने की कोशिश करने लगा, लेकिन गरमी से वह इस तरह बेदम हो गया था कि ऐसा करने में उसे सफलता न मिली। "जैसा हुक्म देता हूँ, वैसा करो! सुनते नहीं? तुम!...."

ओलेग समझ गया था। चुपचाप वह क्षण भर के लिए अर्दली के चित्तीदार चेहरे को देखता रहा, तब अचानक भय का भाव चेहरे पर लाते हुए वह कूल्हों के बल बैठ गया और अपने घुटनों पर हाथ मारकर चिल्ला उठा : "जनरल आ रहा है!"

पलक झपकते अर्दली कूद कर खड़ा हो गया, मुँह से सिगरेट निकाल लिया और मुट्ठी में मसलकर बुझा दिया। उसके मन्द और सुस्त चेहरे पर नौकरों का-सा खोया-खोया-सा भाव उभर आया। वह एड़िया टकराकर दोनों हाथ बग़ल में करके सीधा खड़ा हो गया।

"क्यों ख़िदमतगार साहब! मालिक के घर से बाहर होते ही सोफ़े पर आराम फ़रमा रहे हो! अब इसी ढंग से खड़े रहो," ओलेग ने शान्त आवाज़ में कहा। उसे सन्तोष था कि उसने हिम्मत के साथ यह कह तो दिया – तनिक भी परवाह न करते हुए कि अर्दली उसकी बात समझ लेगा – और तब अपनी माँ के कमरे की ओर चला गया।

उसकी माँ अपना भयातुर चेहरा लिये काँपती हुई, हाथ में सिलाई का सामान उठाये चौखट पर मिली। उसने सब कुछ सुन लिया था।

"यह तुमने क्या किया, ओलेग?" वह बोली और तभी अर्दली दौड़ता हुआ उनके पास पहुँच गया।

"वापस चलो! चलो वहाँ!" वह आपे से बाहर होकर गरजा। ग़ुस्से के मारे उसका चेहरा इतना लाल हो उठा था कि उसकी चित्तियाँ भी ग़ायब हो गयी थीं।

"उसकी ओ-ओर ध्यान न दो माँ, उस बेवकूफ़ की ओर," ओलेग ने तनिक काँपते हुए स्वर में कहा और ऐसा भाव दिखाया मानो वहाँ नौकर उपस्थित ही न हो।

"इधर आओ, सुअर के बच्चे!" अर्दली चीख़ा।

उसने झपटकर दोनों हाथ से ओलेग की जैकेट के पल्ले पकड़ लिये और भयानक ग़ुस्से में उसे अन्धाधुन्ध झकझोरने लगा। उसके लाल चेहरे पर आँखों की सफ़ेदी और भी गहरी हो गयी थी।

"कुछ न बोलो, कुछ न बोलो, प्यारे ओलेग! इसे जो मन में आये करने दो। क्यों तुम...?" येलेना निकोलायेव्ना बोली और अपने नन्हे हाथों से अपने बेटे की जैकट पर से अर्दली का बड़ा-सा हाथ हटाने की कोशिश करने लगी।

ओलेग भी तब तक ग़ुस्से से लाल हो चुका था और उसने अर्दली की पेटी पकड़कर जलती आँखों से घृणा के साथ उसे इस तरह घूरा कि कुछ देर के लिए अर्दली की भी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी।

"छो-छोड़ो मुझे, सुनते हो?" ओलेग अपनी ओर अर्दली को खींचते हुए भयंकर रूप से फुफकारा और बहुत ही खौफ़नाक रुख़ अख़्तियार करता गया। निस्सन्देह ओलेग को अर्दली के चेहरे पर भय से अधिक संशय की छाप मिली कि कहीं वह ओलेग के बारे में भूल तो नहीं कर बैठा।

अर्दली ने उसे छोड़ दिया। वे हाँफते हुए एक दूसरे के सामने खड़े रहे।

“बाहर भाग जाओ, बेटे! बाहर भाग जाओ!” येलेना निकोलायेव्ना ने मिन्नत की।

“तुम जंगली, वहशी लोग!” अर्दली दाँत पीसते हुए घृणा से बुदबुदाया। “तुम लोगों को क़ाबू में रखने का एक ही रास्ता है कि कुत्तों की तरह तुम्हें कोड़े लगाये जायें।”

“तुम तो जंगलियों और वहशियों से भी बदतर हो, क्योंकि तुम जंगलियों के ख़िदमतगार हो। तुम तो केवल मुर्ग़ियाँ चुरा सकते हो, स्त्रियों के बक्स टटोल सकते हो और राहगीरों के पैर से बूट छीन सकते हो,” ओलेग भी हाँफते हुए गुर्राया और सीधे अर्दली की सफ़ेद आँखों में घूरने लगा।

अर्दली जर्मन में बोल रहा था और ओलेग रूसी में, लेकिन दोनों की भाव-भंगिमाएँ और लहजे ऐसे थे कि एक दूसरे को समझने में उन्हें दिक़्क़त न हुई। ओलेग के मुँह से आख़िरी शब्द निकलते ही अर्दली की भारी हथेली ओलेग के गाल पर तड़ाक से लगी और वह गिरते-गिरते बचा।

साढ़े सोलह साल के दौरान आज तक ग़ुस्से से या सजा देने के ख़याल से उसके ऊपर किसी का भी हाथ न उठा था। अपने बचपन से ही परिवार में या स्कूल में जिस वातावरण में वह साँस लेता आया था उसमें मैत्रीपूर्ण प्रतिस्पर्द्धा को ही देखने और महसूस करने का वह आदी हो चुका था। उसमें पाशविक शारीरिक शक्ति उतनी ही वर्जनीय और असम्भव थी, जितनी हत्या, चोरी या झूठी गवाही। ओलेग के सिर पर ख़ून चढ़ गया। वह अर्दली पर टूट पड़ा। अर्दली दरवाज़े की ओर हट गया। माँ अपने बेटे के कन्धे से झूल गयी।

“ओलेग! सोचो तुम यह क्या कर रहे हो! वह तुम्हें मार डालेगा!” वह काँपती हुई बोली और अपने बेटे से कसकर चिपक गयी।

हल्ला-गुल्ला सुनकर नानी वेरा, निकोलाई निकोलायेविच और सफ़ेद टोपी तथा सफ़ेद खोल पहने जर्मन रसोइया, तीनों के तीनों दौड़े चले आये। अर्दली गधे की तरह रेंक रहा था। नानी वेरा अपनी दुबली-पतली बाँहें फैलाकर चीख़ पड़ी। उसके भड़कीले रंग के फ़्राक की आस्तीनें फड़फड़ा रही थीं। वह मुर्ग़ी की तरह अर्दली के इर्द-गिर्द बाँहें फटकारते हुए उसे खाने के कमरे की ओर ले जाने की कोशिश करने लगी।

“ओलेग! मेरे बेटे! मुझ पर मेहरबानी करो... खिड़की खुली है, भागो, भागो जल्दी!” येलेना निकोलायेव्ना ने अपने बेटे से फुसफुसाते हुए कहा।

“खिड़की से? अपने ही घर में मैं खिड़की से कूदकर भागूँ!” ओलेग बोला। उसके नथुने और होंठ गर्व से थरथरा रहे थे, लेकिन वह शान्त हो रहा था। “डरो नहीं, माँ, मुझे छोड़ दो। मैं ख़ुद जा रहा हूँ। मैं लेना के यहाँ जा रहा हूँ,” वह हठात् बोला।

ओलेग दृढ़तापूर्वक खाने के कमरे में घुसा। सब लोग किनारे हटकर खड़े हो गये।

"तुम तो सुअर की औलाद हो, सुअर की औलाद!" ओलेग अर्दली की ओर मुड़कर बोला। "तुम ऐसे वक़्त वार करते हो, जब जानते हो कि उसका बदला नहीं मिलेगा।" यह कहकर वह आराम से चलते हुए घर के बाहर चला गया।

उसका गाल जल रहा था, लेकिन वह अनुभव कर रहा था कि उसे नैतिक विजय मिली है : वह केवल जर्मन के आगे डटा ही नहीं रहा, बल्कि उसने उसे डरा भी दिया। वह अपनी इस करनी के अंजाम के बारे में सोचना नहीं चाहता था। जो होगा, सो होगा। नानी का कहना सही था : इनकी 'नयी व्यवस्था' के सामने झुकने की ज़रूरत नहीं! ज़िन्दगी भर नहीं। उसे जो कुछ करना है, उसे करके ही रहेगा। उन्हें दिखा देगा कि उन्नीस कौन है और बीस कौन!

वह फाटक से निकलकर उस सड़क पर चलने लगा, जो सादोवाया सड़क के समानान्तर जाती थी और तुरन्त ही उसकी मुलाक़ात स्त्योपा सफ़ोनोव से हो गयी।

"कहाँ के लिए निकले हो? मैं तुम्हारे पास ही जा रहा था," सुनहरे बालोंवाला नन्हा स्त्योपा बोला और अपने दोनों हाथों से ओलेग का हाथ पकड़कर ख़ुशी से हिलाने लगा।

ओलेग सिटपिटा लगा।

"ओह, मुझे तो... एक जगह जाना है।"

वह कहना चाहता था कि 'घर के काम से' निकला है, लेकिन यह बात उसकी ज़बान पर न आ सकी।

"तुम्हारा गाल इतना लाल क्यों है?" स्त्योपा ने आश्चर्य से पूछा और उसका हाथ छोड़ दिया। ओलेग ने सोचा कि जैसे स्त्योपा को यह मनहूस सवाल पूछने के लिए घूस दी गयी हो।

"एक जर्मन से लड़ाई हो गयी," वह बोला ओर मुस्करा दिया।

"सचमुच? वाह, वाह!" स्त्योपा ने फिर से गाल को देखा और उसका हृदय ओलेग के प्रति श्रद्धा से भर उठा। "तो अच्छा शकुन है। क्योंकि मैं दरअसल इसी तरह के काम के सम्बन्ध में तुम्हारे यहाँ जा रहा था।"

"किस तरह का काम?" ओलेग हँसा।

"चलो, चलते रहें। मैं तुम्हें छोड़ आता हूँ, क्योंकि यदि किसी 'शैतान' ने हमें यहाँ खड़ा देख लिया, तो अपनी टाँग अड़ाने चला आयेगा।" स्त्योपा ने ओलेग की बाँह पकड़ ली।

"चलो, मैं तुम्हें थोड़ी दूर छोड़ आता हूँ," ओलेग हकलाया।

"शायद तुम अपना काम कुछ देर स्थगित कर मेरे साथ चलना पसन्द करोगे?"

"कहाँ?"

"वाल्या बोर्त्स के यहाँ।"

"वाल्या के यहाँ?" ओलेग की आत्मा ने जैसे धिक्कारा कि वह उससे मिलने पहले ही क्यों न गया।

"क्या उसके घर में जर्मन हैं?"

"नहीं, यही तो बात है। दरअसल वाल्या ने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें अपने साथ लेता आऊँ।"

यह भी अचानक कैसी क़िस्मत की बात थी कि वह एक ऐसे घर में क़दम रख सकता था, जहाँ जर्मनों की मनहूस छाया न पड़ी थी। वह जाने-पहचाने बगीचे में फूल की उन क्यारियों के पास खड़ा हो सकता था, जिनके किनारों पर लगता था जैसे 'मोनोमाख़ की टोपी'* की तरह फ़र लगी है और जहाँ अपने कई तनों पर खड़ा तथा पत्तों का पीला चन्दोवा ताने बूढ़ा बबूल-वृक्ष इस तरह शान्त लगा करता था, मानो उसे आकाश की नीली चादर में टाँक दिया गया हो।

मरीया अन्द्रेयेव्ना के लिए उसके स्कूल के सभी लड़के-लड़कियाँ अभी भी नन्हे-मुन्ने ही थे। उसने ओलेग को बाँहों में भरकर चूमा और थपथपाया।

"तो तुम अपने पुराने साथियों को भूलते जा रहे हो; है न? आते हो, लेकिन भनक तक नहीं मिलती – हम सब के बारे में तुम्हें कुछ भी याद नहीं रहता! हमसे बढ़कर कौन प्यार करेगा तुम्हें! बताओ मुझे हमारे साथ घण्टों कौन लगा रहता था, पिआनो बजने पर किसके माथे पर बल पड़ते थे? किसकी किताबें तुम इस तरह छीनकर पढ़ने लगते थे, मानो वे तुम्हारी अपनी हों? मैं देखती हूँ कि तुम सब कुछ भूल बैठे हो! आह, प्यारे ओलेग! यहाँ, घर में..." उसने अपने दोनों हाथों से अपना सिर दबा लिया, "बेशक, वह छिपा हुआ है!" मुँह से अनजाने ये शब्द निकलते ही भय से उसकी आँखें गोल हो गयीं। ये शब्द उसने फुसफुसाकर कहे। लेकिन जिस तरह रेल के इंजन में से भाप निकलती है, उसकी आवाज़ सड़क तक सुनायी दे गयी। "हाँ, और मैं तुम्हें भी नहीं बता सकती कि कहाँ... क्या अपने ही घर में छिपना कुछ कम अपमानजनक है? मैं सोचती हूँ कि उसे दूसरे नगर में जाना होगा। वह बिलकुल यहूदी जैसा तो नहीं लगता – नहीं लगता न? यहाँ कोई भी धोखा दे सकता है, लेकिन स्तालिनो में हमारे कुछ भरोसेमन्द दोस्त हैं – वे हमारे रिश्तेदार हैं, रूसी हैं...हाँ, उसे

* ज़ारों का सुनहरा मुकुट। पौराणिक कथाओं के अनुसार कीयेव के राजकुमार व्लादीमीर मोनोमाख़ (1053-1125) को यह मुकुट बाइज़ाण्टीन सम्राट कन्स्तान्तीन की ओर से उपहार में मिला था।

जाना ही होगा," मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स उदास स्वर में बोली। उसके चेहरे पर ग़म और दुःख का भाव बना था। उसके बेहद अच्छे स्वास्थय के कारण से दुःखद भाव उसके चेहरे पर ठीक से जम न पाते थे : हालाँकि वह जो कुछ कह रही थी, वह बड़ी ही ईमानदारी और सचाई से कह रही थी, फिर भी लगता था जैसे बहाने बना रही हो।

ओलेग ने उसकी बाँहों में से अपने को मुक्त किया।

"माँ ठीक कहती है, तुम सचमुच गधे हो," वाल्या बोली। उसका उभरा हुआ ऊपरी होंठ ऐंठ गया था। "तुम वापस आ गये हो लेकिन हमसे मिलने नहीं आये!"

"तुम भी तो मुझसे मिलने आ सकती थीं!" ओलेग ने खींसें निकालते हुए कहा।

"यदि तुम यह सोचते हो कि लड़कियाँ आकर तुमसे मिला करें, तो तुम्हारे बुढ़ापे के दिन अकेले और नीरस ही बीतेंगे!" मरीया अन्द्रेयेव्ना ने ज़ोर से कहा।

ओलेग ने भी विहँसती आँखों से उसकी ओर देखा और वे ठहाका मारकर हँस पड़े।

"यह एक जर्मन शैतान से लड़कर आ रहा है। देखती नहीं कि इसका गाल लाल हो गया है!" स्त्योपा ने सन्तोष से कहा।

"सच? भिड़न्त हो गयी?" वाल्या ने पूछा ओर ओलेग को उत्सुकता से देखने लगी। "माँ!" वह माँ की ओर मुड़कर बोली। "मैं सोचती हूँ कि वे अन्दर तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं।"

"हे भगवान, ये षड्यंत्रकारी!" मरीया अन्द्रेयेव्ना चिल्ला उठी ओर बाँहें फैलाकर आसमान की ओर देखने लगी। "जा रही हूँ, जा रही हूँ।"

"वह अफ़सर था या मामूली सैनिक?" वाल्या ने ओलेग से पूछा।

वाल्या और स्त्योपा के अलावा बगीचे में एक और व्यक्ति था, जिसे ओलेग नहीं जानता था : दुबला-पतला शरीर, नंगे पाँव और रूखे, भरे, लहरदार बाल जो बग़ल में कढ़े हुए थे और होंठ तनिक आगे को निकले हुए। वह अजनबी युवक बबूल-वृक्ष की शाखा पर चुपचाप बैठा था और जब से ओलेग ने बगीचे में क़दम रखा था, तभी से वह ओलेग को अपनी पैनी आँखों से देख रहा था। उसके अन्दाज में कुछ ऐसी बात ज़रूर थी, जो उसके प्रति सहज ही श्रद्धा और आदर का भाव जगा देती थी। ओलेग की आँखें भी स्वतः उसकी ओर उठ गयी थीं।

"ओलेग," अपनी माँ के हटते ही वाल्या ने अपने चेहरे पर दृढ़ता का भाव लाते हुए स्थिर स्वर में कहना शुरू किया। "ख़ुफ़िया संगठन के साथ सम्पर्क स्थापित करने में हमारी मदद करो। नहीं, ठहरो..."वह ओलेग के चेहरे पर खोया-खोया-सा भाव देखकर बोली। अगले क्षण वह खुलकर मुस्कुरा रहा था। "शायद तुम्हें मालूम है कि

यह काम कैसे किया जा सकता है। तुम्हारा घर हमेशा ही पार्टी के सदस्यों से भरा रहता था और मुझे मालूम है कि तुम लड़कों से अधिक वयस्कों से हिलेमिले हो।"

"नहीं, दुर्भाग्य से मेरे सारे सम्पर्क टूट चुके हैं," ओलेग बोला। वह अभी भी मुस्कुरा रहा था।

"यह सब बहाने किसी दूसरे से बनाना – हम सब तो तुम्हारे दोस्त हैं! ओह, शायद उसकी वजह से तुम कुछ कहने में डर रहे हो। वह सेर्गेई त्युलेनिन है," पेड़ की शाख़ा पर बैठे युवक की ओर झट से देखते हुए वाल्या बोली।

वाल्या ने उसका कुछ विशेष परिचय न दिया। उसने जो कुछ कहा वही काफ़ी था।

"मैं सच्ची बात कर रहा था," ओलेग बोला। वह सेर्गेई की ओर मुड़ा, क्योंकि उसे सन्देह नहीं रह गया था कि सेर्गेई ने ही बात चलायी थी। "मुझे यक़ीन है कि ख़ुफ़िया संगठन यहाँ काम कर रहा है, क्योंकि पहले तो परचे निकल रहे हैं और मेरा ख़याल है कि ट्रस्ट की इमारत और खानों के स्नानघरों में आग लगने के पीछे उन्हीं का हाथ है," उसका ध्यान उधर नहीं गया, जब उसके ये शब्द सुनते ही वाल्या की आँखों में चमक कौंध गयी और गुलाबी होंठों पर मुसकान खेल गयी। "और मैंने यह भी सुना है," वह बोलने लगा, "कि हम कोमसोमोल-सदस्यों को शीघ्र ही यह आदेश मिलेगा कि हमें क्या करना है।"

"समय बेकार जा रहा है और हमारे हाथ खुजला रहे हैं!" सेर्गेई बोला।

वे उन लड़के-लड़कियों के बारे में चर्चा करने लगे, जो यहीं नगर में ही रुके रह गये होंगे। स्त्योपा सफ़ोनोव ने जो मिलनसार था और जिसके शहर भर में बहुत-से लड़के-लड़कियाँ दोस्त थे, उन लोगों की वीरता और साहस की ऐसी भूमिका बाँधनी शुरू की कि वाल्या, ओलेग ओर सेर्गेई के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गये और वे यह भूल गये कि चारों तरफ़ जर्मन भरे पड़े है। वे यह भी भूल गये कि उनकी बातचीत का प्रसंग क्या था!

"और लेना पोज़्दनिशेवा कहाँ है?" वाल्या ने हठात् पूछ लिया।

"वह यहीं है।" स्त्योपा विस्मय से बोला। "उससे मेरी मुलाक़ात यूँ ही सड़क पर हो गयी। वह ठाट से कपड़े पहने सिर ताने हुए टहल रही थी – इस तरह," और अपनी चित्तीदार उभरी हुई नाक ऊपर उठाकर स्त्योपा इस तरह अभिनय करने लगा, मानो बगीचे की पगडण्डी पर नज़ाकत से तैरता-जा रहा हो। "मैंने उसे आवाज़ दी, – हल्लो, लेना!' लेकिन उसने केवल सिरभर हिला दिया – इस तरह," और फिर वह अभिनय करने लगा।

"नहीं, उसकी नक़ल तुम ठीक से नहीं कर सके।" वाल्या, ओलेग पर

सकुचाई-सी नज़र डालते हुए बोली और होंठों में ही हँसने लगी।

"तुम्हें याद है उसके घर हम किस तरह संगीत की बैठकें किया करते थे? केवल तीन ही हफ़्ते तो गुज़रे हैं – केवल तीन हफ़्ते," ओलेग ने कहा और खिन्न मुस्कुराहट के साथ वाल्या को देखने लगा। और अचानक वहाँ से जाने की जल्दी मचाने लगा।

वह सेर्गेई के साथ चला गया।

"वाल्या तुम्हारे बारे में मुझे बहुत कुछ बता चुकी है, ओलेग। जब मैंने तुम्हें देखा, तो पहली नज़र में ही मुझे ऐसा महसूस हुआ कि तुम पर विश्वास किया जा सकता है," जल्दी-जल्दी एक-दो बार ओलेग की ओर थोड़ी शर्मीली आँखों से देखकर सेर्गेई बोला। "मैं तुम्हें यह बात इसलिए बता रहा हूँ, ताकि तुम्हें मालूम हो जाये, फिर इसका ज़िक्र कभी भी नहीं करूँगा। बात यह है कि किसी भी ख़ुफ़िया संगठन ने ट्रस्ट की इमारत या खान के स्नानघरों में आग नहीं लगायी। मैंने ख़ुद यह किया. .."

"क-क्या? तुमने ख़ुद?" ओलेग ने सेर्गेई की ओर देखा। उसकी आँखें चमक रही थीं।

"हाँ।"

कुछ क्षण तक वे ख़ामोश चलते रहे।

"काम तो तुमने बड़ी बहादुरी और चतुराई से किया, लेकिन अकेले किया, यही बुरी बात है," ओलेग बोला। उसके चेहरे पर चिन्ता की छाप थी।

"यहाँ ख़ुफ़िया संगठन है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ और केवल परचों की वजह से ही नहीं," सेर्गेई ने ओलेग की बातों की उपेक्षा करते हुए कहना शुरू किया। "मुझे इसका सुराग़ मिलते-मिलते रह गया।" सेर्गेई की भाव-भंगिमा से क्षोभ की झलक मिलती थी।

उसने ओलेग को वे सारी बातें सचाई के साथ बतानी शुरू कीं कि कैसे और किस स्थिति में वह इग्नात फ़ोमीन के घर पहुँचा और फ़ोमीन के घर में छिपे अजनबी को उसे किस तरह अपना झूठा पता देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

"तुमने वाल्या को ये सारी बातें बता दी हैं?" ओलेग ने अचानक पूछा।

"नहीं," सेर्गेई ने स्थिरता से जवाब दिया।

"ब-बहुत अच्छा।" ओलेग ने सेर्गेई की बाँह थाम ली। "चूँकि तुम उस व्यक्ति से बातें कर चुके हो, इसलिए अब फिर उससे मिल तो सकते हो?" उसने उत्तेजित होकर पूछा।

"यही तो बात है कि मैं उससे मिल नहीं सकता," सेर्गेई ने जवाब दिया। उसके मोटे होंठों पर बल पड़ गये। "इग्नात फ़ोमीन ने उसे जर्मनों के हाथ सौंप दिया। उसने

जल्दबाज़ी न दिखायी, बल्कि जर्मनों के आ जाने के बाद भी वह पाँच-छह दिन तक इन्तज़ार करता रहा। शंघाई मुहल्ले में ज़ोरों की चर्चा है कि फ़ोमीन उस व्यक्ति से सारा राज़-भेद जानकर पूरे खुफ़िया संगठन को ही तबाह कर देने की योजना बना रहा था, लेकिन वह व्यक्ति बड़ा ही सतर्क था। फ़ोमीन इन्तज़ार करता रहा, इन्तज़ार करता रहा और अन्त में उसने उसे जर्मनों के हाथ सौंप दिया और खुद पुलिस में काम करने लगा।"

"कैसी पुलिस?" ओलेग विस्मय से बोल उठा। उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि इधर वह जलावनघर में बैठे-बैठे वक़्त गुज़ार रहा था और उधर ऐसी बातें हो रही थीं!

"तुम तो उन बैरकों को जानते हो, जो ज़िला समिति की इमारत के उस ओर हैं और जिनमें हमारी मिलिशिया रहती थी? उसमें जर्मन फ़ौजी पुलिस ने डेरा डाल रखा है और वह अब रूसी नागरिकों की एक पुलिस फ़ोर्स बना रही है। ख़बर है कि जर्मनों को सोलिकोव्स्की नाम का एक बदमाश मिल गया है, जो पुलिस-चीफ़ का काम करेगा। वह पास-पड़ोस में ही कहीं किसी छोटी-सी खान में फ़ोरमैन का काम करता था। वह तरह-तरह के नीच लोगों को इकट्ठा करने और उन्हें पुलिस में भर्ती कराने में जर्मनों की मदद कर रहा है।"

"फ़ोमीन के यहाँ छिपे व्यक्ति के साथ जर्मनों ने क्या सलूक किया? क्या उन्होंने उसे मार डाला?" ओलेग ने पूछा।

"नहीं, वे ऐसी मूर्खता नहीं कर सकते," सेर्गेई बोला। "मेरा ख़याल है कि वे उसे कहीं बन्द किये हुए हैं। वे उससे सारा भेद लेना चाहेंगे, लेकिन वह ऐसा कायर नहीं। वे उसे उन बैरकों में ही बन्द करके और अत्याचार करके धीरे-धीरे मौत के घाट उतार रहे हैं। उसके अलावा और भी बहुत-से लोग गिरफ़्तार हैं, लेकिन मुझे पता नहीं वे लोग कौन हैं।"

एक भयानक विचार ओलेग के मन में उथल-पुथल मचाने लगा : हो सकता है कि जिप्सी जैसी आँखोंवाला वह बहादुर वाल्को भी गिरफ़्तार होकर उन्हीं बैरकों के किसी तहख़ाने में बन्द हो और अत्याचार का शिकार हो रहा हो, क्योंकि अब तक उसकी कोई खोज-ख़बर ओलेग को नहीं मिल सकी थी।

"ये सब ख़बरें बताने के लिए तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद," वह भारी स्वर में बोला।

तब यह तनिक भी ख़याल किये बिना कि वह वाल्को को दिये गये वचन को तोड़ रहा है, ओलेग ने सेर्गेई को बताना शुरू किया कि वाल्को से उसकी क्या बातचीत हुई थी और बाद में वान्या ज़ेम्नुख़ोव से भी उसकी क्या बातें हुई थीं।

वे दोनों देरेव्यान्नाया सड़क पर धीरे-धीरे चलने लगे : सेर्गेई नंगे पाँव ज़रा ठुमककर चल रहा था और ओलेग धूलभरी सड़क पर अपने साफ़ और चमचमाते बूट में हल्के और स्थिर क़दम रखता हुआ। ओलेग ने अपने साथी के सामने अपने कार्यक्रम की बाहरी रूप-रेखा पेश की। उन्हें फूँक-फूँककर क़दम रखना था, ताकि उनकी योजना की भनक किसी को न लगने पाये और बोल्शेविक ख़ुफ़िया संगठन का पता भी लग जाये। साथ ही उन्हें हर युवक और युवती पर ठीक से नज़र रखकर यह पता लगाना था कि कौन इस काम के योग्य है और कौन अयोग्य। इसके बाद यह भी मालूम करना ज़रूरी था कि नगर में और ज़िले में कौन-कौन लोग गिरफ़्तार किये गये और कहाँ रखे गये हैं। अन्त में, उनकी मदद करने के तरीक़ों और उपायों की खोज करना भी ज़रूरी था। उन्हें जर्मन सैनिकों के साथ बातचीत इत्यादि द्वारा यह भी पता लगाने की पूरी कोशिश करनी थी कि उच्च जर्मन अधिकारी किन सैनिक और नागरिक उपायों से काम ले रहे हैं या लेना चाहते हैं।

सेर्गेई उत्साह से उफ़नने लगा और उसने सुझाव दिया कि हथियारों का संग्रह किया जाये : लड़ाई के बाद या फ़ौज के पीछे हटने के बाद हर जगह, यहाँ तक कि स्तेपी में ढेर-से हथियार बिखरे पड़े थे।

उन्होंने महसूस किया कि यह काम रोज़मर्रा होगा, फिर भी ऐसा तो ज़रूर था कि वे इसे कर सकते थे और उन्होंने वास्तविक स्थिति के प्रति अपनी सूझ का परिचय दिया।

ओलेग ने सीधे सामने की ओर देखा। उसकी विस्फारित आँखों में चमक थी। "हमारे किसी भी व्यक्ति को, चाहे वह हमसे कितना भी घनिष्ट क्यों न हो या कितना भी अपना क्यों न हो, हमारे कार्य-कलाप की भनक न मिलनी चाहिए," वह बोला "दोस्ती निभाना अलग बात है। इस काम में बहुतों की जान जोखिम में होगी। वान्या, तुम और मैं, बस, इसकी ख़बर हम तीनों के सिवा और किसी को न हो... बस! एक बार हम उनसे सम्पर्क स्थापित कर लें, तब वे हमें निर्देश देंगे कि हमें क्या करना चाहिए था।"

सेर्गेई ख़ामोश रहा : वह मौखिक संकल्प और क़समें पसन्द न करता था।

"अभी पार्क में क्या हो रहा है?" ओलेग ने पूछा।

"यह जर्मनों की लारियों का पार्क है। यह स्थान चारों ओर से विमान-मार तोपों से घिरा हुआ है। इन्होंने सुअरों की तरह सारी ज़मीन खोद डाली।"

"तो यह है हमारे पार्क की बदक़िस्मती और दुर्दशा!... अच्छा, तुम्हारे घर में भी जर्मन अड्डा जमाये बैठे हैं?"

"वे आकर झाँक जाते हैं, लेकिन उन्हें हमारा घर पसन्द नहीं आता," सेर्गेई ने

हँसते हुए जवाब दिया। "हम वहाँ मिल-जुल नहीं सकते, बहुत लोग वहाँ आते-जाते रहते हैं," ओलेग के प्रश्न का मतलब समझते हुए उसने कहा।

"हम वाल्या की मार्फ़त सम्पर्क बनाये रखेंगे।"

"ठीक है," सेर्गेई ने सन्तोष से कहा।

वे चौराहे तक साथ-साथ गये और इसके बाद एक दूसरे से दृढ़ता से हाथ मिलाकर विदा हो गये। वे लगभग एक ही उम्र के थे और अपनी संक्षिप्त बातचीत के दौरान ही एक दूसरे के बहुत ही क़रीब आ चुके थे। उनके हृदय में उत्साह और जोश था।

पोज़्दनिशेव परिवार 'सेन्याकी' मुहल्ले में रहता था। कोशेवोई और कोरोस्तिलेव परिवारों की तरह यह परिवार भी एक प्रीफ़ैब्रिकेटेड मकान के आधे हिस्से में रहता था। कुछ दूर से ही ओलेग की नज़र खुली खिड़कियों पर पड़ी, जिन पर पुराने ढर्रे के जालीदार पर्दे लगे थे। और बीच-बीच में लेना के बनावटी अट्टहास के साथ पियानो के बजने की आवाज़ भी सुनायी देती। कोई अपनी सशक्त उँगलियों से पियानो पर जो लोक-गीत की धुन बजा रहा था, उससे ओलेग परिचित था और तब लेना के गाने की भी आवाज़ सुनायी पड़ने लगी। पियानोवादक ने कहीं पर ग़लती की और लेना ज़ोर से हँस पड़ीं। फिर वह धुन गाकर सुनाने लगी कि पियानोवादक ने कहाँ पर ग़लती की थी और इसके बाद धुन वे शुरू से ही दोहराने लगे।

पियानो की धुन और लेना के स्वर ने ओलेग को इस तरह प्रभावित कर दिया था कि कुछ क्षण तक वह घर के बाहर ही ठिठक गया और अन्दर घुसने से हिचकिचाता रहा। इन सब बातों ने उसे उन सुखद संध्याओं की याद दिला दी थी, जिन्हें वह लेना के घर अपने और उसके अनगिनत दोस्तों के बीच बैठकर गुज़ार चुका था! वाल्या पियानो बजाती और लेना गीत गाती। इधर ओलेग लेना के चेहरे को निहारता रहता था, जिस पर तनिक घबराहट का भाव उभर आया होता। यह देखकर ओलेग और भी प्रसन्न हो जाता था, पियानो की धुन और लेना की स्वरलहरी उसके हृदय में प्रतिध्वनित होने लगती। उसके यौवन का संसार कितना सुन्दर और सलोना लगता था!

काश, वह फिर कभी इस मकान की चौखट पर पाँव न रखता! काश, ये मिली-जुली अनुभूतियाँ, संगीत, यौवन, प्रथम प्यार की अस्पष्ट क़समसाहट, ये सब के सब उसके हृदय में बन्द रहती!

लेक़िन वह चौखट पार कर ड्योढ़ी में क़दम रख चुका था और फिर मकान के छायादार हिस्से में पड़नेवाले रसोईघर में दाख़िल हुआ था। यहाँ अधिक उजाला न था। रसोईघर में पहले की ही तरह चुपचाप और शान्त, लेना की माँ बैठी थी, जो पुराने

फ़ैशन की काली पोशाक पहने थी और पुराने ढर्रे से बाल काढ़े हुए थी। उसके साथ पुआल के-से बालोंवाला एक जर्मन सैनिक भी बैठा था, जो ठीक उस जर्मन अर्दली के जैसा ही था। केवल फ़र्क इतना ही था कि यह जर्मन सैनिक नाटा और मोटा था तथा उसके चेहरे पर चित्तियाँ नहीं थीं। उसके तौर-तरीक़ों से यही पता लगता था कि वह भी अर्दली ही था। वे दोनों आमने-सामने स्टूल पर बैठे थे। जर्मन सैनिक, जिसके होंठों पर विनम्र आश्वस्त मुसकान थी और आँखों में कुछ चोंचलापन था, अपने घुटनों पर रखे झोले में से कुछ निकालकर लेना की माँ की ओर बढ़ा रहा था। माँ के झुर्रीदार चेहरे पर सफ़ेदपोश वृद्ध महिला का-सा भाव था। यह जानते हुए कि उसे घूस दी जा रही है, वह मुँह पर धूर्तता और ख़ुशामद-भरी मुस्कुराहट लिये काँपते हाथों से उपहार को स्वीकार करती उसे अपने घुटनों पर रख रही थी। वे इस साधारण व्यापार में इस तरह लवलीन थे कि उन्हें ओलेग की उपस्थिति का पता ही न चला। अतः उसे लेना की माँ द्वारा लिये उपहार को देखने का मौक़ा मिल गया : सार्डिन मछलियों का चिपटा डिब्बा, चाकलेट की टिकिया और एक ख़ूबसूरत-सा टीन का डिब्बा, जिसका ढक्कन पेंचदार था और जिस पर चमकीला पीला और नीला लेबल लगा था। ओलेग अपने घर में टिके जर्मनों के पास भी वैसा ही टीन का डिब्बा देखा चुका था, जिसमें ज़ैतून का तेल भरा होता था।

ओलेग पर नज़र पड़ते ही लेना की माँ झट अपने घुटनों पर पड़ी चीज़ों को छिपाने की कोशिश करने लगी। जर्मन अर्दली भी हाथ में झोला थामे उपेक्षा के साथा ओलेग को एकटक देखता रहा।

उसी क्षण पियानो का बजना रुक गया और उस कमरे से लेना और कुछ पुरुषों के क़हक़हे की आवाज़ सुनायी पड़ी और साथ ही जर्मन के कुछ छिट-पुट शब्द की। उसके बाद धुन का स्पष्ट उच्चारण भी सुनायी पड़ा, लेना बोली : "नहीं, नहीं मैं दोहराती हूँ, पबी ूपमकमतीवसम, यहाँ पर थोड़ा विराम है और अब टेक और अब तुरन्त ही..." और उसकी पतली उँगलियाँ पियानो के सुरों पर दौड़ने लगीं।

"ओह, तुम हो, प्यारे ओलेग! तो तुम यहाँ से नहीं गये?" लेना की माँ आश्चर्य से भौंहें उठाते और अपनी आवाज़ में झूठा प्यार झलकाते हुए बोली। "क्या लेना से मिलना चाहते हो?"

उसने बड़ी फुर्ती से वह चीज़ें रसोईघर की मेज़ की निचली दराज़ में छिपा दीं और अपनी लटें सँवारीं। उसके बाद अपनी गर्दन कन्धों में दबाये और अपनी नाक और ठुड्डी ऊपर उठाये हुए, वह उस कमरे में घुस गयी, जहाँ से पियानो और गाने की आवाज़ें आ रही थीं।

ओलेग के चेहरे का रंग उड़ गया था और उसके हाथ बग़ल में बेजान-से झूल

रहे थे। उसे रसोईघर के बीचोंबीच और जर्मन अर्दली की उपेक्षापूर्ण दृष्टि के सामने इस तरह खड़ा रहना बड़ा बुरा और अपमान-जनक-सा लगने लगा।

उसे लेना के विस्मय और उद्विग्नता की भनक मिली। वह कमरे में उपस्थित पुरुषों से धीमी आवाज़ में कुछ कह रही थी। शायद उनसे माफ़ी माँग रही थी। उसके बाद उसके जूतों की आवाज़ सुनायी पड़ी और वह कमरे में से दौड़ती हुई रसोईघर के दरवाज़े पर प्रकट हुई। वह गहरे भूरे रंग की पोशाक पहने थी, जो धूप से तपी उसकी पतली गरदनवाले छरहरे बदन पर भारी-भरकम-सी लटकी हुई थी। वह अपने उघड़े, बादामी हाथों से चौखट पकड़े हुए थी।

"ओलेग!" वह बोली। उसका धूप से सँवलाया छोटा-सा चेहरा उद्विग्नता के मारे लाल हो उठा था। "हम अभी-अभी..."

लेकिन वह यह सफ़ाई देने के लिए तैयार न थी कि वे "कर क्या रहे थे"। एक नारी-सुलभ अस्थिरता और बनावटी मुस्कुराहट के साथ ओलेग की बाँह पकड़कर अपनी ओर खींचने लगी। उसके बाद उसने हठात् उसकी बाँह छोड़ दी और ज़ोर से सुनाकर बोली, "चलो, चलें"। दरवाज़े पर वह मुड़ी, अपना सिर एक ओर झुकाकर ओलेग को अन्दर चलने के लिए आमंत्रित किया।

भीतर घुसते वक़्त वह लेना की माँ से टकराते-टकराते बचा, जो बाहर की ओर झपटी जा रही थी। कमरे में ख़ाकी वर्दी पहने दो जर्मन अफ़सर नज़र आये। उनमें से एक स्टूल पर खुले पियानो की ओर मुड़कर बैठा था और दूसरा पियानो और खिड़की के बीच खड़ा था। दोनों ने ओलेग को जिस नज़र से देखा उसमें खीझ या उत्सुकता न थी। लगता था जैसे वे सोच रहे हों कि जब यह बला आ ही गयी है तो किसी न किसी तरह निबटना ही होगा।

"यह मेरे स्कूल का दोस्त है," लेना ने अपनी सुरीली आवाज़ में कहा। "बैठो, ओलेग... तुम तो यह धुन जानते ही हो, जानते हो न? मैं घण्टे भर से यह धुन इन्हें सिखा रही हूँ! सज्जनो, पूरा का पूरा गीत हम फिर से दुहरायेंगे! बैठो न, ओलेग!"

ओलेग ने आँखें उठायीं और ठहर-ठहरकर, हर शब्द पर ज़ोर देते हुए कहना शुरू किया :

"ये तु-तुम्हें क्या मेहनताना दे रहे हैं? ज़ैतून का तेल? तुमने तो अपने का बहुत सस्ता बना रखा है!"

वह हठात मुड़ गया और लेना की माँ और अर्दली की बग़ल से गुज़रता हुआ बाहर निकल गया।

अध्याय 22

इस प्रकार फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव ग़ायब हो गया था और फिर प्रगट हुआ – लेकिन इस बार नये रूप में।

इस बीच वह कहाँ ग़ायब रहा और उसके साथ क्या-क्या गुज़री?

हमें याद है कि पिछली शरद में उसे ख़ुफिया कार्रवाई के लिए चुना गया था। तब उसने यह बात अपनी पत्नी से गुप्त रखी थी और अपनी दूरदर्शिता के कारण उसे बहुत ख़ुशी हुई थी, क्योंकि जर्मनों के कब्ज़े का डर टल गया था।

लेकिन ल्यूतिकोव के दिमाग़ में यह बात अटल रही। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेन्को जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को ल्यूतिकोव का स्थायी मानसिक तत्परता की स्थिति में रहना बहुत अच्छा लगा।

"कौन कह सकता है कि आगे क्या होगा! हमें पायनियरों की तरह 'तैयार रहो!' – 'हमेशा तैयार!' का नियम अपनाना चाहिए।

पिछले शरद में चुने गये व्यक्तियों में से पोलीना गओर्गियेव्ना सोकोलोवा नामक एक गृहिणी भी थी, जो पार्टी की सदस्या तो नहीं थी, लेकिन नारी-जगत में सक्रिय कार्य करने के कारण नगर भर में विख्यात थी। वह अपने पद पर अटल रही। वह ल्यूतिकोव की ख़ुफिया सन्देशवाहिका नियुक्त की गयी थी। नगर सोवियत का प्रतिनिधि होने के कारण ल्यूतिकोव की गतिविधि क्रास्नोदोन के नागरिकों की नज़र से छिपती नहीं और उसके लिए लोगों से मिलना और घूमना-फिरना मुश्किल हो जाता। अतः उसकी खुफिया कार्रवाई की अवधि में पोलीना गओर्गियेव्ना सोकोलोवा ही उसकी आँखें, हाथ, पैर बनी रही।

जब से पोलीना गओर्गियेव्ना ने यह जवाबदेही अपने ऊपर ली थी, तब से ल्यूतिकोव की सलाह पर अमल करते हुए उसने सार्वजनिक कार्यों से अपना हाथ खींच लिया था। इसकी वजह से नगर के नारी-जगत में बड़ा क्षोभ पैदा हो गया था। लोग समझ नहीं पाते थे कि उसकी जैसी सक्रिय कार्यकर्त्री अचानक सुस्त क्यों पड़ गयी – ख़ासकर ऐसे वक़्त जब कि देश मुसीबतों से घिरा है? लेकिन बात यह थी कि काम करने के लिए न उसे किसी ने नियुक्त किया था और न मनोनीत। वह अपनी मर्ज़ी से, स्वेच्छा से काम करती थी। इंसान के साथ अजीब-सी और तरह-तरह की बातें होती रहती हैं। हो सकता है, उसने अपना सारा वक़्त घर के काम-काज में ही लगाने का अब निश्चय किया हो। सम्भव है, युद्धकालीन कठिनाइयों से विवश होकर उसे ऐसा करना पड़ा हो। धीरे-धीरे लोग पोलीना सोकोलोवा को भूल गये।

पूरब की ओर जानेवाले किसी शरणार्थी से उसे सस्ते दाम में ही एक गाय हाथ

लग गयी थी। अब वह फेरी लगाकर दूध बेचा करती थी। ल्यूतिकोव के परिवार को अध्कि दूध की ज़रूरत न थी, क्योंकि वे कुल तीन ही प्राणी थे : उसकी पत्नी येव्दोकीया फ़ेदोतोव्ना, उसकी बारह साल की बेटी राया और वह ख़ुद। लेकिन मकान मालकिन पेलगेया इल्यीनिच्ना के तीन बच्चे थे और उसकी बूढ़ी माँ भी उसके साथ रहने लगी थी, अतः उसने भी पोलीना गओर्गियेव्ना से दूध ख़रीदना शुरू किया। अतः पास-पड़ोस के सभी लोग उजाला होते ही हर रोज़ सदय रूसी चेहरेवाली उस औरत को पेलगेया इल्यीनिच्ना की झोपड़ी की ओर आहिस्ता-आहिस्ता जाते हुए देखने के आदी हो गये। वह सादे कपड़े पहने होती और उसके सिर पर देहाती ढंग का एक सफेद रूमाल बँधा होता। वह अपनी लम्बी, पतली उँगलियों से फाटक की किल्ली खोलती और अन्दर घुसकर सायबान की बग़लवाली खिड़की पर दस्तक देती। पेलगेया इल्यीनिच्ना की माँ, जो सबसे पहले जगा करती थी, दरवाज़ा खोलती। पोलीना गओर्गियेव्ना स्नेह से नमस्ते कहने के बाद झोपड़ी के अन्दर पाँव रखती और थोड़ी देर बाद दूध का ख़ाली बरतन लिये बाहर निकलती।

ल्यूतिकोव परिवार इस झोड़ी में बहुत वर्षों तक रह चुका था। येव्दोकीया फ़ेदोतोव्ना और पेलगेया इल्यीनिच्ना एक दूसरे की गहरी सहेलियाँ थी। येव्दोकीया फ़ेदोतोव्ना की बेटी राया और पेलगेया इल्यीनिच्ना की सबसे बड़ी बेटी लीज़ा हमउम्र थीं और एक ही कक्षा में पढ़ती थीं। पेलगेया इल्यीनिच्ना का पति – जो रिज़र्व फ़ौज में तोपची अफ़सर था और युद्ध छिड़ने के पहले दिन से ही सक्रिय सेवा में चला गया था – ल्यूतिकोव से पन्द्रह साल छोटा था। वह पेशे से बढ़ई का काम करता था और ल्यूतिकोव के प्रति गुरु का भाव रखता था।

पिछले शरद में ल्यूतिकोव को पेलगेया इल्यीनिच्ना ने बताया था कि अपने बड़े परिवार के कारण और अपने पति की ग़ैरहाज़िरी की वजह से उसने पक्का इरादा कर रखा था कि जर्मनों के आ जाने पर भी वह अपना घर छोड़कर नहीं जायेगी। तभी ल्यूतिकोव भी मन ही मन यह योजना बनाने लगा था कि अपने परिवारवालों को वह ज़रूरत पड़ने पर पूरब की ओर भेज देगा और ख़ुद पुराने घर में ही टिका रहेगा।

उसकी मकान मालकिन सीधी-सादी और ईमानदार औरत थी। ल्यूतिकोव को विश्वास था कि वह कोई सवाल नहीं पूछेगी, और कोई बात जानते हुए भी जान-बूझकर यह दिखाने की कोशिश करेगी कि उसे कुछ मालूम ही नहीं। इस तरह वह शान्तचित्त रहेगी। अगर उसने आगे बढ़कर कोई वचन नहीं दिया, तो उससे कोई माँग भी नहीं कर सकेगा कि यह करो या वह करो। वह चुगली नहीं करेगी, बल्कि उसकी रक्षा करेगी और यातनाएँ सहने पर भी उसे धोखा न देगी। वह उस पर बेहद विश्वास करती थी और उसके उद्देश्य के प्रति उसके हृदय में सहानुभूति थी। वह

स्वभाव से ही दयालु और सहृदय महिला थी।

दूसरी बात यह थी कि उसका घर ल्यूतिकोव के लिए बहुत ही सुविधाजनक था। खनिक चुरीलिन की अकेली कुटिया के पास बने लकड़ी के पहले घरों में से यह घर भी एक था और पूरा इलाका अभी भी चुरीलिनो ही कहलाता था। पेलगेया इल्यीनिच्ना की झोपड़ी के पीछे एक गहरा खड्ड था, जो स्तेपी तक फैला था और चुरीलिनो खड्ड के नाम से मशहूर था। पूरा का पूरा इलाक़ा ही कटा-कटा-सा समझा जाता था और दरअसल था भी।

उसके बाद जुलाई के वह मनहूस दिन जब कि ल्यूतिकोव को सारी बातें अपनी पत्नी को बतानी पड़ी थीं। यह सुनकर येव्दोकिया फ़ेदोतोव्ना रो पड़ी और कहने लगी :

"तुम बूढ़े और बीमार आदमी हो, ज़रा ज़िला समिति में जाओ... वे शायद तुम्हें छोड़ दें और हम कुज़्बास चले जायेंगे।" उसकी आँखों में अचानक ऐसी चमक कौंध गयी, जब उसे बीते दिनों की या अपने मित्रों की याद हो आती है, या किसी भी ऐसी चीज़ की, जो उसे बहुत प्यारी हो। युद्ध की अवधि में दोनेत्स के बहुत-से खान-कर्मियों के परिवारों को हटाकर कुज़्बास भेज दिया गया था। उनमें से काफ़ी परिवार ऐसे थे, जिन्हें ल्यूतिकोव और उसकी पत्नी, दोनों ही अपने बचपन से जानते थे। "हाँ, हम लोग कुज़्बास चले जायेंगे", वह बोली, मानो वहाँ जाकर वे अपनी जवानी के दिनों को फिर से हासिल कर लेंगे।

बेचारी औरत – जैसे वह अपने फ़िलीप्प पेत्रोविच को जानती ही न थी!

"बस, अब इसके बारे में बातें करना ही बेकार है। तो बात पक्की हो गयी," उसने अपने पति की मनुहारभरी आँखों में कठोरतापूर्वक देखते हुए कहा। ज़ाहिर था कि उसके आँसुओं और मनुहारों का उस पर कोई असर नहीं पड़ सकता। "तुम और तुम्हारी बेटी यहाँ नहीं रह सकती। तुम लोगों से मेरे काम में बाधा पहुँचेगी। तुम दोनों की ओर देखने भर से मेरा हृदय टूक-टूक होने लगता है..." और उसने अपनी पत्नी को चूमा और अपनी इकलौती बेटी को देर तक अपनी छाती से चिपकाये रखा।

बहुतों की तरह उनका परिवार भी देरी से रवाना हुआ और दोनेत्स तक भी पहुँचे बिना पीछे लौटने को मजबूर हुआ। ल्यूतिकोव ने उन्हें अपने साथ नहीं रखा, बल्कि नगर से कुछ दूर एक गाँव में उनके रहने का बन्दोबस्त कर दिया।

तीन हफ़्तों तक मोर्चे पर की स्थिति जर्मनों के अनुकूल बनी रही। इस बीच प्रादेशिक पार्टी समिति एवं क्रास्नोदोन ज़िला समिति और भी व्यक्तियों को छापेमार दस्ते में शामिल करने, ख़ुफ़िया तौर पर काम करने के लिए चुनने और ढूँढ़ने में व्यस्त रहीं। क्रास्नोदोन तथा अन्य ज़िलों के अधिकारियों की एक बड़ी टोली ल्यूतिकोव के

अधीन काम करती रही।

उस अविस्मरणीय दिन को, जब ल्यूतिकोव ने प्रोत्सेन्को को विदा किया था, वह नियमानुसार ही घर पहुँचा था : काम से आने के ठीक समय पर। बच्चे गली में खेल रहे थे और बूढ़ी औरत गरमी से बचने के लिए उस अँधेरे कमरे में जा बैठी थी, जिसके पल्ले बन्द थे। पेलगेया इल्यीनिच्ना धूप से तपे बादामी हाथों को अपनी गोद में रखे रसोईघर में बैठी थी। उसके अभी भी युवा और आकर्षक चेहरे पर ऐसा भाव था, जिससे ज़ाहिर होता था कि वह गहरे विचारों में डूबी थी और इस क़दर डूबी थी कि उसे ल्यूतिकोव के आगमन का पता ही न चला। कुछ क्षण तक वह ल्यूतिकोव की ओर इस तरह देखती रही, मानो शून्य में ताक रही हो।

"इतने साल तक मैं आपके साथ रह रहा हूँ लेकिन यह पहला मौक़ा है, जब मुझे आपको इस अन्दाज़ में बैठे देखने को मिला है, वरना आप हमेशा ही कोई न कोई काम करती रहती होतीं," वह बोला। "क्या आपको किसी बात का ग़म है? ऐसा नहीं होना चाहिए"।

औरत ने कोई उत्तर न दिया। उसने चुपचाप अपना नसदार हाथ उठाया और फिर दूसरे हाथ पर रख दिया।

ल्यूतिकोव कुछ क्षण तक मकान मालकिन के सामने खड़ा रहा। फिर भारी क़दमों से भीतर के कमरे में दाख़िल हुआ। कुछ ही देर बाद वह बिना टोपी और टाई के बाहर निकला। वह जूते पहने हुए था, लेकिन अब भी नयी काली जैकेट और खुले गले की क़मीज में वह चलते-चलते सफ़ेद होते अपने घने बालों को एक बड़ी-सी हरे रंग की कंघी से झाड़ता जा रहा था।

"मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ, पेलगेया इल्यीनिच्ना," वह अपनी छोटी-सी कँटीली मूँछ पर वही कंघी फेरते हुए बोला। "1924 में मैं पार्टी का सदस्य बना था, लेनिन के आह्वान पर, तब से आज तक 'प्राव्दा' मँगाता रहा हूँ और उसकी एक-एक प्रति मैंने सम्भालकर रखी है। मैं उनकी ज़रूरत बराबर ही महसूस करता था : भाषण के लिए, राजनीतिक अध्ययन, मण्डलियों में व्याख्यान आदि के लिए। एक सन्दूक़ मेरे कमरे में रखा है – तुम शायद यही सोचती होगी कि उसमें कूड़ा-कर्कट भरा पड़ा है। लेकिन वही सन्दूक़ है, जिसमें मैंने अख़बार की प्रतियाँ जमा कर रखी हैं," ल्यूतिकोव बोला और मुस्कुराने लगा। वह बहुत कम ही मुस्कुराता था और शायद यही कारण था कि मुस्कुराहट ने उसके चेहरे पर तुरन्त एक परिवर्तन ला दिया – असाधारण कोमलता की झाँकी मिलने लगी थी। "अब मैं उनका क्या करूँ? मैं सत्रह साल से उन्हें इकट्ठा करता आया हूँ। उन्हें मैं जला नहीं सकता, मुझे बड़ा अफ़सोस होगा।" उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से पेलगेया इल्यीनिच्ना की ओर देखा।

कुछ क्षण तक दोनों ही खामोश रहे।

"उन्हें कहाँ छिपाया जा सकता है?" पेलगेया इल्यीनिच्ना ने मानो अपने आप से पूछा। "उन्हें गाड़कर रखा जा सकता है। अँधेरा होने पर बाड़ी में गड्ढा खोदकर पूरा सन्दूक ही गाड़ दिया जा सकता है," वह अपने आप बड़बड़ा रही थी और उसकी आँखें दूसरी ओर लगी थी।

"मुझे उनकी ज़रूरत पड़ सकती है और जब ज़रूरत पड़ेगी तब क्या होगा?" ल्यूतिकोव बोला।

ल्यूतिकोव को जैसी आशा थी, पेलगेया इल्यीनिच्ना ने यह सवाल न पूछा कि उसे ऐसे वक़्त सोवियत अख़बारों की क्या ज़रूरत पड़ सकती है, जबकि जर्मन यहाँ उत्पात मचाये हुए हैं। उसके चेहरे पर वही निर्लिप्त भाव बना रहा। क्षण भर ख़ामोशी साधकर वह बोली :

"फ़िलीप्प पेत्रोविच, आपको हम लोगों के साथ रहते बहुत वर्ष हो गये और आप हर चीज़ के आदी हो चुके हैं, लेकिन मैं आपसे एक बात पूछना चाहती हूँ : मान लीजिये कि आप घर में आते हैं और कोई चीज़ ढूँढ़ने के इरादे से आते हैं – तो क्या आपको रसोईघर में कोई ख़ास बात नज़र आयेगी?"

ल्यूतिकोव ने बड़े गौर से रसोईघर में निगाह दौड़ायी। एक छोटी-सी देहाती झोपड़ी में एक छोटा-सा साफ़-सुथरा रसोईघर! एक होशियार बढ़ई होने के नाते उसने यही गौर किया कि रंगीन काठ का फ़र्श एक के साथ एक जुड़े तख़्तों के बदले छोटे-छोटे चौकोर टुकड़ों को जोड़कर बनाया गया था। इसे बनानेवाला व्यक्ति अपने पेशे में माहिर रहा होगा, क्योंकि फ़र्श बहुत ही ठोस और मज़बूत बनाया गया था और रूसी चूल्हे के भार से न धँस सकता था और न ही बार-बार धोने-रगड़ने से जल्दी सड़-गल ही सकता था।

"मुझे कोई ख़ास बात तो नहीं दिखायी पड़ती, पेलगेया इल्यीनिच्ना," वह बोला।

"रसोईघर के नीचे एक पुराना तहखाना है," वह स्टूल पर से उठकर खड़ी हो गयी और झुककर एक तख़्ते को टटोलने लगी। एक चौकोर टुकड़े पर उसे कोई निशान मिल गया। "यहाँ पर लकड़ी में एक हैण्डल हुआ करता था। और छोटी-सी सीढ़ी यहाँ है।"

"क्या मैं इसे देख सकता हूँ?" ल्यूतिकोव ने पूछा।

पेलगेया इल्यीनिच्ना ने बाहर का दरवाज़ा बन्द करके उसकी किल्ली लगा दी। उसके बाद चूल्हे के नीचे हाथ डालकर एक कुल्हाड़ी निकाल लायी, लेकिन ल्यूतिकोव ने उसका इस्तेमाल नहीं करना चाहा : फ़र्श पर उसके निशान पड़ सकते थे। ल्यूतिकोव ने सब्ज़ी काटने का चाकू उठा लिया और पेलगेया इल्यीनिच्ना ने भी एक

मामूली चाकू ले लिया। दोनों तख़्ते के चारो ओर की दरार खुरचकर साफ़ करने लगे। इसके बाद वे थोड़ा ज़ोर लगाकर तख़्ता उठाने में सफल हुए।

चार सीढ़ियाँ उतरने के बाद ल्यूतिकोव तहख़ाने में पहुँच गया। उसने दियासलाई जलायी : तहख़ाना सूखा था। फिलहाल, उसके लिए यह कल्पना करना कठिन था कि एक दिन यही छोटा-सा तहखाना उसके कितना काम आयेगा।

वह ऊपर चढ़ आया और सावधानी से तख़्ते को फिर से बैठा दिया।

"मुझसे नाराज़ न हो, लेकिन मुझे एक बात और पूछनी है," वह बोला। "बाद में, कहीं मैं अच्छी तरह जम जाऊँगा और जर्मनों को मेरा सुराग़ न मिल सकेगा। लेकिन आते ही, अगर उनकी मुझ पर नज़र पड़ गयी, तो गुस्से में वे मुझे क़त्ल कर सकते हैं, यदि ज़रूरत पड़ी, तो मैं इसी में पनाह लूँगा।" उसने तहखाने की ओर इशारा किया।

"और यदि उन्होंने घर में सैनिक ठहरा दिये?"

"वे ऐसा नहीं कर सकते : यह चुरीलिनो है... मुझे भी इसके नीचे छिपना अच्छा नहीं लगता। आपको घबराने की कोई ज़रूरत नहीं।" ल्यूतिकोव ने पेलगेया इल्यीनिच्ना के चेहरे पर उपेक्षा का भाव देखकर चिन्तित स्वर में कहा।

"मैं नहीं घबराती। मेरा इससे कोई मतलब नहीं...."

"यदि जर्मन ल्यूतिकोव नामक किसी व्यक्ति के बारे में पूछें, तो उनसे कह देना कि वह खाने का सामान ख़रीदने के लिए गाँव में गया हुआ है और शीघ्र ही लौटेगा. .. लीज़ा और पेत्या मुझे छिपाये रखने में मदद देंगे। वे दिन में चौकसी रखेंगे," ल्यूतिकोव बोला और मुस्कुरा दिया।

पेलगेया इल्यीनिच्ना ने उसकी ओर कनखियों से देखा, युवाजनों की तरह सिर हिला दिया और ख़ुद भी हँस पड़ी। ल्यूतिकोव देखने में बड़ा कठोर लगता था, परन्तु बच्चों का वह जन्मजात अध्यापक था। बच्चों को अच्छी तरह समझता-परखता और प्यार करता था। वह जानता था कि उनका प्रेम कैसे प्राप्त किया जा सकता है! बच्चे उसे घेरे रहते, वह उनके साथ बड़ों का-सा सुलूक करता। वे जानते थे कि वह अपने हाथों से खिलौने ही नहीं, बल्कि घर के लिए उपयोगी वस्तुएँ भी बना सकता है। वह हरफ़नमौला के रूप में मशहूर था।

वह अपनी बेटी और मकान मालकिन के बच्चों में कोई फ़र्क का भाव न रखता था। वे सब के सब उसके लिए कोई भी काम करने को तैयार रहते। उसे केवल इशारा भर कर देने की ज़रूरत थी।

"तुम इन सब को अपने पास रख लो। तुमने तो इन पर जादू कर रखा है, चाचा फ़िलीप्प। वे तुम्हारा जितना आदर करते हैं, उतना अपने बाप का भी नहीं करते,"

पेलगेया इल्यीनिच्ना का पति कहा करता। "तुम लोग तो चाचा फ़िलीप्प के साथ हमेशा के लिए रहना पसन्द करोगे न?" वह सख़्ती से अपने बच्चों की ओर देखते हुए उनसे पूछता।

"नहीं, नहीं!" वे एक साथ चिल्ला उठते और चारों ओर से दौड़-कर चाचा फ़िलीप्प से चिपक जाते।

कार्यकलाप के सभी विविध क्षेत्रों में ऐसे पार्टी-नेताओं से मुलाक़ात हो सकती है, जो स्वभाव या चरित्र में एक दूसरे से मेल नहीं खाते, लेकिन हर एक की अपनी विशेषता होती है, हर एक में एक विशेष गुण होता है। और उनमें से एक ऐसा पार्टी-नेता, जिसे सिखाने-पढ़ाने का शौक़ हो, सबसे अधिक देखने में आता है। इसका सम्बन्ध केवल उन पार्टी-नेताओं से नहीं है, जिनका मुख्य कार्यकलाप पार्टी या राजनीतिक सम्बन्धी शिक्षा देना है, बल्कि इसका सम्बन्ध अधिकतर उनसे है, जो जानते हैं कि शिक्षा कैसे दी जाती है, भले ही उनके कार्यकलाप का क्षेत्र कोई भी क्यों न हो – उद्योग हो, फ़ौज हो या प्रशासकीय या सांस्कृतिक कार्य। इसी कोटि के पार्टी-नेताओं में फ़िलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव आता था।

वह लोगों को सिखाने-पढ़ाने का काम महज़ शौक़ से नहीं करता था, न ही इसलिए कि वह इसकी ज़रूरत महसूस करता था, यह तो उसके स्वभाव का अंग बन गया था। उसके लिए दूसरों को अपना ज्ञान और अनुभव प्रदान करना, उन्हें पढ़ाना और सिखाना अनिवार्य था।

यह सच है कि इसी वजह से, वह जो कुछ कहता था उसका अधिकांश, उपदेश जैसा ही लगता था। लेकिन ल्यूतिकोव आवश्यकता से अध्कि उपदेशक कभी नहीं बनता था और न अपनी सीखों को लोगों पर जबर्दस्ती लादता ही था, क्योंकि उसकी सीखें उसकी निजी अनुभव और विचार के फलस्वरूप थीं और लोग उसी रूप में उन्हें स्वीकार भी करते थे।

ल्यूतिकोव की विशेषता थी कि उसकी बातें उसकी करनी से मेल खाती थीं। कुल मिलाकर इस कोटि के नेताओं के यही गुण होते हैं। वे अपनी हर बात को अमल में लाकर दिखाते हैं। वे विविध कोटि के व्यक्तियों को किसी ख़ास कार्यकलाप के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इसी कारण से वे शिक्षक का एक नया रूप धारण कर सामने आते हैं। ल्यूतिकोव तो बढ़िया शिक्षक इसलिए था कि वह जानता था कि संगठन का काम कैसे किया जाता है या जीने की सच्ची कला का मर्मज्ञ कैसे बना जा सकता है!

उसके उपदेशों को सुनकर कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। वह अपने उपदेश दूसरों पर लादने की कोशिश नहीं करता था। वे हृदय को छूते थे और

ख़ासकर युवाजनों के हृदयों को, क्योंकि युवाजन उपदेशों से उतना प्रभावित और प्रोत्साहित नहीं होते, जितना उन्हें कार्यरूप में परिणत देखकर।

कभी-कभी उसे केवल एक-दो शब्द कहने या आँखें उठाकर देखने भर की ज़रूरत होती थी। स्वभाव से वह मितभाषी था और आदत से शान्त। पहली नज़र में वह कुछ लोगों को सुस्त और मन्द जान पड़ता था, लेकिन वस्तुतः वह शान्त, विवेकपूर्ण और सुसंगठित कार्यकलाप में लगा रहता। अपने काम से छुट्टी पाने पर वह अपना फ़ुरसत का वक़्त इतनी कुशलता से सामाजिक कार्य या शारीरिक श्रम में, पढ़ने या मनबहलाव में बिताता और सब समय पर कर लेता।

ल्यूतिकोव दूसरों के साथ न गुस्सा दिखाता था और न कभी उत्तेजित होता था। बातचीत में वह दूसरों की बातें बहुत ही धैर्य और ध्यान से सुनता था। यह गुण बहुत कम व्यक्तियों में पाया जाता है। यही वजह थी कि यह वार्तालाप में कुशल और ईमानदार आदमी के रूप में मशहूर था। बहुत-से लोग उससे सामाजिक और ऐसे वैयक्तिक मसलों पर बातें करते, जिन्हें वे अपने घनिष्ठ सम्बन्धियों को सुनाने में भी हिचकते थे।

ये सब गुण होते हुए भी, वह तथाकथित दयालु या कोमल हृदय का व्यक्ति न था। वह निष्कलुष, और सख़्त था तथा ज़रूरत पड़ने पर निर्मम भी हो सकता था।

कुछ लोग उसका आदर करते और कुछ लोग उसे प्यार करते। कुछ ऐसे भी थे, जो उससे भय खाते थे। बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि व्यक्ति के दिल में उसके प्रति ये तीनों भावनाएँ उठती थीं, उसकी पत्नी और मित्रों में भी। बात यह है कि इन अनुभूतियों की कमोबेश मात्रा अलग-अलग व्यक्तियों के अलग-अलग चरित्र और स्वभाव पर निर्भर करती थी : किसी में पहली अनुभूति अधिक प्रबल रहती, किसी में दूसरी और किसी में तीसरी। यदि इन व्यक्तियों का वर्गीकरण उम्र के आधार पर किया जाये, तो कहा जा सकता है कि वयस्क लोग उसका आदर करते थे, उसे प्यार करते थे और उससे भय भी खाते थे, युवाजन आदर और प्यार करते थे और बच्चे केवल प्यार ही करते थे।

यही कारण था कि पेलगेया इल्यीनिच्ना हँस पड़ी थी, जब ल्यूतिकोव ने कहा था, “लीज़ा और पेत्या मेरी मदद करेंगे।”

जर्मनों के आगमन के बाद कई दिन तक बच्चे बारी-बारी वस्तुतः सड़क पर चौकसी करते रहे और ल्यूतिकोव को छिपे रहने में मदद देते रहे।

भाग्य उसका साथ दे रहा था। कोई भी जर्मन पेलगेया इल्यीनिच्ना के घर की ओर ठहरने के लिए नहीं आया, क्योंकि उन्हें पास नगर में ही बेहतर घर मिल गये थे। झोपड़ी के पीछे जो खड्ड था, उससे जर्मन भय खाते थे। उन्हें छापेमारों से डर लगता

था। जर्मन सैनिक यदा-कदा घर में घुस आते, कमरों में झाँकते और कोई चीज़ उठाकर ले जाते। हर बार ल्यूतिकोव तहखाने में छिप जाता, लेकिन किसी ने भी कभी उसके बारे में न पूछा।

हर सुबह पोलीना गओर्गियेव्ना सर पर साफ़ और सफ़ेद किसानी रूमाल बाँधे चुपचाप, बिना किसी आडम्बर के आती, दूध को दो मिट्टी के कटोरों में उँडेल देती और दूध का ख़ाली बरतन लिए अन्दर ल्यूतिकोव के पास पहुँच जाती। जब वह ल्यूतिकोव के पास होती, तो पेलगेया इल्यीनिच्ना और उसकी माँ रसोईघर में चली जाती। बच्चे अभी भी सोये होते। पोलीना गओर्गियेव्ना ल्यूतिकोव के पास से निकलकर रसोईघर में उन औरतों से कुछ देर तक गप्पें लड़ाती और इसके बाद विदा हो जाती।

सो एक हफ़्ता या शायद कुछ अधिक ही दिन बीते होंगे कि एक सुबह, ल्यूतिकोव को स्थानीय ख़बरे सुनाने से पहले ही, पोलीना गओर्गियेव्ना ने नम्रता से कहना शुरू किया, "वे चाहते हैं कि आप काम पर जायें, फ़िलीप्प पेत्रोविच"।

पलक झपकते उसमें एक परिवर्तन आ गया : स्थिरता और अन्यमनस्कता का भाव, चलने-फिरने का सुस्त तरीक़ा, जो ख़ासकर उसके गुप्तवास की अवधि में घर कर गया था, ये सब क्षण भर में तिरोहित हो गये।

एक ही झपाटे में वह दरवाज़े पर पहुँच गया। उसने बग़ल के कमरे में झाँककर देखा, लेकिन वह हमेशा की तरह ख़ाली था।

"क्या हर व्यक्ति को काम पर जाने के लिए कहा जा रहा है?"

"हाँ, हर व्यक्ति को।"

"निकोलाई पेत्रोविच ने कहा है?"

"हाँ।"

"क्या वह वहाँ था?" ल्यूतिकोव ने पोलीना गओर्गियेव्ना की आँखों में पैनी नज़र से देखते हुए पूछा।

ल्यूतिकोव के लिए पोलीना गओर्गियेव्ना को यह बताना ज़रूरी न था कि बराकोव कहाँ गया था। वह सब कुछ जानती थी। उसके और ल्यूतिकोव के बीच सब कुछ पहले से ही तय हो चुका था।

"हाँ," उसने आहिस्ता-से जवाब दिया।

ल्यूतिकोव न भड़का और न उसने अपनी आवाज़ को ही ऊँचा किया, लेकिन उसकी विशाल और भारी काठी, उसका झुका हुआ सिर, उसकी आँखें, उसका स्वर आदि अचानक जोश से उफनते-से जान पड़ने लगे, मानो उसके अन्दर कोई बन्द कमानी खुल गयी हो।

उसने अपनी जैकेट की जेब में दो उँगलियाँ डालीं और एक कुशल कामगार की सिद्धहस्तता से काग़ज का एक छोटा-सा, महीन लिखावट से भरा पुरजा निकाला। उसने उसे पोलीना गओर्गियेव्ना की ओर बढ़ा दिया।

"कल सुबह तक... और इसकी जितनी अधिक से अधिक प्रतियाँ निकाल सकती हो, निकालना!..."

पोलीना गओर्गियेव्ना ने फ़ौरन पुरज़े को अपने ब्लाउज़ के अन्दर छिपा लिया।

"खाने के कमरे में थोड़ा इन्तज़ार कीजिये। मैं महिलाओं को आपके पास अभी भेजता हूँ...."

पेलगेया इल्यीनिच्ना और उसकी माँ बग़ल के कमरे में घुसा और वहाँ पोलीना गओर्गियेव्ना को दूध के बरतन के साथ खड़ा पाया। वे खड़े-खड़े स्थानीय समाचारों का आदान-प्रदान करती रहीं। कुछ देर बाद ल्यूतिकोव ने पोलीना गओर्गियेव्ना को पुकारकर रसोईघर में बुलाया।

उसके हाथ में अख़बारों की गड्डी थी और वे अच्छी तरह लपेटकर रखे थे। पोलीना गओर्गियेव्ना को उसके हाथ में 'प्राव्दा' की इतनी ढेर-सी प्रतियाँ देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ।

"इन्हें दूध के बरतन में ठूँस दो," ल्यूतिकोव बोला। "और उनसे कहो कि वे महत्वपूर्ण स्थानों पर इन्हें चिपका दें।"

पोलीना गओर्गियेव्ना का हृदय उछलने लगा। क्षण-भर के लिए उसे ऐसा अहसास हुआ कि ल्यूतिकोव को 'प्राव्दा' के नवीनतम अंक प्राप्त हुए हैं, हालाँकि यह विश्वास करने योग्य बात न थी। बेहद उत्सुकता के मारे, उसने बरतन में अख़बारों की गड्डी ठूँसने से पहले यह पढ़ने की कोशिश की कि उन पर कौन-सी तिथियाँ अंकित थीं।

"पुराने अंक हैं।" वह अपनी निराशा छिपा नहीं सकी।

"ये पुराने नहीं है। बोल्शेविक सत्य* पुराना नहीं पड़ता," ल्यूतिकोव बोला।

पोलीना गओर्गियेव्ना ने जल्दी-जल्दी कुछ प्रतियाँ देखनी शुरू कीं। उनमें से अधिकांश विभिन्न वर्षों के विशेष समारोह-संस्करण थे, जिनमें लेनिन और स्तालिन के चित्र भी थे। ल्यूतिकोव की योजना पोलीना गओर्गियेव्ना के दिमाग़ में स्पष्ट होकर नाचने लगी। उसने प्रतियों को फिर से लपेट लिया और उन्हें ख़ाली बरतन में ठूँस दिया।

"हाँ, मैं तो भूल ही गया था। ओस्तप्चूक को भी काम शुरू करने दो। कल से

---

* प्राव्दा का रूसी मतलब सत्य है।

ही,” वह बोला।

पोलीना गओर्गियेव्ना ने सिर हिला दिया, लेकिन बोली कुछ नहीं। उसको मालूम न था कि ओस्तप्चूक और मत्वेई शुल्गा एक ही व्यक्ति थे। वह यह भी नहीं जानती थी कि वह कहाँ छिपा हुआ था। वह केवल उस जगह का पता भर जानती थी, जहाँ वह ल्यूतिकोव की हिदायतें पहुँचा दिया करती थी : उस जगह भी रोज़ाना दूध देने जाया करती थी।

“धन्यवाद। बस इतना ही।” उसने अपने बड़े हाथ से उसका हाथ पकड़कर हिलाया और तब अपने कमरे में लौट गया।

वह धम्म से कुर्सी पर बैठ गया और अपने हाथों को घुटनों पर रखे चुपचाप कई क्षण तक बैठा रहा। उसने घड़ी देखी : समय सात बजकर कुछ मिनट हो गया था। उसने आराम से अपनी पुरानी क़मीज उतारी और नयी, सफ़ेद क़मीज पहनी तथा टाई बाँधी। उसके बाद वह अपने बालों में कंघी फेरने लगा। उसके बाल सफ़ेद हो रहे थे ख़ासकर सामने की ओर कनपटियों के पास अधिक सफ़ेद हो चले थे। अन्त में वह कोट पहनकर रसोईघर में चला गया। पोलीना गओर्गियेव्ना चली गयी थी और पेलगेया इल्यीनिच्ना तथा उसकी माँ अपने काम-धन्धे में व्यस्त थीं।

“अच्छा, पेलगेया इल्यीनिच्ना, मैं पागल गाय के थोड़े दूध* और थोड़ी रोटी से काम चला लूँगा, यदि ये घर में हों तो। मैं काम पर जा रहा हूँ,” वह बोला।

दस मिनट बीतते न बीतते, वह साफ-सुथरे कपड़े डाटे और सिर पर काली छज्जेदार टोपी पहने हुए नगर की जानी-पहचानी सड़क पर बेपरवाही से क़दम बढ़ाते नज़र आया; वह ‘क्रास्नोदोन कोयला’ ट्रस्ट के केन्द्रीय वर्कशॉप की ओर बढ़ा जा रहा था।

अध्याय 23

जर्मन फ़ौज और ‘नयी व्यवस्था’ वाले शासन के अन्तर्गत अनेक कोटियोंवाले अधिकारी आये थे। उनमें से श्वैदे नामक एक लेफ़्टिनेण्ट भी क्रास्नोदोन पहुँचा। बड़ी उम्र का दुबला-पतला और छिटपुट सफ़ेद बालोंवाला यह आदमी जर्मन खान-बटालियन में तकनीशियन था। किसी भी क्रास्नोदोन निवासी को यह याद नहीं कि पहले-पहले वह कब प्रगट हुआ था : अन्य कोटि के अधिकारियों की तरह वह भी आम वर्दी पहनता था, जिस पर लगा अधिकार-चिह्न स्पष्टतया समझ में नहीं आता था।

उसने अपने लिए चार फ़्लैटोंवाला एक मकान चुना। हर फ़्लैट में अलग-अलग

---

* उसका सांकेतिक अर्थ ‘वोद्का’ से है।

रसोईघर था और जब से हर श्वैदे यहाँ पहुँचा तब से चारों रसोईघरों के चूल्हे हमेशा जलते ही रहे। उसके साथ बहुत-से जर्मन कर्मचारी आये थे और उन्होंने अलग-अलग मकानों में अड्डा जमा रखा था। कई जर्मन रसोइये, एक जर्मन ख़ानसामां-औरत और उसका जर्मन अर्दली उसी मकान में टिके हुए थे, जिसमें वह ख़ुद डेरा डाले हुए था। शीघ्र ही, रूसी स्त्रियों की संख्या में वृद्धि हो जाने के कारण उसके नौकर-चाकरों की सूची और भी लम्बी हो गयी। श्रम-केन्द्र द्वारा भेजी गयी कई नौकरानियों, एक धोबिन, एक दर्ज़िन और एक स्त्री दुभाषिया को वह सम्मिलित रूप से रूसी स्त्रियाँ ही कहता था। जल्द ही, एक औरत उसकी गायों की, दूसरी औरत उसके सुअरों की और तीसरी औरत उसकी मुर्ग़ियों की देखभाल करने के लिए पहुँच गयी। गायें और सुअर तो उसे यूँ ही हाथ लग गये। उनमें उसकी कोई ख़ास दिलचस्पी न थी। लेकिन मुर्ग़े-मुर्ग़ियों में हर श्वैदे को ख़ास दिली दिलचस्पी थी। इस कारण तो नहीं, लेकिन फिर भी नगर भर में इस लेफ़्टिनेण्ट की चर्चा थी।

हर श्वैदे अपने साथ आये नौकर-चाकरों के साथ पार्क में गोर्की स्कूल की इमारत में ठहरा और इस संस्था का नया नाम पड़ा : प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस।

यह सैन्य संस्था ही औद्योगिक प्रशासन का प्रधान अंग थी, जो क्रास्नोदोन ज़िले की सारी खानों और उद्योगों का नियंत्रण करती थी – इनमें वे सारी सम्पत्ति और साधन – सामग्री भी शामिल थे, जो हटाये नहीं जा सके थे या जिन्हें नष्ट नहीं कर दिया गया था। और वे कामगार और कर्मचारी भी, जो भागने में असफल रहे थे या भाग नहीं सके थे। यह संस्था उस बड़ी स्टाक कम्पनी की एक शाखामात्र थी, जिसका एक लम्बा-सा नाम थाः 'कोयला और धातु उद्योगों के विकास के लिए पूर्वी कम्पनी'। इस कम्पनी का बोर्ड स्तालिनो में अवस्थित था और स्तालिनो नगर का पुराना नाम 'यूज़ोव्स्क' फिर से चालू कर दिया गया था। यह 'पूर्वी कम्पनी' खान और धातु उद्योगों के प्रादेशिक बोर्डों' का नियंत्रण करती थी। प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस शाख़्ती नगर में स्थापित उस प्रादेशिक प्रबन्ध-समिति के अधीन था, जिसके नियन्त्रण में और भी ऐसी कई अन्य संस्थाएँ थीं।

यह सब कुछ बड़ा सुसंगठित और सुयोजित था। अब काम इतना-भर रह गया था कि सोवियत दोनबास के कोयले और धातु के सारे ज़ख़ीरे जर्मन 'पूर्वी कम्पनी' के उदर में धाराप्रवाह पहुँचने लगें। हर श्वैदे ने फ़रमान जारी किया था : भूतपूर्व 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की खानों और कारख़ानों के सारे कामगार, कार्यालय-कर्मचारी, इंजीनियर और तकनीशियन अविलम्ब अपने-अपने काम पर हाज़िर हो जायें।

अपनी उन खानों और वर्कशॉपों में, जो अब दुश्मनों की सम्पत्ति हो गये थे, मजबूर होकर काम शुरू करने से पहले हर कामगार के मन में कैसे-कैसे गम्भीर संशय

उठे – ख़ासकर ऐसे वक़्त, जबकि उनके बेटे, भाई, पति और पिता इन दुश्मनों से लड़ते हुए मोर्चे पर अपने प्राण न्योछावर कर रहे थे! शर्म से चेहरे लटकाये ये कामगार केन्द्रीय वर्कशॉपों में अपने-अपने काम पर रवाना हुए। वे एक दूसरे से आँखें न मिला पा रहे थे और न एक शब्द ही बोल रहे थे।

आख़िरी पलायन के बाद से सारे वर्कशॉपों के दरवाज़े खुले पड़े थे और वहाँ सन्नाटा छाया था। किसी ने न उनके दरवाज़े बन्द किये, और न ही कोई उनकी चौकीदारी करता था। क्योंकि अब उनमें पड़ी चीज़ों की हिफ़ाज़त करने में किसी को दिलचस्पी नहीं थी। वर्कशॉप खुले पड़े थे, पर कोई उनमें घुसता न था। कामगार ही अकेले-दुकेले, अधिकतर अकेले ही, अहाते में लोहे के कबाड़ तथा मलबे के बीच बैठे प्रबन्ध-समिति की हिदायतों का इन्तज़ार करते रहते।

तब इंजीनियर बराकोव सबके सामने प्रकट हुआ – गठीला मज़बूत, पैंतीस वर्ष की उम्र होने के बावजूद वह काफ़ी जवान लगता था। उसके कपड़े केवल साफ़ ही नहीं, बल्कि कुछ ठाठदार भी थे और उसके चेहरे पर आत्मविश्वास का भाव बना था। वह काले रंग की बो-टाई लगाये था, हाथ में हैट लिये था और उसका घुटा हुआ सिर धूप में चमक रहा था। उसने अहाते में खड़े छिट-पुट कामगारों के पास पहुँचकर नम्रता से उनका अभिवादन किया, क्षण भर ठिठका और इसके बाद दृढ़ता से मुख्य इमारत के भीतर घुस गया। कामगारों ने उसके अभिवादन का उत्तर न दिया। वे चुपचाप उसे मशीन-शॉप के खुले दरवाज़े से होकर छोटे-से दफ़्तर में घुसते देखते रहे।

जर्मन प्रबन्ध-समिति को काम शुरू कराने की कोई जल्दी नहीं थी। धूप काफ़ी तेज़ हो चली थी। चौकीदार की झोपड़ी में से निकलकर श्वैदे का सहायक, हर फ़ेल्दनर और शानदार केशविन्यासवाली एक रूसी स्त्री-दुभाषिया अहाते में प्रगट हुए।

जैसा कि अक्सर होता है, हर फ़ेल्दनर अपनी शारीरिक बनावट और स्वभाव में अपने प्रधान अधिकारी का ठीक उल्टा था। लेफ़्टिनेण्ट श्वैदे दुबला-पतला, सन्देही और मितभाषी था। फ़ेल्दनर नाटा, गोल-मटोल, ज़ोर से बोलनेवाला और गप्पी था। उसकी आवाज़, जो हमेशा सप्तम में रहती, बहुत दूर से भी सुनायी पड़ती और दूर से लोगों को ऐसा जान पड़ता कि बहुत-से जर्मन आपस में तर्क-वितर्क करते चले आ रहे हैं। हर फ़ेल्दनर फ़ौजी वर्दी डाटे रहता, पैरों में चमड़े के लेगिंग पहनता और उसकी अफ़सरी ख़ाकी टोपी का अग्रभाग उठा रहता।

दुभाषिया के साथ वह कामगारों के पास पहुँचा। एक-एक करके सब कामगार खड़े हुए। इससे लेफ़्टिनेण्ट को थोड़ा सन्तोष हुआ। उसने दुभाषिया से कुछ कहा फिर, बिना क्षण भर भी रुके कामगारों को हिदायतें देने लगा। दुभाषिया की ओर देखते हुए एक साँस में जर्मन भाषा में धड़ाधड़ चिल्ला-चिल्लाकर बोलता गया और दुभाषिया

अनुवाद करती रही। शायद वह जानता ही न था कि स्थिर और शान्त कैसे रहा जाता है! कोई भी यह सोच सकता था कि अपनी माँ के पेट से निकलकर उसने जो पहली बार चीख़ा होगा, तब से आज तक उसका चीख़ना-चिल्लाना कभी बन्द न हुआ होगा और वह हमेशा ही उफनने-बमकने की न्यूनाधिक स्थिति में रहा होगा।

उसने पहले यह जानने की जिज्ञासा प्रगट की कि इनमें से कोई भी व्यक्ति ऐसा है, जो भूतपूर्व प्रशासन-कार्यालय में काम कर चुका हो। उसके बाद उसने कामगारों को अपने पीछे-पीछे वर्कशॉपों में आने के लिए हुक्म दिया। चिल्लाता हुआ जर्मन, दुभाषिया के साथ-साथ सब से आगे चला जा रहा था और उसके पीछे-पीछे कई कामगार थे, जो उस मशीन-शॉप कार्यालय के पास पहुँचकर रुक गये, जिसमें पहले बराकोव घुस चुका था। फ़ेल्दनर ने सिर झटकारा, गहरी साँस ली, और मुट्ठी से दरवाज़ा ठेलकर अन्दर आया। वह स्त्री भी भीतर आयी और दरवाज़ा बन्द हो गया। कामगार बाहर ही खड़े-खड़े कान लगाकर सुनने लगे।

पहले तो उन्हें केवल फ़ेल्दनर की चीख़-चिल्लाहट सुनायी पड़ी। लगता था जैसे बहुत-से जर्मन लड़-झगड़ रहे हों। वे इन्तज़ार करते रहे कि दुभाषिया कुछ बोले तो पता लगे कि फ़ेल्दनर क्यों चिल्ला रहा था, लेकिन उन्हें जब उत्तर में बराकोव की आवाज़ सुनायी पड़ी, तो उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ। बराकोव जर्मन भाषा में बोल रहा था। वह बड़ी ही नम्रता और शान्ति से बोल रहा था और कामगारों को लगा जैसे वह बहुत ही सुगमता से विदेशी भाषा में बोल रहा है।

न जाने इस कारण कि बराकोव ने जर्मन में उत्तर दिया था, या जो कुछ उसने कहा था उसे सुनकर फ़ेल्दनर को सन्तोष हुआ हो, फ़ेल्दनर की आवाज़ हठात कुछ धीमी पड़ गयी और अन्त में ऐसा चमत्कार हुआ कि वह चुप हो गया। बराकोव भी चुप हो गया। कुछ क्षण बाद जर्मन का चिल्लाना फिर शुरू हो गया, लेकिन इस बार वह झगड़ नहीं रहा था। वे दफ़्तर से बाहर निकले : सबसे आगे फ़ेल्दनर था, उसके पीछे बराकोव और सबसे अन्त में दुभाषिया। बराकोव ने कामगारों की ओर उपेक्षापूर्ण तथा उदास दृष्टि से देखा और उनसे कहा कि वे उसके लौटने तक इन्तज़ार करें। उसी क्रम में तीनों व्यक्ति वर्कशॉप से होते हुए दरवाज़े की ओर बढ़े : आगे-आगे नाटा, गोल-मटोल जर्मन था, और उसके पीछे सुन्दर और बलिष्ठ बराकोव चलता हुआ उसे शॉप में से निकलने का सुविधाजनक रास्ता बताता जा रहा था। कामगारों के लिए यह दृश्य देखना असह्य हो उठा था।

उसके कुछ ही देर बाद बराकोव गोर्की स्कूल के शिक्षकों के कमरे में बैठा था। यह कमरा अब प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस के चीफ़ हर श्वैदे का निजी दफ़्तर बना हुआ था। उनकी बातचीत के दौरान फ़ेल्दनर और एक अज्ञात स्त्री दुभाषिया भी वहाँ

मौजूद थी, हालाँकि उसे जर्मन भाषा का अपना ज्ञान प्रदर्शित करने का बिलकुल ही मौक़ा न मिला।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, लेफ़्टिनेण्ट श्वैदे, फ़ेल्दनर की तरह बातूनी और वाचाल न था। वह बहुत ही कम बोलता था। वह अपनी बातें अभिव्यक्त न कर सकता था, इसलिए उसके बारे में यह भ्रम हो सकता था कि वह रूखा और नीरस व्यक्ति था, लेकिन असलियत यह थी कि वह मौज-आनन्द और राग-रंग बहुत ही पसन्द करता था। वह बेहद दुबला-पतला था, लेकिन खाता बहुत था। यह सोचकर ताज्जुब होता था कि इतना ढेर-सा भोजन वह कहाँ डालता था और कैसे हज़म कर जाता था! वह सामान्यतः लड़कियों और स्त्रियों का, वर्तमान स्थिति में विशेषतः रूसी स्त्रियों और रूसी लड़कियों का बेहद शौक़ीन था। इनमें से ढुलमुल चरित्रवालियों को हर रात उसके फ़्लैट में बहकाकर लाया जाता और ढेरों स्वादिष्ट भोजन, मिठाइयों और तरह-तरह की शराब की बोतलों से भरी दावतों की चहल-पहल में डुबो दिया जाता। वह अपने रसोइयों को हुक्म देता : "ढेर-सा खाना पकाओ! Kocht reichlich Essen! ख़याल रखना कि रूसी स्त्रियाँ भर पेट और मन भर खायें-पियें।"

चूँकि वह चुप्पा था, इसलिए वह अपने फ़्लैट में उन रूसी स्त्रियों को, जो उसके चकमे में आ सकती थीं, फुसलाकर लाने का यही एक ढंग अपनाये हुए था।

चूँकि वह धड़ल्ले से बोल नहीं सकता था, इसलिए बेलगाम बोलनेवालों पर वह अविश्वास करता था। वह अपने सहायक फ़ेल्दनर का भी विश्वास न करता था और तब भला वह दूसरी जातियों के लोगों का कितना विश्वास करता होगा!

इस दृष्टि से बराकोव की स्थिति विकट थी। लेकिन हर श्वैदे बराकोव को धाराप्रवाह जर्मन भाषा में बातें करते सुनकर दंग रह गया। इसके अलावा, बराकोव ने ख़ुशामदपसन्द हर श्वैदे को इस तरह मक्खन लगाया कि उसे बराकोव की बातें मानने को मजबूर होना ही पड़ा।

"मैं उन गिने-चुने व्यक्तियों में से एक हूँ, जो पुराने रूस में ऊँचे वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे और अभी भी ज़िन्दा हैं," बराकोव ने पलकें झपकाये बिना, श्वैदे की आँखों में देखते हुए कहा। "ख़ासकर अर्थ-व्यवस्था और उद्योग के क्षेत्र में, मैं बचपन से ही जर्मन प्रतिभा का कायल रहा हूँ। ज़ारशाही रूस में मेरे पिता एक बहुत बड़ी औद्योगिक संस्था के संचालक थे, जो 'सीमन्स-शुकेर्त' कम्पनी की शाखा थी। हमारे परिवार की दूसरी मातृभाषा जर्मन भाषा थी। मुझे जर्मन टेक्निकल साहित्य पढ़ाया गया। यह मेरे सौभाग्य की ही बात है कि अब मुझे आप जैसे योग्य विशेषज्ञ के अधीन काम करने का मौक़ा मिलेगा। आप जो भी हुक्म देंगे, उसे मैं सिर-आँखों पर लूँगा..."

बराकोव ने लक्ष्य किया कि दुभाषिया उसकी बातें सुनकर दंग रह गयी थी और अपना आश्चर्य का भाव छिपा नहीं पा रही थी। जर्मन इस गड़े मुर्दे को कहाँ से उखाड़ लाये? यदि वह यहीं की रहनेवाली थी, तो ज़रूर ही जानती होगी कि वह पुराने रूस के बुर्जुआ वर्ग का प्रतिनिधि न था, बल्कि दोनेत्व के खान-कर्मियों की बराकोव नामक वंशावली का ही एक सम्मानित प्रतिनिधि था। उसके घुटे सिर पर पसीने की बूँदें चुहचुहा आयीं।

इधर बराकोव बोल रहा था और उधर हर श्वैदे दिमाग़ी कसरत कर रहा था, हालाँकि उसकी ज़रा-सी भी झलक उसके चेहरे पर न थी।

वह अनुमोदन तथा प्रश्न के मिश्रित-से लहजे में बोलाः

"तुम कम्युनिस्ट हो..."

बराकोव ने अपने हाथ से कुछ अजीब-सा संकेत किया। उसके चेहरे का भाव देखकर यह सोचा जा सकता था कि वह जैसे यह ज़ाहिर करना चाहता हो कि 'मैं कैसा कम्युनिस्ट हूँ' या 'आप ख़ुद जानते हैं कि कम्युनिस्ट होना सबके लिए ही लाज़िमी था' या ' हाँ, मैं कम्युनिस्ट हूँ, पर यदि आपके अधीन काम करने पर राज़ी हो गया हूँ, तो उससे आपका ही लाभ होगा।

उसके इस संकेत से जर्मन लेफ़्टिनेण्ट को फिलहाल सन्तोष हो गया। अब इसी रूसी इंजीनियर को यह समझाना ज़रूरी था कि खान की साधन सामग्री का उद्धार करने के लिए केन्द्रीय वर्कशॉपों को चालू करना कितना महत्वपूर्ण था! हर श्वैदे ने इस जटिल विचार को नकारात्मक कथन के रूप में उसके सामने रखा : "कुछ भी नहीं है। ऐ पजे दपबीजे कं," वह बोला और फ़ेल्दनर को मर्मभेदी नज़र से देखा।

फ़ेल्दनर, जो अपने चीफ़ की मौजूदगी में मजबूरन चुप था और इस कारण घोर यंत्रणा भोग रहा था, अपने चीफ़ की बातों का समर्थन करते हुए आप ही आप चिल्ला उठा :

"मशीनरी नहीं! यातायात नहीं! औज़ार नहीं! लकड़ी नहीं! कामगार नहीं!" उसे अफ़सोस था कि इनके साथ जोड़ने के लिए और कोई चीज़ उसे याद नहीं आयी।

सन्तुष्ट होकर श्वैदे ने सिर एक तरफ़ को टेढ़ा किया, क्षण भर सोचता रहा और काफ़ी कोशिश करने के बाद रूसी में दोहराकर कहा :

"कुछ भी नहीं है – इसलिए कोयला भी नहीं!"

वह कुर्सी पर उठंग गया और पहले बराकोव की ओर, फिर फ़ेल्दनर की ओर देखा। फ़ेल्दनर ने उसकी दृष्टि से अपना काम शुरू करने का संकेत पा लिया और अपनी ऊँची आवाज़ में एक-एक कर वे सारी बातें गिनाने लगा, जिन्हें 'पूर्वी कम्पनी' बराकोव से पूरा कराना चाहती थी।

बराकोव को फ़ेल्दनर की बेरोक चीख़-चिल्लाहट के बीच मुश्किल से यह कहने का मौक़ा मिलता था कि वह उन्हें पूरा करने की कोशिश में कोई भी कसर उठा न रखेगा।

उसके बाद हर श्वैदे फिर अविश्वास की भावना से भर उठा।

"तुम कम्युनस्टि हो," वह फिर बोला।

बराकोव ने रुखाई में मुस्कुराकर पहली भाव-भंगिमा फिर से दुहरा दी।

वर्कशॉप में लौटकर बराकोव ने एक लम्बा-सा नोटिस लिखवाकर फ़ाटक पर लगवा दिया कि वह प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस के केन्द्रीय वर्कशॉपों के डाइरेक्टर की हैसियत से ऐलान करता है कि सभी कामगार, कार्यालय-कर्मचारी, इंजीनियर, तकनीशियन अपना-अपना काम शुरू कर दें और जो लोग काम करने के इच्छुक हों, उनके लिए विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में काम की व्यवस्था की जा सकती है।

वे लोग भी, जो अपनी आत्मा की आवाज़ को दबाकर काम पर आये थे, तथा राजनीतिक मामलों के बारे में कुछ नहीं जानते थे, यह यकीन नहीं कर पा रहे थे कि बराकोव जैसा कुशल इंजीनियर और फ़िनलैण्ड युद्ध तथा देशभक्तिपूर्ण युद्ध का पुराना सेनानी अपनी मर्ज़ी से उस उद्योग का संचालक बनने के लिए तैयार हो गया, जो जर्मनों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था। इस नोटिस के लगाये जाने की देर थी कि फ़िलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव अपने काम पर आ पहुँचा। यह वहीं ल्युतिकोव था, जो केवल वर्कशॉप में ही नहीं बल्कि नगर भर में एक कट्टर कम्युनिस्ट के रूप में प्रसिद्ध था।

वह सुबह खुले-आम पहुँच गया। उस सुबह, वह दाढ़ी बनाकर, सफ़ेद क़मीज और काला कोट डाटकर तथा ख़ास मौक़ों पर बाँधी जानेवाली टाई लगाकर पहुँचा था। उसे तुरन्त ही मशीन-शॉप के चीफ़ के पुराने पद पर रख लिया गया।

इधर वर्कशॉप चालू हुए और उधर ख़ुफ़िया ज़िला पार्टी समिति की ओर से पहले परचे निकले। परचे नगर के महत्वपूर्ण स्थानों पर चिपके थे और उनकी बग़ल में 'प्राव्दा' के पुराने अंक भी सटे नज़र आ रहे थे। बोल्शेविकों ने क्रास्नोदोन को क़िस्मत के हवाले नहीं कर दिया था। वे संघर्ष जारी रखे हुए थे और पूरी आबादी को ही संघर्ष के लिए ललकार रहे थे, परचों का सारांश यही था। जो लोग बराकोव और ल्यूतिकोव को पहले से ही अच्छी तरह जानते थे, उनकी समझ में यह बात न आती थी कि बाद में जब इनके साथी लौटकर आयेंगे, तो ये दोनों उन्हें कौन-सा मुँह दिखायेंगे और सीधे आँखें कैसे मिलायेंगे।

दरअसल वर्कशॉप में कोई काम न था। बराकोव अपना अधिक वक़्त जर्मन मैनेजरों के साथ बिताता और वर्कशॉप में क्या हो रहा था उसमें कोई दिलचस्पी न

दिखाता। कामगार देर से आते, एक ख़राद से दूसरी ख़राद तक बेकार घूमते-फिरते और अहाते के एक छायादार कोने में घास पर घण्टों बैठकर सिगरेट फूँकते। ल्यूतिकोव मानो कामगारों को सांत्वना देने के ख़याल से उन्हें गाँवों का दौरा करने के लिए प्रोत्साहित करता और 'पास' भी जारी करता, मानो वे केन्द्रीय वर्कशॉप के काम से ही जा रहे हों। कामगार अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए नगरवासियों का छिटपुट काम कर देते थे। वे अधिक संख्या में सिगरेट लाइटर बनाते थे, क्योंकि हर जगह दियासलाइयों की कमी हो गयी थी, लेकिन इनके लिए पेट्रोल भी आसानी से मिल जाता था, क्योंकि भोजन देकर जर्मन सैनिकों से पेट्रोल लिया जा सकता था।

फ़ौजी अफ़सरों के अर्दली शहद और मक्खन से भरे टीन बन्द कराने के लिए दिन में कई बार शॉप में आते और उन टीनों को झाल लगवाकर जर्मनी भेजते।

कुछ कामगार ल्यूतिकोव से बातें करके यह पता लगाना चाहते थे कि वह जर्मनों के लिए काम करने को कैसे राज़ी हो गया और भविष्य से इस प्रकार के जीवन से उन्हें क्या मिलेगा। बराकोव के पास तक पहुँचने का उन्हें अवसर ही नहीं हाथ लग सकता था। बातचीत इधर-उधर की गप्प से शुरू होती और वे घुमा-फिराकर अपने सवाल तक पहुँच भी जाते, लेकिन खुले-आम पूछ नहीं पाते। ल्यूतिकोव उनकी मंशा ताड़ जाता और सख़्त लहजे में कहता :

"तुम्हें क्या चिन्ता है – हम इनके लिए काम करते जायेंगे..."

या वह रुखाई से कहता :

"बेकार टाँग अड़ाने की ज़रूरत नहीं, भलेमानस! तुम अपनी मर्ज़ी से काम करने आये हो, है न? ठीक। तुम मेरे 'अफ़सर' हो या मैं तुम्हारा 'अफ़सर' हूँ? मैं हूँ, मैं। इसलिए यहाँ मेरा हुक्म चलेगा, तुम्हारा नहीं। तो जो कहूँ, उसे आँखें बन्द कर करते जाओ, बस! समझे या नहीं?"

हर सुबह ल्यूतिकोव बड़े-बूढ़े की तरह धीरे-धीरे भारी क़दमों से नगर से होता हुआ अपने काम पर जाता और हर सांझ उसी तरह लौटता भी दिखायी पड़ता। कोई यह कल्पना भी न कर सकता था कि किस जोश-ख़रोश से और किस बारीकी से उसने अपने मुख्य कार्यकलाप को विकसित किया – हाँ, उस कार्यकलाप को, जो बाद में क्रास्नोदोन जैसे अदना-से खान-नगर को दुनिया में मशहूर करनेवाला था।

अपने कार्यकलाप के आरम्भ में ही अचानक यह ख़बर सुनकर उसे कैसा लगा होगा कि उसका परम सहायक मत्वेई शुल्गा विचित्र रूप से ग़ायब हो गया था!

ख़ुफ़िया ज़िला पार्टी समिति का सेक्रेटरी होने के नाते वह नगर और ज़िले भर के गुप्त स्थानों और सम्पर्क-स्थानों को अच्छी तरह जानता था। वह इवान कोन्द्रातोविच और इग्नात फ़ोमीन को भी जानता था, जिसके घर शुल्गा शरण ले सकता था। लेकिन

ल्यूतिकोव को इन दोनों के घर पोलीना सोकोलोवा को या ज़िला समिति के किसी भी खुफ़िया सन्देशवाहक को भेजने का अधिकार नहीं था। अगर वह भेज देता और यदि शुल्गा के साथ उनमें से किसी ने विश्वासघात किया होता, तो उसके खुफ़िया सन्देशवाहक की गन्ध पाकर वे उसका पीछा करते हुए ल्यूतिकोव और ज़िला समिति के दूसरे कार्यकर्त्ताओं का भी पता लगा लेते।

फिर सोचता कि यदि शुल्गा के साथ कोई बुरी बात न हुई होती, तो अब तक उसने केन्द्रीय सम्पर्क-केन्द्र से पूछताछ ज़रूर कर ली होती कि वह केन्द्रीय वर्कशॉप में काम ढूँढ़े या नहीं। उसे इस सम्पर्क-केन्द्र में स्वयं आने की ज़रूरत भी न थी। केवल उधर से गुज़र जाना ही काफ़ी था। जिस दिन पोलीना गओर्गियेव्ना ने इस पते पर ल्यूतिकोव की हिदायतें पहुँचा दी थीं, उस दिन मुख्य दरवाज़े के पास की खिड़की के दासे पर फूल का गमला रख दिया गया था। लेकिन येव्दोकीम ओस्तप्चूक यानी शुल्गा अपने काम पर तब भी नहीं पहुँचा।

ल्यूतिकोव को उन देशद्रोहियों के बारे में पूरी ख़बरें इकट्ठा करने में कुछ समय लग गया, जिन्होंने जर्मन पुलिस में काम करना शुरू कर दिया था। उनमें फ़ोमीन भी था। सारा सन्देह फ़ोमीन पर ही था कि उसी ने शुल्गा को धोखा दिया था। लेकिन यह हुआ कैसे और शुल्गा के साथ इस समय क्या बीत रही थी?

नगर ख़ाली करने के समय, ज़िला पार्टी समिति ने प्रोत्सेन्को की हिदायतों पर अमल करते हुए ज़िला छापेख़ाने के सारे टाइपों को पार्क में गाड़ दिया था और आखिरी वक़्त ल्यूतिकोव को वह कागज़ थमा दिया गया था, जिस में उस स्थान का सही-सही दिशा-निर्देश किया गया था। वह यह सोचकर बहुत ही चिन्तित था कि लारियों और विमान-मार तोपों के साथ पार्क में पड़ाव डाले जर्मन सैनिकों को कहीं टाइप मिल न गये हों। किसी भी क़ीमत पर, टाइपों का पता लगाकर जर्मन पहरेदारों की नाक के तले उन्हें उड़ा लाना ज़रूरी था। यह काम कौन कर सकता था?

अध्याय 24

युद्धकाल की पहली सर्दियों में, अपने पिता की मृत्यु के बाद, वोलोद्या ओस्मूख़िन 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट के केन्द्रीय वर्कशॉप के मशीन-शॉप में फ़िटर का काम करता रहा और वोरोशीलोव स्कूल में अपने आख़िरी साल – 10वीं कक्षा – की पढ़ाई छोड़ दी। वहाँ वह ल्यूतिकोव के अधीन काम करता रहा। ल्यूतिकोव उसकी माँ के परिवार रिबालोव परिवार से अच्छी तरह परिचित था, और वोलोद्या को भी जानता था। वर्कशॉप में वोलोद्या नियमित रूप से काम करता रहा। केवल उस दिन उसने काम

करना छोड़ा जब एपेण्डीसाइटिस के कारण वह लाचार हो गया।

जर्मनों के आगमन के बाद वह काम पर लौटने का इरादा न रखता था। लेकिन तभी बराकोव का फ़रमान निकला और ऐसी अफ़वाह फैली कि जो लोग काम पर नहीं जायेंगे, उन्हें जर्मनी हाँककर ले जाया जायेगा। ल्यूतिकोव के काम पर लौट जाने के बाद से वोलोद्या और उसके घनिष्टतम मित्र तोल्या ओर्लोव के बीच वाद-विवाद और तर्क-वितर्क होने लगा।

सारे सोवियत जनों की तरह वे भी अपने अन्तःकरण से यह कठिन सवाल कर रहे थे कि जर्मनों के लिए काम किया जाये या नहीं। काम करके जीवन निर्वाह के लिए कुछ आमदनी भी हासिल की जा सकती थी और उन मुसीबतों से छुटकारा भी पाया जा सकता था, जो इनकार कर देनेवाले सोवियत नागरिक भुगत रहे थे। उसके अलावा बहुतों का अनुभव यही था कि दरअसल काम किये बिना भी वर्कशॉपों में खटर-पटर करते रहने के बहाने से भी काम चल सकता था। लेकिन अन्य सारे सोवियत जनों की तरह, वोलोद्या और तोल्या को भी यह नैतिक शिक्षा मिली थी कि दुश्मन के लिए, थोड़ा या अधिक, काम करना भी अनुचित है; बल्कि इसके विपरीत दुश्मन के आते ही सारा काम ठप्प कर देना चाहिए और उनके ख़िलाफ़ संघर्ष ज़ोर-शोर से चलाना चाहिए। संघर्ष ख़ुफ़िया तौर से भी किया जा सकता है या छापेमार दस्ते में शामिल होकर भी। लेकिन वे ख़ुफ़िया संगठन और छापेमार दस्ते हैं कहाँ? उन्हें ढूँढ़ा जाये और इस बीच पेट कैसे भरा जाये?

वोलोद्या अब चलने-फिरने लायक हो गया था। वह और तोल्या धूप से नहायी स्तेपी में लेटकर घण्टों इस सवाल पर बहसें करते कि उन्हें क्या करना चाहिए।

एक दिन साँझ के समय ल्यूतिकोव ओस्मूख़िन परिवार से मिलने गया। उनका घर जर्मनों से ठसाठस भरा था – उनमें वह कारपोरल न था, जो ल्यूद्मीला पर फ़िदा था, बल्कि यह उनका दूसरा या शायद तीसरा रेला था, जो यहाँ टिका हुआ था। जर्मन टुकड़ियों का आम रेला उस इलाक़े से गुज़रता रहता था, जहाँ ओस्मूख़िन परिवार का घर था। ल्यूतिकोव बुज़ुर्गाना अन्दाज़ में भारी-भरकम क़दमों से सायबान की सीढ़ियाँ चढ़कर अन्दर दाख़िल हुआ, अपनी टोपी उतारी और रसोईघर में बैठे जर्मन सैनिक का नम्रता से अभिवादन किया तथा उस कमरे का दरवाज़ा खटखटाया जिसमें तीन प्राणी – येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना, ल्यूद्मीला और वोलोद्या – रहते थे।

"फ़िलीप्प पेत्रोविच, ओह, मैंने तो कभी आशा भी न की थी!" येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना भागकर उसके पास आ गयी और अपनी गर्म और सूखी हथेलियों में उसके दोनों हाथ भींच लिये।

वह क्रास्नोदोन के उन व्यक्तियों में से एक थी, जिन्होंने ल्यूतिकोव की अपने

काम पर लौटने के लिए निन्दा न की थी। वह उसे इतनी अच्छी तरह जानती थी कि वह इसका कारण जानने तक की ज़रूरत नहीं समझती थी। यदि ल्यूतिकोव ने ऐसा किया है, तो इसलिए कि दूसरा कोई चारा न रहा होगा या वैसा करना आवश्यक हो गया होगा।

जर्मनों के आने के बाद, ल्यूतिकोव ही ओस्मूख़िन परिवार का पहला निकट मित्र था, जो उनसे मिलने उनके घर आया था। यही कारण था कि इतने भावावेश के साथ वह उससे मिली। ल्यूतिकोव ने मुँह से कुछ नहीं कहा, पर मन ही मन उसने भी कृतज्ञता अनुभव की।

"मैं तुम्हारे बेटे को काम पर खींचकर ले जाने के लिए आया हूँ," वह अपन औपचारिक सख़्ती से बोला। "तुम और ल्यूदमीला केवल दिखावे के लिए यहाँ हम लोगों के साथ थोड़ी देर बैठो और तब अपना काम-धन्धा करने के बहाने हमें अकेले छोड़कर चली जाना। मैं तुम्हारे बेटे से कुछ ज़रूरी बातें करना चाहता हूँ।" उसके साथ-साथ तीनों के तीनों मुस्कुरा पड़े और उसी क्षण उसका कोमल भाव फिर लौट आया।

ल्यूतिकोव ने जब से वहाँ क़दम रखा था, तब से उसके चेहरे पर से वोलोद्या की आँखें क्षण भर के लिए भी न हटी थीं। वह तोल्या से अपनी बातचीत में अक्सर यह ज़िक्र कर चुका था कि ज़रूरत से मजबूर होकर या कारयतावश ल्यूतिकोव कभी भी अपने काम पर नहीं लौटा होगा – वह इस तरह का व्यक्ति नहीं। इसके पीछे कोई गम्भीर कारण रहे होंगे। और वोलोद्या और तोल्या अनेक बार इन कारणों के बारे में अपना अनुमान लगा चुके थे। ख़ैर, जो भी हो ल्यूतिकोव ऐसा व्यक्ति तो अवश्य ही है, जिसके सामने अपने मन की बातें निर्भय प्रकट की जा सकती हैं।

येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला के बाहर निकलते ही सबसे पहले वोलोद्या ही बोला।

"काम पर लौटो! आपने कहा – काम पर लौटो! मेरे लिए दोनों बराबर हैं – काम करूँ या न करूँ। दोनों हालतों में, मेरे उद्देश्य में कोई फ़र्क़ नहीं आ सकता। और वह उद्देश्य है जर्मनों के खिलाफ़ लड़ना दयामोह त्याग कर लड़ना। और यदि मैं काम पर लौटूँ, तो भी यह नक़ाब चढ़ाने के जैसा ही होगा," वोलोद्या ने दृढ़ स्वर में कहा।

उसका युवावस्था-सुलभ साहस, उसकी स्पष्टवादिता और उत्साह, बग़ल के कमरे में जर्मनों की मौजूदगी के बावजूद इस क़दर उफ़न रहे थे कि ल्यूतिकोव के मन में उसके प्रति भय, खीझ या उपहास का भाव न उठा। उसने महसूस किया कि वह महज़ मुस्कुराना भर चाहता था। लेकिन उसने जो महसूस किया, उसे प्रकट न

होने दिया। उसके चेहरे पर कोई भाव न झलका।

"बहुत अच्छा!" वह बोला। "तुम्हारे यहाँ जो कोई भी आये, उसे यही बात कहना, जिस तरह आज मैं आया हूँ। या बेहतर हो, तुम सड़क पर निकलकर हर राहगीर से यही कहो, सुनो, मैं जर्मनों से लड़ रहा हूँ और मैं अपने इरादे ज़ाहिर होने देना नहीं चाहता। क्या तुम मेरी मदद करोगे?"

वोलोद्या लाल हो गया।

"लेकिन आप तो ऐसे-वैसे आदमी नहीं हैं," वह मात खाते हुए बोला।

"हो सकता है कि मैं नहीं होऊँ, लेकिन ऐसे वक़्त तो किसी के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता," ल्यूतिकोव ने उत्तर दिया।

वोलोद्या ने देखा कि ल्यूतिकोव उसे अच्छी-ख़ासी नसीहत देनेवाला है और ल्यूतिकोव ने उसे, वस्तुतः नसीहत दी भी।

"इन मामलों में बहुत विश्वास और भरोसा रखना बड़ा ही ख़तरनाक़ है। जान से हाथ धोने की नौबत आ सकती है। वक़्त बदल गया है। कहावत है कि दीवारों के भी कान होते हैं। और यह न सोचो कि ये लोग बुद्धू हैं। ये बहुत ही काइयाँ हैं," उसने दरवाज़े की ओर संकेत करते हुए कहा। "सो यह तुम्हारे सौभाग्य की बात है कि मैं सुज्ञात व्यक्ति हूँ और लोगों को काम पर लौटाने का भार मुझे सौंपा गया है और इसी लिए मैं तुम्हारे यहाँ मौजूद हूँ। और यही बात तुम अपनी माँ, बहन और अन्य लोगों से भी कहना," उसने दरवाज़े की ओर फिर संकेत किया। "हम उनके लिए काम करने जा रहे हैं," वह अन्त में बोला। उसके बाद उसकी आँखें वोलोद्या पर स्थिर हो गयीं। वोलोद्या तुरन्त ताड़ गया और पीला पड़ गया।

"तुम्हारे कौन-कौन-से मित्र ऐसे हैं, जिन पर भरोसा किया जा सकता है और जो यहीं नगर में रह गये हैं?" ल्यूतिकोव ने पूछा।

वोलोद्या ने तीन नाम गिनाये, जिन्हें वह व्यक्तिगत तौर से जनता था : तोल्या ओर्लोव, जोरा अरुत्युन्यान्त्स और वान्या ज़ेम्नुख़ोव।

"इनके अतिरिक्त औरों की भी हम तलाश करेंगे," उसने जोड़ दिया।

"पहले उनसे सम्पर्क स्थापित करो जिन पर तुम तहे दिल से भरोसा कर सकते हो। उनसे अलग-अलग मिलो, एक साथ नहीं। जब तुम्हें विश्वास हो जाये कि वे खरे हैं तो..."

"वे खरे हैं, फ़िलीप्प पेत्रोविच..."

"...जब तुम्हें विश्वास हो जाये कि वे खरे हैं," ल्यूतिकोव ने इस तरह दुहराया, मानो उसने वोलोद्या की बात ही न सुनी हो, "तो उन्हें सीधे संकेत कर दो कि सम्भावनाएँ हैं और उनसे पूछो कि क्या वे काम करने के लिए तैयार हैं..."

"वे तैयार हैं, लेकिन हर कोई पूछ बैठेगा कि उसे क्या काम करना चाहिए।"

"उन्हें बता देना कि तुम उनके लिए काम का बन्दोबस्त ज़रूर कर दोगे। और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम अभी से शुरू करोगे।" कहकर ल्यूतिकोव ने पार्क में गड़े टाइपों के बारे में उसे बताया और विस्तारपूर्वक समझाया कि वे किस जगह पर गड़े हैं। "पता लगाओ कि उन्हें खोदकर निकाला जा सकता है या नहीं। यदि सम्भव नहीं, तो मुझे सूचित करो।"

वोलोद्या क्षण भर सोच में पड़ गया। ल्यूतिकोव ने उससे उत्तर की माँग न की। उसने महसूस किया कि वोलोद्या का मन डगमगाया नहीं, बल्कि इस काम को पूरा करने की योजना पर विचार कर रहा है। लेकिन वास्तव में वोलोद्या कुछ और ही सोच रहा था।

"मैं आपसे खुली तौर पर बात करना चाहता हूँ," वोलोद्या बोला। "आपने मुझे सुझाव दिया कि मैं हर लड़के से बात करते वक़्त व्यक्तिगत रूप से पेश आऊँ। यह मैं भाँप गया हूँ। लेकिन उस समय मुझे यह तो बताना ही होगा कि मैं किसकी ओर से बातें कर रहा हूँ... 'यह मेरी पहलक़दमी' कहने से बेहतर हो यदि मैं यह कहूँ कि ख़ुफ़िया संगठन से सम्बन्धित एक व्यक्ति ने मुझे इस भार को सौंपा है। बेशक इसका ठोस प्रभाव पड़ेगा। मैं आपका नाम नहीं लूँगा और न वे पूछेंगे ही। वे ख़ुद समझ जायेंगे।" वोलोद्या वे सारी शंकाएँ पहले ही दूर कर देना चाहता था, जो ल्यूतिकोव के मन में उठ सकती थीं। लेकिन ल्यूतिकोव ने कोई आपत्ति न की और वोलोद्या के आगे बोलने का इन्तज़ार करता रहा। "यदि मैं महज़ ओस्मूख़िन की हैसियत से भी उन लड़कों से कुछ कहूँ, तब भी वे मेरा विश्वास करेंगे...लेकिन ख़ुफ़िया संगठन से सम्पर्क स्थापित करने की ताक में वे लगे ही रहेंगे – मैं उन पर क़ायदे-क़ानून की पाबन्दी नहीं लगा सकता... उनमें से कुछ तो मुझे से बड़े हैं और..." वह कहने ही वाला था "और अधिक बुद्धिमान भी।" "मेरे कहने का मतलब है कि उनमें से कुछ तो राजनीति में काफ़ी दिलचस्पी लेते हैं और उसे अच्छी तरह समझते भी हैं। यही वजह है कि मेरे लिए उनसे यह कहना ज्यादा आसान होगा कि मैं अपनी पहलक़दमी पर नहीं, बल्कि संगठन की ओर से आदेश मिलने पर काम कर रहा हूँ। यह रही एक बात। दूसरी बात यह कि टाइपों को खोद निकालने में कई व्यक्तियों की ज़रूरत पड़ेगी और उनसे कहना होगा कि यह काम मुश्किल और ख़तरनाक है। और इसे करने का आदेश ख़ुफ़िया संगठन की ओर से मिला है। इसी सिलसिले में मैं आपसे एक सवाल करना चाहता हूँ : मेरे तीन दोस्त हैं। उनमें से एक है तोल्या, जो मेरा पुराना मित्र है। बाक़ी नये दोस्त हैं, लेकिन मैं उन्हें कुछ अरसे से जानता आया हूँ। उन्होंने कठिन समय में भी अपने को खरा साबित किया है और मैं उन पर उतना

ही विश्वास रखता हूँ, जितना अपने आप पर – उनके नाम हैं वान्या ज़ेम्नुख़ोव और जोरा अरुत्युन्यान्त्स। क्या मैं उन्हें सलाह-मशविरे के लिए एक साथ इकट्ठा कर सकता हूँ?"

ल्यूतिकोव क्षण भर ख़ामोश रहा। वह अपने बूटों पर आँखें गड़ाये रहा। इसके बाद उनसे वोलोद्या की ओर तनिक मुस्कुराते हुए देखा, लेकिन उसके चेहरे पर फिर सख़्ती का भाव उभर आया।

"अच्छी बात है – उन्हें एक साथ इकट्ठा करके साफ़-साफ़ कह दो कि तुम संगठन की ओर से काम कर रहे हो, लेकिन नाम हर्गिज़ न लेना।"

वोलोद्या बड़ी मुश्किल से अपनी उत्तेजना दबा पा रहा था। उसने हामी भर दी।

"तुम्हारा सोचना सही है : हर किसी को यह बता देना ज़रूरी है कि हर काम में हमें पार्टी का समर्थन प्राप्त है।" ल्यूतिकोव इस तरह बोलने लगा, मानो वह अपने आप से बात कर रहा हो। उसकी विवेकपूर्ण, कठोर आँखें बड़ी स्थिरता से वोलोद्या के अन्तरतम में झाँकने की कोशिश करने लगीं। "तुमने यह ठीक ही धारणा बना रखी है कि पार्टी संगठन के साथ यदि युवाजनों की टोली का सम्बन्ध रहे, तो इससे लाभ होगा। वास्तव में मैं इसी के बारे में तुमसे मिलने आया था। अब चूँकि हमारे-तुम्हारे बीच बातें पक्की हो चुकी हैं, इसलिए मैं तुम्हें कुछ सलाह देना चाहता हूँ या यदि समझो तो आदेश भी : मेरी सलाह के बिना कोई काम न करना, नहीं तो हो सकता है, तुम अपनी जान से हाथ धो बैठो या हमारे सब किये-कराये पर पानी फेर दो। मैं खुद अपनी मर्ज़ी से काम नहीं करता। मुझे भी सलाह लेनी पड़ती है। मैं अपने साथियों से सलाह लेता हूँ या उन व्यक्तियों से जो संगठन का संचालन करते हैं। वे यहीं वोरोशीलोवग्राद प्रान्त में ही मौजूद हैं। तुम अपने तीनों दोस्तों को ये बातें बता सकते हो और तुम्हें भी एक-दूसरे की सलाह लेकर काम करना चाहिए। बस इतना ही।" वह मुस्कुराता हुआ उठ खड़ा हुआ। "और कल से काम पर आ जाओ।"

"तो – परसों आऊँगा," वोलोद्या ने खीसें निपोरतें हुए कहा। "क्या मैं तोल्या ओर्लोव को अपने साथ ला सकता हूँ?"

ल्यूतिकोव हँस दिया। "मैं तो केवल एक व्यक्ति को ही जर्मनों के वास्ते काम करने के लिए रज़ामन्द करने आया था, लेकिन यहाँ दो का इन्तज़ाम हो गया," वह बोला। "उसे भी लाओ। और भी अच्छा रहेगा!"

वह रसोईघर में गया और येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना, ल्यूद्मीला और जर्मन सैनिक से थोड़ा हँसी-मज़ाक किया और तुरन्त रवाना हो गया। वोलोद्या जानता था कि उसे अपने काम का रहस्य अपने परिवारवालों पर प्रकट नहीं करना है। लेकिन उसके लिए अपनी माँ और बहन की स्नेहपूर्ण आँखों से अपनी प्रसन्नता और उमंग

को छिपा पाना कठिन हो रहा था।

वोलोद्या ने झूठ-मूठ जंभाई ली और बोला कि उसे कल तड़के ही जगना है और अभी भी उसे नींद आ रही है, इसलिए सोने जा रहा है। येलिज़ावेता अलेक्सेयेव्ना ने कोई सवाल-जवाब न किया और यह बुरा लक्षण था। वोलोद्या को सन्देह हो गया कि माँ ने भाँप लिया है कि वह और ल्यूतिकोव वर्कशॉप में काम करने के अलावा कुछ और गम्भीर बातें भी करते रहे हैं। लेकिन ल्यूद्मीला ने छूटते ही पूछ लिया :

"इतनी देर तक क्या बातें हो रही थीं?"

"क्या बातें हो रही थीं? तुम अच्छी तरह जानती हो कि क्या बातें हो रही थीं!" वोलोद्या ने चिढ़कर जवाब दिया।

"और तुम जा रहे हो?"

"कर ही क्या सकता हूँ?"

"जर्मनों के लिए काम करने जा रहे हो!" ल्यूद्मीला के स्वर में इतना सदमा और तिरस्कार का पुट था कि वोलोद्या को कोई जवाब न सूझा।

"हाँ, हम लोग उन्हीं के लिए काम करेंगे..." उसने चिड़चिड़ेपन से ल्यूतिकोव के शब्द दुहरा दिये और ल्यूद्मीला की ओर देखे बिना ही अपने कपड़े उतारने लगा।

अध्याय 25

अपने शहर से निकलने के असफल प्रयास के बाद जब जोरा वापस आया, तो तुरन्त वोलोद्या और तोल्या ओर्लोव के साथ उसकी गहरी दोस्ती हो गयी। लेकिन ल्यूद्मीला के साथ उसका दुराव बना रहा और सम्बन्ध औपचारिक ही रहे। वह ऐसे इलाक़े में रहता था, जहाँ जर्मनों ने अपना डेरा नहीं डाला था। अतः जब-तब उसके छोटे-से घर में उसके मित्रों की चौकड़ी जमती थी।

टाइप का पता लगाने की जवाबदेही अपने कन्धों पर लेने के एक दिन बाद वोलोद्या अपने मित्रों से जोरा के कमरे में मिला। वह कमरा इतना छोटा था कि उसमें मुश्किल से एक खाट और छोटी-सी मेज़ आ सकी थीं। फिर भी यह कमरा उसका अपना तो था! वान्या ज़ेम्नुख़ोव सीधे वहीं पहुँचा था। नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की से लौटने पर, वह पहले से दुबला नज़र आ रहा था। उसके कपड़े तार-तार हो गये थे और वह सर से पाँव तक धूल से सना था, क्योंकि वह अभी भी अपने घर नहीं गया था। वह असीम उत्साह और जोश से उफन रहा था।

"क्या तुम्हें उस व्यक्ति से फिर मिलने का मौक़ा मिलेगा?" उसने वोलोद्या से पूछा।

"किसलिए?"

"इसलिए कि अपनी टोली में ओलेग कोशेवोई को भी तुरन्त शामिल करने के लिए हमें उससे अनुमति लेनी चाहिए।"

"उसने कहा था कि फ़िलहाल औरों को शामिल करने की ज़रूरत नहीं बल्कि केवल योग्य व्यक्तियों को चुनने की आवश्यकता है।"

"इसीलिए तो मैं कह रहा हूँ कि उसकी अनुमति की ज़रूरत है," वान्या बोला। "क्या तुम उससे आज ही, रात होने से पहले, मिल नहीं सकते?"

"इतनी जल्दबाजी क्यों – यह मेरी समझ में नहीं आती।" वोलोद्या ज़रा चिढ़कर बोला।

"जल्दबाज़ी का मतलब पहले तो यह कि ओलेग एक सच्चा साथी है। दूसरी बात, वह मेरा घनिष्ठ मित्र है, जिसका अर्थ है कि वह विश्वसनीय है। तीसरी बात, वह गोर्की स्कूल के सातवीं, आठवीं और नौवीं कक्षाओं के छात्रों को जोरा से बेहतर जानता है और उनमें से अधिकांश यहीं नगर में ही रह गये हैं।"

जोरा ने तुरन्त अपनी चमकती काली आँखें वोलोद्या पर गड़ा दीं और कहा :

"शहर से निकलने के असफल प्रयास के बाद मैंने तुम्हें ओलेग के चरित्र के बारे में सब कुछ बता दिया। यह तुम्हें ध्यान में रखना चाहिए कि वह पार्क के बिलकुल क़रीब रहता है और इसलिए, जो काम हमें सौंपा गया है, उसे करने के लिए उससे बेहतर सहायक और कोई नहीं हो सकता..."

जोरा में यह गुण था कि वह बात कहने का ढंग जानता था, अपने विचार यथार्थ और प्रभावशाली शब्दों में व्यक्त कर सकता था। उसके ये शब्द आदेश जैसे लगे।

वोलोद्या ढुलमुलाया, लेकिन ल्यूतिकोव की हिदायतें उसके दिमाग़ में फिर ताजी हो उठीं और उसने उसकी बात मानने से इनकार कर दिया।

"तो अच्छी बात है," वान्या बोला। "मैं एक और दलील पेश कर सकता हूँ, लेकिन अकेले में ही।" उसने अपना चश्मा ठीक किया, जोरा और तोल्या की ओर देखकर बोला : "तुम लोग बुरा न मानना!" उसकी मुस्कराहट में संकोच और साहस दोनों का पुट था।

"जब कोई षड्यंत्र का मामला हो, तो बुरा मानने का सवाल ही पैदा नहीं होता। सबसे महत्वपूर्ण है औचित्य का ख़याल रखना," जोरा बोला और तोल्या ओर्लोव के साथ कमरे से बाहर चला गया।

"मैं यह साबित करने जा रहा हूँ कि तुम मेरा जितना विश्वास करते हो, उससे अधिक विश्वास मैं तुम्हारा करता हूँ," वान्या ने मुस्कुराते हुए कहा। उसकी मुस्कराहट में अब संकोच नहीं, बल्कि एक साहसी युवक का-सा दृढ़ संकल्प था। वस्तुतः वह

वैसा ही था भी। "जोरा ने तुम्हें बताया या नहीं कि वाल्को भी हमारे साथ ही लौट आया है?"

"हाँ, उसने बताया था।"

"लेकिन तुमने इसके बारे में उस साथी को सूचित नहीं किया?"

"नहीं।"

"तो अब सुनो। ओलेग का सम्पर्क वाल्को से है और वाल्को बोल्शेविक ख़ुफ़िया दलों से सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। तुम अपने उस साथी को यह बात बता देना। साथ ही, हमारा अनुरोध भी उसे सुना देना। कहना कि हम ओलेग के लिए जवाबदेही अपने पर लेते हैं..."

अतः भाग्य में यही बदा था कि वोलोद्या को केन्द्रीय वर्कशॉप में काम करने के लिए नियत समय से पहले ही हाज़िर होना पड़ा।

उसकी ग़ैरहाज़िरी में वान्या ने 'घर्घरक' तोल्या से चुपचाप यह पता लगाने के लिए कहा कि कोशेवोई परिवार के घर में जर्मन हैं या नहीं और ओलेग से मिला जा सकता है या नहीं।

जब 'घर्घरक' सादोवाया सड़क की ओर से उस मकान के पास पहुँचा, तो उसकी नज़र दरवाज़े पर खड़े एक जर्मन सन्तरी पर पड़ी। अचानक उसने नंगे पाँव एक ख़ूबसूरत औरत को मकान से बाहर निकलकर दौड़ते देखा। औरत रो रही थी। वह मैले-कुचैले कपड़े पहने थी, लेकिन उसके घने काले बाल चमक रहे थे। वह जलावनघर में घुस गयी और तोल्या को उसके रोने की आवाज़ और उसे सान्त्वना देते हुए किसी पुरुष का भी स्वर सुनायी पड़ा। इसके बाद एक दुबली-सी, बूढ़ी औरत, जिसका चेहरा धूप से तपा था, मकान में से झपटती हुई बाहर निकल आयी। उसके हाथ में एक बाल्टी थी जिसे उसने बाहर रखे पानी से भरे पीपे में डुबाकर भर लिया और फिर जल्दी से मकान के अन्दर घुस गयी। मकान के अन्दर कुछ खलबली-सी मची थी। एक युवक जर्मन की रोबीली और चिड़चिड़ी आवाज़ और औरतों का माफ़ी माँगता हुआ-सा गिड़गिड़ाना सुनायी पड़ रहा था। लोगों की नज़र से बचे बिना तोल्या वहाँ अधिक देर ठहर नहीं सकता था, इसलिए वह पार्क के किनारे-किनारे पूरा इलाक़ा पार कर पिछवाड़े की सड़क से झोपड़ी के क़रीब पहुँचा, जो सादोवाया सड़क के समानान्तर जाती थी। लेकिन वहाँ से न कुछ दिखता था और न ही सुनायी पड़ता था। उसने देखा कि कोशेवोई परिवार के बग़ीचे की तरह, पड़ोसी के बग़ीचे में भी पिछवाड़े का फाटक लगा था। वह उससे होकर भीतर घुस गया और अब कोशेवोई परिवार के जलावनघर की पिछली दीवार के पास खड़ा था, जो साग-सब्ज़ी के बग़ीचे की ओर थी।

उसे जलावनघर में चार व्यक्तियों की आवाज़ें सुनायी पड़ीं : तीन ज़नानी आवाज़ें और एक मरदानी। ज़नानी आवाज़ों में से एक आवाज़ जवान औरत की थी और वह सुबक-सुबककर कह रही थी, “मैं अब मकान के अन्दर पाँव नहीं रख सकती। भले ही वे इसके लिए मेरी जान ले लें।”

पुरुष का उदास स्वर दिलासा दे रहा था : “चलो अब, चलो! ओलेग तब कहाँ जायेगा? और बच्चे का क्या होगा?”

“नीच! केवल एक बोतल ज़ैतून के तेल के लिए! नीच!... तुमने अभी मेरे बारे में सुना ही क्या है! एक दिन हाथ मल-मलकर रोओगी!” ओलेग बड़बड़ा रहा था। लेना पोज़्दनिशेवा के यहाँ से घर लौटते वक़्त वह कभी ईर्ष्या से और कभी गर्व से तिलमिला उठता। सूरज का लाल और दहकता चक्का पश्चिम में गिरता जा रहा था और उसकी किरणें सीधे ओलेग की आँखों को छेद रही थीं। लाल, चमकीले गोले के भीतर बार-बार उसकी आँखों के सामने लेना का पतला और बादामी चेहरा, उसकी भारी और काली पोशाक तथा पियानो के पास बैठे जर्मनों की भूरी वर्दियाँ उभर आते। वह बार-बार दुहराता रहा, “नीच! नीच!” बच्चों की तरह उसका गला व्यथा से रुँध गया।

जलावनघर में उसे मरीना मिली। वह अपना चेहरा हाथों से ढँके और सिर झुकाये बैठी थी। उसके घने, काले बाल कन्धों पर बिखरे पड़े थे। पूरा का पूरा परिवार उसे घेरकर खड़ा था।

जनरल की ग़ैरहाज़िरी में, लम्बी टाँगोंवाले ऐडजुटेण्ट ने ज़रा नहा-धोकर ताज़ा होने की बात सोची। उसने मरीना को चिलमची और एक बालटी पानी लाने के लिए कहा। जब वह ये सामान लेकर वहाँ पहुँची और दरवाज़े को खोला, तो उसने ऐडजुटेण्ट को बिलकुल नंग-धड़ंग खड़ा पाया। मरीना ने रोते-रोते बतलाया कि वह ताड़ की तरह लम्बा और केंचुए की तरह सफ़ेद दीख रहा था। वह सोफ़े के पास कोने में खड़ा था, इसलिए दरवाज़ा खोलते ही मरीना की नज़र उस पर न पड़ी। लेकिन अचानक वह उसकी बग़ल में आकर खड़ा हो गया और उसे घूरने लगा। उसकी आँखों में घृणा, निर्लज्जता और कौतूहल का भाव था। मरीना घबड़ा गयी। डर और घृणा से उसके हाथ से चिलमची और बाल्टी गिर पड़ी। फ़र्श पर पानी फैल गया और मरीना जलावनघर की ओर भागी।

वहाँ पर एकत्रित परिवार के सारे सदस्य देख रहे थे कि आगे क्या होता है।

“इसमें रोने-धोने की क्या बात है!” ओलेग रुखाई से बोला। “क्या तुमने सोचा कि वह तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचाना चाहता था? यदि वह यहाँ का बड़ा अफ़सर होता, तो ज़रूर ही करता और अर्दली को भी बुलाकर मदद लेता। वह तो केवल नहाना-धोना

चाहता था। तुमने उसे नंगा इसलिए पाया कि उसके दिमाग़ में तुमसे शर्म करने की बात ही नहीं उठी। आख़िर, इन हैवानों के लिए तो हम जंगलियों से भी बदतर हैं। शुक्र है कि वे तुम्हारी नज़रों के सामने शौच नहीं करते – एस.एस. सैनिक और अफसर तो अपने डेरों में यह कर्म भी करने लगे है। वे हमारे लोगों के सामने ही शौचादि करते है और सोचते हैं कि यह आम और रोज़मर्रे की बात है। छिः, इन जंगली फ़ासिस्टों की गन्दी और घिनौना औलाद को मैं ख़ूब समझता हूँ! ये तो जानवरों से भी बदतर हैं। पतित हैं, पतित!" वह ख़ौफ़नाक आवाज़ में बोल रहा था। "तुम अभी रो-रोकर आँखें चौपट किये जा रही हो और हम सब तुम्हारे इर्द-गिर्द खड़े होकर तुम्हारा मुँह ताक रहे हैं। क्या यह इसी का मौका है! यह कितने शर्म की बात है! यदि फ़िलहाल हम इन्हें कुचल या हरा नहीं सकते, तो कम-से-कम इन पतितों और शैतानों को घृणा और तिरस्कार की नज़र से तो देख सकते हैं। हाँ, बेइज़्ज़ती सहने और बूढ़ी औरतों की तरह रोने-धोने से बेहतर है कि इनका तिरस्कार करो, इनसे घृणा करो। ये अपनी करनी का फल तो भुगतेंगे ही।"

वह तिलमिलाता हुआ बाहर निकला। उसके दिमाग़ में यह विचार कौंध गया कि इन उजड़े बग़ीचों को देखकर दिल कैसा जलने लगता है! पार्क से लेकर लेवल-क्रासिंग तक सड़क के अग़ल-बग़ल कहीं भी पेड़-पौधे नज़र नहीं आ रहे हैं और नंगी सड़क पर जर्मन सैनिक हर जगह चहल-क़दमी करते दिखायी पड़ रहे हैं।

येलेना निकोलायेव्ना भी उसके पीछे-पीछे बाहर निकली।

"मैं कितनी चिन्तित थी! इतनी देर तुम ग़ायब कहाँ रहे? लेना कैसी है?" उसने ओलेग के मुरझाये चेहरे पर अपनी पैनी आँखें गड़ाकर पूछा।

उसके होंठ बच्चों की तरह काँपने लगे।

"वह नीच है! मेरे सामने उसका फिर कभी नाम न लेना।"

इसके बाद उसने मानो अनजाने ही अपनी माँ को सारी बातें बता दीं कि उसने लेना के यहाँ क्या देखा और सुना और ख़ुद किस तरह पेश आया।

"और मैं कर ही क्या सकता था?" वह विस्मय में बोला।

"लेना के लिए अफ़सोस न करो," माँ ने कोमलता से कहा। "तुम परेशान इसलिए हो कि लेना के लिए तुम्हें अफ़सोस है, लेकिन उसकी चिन्ता न करो। यदि वह इतना नीचे गिर सकती है, तो इसका मतलब है कि उसके लिए यह कोई नयी बात नहीं है और... जो कुछ हम सोचते थे... वह ग़लत था।" वह कहते-कहते रह गयी, वैसे कहनेवाली थी, "जो कुछ तुम सोचते थे," लेकिन उसने इरादा बदल दिया। "लेकिन इससे तो उसी की मूर्खता ज़ाहिर होती है, हमारी नहीं।"

स्तेपी के ऊपर दक्षिणी क्षितिज पर बड़ा-सा चाँद झाँकने लगा था। निकोलाई

निकोलायेविच और ओलेग जलावनघर के दरवाजे पर बैठे-बैठे आसमान की ओर देख रहे थे।

ओलेग पूनम के चाँद को, जिसकी गोल किनारी से आभा फूट रही थी, एकटक देखता रहा। उसकी चाँदनी सायबान में खड़े जर्मन सन्तरी पर और बग़ीचे में कद्दू के पत्तों पर पड़ रही थी। ओलेग चाँद को ताकता रहा, उसे लगा जैसा सचमुच वह उसे पहली बार देख रहा हो। वह स्तेपी के इस छोटे-से नगर में एक ऐसी ज़िन्दगी का आदी हो चुका था, जिसमें धरती पर या आसमान में जो कुछ होता था, वह सीधा-सादा और जाना-पहचाना होता था। लेकिन अब जो कुछ हो रहा था, वह उसके अनजाने और अनदेखे ही हो जाता था। अब उसका यह देखना बन्द हो गया था कि एकम का नवजात चाँद कब झलका और किस तरह बड़ा होते-होते पूनम का गोल चाँद बनकर नीले आसमान में जगमग-जगमग करता हुआ इतराने लगा। और कौन जाने, वह उन सुखद दिनों को फिर देखने के लिए ज़िन्दा रहेगा या नहीं, जब वह संसार की सारी सरल, अच्छी और अद्भुत वस्तुओं के साथ वह तादात्म्य स्थापित कर सकेगा।

बढ़िया वर्दी पहने जनरल बैरन वान वेन्त्ज़ेल और उसका ऐडजुटेण्ट चुपचाप मकान में दाख़िल हुए। पूरी तरह सन्नाटा छाया था, मकान के पास केवल सन्तरी के पहरा देने की आवाज़ सुनायी पड़ रही थी। निकोलाई निकोलायेविच बड़ी देर तक बैठा रहा और अब लेटने चला गया। ओलेग चाँदनी में नहाता हुआ और बच्चों जैसी बड़ी-बड़ी, गोल आँखों से चाँदी को देखता जलावनघर के खुले दरवाज़े पर ही बैठा रहा।

अचानक उसे अपने पीछे कुछ सरसराहट-सी सुनायी पड़ी, जो जलावनघर को दीवार के तख़्तों के पीछे से आ रही थी। वह दीवार पड़ोसी बग़ीचे की ओर थी।

"ओलेग... सो गये क्या? उठो, उठो!" पटरों के बीच की दरार से फुसफुसाहट सुनायी पड़ी।

ओलेग झपटकर दीवार के पास पहुँच गया।

"कौन है?" वह फुसफुसाया।

"मैं हूँ... वान्या... तुम्हारा दरवाज़ा खुला है?"

"मैं अकेला नहीं हूँ। सन्तरी भी है।"

"मैं भी अकेला नहीं। क्या तुम हम लोगों के पास आ सकते हो?"

"ज़रूर!"

ओलेग इन्तज़ार करता रहा कि कब सन्तरी गश्त लगाता हुआ दूसरी सड़क पर फाटक की ओर चला जाये। तभी मौक़ा देखकर दीवार से चिपके हुए, वह जलावनघर के पीछे पहुँच गया। जलावनघर की पिछली दीवार से सटे हुए पड़ोस के बग़ीचे की

घनी झाड़ियों में पेट के बल तीन लड़के बेटे थे : वान्या ज़ेम्नुख़ोव, जोरा अरुत्युन्यान्त्स और तीसरा, उन्हीं की तरह एक दुबला-पतला लड़का, जिसका चेहरा उसकी टोपी के कारण साफ़ नज़र नहीं आ रहा था। तीनों लड़के पंखे के आकार में पेट के बल लेटे थे।

"भाड़ में जाये! यह चाँदनी रात बड़ी ही धोखेबाज़ है। बहुत मुश्किल से हम तुम तक पहुँच पाये," जोरा बोला। उसकी आँखें और दाँत चमक रहे थे। "वोरोशीलोव स्कूल के वोलोद्या ओस्मूख़िन से मिलो। तुम जिस तरह मुझ पर विश्वास करते हो, उसी तरह इस पर भी विश्वास कर सकते हो," वह बोला। उसे यक़ीन था कि अपने साथी के लिए इससे बेहतर सिफ़ारिश हो ही नहीं सकती।

ओलेग जोरा और वान्या के बीच लेट गया।

"मैं यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता कि ऐसे वक़्त तुम्हारे यहाँ आने की मैं आशा ही नहीं कर सकता था," वह वान्या से फुसफुसाकर बोला और खीसें निकाल दीं।

वान्या भी मुस्कुराया।

"यदि तुम इनके सारे क़ायदे-क़ानून मानने लगो, तो ऊब से ही मर जाओगे।"

"तुम बहुत ही अच्छे लड़के हो, लाजवाब!" ओलेग हँसा और वान्या के कन्धे पर अपना बड़ा हाथ रख दिया। "क्या उनके लिए ठौर-ठिकाने का इन्तज़ाम कर दिया?" वह उसके कान में फुसफुसाकर बोला।

"क्या मैं तुम्हारे जलावनघर में सुबह होने तक टिक सकता हूँ?" वान्या ने पूछा। "मैं अभी तक घर नहीं गया हूँ, क्योंकि मेरा घर जर्मनों से ठसाठस भरा..."

"मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि तुम हम लोगों के साथ रात काट सकते हो!" जोरा ने चिढ़कर टोका।

"तुम्हारा घर बहुत दूर है। तुम्हारे और वोलोद्या के लिए रात भले ही उजली हो सकती है, लेकिन मुझे डर है कि कहीं मैं किसी खाई-ख़न्दक़ में हमेशा के लिए ग़ायब न हो जाऊँ!"

ओलेग ने महसूस किया कि वान्या उससे कुछ व्यक्तिगत बातें करना चाहता है।

"तुम पौ फटने तक मेरे साथ टिक सकते हो," वह बोला और उसका कन्धा दबा दिया।

"हमारे पास कुछ असाधारण समाचार हैं," वान्या फुसफुसाकर बोला। "वोलोद्या का सम्पर्क ख़ुफ़िया संगठन के एक साथी से हो गया है। उसे एक काम भी सौंपा गया है... तुम्हीं ख़ुद बताओ न, वोलोद्या।"

ओलेग के सक्रिय स्वभाव को कोई भी चीज़, इस तरह न जगा सकती थी, जिस तरह रात के सन्नाटे में इन लड़कों के अकस्मात् आगमन और वोलोद्या की कहानी ने जगा दिया। क्षण भर के लिए उसने यही सोचा कि वाल्को को छोड़कर वोलोद्या को यह काम और कोई भी नहीं सौंप सकता था। वोलोद्या के चेहरे के क़रीब अपना चेहरा ले जाकर वह उसकी काली आँखों में झाँका और उससे सवाल करने लगा।

"तुम्हें उसका पता कैसे लगा? कौन है वह?"

"मुझे उसका नाम बताने का कोई भी अधिकार नहीं है," वोलोद्या ने तनिक सकुचाते हुए-से जवाब दिया। "क्या पार्क में पड़ाव डाले पड़े जर्मनों की सैन्य व्यवस्था के बारे में तुम्हें कुछ पता है?"

"नहीं..."

"मैं और जोरा अभी वहाँ जाकर कुछ जाँच-पड़ताल करना चाहते हैं, लेकिन केवल दो व्यक्तियों से ही काम नहीं चलेगा। तोल्या ओर्लोव हमारे साथ चलना चाहता था, लेकिन उसे खाँसी आती है," वोलोद्या ने होंठों में ही हँसते हुए कहा।

कुछ देर तक ओलेग की नज़र वोलोद्या के परे भटकती रही।

"मैं यह काम आज की रात करने की सलाह नहीं दूँगा," वह बोला। "पार्क की ओर जानेवाले पर सबकी नज़र पड़ सकती है। लेकिन पार्क के अन्दर जो कुछ हो रहा है, वह नज़र नहीं आ सकता। दिन के उजाले में सरेआम यह काम करना सबसे आसान तरीक़ा है।"

पार्क पटरों के बाड़े से घिरा था और उसके चारों ओर सड़कें थीं। ओलेग ने अपने व्यावहारिक, सहज ज्ञान से काम लेते हुए सुझाव दिया कि अगले दिन अलग-अलग समय में, उनमें से कोई एक, पार्क के इर्द-गिर्द की हर सड़क पर मटरगश्ती करे और पता लगाये तथा याद रखे कि विमान-मार तोपें और लारियाँ कहाँ रखी गयी हैं और खाइयाँ कहाँ खोदी गयी हैं।

जिस उत्साह से ये लड़के ओलेग के पास आये थे, वह तनिक ठण्डा पड़ गया। लेकिन उन्हें ओलेग की बात मानने को मजबूत होना ही पड़ा।

प्रिय पाठक, क्या आपने कभी रात के सन्नाटे में बीच जंगल में पड़ाव डाला है, या किसी अजनबी जगह में अपने को अकेला पाया है, या ख़तरों का अकेले ही सामना किया है? या आप कभी ऐसी मुसीबत में पड़े हैं, जब आपके गहरे दोस्तों ने भी आपसे मुँह मोड़ लिया हो? या आप बरसों तक कोई ऐसी खोज करते रहे हैं, जो मानव-समझ के लिए बिलकुल नयी और अज्ञात रही हो और हर कोई आपको अविश्वास की नज़र से पराया समझकर देखता रहा हो? यदि इन मुसीबतों और दुर्भाग्यों में किसी एक के भी आप शिकार हुए हों, तो आप आसानी से महसूस कर सकते हैं कि आपको

अपने किसी ऐसे मित्र से मिलकर, जिसके वचन, विश्वास, हिम्मत और निष्ठा में कोई परिवर्त्तन आया हो, आपके हृदय में कैसी अकथ और अपूर्व प्रसन्नता, साहस और कृतज्ञता का ज्वार उठता है! आप महसूस करते है कि आप अकेले नहीं और आपके हृदय के साथ-साथ किसी दूसरे का हृदय भी एक लय में धड़क रहा है। ओलेग के हृदय में ऐसे ही भावों का ज्वार उठा, जब उसने स्तेपी के आसमान में रेंगते हुए चाँद की रोशनी में उन अल्पदृष्टिवाली आँखों को देखा, जो सदयता और शक्ति से चमक रही थीं। हाँ, उसे अपने मित्र का उत्साहित, शान्त और सजीव चेहरा दिखायी पड़ा।

"वान्या!" ओलेग अपनी लम्बी बाँहों में वान्या को कसते हुए उससे चिपक गया। वह आनन्द के मारे धीरे-धीरे हँस रहा था। "ओह, कितने दिन हो गये! तुम्हारे बिना मुझे न जाने कैसा महसूस हो रहा था; श-शैतान कहीं के!" वह हकलाया और उसे और ज़ोर से कस लिया।

"छोड़ो भी! तुम तो मेरी पसली ही तोड़ डालोगे! मैं कोई लड़की तो नहीं!" वान्या होंठों में ही हँसते हुए बोला और उसके बन्धन से निकल गया।

"मैंने सोचा भी न था कि वह तुम्हारी नकेल इस तरह बाँध देगी!" ओलेग खीसें निकालते हुए बोला।

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए," वान्या ने विचलित स्वर में कहा। "वैसी हालत में मैं उनके लिए ठौर-ठिकाने का अच्छी तरह बन्दोबस्त किये बिना आ कैसे सकता था? मुझे यह इतमीनान होना ज़रूरी था कि वे अब ख़तरे से दूर हैं! अलावा इसके, यह तो जानते ही हो कि वह असाधारण-सी लड़की है! कितनी सरल और निष्कपट, कितनी उदार विचारोंवाली!"

असलियत तो यही थी कि जितने दिन वान्या नीज्नी अलेक्सान्द्रोंव्स्की में रहा, वह क्लावा के सामने वह सब ब्योरेवार बयान कर चुका था, जिसके बारे में वह अपनी ज़िन्दगी के उन्नीस साल तक सोचता, अनुभव करता और कविताएँ रचता आया था। और क्लावा ने भी, जो बहुत ही दयालु थी और वान्या से प्रेम करने लगी थी, बड़ी शान्ति और धैर्य से उसकी बातें सुनी थीं। वान्या की ओर से दिये जानेवाले हर प्रश्न पर उसने तुरन्त सिर हिलाकर स्वीकृति प्रकट कर दी थी और जो कुछ उसने कहा था, उसके ख़िलाफ़ एक भी शब्द न बोली थी। सो, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि जितने ही अधिक दिन वह क्लावा के साथ रहा, उतनी ही अधिक वह उसे उदार विचारोंवाली लगती गयी।

"हाँ, मैं साफ़-साफ़ देख रहा हूँ कि तुम पर अच्छी तरह जादू कर दिया गया है," ओलेग बोला और विहँसती आँखों से अपने मित्र को देखने लगा। "गुस्सा न

करो,” वह बोला और यह देखकर कि उसकी ठठोली से वान्या चिढ़ रहा है, वह अचानक गम्भीर हो गया। “मैं तो यूँ ही मज़ाक कर रहा था। मैं तुम्हारी ख़ुशी में ख़ुश हूँ। सचमुच, मैं बहुत प्रसन्न हूँ,” वह ईमानदारी से बोला और वान्या के परे कहीं दूर खोये-खोये-से अन्दाज़ में देखने लगा। उसके माथे पर सलवटें उभर आयी थीं।

“अच्छा, मुझे साफ़-साफ़ बताओ कि ओस्मूख़िन को वह काम सौंपनेवाला व्यक्ति वाल्को ही था न?” वह कुछ देर बाद बोला।

“नहीं, वह कोई दूसरा व्यक्ति था। उसने वोलोद्या से कहा कि वह तुमसे पता लगाये कि वाल्को से कैसे मिला जा सकता है। और दरअसल यही वजह है कि मैं आज रात तुम्हारे यहाँ रुका हूँ।”

“यही तो मुसीबत है। मैं ख़ुद नहीं जानता उससे कैसे मिला जाये। मैं इसी सोच में मरा जा रहा हूँ,” ओलेग बोला। “ख़ैर, जलावनघर के अन्दर तो चल...”

उन्होंने अन्दर पहुँचकर दरवाज़ा बन्द कर लिया और कपड़े उतारे बिना ही चारपाई पर लेट गये। वे अँधेरे में बहुत देर तक फुसफुसाकर बातें करते रहे। लगता था जैसे उनके आस-पास कोई जर्मन सन्तरी नहीं है या कहीं भी जर्मन न थे। न जाने कितनी बार उन्होंने यह दुहराया होगा, “अच्छा, अब बहुत हुआ। थोड़ी नींद लेनी ज़रूरी है।” पर फिर फुसफुसाने लगा।

निकोलाई निकोलायेविच के झकझोरने से ओलेग की नींद टूटी। वान्या ज़ेम्नुख़ोव जा चुका था।

“क्या बात है – कपड़े बिना उतारे ही सोये हो?” निकोलाई निलायेविच ने अपने होंठों पर और आँखों में एक अदृश्य-सी मुस्कुराहट के साथ पूछा।

“नींद ने योद्धा को बेदम कर दिया,” ओलेग ने अँगड़ाई लेते हुए कहा।

“बेशक, योद्धा! जलावनघर के पीछे, भड़ी में जो सम्मेलन हो रहा था, वह सब मैं सुन चुका हूँ। और जेम्नुख़ोव के साथ तुम्हारी बकवास भी।”

“तु-तुमने सब कुछ सुन लिया!” ओलेग उठ बैठा। उसके उनीदे चेहरे पर घबराहट थी। “तुमने बताया क्यों नहीं कि तुम सोये नहीं थे?”

“तुम लोगों की बातों में बाधा पहुँचाना नहीं चाहता था।”

“तुमसे मुझे ऐसी आशा न थी।”

“अभी भी बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जिनकी तुम मुझसे आशा नहीं करते,” निकोलाई निकोलायेविच ने धीरे-धीरे कहा। “मसलन, तुम्हें यह मालूम नहीं कि मेरे पास एक रेडियो-सेट है? ठीक वहाँ फ़र्श के नीचे, जहाँ जर्मन रहते हैं।”

ओलेग सन्न रह गया। वह फटी-फटी आँखों से उसे देखने लगा।

“तुम... क-क्या? तुमने उसे दे नहीं दिया था?”

"नहीं।"

"तो इसका मतलब है कि तुम उसे सोवियत अधिकारियों से भी छिपाये रहे?"

"हाँ।"

"लेकिन, क-क-कोल्या, सचमुच... मैंने सोचा भी न था कि तुम इतने कांइयाँ हो सकते हो," ओलेग बोला और समझ नहीं सका कि हँसे या झुँझलाये।

"पहली बात कि यह सेट मुझे मेरे नेक काम के पुरस्कार स्वरूप मिला था और दूसरी बात कि सात वाल्वोंवाला यह सेट विदेशी है!"

"तो उन्होंने इसे लौटा देने का वादा किया है!"

"वादा! अगर मैं उनके मुताबिक़ काम करता, तो इस वक़्त यह सेट जर्मनों के हाथ में होता, लेकिन अब वह फ़र्श के पटरों के नीचे छिपा पड़ा है। जब मैंने कल रात तुम लोगों की बातें सुनीं, तो फ़ैसला किया कि अब यह हमारे बहुत काम आयेगा! तो इसका मतलब है कि जो कुछ मैंने किया, वह ठीक ही किया," मामा कोल्या ने बिना मुस्कुराये कहा।

"बेशक, बेजोड़ काम किया है तुमने, मामा कोल्या। अब मुँह-हाथ धो लें और एक बाज़ी शतरंज खेलने बैठ जायें। नाश्ते के वक़्त तक तो इन्तज़ार करना ही है। हमें किसी के लिए काम नहीं करना है। जर्मन अभी यहीं हैं," ओलेग बोला। वह बहुत ही उत्साहित था।

तभी किसी लड़की की आवाज़ सुनायी पड़ी, जो अहाते स्वर भर में गूँज उठी :

"ऐ निखट्टू सुनो! क्या ओलेग कोशेवोई इसी मकान में रहता है?"

"Was sagst du? Ich verstehe nicht,"* सायबान में खड़े सन्तरी ने जवाब दिया।

"नीना, ऐसा भी बुद्धू कभी देखा है तुमने? रूसी का एक शब्द भी नहीं जानता! या तो हमें अन्दर जाने दो, या किसी सच्चे रूसी को बुला दो," लड़कियों की गूँजती आवाज़ फिर सुनायी पड़ी।

मामा कोल्या और ओलेग ने एक दूसरे की ओर देखा, फिर दरवाज़े से बाहर झाँकने लगे।

दो लड़कियाँ घबराये हुए सन्तरी के सामने खड़ी थीं। जिस लड़की ने सन्तरी से सवाल किया था, वह इतनी भड़कीली पोशाक पहने थी कि सबसे पहले उसी पर ओलेग और मामा कोल्या की नज़र गयी : नीले रंग के कपड़े पर लाल चेरी के छाप लगे थे और जहाँ-जहाँ हरी और पीली बुंदकियाँ चमक रही थीं। उसके लहरदार बालों

---

* तुम क्या कहती हो? मेरी समझ में नहीं आता।

पर सूरज की सुनहरी आभा पड़ रही थी और दो घुँघराली लटें गले और कन्धों पर इतरा रही थीं। ज़ाहिर था कि लड़की ने दो शीशों के सामने खड़े होकर बड़े ध्यान से बालों को काढ़ा है। और कमर पर कसी-बँधी भड़कीली पोशाक उसके बदन पर ख़ूब फब रही थी। सुघड़ पाँवों में हल्के रंग के मोज़े और ऊँची एड़ीवाले ख़ूबसूरत जूते थे। लड़की की भाव-भंगिमा से असाधारण सजीवता और स्वाभाविक झलक रही थी।

लड़की आगे बढ़कर सायबान की सीढ़ियाँ चढ़ने की कोशिश करने लगी कि हाथ में टामी-गन कपड़े जर्मन सन्तरी ने अपना दूसरा हाथ फैलाकर उसका रास्ता रोक लिया।

कुछ भी हिचके बिना लड़की ने अपने छोटे-से, गोरे हाथ से सन्तरी का गन्दा हाथ झटक दिया और जल्दी-जल्दी सायबान की सीढ़ियाँ चढ़ती हुई ऊपर पहुँच गयी। उसके बाद उसने पीछे मुड़कर अपनी सहेली को आवाज़ दी :

“नीना, आओ, आओ, चली आओ।”

नीना हिचकिचाती रही। सन्तरी उछलकर सायबान पर चढ़ गया और दरवाज़े के सामने खड़ा होकर अपनी बाँहें फैला दीं। उसकी टामी-गन पेटी के सहारे उसकी मोटी गरदन से झूल रही थी। वह बेवक़ूफ़ों की तरह दाँत निपोर रहा था और उसके चेहरे पर आत्मसन्तोष का भाव था कि उसने अपना फ़र्ज ठीक से निबाहा था। साथ ही वह उस जवान लड़की की जी-हुजूरी भी कर रहा था, जो उसके साथ इस तरह पेश आ सकती थी।

“मैं हूँ कोशेवोई। इधर आ जाओ!” ओलेग ने बाहर निकलकर कहा।

लड़की फुर्ती से उधर मुड़ गयी, आँखें सिकोड़कर उसे क्षण भर देखती रही और तब सीढ़ियाँ खटखट उतरती हुई उसकी ओर दौड़ चली।

लम्बा-छरहरा ओलेग, अपनी बाँहें बग़ल में झुलाता हुआ प्रश्नात्मक दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था। उसकी सद्भावनापूर्ण आँखें मानो पूछ रही थीं : “मैं हूँ ओलेग कोशेवोई, तुम्हें मुझसे क्या काम है? यदि कोई नेक काम है, तो मैं तुम्हारी सेवा में हाज़िर हूँ, यदि नहीं तो मेरे गले क्यों पड़ती हो?” लड़की दौड़ती हुई उसके पास चली आयी और इस तरह देखने लगी, मानो उसे किसी फ़ोटो से मिला रही हो। उसकी सहेली भी वहीं पहुँचकर एक तरफ़ खड़ी हो गयी। ओलेग ने अभी तक उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया था।

“हाँ, यह ओलेग ही है,” लड़की मानो अपने आप से बोली। “हम तुमसे अकेले में बात करना चाहती हैं,” उसने आँख मारते हुए कहा। हक्का-बक्का-सा ओलेग सकुचाता हुआ दोनों लड़कियों को जलावनघर में ले गया। भड़कीली पोशाक पहने लड़की ने आँखें सिकोड़कर पैनी नज़र से मामा कोल्या को देखा और तब आश्चर्य

और प्रश्नसूचक आँखें ओलेग की ओर फेरीं।

"तुम्हें जो कुछ भी मुझसे कहना है, इस आदमी के सामने भी कह सकती हो," ओलेग बोला।

"नहीं, नहीं, यह सम्भव नहीं। हम अपने प्रेम की बातें करना चाहती हैं, है न नीना?" वह बोली और अपनी सहेली की ओर मुड़कर हँसने लगी।

ओलेग और मामा कोल्या दोनों ने भी अपनी नज़रें दूसरी लड़की पर डालीं। उसके नाक-नक़्शे बड़े-बड़े थे और चेहरा बहुत ही सँवलाया हुआ था। उसकी लम्बी, सुघड़ बाँहें कोहनियों तक उघड़ी थीं और धूप से लगभग काली पड़ गयी थीं। उसके गोल कन्धों के ऊपर तक लहराते काले, घने बाल चमचमा रहे थे। गदराये होंठों, चिकनी ठुड्डी, चौड़े चेहरे और साधारण-सी नाक से उसकी सादगी और सरलता टपक रही थी। पर भौंहों के ऊपर उभरी हड्डियों, मोटी भौंहों, दूर-दूर पर जड़ी बादामी और निर्भीक आँखों से उसकी शक्ति, दृढ़ता और उत्साह की झाँकी मिल रही थी।

ओलेग की आँखें उस पर अनजाने ही टिकी रहीं। जिनती देर वे बातें करते रहे उसे बराबर यह चेतना बनी रही, कि वह लड़की भी उनके बीच मौज़ूद है। इस कारण वह हकलाने लगा।

नीली आँखोंवाली लड़की तब तक चुप रही, जब तक मामा कोल्या बाहर निकलकर अहाते में न चला गया। उसके बाद वह ओलेग की आँखों में झाँकती हुई-सी बोली, "मैं चाचा अन्द्रेई के यहाँ से आयी हूँ।"

"ब... बड़ी हिम्मतवाली हो! स... सन्तरी के साथ ख़ूब पेश आयीं," ओलेग हँसते हुए बोला।

"कोई बात नहीं, कुत्तों को दुतकारते रहो, तो उन्हें अच्छा लगता है!" वह हँस दी।

"तुम हो कौन?"

"मेरा नाम ल्यूबा है," लड़की ने जवाब दिया।

अध्याय 26

ल्यूबोव शेव्त्सोवा उन कोमसोमोल सदस्यों में से थी, जिन्हें पिछली शरद में ही छापेमार हेडक्वार्टर के अधीन दुश्मन की फ़ौजों के पीछे काम करने के लिए चुना गया था।

वह वोरोशीलोवग्राद में फ़ौजी नर्सिंग कोर्स पूरा करके मोर्चे पर जाने ही वाली थी कि उसे यहीं रोक लिया गया और वायरलेस टेलेग्राफ़ी के कोर्स में भर्ती कर लिया गया।

छापेमार हेडक्वार्टर की हिदायतों पर अमल करते हुए उसने ये सब बातें अपने मित्रों और परिवारवालों से छिपा रखी थीं। वह अपने घरवालों को लिखती और जान-पहचान के सभी लोगों से कहती कि वह अभी भी फ़ौजी नर्सिंग कोर्स पूरा कर रही है। रहस्य और भेद से घिरी हुई अपनी ज़िन्दगी से वह बहुत ही प्रसन्न थी। वह हमेशा से ही अभिनय करने में रुचि रखती आयी थी। उसे लोग 'चालाक लोमड़ी, ल्यूबा अभिनेत्री,' कहते थे।

बचपन में वह डाक्टर का अभिनय करती थी। वह अपने खिलौनों को खिड़की से बाहर फेंक देती और तब रेडक्रास का निशान लगाये एक छोटी-सी थैली लेकर, जिसमें रूई, पट्टियाँ, जाली आदि भरी होती, वह उनकी मरहम-पट्टी करने में जुट जाती। वह गोरे रंग और नीली आँखोंवाली, गोल-मटोल लड़की थी, जो सारा वक़्त अपनी माँ, पिता, जान-पहचान के सभी लोगों, बच्चों और बड़ों, कुत्तों और बिल्लियों की मरहम-पट्टी करने के लिए मचलती रहती थी।

एक दिन उससे उम्र में बड़ा एक लड़का नंगे पाँव बाड़े पर से कूदकर शराब की टूटी बोतल के टुकड़े से अपना तलवा ज़ख़्मी कर बैठा।

लड़का शहर के एक छोर से आया था और ल्यूबा उसे नहीं जानती थी। उसका प्रथम उपचार करने के लिए बड़ों में से वहाँ कोई भी न था। छह साल की नन्ही ल्यूबा ने उसका पाँव धोया, ज़ख़्म पर टिंचर लगाया और पट्टी बाँध दी। उस लड़के ने, जिसका नाम सेर्गेई लेवाशोव था, ल्यूबा के प्रति तनिक भी दिलचस्पी या कृतज्ञता प्रकट नहीं की। वह साधारणतः लड़कियों को तुच्छ समझता था और तब से फिर कभी शेव्त्सोव परिवार के बग़ीचे में दिखायी न पड़ा।

जब वह स्कूल में पढ़ने लगी, तो उसने पढ़ना-लिखना इस तरह सीख लिया, मानो वह कोई मामूली और दिलचस्प खेल हो। लेकिन अब वह डाक्टर, शिक्षिका या इंजीनियर बनना नहीं चाहती थी। वह गृहस्वामिनी होना चाहती थी और घर का कोई भी काम होता – फ़र्श धोकर साफ़ करना या पकौड़ियाँ बनाना – वह बहुत ही लगन और होशियारी से करती। उसकी माँ भी उसकी बराबरी न कर पाती। लेकिन, वह गृहयुद्ध के वीर चपायेव जैसा बनना चाहती थी, उसकी सहायिका आन्का जैसी नहीं, जो चपायेव की मशीनगनर थी। वह कोई और नहीं, चपायेव ही इसलिए बनना चाहती थी, क्योंकि बाद में पता चला, वह स्वयं भी लड़कियों को तुच्छ समझती थी। वह जले हुए कार्क के टुकड़े से चपायेव की मूँछें बना लेती और लड़कों से लड़ते हुए विजयी होकर ही दम लेती। जब वह कुछ बड़ी हुई, तो वह नाचना पसन्द करने लगी : वह रूसी और विदेशी बाल-रूम नृत्यों, उक्राइनी और काकेशियाई लोक नृत्यों में दिलचस्पी लेने लगी। इसके सिवा जब उसे पता चला कि उसकी आवाज़ सुरीली है, तो वह

रंगमंच पर उतरने के सपने देखने लगी। वह क्लबों में, पार्कों के खुले रंगमंचों पर उतरने लगी और जब युद्ध छिड़ा, तो सैनिकों के लिए वह ख़ास तौर पर ख़ुशी से नाचने-गाने लगी। लेकिन वस्तुतः वह अभिनेत्री न थी। वह तो अभिनेत्री बनने का खेल खेल रही थी। वह अभी भी अपना लक्ष्य ढूँढ़ रही थी। उसके अन्दर का जोश, उत्साह और उल्लास अभिनय, नृत्य और गान के रूप में फूट पड़ता था। मानो उसके अन्दर कोई चंचल जीव बैठा हो, जिसने उससे शान्ति छीन ली हो वह प्रसिद्धि के लिए मरी जा रही थी और विलक्षण आत्मत्याग का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहती थी। उसकी बेजोड़ हिम्मत, सजीवता और गहरी प्रसन्नता उसे हमेशा आगे की ओर, किसी न किसी नयी बात की ओर उकसाती रही। अब वह मोर्चों पर साहसिक कार्य करने के सपने देखने लगी : वह सैनिक विमान चालिका बनेगी या कम-से-कम फ़ौजी डाक्टर तो ज़रूर ही बनेगी। लेकिन इन सारे सपनों पर पानी फिर गया, जब पता चला कि वह दुश्मन की पीठ पीछे ख़ुफ़िया रेडियो आपरेटर का काम करेगी – जो काम वास्तव में सबसे बढ़िया था!

यह एक मनोरंजक तथा आश्चर्यजनक बात थी कि वायरलेस टेलेग्राफ़ी के कोर्स में क्रास्नोदोन के कोमसोमोल सदस्यों में से वही सेर्गेई लेवाशोव भी आ गया था, जिसके ज़ख़्मी पैर की मरहम-पट्टी ल्यूबा ने अपने बचपन में की थी। अब वह उससे अच्छी तरह बदला ले सकती थी, क्योंकि वह एकदम उससे प्यार करने लगा था, पर ल्यूबा उसके प्यार का प्रत्युत्तर देने को तैयार न थी, हालाँकि वह सुडौल क़द-काठीवाला और समझदार लड़का था। वह लड़कियों से इश्क़ करना बिलकुल न जानता था। वह चौड़े कन्धे लटकाये ख़ामोश बैठा रहता और अपनी विनीत आँखें ल्यूबा पर टिका देता। उधर ल्यूबा मज़े से हँसती रहती और उसे मन भर कुढ़ाती और सताती रहती।

अपने कोर्स के दौरान कई बार ऐसा होता कि कभी कोई प्रशिक्षणार्थी अचानक ग़ायब हो जाता, तो कभी और कोई। सब तुरन्त ही ताड़ जाते कि वह समय से पहले अपने काम में माहिर हो गया है और उसे दुश्मन की माँद में काम करने के लिए भेज दिया गया है।

मई की एक शाम को बहुत ही गरमी और घुटन थी। उमस के कारण शहर का चाँदनी में नहाया बग़ीचा मुरझा गया था। खिले बबूलों से उफनती ख़ुशबू पथिकों का सिर चकरा देती। ल्यूबा भीड़-भाड़ पसन्द करती थी और सेर्गेई के साथ कोई फ़िल्म देखने या लेनिन सड़क पर मटरगश्ती करने जाना चाह रही थी। लेकिन सेर्गेई बोल उठा :

"देखो, यह जगह भी कितनी प्यारी और सुहानी है! तुम्हें ज़रूर अच्छा लगेगा।" और पार्क की सड़क की मद्धिम रोशनी में उसकी आँखों में एक अजीब-सी चमक

तैरने लगी।

वे पार्क के चारों ओर घूमते रहे, लेकिन ल्यूबा को सेर्गेई की ख़ामोशी खलती रही। वह यह सोचकर दुखी थी कि सेर्गेई ने उसकी इच्छाओं को ठुकरा दिया था।

अचानक लड़के-लड़कियों की एक टोली हँसती-चिल्लाती पार्क में घुस आयी। उनमें बोर्का दुबीन्स्की भी था, जो वोरोशीलोवग्राद का रहनेवाला था और वायरलेस टेलेग्राफ़ी के कोर्स में ही शिक्षा प्राप्त कर रहा था। वह भी ल्यूबा की ओर आकर्षित था। वह उसे हमेशा इधर-उधर की मज़ेदार बातों से हँसाता रहता था। वह हर बात में कहा करता था कि चीज़ों को ट्राम-चालक की दृष्टि से देखना चाहिए।

"बोर्का!" वह चिल्लायी। उसने ल्यूबा की आवाज़ पहचान ली और ल्यूबा और सेर्गेई के पास दौड़ता चला आया तथा पहुँचते ही इस तरह बड़बड़ाने लगा मानो उसकी ज़बान कभी रुकेगी ही नहीं।

"तुम्हारे साथ ये कौन लोग हैं?" ल्यूबा ने पूछा।

"ओह, वे छापेखाने के लोग हैं। मिलना चाहोगी?"

"क्यों नहीं!" वह बोली।

सबसे परिचय हो जाने के बाद ल्यूबा ने सुझाव दिया कि लेनिन सड़क पर घूमने चला जाये। सेर्गेई साथ नहीं गया। ल्यूबा ने समझ लिया कि वह मन ही मन नाराज़ हो गया, सो उसने जान-बूझकर बोर्का की बाँह पकड़ ली और वे भागकर पार्क से बाहर जाने लगे। दोनों के पाँव मानों हवा से बातें कर रहे थे और ल्यूबा का स्कर्ट वृक्षों के झुरमुट के बीच चमकता-झलकता रहा।

अगली सुबह, नाश्ते के समय उसे हॉस्टल में सेर्गेई दिखायी न पड़ा और न वह क्लास में ही आया। वह नाश्ते और दोपहर व शाम के भोजन के समय भी नज़र नहीं आया। उसके बारे में किसी से पूछ-ताछ करना बेकार था। ल्यूबा ने पार्क में पिछली शाम की बातों को दिमाग़ से निकाल दिया था। "मैं यह सोच-सोचकर दिमाग़ क्यों ख़राब करूँ!" लेकिन शाम होते-होते उसे घर की याद सताने लगी। उसे माँ-बाप की याद हो आयी और उसे ऐसा लगने लगा कि वह उन्हें फिर कभी न देख पायेगी। वह अपने हॉस्टल के कमरे में बिछावन पर चुपचाप लेटी रही। उस कमरे में और पाँच लड़कियाँ रहती थीं। सबकी सब गहरी नींद में सो रही थीं। खिड़की पर से काला पर्दा हटा दिया गया था और चाँदनी पूरे कमरे में तैर रही थी। फिर भी ल्यूबा का मन बहुत ही उदास था।

लेकिन दूसरे दिन वह सेर्गेई लेवाशोव को इस तरह भूल गयी, मानो उससे उसकी कभी भेंट ही न हुई हो।

छः जुलाई को वायरलेस टेलेग्राफ़ी कोर्स के इंचार्ज ने ल्यूबा को बुलाकर बताया

कि मोर्चे की हालत ठीक नहीं है और उनके स्कूल को ख़ाली किया जा रहा है। ल्यूबा को प्रादेशिक छापेमार हेडक्वार्टर के अधीन काम करने के लिए भेजने का फ़ैसला किया गया है। वह अपने घर क्रास्नोदोन लौट जाये और आगे आदेश मिलने तक इन्तज़ार करे। यदि जर्मन आ जायें, तो वह इस तरह पेश आये कि उन्हें किसी तरह का सन्देह न हो। उसे कामेन्नी ब्रोद में एक जगह का पता दिया गया और कहा गया कि वोरोशीलोवग्राद छोड़ने से पहले वहाँ जाकर मकान की मालकिन को अपना परिचय दे। ल्यूबा ने आदेश के मुताबिक़ सब कुछ किया और अपना सूटकेस लेकर पास के चौराहे पर चली गयी। पहली ही लारी, जो उसे वहाँ मिली, क्रास्नोदोन की ओर जा रही थी और ड्राइवर ने सुनहरे बालोंवाली शोख़ लड़की को लारी में बिठा लिया।

टोली से विदा होकर वाल्को सारा दिन स्तेपी में पड़ा रहा। अँधेरा घिरते ही वह घाटी से होकर चल दिया और अब 'शंघाई' मुहल्ले के आख़िरी छोर पर था। वह बचपन से ही नगर के राह-रास्तों से अच्छी तरह परिचित था, सो वह तंग सड़कों और टेढ़ी-मेढ़ी गलियों से होता हुआ खान 1 (बी) के पास पहुँच गया।

उसे जर्मनों के शेव्त्सोव के घर में डेरा डाले होने की आशंका थी, इसलिए वह चोरी-चोरी पिछवाड़े से होकर बाड़ लाँघकर अहाते में पहुँच गया और बाहरी मकानों के पीछे इस आशा में छिपकर खड़ा हो गया कि कोई न कोई अहाते में तो निकलेगा ही। वह देर तक वहाँ खड़े-खड़े उकता गया और उसके धीरज का बाँध टूटने लगा। तभी दरवाज़ा फटाक से बन्द हुआ और एक औरत बाल्टी लिये उसकी बग़ल से गुज़री। वह शेव्त्सोव की पत्नी, येफ़्रोसीन्या मिरोनोव्ना थी। वाल्को उसकी ओर बढ़ा।

"हे भगवान!" वह विस्मय से बोली। "कौन है?"

वाल्को कई दिन से बढ़ी दाढ़ीवाला अपना काला चेहरा उसकी आँखों के पास ले गया। उसने वाल्को को तुरन्त पहचान लिया।

"अरे, तुम हो! लेकिन वह कहाँ..." उसने कहना शुरू किया। चाँद को बादलों ने ढँक लिया और वाल्को देख नहीं पाया कि उस औरत के चेहरे का रंग किस तरह उड़ गया था।

"एक मिनट रुको; और मेरा नाम भूल जाओ," उसने फटी आवाज़ में टोका। "मुझे चाचा अन्द्रेई के नाम से पुकारो। तुम्हारे घर में जर्मन हैं? नहीं? तो अन्दर चलें।" वह जो कुछ उससे कहनेवाला था, उसे याद कर दुख से तिलमिलाने लगा था।

जब वह कमरे में घुसा, तो ल्यूबा बिस्तर पर बैठी हुई कुछ सी रही थी। वह उसका अभिवादन करने के लिए उठकर खड़ी हो गयी। लेकिन यह वह ल्यूबा न थी, जिसे वह ऊँची एड़ी के जूतों और भड़कीली पोशाक में सजी-धजी, क्लब के रंगमंच

पर अक्सर देखा करता था। यह एक सीधी-सादी, गृहस्थ ल्यूबा थी – नंगे पाँव, और कपड़े के नाम पर एक सस्ता-सा ब्लाउज और ऊँचा स्कर्ट पहने। उसके उलझे सुनहरे बाल उसके कन्धों पर बिखरे थे। मेज़ के ऊपर लटकते खनिकों के लैम्प की मन्द रोशनी में उसने वाल्को को देखने के लिए जब अपनी आँखें सिकोड़ीं, तो वाल्को को उसकी आँखें अब काली-काली-सी जान पड़ीं; उनमें आश्चर्य का भाव न था।

वाल्को की आँखें उसकी निगाहों को बर्दाश्त नहीं कर सकीं। वह अपनी खोयी-खोयी नज़रें चारों ओर दौड़ाने लगा। कमरे में अभी भी इसके मालिकों की पुरानी समृद्धि की छाप बनी हुई थी। उसकी आँखें बिस्तर के सिरहाने दीवार पर लगे एक पोस्टकार्ड पर आकर अटक गयीं। उस पोस्टकार्ड पर हिटलर का चित्र था।

"हमारे बारे में कुछ बुरी धारणा न बनाइये, साथी वाल्को," ल्यूबा की माँ बोली।

"चाचा अन्द्रेई," वाल्को ने उसे सुधारते हुए कहा।

"अरे... हाँ, हाँ, चाचा अन्द्रेई," ल्यूबा की माँ ने मुस्कुराये बिना कहा।

ल्यूबा पोस्टकार्ड की ओर मुड़ गयी और उसने घृणा से अपने कन्धे बिचका दिये।

"एक जर्मन अफ़सर इसे वहाँ लगा गया," येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना ने सफ़ाई देते हुए कहा। "यहाँ सारा वक़्त दो जर्मन अफ़सर डटे रहते थे, केवल कल ही वे यहाँ से नोवोचेर्कास्क के लिए रवाना हुए। वे आते ही ल्यूबा की ओर देखकर आवाज़ें कसने लगे : 'रूसी लड़की, ख़ूबसूरत, प्यारी, अलबेली,' और वे बत्तीसी दिखाते कभी उसे चाकलेट देते, तो कभी बिस्कुट। मैंने देखा, यह उनके तोहफ़े ले लेती, नन्ही शैतान, और फिर नाक-भौंह चढ़ाकर उनके साथ रुखाई से पेश आने लगती। एक क्षण हँसती और दूसरे क्षण उनका अपमान करती – इसी तरह खिलवाड़ करती रही," माँ अपनी बेटी की भर्त्सना-सी करती हुई बोली और उसे यक़ीन था कि वाल्को उसका अभिप्राय समझ ही जायेगा। "मैंने उसे लाख समझाया, 'आग से न खेलो,' और वह जवाब देती रही, 'खेलना ही होगा'। खेलना ही होगा – मैं तुमसे पूछती हूँ! उनके साथ भला इस तरह खेला जाता है! और क्या तुम कल्पना कर सकते हो, साथी वाल्को..."

"चाचा अन्द्रेई," वाल्को ने उसे फिर सुधारा।

"...चाचा अन्द्रेई, उसने मुझे मना कर दिया कि उन्हें यह पता न चले कि मैं इसकी माँ हूँ। उसने मुझे अपनी नौकरानी कहा और अपने अपको अभिनेत्री। उसने कहा, 'ओह, मेरे माँ-बाप उद्योगपति थे – वे ख़ानों के मालिक थे और सोवियत सरकार ने उन्हें साइबेरिया में निर्वासित कर दिया'। देखा आपने, इसने क्या शैतानी नहीं की?"

"कुछ नहीं कहा जा सकता," वाल्को ने ल्यूबा की ओर देखते हुए स्थिरता से

कहा। वह होंठों पर अस्पष्ट मुसकान लिये, वाल्को की ओर देखती हुई उसके सामने खड़ी थी। वह अब भी हाथों में सीने-पिरोने का सामान उठाये हुए थी।

"वह अफ़सर, जो इस खाट पर सोता था – यह ल्यूबा की खाट है, लेकिन हम दोनों दूसरे कमरे में सोती थीं – अपना झोला टटोलने लगा और उसे यह पोस्टकार्ड हाथ लग गया। उसने इसे दीवार पर लगा दिया। और क्या तुम यह कल्पना कर सकते हो, साथी वाल्को, कि ल्यूबा ने झपटकर इस पोस्टकार्ड को उखाड़ लिया। 'यह मेरा बिस्तर है,' वह बोली, 'और मैं नहीं चाहती कि हिटलर का चित्र मेरे सिरहाने लगा रहे!' मुझे विश्वास हो गया कि वे अभी-अभी उसकी जान ले लेंगे। अफ़सर ने उसकी कलाई पकड़कर ऐंठ दी और पोस्टकार्ड को छीनकर फिर से दीवार पर लगा दिया। दूसरा अफ़सर भी वहीं था। उसके बाद दोनों के दोनों इस तरह ठहाका मारकर हँसने लगे कि कमरा फटने को हो गया। 'अच्छा, तो,' उन्होंने कहा 'रूसी लड़की Schlecht!'* मैं साफ़-साफ़ देख रही थी कि यह ग़ुस्से से तमतमा रही थी। इसका चेहरा सुर्ख़ हो गया था और इसकी मुट्ठियाँ कस गयी थीं। मैं तो भय से अधमरी हो गयी थी। लेकिन या तो उन्हें मज़ा आ रहा था, और या वे निरे पागल थे, वे खड़े हँसते रहे। यह ज़मीन पर पैर पटककर चिल्लायी, 'तुम्हारा हिटलर, वह राक्षस है, हैवान है। उसे नाबदान में फेंक देना चाहिए!' और वह बकती रही। मैंने सोचा, अभी-अभी वह अपना रिवाल्वर निकालेगा और इस पागल लड़की पर दाग़ देगा... और जब वे चले गये, तो उसने मुझे हिटलर का चित्र उतारने न दिया। 'नहीं,' वह बोली। 'उसे वहीं लटकता रहने दो, यह ज़रूरी है..."

ल्यूबा की माँ इतनी बूढ़ी न थी, लेकिन बहुत-सी अन्य साधारण प्रौढ़ स्त्रियों की तरह, जो जवानी में गर्भपात का शिकार हो चुकी हों, वह भी कमर पर और कमर के नीचे बहुत ही भारी और स्थूल हो गयी थी तथा उसकी पिण्डलियाँ फूल गयी थीं। उसने बहुत ही धीमी आवाज़ में वाल्को को यह सारी कहानी सुना दी और बराबर भीरुता, प्रश्न और अनुनयभरी आँखों से उसकी ओर देखती रही। लेकिन वाल्को उससे आँख मिलाने से कतराता था। वह बिना रुके बोलती गयी, मानो कोशिश कर रही कि जहाँ तक हो सके उस क्षण को टालती जाये, जब उसे वाल्को के मुँह से कोई भयानक ख़बर सुनने को मिलेगी। अब जब उसकी कहानी ख़त्म हो गयी, तो उसने अपनी आँखों में चिन्ता और भय लिये, वाल्को की ओर देखा।

"आपके पास अपने पति का कोई पुराना कपड़ा-लत्ता मिलेगा यहाँ, येफ़्रोसीन्या मिरोनोव्ना?" उसने फटी आवाज़ में पूछा। "मुझे कोट बिरजिस और स्लीपरों में अच्छा

---

* बुरी

नहीं लग रहा है। इनसे तुरन्त ही सन्देह भी हो सकता है।" वह उदासी से हँसा और उसकी आवाज़ में कुछ ऐसी बात ज़रूर थी, जिसके कारण येफ़्रोसीना मिरोनोव्ना का चेहरा फिर पीला पड़ गया और ल्यूबा का हाथ सिलाई समेत नीचे लटक पड़ा।

"उन्हें क्या हुआ है?" माँ ने कमज़ोर आवाज़ में पूछा।

"येफ़्रोसीन्या मिरोनोव्ना और तुम, ल्यूबा," वाल्को ने शान्त लेकिन दृढ़ स्वर में कहना शुरू किया। "मैंने सोचा भी न था कि मुझे आप लोगों के पास बुरी ख़बर लेकर आना होगा, लेकिन मैं आपको धोखा नहीं दे सकता और न ही किसी तरह आपको ढाढ़स बँधा सकता हूँ। आपके पति, और तुम्हारे पिता, ल्यूबा, और मेरा सबसे अच्छा दोस्त, अब इस संसार में नहीं रहा। ग्रिगोरी इल्यीच उस वक़्त हमसे सदा के लिए जुदा हो गया, जब इन हत्यारों ने नागरिक शरणार्थियों के क़ाफ़िले के ऊपर बम बरसाये। उस शहीद की याद और गौरव अमर रहे और वह हमारी जनता के हृदय में बसा रहे!"

माँ चीख़ी नहीं। वह रूमाल का एक कोना अपनी आँखों से लगाकर दबी आवाज़ में रोने लगी। ल्यूबा के चेहरे का रंग उड़ गया। वह बुत की तरह खड़ी रही और लड़खड़ाकर फ़र्श पर बेहोश गिर पड़ी।

वाल्को ने उठाकर उसे बिस्तर पर लिटा दिया।

वाल्को ने आशा की थी कि ल्यूबा फफक-फफककर रोयेगी और आँसुओं की बाढ़ में उसका ग़म बह जायेगा। लेकिन वह बिस्तर पर निश्चल और बेसुध पड़ी रही। उसका चेहरा निष्प्रभ और भावहीन हो गया था तथा उसके बड़े मुँह के खिंचे-सिकुड़े कोनों पर उसकी माँ की तरह ही गहरी शिकन उभर आयी थी।

ल्यूबा की माँ एक सीधी-सी रूसी औरत थी। उसने अपनी पीड़ा और ग़म स्वाभाविक, शान्त और सरल ढंग से दिल खोलकर प्रकट किया। उसकी वेदना उसके अन्तरतम से फूट रही थी। आँसू निर्बाध वह चले। वह रूमाल के छोर या हाथ से उन्हें पोंछ देती। चूँकि उसकी वेदना स्वाभाविक थी, वह उस गृहस्वामिनी की तरह अपना काम-काज करती रही, जिसके घर अतिथि आया हो। उसने पानी ढालकर वाल्को के हाथ-मुँह धुलाये, उसके लिए तेल का लैम्प जलाया और सन्दूक़ में से अपने पति की एक पुरानी क़मीज़, कोट और पतलून निकालकर उसे पहनने के लिए दिया। उसका पति घर में यही कपड़े पहनने का आदी था।

वाल्को तेल का लैम्प लिये दूसरे कमरे में चला गया और अपने कपड़े बदल लिये। कपड़े ज़रा तंग थे, फिर भी उसने चैन की साँस ली, क्योंकि अब वह एक होशियार कामगार की तरह दीखता था।

वह उन्हें विस्तारपूर्वक बताने लगा कि ग्रिगोरी इल्यीच की मृत्यु कैसे हुई। वह

जानता था कि यह विस्तृत विवरण भयानक तो होगा, लेकिन केवल वही अब मृतात्मा की पत्नी और बेटी को कुछ राहत पहुँचा सकता है। हालाँकि इस सान्त्वना से उनकी आत्मा को कोई शान्ति न मिल सकती थी। अपनी चिन्ता और वेदना के बावजूद, वह मन भर खाता रहा और एक सुराही वोद्का पी गया। उसे दिन भर खाना न मिला था और वह बहुत ही थका हुआ था, लेकिन उसने ल्यूबा से बातें करने की ठान ली थी। उसने ल्यूबा को बिस्तर पर से उठाया और उसे दूसरे कमरे में ले गया।

"मैंने तुरन्त भाँप लिया कि तुम्हें हमारी जनता के लिए काम करने के इरादे से यहाँ रोक लिया गया है," वह बोला और ऐसा बहाना करने लगा, मानो वह यह नहीं देख रहा हो कि कैसे वह अचानक चौंक गयी और उसके चेहरे का भाव बदल गया।

"सफ़ाई देने की कोशिश न करो," वह आगे बोला और ल्यूबा को इसका विरोध करने की चेष्टा करते देखकर उसने अपना बड़ा-सा हाथ उठा दिया। "मैं यह पूछने नहीं जा रहा हूँ कि तुम्हें यह काम किसने सौंपा या वह काम किस तरह का है। तुम्हें स्वीकार या अस्वीकार करने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं केवल तुमसे यह चाहता हूँ कि तुम मेरी मदद करो... हो सकता है, मैं तुम्हारे किसी काम का निकल आऊँ।"

उसने कहा कि ल्यूबा अपने यहाँ उसे एक दिन के लिए छिपने का बन्दोबस्त कर दे और कोन्द्रातोविच से सम्पर्क स्थापित करने में मदद करे। कोन्द्रातोविच ने ही खान 1 (बी) को उड़ाने में वाल्को की मदद की थी।

ल्यूबा ने वाल्को के साँवले चेहरे को आश्चर्य से देखा। वह अरसे से जानती थी कि वाल्को विशाल हृदयवाला बुद्धिमान व्यक्ति है। वाल्को और ल्यूबा के पिता के बीच बराबर की दोस्ती थी, फिर भी ल्यूबा ने हमेशा यही महसूस किया था कि वह ल्यूबा से बहुत ही उच्च और महान है और ल्यूबा, ख़ुद, एक अदना-सी, नाचीज़ जीव है। वह अभी उसकी पैनी सूझ को देखकर आश्चर्यचकित रह गयी।

उसने पड़ोसी के शेड के पुआलघर में उसके छिपने का बन्दोबस्त कर दिया। उनके पास बकरियाँ हुआ करती थीं, लेकिन पड़ोसी अब जा चुके थे और जर्मनों ने बकरियों को खा डाला था। वाल्को घोड़े बेचकर सोया।

वाल्को के चले जाने के बाद ल्यूबा अपनी मां के साथ माँ के बिस्तर पर ही पड़ी रही। वे दोनों सुबह होने तक रोती रहीं।

येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना को यह ग़म था कि उसकी ज़िन्दगी का ख़ात्मा हो गया – उस ज़िन्दगी का, जो ग्रिगोरी इल्यीच के साथ किशोरावस्था से ही जुड़ी थी। उसे वे दिन याद आने लगे, जब वह त्सारीत्सीन में नौकरानी थी और वह वोल्गा में चलनेवाले स्टीमर में एक युवा नाविक था। जहाज़ जब माल लादने के लिए लंगर

डाले रहता, तो वे धूप से नहाये घाट पर या पार्क में मिला करते थे। शादी के बाद उसके दिन बहुत ही कठिन परिस्थितियों में बीते थे। उसके पति को घाट पर काम नहीं मिल सका। तब वे यहाँ दोनबास चले आये, फिर भी शुरू में उन्हें कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। लेकिन बाद में ग्रिगोरी इल्यीच चमक उठा और उसने बड़ी ख्याति प्राप्त की। अख़बारों में भी उसके बारे में चर्चा हुई। उसे तीन कमरोंवाला घर मिला और वे बड़े ही आराम से ज़िन्दगी बसर करने लगे। उन्होंने अपनी लाडली ल्यूबा को शहज़ादी की तरह पाला-पोसा।

और अब सब कुछ ख़त्म हो चुका था। ग्रिगोरी इल्यीच अब संसार में न रहा और अपनी पीछे यहाँ दो निःसहाय स्त्रियों – एक वृद्धा और दूसरी युवती – को जर्मनों के हाथ में छोड़कर चल बसा था। आँसुओं की बाढ़ रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। इस बीच ल्यूबा कोमल शब्दों से अपनी माँ को सान्त्वना देती रही, ढाढ़स बँधाती रही।

"रोओ मत, माँ। मैंने अब एक हुनर सीख लिया है। जर्मन हमारे देश में से खदेड़ दिये जायेंगे और युद्ध का ख़ातमा होगा। मुझे किसी रेडियो स्टेशन में काम मिल जायेगा और मैं एक मशहूर वायरलेस आपरेटर बन जाऊँगी। मुझे उस स्टेशन का चीफ़ बनाया जायेगा। मुझे मालूम है कि तुम शोरगुल में रहना पसन्द नहीं करती, सो तुम मेरे साथ ही रहोगी – मेरे छोटे-से ही फ़्लैट में, जो मुझे रेडियो स्टेशन में मिलेगा। वहाँ पर बहुत ही शान्ति रहेगी। वहाँ ज़रा भी खटका नहीं होता। हर चीज़ पर नरम गद्दे चढ़े होते हैं, ताकि ज़रा-सी भी आवाज़ न हो। वहाँ बहुत-से लोग भी नहीं होते। हमारा छोटा-सा फ़्लैट साफ़-सुथरा और आरामदेह होगा और हम एक-साथ रहेंगी – केवल हमीं दोनों। घर के बाहर अहाते में एक छोटा-सा मैदान होगा, जिस पर घास लगीं होगी और जब हमारे पास कुछ पैसे जमा हो जायेंगे, तब मैं एक मुर्ग़ीघर बनाऊँगी और तुम उसमें मुर्ग़ियाँ, बत्तखें आदि पालना..." वह अपनी माँ को छाती से सटाये, रात-भर सान्त्वना और आत्मीयताभरे शब्द बोलती रही और सुन्दर नाख़ूनोंवाला उसका नन्हा-सा, गोरा हाथ अँधरे में मटकता रहा।

अचानक खिड़की पर खटखट की धीमी आवाज़ हुई। दोनों चौंक पड़ीं। दोनों को एक साथ ही दस्तक सुनायी पड़ी। उन्होंने अपने हाथ छुड़ा लिये और चुप हो गये। उनके कान खड़े हो गये। उनका रोना भी बन्द हो गया।

"क्या जर्मन फिर आ गये!" माँ ने उदासी से फुसफुसाकर कहा।

ल्यूबा को विश्वास था कि जर्मन इस तरह खिड़की नहीं खटखटा सकते। वह नंगे पाँव खिड़की के पास दौड़कर चली गयी और काले पर्दे का कोना थोड़ा-सा उठाकर बाहर झाँकी। चाँद डूब गया था, लेकिन अँधेरे कमरे से वह तीन आकृतियाँ स्पष्ट देख

सकती थी, जो सामने के बग़ीचे में खड़ी थीं – एक पुरुष खिड़की के पास खड़ा था और दो स्त्रियाँ ज़रा दूर।

"क्या काम है?" वह खिड़की पर से ही चिल्लाकर बोली।

पुरुष ने खिड़की से अपना चेहरा सटा दिया और ल्यूबा ने उसे पहचान लिया। ख़ून उसके चेहरे पर दौड़ गया। उसने सोचा, वह यहाँ मौजूद है, ऐसे वक़्त, उसकी ज़िन्दगी के ऐसे मुश्किल क्षण में!

उसे याद नहीं वह कैसे कमरे से झपटकर निकली, ड्योढ़ी से बिजली की गति से नीचे उतरी और कृतज्ञतापूर्ण, दुखी हृदय लिये अपनी मज़बूत, लचीली बाँहें उस लड़के के गले में डाल दीं और उसे कसकर छाती से चिपका लिया। उसका चेहरा अभी भी आँसुओं से तर था और अपनी माँ की गोद से निकलकर आये उसके अधनंगे शरीर की गरमाहट ज्यों की त्यों बनी हुई थी।

"जल्दी, जल्दी!" वह बोली और उससे अलग होकर उसे दरवाज़े की ओर ले जाने लगी। तब उसे उसके साथियों की याद हो आयी। "और कौन है तुम्हारे साथ?" उसने पूछा और लड़कियों की ओर ग़ौर से देखा। "ओल्गा! नीना!... अरे, मेरी प्यारियो!" उसने दोनों को अपनी मज़बूत बाँहों में कस लिया और बारी-बारी से उन पर चुम्बनों की बौछार करने लगी। "अन्दर चलो, अन्दर झटपट," वह हड़बड़ी में फुसफुसाती हुई बोली।

अध्याय 27

वे दहलीज़ पर ही रुक गये। वे इतने गन्दे और धूल में सने थे कि उन्हें अन्दर जाने में भी संकोच हो रहा था। सेर्गेई लेवाशोव की दाढ़ी बढ़ी हुई थी और वह ऐसे कपड़े पहने था, जो प्रायः लारी-ड्राइवर या मिस्त्री पहनते हैं। ओल्गा और नीना गठे हुए बदन की थीं, दोनों के कांसे चेहरे थे, काले बाल और उन पर बिखरी हुई धूल, काली-काली एक-सी पोशाकें, पीठ पर सफ़री झोले। नीना दोनों से लम्बी और ज़्यादा गठीली थी।

ये दोनों इवान्त्सोव चचेरी बहनें थीं। चूँकि उनका कुलनाम पेर्वोमाइका वाली उन इवानीख़िन बहनों लील्या और तोन्या से बहुत मिलता-जुलता था, इसलिए लोगों को भ्रम होने लगता। वस्तुतः उनके विषय में यह मशहूर हो गया था कि यदि आपको दोनों इवान्त्सोव बहनें दिख जायें और उनमें से एक गोरे रंग की हो, तो वे इवानीख़िन बहनें होंगी। (लील्या इवानीख़िन ने लड़ाई के शुरू से ही फ़ल्डशर के रूप में काम किया था और अधिकारियों का कहना था कि उसका कोई पता-ठिकाना नहीं मिल रहा है। यही लील्या अधिक गोरी थी।)

ओल्या और नीना इवान्त्सोव का मकान शेव्त्सोव परिवार के मकान से दूर न था और उनके पिता उसी खान में ग्रिगोरी इल्यीच के साथ काम करता था।

"कहाँ से आ रही हैं, प्यारी?" अपने सफ़ेद हाथ हिलाते हुए ल्यूबा ने पूछा। उसने सोचा था कि इवान्त्सोव नोवोचेर्कास्क से लौट रही हैं, जहाँ बड़ी चचेरी बहन ओल्गा एक उद्योग विद्यालय में शिक्षा पा रही थी। अजीब बात यह थी कि सेर्गेई लेवाशेव नोवोचेर्कास्क में कैसे आ पहुँचा?

"जहाँ पहले थे, वहाँ हम अब नहीं हैं," अपने सूखे हुए होंठों पर मुसकान लाते हुए ओल्गा ने सावधानी से उत्तर दिया। इस मुसकान ने उसकी धूलभरी भौंहों और बरौनियोंवाले चेहरे को और भी विकृत कर दिया था। "तुम बता सकती हो कि हमारे घर में जर्मन हैं या नहीं?" उसने पूछा और उसकी आँखें कमरे में चारों ओर तेज़ी से दौड़ने लगीं। यह आदत उसकी घुमक्कड़ी के दिनों में पड़ी थी।

"हाँ, वहाँ जर्मन थे, वैसे ही जैसे यहाँ। आज सुबह वे कूच कर गये," ल्यूबा बोली।

ओल्गा की निगाहें दीवार पर लगे हिटलर के चित्र पर पड़ीं और नफ़रत व तिरस्कार से उसका चेहरा और भी विकृत हो गया।

"यह यहाँ किसलिए? सुरक्षा के लिए?"

"हुँह, लटका रहने दो उसे वहीं," ल्यूबा बोली, "कुछ खाना-पीना चाहती हो?"

"नहीं, धन्यवाद! अगर हमारे मकान से जर्मन निकल गये हैं, तो हम घर ही जायेंगी।"

"और अगर नहीं निकले हैं, तो भी तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं! है न? दोन और दोनेत्स में जर्मनों द्वारा भगाये जाने के बाद अब बहुत-से लोग घर वापस आ रहे हैं। बस सीधे यही कह देना कि तुम नोवोचेर्कास्क में अपने सम्बन्धियों से मिलने गयी थीं और अब घर आयी हो," ल्यूबा जल्दी-जल्दी कह गयी।

"हम डरती नहीं! तुम जैसा कह रही हो, हम वैसा ही कह देंगी," ओल्गा ने संयत स्वर में कहा।

इस सारी बातचीत के दौरान नीना चुप रही। परन्तु उसकी आँखों में अवज्ञा का भाव था और इसी दृष्टि से वह ओल्गा और ल्यूबा को देख रही थी। सेर्गेई ने अपना मटमैला झोला फ़र्श पर रख दिया था और अब स्टोव से सटकर खड़ा, हाथ पीछे बाँधे और आँखों में हल्की-सी मुसकान लिये ल्यूबा को घूर रहा था।

"वे नोवोचेर्कास्क नहीं गये थे," ल्यूबा ने मन ही मन कहा।

इवान्त्सोव बहनें चली गयीं। ल्यूबा ने खिड़की से ब्लैक-आउट का पर्दा उतारा और मेज़ के ऊपर लटकता हुआ खनिकोंवाला लैम्प बुझा दिया। कमरे की सारी चीज़ों

– खिड़की, फ़र्नीचर और चेहरों – पर झुटपुटा छा गया।

"हाथ मुँह धोना है तुम्हें?"

"बता सकती हो, हमारे घर में जर्मन हैं या नहीं?" सेर्गेई ने पूछा। ल्यूबा पानी की बाल्टी, चिलमची, लोटा और साबुन लाने के लिए कमरे और ड्योढ़ी में आ-जा रही थी।

"मैं ठीक-ठाक नहीं जानती। वे आते-जाते रहते हैं। चलो अपनी वर्दी उतार डालो। शर्माओ नहीं!"

सेर्गेई के शरीर पर इतना मैल जम चुका था कि उसके हाथों और चेहरे पर से चिलमची में गिरता हुआ पानी बिलकुल काला लग रहा था। किन्तु ल्यूबा को तो उसके गठीले और मज़बूत हाथों और उसके शरीर की पुरुष-सुलभ हरकत देखने में ही सुख मिल रहा था। जब वह हाथों में साबुन लगाता, हाथ मलता और पानी लेने के लिए अँजलि बनाता, तो ल्यूबा को बड़ा अच्छा लगता। उसकी गरदन धूप में साँवली हो चुकी थी। उसके कान बड़े-बड़े और सुघड़ थे। उसके होंठों की गठन से पौरुष झलकता था। नाक के बाँसे के पास उसकी भौंहें घनी हो गयी थीं। बाँसे पर भी हल्के रोयें निकल आये थे। हाँ, भौंहें कनपटी की ओर धनुषाकार होकर छितर गयी थीं। उसके माथे पर गहरी झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। और जब वह अपने बड़े-बड़े हाथों से चेहरा धोता हुआ, उसकी दिशा में एक नज़र डालता हुआ मुस्कुराता, तो ल्यूबा झूम उठती।

"ये इवान्त्सोव बहनें तुम्हें कहाँ मिल गयीं?" उसने पूछा।

उसने अपने चेहरे पर पानी छिड़का, कुल्ला किया, खखारा पर चुप रहा।

"अब तुम मेरे पास आये हो, इसके माने हैं कि तुम मुझ पर विश्वास करते हो! तुम मुझसे क्या छिपा रहे हो? आख़िर हम एक ही तरकश के तीर हैं," ल्यूबा धीमी और लगावट की आवाज़ में बोली।

"मुझे तौलिया देना," उसने कहा। "धन्यवाद!"

ल्यूबा आगे कुछ न बोली और न उसने कोई सवाल ही किया। उसकी नीली आँखों में रुखाई का भाव आ गया। किन्तु वह सेर्गेई की सारी ज़रूरतों पर बराबर ध्यान देती रही – स्टोव जलाकर उस पर केतली चढ़ायी, मेज़ पर खाना परोसा और एक सुराही में वोद्का ढाल दी।

"महीनों से ऐसी कोई चीज़ पीने को नहीं मिली," वह बोला और दाँत निपोरने लगा। उसने थोड़ी वोद्का गले के नीचे उतारी और खाने पर टूट पड़ा।

उजाला फैल गया था। पूर्वी क्षितिज के हल्के, भूरे कुहासे के उस ओर आकाश पर छिटकती हुई गुलाबी, उत्तरोत्तर निखरती हुई उषा सुनहरा रंग पकड़ने लगी थीं।

“मुझे आशा नहीं थी कि तुम यहाँ मिलोगी। मैं तो यहाँ संयोग से आ पहुँचा। तो यह हाल है,” उसने जैसे बुलन्द आवाज़ में सोचते हुए धीरे-धीरे कहा।

उसके शब्दों में जैसे इस प्रश्न की अभिव्यक्ति हो रही थी – “आख़िर बात क्या है कि कभी वायरलेस टेलेग्राफ़ी कोर्स में उसके साथ-साथ ट्रेनिंग पानेवाली यह लड़की यहाँ, घर में बैठी है?” परन्तु ल्यूबा ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसे यह देखकर दुख हो रहा था कि जब वह वास्तव में यंत्रणा भोग रही थी और उसे चारों ओर से परेशानी घेरे हुए थी, तो भी सेर्गेई उसे वही सनकी तितली समझ रहा था, जैसा वह उसे पहले समझता था।

“यहाँ अकेली रहती हो? तुम्हारे माता-पिता कहाँ है?” सेर्गेई ने पूछा।

“इससे तुम्हें कोई मतलब रह गया है क्या?” उसने रुखाई से जवाब दिया।

“कुछ हो गया है क्या? क्या बात है?”

“खाना खाओ!” वह बोली।

कुछ क्षणों तक सेर्गेई ने उसकी ओर देखा, फिर गिलास में वोद्का डाली, उसे गले तले उतारा और चुपचाप खाना खाता रहा।

“धन्यवाद!” खाना समाप्त कर उसने कहा और आस्तीन से मुँह पोंछा। ल्यूबा ने देखा कि मारे-मारे फिरने के फलस्वरूप वह कितना रूखा हो गया है, किन्तु उसे दुख उसकी रुखाई से नहीं, इस बात से हुआ कि वह उसका विश्वास नहीं करता।

“मेरा ख़्याल है, घर में तम्बाकू या सिगरेट तो होगी नहीं?” उसने पूछा।

“तुम्हारे लिए कोई इन्तज़ाम करूँगी,” वह रसोई में गयी और पिछले साल की फ़सल के तंबाकू की कुछ पत्तियाँ उठा लायी। उसका पिता नियमित रूप से कुछ तम्बाकू उगाता था। वह साल में कई फ़सलें काटकर अपनी ज़रूरत लायक़ पत्ती सुखा लेता और पाइप के लिए उस्तरे से उसके बारीक-बारीक टुकड़े कर लेता।

तम्बाकू के धुएँ में डूबा हुआ सेर्गेई और ल्यूबा, दोनों चुपचाप मेज़ पर बैठे रहे। पिछला कमरा, जिसमें ल्यूबा की माँ थी, पहले ही की तरह शान्त था। किन्तु ल्यूबा जानती थी कि माँ सोयी नहीं होगी, बल्कि अभी तक रो रही होगी।

“लगता है, घर में कोई परेशानी है। यह बात तुम्हारे मुँह पर ही झलक रही है! ऐसी तो पहले तुम कभी नहीं दिखती थीं,” सेर्गेई धीरे-से बोला। उसने ल्यूबा को प्यारभरी नज़र से देखा, जो उसके सुन्दर किन्तु रूखे चेहरे पर बड़ी विचित्र लगती थी।

“आजकल सभी दुःखी हैं।” ल्यूबा बोली।

“काश तुम जान सकतीं कि मैंने कितना ख़ून इन्हीं आँखों से देखा है!” तम्बाकू के धुएँ के बादल उड़ाता हुए सेर्गेई बोला। उसकी आवाज़ में तड़प थी। “हमें पैराशूट

से स्तालिनो क्षेत्र में उतारा गया था। उस समय तक इतने लोगों को गिरफ़्तार किया जा चुका था कि हम हैरान थे कि क्या हमारे मेल-मुलाक़ात के पतों की अब भी कोई उपयोगिता रह गयी है। लोगों को गिरफ़्तार किया जाता था इसलिए नहीं कि उनके साथ ग़द्दारी की गयी थी, बल्कि इसलिए कि जर्मन हर किसी को, जिस पर उन्हें ज़रा भी शक हो जाता था, फिर चाहे वह दोषी हो या निर्दोष, धर लेते थे और इस प्रकार वे हजारों लोगों को साथ-साथ जाल में फँसाते थे। खानों के गड्ढे लाशों से भरे पड़े हैं," बड़ी भावुकता से सेर्गेई बोला। "हम लोग अलग-अलग काम करते रहे और कुछ समय तक सम्पर्क स्थापित किये रहे, परन्तु बाद में हमें एक दूसरे का कोई निशान न मिला। मेरा सहायक पकड़ लिया गया था। दुश्मनों ने उसके हाथ तोड़ डाले थे और ज़बान काट ली थी और यदि मुझे संयोग से स्तालिनो में नीना न मिल गयी होती और मुझे निकल भागने का हुक्म न मिला होता, तो मेरा भी काम तमाम हो गया होता। जिस समय स्तालिनो प्रादेशिक समिति क्रास्नोदोन में ही थी, तभी नीना और ओल्गा को सन्देशवाहिका चुना गया था – इस बार वे दूसरी दफ़ा स्तालिनो में आयी थीं। फिर यह ख़बर आयी कि जर्मन दोन पहुँच गये हैं और अब लड़कियों को यह पता चल गया कि जिन लोगों ने उन्हें वहाँ भेजा है, वे अब क्रास्नोदोन में नहीं है। मुझे जो निर्देश मिले थे, उनका पालन करते हुए मैंने अपना ट्रांसमीटर ख़ुफ़िया प्रादेशिका समिति के आपेरटर को सौंपा और हम तीनों ने साथ-साथ घर जाने का निश्चय किया। और इस तरह हम चले आये। मुझे तुम्हारी बेहद चिन्ता रही," उसने सहसा कहा और उसके हृदय की गहराइयों से एक आह निकल गयी। "मुझे यह भी ख़याल आया – मान लो तुम भी मोर्चे के पीछे उतार दी जातीं और इस समय अकेली होतीं? या मान लो तुम पकड़ ली जातीं और जर्मन तुम्हारे शरीर और आत्मा पर अत्याचार करते होते!" उसने अपने पर जब्र रखते हुए धीरे-से कहा। वह उसे जिस दृष्टि से देख रहा था, उसमें अभी कोमलता या सहानुभूति नहीं बल्कि आवेश था।

"सेर्गेई, सेर्गेई," उसने मेज़ पर अपनी बाँहें रखीं और उन पर अपना सुनहरे बालोंवाला सिर टिका लिया। सेर्गेई का बड़ा नसदार हाथ उसके सिर और बाँहों को सहलाने लगा।

"मैं यहाँ रह गयी हूँ – तुम तो जानते हो क्यों। मुझसे क्या गया था कि मैं निर्देशों की प्रतीक्षा करूँ। अब कोई एक महीना होनेवाला है और अभी तक न कोई आया ही है, न ही मुझे निर्देश मिले हैं," ल्यूबा ने बिना सिर उठाये धीरे-से कहा, "यहाँ जर्मन अफ़सर मेरे इर्द-गिर्द, शहद पर मक्खियों की तरह भनभनाते रहते हैं। यहाँ ज़िन्दगी में पहली बार मैं अपने को उस रूप में दिखाती रही हूँ, जो मेरे चरित्र से मेल नहीं खाता। मुझे बेवक़ूफ़ बनकर उन्हें बराबर चकमा देना पड़ा है। यह भावना कितनी

दुखदायी है। मेरा तो दिल रो उठता है। फिर कल कुछेक विस्थपित लोगों ने हमें बताया कि दोनेत्स के तट पर एक हवाई हमले में मेरे पिता की मृत्यु हो गयी," ल्यूबा बोली और अपने लाल-लाल होंठ काट लिये।

सूर्य स्तेपी में उदय हो रहा था। उसकी चमचमाती हुई किरणें ओससिक्त छतों से प्रतिबिम्बित हो रही थीं। ल्यूबा ने अपना सिर हिलाया और अपने घुँघराले बाल झटककर पीछे किये।

"तुम्हें जाना होगा। तुमने अपने लिए क्या योजना बनायी है?"

"वही जो तुमने बनायी है। तुम्हीं ने तो कहा था कि हम एक ही तरकश के तीर हैं! कहा था न?" सेर्गेई बोला और उसने दाँत निकाल दिये।

ल्यूबा सेर्गेई को आँगन से होकर पिछली गलियों में छोड़ आयी। फिर लौटकर उसने जल्दी से हाथ-मुँह धोये और साधारण से वस्त्र पहन लिये। उसे गोलुब्यात्निकी मुहल्ले की ओर बूढ़े इवान कोन्द्रातोविच के घर की दिशा में जाना था।

वह ठीक समय पर निकल गयी थी। दरवाज़े पर भयानक गड़गड़ाहट होने लगी। मकान वोरोशीलोवग्राद मार्ग के निकट था – जर्मन वहाँ अड्डा जमाने के लिए पहुँच रहे थे।

वाल्को ने सारा दिन, बिना खाये-पिये, घासवाली कोठरी में ही बिताया। इस बीच ल्यूबा को उससे मिलने का कोई अवसर तक न मिल सका था। जब रात हुई, तो ल्यूबा अपनी माँ के कमरे की खिड़की से चढ़कर वाल्को के पास आयी और उसे 'सेन्याकी' मुहल्ले में ले गयी, जहाँ उसे एक परिचित विधवा के घर पर कोन्द्रातोविच से मिलना था।

यहीं वाल्को को कोन्द्रातोविच और शुल्गा की भेंट की सारी कहानी मालूम हुई। वह शुल्गा को उसके बचपन से ही जानता था, क्योंकि दोनों ही क्रास्नोदोन से आये थे। पिछले कुछ वर्षों से तो उससे उसकी जान-पहचान और भी गहरी हो गयी थी, क्योंकि इस समय वे एक दूसरे से क्षेत्रीय कार्यों के सिलसिले में मिले थे। वाल्को के मस्तिष्क में किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं रह गया था – उसे पूरा विश्वास था कि शुल्गा उन लोगों में से एक है, जो क्रास्नोदोन में ख़ुफ़िया कार्रवाई करने के लिए रह गये हैं। किन्तु इस समय प्रश्न यह था कि उससे मिला कैसे जाये।

"तो उसने तुम्हारा विश्वास नहीं किया। नहीं किया न?" भौंड़ी-सी हँसी हँसते हुए वाल्को ने कोन्द्रातोविच से पूछा। शुल्गा ने उस तरह का व्यवहार क्यों किया, यह वाल्को की समझ में न आ रहा था। "यह उसकी बेवक़ूफ़ी थी। और तुम ख़ुफ़िया काम करनेवाले किसी दूसरे को नहीं जानते?"

"नहीं।"

"तुम्हारा बेटा क्या करेगा?" वाल्को ने उदासी से आँख मिचकाते हुए प्रश्न किया।

"कौन जाने क्या करेगा?" कोन्द्रातोविच बोला और आँखें झुका लीं। "मैंने सीधे-सीधे उससे पूछा था, 'तुम जर्मनों के लिए काम करोगे? मैं तुम्हारा पिता हूँ, पिता। इसलिए मुझे सच्ची बात बता दो, ताकि मैं जान सकूँ कि तुम किसका पक्ष लोगे।' उसने कहा, 'मैं बेवक़ूफ़ लगता हूँ क्यों? काम? बिना काम के भी मेरी गुज़र हो सकती है।'"

"तो यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि उसका दिमाग़ तेज़ है। वह अपने बाप की तरह नहीं," वाल्कों हँस दिया, "तुम उसका उपयोग कर सकते हो – तुम खुले आम यह कह सकते हो कि वह सोवियत न्यायालय के सामने पेश हो चुका है, इससे उसे कोई हानि न होगी और जर्मन तुम्हें भी शान्ति से रहने देंगे।"

"उफ, चाचा अन्द्रेई, मैंने यह सोचा भी न था कि तुम मुझे ऐसी वाहियात बातें सिखाने की कोशिश करोगे।" कोन्द्रातोविच की धीमी आवाज़ में रोष झलक रहा था।

"मेरे भाई, सुनो, तुम बुजुर्ग आदमी हो, अब तक यह तो समझ ही गये होगे कि जर्मनों को छल-कपट के बिना नहीं हराया जा सकता!... तो तुमने काम शुरू कर दिया?"

"कैसा काम? खान तो उड़ा दी गयी!"

"लेकिन क्या तुम उनके हुक्म के मुताबिक़ काम पर पहुँचे?"

"मैं तुम्हारी बात ठीक-ठीक नहीं समझता, साथी डाइरेक्टर..." कोन्द्रातोविच परेशान हो गया, क्योंकि जो कुछ वाल्को ने कहा था वह ज़िन्दगी के उस ढर्रे के बिलकुल विपरीत था, जिसके अनुसार उसने जर्मनों के अधीन जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया था।

"इसका अर्थ है, तुम आज्ञानुसार काम पर नहीं पहुँचे। तुम अब काम पर जाना शुरू कर दो," वाल्को धीरे-से बोला, "काम के कई तरीक़े होते हैं और हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हमारे लोग सुरक्षित रहें।"

वाल्को दिन भर उसी विधवा के घर रुका रहा, किन्तु रात में अन्यत्र चला गया। उसका पता सिर्फ़ एक आदमी जानता था – कोन्द्रातोविच, जिसका वाल्को पूरा विश्वास करता था।

वाल्को ने अगले कुछ दिन यह पता चलाने में बिताये कि जर्मन लोग नगर में क्या कर रहे हैं? और इस बीच वह पार्टी के कई मेम्बरों से और अपनी जान-पहचान के कुछ ग़ैर पार्टीवालों से भी सम्पर्क क़ायम करने में लगा रहा। इस कार्य में कोन्द्रातोविच, ल्यूबा, सेर्गेई लेवाशोव और इवान्त्सोव बहनों ने, जिनकी सिफ़ारिश

ल्यूबा ने की थी, उसकी बड़ी सहायता की। किन्तु उसे शुल्गा या ऐसे किसी अन्य व्यक्ति का पता न चल सका, जो खुफ़िया कार्रवाई करने के लिए रह गये थे। उसे पता लगा कि अकेली ल्यूबा ही एक ऐसा साधन है, जिनके माध्यम से वह स्थानीय संगठन तक पहुँच सकता है। किन्तु उसके व्यवहार और उसकी प्रकृति से उसने यह समझ लिया था कि वह गुप्त समाचार प्राप्त करने के काम में लगी है और जब तक वह उचित अवसर नहीं आता, तब तक वह उसे कुछ भी नहीं बतायेगी। उसने स्वतंत्र रूप से कार्य करने का निश्चय किया, इस आशा से कि एक ही मंज़िल तक जानेवाले सारे धागे आगे-पीछे कहीं मिलेंगे ही और ल्यूबा को ओलेग कोशेवोई से सम्पर्क स्थापित करने भेजा, जो अब उसके लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता था।

"क्या मैं स्वयं चाचा अन्द्रेई से मिल सकता हूँ?" अपनी उत्तेजना को छिपाते हुए ओलेग ने पूछा।

"नहीं, तुम उनसे नहीं मिल सकते," अधरों पर गूढ़ मुस्कुराहट बिखेरती हुई ल्यूबा बोली, "देखो न, हमारे मामले का सम्बन्ध सचमुच प्रेम का है। नीना, इधर आओ और इस युवक से मिलो।"

ओलेग और नीना ने एक दूसरे से हाथ मिलाये और दोनों को एक दूसरे के सामने कुछ झेंप-सी लगी।

"कोई बात नहीं, शीघ्र ही तुम एक दूसरे को जानने-समझने लगोगे," ल्यूबा बोली, "अब मैं तुमसे विदा लूंगी। तुम दोनों हाथ में हाथ डाले कहीं टहल आओ और इस सम्बन्ध में दिल खोलकर अपने मन की कह डालो कि तुम लोग किस प्रकार ज़िन्दगी बसर करना चाहते हो... और मुझे आशा है कि अपने में रमने में तुम्हें सुख मिलेगा।" और आँखों में शरारतभरी मुस्कान लिये वह बाहर निकल गयी और उसकी भड़कीली पोशाक धूप में चमचमा उठी।

दोनों आमने-सामने खड़े रहे – ओलेग की आँखें लज्जा से झुकी जा रही थीं, उसे झेंप लग रही थी, जब कि नीना के चेहरे पर अवज्ञा एवं दुराग्रह के भाव झलक रहे थे।

"हम यहाँ नहीं रह सकते," उसने संयम से किन्तु ज़ोर देते हुए कहा, "चलो, यहाँ से कहीं चले जायें, और बेहतर यह होगा कि तुम मेरे हाथ में हाथ डालकर चलो।"

मामा कोल्या बाहर ही चहलक़दमी कर रहा था। जब उसने देखा कि उसका भानजा किसी अनजानी लड़की के हाथ में साथ डाले बाग़ में से निकलकर जा रहा है, तो उसके चेहरे पर, जो सदा भावशून्य-सा बना रहता था, अत्यधिक आश्चर्य की रेखाएँ खिंच गयीं।

ओलेग और नीना दोनों ही इतने तरुण और अनुभवहीन थे कि बहुत समय तक तो उन्हें स्वयं बड़ा विचित्र-सा लगता रहा। जब कभी उनके शरीर अचानक एक दूसरे से टकरा जाते, तो उनकी ज़बान बन्द हो जाती, एक दूसरे को थाम रहे उनके हाथ जलते अंगारों जैसे महसूस होने लगते।

पिछली रात लड़कों द्वारा तय की गयी योजना के अनुसार ओलेग को पार्क के सादोवाया मार्ग के कोने पर टोह लेने का काम करना था और इसीलिए वह नीना को उसी दिशा में ले गया। जैसे ही वे फाटक से बाहर निकले कि नीना ने काम की बात शुरू कर दी और इस बात की चिन्ता न की कि सादोवाया मार्ग के और पार्क से लगे सभी मकानों में जर्मन रह रहे थे। वह धीरे-धीरे बातचीत कर रही थी, मानो किसी अन्तरंग विषय पर बहस कर रही हो।

"तुम स्वयं चाचा अन्द्रेई से नहीं मिल सकोगे – तुम मेरे ही ज़रिए से उनसे सम्पर्क रखोगे। तुम बुरा न मानना। मैं खुद भी उनसे नहीं मिली हूँ। चाचा अन्द्रेई जानना चाहते है कि तुममें से कोई भी व्यक्ति यह पता लगा सकता है कि हमारे किन-किन लोगों को गिरफ़्तार कर यहाँ की जेल में रखा गया है।"

"यह काम हमारा एक साथी कर रहा है। वह बड़ा तेज़ है," ओलेग ने तुरन्त जवाब दिया।

"चाचा अन्द्रेई चाहते हैं कि तुम जो कुछ जानते हो मुझे बता दो, हमारे लोगों के बारे में भी और जर्मनों के बारे में भी।"

ओलेग ने खुफ़िया काम करनेवाले एक सदस्य के बारे में, जो इग्नात फ़ोमीन की ग़द्दारी की वजह से जर्मनों के हाथ में पड़ गया था, त्युलेनिन से जो कुछ सुना था, वह सब कुछ उसने नीना को बता दिया। फिर उसने वे सब बातें भी बतायीं, जो उस रात वोलोद्या ओस्मूख़िन ने उससे कही थीं और वे बातें भी, जो ज़ेम्नुख़ोव ने उन ख़ुफ़िया काम करनेवालों के बारे में कहीं थीं, जो वाल्को की ढूँढ़ने के लिए प्रयत्नशील थे। तत्पश्चात् ओलेग ने नीना को जोरा अरुत्युन्यान्त्स का पता दिया।

"चाचा अन्द्रेई जोरा को अपने पते-ठिकाने के बारे में सब कुछ बता सकता है। वह भी जोरा को जानता है। और जोरा वोलोद्या ओस्मूख़िन की मार्फ़त सारी सूचना सम्बद्ध व्यक्ति को दे देगा। और हाँ, इधर बातचीत करते समय मैंने," ओलेग मुस्कुराया, "काफ़ी दूरी पर, स्कूल की दाहिनी ओर तीन विमान-मार तोपें गिनी हैं, जिनसे लगी हुई एक पनाहगाह है, लेकिन वहाँ लारियाँ नहीं दिखायी पड़तीं!"

"और स्कूल की छत पर लगी चार नालियोंवाली मशीनगन और दो जर्मन?" वह सहसा पूछ बैठी।

"मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया," वह आश्चर्य से बोला।

"और उस छत से सारा पार्क नज़र आता है," नीना ने कुछ भर्त्सना के स्वर में कहा।

"तो तुम भी इन सारी चीज़ों को ध्यान से देख चुकी हो? तुम्हें भी ऐसा करने के निर्देश दिये गये हैं क्या?" ओलेग की आँखों में चमक आ गयी और वह नीना से भेद की बातें जानने की कोशिश करने लगा।

"नहीं, नहीं, यह तो मेरी आदत है," उसने अपने को सम्भाला और अपनी भारी और धनुषाकार भौंहों के नीचे से उसे चुनौती देती हुई-सी दृष्टि से देखने लगी। शायद उसने ज़रूरत से ज़्यादा खुलकर बात कह दी – वह सोचने लगी। किन्तु ओलेग अभी इतना अनुभवी न था कि किसी बात पर सन्देह करता।

"ओहो! यहाँ तो लारियाँ हैं, ढेर सारी लारियाँ!" ओलेग ने ख़ुशी से कहा, "मैं ख़न्दक़ों में खड़ी हैं। उनकी सिर्फ़ छतें दीख रही हैं। और वहाँ उनका फ़ौजी रसोईघर भी है, जिसमें से धुआँ निकल रहा है। देखो न? लेकिन तुम उस तरफ़ देखो मत!"

"देखने में कोई तुक भी नहीं! जब तक छत पर पर्यवेक्षण स्थल है, तब तक टाइप खोदकर निकालने की कोई सम्भावना नहीं," वह धीरे-से बोली।

"ठीक कहती हो..." ओलेग ने कहकहा लगाया। वह बहुत ख़ुश हो उठा था।

अब दोनों एक दूसरे से हिल-मिल गये थे। वे मज़े से घूमते रहे। नीना की भरी हुई गोल बाँह पूरे विश्वास के साथ उसके हाथ में पड़ी थी। अब पार्क पीछे छूट गया। उनकी दाहिनी ओर, प्रीफ़ैब्रिकेटेड मकानों के सामने कतारों में सभी क़िस्म की जर्मन लारियाँ और कारें खड़ी थीं, एक चलता-फिरता स्टेशन था, और एक प्राथमिक उपचार की बस। चारों ओर जर्मन सैनिक मँडरा रहे थे। उनकी बायीं ओर एक ख़ाली मैदान था और कुछ दूरी पर बैरक-सी लगनेवाली पत्थर की एक इमारत थी। उसके पास एक जर्मन सार्जेण्ट कन्धे पर नीली पट्टियाँ लगाये, जिनके किनारों पर सफ़ेद मग़ज़ी लगी थी, जर्मन बन्दूकों से लैस रूसी नागरिकों के एक छोटे-से दल से क़वायद करा रहा था। वे लोग पंक्तियों में खड़े हो रहे थे, आगे-पीछे आ-जा रहे थे, ज़मीन पर रेंग रहे थे और आमने-सामने की कृत्रिम लड़ाई में भाग ले रहे थे। सभी अधेड़ उम्र के थे। सभी की बाँहों पर स्वस्तिक लगा हुआ था।

"जर्मन सिपाही! वह हम जैसे लोगों को पकड़ने के लिए पुलिस के सिपाही तैयार कर रहा है," नीना बोली। उसकी आँखों में एक कठोर-सी चमक थी।

"तुम्हें कैसे मालूम है?" ल्युलेनिन की बात याद करते हुए उसने पूछा।

"मैं इन्हें पहले भी देख चुकी हूँ।"

"कितने दुष्ट हैं ये सुअर!" ओलेग वितृष्णा से बोला, "उन्हें तो एक-एक करके गोली से उड़ा देना चाहिए।"

"बेशक उनके साथ यही होना चाहिए!"

"तुम छापेमार बनना चाहती हो?" सहसा ओलेग ने पूछा।

"हाँ।"

"लेकिन उसके माने जानती हो? छापेमार के काम की बाहर से कोई शान-शौकत नहीं होती, किन्तु वह कितना महान होता है! वह एक फ़ासिस्ट को मौत के घाट उतारता है, फिर दूसरे को, फिर सौवें को – लेकिन हो सकता है कि एक सौ एकवाँ उसी को ख़त्म कर दे। वह एक काम पूरा करता है, फिर दूसरा, फिर दसवाँ। और फिर कौन जाने ग्यारवाँ काम पूरा करते समय उसे किस मुसीबत का सामना करना पड़े। इस कार्य में कितने आत्मत्याग की आवश्यकता होती है इसका तुम्हें कोई पता नहीं। उसके लिए उसके अपने जीवन का कोई महत्व नहीं। उसके लिए जो कुछ है, वह है उसकी मातृभूमि। जब उसे मातृभूमि के लिए काम करना पड़ता है, तो वह अपने जीवन तक को कुछ नहीं समझता। और वह न तो किसी साथी को बेचता ही है, न उसके साथ ग़द्दारी ही करता है। ओह, मैं ख़ुद छापेमार सैनिक होना चाहता हूँ," ओलेग बोला। उसका उत्साह इतना सरल, इतना सच्चा और गहरा था कि नीना ने अपनी आँखें उसकी ओर उठायीं। उन आँखों में झलकता हुआ भाव सरल भी था और विश्वासपरक भी।

"सुनो, तो क्या हम सदा किसी काम की बात पर विचार करने के लिए ही एक दूसरे से मिला करेंगे?" सहसा ओलेग ने पूछा।

"नहीं तो! क्यों? जब हमारे पास और कुछ करने को न हो, तब भी हम मिल सकते हैं," कुछ हैरान होकर नीना बोली।

"तुम रहती कहाँ हो?"

"अगर इस समय तुम्हें कोई काम न हो, तो मुझे घर ही पहुँचा दो। वहाँ तुम मेरी चचेरी बहन ओल्गा से भी मिल सकते हो," वह बोली, किन्तु उसे यह विश्वास न था कि वह यह चाहती भी थी या नहीं।

दोनों चचेरी बहनें वोस्मीदोमिकी मुहल्ले में रहती थीं। दोनों बहनों के परिवार एक ही प्रीफ़ैब्रिकेटेड मकान के आधे-आधे भाग में रह रहे थे। नीना ओलेग को भीतर ले गयी और उसे अपनी माँ से बातें करने को छोड़ दिया।

ओलेग का पालन-पोषण अपने उक्राइनी परिवार में हुआ था, जिस में उसे बड़े-बूढ़ों का आदर करने की शिक्षा दी गयी थी। इसके अतिरिक्त वह वयस्कों के बीच अधिक रहा था, इसलिए उसने बातूनी वारवारा दिमीत्रियेव्ना को बड़ी आसानी से बातों में लगा लिया। वारवारा दिमीत्रियेव्ना देखने में बिलकुल युवा लगती थी। वह चाहता था कि नीना की माँ उसे चाहे, पसन्द करे।

जब तक नीना लौटकर आयी, तब तक ओलेग इवान्त्सोव परिवारों के बारे में सब कुछ जान चुका था। नीना के पिता और ओल्गा के पिता सगे भाई थे, खानों में काम करते थे और इस समय मोर्चे पर थे। दोनों अपने जन्मस्थान ओर्योल प्रदेश में मालदार किसानों के यहाँ मज़दूर के रूप में काम किया करते थे। बाद में वे दोनबास चले आये और उन्होंने उक्राइनी लड़कियों से शादियाँ कर लीं। ओल्गा की माँ चेर्नीगोव से आयी थी, किन्तु वारवारा दिमीत्रियेव्ना रस्सिप्नोये गाँव की, यहाँ की एक सीधी-सादी कन्या थी। जवानी के दिनों में उसने भी खानों में काम किया था और उसका उस पर असर पड़ा था। वह साधारण गृहस्वामिनी से भिन्न थी। वह एक निडर, आत्मनिर्भर स्वतंत्रताप्रिय स्त्री थी और सोच-विचार से काम लिया करती थी : उसने एक ही नज़र में यह भाँप लिया था कि ओलेग बिना किसी मतलब से नहीं आया। फलतः, उसने उसे बड़ी होशियारी से परखा और उसके बारे में राई-रत्ती सभी कुछ जान लिया और ओलेग को ज़रा भी सन्देह न हो सका।

वे एक-दूसरे से बहुत मिलते-जुलते थे। लौटने पर नीना ने उन्हें एक दूसरे के पास रसोईघर में एक बेंच पर बैठे हुए पाया। दोनों बड़े खुश थे। ओलेग गदगद होकर अपने पैरों को झुलाता और उँगलियों के पोरों को मलता हुआ इतने ज़ोर से क़हक़हे लगा रहा था कि वारवारा दिमीत्रियेव्ना तक बिना खिलखिलाये न रह सकी। नीना ने उनकी ओर देखा और हाथ पर हाथ मारकर हँसने लगी। तीनों इतने ख़ुश, इतने मगन थे, मानो वर्षों से घनिष्ठ मित्र हों।

नीना ने कहा कि ओल्गा उस समय बड़ी व्यस्त है, पर वह यह ज़रूर चाहती है कि ओलेग उसकी प्रतीक्षा करे। दो घण्टे गुज़र गये, फिर भी ओल्गा नहीं दिखायी दी और यह दो घण्टे कैसे बीते, यह वह जान ही न सका – वह, निश्चिन्त, बातों में उलझा रहा। फिर भी ये घण्टे वस्तुतः निश्चयात्मक थे – इन घण्टों में क्रास्नोदोन के खुफ़िया कार्यों की सभी कड़ियाँ एक-एक कर जोड़ी गयी थीं। इस बीच ओल्गा किसी प्रकार वोस्मीदोमिकी से दूर, लघु शंघाई तक गयी। उसने वाल्को से उसके नये घर में बातचीत की और नीना ने ओलेग से जो कुछ भी सूचना प्राप्त की थी, वह सब वाल्को को बता दी।

जब ओल्गा अपनी बहन के घर आयी, तो वहाँ का हर्षोल्लास कुछ कम हो गया था। यह कहना अधिक उचित होगा कि ओलेग के प्रति उसका व्यवहार विशेष सहानुभूतिपूर्ण था। ओल्गा स्वभावतः कुछ-कुछ खिंची रहती थी, लेकिन ओलेग से बड़ी खुल कर, मुस्कुराती हुई मिली। यों उसके नाक-नक़्शे बेडौल-से थे, पर फिर भी उसके चेहरे का अपना आकर्षण था। वह नीना की जगह पर ओलेग के बिलकुल ही पास बैठ गयी। ओलेग की धारा-प्रवाह बातचीत किसी भी बाहरी व्यक्ति के लिए

निरर्थक-सी जान पड़ती थी, फिर भी ओल्गा के लिए उसमें भाग लेना कठिन था। अभी-अभी वाल्को के पास से लौटने के पश्चात उसका हृदय और मस्तिष्क बिलकुल दूसरी भावनाओं से भर गये थे। वह नीना से अधिक गम्भीर थी, इस दृष्टि से नहीं कि वह अधिक गहराई से अनुभव कर सकती थी, बल्कि इस दृष्टि से कि उसमें अपने विचारों, अपनी अनुभूतियों को व्यावहारिक रूप देने की क्षमता थी। फिर बड़ी होने के नाते उसे उसी समय से अपने उद्देश्य की अधिक जानकारी होने लगी थी, जब दोनों स्तालिनो प्रादेशिक समिति की सन्देशवाहिका का काम करती थीं।

वह चुपचाप ओलेग की बग़ल में बैठी और सिर से रूमाल उतार लिया। अब उसके काले बाल नज़र आने लगे, जिन्हें उसने गर्दन के ऊपर जूड़े में बाँध रखा था। यद्यपि उसने प्रसन्न रहने और मुस्कुराते रहने का प्रयत्न किया, फिर भी उसकी आँखें उदासीभरी थीं। वह वहाँ उपस्थित सभी लोगों से बड़ी लग रही थी, स्वयं नीना की माँ से भी बड़ी।

किन्तु वारवारा दिमीत्रियेव्ना स्वयं चतुर और मर्मज्ञ थी।

"हम यहाँ रसोई में क्यों बैठे हैं?", वह बोली, "चलो, अन्दर चलकर ताश ही खेलें।"

सब के सब खाने के कमरे में चले आये। वारवारा दिमीत्रियेव्ना पास के उस कमरे में गयी, जहाँ वह और नीना सोती थीं और ताश की एक गड्डी लेकर वापस आ गयी। सभी पत्ते खेलते-खेलते गन्दे हो चुके थे।

"ओलेग और नीना ज़रूर ही साथी बनेंगे," ओल्गा ने रौ में कह दिया।

"नहीं, मैं और माँ साथी बनेंगी," नीना ने उत्तर दिया और ओल्गा पर एक अवज्ञापूर्ण दृष्टि डाली। वस्तुतः वह ओलेग को ही साथी बनाना चाहती थी, किन्तु इस मौक़े पर अपनी अनुभूति को वाणी न दे सकी।

ओलेग की समझ में कुछ नहीं आया, किन्तु उसे यह ज़रूर लग रहा था कि खानों में बरसों काम करते रहने के कारण नीना की माँ बड़ी अनुभवी खिलाड़ी होगी।

"नहीं, म...माँ का स... साथी मैं बनूँगा!" वह ज़ोर से बोल पड़ा। हकलाने के कारण उसकी आवाज़ बछड़े जैसी थी, जिसे सुनकर सभी, स्वयं ओल्गा तक, ठहाका मारकर हँस पड़े।

"तो ठीक, एक बूढ़ी, एक जवान!... लड़कियों, ख़बरदार, होशियार!" वारवारा दिमोत्रियेव्ना बोली।

फिर सभी बड़े उत्साहित हो उठे।

बेशक बूढ़ी ख़ान-मज़दूरिन खेल में बड़ी होशियार निकली, किन्तु ओलेग – जैसा वह खेल में हमेशा जुआरियों की तरह कर बैठता था – ज़रूरत से ज़्यादा

उत्तेजित होने लगा, जिसका नतीजा यह हुआ कि वे पहली बाज़ी हार गये। ओल्गा पूर्णतः आत्मनियंत्रित थी और बराबर चालाकी से ओलेग को उकसाती और प्रलोभन देती रही। वारवारा दिमीत्रियेव्ना को बाज़ी हार जाने का कोई ग़म न था। वह उसे बड़ी चतुराई के साथ कनखियों से देखती जा रही थी – लड़का उसे जँच रहा था।

काफ़ी जोड़-तोड़ के बाद अन्ततः उन्होंने चौथा खेल जीत लिया। अब पत्ते बाँटने की बारी ओल्गा की थी। ओलेग ने अपने पत्ते देखे – वे बड़े कमज़ोर थे। फिर उसकी आँखों में जैसे कोई धूर्त्तता-सी छायी और उसने वारवारा दिमीत्रियेव्ना से आँख मिलाने के लिए अपनी आँखें ऊपर उठायीं। आँखें चार हुईं और एक क्षण में ओलेग ने अपने मोटे होंठों से चुम्बन की मुद्रा बनायी, जिसका मतलब था कि ईंट का रंग खेलो। वारवारा दिमीत्रियेव्ना की युवा आँखें छोटी-छोटी झुर्रियों के बीच नाच उठीं, लेकिन उसका चेहरा निश्चल रहा और उसने तुरन्त ही ईंट की चाल चल दी। जैसी कि ओलेग को आशा थी, बूढ़ी ख़ान-मज़दूरिन ने उसके होंठों का इशारा समझ लिया था।

ओलेग को बड़ी ही प्रसन्नता हो रही थी। इस प्रसन्नता को दबाना उसके बस में न था। अब उन्हें हर बार जीतने का विश्वास हो गया था। 'बूढ़ी और जवान' अब मज़े से एक दूसरे को इशारे करते हुए खेलते रहे। जब वे ऊपर, आकाश की ओर देखते, तो इसका अर्थ होता चिड़ी, जब कनखियों से देखते, तो अर्थ होता हुकुम और जब ठोढ़ी पर संकेतक उँगली रखते, तो इसके माने होते पान। लड़कियों को इस बेईमानी का ज़रा भी सन्देह न हुआ। वे बड़ी सतर्कता से खेलती रहीं, किन्तु हर बार हारती रहीं। वे यह बात मानने को तैयार न थीं कि जीत उनका दामन ठुकराती ही रहेगी। नीना बड़ी उत्तेजित हो रही थी। एक-एक बाज़ी जीतने के बाद ओलेग अपनी उँगलियों के पोर मलता हुआ क़हक़हे लगाकर हँसने लगता। अन्ततः अधिक अनुभवी होने के कारण ओल्गा को लगा कि कहीं दाल में ज़रूर कुछ काला है और अपने प्रतिद्वन्द्वियों की चालें बड़े ग़ौर से देखने लगी। और कुछ ही देर में सारी चालबाज़ी उसकी समझ में आ गयी और जब ओलेग ओठों से इशारा कर रहा था, ठीक उसी समय उसने पंखे के आकार में लगे हुए अपने ताश के पत्ते उसके मुँह पर पटपटाये और मेज़ पर फेंक दिये।

"ओह! तुम दोनों बेईमान हो!" उसने स्थिर आवाज़ में कहा।

वारवारा दिमीत्रियेव्ना नाराज़ नहीं हुई, बल्कि मुस्कुरा दी, किन्तु नीना ग़ुस्से में भरकर मेज़ पर से उछल गयी। ओलेग भी उठ खड़ा हुआ और उसके सँवलाये हाथ को अपने दोनों हाथों में लेकर तथा अपना माथा उसके कन्धों से रगड़ता हुआ उससे माफ़ी माँगने लगा। और सब क़हक़हा मारकर हँसे पड़े।

घर वापस जाने की ओलेग की कोई इच्छा नहीं थी, किन्तु शाम हो रही थी और छह बजे के बाद सारे नगर में कर्फ़्यू लग जाता था। ओल्गा बोली कि उसे तुरन्त ही चला जाना चाहिए और फ़ौरन नमस्ते करके मकान के अपनेवाले भाग में चली गयी। उसे डर था कि अगर वह रुक गयी, तो उसका इरादा बदल जायेगा।

नीना ओलेग के साथ बाहर पोर्च पर आ गयी। शाम हो गयी थी, लेकिन अभी भी ख़ूब रोशनी थी।

"मैं स-सचमुच जाना नहीं चाहता!" ओलेग ने स्वीकार कर लिया।

और दोनों कुछ क्षणों तक पोर्च में खड़े रहे।

"वह तुम्हारा बग़ीचा है, वहाँ?" ओलेग ने उदास होकर पूछा।

नीना ने चुपचाप उसका हाथ पकड़ा और मकान का चक्कर लगाती हुई उस जगह ले गयी जहाँ चमेली की झाड़ियाँ होने के कारण काफ़ी छाया थी। वहाँ झाड़ियाँ इतनी घनी थीं कि उन्हें पेड़ ही कहना ठीक था।

"यहाँ तो ख़ैर अच्छा है। हमारे यहाँ तो जर्मनों ने सभी कुछ उखाड़ फेंका है।"

नीना कुछ नहीं बोली।

"नीना," उसने घिघियाते हुए बच्चे जैसी आवाज़ में कहा, "नीना, मैं तुम्हें चूम सकता हूँ? सिर्फ़ गाल पर, हाँ, बस गाल पर!"

वह नीना की ओर न बढ़ा। उसने तो सिर्फ़ पूछा भर था। फिर भी नीना इतनी घबरा गयी कि दो क़दम पीछे हट गयी। उसे जवाब न सूझ रहा था।

ओलेग ने उसकी घबराहट पर कोई ध्यान न दिया, किन्तु उसे बाल-सुलभ दृष्टि से देखता रहा।

"नहीं। तुम्हें देर हो जायेगी, जानते हो!" नीना बोली।

केवल एक बार नीना का गाल चूमने से उसे देर हो सकती है, यह बात ओलेग को बेतुकी नहीं लगी। बेशक हर मौक़े पर नीना की बात ठीक होती थी। उसने एक आह भरी, दाँत निकाले और उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ा दिया।

"किन्तु तुम हमसे मिलने ज़रूर आना। फिर आना," नीना अपने को दोषी समझती हुई बोली और उसका हाथ अपने हाथों में लेकर दुलारती रही।

ओलेग इसलिए ख़ुश था कि उसके नये-नये दोस्त बने थे और उसकी ज़िन्दगी ने एक मोड़ लिया था। किन्तु वह भूखा घर लौट आया। लेकिन उस दिन खाना जैसे उसके भाग्य में बदा ही न था। जब घर पहुँचा, तो मामा कोल्या उससे मिलने के लिए फाटक से होकर चला आया।

"मैं बड़ी देर से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा था – अर्दली तुम्हारी टोह में है!"

"अरे, उसे गोली मारो!" उपेक्षा के भाव से ओलेग बोला।

"जो भी हो। अच्छा तो यह होगा कि तुम उसके हत्थे ही न चढ़ो। विक्टर बिस्त्रीनोव यहीं है। वह कल रात ही आया था। जर्मनों ने उसे दोन में वापस कर दिया। चलो उसके घर चलें। यह भी बड़े भाग्य की बात है कि उसकी मकान-मालिकिन के मत्थे कोई जर्मन नहीं पड़े," मामा कोल्या बोला।

तरुण इंजीनियर, निकोलाई निकोलायेविच का मित्र और साथी विक्टर बिस्त्रीनोव, एक असाधारण ख़बर लाया।

"तुमने सुना? स्तात्सेन्को को बुरगोमास्टर के पद का नियुक्त किया गया है," वह बोला और गुस्से से दाँत पीसने लगा।

"कौन स्तात्सेन्की? नियोजन-विभाग का प्रधान?" स्वयं मामा कोल्या को भी बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

"हाँ, वहीं!"

"नहीं, तुम मज़ाक कर रहे हो!"

"मज़ाक! इसमें मज़ाक की कोई बात नहीं।

"लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। कितना शान्त और उद्योगी व्यक्ति – ज़िन्दगी में जिसने किसी का रोयाँ भी नहीं दुखाया..."

"हाँ, वही शान्त स्तात्सेन्को, जिसने किसी को कोई दुख नहीं पहुँचाया। बिना उसके न कभी कोई पीने-पिलाने की बैठक जमी, न ताश का खेल। सभी उसके बारे में यही कहते थे – वह हमीं में से एक है, अच्छा आदमी है, होशियार, चतुर! हाँ, वही स्तात्सेन्को अब बुरगोमास्टर है," विक्टर बिस्त्रीनोव ने कहा। यह दुबला-पतला, किन्तु संगीन की तरह तेज़ और कुशाग्र व्यक्ति गुस्से से उबल रहा था और बराबर बड़बड़ाता जा रहा था।

"अच्छा! तो ज़रा ठहरो! मुझे सोचने का मौक़ा दो," निकोलाई निकोलायेविच बोला। वह अब भी इस ख़बर का यक़ीन न कर रहा था। "इंजीनियरों की ऐसी एक भी पार्टी न हुई, जिसमें स्तात्सेन्को को निमंत्रण न दिया गया हो। मैंने न जाने कितनी बार उसके साथ बैठकर वोद्का पी है, किन्तु मैंने कभी उससे राजद्रोह का एक शब्द भी न सुना। वह बहुत विनम्र लगता था और अगर उसके बीते हुए जीवन में कोई बात रही होती, तो पता चल जाती। उसके बारे में लोगों को सब कुछ मालूम है। उसका पिता छोटे दरज़े का एक कर्मचारी रहा था और उसका स्वयं किसी बुरी चीज़ में हाथ नहीं रहा।"

"हाँ, मैंने भी उसके साथ वोदका पी थी। और अब पुराने दिनों की याद में वह पहले-पहले हमीं लोगों की गरदन पकड़ेगा – हमारे लिए काम करो, वरना!" और बिस्त्रीनोव ने पतली-पतली उँगलियों को फन्दे में फँसाकर फाँसी का इशारा किया।

"यह रहा अच्छा, लोकप्रिय आदमी!"

ओलेग ने अभी तक कुछ न कहा था। वे लोग उसकी उपेक्षा करते हुए बड़ी देर तक यही बहस करते रहे कि जिस व्यक्ति को वे बरसों से जानते थे और जो हर जगह इतना जाना-माना था, वह जर्मनों के अधीन बुरगोमास्टर कैसे बना! शायद इसकी सबसे सरल व्याख्या यह थी कि स्तात्सेन्को को मौत की धमकी देकर ही यह काम पूरा करने को कहा गया होगा – लेकिन दुश्मन ने स्तात्सेन्को को ही क्यों चुना? और तब अन्तरात्मा की स्पष्ट आन्तरिक आवाज़ ने, जो ज़िन्दगी के सर्वाधिक संकट के क्षणों में लोगों के कार्यों का निर्धारण करती है, उन्हें स्पष्ट बता दिया कि यदि उन लोगों को सामान्य कोटि के सोवियत इंजीनियरों को, वैसा चुनाव करना होता, तो इस बेइज्ज़ती के बजाय उन्होंने मौत को गले लगाना ज्य़ादा पसन्द किया होता।

नहीं, यह साधारण मामला न था। बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं थी कि मृत्यु-पीड़ा के भय से स्तात्सेन्को ने बुरगोमास्टर का काम स्वीकार कर लिया था। परन्तु दुर्बोध स्थिति में पड़कर वे बार-बार यही कह उठते :

"स्तात्सेन्को! कौन मानेगा? क्या तुम कल्पना कर सकते हो! फिर हम विश्वास किसका करें?" और इतना कहकर वे अपने कन्धे उचकाते और हाथ झटकारते रहते।

अध्याय 28

'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट के नियोजन विभाग का प्रधान स्तात्सेन्को कोई बूढ़ा आदमी न था। उसकी उम्र यही कोई पैंतालीस-पचास के बीच रही होगी। वस्तुतः वह एक छोटे अधिकारी का पुत्र था, जिसने क्रान्ति के पूर्व आबकारी विभाग में काम किया था। यह बात बिलकुल ठीक थी कि "उसने कभी कोई गड़बड़ी नहीं की थी"। वह इंजीनियरिंग का अर्थविशेषज्ञ था, उसने हमेशा ही विभिन्न औद्योगिक संस्थाओं के नियोजन-विभागों में काम किया था।

यह नहीं कहा जा सकता कि उसने तरक़्क़ी बहुत जल्दी-जल्दी पायी थी, किन्तु साथ ही वह एक ही जगह पर रुका भी नहीं रहा था। बेशक यह ठीक है कि उसने सीढ़ी-दर-सीढ़ी तरक़्क़ी की थी। किन्तु जीवन में उसका अपना जो स्थान बन गया था, उससे वह कभी सन्तुष्ट नहीं रहा।

असन्तुष्ट वह इसलिए नहीं था कि उसके उद्योग, शक्ति और एक प्रकार से, उसके ज्ञान का अपर्याप्त रूप से उपयोग किये जाने के कारण जीवन में उसे वे सब चीज़ें नहीं मिली थीं, जिन्हें प्राप्त करने का वह अधिकारी था। असन्तुष्ट वह इसलिए था कि उद्योग, शक्ति और ज्ञान का उपयोग किये बिना उसे ज़िन्दगी के सारे सुख

नहीं मिलते थे। परन्तु वह सोचता कि उसे ये सुख मिल सकते थे और ऐसी ज़िन्दगी में आनन्द भी था – यह बात अपनी जवानी के दिनों में उसने स्वयं अनुभव की थी और अब वह इन सबके बारे में पुस्तकों में बड़े चाव से पढ़ा करता था – पुराने दिनों के बारे में या विदेश में जीवनयापन के बारे में।

फिर यह भी नहीं कहा जा सकता था कि वह बेहद मालदार बनना चाहता है, या कोई बड़ा उद्योगपति या सौदागर या बैंकर, क्योंकि इसके माने थे चिन्ताएँ, अनवरत संघर्ष, प्रतिद्वन्द्वी, हड़तालें और वे अभिशप्त आर्थिक संकट इत्यादि। लेकिन फिर अच्छी ख़ासी आमदनी, किसी न किसी पूँजी पर सूद, किराया या किसी स्थिर सम्मानित पद पर मिलनेवाली मोटी तनख़्वाह, ये सब चीज़ें सिवा "हमारे देश के" बाक़ी सभी जगह थीं। और "हमारे देश के" सारे जीवन क्रम से स्तात्सेन्को को यह पता चल रहा था कि वर्ष प्रति वर्ष वह बूढ़ा होता जा रहा है। इसीलिए तो वह जिस समाज में रहता था, उससे घृणा करता था।

फिर भी, समाज के ढाँचे और अपने भाग्य से असन्तुष्ट रहते हुए भी स्तात्सेन्को ने उन्हें बदलने के लिए कुछ न किया, क्योंकि उसके दिल में बराबर डर बना रहता था। लम्बी गपशप करने में भी उसे बेहद डर लगता था। अगर गपशप करता भी तो साधारण और सामान्य कोटि की, जो सिर्फ़ इसी बात तक सीमित रह जाती कि कितने लोग पियक्कड़ हैं या वे किन स्त्रियों के साथ रह रहे हैं। भले ही कोई उसके निकटतम सम्पर्क में आता हो या न आता हो, वह कभी किसी का नाम लेकर उसकी आलोचना न करता। उसे तो दफ़्तरों के नौकरशाही ढंग, व्यापार संगठनों में निजी व्यक्तिगत प्रेरणा की कमी, "अपने समय" की स्थिति की तुलना में जवान इंजीनियरों की ट्रेनिंग की त्रुटियों और रेस्त्राँ और हम्मामों की सुस्त सर्विस आदि के बारे में सामान्य रूप से बातचीत करना ही पसन्द था। उसे किसी भी चीज़ को देखकर कोई आश्चर्य न होता। वह किसी से कुछ भी आशा कर सकता था। यदि किसी ने किसी बड़े ग़बन या रहस्यपूर्ण हत्या की कोई कहानी सुनायी या घर-बार की किसी अनबन की ही चर्चा कर दी तो, वह यही कहता :

"इस में कोई हैरानी की बात नहीं। आदमी कुछ भी कर सकता है। मैं कभी एक औरत के साथ रहता था। वह विवाहिता थी और देखने-सुनने में बड़ी सभ्य थी। लेकिन जानते हो उसने क्या किया? उसने मुझे लूट लिया..."

प्रायः अधिकतर लोगों की ही भाँति वह भी जो कुछ पहनता, उसके घर में जो कुछ भी होता, हाथ-मुँह या दाँत साफ़ करने के लिए वह जो कुछ भी इस्तेमाल करता, वह सब सोवियत संघ में बना होता था और अपने देश के ही कच्चे माल से। और जब वह विदेशों में काम कर आये इंजीनियरों के साथ होता, तो वोद्का का गिलास

पीते समय, बड़ी सादगी और होशियारी के साथ, बराबर इसी बात पर ज़ोर दिया करता। "हमारी चीज़ है – सोवियत चीज़!" वह कहा करता और अपने भारी हाथ की उँगली, जो उसके भारी-भरकम बदन के लिए बहुत ही छोटा पड़ता था, अपने धारीदार कोट के कफ़ में खोंसने लगता। लेकिन यह कोई न जानता था कि वह ये शब्द घृणापूर्वक कह रहा है या गर्व से। किन्तु वह मन-ही-मन उनकी विदेशी टाइयाँ और टूथब्रश देखकर चुपचाप इतनी ईर्ष्या किया करता कि उसके गुलाबी-से गंजे सिर पर पसीने की बूँदें चहचुहा आतीं।

"क्या बढ़ियाँ चीज़ है," वह कहा करता, "ज़रा सोचो तो, सिगरेट लाइटर, क़लम बनाने का चाकू और इत्र छिड़कने की पिचकारी, सभी एक में। नहीं, इस तरह की चीज़ें बनाना हमें नहीं आता।" यह बात उस देश का नागरिक कहता था, जहाँ सैकड़ों-हज़ारों साधारण कृषक महिलाओं तक ने सामूहिक फ़ार्मों में ट्रैक्टरचालकों और हारवेस्टर कम्बाइन आपरेटरों का कार्य कुशलतापूर्वक सीख लिया था।

वह विदेशी फ़िल्मों के राग अलापा करता, यद्यपि उसने ऐसी एक भी फ़िल्म न देखी थी। और प्रतिदिन घण्टों विदेशी पत्रिकाओं में आँखें गड़ाये रहता – उन खान सम्बन्धी पत्रिकाओं में नहीं, जो कभी-कभी ट्रस्ट में आ जाती थीं। विदेशी भाषाएँ न जानने के कारण वह उनमें कोई दिलचस्पी न ले सकता था और उसने कोई विदेशी भाषा सीखने की कभी कोशिश न की थी। वह उन पत्रिकाओं में मगन रहता, जो उसके साथी प्रायः ले आया करते तथा जिनमें फ़ैशन की चीज़ों और भड़कीली पोशाकों में औरतों के चित्र होते, या लगभग नंगी औरतों के चित्र।

परन्तु उसकी कही हुई बातों, उसकी अभिरुचि, स्वभाव और दिलचस्पियों आदि को देखते हुए उसमें ऐसी कोई बात नज़र न आती, जो उसे दूसरों से श्रेष्ठ या भिन्न ठहराती। ऐसे बहुत-से लोग थे, जिनकी अनुभूतियाँ, रुचियाँ, पेशे और विचार स्तात्सेन्को से बिलकुल भिन्न थे। जब ये लोग स्तात्सेन्को से बातें करते, तो कभी-कभी उनकी राय या दिलचस्पियाँ स्तात्सेन्की जैसी ही होतीं, किन्तु अन्तर यही होता था कि जहाँ उनके अपने जीवन में इन दिलचस्पियों का कोई विशेष स्थान नहीं था, और यदि था भी तो नगण्य-सा – वहाँ वहीं रुचियाँ स्तात्सेन्को के स्वभाव का अभिन्न अंग बन गयी थीं।

स्तात्सेन्को का चेहरा गुलाबी, सिर गंजा, आवाज़ गहरी, और लम्बे अर्से की पियक्कड़ी के कारण छोटी-छोटी आँखें सदा लाल रहती थीं। शरीर भारी-भरकम और सुस्त था। स्वभाव का आडम्बरी और क्षुद्र, लेकिन किसी को नुकसान नहीं पहुँचानेवाला। उसका जीवन इसी ढर्रे पर चलता रहता, न किसी से गहरी दोस्ती होती, न दुश्मनी। आवश्यकतानुसार, दिन हो या रात वह अपना काम करता, हालाँकि उसे इस काम

से चिढ़ थी। वह ट्रेड-यूनियन की कार्य समितियों का सदस्य था, और उनकी बैठकों में भाग लेता था, ताश और पीने-पिलाने की पार्टियों में मौजूद रहता था। और इस तरह वह अनिच्छापूर्वक धीरे-धीरे पदोन्नति की सीढ़ी चढ़ता हुआ अपने जीवन के आख़िरी दिनों तक चल सकता था और उसकी ज़िन्दगी मज़े से कट जाती...

उसे शुरू से ही विश्वास था कि जिस देश में वह रह रहा है, वह जर्मनी से मोर्चा नहीं ले सकेगा। उसकी यह धारणा इसलिए नहीं बनी थी कि उसे दोनों देशों के साधनों का कोई ज्ञान था या वह वैदेशिक सम्बन्धों के विषय में ही कुछ जानता था। वस्तुतः इन मामलों में वह एकदम कोरा था। फिर इन सबके बारे में वह कुछ जानना भी नहीं चाहता था। उसका ख़याल था कि जो देश उसके जीवन के स्वकल्पित आदर्शों के अनुकूल नहीं, वह सम्भवतः उस देश से मोर्चा नहीं ले सकता, और यह उसकी राय में, उक्त आदर्शों के पूर्णतया अनुकूल था। और जून के महीने के उस रविवार ही को, जब उसने युद्ध छिड़ने के बारे में ब्राडकास्ट सुना था, वह बेचैन हो उठा था। उसमें एक प्रकार की उत्तेजना घर कर गयी थी, मानो उसे अपना निवासस्थान बदलना पड़ रहा हो।

फिर जब कभी वह यह रिपोर्ट सुनता कि लाल सेना को एक ओर नगर छोड़कर पीछे हटना पड़ा, तो यह बात वह और भी अधिक साफ़-साफ़ समझने लगता कि उसे किसी नये घर की शरण लेनी है। जिस दिन कीयेव हाथ से निकला, उस दिन वह मन ही मन एक नये निवास के रास्ते पर चल चुका था और उसके दिमाग़ में उसे सजाने-सँवारने की बड़ी-बड़ी योजनाएँ घूमने लगी थीं और इसीलिए, जब जर्मन क्रास्नोदोन में घुसे, तो स्तात्सेन्को की आँखों के आगे वही मार्ग नाच उठा, जो नेपोलियन ने एल्बा द्वीप से पेरिस तक अपनी प्रसिद्धि की ओर तय किया था।

बहुत समय तक स्तात्सेन्को को, पहले तो सन्तरी ने, फिर अर्दली ने, जनरल वान वेन्त्ज़ेल के पास तक नहीं जाने दिया। इतना ही नहीं उसके साथ बड़ी रुखाई का व्यवहार भी किया गया। दुर्भाग्यवश नानी वेरा भी मकान से बाहर निकल आयी थी। स्तात्सेन्को हमेशा ही उससे डरता रहा था, इसी लिए उसने तड़ से अपना हैट उतार लिया – उसने ऐसा क्यों किया यह वह स्वयं न जानता था – सिर झुकाया और ऐसा बन गया, मानो एक सड़क से दूसरी तक जाने के लिए वह सिर्फ़ बाग़ से होकर जा रहा है। नानी वेरा को इसमें कोई असाधारण बात न दिखायी दी थी। इसी बीच स्तात्सेन्को तरुण ऐडजुटेण्ट की प्रतीक्षा करने के लिए बग़ीचे के फाटक पर खड़ा हो गया।

मोटा स्तात्सेन्को हैट उतारकर जर्मन अफ़सर की बग़ल में और कुछ पीछे चलने लगा। ऐडजुटेण्ट ने न तो उसकी ओर देखा ही था और न यही समझा था कि उसने

कहा क्या था। परन्तु उसने उँगली से जर्मन कमाण्डेण्ट के कार्यालय की ओर इशारा कर दिया था।

नगर कमाण्डेण्ट, एस.एस. स्तर्मफ़्यूरर श्टोब्बे उन अधेड़ उम्र के प्रशियाई जर्मन पुलिस अधिकारियों में से था – ये सारे अधिकारी एक ही ढाँचे में ढले होते थे – जिसे स्तात्सेन्को ने अपनी जवानी में, 'नीवा' पत्रिका में प्रकाशित मुकुटधारी राजाओं की भीड़ में देखा था। स्तर्मफ़्यूरर श्टोब्बे को मानसिक रक्त-स्राव के दौरे पड़ते थे और उसकी सफ़ेद मूँछों के सिरे समुद्री घोड़े की दुम की तरह ऐंठे रहते थे। उसके फूले हुए चेहरे पर पीली-नीली छोटी-छोटी नसों का एक जाल-सा बिछा था और उसकी बाहर निकली हुई आँखें उस पंकिल बोतली रंग की थी कि आँख के ढेलों और पुतली को अलग-अलग पहचानना असम्भव लगता था।

"तुम पुलिस में काम करना चाहते हो?" ग़ैर ज़रूरी बातों को एक ओर छोड़ते हुए स्तर्मफ़्यूरर ग़ुर्राया।

स्तात्सेन्को एक ओर सिर झुकाये चुपचाप और आदरपूर्वक खड़ा हो गया। उसके छोटे-छोटे और मोटे हाथ की उंगलियाँ उसके पतलून की सीवनों पर जमी रहीं। उसकी उँगलियों का रंग तथा बनावट सॉसेज जैसी थी।

"मैं इंजीनियरिंग के अर्थशास्त्र का विशेषज्ञ हूँ, और मैं यह सुझाव देना चाहता. ..." उसने कहना शुरू किया।

"मिस्टर ब्रूक्नेर के पास जाओ!" श्टोब्बे, किसी चीज़ की प्रतीक्षा किये बिना गुर्रा उठा। उसकी तरल आँखें स्तात्सेन्को को इस कठोरता से घूरने लगीं कि वह लड़खड़ाता हुआ पीछे खिसक आया और पीछे की ओर ही चलता हुआ दरवाज़े में से निकल गया।

जर्मन पुलिस हेडक्वार्टर एकमंज़िला लम्बी-सी बैरक में स्थित था। इस बैरक पर बरसों से सफ़ेदी नहीं हुई थी। पुरानी सफ़ेदी झरने लगी थी। यह इमारत ज़िला कार्यकारिणी समिति के ठीक नीचे पहाड़ी से सटकर खड़ी थी। इस इमारत और वोस्मीदोमिकी ज़िले के नाम से प्रख्यात इलाक़े के बीच कुछ ख़ाली ज़मीन पड़ती थी। पहले इस इमारत में नगर और ज़िले की मिलीशिया रहती थी, और स्तात्सेन्को अपने मकान में हुई एक चोरी के सिलसिले में लड़ाई से पहले वहाँ प्रायः आता-जाता रहा।

बन्दूक़ से लैस एक जर्मन सैनिक के पहरे में वह उसी परिचित और धूमिल गलियारे में घुसा और सहसा भय से पीला पड़कर एक क़दम पीछे हट गया। वह एक लम्बे-से आदमी से राते-टकराते बचा। उसने आँखें उठायीं और तत्काल क्रास्नोदोन के प्रसिद्ध खान मज़दूर इग्नात फ़ोमीन को पहचान लिया, जो अपनी पुराने ढंग की चोंचवाली टोपी पहने था। फ़ोमीन के आगे-पीछे कोई सैनिक न था। उसके पैरों में चमचमाते हुए बूट और शरीर पर स्तात्सेन्को जैसा ही बढ़ियाँ सूट था, एक दूसरे को

देखकर दोनों की आँखें मिचमिचायीं और वे इस प्रकार एक दूसरे के पास से गुज़र गये, मानो बिलकुल अपरिचित हों।

जिस दफ़्तर में कभी क्रास्नोदोन मिलीशिया का चीफ़ काम किया करता था, उसी दफ़्तर के प्रतीक्षा-कक्ष में स्तात्सेन्को ने डबल रोटी फ़ैक्टरी के डिस्पैचर शूर्का रैबन्द को देखा। उसके छोटे भूरे सिर की हड्डी छेनी से कटी-छँटी लग रही थी और खोपड़ी पर काली कुबानी टोपी लगी थी। शूर्का रैबन्द उन जर्मनों का वंशज था, जो वर्षों पहले इन भागों में बस गये थे। शहर में सभी उसे जानते थे, क्योंकि उसका काम नगर के सभी कार्यालयों तथा रोटी की छोटी-बड़ी दुकानों में डबल-रोटी पहुँचाना था। उसे सभी लोग सिर्फ़ शूर्का रैबन्द के ही नाम से पुकारते थे।

"वसीली इल्लारिओनोविच!" वह साश्चर्य धीरे-से बोला और स्तात्सेन्को के पीछे आ रहे सिपाही को देखते ही चुप हो गया।

स्तात्सेन्को ने अपना गंजा सिर एक ओर झटकारा और फिर थोड़ा झुका लिया।

"ओह, मिस्टर रैबन्द!" वह बोला, "मैं चाहता हूँ कि यहाँ कुछ काम आ सकूँ!" उसने कहा "कुछ काम आ सकूँ" न कि "उनकी नौकरी करूँ!"

मिस्टर रैबन्द अपने पंजों पर खड़ा हुआ, एक क्षण सकुचाया और फिर बिना दरवाज़ा खटखटाये चीफ़ के दफ़्तर में चला गया। यह साफ़ ज़ाहिर था कि शूर्का रैबन्द व्तकदनदह – 'नयी व्यवस्था' का एक अभिन्न अंग था।

वह काफ़ी देर तक कमरे में रहा। फिर प्रतीक्षा-कक्ष में चीफ़ की घण्टी सुनायी दी। एक जर्मन क्लर्क ने चूहे के रंगवाली अपनी वर्दी सीधी की और स्तात्सेन्को को दफ़्तर में ले गया।

मिस्टर ब्रूक्नेर असली अर्थ में मिस्टर न था, बल्कि वाहूटमिस्टर था, जिसका अर्थ होता है सशस्त्र पुलिस का सार्जेण्ट। और यह जर्मन सशस्त्र पुलिस का हेडक्वार्टर न होकर क्रास्नोदोन का जर्मन थाना भर था। क्षेत्रीय पुलिस हेडक्वार्टर रोवेन्की नगर में स्थित था। फिर भी मिस्टर ब्रूक्नेर सिर्फ़ वाहूटमिस्टर ही नहीं हाप्तवाहूटमिस्टर अर्थात सशस्त्र पुलिस का सार्जेण्ट-मेजर भी था।

स्तात्सेन्को दफ़्तर में आया। मिस्टर ब्रूक्नेर बैठा नहीं था, बल्कि पीठ पीछे हाथ बाँधे खड़ा था। लम्बा-सा आदमी मोटा तो नहीं, हाँ, उसकी तोंद भारी, थुलथुल और आगे को निकली थी। उसकी आँखों के नीचे पिलपिली और झुर्रीदार, काली-काली गुमड़ियाँ पड़ी थीं और यदि कोई इन गुमड़ियों के मूल कारण का पता लगाता, तो उसे मालूम हो जाता कि हाप्तवाहटमिस्टर ब्रूक्नेर बैठने के बजाय घण्टों खड़ा क्यों रहता था।

"मुझे इंजीनियरिंग के अर्थशास्त्र का अनुभव है और मैं यह सुझाव देना

चाहता...” बड़ी शिष्टता से सिर झुकाकर स्तात्सेन्को बोला। उसकी मोटी उँगलियाँ उसके धारीदार पतलून से चिपकी हुई थीं।

ब्रूक्नेर ने रैबन्द की दिशा में अपना सिर घुमाया और उपेक्षाभरे लहजे में बोला :

“उससे कह दो कि मैं उसे फ़्यूरर के नाम पर बुरगोमास्टर के पद पर नियुक्त करता हूँ!”

उसी क्षण स्तात्सेन्को के दिमाग़ में उसके उन बहुत-से परिचित लोगों की शक्लें घूम गयीं, जिन्होंने पहले कभी उसकी उपेक्षा की थी, जो उससे सिर्फ़ जान-पहचान का व्यवहार रखते थे, किन्तु जिन्हें अब उसके अधीन काम करना होगा। उसने अपना गंजा सिर झुकाया, जिस पर पसीने की बूँदें फिर चुहचुहा आयी थीं। उसे लगा जैसे वह बड़ी हार्दिकता और पूरी औपचारिकता से, मिस्टर ब्रूक्नेर को धन्यवाद दे रहा है, किन्तु वस्तुतः धीरे-से उसके होंठ हिले और उसने अपना सिर झुका दिया।

मिस्टर ब्रूक्नेर ने अपने फ़ौजी कोट के पल्ले के भीतर अपना हाथ डाला और उसकी तरबूज़ जैसी तोंद झलक आयी, जो कसकर जमे हुए उसके पतलून से दबी हुई थी। फिर उसने एक सुनहरा सिगरेट-केस निकाल लिया और जल्दी से एक सिगरेट मुँह में लगा ली। पर फिर कुछ सोचने के बाद उसने केस में से एक और सिगरेट निकाली और उसे स्तात्सेन्को की ओर बढ़ाया। उससे इनकार करने का साहस स्तात्सेन्को को नहीं हुआ।

फिर, बिना नीचे देखे, मिस्टर ब्रूक्नेर ने मेज़ के ऊपर टटोला और उसके हाथ चाकलेट की एक बार लग गयी, फिर उसने, बिना उसकी ओर देखे, उसमें से कुछ टुकड़े तोड़े और चुपचाप स्तात्सेन्को की ओर बढ़ा दिये।

इस घटना के बाद स्तात्सेन्को ने अपनी पत्नी से कहा, “वह आदमी नहीं है, देवता है, देवता।”

रैबन्द ने स्तात्सेन्को को डिप्टी सार्जेण्ट-मेजर हर बाल्डेर के पास भेज दिया। वह अपने शरीर की गठन, अपने व्यवहार तथा धीमी आवाज़ से स्तात्सेन्को से इतना मिलता-जुलता था कि यदि स्तात्सेन्को को जर्मन वर्दी पहनाकर खड़ा कर दिया जाता, तो दोनों को पहचानना मुश्किल हो जाता।

उसी से स्तात्सेन्को को एक नगर-परिषद बनाने के निर्देश मिले और उसने व्तकदनदह ‘नयी व्यवस्था’ के अधीन स्थानीय सरकार के स्वरूप से परिचय प्राप्त किया। इस ढांचे के अन्दर क्रास्नोदोन नगर-परिषद, जिसका अध्यक्ष बुरगोमास्टर होता था, क्रास्नोदोन में जर्मन थाने के कार्यालय के एक विभाग से अधिक कुछ भी नहीं था।

इस प्रकार स्तात्सेन्को बुरगोमास्टर बन गया।

उस वक़्त विक्टर बिस्त्रीनोव और मामा कोल्या, दोनों आमने-सामने खड़े हुए, अपने हाथ हिलाकर कह रहे थे :

"अब कोई ऐसा भी नहीं रहा है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं?"

जब शाम के समय मत्वेई शुल्गा ने कोन्द्रातोविच से विदा ली, तब उसके पास एक ही रास्ता रह गया था – 'शंघाई' जाना और इग्नात फ़ोमीन से मिलना।

बाह्यतः, फ़ोमीन ने उस पर अपना अच्छा प्रभाव डाला था और शुल्गा पर शुरू से केवल फ़ोमीन की बाहरी चाल-ढाल का ही प्रभाव पड़ सकता था। जब शुल्गा ने गुप्त शब्द द्वारा अपना परिचय दिया, तो फ़ोमीन बड़े धैर्य के साथ और बिना किसी उत्तेजना के उससे मिला। यह देखकर शुल्गा को बहुत सन्तोष हुआ। उसने उसे नज़र भरकर देखा, फिर चारों ओर देखकर, मकान के भीतर ले गया और तब कहीं कोई जवाब दिया। फ़ोमीन ने खुद बहुत कम कहा था। उसने कोई सवाल न पूछे थे, बड़े ध्यान से उसकी बातें सुनी थीं और सारे निर्देशों का यही जवाब दिया था – "यह हो जायेगा!" शुल्गा को यह देखकर और भी प्रसन्नता हुई थी कि घर में भी फ़ोमीन कोट, वास्कट, टाई, घड़ी और चेन पहने रहता था – उसकी निगाह में यह सारी चीज़े सभ्य और बुद्धिमान सोवियत कामगार की निशानी हैं, जिसकी शिक्षा-दीक्षा सोवियत काल में हुई थी।

बेशक, कुछ ऐसी छोटी-छोटी बातें ज़रूर थीं, जो उसे अप्रिय लगी थीं। हाँ, उसे पहली मुलाक़ात में इन बातों में भी कोई बेतुकापन नज़र नहीं आया था – वस्तुतः वे इतनी तुच्छ थीं कि उनकी ओर अपना ध्यान देना शुल्गा को ठीक न जँचा। मसलन, उसे फ़ोमीन की पत्नी का व्यवहार सन्देहास्पद लगा। वह विशालकाय और ताक़तवर औरत थी। दूर-दूर जड़ी हुई दो एँची छोटी आँखें, भोंडी-सी मुस्कराहट; जब हँसती, तो उसके बड़े-बड़े पीले दाँत और उनके बीच-बीच छूटे हुए खड्ड दिखायी पड़ने लगते। शुल्गा को लगा कि उसने उसके साथ बड़ी ही चापलूसी से व्यवहार किया था। पहली ही शाम को न चाहते हुए भी शुल्गा का ध्यान इस बात की ओर गया कि फ़ोमीन या इग्नात सेम्योनोविच – शुल्गा उसे अब इसी नाम से पुकारने लगा था – कुछ-कुछ कंजूस है। जब शुल्गा ने उससे यह साफ़-साफ़ स्वीकार किया कि उसे अधभूखा रहना पड़ता है, तो फ़ोमीन बोला कि जहाँ तक खाने-पीने का सवाल है, इसका इन्तज़ाम करना शायद कुछ कठिन होगा। और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि फ़ोमीन के पास खाने-पीने की कोई कमी न लग रही थी, यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने शुल्गा को बहुत अच्छी तरह खिलाया-पिलाया था। किन्तु शुल्गा ने देखा कि पति-पत्नी ने भी वही खाया, जो उसने खाया था, अतएव उसने सोचा कि सम्भवतः

मैं उनके निजी जीवन की सारी परिस्थितियाँ नहीं जानता।

पर इन छोटी-छोटी बातों से वह सर्वांगीण अच्छा प्रभाव न मिट सका, जो फ़ोमीन का मत्वेई कोस्तियेविच पर पड़ा था। फिर भी यदि, संयोगवश, मत्वेई कोस्तियेविच दुनिया के सबसे ख़राब आदमी के पास भी पहुँच गया होता, तो इग्नात फ़ोमीन के पास जाने से तो बेहतर ही रहता, क्योंकि वह क्रास्नोदोन में रहनेवालों में सबसे घृणित इंसान था – इसीलिए कि बहुत पहले से ही उसकी इंसानियत ख़त्म हो चुकी थी।

1930 के पहले इग्नात फ़ोमीन, जिसका नाम उस समय कुछ और था, वोरोनेज क्षेत्र में अपने जन्म-स्थान ओस्त्रोगोज्स्क ज़िले में, सबसे धनी और शक्तिशाली व्यक्ति था। वह, या तो खुले तौर पर या एजेण्टों की मार्फ़त, तीन खेतों और दो आटा मिलों का मालिक था। उसके पास घोड़ों से चलनेवाली दो कटाई की मशीनें, कई हल, अनाज फटकनेवाले दो यंत्र, एक अनाज निकालने की मशीन, कोई एक दर्जन घोड़े, छह गायें, कई एकड़ ज़मीन पर फलों के बाग़ और मधुमक्खियों की लगभग सौ छत्तापेटियाँ थीं। उसके खेतों में नियमित रूप से काम करने के लिए चार स्थायी मज़दूर थे, किन्तु वह कई ज़िलों के किसानों से भी काम ले सकता था, क्योंकि इन सभी ज़िलों में उसके बहुत-से आदमी ऐसे थे, जो आर्थिक दृष्टि से उस पर आश्रित थे।

वह क्रान्ति के पहले भी धनी आदमी था। उसके दो बड़े भाई, इससे भी अधिक मालदार थे। विशेष रूप से वह भाई, जिसे अपने बाप की सम्पत्ति विरासत में मिली थी। इग्नात फ़ोमीन सबसे छोटा था और जब 1914-1918 के युद्ध के पहले उसने अपनी शादी की, तो उसके पिता ने उसे अपनी जायदाद का सबसे कम भाग दिया था। क्रान्ति के बाद, जर्मनी के मोर्चे से लौटने पर फ़ोमीन ने बड़ी चालबाज़ी के साथ यह बहाना बनाया था कि मैं एक ग़रीब किसान हूँ और हमेशा पुराने शासन का दुश्मन रहा हूँ। उसने खुले आम यह घोषणा कर दी कि मेरे पास कोई ज़मीन-जायदाद नहीं और मैं क्रान्ति के दुश्मनों का जानी दुश्मन हूँ। इस प्रकार उसने सोवियत प्रशासन संस्थाओं और निर्धन कृषक समिति से लेकर गाँव के दूसरे अनेक सामाजिक संगठनों तक में पैर जमा लिये थे। उसने शासन के इन संगठनों से इस बात से और फ़ायदा उठाया कि उसके भाई मालदार थे और सोवियत सरकार से घृणा करते थे। पहले तो वह अपने सबसे बड़े भाई को गिरफ़्तार करवाने और निर्वासित कराने में सफल हुआ, फिर बाद में अपने दूसरे भाई को। इसके बाद उसने उनकी जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लिया और उनके परिवारों को निकाल बाहर किया। उसे अपने छोटे-छोटे भतीजे-भतीजियों पर भी कोई दया न आयी, ख़ासकर इसलिए कि उसके अपने कोई बच्चे न थे और न ही हो सकते थे। तो ज़िले में उसका जो कुछ भी रुतबा था, उसकी जड़ में उसके यही कारनामे थे। और 1930 तक, इस सारी धन-सम्पत्ति

के बावजूद, प्रशासन संस्थाओं के बहुत-से प्रतिनिधि उसे सोवियत भूमि पर अद्वितीय समझते थे – एक प्रगतिशील किसान और ऐसा धनी व्यक्ति, जो सोवियत सरकार का पूर्ण भक्त था।

किन्तु कई ज़िलों के वे किसान, जो उसकी शक्ति का मज़ा चख चुके थे, उसे रक्त-पिपासु कुलक, पिशाच और अत्याचारी समझते थे। जब 1930 में सामूहिक फ़ार्म बनने शुरू हुए और अधिकारियों का समर्थन पाकर लोग अमीरों को उनकी ज़मीन जायदाद से बेदख़ल करने लगे, उस समय जन प्रतिकार की लहर इग्नात फ़ोमीन को भी निगल गयी। उस समय वह अपने पुराने नाम से ही रह रहा था। उसकी सारी सम्पत्ति छिन गयी और उसे उत्तर में निर्वासित करने का हुक्म सुना दिया गया। किन्तु चूँकि उसे लोग अच्छी तरह जानते थे और बाहर से वह शान्तिप्रिय लगता था, अतएव स्थानीय अधिकारियों ने उसे निर्वासित करने से पहले गिरफ़्तार नहीं किया। अतएव एक रात को इग्नात फ़ोमीन ने, अपनी पत्नी की सहायता से ग्राम सोवियत के अध्यक्ष और गाँव पार्टी समिति के सेक्रेटरी को मौत के घाट उतार दिया। उन दिनों उक्त अध्यक्ष और सेक्रेटरी अपने परिवार में न रहकर ग्राम सोवियत के दफ़्तर में रहते थे और जिस रात फ़ोमीन उनकी घात में था, उस रात वे पी-पिलाकर एक पार्टी से लौट रहे थे। उसने उन्हें मार डाला और अपनी पत्नी के साथ पहले तो लीस्की, फिर रोस्तोव-ऑन-दोन भाग गया। यहाँ वह ऐसे लोगों को जानता था, जिन पर वह भरोसा कर सकता था।

रोस्तोव में उसने इग्नात सेम्योनोविच फ़ोमीन के नाम में दस्तावेज़ें ख़रीदीं। इन दस्तावेज़ों में उसे रेलवे-शॉप का कर्मचारी दिखाया गया था, और यह भी लिखा था कि वह वहाँ वर्षों से काम कर रहा है। उसने अपनी पत्नी के लिए भी उपयुक्त काग़ज़ात प्राप्त कर लिये। अन्ततः वह दोनबास आया। वह जानता था कि वहाँ कर्मचारियों की ज़रूरत थी और वहाँ इस विषय की कोई भी जाँच-पड़ताल होने की सम्भावना न थी कि वह कौन है और कहाँ से आया है।

उसे पूरा विश्वास था कि कभी न कभी उसका समय भी आयेगा, किन्तु इस बीच उसने स्पष्ट और निश्चित आचरण का रास्ता धारण किया। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह जानता था कि उसे मन लगाकर और मेहनत से काम करना होगा। एक तो इसलिए कि उसकी असलियत छिपी रहेगी, दूसरे अपने कौशल और चतुराई से किये गये काम के फलस्वरूप वह ठाठ से रह सकेगा और तीसरे इसलिए कि यद्यपि अतीत में वह एक मालदार आदमी था, फिर भी मेहनत करने की उसकी पुरानी आदत थी। फिर उसने यह निश्चय कर लिया था कि वह कभी किसी काम में बहुत आगे बढ़ने की कोशिश नहीं करेगा, सार्वजनिक मामलों में टाँग नहीं अड़ायेगा, शासन के

प्रति फ़रमानबरदार रहेगा, और भगवान न करे, किसी की आलोचना नहीं करेगा।

कालान्तर में अधिकारी इस साधारण से लगनेवाले व्यक्ति की इज्ज़त करने लगे, मेहनती और ईमानदार श्रमिक के रूप में ही नहीं, बल्कि विनम्रता और अनुशासन का ध्यान रखनेवाले कर्मचारी के रूप में भी। उसने, अपने ऊपर जब्र करके उस समय भी अपने व्यवहार में कोई परिवर्त्तन न आने दिया, जब जर्मन वोरोशीलोवग्राद के द्वार पर पहुँच गये थे। उसे इसमें कोई सन्देह न था कि जर्मन लोग क्रास्नोदोन पर अधिकार कर लेंगे। और जब उससे यह पूछा गया कि जर्मनों के नगर में घुस आने पर ख़ुफ़िया संगठन के कामों के लिए उसका मकान इस्तेमाल किया जा सकता है या नहीं, तो उसकी द्वेष की भावना जागृत हो उठी और उसे इतनी ख़ुशी हुई कि लगता था कि वह अपना असली रूप छिपा नहीं पायेगा।

फ़ोमीन अपने घर में भी सूट, टाई और घड़ी की चेन पहने रहता था, जिसे देखकर शुल्गा ख़ुश हो उठा था। उसका कारण यह नहीं था कि उसे अपने पहनावे और शक्त-सूरत का बड़ा ध्यान रहता था। वह भी दूसरे श्रमिकों की भाँति सफ़ाई-पसन्द था और आम तौर पर रोज़ के साधारण कपड़े पहनता था। हाँ, इन दिनों उसे यह आशा होने लगी थी कि न जाने जर्मन कब आ जायें और चूँकि वह चाहता था कि जब जर्मन आयें, तो वे उसे पसन्द करें अतः उसके बक्स में जो अच्छे से अच्छे कपड़े थे, उन्हें वह निकालकर पहनने लगा था।

इस तरह, जिस समय स्तात्सेन्को, पहले सार्जेण्ट-मेजर ब्रूक्नेर से और बाद में सार्जेण्ट बाल्डेर से मुलाक़ात कर रहा था, उस समय मत्वेई शुल्गा को मार-पीटकर उसी बैरक के दूसरे अर्द्धभाग में एक अँधेरी कोठरी में डाल दिया गया था, जहाँ वह ख़ून से लथपथ पड़ा था।

पहले बैरक का यह भाग, जिसमें कुछेक कोठरियाँ और एक सँकरा गलियारा था, क्रास्नोदोन भर में बन्दीगृह के काम आनेवाला एकाकी स्थान था। गलियारा मिलीशिया के सर्विस-क्वार्टरों में बने बरामदे से लगा हुआ था। किन्तु अब व्तकदनदह 'नयी व्यवस्था' के अधीन बड़ी-बड़ी कोठरियों और एकाकी बन्दीगृह की छोटी-छोटी काल-कोठरियों में बूढ़े और जवान सभी तरह के स्त्री-पुरुष भर दिये गये थे। यहाँ सभी तरह के लोग थे – नगरों के और गाँवों के लोग, जो वहाँ इसलिए डाल दिये गये थे कि उनपर सोवियत अधिकारी, छापेमार सैनिक, कम्युनिस्ट या कोमसोमोल सदस्य होने का सन्देह था, वे लोग, जिन्होंने ज़बानी या व्यवहार से जर्मन वर्दी की तौहीन की थी, जिन्होंने अपने यहूदी उद्भव को छिपाया था, जिनके पास कोई दस्तावेज न था, या तो सिर्फ़ साधारण जनता में से थे।

उन्हें शायद ही कभी कोई खाना दिया जाता था। उन्हें हवाख़ोरी या शौचादि तक

के लिए बाहर न निकाला जाता। सभी कोठरियों में असह्य बदबू व्याप्त रही थी। उनके पुराने-धुराने फ़र्श व पाख़ाने पेशाब और ख़ून से सने हुए थे।

यद्यपि सारी कोठरियाँ बुरी तरह भरी थीं, फिर भी शुल्गा को अथवा येव्दोकीम ओस्तप्चूक को – वह इसी नाम से गिरफ़्तार किया गया था – अकेली कोठरी में डाल दिया गया था।

गिरफ़्तार करते समय उसे बुरी तरह मारा-पीटा गया था। उसने जर्मनों का मुक़ाबला किया था और इतना ताक़तवर साबित हुआ था कि उसे वश में करने में जर्मनों को काफ़ी समय लग गया था। बाद में फिर उसे जेल में मारा-पीटा गया। सार्जेण्ट ब्रूक्नेर और सार्जेण्ट बाल्डेर और उसको गिरफ़्तार करनेवाला एस.एस. रोटेनफ़्यूरर पुलिस चीफ़ सोलिकोव्स्की और जर्मन पुलिस अफ़सर इग्नात फ़ोमीन – इन सभी ने उसे बुरी तरह से पीटा था। वे चाहते थे कि सम्भलने के पहले ही वे शुल्गा की इच्छा-शक्ति को कुचल डालें। पर यदि सामान्य स्थिति में रखकर उससे कुछ क़बूल करवाना सम्भव न था, तो लड़ाई की उग्रता के बीच तो यह बात और भी असम्भव थी।

वह इतना ताक़तवर था कि इतना पिट जाने और ख़ून से लथपथ हो जाने के बाद भी वह ज़मीन पर इसलिए नहीं पड़ा था कि थककर चूर हो चुका था, बल्कि इसलिए कि कुछ साँस लेना चाहता था। अगर फिर उसे पूछताछ के लिए ले जाया गया होता, तो स्थिति के अनुसार वह फिर अपनी लड़ाई जारी रखता। कम-से-कम इतनी शक्ति उसमें अब भी बच गयी थी। उसका चेहरा जगह-जगह से छिल गया था और एक आँख सूज गयी थी। उसकी बाँह की कलाई के ऊपर की हड्डी बुरी तरह दर्द कर रही थी, क्योंकि उस जगह फ़ेनबोंग ने लोहे की छड़ से प्रहार किया था। और शुल्गा को यह सोचकर और भी बदहवासी छा रही थी कि कहीं न कहीं जर्मन उसकी पत्नी और बच्चों पर भी इसी तरह का अत्याचार कर रहे होंगे, और उनके इस अत्याचार का कारण मैं हूँ, मैं। अब तो यह आशा भी शेष न रह गयी थी कि वह कभी भी उन्हें बचा सकेगा।

किन्तु शारीरिक पीड़ा या मानसिक व्यथा से भी अधिक दुख उसे यह सोचकर हो रहा था कि वह बिना अपने कर्तव्य का पालन किये हुए, और स्वयं अपनी ही ग़लती से, दुश्मनों के हाथ में पड़ गया था।

शुरू में उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा कि सचमुच दोष उसका नहीं, उन लोगों का है जिन्होंने उसका सम्पर्क ग़द्दारों से कराया है, किन्तु यह विचार उसने कमज़ोरों का झूठा आश्वासन समझकर अपने दिमाग़ से निकाल दिया।

उसके जीवन के अनुभव ने उसे यह सिखा दिया था कि किसी भी सामाजिक

कृत्य की सफलता अनेकानेक व्यक्तियों पर निर्भर होती है, जिनमें से ऐसे भी लोग होते हैं, जो अपना काम सन्तोषजनक ढंग से नहीं करते हैं या ग़तलियाँ कर बैठते हैं। किन्तु संकट की स्थिति में किसी महान कार्य के लिए चुन लिये जाने पर और उसमें असफल रहने पर, यदि अब वह यह कहे कि दोष उसका नहीं, बल्कि दूसरों का है, तो यह बात कमज़ोर दिलवालों जैसी होगी। उसकी अन्तश्चेतना ने उससे कह दिया था कि वह एक ख़ास व्यक्ति है, जिसे पिछले वर्षों का खुफ़िया कार्यों का अच्छा अनुभव है और इसीलिए उसे इस संकट की स्थिति में एक महान कार्य के लिए चुना गया है, ताकि वह अपनी इच्छाशक्ति, अपने अनुभव और संगठनात्मक चातुर्य की सहायता से समस्त कठिनाइयों और ख़तरों, काम के लिए ज़िम्मेदार अन्य व्यक्तियों द्वारा की गयी ग़लतियों तथा समस्त कष्टों और बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सके। इसीलिए मत्वेई कोस्तियेविच ने अपनी असफलता के लिए किसी के भी माथे दोष न मढ़ा। किन्तु यह विचार उसे सबसे अधिक पीड़ित कर रहा था कि वह न सिर्फ़ एक जाल में फँस गया है, अपितु अपने कर्तव्य-पालन में असफल रहा है।

अन्तश्चेतना की निरन्तर सुनायी पड़नेवाली सच्ची आवाज़ उसे यह विश्वास करने के लिए प्रेरित कर रही थी कि कहीं न कहीं उसने कोई ग़लती ज़रूर की है। उसने बार-बार इन बातों पर ग़ौर किया कि इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेन्को और ल्यूतिकोव से विदा होने के बाद उसने क्या कहा या क्या किया है, किन्तु उसे यह न मालूम हो सका कि उसने कब और कहाँ ग़लत क़दम रखा।

इस सबके पहले मत्वेई कोस्तियेविच का ल्यूतिकोव से परिचय नहीं हुआ था, किन्तु अब उसे बराबर उसकी चिन्ता बनी रही, ख़ासकर इसलिए कि उन दोनों को सुपुर्द किये गये कार्यों का सम्पन्न किया जाना अब एक मात्र ल्यूतिकोव पर ही निर्भर था। और प्रायः उसका मस्तिष्क असह्य वेदना और व्यथा का अनुभव करता हुआ अपने नेता और अपने दोस्त प्रोत्सेन्को की ओर भी घूम पड़ता :

"इवान फ़्योदोरोविच, इस समय तुम कहाँ हो? क्या तुम ज़िन्दा हो, क्या पापी दुश्मनों के छक्के छुड़ा रहे हो? क्या तुम उनपर हावी हो रहे हो? क्या तुम उन्हें परास्त कर रहे हो? या फिर वे, मेरी ही तरह, तुम्हारे शरीर और आत्मा पर भी अत्याचार कर रहे हैं? या फिर तुम कहीं स्तेपी में पड़े हुए हो और कौवे और गिद्ध तुम्हारी ज़िन्दादिल आँखें फोड़ रहे हैं?"

अध्याय 29

ल्यूतिकोव और शुल्गा से विदा होकर इवान फ़्योदोरोविच और उसकी पत्नी सड़क से

अपने दस्ते में शामिल होने के लिए रवाना हो गये थे। उनका दस्ता उत्तरी दोनेत्स के दूसरे तट पर मित्याकिन्स्काया वन में अड्डा जमाये हुए था। उन्हें अपने दस्ते तक पहुँचने के लिए काफ़ी चक्कर काटकर जाना पड़ा, क्योंकि बीच में बहुत-से इलाक़ों पर जर्मनों का पहले से क़ब्ज़ा हो चुका था। उनकी पुरानी 'गाज़िक' मोटर जैसे-तैसे नदी के पार तक उन्हें ले गयी थी और रात में वे ठीक उस समय छापेमार-अड्डे तक पहुँचे, जब जर्मन टैंक कज़्ज़ाक गाँव में, जिसके नाम पर वन का नाम पड़ा था, पहुँच रहे थे। वन?... क्या उसे वन का नाम दिया जा सकता है? क्या एक छोटे-से क्षेत्र पर लगी हुई कुछ झाड़ियों के इस झुरमुट की तुलना बेलोरूस का ब्रयांस्क के वनों से की जा सकती है, जो देशभक्त छापेमारों की यशगाथा का केन्द्र हैं? यहाँ मित्याकिन्स्काया वन में दुश्मन के साथ फ़ौजी झड़पें लेना तो दूर रहा, एक बड़े दस्ते को छिपाकर रखना भी बड़ा कठिन था।

सौभाग्य से इवान फ़्योदोरोविच और उसकी पत्नी के अड्डे पर पहुँचने से पहले वहाँ छापेमार सैनिक नहीं थे, बल्कि पश्चिम की ओर जानेवाली सड़कों पर जर्मनों से लड़ रहे थे।

उस समय इवान फ़्योदोरोविच के दिमाग़ में यह विचार उठा था कि जो दस्ता उस क्षेत्र में सबसे बड़ा था, उसके छिपने के लिए यह अड्डा उपयुक्त न था। किन्तु पहले दिन उसने इस स्वतःस्पष्ट और सीधे-सादे विचार से सभी निष्कर्ष नहीं निकाले और उन्हें निकालने में असमर्थ भी रहा, जिसका उसे बाद में बड़ा अफ़सोस रहा।

वोरोशीलोवग्राद प्रदेश कई इलाक़ों में बँट गया था। प्रत्येक इलाक़े का एक-एक लीडर था, जो ख़ुफ़िया प्रादेशिक पार्टी समिति के सेक्रेटरियों में से नियुक्त किया जाता था। इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेन्को इन्हीं में से एक था। उसके अधिकार क्षेत्र में कई ज़िला समितियाँ थीं और कई ख़ुफ़िया काम करनेवाले दल इन समितियों के अधीन थे। इनके अतिरिक्त ज़िलों में विशेष तोड़-फोड़ दल भी थे, जिनमें से कुछ स्थानीय ख़ुफ़िया ज़िला पार्टी समिति से निर्देश लेते थे और कुछ सीधे प्रादेशिक पार्टी समिति से। कुछ ऐसे भी थे, जो उक्राइनी या केन्द्रीय छापेमार हेडक्वार्टर से निर्देश प्राप्त करते थे।

भिन्न-भिन्न शाखाओं द्वारा किया जानेवाला यह ख़ुफ़िया कार्य और भी ऊँची षड्यंत्र व्यवस्था के सहयोग से होता था और इसमें सम्पर्क-स्थलों, छिपने के स्थानों, रसद रखने के गुप्त स्थानों, हथियारों के गुप्त स्थानों तथा विशेष जासूसों की मार्फ़त संचालित किये जानेवाले, और तकनीकी, संवहनसाधनों का भी इस्तेमाल किया जाता था। ज़िलों में फैले हुए सामान्य सम्पर्क-स्थलों के पतों के अलावा इवान फ़्योदोरोविच तथा प्रादेशिक ख़ुफ़िया कार्रवाइयों के दूसरे नेताओं के पास कुछ ख़ास पते भी रहते

थे, जिन्हें सिर्फ़ वे ही जानते थे। इनमें से कुछ उक्राइनी छापेमार हेडक्वार्टर के साथ सम्पर्क करने के लिए कड़ियों के रूप में थे, कुछ प्रदेश के नेताओं के बीच सम्पर्क स्थापित करनेवालों के रूप में, और कुछ ज़िला लीडरों अथवा दस्ता कमाण्डरों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए सम्पर्क केन्द्रों के रूप में।

प्रत्येक इलाक़े में कुछ छोटे-छोटे छापेमार दस्ते काम करते थे। इसके अतिरिक्त हर इलाक़े में एक काफ़ी बड़ा दस्ता होता था, जिसमें मूल योजना के अनुसार प्रादेशिक पार्टी समिति के सेक्रेटरी को उस इलाक़े की खुफ़िया कार्रवाइयों के नेता के रूप में काम करना था। यह सोचा गया था कि प्रादेशिक पार्टी समिति का सेक्रेटरी अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित रहेगा, क्योंकि उसके पास एक बड़ा छापेमार दस्ता होगा और उसे अपना काम करने की अधिक स्वतंत्रता रहेगी।

उस्पेंस्क ज़िले में एक बड़ा-सा गाँव था, ओरेख़ोवो। वहाँ का चिकित्सालय मुख्य सम्पर्क-स्थल था, जो वोरोशीलोवग्राद के खुफ़िया कार्यकर्ताओं के नेताओं का परस्पर सम्पर्क स्थापित करता था। स्वयं इवान फ़्योदोरोविच ने स्थानीय डाक्टर और उसकी सन्देशवाहिका क्सेनिया क्रोतोवा की बहन वलेन्तीना क्रोतोवा को वहाँ की प्रभारी बना दिया था। जब प्रोत्सेन्को क्रास्नोदोन में ही था, उस समय क्सेनिया अपनी डाक्टर बहन के साथ रह रही थी। उससे प्रोत्सेन्को को नवीनतम सूचना प्राप्त करनी थी कि जर्मनों के आने के बाद से दूसरे क्षेत्रों में क्या-क्या होता रहा है।

प्रोत्सेन्को ने अपने सहायक के ज़िम्मे मित्याकिन्स्काया वन में रखे छापेमारों के शस्त्रास्त्र और रसद की देख-रेख का काम तथा अन्य क्षेत्रों के साथ सम्पर्क बनाये रखने का सारा काम सौंप दिया और अपने दस्ते में शरीक होने चल दिया। उसे पैदल जाना था, क्योंकि सारे क्षेत्र में जर्मन टुकड़ियाँ फैली हुई थीं। बेशक सभी जगह अपनी 'गाज़िक' मोटर में ही सफ़र करना उसे पसन्द था। उसके पास इतना पेट्रोल भी था, जो कम से कम एक साल तक चल सकता था। किन्तु अब समय आ गया था कि मोटर को कहीं छिपाकर रख दिया जाये। अतः एक मिट्टी निकालनेवाले गड्ढे की एक खोह में उसे रख दिया गया और खोह का मुँह बाहर से बन्द कर दिया गया। उसकी पत्नी येकतेरीना पाव्लोव्ना, जो खुद उसकी एक सन्देशवाहिका और स्काउट थी, उस पर जी खोलकर हँसी और दोनों साथ-साथ, पैदल, दस्ते की ओर रवाना हुए।

अभी कुछ ही दिन पहले प्रोत्सेन्को ने क्रास्नोदोन ज़िला पार्टी समिति के भवन में बैठकर, डिवीजन के कमाण्डर जनरल के साथ सम्पर्क सम्बन्धी समस्याओं को निबटाया था, लेकिन उसके बाद से स्थिति में बड़ी तेज़ी से परिवर्तन हुआ था। बेशक अब डिवीजन के साथ किसी प्रकार की समन्वित कार्रवाई का कोई प्रश्न नहीं उठता था। डिवीजन, जब तक के लिए उसे आज्ञा दी गयी थी, दोनेत्स में कामेंस्क स्थान

पर डटी रही, जिसमें उसके कोई तीन चौथाई सैनिक काम आये। फिर डिवीजन अपनी जगह छोड़कर चली गयी। नुक़सान इतना अधिक हुआ था कि डिवीजन का अस्तित्व तक नहीं रह गया, किन्तु सामान्य बातचीत के दौरान यह कोई न कहा करता कि उसे "समाप्त कर दिया गया" या "उसे घेर लिया गया" या "वह भाग खड़ा हुआ"। नहीं, वे यही कहते थे कि डिवीजन "कूच कर गया"। और सचमुच वह कूच कर गया था और ऐसे समय जब बड़ी-बड़ी जर्मन सैनिक टुकड़ियों ने, उत्तरी दोनेत्स और दोन के बीच विशाल क्षेत्रों में सैनिक कार्रवाई शुरू कर दी थी।

डिवीजन नदिया और स्तेपी पार करता हुआ शत्रु अधिकृत क्षेत्र को लाँघता चला गया था। उसने रास्ते-भर लड़ाइयाँ लड़ी थीं और अपने बचाव के लिए स्तेपी के नदियों के ढालू किनारों का इस्तेमाल किया था। डिवीजन एक स्थान से ग़ायब होकर दूसरे स्थान में से निकल आता था। आरम्भिक दिनों में जब डिवीजन बहुत दूर न था, डिवीजन के युद्ध के समाचार छन-छनकर इन भागों में भी आते थे। किन्तु डिवीजन निश्चित सीमा तक पहुँचने के प्रयास में, बराबर पूर्व की ओर, आगे और आगे बढ़ता गया, और शायद वह सीमा इतनी दूर थी कि डिवीजन के बारे में अफ़वाह तक आनी बन्द हो गयी और कुछ समय बाद लोगों के दिलों में उसके कहानी-क़िस्से, उसकी शोहरत, उसकी याद भर रह गयी।

इवान फ़्योदोरोविच का छापेमार दस्ता बिल्कुल अकेला काम करता रहा। और उसका कार्य बुरा भी न रहा। पहले कुछ दिनों में उसने खुली लड़ाई में दुश्मनों की कुछ छोटी-छोटी टुकड़ियों का सफ़ाया कर दिया था। छापेमारों ने बाक़ी जर्मनों और जर्मन अफ़सरों को ठिकाने लगाया, पेट्रोल की टंकियों में आग लगायी, सामानवाली लारियों पर क़ब्ज़ा किया और गाँवों में जर्मन अधिकारियों को पकड़कर मौत के घाट उतार दिया। दूसरे दस्तों की कार्रवाइयों की ख़बरें अभी तक नहीं आयी थीं, किन्तु इवान फ़्योदोरोविच ने अनुमान लगाया कि अन्य छापेमार दस्तों ने भी अच्छा कार्य किया है और वहाँ पहुँचनेवाली ख़बरों से इस बात का पता चलता था। हाँ, इन अफ़वाहों में उन कारनामों के बारे में बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाता था, किन्तु इसका एक ही अर्थ था कि उनके संघर्ष को जनसमर्थन प्राप्त है।

दुश्मन दस्ते के विरुद्ध बहुत बड़ी शक्ति में संगठित होने लगा। प्रोत्सेन्को ने छापेमार हेडक्वार्टर का यह सुझाव रद्द कर दिया कि दस्ते को अपने अड्डे पर लौट आना चाहिए और रात के अँधेरे में उसे दोनेत्स के दाहिने तट पर लुके-छिपे भेज दिया। वहाँ किसी को भी इन छापेमारों के आ जाने की आशा न थी। उन्होंने जर्मनों की पृष्ठ सेनाओं में अभूतपूर्व ख़लबली मचा दी।

किन्तु दिन-ब-दिन स्तेपी के सीमित क्षेत्र में चलने-फिरने की स्वतंत्रता क़ायम

रखना बराबर कठिन होता जा रहा था। स्तेपी का यह क्षेत्र इतना घना बसा था कि खनिकों के गाँव, खेत और कज़्ज़ाक गाँव प्रायः एक दूसरे में गुंथे-से लगते थे। दस्ता बराबर बढ़ता रहा। प्रोत्सेन्को की सूझ और चातुर्य, इलाके में चप्पे-चप्पे की जानकारी और शस्त्रास्त्र से ख़ूब लैस होने के कारण दस्ते का बहुत नुक़सान नहीं हुआ। किन्तु अपने पीछे दुश्मनों के रहते हुए वे एक ही स्थान पर आख़िर कब तक आँख मिचौली खेलते।

दोनबास के इलाक़े में आबादी बहुत घनी थी। इसलिए वे बड़े-बड़े छापेमार दस्ते, जो विशाल जंगलों और वीरान स्तेपीवाले विस्तृत प्रदेशों के लिए बनाये गये थे, दोनबास के लिए अनुपयुक्त थे। इवान फ़्योदोरोविच इसी निष्कर्ष पर पहुँचा था, किन्तु उस समय तक मुसीबत सिर पर आ पहुँची थी।

क्सेनिया क्रोतोवा द्वारा दिया गया यह समाचार सुनकर उसका दिल तड़प उठा – वोरोशीलोवग्राद के बिलकुल निकट एक बड़ा-सा छापेमार दस्ता कार्रवाइयों के दौरान घेर लिया गया और विच्छिन्न कर दिया गया। इस संघर्ष में पार्टी की प्रादेशिक समिति का सेक्रेटरी याकोवेंको काम आया। याकोवेंको तथा प्रोत्सेन्को दस्तों के नमूनों पर बने कदीयेव्का के दस्ते में से केवल एक कमाण्डर और नौ व्यक्ति बच रहे थे। दस्ते को विच्छिन करने में दुश्मन को तिगुना अधिक नुक़सान हुआ था। किन्तु प्रसिद्ध कदीयेव्का के खनिक गार्ड दस्ते की क्षति की पूर्ति दुश्मनों को हुए नुक़सान से हो भी कैसे सकती थी? दस्ते के कमाण्डर ने प्रोत्सेन्को को सूचना दी कि मैं और अधिक लोगों को भर्ती कर रहा हूँ, जो भविष्य में छोटे-छोटे दलों में ही काम करेंगे। बोकोवो-अन्थ्रासीतोवो दस्ता बिना अधिक हताहतों के घेरे में से निकल गया और उसी वक़्त छोटी-छोटी टुकड़ियों में बँट गया। सभी टुकड़ियाँ एक ही कमान के अधीन काम कर रही थीं। रुबेजान्स्क, क्रेमेंस्क, इवानोव्स्क और दूसरे ज़िलों के छोटे-छोटे दस्ते सफलतापूर्वक और प्रायः बिना किसी क्षति के अपना काम किये जा रहे थे। पोपास्न्यान्स्क ज़िले के दस्ते ने, जो प्रदेश में सबसे बड़े दस्तों में से था, एक ही कमान के अधीन शुरू से ही छोटे-छोटे दलों में अपनी लड़ाई जारी रखी थी। स्थानीय जनता इस दस्ते की कार्रवाइयों की सराहना करती थी और इन्हें "यमदूत दस्ता" नाम दे रखा था। सभी ज़िलों में नये-नये छापेमार दस्ते, कुकुरमुत्तों की भाँति पैदा होते और बढ़ते जा रहे थे। इन दस्तों में स्थानीय लोग तथा लाल सेना के इक्के-दुक्के अफ़सर और सैनिक थे और सभी छोटे-छोटे छापेमार-टुकड़ियों के रूप में कार्य कर रहे थे।

उन परिस्थितियों में ऐसा करना आवश्यक हो गया था।

प्रोत्सेन्को को यह सूचना मिली। अब उसे अपने दस्ते को छोटे-छोटे दलों में विभाजित करने के लिए कुछ ही घण्टों का समय चाहिए था, किन्तु भाग्य ने उसे

इतना अल्प समय भी न दिया।

जर्मनों ने भोर से ही उनके इर्द-गिर्द घेरा डाल दिया था और अब साँझ होने को थी।

कभी इस स्थान पर कोई छोटा-सा नाला हुआ करता था, जो उत्तरी दोनेत्स में जा मिलता था। वह इतने पहले ही सूख गया था कि आस-पास के कज़्ज़ाक गाँव मकारोव यार के निवासियों तक को यह याद न था कि पेड़-पौधों से भरे खड्ड में उन्होंने कब पानी के दर्शन किये थे। खड्ड ऊपरी सिरे पर सँकरा और उद्गम की ओर चौड़ा हो गया था। उसका आकार त्रिकोण जैसा था। वन की चौड़ी पट्टी नदी के किनारे तक फैली हुई थी।

इवान फ़्योदोरोविच खड्ड के ऊपरी सिरे पर कुछ नीची झाड़ियों में पड़ा था, जो सुरक्षा की दृष्टि से उस सारे खड्ड में सबसे कठिन क्षेत्र था। उसकी ठोड़ी पर हल्के भूरे रंग की, किसानों जैसी, मुलायम दाढ़ी बढ़ आयी थी। एक जर्मन गोली उसकी दायीं कनपटी छूती हुई निकल गयी थी और उसकी खाल और बाल उड़ गये थे तथा कनपटी पर ख़ून जम गया था, जो सूख चला था। किन्तु उसका ध्यान इस ओर न गया। वह झाड़ी के बीच पड़ा, अपनी टामी-गन चलाता रहा। एक फ़ालतू टामी गन उसी के पास और पड़ी थी, जिसे इस्तेमाल करने के बाद ठण्डा होने के लिए छोड़ दिया गया था।

येकतेरीना पाव्लोव्ना अपने पति से कुछ दूर लेटी हुई टामी-गन से आग बरसा रही थी। उसका चेहरा पीला किन्तु कठोर था। वह टामी-गन अन्धाधुन्ध नहीं चला रही थी, बल्कि सोच-समझकर और निशाना साध-साधकर, उसकी एक-एक चेष्टा में फुरती तथा कमनीयता का विचित्र मिश्रण था। लग रहा था कि वह अपनी टामी-गन अकेली उँगलियों से साधे हुए है। उसकी दाहिनी ओर मकारोव यार का एक पुराना सामूहिक किसान था। उसका नाम नरेज्नी था। वह अपने को "पुराने जर्मन युद्ध का मशीन-गन चालक" कहा करता था। उसका तेरह वर्षीय पौत्र गोला-बारूद के बक्सों से घिरा हुआ फ़ालतू मेगज़ीनों को भरता जा रहा था। इन बक्सों के पीछे एक छोटे-से गढ़े में कमाण्डर का ऐडजुटेण्ट था, जो फ़ील्ड-टेलीफ़ोन का गर्म-गर्म चोंगा बराबर अपने कानों से सटाये था। कमाण्डर इवान फ़्योदोरोविच के साथ नहीं, बल्कि नदी के तट पर था। ऐडजुटेण्ट अपनी सांकेतिक भाषा में बार-बार यही कहे जा रहा था :

"माता सुन रही है... माता सुन रही है... यह कौन है? चाची, तुम कैसी हो! आलूचे ख़त्म हो गये? तो भतीजे से कुछ ले लो... माता सुन रही है, माता सुन रही है... यहाँ सब ठीक है... तुम कैसे हो? अच्छा गर्मी का रुख़ उनकी ओर कर दो!

बहन! बहन! बहन! तुम सो रही हो? भाई चाहता है कि बायीं ओर उसकी मदद को आग भेजी जाय..."

इवान फ़्योदोरोविच को तो अपनी या अपनी पत्नी की सम्भावित मृत्यु और दूसरे लोगों के जीवन की ज़िम्मेदारी का भार उतना व्यथित नहीं कर रहा था, जितना यह ख़याल कि इस संकट का पूर्वानुमान किया जा सकता था और जिस गम्भीर स्थिति में अब वे पड़ गये है, उसे दूर किया जा सकता था।

वस्तुतः उसने दस्ते को कई दलों में बाँट दिया था और हर दल के लिए एक-एक कमाण्डर और राजनीतिक कार्यकर्ता नियुक्त कर दिया था। इन लोगों के लिए एक-एक जगह निश्चित कर दी गयी थी, जिसे वे समय पड़ने पर अड्डे के रूप में इस्तेमाल कर सकते थे। भूतपूर्व कमाण्डर, अपने राजनीतिक कार्यकर्ता और छापेमार हेडक्वार्टर-चीफ़ के साथ – इन नवनिर्मित छोटे-छोटे दलों में से एक का कमाण्डर बन गया था। साथ ही उन्हें दूसरे सभी दलों को भी अपने अधिकार में लेना था और चूँकि अब उनकी संख्या काफ़ी बड़ी नहीं थी, अतएव वे मित्याकिन्स्काया वन को अपना अड्डा बनाये रख सकते थे।

इवान फ़्योदोरोविच ने कमाण्डरों और दूसरे लोगों को इस बात के लिए तैयार कर दिया था कि वे रात होने तक वहीं, खड्ड में, पड़े रहेंगे, फिर वह उनकी अगुआई करेगा और वे दुश्मनों के घेरे को तोड़कर खुली स्तेपी में पहुँच जायेंगे। उसने हर दस्ते को तीन से लेकर पाँच तक के छोटे-छोटे दलों में बाँट दिया था, ताकि घेरा तोड़ने के बाद वे अपनी गति को सुगम बना सकें। ये दल जिस रास्ते से भी भागकर अपने को बचा सकते थे, उधर भाग सकते थे। फ़िलहाल प्रोत्सेन्को और उसकी पत्नी को बूढ़े नरेज्नी के निकट एक विश्वस्त रक्षा-स्थल में छिपे रहना था।

इवान फ़्योदोरोविच जानता था कि घेरा तोड़ने में कुछ लोग मारे जायेंगे; कुछ पकड़े जायेंगे; कुछ बचकर भाग निकलेंगे, किन्तु वे इतने कमज़ोर हो जायेंगे कि वे निश्चित स्थान, यानी अपने अड्डे पर न पहुँच सकेंगे। और इन सब विचारों से उसके मस्तिष्क पर नैतिक उत्तरदायित्व का बोझ बढ़ गया। वह अपने इन विचारों में किसी को भी साझीदार न बनाता, फिर भी उसके चेहरे की भाव-भंगिमा उसकी मुद्रा, उसका व्यवहार, उसकी आन्तरिक अनुभूति से बिलकुल भिन्न थे। वह झाड़ियों के बीच पड़ा था, चुस्त, गठीला बदन, और दमकते लाल चेहरे पर किसानी दाढ़ी जो लगभग चेहरे को ढँके हुए थी; और वह दुश्मन पर आग बरसाता हुआ बूढ़े नरेज्नी से मज़ाक भी कर लेता था।

नरेज्नी के चेहरे पर कुछ मोलदावान, यहाँ तक कि तुर्की झलक भी थी – काजल की तरह काली घुँघराली दाढ़ी, काली, पैनी, चमकती आँखें। वह धूप में खिले फूल

के डण्ठल की भाँति सूख गया था, किन्तु उसकी चौड़ी, मज़बूत, हड़ीली बाँहें और कन्धे वैसे ही जानदार थे। यद्यपि उसकी प्रत्येक चेष्टा धीमी थी, फिर भी उसमें उत्साह कूट-कूटकर भरा था।

यद्यपि उनकी स्थिति बड़ी ही संकटपूर्ण थी, फिर भी दोनों को एक दूसरे के साथ रहने और बातचीत करने में सन्तोष का अनुभव होता था। उनकी बातचीत कोई बड़ी गम्भीर क़िस्म की नहीं कही जा सकती थी। प्रायः प्रत्येक आधे घण्टे के बाद इवान फ़्योदोरोविच, चपलतापूर्वक आँखें चमकाता हुआ बोल उठता :

"कोर्नेई तीख़ोनोविच, कितनी गर्मी है, है न?"

और कोर्नेई तीख़ोनोविच उत्तर देताः

"यह तो मैं कह नहीं सकता कि ठण्डक है पर, इवान फ़्योदोरोविच, अभी सचमुच तो गर्मी पड़ी नहीं है!"

और जब जर्मन उन्हें और भी सख़्ती से दबाते तो इवान फ़्योदोरोविच बोलता :

"अगर उनके पास मोर्टार हों और वे हम पर गोले बरसाने लगे, तो जल्दी ही गर्मी पड़ने लगेगी। है न, कोर्नेई तीख़ोनोविच?"

जिस पर तुरन्त उत्तर मिलता :

"इस जंगल में गोले बरसाने के लिए उसके पास गोले के ज़ख़ीरे होने चाहिए, क्यों, इवान फ़्योदोरोविच?"

सहसा उन्हें मोटर-साइकिलों की गड़गड़ाहट सुनायी दी। यह आवाज़ मकारोव यार की दिशा से आती हुई बराबर बढ़ती जा रही थी, यहाँ तक कि टामी-गनों के चलने की आवाज़ उसमें दब गयी।

क्षण भर के लिए उन्होंने टामी-गन से आग बरसाना बन्द कर दिया।

"सुन रहे हो, कोर्नेई तीख़ोनोविच?"

"हाँ।"

इवान फ़्योदोरोविच ने अपनी पत्नी की ओर चेतावनी की दृष्टि से देखा ओर होठों से चुप हो जाने का इशारा किया।

मोटर-साइकिलों पर जर्मन सैनिकों का एक दस्ता एक सड़क से होकर आ रहा था, जो आँखों से ओझल थी, किन्तु उनका शोर सारे खड्ड में सुनायी दे रहा था। टेलीफ़ोन पूरी सक्रियता से कार्य करने लगा।

सूर्यास्त हो चुका था, किन्तु चाँद नहीं निकला था। अब लम्बी-लम्बी परछाइयाँ नहीं रह गयी थीं, पर साथ ही झुटपुटा भी न था। आकाश में तरह-तरह के कोमल हल्के रंग परस्पर घुल-मिल रहे थे। हर चीज़ – ज़मीन, झाड़ियों और पेड़ों, लोगों के

चेहरों, बन्दूक़ों और तोपों और घास पर बिखरे हुए कारतूसों के खोलों पर धुँधली रोशनी छिटकी हुई थी, जो शीघ्र ही अन्धकार से ढँक जानेवाली थी। गोधूलि की यह बेला कुछ ही क्षणों तक स्थिर रही, फिर, कोहरे या ओस की तरह, हवा में छिटकी और झाड़ियों तथा ज़मीन पर बैठकर गहराने लगी।

इवान मकारोव यार की ओर से आती हुई मोटर-साइकिलों की आवाज़ बढ़ती-बढ़ती सारे क्षेत्र में फैल गयी। फिर, ख़ासकर नदी तट के किनारे कुछ छिटपुट गोलाबारी और हुई।

इवान फ़्योदोरोविच ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली।

"चल देने का समय... तेर्योख़िन! ठीक नौ बजे..." उसने पीछे मुड़े बिना टेलीफ़ोन के पास बैठे हुए ऐडजुटेण्ट से कहा।

इवान फ़्योदोरोविच ने, कुंज में बिखरे हुए दलों के कमाण्डरों के साथ यह तय कर दिया था कि उसका संकेत मिलते ही सारे दल, घाटी की तलहटी में खड़े हॉर्नबीन के पेड़ की ओर भागेंगे और वहीं से घेरा तोड़कर निकल जायेंगे। अब इसका समय आ गया था।

जर्मनों का ध्यान भंग करने के लिए, दोनेत्स के तट पर कुंज की रक्षा करनेवाले दो छापेमार दलों को अपनी-अपनी जगहों पर बाक़ी दलों से कुछ अधिक समय तक रहना था और यह दिखाना था कि वे नदी पार करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। इवान फ़्योदोरोविच ने इस तलाश में अपनी नज़र अपने चारों ओर दौड़ायी कि कोई ऐसा आदमी दिख जाये जिसे उक्त दलों के पास भेजा जा सके।

खड्ड के सबसे ऊपरी सिरे की रक्षा करनेवाले छापेमारों में क्रास्नोदोन का एक कोमसोमोल युवक येव्गेनी स्तख़ोविच था। वह नगर पर जर्मनों के क़ब्ज़ा होने तक वोरोशीलोवग्राद में हवाई हमले के एक प्रतिरक्षा कोर्स में पढ़ रहा था। अपने सांस्कृतिक विकास, नियंत्रित आचरण तथा सार्वजनिक कार्यों और सामाजिक समस्याओं में दिलचस्पी दिखाने के कारण वह दूसरों से श्रेष्ठ लगता था। इवान फ़्योदोरोविच ने उसे तरह-तरह के काम सुपुर्द करके उसकी परीक्षा की थी और उसे क्रास्नोदोन के ख़ुफ़िया संगठनों के साथ सम्पर्क-कार्यों के लिए इस्तेमाल करने का निश्चय किया था। उसकी दृष्टि युवक के पीले चेहरे और उसके नम और लहराते हुए सुनहरे बालों पर पड़ी, जो किसी और समय गर्व से उठे हुए सिर पर मोटी-मोटी बेपरवाह लहरों की भाँति छाये रहते थे। युवक बड़ा उत्तेजित था, किन्तु उसकी गर्वानुभूति ने उसे खड्ड के भीतर पनाह लेने की आज्ञा न दी। इस बात से इवान फ़्योदोरोविच ख़ुश हो गया और उसने उसे सन्देश देकर भेज दिया।

मुँह पर जबरन मुसकान लाते हुए स्तख़ोविच ज़मीन तक झुका-झुका नदी तट

की ओर दौड़ पड़ा।

"और तुम, कोर्नेई तीख़ोनोविच... यह ध्यान रखना कि ज़रूरत से ज़्यादा एक मिनट भी न ठहरना," प्रोत्सेन्को ने बहादुर बूढ़े से कहा। बूढ़े को छापेमारों के उस दल के पास रह जाना था, जिसे घेरा तोड़नेवालों की रक्षा के लिए पीछे रहना था।

जैसे ही नदी तट के छापेमारों ने दोनेत्स पार करने के लिए अपनी दिखावटी तैयारियाँ शुरू कीं, जर्मनों की मुख्य टुकड़ियाँ अपना सारा ध्यान उन्हीं पर केन्द्रित करने लगी। दुश्मन ने जंगल तथा नदी के उस भाग पर ज़ोरों की गोलाबारी शुरू कर दी। गोलियाँ छूटने और फटने की आवाज़ें कान फाड़े दे रही थीं। ऐसा लगता जैसे वे ऊपर ही फट रही हैं और सीसे की गरम राख साँसों के साथ लोगों की नाकों में जा रही है।

स्तख़ोविच ने, नदी तट के दस्ता कमाण्डर को प्रोत्सेन्को के निर्देश दे दिये थे। कमाण्डर ने अधिकांश छापेमारों को घाटी में उस स्थान की ओर भेज दिया था, जहाँ सबको इकट्ठा होना था, और स्वयं घेरा तोड़कर भाग निकलनेवालों की रक्षा के लिए बारह जवानों के साथ पीछे रह गया था। स्तख़ोविच ने यह जगह बड़ी भयंकर समझी! बेशक ज़्यादा लोगों के साथ चल देने की उसके मन में इच्छा भी उठी, परन्तु ऐसा करना उसने मुनासिब न समझा और यह देखकर कि कोई उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहा है वह झाड़ियों में लेट गया और अपने कोट का कालर कान तक उठा लिया, ताकि शोर कुछ कम सुनायी दे।

जर्मन एक ही स्थान पर आग बरसाये जा रहे थे। बीच-बीच में जब गोलाबारी थमती तो जर्मन अफ़सरों की कमान देने की आवाज़ें सुनायी पड़ जातीं। दुश्मनों के इक्के-दुक्के दल मकारोव यार की दिशा से जंगल में घुस चुके थे।

"वक़्त आ गया है, दोस्तो!" सहसा दस्ता कमाण्डर की तेज़ आवाज़ गूँजी, "चलें, भाग चलें!..."

छापेमारों ने गोलाबारी बन्द कर दी और अपने कमाण्डर के पीछे दौड़ चले। दुश्मनों ने गोलाबारी कम करने के बजाय और बढ़ा ही दी थी, फिर भी छापेमारों को लगा कि वे चुपचाप जंगल के बीच से भाग रहे हैं। वे पूरे ज़ोरों से दौड़ रहे थे और एक दूसरे की साँस तक सुन सकते थे। फिर उन्हें घाटी में पास-पास लेटे हुए अपने साथियों की काली-काली आकृतियाँ दिखायी दीं। वे भी ज़मीन पर लेट गये और रेंगते हुए उनके साथ जा मिले।

"तुम लोग ख़ुदा का शुक्र करो कि बचकर यहाँ तक आ गये!" सहमति सूचक मुद्रा में इवान फ़्योदोरोविच ने कहा। वह पुराने हॉर्नबीन के पेड़ के पास खड़ा था। "क्या स्तख़ोविच यहीं है?"

"हाँ," कमाण्डर ने तुरन्त उत्तर दिया।

छापेमारों ने एक दूसरे को देखा। स्तख़ोविच वहाँ नहीं था।

"स्तख़ोविच!" कमाण्डर ने धीरे-से पुकारा और अपने इर्द-गिर्द के छापेमारों के चेहरों पर दृष्टि डाली। सचमुच स्तख़ोविच वहाँ नहीं था।

"तुम लोग इतने दीवाने कैसे हो गये कि यह भी न देख सके कि उसे कहीं मार तो नहीं डाला गया? शायद तुम उसे वहीं घायल छोड़ आये हो!" प्रोत्सेन्को चिल्ला पड़ा। वह बड़ा क्रुद्ध था।

"इवान फ़्योदोरोविच, क्या मैं दुधमुँहा हूँ?" कमाण्डर भी नाराज़ हो रहा था। "जब हम अपनी जगह से हटे, तो वह सही-सलामत हमारे साथ था और हम एक दूसरे पर निगाह रखे हुए साथ-साथ भागते रहे..."

उसी समय इवान फ़्योदोरोविच को बूढ़े नरेज्नी और उसके पौत्र की तथा अन्य कई छापेमार सैनिकों की आकृतियाँ दिखायी पड़ीं। सभी चुपचाप रेंगते चले आ रहे थे।

"हमारे बूढ़े दोस्त!" अपनी ख़ुशी छिपाने में असमर्थ इवान फ़्योदोरोविच चिल्ला पड़ा।

वह घूम पड़ा।

"फ़ौरन तैयार हो जाओ," उसने धीरे-से कहा और सभी छापेमारों ने उसकी ओर कान लगा दिये।

वे ज़मीन से चिपके रहे, किन्तु इस ढंग से कि कभी भी उछलकर खड़े हो सकते थे।

"कात्या!" इवान फ़्योदोरोविच ने धीरे-से कहा, "मेरे पास रहो, पर यदि मैं... यदि कुछ हो जाये..." उसने अपनी बाँह झटकी, मानो उस विचार को दिमाग़ में से निकाल फेंकने का प्रयत्न कर रहा हो। "मुझे माफ़ करना!"

"और मुझे।" वह बोली। उसका सिर कुछ झुका हुआ था, "लेकिन अगर तुम निकल जाओ और मैं..." प्रोत्सेन्को ने उसे अपनी बात नहीं ख़त्म करने दी।

"यही बात मेरे साथ भी है... और तुम बच्चों से कह देना कि..."

इससे अधिक कहने-सुनने का उन्हें समय ही न मिला। प्रोत्सेन्को धीरे-से चिल्लाया :

"गोली चलाओ! आगे बढ़ो!"

घाटी से निकलनेवाला वह पहला आदमी था।

वे यह नहीं बता सकते थे कि उनकी संख्या कितनी रह गयी थी या वे कितनी देर तक भागते रहे थे। लगता था जैसे उनकी साँस बन्द हो गयी है और उनके दिल

बैठ गये हैं। वे चुपचाप भाग रहे थे। कुछ तो भागते हुए गोलियाँ भी चला रहे थे। प्रोत्सेन्को पीछे मुड़कर अपनी पत्नी, नरेज्नी और उसके पौत्र को देख और भी उत्साहित हो उठता।

सहसा मोटर-साइकिलों की भड़भड़ उनके पीछे और दाहिनी ओर सुनायी देने लगी। फिर आगे की ओर से भी इंजनों की आवाज़ सुनायी दी। लग रहा था जैसे आवाज़ों ने भागनेवालों को चारों ओर से घेर लिया है।

इवान फ़्योदोरोविच के इशारे पर छापेमार बिखर गये। वे चाँद की फीकी रोशनी और ऊबड़-खाबड़ ज़मीन का लाभ उठाते हुए धरती पर साँपों की भाँति रेंगने लगे। एक ही क्षण में वे आँखों से ओझल हो गये।

कुछ ही मिनटों में प्रोत्सेन्को, कात्या, नरेज्नी और उसका पौत्र चाँदनी से नहायी स्तेपी में अकेले रह गये। इस समय वे किसी सामूहिक फ़ार्म के तरबूजों के एक खेत के बीच में थे, जो उनके आगे कई हैक्टरों तक ढलान पर ऊपर को उठता हुआ दिखायी दे रहा था और उस पहाड़ी के सिरे तक चला गया था, जो आसमान की पृष्ठभूमि में साफ़-साफ़ दिखायी पड़ रही थी।

"ठहरो, कोर्नेई तीख़ोनोविच – मेरी तो सांस फूल रही है," इवान फ़्योदोरोविच ने कहा और ज़मीन पर चित्त पड़ गया।

"अपने पर क़ाबू करो, इवान फ़्योदोरोविच," उसके पास आकर और उसके ऊपर झुकते हुए नरेज्नी बोला। उसकी गरम-गरम साँस प्रोत्सेन्को के चेहरे पर पड़ रही थी। "हमारे पास आराम करने का वक़्त नहीं। गाँव पहाड़ी के उस पार है। वहाँ के लोग हमें छिपा लेंगे!"

इस प्रकार वे नरेज्नी के पीछे, तरबूज़ों के खेत से होकर रेंगते रहे। नरेज्नी कभी-कभी अपनी काली दाढ़ीवाला चेहरा घुमा लेता और इवान फ़्योदोरोविच और कात्या पर एक भेदती हुई दृष्टि डाल लेता।

वे रेंगते हुए पहाड़ी के सिरे तक पहुँच गये। अब उन्हें गाँव के सफ़ेद मकान और काली खिड़कियाँ नज़र आने लगी थीं। सबसे नज़दीक का मकान उनसे कोई दो सौ गज़ दूर था। तरबूज़ों के खेत मकानों की निकटतम क़तार के बाड़ों से लगी हुई सड़क तक चले गये थे। किन्तु जैसे ही वे पहाड़ी के सिरे पर पहुँचे कि कुछ मोटर-साइकिलवालों फर्राटे से गुज़रे और गाँव में घुस गये।

टामी-गनों से छुटनेवाली गोलियों की आवाज़ें अभी भी कभी इधर से, तो कभी उधर से आ रही थीं। लगता था कि जवाबी गोलियाँ भी दग़ रही हैं और रात की यह गोलाबारी, व्यथा और निराशा के साथ इवान फ़्योदोरोविच के हृदय में प्रतिध्वनित होने लगती। कभी-कभी नरेज्नी का सुनहरे बालोंवाला पौत्र, जिसकी सूरत-शक्ल किसी भी

प्रकार अपने बाबा से नहीं मिलती थी, अपनी सहमी हुई और प्रश्नसूचक आँखें इवान फ़्योदोरोविच की ओर उठा देता। उन आँखों की ओर देखना तक हृदयविदारक हो रहा था।

गाँव से जर्मन भाषा में कोसने और बन्दूक़ों के कुन्दों से दरवाज़े भड़भड़ाने की आवाज़ें आ रही थीं। फिर बिलकुल शान्ति छा जाती, सहसा कोई बच्चा चीख़ उठता या कोई स्त्री। फिर ये चीख़ें रोने-धोने और गिडगिड़ाहटभरी सिसकियों में बदलकर रात्रि की नीरवता भंग करने लगतीं। कभी गाँव से या उसके बाहर से एक अथवा एक से अधिक या मोटर-साइकिलों के पूरे दस्ते की आवाज़ से हवा गूँज उठती। आसमान में पूनम का चाँद चमक रहा था। इवान फ़्योदोरोविच, कात्या, जिसके पैर काँटों के कारण छिल चुके थे – नरेज्नी और उसका पौत्र, भीगे हुए और सर्दी से काँपते हुए ज़मीन पर चित्त पड़े थे।

और वे लेटे-लेटे तब तक प्रतीक्षा करते रहे, जब तक स्तेपी और गाँव में नीरवता न छा गयी।

"अब वक़्त है, पौ फूट रही है," नरेज्नी फुसफुसाया, "हम एक दूसरे के पीछे रेंगते हुए चलेंगे।"

गाँव से उन्हें जर्मन पहरेदारों की पदचापें सुनायी पड़ रही थीं। कभी-कभी किसी दियासलाई या सिगरेट-लाइटर की लौ भी दिखायी दे जाती। इवान फ़्योदोरोविच और कात्या गाँव के बीचोंबीच, किसी मकान के पीछे, ऊँची घास में छिपे रहे और नरेज्नी तथा उसका पौत्र बाड़े को लाँघ गये। कुछ समय तक हर तरह की आवाज़ें थम गयीं।

मुर्ग़ों ने पहली बाँग दी। इवान फ़्योदोरोविच अनायास मुस्कुरा उठा।

"किस बात पर हँस रहे हो?" कात्या फुसफुसायी।

"सारे गाँव में बस दो-तीन मुर्ग़े बाँग दे रहे हैं! जर्मनों ने सारे मुर्ग़े मार डाले होंगे!"

दोनों ने अब पहली बार एक दूसरे की ओर इतने निकट से और ध्यानपूर्वक देखा। केवल उनकी आँखें ही मुस्कुरा रही थीं।

"तुम लोग कहां हो? अब मकान में आ जाओ..." बाड़े की दूसरी ओर से फुसफुसाहट के शब्द सुनायी दिये।

एक लम्बी, पतली और चौड़ी हड्डियोंवाली औरत सिर पर सफ़ेद रूमाल बाँधे उन्हें बाड़े के उस पार से देख रही थी। उसकी काली-काली आँखें चाँदनी में चमक रही थीं।

"अब उठो, डरो मत, इधर-उधर कोई नहीं है," वह बोली।

उसने बाड़ा पार करने में कात्या की मदद की।

“आपका नाम?” कात्या ने धीरे-से पूछा।

“मार्फ़ा,” उस औरत ने उत्तर दिया।

“कैसी है यहाँ की ‘नयी व्यवस्था’?” रूखी हँसी हँसते हुए इवान फ़्योदोरोविच ने पूछा। वे उस मकान में एक मेज़ के इर्द-गिर्द मद्धिम रोशनी में बैठ चुके थे।

“व्यवस्था ऐसी है – कमाण्डर का भेजा हुआ एक जर्मन हमारे यहाँ आता है और प्रतिदिन एक-एक गाय के हिसाब से छह-छह लिटर दूध और प्रतिमाह एक-एक मुर्ग़ी के हिसाब से नौ-नौ अण्डे ले जाता है,” मार्फ़ा ने शर्माते हुए कहा। किन्तु वह कनखियों से बराबर प्रोत्सेन्को को देखती रही। उसकी काली-काली आँखों में नैसर्गिक नारीत्व की आभा झलक रही थी।

मार्फ़ा की उम्र कोई पचास की होगी, किन्तु जिस ढंग से वह मेज़ पर खाना लगाती तथा तश्तरियाँ हटाती थी, उससे वह काफ़ी जवान और कमनीय लगती थी। उसका घर सफ़ेदी किया हुआ और साफ़-सुथरा था। जगह-जगह कशीदे के कामवाले सजावटी परदे लगे थे और घर भर में प्रायः सभी उम्र के बच्चे रह रहे थे। उसका चौदह साल का एक बेटा और बारह साल की एक बेटी जाग गये थे और बाहर जाकर सड़क पर आँखें गड़ाये खड़े थे।

“वह जर्मन हर दो दिन बाद आ धमकता है और फिर से गाय-बकरी की माँग करता है। अब तुम्हीं देखो। हमारा गाँव कोई बड़ा तो है नहीं। यहाँ यही कोई सौ घर होंगे और वे दुष्ट बीस मवेशी माँग लेते हैं। तो ऐसी है ‘नयी व्यवस्था’,” मार्फ़ा बोली।

“तुम चिन्ता न करो, चाची मार्फ़ा। हम उन्हें आज से नहीं, 1918 से जानते हैं। वे जितनी जल्दी आये हैं, उससे ज़्यादा जल्दी भाग जायेंगे,” नरेज्नी बोला और इतने ज़ोरों का ठहाका लगाकर हँस पड़ा कि उसके सारे मज़बूत दाँत चमकने लगे। उसकी एशियाई बनावट की आँखों में चतुरता और साहस झलक रहे थे। साँवला चेहरा पत्थर से तराशकर बनाया लग रहा था।

इस पर विश्वास किया नहीं जा सकता था कि यही व्यक्ति अभी-अभी मौत के मुँह से निकलकर आया है।

इवान फ़्योदोरोविच ने कनखियों से अपनी पत्नी की ओर देखा – कुछ ही पहले उसके कठोर और तने चेहरे पर भी मुसकान खेलने लगी थी। कई दिनों तक लड़ाई में फँसे रहने और घेरा तोड़कर निकल भागने की ज़ोखिम उठाने के बाद उन्हें महसूस हुआ, जैसे इन अधेड़ उम्र के लोगों के चेहरों पर से जवानी की ताज़गी फूट रही है।

“बेशक, चाची मार्फ़ा, उन्होंने तुम्हारा ख़ून चूसा है, लेकिन मैं तो देख रहा हूँ कि उन्होंने फिर भी तुम्हारे पास कुछ माल-असबाब छोड़ रखा है,” कहते-कहते इवान

फ़्योदोरोविच ने नरेज्नी की ओर देखकर आँख मारी, सिर हिलाकर मेज़ की ओर इशारा किया, जिसे मार्फ़ा ने दही, खट्टी क्रीम, मक्खन और सुअर की चर्बी में बनाये गये आमलेट से पूरी तरह सजा दिया था।

"शायद तुम नहीं जानते कि किसी भी उक्राइनी सुगृहिणी के मकान में तुम्हें अपना पेट भरने के लिए सभी कुछ मिल सकता है, किन्तु जब तक तुम उसे मौत के घाट न उतार दो, तब तक न तो तुम उसका सब कुछ खा ही सकते हो, न चुरा ही सकते हो!" मार्फ़ा ने मज़ाक किया और एक बालिका की भाँति जैसे घबराकर सकुचा गयी। उसकी यह अदा देखकर इवान फ़्योदोरोविच और नरेज्नी मुँह पर हाथ रखकर हँसने लगे। कात्या तक भी मुस्करायी। "मैंने सब कुछ छिपा दिया है!" कहकर मार्फ़ा भी हँस पड़ी।

"तुम अक़्लमन्द औरत हो!" प्रोत्सेन्को ने सिर हिलाकर कहा। "पर तुम काम क्या करती हो – सामूहिक किसान हो या निजी खेती करती हो?"

"मैं सामूहिक किसान हूँ। लेकिन इस समय छुट्टी पर हूँ, जब तक कि जर्मन चले नहीं जाते," मार्फ़ा ने कहा, "हम लोग उनके लिए कुछ भी नहीं हैं। वे समझते हैं कि हमारे सामूहिक खेत जर्मनी के भाग हैं, 'राइख़' के भाग। तुम लोग 'राइख़' ही कहते हो न? कोर्नेई तीख़ोनोविच, उसका यही नाम है न?"

"हाँ, 'राइख़' ही! सत्यानाश हो जाये इसका!" बूढ़े ने तिरस्कारपूर्ण शब्दों में कहा।

"उन्होंने हम लोगों को एक बैठक में बुलाया और हमारे सामने एक काग़ज पढ़ा। क्या नाम है उसका? रोज़नबर्ग? उसकी ओर से। उस चोर का यही नाम है न, कोर्नेई तीख़ोनोविच?"

"हाँ-आँ। रोज़नबर्ग! बदमाश!" नरेज्नी ने उत्तर दिया।

"यह रोज़नबर्ग कहता है कि वह हमें निजी खेती के लिए ज़मीन देगा। पर ध्यान रहे सब को नहीं, सिर्फ़ उन्हीं को, जो जर्मन 'राइख़' के लिए अच्छा काम करेंगे, जिनके पास मवेशी और मशीनें होंगी। और ज़रा यह तो बताओ कि जब वे गेहूँ काटने के लिए हमें हँसिये देते हैं और अनाज की फ़सल अपने 'राइख़' के लिए ले लेते हैं, तो इन मशीनों का मतलब क्या रह जाता है? हम महिलाएँ तो यह भी भूल गयी हैं कि अनाज की कटाई के लिए हँसियों का प्रयोग किया कैसे जाता है! हम खेतों में जाते हैं, गेहूँ के पौधों के साये में लेट जाते हैं और सोते रहते हैं!"

"और गाँव का मुखिया?" प्रोत्सेन्को ने पूछा।

"ओह, वह हमारी तरफ़ है," मार्फ़ा ने उत्तर दिया।

"तुम बड़ी होशियार हो," प्रोत्सेन्को बोला और फिर अपना सिर हिला दिया,

"तुम्हारा आदमी कहाँ है?"

"वह कहाँ होगा? मोर्चे पर। हाँ... मेरा गोर्देई कोर्नियेंको मोर्चे पर है," उसने गम्भीरपूर्वक कहा।

"लेकिन मुझे यह बताओ," इवान फ़्योदोरोविच बोला, "तुम्हारे इतने बच्चे हैं, तिस पर तुम हमें छिपा रही हो। तुम्हें अपने और बच्चों के लिए डर नहीं लगता?"

"नही," उसने जवाब दिया। उसकी युवा जैसी आँखें प्रोत्सेन्को के चेहरे पर गड़ गयीं। "भले ही वे मेरा सिर उतार लें, पर मुझे कोई भय नहीं। कम-से-कम मुझे यह तो पता चल जायेगा कि मैं किसलिए मर रही हूँ। आप भी मुझे बताइये कि मोर्चे के साथ आपका सम्पर्क बना हुआ है?"

"हाँ, है," इवान फ़्योदोरोविच ने उत्तर दिया।

"फिर हमारे आदमियों से कहो कि वे आख़िर दम तक लड़ते रहें। हमारे पति अपने ख़ून की अन्तिम बूँद तक बहा दें," वह बोली। उसके अन्तस में एक सरल और निष्ठावान नारी का विश्वास था। "मैं कहती हूँ भले ही वे हमारे पिता हों," उसने ये शब्द कुछ इस ढंग से कहे मानो बच्चों की ओर से कह रही हो, "हो सकता है हमारे पिता वापस न आयें, हो सकता है वे लड़ाई में खेत रहें। किन्तु हमें यह तो पता चल जायेगा कि वे किस लिए मरे! और जब सोवियत सत्ता फिर स्थापित होगी, तो वही हमारे बच्चों की पितातुल्य होगी!"

"तुम बड़ी होशियार हो!" इवान फ़्योदोरोविच ने बड़ी मृदुता से फिर दुहराया। उसने सिर नवाकर काफ़ी देर तक अपनी आँखें ऊपर न उठायीं।

मार्फ़ा ने नरेज्नी और उसके पौत्र के सोने का इन्तज़ाम अपने ही घर में कर दिया था और उनकी बन्दूक़ें छिपा दी थीं। उनके बारे में उसे कोई डर न था। किन्तु इवान फ़्योदोरोविच और कात्या को वह बाहर स्थित एक वीरान तहख़ाने में ले गयी, जिसपर लम्बी-लम्बी घास उग आयी थी और जो बेहद ठण्डा था।

"यहाँ काफ़ी नमी है, अतः मैं भेड़ की खाल के दो कोट लेती आयी हूँ," उसने सकुचाते हुए कहा, "इधर आओ, यहाँ काफ़ी घास है..."

वे अकेले रह गये और कुछ देर तक घुप्प अन्धकार में घास पर चुपचाप बैठे रहे।

सहसा कात्या ने इवान फ़्योदोरोविच का सिर अपनी गर्म-गर्म बाँहों में भर लिया और उसे अपने सीने से लगा लिया। प्रोत्सेन्को का दिल भर उठा।

"कात्या, अब से यह छापेमारी का कार्य एक नयी तरह का होगा। हम इसका संगठन एक नये ढंग से करेंगे।" वह पत्नी के आलिंगन से अपने को मुक्त करते हुए उत्तेजना भरी आवाज़ में बोलने लगा। "ओह, मेरा दिल कचोट रहा है, तड़प रहा

है, उन लोगों के लिए जो मारे गये हैं और मारे गये हैं हमारी अयोग्यता के कारण। लेकिन सभी नहीं। है न? बहुत-से बच भी गये। बचे या नहीं?" उसने पूछा इस ढंग से मानो नैतिक समर्थन प्राप्त करना चाहता हो। "कोई बात नहीं, कात्या, कोई बात नहीं। उनके जैसे हमें और हज़ारों मिल जायेंगे – नरेज्नी जैसे, मार्फ़ा जैसे अभी लाखों ज़िन्दा हैं। नहीं। यह हिटलर अगर चाहे, तो सारे जर्मन राष्ट्र को बेवक़ूफ़ बना सकता है, लेकिन मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि वह इवान प्रोत्सेन्को को बेवक़ूफ़ बना सकता है, नहीं, नहीं, यह कभी नहीं बना पायेगा!" वह क्रोध में बोल रहा था। इस समय अनजाने में ही वह उक्राइनी भाषा में बोलने लगा था, यद्यपि उसकी पत्नी रूसी थी।

अध्याय 30

जिस प्रकार पृथ्वी के नीचे का जल नित्य पेड़ों-पौधों और घास के नीचे तथा दरारों और बारीक-से-बारीक रास्तों से रिस-रिसकर अन्दर ही अन्दर सभी दिशाओं का चक्कर लगाता है, उसी प्रकार जर्मन शासन के अधीन सोवियत देश की सभी क़ौमों के नर-नारी, बूढ़े, बच्चे स्तेपी में, वन-मार्गों, पहाड़ी रास्तों, खड्डों, नदियों के ऊँचे तटों तथा नगरों, गाँवों, घनी आबादी वाली मण्डियों और सुनसान, घने कछारों में चक्कर काटते थे। रेत कणों के समान असंख्य छापेमार, ख़ुफ़िया कार्यों में लगे लोग, दुश्मनों की पृष्ठ सेना में काम करनेवाले जासूस, प्रचारक और अपने घरों से भगाये हुए नर-नारी, जो अपने घरों को वापस लौट रहे थे, और ऐसे स्थानों की तलाश में थे, जहाँ उन्हें कोई जानता न हो – सभी बढ़े जा रहे थे। सभी आज़ाद सोवियत भूमि में प्रवेश करने के लिए दुश्मनों के अगले व्यूहों और घरों को तोड़ते हुए बढ़े जा रहे थे। जर्मनों की क़ैद और बन्दीशिविरों से निकलकर भागते हुए लोग भी आवश्यकता से बाध्य होकर खाने और कपड़े की तलाश में, दमनकारियों के विरुद्ध हथियार उठाये बढ़े जा रहे थे, बढ़े जा रहे थे।

एक नाटा और दमकते लाल चेहरेवाला व्यक्ति दोनेत्स नदी की ओर से स्तेपी की एक सड़क पर चला जा रहा था। उसके चेहरे पर किसानों जैसी मुलायम और हल्के भूरे रंग की दाढ़ी लहरा रही थी। वह किसानों जैसे साधारण कपड़े पहने और कन्धे पर एक थैला लटकाये था। उसके जैसे हज़ारों व्यक्ति बराबर आगे बढ़े जा रहे थे। कौन जाने कि यह व्यक्ति कौन था? उसकी आँखें नीली थीं, किन्तु क्या आदमी सभी की आँखों में देख सकता है और क्या वे आँखें मन में उठनेवाले सारे भावों, सारे तर्क-वितर्कों को प्रकट कर सकती हैं? शायद इन विशिष्ट आँखों में एक हल्की-सी

शरारतभरी चमक थी, किन्तु यदि इन्हें कभी किसी वाह्टमिस्टर अथवा हाप्तवाह्टमिस्टर को देखना होता, तो ये दुनिया के सबसे साधारण व्यक्ति की आँखों की तरह लगने लगतीं।

उस राही ने वोरोशीलोवग्राद में प्रवेश किया और शीघ्र ही भीड़ में विलीन हो गया। पर वह आया क्यों था? क्या वह अपने थैले में मक्खन, दही या बत्तख़ लेकर बाज़ार में इन चीज़ों के बदले कीलें, नमक या सूती कपड़ा लेने के इरादे से आया था? कहीं यह व्यक्ति प्रोत्सेन्को तो नहीं था, यानी वह ख़तरनाक आदमी, जो फ़ेल्दकमाण्डाटुर के विभाग नम्बर 7 के कौंसिलर, डाक्टर शूल्त्स तक के छक्के छुड़ा सकता है?

स्तेपी में जानेवाली अँधेरी संकरी घाटी के ऊपरी हिस्से पर स्थित खनिकों के नगर में छोर पर एक छोटा-सा लकड़ी का घर था। इस घर के छोटे-से कमरे में, जिसकी खिड़की पर कम्बल लटका दिया गया था, दो व्यक्ति मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे ढिबरी के मद्धिम प्रकाश में बातें कर रहे थे। इनमें से एक थलथल चेहरेवाला अधेड़ उम्र का था और दूसरा बड़ी-बड़ी गोल आँखों और सुनहरी बरौनियोंवाला गठीले बदन का एक हट्टा-कट्टा जवान।

यद्यपि इन दोनों की उम्र में इतना अन्तर था, फिर भी दोनों में काफ़ी समानता थी, जर्मनों के आधिपत्य के दुर्दिनों में भी वे इतनी रात गये साफ़-सुथरे बढ़िया कपड़े पहने थे और टाई लगाये थे।

"हमारे वतन दोनबास पर गर्व करना सीखो," बूढ़ा कह रहा था और लगता था कि उसकी कठोर आँखों में ढिबरी का हल्का प्रकाश नहीं, बल्कि पुरानी लड़ाइयों का यश प्रतिबिम्बित हो रहा है। "तुमने हमारे पुराने साथियों अर्तेम, वोरोशीलोव, पार्ख़ोमेंको के संघर्षों के बारे में तो सुना ही होगा? मुझे विश्वास है, तुमने सुना होगा, लेकिन क्या तुम दूसरे छोकरों को भी उनके कारनामों के बारे में बताओगे?"

युवक अपना सिर अपने बायें कन्धे की ओर, जो दायें से कुछ ऊँचा था, झुकाये था।

"हाँ, मैंने स... सुना है। उनसे यह सब कैसे कहना है, यह मैं जानता हूँ," उसने धीमी आवाज़ में हकलाते हुए कहा।

"वह कौन-सी चीज़ है, जो हमारे दोनबास के गौरव का कारण है?" बुजुर्ग ने दोहराया। "गृहयुद्ध के ज़माने में फिर उसके बाद, फिर पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं के काल में और अब युद्ध के इन दिनों में यद्यपि हमें बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, फिर भी हमने अपने कर्तव्य का बड़े गौरव के साथ पालन किया है। ध्यान रहे, तुम्हें यही बात उन छोकरों को समझानी है..."

बुजुर्ग कुछ क्षण के लिए मौन रहा। युवक उस पर सम्मानपूर्वक आँखें टिकाये

इन्तज़ार करता रहा।

"और याद रहे," बुजुर्ग व्यक्ति ने चेतावनी दी, "खुफ़िया कामों में हमेशा सावधान रहना चाहिए। तुमने 'चपायेव' नाक की फ़िल्म देखी ही होगी?" उसने गम्भीरता से पूछा।

"देखी है।"

"फिर वसीली इवानोविच चपायेव कैसे मारा गया? वह मारा गया इसलिए कि उसके सन्तरी सो गये थे और इसीलिए दुश्मन उसके पास आ गये थे। रात-दिन हमेशा सतर्क रहो, हमेशा चौकन्ने। पोलीना गओर्गियेव्ना सोकोलोवा को जानते हो?"

"जानता हूँ।"

"कैसे जानते हो?"

"वह माँ के साथ, औरतों के बीच, काम करती थी। वे अब भी एक दूसरी से मिला करती हैं।"

"ठीक। अब वे सब बातें, जो कुछ केवल तुम्हें और मुझे ही जाननी चाहिए तुम्हें पोलीना गओर्गियेव्ना सोकोलोवा तक पहुँचा देनी होंगी। सामान्य सम्पर्क, आज ही की तरह, ओस्मूख़िन की मार्फ़त होगा। हम दोनों को अब फिर नहीं मिलना चाहिए," और ल्यूतिकोव युवक को देखकर मुस्करा दिया, मानो व्यथा या रोष की अनुभूति को पहले से ही रोक देना चाहता हो।

किन्तु ओलेग के चेहरे पर कोई परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं हुआ। इस बात से, कि उसे कर्फ़्यू के घण्टों में भी फ़िलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव के घर आने की अनुमति देकर उस पर विश्वास किया गया था, उसका हृदय गर्व और श्रद्धा से भर गया। उसके चेहरे पर बच्चों जैसी हँसी झलकी।

"धन्यवाद," ख़ुशी से फूले न समाते हुए वह बोल उठा।

स्तेपी के एक खड्ड में एक अजनबी युवक गठरी बना सो रहा था। धूप से नहाये उसके कपड़ों से भाप-सी उड़ रही थी। नदी से निकलकर रेंगते हुए बढ़ते समय गीले निशान अब धूप से सूख चुके थे। वह सचमुच ही थककर चूर हो गया था, वरना रात के वक़्त, पानी से तर कपड़ों में, खुली स्तेपी में इस तरह क्यों पड़ा रहता?

जब धूप तेज़ हो चली, तो युवक उठा और फिर अपने रास्ते पर चलने लगा। उसके सूख चुके घुँघराले, सुनहरे बाल इस समय बड़े सुन्दर लग रहे थे। रात के समय वह एक खनिक-गाँव में पहुँचा और वहीं पर कुछ लोगों के पास रात काट दी। वह स्वयं पड़ोस के गाँव क्रास्नोदोन का रहनेवाला था। वोरोशीलोवग्राद से लौट रहा था, जहाँ वह शिक्षा प्राप्त कर रहा था। उसने दूसरे रोज़, दिन-दहाड़े, बिना किसी संकोच

या डर के, क्रास्नोदोन में प्रवेश किया।

उसके माता-पिता का क्या हुआ अथवा उसके घर जर्मन सैनिक अड्डा जमाये हैं या नहीं, इन बातों का उसे बिलकुल ज्ञान न था। इसीलिए सबसे पहले वह अपने स्कूली दोस्त वोलोद्या ओस्मूख़िन के घर ही गया।

ओस्मूख़िन के घर में जर्मन ठहरे थे किन्तु अब जा चुके थे।

"येव्गेनी! कहाँ से आ रहे हो?"

और वोलोद्या के मित्र ने जवाब में अपने उसी गर्व युक्त और औपचारिक ढंग से पूछा :

"पहले मुझे यह बताओ कि तुम्हारी ज़िन्दगी का ढर्रा कैसे चल रहा है?"

कोमसोमोल-सदस्य येव्गेनी स्तख़ोविच, वोलोद्या का पुराना साथी था और सिवा संगठन सम्बन्धी मामलों के, उनके बीच कोई भी राज़ की बातें न थीं। इसीलिए वोलोद्या ने उसे अपने से सम्बन्धित हर चीज़ ब्योरेवार बतानी शुरू की।

"यह बात है," स्तख़ोविच बोला, "बहुत अच्छे! मुझे तुमसे यही आशा थी।"

इन शब्दों को कहते समय उसकी आवाज़ में बड़प्पन का पुट था। लेकिन इसका शायद उचित कारण भी था। वोलोद्या की भाँति वह भी ख़ुफ़िया कार्यों में भाग लेने का इच्छुक था। वोलोद्या को किसी के भी समक्ष कोई राज़ की बात नहीं कहनी थी, इसीलिए उसने स्तख़ोविच से यही कह दिया था कि वह ख़ुफ़िया कामों में भाग लेना चाहता है। उसने एक छापेमार दस्ते में रहकर लड़ाई में कुछ भाग लिया था और जैसा कि उसने अब समझाया था, उसे छापेमार हेडक्वार्टर ने क्रास्नोदोन में भी छापेमारों का संगठन करने के लिए सरकारी रूप से भेजा था।

"यह बड़ी अच्छी बात है!..." वोलोद्या ने सम्मान की भावना का प्रदर्शन करते हुए कहा, "हमें तुरन्त ओलेग से मिलना चाहिए..."

"यह ओलेग कौन है?" स्तख़ोविच ने अहंकार सहित पूछा, क्योंकि वोलोद्या ने ओलेग का नाम बड़ी इज्ज़त के साथ लिया था।

"ओह, वह कमाल का छोकरा है," वोलोद्या ने अस्पष्ट ढंग से कह दिया।

नहीं, स्तख़ोविच ओलेग को नहीं जानता था। लेकिन यदि वह सचमुच कमाल का छोकरा है, तो क्यों न उससे मिला जाये – उसने सोचा।

साधारण कपड़े पहने हुए सैनिक चाल-ढालवाले एक व्यक्ति ने बोर्त्स परिवार के घर का दरवाज़ा धीरे-से खटखटाया। उसके चेहरे से गम्भीरता टपक रही थी।

घर में केवल नन्ही ल्यूस्या थी। माँ, घर की कुछ चीज़ों के बदले में खाने का सामान लेने के लिए बाज़ार गयी थी। जबकि वाल्या... उसके पापा भी घर में थे और यही सबसे ख़तरनाक बात थी। पापा अपना काला चश्मा लगाये तुरन्त कपड़ों की

अलमारी में छिप गये। ल्यूस्या का दिल धड़कने लगा, उसने बड़ों जैसी मुद्रा धारण की, दरवाज़ें तक आयी और जहाँ तक उससे हो सका तटस्थ भाव से पूछने लगी :

"कौन?"

"वाल्या घर में है?" दरवाज़े के उस ओर से एक मीठी-सी मरदानी आवाज़ सुनायी दी।

"नहीं, वह नहीं हैं।" ल्यूस्या कुछ और सुनने की आशा में इन्तज़ार करने लगी।

"मेहरबानी करके दरवाज़ा खोलिये, डरिये मत," आवाज़ आयी, "कौन बोल रहा है?"

"ल्यूस्या।"

"ल्यूस्या? वाल्या की छोटी बहन? दरवाज़ा खोलिये, डरिये मत..."

ल्यूस्या ने दरवाज़ा खोल दिया। ड्योढ़ी में एक अजनबी युवक खड़ा था। लम्बा, ख़ूबसूरत क़द, चेहरे पर विनम्रता। ल्यूस्या ने उसे एक बुज़ुर्ग आदमी समझा। उसकी आँखों में दया का भाव और बहुत गम्भीर चेहरे पर साहस झलक रहा था। उसने चमकती आँखों से ल्यूस्या की ओर देखा और उसे एक सैनिक की भाँति सेल्यूट किया। ल्यूस्या ने यह सम्मान-प्रदर्शन सिर झुकाकर स्वीकार किया।

"क्या वह घर जल्दी लौटेगी?" उसने नम्रतापूर्वक पूछा।

"मैं नहीं जानती," उसने आगन्तुक की ओर देखते हुए कहा। उसके चेहरे पर निराशा का भाव था। वह थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा, फिर सेल्यूट मारा और घूमकर जा ही रहा था कि ल्यूस्या बोल उठी :

"तो उससे क्या कह दूँ?"

उस आगन्तुक के चेहरे पर हास्य का भाव झलक उठा :

"कहना मंगेतर आया था..." वह बोला और ड्योढ़ी की सीढ़ियाँ उतरने लगा।

"और आप उसकी प्रतीक्षा नहीं करेंगे? उसे मालूम कैसे होगा कि आप कहाँ होंगे?" उत्तेजना में ल्यूस्या ने जल्दी-से कहा। किन्तु उसकी आवाज़ धीमी थी और वह बोली भी देर से थी। तब तक वह आदमी लेवल-क्रासिंग की ओर जानेवाले देरेव्यान्नाया मार्ग पर काफ़ी दूर जा चुका था।

तो वाल्या का मंगेतर भी है... ल्यूस्या को यह बात बड़ी उत्तेजक लगी। बेशक वह इसके बारे में पापा से कुछ नहीं कहेगी और न इसका ज़िक्र माँ से ही करेगी। "घर में किसी को इस बारे में मालूम नहीं। लेकिन शायद अभी वे ब्याह नहीं करेंगे," ल्यूस्या ने सोचा। वह अपने को दिलासा देने का प्रयत्न कर रही थी।

स्तेपी में दो युवक और दो युवतियाँ साथ चहलक़दमी कर रहे थे। आख़िर बात क्या थी कि इन ख़तरनाक दिनों में जब कोई कभी घूमने का नाम नहीं लेता था, दो

युवतियाँ और दो युवक स्तेपी में घूम रहे थे? वे नगर से बहुत दूर थे, फिर छुट्टी का दिन भी नहीं था और वे काम के वक़्त घूम-फिर रहे थे। हाँ, वैसे घूमने की मनाही किसी को भी न थी।

वे जोड़ों में घूम रहे थे। एक युवक नंगे पैर था। उसके बाल कुछ-कुछ घुँघराले थे और उसकी गति में तेज़ी और फुर्ती थी। उसके साथ की लड़की का रंग धूप से तप गया था और उसके पाँवों और हाथों पर महीन रोएँ नज़र आ रहे थे, उसकी चोटियाँ सुन्दर और सुनहरी थीं। दूसरा युवक नाटा था। उसके चेहरे पर चित्तियाँ थीं और रंग बहुत गोरा था। उसके साथ की लड़की साधारण-सी पोशाक पहने थी। शान्त स्वभाव, विवेकपूर्ण आँखें। उसका नाम था तोस्या माश्चेंको। दोनों जोड़े भिन्न-भिन्न दिशाओं में काफ़ी दूर तक चले जाते और फिर एक ही जगह पर इकट्ठा हो जाते। वे सुबह से रात तक बराबर घूमा करते और चिलचिलाती धूप में प्यास से उनकी जीभें तालू से सट जातीं। धूप के कारण सुनहरे बालोंवाले युवक के चेहरे पर चित्तियों की संख्या तिगुनी हो गयी थी। हर बार अपने मिलन-स्थल पर लौटते समय उनके हाथों या जेबों में कुछ न कुछ होता – बन्दूक़ की गोलियाँ, हथगोले, कभी जर्मन बन्दूक़, रिवाल्वर या रूसी सर्विस राइफ़ल। इसमें हैरानी की कोई बात न थी, क्योंकि वे वेर्ख़्नेदुवान्नाया स्टेशन से अधिक दूरी पर नहीं घूम रहे थे। यह वह क्षेत्र था, जहाँ पीछे हटती हुई लाल सेना ने आख़िरी लड़ाइयाँ लड़ी थीं। ये सारे हथियार जर्मन कमाण्डेण्ट के पास ले जाने के बजाय ये युवक-युवतियाँ उन्हें पेड़ों के एक झुरमुट में ले जाकर ज़मीन में गाड़ रहे थे। और किसी ने भी उन्हें ऐसा करते नहीं देखा था।

एक बार उस युवक को, जो तेज़ और फुर्तीला था और दल का कप्तान लग रहा था, एक विस्फोटक सुरंग मिल गयी। उसने सुनहरी चोटियोंवाली लड़की के सामने ही, उस सुरंग को अपनी असामान्य कुशलता से हटा दिया।

निश्चय ही, इस क्षेत्र में बहुत-सी सुरंगें बिछी होंगी। अतः बाक़ी लोगों को भी यह समझा देना चाहिए कि उन्हें कैसे हटाया जाता है। सुरंगें भी कभी बाद में काम आ सकती हैं।

सुनहरी चोटियोंवाली लड़की धूप से तपी, थकी हुई किन्तु उत्साह से भरी घर आयी। इस स्थिति में घर लौटने की उसकी यह पहली शाम न थी। ल्यूस्या ने उसे एक क्षण के लिए बग़ीचे में ही रोके रखा और उत्तेजनापूर्ण फुसाफुसाहट में उसे मंगेतर की बाते बातने लगी। उसकी आँखें अँधेरे में चमक रही थीं।

"कैसे मंगेतर? क्या बकबक रही हो?" वाल्या ने क्रोध से कहा। वह कुछ घबरा गयी थी।

हो सकता है वह कोई जर्मन जासूस रहा हो, या शायद बोल्शेविक ख़ुफ़िया

संगठन का कोई व्यक्ति, जिसे उसके कार्यों का पता चला होगा और अब उसे ढूँढ़ रहा होगा। लेकिन ये दोनों ही धारणाएँ शीघ्र ही उसके दिमाग़ से निकल गयीं। वाल्या का दिमाग़ किताबी कारनामों से ठसाठस भरा हुआ है। किन्तु अपने समवयस्कों की तरह, वस्तुतः उसमें यथार्थ एवं व्यावहारिक बुद्धि की कमी न थी। उसने अपने सभी मेल-मुलाक़ातियों को स्मरण किया और सहसा उसके दिमाग़ में पिछले साल का वह वसन्त घूम गया, जब लेनिन क्लब नाट्य-मण्डल के विदाई अभिनय के बाद वान्या तुर्केनिच को सेवास्तोपोल हवामार तोपोंवाले स्कूल में जाना था। उसी मडण्ल के नाटक में उसने दूल्हे का और वाल्या ने उसकी वधू का पार्ट अदा किया था। बेशक, मंगेतर!

वान्या तुर्केनिच! प्रायः वह मसख़रे बूढ़े का पार्ट करता था। बेशक वह नाटक मास्को आर्ट थियेटर जैसा तो था नहीं, पर वह हमेशा यही कहा करता था – "मेरा ध्येय यह है कि पहली पंक्ति से लेकर आख़िरी पंक्ति तक में खड़े-बैठे लोग सभी जी भर हँसें कि उनके पेटों में बल पड़ जायें।" और वह अपने इस ध्येय में हमेशा सफल रहा। उक्राइनियों के जीवन को समर्पित "अभागी स्त्री" से लेकर "पहली तारीख़" तक किसी भी नाटक में उसने काम किया, उसने हमेशा बूढ़े माली दनीलिच की ही वेष-भूषा में काम किया। लेकिन इस समय वह तो मोर्चे पर जा चुका था। वह पिछली सर्दियों में स्तालिनग्राद जाते समय, जहाँ उसे हवामार तोपों से टैंकों पर गोले बरसाने की ट्रेनिंग लेनी थी, क्रास्नोदोन से ही होकर गुज़रा था।

"माँ, बार-बार न कहो। तुम्हारा इससे क्या मतलब? मुझे कुछ नहीं खाना है," और वाल्या ओलेग की तलाश में निकल गयी।

तो तुर्केनिच क्रास्नोदोन में है!

एक नाटी सुनहरे बालोंवाली लड़की सारी दुनिया का चक्कर लगा रही थी। उसने सारे पोलैण्ड का चक्कर लगाया था और फिर सारे उक्राइन का। और लग रहा था जैसे वह मानव-सिन्धु में बिन्दु के समान खो चुकी थी। इस प्रकार वह 'पेर्वोमाइका' आयी और एक छोटे-से घर की खिड़की धीरे-धीरे खटखटाने लगी।

"यदि आपको दोनों इवान्त्सोव बहनें मिल जायें और उनमें से एक गोरे रंग की हो, तो वे इवानीखिन बहनें होंगी..."

लील्या इवानीख़िना मोर्चे पर जाकर लापता हो गयी थी। पर अब वह लौटकर उसी मकान में आ गयी जहाँ वह पैदा हुई थी।

ऊल्या को माय्या पेग्लिवानोवा और साशा बोन्दरेवा से यह समाचार मिला। लील्या लौट आयी थी – प्रसन्नचित, उदार और अपनी सहेलियों की दिलोजान। लील्या अपने परिवार और मित्रों से बिछुड़नेवाली वह पहली लड़की थी, जिसने लड़ाई की ख़तरनाक दुनिया में सबसे पहले क़दम रखा था। वह तो लापता हो गयी थी, लग

रहा था न जाने कब की दफ़नायी जा चुकी थी। अब वह फिर मुर्दों की दुनिया से ज़िन्दों के बीच आ गयी।

इवानीख़िन बहनों का घर स्कूल के पास ही पेर्वोमाइका के केन्द्र के निकट था। तीनों सहेलियाँ उनके घर पहुँचने की जल्दी में थीं – दुबली-पतली, लड़कों की चाल-ढालवाली साशा बोन्दरेवा, जिप्सी जैसे साँवली माय्या, जिसका निचला होंठ गर्व से आगे निकला हुआ रहता, जिसने दूसरों को सुधारने और हिदायतें देने की अपनी आदत अब तक न छोड़ी थी और ऊल्या, जिसकी लहराती हुई काली-काली चोटियाँ उसकी छींटोंवाली गाढ़ी नीली पोशाक पर बल खाया करतीं। शायद जर्मन सैनिकों के उसके घर अड्डा जमाने के बाद से अकेली यही पोशाक उसके पास बच रही थी।

जिस गाँव में वे भागती-सी चली आ रही थीं, उसमें किसी भी जर्मन सौनिक का न दिखायी पड़ना कितना विचित्र लग रहा था। लड़कियों में स्वतंत्रता की भावना कूट-कूटकर भर गयी थी और वे अनजाने ही स्फूर्तिमान् हो गयी थी! ऊल्या की काली-काली आँखें चमकने लगीं और प्रसन्न एवं शरारत भरी मुस्कान उसके होंठों पर बिखर गयी। ऐसी मुस्कान उसके चेहरे पर यदा-कदा ही दिखायी पड़ती थी। शीघ्र ही यह मुस्कान उसकी सहेलियों के चेहरों पर और उसके चारों ओर की सभी चीज़ों पर भी प्रतिबिम्बित हो उठी।

जब वे तीनों स्कूल की इमारत के पास पहुँची, तो उनकी निगाह स्कूल के एक बड़े दरवाज़े पर चिपके एक रंगीन पोस्टर पर पड़ी। तीनों सीढ़ियाँ चढ़ती हुई दौड़ी-दौड़ी प्रवेशद्वार तक चली गयीं, मानो उन्होंने पहले ही आपस में यह तय कर रखा हो।

इस पोस्टर में एक जर्मन परिवार चित्रित किया गया था। मुस्कराता हुआ एक बुज़ुर्ग जर्मन – सिर पर टोपी, शरीर पर धारीदार क़मीज़ और एप्रन, गले में बो-टाई, हाथ में सिगार। एक भारी, सुनहरे बालोंवाली औरत। देखने में जवान। चेहरे पर मुस्कराहट। सिर पर घर में पहनने की टोपी, गुलाबी पोशाक। गोल-गोल गालोंवाले एक मोटे-से शिशु से लेकर नीली आँखों और सुनहरे बालोंवाली एक युवती तक, सभी उम्र के बच्चों से घिरी हुई। वे टाइलों की ऊँची छतवाले एक फ़ार्मगृह के दरवाज़े के बाहर खड़े थे। छत पर कुछ पोटेवाले कबूतर घूम रहे थे। स्त्री, पुरुष और सभी बच्चे – जिनमें से सबसे छोटा अपने हाथ फैलाये हुए था – मुस्कारते हुए एक लड़की का स्वागत कर रहे थे, जिसके हाथ में एक सफ़ेद इनामिल की बाल्टी थी। वह एक भड़कीली पोशाक पहने थी। सफ़ेद जालीदार एप्रन, उस स्त्री जैसी ही सिर पर घेरलू टोपी, चमचमाते हुए लाल जूते। वह गोल-मटोल थी। चिपटी नाक और अपाकृतिक ढंग के लाल गाल। वह भी मुस्करा रही थी और उसके सफ़ेद दाँत झलक रहे थे। पोस्टर की पृष्ठभूमि में अनाज का एक खलिहान और एक मवेशीख़ाना था, जिसकी

टाइलदार छतों पर और भी अधिक कबूतर घूम रहे थे। इनके अतिरिक्त पृष्ठभूमि में नीले आकाश की एक पट्टी, लहराती हुई बालियोंवाले अनाज के खेत का एक अंश, और कुछ भूरी-भूरी गायें भी नज़र आ रही थीं।

पोस्टर के नीचे रूसी में लिखा था – "मुझे यहाँ एक घर और एक परिवार मिल गया है।" और कुछ नीचे दाहिनी ओर लिखा था – "कात्या"।

ऊल्या, माय्या और साशा, जर्मनों के क़ब्ज़े के दिनों में घनिष्ठ सहेलियाँ बन गयी थीं। जब कभी किसी एक का घर जर्मनों से मुक्त होता तो तीनों सहेलियाँ उसी घर में प्रायः रातें बिताया करतीं। किन्तु वे अपने जीवन की इस सबसे महत्वपूर्ण समस्या पर कभी बहस न करतीं कि जर्मन शासन के अधीन उन्हें अपना जीवन-यापन किस प्रकार करना है। ऐसा लगता मानो अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने परस्पर यह समझौता कर लिया है कि वे इस प्रश्न पर विचार करने के लिए अभी तैयार नहीं हैं। इसीलिए इस समय भी उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा और चुपचाप स्कूल की सीढ़ियाँ उतरती और एक दूसरी से नज़रें बचाती हुई इवानीख़िना बहनों के घर की ओर चल दीं।

खुशी से झूमती हुई छोटी बहन तोन्या उनसे मिलने के लिए दौड़ती हुई मकान के बाहर आ गयी। उसके चेस्टनट रंग के घने बाल सिर पर लहरा रहे थे।

"अरे लड़कियो! तुमने सुना नहीं? हे भगवान! मैं कितनी ख़ुश हूँ!" वह चिल्लायी और उसकी आँखों में आँसू छलछला आये।

इस मकान में बहुत-सी लड़कियाँ थीं, जिनमें हाल ही में लौटी हुई इवान्त्सोव चचेरी बहनें – ओल्गा और नीना भी थीं, जिन्हें ऊल्या ने कई महीनों से न देखा था।

किन्तु लील्या! उसे क्या हो गया था! अपने सुनहरे बालों और विनम्र, सदय और मुस्कराती हुई आँखों सहित वह हमेशा ही कितनी स्वस्थ, कितनी कोमल और गोल-मटोल, डबल-रोटी की तरह गुदगुदी और सुन्दर दिखायी दिया करती थी – आख़िर उसे क्या हो गया था! और अब, ऊल्या के सामने वह अपने झुके और सूखे हुए-से शरीर पर अपनी बाँहें लटकाये खड़ी थी। उसका छोटा-सा चेहरा पीला पड़ रहा था और धूप से झुलस गया था। उसकी पतली, बड़ी-सी नाक उसके चेहरे के बाहर निकली सी दिखायी देती थी। केवल उसकी आँखें ही उसकी भूतपूर्व सहृदयता का परिचय दे रही थीं। किन्तु इस समय वे भी कितनी भिन्न थीं।

चुपचाप और प्रेरणावश ऊल्या ने लील्या को अपनी बाँहों में कस लिया और उसका चेहरा अपने निकट खींच लिया। अबब लील्या के चेहरे पर मृदुता और भावुकता के कोई चिह्न न थे। उसकी कोमल आँखें जैसे बहुत दूर से ऊल्या को देख रही थीं। उनमें विरक्ति की भावना थी, मानो उसने जो कुछ भी अनुभव किया था, उसने उसे अपने बचपन की सहेलियों से इतना विलग कर दिया था कि वह उनकी

सामान्य और दैनिक अनुभूतियों तक में हिस्सा न बँटा सकी – भले ही ये अनुभूतियाँ कितनी ही सरलता और उत्साह के साथ क्यों न व्यक्त की गयी हों।

साशा बोन्दरेवा ने लील्या को पकड़ा और कमरे भर में नचाने लगी।

"लील्या! क्या तुम सचमुच वही लील्या हो? सचमुच! प्यारी लील्या! तुम तो सूखकर काँटा हो गयी हो! ख़ैर, कोई बात नहीं, हम तुम्हें मोटी कर लेंगी। काश, तुम जानती होतीं कि तुम्हें पाकर हमें कितनी ख़ुशी हुई है!" उसने बड़े उत्साह और उत्कण्ठा से कहा और लील्या को कमरे भर में नचाती रही।

"अरे, अब इसे छोड़ो भी!" माय्या हँसी और अपना भरा हुआ, गर्वीला निचला होंठ बाहर निकाल दिया। फिर स्वयं लील्या को अपनी बाँहों में भरकर चूमने लगी। "अच्छा, अब सुनाओ अपनी रामकहानी!" वह बोली।

और लील्या ने एक कुर्सी पर बैठकर नीची आवाज़ में अपनी दास्तान शुरू की। चारों ओर से लड़कियाँ उसे घेरे खड़ी थीं।

"बेशक, आदमियों के बीच बिलकुल अकेला रहना दूभर है, पर मैं प्रसन्न भी थी कि उन्होंने मुझे मेरी बटालियन के लोगों से अलग नहीं किया। हम पीछे हटते समय साथ-साथ रहे ओर हममें से कितनों की जानें भी गयीं। जब अपने लोग मारे जाते हैं, तो हमेशा बहुत दुःख होता है। और जब आपकी कम्पनी ही सात या आठ व्यक्तियों की हो और आप हरेक का नाम जानते हों, तो किसी के भी मारे जाने पर आपको लगता है, मानो आपके हृदय का एक टुकड़ा निकाल लिया गया हो। पिछले साल जब मैं घायल हुई थी, तो वे लोग मुझे ख़ार्कोव ले गये और उन्होंने मुझे एक अच्छे-से अस्पताल में दाख़िल करा दिया। उस समय मुझे बराबर अपनी बटालियन की ही चिन्ता बनी रही। मैं बराबर यही सोचती रहती कि मेरे पीछे उनका जीवन कैसे चलता होगा। मैं प्रतिदिन उन्हें एक पत्र लिखती और वे भी लिखते, कभी एक और कभी सब मिलकर। उस समय बस एक ही बात मेरे ध्यान में आती – ओह, मैं उनसे कब मिलूँगी? फिर मैं छुट्टी पर चली गयी, जिसके बाद मुझे एक दूसरी ही टुकड़ी में जाना था। किन्तु मैंने कमाण्डेण्ट से विनती की और उसने मुझे मेरी पुरानी बटालियन में भेज दिया। ख़ार्कोव में मैं हमेशा पैदल ही चलती-फिरती थी, क्योंकि एक बार ट्राम पर बैठकर मुझे बड़ी परेशानी हो गयी थी। ट्राम में ऐसे लोग थे, जो एक दूसरे को धक्का दे रहे थे, एक दूसरे को भला-बुरा कह रहे थे। मुझे बुरा लगा था। मैं रो पड़ी थी – ध्यान रहे मैं अपनी वर्दी में थी – मैं रो पड़ी थी, अपने लिए नहीं, उन लोगों के लिए। मेरे दिल पर चोट लगी थी, उन लोगों के लिए अफ़सोस हुआ था। मैं सोच रही थी, काश, वे जानते होते कि हमारे लोग किस प्रकार चुपचाप मोर्चों पर मर रहे हैं, एक दूसरे का कितना ध्यान रखते हैं और हमेशा दूसरों के भले की सोचते हैं और

ये लोग तुम्हारे ही पति हैं, तुम्हारे ही पिता, तुम्हारे ही बेटे! यदि तुम लोग एक दूसरे को धकियाने और गालियाँ देने के बजाय तनिक मेरी इन बातों पर विचार करते, तो फ़ौरन हर किसी को जगह देने को तैयार रहते, उससे मृदुता से बातें करते और यदि इत्तिफ़ाक़ से कोई नाराज़ हो जाता, तो उसे सान्त्वना देते!"

वह ये सारी बातें एक-सी, और नीची आवाज़ में कह रही थी। लगता था जैसे उसकी आँखें कहीं बहुत दूर अपने मित्रों को देख रही हैं। सभी लड़कियाँ चुपचाप उसके चारों ओर एक दूसरे से सटी थीं। उनकी निगाहें बराबर उसी पर लगी थीं।

"हम खुले आसमान के नीचे एक कैम्प में रहते थे। जब वर्षा होती, तो भीगकर हम ठिठुरने लगते। हमें खाने के लिए चोकर या आलू के छिलके डालकर उबला पतला सूप दिया जाता। हमारा काम बड़ा सख़्त था। हम सड़कें खोदते थे। हमारे साथी जलती हुई मोमबत्तियों की तरह घुलते जा रहे थे। किसी दिन उनमें से कोई कूच कर जाता, तो किसी दिन कोई और। दिन-ब-दिन यही होता रहा। हम औरतें" – लील्या ने "औरतें" कहा था, "लड़कियाँ" नहीं – "हम औरतें पुरुषों से अधिक समय तक ज़िन्दा रहीं। हमारी बटालियन में एक आदमी था – सार्जेण्ट फ़ेद्या। मेरी उसकी बड़ी छनती थी," लील्या ने धीमी आवाज़ में कहा, "और वह हमेशा हम औरतों के बारे में हँसी मज़ाक करता था। 'औरत' ज़ात में आड़े वक़्त के लिए ताक़त जमा होती है,' वह कहा करता। और जब जर्मन सिपाहियों ने हमें दूसरे कैम्प में हाँककर ले जाना शुरू किया, तब तक वह सार्जेण्ट बहुत कमज़ोर हो चुका था। एक पहरेदार ने उसे गोली मार दी। लेकिन वह तुरन्त नहीं मरा। जब मैं वहाँ से गुज़र रही थी तो वह टकटकी बाँधे मुझे देख रहा था। फिर भी मैं उसे बाँहों में भरकर चूम न सकी। वरना मुझे भी वहीं गोली से उड़ा दिया जाता..."

उन्हें किस प्रकार एक अन्य कैम्प में खदेड़ा गया, लील्या ने इसका भी वर्णन किया। उनके कैम्प में औरतों की शाख़ा में गेर्ट्रूडा गेब्बेह नाम एक जर्मन मेट्रन थी। वह पूरी बाघिन थी और औरतों पर कड़े से कड़े अत्याचार करती रहती थी। लील्या ने बताया कि एक बार औरतों ने उसे मार डालने अथवा इस प्रयत्न में स्वयं मर जाने का निश्चय कर डाला। सायंकाल जब वे जंगल में काम से लौट रही थीं, तो किसी प्रकार उन्होंने पहरेदारों को चकमा दिया, एक झाड़ी के पीछे से गेर्ट्रूडा गेब्बेह पर झपट पड़ीं, एक ओवरकोट उस पर डाला और उसका गला घोंट दिया। और फिर वे भाग गयीं – उनमें कई औरतें और लड़कियाँ थीं। वे एक दूसरे से अलग हो गयीं, क्योंकि वे जानती थीं कि एक साथ वे सारे पोलैंड और उक्राइन को पार नहीं कर सकेंगी। लील्या ने इन सैकड़ों मीलों का रास्ता अकेले पार किया था और पहले तो उसे पोलिश

लोगों ने और फिर अपने उक्राइनी भाइयों ने छिपाया, खिलाया-पिलाया और पनाह दी थी।

यह दास्तान सुनायी थी लील्या ने। उस लील्या ने, जो दूसरों ही की तरह ख़ुद भी कभी एक साधारण क्रास्नोदोन कन्या रही थी – हट्टी-कट्टी, सुनहरे बाल, सदय हृदय। यह विश्वास करना भी कठिन था कि यह वही लील्या थी, जिसने गेर्ट्रूडा गेब्बेह का गला घोंटने में मदद की थी और सूजी नसों से भरे छोटे-छोटे पैरों पर जर्मन अधिकृत पोलैण्ड और उक्राइन का सारा रास्ता पैदल तय कर आयी थी। और लड़कियों के दिमाग़ में यह विचार कौंध गया – यदि यह सब मेरे साथ हुआ होता, तो क्या मैं भी यह सह पाती? मैं किस तरह पेश आयी होती?

यह वही लील्या थी, किन्तु वह कुछ भिन्न थी। यह नहीं कहा जा सकता था कि उसके अनुभवों ने उसे कटु बना दिया था। उसने न तो अपनी सहेलियों के सामने इन अनुभवों का दिखावा ही किया और न ही दूर की हाँकी। वह तो सिर्फ़ जीवन के बारे में बहुत कुछ समझने लगी थी। एक तरह से वह लोगों के प्रति और सदय हो उठी थी, मानो उसने उनका मूल्य समझ लिया था। यद्यपि शरीर और मस्तिष्क से वह निचुड़ी हुई-सी लग रही थी, फिर भी उसका दुबला-पतला चेहरा मानव जाति के प्रति सहृदयता की आभा से दमक रहा था।

लड़कियाँ फिर लील्या को चूमने लगीं। हर लड़की उसे गले लगाना या कम से कम उसका स्पर्श करना चाहती थी। सिर्फ़ शूरा दुब्रोविना, जो दूसरों से अधिक उम्र की एक छात्रा थी, बाक़ी लड़कियों की अपेक्षा अधिक संयत थी, क्योंकि माय्या पेग्लिवानोवा को लील्या के आस-पास मँडराते देखकर वह उससे ईर्ष्या करने लगी थी।

"अब छोड़ो भी!यह सब क्या तमाशा है? तुम सबकी आँखें क्यों भरी हुई हैं?" साशा बोन्दरेवा बोली, "चलो एक गाना हो जाये!"

'शान्त पड़ी सोती पहाड़ियाँ' वह यह गाना शुरू ही करनेवाली थी कि लड़कियों ने उसे रोक दिया – पास-पड़ोस में सभी तरह के लोग रहते थे, और फिर कौन जाने कोई पुलिस का सिपाही ही गश्त लगा रहा हो। आख़िर उन्होंने कोई पुराना उक्राइनी लोक-गीत चुनना शुरू किया और तान्या ने 'ख़न्दक' गीत गाने का सुझाव दिया।

"हमारा गीत है और इस पर कोई एतराज़ नहीं कर सकता, क्यों?" उसने सहमी हुई-सी आवाज़ में कहा। किन्तु उन्हें लगा कि वे पहले से ही इतनी दुखी हैं कि यह गीत तो उन्हें और भी ज्यादा रुला देगा। इस पर साशा ने जो पेर्वोमाइका में सबसे अच्छा गाती थी, गाना शुरू किया :

मेरे घर के पास शाम को लड़का एक

सदा घूमता रहता है,
करे इशारे मुझको केवल आँखों से
किन्तु न कुछ भी कहता है...

सभी ने एक दूसरे के सुर में सुर मिलाये। इस गीत में ऐसी कोई बात न थी, जो किसी भी पुलिसवाले के कान को अरुचिकर लगती। लड़कियों ने प्यात्नित्स्की गायन-मण्डली द्वारा गाया गया यह गीत अनेक बार रेडियो मास्को पर सुना था। अब उन्हें लग रहा था जैसे वे इस गाने को पेर्वोमाइका से वापस उसके घर मास्को भेज रही हैं।

इस गीत के साथ ही उनके कमरे में एक बार फिर वही ज़िन्दगी छा गयी, जो उनके लिए खुले खेतों में लवा पक्षी के जीवन की भाँति स्वाभाविक थी, जिसके आश्रय में वे इतनी बड़ी हुई थीं।

ऊल्या, इवान्त्सोव बहनों के पास बैठी थी। गीत सुनते हुए ओल्गा भाव-विह्वल हो उठी और उसने ऊल्या का बाज़ू दबा दिया। उसकी आँखों से एक नीली लौ निकल रही थी, जो उसके असमान नाक-नक़्शे को सौन्दर्य प्रदान कर रही थी।

नीना की आँखें, अपनी भारी एवं धनुषाकार भौंहों के नीचे से, कमरे का चक्कर लगाने लगीं। फिर वह सहसा ऊल्या पर झुकी और उसके कानों में बड़ी गम्भीरता के साथ फुसफुसायी :

"कशूक ने तुम्हें अभिवादन कहा है!"

"कौन कशूक?" ऊल्या ने भी फुसफुसाते हुए पूछा।

"ओलेग," नीना ने ज़ोर देते हुए कहा, "अब से हमारे लिए वह कशूक ही कहलायेगा!"

ऊल्या सामने की ओर टकटकी बाँधे देखती रही। वह चकित थी।

गीत गाने से लड़कियाँ उत्साहित हो उठीं। उनके चेहरों पर उत्तेजना झलक रही थी। भले ही कुछ क्षणों के लिए ही सही, वे अपने इर्द-गिर्द सभी कुछ भूलने का प्रयत्न कर रही थीं – जर्मनों को, पुलिसवालों को और इस बात को कि उन्हें जर्मन श्रम-केन्द्र में अपना नाम दर्ज कराना चाहिए। वे यह भूलने का प्रयत्न कर रही थीं कि लील्या ने कितनी मुसीबतें झेली थीं, और घर पर उनकी माताएँ अपनी बेटियों के इतनी देर बाहर रहने के कारण कितनी चिन्तित हो रही होंगीं। वे एक के बाद एक कई गीत गाती रहीं और यही मनाती रहीं कि उनके जीवन का क्रम वही बन जाये, जो हमेशा रहा था।

"कैम्प में बैठे-बैठे अथवा रातों को नंगे पैर और भूखे पेट पोलैण्ड की धरती पार

करते समय मुझे अपने पेर्वोमाइका की न जाने कितनी बार याद आयी," सहसा लील्या ने करुण स्वर में कहना शुरू किया, "कितनी बार मुझे अपने स्कूल और तुम सबकी याद आयी और मेरी कल्पना के आगे वह दृश्य घूमता रहा, जब हम सब मिलकर नाचती-गातीं, स्तेपी में चहलक़दमी किया करती थीं। ओह, यह सब कुछ क्यों मिट्टी में मिला दिया गया? उन्होंने यह पाशविकता क्यों दिखायी?... दुनिया में लोग क्या चाहते हैं?... प्यारी ऊल्या!" सहसा वह बोली, "हमें कोई अच्छी कविता सुनाओ। जानती हो, जिस ढंग से तुम पहले सुनाया करती थीं..."

"कौन-सी कविता?" ऊल्या ने पूछा।

लड़कियों ने उन तमाम कविताओं के शीर्षक गिना डाले, जो ऊल्या को प्रिय थीं। ये कविताएँ उन्होंने उससे कई बार सुनी थीं।

"दैत्य"* लील्या बोली।

"अच्छी बात है। उसका कौन-सा अंश?"

"जो चाहो।"

"पूरी की पूरी सुनाना।"

ऊल्या खड़ी हो गयी। उसने अपनी बाँहें लटकायीं और बिना किसी प्रकार की घबराहट के, स्वाभाविक ढंग से अपनी सुरीली और गहरी आवाज़ में कविता सुनाने लगी। उसकी आवाज़ स्वाभाविक थी, जो प्रायः उन लोगों की होती है जो न कविताएँ रचते हैं, और न उन्हें मंच से सुनाते ही हैं।

दुख में डूबा प्रेत स्वर्ग से निष्कासित
पाप भरी धरती के ऊपर उड़ता था,
मधुर दिनों की स्मृतियों का मानो जमघट
मानस-पट पर बरबस मचल उमड़ता था।
चीर शाश्वत कुहर-कुहासे की चादर
जब वह ज्ञान-पिपासा से होकर आतुर,
अन्तरिक्ष में निखरे तारा-पुंजों पर
टिका दिया करता था अपनी प्रखर नज़र।
करता था विश्वास, प्यार जब करता था
और सुखी था वह ब्रह्मा का श्रेष्ठ सजन।
लोगों की मुश्किलों, अभावों, दर्दों की
चाहे कितनी भी बोझिल हो पीर-कथा
बीती भावी पीढ़ी जिसको सके बता,

* म. यू. लेरमोन्तोव – "दैत्य"

क्या तुलना हो सकती है लेकिन उससे
क्षण भर कि भी जो है मेरी परम व्यथा?

यह बड़ी विचित्र बात थी कि लड़कियों के गाये हुए सभी गानों की भाँति ऊल्या के कविता पाठ में भी ज़िन्दगी की लहर दौड़ने लगी और वह अवसरानुकूल बड़े महत्व की चीज़ बन गयी। लगता था कि फ़िलहाल लड़कियाँ, जिस जीवन चक्र के साथ बँध गयी थीं, वह जैसे उस समस्त सौन्दर्य से भिन्न था, जिसकी रचना इसी पृथ्वी पर हुई थी, भले ही कभी या किसी प्रकार ही क्यों न हुई हो। और कविता का प्रत्येक अंश, जो दैत्य के पक्ष या विपक्ष में पड़ता था, वह समान रूप से उन सभी बातों पर लागू होता था, जिनका लड़कियाँ इस समय अनुभव कर रही थीं। और समान रूप से ही कविता उन्हें उत्साहित कर रही थी, प्रेरित कर रही थी।

कड़ी परीक्षा की अब बीत चुकी घड़ियाँ
पापी धरती के वस्त्रों के संग इसकी
टूट गिरी हैं सभी बुराई की घड़ियाँ।
बहुत देर से देखें इसकी राह वहाँ!
और आत्मा इसकी उन लोगों-सी
जिसका जीवन अति असह्य पीड़ा का क्षण
किन्तु विलक्षण सुख से पूरित रहता मन...

और लड़कियों को लगा कि सचमुच वे जिन कष्टों को सहन कर रही हैं, उनसे बड़े कष्ट जैसे पैदा ही नहीं हुए।

तभी देवदूत अपने स्वर्णपंखों पर उड़ जाता है और अपने साथ तमारा की पापी आत्मा ले जाता है। और नारकीय शैतान नरक से उठकर उनके पास आता है।

"क्षुब्ध आत्मा सन्देहों की, ओझल हो!"
ऊल्या, हाथ नीचे लटकाये, कविता सुनाये जा रही थी।
बेहद निर्मम, बेहद ऊँचा मूल्य चुका
उसने, सन्देहों का पश्चाताप किया
उसने, पीड़ा सही, किया है उसने प्यार
खुला प्यार के लिए स्वर्ग का अब तो द्वार।

लील्या ने दोनों हाथों पर अपना सुनहरे बालोंवाला सिर रख लिया और बच्चे की तरह फूट-फूटकर रोने लगी। लड़कियाँ द्रवित हो उठी थीं। वे उसे सान्त्वना देने के लिए उसके इर्द-गिर्द जमा हो गयीं। और उस नारकीय संसार ने, जिसमें फ़िलहाल

वे रह रही थीं, एक बार फिर उसके कमरे में प्रवेश किया और जैसे उनके हृदयों को विषाक्त कर डाला।

अध्याय 31

अनातोली पोपोव घर में नहीं, बल्कि पोगोरेली गाँव में पेत्रोव परिवार के पास छिपकर रहता था। वह ऊल्या, विक्टर और विक्टर के पिता के साथ भाग निकलने के असफल प्रयास से लौटकर यहीं टिका हुआ था। अभी तक जर्मन अधिकारियों ने उस गाँव में प्रवेश नहीं किया था, इसीलिए पेत्रोव परिवार आज़ादी के साथ घूम-फिर सकता था।

जैसे ही जर्मन सैनिक पेर्वोमाइका ज़िले से निकले कि अनातोली पोपोव अपने घर लौट आया।

नीना इवान्त्सोवा के पास पोपोव के लिए और खास तौर से ऊल्या के लिए – ऊल्या के लिए इसलिए, क्योंकि शहर में उसे कम लोग जानते थे – ये निर्देश आ चुके थे कि वे पेर्वोमाइका के ऐसे लड़कों और लड़कियों के एक दल को संगठित करें, जो जर्मनों से मोर्चा लेने और संघर्ष करने के लिए उत्सुक हैं और जिन पर भरोसा किया जा सकता है। और इस काम के लिए फ़ौरन कोशेवोई से सम्पर्क स्थापित करें। नीना ने यह संकेत भी कर दिया था कि ओलेग सिर्फ़ अपनी ही प्रेरणा से काम नहीं कर रहा है। उसने ओलेग के कुछ निर्देश भी उन्हें बता दिये थे – प्रत्येक युवक के साथ अलग-अलग बातचीत करना; किसी को किसी दूसरे का नाम न बताना; किसी भी दशा में ओलेग का नाम न लेना; और उन्हें यह समझाना कि वे सिर्फ़ अपनी ही प्रेरणा से काम नहीं कर रहे हैं।

नीना चली गयी। अनातोली और ऊल्या ढलान से नीचे उतरकर उस खड्ड से आ गये जो, पोपोव और ग्रोमोव परिवारों के बग़ीचों को एक दूसरे से अलग कर रही थी और वहाँ एक सेब के वृक्ष के नीचे बैठ गये।

स्तेपी और बग़ीचों पर रात्रि का अन्धकार फैलता जा रहा था।

जर्मनों ने पोपोव के बग़ीचे को, ख़ास कर चेरी के पेड़ों को बुरी तरह ध्वस्त कर दिया था और फलों तक आसानी से पहुँचने के लिए बहुत-सी शाखाएँ तोड़ डाली थीं। किन्तु फिर भी वह बग़ीचा उतना ही खुशनुमा और क़ायदे का था, जैसा वह उन दिनों हुआ करता था जब पिता और पुत्र मिलकर उसकी सम्भाल किया करते थे।

अनातोली के प्राकृतिक विज्ञान के अध्यापक ने, जिसे इस विषय में बड़ी दिलचस्पी थी, आठवीं कक्षा में, शिक्षण वर्ष के अन्त में अनातोली को "नाशपाती के

वृक्ष के कीड़े" नामक एक पुस्तक भेंट की थी। यह पुस्तक बड़ी पुरानी थी। उसके कुछ आरम्भिक पन्ने भी ग़ायब थे और इसी लिए उसके लेखक का नाम जानने का कोई साधन न रह गया था।

पोपोव के बग़ीचे के प्रवेशद्वार के निकट नाशपाती का एक पुराना वृक्ष था, जो पुस्तक से भी कहीं ज्यादा पुराना था और अनातोली वृक्ष और पुस्तक दोनों ही का बड़ा शौक़ीन था।

सेब के पेड़ पोपोव के लिए बड़े गर्व की वस्तु थे। जब शरद ऋतु में सेब पकने लगते, तो अनातोली बग़ीचे में एक सफ़री खाट डालकर सोया करता और छोटे-छोटे लड़कों से उनकी रक्षा किया करता। जब कभी मौसम ख़राब होता और उसे अपने कमरे में सोना पड़ता, तो वह ख़तरे की घण्टियों का एक उपकरण काम में लाया करता। वह पेड़ की शाखाओं में डोरियाँ बाँध देता और उनके सिरे उसकी खिड़की तक जानेवाली एक रस्सी से जोड़ देता। यदि किसी का हाथ किसी सेब के पेड़ को छूता, तो उसके पलंग के नीचे ढेरों ख़ाली टीन भड़भड़ा उठते और अनातोली केवल जाँघिया पहने नंगे पाँव ही भागता हुआ बग़ीचे में जा पहुँचता।

इस समय वह और ऊल्या इसी बग़ीचे में गम्भीर विचारों में डूबे बैठे थे और बराबर यह समझते जा रहे थे कि नीना से उनकी बातचीत हो जाने के बाद से उन्होंने एक नये जीवन में प्रवेश किया है।

"ऊल्या, हमने कभी एक दूसरे से अपने मन की बात नहीं कही," अनातोली ने कहा। उसकी निकटता के कारण अनातोली का चेहरा लज्जा से कुछ-कुछ लाल पड़ रहा था "काफ़ी समय से तुम्हारे विषय में मेरी बहुत अच्छी राय रही है। मेरा ख़याल है कि अब समय आ गया है जब हमें खुलकर बातें कर लेनी चाहिए और हर चीज़ के बारे में कह डालना चाहिए। मैं समझता हूँ कि पेर्वोमाइका के नवयुवकों का संगठन करने के लिए तुम और मैं उपयुक्त व्यक्ति हैं। मैं बढ़ा-चढ़ा कर बात नहीं कर रहा हूँ, न ही मैं डींग मार रहा हूँ। बेशक, हमें पहले से ही यह तय कर लेना चाहिए कि हमारा अपना जीवन किस प्रकार का होगा, मसलन श्रम-केन्द्र में दर्ज होने का सवाल है। निजी रूप से मैं अपना नाम दर्ज नहीं कराऊँगा। मैं जर्मनों के लिए काम नहीं करना चाहता और न ही करूँगा। मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, और तुम इसकी साक्षी हो कि मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा," वह बोला। उसकी आवाज़ संयत भी थी और सशक्त भी। "ज़रूरत पड़ी तो मैं छिपकर रहूँगा या भेष बदल लूँगा, या ख़ुफ़िया कार्य करूँगा। मैं मर मिटूँगा पर जर्मनों के लिए कोई काम न करूँगा!"

"तोल्या, तुम्हें वह दिन याद है, जब जर्मन कारपोरल ने हमारे बक्सों की तलाशी ली थी? उसके हाथ कितने गन्दे, कठोर और लालची थे। वे हाथ बराबर मेरी निगाहों

के सामने रहते हैं," ऊल्या ने धीमी आवाज़ में कहा। "जैसे ही मैं वापस घर गयी कि मैंने देखा कि वही हाथ हमारे बिस्तर और ट्रंकों को उलट-पुलट रहे हैं और रूमाल बनाने के लिये हमारी पोशाकें काट रहे हैं, उन्होंने हमारे मैले-कुचैले कपड़ों तक को झाड़ू-झूड़कर देखा और अब तो वे हमारे दिमाग़ों तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहे हैं। तोल्या, मैंने कितनी ही रातें अपनी रसोई में बैठे-बैठे काटी हैं। यह रसोई मकान से बाहर बने एक कमरे में है। मैं वहाँ अँधेरे में बैठी-बैठी जर्मनों को घर भर में शोर मचाते सुनती रही हूँ। इन दुष्टों ने मेरी बीमार माँ तक से काम कराने का प्रयत्न किया था। इस प्रकार वहाँ बैठे-बैठे मैंने बहुत बातों पर विचार किया और कई बातें मेरे मन में साफ़ हो गयीं। मैं बराबर सोचा करती कि क्या उस मार्ग पर चल सकने की मुझमें शक्ति है, क्या उसपर चलने का मुझे अधिकार है? और तभी सहसा मैंने देखा कि मेरे लिए कोई दूसरा मार्ग नहीं। हाँ, मैं सिर्फ़ इसी रास्ते पर चलते हुए ज़िन्दा रह सकती हूँ, नहीं तो मर मिटूँगी। और मैं अपनी माँ की सौगन्ध खाती हूँ कि मरते दम तक उस रास्ते से न हटूँगी।" ऊल्या की काली-काली आँखें अनातोली की आँखों में झाँकने लगीं।

दोनों बहुत ही द्रवित हो रहे थे। कई मिनटों तक उन्होंने कुछ नहीं कहा।

"आओ, हम उम्मीदवारों पर एक नज़र डाल लें और यह तय कर लें कि पहले किससे मिलना चाहिए," अनातोली ने अपने को सम्भालते हुए फटी आवाज़ में कहा : "चलो लड़कियों से आरम्भ किया जाये, है न?"

"बेशक, माय्या पेग्लिवानोवा और साशा बोन्दरेवा," ऊल्या बोली, "और लील्या इवानीख़िना। फिर तोन्या उसके साथ आ जायेगी और मैं समझती हूँ नीना समोशिना और नीना गेरासिमोवा भी!"

"और हमारे तरुण पायोनियर लीडर का क्या हुआ-क्या नाम है उसका?" –

"वीरिकोवा?" ऊल्या के चेहरे पर रुक्षता का भाव झलक उठा, "जानते हो, मैं तुमसे एक बात कहूँगी – हमारे सामने ऐसे-ऐसे दर्दनाक मौक़े आते थे, जब हमें इस चीज़ या उस चीज़ के सम्बन्ध में कड़े शब्दों में अपनी राय व्यक्त करनी पड़ती थी। किन्तु हरेक की प्रकृति में कोई न कोई ऐसी चीज़ अवश्य होनी चाहिए, जो पूर्णतः पवित्र हो, जिसका, अपनी माँ की तरह कभी उपहास न किया जाये, बेइज्ज़ती न की जाये, मज़ाक न उड़ाया जाये। जहाँ तक वीरिकोवा की बात है, उसके बारे में कोई नहीं कह सकता। मैं तो उसका कभी विश्वास नहीं करूँगी।"

"तो फिर अभी हम उसे छोड़ ही दें। आगे देखा जायेगा," अनातोली बोला।

"मैं तो नीना मिनायेवा के नाम का सुझाव देना चाहूँगी," ऊल्या बोली।

"वह सुनहरे बालोंवाली लड़की, जो डरपोक है?"

"उसे डरपोक समझने की भूल न करना। वह सिर्फ़ लड़की है, बस। किन्तु धारणाओं की बड़ी पक्की है।"

"और शूरा दुब्रोविना?"

ऊल्या मुस्करा दी, "उसके बारे में हम माय्या से पूछेंगे।"

"मैं पूछता हूँ तुमने अपनी सबसे अच्छी सहेली वाल्या फ़िलातोवा का नाम क्यों नहीं लिया?" सहसा, साश्चर्य, अनातोली ने पूछा।

ऊल्या ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया। अनातोली उसके चेहरे का भाव न देख सका।

"हाँ, वह मेरी सबसे अच्छी सहेली थी और मैं अब भी उसे प्यार करती हूँ। मैं उसके सदय हृदय को दूसरों से अधिक पहचानती हूँ, किन्तु वह हमारे रास्ते नहीं चल सकती। उसमें उतना साहस नहीं। मुझे डर है, वह सिर्फ़ बलि का बकरा ही बन सकती है," ऊल्या बोली और उसके होंठ तथा नथुने कुछ काँप उठे। "और लड़कों के बारे में क्या विचार रहा?" उसने ऐसे पूछा, मानो वह जान-बूझकर विषय बदलना चाहती हो।

"हाँ, लड़कों में विक्टर है; मैंने उससे पहले ही बातें की हैं। और चूँकि तुमने साशा बोन्दरेवा का नाम पेश किया है और ठीक ही पेश किया है, तो हम उसके भाई वास्या को भी मिलाना चाहेंगे और जेन्या शेपेल्योव को और वोलोद्या रगोज़िन को भी। और मेरा ख़याल है बोर्या ग्लवान को भी। तुम जानती हो उसे; नहीं जानतीं? वह मोल्दावान छोकरा, जो बेस्सराबिया से निकलकर आया था।"

इस प्रकार उन्होंने बारी-बारी से अपने सभी साथियों और मित्रों के बारे में बात की। कुम्हलाता हुआ बड़ा-सा चाँद अब भी वृक्षों के उस पार ही लटका हुआ था। बग़ीचे के उस पार गहरी परछाइयाँ दिखायी पड़ रही थीं और सारी प्रकृति पर जैसे इन्द्रजाल-सा बिछा था।

"यह कितने भाग्य की बात है कि हम दोनों के घर जर्मनों से मुक्त हैं। मैं तो उन्हें देखना तक सहन न कर पाती, विशेषकर इन दिनों," ऊल्या बोली।

लौट आने के बाद से ऊल्या अहाते में बनी एक कोठरी की दीवार के साथ निर्मित एक छोटे से रसोईघर में अकेली रहती थी। उसने अंगीठी पर रखा हुआ दिया जलाया और कुछ देर तक बिस्तर पर बैठे-बैठे शून्य की ओर देखती रही। अकेले में उसके दिमाग़ में तरह-तरह के विचार उठने लगे और वह यह सोचने लगी कि उसे ज़िन्दगी में अभी और कौन-कौन-से खेल खेलने हैं। वह पूरी ईमानदारी के साथ, जो मानसिक तृप्ति के क्षणों में ही मनुष्य के स्वभाव का अंग बनती है, इन बातों के बारे में सोच रही थी।

उसने पलंग से उतरकर उसके नीचे से अपना सूटकेस खींच लिया। उसे अपने

कपड़ों के बीच रखी मोमजामे की जिल्दवाली स्कूली कापी मिल गयी। बार-बार पढ़ने के कारण कापी के पन्ने मुड़ गये थे। उसने जब से घर छोड़ा था, तब से कभी उस पर नज़र तक न डाली थी।

पहले पन्ने पर पेंसिल से लिखा हुआ एक अधमिटा उद्धरण था, जो आगे वर्णित बातों के लिए एक प्रकार का आदर्श-वाक्य था। उससे ऊल्या का यह उद्देश्य साफ़ प्रकट होता था कि उसने उसमें ऐसे-ऐसे उद्धरण तथा टिप्पणियाँ क्यों और कब लिखना शुरू की थीं।

"मनुष्य के जीवन में एक समय ऐसा आता है, जब उसकी नैतिक भवितव्यता का निश्चय होता है, जब उसके नैतिक उत्थान में एक मोड़ आता है। लोगों का कहना है कि यह मोड़ सिर्फ़ जवानी में आता है। यह बात ठीक नहीं है – बहुतों के लिए तो वह गुलाबी बचपन के दिनों में ही आ जाता है।"

(पोम्यालोव्स्की)

हर्ष, विषाद और आश्चर्य की अनुभूति सहित यह विचार भी उसके मस्तिष्क में कौंध गया कि अपने बचपन में ही उसने ऐसी बातें लिख दी थीं, जो उसकी वर्तमान मनःस्थिति के अनुकूल थीं। उसने कुछ छिटपुट पंक्तियाँ पढ़ीं :

"जंग के दौरान मनुष्य को प्रत्येक क्षण का उपयोग करने तथा जल्दी-से-जल्दी फ़ैसले करने की क्षमता होनी चाहिए।"

"आदमी की लगन के आगे कौन-सी चीज़ ठहर सकती है? यह लगन सारे मस्तिष्क पर छाती है। लगन के माने है – घृणा, प्यार, दया, प्रसन्नता, जीवन। सारतः, लगन हर व्यक्ति की नैतिक शक्ति है, सृजन या विनाश का उन्मुक्त प्रयास, वह सर्जना शक्ति, जो शून्य से भी चमत्कार पैदा करती है।"

(लेरमोन्तोव)

"मैं शर्म से ज़मीन में गड़ जाना चाहती हूँ। जो लोग मामूली वस्त्र पहनते हैं, उनका मज़ाक उड़ाना बड़े शर्म की बात है, नहीं, इससे भी कुछ अधिक, घृणास्पद बात है। मुझे इस तरह की आदत कब पड़ी थी, मुझे याद नहीं पड़ता। फिर भी, आज, नीना म.... के साथ। नहीं, मैं इसे लिखने का साहस नहीं कर सकती। इसके बारे में मैं जो कुछ सोचती हूँ, उससे शर्म से गड़ जाती हूँ। मेरी दोस्ती लीज्का उ.... से भी थी, क्योंकि हम दोनों हर उस आदमी का उपहास करते थे, जिसके वस्त्र ख़राब होते थे, फिर भी उसके माता-पिता... लेकिन इसके बारे में लिखने की कोई ज़रूरत नहीं, वह बड़ी अशिष्ट लड़की है। और आज मैंने घमण्ड में आकर नीना का भी उपहास किया। मैंने उसके स्कर्ट में से उसका ब्लाउज़ निकाल दिया और नीना बोली

– नहीं, मैं उसके शब्दों को नहीं दुहरा सकती। ऐसे बुरे विचार मेरे दिमाग़ में कभी नहीं आये। सचमुच यह सब हुआ इसलिए कि मैं ज़िन्दगी में सभी सुन्दर चीज़ें देखना चाहती थी, किन्तु सारी बातें बिलकुल उल्टी साबित हुईं। मैंने यह सोचा भी नहीं था कि बहुत-से लोग ऐसे भी हैं, जिनकी ज़रूरतें अभी तक पूरी नहीं हो पातीं, और विशेष रूप से नीना म.... जो इतनी असहाय है... प्यारी नीना, मैं सौगन्ध खाती हूँ, मैं अब ऐसा कभी नहीं करूँगी, कभी नहीं करूँगी।"

उसके नीचे पेंसिल से कुछ और लिखा था, जो प्रत्यक्षतः अगले दिन लिखा गया था – "और तुम उससे माफ़ी माँगोगी – हाँ, माफ़ी माँगोगी..."

दो पन्नों के बाद लिखा था :

"मनुष्य की सबसे प्यारी निधि है उसकी ज़िन्दगी। यह उसे सिर्फ़ एक बार मिलती है। उसे चाहिए कि ज़िन्दगी इस ढंग से बिताये कि उसे निरुद्देश्य बीते हुए वर्षों के लिए अफ़सोस न करना पड़े और अपने अधम और तुच्छ गत जीवन के लिए शर्म से ज़मीन में न गड़ना पड़े।"

(न. ओस्त्रोव्स्की)

"यह म. न. भी कितना मज़ेदार आदमी है। सचमुच! बेशक मैं इस बात से इनकार नहीं करती कि मुझे उसके साथ रहना अच्छा लगता है (कभी-कभी)। और वह नाचता भी अच्छा है। वह अपनी उपाधि की और अपने पदकों की किस तरह नुमाइश करता रहता है, लेकिन मेरी इन चीज़ों में कोई रुचि नहीं। पिछली रात उसने कुछ ऐसी बातें कही थीं, जिसे उससे सुनने की मैं बहुत समय से आशा कर रही थी, किन्तु सुनना नहीं चाहती थी। मैंने उस पर हँस दिया और इसका मुझे अफ़सोस भी नहीं। और जब उसने यह कहा कि वह आत्महत्या कर लेगा, तो सचमुच ऐसा करने का उसका कोई इरादा न था। बेशक ऐसा कहना भी पैशाचिक था। वह इतना मोटा है कि उसे मोर्चे पर बन्दूक़ वग़ैरह लेकर मार्च कराना चाहिए। कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं!"

"हमारे सभी शिष्ट कमाण्डरों में सबसे बहादुर, और बहादुरों में सबसे शिष्ट – मैं तो कामरेड कोतोव्स्की को इसी रूप में याद करता हूँ। उसकी स्मृति और यश अमर रहें!"

(स्तालिन)

ऊल्या अपनी कॉपी में खोयी हुई बैठी थी कि उसे बग़ीचे के फाटक के चरमराने की धीमी आवाज़ आयी और फिर अहाते से होकर रसोई की ओर दौड़कर आती हुई किसी की हल्की-हल्की पदचाप सुनायी दी।

दरवाज़ा धीरे-से खुला और वाल्या फ़िलातोवा झुटपटे में ऊल्या की ओर दौड़ पड़ी। वह ज़मीन पर घुटनों के बल गिरी और उसने अपना चेहरा ऊल्या की गोद में छिपा लिया।

कुछ क्षणों तक वे चुप रहे। ऊल्या ने देखा कि वाल्या की साँस फूल रही है और दिल धक-धक कर रहा है।

"क्या बात है, प्यारी वाल्या?" उसने धीरे-से पूछा।

वाल्या ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। उसका मुँह कुछ खुला रहा।

"ऊल्या! वे मुझे जर्मनी भेज रहे हैं!"

वह जर्मनों से बड़ी घृणा करती थी, और भय खाती थी। जिस दिन से जर्मन आये थे, उसी दिन से वह डर रही थी कि किसी भी क्षण उसके अथवा उसकी माँ के साथ कोई भी भयंकर घटना घट सकती है।

जब से श्रम-केन्द्र में नाम दर्ज कराने का उसे आदेश आया था और वाल्या ने उसका पालन नहीं किया था, तभी से उसे बराबर यह भय बना हुआ था कि न जाने उसे कब गिरफ़्तार कर लिया जाये। क्योंकि जर्मन अधिकारियों से मोर्चा लेने का निश्चय करके उसने अपने को अपराधी समझना शुरू कर दिया था।

उस दिन प्रातः बाज़ार जाते समय रास्ते में उसे ऐसे कई व्यक्ति मिले, जो श्रम-केन्द्र से लौट रहे थे। वे किसी छोटी-सी खान की मरम्मत करने जा रहे थे, ताकि उसे फिर से चालू किया जा सके। पेर्वोमाइका क्षेत्र में ऐसी बहुत-सी खानें पड़ी थीं। और तभी वाल्या भी अपना नाम दर्ज कराने के लिए गयी। हाँ, उसने इसके बारे में ऊल्या से कुछ नहीं कहा। उसे ऊल्या को अपनी कमज़ोरी बताने में शर्म आ रही थी।

श्रम-केन्द्र, ज़िला सोवियत के पास ही एक पहाड़ी पर बने हुए सफ़ेद रंग के एक इकहरे मकान में था। बूढ़े और जवान, ख़ासकर स्त्रियाँ और लड़कियाँ, कुछेक दर्जन लोग फाटक पर एक पाँत में खड़े इन्तज़ार कर रहे थे। दूर से ही वाल्या को उनमें एक लड़की दिखायी दी, जो पेर्वोमाइस्की स्कूल में उसी की कक्षा में पढ़ती थी। वह ज़िनाईदा वीरिकोवा थी, जिसे वाल्या ने उसके नाटे क़द, चिकने और चिपके-से बालों तथा आगे निकली हुई उसकी चोटियों से पहचान लिया था। वह उसके पास जा खड़ी हुई, ताकि पाँत में उसका नम्बर आगे आ जाये।

नहीं, यह कोई ऐसी युद्धकालीन पाँत नहीं थी, जिसमें लोग रोटी और राशन की दूसरी चीज़ ख़रीदने अथवा राशन कार्ड लेने, गृह-श्रम-मोर्चे पर काम करनेवाले दल में भर्ती होने के लिए खड़े होते थे। उन पाँतों में हर व्यक्ति आगे रहना चाहता था और यदि कोई पाँत तोड़कर आगे निकलने की कोशिश करता, इसलिए कि उसकी जान-पहचान का कोई व्यक्ति आगे होता अथवा उसे लगता कि अपनी स्थिति के

कारण वह वैसा कर सकता है, तो मुसीबत खड़ी हो जाती थी। नहीं, यह जर्मन श्रम-केन्द्र की पाँत थी, जिसमें कोई भी किसी के आगे नहीं रहना चाहता था। वीरिकोवा ने चुपचाप वाल्या को घूरा और उसे अपने सामने खड़े होने की जगह दे दी।

पाँत जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रही थी क्योंकि एक बार में दो दो व्यक्ति निबटाये जा रहे थे। वाल्या अपने पसीने से तर हाथों में पासपोर्ट पकड़े थी, जिसे उसने रूमाल में लपेट रखा था। वीरिकोवा के साथ मकान में प्रवेश करते समय उसने पासपोर्ट अपने सीने से चिपका लिया था।

रजिस्ट्रेशन आफ़िस के दरवाज़े के ठीक सामने एक लम्बी-सी मेज़ थी, जिसके पीछे एक मोटा जर्मन कारपोरल और रूसी औरत बैठे थे। उस औरत का चेहरा गुलाबी रंग का था और ठुड्डी काफ़ी लम्बी थी। वाल्या और वीरिकोवा दोनों उसे जानती थीं। वह कई क्रास्नोदोन स्कूलों में, जिसमें पेर्वोमाइस्की स्कूल भी था, जर्मन भाषा की अध्यापिका रही थी। विचित्र बात यह थी कि उसका नाम नेम्चीनोवा*था। दोनों लड़कियों ने उसका अभिवादन किया।

"ओह...मेरी छात्राएँ!" नेम्चीनोवा बोली। उसके होंठों पर एक बनावटी-सी मुसकान दिखायी दी और उसकी लम्बी काली बरौनियाँ हिलने लगीं।

कमरे में टाइपराइटर खटखटा रहे थे। दरवाज़ों पर दायें-बायें लोगों की दो छोटी-छोटी पाँतें लगी थीं।

नेम्चीनोवा ने वाल्या की उम्र तथा उसके माता-पिता का नाम और पता-ठिकाना पूछे और एक लम्बी-सी सूची में दर्ज कर लिये। साथ ही यह सारी सूचना वह जर्मन कारपोरल के आगे भी जर्मन भाषा में अनूदित करती गयी। कारपोरल ने भी ये सूचनाएँ एक दूसरी सूची में जर्मन में टाँक लीं।

नेम्चीनोवा उससे सवाल-जवाब कर ही रही थी कि दाहिनी ओरवाले कमरे में से कोई बाहर निकला और दूसरा व्यक्ति कमरे के अन्दर दाख़िल हुआ। सहसा वाल्या की निगाह एक जवान औरत पर पड़ी। उसके बाल बिखरे हुए थे, चेहरा लाल हो रहा था और आँखों में आँसू थे। वह जल्दी-से कमरे से होकर गुज़र रही थी। वह एक हाथ से अपने ब्लाउज़ के सामने का बटन लगा रही थी। उसी समय नेम्चीनोवा ने वाल्या से दूसरा प्रश्न पूछा।

"आपने क्या कहा?" वाल्या ने प्रश्न किया। उसकी आँखें उसी जवान औरत पर लगी थीं।

---

* नेम्चीनोवा – नेमेत्स शब्द से, जिसका अर्थ होता है जर्मन।

“तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है?” कोई बीमारी तो नहीं?

“नहीं, बिलकुल ठीक हूँ,” वह बोली।

उसके पीछे वीरिकोवा थी। उसने पीछे से उसका ब्लाउज़ खींचकर कुछ इशारा किया। वह घूम पड़ी थी, किन्तु वीरिकोवा सामने देखती रही। उसकी आँखों में कोई भाव न थे।

“डाइरेक्टर के पास जाओ!” नेम्चीनोवा बोली।

वाल्या वहाँ से हटकर दाहिनी ओर की पाँत के पास जा खड़ी हुई और मुड़कर वीरिकोवा की ओर देखने लगी, जो अब उसकी जगह खड़ी थी। उससे भी वही सवाल पूछे जा रहे थे।

डाइरेक्टर के दफ़्तर में चुप्पी छायी थी। कभी-कभी जर्मन भाषा के तीखे वाक्य सुनायी पड़ जाते थे। जिस समय वीरिकोवा से सवाल-जवाब हो रहे थे, एक सत्तरह साल का युवक डाइरेक्टर के दफ़्तर से बाहर निकला। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह घबरा-सा गया था। वह भी बाहर आते समय अपनी क़मीज़ के बटन बन्द कर रहा था।

उसी समय वाल्या को वीरिकोवा की कर्कश आवाज़ सुनायी दी :

“ओल्गा कोन्स्तान्तीनोव्ना, आप अच्छी तरह जानती हैं कि मुझे तपेदिक है। सुनिये!” और वीरिकोवा ने नेम्चीनोवा और मोटे जर्मन के सामने साँस ले लेकर प्रदर्शन करना शुरू किया। कारपोरल अपनी कुरसी पर पीछे हट गया और वीरिकोवा के सीने से सुरसुराहट की आवाज़ सुनकर साश्चर्य उसकी ओर देखता रह गया।

“मेरे घर में ही मेरी देख-रेख हो सकती है,” उसने निर्लज्जता से कहना शुरू किया और पहले नेम्चीनोवा की ओर फिर कारपोरल की ओर देखने लगी। “किन्तु यदि यहाँ नगर में मेरे लिए कोई काम हो, तो उसे करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। पर, ओल्गा कोन्स्तान्तीनोव्ना, काम ऐसा हो, जो सभ्यतासूचक हो और जिसका सम्बन्ध दिमाग़ से हो। मैं बड़ी प्रसन्नता से इस नयी व्यवस्था के लिए काम करूँगी, बड़ी प्रसन्नता से।”

“हे भगवान! यह कह क्या रही है?” धड़कते हुए दिल से डाइरेक्टर के दफ़्तर में प्रवेश करते समय वाल्या ने सोचा।

वह एक हट्टे-कट्टे जर्मन के सामने खड़ी थी, जिसने अपने खिचड़ी बाल बड़ी नफ़ासत से बीच में से काढ़ रखे थे। वह सैनिक जैकेट, चमड़े का बेमेल-सा पीला निकला और भूरे रंग के मोज़े पहने था। उसके घुटनों के बाल फ़र की तरह घने थे। उसने लड़की पर एक तटस्थ-सी नज़र डाली।

“कपड़े उतारो।” वह चिल्लाया।

वह असहायों की तरह अपने चारों ओर देखती रही। कमरे में एक ही व्यक्ति और था – एक जर्मन क्लर्क, जो अपने पास पुराने पासपोर्टों की गड्डियाँ रखे मेज़ के पीछे बैठा था।

"कपड़े उतारो, सुन नहीं रही हो?" जर्मन क्लर्क ने उससे उक्राइनी में कहा।

"कैसे?..." खून वाल्या के चेहरे की ओर दौड़ने लगा।

"कैसे, कैसे!" क्लर्क नक़ल उतारते हुए बोला। "अजी, कपड़े उतारो, कपड़े!"

"Schneller! Schneller!"* बालदार घुटनोंवाला अफ़सर भौंका, फिर सहसा उसने हाथ फैलाया और अपनी धुली-पुछी गठीली उँगलियों से वाल्या के दाँत खोले और उसके मुँह में देखने लगा। फिर वह उसके ब्लाउज़ के बटन खोलने लगा।

भय और अपमान से रोती-सिसकती हुई लड़की ने जल्दी-जल्दी कपड़े उतारने शुरू किये और अपने भीतरी कपड़ों से उलझने लगी। जूतों के सिवा उसके शरीर पर कोई भी चीज़ न थी। जर्मन ने बड़ी रुखाई से उसकी जाँच की, उसके कन्धों, जांघों और घुटनों को दबा-दबाकर देखा और क्लर्क की ओर घूमकर इस गंवारू ढंग से बोला मानो किसी सैनिक की जांच कर रहा हो।

"Tauglich!"**

"पासपोर्ट!" क्लर्क भौंक पड़ा और बिना ऊपर देखे हुए अपना हाथ बढ़ाया।

रोते और अपने शरीर को कपड़ों में छिपाते हुए वाल्या ने अपना पासपोर्ट उसे थमा दिया।

"पता!"

उसने पता बता दिया।

"अपने कपड़े पहनो," क्लर्क ने नीची आवाज़ में बड़ी रुखाई से कहा और उसका पासपोर्ट उछालकर पासपोर्टों की ढेरी में डाल दिया। "तुम्हें कब श्रम-केन्द्र में आना होगा, इसकी सूचना तुम्हें दे दी जायेगी।"

सड़क पर ही वाल्या को होश आया। दोपहर की जलती धूप मकानों पर, धूलभरी सड़क पर, झुलसी हुई घास पर पड़ रही थी। एक महीने से अधिक से वर्षा न हुई थी। हर चीज़ जल रही थी और हवा गर्मी से तप रही थी।

सहसा वह सड़क के बीचोबीच, जहाँ वह टखनों तक धूल में खड़ी थी, निढाल-सी होकर बैठ गयी और कराहने लगी। उसका स्कर्ट उसके इर्द-गिर्द एक गुब्बारे की तरह फूला और फिर पिचक गया। उसने अपना चेहरा हथेलियों से ढाँप

---

* जल्दी करो!

** ठीक है!

लिया।

वीरिकोवा की सहायता से जैसे-तैसे उसने अपने को क़ाबू में कर लिया। दोनों उस पहाड़ी से उतरीं, जिसपर ज़िला कार्यकारिणी समिति का भवन था। फिर मिलीशिया के पास से और वोस्मीदोमिकी मुहल्ले में से होकर वे पेर्वोमाइका में अपने घर की ओर जाने लगीं। वाल्या को पहले कँपकँपी चढ़ी फिर उसके शरीर से गर्म-गर्म पसीना बह चला।

"तुम भी कितनी बेवक़ूफ़ हो! कितनी गधी," वीरिकोवा बोली, "जो कुछ तुम पर बीती है, वही बीतनी चाहिए थी! अरे ये हैं जर्मन," उसने बड़े सम्मान से और अपनी आवाज़ में चापलूसी का पुट देते हुए कहा, "और तुम्हें उनके मुताबिक़ अपने को ढालना आना चाहिए!"

वाल्या उसकी बग़ल में चलती रही। वीरिकोवा ने क्या कहा यह उसने नहीं सुना।

"तुमने कितनी उल्टी बात की," वीरिकोवा ने उग्रता के साथ कहना शुरू किया, "मैंने तो तुम्हें इशारा भी किया था। तुम्हें उनसे कह देना चाहिए था कि तुम चाहती हो कि यहीं रहकर उनके किसी काम आओ। ये लोग ऐसी बातें पसन्द करते हैं। और तुम्हें कहना चाहिए था कि तुम्हारी सेहत ठीक नहीं है। कमीशन में, नगर अस्पताल की डाक्टर की हैसियत से नताल्या अलेक्सेयेव्ना काम कर रही है, जो भी उससे कार्य-मुक्ति का प्रमाण-पत्र चाहता है, वह उसे मिल जाता है या कम-से-कम यह सर्टिफ़िकेट तो मिल ही जाता है कि वह फ़िट नहीं है। वहाँ जो जर्मन है, वह सिर्फ़ नीमहकीम और घोंघा-वसन्त है। उसे कुछ भी तो नहीं आता। तुम बेवक़ूफ़ हो, पल्ले सिरे की बेवक़ूफ़। पहले जो हमारा मवेशी सप्लाई दफ़्तर हुआ करता था, उसी में मुझे एक जगह मिल गयी है और मुझे राशन भी मिलेगा..."

पहले-पहल ऊल्या को वाल्या की दशा पर बड़ा दुख हुआ। उसने अपने हाथों में उसका सिर पकड़ा और उसके बालों और आँखों पर चुम्बनों की बौछार करने लगी। उसके पश्चात् ऊल्या ने उसके बचाव की योजना बनायी।

"तुम्हें भाग जाना होगा," वह बोली, "हाँ, बस यही रास्ता है। निकल भागो।"

"हे भगवान, मैं भाग कैसे सकती हूँ," वाल्या ने असहाय और अविनीत भाव से कहा, "अब मेरे पास एक भी परिचय-पत्र नहीं रह गया है।"

"प्यारी वाल्या," ऊल्या ने उसे समझाते हुए कहा, "मैं जानती हूँ, हम जर्मनों से घिरे हैं, पर जानती हो, यह हमारा देश है। यह एक बड़ा देश है, जहाँ हमारे ही आदमी रहते-बसते हैं। हम हमेशा उन्हीं के साथ रहे हैं। तुम देख ही लोगी, हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे। मैं तुम्हारी सहायता करूँगी और दूसरे लड़के और लड़कियाँ भी।"

"और माँ का क्या होगा? ऊल्या, तुम यह सब कह क्या रही हो! वे तो उसकी बोटी-बोटी कर डालेंगे।" उसकी आँखों में आँसू भर आये।

"देखो जी, यह रोना-धोना बन्द करो," ऊल्या ने क्रोध से कहा। "तुम यह समझती हो कि अगर उन्होंने तुम्हें जर्मनी भेज दिया, तो तुम्हारी माँ को चैन मिलेगा? वह इस दुख को बर्दाश्त कर सकेगी?"

"ऊल्या, ऊल्या! आख़िर तुम मुझपर क्यों ज़ुल्म कर रही हो!"

"तुम्हारी बातें सुनकर मुझे ग़ुस्सा आ रहा है... ऐसी बुज़दिलों की-सी बातें करते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए। मैं तुमसे नफ़रत करती हूँ, वाल्या," ऊल्या बोली। उसका हृदय कठोर और निर्मम हो रहा था। "हाँ, तुम्हारी इस असहायता और इन आँसुओं के लिए मेरे दिल में केवल घृणा है। हर जगह दुख ही दुख दिखायी दे रहा है। मोर्चों पर, फ़ासिस्टों के यातना-शिविरों में और कालकोठरियों में न जाने कितने हट्टे-कट्टे, मज़बूत और खूबसूरत ज़वान मौत को गले लगा रहे हैं। कुछ सोच सकती हो कि उनकी पत्नियों और माताओं पर क्या बीतती होगी? फिर भी वे काम करते हैं, संघर्ष करते हैं और एक तुम हो, जवान लड़की, सारी दुनिया तुम्हारे सामने है, फिर तुम्हें मदद भी मिल रही है, लेकिन तुम बैठी रो रही हो, यह उम्मीद करती हो कि लोग तुम पर तरस खायेंगे! मेरे दिल में तुम्हारे लिए कोई भी सहानुभूति नहीं, ज़रा भी नहीं," ऊल्या बोली।

वह तुरन्त उठ खड़ी हुई, दरवाज़े तक गयी और हाथ पीछे करती हुई, दरवाज़े के सहारे खड़ी-खड़ी शून्य की ओर ताकती रही। उसकी काली-काली आँखों से क्रोध झलक रहा था। वाल्या अपनी सहेली के बिस्तर से सिर दबाये घुटनों के बल चुपचाप बैठी थी।

"वाल्या! प्यारी वाल्या! ज़रा सोचो हम किस प्रकार अपना सारा समय साथ-साथ बिताती थीं," ऊल्या ने कहना शुरू किया, "सुनो, प्यारी!"

किन्तु वाल्या की रोते-रोते घिग्घी बँध गयी थी।

"क्या तुम कह सकती हो कि मैंने कभी तुम्हें कोई बुरी सलाह दी है। याद है तुम्हें आलूचेवाली वह बात? और वह दिन भी याद है जब तुम चीख़ी थीं कि तुम कभी तैरकर किनारे तक नहीं आ सकोगी? और तब मैंने कहा था कि अगर तुम तैरकर वापस न आयीं, तो मैं तुम्हें अपने हाथों से डुबो दूँगी? वाल्या! प्यारी वाल्या!"

"नहीं, नहीं! तुमने मुझे भुला दिया है। जब तुम दूसरों के साथ नगर से निकल गयी थीं, तभी से तुमने मुझे अपने दिल से निकाल दिया। तब से हमारी दोस्ती ख़त्म हो गयी। तुम्हारा ख़याल है, मैंने उस समय इसका अनुभव नहीं किया था?" वाल्या सिसकियाँ लेती रही। वह होश में नही रह गयी थी। "और अब! अब मैं इस

लम्बी-चौड़ी दुनिया में बिल्कुल अकेली हूँ!"

ऊल्या ने कोई उत्तर न दिया।

वाल्या उठी और रूमाल से अपने आँसू पोंछ डाले।

"वाल्या, अब मैं आख़िरी बार तुमसे पूछ रही हूँ," ऊल्या ने रुखाई से और थम-थमकर कहना शुरू किया, "या तो तुम मेरी बात मानो और हम सीधे जाकर अनातोली को बुला लायें ताकि वह तुम्हें पोगोरेली गाँव में विक्टर के पास ले जाये या... वाल्या, मेरा दिल न तोड़ों।"

"विदा, प्यारी ऊल्या! हमेशा के लिए विदा!" किसी प्रकार आँसुओं पर नियंत्रण रखते हुए वह रसोईघर से तेज़ी से निकली और चाँदनी से नहाये हुए अहाते मैं दौड़ गयी।

ऊल्या उसके पीछे-पीछे जाकर उसे अपनी बाँहों में भरकर उसका दुखी और आँसूओं से भीगा हुआ चेहरा चुम्बनों से ढँक देना चाहती थी।

उसने दिया बुझाया, खिड़की खोली और बिना वस्त्र उतारे पलंग पर पड़ गयी। स्तेपी और खनिकों की बस्ती से आती रात्रि की अस्पष्ट ध्वनियाँ बराबर उसके कानों में गूँजने लगीं। नींद ने उसका साथ छोड़ दिया था। वह कल्पना कर रही थी कि मैं इधर आराम से पड़ी हूँ और उधर जर्मन वाल्या के घर आकर उसे पकड़े लिये जा रहे हैं और उससे विदाई के समय सान्त्वना का एक शब्द भी कहने-सुनने के लिए कोई नहीं रह गया है।

सहसा उसे लगा जैसे मुलायम ज़मीन पर उसने किसी की पदचाप सुनी है और बग़ीचे में पत्ते सरसरा रहे हैं। क़दम और भी नज़दीक आने लगे। उसे लगा जैसे एक नहीं बहुत-से लोग अन्दर चले आ रहे हैं। उसे तुरन्त दरवाज़े में ताला लगाकर खिड़की बन्द कर लेनी चाहिए थी, किन्तु अब कुछ न हो सकता था। क़दम खिड़की के पास तक पहुँच चुके थे और खिड़की के पीछे से एक सिर झांकने लगा। उसे सुनहरे बाल और एक उज्बेक टोपी दिखायी दी।

"ऊल्या, सो रही हो?" अनातोली फुसफुसाया।

और पलक मारते वह खिड़की के पास आ गयी।

"बड़ी भयानक बात हो गयी," अनातोली बोला , "वे लोग विक्टर के पिता को ले गये?"

ऊल्या की निगाहों के सामने, खिड़की के पास आता विक्टर का चेहरा दिखायी दिया। वह चाँदनी में नहा रहा था। विक्टर की आँखें गम्भीर थीं और चेहरा पीला। हाँ, उसपर दृढ़ संकल्प ज़रूर अंकित था।

"कब पकड़ ले गये?"

"आज ही शाम को। काली वर्दी पहने एक एस. एस. का सिपाही आया। मोटा-सा था और सोने के दाँत थे उसके। शरीर से दुर्गन्ध आ रही थी।" विक्टर की आवाज़ में घृणा थी। "उसके साथ एक सिपाही और था, वे और एक रूसी पुलिसमैन भी...उन्होंने उसे बहुत पीटा। फिर वे उसे फ़ोरेस्ट्री स्टेशन के दफ़्तर में ले गये। वहाँ गिरफ़्तार किये हुए लोगों से भरी एक लारी खड़ी थी। जर्मन उन सब को यहाँ ले आये हैं... मैं लारी के पीछे सात मील तक दौड़ता गया। अगर तुम भी परसों वहाँ से न चले गये होते तो उन लोगों ने तुम्हें भी गिरफ़्तार कर लिया होता," विक्टर ने अनातोली से कहा।

अध्याय 32

जब से मत्वेई शुल्गा को ज़ेल में झोंका गया, तब से न जाने कितने दिन और कितनी रातें गुज़र चुकी थीं। वह तो समय की गणना तक भूल चुका था। उसकी कोठरी में बराबर अँधेरा बना रहता, हाँ, छत के नीचे एक सँकरी-सी दरार होने के कारण दिन का थोड़ा-सा प्रकाश कोठरी में झांक पाता। दरार के बाहर कंटीला तार लगा था। कुछ इस कारण और कुछ ढालवीं छत के कारण रोशनी और भी कम अन्दर आ पाती थी।

मत्वेई कोस्तियेविच अकेला था। सभी ने जैसे उसका साथ छोड़ दिया था।

कभी-कभी कोई औरत – पत्नी या माता – किसी जर्मन सैनिक या किसी रूसी पुलिसवाले को मना लेती और अपने बन्दी पति या बेटे के पास कुछ खाना या कपड़ा पहुँचा जाया करती। किन्तु क्रास्नोदोन में शुल्गा के कोई सम्बन्धी न थे। ल्यूतिकोव और बूढ़े कोन्द्रातोविच के अलावा उसका दूसरा कोई भी मित्र यह न जानता कि उसे खुफ़िया कामों के लिए क्रास्नोदोन में छोड़ दिया गया है और उस अँधेरी कोठरी में घुट-घुटकर ज़िन्दा रहनेवाला येव्दोकीम ओस्तप्चूक और कोई नहीं, वस्तुतः शुल्गा ही है। शुल्गा समझता था कि उस पर जो कुछ गुज़री है, उसकी लयूतिकोव को कोई जानकारी नहीं होगी और अगर उसे कुछ सुराग़ मिल भी गया, तो उससे सम्पर्क स्थापित करना ल्यूतिकोव के लिए असम्भव होगा। अतएव ल्यूतिकोव से उसने किसी सहायता की कोई आशा नहीं की।

उसका सम्बन्ध तो सिर्फ़ अपने अत्याचारियों – जर्मन सशस्त्र पुलिस भर से था। इनमें से सिर्फ़ दो व्यक्ति रूसी बोलते थे – जर्मन दुभाषिया, जो अपने छोटे, काले-से सिर पर कज़्ज़ाक टोपी लगाता था और पुलिस चीफ़ सोलिकोव्स्की, जो घुड़सवारीवाली पुराने फ़ैशन की चौड़ी बिरजिस पहनता था। बिरजिस पर दोनों तरफ़ नीचे तक पीली धारियाँ पड़ी रहती थीं। उसकी मुट्ठियाँ घोड़े के खुरों की तरह कठोर

थीं। वह किसी भी जर्मन सशस्त्र पुलिस के सिपाही से बदतर था और इन जर्मन सैनिकों से बदतर हो कौन सकता था?

अपनी गिरफ़्तारी के क्षण से ही शुल्गा ने यह छिपाने की कोई कोशिश न की थी कि वह पार्टी का सदस्य है, कम्युनिस्ट है, क्योंकि इस बात से उसे अपने ज़ालिमों से मोर्चा लेने में अतिरिक्त बल मिलता था। हाँ, उसने यह ज़रूर कहा था कि वह महज एक साधारण कम्युनिस्ट है। यद्यपि उस पर जुल्म करनेवाले मूर्ख थे, फिर भी उसकी चाल-ढाल और व्यवहार से यह तो देख ही सकते थे कि यह सब झूठ है। वे चाहते थे कि वह अपने साथियों के नाम बता दे और इसीलिए उसे मार नहीं सकते थे। हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूक्नेर अथवा उसका सहायक वाह्टमिस्टर बाल्डेर प्रतिदिन इस आशा में उससे दो बार सवाल-जवाब करते कि शायद उसके ज़रिये क्रास्नोदोन कम्युनिस्ट संगठन का ही कुछ पता चल जाये और उन्हें मुख्य प्रादेशिक फ़ेल्दकमाण्डाण्टुर, मेजर-जनरल क्लेर के सराहना-शब्दों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाये।

वे शुल्गा से सवाल-जवाब करते और जब उनका संयम समाप्त हो जाता तो उस पर पिल पड़ते। उनके आदेशों से प्रायः मोटा, गंजा नानकमीशण्ड अफ़सर, एस. एस. रोटेनफ़्यूरर फ़ेनबोंग, ही उसे मारा-पीटा करता। इस अफ़सर के सोने के दाँत थे, ज़नानी आवाज़ थी। वह सींग के बने हल्के फ़्रेमवाला चश्मा लगाता था। उसके शरीर से इतनी दुर्गन्ध निकलती थी कि जब वह बहुत पास आ जाता, तो स्वयं वाह् टमिस्टर बाल्डेर और हाप्तवाह् टमिस्टर ब्रूक्नेर तक अपनी नाकें सिकोड़ लेते और उस पर घृणापूर्ण कटूक्तियाँ करने लगते। शुल्गा को रस्सियों से बाँध दिया जाता था, ऊपर से कुछ लोग उसे कसकर पकड़े रहते और एन. सी. ओ. फ़ेनबोंग कसाइयों की तरह, बिना किसी भावना या उत्तेजना के, विधिपूर्वक उसे पीटने लगता। यही उसका पेशा था, यही उसका रोज़मर्रा का काम। जब शुल्गा से सवाल-जवाब न किये जाते और वह कोठरी में अकेला होता, तो फ़ेनबोंग उसके नज़दीक तक न जाता था, क्योंकि जब वह बँधा न होता और सिपाही उसे पकड़े न होते, तो वह उससे डरता था। फिर एक बात और थी – उस समय वह ड्यूटी पर भी न होता और वह जेल के आँगन में बने घर में अपना ख़ाली समय व्यतीत किया करता। यह स्थान ख़ास तौर से उसके तथा उसके सैनिक के लिए निर्दिष्ट किया गया था।

शुल्गा पर न जाने कितने समय तक और कैसे-कैसे जुल्म किये गये। इन सब के बावजूद उसके रुख में कोई तबदीली न हुई। वह हमेशा की ही तरह अगम्य, हठी और बेक़ाबू बना रहता, सभी को परेशान और क्रुद्ध किया करता।

बाह्यतः शुल्गा की ज़िन्दगी का ढर्रा निराश, नीरस और निर्मम ढंग पर चलता जा रहा था, फिर भी उसका मस्तिष्क उत्तरोत्तर सक्रिय होता जा रहा था और उसके

विचारों में गहनता आ रही थी। जैसा कि उन महान तथा ईमानदार लोगों के साथ होता है, जिनका अन्तःकरण मृत्यु को सामने देखकर भी निष्कलंक बना रहता है, उसने भी अपने आपको और समूचे जीवन को पूर्णतः स्पष्ट रूप से और असाधारण सच्चाई के साथ देखा।

उसने अपने मनोबल से अपने मस्तिष्क से बीवी-बच्चों के सारे ख़याल निकाल दिये, ताकि वे विचार उसे निर्बल न बना दें। और परिणामतः वह जवानी के दोस्तों को और भी सहृदयता और प्रेम से याद करने लगा था। उसके ये दोस्त थे लीज़ा रिबालोवा और कोन्द्रातोविच, जो यहीं नगर ही में, उसके बिलकुल नज़दीक रह रहे थे। उसे यह जानकर दुख हुआ कि स्वयं उसकी मौत भी उनसे छिपी रहेगी – उसकी मौत, जो उनके समक्ष उसे निर्दोष सिद्ध करने के लिए काफ़ी थी। हाँ, उसने यह अच्छी तरह जान लिया था कि वह इस कालकोठरी में क्यों आया। उसे यह जानकर दुख हो रहा था कि वह अब अपनी भूल ठीक नहीं कर सकता, कि वह लोगों को यह नहीं समझा सकता कि उसने कहां भूल की थी। बेशक यदि वह समझा सकता, तो स्वयं उसका मस्तिष्क शान्त हो जाता और दूसरे उसकी जैसी भूल करने से बचे रहते।

एक दिन सुबह के सवाल-जवाब के बाद, कोठरी में आराम करते समय उसे कुछ आवाज़ें सुनायी दीं। दरवाज़ा फटाक से खुला और कोठरी में एक व्यक्ति ने प्रवेश किया। उसकी बाँह पर पुलिसवाली पट्टी बँधी थी। उसकी पेटी से एक भारी रिवाल्वर-केस लटक रहा था, जिससे एक पीला डोरा बँधा था। मुछैल जर्मन सशस्त्र सिपाही गलियारे में दरवाज़े पर खड़ा रहा।

शुल्गा अँधेरे का अभ्यस्त हो चुका था। उसने तुरन्त ही उस पुलिसवाले को एक ही नज़र में अच्छी तरह देख लिया। वह जवान था, वस्तुतः छोकरों जैसा। उसके बाल सियाह रंग के थे और वर्दी काली। वह पहले शुल्गा को ठीक तरह न देख सका। वह घबरा-सा गया था, फिर भी सुसंगत लगने की कोशिश कर रहा था। उसकी चंचल आँखें कोठरी का चक्कर लगा रही थीं और वह स्वयं एड़ियों के बल खड़ा इधर-उधर लुढ़क-सा रहा था।

"तो ये रहे तुम! जंगली जानवर के पिंजरे में। हम दरवाज़ा बन्द करेंगे, फिर देखेंगे तुम्हें कैसा लगता है। अन्दर चलो!" मुछैल सिपाही ने जर्मन में कहा और जवान सिपाही को अन्दर कर, दरवाज़ा बन्द करते हुए, ठहाका मारकर हँस पड़ा।

शुल्गा अँधेरे फ़र्श से कुछ ऊपर उठा और सिपाही जल्दी-से उस पर झुक गया। उसकी काली-काली, पैनी आँखें शुल्गा की आँखों को भेदती-सी लग रही थीं।

"तुम्हारे दोस्त अवसर की प्रतीक्षा में हैं," वह फुसफुसाया, "अगले हफ़्ते किसी दिन रात को... मैं तुम्हें इशारा कर दूँगा।"

तभी एक ही क्षण में वह फिर उठ खड़ा हुआ और अपने चेहरे पर अशिष्टता का भाव लाते हुए अस्थिर आवाज़ में चीख़ने लगा :

"तुम मुझे नहीं डरा सकते! इस तरह के आदमी के साथ भी, अरे, दुष्ट जर्मनों!"

फिर जोर से हँसते हुए जर्मन 'सिपाही' ने कोठरी का दरवाज़ा खोला और बड़ी प्रसन्नता से चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा :

"अब सन्तोष हो गया तुम्हें?" उसका दुबला-पतला शरीर शुल्गा के बदन से लड़खड़ा रहा था। "तुम खुशकिस्मत हो। मैं ईमानदार आदमी हूँ और तुम्हें नहीं जानता... अरे तुम!" उसने सहसा चिल्लाकर अपनी पतली बाँहें झुलाते हुए शुल्गा को उसके कन्धे पर हल्का-सा धक्का दिया और एक क्षण के लिए उस पर अपनी उंगलियाँ दबाये रहा। और उसी हल्के दबाव में शुल्गा को फिर जैसे मित्रता के स्पर्श का अनुभव हुआ।

'सिपाही' कोठरी से निकल गया, दरवाज़ा फिर फटाक से बन्द हुआ, चाभी फिर ताले में घूम गयी।

बेशक यह उसे भड़काने का एक उपाय हो सकता था। किन्तु इसकी उन्हें क्या ज़रूरत थी, जब वह उन्हीं के हाथों में था और वे उसे इच्छानुसार किसी भी समय मौत के घाट उतार सकते थे। शायद यह इस आशा में की गयी कोशिश थी कि यदि उचित परिस्थितियाँ मिलें, तो शायद शुल्गा इस पुलिसवाले के सामने अपने मन की बात वैसे ही कह डालेगा, जैसे अपने किसी दोस्त के समक्ष कह सकता है। पर क्या सचमुच वे यह समझ सकते थे कि मैं इतना भोला और नासमझ हूँ?

शुल्गा के हृदय में आशा का संचार हुआ और उसके अत्याचारपीड़ित, योद्धा शरीर में ख़ून और तेज़ी से दौरा करने लगा। तो इसके माने यह थे कि फ़िलीप्प पेत्रोविच ज़िन्दा था, सक्रिय था। इसके माने थे कि शुल्गा को वे लोग भूले न थे। इसके विपरीत कोई बात उसे सूझ ही कैसे सकती थी?...

उसके हृदय में मित्रों के प्रति आभार की भावना, इसलिए कि उन्हें उसकी चिन्ता थी; अपने परिवार को बचा पाने की आशा, शारीरिक यातना और हर समय सोच में डूबे रहने की असह्य घुटन से मुक्ति मिलने की सम्भावना पर प्रसन्नता – ये सब भावनाएँ उसके दिमाग़ में एक साथ ही उठ रही थीं और उसे जीवन के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देने लगी थीं। उसे बराबर यह ख़याल आ रहा था कि वह अब भी जीवित रह सकता है, अब भी अपना कर्तव्य पूरा कर सकता है और इसीलिए इस विशालकाय, अधेड़ उम्र के आदमी की आँखों में, जो सारा समय अपने अन्तःकरण की ही आवाज़ सुनता रहता था, खुशी के आँसू झलकने लगे थे।

लकड़ी के दरवाज़े और दीवारों के पीछे से उसे रात-दिन सुनायी देता रहता कि

जेल में क्या कुछ हो रहा है। लोग लाये-ले जाये जा रहे हैं, उनपर अत्याचार हो रहे हैं, जेल के अहाते के पीछे उन पर गोली चलायी जा रही है – ये सब बातें वह सुनता था। एक रात उसे कोठरियों और गलियारों में शोर-गुल, बातचीत, पैरों की आहटें और जर्मन तथा रूसी पुलिसवालों की चिल्ल-पों सुनायी दी और वह जग पड़ा। उसे बन्दूक़ों की खटर-पटर, स्त्रियों और बच्चों का रोना-धोना सुनायी दिया। उसे लगा कि लोगों को जेल से बाहर ले जाया जा रहा है। फिर इंजनों की गड़गड़ाहट सुनायी दी – लारियाँ एक के बाद एक जेल का अहाता छोड़कर जा रही थीं।

जब शुल्गा को दिन की पूछताछ के लिए निकाला गया, तो उसे लगा जैसे सारी जेल ख़ाली हो गयी है।

अगली रात, पहली बार उसकी नींद में बाधा नहीं पड़ी। उसने एक लारी को फाटक तक आते हुए सुना। फिर उसे जर्मन सैनिकों और सिपाहियों की बड़बड़ाहट सुनायी दी थी। वे जल्दी-जल्दी – मानो उन्हें अपने कामों पर शर्म आ रही थी – क़ैदियों को कोठरियों में ले गये। वह भारी-भारी पैरों को गलियारे में घिसटते हुए सुन रहा था। सारी रात क़ैदी लाये जाते रहे।

सुबह होने के बहुत पहले शुल्गा को फिर पूछताछ के लिए ले जाया गया। किन्तु चूँकि उसे बाँधा नहीं गया था, अतएव उसने सोचा मुझे नहीं पीटा जायेगा। और सचमुच उसे उस कोठरी में भी नहीं ले गये, जो ख़ास तौर से यातनाएँ देने के लिए बनायी गयी थी और जो मकान के उसी हिस्से में थी, जहाँ दूसरी कोठरियाँ थीं। उसे सीधे मिस्टर ब्रूक्नेर के दफ़्तर में ले जाया गया। ब्रूक्नेर केवल क़मीज़ में था। अन्दर बेहद गर्मी होने के कारण उसने अपना फ़ौजी कोट एक आराम कुर्सी पर टाँग दिया था। वाह् टमिस्टर बाल्डेर अपनी पूरी वर्दी में और दुभाषिया शूर्का रैबन्द तथा चूहे के रंगवाली वर्दियाँ पहले तीन अन्य सैनिक भी वहीं खड़े थे।

फिर दरवाज़े के दूसरी ओर एक भारी-सी पदचाप सुनायी दी। दरवाज़ा खुला और पुरानी कज़्ज़ाक टोपी पहने पुलिस चीफ़ सोलिकोव्स्की कमरे में आया। आते समय दरवाज़े के चौखटे से बचने के लिए उसे काफ़ी झुकना भी पड़ा। उसके पीछे शुल्गा ने अपने ज़ालिम फ़ेनबोंग और कई एस. एस. लोगों को देखा, जो एक लम्बे-से अधनंगे बुर्ज़ुग व्यक्ति को पकड़े हुए थे। उस आदमी का चेहरा भरा हुआ था और वह नंगे पाव था। उसके हाथ पीठ पीछे बँधे थे। मत्वेई कोस्तियोयेविच ने पेत्रोव को पहचान लिया। वह १९१८ के गृहयुद्ध में एक पुराना छापेमार और उसी का एक उक्राइनी साथी था, जिसे शुल्गा ने पिछले पन्द्रह वर्षों से नहीं देखा था। न जाने कितने समय से पेत्रोव नंगे पैरों नहीं चला और इसीलिए उसके पैर घायल हो गये थे। उसे फ़र्श पर भी चलने में दर्द हो रहा था। उसके भरे हुए चेहरे पर जगह-जगह नीलें पड़ी

थीं। जब से शुल्गा ने उसे आख़िरी बार देखा था, तब से उसमें ख़ास परिवर्तन नहीं आया था, हाँ, उसके कन्धे चौड़े हो गये थे और उसका वज़न बढ़ गया था। उसका चेहरा उदास था। किन्तु, उसकी चाल-ढाल में एक शान थी, एक आनबान थी।

"तुम इसे पहचानते हो?" मिस्टर ब्रूक्नेर ने पूछा।

शूर्का रैबन्द ने प्रश्न का अनुवाद किया।

पेत्रोव और शुल्गा दोनों ऐसे बन गये, मानो एक दूसरे को पहली बार देख रहे हों। सारी पूछताछ के दौरान उनका यही रुख़ बना रहा। पेत्रोव उदास खड़ा था और मिस्टर ब्रूक्नेर उस पर चीख़ रहा था – "तू झूठ बोलता है, बदमाश बुड्ढे!" उसने अपने पालिश किये हुए बूटों से फ़र्श पर इतने ज़ोर से ठोकर मारी कि उसका सारा भारी पेट हिल उठा।

फिर सोलिकोव्स्की पेत्रोव पर अपने बड़े-बड़े घूँसों की बौछार करने लगा और तब तक करता रहा, जब तक कि वह बेदम होकर फ़र्श पर गिर न पड़ा। शुल्गा सोलिकोव्स्की पर झपटने ही वाला था कि एक आन्तरिक आवाज़ ने उसे इस बात के लिए आगाह-सा किया कि इससे पेत्रोव के लिए मुसीबत भर खड़ी हो सकेगी। साथ ही उसे लगा जैसे अब समय आ गया है, जब हाथों को खुले रहना चाहिए। अतः उसने अपने पर क़ाबू किया और फड़कते हुए नथुनों से पेत्रोव को ज़मीन पर रौंदा जाता देखता रहा।

फिर वे दोनों को ही वहाँ से ले गये।

यद्यपि इस अवसर पर शुल्गा की पिटाई नहीं हुई, फिर भी जो कुछ उसने देखा था, उससे इतना तड़प गया था कि एक ही दिन में इस दूसरी बार की पूछताछ के बाद जैसे उसके शक्तिशाली शरीर ने जवाब-सा दे दिया था। उसे याद ही न रहा कि कब उसे पहरे में उसकी कोठरी में लाया गया। वह पूरी तरह चेतनाशून्य हो गया था।

उसे होश तब आया, जब दरवाज़े में चाभी की खट्ट हुई। उसने दरवाज़े पर कुछ चिल्ल-पों सुनीं, किन्तु वह स्वयं उठने में असमर्थ था। तभी उसे लगा कि दरवाज़ा खुला और किसी को कोठरी में डाल दिया गया। उसने बड़ी कठिनाई से आँखें खोलीं। उसके ऊपर झुका हुआ एक आदमी खड़ा था, जिसकी भौंहें घनी और काली थीं। उसकी दाढ़ी काली और जिप्सियों जैसी थी। वह शुल्गा के चेहरे का अध्ययन कर रहा था। बाहर के उजाले से अँधेरे में आने के कारण वह शुल्गा के चेहरे की रूपरेखा नहीं देख पा रहा था। या तो उसकी आँखें अँधेरे की अभ्यस्त नहीं हुई थीं या फिर शुल्गा की सूरत-शक्ल पहले जैसी न रह गयी थी। किन्तु शुल्गा ने उसे तुरन्त पहचान लिया – वह उसका उक्राइनी साथी वाल्को था, जो 1918 के गृहयुद्ध में लड़ा था और बाद में खान 1 (बी) का डाइरेक्टर रहा।

"अन्द्रेई," शुल्गा धीरे-से बोला।

"मत्वेई? यह भी भाग्य का खेल है!" वाल्को ने फ़र्श पर से कुछ उठे शुल्गा को जल्दी-से सीने से लगा लिया।

"हमने तुम्हें छुड़ाने की पूरी कोशिश की, किन्तु मुझे यहीं तुम्हारे साथ रहना बदा था..." वह रुका और अपनी तीखी और फटी आवाज़ में बोला, "आओ, ज़रा देखूँ तो तुम्हें – दुष्टों ने तुम्हारे साथ कितना अत्याचार किया है!" उसने शुल्गा को छोड़ दिया और कोठरी में टहलने लगा।

लग रहा था मानो वाल्को का प्राकृतिक जिप्सी स्वभाव फिर से उग्र हो उठा है। उसके लिए वह कोठरी इतनी छोटी थी कि सचमुच वह पिंजरे में बन्द शेर की तरह लग रहा था।

"तो उन्होंने तुम्हें भी यहीं ला पटका," शुल्गा ने शान्ति से कहा और घुटनों को बाँहों में दबाकर बैठ गया।

वाल्को के कपड़े धूल में सन गये थे। जैकेट की एक आस्तीन आधी फट गयी थी। पतलून का एक पाँचवाँ घुटने पर और दूसरा सीवन पर फट गया था। उसके माथे पर भी चोट आ गयी थी। किन्तु वह अब भी अपने बूट पहने था।

"लगता है तुमने मोर्चा लिया है? वही मैंने भी किया था," शुल्गा बोला और उस पर बीती की कल्पना करते हुए जैसे उसकी आवाज़ में सन्तोष की अनुभूति झलक उठी। "कोई बात नहीं। चिन्ता मत करो। बैठो और बाहर की दुनिया के हालचाल सुनाओ!"

वाल्को फ़र्श पर शुल्गा के सामने उकडूँ बैठ गया और जब उसका हाथ लसलसे फ़र्श पर पड़ा, तो जैसे चौंककर पीछे हट गया।

"हैसियतदार आदमी... इस सब का आदी नहीं होता!" वह बोला और अपने ही ऊपर हँस पड़ा, "कहने के लिए है ही क्या? हमारा काम क़ायदे से चल रहा है। सिर्फ़ मैं..."

सहसा इस हट्टे-कट्टे आदमी की सूरत पर मानसिक वेदना इतनी प्रखर हो उठी कि शुल्गा का सारा शरीर कांप उठा। और वाल्को ने निराशाग्रस्त होकर अपना चेहरा दोनों हाथों से ढाँप लिया।

अध्याय 33

जिस दिन वाल्को ने ल्यूतिकोव से सम्पर्क स्थापित किया था, उसी दिन तोड़-फोड़ की सारी कार्रवाइयों का नियंत्रण करनेवाले समस्त गुप्त सूत्र, और सारे विनाशक कार्य

उसी के हाथों में सौंप दिये गये थे, क्योंकि वही आदमी 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की खानों से सबसे अधिक परिचित था।

इंजीनियर बराकोव की पहुँच हमेशा ही प्रधान प्रशासन तक और वस्तुतः श्वैदे और ख़ास तौर से उसके डिप्टी फ़ेल्द्नेर तक थी। फ़ेल्द्नेर, अपने कम बोलनेवाले अफ़सर श्वैदे के स्वभाव के विपरीत, बहुत बातूनी था। इस प्रकार बराकोव प्रशासन की सभी आर्थिक योजनाओं से परिचित रहता था। वाल्को इसी बराकोव के ज़रिए इन सभी बातों को जान लेता था।

इधर बराकोव और फ़ेल्द्नेर के बीच कार्य सम्बन्धी कोई औपचारिक बैठक होती और उधर कुछ घण्टों बाद सहसा, क्रास्नोदोन की सड़कों पर एक विनम्र और शान्त लड़की दिखायी पड़ने लगती। इस लड़की का चेहरा चमकदार काँसे जैसा और नाक-नक़्शा कुछ भौंडा-सा था। इस लड़की और उक्त बैठक में कोई सम्बन्ध था, इसका पता लाख सिर खपाने पर भी चलाना असम्भव था।

यह साधारण लड़की, ओल्गा इवान्त्सोवा कभी किसी मकान पर टमाटर बेचती, तो कभी सिर्फ़ मुलाक़ात के लिए किसी दूसरे मकान का दरवाज़ा खटखटा आती। और कुछ ही समय बाद जर्मन प्रशासन की सारी रंगीन योजनाएँ बड़े विचित्र ढंग से चूर-चूर हो जाया करतीं।

ओल्गा इवान्त्सोवा वाल्को की सन्देशवाहिका का काम करती थी।

बराकोव को फ़ेल्द्नेर से सिर्फ़ आर्थिक कार्यों के सम्बन्ध में ही जानकारी न होती, उसे और बहुत-सी बातें भी मालूम हो जाया करतीं। स्थानीय सशस्त्र पुलिस के अधिकारी लेफ़्टिनेण्ट श्वैदे के मकान में रात-दिन पीने में मस्त रहते और आपस में बड़ी लापरवाही से बातें किया करते। हर फ़ेल्द्नेर भी उसी लापरवाही से सारी बातें बराकोव के सामने बक देता।

फ़िलीप्प पेत्रोविच ने कई रातें इसी सोच-विचार में बितायीं कि मत्वेई कोस्तियेविच और अन्य क़ैदियों को छुड़ाने के लिए क्या-क्या उपाय किये जायें, किन्तु बहुत समय तक वे जेल के भीतर किसी से भी सम्पर्क स्थापित न कर सकें। आख़िर इवान तुर्केनिच की सहायता से उनका यह काम बन पाया।

तुर्केनिच क्रास्नोदोन के एक सम्मानित परिवार का व्यक्ति था। ल्यूतिकोव इस परिवार से भलीभाँति परिचित था। परिवार का मुखिया वसीली इग्नात्येविच एक पुराना खान-मज़दूर था, जिसे इस समय पंगु हो जाने के कारण पेंशन मिल रही थी। उसकी पत्नी फ़ेओना इवानोव्ना का जन्म वोरोनेज प्रान्त में एक उक्राइनी परिवार में हुआ था। 1921 में, जब अकाल पड़ा था, यह परिवार दोनबास चला आया था। उस समय वान्या गोद का बालक था और फ़ेओना इवानोव्ना ने उसे गोद में लिये-लिये ही सारा

रास्ता तय किया था, उसकी एक और छोटी बेटी उसका स्कर्ट पकड़े उसके पीछे-पीछे चली थी।

मार्ग में उन्हें निर्धनता ने इतना धर दबोचा कि मील्लेरोवो के एक निःसन्तान दम्पति ने, जिन्होंने उन्हें एक रात के लिए अपने यहाँ शरण दी थी, फ़ेओना इवानोव्ना को बच्चे को उन्हीं के पास पालन पोषण के लिए छोड़ जाने के लिए मनाने की कोशिश की थी। बच्चे के माता-पिता कुछ समय तक दुविधा में पड़े रहे, फिर आपस में इसी सवाल पर झगड़े, रोये-धोये और आख़िर अपने लाड़ले को अपने ही पास रखा।

वे सोरोकिन नामक खान-ज़िले में आये और वहीं बस गये। बाद में जब वान्या स्कूल में ऊँची कक्षा में था और नाट्य मंडली में भाग लेता था, उस समय उसके माता-पिता अपने मुलाक़ातियों से प्रायः यह ज़िक्र किया करते थे कि मील्लेरोवो के एक दम्पति ने किस प्रकार उसे अपने ही पास रखना चाहा था और किस प्रकार उन्होंने उसे छोड़ने से इनकार किया था।

जब जर्मन दक्षिणी मोर्चे पर आये, तो लेफ़्टिनेण्ट तुर्केनिच को, जो कलाच-ऑन-दोन क्षेत्र में एक टैंक-मार तोपख़ाने का कमाण्डर था, आख़िरी दम तक जूझते रहने के आदेश मिल चुके थे। उसने जर्मनों के टैंक-आक्रमणों को तब तक विफल किया, जब तक कि उसके तोपख़ाने के सारे लोग बेकार नहीं हो गये और वह स्वयं घायल होकर ज़मीन पर न गिर पड़ा। दूसरी टुकड़ियों और तोपख़ानों के बचे-खुचे लोगों के साथ उसे भी क़ैद किया गया और चूँकि अपने घावों के कारण उसके लिए चलना-फिरना असम्भव हो रहा था, अतएव एक जर्मन अफ़सर ने उसपर गोली चलायी, किन्तु वह उसकी जान न ले सका। एक कज़्ज़ाक विधवा ने उसकी परिचर्या की और दो ही हफ़्तों में उसका स्वास्थ्य बहुत ठीक हो गया। फिर वह, क़मीज़ के नीचे अपने सीने पर पट्टी बाँधे घर लौट आया।

इवान तुर्केनिच ने गोर्की स्कूल के अपने दो पुराने मित्रों – अनातोली कोवल्योव और वास्या पिरोज्होक – की मार्फ़त जेल के साथ सम्पर्क स्थापित किया।

इन दोनों की शारीरिक आकृति और प्रकृति इतनी भिन्न थी कि उनकी आपसी दोस्ती पर विश्वास होना कठिन था। कोवल्योव में आश्चर्यजनक बल था। वह स्तेपी के बलूत की तरह गठीला, धीरे-धीरे चलनेवाला और सीधा-सरल आदमी था। उसने किशोरावस्था ही में यह तय कर लिया था कि वह एक मशहूर भारोत्तोलक बनेगा, यद्यपि जिस लड़की से वह विवाह करना चाहता था, वह उसके इस निश्चय का मज़ाक़ उड़ाती थी। इस लड़की का कहना था कि खेलकूद की दुनिया में शतरंज का खिलाड़ी सब से ऊपर और भारोत्तोलक सबसे नीचे माना जाता है। सिर्फ़ अमीबा (एक

प्रकार के कीटाणु) ही भारोत्तोलकों से निम्न माने जाते हैं। उसका जीवन बड़ा नियमित था, वह कभी शराब या सिगरेट नहीं पीता और जाड़े में भी बिना टोपी या ओवरकोट के बाहर निकला करता। प्रतिदिन सुबह वह खुली हवा में बर्फ़ जैसे ठण्डे पानी से स्नान करता और वज़न उठाने का अभ्यास करता।

दूसरी ओर वास्या पिरोज्होक दुबला-पतला, फुर्तीला और तेज़ मिज़ाज था। उसकी आँखें काली थीं। उसे लड़कियों से दोस्ती करने का शौक था और वह उनके बीच बड़ा लोकप्रिय था। वह लड़ाका-सा व्यक्ति था और यदि उसे किसी खेल से रुचि थी तो वह थी मुक्केबाजी। साहसिक कार्य करने में भी उसकी थोड़ी-बहुत दिलचस्पी थी।

तुर्केनिच ने अपनी विवाहिता बहन को, कुछ ग्रामोफ़ोन रिकार्ड लाने के लिए, पिरोज्होक के पास भेजा और वह अपने साथ वास्या को ही ले आयी। वास्या ने अपने एक दोस्त कोवल्योव को भी साथ ले आना उचित समझा।

दोनों मित्र, कोवल्योव और पिरोज्होक, तुरन्त ही पार्क के निकट एक ख़ाली मैदान में, बाँहों पर स्वास्तिक के बिल्ले लगाये, पुलिसवालों के साथ, एक जर्मन सार्जेण्ट की देख-रेख में क़वायद करते हुए दिखायी दिये। जर्मन सार्जेण्ट की वर्दी में कन्धों पर नीली-सी पट्टियाँ लगी थीं। इन्हें देख-देखकर क्रास्नोदोन के नागरिकों, ख़ास कर जवानों में रोष की एक लहर फैल गयी, जो कोवल्योव और पिरोज्होक को व्यक्तिगत रूप से जानते थे।

उनका काम नगर में सुव्यवस्था बनाये रखना था। उन्हें नगर परिषद्, प्रधान प्रशासन, ज़िला कृषि कमाण्डेंट कार्यालय, श्रम-केन्द्र और बाज़ार में अपनी ड्यूटी बजानी पड़ती और रात में नगर के भिन्न-भिन्न स्थानों में गश्त लगानी पड़ती। पुलिस का बिल्ला, जर्मन सशस्त्र सैनिकों की संगत में विश्वाससूचक चिह्न समझा जाता था। शीघ्र ही वास्या पिरोज्होक को न सिर्फ़ उस कोठरी का ही पता चला, जिसमें शुल्गा को बन्द किया गया था, बल्कि वह किसी प्रकार उसके पास तक पहुँचकर उसे यह भी बता आया था कि उसके मित्र उसे छुड़ाने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहे हैं।

उसे छुड़ाने के लिए! किन्तु इसके लिए न तो चालबाज़ी ही काम आ सकती थी न घूस ही। मत्वेई कोस्तियेविच और दूसरे क़ैदी जेल पर हमला करके ही आज़ाद किये जा सकते थे। अब इस प्रकार का कार्य ज़िला खुफ़िया संगठन की शक्ति के भीतर था। इस संगठन में अस्पताल में भर्ती हुए लाल सेना के अफ़सर भाग लेने लगे थे। ये वे लोग थे, जिनकी ज़िन्दगी सेर्गेई त्युलेनिन, उसकी बहन नादूया और नर्स लूशा के प्रयासों से बची थी।

तुर्केनिच के आ जाने से युवक-दल को एक असली लड़ाका नेता – एक

अफ़सर – मिल गया था। इस दल का संगठन ज़िला खुफ़िया समिति के साथ काम करने के लिए फ़िलीप्प पेत्रोविच ने किया था।

सैनिक कार्यवाहियों की दशा में, ज़िला खुफ़िया समिति, केन्द्रीय सैनिक हेडक्वार्टर में बदल जाया करती और ज़िला समिति के लीडरों के रूप में बराकोव और ल्यूतिकोव को क्रमशः दस्ता कमाण्डर और कमिसार बनाया जा सकता था। वे चाहते थे कि युवक उसी पद्धति पर अपने संगठन का निर्माण करें।

अगस्त के उन दिनों में बराकोव और ल्यूतिकोव जेल पर हमला बोल देने के लिए एक सशस्त्र दल का संगठन करने में व्यस्त थे। इवान तुर्केनिच और ओलेग को उनसे इस आशय के निर्देश प्राप्त हुए थे कि नवयुवकों के एक दल का संगठन करें और ये युवक हमले की कार्रवाइयों में भी भाग लें। इसी उद्देश्य के लिए वे ज़ेम्नुख़ोव, सेर्गेई त्युलेनिन, ल्यूबा शेव्त्सोवा और येव्गेनी स्तख़ोविच से मिले। येव्गेनी स्तख़ोविच को लड़ाई का पहले से ही तजुर्बा था।

ऊल्या अपने को सुपुर्द किये गये कार्य को पूरा करना चाहती थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि ओलेग से जल्द-से-जल्द मिलना बहुत आवश्यक था। वह अपने माता-पिता को धोखा देने की आदी न थी और घर के कामों में इतनी फँसी रहती थी कि वह विक्टर और अनातोली से बातचीत करने के दूसरे दिन उसके पास जा पायी। और वह गयी भी शाम को। जब वह पहुँची, तो ओलेग घर पर न था।

जनरल बैरन वान वेन्त्ज़ेल और उसके कर्मचारी पूर्व की ओर जा चुके थे। मामा कोल्या ने ऊल्या के लिए दरवाज़ा खोला और उसे तत्काल पहचान लिया; किन्तु उसे लगा कि वह उससे मिलकर बहुत खुश न हुआ और न ही उससे मित्रता से पेश आया, यद्यपि उन दोनों ने साथ-साथ बहुत कुछ भोगा था और एक दूसरे से बहुत दिनों के बाद मिले थे।

नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना भी घर पर न थीं। मरीना और ओल्गा इवान्त्सोवा एक दूसरे के सामने कुर्सियों पर बैठी हुई ऊन के गोले बना रही थीं। ऊल्या भीतर आयी, मरीना गोला नीचे फेंक खुशी से चिल्लाती हुई उसकी ओर लपकी और उसे गले से लगा लिया।

"ऊल्या, कहाँ रही इतने दिनों तक! इन जर्मनों का सत्यानाश हो जाये!" वह खुशी से चीख़ पड़ी। उसकी आँखों में आँसू भर आये। "देखों न मैं बच्चे के लिए एक छोटा-सा सूट बनाने के लिए अपनी बुनी हुई जैकेट उधेड़ रही हूँ। मैंने सोचा कि वे जैकेट ज़रूर छीन लेंगे, पर बच्चे के कपड़े शायद न उतारें।"

फिर जल्दी-जल्दी बोलती हुई वह साथ-साथ की गयी अपनी यात्रा, नाव-पुल के पास हुई बच्चों की हत्या, अनाथालय की मैट्रन की मौत और इस बात के बारे में भी

कहती गयी कि जर्मन सैनिकों ने किस प्रकार उनके रेशमी कपड़े चुरा लिये थे।

ओल्गा अपनी मज़बूत बाँहों में फैला ऊन पकड़े रही। उसके बाज़ू धूप की तपन से कारण सँवला गये थे। वह चुपचाप बैठी हुई अपलक सामने की ओर देखे जा रही थी। उसके चेहरे पर एक रहस्यपूर्ण भाव झलक रहा था। ऊल्या को लगा जैसे वह बड़ी चिन्तित है।

ऊल्या ने उन्हें अपने आने का उद्देश्य बताना ज़रूरी नहीं समझा। उसने उन्हें सिर्फ़ यही समाचार दिया कि विक्टर के पिता को गिरफ़्तार कर लिया गया है। ओल्गा ने बिना अपनी स्थिति बदले मामा कोल्या पर एक सरसरी-सी नज़र डाली और उसी तरह मामा कोल्या ने भी उसकी ओर देखा। सहसा ऊल्या समझ गयी कि मामा कोल्या का आशय अमैत्रीपूर्ण व्यवहार करने से न था, किन्तु उसे किसी ऐसी चीज़ की आशंका होने लगी थी, जिसका ऊल्या को कोई ज्ञान न था। और उसे भी किसी अस्पष्ट आशंका की अनुभूति ने धर दबाया।

ओल्गा बोली कि उसे पार्क के पास अपनी बहन से मिलना है और मिल चुकने के तुरन्त ही बाद वे दोनों साथ-साथ लौट आयेंगी। उसके चेहरे पर अब भी वही रहस्यपूर्ण भाव तथा संकुचित-सी मुस्कान थी। यह बात जैसे उसने किसी ख़ास व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए नहीं कही थी। अपनी बात पूरी करते ही वह घर से चल दी।

अपने इर्द-गिर्द क्या हो रहा है, इसे जैसे भूलकर मरीना बराबर बातचीत करती रही।

कुछ ही समय बाद ओल्गा नीना के साथ लौट आयी।

"किसी ने अभी-अभी एक जगह तुम्हारा ज़िक्र किया था, जहाँ काफ़ी लोग जमा थे। तुम आना चाहोगी। मैं तुम्हारा परिचय करा दूँगी?" नीना ने ऊल्या से कहा। उसके मुँह पर कोई मुस्कान न थी।

फिर बिना एक भी शब्द बोले हुए वह ऊल्या को कई सड़कों और अहातों से निकालकर कहीं नगर के केन्द्र में ले गयी। उसने एक बार भी ऊल्या पर नज़र न डाली। उसकी चौड़ी खुली हुई और भूरी आँखों में क्रोध झलक रहा था।

"नीना, क्या बात है?" ऊल्या ने धीरे-से पूछा।

"शायद वे ही लोग तुम्हें एक मिनट में बता देंगे। मैं कुछ नहीं कह सकती।"

"जानती हो, विक्टर पेत्रोव के पिता को गिरफ़्तार कर लिया गया है," ऊल्या फिर बोली।

"सच? यह तो होना ही था," हाथ झटकार विषय को टालती हुई-सी नीना बोली।

दोनों नगर के उसी भाग में, अन्य मकानों की तरह के ही एक मकान में घुस गयीं। ऊल्या पहले यहाँ कभी नहीं आयी थी।

लकड़ी के एक चौड़े पलंग पर एक बूढ़ा तकिये लगाये पड़ा था। उसका सिर तकियों में इतना घुस गया था कि उसका ऊँचा माथा, मोटी नाक और घनी सुनहरी बरौनियाँ ही दिखायी दे रही थीं। वह पूरे कपड़े पहने था। पलंग के पास ही दुबली-पतली, बुज़ुर्ग और उभरी हड्डियोंवाली एक औरत भी एक कुर्सी पर बैठी हुई कुछ सी रही थी। दो सुन्दर युवा स्त्रियाँ खिड़की के पास पड़ी एक बेंच पर निठल्ली बैठी थीं। उनके नंगे पैर बड़े-बड़े थे। उन्होंने ऊल्या पर कुतूहल भरी दृष्टि डाली।

ऊल्या ने उनका स्वागत किया और नीना उसे तुरन्त बग़ल के कमरे में ले गयी।

बड़े कमरे में कुछेक युवक और एक लड़की एक मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे थे। मेज़ पर खाने-पीने का सामान, कुछ गिलास और वोद्का की बोतलें रखी थीं। ऊल्या ने ओलेग, वान्या ज़ेम्नुखोव और येव्गेनी स्तख़ोविच को पहचान लिया। स्तख़ोविच को वह युद्ध के पहले के दिनों से ही जानती थी, जब उसने पेर्वोमाइका के नवयुवकों के सामने भाषण दिया था। दो युवक उसके लिए बिलकुल अजनबी थे। वहाँ बैठी हुई लड़की ल्यूबा शेव्त्सोवा – 'अभिनेत्री-ल्यूबा – थी, जिसे ऊल्या ने उस स्मरणीय दिवस पर अपने मकान के फाटक पर देखा था। ल्यूबा से हुई उस भेंट की परिस्थितियाँ उसके मस्तिष्क में अब भी इतनी ताज़ी थीं कि ऊल्या उसे यहाँ बैठी देखकर चौंक पड़ी। किन्तु एक ही क्षण में उसने सभी कुछ समझ लिया और उस दिन के ल्यूबा के व्यवहार का कारण भी उसे स्पष्ट हो गया।

ऊल्या को अन्दर ले जाने के बाद नीना खुद कमरे से चली गयी।

ओलेग ऊल्या से मिलने के लिए उठा, कुछ लजाया-सा और उसे कुर्सी देने के लिए इधर-उधर देखने लगा। फिर वह खुलकर मुस्कुराया। इससे ऊल्या को कुछ सान्त्वना मिली। वस्तुतः ओलेग उसे उस रहस्यपूर्ण तथा भयप्रद समाचार के लिए तैयार कर रहा था, जो ऊल्या को सुनना था...

जिस रात को विक्टर का पिता गिरफ़्तार हुआ था, उसी रात को नगर और ज़िले का हर वह पार्टी मेम्बर भी गिरफ़्तार कर लिया गया था, जो निकल न सका था। इसके अतिरिक्त सोवियत शासकीय कर्मचारी, किसी न किसी सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेनेवाले व्यक्ति, ढेरों अध्यापक और इंजीनियर, प्रमुख खान-मज़दूर और नगर में छिपे हुए सेना के कुछ घायल आदमी भी गिरफ़्तार किये गये थे।

यह भयावह ख़बर नगर में सुबह से ही फैलने लगी थी। जर्मनों के इस कृत्य से खुफ़िया संगठन को कितनी क्षति पहुँची है, इसे सिर्फ़ फ़िलीप्प पेत्रोविच और

बराकोव ही जानते थे। गिरफ़्तारियाँ किसी भी लापरवाही के कारण नहीं हुई थीं। यह तो जर्मनों ने अपनी सुरक्षार्थ पूर्वोपायों के रूप में की थीं। ऐसे भी बहुत लोग पुलिस के जाल में फँस गये थे, जिन्होंने जेल के पहरेदारों पर किये जानेवाले हमले में भाग लेने का निश्चय कर लिया था।

ओल्गा और नीना इवान्त्सोवा दौड़ती हुई ओलेग के घर आयी थीं। और उनके दुबले-पतले और धूपतप्त चेहरों की परेशानी ओलेग के चेहरे पर भी झलकने लगी थी। उन्होंने बताया कि इवान कोन्द्रातोविच के कथनानुसार चाचा अन्द्रेई को रात में गिरफ़्तार किया गया था।

वाल्को के छिपने की जगह का पता सिर्फ़ कोन्द्रातोविच को मालूम था। उसकी भी सहसा तलाशी ली गयी। बाद में पता चला कि वे वाल्को की तलाश में नहीं, किन्तु मकान-मालकिन के पति की तलाश में आये थे, जो नगर से निकल गया था। किन्तु इग्नात फ़ोमीन ने, जो छोटे शंघाई मुहल्ले में तलाशी कर रहा था, वाल्को को तुरन्त पहचान लिया। मकान-मालकिन के कथनानुसार वाल्को उस सयम तक शान्त बना रहा, जब तक फ़ोमीन ने उसके मुँह पर तमाचा न जड़ दिया। इस पर वाल्को को तैश आ गया और उसने फ़ोमीन को ज़मीन पर पटक दिया। इसके बाद जर्मन सशस्त्र सिपाहियों ने उसे बेबस कर दिया।

ओलेग और नीना ओल्गा को ओलेग के परिवार के पास छोड़कर जल्दी-जल्दी तुर्केनिच के पास पहुँचे। किसी न किसी तरह या तो वास्या पिरोज्होक से सम्पर्क स्थापित करना था या कोवल्योव से। तुर्केनिच ने अपनी बहन को उनके घर भेजा, किन्तु वह जो ख़बर लेकर लौटी, वह बड़ी रहस्यपूर्ण और आशंकाजनक थी। पिरोज्होक और कोवल्योव के माता-पिता का कथन था कि दोनों पिछले दिन शाम को ही घर से निकल गये थे। उनके जाने के कुछ ही देर बाद, उनके साथ काम करनेवाला पुलिसमैन फ़ोमीन आया और उसने उनका पता-ठिकाना जानना चाहा। उनके न मिलने से फ़ोमीन ने बड़ी रुखाई और बदतमीज़ी का बरताव किया और रात में लौटकर बार-बार यही कहता रहा कि “इसके लिए उन्हें सज़ा भुगतनी पड़ेगी”।

आख़िर कोवल्योव और वास्या भोर होने से पहले शराब के नशे में धुत्त घर पहुँचे। यह बात बड़ी आश्चर्यजनक थी, क्योंकि कोवल्योव को भी पीने की आदत न रही थी। उन्होंने अपने माता-पिता से कहा कि वे रात भर एक शराबखाने में पीते रहे थे। उनके माँ-बाप ने उन्हें फ़ोमीन की धमकियों के बारे में बताया, लेकिन उसकी चिन्ता न कर वे पलंग पर पड़े रहे। सुबह पुलिसमैन आये और उनको गिरफ़्तार कर ले गये।

नीना की मार्फ़त ओलेग ने वे सारी बातें पोलीना गओर्गियेव्ना सोकोलोवा को

बता दीं, ताकि वह शीघ्र-से-शीघ्र उन्हें फ़िलीप्प पेत्रोविच को बता दे। फिर ओलेग और नीना ने सेर्गेई त्युलेनिन, ल्यूबा, वान्या ज़ेम्नुखोव और स्तख़ोविच से विचार-विमर्श किया। अब यह बैठक तुर्केनिच के मकान में हो रही थी।

जिस समय ऊल्या ने प्रवेश किया, उस समय स्तख़ोविच और वान्या ज़ेम्नुखोव के बीच वाद-विवाद चल रहा था, जिसमें ऊल्या ने भी तत्काल भाग लेना शुरू कर दिया।

"इन सब में कौन-सा तर्क है, यह बात मेरी समझ में नहीं आती," स्तख़ोविच बोला, "हम लोग ओस्तप्चूक को आज़ाद कराने की तैयारी कर रहे थे, हमने हथियार इकट्ठा किये थे, लोगों को संगठित किया था, और तभी, जब चाचा अन्द्रेई की गिरफ़्तारी से, सारी बातें और भी आवश्यक हो जाती हैं, तो हमसे कहा जाता है कि हम प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें..."

नवयुवकों के बीच स्तख़ोविच का बहुत सम्मान था। परेशान होकर, वान्या ने अपनी गहरी, फटी आवाज़ मे पूछा :

"फिर तुम्हारा क्या सुझाव है?"

"मेरा सुझाव है कि हम अधिक से अधिक कल रात तक जेल पर हमला बोल दें। यदि बातें करने के बजाय हमने आज सुबह से ही काम करना शुरू किया होता, तो आज रात को हमने हमला कर दिया होता," स्तख़ोविच बोला।

वह अपनी बात को और भी स्पष्ट करता रहा। ऊल्या ने देखा कि जब युद्ध से पहले पेर्वोमाइका कोमसोमोल की बैठक में स्तख़ोविच ने भाषण किया था, तब से वह बहुत अधिक बदल गया है। उस समय भी उसने 'तर्क', 'निष्पक्ष दृष्टि से', और 'विश्लेषण' जैसे किताबी शब्दो का प्रयोग किया था, किन्तु तब उसे अपने पर इतना विश्वास न था। इस सयम वह बिना हाथ हिलाये, शान्ति के साथ बातचीत कर रहा था। उसके लम्बे-लम्बे हाथों की मुट्ठियाँ मेज़ पर जमी थीं, सँवरे सुनहरे बाल पीछे की ओर काढ़े हुए थे और सिर कन्धों के बीच सीधा जमा था।

यह स्पष्ट था उसके सुझाव ने उन्हें चौंका दिया था और कोई भी उसका तत्काल उत्तर देने को तैयार न लग रहा था।

"तुम हमारी भावनाओं को उकसा रहे हो," कुछ शर्माते हुए परन्तु दृढ़ आवाज़ में वान्या ने कहा, "इस लुकाछिपी के खेल से कोई फ़ायदा नहीं। हमने इस विषय पर कभी बहस नहीं की, लेकिन मुझे यक़ीन है कि तुम यह अच्छी तरह जानते हो – जैसा कि हममें से और लोग भी जानते हैं – कि हम इस प्रकार के गम्भीर काम के लिए अपनी ओर से तो लोगों को तैयार नहीं कर रहे हैं, इसीलिए जब तक हमें इस विषय के निर्देश ऊपर से न मिलें, तब तक हमें उँगली उठाने तक का अधिकार

नहीं है। इस प्रकार हो सकता है कि हम लोगों को आज़ाद कराने के बजाय इस जुए में अपने और आदमी गँवा बैठेंगे। आख़िर हम नन्हे-मुन्ने बच्चे तो हैं नहीं," सहसा उसने क्रोध से इतना और कह डाला।

"मैं नहीं जानता, शायद मुझ पर विश्वास नहीं किया जाता और मुझे सारी बातें नहीं बतायी जातीं," घमण्ड से अपने ओंठ भींचता हुआ स्तख़ोविच बोला, "अभी तक मुझे एक भी स्पष्ट सैनिक निर्देश नहीं मिला। हम बस प्रतीक्षा करते हैं, प्रतीक्षा करेंगे, जब तक कि वे क़ैदियों को मार न डालें। और क्या मालूम वे अभी तक मौत के घाट उतार डाले गये हो," उसने तीखी़ आवाज़ में कहा।

"वहाँ के लोगों के बारे में हम भी उतने ही दुखी हैं, जितने कि तुम," वान्या ने सक्रोध कहा, "लेकिन तुम सचमुच यह यक़ीन के साथ नहीं कह सकते कि अकेली हमारी ही ताक़त काफ़ी होगी।"

"क्या पेर्वोमाइका में मज़बूत और निष्ठावान लोग हैं?" स्तख़ोविच ने सहसा ऊल्या से प्रश्न किया और अपने चेहरे पर बडप्पन का भाव लाते हुए सीधे उसकी आँखों में देखने लगा।

"हैं, ज़रूर हैं," ऊल्या बोली।

फिर बिना कुछ कहे-सुने स्तख़ोविच एकटक वान्या की ओर देखने लगा।

ओलेग अपनी कुर्सी पर बैठा था। उसका सिर कन्धों के बीच धँसा था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें गम्भीरतापूर्वक कभी स्तख़ोविच पर जा टिकतीं और कभी वान्या पर। फिर विचारों में डूबकर उसने ठीक अपने सामने ताका। लगा मानो उसने अपनी आँखों पर एक परदा डाल दिया हो।

सेर्गेई आँखें नीची किये चुपचाप बैठा था। तुर्केनिच ने स्वयं तो बहस में भाग नहीं लिया, किन्तु उसकी आँखें बराबर स्तख़ोविच का अध्ययन करती रहीं।

ल्यूबा उठी और ऊल्या के पास आकर बैठ गयी।

"तुम मुझे पहचानती हो," वह फुसफुसायी, "मेरे पिता की याद है तुम्हें?"

"हाँ, वह सब कुछ मेरी निगाहों के सामने हुआ था," कुछ ही शब्दों में ऊल्या ने फुसफुसाते उसे ग्रिगोरी इल्यीच की मौत का सारा ब्यौरा सुना दिया।

"ओफ़, अब हमें कितना बर्दाश्त करना पड़ रहा है।" ल्यूबा बोली, "जानती हो, मैं इन फ़ासिस्टों और उनकी पुलिस से इतनी घृणा करती हूँ कि जी चाहता है कि अपने हाथों ही उन्हें मार डालूँ," वह बोली और एक निष्कपट और वहशियाना भाव उसकी आँखों में झलक उठा।

"हाँ... हाँ..." ऊल्या ने धीरे-से कहा, "कभी-कभी बदले की यह भावना मेरे अन्दर ऐसी उठती है कि मुझे स्वयं अपने से ही भय लगने लगता है। मुझे डर लगने

लगता है कि मैं स्वयं कहीं कोई काम जल्दबाजी में न कर बैठूँ।"

"तुम स्तख़ोविच को पसन्द करती हो?" ल्यूबा ने उसके कान में फुसफुसाया।

ऊल्या ने अपने कन्धे बिचका दिये।

"वह अपने को बहुत कुछ समझने लगा है, पर बात पते की कहता है! काम करने के लिए लोग तो बहुत हैं," ल्यूबा बोली। उसके मस्तिष्क में सेर्गेई लेवाशेव घूम रहा था।

"यहाँ बात लोगों की नहीं है। बात यह है कि हमारा नेतृत्व कौन करेगा?" ऊल्या ने फुसफुसाते हुए उत्तर दिया।

लगा मानो ये शब्द ओलेग ने सुन लिये हों। उसी समय वह बोल उठा।

"हमारे यहाँ लोगों की क... कोई कमी नहीं। हिम्मती आदमी हमेशा म... मिल सकते हैं; पर यह सब कुछ संगठन पर निर्भर है।" उसने झनझनाती हुई, तेज़ आवाज़ में कहा और सभी उसकी ओर मुड़ गये। वह पहले से भी अधिक हकला रहा था, "हम सचमुच संगठन के रूप में नहीं हैं। नहीं हैं न? हम तो यहाँ आकर ब... बातचीत भर कर लेते हैं।" वह सरल ढंग से कहता रहा, "तुम सब तो जानते ही हो कि हमारे ऊपर पार्टी है। हम लोग पार्टी के निर्देश के बिना अपने आप कोई काम कैसे कर सकते हैं। ऐसा भी कभी हुआ है कि हम पार्टी को दरगुज़र कर दें?"

"यह बात तुम्हें हमसे पहले ही कहनी थी। अब तो लगता है जैसे मैं पार्टी के ख़िलाफ़ हूँ," स्तख़ोविच ने कहा। उसके मुँह पर रोष और परेशानी का मिश्रित भाव आ गया। "अभी तक हमारा काम तुमसे और वान्या तुर्केनिच से ही पड़ा था, पार्टी से नहीं। कम-से-कम हमें तुम यह तो बता ही सकते हो कि तुमने हमें यहाँ एक साथ बुलाया क्यों?"

तुर्केनिच इतनी शान्त आवाज़ में बोला कि सभी की आँखें उसी की ओर घूम गयीं, "इसलिए कि पूरी तैयारी रहे। तुम्हें कैसे मालूम है कि वे हमें आज ही रात को नहीं बुलायेंगे?" उसने पूछा और सीधे स्तख़ोविच की दिशा में देखने लगा।

स्तख़ोविच को कोई जवाब नहीं सूझा।

"यह है पहला कारण," तुर्केनिच कहता गया, "दूसरा कारण यह है कि हम नहीं जानते कि कोवल्योव और पिरोज्होक का हुआ क्या। जब तक हमें उनके बारे में सब कुछ पता नहीं चल जाता, तब तक हम कुछ नहीं कर सकते। मैं उनमें से किसी के भी विरुद्ध एक शब्द भी कहने की आज्ञा खुद अपने को भी नहीं दे सकता। पर, यदि वे मुसीबत में पड़ गये हों, तो क्या होगा? जब क़ैदियों से हमारा कोई सम्पर्क नहीं, तो हम कोई कार्रवाई कर भी कैसे सकते हैं?"

"मैं खुद यह काम करने का ज़िम्मा लेता हूँ," ओलेग ने जल्दी से कहा, "शायद

उनके अपने आदमी उनके पास खाना वग़ैरह ले जाया करते हैं। किसी को कोई सन्देश भिजवाना सम्भव हो सकता है... रोटी में रखकर या किसी बरतन में। मैं यह काम माँ के जरिए करा लूँगा।"

"माँ के ज़रिए!" स्तख़ोविच फुफकार उठा।

ओलेग के चेहरे पर लाली दौड़ गयी।

"शायद तुम जर्मनों को नहीं जानते," स्तख़ोविच ने उपेक्षापूर्वक कहा।

"अपने को जर्मनों के अनुकूल बनाने की कोई ज़रूरत नहीं – तुम्हें तो उन्हें इस बात के लिए मजबूर करना है कि वे अपने को हमारे अनुकूल ढालें," ओलेग मुश्किल से अपने ऊपर क़ाबू पा रहा था। उसने इस बात की कोशिश की कि उसकी निगाह स्तख़ोविच पर न पड़े। "त... तुम्हारा क्या ख़याल है, सेर्गेई?"

"मैं समझता हूँ हमला कर देना ही ठीक होगा," सेर्गेई ने कुछ घबराकर कहा।

"तो यही सही... ऐसा करने के लिए हम आदमियों को जुटा लेंगे। तुम चिन्ता न करो।"

स्तख़ोविच की बाछें खिल गयीं। उसे समर्थन जो मिल गया था।

"और मैं कहता हूँ कि हमारे पास न संगठन है, न अनुशासन," ओलेग बोला और खड़ा हो गया। उसका चेहरा लाल हो रहा था।

उसी समय नीना ने दरवाज़ा खोला और वास्या पिरोज्होक कमरे में चला आया। उसके खून से सने चेहरे पर चोटों के दाग़ थे। उसके एक हाथ पर पट्टी बँधी थी। उसकी सूरत इतनी दर्दनाक और अजीब लग रही थी कि सभी उपस्थित लोग सहसा अपनी-अपनी कुर्सी से उचक पड़े मानो उसकी ओर लपकने को तैयार हों।

"यह गति कहाँ हुई तुम्हारी?" तुर्केनिच ने मौन भंग किया।

"थाने में!" वास्या दरवाज़े पर खड़ा रहा। उसकी छोटी-छोटी काली आँखों में परेशानी और व्यथा झलक रही थी।

"और कोवल्योव कहां है? तुमने हमारे किसी आदमी को वहाँ देखा?" वे सब मिलकर बोल उठे।

"हमने किसी को भी नहीं देखा। वे हमें पुलिस चीफ़ के दफ़्तर में ले गये और मारा पीटा," पिरोज्होक बोला।

"अब भोले बच्चों का-सा स्वांग नहीं रचो। हमें सारी बात खोलकर बताओ," तुर्केनिच ने संयत किन्तु क्रुद्ध स्वर में कहा। "कोवल्योव कहाँ है?"

"घर पर... अपने ज़ख़्म सहला रहा है। बताने को है ही क्या?" सहसा पिरोज्होक चिड़चिड़ा उठा। "सोलिकोव्स्की ने हमें, गिरफ़्तारियों के पहले, दिन के समय बुला भेजा और हमसे कहा कि हम उसी दिन शाम को अपने-अपने हथियार

लेकर उसके दफ़्तर में आ जायें। उसने बताया कि हमें किसी को गिरफ़्तार करना है, किन्तु किसे, यह उसने हमें नहीं बताया। बस उसी दिन उसने हमें पहली बार कोई काम सुपुर्द किया था। बेशक हम यह नहीं जानते थे कि हमारे अलावा दूसरे लोग भी होंगे या वहाँ बड़े पैमाने पर गिरफ़्तारियों होने की थीं। हम घर गये और सोचने लगे – 'हम जाकर अपने ही किसी आदमी को कैसे गिरफ़्तार कर सकते हैं? हम कभी भी अपने को साफ़ नहीं कर सकेंगे।' इसीलिए मैंने तोल्या से कहा, 'चलो सिन्यूख़ा के शराबखाने में चलें और नशे में धुत्त हो जायें और वहाँ जायें ही नहीं – बाद में कह देंगे, हम बहुत पी गये थे!' हम बराबर यही सोचते रहे कि आख़िर वे हमारा करेंगे क्या। हम पर उन्हें कोई शक तो था नहीं, इसी लिए ज्यादा-से-ज्यादा वे हमें मारकर निकाल सकते थे। और यही उन्होंने किया भी – कई घण्टों तक हमें बन्द रखा, हमसे सवाल-जवाब किये, हमें ज़मीन पर पटका और लातें मारकर बाहर निकाल दिया," हताश होकर उसने कहा।

यद्यपि स्थिति बड़ी गम्भीर थी, फिर भी पिरोज्होक की सूरत इतनी दयनीय और हास्यास्पद लगी, उसका व्यवहार, उसकी बोल-चाल तथा चेहरे का भाव बेवक़ूफ़ स्कूली लड़कों जैसा था, जिसे देखकर सभी के चेहरों पर एक बेचैन मुस्कुराहट दौड़ गयी।

"और यहाँ हमारे कुछ साथी समझते हैं कि वे सशस्त्र जर्मन स... सैनिकों पर हमला कर सकते हैं!" ओलेग हकलाया और उसकी आँखों में क्रोध उमड़ आया।

उसे इस विचार पर शर्म आ रही थी कि ल्यूतिकोव द्वारा युवकों को सौंपे गये पहले ही गम्भीर कार्य में संगठन एवं अनुशासन के अभाव तथा बचपने का प्रदर्शन किया गया। उसे स्तख़ोविच के अहंकार और अहम्मन्यता के कारण उस पर क्रोध आ रहा था, फिर भी उसे लग रहा था कि स्तख़ोविच को अपने सैनिक कार्यों के अनुभव के कारण काम की व्यवस्था से असन्तुष्ट रहने का पूरा अधिकार है। ओलेग को लगा कि सारी विफलता का कारण उसकी अपनी कमज़ोरी, उसका अपना दोष था। वह अपनी इतनी अधिक नैतिक भर्त्सना कर रहा था कि उसे स्तख़ोविच से अधिक अपने से घृणा होने लगी।

अध्याय 34

इधर युवक, तुर्केनिच के मकान पर विचार-विनिमय में लगे थे, उधर अन्द्रेई वाल्को और मत्वेई शुल्गा, उसी दफ़्तर में, जहाँ कुछ दिन पहले शुल्गा को पेत्रोव के सामने पेश किया गया था, मिस्टर ब्रूक्नेर और उसके डिप्टी बाल्डेर के सामने खड़े थे।

दोनों अब जवान नहीं रह गये थे। वे नाटे क़द के थे, उनके कन्धे चौड़े थे और

वे किसी चरागाह के बीचोंबीच दो जुड़वाँ बलूत-वृक्षों की भाँति खड़े थे। वाल्को कुछ पतला था। उसकी त्वचा अधिक बादामी और चेहरा अधिक गम्भीर था। और मिली-जुली भौंहों के नीचे उसकी आँखों के ढेलों में क्रोध की चिनगारियाँ झलक रही थीं। शुल्गा के चेहरे पर कोयले के दाग़ पड़ गये थे। उसका नाक-नक़्शा सुघड़, पुरुषोचित और भारी था। परन्तु इसके बावजूद उसकी चाल-ढाल में स्थिरता और धैर्य था।

इतनी अधिक संख्या में गिरफ़्तारियाँ हुई थीं कि बहुत दिनों से मिस्टर ब्रूक्नेर, वाह् टमिस्टर बाल्डेर और पुलिस चीफ़ सोलिकोव्स्की, इन तीनों के दफ़्तरों में साथ-साथ क़ैदियों से जिरह चल रही थी। फिर भी वाल्को और शुल्गा को एक बार भी नहीं बुलाया गया। जब शुल्गा कोठरी में अकेला रहता, तो उस समय उसे जो खाना मिलता था, उसकी तुलना में अब खाना भी अच्छा मिलने लगा था। शुल्गा और वाल्को को हर रोज़ अपनी कोठरी के पास से कोसने और कराहने की आवाज़े, पैरों की आहट, हथियारों की झनझनाहट, गलियारे से घसीटे जाते हुए लोगों की हिचकियाँ, धातु के बरतनों और बाल्टियों की खनखनाहट और फ़र्श पर खून साफ़ करते समय होनेवाली पानी की छपाक सुनायी देती। कभी-कभी किसी दूर की कोठरी से किसी बच्चे के रोने-धोने की आवाज़ भी कानों में पड़ जाती थी।

जब उन्हें जिरह के लिए ले जाया गया, तो उनके हाथ नहीं बाँधे गये; इससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि उन्हें चालबाज़ी और नरमी से घूस देने और छलने का प्रयत्न किया जायेगा। किन्तु ये क़ैदी व्तकदनदह 'नयी व्यवस्था' का उल्लंघन न करें, इसके लिए दुभाषिये के अलावा, ब्रूक्नेर ने चार सशस्त्र सिपाही और बुला लिये थे। वाल्को और शुल्गा को फ़ेनबोंग ही अन्दर लाया था और वह स्वयं क़ैदियों के पीछे रिवाल्वर हाथ में लिये सावधान खड़ा था।

कार्रवाई शुरू हुई। पहले वाल्को से पूछा गया कि वह कौन है। उसने अपना असली नाम बता दिया। नगर में उसे बहुत लोग जानते थे। स्वयं शूर्का रैबन्द तक उसे जानता था और जब वह ब्रूक्नेर के सवालों का अनुवाद कर रहा था, उस समय वाल्को शूर्का की काली-काली आँखों में भय और एक प्रकार से सजीव तथा व्यक्तिगत उत्सुकता के भाव देख रहा था।

ब्रूक्नेर ने वाल्को से पूछा :

"तुम इस आदमी को जानते हो, जो तुम्हारे साथ खड़ा है। कौन है यह?"

वाल्को के ओंठों पर एक हल्की-सी मुस्कुराहट फैल गयी।

"मेरी उसकी मुलाक़ात कोठरी में हुई थी," वह बोला।

"यह है कौन?"

"अपने मालिक से कहो कि वह बुद्धुओं की तरह व्यवहार न करे," वाल्को ने रुक्षता से शूर्का रैबन्द से कहा, "वह अच्छी तरह जानता है कि मैं सिर्फ़ उतना ही जानता हूँ जितना इस सज्जन ने मुझे स्वयं बताया है!"

मिस्टर ब्रूक्नेर चुप हो गया। उसकी उल्लू जैसी गोल आँखों से स्पष्ट पता चलता था कि उसके सामने खड़े हुए आदमी के हाथ-पैर बाँधे बिना और उसे मारे-पीटे बिना पूछताछ कैसे की जा सकती है, इसका भी उसे पता न था। इससे मिस्टर ब्रूक्नेर का चेहरा और भी लटक आया था।

"अगर यह चाहता है कि उसकी हैसियत के अनुसार उसके साथ व्यवहार किया जाये, तो इसे कहो कि उन लोगों के नाम बता दे, जो तोड़-फोड़ के काम करने के लिए उसके साथ पीछे रह गये थे," वह बोला।

रैबन्द ने अनुवाद कर दिया।

"मैं उन्हें नहीं जानता। फिर मैं नहीं समझता कि कोई रह भी गया है। मैं यहाँ दोनेत्स से वापस आया था और यहाँ से निकल नहीं सका।

कोई भी इस बात की पुष्टि कर सकता है," अपनी चमकती आँखें पहले रैबन्द पर और फिर ब्रूक्नेर पर गड़ाते हुए वाल्को ने कहा।

जिस जगह ब्रूक्नेर के चेहरे पर निचला भाग गले से मिलता था, वहाँ जैसे आत्म-महत्व की मोटी-मोटी परतें दिखायी पड़ने लगी। इसी दशा में वह कुछ क्षणों तक खड़ा रहा, फिर मेज़ पर पड़े हुए एक सिगारकेस में से एक सिगार लिया और वाल्को को पेश करते हुए पूछा :

"तुम इंजीनियर हो?"

वाल्को एक अनुभवी औद्योगिक मैनेजर था। गृह-युद्ध की समाप्ति पर उसे खान-मज़दूर से पदोन्नत किया गया था। उसने तीसरी दशाब्दी में उद्योग-अकादमी से स्नातकी परीक्षा भी पास की थी। लेकिन जर्मन से ये सारी बातें कहने में कोई तुक न थी। वह ऐसा बन गया, जैसे उसने अपनी ओर बढ़ाया गया सिगार देखा ही नहीं। उसने प्रश्न के उत्तर में हामी भर दी।

"तुम्हारी शिक्षा और अनुभव का आदमी अगर चाहे तो उसे 'नयी व्यवस्था' के अधीन कोई अच्छा और आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभकर पद प्राप्त हो सकता है," ब्रूक्नेर ने कहा। खेद के कारण उसका सिर जैसे एक ओर झुक गया। वह वाल्को को देने के लिए अब भी सिगार हाथ में लिये था।

वाल्को कुछ न बोला।

"लो... सिगार पियो!" शूर्का रैबन्द फुफकारा। उसकी आँखों में भय झलक रहा था।

जैसे वाल्को ने कुछ भी न सुना हो, वह चुपचाप ब्रूक्नेर को घूरता रहा। उसकी जिप्सी आँखों में हास्य का भाव झलक रहा था।

ब्रूक्नेर का बड़ा-सा, पीला और झुर्रीदार हाथ, जिसमें वह सिगार पकड़े हुए था, कांपने लगा।

"सारा दोनेत्स कोयला क्षेत्र तथा उसकी खानें और फैक्ट्रियाँ अब कोयले की खानों और धातु के कारख़ानों को चालू करनेवाली पूर्वी कम्पनी के प्रबन्ध में आ गयी हैं," ब्रूक्नेर बोला और एक गहरी साँस ली, मानो उसे इस लम्बे नाम का उच्चारण करना कठिन लग रहा था। फिर उसका सिर और भी झुक गया और एक निश्चित गति के साथ उसने सिगार वाल्को के और भी निकट कर दिया। "कम्पनी की ओर से मैं तुम्हें स्थानीय प्रशासन के चीफ़ इंजीनियर का पद देता हूँ, उसने कहा।

जब शूर्का रैबन्द ने ये शब्द सुने, तो जैसे उसके नीचे की ज़मीन सरक गयी। उसके अनुवाद से लग रहा था, जैसे उसके गले में जलन हो रही है। उसका सिर कन्धों के बीच धँस गया।

वाल्को कुछ क्षणों तक कुछ भी कहे बिना ब्रूक्नेर की ओर देखता रहा। फिर उसकी काली आँखें सिकुड़ गयीं।

"मैं यह प्रस्ताव स्वीकार कर लूँगा," वह बोला, "मेरे लिए अगर काम करने की अच्छी परिस्थितियों की व्यवस्था की जाये।"

वाल्को ने बड़ा ज़ोर देकर अपनी आवाज़ में चापलूसी का पुट दिया। सबसे अधिक उसे इस बात से भय लग रहा था कि मिस्टर ब्रूक्नेर के इस अनपेक्षित प्रस्ताव से, जो सम्भावनाएँ सामने दिखायी पड़ने लगी हैं, उन्हें शायद शुल्गा न समझे। किन्तु शुल्गा हिला-डुला तक नहीं। वह उसकी ओर देख भी नहीं रहा था। लग रहा था जैसे उसने सब कुछ समझ लिया है।

"परिस्थितियाँ?" ब्रूक्नेर के चेहरे पर मुस्कान फैल गयी और वह और भी निर्मम लगने लगा। "बस एक ही शर्त पर – मैं तुम्हारे संगठन का पूरा ब्यौरा जानना चाहता हूँ। अब तुम मुझे ब्यौरा सब कुछ बता दो।" उसने अपनी घड़ी की ओर देखा, "अब से पन्द्रह मिनट के भीतर तुम आज़ाद कर दिये जाओगे और एक घण्टे के भीतर स्थानीय प्रशासन में अपने दफ़्तर में बैठे होगे।"

इससे वाल्को की आँखें तुरन्त खुल गयीं।

"मैं किसी संगठन के बारे में कुछ नहीं जानता। मैं यहाँ सिर्फ़ संयोग से आ गया हूँ," उसने सामान्य स्वर में कहा।

"बदमाश!" ब्रूक्नेर सहसा ग़ुस्से में आकर चिल्ला उठा, मानो इस बात की पुष्टि कर रहा हो कि वाल्को ने उसे कितना ठीक समझा था। "इस संगठन के तुम भी एक

चीफ़ हो! हम एक-एक बात जानते हैं!" और जैसे उसका आत्मनियंत्रण सहसा लुप्त हो गया। उसने सिगार चाचा अन्द्रेई के मुँह में ठूंस दिया। सिगार टूट गया और ब्रूक्नेर की बदबूदार उँगलियाँ चाचा अन्द्रेई को होंठो से टकरा गयीं।

एक ही क्षण में वाल्को की शक्तिशाली मुट्ठी उठी और मिस्टर ब्रूक्नेर की आँखों के बीचोंबीच तड़ से बैठ गयी। मिस्टर ब्रूक्नेर कराहा, टूटा हुआ सिगार उसके हाथ से नीचे गिरा और वह धड़ाम से चारों खाने चित्त फ़र्श पर लुढ़क गया।

ब्रूक्नेर के ज़मीन चाटते ही वहाँ सन्नाटा छा गया। उसकी गोल और बढ़ी हुई तोंद उसके भारी शरीर से काफ़ी आगे निकली हुई लग रही थी। इसके बाद ब्रूक्नेर के दफ़्तर में ऐसा हो-हल्ला मचा कि देख-सुनकर भी विश्वास न होता था।

सारी कार्रवाइयों के दौरान वाह्टमिस्टर बाल्डेर चुपचाप मेज़ के पास खड़ा रहा। मोटा नाटा-सा थल-थल आदमी, नीली आँखें, जो सारा वक़्त बहती रहती थीं। अनुभवी आँखें, जो इस वक़्त उनींदी-सी, यह दृश्य देख जा रही थीं। भूरी वर्दी पहने, उसका भारी-भरकम और निष्चेष्ट शरीर साँस की गति के साथ-साथ फूल और गिर रहा था। ब्रूक्नेर को गिरते देखकर खुद उसके अपने होश-हवास गुम हो गये। अचानक खून उसके चेहरे की ओर दौड़ने लगा और वह काँप उठा।

"उसे पकड़ लो!" उसने चिल्लाकर कहा।

फ़ेनबोंग और उसके सिपाही वाल्को की ओर झपटे। हालाँकि वह वाल्को के सबसे निकट खड़ा था, फिर भी वह उसके पास तक न पहुँच सका, क्योंकि पलक मारते, मत्वेई कोस्तियोविच ने उसे एक ही घूँसे में एक दूर के कोने में फेंक दिया था। और फटी आवाज़ में अनोखे शब्द चिल्ला-चिल्लाकर उसने भड़के हुए बैल की तरह अपना भारी सिर नीचा किया और सिपाहियों पर टूट पड़ा।

"शाबाश, मत्वेई," वाल्को, सिपाहियों के बीच से निकल जाने और मोटे बाल्डेर की ओर बढ़ने का प्रयास करते हुए सोत्साह चीख़ पड़ा। बाल्डेर का चेहरा लाल पड़ गया था। उसके छोटे-छोटे मोटे नीलगूं हाथ उसके सामने फैले थे और वह चिल्ला रहा था :

"इन पर गोली मत चलाना! इन्हें पकड़ो! भाड़ में जायें ये सब।"

मत्वेई कोस्तियोविच असाधारण शक्ति से अपनी मुट्ठियाँ, पैर और सिर फेंकता हुआ सभी दिशाओं में जर्मनों को खदेड़ रहा था। वाल्को बाल्डेर पर झपटा, जो बड़ी फुर्ती से उसके पास से हटकर मेज़ के पीछे भाग गया था। फ़ेनबोंग ने फिर अपने चीफ़ की मदद करने का प्रयास किया, किन्तु वाल्को ने दाँत पीसते हुए उसके एक लात मारी। और जर्मन भरभरा कर ज़मीन चाटने लगा।

"बहुत अच्छे! अन्द्रेई! बहुत अच्छे!" मत्वेई कोस्तियोविच सन्तोष के साथ चीखा

और बैल की तरह हिलता-डुलता सैनिकों को खदेड़ता रहा। "खिड़की में से कूदो, जल्दी करो!"

"वहाँ तार लगे हैं! तुम मेरे पीछे आओ!"

शुल्गा ने दहाड़ते हुए फिर वही अनोखे शब्द दुहराये, ज़ोर का झटका दिया, सिपाहियों के बीच में से निकलकर वाल्को के पास आया, फिर ब्रूक्नेर की कुर्सी अपने सिर के ऊपर उठा ली। सिपाही, जो उसपर हमला करने जा रहे थे, पीछे हट गये। वाल्को की काली आँखों में वहशियाना उन्माद झलकने लगा। वह मेज़ की सभी चीज़ों पर झपटा, क़लमदान, पेपर-वेट, धातु के बने ग्लास-होल्डर आदि उठा-उठाकर अपनी पूरी ताक़त से दुश्मन पर फेंकने लगा। बाल्डेर तो फ़र्श पर लेट गया और अपनी घुटी हुई चाँद, अपने मोटे-मोटे हाथों से ढक ली। और शूर्का रैबन्द दीवार के साथ सरकता, डर के मारे कराहता हुआ सोफ़े के नीचे घुस गया।

जिस समय वाल्को और शुल्गा पहले-पहल इस लड़ाई में कूद पड़े थे, उस समय उन पर स्वतंत्रता की वह अन्तिम, मृतप्राय अनुभूति हावी हो रही थी, जो मज़बूत और साहसी लोगों में उस समय जन्म लेती है, जब वे यह समझ लेते हैं कि इस दुनिया में उनके दिल गिने-चुने ही रह गये हैं। और इस विचार से उनकी ताक़त दसगुना बढ़ गयी थी। लड़ते समय सहसा उन्हें यह ख़याल आया कि दुश्मन अब इस स्थिति में नहीं है कि उन्हें मौत के घाट उतार सके, क्योंकि उन्हें ऐसा करने के कोई आदेश अपने चीफ़ से नहीं मिले थे। इस विचार ने उनमें पूर्ण स्वतंत्रता और अपनी जीत की भावना इतनी कूट-कूटकर भर दी थी कि वे प्रायः अजेय हो रहे थे। वे बेहद खुश थे कि जर्मन उन्हें सजा नहीं दे सकते।

वे कन्धे से कन्धा मिलाये तथा पीठ दीवार की ओर किये खड़े थे। मुँह पर जगह-जगह से खून निकल रहा था। क्रोध से उनकी सूरत इतनी भयानक लगने लगी थी कि किसी को भी उनके पास तक आने का साहस न हो रहा था।

ब्रूक्नेर होश मे आया और उसने उन पर अपने सैनिक छोड़ने का प्रयत्न किया। शूर्का रैबन्द लड़ाई का फ़ायदा उठाते हुए सोफ़े से निकला और दरवाज़े की ओर बढ़ा। कुछ ही क्षणों बाद और सैनिक भी दफ़्तर में घुस गये। उन्होंने उन दोनों निर्भय योद्धाओं पर हमला बोल दिया और हाथों, पैरों, बूटों और घुटनों से उनकी मरम्मत करने लगे। दोनों बेहोश होकर गिर पड़े। फिर भी बड़ी देर तक सिपाही उन्हें पीटते रहे।

चारों ओर अँधेरा। भोर से पहले का शान्त क्षण। नया चाँद डूब चुका था, किन्तु सुबह का चमचमाता हुआ सितारा अभी भी किलमिला रहा था। यह वह क्षण होता है, जब प्रकृति स्वयं मानो श्रम-श्लथ हो जाने पर आँखें मूँदकर ऊँघने लगती है और

मनुष्य निद्रा देवी के पालने में झूलने लगता है। और जेलों में थके हुए उत्पीड़क और उत्पीड़ित दोनों ही नींद में खो जाते हैं।

भोर के पहले की इस शान्त घड़ी में, सबसे पहले जगनेवालों में से था मत्वेई शुल्गा। वह अँधेरे फ़र्श पर लुढ़का-पुढ़का और उठ बैठा। उसी समय अन्द्रेई वाल्को के मुँह से एक हल्की-सी कराह निकल गयी, जो आह जैसी सर्द थी। वाल्को जाग पड़ा। वे पास-पास बैठे और अपने सूजे हुए और खून से लथपथ चेहरे एक दूसरे के क़रीब ले आये।

अँधेरी कोठरी में नाम मात्र को भी प्रकाश न छनकर आने के बावजूद वे एक दूसरे को देख सकते थे। एक दूसरे की दृष्टि में वे शक्तिशाली योद्धा और वीर प्रतीत हो रहे थे।

"मत्वेई, तुम कितने हिम्मती कज़्ज़ाक हो! भगवान तुम्हें और शक्ति दे," वाल्को ने भारी आवाज़ में कहा। फिर सहसा उसने हाथ पीछे किये, उन पर शरीर साधा और ठहाका मारकर हँस पड़ा, मानो दोनों उन्मुक्त हों, आज़ाद हों!

"और अन्द्रेई, तुम भी साहसी मुक्केबाज़ सिद्ध हुए, इसमें ज़रा भी शक नहीं!" और रात्रि के नीरव अन्धकार में जेल की बैरकें उनकी भयानक, योद्धाओं जैसे अट्टहास से गूँज उठी।

उन्हें सुबह कोई खाना नहीं दिया गया और दिन में उन्हें जिरह के लिए भी नहीं निकाला गया। उस दिन किसी से भी पूछ-ताछ नहीं की गयी थी। सारे जेल में नीरवता छायी हुई थी। वन्य तटों के किनारे-किनारे बहनेवाले झरने के कलकल की भाँति उनकी कोठरी की दीवार के उस ओर से उन्हें बातचीत की अस्पष्ट-सी ध्वनियाँ सुनायी पड़ रही थीं। दोपहर में उन्हें जेल के दरवाज़े पर एक कार की आवाज़ सुनायी दी। शुल्गा कोठरी की दीवारों के उस ओर से आनेवाली ध्वनियाँ पहचानने लगा था। वह जानता था कि यह वह कार थी, जिसमें ब्रूक्नेर या उसके डिप्टी या दोनों ही जेल के बाहर जाते थे।

"वे लोग हेडक्वार्टर गये हैं," शुल्गा ने गम्भीरतापूर्वक कहा। उसकी आवाज़ नीची थी।

उसने और वाल्को ने एक दूसरे की ओर देखा। किसी ने एक भी शब्द न कहा, किन्तु उनकी आँखें स्पष्ट कह रही थीं कि दोनों यह जानते थे कि उनकी आख़िरी घड़ी आ गयी है और वे उसके लिए तैयार हैं। प्रत्यक्षतः जेल का हर व्यक्ति इसके बारे में जानता था – वहाँ की पूर्ण नीरवता में इतनी गम्भीरता जो व्याप्त थी।

कई घण्टों तक वे दोनों चुपचाप बैठे रहे। शाम होने को थी।

"अन्द्रेई," शुल्गा ने नम्रता के साथ कहा, "मैं यहाँ कैसे आ फँसा, यह मैंने तुम्हें

अभी तक नहीं बताया। सुनो।"

उसने इस सबके बारे में बहुत कुछ सोचा था। इस समय वह यह सारी बातें एक ऐसे व्यक्ति को बता रहा था, जिसके साथ उसका सम्बन्ध दुनिया में सब से अधिक शुद्ध, सबसे अधिक अटूट था। उसकी कल्पना के समक्ष एक बार फिर लीज़ा रिबालोवा का निष्कपट चेहरा घूम गया। वह उसकी जवानी की संगिनी थी। उसके मुँह से पश्चात्ताप की एक पीड़ाजनक कराह निकलते-निकलते रह गयी।

उसने अपनी अनुभूतियों पर कोई ध्यान न देते हुए वाल्को को वे सारी बातें बता दीं, जो लीज़ा रिबालोवा ने उससे कही थीं। शुल्गा ने लीज़ा को दिये अपने उद्धत उत्तरों के साथ-साथ यह भी बताया कि वह बेहद चाहती थी कि वह उसका घर छोड़कर न जाये, उसने माँ की तरह उसे देखा था। फिर भी वह चला गया, और उसने अपने हृदय की आवाज़ न सुनकर झूठे सम्पर्क-पतों पर अधिक भरोसा किया।

शुल्गा यह सारी बातें कह रहा था और वाल्को का चेहरा अधिकाधिक उदास होता जा रहा था।

"काग़ज के टुकड़े!" वह बोला, "याद है, इवान फ़्योदोरोविच ने हमें क्या बताया है?... तुमने आदमी से अधिक काग़ज़ के टुकड़े पर विश्वास किया," उसकी आवाज़ में शोक की अनुभूति झलक रही थी, "हाँ, यह घटना कितनी बार हमारे साथ घटती है। हम खुद उन टुकड़ों पर कुछ घसीटते हैं और फिर यह नहीं देखते कि वे हम पर किस क़दर हावी हो जाते हैं।"

"इतना ही नहीं, अन्द्रेई," शुल्गा ने भारी आवाज़ में कहा, "मुझे अभी तुम्हें कोन्द्रातोविच के बारे में बताना है।"

और वह उसे बचपन के अपने दोस्त कोन्द्रातोविच पर सन्देह उत्पन्न होने के कारण बताने लगा। उस पर सन्देह उसे तब हुआ, जब कोन्द्रातोविच ने अपने बेटे की कहानी सुनायी और उसे यह पता चला कि कोन्द्रातोविच ने यह बात उस समय नहीं बतायी, जब वह अपना मकान खुफ़िया संगठन के काम के लिए देने का वादा कर रहा था।

मत्वेई कोस्तियेविच को यह सारी बातें फिर याद हो आने लगीं। यह देखकर वह व्याकुल हो उठा था कि एक साधारण-सी घटना ने, जो साधारण लोगों के जीवन में प्रायः घटा करती है, कोन्द्रातोविच को उसकी निगाहों में घृणित ठहराया था और इग्नात फ़ोमीन जैसे आदमी ने, जो उसके लिए बिलकुल अपरिचित था, तथा जिसका आचरण भी कई बातों में बहुत अरुचिकर रहा था, उस पर गहरा और अनुकूल प्रभाव डाला था।

वाल्को को ये सारी बातें स्वयं कोन्द्रातोविच से ही मालूम हो चुकी थी। इसीलिए

वह और भी उदास हो रहा था।

"बाहरी सूरत-शक्ल!" उसने फटी आवाज़ में कहना शुरू किया, "बाहरी सूरत-शक्ल से जाँच करने की आदत। हममें से बहुत-से लोग यह देखते रहने की आदी हो गये हैं कि लोग हमारे बाप-दादाओं की तुलना में आज कही अच्छे ढंग से रह रहे हैं ओर इस लिए हम चाहते हैं कि हर व्यक्ति एक ख़ास साँचे में ढला हुआ दिखायी पड़े – यानी सभी साफ़-सुथरे हों, स्वच्छ हों। बेचारा कोन्द्रातोविच वैसा आदमी न निकला और इसीलिए वह तुम्हें तुच्छ और घृणित लगा। और वह फ़ोमीन – उसका सत्यानाश हो – उसी ढांचे में ढला निकला। वह रात से भी अधिक काला था, किन्तु देखने में वह साफ़-सुथरा था, ढंग से कपड़े पहनता था और इसी लिए उसकी कालिख हमें नज़र नहीं आयी। हमने खुद यही कोशिशें कीं कि वह उजला नज़र आये, उसे तरक़्क़ी दी, उसकी सराहना की, उसे उस ढांचे में फ़िट किया और बाद में हमीं बेवक़ूफ़ बन गये... और अब हमें इस बेवक़ूफ़ी की क़ीमत अपनी ज़िन्दगी देकर अदा करनी होगी!"

"यह बात ठीक है, अन्द्रेई, बिलकुल ठीक," मत्वेई कोस्तियेविच ने कहा और बातचीत का विषय गम्भीर होने के बावजूद उसकी आँखों में चमक दौड़ गयी। "मैं यहाँ कितने दिनों, कितनी रातों तक बैठा-बैठा बराबर इन्हीं सब विचारों में खोया रहा हूँ। अन्द्रेई! मैं एक साधारण आदमी हूँ और मुझे इस ज़िन्दगी में किन-किन रास्तों से होकर गुज़रना पड़ा है, उन सबका बखान करना मेरे लिए उचित नहीं है! पर अब, जब मैं अपनी गुज़री ज़िन्दगी पर नज़र डालता हूँ, मुझे पता चलता है कि मैंने कहीं तो भूल की थी। मैं देखता हूँ कि ग़लती मैंने सिर्फ़ आज ही नहीं की थी। मैं कोई छियालीस वर्ष का हो चुका हूँ और पिछले बीस साल से गोया एक ही जगह पर चक्कर लगाता रहा हूँ – और एक ही ज़िले में! और ईमानदारी की बात यह है कि मैं हमेशा किसी न किसी का डिप्टी रहा हूँ। पहले हम उयेज्द* के कर्मचारी कहलाते थे, उसके बाद ज़िले के कर्मचारी कहलाने लगे," शुल्गा ने मुस्कुराते हुए कहा, "मेरे इर्द-गिर्द कितने ही नये-नये लोग तरक़्क़ी कर गये, पर मेरी रफ़्तार एक ही जैसी रही – वही बैल-गाड़ी, वही एक ढर्रा! मैं उसका आदी हो गया! मैं खुद नहीं जानता यह कब शुरू हुआ, पर मैं उसका आदी हो गया। और इस पुराने ढर्रे के आदी होने के माने हैं – पिछड़े रहना।"

उसकी आवाज़ टूट गयी। वह बहुत द्रवित हो उठा था। उसने अपने बड़े-बड़े हाथों से सिर थाम लिया।

---

* उयेज्द – क्रान्तिपूर्व रूस में भूमि-क्षेत्र का शासकीय नाम। सं.

वाल्को समझ रहा था कि मृत्यु को सामने देखकर मत्वेई कोस्तियेविच अपनी आत्मा निष्कलुष कर रहा था। और उसके किये की न सफ़ाई दी जा सकती थी, न उसे झिड़कियाँ दी जा सकती थीं। वह चुपचाप उसकी बात सुनता रहा।

"दुनिया में हम सबसे ज्यादा किसे प्यार करते है?" शुल्गा कहता गया। "हमारी सोवियत जनता को, सोवियत मानव को! क्या दुनिया में हमारे आदमियों से बढ़कर भी कोई सुन्दर चीज़ हो सकती है? उन्होंने हमारे राज्य के लिए, हमारे आम ध्येय के लिए क्या-क्या नहीं किया, कितनी-कितनी मुसीबतें नहीं झेलीं। गृह-युद्ध के ज़माने में दो-दो औंस रोटी राशन में पाकर भी उनके मुँह पर शिकायत का एक लफ़्ज नहीं आया। पुनर्निर्माण के वर्षों में उन्होंने अपने लाभ की ख़ातिर सोवियत विरासत नीलाम पर चढ़ा देने के बदले चीज़ों के लिए लम्बी-लम्बी लाइनों में खड़े रहकर प्रतीक्षा करना और चिथड़े पहनना अधिक पसन्द किया। और अब, देशभक्तिपूर्ण युद्ध में वे बिना पछताये और गर्व के साथ अपने प्राण न्योछावर कर रहे हैं। वे हर मुसीबत को गले लगा रहे हैं, जी-तोड़ काम कर रहे हैं और औरतों की तो बात ही क्या, स्वयं बच्चे तक अपना अंश दान दे रहे हैं। ये हैं हमारे लोग – हमारी-तुम्हारी तरह के लोग। हम उन्हीं का एक अंग हैं। हमारे सभी सर्वोत्तम, सबसे योग्य, सबसे प्रतिभावान लोग इन्हीं, जन-साधारण का अंग हैं। तुम्हारे सामने यह कहने की कोई ज़रूरत नहीं कि मैंने ज़िन्दगी भर उनके लिए काम किया है... तुम इन बातों को भली-भाँति जानते हो, इंसान हमेशा इन कामों में फँसा रहता है – बेशक सभी काम महत्वपूर्ण और ज़रूरी हैं और इंसान इसका ध्यान नहीं देता कि ये सारी बातें अपने ही ढंग से विकसित होती हैं और लोग अपने ही ढंग से रहते-बसते हैं। ओह अन्द्रेई! लीज़ा रिबालोवा का घर छोड़ते समय मैंने वहाँ तीन लड़कों और एक लड़की को देखा – एक उसका बेटा, एक बेटी और दो, मेरा ख़याल है, उनके साथी थे... अन्द्रेई! काश तुमने उनकी आँखें देखी होतीं। वे किस तरह मुझे घूर रही थीं! एक रात मैं यहाँ अपनी कोठरी में जग पड़ा और जैसे मुझे कँपकँपी का दौरा चढ़ गया। कोमसोमोल! हाँ, निश्चय ही वे कोमसोमोल थे! मैंने उनकी उपेक्षा क्यों की? यह हुआ कैसे? क्यों? और मैं इन 'क्यों' का उत्तर जानता हूँ। कोमसोमोल कितनी ही बार मेरे पास आये हैं – 'चाचा मत्वेई, हमें फ़सल की कटाई, बोआई आन्दोलन, अपने ज़िले की विकास-योजना, सोवियतों की प्रादेशिक कांग्रेस वग़ैरह के बारे में किसी बैठक में बताओ न, कुछ तो बताओ'। और मैंने उन्हें क्या जवाब दिया – 'मैं बहुत व्यस्त हूँ! तुम कोमसोमोल हो। यह सारी व्यवस्था तुम खुद कर सकते हो'। और आख़िर जब उनसे पिण्ड छुड़ाने का कोई चारा न रहता और मैं उन्हें कुछ सुनाने को राज़ी हो जाता, तो फिर भाषण तैयार करना एक मुसीबत हो जाती – मुझे कभी प्रादेशिक कृषि विभाग के लिए रिपोर्ट लिखनी होती

थी, कभी समन्वय एवं विभाजन कमीशन की कोई मीटिंग सिर पर आ खड़ी होती, कभी जल्दी से खनिज-विभाग के डाइरेक्टर के यहाँ – भले ही एक घण्टे के लिए ही सही – भागना पड़ता, इसलिए कि या तो उसकी पचासवीं वर्षगाँठ होती, या उसके छोटे बच्चे का जन्म-दिवस होता और डाइरेक्टर को इस बात पर गर्व होता कि वह जन्म दिवस और नामकरण संस्कार दोनों ही के उपलक्ष्य में दावत दे रहा हैं, और अगर मैं वहाँ न गया, तो वह नाराज़ होगा। ऐसे में करना क्या पड़ता है – बिना तैयारी किये आप ऊपर-ऊपर की सामान्य-सी बातें उन्हें सुनाने लगते हैं, बड़े-बड़े शब्दों का उपयोग करते हैं, ऐसे-वैसे शब्दों का कि तरुणों की तो बात ही क्या, खुद आपकी ज़बान तक दुखने लगे। यह सब कितना शर्मनाक काम था," सहसा मत्वेई कोस्तियेविच ने कहा और उसका चौड़ा चेहरा लाल हो उठा। फिर उसने अपनी हथेली से मुँह ढाँप लिया। "वे आपसे यह सीखने की आशा करते हैं कि उन्हें कैसे ज़िन्दगी बसर करनी चाहिए और आप हैं कि उनसे सामान्य-सी बातें कहकर चले आते हैं! हमारे जवानों का प्रधान शिक्षक है कौन? अध्यापक! अध्यापक! इस शब्द के माने क्या हैं? मैं और तुम अपने गाँव के गिरजे के स्कूल में पढ़ा करते थे। तुमने मुझसे पाँच साल पहले स्कूल छोड़ा था, लेकिन तुम हमारे अध्यापक निकोलाई पेत्रोविच को जानते थे। वह हमारे खनिकों के गाँव में पन्द्रह साल तक पढ़ाता रहा, फिर क्षय से मर गया। मुझे आज भी याद है कि वह हमें ब्रह्माण्ड-पृथ्वी, सूर्य, तारक-मण्डल – की उत्पत्ति किस तरह समझाया करता था। शायद वह पहला ही आदमी था जिसने दुनिया देखने के लिए हमारी आँखें खोल दी थीं... अध्यापक! अध्यापक का बड़ा महत्व है! हमारे देश में जहाँ हर एक बच्चा स्कूल जाता है, उसका स्थान सर्वप्रथम है! हमारे लोगों को अपना अध्यापक सड़क पर पचास गज़ की दूरी पर भी दिखायी दे, तो उसके सम्मान में उनको अपना हैट उतारना चाहिए! पर मैं? मुझे तो इसकी याद आते ही शर्म आ जाती है कि प्रतिवर्ष जब स्कूल की मरम्मत अथवा उसे गरम रखने का सवाल आता था, तो स्कूल के डाइरेक्टर मुझे दफ़्तर के दरवाज़े पर रोकते और मुझसे प्रार्थना करते कि मैं लकड़ी, कोयले, ईंट या चूने की सप्लाई की व्यवस्था करूँ। और मैं यह बात हँसकर उड़ा देता था – यह काम मेरा नहीं। ज़िला शिक्षा विभाग को इस काम का प्रबन्ध करना चाहिए। जानते हो, अपने इस व्यवहार पर मुझे शर्म नहीं आती थी। मेरे तर्क साधारण होते थे – कोयले की योजना पूरी हो चुकी है, अनाज की पैदावार योजना से अधिक हुई है, शरत में जुताई ख़त्म हो गयी है; गोश्त और ऊन राज्य को दिये जा चुके है, प्रादेशिक समिति के सेक्रेटरी को अभिनन्दन-सन्देश भेजा जा चुका है। अब बचा ही क्या है, जिसे न करने के लिए मेरी भर्त्सना की जाये! क्या मैंने ठीक नहीं कहा? पर असली बात मुझे बहुत बाद में समझ में आयी। पर

ख़ैर अब, जब उसे समझ चुका हूँ, तो मेरे मन को कुछ चैन मिला है। मैं भी किस तरह का आदमी हूँ?" मत्वेई कोस्तियेविच के होठों पर अपराधियों जैसी, किन्तु सलज्ज और सद्भावनापूर्ण मुस्कान बिखर गयी। "मेरी नसों में अपने लोगों का ही खून बहता है। मैं उन्हीं के बीच पनपा हूँ। मैं उनका पुत्र भी हूँ और सेवक भी। 1917 ही में, जब मैंने लेओनाद रिबालोव की बात सुनी थी, तभी मैंने यह बात गाँठ-बाँध ली थी कि जनता की सेवा करने से बढ़कर सुख का साधन दुनिया में और कोई नहीं। तभी मैं कम्युनिस्ट बना था। तुम्हें हमारे उन दिनों के खुफ़िया कामों और छापामारी के जीवन की याद है? हम, निरक्षर माता-पिता की सन्तानों को जर्मन आक्रामकों और श्वेत गार्डों से मोर्चा लेने की शक्ति और साहस कहां से प्राप्त हुआ था और हमने उन्हें पैरों तले क्यों रौंद दिया था? उस समय हम सोचते थे कि उन्हें हराना सबसे कठिन काम है। उसके बाद तो सभी काम आसान होंगे। पर सब से कठिन समय अभी आना था, तुम्हें याद है – निर्धन कृषक समिति की, अतिरिक्त खाद्य-संग्रह प्रणाली की, कुलक दलों की, मख़्नो की और सहसा उत्पन्न हुई 'नयी आर्थिक नीति' की। ख़रीदना और बेचना सीखो। क्या? ख़ैर तो हमने ख़रीदना और बेचना शुरू कर दिया। हमने यह भी सीख लिया।"

"और तुम्हें याद है कि हमने खानों का जीर्णोद्धार कैसे किया था?" सहसा वाल्को ने असाधारण उत्साह से कहना शुरू किया, "जैसे ही मैं सेना से निकलकर आया कि मुझे उस पुरानी खान का डाइरेक्टर बना दिया गया, जो अब ख़ाली हो चुकी है। यह भी कितनी मुसीबत का काम था। हे भगवान! हमें प्रशासन का कोई तजुर्बा न था – विशेषज्ञ थे, जो तोड़-फोड़ में लगे थे, मशीनें थीं, जो काम नहीं कर रही थीं, बिजली थी नहीं, बैकों ने उधार देने से इनकार कर दिया था, कामगारों को पगार देने के लिए पैसे नहीं थे। और लेनिन तार पर तार भेज रहे थे – कोयला भेजो, मास्को और पेत्रोग्राद को बचा लो! ये तार मेरे लिए पवित्र प्रवचनों के समान थे! मैं अक्तूबर क्रान्ति के समय, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में लेनिन से मिला था, जैसे इस समय तुमसे मिल रहा हूँ। तब मैं सैनिक था, मोर्चे पर से सीधा चला आ रहा था। मुझे याद है कि मैंने उनके पास जाकर उनका स्पर्श किया था, क्योंकि मुझे यह विश्वास ही न हो रहा था कि वह मेरी ही तरह के हाड़-मांस के आदमी थे... हाँ, तो मैंने कोयला भेज दिया!"

"हाँ, उन दिनों ऐसी ही स्थिति हुआ करती थी" शुल्गा ने खुशी के लहज़े में कहा, "उन दिनों हम उयेज्द और ज़िले के कर्मचारी कैसी-कैसी मुसीबतों को अपनी पीठ पर लादे रहते थे! और हमारी आलोचना कैसी हुआ करती थी! जब से सोवियत शासन ने बागडोर संभाली है, तब से क्या अन्य किसी पर भी ज़िला कर्मचारियों से अधिक

लताड़ पड़ी है? उस समय और शायद आज भी सारे सोवियत कर्मचारियों में जितनी बार हम लोगों की आलोचना हुई है, उतनी बार दूसरे किसी की नहीं हुई होगी," मत्वेई कोस्तियेविच ने कहा। उसके चेहरे पर चमक आ गयी थी।

"जहाँ तक यह बात है, मैं कहूँगा कि ज़िला कर्मचारियों के बाद नम्बर आता है हमारे उद्योग-उद्यमों के मैनेजरों का!" हँसते हुए वाल्को बोला।

"हाँ, यह ठीक है!" शुल्गा ने उत्तेजनापूर्ण आवाज़ में कहा, "यद्यपि मैंने अपने को बुरा प्रमाणित किया है, फिर भी मैं अभी तक यही सोचता हूँ कि ज़िला कर्मचारी स्मारक का पात्र है। योजना... योजना... मैं कोई दूसरी बात ही न कर पाता था। ज़रा करके तो देखो यह काम! दिन-ब-दिन, साल-ब-साल, घड़ी की सूई की तरह वही काम – लाखों एकड़ ज़मीन की जुताई-बोआई करनी है, फिर अनाज की कटाई, फटकाई, उसे राज्य को देना और इन सबकी कार्य-दिवसों के रूप में गणना करना। फिर अनाज पिसाई, चुकन्दर, सूरजमुखी, ऊन, मांस के गोदाम भरना, पशुधन की वृद्धि करना, ट्रैक्टरों तथा खेती-बाड़ी की अन्य आश्चर्यजनक मशीनों की सर्विस और मरम्मत। तुम तो जानते ही हो कि हर आदमी अच्छी-से-अच्छी चीज़ें पहनना और ज्यादा-से-ज्यादा खाने की चीज़ें चाहता है। उसे अपनी चाय के लिए शक्कर भी चाहिए। अतः हमारे ज़िला कर्मचारी को, आदमी की ज़रूरतें पूरी करने के लिए, पिंजरे में बन्द गिलहरी की तरह बराबर दौड़ना, चक्कर लगाना चाहिए। कहना चाहिए जहाँ तक खाने का तथा कच्चे माल का सवाल है, देशभक्तिपूर्ण युद्ध में ज़िला कर्मचारी उसे अपनी पीठ पर ढोता रहा है..."

"और उद्योग मैनेजर?!" वाल्को ने पूछा, वह तुरन्त उत्तेजित हो उठा था और साथ ही उल्लसित भी। "यदि कोई किसी स्मारक का पात्र है तो वही है। वह अपनी पीठ पर पंचवर्षीय योजनाएँ लादे रहा है – पहली भी और दूसरी भी – और सारा देशभक्तिपूर्ण युद्ध भी! है न? औद्योगिक योजना की तुलना में तुम्हारी खेती की योजना है ही क्या? यदि उद्योग के गति प्रवाह को दृष्टिविगत कर दिया जाये, तो कृषि का गति-प्रवाह रह ही क्या जाता है? कैसी-कैसी फ़ैक्ट्रियाँ हमने निर्माण करना सीख लिया है! घड़ियों की तरह ठीक और निर्विघ्न चलती हैं! और हमारी खानें! हमारी १ (बी) की ही मिसाल ले लो। जवाहरात का डिब्बा है, डिब्बा! पूँजीपतियों को देखो! उन्हें तो हर चीज़ तैयार मिल जाती है, जबकि अपनी उन्नति की राह में हमें बराबर परेशानियाँ घेरे रहती हैं – तो काम करनेवालों की कमी, तो इमारती सामान की कमी, तो यातायात की असन्तोषजनक व्यवस्था, छोटी-बड़ी और भी हज़ार क़िस्म की मुसीबतें! फिर भी हम हर समय आगे ही बढ़ते रहते हैं। नहीं, हमारा उद्योग-मैनेजर बड़े कमाल का आदमी है।"

"हाँ, ठीक कहते हो!" शुल्गा बोला। उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी थी, "मुझे याद है, एक बार मैं मास्को में सामूहिक कृषकों की एक कांफ़्रेंस में प्रस्ताव-समिति के लिए मनोनीत किया गया था। वहाँ हम ज़िला कर्मचारियों के बारे में बहस छिड़ गयी। वहाँ एक जवान ऐनकवाला युवक था, जो बड़ी-बड़ी बातें करता था। हम उसे लाल प्रोफ़ेसर कहकर पुकारते थे। उसका कहना था कि हम लोग पिछड़े हुए हैं, हमने हेगेल की कृतियाँ भी नहीं पढ़ी हैं, फिर उसने हमारे प्रतिदिन न नहाने-धोने के बारे में भी कहा था। तो उसे कुछ इस आशय का उत्तर दिया गया था – 'अगर तुम किसी ज़िला कर्मचारी के शार्गिद बन जाओ, तो ज्यादा बुद्धिमान हो जाओगे...' हा-हा-हा!" शुल्गा खुशी से हँस पड़ा। "वे मुझे गाँवों के मामलों का विशेषज्ञ, बल्कि इससे भी कुछ अधिक समझते थे। उन्होंने मुझे, कुलकों से किसानों को छुटकारा दिलाने में किसानों की सहायता करने और सामूहिक खेतों की स्थापना करने के लिए एक के बाद एक कई गांवों में भेजा। हाँ, वह कमाल के दिन थे, उन्हें भूलेगा कौन? सारा राष्ट्र प्रगति के पथ पर था। उन दिनों हम सो तक न पाते थे। किसानों में बहुत-से डाँवाडोल भी थे, किन्तु लड़ाई से कुछ ही पहले उनमें से सबसे पिछड़ा हुआ किसान भी उन वर्षों के हमारे श्रम के परिणामों को देख सकता था.. . और सचमुच, लड़ाई के पहले, हमने अच्छा जीवन बसर करना आरम्भ कर दिया था।"

"और जानते हो, खानों में क्या हो रहा था?" वाल्को ने कहा। उसकी आँखें चमक उठीं, "मैं महीनों घर न जाता था और खान में सोता था। सच कहता हूँ, अगर अब तुम चारों ओर नज़र दौड़ाओं, तो तुम्हें अपनी आँखों पर विश्वास तक न होगा – क्या सचमुच इस सबका निर्माण हमने स्वयं किया है? और ईमानदारी की बात यह है कि कभी-कभी मैं यह सोचने लगता हूँ कि यहाँ, मैंने तो नहीं, हाँ, मेरे किसी सम्बन्धी ने निर्माण-कार्य अवश्य किया होगा। अब मैं आँखें मूंदकर अपने सारे दोनबास, अपने सारे देश को निर्माणाधीन देख सकता हूँ और हमारी अविराम क्रियाशीलता की रातें..."

"बेशक, मानवता के सारे इतिहास में किसी दूसरे को इतने कष्ट नहीं उठाने पड़े होंगे, परन्तु तुम्हीं देखो, हमने उनके आगे घुटने नहीं टेके! कभी-कभी तो मेरा मन मुझसे ही प्रश्न करने लगता है कि आख़िर हम हैं किस मिट्टी के बने हुए लोग," शुल्गा ने कहा और उसके चेहरे पर एक बाल-सुलभ भाव झलकने लगा।

"हमारे शत्रु समझते हैं कि मरने से हमें डर लगता है। वे बेवक़ूफ़ हैं!" वाल्को ने मुस्कुराते हुए कहा, "अरे, हम बोल्शेविकों को तो मौत का सामना करने की आदत हो गयी है! हमारे सभी तरह के दुश्मनों ने हम बोल्शेविकों को मौत का शिकार बनाया

है। ज़ारशाही जल्लादों और फ़ौजियों ने, श्वेत गार्डों ने, मख़्नो और अन्तोनोव के गुर्गों ने और सारी दुनिया के हस्तक्षेपकारियों ने हमें मौत के घाट उतारा, कुलकों ने हम पर गोलियाँ बरसायीं, लेकिन हम आज भी ज़िन्दा हैं, इसलिए कि हम पर जनता की आस्था की। अगर जर्मन फ़ासिस्ट चाहें, तो हमें मार डालें, परन्तु आख़िर में हम नहीं, मिट्टी में वे ही मिलेंगे। ठीक है न, मत्वेई?"

"बिलकुल सच! ध्रुव सत्य, अन्द्रेई... मुझे हमेशा इस बात का गर्व रहेगा कि मेरे जैसे साधारण कामगार को अपनी उस पार्टी में रहकर अपनी ज़िन्दगी के रास्ते पर चलने का सौभाग्य मिला, जिसने जनता का, उसके सुखद जीवन का मार्ग प्रशस्त किया है।"

"यह ठीक है, मत्वेई! यह हमारी ख़ुशकिस्मती रही है।" वाल्को की आवाज़ में ऐसी उत्तेजना थी, जो उसकी जैसी कठोर प्रकृतिवालों में यदा-कदा ही देखने को मिलती है। "और मेरी खुशकिस्मती यह है कि मौत के इस क्षण में मेरी बग़ल में तुम्हारे जैसा साथी है!"

"इस सम्मान के लिए धन्यवाद। मैंने तत्काल ही जान लिया था, अन्द्रेई, तुम्हारा हृदय कितना विशाल है..."

"भगवान उन सभी लोगों को सुखी रखे, जिन्हें हम अपने पीछे इस पृथ्वी पर छोड़े जा रहे हैं," वाल्को धीमी आवाज़ में बोला। उसकी आवाज़ में गम्भीरता थी, निष्ठा थी।

इस प्रकार अन्द्रेई वाल्को और मत्वेई शुल्गा ने, अपनी इहलीला-समाप्ति के अंतिम क्षणों में, अपनी अन्तरात्मा पर से एक बोझ-सा उतार फेंका।

अध्याय 34

शीघ्र ही अपराह्न के समय मिस्टर ब्रूक्नेर और वाह्‌ टमिस्टर बाल्डेर क्रास्नोदोन से कोई सत्रह मील दूर, रोवेन्की नगर में स्थित ज़िला सशस्त्र पुलिस कार्यालय की ओर रवाना हुए। क्रास्नोदोन पुलिस थाने से सम्बद्ध एस. एस. यूनिट का रोटेनफ़्यूरर पीटर फ़ेनबोंग, जानता था कि ये दोनों अफ़सर ज़िला सशस्त्र पुलिस कार्यालय में पूछ-ताछ से सम्बद्ध कागज़ात लिये जा रहे थे और उन्हें यह निर्देश प्राप्त करने थे कि क़ैदियों के साथ क्या कार्रवाई की जाये। ये निर्देश क्या होंगे यह वह और उसके चीफ़ स्वयं अपने अनुभवों से जानते थे, इसलिए कि उनके जाने के पहले ही उन अफ़सरों ने फ़ेनबोंग और उसके एस. एस. साथियों को पार्क क्षेत्र में घेरा डालने और वहाँ से लोगों को दूर रखने के आदेश दे रखे थे। सार्जेण्ट एडवर्ड वोल्मन के अधीन कुछ सिपाहियों

का एक दल एक इतना बड़ा गडढ्ा खोदने के लिए पहले ही पार्क में भेजा जा चुका था, जिसमें अड़सठ व्यक्ति एक दूसरे से सटकर खड़े हो सकते हों।

पीटर फ़ेनबोंग जानता था कि उसके चीफ़ शाम को देर से लौटेंगे। अतएव उसने अपने सिपाहियों को जूनियर रोटेनफ़्यूरर के साथ पार्क में भेज दिया था और खुद जेलवाले घर में रह गया था।

पिछले कुछ महीनों में उसे बहुत काम करना पड़ा था और उसे अकेले रहने का कोई मौक़ा न मिला था। फलस्वरूप, उसे सिर से पैर तक अपने अंगों की सफ़ाई करने की बात तो दूर रही, अपना जांघिया तक बदलने की फ़ुरसत न मिली थी। उसे भय था कि कहीं कोई यह न देख ले कि उसके कपड़ों के नीचे है क्या!

जैसे ही ब्रूक्नेर और बाल्डेर मोटर में बैठकर रवाना हुए और एस. एस. के लोग और सशस्त्र सैनिक मार्च करते हुए पार्क में पहुँचे और जेल में फिर निस्तब्धता छा गयी कि फ़ेनबोंग जेलख़ाने के रसोईघर में आया और रसोइये से हाथ-मुँह धोने के लिए एक लोटा गर्म पानी और एक तसला माँगने लगा। बेशक ठण्डा पानी उसे मकान के द्वार के पास रखे पीपे से ही मिल जाता था।

कई दिनों तक गर्मी पड़ चुकने के बाद अब पहली बार सर्द हवा बहने लगी थी और भारी पानी से लदे बादलों को बहाये लिये जा रही थी। उस दिन पतझड़ के दिनों की तरह नीरसता थी और खानों के इस इलाक़े में चारों ओर की प्रकृति कुरूप लग रही थी। आश्रयहीन-सा छोटा-सा नगर, उसके प्रायः एक जैसे मकान और कोयले का चूरा, इन सभी पर भी मनहूसियत-सी छायी हुई थी। घर के भीतर इतना उजाला तो था कि वह आराम से हाथ-मुँह धो सकता था। किन्तु चूँकि वह नहीं चाहता था कि किसी की नज़र उस पर पड़े, इसलिए उसने खिड़की पर काला पर्दा डालकर बत्ती जला दी।

पीटर फ़ेनबोंग सारे कपड़े उतारकर नंगा हो चुका था। उसके शरीर ने हालाँकि बहुत समय तक पानी का स्पर्श महसूस न किया था, फिर भी उसकी स्वाभाविक सफ़ेदी बरक़रार थी और उसकी छाती और टाँगों पर तथा पीठ पर भी हल्के बालों के गुच्छे-से दिखायी दे रहे थे। भीतर के कपड़े उतारने पर पता चला कि उसके शरीर पर विचित्र तरह की पेटी बँधी थी, जो बेशक, पश्चाताप के लिए शरीर को ज़ंजीरों से जकड़कर कष्ट पहुँचाने की दृष्टि से नहीं बाँधी गयी थी, बल्कि वह तो छर्रोंवाली पेटी की तरह थी, जैसी कि पुराने ज़माने में चीनी सैनिक पहना करते थे। यह एक लम्बी-सी पेटी थी, जिसमें कई छोटी-छोटी जेबें थीं। हर जेब में उसे बन्द करने के लिए एक बटन लगा था। फ़ेनबोंग ने मैली-कुचैली रस्सियों के साथ अपनी पेटी कन्धों और छाती के इर्द-गिर्द और कमर से कुछ ऊपर बाँध रखी थी। बहुत-सी छोटी-छोटी

जेबें ऊपर तक भरी थीं। कुछेक ख़ाली भी थीं।

पीटर फ़ेनबोंग ने पेटी खोल डाली। वस्तुतः वह उसके स्थूल शरीर से इतने दिनों से चिपकी थी कि उसकी पीठ, सीने और कमर से कुछ ऊपर के भाग में अजीब रंग के धब्बे पड़ गये थे, जैसे ज्यादा देर तक बिस्तर पर लेटे रहने के कारण बीमारों के पड़ जाते हैं। उसने यह लम्बी और भारी-सी पेटी बड़ी सावधानी से मेज़ पर रखी और दोनों हाथों की उंगलियों से बुरी तरह अपना शरीर खुजलाने लगा। पहले उसकी उंगलियों ने उसके सीने, पेट और टाँगों की ख़बर ली, फिर पीठ की। पहले एक कन्धे पर से हाथ पीछे करके, फिर दूसरे कन्धे पर से, वह पीठ खुजलाने लगा। इसके बाद उसका दाहिना हाथ उसकी बायीं कांख में पहुँचा और वह अंगूठे से वहाँ भी खुजलाने और बड़े सन्तोष के साथ कराहने लगा।

जब खुजली कुछ कम हुई, तो उसने बड़ी सावधानी से अपनी जैकेट की भीतरी जेब का बटन खोला और उसमें से चमड़े का एक छोटा-सा बटुआ निकाल लिया। उसने बटुए में से सोने के कोई तीस दाँत निकालकर मेज़ पर रख दिये। वह इन दाँतों को पेटी की दो-तीन ख़ाली जेबों में रखना चाहता था, परन्तु इस समय बिलकुल अकेला होने के कारण वह अपनी भरी हुई जेबों की चीज़ों पर एक नज़र डाल लेने का लोभ संवरण न कर सका। उसे इन चीज़ों को देखे एक ज़माना हो गया था। अतः उसने बड़ी सफ़ाई से जेबों के बटन खोले और उनमें से चीज़ें निकाल-निकालकर अलग-अलग ढेरियों के रूप में मेज़ पर बिछा दीं। थोड़ी ही देर में उनसे पूरी मेज़ भर गयी। सचमुच यह बड़ा विचित्र दृश्य था।

यहाँ कई देशों की मुद्राएँ जमा थीं – अमरीकी डालर, अंग्रेजी शिलिंग, फ्रांस और बेल्जियम के फ्रैंक तथा आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, नार्वे, रूमानिया और इटली के सिक्के। सभी सिक्के, देशों के अनुसार, अलग-अलग छांटकर रखे थे। सारे सोने के सिक्के सोने के सिक्कों के साथ और चाँदी के सिक्के चाँदी के सिक्कों के साथ तथा नोटों की गड्डी नोटों के साथ रखी थी। नोटों में 'नीले' सौ-सौ रूबल के सोवियत नोट भी थे, जिनसे उसे सचमुच किसी आर्थिक लाभ की आशा न थी, फिर भी उसने उन्हें एकत्र कर रखा था, क्योंकि उसका मुद्राप्रेम बढ़ते-बढ़ते मुद्रा-संग्रह का एक रोग-सा बन गया था। वहीं सोने के छोटे-छोटे आभूषणों की भी ढेरियाँ लगी थीं – अंगूठियाँ, नगीनोंवाली अंगूठियाँ, नेकटाइयों की पिनें, हीरे-जवाहरातों से जड़े तथा सादे ब्रौच। फिर हीरे-जवाहरातों और सोने के दाँतों की भी अलग-अलग ढेरियाँ थीं।

मक्खियों के धब्बों से भरे हुए बल्ब का धुँधला प्रकाश मेज़ पर फैले हुए सिक्कों और आभूषणों आदि पर पड़ रहा था। नंगा और गंजा तथा बालों से भरे सीनेवाला फ़ेनबोंग सींग के बने हल्के फ़्रेम का चश्मा लगाये इस रत्नराशि के समक्ष एक स्टूल

पर बैठा हुआ, अब तक अपना बदन खुजलाये जा रहा था। वह अपने सामने रखी हुई चीज़ें देख-देखकर मंत्र-मुग्ध हो रहा था, फूला न समा रहा था।

उसके सामने ढेरों सिक्के और तरह-तरह की छोटी-मोटी चीज़ें थीं, फिर भी वह एक-एक सिक्का अथवा आभूषण उठाकर उसका सारा इतिहास बता सकता था – वह उसे कहां से, किससे अथवा किन परिस्थितियों में मिला था, उसने उसे कैसे चुराया था, उसने किसके सोने के दाँत निकाले थे। वह जब से इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि वह दुनिया में बेवक़ूफ़ों की तरह पीछे न रह जाये, उसने इसी तरह के काम करने शुरू कर दिये थे। वह बस इसी के लिए जी रहा था। बाक़ी दूसरी चीज़ें तो उसके लिए भ्रममात्र थीं, परछाई की तरह।

उसने सोने के दाँत न सिर्फ़ मुरदों के मुँह से, बल्कि ज़िन्दों के मुंह से भी तोड़े थे। किन्तु उसे मुरदों के मुँह से ये दाँत निकालना अधिक प्रिय था, क्योंकि इसमें कम ख़तरा रहता था। और अब कभी उसे क़ैदियों के किसी दल में सोने के दाँतवाले लोग दिख जाते, तो उसकी यही इच्छा होने लगती कि पूछ-ताछ का चक्कर जल्द से जल्द समाप्त हो और उन लोगों को शीघ्र-से-शीघ्र मौत की नींद सुला दिया जाये।

सारा धन, सोने के दाँत और छोटे-छोटे आभूषण उन ढेरों नर-नारियों और बच्चों के प्रतीक थे, जिन्हें लूटा गया था, जिन पर ज़ुल्म किये गये थे, जिन्हे मौत के घाट उतारा गया था। इन्हें देखकर उसकी उस प्रसन्नतापूर्ण उत्सुकता और आत्मसन्तोष पर बेचैनी की झीनी-सी चादर पड़ जाया करती, किन्तु यह बेचैनी स्वयं पीटर फ़ेनबोंग की आत्मा से न उठती थी, बल्कि उसका उद्देश्य हुआ था एक काल्पनिक व्यक्ति से। यह व्यक्ति अच्छे-से-अच्छे वस्त्र पहने हुए, दाढ़ी सफ़ाचट, सिर पर क़ीमती मख़मली हल्का हैट, मोटी-सी उंगली में एक अंगूठी पहने था और नख से शिख तक चुस्त-दुरुस्त था। वह पीटर फ़ेनबोंग का किसी बात में अनुमोदन न करता था।

यह व्यक्ति पीटर फ़ेनबोंग से भी अधिक धनी था। पीटर फ़ेनबोंग के कार्यों का अनुमोदन न करने का जैसे उस व्यक्ति को अधिकतर ही मिल गया था। उसके धन प्राप्त करने के तरीक़े को वह व्यक्ति नापसन्द करता था। वह इस तरीक़े को फूहड़ समझता था। पीटर फ़ेनबोंग हमेशा इस व्यक्ति से बहस किया करता। बेशक, इस बहस में कटुता न होती थी, चूँकि बोलनेवाला सिर्फ़ पीटर फ़ेनबोंग होता था। वह जीवन का अनुभव रखनेवाले आधुनिक व्यापारी के ऊँचे, सुरक्षित शिखर से तर्क किया करता था।

"आहा," पीटर फ़ेनबोंग कहा करता, "आख़िर तो मैं ज़िन्दगी भर तो ऐसा काम न करूँगा, मैं तो जैसे एक परम्परावादी उद्योगपति या व्यापारी या और कुछ नहीं तो दूकानदार बन जाऊँगा। पर मुझे कोई काम शुरू करने के लिए पूँजी तो चाहिए ही!

तुम अपने और मेरे बारे में क्या सोचते हो, बेशक मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ। तुम्हारा तर्क कुछ इस ढंग का है – मैं एक भला आदमी हूँ। मेरा कोई भी उद्योग किसी से छिपा नहीं, जो चाहे देखे। मेरी समृद्धि का उद्‌भव सभी जानते हैं। मेरे बाल-बच्चे हैं, परिवार है। मेरी आदतें अच्छी हैं। मैं अच्छे कपड़े पहनता हूँ, लोगों के साथ शिष्टता का व्यवहार करता हूँ। मैं कहीं भी सिर ऊँचा किये चल सकता हूँ। यदि मैं किसी खड़ी हुई औरत से बात करता हूँ, तो खुद भी खड़ा रहता हूँ। मैं पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ता हूँ, पुस्तकें पढ़ता हूँ। मैं दो परोपकारी संस्थाओं का सदस्य हूँ। लड़ाई के ज़माने में मैंने अस्पतालों में साज-सज्जा की व्यवस्था के लिए काफ़ी चन्दे दिये हैं। मुझे संगीत, फूल और समुद्र पर बिखरी हुई चाँदनी पसन्द है। किन्तु पीटर फ़ेनबोंग लोगों को मार डालता है – और उनके धन को हड़प लेता है। उनके सोने के दाँत तक निकाल लेने में उसे संकोच नहीं होता। वह ये सभी चीज़ें अपने शरीर पर छिपाये-छिपाये घूमता है, ताकि कोई देख न ले। वह महीनों बिना नहाये-धोये रहता है, उसके शरीर से बदबू आती है, इसी लिए उसकी भर्त्सना करने का मुझे अधिकार है... हाँ, हाँ, मेरे परम आदरणीय, सम्मानित दोस्त, मैं तुम्हें यह याद दिलाना चाहता हूँ कि मैं पैंतालीस का हो चुका हूँ, मैंने जहाजी का काम किया है, दुनिया के सारे मुल्क देखे हैं और वहाँ के जीवन का हर पहलू देखा भी है। जहाजी के रूप में दूर-दूर देशों की यात्रा करते हुए मैंने क्या-क्या देखा है इसकी कल्पना कर सकते हो तुम? दक्षिणी अफ़्रीका, भारत और हिन्दचीन में मैंने प्रतिवर्ष लाखों आदमियों को, सम्मानित व्यक्तियों की आँखों के सामने, मरते और दम तोड़ते देखा है! पर घर से इतनी दूर क्यों जाओ? खुद युद्ध-पूर्व काल में भी तुम्हें दुनिया भर की राजधानियों में, जब खुशहाली पूरे यौवन पर थी, बेकारों की आबादीवाले मुहल्ले के मुहल्ले दिखायी पड़ सकते थे और तुम इन बेकारों को सम्मानित लोगों की आँखों के सामने घुट-घुटकर मरते हुए देख सकते थे। यही दृश्य कभी-कभी तुम्हें पुराने गिरजों की ड्योढियों पर भी दिखायी पड़ सकता था। यह स्वीकार करना बड़ा कठिन है कि लोग मरते थे अपनी किसी सनक के कारण। और कौन नहीं जानता कि कोई-कोई सम्मानित लोग, जब उनका मन होता है, अपने लाखों स्वस्थ नर-नारियों को अपने कल-कारखानों से निकाल देने से भी नहीं चूकते और जब यही नर-नारी चुपचाप स्थिति को बर्दाश्त करने से इनकार करते हैं, तो प्रतिवर्ष ढेरों लोग जेलों में झोंक दिये जाते हैं, भूखों मारे जाते है अथवा पुलिस और सैनिकों की सहायता से तथा पूर्णतया वैधानिक तरीक़े से सड़कों पर भून डाले जाते हैं।

प्रतिवर्ष लाखों आदमी – न सिर्फ़ अच्छे-ख़ासे, तन्दुरुस्त आदमी ही नहीं बल्कि औरतें, बच्चे और बूढ़े तक – मौत के घाट उतारे जाते हैं, इसकी मैंने थोड़ी-सी चर्चा

कर ही दी है किन्तु मैं अभी ऐसे बहुत-से हथकंडे जानता हूँ, जिनके सहारे उन बेचारों को इसलिए मारा जाता है कि मारनेवाले के धन में वृद्धि हो। इस समय मैं उन युद्धों का ज़िक्र नहीं कर रहा हूँ, जिनमें धन की वृद्धि करने के लिए, लाखों का वध किया जाता है। मेरे सम्मानित दोस्त, आख़िर यह लुकाछिपी का खेल क्यों खेल रहे हो? हम लोगों को स्पष्टवादी बनना चाहिए। अगर हम यह चाहते हैं कि कुछ लोग हमारे लिए काम करें, तो हमें किसी न किसी प्रकार कुछ न कुछ लोगों को प्रतिवर्ष मौत की गोद में सुलाना ही पड़ेगा! मेरे बारे में तुम्हें यही चिन्ता है कि मैं क़ीमा बनानेवाली मशीन पर बैठा हूँ, कि इन मामलों में मैं एक अकुशल कारीगर हूँ और मेरा कुछ ऐसा है कि मुझे बिना नहाये-धोये रहना और शरीर पर दुर्गन्ध लादे रखना पड़ता है। लेकिन तुम्हें यह स्वीकार करना होगा कि बिना मेरे जैसे आदमियों के तुम्हारा काम नहीं चल सकता और समय बीतते बीतते तुम्हें मेरी अधिकाधिक आवश्यकता पड़ती जायेगी। हां भाई, हम तो एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। मैं भी तो तुम्हारा ही प्रतिरूप हूँ। अगर तुम अपना दिल निकालकर लोगों को अपनी वास्तविकता दिखा सको, तो इसमें कोई सन्देह न रहेगा कि तुम भी मेरी ही प्रतिलिपि हो। वह वक़्त ज़रूर आयेगा, जब मैं भी नहा-धोकर साफ़-सुथरा बनूँगा और चाहो तो कह सकते हो कि दूकानदार बनूँगा, जिससे तुम अपनी मेज़ की शोभा बढ़ाने के लिए अच्छे से अच्छे सासेज ख़रीद सकोगे।"

इस प्रकार पीटर फ़ेनबोंग उस काल्पनिक, एवं सफ़ाचट दाढ़ीवाले और संभ्रान्त से दिखनेवाले तथा अच्छी तरह बने-ठने भले आदमी से, सिद्धान्त के आधार पर तर्क करता रहा। इस बार भी, हमेशा की ही तरह, उसके तर्क बड़े सार्थक दिखायी दिये और उसका रोम-रोम खिल उठा। उसने धन और बहुमूल्य वस्तुओं की ढेरियाँ फिर छोटी-छोटी जेबों के हवाले की और उनपर बटन कस दिये। अब वह नहाने-धोने लगा। वह खुश था, मस्त था और साबुन का पानी छपाक-छपाक सारे फ़र्श पर गिरा रहा था। किन्तु उसे कोई चिन्ता न थी – फ़र्श सिपाहियों को जो साफ़ करना था।

बेशक, नहाने-धोने के बाद वह स्वच्छ तो क्या हुआ होगा, उसका मन ज़रूर हल्का हो गया। उसने फिर पेटी शरीर पर लपेटी और कसकर बाँध ली। उसने साफ़-साफ़ भीतर के कपड़े पहने और गन्दे कपड़े एक ओर हटाकर अपनी काली वर्दी डाट ली। खिड़की पर से काला काग़ज़ तनिक उठाकर उसने बाहर जेल के अहाते में देखा। अँधेरा पड़ चुका था, इसलिए कुछ भी नज़र न आता था। तत्काल, उसके अन्तःप्रेरित अनुभव ने यह बता दिया कि उसके चीफ़ किसी भी समय आ सकते हैं। वह बाहर अहाते में आकर कुछ क्षणों तक घर के पास खड़ा रहा, ताकि उसकी आँखें अँधेरे की अभ्यस्त हो जायें, किन्तु यह उसे असम्भव लग रहा था। नगर और

सारे दोनेत्स स्तेपी पर सर्द हवा भारी-भारी, काले बादल बहा लायी थी। स्वयं ये बादल तक न दिखायी दे रहे थे। हाँ, ऐसा अवश्य लग रहा था कि आसमान में उनकी भाग-दौड़ से सरसराहट की ध्वनि हो रही थी, मानो उनके फुज्जीदार किनारे एक दूसरे से रगड़ खा रहे थे।

तब पीटर फ़ेनबोंग को कार की घरघराहट सुनायी दी और उसने शीघ्र ही उसकी अधढँकी हेडलाइटें पहचान लीं। कार पहाड़ी से उतर रही थी। सहसा हल्की-सी रोशनी भवन के उस भाग पर झलकी, जहाँ पहले ज़िला कार्यकारिणी समिति का दफ़्तर था, किन्तु अब वहाँ जर्मनों का ज़िला कृषि कमाण्डेण्ट-कार्यालय था। चीफ़ ज़िला सशस्त्र पुलिस कार्यालय से लौट रहे थे। पीटर फ़ेनबोंग ने अहाता पार किया और जेल की इमारत के पिछले दरवाज़े से होकर गुज़र गया। दरवाज़े पर एक जर्मन सशस्त्र पुलिस का सिपाही पहरा दे रहा था। रोटेनफ़्यूरर ही उसने फौजी ढंग से सलामी दाग़ी।

अपनी-अपनी कोठरियों में रहनेवाले क़ैदियों ने भी जेल के निकट आती हुई कार की आवाज़ सुनी। सहसा वह असाधारण शांति, जो दिन भर जेल में व्याप्त रही थी, तरह-तरह की ध्वनियों – गलियारे में होनेवाली पदचाप, तालों में घूमनेवाली चाभियों की खड़खड़ाहट, दरवाज़ों की फटाक, कोठरियों की चिल्ल-पों और दिल हिला देनेवाले बच्चे के परिचित करुण क्रन्दन – से भंग हो गयी। दूर से आनेवाला बच्चे का यह क्रन्दन बराबर बढ़ता गया। बच्चा अपनी पूरी शक्ति लगाकर चिल्ला रहा था, बिलख रहा था।

मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को ने बच्चे की चीख़ और कोठरियों का शोर सुना। उन्हें लगा, मानो उन्होंने किसी स्त्री की करुण एवं मृदुल आवाज़ सुनी हो, जो अपने मुन्ने को सुला रही थी।

जब जर्मन सैनिक वाल्को ओर मत्वेई कोस्तियेविच के बिलकुल पास की कोठरी में घुसे, तो कहीं उन्हें कोहराम का अर्थ स्पष्ट हुआ, जो कोठरियों में सैनिकों के प्रवेश करते समय मचा करता था – सैनिक क़ैदियों की कलाइयाँ बाँध रहे थे।

उनकी आख़िरी घड़ी आ पहुँची थी।

बग़लवाले कमरे में बहुत-से लोग थे, अतः वहाँ सैनिकों को बहुत समय लग गया। आख़िर वे बाहर निकले, कोठरी में ताला लगाया गया, किन्तु वाल्को और शुल्गा के पास तुरन्त पहुँचने का कोई प्रत्यन नहीं किया। वे गलियारे में खड़े-खड़े एक दूसरे से जल्दी-जल्दी कुछ कहते-सुनते रहे। फिर कोई आदमी गलियारे से होता हुआ बाहर के दरवाज़े की ओर दौड़ा और कुछ समय तक सिवा सैनिकों की फुसफुसाहट के कुछ भी नहीं सुनायी पड़ा। इसके बाद उन्हें कोठरी की ओर आते हुए कई लोगों की पदचाप और जर्मन भाषा में सन्तोषसूचक ध्वनियाँ सुनायी दीं। फिर फ़ेनबोंग आया। उसके

पीछे कई सिपाही थे, जिनके हाथों में टार्चें और रिवाल्वर थे, जो किसी भी क्षण दागे जा सकते थे। दरवाज़े पर पाँच और सैनिक खड़े थे। प्रत्यक्षतः इन सिपाहियों को यह भय था कि हमेशा की भाँति ये दोनों क़ैदी लड़ाई पर उतर आयेंगे। किन्तु मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को उन्हें देखकर हँसे तक नहीं। उनके मस्तिष्क इस दुनिया की बातों से बहुत दूर जा चुके थे। उन्होंने चुपचाप अपने हाथ अपनी पीठ पीछे बँधवाये और जब फ़ेनबोंग ने उन्हें बैठने और पैर बँधवाने का इशारा किया, तो उन्होंने बेड़ियों अपने टखनों के इर्द-गिर्द डलवा ली। यह व्यवस्था इसलिए की गयी थी कि वे धीरे-धीरे चल पायें और कहीं निकल न भागें।

अब वे कमरे में कुछ समय के लिए फिर अकेले रह गये और चुपचाप बैठे रहे। इधर जर्मन बाक़ी क़ैदियों को बाँधने का काम पूरा कर रहे थे।

उसके बाद गलियारे में पैरों की जल्द और नियमित आहटें सुनायी पड़ीं, जो बराबर तेज़ होती जा रही थीं। अन्ततः ये आहटें इतनी तेज़ हो गयीं कि उनकी प्रतिध्वनि तक ज़ोरों से सुनायी पड़ने लगी। सिपाही रुके और कमाण्ड मिलते ही बूट टकराते और बन्दूक़ों के कुन्दे ठकोरते मुड़ गये। कोठरियों के दरवाज़े फटाक से खुले और क़ैदी गलियारे में लाये जाने लगे।

मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को इतनी देर तक अँधेरे में रहे थे कि छत पर लगे बिजलियों के मद्धिम प्रकाश में भी उनकी आँखें जैसे स्वतः चौंधियाने लगीं। उन्होंने बड़े गौर से गलियारे में एक छोर से दूसरे छोर तक क़तारों में खड़े दूसरे क़ैदियों को देखा।

उन्हीं के पास एक लम्बा और बुज़ुर्ग-सा दिखनेवाला व्यक्ति खड़ा था। उसके भीतरी कपड़े खून से सने थे। उसके नंगे पैरों में भी शुल्गा और वाल्को ही की भाँति बेड़ियाँ पड़ी थीं। उन्होंने देखा कि वह व्यक्ति कोई और नहीं, पेत्रोव है। वे चौंक पड़े। पेत्रोव का मांस इतना कट और फट चुका था कि उसके कपड़े उसके शरीर से चिपक गये थे, मानो उसका सारा बदन ही एक बड़ा-सा घाव हो। उसके शरीर की एक-एक हरकत इस बहादुर को सम्भवतः असह्य पीड़ा पहुँचा रही थी। उसके एक गाल पर चाकू या संगीन का घाव था। घाव हड्डी तक खुला था और सड़ रहा था। उसने इन दोनों को पहचाना और उनके सामने अपना सिर झुका दिया।

प्रायः सभी क़ैदी गलियारे के उस छोर पर जेल के द्वार की ओर टकटकी लगाये थे। उनकी दृष्टि मे वेदना, भय और आश्चर्य का भाव था। द्वार पर मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को ने जो कुछ देखा, उससे वे दया और क्रोध से काँपने लगे। वहाँ एक युवा स्त्री खड़ी थी, जिसकी सूरत बेहद थकी हुई थी। उसके नाक-नक़्शे से उसकी दृढ़ता और संकल्प-शक्ति का भास होता था। वह गहरे लाल रंग की पोशाक पहने थी।

उसकी गोदी में एक छोटी-सा बच्चा था। बच्चा अपनी माँ के शरीर से एक रस्सी द्वारा इस प्रकार बँधा था कि उसके शरीर से बुरी तरह सट गया था। बच्चे की उम्र एक साल से भी कम थी। उसका छितरे हुए सुन्दर बालोंवाला नन्हा-सा सिर अपनी माँ के कन्धे से चिपका था। बच्चे की आँखें मूंदी थीं। वह सो रहा था।

सहसा मत्वेई कोस्तियेविच की आँखों के आगे उसकी पत्नी और बच्चों की तस्वीर घूम गयी और उसकी आँखों में आँसू भर आये। उसे डर था कि जर्मन सिपाही, और खुद उसके देशवासी कहीं ये आँसू देखकर उसे ग़लत न समझ लें। अतः जब फ़ेनबोंग ने आकर क़ैदियों की गिनती की और उन्हें सिपाहियों की दो क़तारों के बीच बाहर अहाते में ले जाया गया, तो उसके दिल को सन्तोष हुआ।

रात इतनी काली थी कि पास खड़े लोग तक एक दूसरे को न देख सकते थे। क़ैदियों को चार-चार की क़तार में खड़ा किया गया, उन्हें चारों ओर से घेर लिया गया और फाटक से गुज़रकर, सड़क से होते हुए पहाड़ी तक ले गये। उनके आगे-पीछे, दायें-बायें टार्च की रोशनी चमककर कभी सड़क से खेलती दिखायी देती, कभी क़ैदियों की क़तार से। शान्त किन्तु सर्द हवा बड़ी नीरसता के साथ नगर पर बहाकर क़ैदियों के इर्द-गिर्द भंवर के रूप में चक्कर लगा रही थी। उन्हें अपने ऊपर आकाश में सिरों का स्पर्श करते हुए से बादलों की सरसराहट सुनायी देती थी। बादल इतने नीचे थे कि लगता था मानो उन्हें हाथ से छुआ जा सकता है। उन्होंने जी खोलकर गहरी साँसे लीं। क़ैदी चुपचाप और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। उनके आगे चलता फ़ेनबोंग जब-तब घूमकर कलाई से लटकती टार्च जला देता। टार्च का प्रकाश क़ैदियों पर पड़ता और अँधेरे में प्रायः उस औरत पर भी पड़ता, जिसका बच्चा उसके शरीर से बँधा था। औरत अगली क़तार में चल रही थी। सर्द हवा में उसकी गहरे लाल रंग की पोशाक फड़फड़ा रही थी।

मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को अग़ल-बग़ल चल रहे थे। उनके कन्धे एक दूसरे का स्पर्श कर रहे थे। इस समय मत्वेई कोस्तियेविच की आँखों में आँसू न थे। हर क़दम के साथ उनके दिमाग़ से वह प्रत्येक बात निकलती-सी जा रही थी, जो महत्वपूर्ण, बहुमूल्य अथवा निजी कही जा सकती थी – यानी हर वह बात, जिसने आख़िरी क्षण तक उन्हें कष्ट पहुँचाया था और अप्रकट रूप से व्यथित किया था, जो उन्हें इस जीवन से नाता बनाये रखने के लिए बाध्य-सी कर रही थी – ऐसी बातें भी इस समय उनके दिमाग़ में न उठ रही थीं। महानता के पंखों ने उन्हें चारों ओर से घेर रखा था और उनके मस्तिष्क पर ऐसी निर्मल शान्ति छा रही थी, जिसे शब्दों में व्यक्त भी नहीं किया जा सकता। उनके चेहरों पर हवा के थपेड़े पड़ रहे थे। उनके सिरों के ऊपर सरसराते हुए बादल थे। और वे चुपचाप बढ़े जा रहे थे, अपनी मौत

को गले लगाने के लिए बढ़े जा रहे थे।

पार्क के फाटक पर पहुँचकर क़ैदी रुक गये, फ़ेनबोंग ने अपने कोट की भीतरी जेब से एक काग़ज़ निकाला, जिसकी उसने, फिर सशस्त्र पुलिस के सार्जेण्ट एडवर्ड बोल्मन ने और पार्क में गश्त लगानेवाले एस. एस. कर्मचारियों के प्रभारी अधिकारी जूनियर रोटेनफ़्यूरर ने, टार्च की रोशनी में परीक्षा की। फिर सार्जेण्ट ने प्रत्येक क़ैदी पर टार्च की रोशनी फेंकते हुए सारे बन्दियों की गिनती की।

धीरे-धीरे चरमराता हुआ फाटक खुला और दो-दो की क़तार में क़ैदियों की पंक्ति, लेनिन क्लब और गोर्की स्कूल के बीच से जानेवाली मुख्य सड़क पर ले जायी जाने लगी। फ़िलहाल, गोर्की स्कूल में उन मिले-जुले उद्यमों का प्रशासन था, जो पहले 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट से सम्बद्ध थे। स्कूल से गुज़र चुकने के बाद फ़ेनबोंग और बोल्मन बग़ल की एक गली में घुसे। कैदी भी उन्हीं के पीछे-पीछे ले जाये जाने लगे।

वृक्ष हवा के आगे नतमस्तक हो रहे थे। वायु उन्हें एक ओर झुका रही थी। एक ही दिशा में गिरती हुई पत्तियों की नीरस आवाज़ इर्द-गिर्द के अन्धकार में गूँज रही थी।

क़ैदियों को पार्क के उस उपेक्षित कोने में ले जाया गया, जहाँ सुहावने दिनों में भी लोग कभी-कभी ही पहुँचते थे। यह कोना उस खुली हुई जगह से मिला हुआ था, जहाँ जर्मन पुलिस ट्रेनिंग स्कूल की एकाकी पत्थर की इमारत खड़ी थी। वहाँ एक चौकोर-से साफ़ मैदान के बीचोंबीच एक गहरी खाई खोदी गयी थी। लोगों को ताज़ी निकाली गयी नम मिट्टी की सोंधी-सोंधी महक मिल रही थी, हालाँकि अभी तक उन्होंने सचमुच उस लम्बी खाई को देखा न था।

बन्दियों को दो पंक्तियों में बांट दिया गया और प्रत्येक पंक्ति खाई के एक ओर खड़ी कर दी गयी। अब वाल्को और शुल्गा अलग-अलग हो चुके थे। लोग मिट्टी के ढेलों पर ठोकर खा-खाकर गिर रहे थे। किन्तु गिरने के बाद उन्हें बन्दूक़ के कुन्दे की मार से तुरन्त उठने को बाध्य किया जाता था।

सहसा दर्जनों टार्चों का प्रकाश पूरी खाई पर, उसके दोनों ओर लगे हुए मिट्टी के ढेरों पर, क़ैदियों के क्लान्त चेहरों पर और जर्मन सिपाहियों की बन्दूक़ों की ठण्डी और चमचमाती हुई संगीनों पर पड़ने लगा, जो खुली हुई जगह के चारों ओर अभेद्य दीवार के रूप में खड़े थे। मिस्टर ब्रूक्नेर और वाह्‌टमिस्टर बाल्डेर, खाई के दूरस्थ छोर पर लगे वृक्षों के नीचे खड़े थे। उन्हें खाई के दोनों ओर खड़े हुए लोग आसानी से देख सकते थे। दोनों के कन्धों पर बरसातियाँ पड़ी थीं। उनके पीछे और एक तरफ़ को भारी-भरकम बरगोमास्टर वसीली स्तात्सेन्को खड़ा था। उसका चेहरा लाल हो रहा था और आँखें जैसे बाहर निकली पड़ रही थीं।

मिस्टर ब्रूक्नेर ने हाथ से इशारा किया। फ़ेनबोंग ने अपने सिर के ऊपर टार्च को उठाया और अपनी रूखी और ज़नानी आवाज़ में हुक्म दिया। सिपाही आगे बढ़े और संगीनें सामने किये, लोगों को ख़ंदक़ की ओर चुभो-चुभोकर धकेलने लगे। और सभी क़ैदी हाथ-पाँव बन्धे होने के कारण गिरते-पड़ते, चुपचाप टीले के सिरे पर चढ़ने लगे। वहाँ केवल सिपाहियों की भारी-भारी साँसें और पत्तियों को झंझोड़ती हुई हवा की सरसराहट भर सुनायी पड़ रही थी।

मत्वेई शुल्गा के पैरों में बेड़ियाँ पड़ी थीं, फिर भी वह किसी प्रकार बढ़ता हुआ ढीली मिट्टी के टीले पर चढ़ गया। वह टार्चों की रोशनी में लोगों को खाई में गिरते हुए देख रहा था। कुछ लोग कूद रहे थे; तो कुछ चुपचाप लड़खड़ाकर गिर रहे थे और कुछ विरोध या कष्ट से चिल्ला रहे थे।

मिस्टर ब्रूक्नेर और वाह्र टमिस्टर बाल्डेर वृक्षों के नीचे निश्चेष्ट खड़े थे। स्तात्सेन्को गड्ढे में ढकेले जाते हुए लोगों के सामने झुक-झुककर उनका अभिवादन कर रहा था। वस्तुतः वह पिये हुए था।

शुल्गा की निगाह फिर उस औरत पर पड़ी, जिसके शरीर से उसका बच्चा बँधा था। बच्चे के आस-पास क्या हो रहा है, यह न उस बालक ने सुना न देखां उसका सिर माँ के कन्धों पर सधा था और वह माँ के शरीर की गर्मी का आनन्द लेता हुआ सुख की नींद सो रहा था। माँ ज़मीन पर झुकी और चूँकि उसके हाथ बँधे थे, इसलिए पैरों का इस्तेमाल करती हुई वह किसी प्रकार खाई में सरक गयी। वह इस प्रयत्न में थी कि कहीं उसका लाड़ला जाग न पड़े। मत्वेई शुल्गा ने उसे फिर कभी नहीं देखा।

"साथियो," उसने भारी और शक्तिशाली आवाज़ में कहना शुरू किया। उसकी आवाज़ ने बाक़ी सभी ध्वनियाँ दबा दीं। "मेरे महान साथियो! दुनिया हमेशा तुम्हें याद करेगी। तुम अमर रहोगे!" पीछे से उसकी पसलियों के बीच संगीन भोंक दी गयी। किन्तु वह अपनी सारी ताक़त जुटाकर भी खड़ा रहा। वह गिरा नहीं, बल्कि उछलकर गहरी खाई में आ गया। उसकी आवाज़ बराबर खाई से सुनायी दे रही थी :

"जनता को न्याय का रास्ता दिखानेवाली महान कम्युनिस्ट पार्टी ज़िन्दाबाद!..."

"हमारे दुश्मनों का नाश हो!" शुल्गा की बग़ल से अन्द्रेई वाल्को गरजा। भाग्य का विधान था कि वे एक बार फिर मिले – क़ब्र में।

लोग खाई में इतने पास-पास भर गये कि उनके लिए हिलना-डुलना तक असम्भव हो गया। उनके लिए अन्तिम आत्मिक तनाव का क्षण आ गया था – हर व्यक्ति गोलियों का सामना करने के लिए तैयार हो रहा था। किन्तु उनके भाग्य में तो यह मौत भी न बदी थी। अब उनके सिरों और कन्धों पर मिट्टी के ढेले गिरने लगे। उनकी गरदनें, कपड़ें, आँखें, मुँह – सभी मिट्टी में दबने लगे और उन्होंने समझ

लिया कि वे ज़िन्दा दफ़नाये जा रहे हैं!

फिर अपनी आवाज़ तेज़ करते हुए शुल्गा ने सुर में गाना शुरू किया :

भूखों और गुलामों की दुनिया सारी
उठो, मुसीबत की मारी...

उसकी आवाज़ में वाल्को की गम्भीर आवाज़ भी मिल गयी। फिर अधिकाधिक कण्ठों से वही आवाज़ फूटी और खाई के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गयी। आख़िर इस अन्तर्राष्ट्रीय गीत की धुन की लहराती हुई तरंगें ज़मीन में से उठती हुई बाहर की दुनिया पर घिरे बादलों को पार करने लगीं।

उस अँधेरे और भयानक क्षण में देरेव्यान्नाया सड़क पर स्थित एक छोटे-से घर का दरवाज़ा धीरे-से खुला और मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स और वाल्या ड्योढ़ी से बाहर निकल आयीं। उनके साथ नाटे क़द का एक व्यक्ति था, जो अच्छी तरह कपड़ों में लिपटा हुआ था। उसके हाथ में छड़ी और कन्धे पर थैला था।

मरीया अन्द्रेयेव्ना और वाल्या ने उसे अपने हाथ का सहारा दिया। सर्द हवा दोनों के स्कर्टों को जैसे चीर डाल रही थी। वे उसे नाटे व्यक्ति को सड़क पर और फिर स्तेपी में लिये जा रही थीं।

कुछ देर चलकर वह व्यक्ति रुक गया।

"अँधेरा हो चुका है। अच्छा हो, तुम चली जाओ," उसने फुसफुसाते हुए कहा।

मरीया अन्द्रेयेव्ना ने उसे गले से लगाया और तीनों कुछ समय तक मूर्तिवत् खड़े रहे।

"विदा, माशा," वह बोला और उसने असहायों की तरह हाथ से इशारा किया।

बाप-बेटी हाथ में हाथ डाले चलते रहे। मरीया अन्द्रेयेव्ना जहाँ की तहाँ खड़ी रह गयी। वाल्या को दिन निकलने तक अपने पिता के साथ रहना था। इसके बाद पिता को अपने आप ही स्तालिनो तक पहुँचना था। वहाँ वह अपनी पत्नी के किसी नज़दीकी रिश्तेदार के यहाँ छिपकर रहना चाहता था।

मरीया अन्द्रेयेव्ना कुछ क्षणों तक उन दोनों की पदचापें सुनती रही। आख़िर पदचापें भी थम गयीं। उसे सर्द, पूर्ण अन्धकार ने घेर लिया, किन्तु उस अन्धकार से भी काले थे वे विचार, जो उसके मस्तिष्क में उठ रहे थे। उसका सारा अस्तित्व, उसका काम, परिवार, बच्चे, सपने, प्रेम जैसे मिट्टी में मिल गये थे। अब उसके सामने शून्य ही शून्य था।

वह जैसे हिलने तक में असमर्थ थी। सनसनाती हवा उसकी पोशाक को

फड़फड़ा रही थी और उसके ठीक ऊपर, उससे बहुत ही पास, बादलों की सरसराहट उसके कानों में आ रही थी।

सहसा उसे लगा जैसे वह पागल हो रही है... वह बड़े ध्यान से सुनने लगी। नहीं, यह उसकी भ्रान्ति न थी। वह उसे फिर सुनायी देने लगी थी। हाँ, लोग गा रहे थे! वे लोग अन्तर्राष्ट्रीय गीत गा रहे थे! किन्तु यह गाना कहाँ से आ रहा था, यह कहना असम्भव था। वह हवा की सनसनाहट और बादलों की सरसराहट से गठबन्धन करता हुआ उन्हीं के साथ अँधेरी दुनिया की ओर बढ़ रहा था।

मरीया अन्द्रेयेव्ना को लगा जैसे उसके हृदय की गति रुक गयी। उसका सारा शरीर सिहर उठा। और मानो ज़मीन के नीचे से उसे ये शब्द सुनायी पड़ने लगे –

अत्याचारों की दुनिया को नष्ट करें
उसकी जड़ें हिलायें, नींव मिटा देंगे
फिर हम मिलकर ऐसी दुनिया नयी रचें
जिसमें अब के हीन-हीन सब कुछ होंगे...

• • •
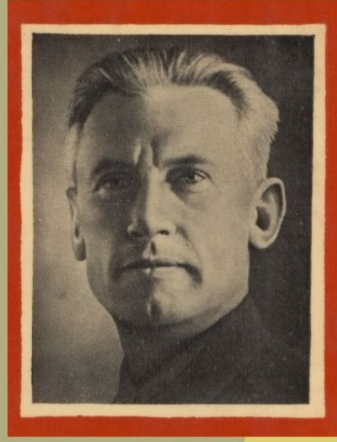
अलेक्सान्द्र फ़देयेव

तरुण गार्ड

द्वितीय खण्ड

तरुण गार्ड

(उपन्यास)

द्वितीय खण्ड

तरुण गार्ड

(उपन्यास)

द्वितीय खण्ड

अलेक्सान्द्र फ़ेदेयेव

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

भाग 2

अध्याय 1

“मैं, ओलेग कोशेवोई, ‘तरुण गार्ड’ दल में भर्ती होते समय अपने जंगी साथियों, अपनी चिरसंतप्त मातृभूमि और सारी जनता के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हूँ। मैं शपथ लेता हूँ कि मैं उन सभी कार्यों को, जो संगठन मुझे सौंपेगा, सम्पन्न करूँगा, बिना किसी आनाकानी के; उन सभी बातों को गुप्त रखूँगा, जिनका सम्बन्ध ‘तरुण गार्ड’ से होगा। मैं शपथ लेता हूँ कि मैं फूँके और लूटे गये नगरों और गाँवों का, अपनी जनता के ख़ून का और बहादुर खनिकों की यंत्रणा और मौत का पूरी निर्ममता के साथ बदला लूँगा। और यदि इसके लिए मुझे अपने प्राणों की भी आहुति देनी पड़ी, तो मैं बिना एक क्षण के लिए भी संकोच किये उसके लिए तैयार रहूँगा। यदि यंत्रणा या कायरता के कारण मैं इस पवित्र शपथ का अतिक्रमण करूँ, तो सदा के लिए मेरे और मेरे स्वजनों के नाम पर कलंक लगे और मेरे साथी मुझे कठोर से कठोर दण्ड दें। ख़ून का बदला ख़ून! मौत का बदला मौत!”

“मैं, ऊल्याना ग्रोमोवा, ‘तरुण गार्ड’ दल में भर्ती होते समय अपने जंगी साथियों, अपनी चिरसंतप्त मातृभूमि और सारी जनता के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हूँ...”

“मैं, इवान तुर्केनिच, ‘तरुण गार्ड’ दल में भर्ती होने समय अपने जंगी साथियों, अपनी चिरसंतप्त मातृभूमि और सारी जनता के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेती हूँ...”

“मैं, इवान जेम्नुखोव, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हूँ...”

“मैं, सेर्गेई त्यूलेनिन, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हूँ...”

“मैं, ल्यूबोव शेव्त्सोवा, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेती हूँ...”

जब सेर्गेई लेवाशोव ने पहली बार ल्यूबा के पास आकर खिड़की खटखटायी, तो

ल्यूबा दौड़ती हुई बाहर आयी और फिर वे दोनों रात भर बैठे हुए बातें करते रहे, तब वह उसे ठीक से समझ न पाया होगा। न जाने क्या कल्पना की थी तब उसने!

कुछ भी हो इस यात्रा में पहली कठिनाई उसके सम्मुख यहीं सेर्गेई लेवाशोव के कारण खड़ी हुई। निस्सन्देह वे दोनों पुराने साथी थे और ल्यूबा उसे बताये बिना जा नहीं सकती थी। वह हमेशा अपनी गली में छोटे-छोटे छोकरों के बीच बड़ी लोकप्रिय रही थी, क्योंकि वह ख़ुद लड़कों की तरह शरारती स्वभाव की थी। इसीलिए उसे शीघ्र ही एक ऐसा लड़का मिल गया, जिसने उसका सन्देश सेर्गेई लेवाशोव के पास ख़ुशी-ख़ुशी पहुँचा दिया था। चाचा अन्द्रेई ने अपनी गिरफ़्तारी के पहले सेर्गेई लेवाशोव को सलाह दी थी कि वह प्रशासन के गैरेज में लारी-ड्राइवर का काम कर ले।

सेर्गेई सीधे काम से शाम देर गये आ पहुँचा। वह वही कपड़े पहने था, जो उसने स्तालिनों से लौट आने के दिन पहने थे। जर्मन किसी को भी-खान-मज़दूरों तक को-कामवाले कपड़े नहीं देते थे। वह मैला-कुचैला, क्लांत और उदास था।

ल्यूबा से उसके सफर के मकसद और मंजिल के सम्बन्ध में सवाल करना उसे अनुचित लगा, किन्तु यह ज़ाहिर था कि उसके दिमाग में और कोई बात नहीं घूम रही थी। सारी शाम वह मुँह लटकाये गुप-चुप बैठा रहा। इससे वह तंग आ गयी। आख़िर उससे अधिक सहन न हुआ और वह उस पर बरस पड़ी। आख़िर वह उसे समझता क्या है-पत्नी या प्रेयसी? सेर्गेई को मनमानी बातों की कल्पना नहीं करनी चाहिए, इससे ल्यूबा को व्यथा ही होती है। जब जीवन ल्यूबा से तरह-तरह की आशाएँ कर रहा हो, तब वह प्रेम के बारे में सोच ही कैसे सकती है। वे सिर्फ़ साथी हैं और वह उसे अपने बारे में सब कुछ बताने के लिए मजबूर नहीं है। वह वहीं जा रही है, जहाँ उसे जाना है-घर के काम से।

ल्यूबा ने यह भाँप लिया था कि सेर्गेई ने उसका पूरा-पूरा विश्वास नहीं किया, कि वह ईर्ष्यालु था। ल्यूबा को इससे कुछ सन्तोष ही हुआ।

ल्यूबा रात भर अच्छी तरह आराम करना चाहती थी, किन्तु वह था कि जाने का नाम भी नहीं ले रहा था। वह अड़ियल क़िस्म का आदमी था और कौन जाने रात भर वहाँ बैठा ही रहता। आख़िर ल्यूबा ने उसे दरवाज़ा दिखा ही दिया। बेशक उसकी अनुपस्थिति में सेर्गेई खोया-खोया-सा रहेगा, यह सोचकर ल्यूबा को उस पर दया भी आयी। वह उसे बगीचे से होती हुई फाटक तक छोड़ने आयी और एक क्षण के लिए उसकी बाँह पकड़कर उससे सट गयी। फिर वह दौड़ी-दौड़ी घर आयी, कपड़े उतारे और अपनी माँ की बगल में लेट गयी।

बेशक, उसकी माँ भी एक समस्या थी। ल्यूबा जानती थी कि अकेली रह जाना माँ के लिए कितनी बड़ी मुसीबत होगी, इसलिए कि जीवन की राह में आनेवाली

कठिनाइयों के आगे वह असहाय-सी बन जाती थी। परन्तु माँ को धोखा देना बहुत आसान था। ल्यूबा माँ की छाती से लगकर उसे तरह-तरह की मनगढ़न्त बातें सुनाती रही, पर माँ को कोई सन्देह नहीं हुआ। अन्ततः ल्यूबा माँ के पलंग पर सो गयी।

उस दिन वह भोर होते ही उठी और गुनगुनाती हुई अपनी यात्रा की तैयारियाँ करने लगी। अपनी सर्वोत्तम पोशाक पर सिलवटें पड़ने न देने के लिए उसने साधारण कपड़े पहनने का निश्चय किया, जो भड़कीले तो थे ही, साथ ही लोगों का ध्यान भी अपनी ओर आकृष्ट करते थे। उसकी सबसे अच्छी पोशाक नीले रंग की चीनांशुक की थी। उसने यह पोशाक, हल्के नीले रंग के जूते, लैस के भीतरी कपड़े और लम्बे रेशमी मोजे एक सूटकेस में रख लिये। फिर वह हल्के वस्त्र पहने-पहने, गुनगुनाती हुई दो मामूली-से दर्पणों के बीच खड़ी होकर पूरे दो घण्टे तक बालों को घुँघराले बनाती रही। उसे अपना सिर बार-बार घुमाना पड़ रहा था। सुस्ताने के लिए वह अपने शरीर का सारा बोझ कभी एक पैर पर डाल देती, कभी दूसरे पर। फिर उसने पेटी बाँधी, अपने गुलाबी तलवों पर हाथ फेरा, त्वचा के रंग के सिल्क के मोजे पहने हल्के पीले रंग के जूते पैरों में डाले और अन्ततः बिन्दियों और चेरी के दानों की छाप वाली शीतल और सरसराती हुई फ्राक पहन ली। इसके अलावा उस पर और भी कई रंगों के छींटे थे।

वस्त्र पहनते समय वह बराबर कुछ न कुछ खाती और गुनगुनाती जा रही थी।

वह कुछ घबरायी-सी थी, लेकिन इससे हताश होने के बजाय वह चुस्त नज़र आ रही थी। वह ख़ुश थी, क्योंकि अन्ततः काम शुरू करने का समय आ गया था। अब उसे अपनी शक्ति व्यर्थ खर्च नहीं करनी पड़ेगी।

दो दिन पहले, सुबह के समय शेव्त्सोव परिवार के घर के बाहर एक छोटी-सी हरी लारी आकर खड़ी हुई थी। लारी में जर्मन उच्चाधिकारियों के लिए वोरोशीलोवग्राद से खाने का सामान आया था। लारी का ड्राइवर पुलिस का एक जर्मन सिपाही था। उसने अपने पास बैठे हुए एक सैनिक से, जिसके घुटनों पर एक टामी-गन रखी थी, कुछ कहा और कूदकर घर में घुस गया। ल्यूबा ने आकर देखा कि वह खाने के कमरे में खड़ा-खड़ा इधर-उधर ताक रहा है। ड्राइवर ने घूमकर ल्यूबा पर निगाह डाली और इसके पहले कि वह अपना मुँह खोले, ल्यूबा को उसकी शक्ल-सूरत ऐसी चाल-ढाल से समझने में देर नहीं लगी कि वह रूसी है। और सचमुच उसने शुद्ध रूसी में कहा भी :

"मुझे कार के लिए कुछ पानी मिल सकता है?"

जर्मन पुलिस की वर्दी में रूसी! इस घर में घुसने से अधिक बुरी हरकत वह कर भी क्या सकता था!

"दलदल में! समझे?" ल्यूबा ने उत्तर दिया। उसकी गोल-गोल नीली आँखें शान्तिपूर्वक उसे घूर रही थीं।

जर्मनों की सैनिक वर्दी पहने हुए इस रूसी से क्या कहना चाहिए यह उसने बिना क्षण भर सोचे-विचारे भी समझ लिया था। यदि इस आदमी ने उसे जरा भी नुकसान पहुँचाने का प्रयत्न किया, तो वह चीख़ती-चिल्लाती बाहर चली जायेगी और सारा मोहल्ला सिर पर उठा लेगी-मैंने तो सिपाही से इतना भर कहा कि पानी दलदल से ले ले और उसने मुझे मारना-पीटना शुरू कर दिया। किन्तु यह विचित्र सैनिक-ड्राइवर चुपचाप खड़ा-खड़ा मुस्कराता रहा और आख़िर बोला :

"तुम अपना काम असावधानी से कर रही हो। इससे तुम मुसीबत में फंस सकती हो..." उसने यह देखने के लिए कि कोई उसके पीछे लगा तो नहीं है, अपने इर्द-गिर्द एक निगाह डाली और फिर तेजी से बोला, "वारवारा नौमोव्ना ने मुझसे कहलाया है कि वह तुम्हें बहुत याद करती है!"

ल्यूबा का चेहरा पीला पड़ गया और वह अनायास ही उसकी ओर बढ़ गयी, किन्तु ड्राइवर ने जैसे उसके प्रश्न की पूर्व-कल्पना कर ली थी, अतः उसने अपनी पतली-सी काली तर्जनी अपने होंठों पर रख ली।

वह उसके पीछे-पीछे गलियारे में आया। ल्यूबा दोनों हाथों में एक भरी बाल्टी लिये ड्राइवर की आँखों में झाँकी। किन्तु ड्राइवर ने उसकी ओर बिना देखे बाल्टी उठायी और लारी के पास चला आया।

ल्यूबा अपनी जगह खड़ी रह गयी। वह उसे अधखुले दरवाज़े में से देखती रही। उसे आशा थी कि बाल्टी लेकर लौट आने पर वह उससे कुछ न कुछ पूछ लेगी। किन्तु रेडियेटर में पानी डालने के बाद ड्राइवर ने बाल्टी सामने के बगीचे में फेंकी, जल्दी से अपनी जगह पर बैठा, फट से दरवाज़ा बन्द किया और लारी चला दी।

इस प्रकार ल्यूबा के लिए वोरोशीलोवग्राद जाना ज़रूरी हो गया। किन्तु अब वह 'तरुण गार्ड' दल के अनुशासन के अधीन थी और बिना ओलेग को बताये कहीं भी जा नहीं सकती थी। बेशक, कुछ समय पूर्व उसने यह संकेत ज़रूर कर दिया था कि वह वोरोशीलोवग्रादब में ऐसे लोगों को जानती है, जो उनके काम के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। अब उसने ओलेग को यह भी बता दिया कि उनसे मिलने का यह बहुत अच्छा मौक़ा है। पर ओलेग ने उसे तुरन्त जाने की अनुमति न देकर कुछ इन्तज़ार करने को कहा।

हाँ, उस समय उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा, जब ओलेग से बातचीत करने के दो घण्टे बाद ही नीना इवान्त्सोवा ने ल्यूबा के घर आकर बताया कि उसे जाने की अनुमति मिल गयी है। और तो और नीना ने कहा :

“वहाँ पहुँचकर हमारे लोगों की मौत के बारे में और उनके पार्क में ज़िन्दा गाड़े जाने के बारे में पूरी-पूरी रिपोर्ट दे देना। साथ ही उनके नाम भी बताना। फिर उनसे कहना कि इस सब के बावजूद यहाँ काम कायदे से चल रहा है। ऐसा कहने का अनुरोध वे लोग तुमसे कर रहे हैं, जिनके हाथ में यहाँ के काम की बागडोर है। और उन्हें ‘तरुण गार्ड’ दल बारे में भी बताना।”

ल्यूबा अपने पर नियंत्रण न रख सकी और बोली :

“कशूक को यह कैसे मालूम है कि जहाँ मैं जा रही हूँ, वहाँ इस सब के बारे में बातचीत करना ठीक होगा?”

स्तालिनो में ख़ुफ़िया कार्य करते समय नीना ने फूँक-फूँककर क़दम रखना अच्छी तरह सीख लिया था। इसलिये उसने केवल अपने कन्धे बिचका दिये। पर उसे यह ध्यान भी आया कि जिस प्रकार रिपोर्ट देने के लिए ल्यूबा से अनुरोध किया गया है, सम्भवतः रिपोर्ट देने में उसे कोई संकोच हो। इसीलिए नीना ने लापरवाही से यह भी जोड़ दिया :

“बुजुर्ग साथी शायद जानते होंगे, तुम किसके पास जा रही हो।”

ल्यूबा को आश्चर्य हो रहा था कि यह मामूली-सी बात पहले उसके दिमाग़ में क्यों नहीं आयी।

वोलोद्या ओस्मूख़िन को छोड़कर ‘तरुण गार्ड’ दल के अन्य सदस्यों की भाँति ल्यूबा शेव्त्सोवा को भी इस बात का कोई पता न था-और न उसने मालूम करने की कोई कोशिश ही की थी-कि क्रास्नोदोन के ख़ुफ़िया संगठन के वरिष्ठ सदस्यों में से ओलेग कोशेवोई का सम्पर्क किसके साथ था। किन्तु फ़िलीप्प पेत्रोविच को वह बात अच्छी तरह मालूम थी कि ल्यूबा को किस उद्देश्य से क्रास्नोदोन में रखा गया है और वोरोशीलोवग्राद में उसका सम्पर्क किनके साथ है।

उस दिन सर्दी थी और बादल स्तेपी पर बहुत नीचे उतरकर मँडरा रहे थे। सर्द हवा के कारण ल्यूबा के गाल लाल हो उठे थे और उसकी भड़कीली फ़्राक उड़ रही थी। किन्तु वह इस सबसे बेखबर, वोरोशीलोवग्राद जानेवाले मार्ग पर खड़ी थी। उसके एक हाथ में उसका सूटकेस और दूसरे हाथ में एक हल्का ओवरकोट था।

उसके सामने से सर्र से लारियों पर लारियाँ निकलती जा रही थीं। उनमें बैठ जर्मन सिपाही और कारपोरल चिल्ला-चिल्लाकर उसे अपने पास आने का निमंत्रण देते, ठहाके मारकर हँसते और बेहूदे इशारे करते जा रहे थे। वह घृणा से अपनी आँखें मिचकाकर उनकी ओर कोई ध्यान न देती। पर जब उसने एक लम्बी, नीची हल्के रंग की कार अपनी ओर आते देखी, तो उसने लापरवाही से लिफ़्ट माँगी। कार में अगली सीट पर, ड्राइवर के पास ही एक जर्मन अफ़सर बैठा था।

फीके रंग की सैनिक वर्दी पहने हुए अफ़सर तुरन्त घूमकर पिछली सीट की ओर देखने लगा, जहाँ शायद कोई उससे भी बड़ा अफ़सर बैठा था। तभी, चर्र से ब्रेक लगा और कार रुक गयी।

"setzen sie sich! Schneller!"* अफ़सर ने हलके-से दरवाज़ा खोलते हुए कहा और होंठों ही होंठों में मुस्कराया। फिर उसने तुरन्त दरवाज़ा बन्द किया और हाथ बढ़ाकर पिछला दरवाज़ा खोल दिया।

ल्यूबा अपना सूटकेस और कोट सामने किये सिर झुकाकर कार में घुस गयी। दरवाज़ा बन्द हो गया और कार हवा से बातें करने लगी।

ल्यूबा एक दुबले-पतले, सूखे-से कर्नल की बगल में बैठी थी। उसका चेहरा पीला पड़ा था, दाढ़ी सफाचट बनायी गयी थी, होंठ लटक रहे थे। उसके सिर पर एक ऊँची धूसर-सी छज्जेदार टोपी लगी थी। उन्होंने एक दूसरे की आँखों में आँखें डालकर देखा। उन दोनों की आँखों में परस्पर विरोधी धृष्ठता झलक रही थी। कर्नल में धृष्टता थी इसलिए कि उसके पास शक्ति थी, और ल्यूबा में इसलिए कि वह बहुत डर गयी थी। अगली सीट पर बैठा हुआ ज़वान अफ़सर घूमा और उसकी ओर देखते लगा।

"Wohin defehlen Sie zu fahren?"** कर्नल ने पूछा और उसके होंठों पर आदिवासी वहशियों की मुस्कान बिखर गयी।

"मेरी खाक समझ में नहीं आ रहा है," ल्यूबा ने मीठी आवाज़ में कहा। "या तो रूसी बोलो, या अच्छा हो कि बात ही न करो।"

"कहाँ... कहाँ?..." कर्नल ने अनिश्चितता में हाथ झटकारकर रूसी में पूछा।

"भगवान का शुक्र है, अब वह तुक की बात तो कर रहा है!" ल्यूबा बोली; "वोरोशीलोवग्राद... लुगांस्क, मेरा मतलब है, बेशक... ferstehte?*** हाँ, हाँ,!"

जैसे ही ल्यूबा ने बोलना शुरू किया कि उसका डर दूर हो गया और वह तुरन्त अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ गयी, जिससे सभी को, जर्मन कर्नल तक को, मन ही मन यह स्वीकार करना पड़ा कि वह जो कुछ कह या कर रही है, वह बिलकुल स्वाभाविक है।

"जरा वक्त तो बताना!.. वक्त, वक्त... उल्लू के पट्ठे!" ल्यूबा बोली और उँगली से अपनी कलाई ठकठकाने लगी।

कर्नल ने अपनी लम्बी बाँह बढ़ाकर यंत्रवत कोहनी झुका दी। उसकी पतली-सी कलाई पर राख के-से रंग के रोओं के बीच एक चौकोर घड़ी बँधी थी। ल्यूबा ने समय

---

* बैठिये! जल्दी कीजिये!

** आपको कहाँ जाना हैं?

*** समझे न?

देख लिया।

बेशक बिना भाषा जाने हुए भी आदमी अपनी बात दूसरों को समझा सकता है, अगर वैसा करने की उसकी इच्छा हो तो!

और वह कौन है? अभिनेत्री। नहीं, किसी थियेटर से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। वह नाच सकती है, गा सकती है! बेशक, वोरोशीलोवग्राद में उसके ठहरने की बहुत-सी जगहें हैं। एक प्रसिद्ध उद्योगपति, गोर्लोव्का खान-मालिक की बेटी होने के कारण, वहाँ के कई सम्भ्रान्त लोगों से उसकी जान-पहचान है। सोवियत शासन ने उसके बदक़िस्मत बाप का सब कुछ छीन लिया। उसके पिता की साइबेरिया में मृत्यु हुई। वे अपने पीछे अपनी पत्नी और चार बच्चे छोड़ गये हैं-सभी लड़कियाँ हैं और सब बड़ी सुन्दर हैं। हाँ, वही सबसे छोटी है। नहीं, वह उसका आतिथ्य स्वीकार न करेगी, इससे उसके नाम पर कलंक लग जायेगा। वह उस क़िस्म की लड़की नहीं है। उसका पता? निश्चय ही वह उसे ज़रूर बता देगी, पर इस समय वह कहाँ ठहरेगी, यह वह ख़ुद ही निश्चयपूर्वक नहीं जानती। कर्नल की अनुमति से वह उसके लेफ़्टिनेण्ट से यह बात तय कर लेगी कि वे दुबारा कैसे मिल सकेंगे।

“तुम्हारी क़िस्मत मेरी से अच्छी जान पड़ती है, रुडोल्फ!”

“तब तो, हेर्र ओबेर्स्ट, मैं उससे आपकी भी सिफारिश कर दूँगा!”

“मोर्चा कितना दूर है? मोर्चे की स्थिति उस हद तक पहुँच गयी है कि उसमें किसी सुन्दरी को दिलचस्पी नहीं हो सकती है। कुछ भी हो, वह बड़े आराम से सो सकती है! हम जल्द ही स्तालिनग्राद पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। हम लोग काकेशिया में घुस चुके हैं-क्या इतना जानना काफ़ी है उसके लिए? यह उससे किसने बताया था कि अब मोर्चा ऊपरी दोन से बहुत दूर नहीं है?.. ओह, उन जर्मन अफ़सरों ने! तो इसके माने यह है कि उनमें अकेला वही बड़बोला नहीं है... कहते हैं कि सारी रूसी सुन्दरियाँ जासूस होती हैं... यह ठीक है क्या? अच्छी बात है : पर इसका कारण यह था कि मोर्चे के उस भाग में हंगेरियन सैनिक तैनात थे। बेशक वे उन बदबूदार रूमानियनों और इटालियनों से अच्छे थे, किन्तु आप उनमें से किसी का भी विश्वास नहीं कर सकते... मोर्चा असह्य रूप से विस्तृत किया जा चुका है और स्तानलिनग्राद ढेरों लोगों को निगल रहा है। और इन सब लोगों को सप्लाई करके तो देखो! मुझे अपना यह नन्हा हाथ दिखाओ और यह सब मैं तुम्हें तुम्हारी हथेली की रेखाओं में दिखा दूँगा। यह लम्बी रेखा स्तालिनग्राद जाती है और यह टूटी हुई रेखा मोज्दोक-तुम्हारा आचरण बड़ा ही अस्थिर है! अब इस सबका दस लाख गुना बढ़ाकर सोचो और तब कहीं तुम्हारी समझ में आयेगा कि जर्मन फ़ौज के क्वार्टरमास्टर की नसें फौलाद की होनी चाहिए, फौलाद की... लेकिन उसे यह नहीं समझना चाहिए कि उसकी पहुँच

सैनिकों के कपड़े-लत्ते तक ही है! बेशक, ख़ूबसूरत लड़की के लिए भी वह किसी ख़ूबसूरत चीज़ का इन्तज़ार कम कर सकता है, मसलन उन टाँगों के लिए या उस. .. उसका मतलब वह ज़रूर समझ गयी होगी। समझ गयी न? वह थोड़ा चाकलेट लेने से भी इनकार न करेगी। नहीं करेगी न? फिर वह उसके लिए शराब की कुछ चुस्कियों को इन्तज़ाम भी कर सकता है! कितनी धूल उड़ रही है!.. और एक नौजवान लड़की पियेगी नहीं, यह स्वाभाविक है। पर यह तो फ्रेंच शराब है! रुडोल्फ, कार रोको!"

कार एक बड़े से कज़्जाक गाँव के कोई दो सौ मीटर दूर ही रुक गयी। यह गाँव सड़क के दोनों ओर फैला था। सभी लोग कार से बाहर निकल आये। यहाँ से एक धूलभरी कच्ची सड़क सँकरे खड्ड के किनारे-किनारे जाती थी। ढलान के तल में बेदवृक्षों की भरमार थी। ख़ुद ढलान पर धूप से झुलसी हुई घनी घास उग रही थी। लेफ़्टिनेण्ट ने कार को खड्ड से लगी हुई सड़क पर लाने को कहा और ल्यूबा अफ़सरों से आगे-आगे दौड़ती हुई कार के पीछे हो ली। हवा उसकी फ्राक से खेल रही थी और वह उसे दोनों हाथों से कसकर पकड़े थी। उसके जूते सूखी मिट्टी में धँस-धँस जाते थे।

ल्यूबा ने लेफ़्टिनेण्ट का चेहरा नहीं देखा था, क्योंकि वह कार में अगली सीट पर इस ढंग से बैठा था कि उसे उसकी वर्दी का फीका पड़ा पिछला हिस्सा ही दिखायी पड़ रहा था। लेफ़्टिनेण्ट ने ड्राइवर के साथ मिलकर कार में से एक मुलायम चमड़े का सूटकेस और भारी-सी पीली टोकरी निकाली।

सभी लोग ढलान पर एक छाँवदार जगह में सूखी, घनी घास पर बैठ गये। हालाँकि इन अफ़सरों ने शराब पीने के लिए ल्यूबा पर काफ़ी ज़ोर दिया, फिर भी उसने नहीं पी। उसके सामने बिछे हुए मेजपोश पर इतनी बढ़िया-बढ़िया चीज़ें लगी थीं कि यदि वह उनकी ओर से आँखें मूँद लेती, तो अभिनेत्री, और उद्योगपति की बेटी होने के नाते यह उसकी निरी मूर्खता ही सिद्ध होती। अतएव उसने वहाँ भरपेट खाया।

जूतों में मिट्टी भर जाने से उसे बड़ी परेशानी हो रही थी। वह यह सोच रही थी कि किसी उद्योगपति की बेटी अपने जूते उतारकर उनमें से धूल झाड़ेगी या नहीं या लम्बे मोजे पहने हुए अपने पैरों के तलवे पोंछेगी या नहीं। आख़िर उसने यह सब किया और पैरों को आराम देने के लिए मोजे पहने ही बैठी रही। उसने ठीक किया होगा-कम-से-कम जर्मन अफ़सरों को यह उचित ही लगा।

वह यह जानने के लिए बड़ी उत्सुक थी कि क्रास्नोदोन के समीप और रोस्तोव क्षेत्र के उत्तरी भाग में कितने जर्मन डिवीजन तैनात थे। उसके घर में जो जर्मन अफ़सर रह रहे थे उनसे पता चला था कि रोस्तोव क्षेत्र का एक भाग अभी तक सोवियत

अधिकार में था। इस समय कर्नल को व्यावहारिक बातों की अपेक्षा अपने मनोरंजन की अधिक चिन्ता थी। फिर भी वह बार-बार अपनी आशंका प्रकट किये जा रही थी कि कहीं वहाँ मोर्चा न टूट जाये और वह एक बार फिर बोल्शेविकों की गुलाम न बन जाये।

जर्मन शक्ति में उसके विश्वास की इतनी कमी देखकर कर्नल को बुरा लगा और उसने उसकी उत्सुकता का समाधान कर दिया।

इतने में उन्हें पैरों की असमवेत आहटें सुनायी दीं। ये आहटें कज़्ज़ाक गाँव की दिशा से आती हुई बराबर निकट आती जा रही थीं। पहले उन्होंने उधर कोई ध्यान न दिया, किन्तु उसकी गूँज बढ़ती ही गयी। अब ऐसा लग रहा था, मानो ये आवाज़ें लोगों की लम्बी अनंत कतार से सुनायी पड़ रही हैं। सड़क पर धूल के घने बादल उड़ने लगे। हवा इन बादलों को इस गति से बहा रही थी कि खड्ड की ढलान पर बैठे हुए ये लोग तक उन्हें आसानी से देख सकते थे। फिर लोगों की छिट-पुट आवाज़ें भी सुनायी दीं-मरदों की रूखी आवाज़ें, औरतों के करुण स्वर, जिनसे ऐसा लग रहा था जैसे वे मृतकों के लिए शोक प्रगट कर रही हों।

कर्नल, लेफ़्टिनेण्ट और ल्यूबा खड़े होकर देखने लगे। रूमानियन सैनिकों और अफ़सरों के पहरे में सोवियत युद्ध-बन्दी अनन्त कतार में उक्त कज़्ज़ाक गाँव की दिशा से चौड़ी सड़क पर मार्च करते हुए चले आ रहे थे। सभी अवस्थाओं की कज़्ज़ाक लड़कियाँ और औरतें चीख़ती-चिल्लाती उस कतार की बगल में दौड़ रही थीं। कभी-कभी वे रूमानियन सैनिकों का पहरा तोड़कर अपने सामने फैले हुए बन्दियों के दुबले-पतले हाथों में रोटी के टुकड़े, कुछ टमाटर, अण्डे या पूरी की पूरी डबल रोटी अथवा कोई पोटली पकड़ा देती थीं।

बन्दी अधनंगे थे। उनके पतलून व फ़ौजी क़मीज साबुत न थे और उन पर कीचड़ और धूल की मोटी तह जम गयी थी। अधिकांश लोग नंगे पैर थे। कुछ लोगों के पैरों में छाल के जूते थे, जो इतने पुराने पड़ गये थे कि जूते जैसे लगते ही न थे। उनकी दाढ़ी बढ़ गयी थी। वे लोग इतने सूख गये थे कि उनके शरीर के कपड़े ऐसे लगते थे, मानो जीवित कंकालों पर लटके हुए हों। पाँत के साथ-साथ दौड़ती और सैनिकों के मुक्कों और बन्दूकों के कुन्दों से खदेड़ी जाती हुई चीख़ती-चिल्लाती औरतों की ओर घूमे हुए इन चेहरों पर आशापूर्ण मूस्कान भी बड़ी भयानक दीखती थी।

ल्यूबा को खड़े हुए केवल एक ही क्षण बीता होगा, कि उसने मेजपोश पर से जल्दी-जल्दी सफ़ेद रोटियाँ और खाने की चीज़ें उठायीं और फौरन धूलभरी कच्ची सड़क पर दौड़ पड़ी। वह झट से पक्की सड़क पर चढ़ आयी और घेरा तोड़ती हुई, बन्दियों के निकट जा पहुँची। उसने अपने सामने फैले हुए गन्दे हाथों में खाने की चीज़ें थमा

दीं। एक रूमानियन सार्जेंट-मेजर ने उसे पकड़ने की भी कोशिश की, किन्तु वह उसकी पकड़ से निकल गयी। फिर उस पर भारी-भारी मुक्कों की बौछार पड़ने लगी, किन्तु वह झुककर पहले एक कोहनी से, फिर दूसरी से, अपना सिर बचाने लगी।

"मारो, मारो, कुत्ते की औलाद!" वह चीख़ी, "जहाँ चाहो, सिर को छोड़कर!"

शक्तिशाली हाथों ने शीघ्र ही उसे क़ैदियों के समूह से खींचकर बाहर कर दिया। सहसा वह सड़क के किनारे आकर खड़ी हो गयी और उसने देखा कि जर्मन लेफ़्टिनेण्ट उल्टे हाथों रूमानियन सार्जेंट-मेजर के मुँह पर तमाचे जड़ रहा है और क्रोध से लाल कर्नल के आगे, जो गुर्राते हुए सींकिये कुत्ते की तरह लग रहा था, रूमानियन सेना की हल्के हरे रंग की वर्दी पहने एक फ़ौजी अफ़सर सावधान की मुद्रा में खड़ा-खड़ा आदिम रोमनों की भाषा में कुछ बड़बड़ा रहा है।

लेकिन ल्यूबा पूरी तरह स्वयं को तभी सँभाल पायी, जब अपने जूते पहनकर कार में बैठ गयी, जो अब जर्मन अफ़सरों सहित उसे वोरोशीलोवग्राद की ओर लिये जा रही थी। सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि जर्मनों ने ल्यूबा की इस हरकत को भी एक क़ुदरती चीज़ समझ रखा था।

वे बिना किसी बाधा के जर्मन कण्ट्रोल पोस्ट पार करके नगर में आ गये।

लेफ़्टिनेण्ट ने घूमकर ल्यूबा से पूछा कि वह कहाँ उतरना चाहेगी। उसने सीधे सड़क की ओर इशारा कर दिया। फिर उसने उन मकानों के एक ब्लाक के पास कार खड़ी करने को कहा, जो उसे खान-मालिक की पुत्री के लिए उपयुक्त लगा।

वह बाँह पर ओवरकोट रखे एक बिलकुल ही अपरिचित इमारत के प्रवेश द्वार पर आ गयी। उसके साथ उसका सूटकेस लिये जर्मन लेफ़्टिनेंट भी था। क्षण भर के लिए वह हिचकिचायी कि पहले लेफ़्टिनेण्ट से पीछा छुड़ाये या उसी की मौजूदगी में किसी फ्लेट का दरवाज़ा खटखटाये। उसने कुछ सकुचाते हुए लेफ़्टिनेण्ट की ओर देखा, किन्तु लेफ़्टिनेण्ट ने उसका गलत अर्थ समझा और अपना खाली हाथ उसकी कमर में डालकर उसे अपनी ओर खींच लिया। तब बिना किसी प्रकार का क्रोध प्रगट किये उसने उसके गुलाबी गाल पर कसकर एक तमाचा जड़ा और मकान की सीढ़ियाँ चढ़ गयी। लेफ़्टिनेण्ट ने इस तमाचे को भी नियामत समझा और खिसियाकर मुस्कराते हुए ल्यूबा का सूटकेस ऊपर ले आया।

दूसरी मंजिल पर पहुँचकर उसने अपनी छोटी-सी मुट्ठी सबसे निकट के द्वार पर कुछ इस ढंग से बजानी शुरू की, मानो वह दीर्घकालीन अनुपस्थिति के पश्चात घर लौटी हो। एक लम्बी और दुबली-पतली औरत ने दरवाज़ा खोल दिया। उसके चेहरे पर गर्व तथा नाराजगी के भाव झलक रहे थे और भूतपूर्व सौन्दर्य या यूँ कहें इस बात के चिह्न ज़रूर दिखायी पड़ रहे थे कि वह अपनी सूरत-शक्ल का खास ध्यान रखती

है। ल्यूबा की क़िस्मत निश्चय ही अच्छी थी!

"Danke schuhn, Herr Leutnant!"* उसने साहसपूर्वक कहा। बस, इन्हीं जर्मन शब्दों का उसे ज्ञान था। फिर उसने सूटकेस लेने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

दरवाज़ा खोलनेवाली औरत ने जर्मन लेफ़्टिनेण्ट और रंगीन फ्राक पहने हुए जर्मन लड़की को भयभीत दृष्टि से देखा।

"एक मिनट!" लेफ़्टिनेण्ट ने सूटकेस ज़मीन पर रखा, अपने कन्धे से लटके थैले से एक नोटबुक निकाली, उस पर पेंसिल से कुछ लिखा और कागज ल्यूबा को दिया।

उस पर पता लिखा था, किन्तु कुछ पढ़ने और सोचने का उसके पास समय न था कि उसके स्थान पर खान-मालिक की पुत्री किस प्रकार व्यवहार करती। उसने तुरन्त कागज अपने ब्लाउज़ के नीचे रखा, लेफ़्टिनेण्ट को देखकर लापरवाही से सिर हिलाया, उत्तर में लेफ़्टिनेण्ट ने सेल्यूट मारा, तत्पश्चात ल्यूबा ड्योढी में घुस गयी। उधर गृहस्वामिनी कई तालों, बोल्टों और जंजीरों से मकान का दरवाज़ा बन्द कर रही थी।

"माँ, कौन आया?" दूसरे कमरे से एक लड़की की आवाज़ सुनायी दी।

"ठहरो, अभी बताती हूँ!" औरत बोली।

तब एक हाथ में सूटकेस और दूसरे में ओवरकोट लिये ल्यूबा कमरे में चली आयी।

"मुझे यहाँ ठहराया गया है... तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं?" वह उस लड़की पर मैत्रीपूर्ण दृष्टि डालकर बोली और कमरे में चारों ओर देखने लगी। कमरा बड़ा और सुसज्जित था, किन्तु था कुछ-कुछ उजड़ा-सा। शायद यह किसी डाक्टर, इंजीनियर या प्रोफेसर का कमरा था, जो अब कहीं गया हुआ था।

"तो यहाँ आपको भेजा किसने?" लड़की ने साश्चर्य पूछा, "जर्मनों ने या किसी और ?"

प्रत्यक्षतः लड़की स्वयं अभी-अभी आयी थी। वह अभी तक अपनी भूरे रंग की ऊनी टोपी पहने थी और सर्द हवा से उसके गाल लाल हो रहे थे। लड़की गोल और मोटी थी। उम्र कोई चौदह साल। गला और गाल मोटे, बदन मजबूत। देखने में वह एक बड़े कुकुरमुत्ते जैसी लग रह रही थी, जिसमें मानो किसी ने दो भूरे रंग की सजीव आँखें जड़ दी थीं।

---

* आपको हार्दिक धन्यवाद, हेर्र लेफ़्टिनेण्ट!

"प्यारी तमारा!" औरत ने सख्ती से कहा, "इससे हमें कोई मतलब नहीं।"

"क्यों नहीं होगा, माँ? आख़िर उसे हमारे यहाँ ठहराया गया है। मैं तो यूँ ही पूछ रही थी।"

"माफ करना, आप जर्मन हैं?" उस औरत ने कुछ घबराकर पूछा।

"नहीं। मैं रूसी हूँ... अभिनेत्री हूँ," ल्यूबा ने सकुचाते हुए उत्तर दिया।

फिर कुछ क्षणों तक सभी चुप रहे। इस बीच उस लड़की ने ल्यूबा के बारे में अपना निश्चय कर लिया था।

"सारी रूसी अभिनेत्रियाँ बहुत पहले ही जा चुकी हैं!" वह बोली और क्रोध के मारे उफनते हुए कमरे से बाहर हो गयी।

ल्यूबा को लगा कि उसे आदि से अन्त तक वह कड़वा घूँट पीना पड़ेगा, जो अधिकृत प्रदेश में विजेता के रहने-बसने के आनन्द को विषाक्त कर देता है। फिर भी ल्यूबा ने इस फ़्लेट में उसी रूप में क़दम जमाने में अपना लाभ समझा, जिस रूप में मेजबानों ने उसे स्वीकार किया था।

"मैं यहाँ ज़्यादा नहीं ठहरूँगी। मैं अपने लिए कोई स्थायी जगह ढूँढ़ लूँगी," वह बोली। फिर भी वह चाहती थी कि घर के लोग उसके साथ कुछ नरम व्यवहार करें। "ख़ुदा की कसम, मैं जल्द ही अपना कोई इन्तज़ाम कर लूँगी! .. मैं कपड़े कहाँ बदलूँ?"

कोई आध घण्टे बाद रूसी अभिनेत्री नीली चीनांशुक पोशाक और हल्के नीले रंग के जूते पहने, बाँह पर हल्का ओवरकोट डाले नगर को दो भागों में विभाजित करनेवाले रेलवे क्रासिंग तक गयी और वहाँ से कच्ची पथरीली सड़क से होते हुए पहाड़ी पर स्थित कामेन्नी ब्रोद की दिशा में चल दी। वह नगर में दौरे पर आयी थी और अब स्थायी निवास की तलाश में थी।

अध्याय 2

इवान फ़्योदोरोविच एक सतर्क व्यक्ति था और जहाँ तक सम्भव होता गुप्त सम्पर्क पतों का इस्तेमाल नहीं करता था। इनमें वोरोशीलोवग्राद के पते भी शामिल थे। पर अब प्रथम प्रादेशिक सेक्रेटरी याकोवेंको की मौत के बाद इवान फ़्योदोरोविच के लिए वोरोशीलोवग्राद जाना अनिवार्य हो चुका था। वह हिम्मती आदमी था अतएव उसने अपनी पुरानी जान-पहचान की एक औरत से काम लेने की जोखिम उठायी। इस औरत का नाम था माशा शूबिना। वह उसकी पत्नी की सहेली थी और व्यक्तिगत जीवन में बड़ी बदनसीब रही थी, अब अकेली चुपचाप ज़िन्दगी के दिन काट रही थी।

वह इंजन-निर्माण कारख़ाने के ड्राइंग-आफ़िस में काम करती थी। इस औरत को वोरोशीलोवग्राद से इतना मोह था कि जब लोग नगर को खाली कर वहाँ से जाने लगे, तो भी उसने जाने से इनकार कर दिया। उसे दृढ़ विश्वास था कि नगर कभी जर्मनों के हाथों में न पड़ेगा और वह यहाँ रहकर किसी काम आ सकेगी।

इवान फ़्योदोरोविच ने अपनी पत्नी की सलाह से माशा शूबिना के पास जाने का निश्चय किया। वह इस निष्कर्ष पर उस रात को पहुँचा था, जब वह और उसकी पत्नी मार्फ़ा कोर्नियेंको के तहख़ाने में छिपे थे। पत्नी उसके साथ इसलिए नहीं जा सकती थी, कि उन दोनों ने वोरोशीलोवग्राद में अनेक वर्षों तक काम किया था। अब यदि उन्हें लोग साथ-साथ देख लेते, तो पति-पत्नी उनकी आँखों में चढ़ जाते। कार्य की दृष्टि से यही उचित समझा गया कि येकतेरीना पाव्लोव्ना वहीं रह जाये तथा छापेमार दलों और उस इलाके के खुफिया संगठनों से सम्पर्क बनाये रखे। वहीं तहख़ाने में ही उन्होंने निश्चय कर लिया था कि येकतेरीना पाव्लोवना एक सम्बन्धी के रूप में मार्फा के ही घर रहेगी और यदि सम्भव हुआ, तो पास-पड़ोस के किसी गाँव में अध्यापिका का काम करने लगेगी।

अब जब उन्होंने पक्का निश्चय कर लिया था, तो उन्हें महसूस हुआ कि वे जीवन में पहली बार एक दूसरे से बिछुड़ने के लिए विवश हो रहे हैं और ऐसे समय, जब कौन जाने, वे फिर कभी एक दूसरे से मिल सकेंगे या नहीं।

बहुत समय तक वे एक दूसरे की कमर में हाथ डाले चुपचाप बैठे रहे। सहसा उन्हें लगा कि इस अँधेरे और सीलभरे तहख़ाने में एक दूसरे के इतने समीप बैठे रहना उनके लिए कितना सुखद है।

उनके पारस्परिक सम्बन्ध अब ऐसे न रह गये थे जिनके लिए अनुभूतियों के बाह्य प्रदर्शन की आवश्यकता होती। उनके सम्बन्ध तो उन अनेक परिवारों के सम्बन्धों जैसे थे, जिनका आधार इसलिए ठोस और स्थायी होता है कि पति-पत्नी की एक जैसी रुचियाँ होती हैं, उन्हें अपना अपना काम पसन्द होता है, तथा वे मिलकर बच्चों की देख-भाल करते हैं। उनकी अनुभूतियाँ राख में गर्मी की ही तरह छिपी हुई थीं। हाँ, संकट के क्षणों में, दुख-सुख की घड़ियों में उनकी अनुभूतियाँ ज़रूर सतह पर आती थीं। तब उनकी आँखों के आगे वे दिन घूम जाते, जब वे लुगांस्क के बगीचों में पहली बार मिले थे; जब नगर भर में बबूल की मादक गन्ध फैली हुई थी, जब उनके यौवन में गुदगुदी पैदा करने वाला तारों जड़ा आकाश उनका स्वागत करता था; जब वे जवानी के मोहक सपने देखते थे, जब उन्होंने प्रथम संसर्ग के सुख का अनुभव किया था, जब पहला बच्चा होने पर वे खुशी से नाच उठे थे। बेशक उनको अपने स्वभाव की असंगति के पहले खट्टे फलों का स्वाद भी लेना पड़ा था।

किन्तु ये फल कितने विलक्षण थे! सिर्फ़ अस्थिर प्रकृति के लोग ये फल चखने के कारण विचलित हो सकते हैं, दृढ़ प्रकृतिवाले लोगों के दिल तो हमेशा के लिए जुड़ जाते हैं।

प्रेम के लिए जीवन की संकटकालीन परीक्षाओं की, और साथ ही प्रेम के उद्‌भव की स्मृतियों की अपेक्षा होती है। परीक्षाएँ दम्पति युगल को परस्पर आबद्ध करती हैं और स्मृतियाँ उन्हें सदा जवान रखती हैं। "याद है तुम्हें?.." शब्द सुनकर अगर आपका दिल बल्लियों उछलने लगता है, तो इसका मतलब यह है कि आपके दम्पति-जीवन की शक्ति महान है। वस्तुतः यह प्रश्न स्मृति का नहीं। यह तो यौवन का शाश्वत प्रकाश है और जीवन-मार्ग पर चलकर भविष्य में प्रवेश करने का आह्वान। वह व्यक्ति भाग्यशाली है, जिसने इस प्रकाश को अपने हृदय में संजों रखा है।

मार्फा कोर्नियेंको के तहखाने के अँधेरे में बैठे-बैठे इवान फ़्योदोरोविच और कात्या के हृदय में इसी प्रकार की सुखद अनुभूतियाँ उठा रही थीं।

वे चुप थे, किन्तु उनके दिलों में ये शब्द गूँज रहे थे : "याद है?.. तुम्हें याद है?.."

एक दिन की बात तो उन्हें विशेष रूप से याद थी। उस दिन उन्होंने प्रेम-निवेदन किया था। वे पिछले कई महीनों से एक-दूसरे से मिल रहे थे। मामला कहाँ तक पहुँच गया था, यह कात्या अच्छी तरह जानती थी। उसने यह सब जाना था उसके साहसी कार्यों और शब्दों से, किन्तु उसने उसे अपने प्रेम की घोषणा नहीं करने दी और न स्वयं ही कोई वादा किया।

एक बार प्रोत्सेंको ने उससे आग्रह किया कि वह अगले दिन उससे होस्टल के अहाते में मिले। वह प्रादेशिक पार्टी स्कूल में पढ़ रहा था। अकेली यही बात कि कात्या उससे अहाते में मिलने को राजी हो गयी थी, उसकी महान विजय थी। इसका मतलब था कि अब वह उसके मित्रों की उपस्थिति में भी नहीं घबराती थी, क्योंकि उस समय अर्थात लेक्चर के तुरन्त बाद, अहाता हमेशा विद्यार्थियों से भरा रहता था।

जब वह अहाते में पहुंची, उस समय वहाँ 'गोरोद्‌की'* खेल चल रहा था। अहाते में बड़ी भीड़ थी। प्रोत्सेंको भी खेल में हिस्सा ले रहा था। वह बहुत ख़ुश था। उस समय वह एक उक्राइनी क़मीज पहने था, कॉलर का बटन खुला था और कमर पर डोरा नहीं था। वह उसके पास दौड़ आया और कहने लगा, "कुछ इन्तज़ार करो, खेल ज़्यादा देर तक न चलेगा..." सभी विद्यार्थी उन्हीं की ओर देख रहे थे। कुछ लोगों ने

तो कात्या को आगे आकर खेल देखने की भी जगह दे दी। परन्तु उसकी आँखे

---

* स्किटल से मिलता-जुलता रूसी खेल।-सं.

बराबर प्रोत्सेंको पर ही लगी रहीं।

प्रोत्सेंको नाटे क़द का था, इसलिए वह हमेशा कुछ सकुचाती थी। किन्तु अब, पहली बार, कात्या ने भली-भाँति देखा था कि वह कितना ताकतवर, फुरतीला और शरारती है। वह बहुत बढ़िया ढंग से खेल रहा था। कात्या को लगा कि यह सब वह उसकी उपस्थिति से प्रेरित होकर ही कर रहा है। सारा वक्त वह हँसता-चहकता रहा और अपने प्रतियोगी का मज़ाक उड़ाता रहा।

लेनिन मार्ग को तब पहली बार अस्फाल्ट से पक्का किया गया था। उस दिन बड़ी गर्मी थी और वे बड़ी देर तक नरम-नरम अस्फाल्ट पर चलते रहे। वे बहुत सुखी थे। वह अभी तक अपनी उक्राइनी क़मीज पहने था, किन्तु अब उसकी डोरी उसकी कमर पर बँधी थी और उसके सुनहरे बाल उसके सिर पर लहरा रहे थे। वह बराबर बातें करता जा रहा था। उसने एक ख़ुदराफ़रोश से कुछ सूखे खजूर खरीदे। खजूर गर्म-गर्म और मीठे थे। सिर्फ़ कात्या ही खजूर खा रही थी, वह तो बातों में उलझा था। इस समय उसे यह बात साफ़-साफ़ याद आ रही थी कि उन दिनों उस पक्की सड़क पर कहीं भी कूड़ेदान न था, जिसमें वह खजूर की गुठलियाँ डाल सके। वह इन गुठलियों को बराबर अपने मुँह में ही रखे रही, इस आशा से कि यदि वे किसी एकान्त गली में मुड़ेंगे, तो वह गुठलियाँ कहीं थूक देगी।

सहसा उसने बातें करनी बन्द कर दीं और उसे ऐसी नज़रों से देखा कि वह शर्म से लाल पड़ गयी। तत्पश्चात वह बोला :

"मैं अभी तुम्हें अपनी बाँहों में भरकर यहीं सड़क पर सबके सामने चूम लूँगा!"

और वह सहसा अड़ गयी, कनखियों से उसकी ओर देखकर बोली :

"कोशिश करके देखो न! सारी गुठलियाँ तुम्हारे मुँह पर न थूक दूँ, तो कहना!"

"बहुत-सी गुठलियाँ हैं मुँह में?" उसने बड़ी गम्भीरता से पूछा।

"कोई एक दर्जन होंगी।"

"तो चलो बगीचे में चलें। चलो दौड़ चलें!.." वह कह उठा और उसे सँभलने का मौक़ा न देकर उसका हाथ पकड़ लिया और वे राह चलतों पर बिना कोई ध्यान दिये हँसते हुए बाग में दौड़ पड़े।

"याद है?... बगीचे की वह रात याद है तुम्हें?.."

तारों की छांव में लुगांस्क के बगीचे में कात्या ने पूरे विश्वास के साथ अपना गर्म चेहरा उसके मजबूत कन्धे और गरदन के बीच डाल दिया था। अब अँधेरे तहखाने में भी उसने वैसा ही किया। उसके गाल अपने पति की मुलायम दाढ़ी का स्पर्श कर रहे थे। प्रभात हो गया, फिर भी दोनों उसी तरह बैठे रहे। क्षण भर के लिए भी उन्हें झपकी नहीं आयी थी। कुछ देर के लिए प्रोत्सेंको ने कात्या को और भी ज़ोर

से अपने साथ चिपटाये रखा, फिर धीरे-से सिर उठाकर बोला :

"समय हो गया है, प्रिये... उठो मेरी प्यारी!"

किन्तु उसने फिर भी उसके कन्धे पर से अपना सिर नहीं उठाया। वे दोनों वैसे ही बैठे रहे। इतने में बाहर दिन का प्रकाश फैल गया।

इवान फ़्योदोरोविच ने कोर्नेई तीखोनोविच और उसके पोते को यह देखने के लिए मित्याकिन्स्काया के अड्डे पर भेज दिया कि दस्ते का क्या हुआ। वह देर तक बूढ़े कोर्नेई तीखोनोविच को यह निर्देश भी देता रहा कि छोटे-छोटे समूहों में किस प्रकार संघर्ष की कार्रवाइयाँ करनी चाहिए और किसानों, कज़्ज़ाकों और गाँवों में बस गये भूतपूर्व सैनिकों को किस प्रकार नये-नये छापेमार दलों में संगठित करना चाहिए।

जिस समय मार्फा उन्हें खाना दे रही थी, उसी समय उसका एक दूर का बूढ़ा रिश्तेदार किसी प्रकार बच्चों का मोर्चा तोड़कर खाने के साथ ही साथ मेज पर आ धमका। जिज्ञासु इवान फ़्योदोरोविच यह जानने के लिए तत्काल ही उस पर टूट पड़ा कि सीधा-सादा बूढ़ा किसान वस्तुस्थिति को किस दृष्टि से देखता है। यह वही अनुभवी, तपा-तपाया बूढ़ा था, जिसने कोशेवोई और उसके सम्बन्धियों के लिए गाड़ीवान का काम किया था। आख़िर, उधर से गुजरते हुए जर्मन क्वार्टमास्टरों ने उससे उसका हल्के पीले रंग का घोड़ा छीन ही लिया और दादा गाँव में अपने सम्बन्धियों के पास लौट आने को मजबूर हो गया। वह तुरन्त समझ गया कि प्रोत्सेंको कोई साधारण आदमी नहीं है और गोल-मोल बात करने लगा।

"अच्छी बात है, देखो यह इस प्रकार है... उनकी सेनाएँ तीन दिन तक लगातार यहाँ से मार्च करती हुई गुजर रही थीं। सचमुच उनकी ताकत बहुत बड़ी है! अब लाल सैनिक नहीं लौटेंगे... नहीं। बताते हैं कि वोल्गा के उस ओर, कूइबिशेव के आस-पास लड़ाई हो रही है। मास्को के इर्द-गिर्द घेरा डाल दिया गया है और लेनिनग्राद पर क़ब्ज़ा हो गया है! हिटलर का कहना है कि वह मास्कोवासियों को भूखा मारकर मास्को पर क़ब्ज़ा करेगा।"

"तुम मुझे इस बात का विश्वास कभी नहीं दिला सकते कि तुम इन अफवाहों के शिकार हो चुके हो!" इवान फ़्योदोयेविच ने कहा और उसकी आँखों में शरारती चमक आ गयी। "मेरे दोस्त, इधर देखो। मैं और तुम एक ही क़द के हैं-तुम मुझे कुछ कपड़े और जूते दोगे? बदले में मैं तुम्हें अपने दे दूँगा।"

"अच्छा तो यह बात है?'' दादा तुरन्त बात समझकर बोला। "मैं फौरन कपड़े ले आऊँगा!"

तो इस प्रकार इवान फ़्योदोरोविच बूढ़े के कपड़े पहने-पहने वोरोशीलोवग्राद में कामेन्नी ब्रोद में स्थित माशा शूबिना के कमरे में घुस गया। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई

थी, पीठ पर एक थैला लटक रहा था।

जब वह वेश बदले अपने शहर की सड़कों से होकर गुजर रहा था तो उसे एक विचित्र अनुभूति का आभास हुआ। वह वोरोशीलोवग्राद में सिर्फ़ पैदा ही न हुआ था, बल्कि वहाँ बरसों काम भी कर चुका था। उसके देखते-देखते दफ़्तरों की ढेरों इमारतें, संस्थाएँ, क्लब और आवासगृह बने थे। कुछ भवन तो उसी के प्रयासों के फलस्वरूप बने थे। उसे याद आ रहा था-जिस चौक से होकर वह इस समय गुजर रहा था, उसकी योजना नगर सोवियत के अध्यक्षमण्डल की बैठकों में बनायी गयी थी और स्वयं इवान फ़्योदोरोविच ने वहाँ पेड़-पौधे लगाने के कार्यों की देख-रेख की थी। अपने इस नगर की सार्वजनिक सेवाओं का संगठन करने से सम्बद्ध उसके समस्त व्यक्तिगत प्रयासों के बावजूद नगर पार्टी समिति में बराबर इस बात की आलोचना होती रही कि सड़कों और अहातों में काफ़ी सफाई की व्यवस्था नहीं है। और यह आलोचना उचित भी थी।

अब बमों ने कई इमारतें नष्ट कर दीं, पर प्रतिरक्षात्मक लड़ाइयों के दौरान इस पर किसी का ध्यान नहीं गया। पर बात और ही थी। पिछले कुछ हफ़्तों में नगर इतना उजड़ गया था कि लगता था जैसे नये मालिकों को स्वयं यह विश्वास न हो कि वे वहाँ हमेशा के लिए बस पायेंगे। सड़कों की न तो सफाई ही की गयी थी, न उन पर पानी का छिड़काव ही किया गया था। चौकों में लगे हुए फूल मुरझा गये थे, क्यारियों में घास-पात उग आयी थी, सिगरेटों के अधजले टुकड़े और कागज लाल-लाल धूल में जहाँ तहाँ पड़े थे।

नगर एक प्रमुख कोयला क्षेत्र समझा जाता था। पुराने दिनों में देश के अन्य बहुत-से जिलों की तुलना में इस नगर में ज़्यादा सामान आया करता था। सड़कों पर बने-ठने ख़ुशहाल लोगों की चहल-पहल रहती थी। आदमी देखते ही समझ लेता था कि यह दक्षिणी नगर है। यहाँ हमेशा ढेरों फल एवं फूल मिल सकते थे। कबूतरों के तो झुण्ड के झुण्ड रहा करते थे यहाँ। अब वह चहल-पहल तो दूर रही, लोगों के कपड़े अनाकर्षक, धूसर और एकरस बन गये थे। उन्हें देखकर लगता था कि उन्होंने नहाना-धोना तक छोड़ दिया है। बेशक, जर्मनों, इटालियनों तथा कहीं-कहीं रूमानियनों और हंगेरियनों, अर्थात दुश्मनों की वर्दियों, कन्धे की पट्टियों और बिल्लों ने वहाँ ज़रूर कृत्रिम रंगीनी बिखेर दी थी। बस सड़कों पर उन्हीं की आवाज़ें सुनायी देती थीं, और धूल के अम्बार उड़ाती, भोंपू बजाती उन्हीं की कारें दौड़ा करती थीं। आज से पहले इवान फ़्योदोरोविच के मन में नगर और उसके निवासियों प्रति इतनी गहरी सहानुभूति, इतने प्रेम की अनुभूति कभी न जगी थी।

उसे लगा जैसे वह अपने घर से निकाल दिया गया था और अब वह फिर छिप-लुककर वहाँ लौट आया है और देख रहा है कि नये मालिकों ने उसकी सम्पत्ति

का अपहरण किया है, हर उस चीज़ पर हाथ साफ़ किया है, जो उसे जान से ज़्यादा प्यारी रही है, और उसके रिश्तेदारों को अपमानित किया है। परन्तु वह उन्हें रोकने में अशक्त था, वह तो टुकुर-टुकुर देख भर सकता था, बस!

उसकी पत्नी की सहेली के चेहरे पर वैसी ही निराशा, वैसी ही उपेक्षा के भाव झलक रहे थे। वह एक फटी-पुरानी काली फ्राक पहने थी। उसके भूरे बालों का लापरवाही से जूड़ा बाँधा हुआ था। मैले पैरों में फटे-पुराने घरेलू जूते थे, स्पष्ट था कि उसे पैर धोये एक अरसा हो चुका है।

"माशा, तुममें ऐसी शिथिलता कैसे आ गयी?" इवान फ़्योदोरोविच सहसा बोल उठा।

माशा ने अपने ऊपर एक विरक्त निगाह डाली।

"सच? मैंने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया। सभी इसी तरह रहते हैं। यही बेहतर है-जर्मनों की नज़र में भी आदमी नहीं चढ़ता। और नगर में पानी भी तो नहीं..."

वह चुप हो गयी, और तब कहीं इवान फ़्योदोरोविच ने इस बात पर ध्यान दिया कि वह कितनी दुबली हो गयी है और कमरा कितना खाली-खाली लगता है! उसने सोचा शायद वह भुखमरी का शिकार होकर अपना सारा सामान कब का बेच चुकी है।

"अच्छा, आओ, कुछ खा लें... मेरी प्यारी घरवाली ने तरह-तरह के पकवान समेट लिये थे, मेरी होशियार पत्नी ने! वह लजाकर बोला और अपना थैला टटोलने लगा।

"हे भगवान, क्या यही सब कुछ है?" माशा ने अपना चेहरा अपने हाथों में ढाँप लिया। "मुझे अपने साथ कात्या के पास ले चलिये," जोश में आकर उसने कहा। "मैं पूरी शक्ति, पूरी लगन से आपकी सेवा करूँगी। मैं आपकी चाकरी तक करने की तैयार हूँ। बस, मुझे यहाँ रोज़ अपमान के ये घूँट तो न पीने पड़ें, बिना काम के घुट-घुटकर मरना तो न पड़े, बिना किसी उद्देश्य के ज़िन्दगी का बोझ तो न ढोना पड़े!"

माशा कात्या की बचपन की सहेली थी। वह प्रोत्सेंको को तब से जानती थी, जब से कात्या के साथ उसका विवाह हुआ था। फिर भी वह उससे औपचारिक ढंग से ही बातचीत करती थी। प्रोत्सेंको को पहले से अनुमान था कि वह उसके साथ दोस्तों की तरह बातचीत इसलिए नहीं कर पाती थी, कि वह एक साधारण ड्राफ़्ट्समैन रही थी, जबकि वह एक उच्चपदाधिकारी, और यह भावना उसके मन से किसी तरह निकल नहीं पाती थी।

इवान फ़्योदोरोविच के चौड़े माथे पर एक गहरा बल पड़ गया और उसकी जीवित नीली आँखों में चिन्ता तथा कठोरता के भाव आ गये।

"मैं बिना शिष्टाचार की परवाह किये तुमसे साफ़ बातें करूँगा," उसकी ओर देखे बिना प्रोत्सेंको ने कहना शुरू किया। "माशा, अगर मामला हमारा और तुम्हारा होता, तो मैं तुम्हें कात्या के पास ले चलता और तुम दोनों को छिपाकर मैं ख़ुद भी छिपकर ही रहता," वह बोला और उसके मुँह पर कटु मुस्कान छिटक गयी। "लेकिन मैं अपने राज्य का सेवक हूँ और अब यह चाहता हूँ कि तुम भी अपनी पूरी योग्यता से हमारे देश की सेवा करो। इसीलिए मैं तुम्हें यहाँ से नहीं ले जाऊँगा। इतना ही नहीं, मैं तुम्हें जोखिमभरा काम सौंपना चाहता हूँ। मुझे साफ़-साफ़ बताओ-तुम सहमत हो? तुम में इतनी ताकत है?"

"इस तरह की ज़िन्दगी से मुक्ति पाने के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ।"

"यह कोई जवाब नहीं!" इवान फ़्योदोरोविच ने सख़्ती से कहा।

"मैं तुम्हें अपनी आत्मा के उद्धार का रास्ता नहीं सुझा रहा हूँ। मैं सिर्फ़ एक बात पूछता हूँ-तुम अपनी जनता, अपने राज्य की सेवा करने को तैयार हो?"

"तैयार हूँ," वह धीरे-से बोली।

प्रोत्सेंको जल्दी से मेज पर झुका और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"यहाँ अपने लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित करना मेरे लिए बहुत ज़रूरी है, किन्तु यहाँ तो गिरफ़्तारियाँ हुई हैं और इस समय मुझे किसी पर भी भरोसा नहीं है. .. तुममें साहस और शैतान की-सी चलाकी होनी चाहिए। मैं तुम्हें कुछ गुप्त पते दूँगा और तुम इनकी जाँच करोगी। करोगी न?"

"करूँगी," वह बोली।

"अगर तुम पकड़ी गयीं और दुश्मन तुम्हें सख़्त यंत्रणा देने लगा, तो तुम हम लोगों का भेद खोल तो नहीं दोगी?"

उत्तर देने के पहले वह कुछ रुकी मानो अपनी अन्तरात्मा से राय ले रही हो।

"नहीं," वह बोली।

"तो सुनो...

और प्रोत्सेंको दिये के मद्धिम प्रकाश में उसके और भी निकट झुक आया। अब माशा को उसकी कनपटी पर एक नये घाव का निशान नज़र आया। उसने माशा को कामेन्नी ब्रोद का एक गुप्त सम्पर्क-पता दिया, जिसे वह दूसरों से अधिक विश्वास योग्य समझता था। उसे इस पते की विशेष आवश्यकता थी, क्योंकि उसके जरिये वह उक्राइनी छापेमार हेडक्वार्टर से सम्पर्क स्थापित कर सकता था और यह जान सकता था कि न सिर्फ़ उसी प्रदेश में, बल्कि सारे सोवियत देश में और अन्य सभी जगहों पर, क्या हो रहा है।

माशा ने तुरन्त ही वहाँ जाने की इच्छा प्रगट की। उसके इस भोले आत्मत्याग

और अनुभवहीनता का इवान फ़्योदोरोविच पर बड़ा असर पड़ा। उसकी आँखें चमक उठीं।

"आख़िर यह काम इस तरह कोई करता है!" उसकी वाणी में ख़ुशी और किंचित् उलाहने का पुट था। "यह काम बड़ी सफाई से होना चाहिए, जैसे फैशन स्टोर में होता है। तुम वहाँ दिन में जाओगी, खुलेआम। मैं तुम्हें सब कुछ समझा दूँगा...एक बात और, मुझे अपने बचाव का भी ध्यान रखना है! यह कमान किसका है?"

माशा ने एक छोटे-से मकान का एक कमरा किराये पर ले रखा था। मकान लोकोमोटिव कारखाने के एक पुराने कामगार का था और पत्थर का बना था। मकान के बीचोबीच से एक गलियारा जाता था, जो एक ओर से एक अहाते में निकलता था और दूसरी ओर से सड़क पर। अहाते के चारों ओर पत्थर की नीची दीवार थी। गलियारे के एक तरफ़ एक कमरा और रसोईघर पड़ता था, दूसरी तरफ़ दो छोटे कमरे थे, जिनमें से एक में माशा रहती थी। बूढ़े कामगार के बहुत-से बच्चे थे, किन्तु अब कोई भी उसके साथ न रहता था। उसके कई बेटे लाल सेना में सेवा कर रहे थे, तो कई नगर से बाहर चले गये थे। विवाहित बेटियाँ दूसरे नगरों में रहती थीं। माशा के कथानानुसार उसका मकान-मालिक गम्भीर क़िस्म का आदमी था, किताब का कीड़ा, गैर-मिलनसार, किन्तु बहुत ईमानदार।

"मैं मकान-मालिक से कह दूँगी कि आप मेरे मामा हैं और देहात से आये हैं। मेरी माँ भी उक्राइनी थीं। मैं उससे कहूँगी कि मैंने ही आपको आने के लिए लिखा था, क्योंकि अकेले में रहना मेरे लिए मुश्किल था।"

"अच्छा तो अपने मामा को अपने मकान-मालिक से मिलाओ। जरा देखें तो वह कैसा गैर-मिलनसार है," इवान फ़्योदोरोविच ने दाँत निकालते हुए कहा।

"पर यहाँ काम ही कैसा हो सकता है जब कि औजार हैं ही नहीं?" 'गैर-मिलनसार' आदमी उदास होकर बड़बड़ा रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें रह-रहकर इवान फ़्योदोरोविच की दाढ़ी और दाहिनी कनपटी के ऊपर घाव के निशान पर टिक जाती थीं। "हम दो बार फैक्टरी का साज-सामान यहाँ से देश के भीतरी इलाकों में भेज चुके हैं। फिर जर्मनों ने कई बार हम पर बम बरसाये...हमारे यहाँ इंजन और बाद में टैंक और तोपें बनती थीं। अब हम प्राइमस-स्टोवों और सिगरेट-लाइटरों की मरम्मत करते हैं...सच तो यह है कि कारखाने के कई विभागों के ढांचे बाक़ी पड़े हैं और इधर-उधर काफ़ी साज-सामान मिल भी सकता है। किन्तु इसके लिए कारखाने के सच्चे मालिकों ज़रूरत है। इस समय वहाँ जो मैनेजर हैं..." उसने अपनी दुबली-पतली बाँह हिलाते हुए कहा। "ये सबके सब तुच्छ अफ़सर हैं। मामले की तह में नहीं पहुँच सकते हैं वे, इस पर चोर हैं चोर, उचक्के। तुम्हें यकीन न होगा

लेकिन इस अकेली फ़ैक्टरी में तीन मैनेजर आ चुके हैं। क्रुप्प का प्रतिनिधि आया था, क्योंकि पहले कारखाने पर हार्टमनों का स्वामित्व हो गया था और क्रुप्प ने उनके हिस्से खरीद लिये थे। फिर रेल-प्रशासन बना और अन्त में एक बिजली कम्पनी। बेशक इस कम्पनी ने बिजलीघर पर क़ब्ज़ा कर लिया होता किन्तु हमारे लोगों ने नगर खाली करने के पहले ही उसे उड़ा दिया था...इन तीनों मालिकों ने सारे कारखाने का चक्कर लगाया और यह निश्चय किया कि वे उसे तीन भागों में बाँट लेंगे। इसे देखकर हँसी भी आती थी और रोना भी। सारी फैक्टरी नष्ट हो चुकी है और वे थे कि खूँटे गाड़-गाड़ उसे वैसे ही जगह कर रहे थे जैसे कि जार-बादशाहों के जमाने में किसान अपनी-अपनी ज़मीनों को अलग कर लेते थे। उन्होंने तो फैक्टरी के संवहन-मार्गों में सुअरों की तरह गड्ढे तक खोद लिये...तत्पश्चात सारी बची-खुची साज-सज्जा जर्मनी में अपने-अपने कारखानों में भेज दी। उन्होंने छोटी-मोटी चीज़ें ऐसे औने-पौने बेचीं मानो कबाड़खाने के व्यापारी हों। हमारे श्रमिक बस हँसते रहते है : "अफ़सरों के बार में क्या कहें!" तुम ख़ुद ही जानते हो कि पिछले कुछ वर्षो में हमारे कर्मचारी विशालकाय कार्यों को करने के आदी हो गये हैं और जहाँ तक इन मालिकों का सवाल है, इनके लिए काम करना तो दूर रहा, वे ख़ुद हमें फूटी आँखों नहीं सुहाते हैं। बेशक हम हँस लेते हैं, किन्तु सिर्फ़ इसलिए कि हम अपने आँसू छिपाना चाहते हैं..."

धुँधाती हुई मोमबत्ती के प्रकाश में चारों जने-लम्बी दाढ़ीवाला इवान फ़्योदोरोविच, माशा, जो बहुत शान्त हो गयी थी, 'गैर-मिलनसार' आदमी और एक बूढ़ी, जिसकी पीठ झुक गयी थी- कंदरावासियों की तरह लग रहे थे। उनकी भयानक परछाइयाँ एक दूसरे से मिलती, बिछुड़ती प्रायः दीवारों और छत पर चढ़ जाती थीं। 'गैर-मिलनसार' आदमी की उम्र कोई सत्तर साल की थी। दुबला-पतला बदन, नाटा-सा क़द, सिर बड़ा, सीधे तनकर बैठना भी उसे मुश्किल लग रहा था। वह नीरस लहजे में उदासी के साथ बुदबुदा रहा था। इवान फ़्योदोरोविच को उसे सुनने में मजा आ रहा था, इसलिए नहीं कि बूढ़ा अक्ल की बात कर रहा था या सच बोल रहा था, बल्कि इसलिए कि एक साधारण कामगार, संयोग से मिले एक किसान को, जर्मनों के अधीनस्थ एक औद्योगिक कारखाने का पूरा ब्योरा सुना रहा था।

इवान फ़्योदोरोविच उसके सामने अपने विचार भी प्रकट करने का लोभ संवरण न कर सका।

"मैं जिस गाँव से आया हूँ वहाँ लोग इस प्रकार सोचते हैं-दुश्मन को उक्राइन में हमारे उद्योग का विकास करने में कोई रुचि नहीं। उसके सारे उद्योग जर्मनी में हैं। उसे तो हमारा अनाज और कोयला चाहिए, बस। वह उक्राइन को अपना

उपनिवेश समझता है और हम सब को अपना गुलाम।" इवान फ़्योदोरोविच को लगा कि इस 'गैर-मिलनसार' आदमी की दृष्टि में आश्चर्य का भाव झलक उठा है। वह खीसें निपोड़ते हुए बोला, "इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि हमारे किसान इस प्रकार तर्क करते हैं। उनकी चेतना का बहुत विकास हुआ है।"

"हाँ, यह तो ठीक है..." 'गैर-मिलनसार' आदमी ने कहा। उसे इवान फ़्योदोरोविच का तर्क सुनकर कोई आश्चर्य न हुआ था। "अच्छी बात है-उपनिवेश ही सही। तो इससे नतीजा यह निकलता है कि वे गाँव में खेतीबारी के काम को आगे बढ़ा रहे हैं, है न?"

इवान फ़्योदोरोविच मृदुता से हँस दिया।

"हम जाड़े का गेहूँ जाड़े और वसन्त के गेहूँ की खूंटी लगे खेत में बोते हैं और निराई करते हैं गैंती से। अब तुम ख़ुद ही समझ लो!"

"बिलकुल ठीक!" 'गैर-मिलनसार' आदमी ने कहा। उसे फिर भी कोई आश्चर्य न हो रहा था। "कृषि वगैरह का इन्तज़ाम कैसे किया जाता है इसका उन्हें कोई इल्म नहीं...उन्हें तो लूट का पेशा इख्तियार करके जिन्दा रहने की आदत-सी पड़ गयी है। और, भगवान मुझे क्षमा करे-इस 'संस्कृति' को लेकर ये वहशी दुनिया को जीतना चाहते हैं," वह बोला, किन्तु उसकी आवाज़ में द्वेष का पुट न था।

"ओहो, दादा, तुम मुझ जैसे किसान को आसानी से मात दे सकते हो!" इवान फ़्योदोरोविच ने प्रसन्न होकर सोचा।

"क्या किसी ने आपको अपनी भतीजी के यहाँ आते देखा था?" 'गैर-मिलनसार' आदमी ने पूछा। उसके लहजे में कोई परिवर्तन न आया था।

"जी नहीं। लेकिन मैं चिन्ता क्यों करूँ? मेरे पास सारे कागजात मौजूद हैं।"

"सो तो है," उसने अनिश्चित ढंग से कहा, "लेकिन यहाँ का क़ानून यह है कि मुझे आपके आने की खबर पुलिस में करनी है। अगर आप यहाँ ज़्यादा समय तक न रहें, तो हम इस मामले को नज़रअन्दाज़ भी कर सकते हैं। इसलिए मैं आपसे सीधी-सीधी बात करूँगा, इवान फ़्योदोरोविच। मैंने आपको तुरन्त ही पहचान लिया था, क्योंकि आप अक्सर हमारे कारखाने में आया करते थे। कौन जाने कहीं किसी गद्दार की नज़र आप पर पड़ जाये..."

बेशक इवान फ़्योदोरोविच की पत्नी ठीक ही कहा करती थी कि वह शुभ मुहूर्त में पैदा हुआ है।

दूसरे दिन सुबह माशा एक गुप्त सम्पर्क-पते पर गयी और एक अजनबी को साथ लिये वापस आ गयी। इवान फ़्योदोरोविच और माशा को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस अजनबी ने 'गैर-मिलनसार' आदमी का इस ढंग से अभिवादन

किया, मानो वे अभी एक ही दिन पहले बिछुड़े हों। उसी आदमी से इवान फ़्योदोरोविच को मालूम हुआ कि इस 'गैर-मिलनसार' आदमी को यहाँ पर ख़ुफ़िया काम करने के लिए रोक लिया गया है। इवान फ़्योदोरोविच को यह भी मालूम हुआ कि जर्मन सैनिक सोवियत देश में कहाँ तक घुस आये हैं। यह बात उस समय की है जब स्तालिनग्राद का महायुद्ध आरम्भ हुआ था।

अगले कुछ दिनों में इवान फ़्योदोरोविच नगर और सारे प्रदेश में स्थापित गुप्त सम्पर्क-सूत्रों की जाँच-पड़ताल करता रहा। उसका कुछ समय सम्पर्क पुनः स्थापित करने में भी व्यतीत हुआ।

फिर एक दिन, जब उसका काम जोरों पर था, वही आदमी, जिसने नगर के ख़ुफ़िया संगठन के साथ उसका सम्पर्क स्थापित किया था, अपने साथ अभिनेत्री ल्यूबा को लाया।

ल्यूबा ने इवान फ़्योदोरोविच को उन परिस्थितियों के बारे में बताया, जिनमें क्रोस्नोदोन जेल में बन्द लोगों ने मौत का सामना किया था। वह खिन्न चित्त सारी कहानी सुनता रहा और कुछ समय तक तो उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। उसे मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को के लिए बड़ा ही दुख था। "कितने महान् कज़्ज़ाक थे वे दोनों!" उसने मन ही मन सोचा। सहसा उसकी आँखों के आगे अपनी पत्नी का चित्र घूम गया :

"वह वहाँ बिल्कुल अकेली है, कैसी है वह?..."

"हाँ..." उसने कहा, "हमारी यह ख़ुफ़िया ज़िन्दगी भी कितनी कठोर है! इससे कठोर ज़िन्दगी का अस्तित्व ही नहीं रहा कभी..." वह ल्यूबा से बातचीत करता हुआ वहीं कमरे में चहलक़दमी करने लगा। ऐसो लग रहा था मानो वह स्वयं से बातें कर रहा हो। "लोग हमारे ख़ुफ़िया संगठन की तुलना, श्वेत गार्डों के हस्तक्षेपकाल के ख़ुफ़िया संगठन से करते हैं। परन्तु दोनों का मुकाबला ही क्या? इन कसाइयों ने जो आतंक फैला रखा है, उसकी तुलना में श्वेत गार्ड तो निरे बच्चे थे। आज कल वे लाखों लोगों का सफाया कर रहे हैं...किन्तु आज हमारी श्रेष्ठता इसमें है कि हमारे ख़ुफ़िया कार्यकर्त्ताओं और छापेमारों को हमारी पार्टी, हमारी सरकार और हमारी लाल सेना का पूरा-पूरा समर्थन प्राप्त है। हमारे छापेमार अधिक जागरूक हो गये हैं। उनका संगठन भी पहले से अच्छा है, शस्त्रास्त्र और संवहन आदि भी उच्च कोटि के हैं। यह बात लोगों को साफ़-साफ़ बता देनी चाहिए...दुश्मन की कमज़ोरी यह है कि वह मन्दबुद्धि है, वह हर काम हुक्म मिलने पर समय-सारिणी के अनुसार ही करता है। वह हमारे लोगों के बीच अज्ञान के पूर्ण अन्धकार में रहता है और कुछ भी नहीं समझता...उसकी इस कमज़ोरी से फ़ायदा उठाना चाहिए!" उसने ल्यूबा के सामने रुककर कहा और

फिर कमरे का चक्कर लगाने लगा। "ये सारी बातें लोगों को समझायी जानी चाहिए, ताकि वे दुश्मन से डरना छोड़ें और उसे धोखा देना सीख लें। लोगों को संगठित किया जाना चाहिए। फिर उनमें से स्वयं लड़नेवाले लोग निकलेंगे। हर जगह ऐसे छोटे-छोटे ख़ुफ़िया दल बनने चाहिए, जो खानों व गाँवों में काम कर सकें। लोगों को जंगलो में छिपना नहीं चाहिए। हुँह! अरे हम रहते हैं दोनबास में। हमें खानों, गाँवों और जर्मन संस्थाओं तक में घुसना चाहिए, मसलन श्रम-केन्द्र, नगर-परिषद, प्रशासन, ग्रामीण सैनिक दफ़्तरों, पुलिस और गेस्टापो तक में। उनमें घुसकर हमें तोड़-फोड़, अराजकता और आतंक फैलाना और दुश्मन की सारी व्यवस्था बिगाड़ देनी चाहिए। स्थानीय श्रमिकों, किसानों और युवकों के पाँच-पाँच लोगों के छोटे-छोटे दल सभी जगह बनाने चाहिए... तभी जर्मनों के दाँत भय से बज उठेंगे!" उसने ये सारी बातें कुछ इस तरह दाँत पीसते हुए कहीं कि ल्यूबा की साँस भारी हो गयी। फिर इवान फ़्योदोरोविच को वह बात भी याद आयी जो ल्यूबा ने 'वरिष्ठ साथियों के निर्देशों के अनुसार' उसे बतायी थी। "तो इसके माने हैं कि तुम लोगों का काम ठीक चल रहा है। यही बात दूसरी जगहों पर भी है। फिर ऐसे मामलों में तो कुर्बानियाँ भी ज़रूर होती हैं... तुम्हारा नाम क्या है?" उसने पूछा और एक बार फिर उसके सामने आकर रुक गया। "ल्यूबा?... हाँ, ऐसी सुन्दर लड़की का ऐसा ही नाम होना चाहिए!" उसकी आँखें चमक उठीं, "अच्छा तो बोलो, तुम्हें और किस चीज़ की ज़रूरत है?"

ल्यूबा की आँखों के आगे उस कमरे का दृश्य घूम गया, जहाँ वे सातों एक पंक्ति में खड़े थे। खिड़की के बाहर नीचे-नीचे गहरे बादल आकाश में दौड़े जा रहे थे। आगे आनेवाले हर युवक के गालों का रंग उड़ने लगता था और शपथ लेती हुई आवाज़ इतनी ऊँची हो जाती थी कि उसकी थरथराहट तक उसी में छिप जाती थी। शपथ का मसविदा ओलेग और वान्या जेम्नुखोव ने तैयार किया था और सभी ने उसका अनुमोदन किया था, किन्तु शपथ लेते समय वह उन्हें जैसे अपने से बाहर की और अपने से ऊपर की चीज़ लगी थी तथा क़ानून से भी अधिक अटल एवं कड़ी जान पड़ी थी। ल्यूबा को ये सारी बातें याद आने लगीं और वह फिर उत्तेजित हो उठी, उसका चेहरा फिर पीला पड़ गया। उसकी बाल-सुलभ नीली आँखों में इस्पात जैसी कठोर चमक दिखायी देने लगी थी।

"हमें सलाह और मदद की ज़रूरत है," वह बोली।

"'हमें' से क्या मतलब?"

"'तरुण गार्ड' दल को। हमारा कमाण्डर लाल सेना का एक लेफ़्टिनेण्ट इवान तुर्केनिच है, जो घायल होकर दुश्मन के घेरे में पड़ गया था। हमारा कमिसार गोर्की स्कूल का छात्र ओलेग कोशेवोई है। अब तक तीस लोग निष्ठा और देशभक्ति की

शपथ ले चुके हैं। जैसे अभी-अभी आप ने कहा है, हम पाँच-पाँच के दलों में ही संघटित हुए हैं। यह सुझाव था ओलेग का..."

"ऐसा करने की सलाह उसे शायद वरिष्ठ साथियों ने ही दी होगी," इवान फ़्योदोरोविच ने कहा। वह पलक मारते ही सब कुछ समझ गया था, "जो भी हो तुम्हारा ओलेग है बड़ा फुर्तीला!.."

इवान फ़्योदोरोविच जोश में आकर मेज पर जम गया और अपने सामने ल्यूबा को बिठाकर उससे 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वार्टर के सारे सदस्यों के नाम बताने और प्रत्येक का चरित्र वर्णन करने का अनुरोध किया।

जब ल्यूबा ने स्तखोविच की चर्चा शुरू की तो उसकी भौंहें चढ़ गयीं।

"एक मिनट ठहरो," उसने ल्यूबा का हाथ छूते हुए पूछा, "उसका पहला नाम क्या है?"

"येव्गेनी।"

"वह बराबर तुम्हीं लोगों के साथ रहा है या कहीं बाहर से आया है?"

वह क्रास्नोदोन में किस प्रकार आया था और उसने अपने बारे में क्या-क्या बातें कहीं थीं, यह सब कुछ ल्यूबा ने उसे बताया।

"तुम लोग इस छोकरे से सावधान रहना। उसकी सख्ती से जाँच भी कर लेना।" इवान फ़्योदोरोविच ने ल्यूबा को बताया कि स्तखोविच किन विचित्र परिस्थितियों में दस्ते से गायब हुआ था। "कहीं ऐसा न हो कि वह जर्मनों के हाथ में पड़ा हो..." प्रोत्सेंको ने कुछ सोचते हुए कहा।

ल्यूबा का चेहरा उतर गया। उसकी चिन्ता इसलिए भी बढ़ गयी, क्योंकि वह स्तखोविच को अधिक पसन्द नहीं करती थी। कुछ क्षणों तक वह चुप रहकर इवान फ़्योदोरोविच को ताकती रही, फिर उसकी आँखें चमकीं और वह शान्त स्वर में बोली :

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। शायद वह कुछ डर गया था और भाग आया, बस!"

"तुम ऐसा क्यों सोचती हो?"

"हमारे साथी उसे बहुत दिनों से जानते हैं! वह कोमसोमोल-सदस्य है। बेशक वह बहुत घमण्डी है, किन्तु ऐसा नीच नहीं है। उसके परिवार के सब लोग भले हैं-पिता एक पुराना खान-मज़दूर है, भाई लोग पार्टी के सदस्य हैं और अब सेना में है... नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!"

इवान फ़्योदोरोविच को उसके इस असाधारण रूप से अकलुष तर्क पर आश्चर्य हुआ।

"तुम बड़ी समझदार हो!" वह बोला, किन्तु उसकी आँखों में न जाने क्यों उदासी के भाव आ गये। "एक जमाना था जब हम भी इसी तरह सोचते थे। देखो न, बात यह है," उसने वैसे ही सीधे-सरल ढंग से अपनी बात शुरू की जैसे कोई बच्चे से कहता है, "दुनिया में अब भी ढेरों ऐसे बिगड़े हुए लोग हैं जो अपने विचार कपड़ों की तरह बदल लेते हैं। कभी-कभी तो वे इन विचारों से आवरण का काम लेते हैं। फ़ासिस्ट दुनिया भर में ऐसे लाखों लोगों को ट्रेनिंग दे रहे हैं। फिर ऐसे बहुत-से लोग हैं, जो दिल के कमज़ोर हैं और जिन्हें आसानी से झुकाया जा सकता है।"

"नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता," ल्यूबा बोली। उसका आशय स्तख़ोविच से था।

"भगवान करे तुम्हारी बात सच हो! पर जब एक बार उसने बुजदिली दिखायी है, तो फिर वैसा कर सकता है!"

"मैं इसके बारे में ओलेग से बात करूँगी", उसने संक्षेप में कहा।

"तो मैंने जो कुछ तुमसे कहा है, वह सब तुम समझ गयीं न?"

ल्यूबा ने हामी भरी।

"तब इसी के अनुसार काम करो... क्या तुम उस आदमी से सम्पर्क बनाये हुए हो, जो तुम्हें यहाँ लाया था? इसी सम्पर्क को बनाये रखो।"

"धन्यवाद," ल्यूबा बोली। उसकी आँखें चमक उठीं। वे दोनों उठ खड़े हुए।

"हमारी बोल्शेविक शुभकामनाएँ 'तरुण गार्ड' दल के साथियों के पास पहुँचा देना," उसने बड़े स्नेह से ल्यूबा का सिर अपने दोनों हाथों से थामा और पहले एक आँख, फिर दूसरी आँख चूम ली। फिर धीरे-से उसे धकेलते हुए बोला, "अब जाओ!"

अध्याय 3

ल्यूबा कुछ दिनों तक वोरोशीलोवग्राद में रही, और उसी व्यक्ति के आदेशों का पालन करती रही, जिसने उसे इवान फ़्योदोरोविच से मिलाया था। इस व्यक्ति को यह बात बड़े काम की लगी कि ल्यूबा की दोस्ती एक जर्मन क्वार्टरमास्टर कर्नल और उसके एडजुटेण्ट से हो गयी है और उसके रहने का ठिकाना एक ऐसे घर में हो गया है, जहाँ लोग उसे गलत समझ रहे हैं।

उसके लिए नया कोड सीखने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उसने वायरलेस स्कूल छोड़ने से पहले जो कोड सीखा था, वही इस्तेमाल किया जा रहा था। किन्तु उसे अपने साथ एक ट्रान्समीटर रखना होगा, क्योंकि वोरोशीलोवग्राद में उसका इस्तेमाल किया जाना बड़ा कठिन हो गया था।

उसी व्यक्ति ने ल्यूबा को यह भी सिखाया कि वह समय-समय पर प्रसारण-स्थान बदलती रहे, ताकि जर्मनों को उसका पता न चल सके। मतलब यह कि उसे हर समय क्रास्नोदोन में ही नहीं रहना चाहिए, बल्कि यदा-क़दा वोरोशीलोवग्राद तथा दूसरी जगहों में भी हो आना चाहिए। अपने परिचितों से सम्पर्क बनाये रखने के अलावा, उसे नये-नये शत्रु अफ़सरों से सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए।

ल्यूबा जिस फ़्लेट में रह रही थी, उसके मालिकों से भी उसने यह समझौता कर लिया था कि जब कभी वह वोरोशीलोवग्राद आयेगी, उन्हीं के साथ रहेगी क्योंकि उसे दूसरे फ़्लेट पसन्द न आये। बेशक कुकुरमुत्ते की शक्लवाली लड़की ल्यूबा से बड़ी घृणा करती रही किन्तु उसकी माँ ने समझ लिया कि घर में जर्मनों को रखने की अपेक्षा ल्यूबा को रखना बेहतर है।

अब वापस लौटने के लिए ल्यूबा को एक बार फिर लिफ़्ट माँगने क अलावा कोई चारा नहीं था। किन्तु इस बार उसने किसी कार को रोका नहीं। उसे अब दिलचस्पी थी सैनिकोंवाली लारियों में। सैनिक अधिक आमोदप्रिय और कम उत्सुक होते हैं। इस बार उसके सूटकेस में निजी चीज़ों के अलावा एक छोटा-सा यंत्र भी था।

आख़िर उसे अस्पताल की एक सर्विस गाड़ी मिल गयी। उसने देखा कि उसमें पाँच-छह अर्दलियों के अलावा एक सीनियर और कुछ जूनियर मेडिकल अफ़सर भी थे। उन सब पर सुरूर चढ़ा हुआ था और ल्यूबा को बहुत पहले से पता था कि शराब में मस्त अफ़सरों को बेवकूफ बनाना अधिक आसान होता है।

उसे पता चला कि वे लोग मोर्चे के एक अस्पताल के लिए बड़े-बड़े चपटे डिब्बों में स्पिरिट लिये जा रहे हैं और बहुत अधिक मात्रा में। सहसा ल्यूबा के मस्तिष्क में यह विचार कौंध गया कि स्पिरिट उसके लिए भी बड़े काम की सिद्ध होगी, क्योंकि उसके सामने सभी दरवाज़े खुल सकते हैं और उसके बदले में सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

आख़िर ल्यूबा ने सीनियर मेडिकल अफ़सर को समझा-बुझा कर इस बात के लिए राजी कर लिया कि वह इतनी बड़ी और भारी गाड़ी रात के घने अन्धकार में न दौड़ाये, बल्कि रात में उसकी एक सहेली के घर क्रास्नोदोन में बिताये, जहाँ वह किसी दौरे पर जा रही है। और जब वह रात में नशे में धुत्त जर्मन अफ़सरों और सिपाहियों के साथ अपने मकान में घुसी, तो उसकी माँ सहमकर रह गयी।

जर्मन रात भर भर पीते रहे और चूँकि ल्यूबा ने अपने को अभिनेत्री कहा था, इसलिए उसे उनके लिए नाचना भी पड़ा। वह जैसे तलवार की धार पर नाचती रही और उसने अफ़सरों तथा दूसरे सैनिकों के साथ बिना किसी प्रकार का भेदभाव रखे

हँसी-मज़ाक किया और सभी को बेवकूफ बनाया। अफ़सर ल्यूबा से छेड़छाड़ करने लगे, ईर्ष्यालु सैनिकों ने हस्तेक्षप किया और अन्ततः सीनियर मेडिकल अफ़सर ने अस्पताल के एक अर्दली के पेट में एक लात जमायी।

इतने में ल्यूबा को सहसा सड़क पर पुलिस की सीटी सुनायी दी। सीटी बराबर बजती जा रही थी। कोई पुलिस का सिपाही गोर्की क्लब के आस-पास कहीं सीटी बजा रहा था। वह बिना रुके पूरी शक्ति से सीटी बजा रहा था।

ल्यूबा को तुरन्त तो यह न मालूम हो सका कि यह खतरे की सीटी है, किन्तु सीटी बराबर तेज होती गयी और उसके मकान के पास आती गयी। फिर सहसा तेज क़दमों की आहट सुनायी दी, जो तुरन्त ही बन्द हो गयी। कोई सड़क से होता हुआ लघु शंघाई की ओर दौड़ रहा था, जिसकी झोपड़ियाँ खड्ड के किनारे-किनारे बनी हुई थीं। कुछ देर बाद, सारी ताकत लागाकर सीटी बजानेवाले पुलिस के सिपाही के भारी बूटों की आवाज़ भी गूँज उठी।

ल्यूबा और वे कुछ जर्मन, जो किसी तरह चल-फिर सकते थे, दहलीज पर निकल आये। रात अँधेरी, शान्त और गर्म थी। सीटी की कर्णभेदी आवाज़ कहीं दूर जाकर मद्धिम पड़ गयी थी। सामने जलती हुई टार्च के अस्थिर प्रकाश से ही यह पता चलता था कि पुलिसवाला सड़क पर भागता चला जा रहा है। और जैसे उसके जवाब में कई स्थानों से सीटी की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं-बाजार से, खड्ड के उस पर के खुले मैदान से, पुलिस के कार्यालय से और उनसे बहुत ही दूर दूसरे लेवल-क्रॉसिंग पर से।

नशे में धुत्त जर्मन फ़ौज के मेडिकल कर्मचारी कुछ समय तक लड़खड़ाते हुए दहलीज पर चुपचाप खड़े रहे। फिर सीनियर अफ़सर ने अपने एक अर्दली से टार्च मँगायी और उसकी रोशनी उजड़े बगीचे पर फेंकने लगा, जिसके बाड़े के टूटे-फूटे अवशेष ज़मीन चाट रहे थे और लाइलैक की झाड़ियाँ धराशायी हो गयी थीं। फिर उसने अहाते में खड़ी लारी पर रोशनी फेंकी और सभी लोग अन्दर चले गये।

ठीक इसी समय ओलेग ने, जिसने पुलिसवाले को बहुत ही पीछे छोड़ दिया था, जर्मन थाने से निकलकर खड्ड के उस पार के खुले मैदान से होते हुए भागकर आनेवाले कुछ पुलिसवालों की जलती हुई टार्चें देखीं। वे उसका रास्ता रोकना चाहते थे। उसने तुरन्त यह बात समझ ली कि वह लघु शंघाई में छिपकर अपने को न बचा सकेगा, क्योंकि कुत्ते भौंक-भौककर उसे पुलिस के हाथों में सौंप देंगे। ये कुत्ते इस क्षेत्र में इसीलिए शेष बचे थे, क्योंकि कोई भी जर्मन कच्चे घरों में नहीं रहना चाहता था। जैसे ही यह विचार उसके दिमाग में आया कि वह दाहिनी ओर घूमकर वोस्मीदोमिकी मोहल्ले में घुस गया और जो भी मकान पहले मिला उसी की दीवार से सटकर खड़ा

हो गया। दो-एक मिनट बाद अपने भारी बूटों को भड़भड़ाता हुआ उसका पीछा करनेवाला पुलिस का सिपाही गुजर गया। वह ओलेग के इतने पास से गुजरा कि उसकी सीटी से उसके कान बिलकुल सुन्न हो गये।

ओलेग कुछ देर तक खड़ा रहा और फिर नज़रें बचाकर उलटे पाँव लौट पड़ा।

बेशक जब उसने क्लब की दहलीज पर एक पुलिसवाले को देख लिया, तो बहुत उत्तेजित हो उठा और ख़ुशी-ख़ुशी दौड़ पड़ा। परन्तु अब उसे खतरे का अनुभव होने लगा। बाजार और थाने के आस-पास, दूसरे लेवल-क्रॉसिंग से आ रही सीटियों की आवाज़ें ओलेग के कानों में पड़ीं। उसे यह समझने में देर न लगी कि उसने न सिर्फ़ अपने आपको बल्कि सेर्गेई और वाल्या को, स्त्योपा सफोनोव और तोस्या माश्चेंको को भी बड़ी कठिन और खतरनाक स्थिति में डाल दिया है।

ओलेग और वान्या द्वारा लिखे गये परचों को बाँटने का यह उनका पहला प्रयास था और जनता को 'तरुण गार्ड' दल के अस्तित्व की सूचना देने के लिए उठाया गया यह उनका पहला क़दम था।

स्तखोविच ने यह प्रस्ताव रखा था कि एक ही रात में नगर भर में इन परचों को चिपकाया जाये। इससे लोगों पर बड़ा जबरदस्त असर पड़ सकता था। इस प्रस्ताव को रद्द करने के लिए बहुत ज़ोर लगाना पड़ा था। ओलेग अब उसे ज़्यादा अच्छी तरह जानता था। उसे उसके इरादों के प्रति कोई सन्देह न रह गया था, किन्तु आख़िर स्तखोविच यह क्यों नहीं समझता कि एक काम को करने के लिए जितने ही अधिक आदमी आयेंगे, विफलता का खतरा उतना ही बढ़ेगा! और अफ़सोस की बात यह थी कि हमेशा की भाँति, सेर्गेई त्युलेनिन भी कड़े से कड़े क़दम उठाने की माँग कर रहा था।

पर तुर्केनिच और वान्या जेम्नुखोव ओलेग के इस प्रस्ताव के सहमत हो गये थे कि परचे पहले एक जिले में, फिर कुछ दिनों बाद दूसरे में और तत्पश्चात तीसरे जिले में चिपकाये जायें ओर इस प्रकार हर बार पुलिस को चकमा दिया जाये।

ओलेग का सुझाव था कि वे जोड़ों में बंटकर काम करें। एक आदमी परचा निकाले और दूसरा उस पर लेई लगाये, एक परचा चिपकाये और दूसरा बरतन छिपाये रहे। फिर एक लड़का और एक लड़की साथ-साथ जायें, ताकि पुलिस के हाथ पड़ने पर यह बहाना बना सकें कि उनके इस तरह बेवक्त घूमने का कारण और कुछ नहीं, आपसी मुहब्बत है।

लेई के बजाय उन्होंने शहद से काम लेने का निश्चय किया। लेई कहीं न कहीं पकानी पड़ती, जिससे पुलिस को कुछ न कुछ सुराग मिल सकता था, फिर लेई का निशान कपड़ों पर भी पड़ सकता था। इसके अलावा लेई के लिए ब्रशों ओर बरतनों

की ज़रूरत पड़ती, जिनका उठाये फिरना बड़ा बेतुका लगता। जब कि शहद को एक छोटी-सी शीशी में ले जाया सकता था।

इसके साथ ही साथ ओलेग ने दिन में, भीड़-भाड़ की जगहों पर-जैसे सिनेमाघर, बाजार या श्रम-केन्द्र में-परचे बाँटने की एक और बहुत आसान योजना बना ली थी।

रात की अपने पहली कार्रवाईयों के लिए उन्होंने खान 1 (बी) के आस-पास का मुहल्ला, उसके पड़ोस का वोस्मीदोमिकी और बाजार-स्थल चुना था। सेर्गेई और वाल्या को बाजार में काम करना था, स्त्योपा और तोस्या को वोस्मीदोमिकी मुहल्ले में और ओलेग को खान 1 (बी) वाले मुहल्ले में।

बेशक ओलेग नीना के साथ जाना चाहता था, किन्तु उसने कहा कि वह अपनी सुन्दर मामी मरीना को ही अपने साथ रखेगा।

तय यह किया गया था कि तुर्केनिच घर पर रहेगा, ताकि हर जोड़ा अपना-अपना काम पूरा कर लेने पर सारी सूचना कमाण्डर को दे दे।

पर लोगों के चले जाने के बार ओलेग ने फिर विचार किया-आख़िर एक तीन साल के बच्चे की माँ को उस बच्चे के पिता मामा कोल्या की सलाह लिये बिना, खतरे में डालने उसको क्या अधिकार है?

बेशक उसने स्वयं जो व्यवस्था की थी, उसका उल्लंघन करना ठीक न था, किन्तु उस समय तक उस पर बाल-सुलभ उत्साह सवार हो चुका था और उसने अकेले ही काम करने का निश्चय कर लिया।

शाम के समय, जब नगर में लोगों के आने-जाने पर कोई प्रतिबन्ध न था, ओलेग अपने कोट की भीतरी जेब में कुछ परचे और पतलून की जेब में शहद की एक शीशी रखकर घर से निकल गया। वह उस सड़क पर चल पड़ा, जहाँ ओस्मूखिन और जेम्नखोव रहते थे और उस खड्ड तक पहुँच गया जो खान नम्बर 5 तक जानेवाली सड़क के उस पार पड़ता था। यह वही खड्ड था जो वोस्मीदोमिकी मोहल्ले को थाने से अलग करता था और दोनों के बीच एक खुला मैदान पड़ता था। इस जगह खड्ड में कोई रहता-बसता न था। ओलेग दाहिनी ओर उसके किनारे-किनारे चलता रहा और लघु शंघाई नामक घाटी तक पहुँचने से कुछ ही पूर्व घूमकर नगर के इस भाग में फैले हुए टीलों की ओर बढ़ने लगा, जिनसे लगे-लगे वोरोशीलोवग्राद मार्ग जाता था।

टीलों में लुकते-छिपते वह उस जगह पहुँचा, जहाँ वोरोशीलोवग्राद मार्ग उस सड़क से मिलता था, जो नगर के केन्द्र से पेर्वोमाइका तक जाती थी। यहाँ वह लेटा रहा और अँधेरा होने की प्रतीक्षा करने लगा। यहीं से उसे ऊँची-ऊँची और धूप से झुलसी हुई घास में से चौराहा, बड़ी सड़क के उस पार पेर्वोमाइका की बाहरी सरहद,

विनष्ट खान 1(बी) के सिरे पर मिट्टी का बड़ा-सा ढेर, वह सड़क, जहाँ ल्यूबा शेव्त्सोवा रहती है, गोर्की क्लब, वोस्मीदोमिकी मोहल्ला, खुला मैदान, वोरोशीलोव स्कूल और थाना दिखायी पड़ रहे थे।

पुलिस की गश्ती चौकी ओलेग के बिलकुल क़रीब चौराहे पर थी और वहाँ दो सिपाही तैनात रहते थे। उनमें से एक हमेशा चौराहे पर रहता और यदि वह वक्त काटने के लिए थोड़े समय के लिए चहलक़दमी भी करता, तो बड़ी सड़क पर ही टहल लेता। दूसरा, चौराहे से अपनी गश्त शुरू करता और खान 1(बी) से होकर गोर्की क्लब की ओर सड़क से होता हुआ लघु शंघाई तक पहरा देता था।

एक और गश्ती चौकी बाजार के आस-पास थी। वहाँ भी दो पुलिसवाले तैनात रहते थे। एक हर समय बाजार में बना रहता और दूसरा बाजार से अपनी गश्त शुरू कर उस स्थान तक आया करता, जहाँ लघु शंघाई शंघाई से मिल गया था।

अँधेरी रात थी। चारों ओर इतनी नीरवता छा गयी कि हल्की-सी सरसराहट तक आसानी से सुनायी दे जाती। अब ओलेग अपनी श्रवणशक्ति से ही काम ले सकता था।

उसे खान 1(बी) के प्रवेश-द्वार पर और गोर्की क्लब में कुछ परचे चिपकाने थे। (उन्होंने रिहाइशी मकानों पर परचे न लगाने का निश्चय किया था, क्योंकि इससे उनमें रहनेवालों पर विपत्ति आ सकती थी।) ओलेग चुपके से टीलों से होता हुआ एक मकान तक आया, जो मार्ग के सिरे पर पड़ता था। खुले मैदान के उस पार, ओलेग के ठीक सामने खान 1(बी) का प्रवेश-द्वार था।

उसने गश्त लगानेवाले सिपाही और चौकीदार को परस्पर बातें करते सुना। लाइटर की लौ पर झुकते उसे उनके चेहरे भी दिखायी दे गये। उसे सिपाही के गुजर जाने तक प्रतीक्षा करनी थी, अन्यथा वह खुले मैदान में ही धर लिया जाता। किन्तु दोनों पुलिसवाले बहुत देर तक बातें करते रहे।

आख़िर गश्त लगानेवाला सिपाही चल पड़ा। उसकी टार्च समय-समय पर जल उठती और सड़क पर रोशनी फेंकने लगती। ओलेग मकान के पीछे खड़ा-खड़ा उसके पैरों की आहट सुनता रहा। जैसे ही आहट कुछ थम-सी गयी, वह सड़क पर आ गया। गश्त लगानेवाला सिपाही प्रायः सड़क पर टार्च की रोशनी फेंक रहा था। ओलेग ने उसे गोर्की क्लब के पास से गुजर जाते हुए देखा। आख़िर वह आँखों से ओझल हो गया, क्योंकि शेव्त्सोव के घर के पीछे सड़क ढलकर खड्ड तक चली जाती थी। काफ़ी दूरी पर दिखायी पड़नेवाली प्रकाश की कौंध से पता चलता था कि सिपाही समय-समय पर रोशनी जलाता जा रहा है।

सोवियत सेना के पीछे हटते समय सारी बड़ी-बड़ी खानें उड़ा दी गयी थीं। यही

दुर्गति खान 1(बी) की भी हुई थी। अब वहाँ लेफ़्टिनेण्ट श्वैदे के आदेशानुसार एक प्रशासन-कार्यालय काम करने लगा, जिसमें जर्मन खान दस्ते के अफ़सर शामिल किये गये। प्रति दिन कुछ मज़दूर भी उसके 'जीर्णोद्धार' के लिए आते थे। ये वही लोग थे, जो नगर से किसी न किसी कारण से भाग न सके थे। औपचारिक कागजात में 'जीर्णोद्धार' शब्द अहाते में कूड़ा-कबाड़ साफ़ करने की क्रिया के लिए प्रयुक्त होता था। वस्तुतः दर्जनों लोग लकड़ी की ठेलागाड़ियों में कूड़ा भर-भरकर अहाते का चक्कर लगाते रहते थे।

इस समय यहाँ सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था और खान की हर चीज़ अँधेरे की गोद में छिप गयी थी।

ओलेग ने एक परचा खान के अहाते की पत्थर की दीवार पर चिपकाया, दूसरा द्वार पर बनी कोठरी पर और तीसरा परचा बोर्ड पर-सभी तरह की घोषणाओं और आदेशों के ऊपर। वहाँ ज़्यादा देर लगाना खतरे-से खाली न था। वैसे चौकीदार की नज़र उस पर नहीं पड़ सकती थी-बूढ़ा चौकीदार रात में घोड़े बेचकर सोता था। उसे तो यह डर था कि कहीं गश्त लगानेवाला सिपाही लौटते हुए टार्च की रोशनी कोठरी की ओर न फेंके, लेकिन अभी उसके पैरों की आहट नहीं आ रही थी और उसकी टार्च की रोशनी भी नहीं दिख रही थी। सम्भवतः वह लघु शंघाई में कहीं अटक गया था।

ओलेग खुले मैदान को पार कर क्लब तक पहुँच चुका था। क्लब की इमारत लम्बी-चौड़ी तो थी, पर साथ ही नगर भर में सबसे ठण्डी और सबसे कम आरामदेह भी। वह रहने-बसने के उपयुक्त न थी, इसीलिए खाली पड़ी रहती थी। वह उस सड़क के सामने पड़ती थी, जिस पर लोग सुबह सवेरे वोस्मीदोमिकी, पेर्वोमाइका मोहल्ले तथा पास-पड़ोस के फार्मों से बाजार तक आते-जाते रहते थे। वोरोशीलोवग्राद और कामेंस्क की ओर जानेवाली मोटरें, लारियाँ इत्यादि भी इसी सड़क से जाया करती थीं।

ओलेग ने इमारत के सामनेवाले भाग पर परचा चिपकाना शुरू ही किया था कि उसे खड्ड से सड़क पर आते हुए पुलिसवाले के पैरों की आहट सुनायी दी। वह घूमकर इमारत की आड़ में हो गया और पिछली दीवार के सहारे छिप गया। पुलिस वाले के क़दमों की आहट बराबर तेज होती गयी, फिर इमारत तक पहुँची और सहसा बन्द हो गयी। ओलेग मूर्त्तिवत खड़ा रहा-एक मिनट गुजरा, फिर दूसरा, और पाँचवाँ, किन्तु पैरों की आहट न सुनायी पड़ी।

हाँ, अगर पुलिसवाले ने अपनी टार्च की रोशनी इमारत के सामनेवाले भाग पर फेंकी हो और उसकी निगाह परचों पर पड़ गयी हो और वह खड़ा-खड़ा अभी तक उन्हें पढ़ रहा हो, तो? फिर वह उन्हें फाड़ने की कोशिश करेगा और निश्चय ही उसे

यह पता चल जायेगा कि वे अभी-अभी चिपकाये गये हैं; फिर वह टार्च जलाकर इस इमारत का चक्कर लगायेगा, क्योंकि परचे चिपकानेवाला, सिवा इसी इमारत के पीछे के, अन्य कहीं नहीं छिप सकता।

ओलेग साँस रोके सुनता रहा, पर उसे सिवा अपने हृदय की धड़कन के कुछ और न सुनायी दिया। उसका मन हुआ कि सिर पर पैर रखकर भागे, किन्तु तभी उसे लगा कि इससे तो और भी मुसीबत खड़ी होगी। नहीं, पता यह लगाना चाहिए कि वह पुलिसवाला कर क्या रहा है।

ओलेग ने अपनी गर्दन निकाली। कोई आवाज़ नहीं। फिर दीवार से सटे-सटे वह दबे पाँव सड़क की ओर बढ़ने लगा। वह कई बार कुछ सुनने के लिए रुका, किन्तु वहाँ तो सर्वत्र शान्ति थी। वह इमारत के दूसरे कोने तक पहुँच गया। फिर उसने एक हाथ दीवार पर रखा और दूसरे से कोना पकड़कर सामने देखने लगा। सहसा पुराने पलस्तर का एक टकड़ा टूटकर ज़मीन पर गिर पड़ा। ओलेग को उसके गिरने की आवाज़ एक जबरदस्त धमाके की तरह लगी। तभी उसने सीढ़ियों पर जलती हुई सिगरेट की चमक देख ली और यह समझ लिया कि पुलिसवाला बैठकर कुछ आराम कर रहा है। और सिगरेट के कश लगा रहा है। जलती हुई सिगरेट का सिरा तुरन्त ऊपर को उठा, ड्योढ़ी की सीढ़ियों पर कुछ आवाज़ हुई और ओलेग झट से सड़क पर, खड्ड की ओर भागने लगा। उसी क्षण सीटी की सनसनाती हुई आवाज़ हवा में गूँज गयी। उस पर टार्च की रोशनी पड़ गयी। पर तभी वह उछला और प्रकाश के दायरे से बाहर हो गया।

सच बात तो यह है कि इस विकट स्थिति में उसने कोई काम उतावली में नहीं किया। उसने वोस्मीदोमिकी मोहल्ले में ही पुलिसवाले को एक ही मिनट में चक्कर में डाल दिया होता और खुद ल्यूबा या इवान्त्सोव लोगों के घर छिप गया होता, किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उन्हें खतरे में डालने का उसे कोई अधिकार न था। वह दिखावे के लिए बाज़ार की तरफ़ भागकर शंघाई में घुस जाता, जहाँ ख़ुद शैतान भी उसका सुराग न लगा पाता। किन्तु इससे सेर्गेई और वाल्या खतरे में पड़ सकते थे। फलतः ओलेग लघु शंघाई की ओर भागा, किन्तु परिस्थितियों ने उसे वोस्मीदोमिकी मोहल्ले में प्रवेश करने को मजबूर कर दिया था, फिर भी वह उसे मोहल्ले के अन्दर बहुत दूर तक नहीं गया कि कहीं स्त्योपा सफोनोव और तोस्या पर कोई आँच न आ जाये। फिर वह टीलों की ओर लौटा, और चौराहे पर आ गया जहाँ ड्यूटी पर तैनात सिपाही उसे किसी भी क्षण पकड़ सकता था।

उसे अपने मित्रों की चिन्ता थी और वह यह सोच-सोचकर आतंकित हो रहा था कि कहीं सारा अभियान विफल न हो जाय। फिर भी जब उसने लघु शंघाई में

कुत्तों की भों-भों सुनी, तो उस पर बाल-सुलभ शैतानी सवार हो गयी। उसने कल्पना की कि कैसे उसका पीछा करनेवाला सिपाही और पुलिसवाला मिले, कैसे वे अजनबी के निकल भागने के सम्बन्ध में बहस कर रहे हैं और टार्चों की रोशनी से पास-पड़ोस के सभी क्षेत्रों की कैसी छानमारी हो रही है।

बाजार में सीटी के आवाज़ बन्द हो चुकी थी। ओलेग एक बार फिर टीले के शिखर पर पहुँच गया था और वहाँ से टार्चों की रोशनी देखकर बता सकता था कि जिन पुलिसवालों ने उसे रोकने की कोशिश की थी वे अब खुले मैदान को पार करते हुए थाने की ओर जा रहे हैं और उसका पीछा करनेवाला सिपाही सड़क के दूरस्थ सिरे पर खड़ा हुआ वहाँ के एक मकान पर रोशनी फेंक रहा है।

तो क्या पुलिसवाले ने क्लब की इमारत पर चिपके परचों को देख लिया?... नहीं, नहीं देखा। अगर देखा होता, तो सिगरेट पीने के लिए सीढ़ियों पर न बैठता। अब वे उसकी तलाश में वोस्मीदोमिकी मोहल्ले का कोना-कोना छान मार रहे होते!

उसे कुछ मानसिक शान्ति मिल गयी।

बड़े भोर में ओलेग ने धीरे-से तीन बार तुर्केनिच की खिड़की खटखटायी। यह संकेत पहले से ही निश्चित कर लिया गया था। धीरे-से दरवाज़ा खुला। तुर्केनिच और वह दबे पाँव रसोईघर और एक ऐसे कमरे से होकर गुजरे, जहाँ कुछ लोग सो रहे थे। आख़िर वे वान्या के कमरे में पहुँचे। अलमारी के ऊपर एक दिया टिमटिमा रहा रहा था और यह बात स्पष्ट थी कि वान्या अभी तक सोया नहीं था। जब उसने ओलेग को देखा, तो कोई ख़ुशी नहीं प्रगट की। उसका चेहरा कठोर और पीला पड़ गया था।

"क-कोई पकड़ा तो नहीं गया?" ओलेग ने हकलाते हुए पूछा। उसका चेहरा उतर गया।

"नहीं, अब तो सब ठीक है," उससे दृष्टि बचाते हुए तुर्केनिच ने उत्तर दिया। "बैठ जाओ..." उसने एक स्टूल की ओर इशारा किया और ख़ुद पलंग पर बैठ गया-लग रहा था कि रात उसने कमरे में टहलकर या बिस्तर पर बैठकर ही बितायी थी।

"तो? हमें सफलता मिली?" ओलेग ने पूछा।

"हाँ," तुर्केनिच बोला। उसकी आँखें अभी भी ओलेग पर न लगी थीं, "वे सब यहीं आये थे-सेर्गेई और वाल्या, स्त्योपा और तोस्या... तो तुम अकेले ही गये थे?" तुर्केनिच ने आँखें ओलेग की ओर उठायीं और नीची कर लीं।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" ओलेग ने पूछा। उसके चेहरे पर अपराधी बालक का भाव झलक उठा।

"हम सब को तुम्हारी चिन्ता हो रही थी," वान्या ने, जैसे बात टालने के ढंग

से उत्तर दिया, "आख़िर मुझसे न रहा गया और मैंने निकोलाई निकोलायेविच के यहाँ जाकर देखा, तो मरीना घर पर ही थी... सभी छोकरे तुम्हारी प्रतीक्षा करना चाहते थे, लेकिन मैंने उन्हें मना लिया। मैंने उनसे कहा कि अगर तुम कहीं पकड़ लिये गये, हमारे यहाँ छापा मारा गया और हम सब आधी रात के समय एक ही जगह इकट्ठे मिले, तो बात ही बिगड़ जायेगी। और तुम ख़ुद जानते हो कि कल उन्हें कितना काम करना है-बाजार है, श्रम-केन्द्र है..."

ओलेग ने, दोषी के-से भाव से संक्षेप में इस बात की चर्चा की कि उसने किस प्रकार खान से क्लब जाने की जल्दी मचायी और वहाँ क्या घटना घटी। उस घटना की परिस्थितियों का उल्लेख करते समय वह काफ़ी उत्तेजित भी हो उठा।

"और आख़िर में जब सब कुछ ठीक हो गया, तो मुझे कुछ शरारत-सी सूझी। मैंने फिर वोरोशीलोव स्कूल में दो परचे और चिपका दिये..."

उसने मुस्कराकर तुर्केनिच की ओर देखा। तुर्केनिच चुपचाप उठा, उसने जेबों में दोनों हाथ डाले और कुछ क्षणों तक स्टूल पर बैठे ओलेग को देखता रहा।

"अब मैं भी तुमसे कुछ कहूँगा, बस तुम नाराज न होना..." तुर्केनिच ने मन्द आवाज़ में कहा। "इस तरह का काम करने का यह तुम्हारा पहला मौक़ा है-और यही आख़िरी भी होगा। समझे?"

"न-नहीं, मैं नहीं समझा," ओलेग बोला। "मुझे इस काम में सफलता मिली है। ऐसे काम आसान नहीं होते। यह मात्र चहलक़दमी भर नहीं है। यह एक लड़ाई है, जिसमें एक प्रतिद्वन्द्वी भी होता है!..

"बात प्रतिद्वन्द्वी की नहीं," तुर्केनिच ने कहा, "बात यह है कि यह मौक़ा बच्चों जैसी शरारत करने का नहीं है। हमें या तुम्हें इस तरह की हरकतें किसी दशा में नहीं करनी चाहिए। हाँ, भले ही मैं तुमसे बड़ा हूँ फिर भी यह बात मुझ पर भी लागू होती है। तुम जानते हो, मैं तुम्हारी इज़्ज़त करता हूँ, इसीलिए मैं तुमसे इस तरह बात कर रहा हूँ। तुम अच्छे लड़के हो और मजबूत भी, और शायद तुम मुझसे ज़्यादा जानते-बूझते हो... पर तुम बच्चे जैसा व्यवहार करते हो... वे लोग तुम्हारी मदद के लिए जाने को तैयार थे। मैंने किसी तरह उन्हें मना लिया, लेकिन जान मेरी भी खुश्क हो रही थी," खींसें निपोड़ते हुए तुर्केनिच ने कहा। "शायद तुम यह सोचते हो कि सिर्फ़ तुम्हारे लिए हम पाँच आदमियों की जान होंठों पर आ गयी थी। नहीं, नहीं, हमें चिन्ता हो रही थी कि हमारा सारा किया-धरा मिट्टी में न मिल जाये। मेरे दोस्त, अब वक्त आ गया है, जब हम यह समझ लें कि तुम तुम नहीं हो और मैं मैं नहीं। मैंने तुम्हें जाने दिया, इसके लिए मैं रात भर हाथ मलता रहा। क्या हम सचमुच छोटी-छोटी बातों के लिए, और अकारण, अपनी जान खतरे में डाल सकते हैं? नहीं,

मेरे दोस्त, नहीं, ऐसा करने का हमें कोई अधिकार नहीं! भई, तुम मुझे क्षमा करना-मैं अपना निश्चय हेडक्वार्टर से स्वीकृत कराऊँगा। संक्षेप में निश्चय यह किया जायेगा कि खास निर्देश न मिलने तक मुझे और तुम्हे अभियानों में भाग लेने की मनाही की जाये।"

ओलेग ने तुर्केनिच को बच्चों जैसी सरल किन्तु गम्भीर दृष्टि से देखा। तुर्केनिच कुछ नरम पड़कर बोला :

"देखो दोस्त, जब मैंने यह कहा कि तुम मुझसे ज़्यादा जानते हो, तो कोई गलती नहीं की," उसकी आवाज़ में दोषी भाव का पुट था। "यह बात पालन-पोषण पर निर्भर है। बचपन में मैं, सेर्गेई की तरह, नंगे पैर सड़कों पर मारा-मारा फिरता था और भले ही मैंने कुछ अध्ययन किया है, फिर भी असली ज्ञान मुझे तब प्राप्त हुआ, जब मैं प्रौढ़ हो चुका था। तुम्हीं देखो न, तुम्हारी माँ अध्यापिका है और सौतेले बाप को अच्छी राजनीतिक शिक्षा मिली थी, जब कि मेरे बूढ़े माता-पिता-खैर, तुम तो जानते ही हो. .." तुर्केनिच के चेहरे पर दया का भाव झलका और उसने दूसरे कमरे में खुलनेवाले दरवाज़े की ओर देखकर सिर हिला दिया, "अब वक्त आ गया है तुम्हारे सारे ज्ञान से लाभ उठाने का। समझे? पुलिसवालों को चिढ़ाना ऐसी बात नहीं जिस पर गर्व किया जाये। हमारे तरुण तुमसे इन बातों की आशा नहीं करते। सच पूछो..." तुर्केनिच ने कन्धे के पीछे अँगूठे से इशारा करते हुए कहा, "वे तुम पर पूरा भरोसा करते हैं!.."

"ओह, तुम बड़े चतुर हो, वान्या!" ओलेग ने साश्चर्य कहा और प्रसन्नतापूर्वक तुर्केनिच की ओर देखने लगा। "तुम ठीक कहते हो, बिलकुल ठीक!" उसने सिर हिलाया, "बेशक, तुम हेडक्वार्टर की स्वीकृति प्राप्त कर लो..."

दोनों हँस दिये।

"फिर भी तुम्हारी सफलता पर मैं तुम्हें बधाई देता हूँ-मैं तो भूल ही गया," तुर्केनिच बोला और ओलेग के हाथ मिलाने लगा।

ओलेग दिन निकलने पर ही अपने घर पहुँचा। इस बीच ल्यूबा, जो उससे ख़ुद मिलने आना चाहती थी, अपने जर्मनों को विदा कर रही थी। वह रात भर नहीं सोयी थी, फिर भी जब उसने लारी में नशे में धुत्त जर्मनों को बैठे और लारी को सड़क पर दायें-बायें पैंतरे बदलते देखा, तो वह अपनी हँसी न रोक सकी।

ल्यूबा की माँ उस पर बरस पड़ी, किन्तु जब उसने उसे स्पिरिट से भरे चार बड़े-बड़े पात्र दिखाये, तो सीधी-सादी माँ ने समझ लिया कि उसकी बेटी ने किसी उद्देश्य से ही यह सारा काम किया है। वह यह स्पिरिट रात ही में लारी से चुराकर लायी थी।

अध्याय 4

"देशवासियो! क्रोस्नोदोन के निवासियो! खान-मज़दूरो! सामूहिक किसानो!

जर्मन झूठ बोल रहे हैं। मास्को हमारा था, हमारा है और हमारा रहेगा! हिटलर का कहना है कि लड़ाई ख़त्म हो रही है। सफ़ेद झूठ है, यह, लड़ाई तो अब भड़क ही रही है। लाल सेना दोनबास में ज़रूर लौटेगी।

हिटलर हमें जर्मनी में खदेड़ रहा है, ताकि उसके कारखानों में काम करके हम अपने पिताओं, पतियों, बेटों और बेटियों के हत्यारे बनें।

अगर तुम यहीं, अपने वतन में, अपने घर में, अपने पति, बेटे या भाई को गले लगाना चाहते हो, तो जर्मनी मत जाना!

जर्मन हम पर जुल्म करते हैं, हमारे अच्छे से अच्छे लोगों को मौत के घाट उतारते हैं, ताकि हम डरकर घुटने टेक दें।

इन दुष्ट हमलावारों का सफाया करो! गुलामी की ज़िन्दगी काटने से लड़कर मरना भला!

हमारी मातृभूमि पर संकट के बादल छाये हुए हैं। परन्तु उसमें अब भी दुश्मन को खदेड़ने की ताकत मौजूद है। 'तरुण गार्ड' अपने परचों में तुम लोगों को सच्चाई से अवगत कराता रहेगा, भले ही वह सच्चाई रूस के लिए कितनी ही कटु क्यों न हो। सत्य की विजय होगी!

हमारे परचे पढ़ो, उन्हें छिपाकर रखो, उनमें लिखी बातें घर-घर और गाँव-गाँव पहुँचाओ।

जर्मन हमलावर मुर्दाबाद!

'तरुण गार्ड' ।"

यह छोटा-सा परचा, स्कूली कापी के पन्ने पर लिखा गया परचा आख़िर आया कहाँ से? और वह भीड़-भाड़ से भरे हुए बाजार के चौक के एक सिरे पर, उस नोटिस बोर्ड पर चिपका था, जिसके दोनों ओर पहले कभी जिला समाचारपत्र, 'सोत्सिआलिस्तीचेस्काया रोदिना', चिपकाया जाता था, किन्तु जहाँ अब जर्मनों के पीले और काले पोस्टर लटक रहे थे!

रविवार का दिन था। दिन निकलते ही गाँवों और कज़्ज़ाकों की बस्तियों से ढेर सारे लोग बाजार में आने लगे। कुछ लोग थैले लिये आ रहे थे, तो कुछ बोरियाँ लादे; किसी औरत ने कपड़े में एक ही चूजा लपेट रखा था, तो कुछ लोग, जिनकी तरकारियों की फसल अच्छी हुई थी, अथवा जिनके पास पिछले साल की फसल का आटा बच

रहा था, अपना-अपना सामान ठेलागाड़ियों पर लादे चले आ रहे थे। घोड़ों की तो बात ही क्या, बैल भी कहीं नज़र नहीं आ रह थे। जर्मनों ने घोड़े और बैल-सभी छीन लिये थे।

और वे ठेलागाड़ियाँ-उन्हें तो सोवियत लोग वर्षों याद रखेंगे। वे एक पहियेवाली वैसी गाड़ियाँ न थीं, जिन्हें मिट्टी लादने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। ये गाड़ियाँ दो पहियों की होती थीं, जिन पर सभी तरह का सामान लादा जाता था। वे दोनों हाथों से ढकेल-ढकेलकर खींची जाती थीं। खींचने के लिए बमों के बीच एक डण्डा लगा रहता था। जाड़े, गर्मी, बरसात अथवा धूल, कीचड़ या पाले में, हर समय हजारों लोग एक छोर से दूसरे छोर तक दोनबास पार करते समय उन्हीं को काम में लाते थे। कभी-कभी वे उन पर सामान ढोया करते थे, किन्तु अधिकतर तो आश्रय की खोज में अथवा अपनी कब्र की ओर ही जाते समय उनका प्रयोग करते थे।

प्रातःकाल से ही पास-पड़ोस के गाँवों से लोग अपनी-अपनी साग-सब्जी, अनाज, मुर्ग़ियाँ, फल और शहद बाज़ार में लाने लगे। और नगर के लोग भी सुबह से ही आ गये-किसी के हाथ में शाल थी, तो किसी के हाथ में कनटोपी, स्कर्ट, अथवा जूतों का जोड़ा, कीलें, कुल्हाड़ी, नमक, कपड़े का कोई टुकड़ा, या फीता लगी हुई कोई पुराने फैशन की पोशाक या बाप-दादा की कोई पुरानी चीज़।

ऐसे समय में मुनाफ़ा कमाने की ग़रज से बाजार जानेवाला या तो महामूर्ख ही हो सकता है या बदमाश। वहाँ तो मुसीबत और ग़रीबी के मारे लोग आते हैं। उक्राइनी भूमि पर जर्मन सिक्का ही चल रहा था, लेकिन यह कौन जानता है कि वे असली सिक्के हैं और क्या उनका मूल्य बना ही रहेगा। सच बात तो यह है कि ये सिक्के बहुत कम लोगों के पास थे। नहीं, हमारे बाप-दादों का खरीद-फरोख्त का ढंग इससे अच्छा था। संकट के समय इसी तरीके ने लोगों की सदा सहायता की थी-मैं तुम्हें यह दे दूँ, तो बदले में तुम मुझे वह दे दो...तो, सुबह से ही बाजार में हजारों की भीड़ जमा हो गयी। लोग हजारों बार एक दूसरे का चक्कर लगा रहे थे।

और बाजार के छोर पर पिछले कई वर्षों से लगे हुए नोटिस बोर्ड पर सभी की निगाहें लगी थीं। उस पर जर्मन पोस्टर पिनों से वैसे ही चिपके थे, जैसे वे पिछले कई हफ़्तों से चिपके थे। एक पोस्टर में कई फोटो एक साथ लगे थे-मास्को में जर्मन सेनाओं की परेड, पीटरपॉल किले के पास नेवा में तैरते हुए जर्मन अफ़सर, स्तालिनग्राद में वोल्गा के किनारे-किनारे सोवियत लड़कियों के हाथों में हाथ डाले जर्मन अफ़सर। और ठीक इसी पोस्टर के ऊपर लोगों ने एक सफ़ेद रंग का परचा देखा।

पहले-पहल ही व्यक्ति ने उत्सुकता प्रदर्शित की, फिर उसे दो साथी और मिल

गये, और फिर उसके इर्द-गिर्द एक छोटा-सा समूह जमा हो गया, जिसमें अधिकांश स्त्रियाँ, बूढ़े लोग और तरुण व्यक्ति थे। वे गर्दनें आगे निकाले परचा पढ़ रहे थे। ऐसे में उनकी ओर ध्यान न देकर कौन निकल सकता था, और वह भी बाजार के दिन।

अब बोर्ड के इर्द-गिर्द काफ़ी बड़ी भीड़ लग गयी। सबसे आगे के लोग चुपचाप खड़े थे और हटने का नाम न लेते थे, क्योंकि कोई अदम्य शक्ति उन्हें वह परचा बार-बार पढ़ने को बाध्य कर रही थी। और जो लाग पीछे खड़े थे वे पास पहुँचने के लिए उतावले हो रहे थे। वे शोर मचाने और क्रोध में आकर लोगों से पूछने लगे कि परचे पर लिखा क्या है। हालाँकि कोई जवाब न दे रहा था, फिर भी उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ यह जनसमूह जानता था कि स्कूली कापी के एक पन्ने पर लिखा हुआ यह परचा उन्हें कौन-सा सन्देश दे रहा है : “यह झूठ है कि जर्मन सेनाएँ लाल मैदान में परेड कर रही हैं! यह झूठ है कि पीटर-पॉल किले के पास जर्मन अफ़सर तैर रहे हैं। यह झूठ है कि वे हमारी लड़कियों के साथ स्तालिनग्राद की सड़कों पर टहल रहे हैं। यह झूठ है कि लाल सेना का अस्तित्व नहीं रहा, किस सभी मोर्चों पर अंग्रेजों के भाड़े के सैनिक, मंगोल लड़ रहे हैं!” यह सब सफ़ेद झूठ है। सच यह है कि कुछ ऐसे लोग अब भी शहर में हैं, जो सच्ची बातें जानते हैं और निर्भीक रहकर जनता को सब कुछ बताते हैं।

बाजू पर पुलिसवालों की पट्टी लगाये और चारखाने का पतलून पहने एक बेहद लम्बा आदमी भी भीड़ में शामिल हो गया। उसके पैरों में गाय के चमड़े के ऊँचे-ऊँचे बूट थे, जिनमें उसने अपना पतलून उड़स रखा था, और शरीर पर चारखाने का एक कोट था, जिसके नीचे एक मोटे पीले डोरे से पिस्तौल सहित एक भारी-सा चमड़े का खोल लटक रहा था। उसके छोटे-से सिर पर एक छज्जेदार पुरानी टोपी थी। लोग मुड़-मुड़कर उसे देखने लगे। यह व्यक्ति इग्नात फ़ोमीन था। उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया। उनके चेहरों पर क्षणिक भय अथवा चाटुकारिता का भाव झलक उठा।

सेर्गेई त्युलेनिन ने अपनी टोपी इतनी नीची कर ली कि वह आँखों पर आ गयी और फ़ोमीन की नज़र बचाकर लोगों के पीछे होता हुआ भीड़ में वास्या पिरोज्होक को खोजने लगा और जब उसकी निगाह वास्या पर पड़ी तो उसने आँखों से फ़ोमीन की ओर इशारा किया। पिरोज्होक अपना काम अच्छी तरह जानता था। वह फ़ोमीन के पीछे-पीछे ख़ुद भी नोटिस बोर्ड की ओर बढ़ रहा था।

यद्यपि पिरोज्होक और कोवल्योव पुलिस से निकाल दिये गये थे फिर भी सभी पुलिसवालों के साथ उनकी अच्छी दोस्ती थी। उनकी राय यह थी कि पिरोज्होक और

कोवल्योव ने कोई अनुचित हरकत नहीं की थी। फ़ोमीन ने अपने इर्द-गिर्द एक निगाह डाली, पिरोज्होक को पहचाना, लेकिन उसके साथ बात नहीं की। वे दोनों नोटिस की ओर बढ़ने लगे। फ़ोमीन ने परचा नाख़ून से खरोंचकर उतारने की कोशिश की, पर वह तो जर्मन पोस्टर के साथ इतनी बुरी तरह चिपका था कि निकलने का नाम ही न ले रहा था। वह पोस्टर को भेदकर ही परचा निकाल पाया। और उसे मोड़-माड़कर उसने अपने कोट की जेब में रख लिया।

"यहाँ क्यों भीड़ लगाये हो तुम सब? क्या घूर रहे हो? दफ़ा हो जाओ!" वह भुनभुनाया और हिजड़ों का-सा पीला चेहरा भीड़ की ओर घुमा दिया। उसकी छोटी, धूसर आँखे झुर्रीदार कोयों में से निकली जा रही थीं।

पिरोज्होक फ़ोमीन के इर्द-गिर्द काले सांप की तरह बल खाते हुए चिल्ला उठा।

"सुन रहे हो? देवियो और सज्जनो, अजी चलते-फिरते नज़र आओ! तभी ठीक रहेगा।"

फ़ोमीन ने अपने लम्बे-लम्बे बाजू फैलाये और भीड़ के बीचोंबीच खंभे की तरह जम गया। पिरोज्होक तुरन्त उससे सट-सा गया। भीड़ छँट गयी, लोग सभी दिशाओं में भागने लगे। पिरोज्होक भी आगे-आगे भागा।

फ़ोमीन, उदास मन, चमड़े के भारी-भारी बूट घिसटते हुए जा रहा था। लोग कुछ समय के लिए अपनी अपनी सौदेबाजी बन्द कर भय, आश्चर्य तथा द्वेष से उसकी पीठ ताक रहे थे। फ़ोमीन की पीठ पर, चारख़ानेदार कोट के ऊपर, मोटे-मोटे अक्षरों में छपी एक नोटिस चिपकी थी :

"तुम सासिज के एक टुकड़े के लिए, एक घूँट वोदका के लिए, सस्ते तम्बाकू के एक पैकेट के लिए हमारे लोगों को जर्मनों के हाथ बेच रहे हो। लेकिन तुम्हें इसकी क़ीमत चुकानी पड़ेगी अपनी इस दुष्ट ज़िन्दगी से! ख़बरदार!"

किसी ने भी उसे नहीं रोका और वह बाजार पार करता हुआ थाने की ओर चल दिया। गम्भीर चेतावनी बराबर उसकी पीठ से चिपकी रही।

सेर्गेई का हल्का घुँघराला और पिरोज्होक का काला सिर कभी कहीं ऊपर उठते फिर बाजार की भीड़ में इधर-उधर गायब हो जाते, अपने-अपने रहस्यपूर्ण मार्गों पर घूमनेवाले पुच्छल तारों की भाँति वहीं घूमने लगते। वे अकेले नहीं थे-कभी-कभी लोगों की चलती-फिरती भीड़ में से तोस्या माश्चेंको का भी भूरे बालोंवाला सिर दिखने लगता। वह एक शान्त लड़की थी। साफ़-सुथरी पोशाक, चतुर आँखें। और वहीं पास ही कहीं सुनहरे बालोंवाला उसका साथी स्त्योपा सफोनोव भी मँडराता रहता। सेर्गेई की पैनी आँखें भीड़ में वीत्या लुक्याँचेंको की गहरी, स्निग्ध आँखों से चार होतीं और तुरन्त हट जातीं। सुनहरी चोटियोंवाली वाल्या बोर्त्स भी दूकानों और सामान से लदी

मेजों का देर तक चक्कर लगाती रही। उसके हाथ में एक टोकरी थी, जिस पर मोटा-सा तौलिया रखा था, किन्तु किसी ने भी यह नहीं देखा कि वह क्या बेचती थी या क्या खरीदती थी।

लोगों को अपने-अपने थैलों या खाली बोरों में, किसी बेंच पर, अथवा पातगोभी या पीली-हरी धारियोंवाले तरबूजों के नीचे पड़े परचे मिल जाते। कभी-कभी वह परचा न होकर कागज की एक पतली-सी पट्टी होती, जिस पर लिखा होता :

"हिटलर के 200 ग्राम मुर्दाबाद! सोवियत किलोग्राम ज़िन्दाबाद!"

और लोगों के दिल पसीज उठते।

सेर्गेई ने कई बार दूकानों के चक्कर लगाये और उस भीड़ में भी गया, जहाँ चीज़ों की हाथों हाथ अदला-बदली हो रही थी। सहसा नगर अस्पताल की डाक्टर, नताल्या अलेक्सेयेव्ना से उसकी आमने-सामने भेंट हो गयी। वह धूल-धूसरित स्लीपर पहने, अपने नन्हे गुदगुदे हाथों में औरतों के जूतों का एक पुराना जोड़ा लिये बेचनेवालियों की कतार में खड़ी थी। सेर्गेई को पहचानते ही वह घबरा-सी गयी।

"नमस्ते!" वह बोला और हड़बड़ाकर अपनी टोपी उतार ली।

नताल्या अलेक्सेयेव्ना की आँखों में फौरन वह प्रत्यक्ष, निर्मम और व्यावहारिक भाव झलक उठा, जिससे वह बहुत अच्छी तरह परिचित था। उसने झट-पट चतुराई से कागज में जूते लपेटे और बोली :

"बहुत ख़ूब! मुझे इस वक्त तुम्हारी ही ज़रूरत है।"

सेर्गेई और वाल्या को साथ-साथ बाजार से निकलकर श्रम-केन्द्र जाना था। वहाँ से युवक-युवतियों का पहला जत्था, जो जबरन जर्मनी भेजा जा रहा था, वेर्ख्नेदुवान्नाया स्टेशन रवाना होनेवाला था। सहसा वाल्या ने सेर्गेई को एक गोल-मटोल और नाटे क़द की लड़की के साथ बाजार की भीड़ से निकलते देखा। वे ली-फान-ची के झोपड़ों की ओर बढ़कर उसकी नज़रों से ओझल हो गये। वाल्या एक गर्वीली युवती थी, अतः उसने उनके पीछे लगना ठीक न समझा। उसका गदराया ऊपरी होंठ कुछ-कुछ हिला और उसकी आँखों में रुक्षता का भाव झलक उठा। उसकी टोकरी में आलुओं के नीचे कुछ परचे शेष बचे थे। ये उस जगह के लिए थे, जहाँ उसे अभी जाना था। अतएव वह टोकरी लेकर बड़े गर्व के साथ श्रम-केन्द्र की ओर चल दी।

टीले पर, श्रम-केन्द्र की सफ़ेद इकमंजिला इमारत के सामने के छोटे-से खुले मैदान में जर्मन सैनिकों ने घेरा डाल रखा था। अपने वतन से दूर जाने वाले युवक-युवतियाँ, उनके माता-पिता और अन्य सम्बन्धी सन्दूक और गठरियाँ लिये घेरे के बाहर टीले की ढलानों पर खड़े थे। उन्हीं के साथ और भी ऐसे बहुत-से लोग खड़े थे, जो वहाँ केवल कुतूहलवश आ गये थे।

पिछले कुछ दिनों से आसमान पर बादल छाये हुए थे। प्रातःकाल जो तेज हवा चली थी, वह बादल बहाये लिये जा रही थी। वर्षा किसी तरह न हो पा रही थी। हवा टीले की ढालों पर खड़ी हुई औरतों और लड़कियों के रंग-बिरंगे स्कर्टों से खेलती, जिला कार्यकारिणी समिति और 'पगले रईस' के घर की दिशा में धूल के बगूले उड़ाये जा रही थी।

स्त्रियों, लड़कियों और युवकों का यह समूह निष्चेष्ट और दुखी था। यह एक करुण दृश्य था। वे लोग बातें भी या तो बहुत धीरे-धीरे करते थे या फुसफसाते हुए। उन्हें ज़ोर से रोने में भी भय लगता था। माँ अपने आँसू हाथ से पोंछ लेती थी और बेटी रूमाल आँखों पर दबा लेती थी।

वाल्या भीड़ के एक छोर पर आकर टीले की ढाल पर खड़ी हो गयी। वहाँ से उसे खान 1(बी) और रेलवे लाइन का एक भाग दिखायी दे रहे थे।

नगर के भिन्न-भिन्न भागों से अधिकाधिक लोग चले आ रहे थे। प्रायः वे सब नौजवान भी वहाँ आ चुके थे, जिन्होंने बाजार में परचे बाँटे थे। सहसा वाल्या की नज़र सेर्गेई पर पड़ी-वह सिर नीचा किये मेड़ पर चलता हुआ आ रहा था, ताकि हवा उसकी टोपी न उड़ा ले जाये। एक क्षण के लिए वह आँखों से ओझल हुआ और फिर टीले के मोड़ पर दिखायी दिया। वह बिना रास्ता पकड़े आ रहा था। उसने भीड़ पर एक पैनी-सी दृष्टि डाली और दूर से ही वाल्या को पहचान लिया। लड़की का गदराया ऊपरी होंठ काँप उठा।

वाल्या ने उसे देखा-अनदेखा कर दिया।

"वह नताल्या अलेक्सेयेव्ना थी," उसने धीरे-से कहा।

तत्पश्चात् वह झुका और उसके कान में फुसफुसाकर बोला :

"क्रास्नोदोन की खनिक बस्ती में छोकरों का पूरा जत्था है... वह अपने आप ही काम कर रहा है...ओलेग से कह देना..."

वाल्या 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर की एक सन्देशवाहिका थी। उसने हामी भरते हुए सिर हिलाया। तभी उनकी नज़र वोस्मीदोमिकी से सड़क पर आती हुई ऊल्या ग्रोमोवा पर पड़ी। उसके साथ कोई अजनबी लड़की थी, जो मुलायम ऊनी टोपी और ओवरकोट पहले थी। वे दोनों एक सूटकेस उठाये हुए थीं।

"अगर उधर जाना पड़ा तो तुम चलोगी?" सेर्गेई फुसफुसाया।

वाल्या ने हामी भरते हुए सिर हिला दिया।

श्रम-केन्द्र के डायरेक्टर अपर-लेफ़्टिनेण्ट श्प्रीक को सहसा ख़याल आया कि युवक-युवतियाँ घेरे से बाहर अपने सम्बन्धियों के साथ वैसे ही खड़े रहेंगे। डायरेक्टर की दाढ़ी सफाचट बनायी हुई थी। वह गर्मी के मौसम में दफ़्तर में और सड़कों पर

टहलते समय चमड़े का जाँघिया पहनता था। किन्तु इस समय उसने पूरी वर्दी पहन रखी थी। वह अपने क्लर्क को साथ लिये सायबान में आ गया और चिल्लाकर बोला कि जिन लोगों को जाना है, वे अपने कागजात ले लें। क्लर्क ने ये निर्देश उक्राइनी भाषा में दुहरा दिये।

जर्मन सैनिकों ने जानेवालों के माता-पिताओं, सम्बन्धियों तथा मित्रों को घेरे के अन्दर नहीं आने दिया। विदाई शुरू हो चुकी थी। माँ और बेटियाँ अब ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। युवक किसी तरह अपने पर नियंत्रण रख पा रहे थे, किन्तु जब उनकी माताएँ, दादियाँ या बहनें उनसे लिपट गयीं, तो उनके चेहरों का रंग उड़ गया। उनके बूढ़े पिता, जिन्होंने बरसों खानों में काम किया था और कई बार मौत का सामना किया था, हताश दिखायी पड़ रहे थे। उनके आँसू बह-बहकर उनकी मूँछों से टपकने लगे थे, जिन्हें वे बार-बार हथेली से पोंछ डालते।

"यही समय है..." सेर्गेई ने कठोरता से कहा। वह वाल्या ने अपनी उत्तेजना छिपाने का प्रयास कर रहा था।

वाल्या मुश्किल-से ही ख़ुद को सँभाल पा रही थी। सेर्गेई ने क्या कहा था यह भी वह ठीक से न सुन सकी थी। वह यंत्रवत भीड़ में घुसी, यंत्रवत आलुओं के नीचे टटोलकर चौहरा परचा निकालने और उन्हें किसी के आवरकोट की जेब में, तो किसी के कोट की जेब में या किसी सूटकेस के हैंडिल के नीचे अथवा किसी टोकरी में डालने लगी।

घेरे के पास ही, सहसा, श्रम-केन्द्र की दिशा से आता हुआ भीड़ का एक रेला वाल्या को पीछे खदेड़ ले गया। उस भीड़ में उन किशोरों, स्त्रियों और युवतियों की संख्या कम न थी, जो किसी न किसी को विदा करने आये थे। कई ऐसे लोग इत्तिफाक से घेरे में चले गये थे और अब वहाँ से निकल न पा रहे थे। इस घटना से जर्मन सिपाहियों का इतना मनबहलाव हुआ कि वे अपने पास खड़े हुए लड़के-लड़कियों को पकड़-पकडकर घेरे के भीतर घसीटने लगे। चारों ओर चिल्ल-पों मच उठी। एक औरत को तो दौरा पड़ गया। भयभीत लोग घेरे से दूर भाग रहे थे।

इसी बीच कहीं से सेर्गेई आ टपका। उसके चेहरे पर क्रोध और व्यथा के भाव स्पष्ट दीख रहे थे। उसने वाल्या का हाथ पकड़ा और उसे भीड़ से बाहर खींच लाया। सहसा उनका सामना नीना इवान्त्सोवा से हो गया।

"भगवान का शुक्र है। वरना इन राक्षसों ने तो..." उसने दोनों के हाथ अपने बड़े-बड़े साँवले हाथों में ले लिये। "कशूक के घर। आज शाम को पाँच बजे... जेम्नुखोव और स्तखोविच को भी सूचित कर देना," वह वाल्या के कान में फुसफुसायी। "तुमने ऊल्या को तो नहीं देखा?" और वह ऊल्या की तलाश में निकल

गयी। वाल्या बोर्त्स की ही भाँति नीना इवान्त्सोवा भी हेडक्वार्टर की एक सन्देशवाहिका थी।

कुछ क्षणों तक वाल्या और सेर्गेई साथ-साथ खड़े रहे। वे एक-दूसरे को छोड़ना नहीं चाहते थे। सेर्गेई को देखकर लग रहा था जैसे वह कोई बड़ी ही आवश्यक बात कहना चाहता है, फिर भी उसने कुछ नहीं कहा।

"तो अब मैं चली," वाल्या ने धीरे-से कहा।

किन्तु कुछ क्षणों तक जहाँ की तहाँ खड़ी रही, फिर सेर्गेई की ओर देखकर मुस्करायी, इधर-उधर एक निगाह डाली, शर्मायी-लजाई और टोकरी हाथ में लिये टीले से नीचे दौड़ चली।

ऊल्या घेरे के बिलकुल पास खड़ी, श्रम-केन्द्र की इमारत से वाल्या फिलातोवा के पुनः बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रही थी। जिस जर्मन सिपाही ने वाल्या को, मय उसके सूटकेस के, घेरे में जाने दिया था वही ऊल्या का हाथ भी पकड़ने के लिए आगे बढ़ा था। पर ऊल्या ने सिपाही की ओर बड़ी रुखाई और घृणा से देखा। एक क्षण के लिए दोनों की निगाहें मिलीं। ऊल्या को सैनिक की दृष्टि में मानो मानव संवेदना का भाव दिखायी दिया। सैनिक से उसे छोड़ दिया और सहसा एक सुनहरे बालोंवाली जवान औरत पर गुर्रा उठा, जो अपने सोलह साल के बेटे को अपने से अलग न कर पा रही थी। आख़िर उसने किसी प्रकार बेटे को छोड़ा और तब कहीं पता चला कि वस्तुतः जर्मन उस औरत को लिये जा रहे थे, न कि उसके बेटे को। जब युवक ने माँ को हाथ में बंडल लिये इमारत में घुसते और दहलीज से अन्तिम बार मुस्कराते हुए देखा, तो वह बच्चे की तरह फूट-फूटकर रो पड़ा।

...ऊल्या और वाल्या दोनों फिलातोव परिवार के एक छोटे-से कमरे में एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले रात भर बैठी रहीं। कमरे में शरद के फूलों की प्रचुरता थी। वहाँ वाल्या की बूढ़ी माँ बार-बार आ जाती और उनके बाल सहलाती, उन्हें चूमती अथवा बेटी के सन्दूक की चीज़ें छाँटने लगती। फिर जाकर कोने में पड़ी एक आराम-कुर्सी पर चुपचाप बैठ जाती। अब वाल्या उसे बिलकुल अकेली छोड़कर जा रही थी।

वाल्या रो-रोकर कमज़ोर हो गयी थी और ऊल्या की बाँहों में पड़ी रह-रहकर काँप उठती थी। परन्तु अब पहले से शान्त थी। उनकी जुदाई अवश्यम्भावी थी। यह जानकर ऊल्या का दिल पसीज गया और ऐसा लगा कि वह कुछ ही क्षणों में प्रौढ़ हो चुकी है। वह एक बच्ची और एक माँ की तरह धीरे-धीरे वाल्या का सिर थपथपाने लगी।

अँधेरे कमरे में बैठी हुई दोनों लड़कियों और माँ का चेहरा और हाथ दिये के

प्रकाश में मुश्किल से ही दिखायी पड़ रहे थे।

काश! यह सब कुछ वह अपनी आँखों से न देखती-किस प्रकार वाल्या माँ से विदा हुई, किस प्रकार सरसराती हुई हवा में उसने सूटकेस लेकर, अनन्त दूरी पैदल पार की और किस प्रकार जर्मन सिपाहियों के घेरे के पास वे अन्तिम बार एक-दूसरे से गले मिलीं।

बेशक यह सभी कुछ हुआ था...अब तो ऐसी बातें होती ही रहेंगी...ऊल्या के चेहरे पर गम्भीरता और शक्ति का भाव था। वह जर्मन सैनिकों के घेरे के पास ही खड़ी थी और उसकी आँखें श्रम-केन्द्र के द्वार पर लगी थीं।

घेरे के अन्दर जो लड़के, लड़कियाँ और जवान औरतें पहुँची, उन्हें एक मोटे-से कारपोरल ने यह आज्ञा सुनायी कि वे अपने-अपने बण्डल और सूटकेस अहाते में दीवार के सहारे रख दें। उन्हें यह भी बताया गया कि उनकी ये सारी चीज़ें एक लारी पर लाद दी जायेंगी। फिर वे सब अन्दर गये जहाँ अपर-लेफ़्टिनेण्ट के निरीक्षण में नेम्चीनोवा ने प्रत्येक यात्री को एक-एक कार्ड दिया। यह कार्ड उन्हें जर्मन अधिकारियों को दिखाकर अपना परिचय देने के लिए दिया गया था। इस कार्ड पर न तो व्यक्ति का नाम ही था, न उसका कुलनाम। बस लिखा था नम्बर और नगर का नाम। इसके अतिरिक्त उन्हें कोई परिचय-पत्र नहीं दिया गया। कार्ड प्राप्त करने पर वे भवन से निकल आते थे और कारपोरल उन्हें खुले मैदान में पंक्तियों से खड़ा कर देता था।

आख़िर वाल्या फिलातोवा दरवाज़े पर दिखायी दी। उसने अपनी सहेली को देखने के लिए इर्द-गिर्द एक दृष्टि डाली और उसकी ओर बढ़ गयी। पर कोरपोरल ने उसकी बाँह पकड़ी और उसे पंक्तियों की ओर ढकेल दिया। उसे तीसरी या चौथी पंक्ति में बहुत दूर एक सिरे पर खड़ा किया गया। अब दोनों सहेलियाँ एक-दूसरे को देख भी न पा रही थीं।

इस कल्पनातीत विछोह की कटुता से लोगों के मानो स्नेह प्रदर्शन का अधिकार-सा मिल गया। भीड़ में खड़ी हुई औरतों ने चिल्ला-चिल्लाकर अपने-अपने बच्चों को विदा अथवा सीख के अन्तिम शब्द सुनाते हुए घेरा तोड़ने की कोशिश की। उन पंक्तियों में खड़े हुए युवक-युवतियाँ-जिनमें अधिकांश युवतियाँ थीं-पराये-से हो चुके थे-वे धीरे-धीरे ज़वाब दे रहे थे या अपना रूमाल भर हिला देते थे। आँसू की धारें उनके चेहरों पर बह रही थीं और आँखें अपने लिए प्रिय चेहरों पर जमी थीं।

अन्ततः अपर-लेफ़्टिनेण्ट श्प्रीक हाथ में एक बड़ा-सा पीला पैकेट लिये भवन से बाहर निकला। भीड़ शान्त हो गयी। सभी लोगों की नज़रें उसी की ओर घूम गयीं।

"Still gestanden!"* अपर-लेफ़्टिनेण्ट ने हुक्म दिया।

"Still gestanden!" कर्कश आवाज़ में कारपोरल ने वही हुक्म दुहराया।

सारा जत्था मूर्तिवत खड़ा हो गया। अपर-लेफ़्टिनेण्ट श्प्रीक पंक्तियों का चक्कर लगाने लगा। जत्थे के लोग चार-चार की लाइन में खड़े किये गये थे। वह उन्हें अपनी मोटी और गठीली उँगलियाँ लगाता हुआ गिन रहा था। जत्थे में दो सौ से अधिक व्यक्ति थे।

अपर-लेफ़्टिनेण्ट ने अपना पैकेट मोटे कारपोरल को थमाकर हाथ हिला दिया। सैनिकों का एक दस्ता भीड़ हटाने के लिए आगे बढ़ा-भीड़ के कारण सारी सड़क बन्द-सी हो गयी थी। कारपोरल की आज्ञा होते ही सारा जत्था धीरे-धीरे मुड़ा, अनिच्छापूर्वक आगे बढ़ा और पहरे में सड़क पर चलने लगा। मोटा कारपोरल आगे-आगे चल रहा था।

सैनिक जनसमूह को पीछे हटा रहे थे, फिर भी वह पाँत के दोनों ओर बढ़ता चला जा रहा था। लोग रो रहे थे, सिसक रहे थे, चिल्ला रहे थे और उनका विलाप हवा में गूँज रहा था।

ऊल्या दबे पाँव चल रही थी। उसकी आँखें पाँत में वाल्या को ढूँढ़ रही थीं। आख़िर उसे वाल्या दिख गयी।

वाल्या आँखें फाड़े सड़क के दोनों ओर अपनी सहेली को ढूढ़ रही थी और इस अन्तिम क्षण में उसे न देख सकने के कारण वह व्यथित हो उठी।

"मैं यह रही, यहाँ, प्यारी वाल्या!" ऊल्या चिल्लायी, किन्तु भीड़ ने उसे पीछे ढकेल दिया।

पर वाल्या ने न तो उसे देखा ही, न उसकी आवाज़ ही सुनी। वह आँखों में व्यथा का भाव लिये इधर-उधर देखती रही।

ऊल्या पाँत से बराबर दूर हटती जा रही थी, फिर भी उसे कई बार वाल्या का चेहरा दिख गया था। अब जत्था 'पगले रईस' के घर के उस पार दूसरे लेवल-क्रासिंग की ओर उतर रहा था। और वाल्या आँखों से ओझल हो गयी।

"ऊल्या!" नीना इवान्त्सोवा बोली, जो सहसा ऊल्या के सामने आ टपकी। "मैं जाने कब से तुम्हारी तलाश कर रही हूँ। आज शाम को पाँच बजे कशूक के घर.. . ल्यूबा लौट आयी है..."

ऊल्या कुछ भी न सुन रही थी। उसकी तीखी, काली आँखें नीना को घूर रही थीं।

अध्याय 5

---

* सावधान!

जब ओलेग ने अपने कोट की भीतरी जेब से अपनी नोटबुक निकाली और ध्यान से उसके पन्ने देखे, तो उसका चेहरा उतर गया। वह मेज के पास पड़ी एक कुर्सी में धँस गया। मेज पर वोदका की बोतलें, कुछ मग और तश्तरियाँ रखी थीं, पर खाने के लिए वहाँ कुछ न था। दूसरे लोग भी चुप हो गये और मुँह पर गम्भीरता का भाव लिये मेज और सोफे पर बैठ गये। सभी चुपचाप ओलेग को देख रहे थे।

अभी कल तक वे स्कूली साथी थे-निश्चिन्त और चहकते हुए। किन्तु जिस दिन उन्होंने शपथ ली थी, उस दिन से उन्होंन अपना पूर्व-अस्तित्व खो दिया था। लग रहा था जैसे उन्होंने अपना पहले का अनत्तरदायित्वपूर्ण मित्रता-बन्धन तोड़ डाला था, क्योंकि उन्हें इसके स्थान पर एक नया अधिक उच्च सम्बन्ध जोड़ना था, समान विचारों और संगठन पर आधारित मैत्री को जन्म देना था। इस मैत्री पर उस ख़ून की मुहर थी, जिसे अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए बहा देने का उन्होंने संकल्प कर लिया था।

कोशेवोई के घर का बड़ा कमरा साधारण ही था। बिना रंगे खिड़कियों के दासे, उन पर रखे अर्द्धपके टमाटर, अखरोट की लकड़ी का सोफा, जिस पर ओलेग सोता था, पलंग जिस पर येलेना निकोलायेव्ना सोती थी, और लेस के कपड़ों से ढंके पीटकर फुलाये हुए ताकिये अभी भी उन्हें अपने उस निश्चिंत जीवन की याद दिला रहे थे, जो उन्होंने अपने बाप-दादा की छत के नीचे बिताया था। फिर भी यह कमरा इस समय एक षड्यंत्र-केन्द्र बना हुआ था।

अब ओलेग, ओलेग नहीं कशूक था। यह नाम उसके सौतेले पिता का था, जो अपनी जवानी के दिनों में एक प्रसिद्ध उक्राइनी छापामार रहा था और मृत्यु से वर्ष भर पहले कानेव नगर में कृषि-विभाग का अध्यक्ष रहा था। ओलेग ने यह उपनाम इसलिए पसन्द किया था, क्योंकि वह छापेमारों के साहसपूर्ण संघर्ष की उसकी प्रथम कल्पनाओं के अनुकूल था और उस कठिन से कठिन ट्रेनिंग से सम्बद्ध था, जो उसके सौतेले पिता ने उसे खेतों में काम करने के रूप में तथा शिकार करने, घोड़े पालने और नीपर में नाव खेने के रूप में दी थी।

उसने अपनी नोटबुक उस पन्ने पर खोली, जहाँ उसने अपनी ही संकेतलिपि में कार्यक्रम लिखा था, और ल्यूबा शेव्त्सोवा से अनुरोध किया कि वह कुछ बोले।

ल्यूबा सोफे पर से उठी और आँखे सिकोड़ती हुई खड़ी हो गयी। असकी आँखों के समक्ष वोरोशीलोवग्राद की उसकी हाल की यात्रा के सारे विवरण, घोर कठिनाइयाँ, मुलाकातें और खतरे घूम गये। इन सब का वर्णन करने के लिए दो शामें भी काफ़ी न थीं।

अभी कल ही वह अपना सूटकेस लिये चौराहे पर खड़ी थी, जो उसके लिए

ज़रूरत से ज़्यादा भारी पड़ गया था, और आज वह फिर यहाँ अपने मित्रों के बीच थी।

जैसा कि ल्यूबा और ओलेग ने पहले से ही निश्चय कर लिया था, ल्यूबा ने 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वार्टर के सदस्यों को वह सब कुछ बताना शुरू किया, जो इवान फ़्योदोरोविच ने स्तखोविच के बारे में कहा था। हाँ, उसने इवान फ़्योदोरोविच का नाम नहीं लिया हालाँकि ल्यूबा ने उसे देखते ही पहचान लिया था। उसने यही कहा कि वह संयोग से किसी ऐसे व्यक्ति से मिली थी, जो स्तखोविच के साथ एक दस्ते में रहा था।

ल्यूबा स्पष्टवादी और निर्भीक लड़की थी और जिसे वह नहीं चाहती थी उसके प्रति निर्ममता का भी व्यवहार करने से न चूकती थी। उसने उक्त व्यक्ति का यह अन्देशा भी किसी से न छिपाया कि शायद स्तखोविच जर्मनों के हाथों में पड़ गया था।

जब ल्यूबा यह सब कह रही थी, उस समय 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वार्टर के सदस्यों को स्तखोविच की ओर देखने का भी साहस न हो रहा था। और स्तखोविच सामने की ओर घूरता हुआ, बाह्यतः शान्त, मेज पर अपनी पतली बाँहें रखे बैठा था। उसके चेहरे पर दृढ़ता का भाव था। किन्तु जब ल्यूबा ने अपने अंतिम शब्द कहे, तो उसका चेहरा सहसा उतर गया। उसके बदन में शिथिलता-सी आ गयी। अब उसके होंठों और हाथों में कोई तनाव न रहा गया था। वह आश्चर्य तथा नाराजगी के साथ अपने साथियों को खुले आम देखने लगा। उस समय वह एक छोटे-से बालक जैसा दीख रहा था।

"उसने...उसने ऐसा कहा?.. क्या सचमुच उसने यही सोचा था?" उसने बाल-सुलभ आहत भाव से सीधे ल्यूबा की आँखों में देखते हुए कई बार यही शब्द दुहराये।

सब चुप थे। स्तखोविच ने अपना चेहरा हाथों में ढाँप लिया। कुछ देर बाद उसने मुँह पर से हाथ हटाया और धीरे-धीरे बोलाः

"मुझ पर शक किया जा रहा है और इस क़िस्म का शक कि मैं... उसने तुम्हें यह क्यों नहीं बताया कि एक हफ़्ते तक बराबर हमारा पीछा किया गया और तब हमें दलों में बँट जाने को कहा गया?" उसने ल्यूबा पर नज़र उठायी और फिर सभी सदस्यों की ओर खुले आम देखा। "मैं वहाँ झाड़ियों में पड़ा था। सहसा मुझे यह बात सूझ गयी-वे लोग अपनी-अपनी जान बचाने के लिए घेरा तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं और यदि सब नहीं तो अधिकांश मौत के मुँह में चले जायेंगे, मैं भी उन्हीं के साथ मारा जाऊँगा, पर मैं अपने को बचाकर कहीं अधिक काम का सिद्ध हो सकता हूँ।

उस समय मैंने यही सोचा था...अब मैं समझ रहा हूँ कि यह सिर्फ़ बहाना था। गोलाबारी बड़ी भयानक हो रही थी...मैं भयभीत हो उठा था," उसने सरल भाव से कहा। "फिर भी मैं यह नहीं समझता कि मैंने इतना गम्भीर अपराध किया है। वे लोग ख़ुद अपनी जान बचा रहे थे...अँधेरा हो चुका था। मैंने सोचा-मैं एक अच्छा तैराक हूँ, शायद जर्मनों का मुझ अकेले पर ध्यान न जायेगा। जब वे सब भाग गये, तो मैं वहाँ कुछ समय तक पड़ा रहा। वहाँ गोलाबारी बन्द हो चुकी थी, किन्तु दूसरी जगह काफ़ी ज़ोरों से गोलाबरी हो रही थी। मैंने सोचा-यही समय है और मैं पीठ के बल लेटकर तैरने लगा। सिर्फ़ मेरी नाक पानी से ऊपर थी। मैं अच्छा तैराक हूँ। मैं सीधे नदी के बीच तक पहुँच गया और फिर धारा के अनुकूल तैरने लगा। इस प्रकार मैंने अपनी जान बचायी... लेकिन मुझ पर इस तरह का शक किया जाये-क्या यह उचित है? आख़िर वह आदमी भी तो बचा ही होगा। बोलो, उसकी जान बची कि नहीं?. .. मैंने सोचा था-चूँकि मैं इच्छा तैराक हूँ, अतः मुझे इससे लाभ उठाना चाहिए। मैं चित तैरता रहा और मेरी जान बच गयी!"

स्तखोविच के बाल अस्त-व्यस्त हो रहे थे।

"अच्छा मान लिया... कि तुमने अपनी जान बचायी," वान्या जेम्नुखोव बोला, "पर तुमने हमसे यह क्यों कहा कि तुम्हें यहाँ छापामार दस्ते के स्टाफ ने भेजा है?"

"इसलिए कि वे सचमुच मुझे भेजना चाहते थे...मैंने सोचा : मैं बच गया, तो उस निर्णय को पूरा करना चाहिए। जो भी हो मुझे अपनी ही चमड़ी तो बचानी नहीं थी। मैं हमलावरों से लड़ना चाहता था और अब भी वहीं चाहता हूँ। फिर मुझे अनुभव भी था। मैंने दस्ते की व्यवस्था करने में सहायता दी थी और लड़ाइयों में भाग लिया। इसीलिए मैंने यह बात कहीं थी!"

उन सभी को बड़ी निराशा हो रही थी, किन्तु जब उन्होंने स्तखोविच का स्पष्टीकरण सुना, तो उन्हें कुछ राहत मिली। फिर भी यह घटना बड़ी अप्रिय रही। अगर वह न होती, तो कितना अच्छा रहता!

स्पष्ट था कि स्तखोविच सच बोल रहा था, किन्तु उन सभी ने यह अनुभव किया कि उसका रवैया ठीक नहीं रहा और उसने अपनी करतूत का अनुचित मूल्याँकन किया। यह अपमानजनक घटना एक पहेली जैसी लग रही थी। स्तखोविच के साथ क्या कार्रवाई की जाये, यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

बेशक स्तखोविच कोई पराया आदमी न था और न ही पद-लोलुप या स्वार्थी। वह एक ऐसा युवक था, जो बचपन ही से बड़े-बड़े लोगों के सम्पर्क में आया था। उसने उन लोगों के अधिकारों की ऊपर ही ऊपर नकल की थी, तब वह उस कच्ची उम्र में था, जब जनता की सरकार का प्रयोजन और सच्चा अर्थ तक न समझता था

और न यही जानता था कि इन लोगों को यह अधिकार इसलिए मिला है कि उन्होंने जी-तोड़ परिश्रम किया और अपने आचरण को खरा बनाया।

वह एक प्रतिभाशाली लड़का था, जिसे हर चीज़ आसानी से समझ में आ जाती थी। उसके स्कूली दिनों में ही कुछ बड़े लोगों ने उस पर ध्यान देना शरू किया था, चूंकि उसके कम्युनिस्ट भाई भी बड़े प्रतिष्ठित लोग थे। वह बचपन से ही ऐसे लोगों के बीच रहा, अतएव जब कभी वह अपने स्कूली दोस्तों से उन बड़े-बड़े लोगों के बारे में बातचीत करता, तो लगता जैसे वह अपने बराबर वालों के बारे में बातें कर रहा हो। तब तक उसके अपने विचार विकसित नहीं हो पाये थे। मगर उसके लिए बातचीज़ में या लिखित रूप में दूसरों के विचारों को, जो उसने व्यक्त होते सुने थे, स्पष्ट रूप से रखना हमेशा सरल प्रतीत होता था। वह सरसरी तौर पर बहुत-सी किताबें पढ़ चुका था। उसके इन्हीं गुणों के कारण जिले के कोमसोमोल-नेता उसे सक्रिय कोमसोमोल-सदस्य समझते थे, हालाँकि उस समय तक उसने जीवन में ऐसा कोई खास काम न किया था, जो उसकी इस सक्रियता को सिद्ध करता। आम कोमसोमोल-सदस्य जो उसे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते थे और हमेशा उसे अपनी सभी सभाओं में अध्यक्ष-मण्डल में बैठे या मंच पर भाषण देते देखते रहते थे उसे जिले या प्रदेश का कोमसोमोल-अधिकारी समझते आ रहे थे। वह जिन लोगों के बीच रहता या घूमता-फिरता था, उनके कार्यों को तनिक भी नहीं समझता था, फिर भी वह उनके निजी और औपचारिक सम्बन्धों के सारे ब्योरे जानता था-कौन किसका प्रतिद्वन्द्वी है और कौन किसका समर्थन। इस तरह उसने अधिकार-उपयोग की कला के सम्बन्ध में एक झूठी धारणा बना ली थी-उसका विश्वास था कि अधिकार जनता की सेवा के लिए नहीं, बल्कि स्वयं आगे बढ़ने के लिए दो क़िस्म के जनसमूहों के बीच अपने लिए समर्थन प्राप्त करने का साधन है।

ये लोग एक-दूसरे के साथ मज़ाक-मज़ाक में बड़प्पन के जिस लहजे में बात करते थे-उसने यह आदत भी सीखी, किन्तु गलत ढंग से। उसने उनकी रुक्ष स्पष्टवादिता और आज़ाद-ख़याली की नकल की किन्तु यह न समझा कि इसके पीछे ज़िन्दगी की कितनी कर्मठता और कठिनाइयाँ छिपी हुई हैं। वह युवकों की भाँति सीधे-सीधे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के बजाय जान-बूझकर गुपचुप रहता था, हल्की और बनावटी आवाज़ में बोलता था, खास तौर से उस समय, जब वह टेलीफोन पर अपरिचितों से बातचीज़ करता था। वह अच्छी तरह जानता था कि दूसरे साथियों के साथ अपनी श्रेष्ठता कैसे जतायी जानी चाहिए।

इस प्रकार बचपन से ही वह अपने को साधारण लोगों से ऊँचा समझने का आदी हो चुका था। वह अपने को एक ऐसा व्यक्ति समझने लगा था जिस पर

सामूहिक जीवन के सामान्य नियम लागू नहीं होते।

वह दूसरों की तरह-या उस छापेमार की तरह, जिससे ल्यूबा मिली थी-अपनी जान बचाने के बजाय मौत के मुँह में क्यों जाये? और उस व्यक्ति को स्तखोविच के प्रति दूसरों के दिलों में सन्देह पैदा करने का क्या अधिकार था, जब कि जिस स्थिति में दस्ता पड़ गया था, उसके लिए वह स्वयं नहीं, बल्कि दूसरे जिम्मेदार लोग दोषी थे?

युवक लोग स्थिति के सम्बन्ध में निश्चित रूप से निर्णय न कर सकने के कारण चुपचाप बैठे थे, इस बीच इन तर्कों से स्तखोविच कुछ-कुछ ख़ुश नज़र आने लगा था। सहसा सेर्गेई की कठोर आवाज़ ने मौन भंग किया :

"दूसरी जगह फिर गोलाबारी शुरू हुई, किन्तु वह चित तैरता रहा जबकि गोलाबारी इसीलिए आम्रभ हुई, क्योंकि दस्ता घेरा तोड़कर भाग निकलना चाहता था और उस समय यह प्रत्येक व्यक्ति की ज़रूरत थी। इसके माने ये हुए कि वे आगे बढ़ थे उसकी ज़िन्दगी बचाने के लिए, है न?"

कमाण्डर, वान्या तुर्केनिच किसी की ओर नहीं देख रहा था। वह सैनिक शिष्टता बरत रहा था। उसके चेहरे पर असाधारण सरलता और दृढ़ता का भाव झलक उठा था। उसने कहा :

"सैनिक को आज्ञा माननी चाहिए। इधर लड़ाई चल रही थी, उधर तुम भाग गये। लड़ाई के समय तुम भगोड़े साबित हुए। इस अपराध के लिए मोर्चे पर लोगों को गोली मार दी जाती है या कड़ी फ़ौजी सजा दी जाती है। लोग अपने अपराध का प्रायश्चित अपने ख़ून से करते हैं...."

"मुझे अपना ख़ून बहाने में डर नहीं लगता..." स्तखोविच बोला। उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया।

"तुम डींगमार हो। बस और कुछ नहीं!" ल्यूबा ने कहा।

सभी ने ओलेग की ओर देखा। आख़िर इस सब के बारे में उसका क्या विचार है? ओलेग बड़ी शान्ति से बोला :

"वान्या तुर्केनिच ने तो सब कुछ कह ही दिया है। यह बात और अच्छे ढंग से कही भी नहीं जा सकती। स्तखोविच के व्यवहार से स्पष्ट है कि वह जरा भी अनुशासन नहीं मानता...क्या इस तरह का व्यक्ति हमारे दस्ते के हेडक्वार्टर में रह सकता है?"

ओलेग की बात सुनकर दूसरों की भी हिम्मत खुली। वे उत्तेजित हो-होकर स्तखोविच पर झपट पड़े। आख़िर उन सभी ने साथ-साथ शपथ ली थी। ऐसा अपराध करने पर वह शपथ कैसे ले सकता था? उसने हर बात साफ़-साफ़ स्वीकार क्यों नहीं

की? उसने इस पवित्र अवसर को दूषित किया-आख़िर वह भी कोई साथी रहा? बेशक वे ऐसे साथी को एक क्षण के लिए भी हेडक्वार्टर में नहीं रख सकते थे। ल्यूबा और ऊल्या ने तो कुछ भी नहीं कहा, क्योंकि वे उससे बेहद घृणा करती थीं। और स्तखोविच को यह देखकर सब से अधिक दुःख हुआ।

स्तखोविच किंकर्त्तव्यविमूढ़ और अपमानित लग रहा था। उसने बार-बार अपनी बात दुहराते हुए हर किसी की आँखों में आँखें डालने का प्रयत्न किया :

"तुम लोग मेरा यकीन क्यों नहीं करते? जैसे चाहो, मेरी परीक्षा लेकर देख लो ..."

ठीक इसी क्षण ओलेग ने दिखा दिया कि वह अब ओलेग नहीं कशूक है।

"तुम ख़ुद क्या यह नहीं समझते कि तुम हेडक्वार्टर में नहीं रह सकते," उसने कहा।

और स्तेखोविच को मानना पड़ा कि यह बात उचित भी है।

"ज़रूरत इस बात की है कि इसे तुम स्वयं समझो," ओलेग ने आगे कहा। "बेशक हम तुम्हें कुछेक काम सौंपेंगे। हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे। तुम अब भी अपने पाँच लोगों के दल का नेतृत्व करोगे और तुम्हें अपने यश को पुनः प्राप्त करने के बहुत-से मौक़े मिलेंगे।"

"उसका परिवार तो बहुत अच्छा है!" ल्यूबा बोली।

सब लोगों ने येव्गेनी स्तखोविच को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर से निकाल दिये जाने के पक्ष में वोट दिये। वह अपना सिर झुकाये बैठा रहा। फिर उठा और ख़ुद को काबू में रखने की कोशिश करते हुए बोला :

"इससे मुझे बहुत कष्ट हो रहा है-तुम लोग यह बात समझ सकते हो। पर मैं जानता हूँ कि तुम कुछ और कर भी नहीं सकते थे। मैं इसका बुरा नहीं मानता। मैं कसम खाकर कहता हूँ..." उसके होंठ काँपे और वह दौड़कर कमरे से निकल गया।

कुछ क्षणों तक भारी चुप्पी छायी रही। पहली बार वे अपने एक साथी से गम्भीर रूप से निराश हुए और इस कारण उन्हें बड़ा दुख हो रहा था। इतना निर्मम बनना भी उनके लिए कठिन था।

ओलेग खुलकर मुस्कराया और कुछ हकलाते हुए बोला।

"व-वह ठीक हो जायेगा, दोस्तो, म-मेरी बात याद रखना!"

वान्या तुर्केनिच ने अपनी धीमी आवाज़ में उसका समर्थन किया :

"तुम्हारा ख़याल है ऐसी बातें मोर्चों पर नहीं होतीं? तरुण सैनिक पहले बुज़दिली दिखाता है, पर बाद में बहादुरी के कितने ही कारनामे भी करता है!"

ल्यूबा को लगा कि इस समय उसे इवान फ़्योदोरोविच से हुई अपनी मुलाकात

के बारे में सब कुछ कह देना चाहिए। बेशक उसने इस बारे में कुछ नहीं कहा कि वह उसके पास कैसे पहुँची-अपने गुप्त काम के उस पहलू पर रोशनी डालने की उसे इजाज़त न थी। कमरे में चहलक़दमी करते हुए उसने पूरा ब्योरा देकर बजाया कि किस प्रकार प्रोत्सेंको ने उसका स्वागत किया था और उससे क्या कहा था। जब ल्यूबा ने बताया कि छापेमारों के हेडक्वार्टर के प्रतिनिधि ने हमारे कार्यों का अनुमोदन किया, ओलेग की सराहना की और उसको चूमकर विदाई दी, तो सदस्य उत्तेजित हो उठे। निश्चय ही वह हम लोगों से बड़ा ख़ुश होगा, उन्होंने सोचा।

अपने को इस नये रूप में देखकर वे उत्तेजित थे, प्रसन्न थे और कुछ-कुछ चकित भी। वे परस्पर हाथ मिलाने और एक-दूसरे को बधाई देने लगे।

"ज़रा सोचो वान्या, ज़रा कल्पना करो," ओलेग ने ज़ेम्नुख़ोव से कहा। उसके चेहरे पर सीधी-सादी प्रसन्नता का भाव आ गया। " 'तरुण गार्ड' दल एक वास्तविकता है, जिसे प्रदेश के नेता तक मानते हैं!"

ल्यूबा ने ऊल्या की कमर में हाथ डाला। तुर्केनिच के घर में मिलने के बाद से दोनों में दोस्ती हो गई थी। अभी ल्यूबा को ऊल्या का हाल-चाल पूछने का मौ़का न मिला सो उसने उसे बहन की तरह चूम लिया।

ओलेग ने फिर अपनी नोट बुक पर नज़र डाली। पिछली बैठक में वान्या ज़ेम्नुख़ोव को पाँच-पाँच के दलों का संगठनकर्ता बनाया गया था। अब वान्या ने प्रस्ताव रखा कि पाँच-पाँच के दूसरे दलों के लिए भी नेता नियुक्त किये जायें, क्योंकि संगठन को विस्तृत करना है।

"पेर्वोमाइका से शुरू करें, क्यों?" वान्या ने ऊल्या को अपने प्रोफ़ेसरों के-से चश्मे में से देखते हुए प्रसन्नतापूर्वक कहा।

ऊल्या उठी और अपने दोनों हाथ लटकाकर सीधी खड़ी हो गयी। उसके सौन्दर्य ने सभी उपस्थित लोगों में एक सुखद, निष्काम अनुभूति जगा दी, जो अनायास ही उनके चेहरों पर झलक उठी। किन्तु ऊल्या लोगों की इस मूक प्रशंसा को महसूस न कर रही थी।

"हम लोग, यानी मैं और तोल्या पोपोव, वीत्या पेत्रोव और माय्या पेग्लिवानोवा को मनोनीत करते हैं," वह बोली। सहसा उसने देखा कि ल्यूबा उसे भावमय दृष्टि से देख रही है। "और ल्यूबा वोस्मीदोमिकी मोहल्ले का काम ले ले, फिर तो हम पड़ोसी रहेंगे," उसने अपनी शान्त व स्वच्छन्द आवाज़ में इतना और जोड़ दिया।

"वाह, तुम्हें भी ख़ूब सूझी!.." ल्यूबा का चेहरा लाल हो उठा और उसने अपने छोटे-छोटे हाथ इनकार में हिला दिये : वह सचमुच कैसी संगठनकर्त्ता बनेगी!

पर सब लोगों ने ऊल्या का समर्थन किया और ल्यूबा चुप हो गयी। एक ही

क्षण में ल्यूबा की आँखों के आगे एक तसवीर घूम गयी : वह ख़ुद वोस्मीदोमिकी मोहल्ले की संगठनकर्त्ता के रूप में काम करती हुई। यह विचार उसे बहुत ही पसन्द आया था।

वान्या तुर्केनिच को लगा कि इसी समय उसे वह प्रस्ताव भी सामने रखना चाहिए, जिस पर वह और ओलेग रात में एकमत हो चुके थे। उसने बैठक में वे सारी बातें बयान कीं, जो ओलेग के साथ घटी थीं और बताया कि यह न सिर्फ़ ओलेग के लिए बल्कि सारे संगठन के लिए संकट का कारण बन सकता था। उसने सुझाव दिया कि बिना हेडक्वार्टर की अनुमति के ओलेग द्वारा कभी किसी भी कार्रवाई में भाग लेने पर पाबन्दी लगा दी जाये।

“मेरा विचार है कि इसके लिए किसी स्पष्टीकरण की भी आवश्यकता नहीं है,” उसने कहा। “बेशक यह निषेध मुझ पर भी लागू होना चाहिए।”

“उसका क...कहना ठी...ठीक है,” ओलेग बोला।

इस प्रकार यह निर्णय सर्वसम्मति से पास किया गया। तत्पश्चात सेर्गेई अपनी कुर्सी से उठा। वह परेशान-सा लगा रहा था।

“मुझे एक नहीं दो बातें कहनी है,” उसने होंठ फुलाते हुए कहा।

सबको यह बात इतनी मजेदार लगी कि कुछ समय तक तो उन्होंने उसे बोलने का भी मौक़ा न दिया।

“पहले-पहल मैं इस इग्नात फ़ोमीन के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। क्या हम सचमुच इस सुअर की हरकतें बर्दाश्त करते रहेंगे?” उसका चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। “उस बदमाश ने ओस्तपचुक और चाचा अन्द्रेई के साथ गद्दारी की और हम अभी तक यह नहीं जानते कि उस नीच ने हमारे कितने और खनिकों का सफाया करवाया है! मेरा सुझाव है कि उसे मार दिया जाये,” सेर्गेई बोला, “यह काम आप लोग मेरे जिम्मे कर दें क्योंकि मैं यों भी उसे जिन्दा नहीं रहने दूँगा,” उसने कहा और सब को यह स्पष्ट हो गया कि सेर्गेई सचमुच ऐसा करके ही रहेगा।

ओलेग का चेहरा गम्भीर हो उठा। उसके माथे पर गहरी और लम्बी झुर्रियाँ पड़ गयीं। हेडक्वार्टर के सभी सदस्य शान्त हो गये।

“क्या राय है? यह ठीक कहता है,” वान्या तुर्केनिच ने शान्त आवाज़ में धीरे-से कहा। “इग्नात फ़ोमीन दुष्ट गद्दार है। उसे सूली पर चढ़ाया जाना चाहिए। और ऐसी जगह, जहाँ हमारे लोग उसे लटका हुआ देखें। उसकी छाती पर एक पोस्टर बँधा हो, जिसमें उसे फाँसी देने के कारण लिख दिये जायें। यह दूसरों के लिए एक सबक बने। दूसरा कोई चारा भी नहीं है।” उसकी आवाज़ में अप्रत्याशित निर्ममता का पुट था। “ये लोग हम पर कभी दया नहीं करेंगे!.. यह काम मुझे और त्युलेनिन को सौंपा

जाये..."

तुर्केनिच को त्युलेनिन का समर्थन करते देखकर सभी को राहत-सी मिली। यद्यपि वे गद्दारों से घृणा करते थे, फिर भी उन्हें मौत की नींद सुलाना उनके लिए कठिन था। अब इस मामले में लाल सेना के एक अफ़सर और उनके सीनियर साथी तुर्केनिच का समर्थन प्राप्त हो चुका था, अर्थात वह कार्य अनिवार्य हो गया था।

"बेशक इसकी अनुमति हमें अपने सीनियर साथियों से लेनी होगी," ओलेग ने कहा, "लेकिन सबसे पहले हमें अपना मत देना है। पहले फ़ोमीन के बारे में त्युलेनिन के प्रस्ताव पर वोट लिये जायेंगे। फिर हम इस सवाल पर बात करेंगे कि यह काम किसे सौंपा जाये।"

"सवाल बिलकुल साफ़ है," वान्या जेम्नुखोव बोला।

"हाँ, सवाल साफ़ है, फिर भी मैं फ़ोमीन के सवाल पर अलग से वोट लूँगा," ओलेग ने हठपूर्वक कहा।

सब समझ गये कि ओलेग इस बात पर क्यों ज़ोर दे रहा है। उन्होंने शपथ जो ली थी। उन्हें अपनी आत्मा की आवाज़ सुनकर पुनः निश्चय करना था। उन्होंने गम्भीर मौन-भाव के साथ फ़ोमीन को फाँसी देने के पक्ष में वोट दिया। यह काम तुर्केनिच और त्युलेनिन को सौंपा गया।

"यह निश्चय बिलकुल ठीक है। इन सुअरों को यही सजा मिलनी चाहिए।" सेर्गेई की आँखों में चमक आ गयी। "अब मैं अपनी दूसरी बात पर आऊँगा।"

अस्पताल की डाक्टरनी नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने सेर्गेई को बताया था कि क्रास्नोदोन से कोई अठारह किलोमीटर दूर एक बस्ती में-उस बस्ती का नाम भी क्रास्नोदोन ही था-कुछ युवकों ने एक जर्मन विरोधी दल बनाया है। यह वही छोटे-छोटे गुदगुदे हाथोंवाली नताल्या अलेक्सेयेव्ना थी, जिसकी आँखों में सदा दृढ़ता और कर्त्तव्यपरायणता का भाव झलकता रहता था। नताल्या अलेक्सेयेव्ना इस दल की सदस्या न थी, किन्तु उसे इस दल का पता चला था उसकी माँ की पड़ोसिन, अध्यापिका अन्तोनीना येलिसेयेंको से। उसने अन्तोनीना येलिसेयेंकों से नगर से सम्पर्क स्थापित करने में उसकी मदद करने का वादा किया था।

सेर्गेई के सुझाव पर वाल्या बोर्त्स को इस दल के साथ सम्पर्क स्थापित करने का भार सौंपा गया। यह निश्चय वाल्या की गैर-मौजूदगी में किया गया था, क्योंकि सन्देशवाहिकाएँ इवान्त्सोवा बहनें और वाल्या हेडक्वार्टर की बैठक में नहीं आयी थीं। वस्तुतः उस समय वे मरीना के साथ अहाते में एक शेड के नीचे बैठी हुई हेडक्वार्टर की चौकसी कर रही थीं।

येलेना निकोलायेव्ना और मामा कोल्या कुछ चीज़ों के बदले में रोटी लाने के

लिए देहात में मरीना के सम्बन्धियों के पास गये हुए थे। उनकी इस अनुपस्थिति का लाभ 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर के सदस्यों ने उठाया था। नानी वेरा को मालूम था कि युवक क्यों उनके घर इकट्ठे हुए हैं, लेकिन वह इस तरह व्यवहार करती रही, मानो वे दावत के लिए एकत्र हुए हैं। वह मरीना और उसके नन्हें बेटे को लेकर पहले से ही शेड के नीचे चली गयी थीं।

युवकों को वाद-विवाद करते-करते शाम हो चुकी थी। सहसा नानी वेरा कमरे में आयी। उसके चश्मे का एक भाग टूट गया था और काले डोरे की सहायता से कमानी से बँधा था। उसने चश्मे के ऊपर से देखा कि वोद्का की बोतल छुई तक नहीं गयी है और मग भी खाली पड़े हैं।

"कम-से-कम तुम लोग चाय ही पी लेते। मैंने तुम्हारे लिए गरम चाय बना रखी है!" वह बोली, जिससे षड्यंत्रकारियों को कुछ झेंप-सी हुई। "और हाँ, मैंने मरीना को समझा दिया है कि वह बच्चे को लेकर सायबान में सोये। वहाँ की हवा ताजी है।"

नानी ने वाल्या, नीना और ओल्गा को बुलाया, केतली उठा लायी और एक दराज में से कुछ मिठाइयाँ निकालकर मेज पर रख दीं, फिर झिलमिली गिरायी, दिया जलाया और कमरे से बाहर चली गयी।

इस समय सब के सब दिये के पास बैठे थे, जिस में से धुआँ निकल रहा था। झिलमिलाती हुई लौ कमरे के अँधेरे में उनके चेहरों, कपड़ों और अन्य चीज़ों पर पड़कर कुछ क्षणों के लिए उन्हें प्रकाशित कर देती थी। वे अब सचमुच षड्यंत्रकारी-से लग रहे थे। उनकी आवाज़ें तक शान्त और रहस्यपूर्ण ढंग से गूँज रही थीं।

"आप लोग मास्को की आवाज़ सुनना चाहेंगे?" ओलेग ने धीरे-से कहा।

सब को लगा यह बस मज़ाक ही है। ल्यूबा ही चौंककर पूछ बैठी :

"मास्को की आवाज़, कैसे?"

"एक शर्त पर-कोई प्रश्न न किया जाये।" ओलेग अहाते में गया और तत्काल लौट आया।

"धीरज रखिये," वह बोला और मामा कोल्या के अँधेरे कमरे में चला गया।

युवक शान्त बैठे रहे। इस बात पर यकीन किया जाये या नहीं, यह वे समझ ही न पा रहे थे। लेकिन क्या ऐसी परिस्थितियों में इस तरह मज़ाक किया जा सकता है!

"नीना, आकर मेरी मदद करो न!" ओलेग ने पुकारा।

नीना इवान्त्सोवा उसके पास चली गयी।

फिर सहसा मामा कोल्या के कमरे से एक हल्की-सी सिसकारी सुनायी पड़ी, जो परिचित होने के साथ-साथ अर्द्धविस्मृत-सी लग रही थी-कहीं कुछ लोग नाच रहे थे।

बीच-बीच में जर्मन 'मार्च' की आवाज़ें भी आ रही थीं। एक बुजुर्ग अंग्रेजी में दुनिया के हताहतों की संख्या सुना रहा था। साथ ही साथ कोई व्यक्ति उत्तेजित होकर जल्दी-जल्दी जर्मन में बोल रहा था। लग रहा था जैसे उसे यह डर हो कि उसे अपनी बात समाप्त करने को मौक़ा न मिलेगा।

और फिर जैसे अनन्त विस्तार से होकर कमरे में आती हुई उद्घोषक लेवितान की परिचित-सी आवाज़ सुनायी दी। लेवितान स्थिर, भारी, धीमी और मधुर आवाज़ में बड़े सहज ढंग से बोल रहा था :

"हम सोवियत सूचना-केन्द्र से बोल रहे हैं... आज 7 सितम्बर के सायंकालीन-युद्ध समाचार..."

"तुरन्त लिख लो!" वान्या जेम्नुखोव फुसफुसा उठा और अपनी पेंसिल तलाश करने लगा। "हम यह खबर कल फैलाऐंगे।"

फिर एक स्वतंत्र क्षेत्र से आती हुई वही स्वच्छन्द आवाज़ एक हज़ार मील का चक्कर लगाती हुई सुनायी पड़ी :

"...7 सितम्बर को हमारी सेनाओं ने दुश्मन के साथ स्तालिनग्राद के पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में तथा नोवोरोसिइस्क और मोज्दोक के आस-पास घमासान लड़ाइयों में जमकर मोर्चा लिया... दूसरे मोर्चों की स्थिति में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ..."

लगा मानो महायुद्ध की प्रतिध्वनियाँ कमरे में प्रवेश कर रही थीं।

युवक-युवतियाँ आज़ाद ज़मीन से आनेवाली आवाज़ साँस रोके सुन रहे थे। दिये के हल्के प्रकाश में उनकी आँखें बड़ी-बड़ी और काली नज़र आ रही थीं और चेहरे मूर्तियों की भाँति लग रहे थे।

और नानी वेरा दरवाज़े से सटी खड़ी थीं। उसका दुबला-पतला, साँवला और झुर्रीदार चेहरा दान्ते अलिघियेरी* के कांस्य स्मारक की याद दिला रहा था। बेशक उसकी ओर किसी का भी ध्यान न गया था।

अध्याय 6

बिजली सिर्फ़ जर्मन दफ़्तरों को ही दी जाती थी। बेशक मामा कोल्या ने इस बात का लाभ उठाया था कि प्रशासन और कमाण्डेण्ट के आफिस को जाने वाली बिजली की लाइन सड़क से नहीं, उसके अहाते के पास से होकर जाती थी और बिजली का खम्भा कोरोस्तिल्योव के मकान के ऐन सामने गड़ा हुआ था। मामा कोल्या ने रेडियो

---

* इटली के महान कवि (1265-1322)।

उपकरण अपने कमरे में अलमारी तले, फर्श के तख्तों के नीचे छिपा रखा था। जब कभी रेडियो का प्रयोग करना होता, तो उसका तार झरोखे में से निकालकर तार के एक टुकड़े के साथ जोड़ दिया जाता। यह तार लम्बी-सी चोब से बँधा था और चोब के ऊपर एक हुक लगा था, जिसके सहारे वह बिजली लाइन पर लटकायी जाती थी।

सोवियत सूचना-केन्द्र का बुलेटिन... कुछ भी हो छपाई मशीन का प्रबन्ध तो उन्हें करना ही था!

जब वोलोद्या ओस्मूखिन, ज़ोरा अरुत्युन्यान्त्स और 'घर्घरक' तोल्या ने पार्क में ख़ुदाई की तो उन्हें थोड़े-से ही टाइप हाथ लग सके। शायद जिन लोगों ने उन टाइपों को ज़मीन में गाड़ा था, उनके पास पैकिंग का सामान न था। उन्होंने टाइपों को एक गड्ढे में रखकर मिट्टी से ढँक दिया था। लारियों और हवामार तोपों के लिए खन्दक खोदनेवाले जर्मन सैनिकों ने उन पर पहले कोई ध्यान न दिया और मिट्टी के साथ ही टाइप भी इधर-उधर फेंक दिये। पर बाद में उन्हें अपनी गलती मालूम हुई और उन्होंने इसकी सूचना उच्च अधिकारियों को दी। नतीजा यह हुआ कि शायद बहुत-से टाइप हटा लिये गये, किन्तु कुछ अब भी गड्ढे के तल में पड़े रह गये। छोकरों ने वहाँ बड़े संयम के साथ कई दिनों तक ख़ुदाई की और उन्हें नक्शे में दिखाये गये स्थान से कुछ मीटर के दायरे में बिखरे टाइप मिल गये। इस प्रकार उन्होंने एक-एक अक्षर बटोरकर रख लिया। वे टाइप ल्यूतिकोव के काम न आये, इसलिए उसने 'तरुण गार्ड' के उद्देश्यों के लिए उसका प्रयोग करने की अनुमति वोलोद्या को दे दी।

जेम्नुखोव का बड़ा भाई अलेक्सान्द्र, जो अब सेना में था, कभी छपाई का व्यवसाय करता था। उसने काफ़ी अरसे तक स्थानीय समाचारपत्र 'सोत्सिआलिस्तीनचेस्काया रोदिना' के छापाखाने में काम किया था। वान्या प्रायः उससे मिलने वहाँ जाया करता था। वान्या के निरीक्षण में अब वोलाद्या छापने की एक छोटी-सी मशीन बनाने में जुट गया। वोलोद्या ने शाप में छापेखाने के लिए गुप्त रूप से धातु के पुर्जे बना लिए, और जोरा ने सामान रखने के लिए एक लकड़ी का बक्सा और कुछ टाइप-केस बनाने का काम अपने ऊपर ले लिया।

जोरा का पिता बढ़ई था। उसकी माँ बड़ी चरित्रवान महिला थी। जोरा को आशा थी कि जर्मनों के आगमन के बाद उसके माता-पिता उनके विरुद्ध अवश्य हथियार उठायेंगे। लेकिन उन्होंने ऐसा कोई क़दम नहीं उठाया। फिर भी जोरा को विश्वास था कि वह उन्हें धीरे-धीरे अपने क्रियाकलापों में खींच लेगा। काफ़ी सोच-विचार के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि शुरू-शुरू में पिता को ही अपने अनुकूल ढालना ठीक होगा। माँ को बाद में समझाया जा सकता था। वह तो ज़रूरत से ज़्यादा सक्रिय औरत थी। जोरा बिलकुल माँ पर गया था-क्या आचरण, क्या क़द, क्या

काले-काले बाल। पिता अपने बेटे के कन्धे तक आता था। वह अधेड़ उम्र का, शान्त-स्वभाव का व्यक्ति था। बेशक उस को यह बात बड़ी अखरी कि ख़ुफ़िया काम करनेवालों ने उसके नाबालिग बेटे द्वारा ऐसा नाजुक हुक्म भेजा है, फिर भी वह बिना अपनी पत्नी के बताये, बक्सा और टाइप-केस बनाने में जुट गया। बेशक वह यह नहीं जानता था कि जोरा और वोलोद्या, पाँच-पाँच लोगों के ग्रुप-लीडर हैं।

इन दोनों छोकरों की दोस्ती इतनी गहरी हो गयी कि वे बिना एक-दूसरे को देखे एक दिन भी ज़िन्दा न रह सकते थे। किन्तु ल्यूस्या ओस्मूखिना और जोरा के सम्बन्ध पहले की ही तरह औपचारिक थे। उनमें अब भी तनाव था।

बेशक, उनके स्वभाव और रुचियाँ अलग-अलग थीं। दोनों अच्छे-खासे पढ़े-लिखे थे, किन्तु जोरा को विज्ञान और राजनीति की बातें पसन्द थीं और ल्यूस्या को मुख्यतः उन किताबों में मजा आता, जिनमें मानव-भावनाओं का उल्लेख होता। हाँ, यहाँ यह बता देना चाहिए कि ल्यूस्या जोरा से बड़ी थी। वैसे जब कभी जोरा अस्पष्ट भविष्य में झाँकने का प्रयास करता, तो उसे यह सोचकर गुदगुदी-सी होने लगती कि ल्यूस्या का तीन विदेशी भाषाओं पर पूरा अधिकार रहेगा। फिर भी वह इस तरह की ट्रेनिंग काफ़ी न समझता और उसे इंजीनियर-निर्माता बनने के लिए आग्रह करता रहता। इसमें वह शिष्टता से काम न लेता था।

जब भी दोनों मिलते थे, तो ल्यूस्या की स्वच्छ और चमचमाती हुई आँखें जोरा की काली-काली और संकल्परत आँखों से दो तलवारों की तरह टकरा जाती थीं। वे हर समय एक-दूसरे की चुटकियाँ लेते रहते थे-ल्यूस्या के प्रहार उद्धत और दंशक होते और जोरा के नियंत्रित और उपदेशात्मक।

आख़िर वह दिन भी आया जब जोरा ने वोलोद्या ओस्मूखिन, 'घर्घरक' तोल्या और वान्या जेम्नुखोव को अपने कमरे में बुला लिया। वान्या उन सबमें बड़ा था, उनका नेता था। अब वह कविता नहीं बल्कि 'तरुण गार्ड' के अधिकांश परचों और नारों को लिखता था। इसलिए छापाखाना बनने में वान्या की सबसे ज़्यादा दिलचस्पी थी। छापने की मशीन बन चुकी थी। तोल्या ओर्लोव हाँफता और खाँसता हुआ-लग रहा था जैसे ये आवाज़ें किसी पीपे में से निकल रही हैं-उस मशीन को उठाकर कमरे में चहलक़दमी कर रहा था। वह यह दिखाना चाहता था कि ज़रूरत पड़ने पर एक ही आदमी सारी मशीन उठाकर अन्यत्र ले जा सकता है।

उनके पास चिपटा ब्रश और रोलर था ही। छापे की स्याही के स्थान पर जोरा के पिता ने 'एक मौलिक घोल' तैयार कर दिया था। अब वे अक्षरों को छाँट-छाँटकर केसो में रखने लगे और निकटदर्शी वान्या जेम्नुखोव, जिसे सारे अक्षर 'o' जैसे लगते थे, जोरा के पलंग पर बैठकर पूछ रहा था कि इस एक ही अक्षर से वर्णमाला के सारे

अक्षर बनते कैसे हैं।

ठीक इसी क्षण खिड़की पर दस्तक हुई। पर वे जरा भी विचलित न हुए, क्योंकि बस्ती के इस दूरस्थ कोने में कोई जर्मन या पुलिसवाला कभी न झाँका था। अब की बार ऐसा ही हुआ। कोई और नहीं बल्कि ख़ुद ओलेग और तुर्केनिच आये थे। वे अपनी मशीन पर शीघ्र से शीघ्र कुछ छापना चाहते थे।

किन्तु बाद में पता चला कि सचमुच वे इतने नादान न थे! तुर्केनिच ने चुपचाप जोरा को एक ओर बुलाया और दोनों साथ-साथ बगीचे में चले गये। इधर ओलेग वोलोद्या और तोल्या की सहायता करने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

तुर्केनिच और जोरा मेड़ तक जाकर घास पर लेट गये। आसमान पर सूरज चमक रहा था, जो बार-बार बादलों से ढँक जाया करता था। शरद काल निकट था। हाल की वर्षा के कारण घास और ज़मीन दोनों अब तक गीली थीं। तुर्केनिच जोरा के पास झुककर फुसफुसाने लगा। जोरा ने दृढ़तापूर्वक उसके प्रश्न का उत्तर दिया। तुर्केनिच को इसी उत्तर की आशा थी।

"बहुत अच्छा। यह ठीक भी है। इससे दूसरे गद्दारों को अच्छा सबक मिलेगा!.. .बेशक, मैं राजी हूँ।"

ओलेग और वान्या तुर्केनिच को ख़ुफ़िया जिला पार्टी समिति की अनुमति मिल चुकी थी। अब उन्हें बड़ी चतुराई से ऐसे युवकों को चुनना था, जो इन कार्य को न्याय, अनुशासन और कर्त्तव्य-परायणता की भावना से सम्पन्न करें।

तुर्केनिच और सेर्गेई त्युलेनिन ने पहले-पहल सेर्गेई लेवाशोव का नाम लिया। वह लगन का पक्का और अनुभवी लड़का था। फिर उन्होंने कोवल्योव को भी मनोनीत किया, जो निर्भीक, विवेकशील और हृष्ट-पुष्ट था। उन्हें ऐसे ही व्यक्ति की ज़रूरत थी। त्युलेनिन ने पिरोज्होक के नाम का भी सुझाव दिया, पर तुर्केनिच उससे सहमत नहीं हुआ, क्योंकि पिरोज्होक दुस्साहसवादी था। त्युलेनिन ने जान-बूझकर अपने घनिष्ठ मित्र वीत्का लुक्यांचेंको को इस काम के लिए पेश नहीं किया-उसे उस पर दया आ गयी। अन्ततः वे जोरा के नाम पर एकमत हो गये। उन्होंने जोरा को चुनकर कोई गलती नहीं की।

"तो क्या तुमने अभी तक यह तय नहीं किया कि फ़ौजी अदालत में कौन-कौन होंगे?" जोरा ने पूछा। "लम्बी-चौड़ी जाँच की कोई ज़रूरत नहीं, पर यह महत्वपूर्ण है कि अभियुक्त यह देख ले कि उसे विधिवत सजा दी जा रही है।"

"हम स्वयं फ़ौजी अदालत के सदस्यों को मनोनीत करेंगे," तुर्केनिच बोला।

"हम जनता के नाम पर उसे सजा देंगे, क्योंकि हम उसके क़ानूनी प्रतिनिधि है!" जोरा की अविचलित काली आँखें चमचमा उठीं।

“दिल का मजबूत है लड़का!” तुर्केनिच ने सोचा।

“हमें एक और व्यक्ति की ज़रूरत है,” उसने कहा।

जोरा ने वोलोद्या के बारे में सोचा किन्तु वह बड़ा ही भावुक और कोमल स्वभाव का लड़का था।

“मेरे ग्रुप में एक युवक है-रादिक युर्किन। वह हमारे ही स्कूल का है। तुम उसे जानते हो न? मेरा ख़याल है, वह ठीक रहेगा।”

“वह तो अभी बच्चा है। उसके दिल का ज़्यादा असर होगा।”

“ख़ूब कही! बच्चे ऐसी चीज़ों को महसूस नहीं करते। अजी, महसूस तो हम जैसे प्रौढ़ लोग करते हैं,” जोरा ने कहा, “बच्चे हमारी तरह नहीं होते। रादिक बड़ा शान्त और दुस्साहसवादी लड़का है।”

उधर जोरा का पिता शैड के नीचे उन लोगों के लिए कुछ बढ़ईगिरी कर रहा था, इधर जोरा ने देखा कि उसकी माँ चाभी के छेद में से झाँक रही है। फलतः जोरा को कहना पड़ा कि अब वह पूरी तरह आत्मनिर्भर है और उसके साथी भी इतने समझदार है कि अगर सब के सब कल ही अपनी शादी कर लें, तो उसकी माँ को आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

जोरा और वान्या तुर्केनिच वक्त पर कमरे में लौटकर आये-टाइप छांटे जा चुके थे और वोलोद्या कई लाइनों के लिए टाइप बिठा रहा था। जोरा ने ब्रश ‘मौलिक घोल’ में डुबोया और लाइनों पर लगा दिया। वोलोद्या ने लाइनों पर एक कागज रखा और रोलर चला दिया। लेख के चारों ओर धातु की प्लेट के कारण एक शोकसूचक काली रेखा-सी छप गयी। वस्तुतः अनुभव न होने के कारण वोलाद्या ने प्लेट को कारखाने में अच्छी तरह रेता न था। अक्षर भी एक आकार के न थे, पर अब किसी प्रकार इन्हीं से काम चलाना था। सबसे ज़रूरी बात यह थी कि उनके सामने एक छपा हुआ पन्ना था और जो कुछ वोलोद्या ने कम्पोज किया था उसे सभी पढ़ सकते थे :

“एकान्त में वान्या के साथ न मिलो हमें परेशान न करो हम तुम्हारे मन का भेद जानते है नानानाना।”

वोलोद्या ने समझाया कि ये कुछ पंक्तियाँ उसने जोरा को समर्पित की हैं, उसने उन शब्दों का प्रयोग किया है जिनमें ‘न’ अक्षर अधिक हों। इसका कारण यही था कि उनके केस में ‘न’ अक्षर अधिक थे। जहाँ तक विरामचिह्न न होने का सवाल है, तो वह भूल गया कि इन चिह्नों को भी अक्षरों की ही भाँति रखा जाता है।

सहसा ओलेग उत्तेजित हो उठा।

“जानते हो पेर्वोमाइका की दो लड़कियाँ कोमसोमोल में भर्ती होने का अनुरोध कर रही हैं?” उसने बारी-बारी से उनकी ओर देखते हुए कहा।

"और मेरे ग्रुप में भी एक छोकरा है, जो कोमसोमाल में भर्ती होना चाहता है," जोरा ने कहा।

यह छोकरा वही रादिक युर्किन था, जो जोरा के ग्रुप का एकमात्र सदस्य था।

"हम 'तरुण गार्ड' के छापाखाने का उपयोग कोमसोमोल के अस्थायी सदस्यता-कार्ड छापने के लिए कर सकते हैं!" ओलेग बोला, "आख़िर हमारे संगठन को औपचारिक रूप से मान्यता मिल चुकी है, तो हमें कोमसोमोल के सदस्यता-कार्ड सौंपने का भी अधिकार है।"

उसकी आँखें अजगर की आँखों से मिलती-जुलती थीं-असंख्य माँसल झुर्रियों के बीच गड़ी हुई-सी। बेशक उसका लम्बा शरीर, पुराने फैशन की छज्जेदार टोपी से ढका उसका छोटा-सा सिर, और उसके हाथ-पैर हरकत कर रहे थे, फिर भी वह मुरदा ही था।

चाहे वह ड्यूटी पर हो या छापा डाल रहा हो दिन-रात प्रतिशोध उसके पीछे-पीछे लगा रहता था। वह उसे उस समय भी खिड़की में से घूरा करता था, जब वह अभी-अभी मारे गये व्यक्ति के परिवार से छीने गये वस्त्राभूषण अपनी पत्नी के साथ देखता-निरखता था। प्रतिशोध उसका एक-एक अपराध जानता था और उनका लेखा-जोखा रखता था। यह प्रतिशोध उसका पीछा करता था एक छोकरे के वेष में, जिसकी आँखें बिल्ली की आँखों की तरह अँधेरे को भेद सकती थीं। यदि फ़ोमीन को पता चल जाता कि यह प्रतिशोध-नंगे पैरोवाला यह छोकरा-इतना निर्मम है, तो वह उस हरकत को भी बन्द कर देता, जो बाह्यतः उसके जीवित होने का संकेत कर रही थी।

फ़ोमीन मुर्दा था क्योंकि उसके कार्य सीधे-सादे स्वार्थ और बदले की भावना तक से प्रेरित न होते थे। उनके पीछे अपने जीवन के प्रति, लोगों के प्रति, यहाँ तक कि जर्मनों के प्रति भी, असीम घृणा की भावना छिपी थी, जिस पर उसने शिष्टता व बाह्याडम्बर का नकाब डाल रखा था।

इस घृणा के कारण फ़ोमीन का दिमाग़ ख़राब होता जा रहा था, किन्तु यह कभी इतनी उग्र और निराशाजनक न हुई थी, जितनी इस समय थी, क्योंकि उसके मानसिक अस्तित्व का अन्तिम गन्दा आश्रय भी धराशायी हो गया था। यद्यपि उसने बड़े-बड़े अपराध किये थे, फिर भी उसने यह आशा हमेशा ही लगा रखी थी कि उसे इतना अधिकार प्राप्त होगा कि सभी उससे डरेंगे और इस डर के कारण ही उसकी इज़्ज़त करने लगेंगे, उसके सामने फिर झुकायेंगे। फिर, पुराने जमाने के इज़्ज़तदार लोगों की तरह वह मान-सम्मान से भरा स्वतंत्रता और समृद्धि का जीवन व्यतीत करेगा।

किन्तु बात बिलकुल उल्टी सिद्ध हुई। सम्पत्ति उसको कोई सहारा न दे पायी और न अब इसकी कोई उम्मीद ही थी। वह जिन लोगों को गिरफ़्तार करता था या मौत के घाट उतारता था, उनकी सारी चीज़ें चुरा लेता था। और यद्यपि जर्मन उसकी इस चोरी को नज़र-अन्दाज कर देते थे, फिर भी उसकी इन हरकतों से नफरत करते थे और उसे भाड़े के टट्टू, परजीवी, नीच, लुटेरे-अधिक कुछ नहीं समझते थे। वह जानता था कि जर्मनों को उसकी सेवाओं की तभी तक ज़रूरत रहेगी, जब तक कि वह उनका शासन मजबूत बनाने में उनकी इच्छानुसार काम करता रहेगा और जब वतकदनदह-अर्थात-नयी व्यवस्था की स्थापना हो जायेगी, तो वे उसे निकाल फेंकेंगे।

यह ठीक है कि बहुत-से लोग उससे डरते थे, परन्तु दूसरों ही की तरह वे भी उससे घृणा करते थे, उससे दूर रहते थे। और बिना कायदे की हैसियत और लोगों की इज़्ज़त प्राप्त किये उसे उन सारे वस्त्राभूषणों से भी कोई सन्तोष न हो पाता था, जो वह अपनी बीवी के लिए घर लाता था। उसकी और उसकी पत्नी की ज़िन्दगी पशुओं की ज़िन्दगी से भी गयी-बीती थी-कम-से-कम पशुओं को अपने चारे, धूप और सन्तानोत्पत्ति से सन्तोष तो होता है। इग्नात फ़ोमीन की ड्यूटी थी-अन्य पुलिसवालों की तरह, सड़कों पर गश्त लगाना, दफ़्तर की इमारतों की चौकसी करना और लोगों की गिरफ़्तारियाँ करना और उनके घरों में छापे मारना।

इस रात को वह प्रशासन में ड्यूटी पर था, जिसके लिए पार्क में स्थित गोर्की स्कूल की इमारत इस्तेमाल की जाती थी।

वृक्षों की शाखाओं में सरसराती और पतले तनों में विलाप करती हुई-सी हवा सड़कों पर भीगी-भीगी पत्तियाँ बिखेर रही थी। हल्की-हल्की बूँदा-बाँदी हो रही थी। नीचे लटका हुआ-सा आसमान अन्धकारपूर्ण और मेघान्छन्न था। पर कुहरे के पीछे चाँद या सितारों का आभास मिल रहा था। पेड़ों के छोटे-छोटे झुरमुट काले और भूरे धब्बों की तरह लग रहे थे। उनकी आर्द्र आकृतियाँ आकाश में धुल रही थीं।

वाटिका के दोनों ओर एक दूसरे के सामने खड़े स्कूल का पक्का भवन और लकड़ी का बना ग्रीष्मकालीन थियेटर-भवन अँधेरे में विशाल चट्टानों जैसे लग रहे थे।

फ़ोमीन इन्हीं दोनों इमारतों के बीच लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ सड़क पर गश्त लगा रहा था। उसने एक लम्बा काला ओवरकोट पहन रखा था, जिसका कॉलर उसने खड़ा किया हुआ था। वह कभी इमारतों के उस पार क़दम न रखता, मानो जंजीर में बँधा हुआ हो। वह समय-समय पर पार्क के मेहराबदार फाटक के पास पहुँचकर स्तम्भ से सटकर खड़ा हो जाता। तो इस प्रकार वह अँधेरे में, सादोवाया मार्ग के मकानों की दिशा में टकटकी लगाये खड़ा था। सहसा एक शक्तिशाली हाथ ने पीछे से उसका गला इतने ज़ोर से दबोचा कि उसके मुँह से आह तक न निकल सकी। उसी हाथ

ने उसे इस तरह पीछे झुकाया कि उसकी रीढ़ में कोई चीज़ चटखी और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। उसी क्षण उसके शरीर पर कुछ और हाथ महसूस हुए। एक हाथ अभी तक उसका गला जकड़े था, दूसरा उसकी नाक लोहे की सँडसी की तरह दबाये था और तीसरा मुँह में डाट ठूँस रहा था। किसी ने तौलिये जैसी किसी रूखी चीज़ से उसका जबड़ा कसकर बाँध दिया था।

जब उसे कुछ होश आया, तो उसने देखा कि उसके हाथ-पैर बाँध दिये गये हैं और वह पार्क के फाटक की लकड़ी की मेहराब के नीचे पीठ के बल पड़ा है। आकाश पर धुँधलका छाया हुआ था।

उसके दोनों ओर कुछ मानव-आकृतियाँ निश्चेष्ट खड़ी थीं। वह उनके चेहरे नहीं पहचान पा रहा था। उनमें से एक सुडौल बदनवाले ने मेहराब पर एक नज़र डाली और कहा :

"यही जगह ठीक रहेगी!"

एक नाटा और दुबला-पतला छोकरा बड़ी होशियारी से अपने हाथों, कोहनियों और घुटनों के बल मेहराब पर चढ़ गया और उसके बीचोंबीच कुछ बाँधने लगा। सहसा फ़ोमीन ने अपने ऊपर कुछ ऊँचाई पर आकाश के झुटपुटे में इधर-उधर हिलाता-डुलता हुआ मोटे रस्से का एक फन्दा देखा।

"रस्से की दुहरी गाँठ बाँध लो," ज़मीन पर खड़े एक लड़के ने हुक्म दिया। उसकी टोपी का काला छज्जा आकाश की ओर इशारा कर रहा था।

फ़ोमीन ने आवाज़ सुनी और सहसा उसकी निगाहों के सामने 'शंघाई' मोहल्ले में स्थित अपना मकान, कमरे में रखे पौधों के गमले, मेज के पास बैठे हुए, दागभरे चेहरेवाला एक भारी-भरकम-सा आदमी और यही छोकरा घूम गये। फ़ोमीन का लम्बा बदन, ठण्डी, गीली ज़मीन पर पड़े हुए कीड़े की भाँति ज़ोर से तड़पने लगा। वह बल खाता हुआ उस जगह से कुछ दूर तक रेंग गया, किन्तु एक व्यक्ति ने अपने पैर से फिर फोमिन को वहीं धकेल दिया। इस व्यक्ति के कन्धे बेहद चौड़े थे, बाँहें मजबूत थीं और वह नाविकों की तरह एक भारी-सा कोट पहने था।

फ़ोमीन ने कावल्योव को पहचान लिया। वह उसी के साथ पुलिस में काम करता था, किन्तु उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। उसी के पास खड़े प्रशासन के एक मोटर-ड्राइवर को भी उसने पहचान लिया। यह थी चौड़े कन्धों वाला एक मजबूत लड़का था। फ़ोमीन ने उसी दिन उसे गैरेज में देखा था, जहाँ वह ड्यूटी पर जाने से पहले सिगरेट के दो-चार कश लगाने हो आया था। फ़ोमीन के दिमाग में तत्काल यह विचार कौंध गया कि इस बात में कि प्रशासन की लारियाँ रहस्यपूर्ण ढंग से बार-बार दुर्घटनाग्रस्त हो जाती हैं, उसकी जड़ में शायद यही लड़का होगा, शायद यही

मुख्य अपराधी है। बेशक, इस मामले की रिपोर्ट की जानी चाहिए। उसी क्षण उसे अपने ऊपर एक आवाज़ सुनायी दी, जिसका उच्चारण आर्मीनियाई जैसा था :

"सोवियत संघ के नाम पर..."

फ़ोमीन स्तब्ध रह गया। उसने अपनी आँखें ऊपर उठायीं और उसे एक बार फिर धुँधले भूरे आकाश की पृष्ठभूमि में, मोटे-से रस्से का एक फन्दा लटकता हुआ दिखायी दिया। वह दुबला-पतला छोकरा मेहराब के सिरे पर बैठा हुआ नीचे की ओर टकटकी बाँधे देख रहा था। तभी आर्मीनियाई उच्चारणवाली आवाज़ बन्द हुई। फ़ोमीन के डर के मारे रोंगटे खड़े हो गये और बुरी तरह हाथ-पैर मारने लगा। तभी कुछ शक्ति शाली हाथों ने उसे उठाया और पैरों पर खड़ा कर दिया। मेहराब पर जमे हुए दुबले छोकरे ने वह तौलिया खींच लिया, जिसमें फ़ोमीन का मुँह बँधा था और फ़न्दा उसकी गरदन में डाल दिया।

फ़ोमीन ने अपने मुँह में से डाट निकाल फेंकने का असफल प्रयत्न किया, उसका शरीर तड़पता हुआ हवा में लटक गया। उसके पैर ज़मीन तक पहुँचते-पहुँचते रह गये। उसका लम्बा काला ओवरकोट वैसे ही उसके शरीर से सटा था। वान्या तुर्केनिच ने घुमाकर उसका चेहरा सादोवाया मार्ग की ओर कर दिया और एक पिन की सहायता से उसकी छाती पर एक कागज लगा दिया, जिसमें उस अपराध की चर्चा थी, जिसके आधार पर उसे फाँसी दे दी गयी।

इसके बाद सभी लोग अपने-अपने घर खिसक गये। पर नन्हा रादिक युर्किन रात बिताने के लिए उपनगर में स्थित ज़ोर के मकान में पहुँचा।

"क्या हाल है तुम्हारा?" जोरा ने फुसफुसाते हुए रादिक से पूछा जो बुरी तरह काँप रहा था।

"मुझे नींद आ रही है...मैं जल्दी सो जाने का आदी हूँ," उसने उत्तर दिया और विनम्र दृष्टि से जोरा को देखने लगा।

सेर्गेई त्युलेनिन विचारों में डूबा हुआ, पार्क में पेड़ों के नीचे खड़ा था। उसने फ़ोमीन के घर में जिस हृष्ट-पुष्ट, सदय व्यक्ति को देखा था उसी के साथ फ़ोमीन ने गद्दारी की थी और उसे जर्मनों के साथ सौंप दिया था। और जैसे ही सेर्गेइ को इसकी खबर लगी उसने उसे ठिकाने लागने का शपथ खा ली थी। आज वह शपथ पूरी हो चुकी है। सेर्गेई ने न सिर्फ़ कड़ी सजा की माँग की बल्कि इसके लिए उसने अपनी समस्त शारीरिक और मानसिक शक्ति भी लगा दी। अब यह काम पूरा हो गया और उसे सन्तोष के साथ-साथ उत्तेजना एवं थकान का अनुभव भी हो रहा था। उसका जी कर रहा था कि वह गर्म पानी से नहाये-धोये, किसी सीधे, सरल विषय पर मित्रों के साथ बातें करे, जैसे पत्तियों की सरसराहट, झरने की झरझर, थकी और मुँदी आँखों

में पड़ती रविरश्मियों के बारे में...

यदि इस समय वह वाल्या के पास होता, तो ख़ुशी से नाच उठता। पर रात में उसकी माँ और छोटी बहन की उपस्थिति में वह उसके यहाँ जाने की कभी हिम्मत न कर सकता। इसके अलावा, वाल्या नगर में थी ही नहीं। वह तो क्रास्नोदोन की छोटी-सी बस्ती में गयी हुई थी।

तो उस विचित्र और कुहरे-भरी रात में, जब लगातार झींसी पड़ रही थी, सेर्गेई ने वान्या ज़ेम्नुखोव की खिड़की खटखटायी। रास्ते भर वह अपनी भीगी क़मीज में काँपता रहा। सर्दी से उसके पैर नीले पड़ गये थे और कीचड़ में सन चुके थे।

दोनों साथी दिये प्रकाश में रसोईघर में बैठे हुए थे। मकान की खिड़कियों पर काले परदे पड़े थे। आग चट्टचट्ट बोल रही थी, अँगीठी पर एक बड़ी-सी केतली गर्म हो रही थी-वान्या ने अपने मित्र को गर्म पानी से नहलाने-धुलाने की ठानी। सेर्गेई आग के बिलकुल पास उकड़ूँ बैठा था। खिड़की पर हवा के झोंके लग रहे थे और पानी की बूँदें उस पर गिर रही थीं। बूँदों की पटर-पटर और हवा के दबाव के रसोईघर के दिये की लौ तक काँप रही थी। दोनों मित्र सोच रहे थे कि इस समय स्तेपी में चल रहे किसी एकाकी यात्री की कितनी दयनीय दशा होगी। इसके विपरीत, एक छोटे-से गर्म रसोईघर में दो मित्रों का साथ-साथ रहना कितना सुखद है।

वान्या की आँखों पर चश्मा था। उसके पैर नंगे थे। उसने अपनी मन्द्र आवाज़ में कहना शुरू किया :

"इस समय मेरी आँखों के आगे पुश्किन की तस्वीर घूम रही है-किसान का छोटा-सा घर, घर के बाहर बर्फ का तूफान गरज रहा है और उसके पास दाई अरीना रोदिओनोव्ना के सिवा और कोई नहीं... बाहर तूफान है और दाई चर्खा चला रही है। तकला भनभना रहा है, आग अँगीठी में चटक रही है। मैं उनकी एक-एक भावना को अपने दिल से महसूस करता हूँ। मैं ख़ुद देहात का रहनेवाला जो हूँ। और मेरी माँ बिलकुल लिखना-पढ़ना नहीं जानती। वह भी देहात में पली है! तुम्हारी माँ की तरह....मुझे अब भी अपनी झोपड़ी याद है। मुझे याद है कि मैं अँगीठी के ऊपर बिस्तरे पर लेटा हुआ था। तब मेरी उम्र छह साल की थी। उस समय मेरा भाई साशा स्कूल से घर आया था और कोई कविता रटने लगा... मुझे यह भी याद है कि एक दिन भेड़ों को हाँका जा रहा था और मैं एक भेड़ पर सवार होकर उसके एड़ियाँ मारने लगा, पर उसने मुझे नीचे गिरा दिया।

वान्या सहसा लजाकर चुप हो गया। कुछ देर बाद फिर बोला :

"जब कभी पुश्किन का कोई मित्र उससे मिलने आता था तो वह बड़ा ख़ुश हो उठता था... अब मेरी कल्पना में वह दृश्य साफ़-साफ़ घूम रहा है, जब पूशिन उससे

मिलने आया था। घोड़े की घण्टियों की आवाज़ उसके कान में पड़ी, तो वह सोचने लगा-वह कौन हो सकता है? क्या पुलिस के सिपाही तो उसे पकड़ने नहीं आ रहे हैं? पर नहीं, वह उसका मित्र पूश्चिन ही आ गया... फिर मैं अकेले दाई के साथ बैठे हुए भी उसकी कल्पना कर सकता हूँ। उनसे बहुत दूर एक हिमावृत्त गाँव पड़ा था, जिसमें कहीं पर भी रोशनी नहीं थी। उन दिनों रोशनी के लिए वे खपचियाँ इस्तेमाल करते थे। याद है तुम्हें पुश्किन की वह कविताः 'नभ को ढँकता धुँध, तिमिर से बर्फ उड़ाता अँधड़ आता!' ज़रूर याद होगा तुम्हें। ये पंक्तियाँ तो मेरे अन्तस् तक को झकझोर देती हैं..."

वान्या किसी कारणवश सेर्गेई के सामने उठ खड़ा हुआ और यह कविता पढ़ने लगा-

मेरे इस सूने यौवन की
मात्र संगिनी, लाओ प्याला,
सब दुख-दर्द डुबोयें उसमें
और हृदय हर्षाये हाला,
सागर पार शान्ति से चिड़िया
रही थी यह गीत सुनाओ,
कैसे प्रातः पानी लाने
जाती थी युवती यह गाओ।

सेर्गेई अँगीठी के पास बिलकुल शान्त बैठा था। उसके होंठ कुछ सूजे हुए-से थे। उसकी आँखें वान्या पर टिकी थीं। उनमें कठोरता और मृदुता दोनों ही झलक रही थीं। अँगीठी पर चढ़ी हुई केतली का ढक्कन खड़-खड़ाने लगा। पानी में बुलबुले उठ रहे थे।

"काफ़ी, कविता हो चुकी!" जैसे होश में आते हुए वान्या बोला। "चलो कपड़े उतारो। मैं तुम्हें अव्वल दर्जे का गुसल कराऊँगा," उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा। "सारे कपड़े उतारो, तकल्लुफ न करो! मेरे पास तुम्हारे लिए खीसा भी है।"

सेर्गेई कपड़े उतारने लगा। इतने में वान्या ने अँगीठी पर से केतली ले ली। फिर एक चिलमची उठाकर ले आया और स्टूल पर रख दिया। वहीं पास में सादे साबुन की एक टिकिया भी रख दी, जिसमें से कुछ दुर्गन्ध-सी आ रही थी। टिकिया पहले से ही बहुत कुछ घिस चुकी थी।

"तम्बोव प्रदेश में, हमारे गाँव में एक बूढ़ा रहा था, जो ज़िन्दगी भर मास्को में सन्दुनोव के हम्माम में ही काम करता रहा," अपनी लम्बी-लम्बी टाँगें फैलाकर वान्या

ने कहा। "जानते हो ऐसे हम्माम में काम करने के क्या माने होते हैं? मान लो तुम एक जमींदार हो और एक हम्माम में गए हो। और तुम अपने स्नान के लिए वहाँ काम करनेवाले एक व्यक्ति को किराये पर लेते हो, जो तुम्हारे बदन पर कसकर खीसा लगाता है। उस बूढ़े का कहना था कि उसने अपनी ज़िन्दगी में कोई पन्द्रह लाख व्यक्तियों को खीसा लगाया है। और जानते हो, उसे अपने इस काम पर गर्व था-इसने इतने लोगों को साफ़-सुथरा जो बनाया था! हाँ, तुम तो ख़ुद ही जानते हो लोग कैसे होते हैं। एक हफ़्ते के बाद वे फिर ज्यों के त्यों गन्दे हो गये।"

सेर्गेई ने दाँत निकाले और बदन पर से आख़िरी कपड़ा उतारकर एक ओर रखा, चिलमची में कुछ और गरम पानी उँडेला और अपना रूखे, घुँघराले बालोंवाला सिर उसमें घुसा दिया।

"तुम्हारे कपड़े ऐसे नहीं हैं जिन पर कोई गर्व करे," गीले कपड़ों को अँगीठी के ऊपर लटकाते हुए वान्या ने कहा। "मेरे कपड़ों से भी गये-बीते हैं...पर मैं देख रहा हूँ तुम सफाई को पसन्द करते हो...यहाँ यह पानी इस गन्दी बाल्टी में डाल दो और साफ़ पानी ले लो। आराम से पानी छिड़का सकते हो। फर्श मैं बाद में साफ़ कर लूँगा।"

सहसा वान्या के चेहरे पर एक फीकी-सी मुस्कान दौड़ गयी और वह अपने लम्बे, दुबले-पतले हाथ गिराकर गहरी आवाज़ में बोला :

"अब जरा घूम जाइये, हुजूर, मैं आपकी पीठ साफ़ कर दूँ..."

सेर्गेई ने अपने मित्र को कनखियों से देखकर खीसे में साबुन लगाया और दाँत निकाल दिये। फिर उसने खीसा वान्या को थमाया और अपनी धूप से झुलसी हुई पतली और माँसल पीठ वान्या की ओर कर दी। सेर्गेई की रीढ़ की हड्डी ख़ूब उभरी हुई थी।

आँखें कमज़ोर होने के कारण वान्या कुछ अटपटे ढंग से ही सेर्गेई की पीठ मलने लगा। तभी सेर्गेई सहसा हाकिमों के-से लहजे में खीजकर बोल उठाः

"क्या बात है, भई? कमज़ोर हो गये हो या काहिल? मैं तुम्हारे इस काम से ख़ुश नहीं हूँ, भई..."

"हुजूर, आप ख़ुद ही देख लें है! मुझे खाने को जो कम मिलता है!" वान्या ने बड़ी गम्भीरता के साथ अपनी सफाई पेश की।

ठीक इसी समय रसोईघर का दरवाज़ा खुला। वान्या सींगवाले फ्रेम का चश्मा लगाये और आस्तीन चढ़ाये खड़ा था, और सेर्गेई नंग-धड़ंग पीठ पर साबुन लगाये था। दोनों ने एक-साथ दरवाज़े की ओर घूमकर देखा-दरवाज़े पर वान्या का पिता खड़ा था। लम्बा-सा क़द, दुबले-पतले भारी हाथ लटके हुए। उसने दोनों पर थकी-सी आँखें

उठायीं। वह कुछ क्षणों तक खड़ा रहा, फिर बिना एक भी शब्द कहे घूमा और दरवाज़ा बन्द कर, बाहर निकल गया।

"तूफ़ान टल गया," वान्या ने शान्ति से कहा और वह सेर्गेई की पीठ पर फिर से खीसा करने लगा, लेकिन अब उसमें वह उत्साह नहीं था। "हुजूर, बख़्शीश!"

"भगवान देगा," सेर्गेई ने उत्तर दिया। किन्तु उसे पक्का विश्वास न था कि हम्माम में काम करनेवाले किसी नौकर से ऐसा कहना उचित भी है या नहीं और उसने ठण्डी साँस भर दी।

"हाँ... तुम्हारे माता-पिता की मैं कुछ नहीं कह सकता, किन्तु मेरे माता-पिता मेरा कड़ा विरोध करेंगे।" वान्या ने गम्भीरता से कहा। तब तक साफ़-सुथरा सेर्गेई अँगीठी के पास छोटी मेज पर बैठ चुका था।

सेर्गेई को तो इस बात का भय न था कि उसके माँ-बाप उसके रास्ते में बाधक बनेंगे... उसने वान्या को सोयी नज़रों से देखा।

"जरा कागज-पेंसिल तो देना। जाने से पहले मैं कुछ लिखना चाहता हूँ," वह बोला।

जब तक वान्या रसोईघर साफ़ करने का बहाना करता रहा, सेर्गेई ने कागज पर लिख लिया :

"वाल्या, मैंने सोचा भी न था कि तुम्हारे अकेले चले जाने पर मेरा दिल इतना बैठ जायेगा। मेरे मन में बार-बार यह ख़याल उठता है कि तुम्हारे साथ सब कुछ ठीक-ठाक भी है या नहीं। हमें कभी भी एक-दूसरे से अलग नहीं होना चाहिए। जो कुछ करें, साथ करें। वाल्या, यदि मैं मारा जाऊँ, तो तुम एक काम ज़रूर करना-मेरी कब्र पर आकर दो आँसू बहा देना।"

तत्पश्चात् सर्द झींसी में, वह नंगे पैर, लघु शंघाई से होता हुआ अपनी राह चल पड़ा। वायु कराह रही थी। वह गड्ढों और खड्डों को पार करता हुआ आगे बढ़ रहा था। वह दिन निकलते ही पार्क के आस-पास स्थित देरेव्यान्नाया मार्ग पर पहुँचना और अपना पुर्जा वाल्या की छोटी बहन ल्यूस्या को थमा देना चाहता था।

अध्याय 7

एक दिन प्रातः काल वाल्या और नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने स्तेपी से होकर जानेवाली राह पकड़ी। यह यात्रा मजेदार ज़रूर थी, किन्तु वाल्या के दिमाग में अपनी माँ के सम्बन्ध में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे, इसलिए वह अन्यमनस्क और सुस्त थी।

संगठन ने वाल्या को प्रथम काम सौंप दिया जो खतरे से खाली न था, पर माँ!

माँ का वह क्या करे!... जब वाल्या ने सामान्य ढंग से माँ को बताया कि वह कुछ दिनों के लिए नताल्या अलेक्सेयेव्ना के घर जा रही है, तो माँ ने उसे कैसी नज़रों से देखा! ऐसे वक्त, जब माँ को इतना अकेलापन महसूस हो रहा था, बेटी के स्वार्थ ने माँ के दिल को कितना दुखाया होगा। कहीं माँ को कुछ शक हो गया हो तो?...

"मैं तोस्या येलिसेयेंको से आपका परिचय करा दूँगी..." नताल्या अलेक्सेयेव्ना कह रही थी। "वह एक अध्यापिका है और मेरी माँ की पड़ोसिन है। या यों कहें वह और उसकी माँ मेरी माँ के साथ दो कमरों के एक फ़्लेट में रहती हैं। तोस्या स्वतंत्र और दृढ़ चरित्र की लड़की है। वह उम्र में आप से काफ़ी बड़ी है। मैं साफ़-साफ़ बता दूँ कि किसी दढ़ियल ख़ुफ़िया कार्यकर्ता के बजाय जब वह मेरे साथ एक नन्ही ख़ूबसूरत लड़की को देखेगी, तो परेशान ज़रूर हो उठेगी!" नताल्या अलेक्सेयेव्ना का हमेशा अपनी बात के अर्थ पर अधिक ध्यान रहता था और सुननेवाले पर इसका क्या असर पड़ेगा, इसकी वह बिलकुल पर्वाह नहीं करती थी। "मैं सेर्गेई को अच्छी तरह जानती हूँ। वह सचमुच गम्भीर स्वभाव का लड़का है। अपने से अधिक मैं उस पर भरोसा करती हूँ। अगर सेर्गेई मुझसे यह कहता है कि आप जिला ख़ुफ़िया संगठन में काम करती हैं, तो मेरे लिए यही काफ़ी है। और मैं आपकी मदद करना चाहती हूँ। अगर तोस्या आपसे खुलकर बात नहीं करेगी, तो कोल्या सुम्स्कोई के पास जाइये। कोल्या के प्रति तोस्या के व्यवहार को देखते हुए मैं कह सकती हूँ कि कोल्या वहाँ का सबसे प्रमुख व्यक्ति है। वैसे वे दोनों तोस्या की माँ और मेरी माँ के सामने प्रेम-अभिनय करते रहते हैं। बेशक मैं अन्य कामों में उलझी रहने के कारण अपने निजी मामलों की ओर कोई ध्यान नहीं दे पायी, फिर भी मैं लड़के-लड़कियों के सम्बन्धों को ख़ूब समझती हूँ। मैं जानती हूँ कि कोल्या सुम्स्कोई लीदा अन्द्रोसोवा से प्यार करता है जो कि ख़ूब इठलाती फिरती है," नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने असन्तुष्ट स्वर में कहा, "लेकिन निश्चय ही लीदा भी उनके संगठन की सदस्या है," उसकी न्यायप्रियता की भावना बलवती हो उठी। "अगर आपको कोल्या सुम्स्कोई द्वारा जिला संगठन के साथ सम्पर्क स्थापित करने की ज़रूरत पड़ गयी, तो मैं जिला श्रम-केन्द्र में कार्यरत एक डाक्टर के नाते उसे दो दिन के लिए बीमारी की छुट्टी दे सकती हूँ। वह किसी छोटी-सी खान में विंच पर काम करता है..."

"और जर्मन आपके प्रमाणपत्रों का विश्वास करते हैं?" वान्या ने पूछा।

"जर्मन!" नताल्या अलेक्सेयेव्ना बोल उठी, "उन्हें तो हर उस कागज पर अन्धविश्वास रहता है, जिस पर सरकारी मुहर लगी हो... उस खान में प्रशासन-कार्य रूसी करते हैं। वैसे दूसरी जगहों की ही तरह, वहाँ भी टेक्नीकल दस्ते का एक जर्मन सार्जेण्ट और एक कारपोरल डाइरेक्टर के मातहत रहते हैं। उन्हें रक्षक कुत्ते ही

समझिये। किन्तु उनकी निगाह में हम सारे रूसी एक-दूसरे से इतने मिलते-जुलते हैं कि वे लोग यह जान नहीं पाते कि कौन काम पर आया है और कौन नहीं!"

क्रास्नोदोन की खनिक-बस्ती में हरियाली नाम मात्र को भी न थी। वह तो एक प्रकार से खुली हुई जगह थी। यत्र-तत्र बड़ी-बड़ी इमारतें बिखरी हुई थी। जो बैरकों की याद दिलाती थीं, खानें और मिट्टी के ढेर थे।

आख़िर हुआ वही जैसा कि नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने पहले से ही कह दिया था। वाल्या को इस मनहूस वातावरण में दो दिन बिताने पड़े और वह भी उन लोगों के बीच, जिन्हें मुश्किल से ही इस बात पर विश्वास दिलाया जा सकता था कि इस लम्बी, काली बरौनियों और सुनहरी लटोंवाली लड़की के पीछे 'तरुण गार्ड' का शक्तिशाली अधिकार विद्यमान था।

नताल्या अलेक्सेयेव्ना की माँ इस बस्ती के एक अरसे से आबाद इलाके में रहती थी। हर मकान के पास छोटे-छोटे बगीचे भी थे। पर वहाँ की झाड़ियाँ सूख गयी थीं। कई दिन से हो रही वर्षा के कारण सड़क पर क़रीब-क़रीब कमर तक कीचड़ बिछ गया था। जाड़ों तक यह कीचड़ ऐसे ही बना रहेगा।

इन दिनों एक रूमानियन दस्ता बस्ती से होकर स्तालिनग्राद की दिशा में जा रहा था। दस्ते की तोपें और वैगन खींचनेवाले दुबले-पतले घोड़े घण्टों कीचड़ में फँसे रहते और गाड़ीवान उन्हें रूसी में कोसते रहते। उनकी आवाज़ें स्तेपी की बाँसुरी की तरह सारी बस्ती में गूँज जाती थीं।

तोस्या येलिसेयेंको 23 वर्ष की एक मोटी-ताजी आकर्षक उक्राइनी लड़की थी। गठा हुआ बदन और काली आवेगपूर्ण आँखें। उसने साफ़-साफ़ वाल्या से कह दिया, "मैं समझती हूँ कि जिला ख़ुफ़िया केन्द्र ने क्रास्नोदोन जैसी खनिक-बस्ती को तुच्छ समझकर भूल की है। आख़िर अभी तक इस बस्ती में कोई लीडर क्यों नहीं आया? केन्द्र ने उनके इस अनुरोध को क्यों नहीं माना कि काम के सिलसिले में हिदायतें देने के लिए यहाँ किसी जिम्मेदार व्यक्ति को भेजा जाये?"

वाल्या ने इसका स्पष्टीकरण देना उचित समझा कि वह मात्र 'तरुण गार्ड' युवा संगठन की प्रतिनिधि है, जो जिला ख़ुफ़िया पार्टी समिति के निर्देशन में काम कर रहा है।

"तो 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वार्टर का ही कोई सदस्य हमसे क्यों नहीं मिलने आया?" तोस्या की आँखें चढ़ गयीं। "आख़िर हमारे यहाँ भी एक युवक संगठन है," उसने गर्व से कहा।

"मैं भी हेडक्वार्टर की एक अधिकृत सन्देशवाहिका हूँ," वाल्या ने भी उतने ही गर्व से कहा और उसका ऊपरी होंठ काँप उठा। "जिस संगठन के बारे में अभी तक

यह पता न चला हो कि वह कोई काम भी कर रहा है या नहीं, उसमें हेडक्वार्टर के किसी सदस्य का भेजा जाना जल्दबाजी की बात होती, और यह बात साजिश के कामों के लिए उपयुक्त न होती... अगर आप साजिशी काम के बारे में कुछ समझती हैं तो।"

"क्या कहा, कोई काम भी कर रहा है या नहीं, " तोस्या ने क्रोध से कहा, "यह भी कोई हेडक्वार्टर रहा, जो अपने ही संगठनों के काम के बारे में कुछ नहीं जानता! मैं भी तो कोई मूर्ख नहीं हूँ कि अपने संगठन की कार्रवाइयों के बारे में एक अजनबी को बताने लग जाऊं।"

कौन जाने कि यदि कोल्या सुम्स्कोई की बात बीच में ही न छिड़ गयी होती, तो ये दो गर्वीली और सुन्दर लड़कियाँ इसी बात पर एकमत हुई ही न होतीं।

बेशक जब वान्या ने कोल्या सुम्स्कोई का नाम लिया, तो तोस्या ने कहा कि उसे उसके बारे में कुछ नहीं मालूम। किन्तु वाल्या ने बड़ी रुखाई से कहा कि 'तरुण गार्ड' दल के सदस्य यह अच्छी तरह जानते हैं कि संगठन में सुम्स्कोई का प्रमुख स्थान है। और यदि तोस्या उसे सुम्स्कोई के पास नहीं ले जायेगी, तो वाल्या स्वयं उसका पता चला लेगी।

"आप उसका पता आख़िर कैसे लगायेंगी?" तोस्या चिन्तित होकर बोली।

"कम-से-कम लीदा आन्द्रोसोवा की मार्फत।"

"लीदा भी आपसे मेरी तरह पेश आयेगी।"

"यह तो और भी बुरी बात है... मैं पूछ-पूछकर उसकी तलाश करूँगी, पर चूँकि मैं उसका पता ठिकाना नहीं जानती, तो मेरे कारण वह किसी मुसीबत में पड़ सकता है।"

तोस्या येलिसेयेंको को वाल्या की बात माननी ही पड़ी।

और जब वे दोनों कोल्या सुम्स्कोई के पास पहुँचीं, तो सारी बातें साफ़ हो गयी। वह खनिक-बस्ती के छोर पर एक खुले देहाती घर में रहता था। उसके मकान के पीछे स्तेपी शुरू हो जाती थी। कभी उसका पिता खान में गाड़ीवान का काम करता था, उनका रहन-सहन कुछ गँवई और कुछ शहरी ढंग का था।

सुम्स्कोई की नाक बहुत बड़ी और चेहरा साँवला था। उसके मुख पर सदा बुद्धिमत्ता और सनातन उक्राइनी साहस एवं चालाकी का पुट छाया रहता था। चातुर्य तथा स्पष्टवादिता के मिश्रण ने उसके व्यक्तित्व को बेहद आकर्षक बना दिया था। उसने आँखें मिचकाईं, बड़े धैर्य के साथ वाल्या की अहंकारपूर्ण और तोस्या की उत्तेजनापूर्ण टिप्पणियाँ सुनी और बिना एक भी शब्द बोले, उन्हें अपने घर के बाहर ले आया। फिर वे तीनों अटारी पर चढ़ गये। तभी ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए

कुछ कबूतर दरबे से निकले और और आकाश में उड़ चले, कुछ सुम्स्कोई के सिर और कन्धों पर बैठ गये और कुछ हाथों पर बैठने को मचलने लगे। आख़िर उसने एक अति सुन्दर सफ़ेद कबूतर को अपने हाथ में ले लिया।

अटारी में हट्टे-कट्टे बदन का एक युवक बैठा था। वह एक अजनबी लड़की को देखते ही बेहद घबरा गया और कोई चीज़ घास-फूस में छिपाने लगा। सुम्स्कोई ने उसे इशारा किया कि सब कुछ ठीक है। युवक ने मुस्कराकर घास-फूस एक ओर हटायी और वाल्या को वहाँ एक रेडियो-सेट दिख गया।

"वोलोद्या ज्दानोव... वाल्या, अज्ञात से मिलो," बिना मुस्कराये सुम्स्कोई बोला, "हाँ, हम तीनों लोग-तोस्या, वोलोद्या और आपका खाकसार अपने संगठन के प्रमुख हैं," उसने समझाया और गुटर-गूँ करते, पंख फड़फड़ाते हुए कबूतरों से ढंक-सा गया।

जब तक वे लोग परस्पर इस बात पर विचार कर रहे थे कि सुम्स्कोई वाल्या के साथ नगर जा सकेगा या नहीं, हट्टे-कट्टे युवक की दृष्टि बराबर वाल्या पर लगी हुई थी जिससे वह कुछ विचलित हो उठी। 'तरुण गार्ड' दल का सदस्य कोवल्योव भी ऐसा ही हट्टा-कट्टा और मजबूत और अपनी शक्ति एवं नेकी के कारण पास-पड़ोस के इलाकों में 'छोटे जार' के नाम से मशहूर था। किन्तु इस लड़के के चेहरे और शरीर का गठन इतना शानदार था कि किसी की भी निगाह बरबस उसकी ओर खिंच जाती थी। फिर न जाने क्यों सहसा वाल्या को दुबले-पतले और नंगे पैर सेर्गेई त्युलेनिन की याद आ गयी, और उसके हृदय में इतनी मीठी-मीठी टीस हो उठी कि वह चुप हो गयी।

चारों व्यक्ति अटारी के किनारे आ गये। अचानक कोल्या सुम्स्कोई ने कबूतर को पूरी शक्ति के साथ मेघाछन्न आकाश में उड़ा दिया। बाक़ी कबूतर भी उसके कन्धों पर से फड़फड़ाते हुए उड़ गये। अब सभी लोग छत की तिरछी खिड़की में से सफ़ेद कबूतर को आकाश में उड़कर भूत की तरह गायब होते हुए देख रहे थे।

तोस्या येलिसेयेंको ताली बजा-बजाकर उछलने-कूदने और इस तरह चहकने लगी कि सभी लोग उसकी ओर देखकर हँस पड़े। उसका यह जोश और उसकी आँखों का उत्साहपूर्ण भाव जैसे साफ़-साफ़ कह रहा था, "तुम लोग समझते हो कि मैं पत्थर दिल हूँ। आँखें खोलो और देखो मैं सचमुच कितनी अच्छी हूँ!"

दूसरे दिन सुबह वाल्या और कोल्या सुम्स्कोई स्तेपी से होकर नगर की ओर चल दिये। रात में घने बादल छँट गये थे। अब आकाश साफ़ था और सूरज निकल चुका था। उसकी गर्मी ने शीघ्र ही सभी चीज़ें झुलसा डालीं। फिर भी वहाँ शरद के आरम्भ की, पिघले हुए ताँबे के रंग की छटा निखर रही थी। मकड़ी के जाले हवा में तैर रहे थे। स्तालिनग्राद की दिशा में उड़ते हुए जर्मन यातायात-विमानों की बार-बार स्तेपी

में गूँज उठती थी।

क़रीब आधी दूरी पार कर चुकने के बाद वाल्या और सुम्स्कोई आराम करने के लिए एक टीले की ढलान पर रुके। सुम्स्कोई ने सिगरेट सुलगा ली।

सहसा उन्हें गीत के स्वर सुनायी दिये। यह गीत इतना परिचित था कि उन दोनों के दिलों में गूँजने लगा-'नींदमगन धुँधले-धुँधले टीले...' यह गीत दोनेत्स स्तेपी के लोगों के बीच बड़ा ही लोकप्रिय था। पर गीत के ये स्वर यहाँ, और इतने सवेरे, आ कहाँ से रहे हैं? वान्या और कोल्या पास आते हुए गीत के शब्द मन ही मन दुहराने लगे। एक स्वर स्त्री का था और दूसरा पुरुष का, दोनों मिलकर यह गीत गा रहे थे। स्वर युवा थे और दोनों पूरा ज़ोर लगाकर गा रहे थे। लग रहा था। जैसे वे सारी दुनिया को ललकार रहे हैं :

नीदमगन धुँधले-धुँधले
दहक रहे, तपते टीले,
और कुहासा दूध धुला
चले तार-सा वह उजला...
सरसर करते कुंजों को
लाँघ हरे वन, खेतों को
दोन स्तेपी में निकला
लड़का एक जवान भला...

शीघ्र ही वाल्या टीले की चोटी पर चढ़ गयी और वहाँ छिपकर नीचे देखने लगी, फिर उठ खड़ी हुई और ठहाका मारकर हँस पड़ी-सड़क पर वोलोद्या ओस्मूखिन अपनी बहन ल्यूद्मीला के हाथ में हाथ में डाले चला आ रहा था। दोनों गाने में-या यों कहें, चिल्लाने में मस्त थे।

वाल्या बच्चों की तरह लुढ़कती हुई टीले से नीचे उतर गयी। सुम्स्कोई अधिक चकित न हुआ और धीरे-धीरे वाल्या के पीछे टीले से उतरने लगा।

"सवारी किधर जा रही है?"

"दादा से कुछ अनाज लेने, गाँव की तरफ़। वह तुम्हारे पीछे कौन लगा है?"

"बस्ती का हमारा एक साथी। कोल्या सुम्स्कोई।"

"मैं तुम्हें एक और हमदर्द यानी अपनी प्यारी बहन ल्यूद्मीला की सिफारिश कर सकता हूँ। उसने मुझे अपने दिल की बात यहाँ, स्तेपी में, अभी-अभी बतायी है," वोलोद्या बोला।

"वान्या, तुम्हीं बताओ, हैं न ये लोग गधे! सब के सब मुझे अच्छी तरह जानते हैं, फिर भी मेरा सगा भाई मुझसे हर बात छिपाता है। लेकिन मेरी भी तो आँखे हैं।

मैंने छापेखाने का टाइप भी देख लिया, जिसे वह किसी बदबूदार घोल में धो रहा था। आज अभी यह सब का सब नहीं धो पाया कि... वाल्या, जानती हो आज क्या हुआ?" वह सहसा बोल पड़ी और सुम्स्कोई पर एक उड़ती हुई नज़र डाली, जो इस समय तक पास आ चुका था।

"ठहरो," वोलोद्या ने बड़ी गम्भीरता से बात काटी। "कारखाने के मेरे साथियों ने अपनी आँखों से देखा है और उन्होंने मुझे बताया है-रोज की तरह वे पार्क से होकर जा रहे थे कि सहसा उन्होंने देखा कि फाटक पर, काला कोट पहने हुए एक व्यक्ति लटका हुआ है। उसकी छाती पर एक नोटिस भी चिपकी थी। पहले तो उन्होंने सोचा कि हमारे किसी साथी को जर्मनों में फाँसी दे दी है, पर जब वे और निकट पहुँचे, तो देखा कि फ़ोमीन लटका हुआ है। तुम तो जानती हो उस सुअर को, जर्मनों का सिपाही बना फिरता था। नोटिस में लिखा था : 'जो लोग हमारे आदमियों के साथ गद्दारी करेंगे, उनके साथ हम यही सुलूक करेंगे।' इतना ही..." फिर फुसफुसाते हुए उसने जोड़ दिया, "लाजवाब! वह पूरे दो घण्टे तक दिन के उजाले में लटका रहा! वहाँ वह तो स्वयं ही गश्त लगाया करता था। पास-पड़ोस में कोई और पुलिसवाला था भी नहीं। ढेर सारे लोगों ने इन नजारे को देखा है। सारे नगर में आज इसी की चर्चा हो रही है।"

फ़ोमीन को फाँसी देने के सम्बन्ध में 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के निश्चय से न तो वोलोद्या ही अवगत था, न वाल्या ही और न वे इसकी कल्पना ही कर सकते थे कि इसतरह की कोई बात हो सकती है। वोलोद्या को विश्वास था कि यह काम बोल्शेविक ख़ुफ़िया संगठन ने किया होगा। पर सहसा वाल्या के चेहरे का रंग उड़ गया-वह एक ऐसे व्यक्ति को जानती थी, जो यह काम कर सकता था।

"हमारा कोई व्यक्ति तो मारा नहीं गया? सब ठीक-ठाक तो है न? कोई गिरफ़्तारी तो नहीं हुई?" उसने काँपते हुए होंठों से पूछा।

"कमाल का काम किया है!" वोलोद्या ने कहा, "कोई कुछ भी नहीं जानता। सब ठीक है...पर मेरे घर में आफत मची हुई है... मेरी माँ को पूरा विश्वास है कि उस कुत्ते को मैंने ही लटकाया है। अब वह भविष्यवाणी कर रही है कि मुझे भी फाँसी दे दी जायेगी। इसीलिए तो मैं ल्युदमीला को मनाने लगा : 'देखो, माँ कुछ बहरी है, उसे बुखार भी है। और यों भी हमें दादा की खबर लेनी चाहिए'।"

"आइए, चलते हैं," सहसा वाल्या ने सुम्स्कोई से कहा।

बाक़ी रास्ते भर वाल्या इतनी तेज रफ़्तार से चलती रही कि सुम्स्कोई निढाल होते-होते रह गया और वह यह न समझ सका कि इस लड़की में सहसा यह परिवर्तन क्यों आ गया। आख़िर वह क्षण भी आया, जब वह अपने मकान की सीढ़ियाँ चढ़ती

दिखायी दी। सुम्स्कोई कुछ घबराकर उसके पीछे-पीछे खाने के कमरे में चला आया।

वहाँ अपनी कसी हुई गहरे रंग की पोशाक में भारी-भरकम मरीया अन्द्रेयेव्ना और कन्धों तक बिखरे हुए हल्के सुनहरे बालोंवाली छोटी पीली ल्यूस्या एक-दूसरे के आमने-सामने बैठी थीं। दोनों चुप थीं, किसी औपचारिक जन्मदिवस-समारोह में आये हुए मेहमानों की तरह।

जब मरीया अन्द्रेयेव्ना की बड़ी बेटी ने कमरे में प्रवेश किया, तो माँ जल्दी से उठी, कुछ कहने को हुई, परन्तु शब्द जैसे उसके गले में ही अटककर रह गये। उसने संदिग्ध नज़रों से सुम्स्कोई और वाल्या की ओर देखा। फिर उससे रहा न गया और वह बेटी को ज़ोर से चूमने लगी। अब जाकर वाल्या समझ गयी कि उसकी माँ भी उसी तरह छटपटाती रही होगी, जैसे वोलोद्या की माँ। उसने सोचा होगा कि उसकी बेटी वाल्या बोर्त्स भी फ़ोमीन को फाँसी देने की साजिश में शामिल थी, इसीलिए तो वह पिछले दो दिनों में गायब थी।

इस समय वाल्या जैसे यह भूल ही गयी थी कि सुम्स्कोई भी दरवाज़े पर खड़ा अटपटा-सा महसूस कर रहा है। उसकी आँखें माँ पर ही लगी हुई थीं, उनका भाव पढ़ पाना आसान था : “माँ, अब मैं तुमसे क्या कहूँ?”

उसी क्षण छोटी ल्यूस्या चुपचाप वाल्या के पास आयी और उसे एक पुर्जा थमा दिया। वाल्या ने यंत्रवत उसे खोला और पढ़ने के पहले ही लिखावट पहचान ली। उसका साँवला, धूल से सना चेहरा खिल उठा। उसके होंठों पर एक बाल-सुलभ मुस्कान दौड़ गयी। उसने झट से घूमकर सुम्स्कोई पर एक नज़र डाली और उसकी गरदन और कान लाल हो उठे। उसने माँ का हाथ पकड़ा और उसे दूसरे कमरे में खींच ले गयी।

“माँ!” वह बोली, “जो कुछ तुम सोच रही हो, वह सब बेकार है। पर क्या तुम यह नहीं देख सकतीं, समझ नहीं पाती कि हम, यानी मैं और मेरे साथी किस लक्ष्य को लेकर जी रहे हैं? हम किसी और ढंग से रह ही नहीं सकते। प्यारी माँ!” वाल्या ख़ुशी से फूली न समा रही थी। उसकी आँखें सीधे माँ की आँखों में झाँक रही थीं।

मरीया अन्द्रेयेव्ना का स्वस्थ चेहरा कुछ क्षणों के लिए पीला पड़ गया, फिर प्रेरणावश दमक उठा।

“बिटिया! भगवान तुझे लम्बी उम्र दे,” आँखों में आँसू भरकर मरीया अन्द्रेयेव्ना बोली। “तेरी उम्र दराज हो!”

अध्याय 8

जब अपने बच्चों के विचारों ओर अनुभूतियों से अपरिचित माता-पिता यह देखते हैं

कि उनके बच्चे गुप्त, रहस्यपूर्ण और खतरनाक कार्रवाइयों में भाग ले रहे हैं। और वे न तो अपने बच्चों के क्रियाकलाप की दुनिया में प्रवेश कर सकते हैं और न उन्हें रोक ही सकते हैं, तो उनकी स्थिति बड़ी क्लेशपूर्ण हो उठती है।

वान्या को आनेवाले तूफान की भनक नाश्ते के समय अपने पिता का गम्भीर चेहरा देखते ही लग गयी। तूफ़ान तब उबल पड़ा जब उसकी बहन नीना कुएँ से पानी लेकर लौटी और साथ ही फ़ोमीन की मौत की खबर लायी। उसने यह भी बताया कि लोग इस बारे में क्या-क्या कह रहे हैं।

उसके पिता के चेहरे का रंग उड़ गया। उसके दुबले-पतले गालों की मांसपेशियाँ तन गयीं।

“सारे मामले की सर्वाधिक अधिकृत सूचना हमें शायद यहीं घर में ही मिल सकती है,” उसने अपने बेटे की ओर बिना देखे बड़ी कटुता में कहा। “आख़िर बोलते क्यों नहीं? बताओ! तुम तो इन लोगों के निकट सम्पर्क में रहते हो। है न?” उसने धीरे-से कहा।

“निकट सम्पर्क में किसके? पुलिस के?” वान्या का चेहरा पीला पड़ गया।

“पिछली रात को त्युलेनिन क्यों आया था? कर्फ़्यू के बाद?”

“कर्फ़्यू का पालन कौन करता है? क्या निषिद्ध घण्टों में नीना किसी से मिलने नहीं जाती? वह यहाँ गप्प लड़ाने आया था और वह भी पहली बार नहीं।”

“झूठ मत बोलो!” पिता ने चीख़ते हुए मेज पर मुक्का मारा। “इसकी सजा है जेल। बेशक वह चाहे, तो अपना गला फँसाये, तुम्हारे माँ-बाप को किस अपराध की सजा दी जायेगी?”

“पिता जी, कुछ और बात जानना चाहते हैं आप,” वान्या चुपचाप उठ खड़ा हुआ। पिता ने फिर एक बार मेज पर मुक्का मारते हुए कहा, “नहीं, वही बात!'' पर वान्या ने उधर कोई ध्यान न दिया। “आप यही जानना चाहते हैं,'' वह बोला, “कि मैं खुफ़िया संगठन में काम करता हूँ या नहीं। बोलिये यही जानना चाहते हैं न! तो मैं कहता हूँ कि नहीं। और फ़ोमीन की खबर भी मैंने, अभी-अभी, नीना के मुख से सुनी है। इस पर मैं सिर्फ़ यही कह सकता हूँ कि वह बदमाश इसी काबिल था। नीना का कहना है कि दूसरे लोग भी यही सोचते है। आप भी यही सोचते हैं। बस मैं एक बात ज़रूर कहूँगा-मुझसे जितना बन पड़ता है, अपने लोगों की मदद करता हूँ, क्योंकि मैं कोमसोमोल का सदस्य हूँ। हम सबकों उनकी मदद करनी चाहिए। इसके बारे में न तो मैंने आपसे ही कुछ कहा, न माँ से ही, क्योंकि मैं आपको अकारण चिन्ता में नहीं डालना चाहता था।''

“सुन रही हो, अनस्तसीया इवानोव्ना?'' आपे से बाहर होते हुए पिता ने अपनी

निस्तेज आँखें पत्नी के चेहरे पर गड़ा दीं। "उसकी बात सुनो-हमारी चिन्ता कर रहा है!.. तुम्हें शर्म नहीं आती? मैं ज़िन्दगी भर ख़ून-पसीना एक करके तुम्हारे लिए काम करता रहा... भूल गये हो क्या कि हम एक ही घर में बारह परिवार कैसे रहते थे-अट्ठाईस-अट्ठाईस बच्चे फर्श पर रेंगा करते थे? तुम्हीं बच्चों के लिए हमने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया। अलेक्सान्द्र स्कूल गया, पर हमने उसे अपनी शिक्षा पूरी नहीं करने दी। यही बात नीना की शिक्षा के सम्बन्ध में भी हुई। हमने सब कुछ तुम्हारे ही लिए किया और अब तुमने खुद फ़न्दा अपने गले में फँसा लिया है। अपनी माँ की ओर देखो। तुम्हारे ही लिए बेचारी रो-रोकर मरी जा रही है। पर तुम हो कि आँखें खोलना भी नहीं चाहते।"

"और आपका क्या सुझाव है? मुझे क्या करना चाहिए?"

"काम में लगो। नीना काम करती है, तुम भी कर सकते हो। वह एकाउण्टेण्ट होते हुए भी साधारण मज़दूर का काम करती है। लेकिन तुम क्या काम करते हो?''

"काम करूँ? किसके लिए करूँ? जर्मनों के लिए? ताकि वे हमारे लोगों को अधिक संख्या में मौत के घाट उतारें। लाल सेना को आने दीजिये, तभी मैं सबसे पहले काम पर जाऊँगा। मेरा भाई, यानी आपका बेटा लाल सेना में है और फिर भी आप मुझसे यह कह रहे हैं कि जाकर जर्मनों की मदद करों, ताकि वे उसे जल्दी ही मार डालें!'' वान्या ने क्रोध से कहा।

इस समय तक वे दोनों आमने-सामने बड़े हो चुके थे।

"तो तुम्हारे लिए खाना कहाँ से आयेगा?'' पिता चिल्ला रहा था। "और क्या यह ठीक होगा कि जिन लोगों की तुम्हें इतनी फिक्र है, उन्हीं में से कोई तुम्हें जर्मनों के हाथ में सौंप दे। तुम हमारे मुहल्ले के लोगों के बारे में क्या जानते हो? उनके मन में क्या है? मैं तुम्हें बताऊँगा। उन्हें सिर्फ़ अपने स्वार्थ और अपनी चमड़ी की चिन्ता है। बस तुम्हारी ही कसर रह गयी है उन सबका भला करने के लिए!"

"जी नहीं! बताइये जरा, जिस समय आपने सरकारी सामान मोर्चों से दूर, सुरक्षित स्थानों में भेजने में मदद दी थी, तो उस समय क्या आप वह काम अपने स्वार्थ के लिए कर रहे थे?''

"तुम मेरी बात छोड़ो।''

"क्यों छोड़ूँ? आप यह क्यों सोचते हैं कि आप दूसरों से अच्छे हैं?'' वान्या बोला। उसका चश्मेवाला चेहरा एक ओर को झुक गया था। वह मेज पर एक हाथ की उँगलियाँ टिकाये खड़ा था। "स्वार्थ! हर शख़्स अपने ही फायदे के पीछे! मैं आपसे पूछता हूँ-उन दिनों जब आपको काम से छुट्टी मिल गयी थी और आप को पता हो गया था कि आप यहाँ ठहरेंगे और इससे आपको नुकसान पहुँच सकता था, फिर भी

बीमार होने पर भी, आप रात भर क्यों सरकारी सामान लदवाते रहे? इसमें आपका कौन-सा स्वार्थ था? क्या इस प्रकार का आचरण करनेवाले दुनिया में अकेले आप ही हैं? यह तो वैज्ञानिक तथ्यों को भी असत्य बताना हुआ न?"

उस दिन रविवार था। अतः उसकी बहन नीना घर पर ही थी। वह विवादियों से मुँह मोड़े पलंग पर बैठी थी। उसकी भौहें चढ़ी हुई थीं। माँ भी वहीं उपस्थित थी। उसको डर था कि कहीं क्रोध में उसका पति वान्या को घर से निकाल न दे। वह एक सहृदय और दुबली-पतली स्त्री थी, जो समय से पहले ही बूढ़ी लगने लगी थी। उसने सारी ज़िन्दगी या तो खेतों में काम किया था या रसोईघर में। वह पति की हर बात में हाँ में हाँ मिला रही थी, पर जब बेटा कुछ कहने लगता, तो वह पति की ओर ऐसी दृष्टि से ताकती, मानो उससे अनुरोध कर रही हो कि वह बेटे की बात ध्यान से सुने और उसे क्षमा कर दे। बेशक पति-पत्नी दोनो की राय थी कि बेटे की बात में कोई दम या तुक नहीं है।

पिता कमरे के बीचोंबीच खड़ा था। वह पुरानी गंजी के ऊपर एक लम्बा-सा कोट पहने था। उसके पतलून पर अनेक पैबन्द लगे हुए थे। और सिकुड़े-ऐंठे पैरों में स्लीपर पड़े थे।

"मैं ज़िन्दगी की बात कर रहा हूँ, वैज्ञानिक तथ्यों की नहीं," वह चिल्लाया और अपनी मुट्ठी सीने से सटाकर असहाय-सा नीचे गिरा दी।

"और यदि विज्ञान ज़िन्दगी का अंग नहीं है, तो आख़िर है क्या?.. अकेले आप ही इन्साफ़ की माँग नहीं कर रहे हैं!" वान्या कुछ तैश में आकर बोला। "आपमें जो कुछ भी अच्छाई है, उसके लिए अपको शर्म आती है!''

"मुझे शर्म आये तो किस बात की?''

"तब साबित कीजिये कि जो कुछ मैंने कहा है, वह गलत है! सिर्फ़ चीख़ने-चिल्लाने से ही मैं आश्वस्त नहीं हो सकता। हाँ, तो आपके आगे मैं सिर झुकाकर चुप हो सकता हूँ। पर मेरी आत्मा मुझे जो रास्ता दिखायेगी, उस पर ज़रूर चलूँगा।"

पिता का शरीर शिथिल पड़ गया। उसकी धूमिल दृष्टि और भी धुँधलाने लगी।

"तो यह बात है, अनस्तसीया इवानोव्ना," उसने ऊँची आवाज़ में कहा, "हमने अपने बेटे को शिक्षा दी है... हमने उसे पढ़ाया-सिखाया है और अब उसे हमारी कोई ज़रूरत नहीं रही। अलविदा!'' उसने हाथ झटकारे, मुड़ा और कमरे से बाहर निकल गया।

अनस्तसीया इवानोव्ना भी उसके पीछे-पीछे चली गयी। नीना वैसे ही अपने बिस्तर पर बैठी रही। न बोली, न सिर उठाया।

वान्या निरुद्देश्य कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक टहलता रहा। उसकी

आत्मा तड़प रही थी और वह उसे शान्त रखने में असमर्थ था। आख़िर वह भी बैठ गया। अपने भाई को कविता में पत्र लिखकर उसने अपने दिल का गुबार निकालने का प्रयत्न किया। पहले भी व अक्सर यही किया करता था।

मेरे अच्छे मित्र, दोस्त मेरे सच्चे
तुम तो मेरे भाई हो, प्यारे साशा..

यही ठीक नहीं।

सबसे अच्छे मित्र, सगे भाई मेरे।

नहीं, कविता की पंक्तियाँ सूझ ही नहीं रही थीं। वैसे भी भाई के पास पत्र भेजना असम्भव था।

आख़िर वान्या ने समझ लिया कि उसे क्या करना चाहिए-उसे नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की जाकर क्लावा से मिलना चाहिए।

येलेना निकोलायेव्ना कोशेवाया को बहुत अधिक चिन्ता थी, क्योंकि वह यह निश्चय नहीं कर पा रही थी कि वह ओलेग के कामों पर रोक लगाये या उनमें उसकी मदद करे। दूसरी माताओं की तरह उसे भी अपने बेटे के लिए हमेशा भय बना रहता। दिन-ब-दिन उसकी नींद हराम होती जा थी। उसका दिमाग और शरीर दोनों ही शिथिल होते जा रहे थे और उसके चेहरे की झुर्रियाँ गहरी होती जा रही थीं। कभी-कभी उसे इच्छा होती कि वह सारे बन्धन तोड़ डाले, चीख़े-चिल्लाये और अपने बेटे को जबरदस्ती उस बदक़िस्मती के पंजों से छुड़ा ले, जिसे वह गले लगाने की तैयारी कर रहा था।

येलेव्ना निकोलायेव्ना में अपने पति, अर्थात ओलेग के सौतेले पिता, के कुछ गुण मौजूद थे। वह पति को बेहद प्यार करती थी। वह भी अपने पति की तरह दुश्मन से जूझने को बेचैन थी, इसलिए उसमें अपने बेटे के कामों के प्रति हमदर्दी के अलावा कोई और भाव न उठ सकता था।

प्रायः वह अपने बेटे के रुख से चिढ़ भी जाया करती थी : वह हमेशा ही अपनी माँ से सारी बातें साफ़-साफ़, स्नेह और विनम्र भाव से कहता आया है, तो अब वह इतना चुप्पू क्यों हो गया है? वह अपने को खास तौर से अपमानित समझती, क्योंकि उसकी अपनी माँ, नानी वेरा, प्रत्यक्षतः ओलेग की साजिशों में शामिल रहती और अपनी बेटी से सारी बातें छिपाया करती थी। जहाँ तक येलेना निकोलायेव्ना का ख़याल था, उसका भाई निकोलाई भी साजिशों में भाग लेता था। यहाँ तक कि माँ की अपेक्षा पोलीना गेओर्गियेव्ना सोकोलोवा भी, जिसे वे लोग चाची पोल्या कहकर बुलाते थे, ओलेग के कहीं निकट हो गयी थी। यह सब कैसे, कब और क्यों हुआ?

पहले येलेना निकोलायेव्ना और चाची पोल्या एक-दूसरे से इतनी मिल गयी थी

कि जब कभी लोगों की बातचीत में एक का जिक्र आता, तो दूसरी का नाम भी तत्काल उनकी ज़बान पर आ जाता। उनकी मित्रता प्रौढ़ और अनुभवी स्त्रियों की मित्रता जैसी थी। उनका काम और दृष्टिकोण एक समान थे। किन्तु जब लड़ाई छिड़ी, तो चाची पोल्या ने जैसे सभी लोगों से नाता ही तोड़ लिया। उसने कोशेवोई परिवार के घर जाना तक बन्द कर दिया। जब कभी येलेना निकोलायेव्ना उसके पास आती, तो चाची पोल्या को इस बात पर शर्म आने लगती कि उसके पास एक गाय है, जिसका दूध वह बेचती है। उसे यह डर बना रहता कि कहीं येलेना निकोलायेव्ना उसे इस बात के लिए बुरा-भला न कहे कि उसने अपने निजी स्वार्थों के लिए देश की भलाई की खातिर काम करने से मुँह मोड़ लिया है। पर येलेना निकोलायेव्ना मन ही मन समझती थी कि पोलीना के साथ इन बातों पर बहस करने की कोई सम्भावना नहीं है। अतः उनकी मित्रता अपने आप टूट गयी।

पोलीना गेओर्गियेनवा ने कोशेवोई परिवार में फिर से तब आना शुरू किया, जब नगर पर जर्मन सेना का क़ब्ज़ा हो गया। वह वहाँ खुले दिल से आती, और अपना दुखड़ा सुनाने लगती येलेना निकोलायेव्ना को फिर उसकी पुरानी सहेली मिल गयी। वे फिर अक्सर एक-दूसरे के साथ उठने-बैठने लगीं। अब भी ज़्यादा बातें येलेना निकोलायेव्ना ही करती थी और नम्र तथा शान्तचित्त चाची पोल्या अपनी थकी हुई किन्तु होशियार आँखों से, चुपचाप उसे निखरा करती थी। चाचाी पोल्या की चुप्पी के बावजूद येलेना निकोलायेव्ना ने यह बात समझ ली थी कि ओलेग पोलीना की ओर पूरी तरह आकृष्ट हो चुका है। जब कभी वह उनके यहाँ आती, तो ओलेग उसी के पास मँडराने लगता और प्रायः येलेना निकोलायेव्ना उन्हें एक-दूसरे के साथ अर्थपूर्ण मुद्रा में आँखें मिलाते हुए देख लेती। और जब कभी वह दो-चार मिनट के लिए कमरे से बाहर जाकर फिर लौट आती, तो उसे महसूस होता जैसे उसने उनकी किसी खास बातचीत में बाधा डाली है। और जब कभी येलेना निकोलायेव्ना अपनी सहेली को दरवाज़े तक पहुँचाना चाहती, तो वह बड़ी विनम्रता से कह देती : "नहीं, नहीं, प्यारी येलेना, तकलीफ न करो। मैं ख़ुद चली जाऊँगी।" पर जब कभी ओलेग उसे सड़क तक छोड़ने जाता, तो वह कुछ न कहती।

यह सब हुआ कैसे? माँ का दिल यह सब बर्दाश्त कैसे करता? दुनिया में ऐसा कौन है, जो उसके बेटे को उससे ज़्यादा अच्छी तरह समझता है, कौन उसके विचारों और कार्यों को अपना समझकर उनमें हाथ बँटा सकता है? कुसमय में मातृ-स्नेह की शक्ति से बढ़कर कौन उसके बेटे की रक्षा कर सकता है? किन्तु उसकी आत्मा कह रही थी कि उसका बेटा ज़िन्दगी में पहली बार उससे अपना राज इसलिए छिपा रहा है, क्योंकि उसे अपनी माँ में पूरा विश्वास नहीं है।

अन्य सभी माताओं की तरह वह भी अपने इकलौते बेटे में गुण ही गुण देखती थी, पर इसके साथ ही साथ वह वस्तुतः उसे अच्छी तरह समझती थी।

जिस समय से नगर में 'तरुण गार्ड' के रहस्यपूर्ण परचे निकलने शुरू हो गये थे, तभी से उसे इस बात में कोई सन्देह नहीं रह गया कि ओलेग उस संगठन से न सिर्फ़ सम्बन्ध ही है, बल्कि वह उसमें प्रमुख भूमिका भी अदा करता है। उसे चिन्ता होती थी, कष्ट होता था और साथ ही गर्व भी होता था, पर वह इस बारे में अपने बेटे से साफ़-साफ़ बात नहीं कर पा नहीं थी।

सिर्फ़ एक बार उसने उससे बातों ही बातों में पूछ लिया :

"इन दिनों तुम्हारी दोस्ती किस से है?"

एक अप्रत्याशित चालाकी के साथ उसने ऐसा रुख अपनाया, मानो इस प्रश्न का सम्बन्ध उस बातचीत से हो जो कभी लेना पोज्दनिशेवा के बारे में उनके बीच हुई थी। उसने कुछ घबराकर उत्तर दिया :

"मैं न... नीना इवान्त्सोवा के स-साथ घूमता हूँ..."

उसकी माँ पता नहीं क्यों उसकी बात में आ गयी और अस्वाभाविक लहजे में पूछा बैठीः

"और लेना?"

ओलेग ने एक शब्द कहे बिना अपनी डायरी निकाली और माँ को थमा दी। इसमें उसने लेना पोल्दनिशेवा के साथ अपने बेटे के भूतपूर्व प्रेम और मोह की कहानी पढ़ी और यह भी पढ़ लिया कि अब लेना के बारे में ओलेग की क्या राय है।

किन्तु जिस दिन उसने अपने पड़ोसियों से फ़ोमीन की मौत की खबर सुनी, तो उसके मुँह से चीख़ निकलते-निकलते रह गयी और वह फौरन जाकर अपने विस्तर पर पड़ गयी। नानी वेरा, ममी की तरह मूक और रहस्यपूर्ण, उसके पास आयी और उसके माथे पर एक ठण्डा तौलिया रख दिया।

दूसरी माताओं की तरह उसे भी एक क्षण के लिए यह सन्देह न हुआ कि सचमुच उसी के बेटे ने फ़ोमीन को फाँसी दी होगी। परन्तु वह ऐसी ही दुनिया में आजकल रह रहा था और उनका यह संघर्ष बड़ा ही भयानक और क्रूर था! उसके बेटे को कौन-सी सजा दी जायेगी? उसे इस प्रश्न का अब भी कोई उत्तर न मिल रहा था। पर अब भयानक रहस्य का अन्त होना चाहिए-ज़िन्दगी ऐसे नहीं चल सकती!

इस समय उसका बेटा शैड में अपने पलंग पर सिर झुकाये बैठा था। उसका एक कन्धा दूसरे से ऊँचा था। वह हमेशा की तरह साफ़-सुथरे कपड़े पहने हुए था। उसके ठीक सामने साँवला, चुस्त बदन और लम्बी नाकवाला कोल्या सुम्स्कोई लकड़ी के कुन्दे पर बैठा था। दोनों शतरंज खेल रहे थे।

दोनों खेल में खो-से गये थे। हाँ, कभी-कभी वे कुछ ऐसी टिप्पणियाँ ज़रूर कर लेते थे, जिनके कुछ अंश सुनकर कोई व्यक्ति सोच सकता था कि वे दोनों पुराने और पक्के अपराधी हैं।

सुम्स्कोई-"स्टेशन पर अनाज की खत्ती है... जैसे ही उसमें पहली कटाई का अनाज भरा गया, कोल्गा मिरोनोव और पलागूता ने उसमें किलनी डाल दी..."

चुप्पी।

ओलेग-"तो सारा अनाज काटा जा चुका है?"

सुम्स्कोई-"वे हमसे करवा रहे हैं... बहुत-सा अनाज गट्ठरों और टालों में बँधा है और खुला हुआ भी पड़ा है। वहाँ उसकी गाहाई या लदाई का कोई प्रबन्ध नहीं।"

चुप्पी।

ओलेग-"टालों में आग लगा देनी चाहिए... तुम्हारा रुख पिटनेवाला है।''

चुप्पी।

ओलेग-"यह अच्छा ही है कि सरकारी फार्म पर भी तुम्हारे लोग हैं। हेडक्वार्टर की बैठक में हमने इस सम्बन्ध में विचार करके यह निश्चय किया था कि फार्मों पर हमारे अपने दल ज़रूर होने चाहिए। तुम्हारे पास हथियार है?"

सुम्स्कोई-"ज़्यादा नहीं।"

ओलेग-"तो तुम्हें कुछ इकट्ठा करने की ज़रूरत पड़ेगी।"

सुम्स्कोई-"इकट्ठा करें, पर कहाँ से?"

ओलेग-"स्तेपी में। और जर्मनों के पास से भी चुरा सकते हो। वे लोग बहुत लापरवाह हैं।"

सुम्स्कोई-"माफ करो, तुम्हें शह खानी पड़ रही है!"

ओलेग-"मोहरा पीट लिया! तुम्हें एक हमलावर की भाँति इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

सुम्स्कोई-"हमलावर तो मैं नहीं हूँ।"

ओलेग-"तो फिर किसी दुमछल्ले देश की तरह नोक-झोंक क्यों कर रहे हो!"

सुम्स्कोई-"इस समय मेरी स्थिति फ़्रांसीसियों की-सी है।" सुम्स्कोई मुस्करा दिया।

चुप्पी।

सुम्स्कोई-"गुस्ताखी माफ़ करना। मैं उस आदमी के बारे में जानना चाहता हूँ, जिसे फांसी दी गयी थी। क्या उसमें तुम लोगों का हाथ था?"

ओलेग-"कौन जाने?"

"ख़ूब," सुम्स्कोई ने सन्तोष के साथ कहा। "मेरा ख़याल है कि अगर उनमें से

कुछ और लोगों को ठिकाने लगा दिया जाये तो बेहतर होगा, भले ही यह काम पीछे से हमला करके किया जाये। पिछ-लगों के साथ ही साथ अफ़सरों को भी उड़ाया जाये, तो बहुत अच्छा होगा!"

"बेशक होना तो यही चाहिए। वे हैं भी लापरवाह!"

"मेरा विचार है कि मैं बाजी हार गया," सुम्स्कोई बोला, "मेरी स्थिति निराशाजनक है और अब समय आ गया है कि मैं घर चला जाऊँ।"

ओलेग ने करीने से शतरंज के मोहरे इकट्ठे किये, फिर दरवाज़े के पास गया, बाहर झाँककर देखा और लौट आया।

"शपथ लो..."

अब दोनों आमने-सामने खड़े हो गये। उनका क़द एक जैसा था किन्तु ओलेग के कन्धे अधिक चौड़े थे। दोनों के हाथ लटके हुए थे। उनकी आँखों में निष्ठा की स्वाभाविक झलक थी।

सुम्स्कोई ने अपनी क़मीज की जेब टटोली और एक पुर्जा निकाल लिया। उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"मैं, निकोलाई सुम्स्कोई," उसने दबी आवाज़ में कहना शुरू किया, "'तरुण गार्ड' दल में भर्ती होते समय अपने जंगी साथियों, अपनी चिरसंतप्त मातृभूमि और सारी जनता के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हूँ..." वह इतना उत्तेजित था कि उसकी आवाज़ झनझना उठी। पर यह सोचकर कि कोई न सुन ले, वह फुसफुसाती हुई आवाज़ में बोला। "...यदि यंत्रणा या कायरता के कारण मैं इस पवित्र शपथ का अतिक्रमण करूँ, तो सदा के लिए मेरे और मेरे स्वजनों के नाम पर कलंक लगे और मेरे साथी मुझे कठोर दण्ड दें। ख़ून का बदला ख़ून! मौत का बदला मौत!''

"मैं तुम्हें बधाई देता हूँ... अब से तुम्हारी ज़िन्दगी तुम्हारी अपनी नहीं रही। वह पार्टी की, सारी जनता की हो चुकी है," ओलेग ने उत्तेजित होकर कहा और उसका हाथ दबाया। "अब तुम्हें अपने सारे क्रोस्नोदोन दल को शपथ दिलानी होगी..."

अब मुख्य काम-चुपचाप अपने कमरे में पहुँच जाना और कपड़े उतारकर सो जाना था। उककी माँ सो गयी होगी या शायद सोने का बहाना कर रही होगी। उस हालत में उसकी स्पष्ट किन्तु व्यथित-सी दृष्टि से आँखें चुराने की ज़रूरत ही न होगी और न उसके सामने यह बहाना करने की ज़रूरत होगी कि उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

उसने दबे पाँव रसोईघर में प्रवेश किया, चुपचाप कमरे का दरवाज़ा खोला और अन्दर घुस गया। हमेशा की तरह झिलमिली बन्द थी और खिड़की पर काले परदे पड़े थे। रसोईघर में चूल्हा दिन भर जलता रहा था। सारे मकान में असह्य घुटन थी।

एक पुराने टीन के डिब्बे के ऊपर दिया रखा हुआ था, जिस से मेजपोश पर तेल की बूँदें न गिरें। बत्ती की टिमटिमाती रोशनी में परिचित वस्तुओं की आकृतियाँ डोलने लगीं।

उसकी माँ हमेशा हर काम करीने से करती थी। इस समय न जाने क्यों वह पलंग पर बैठी हुई थी। बिस्तरा अस्त-व्यस्त पड़ा हुआ था। वह अपने कपड़े अभी भी पहने हुए थी और उसके बाल सँवरे हुए थे। उसके छोटे-छोटे बादामी हाथ, जिनके जोड़ों में सूजन थी, उसकी गोद में पड़े थे। वह बत्ती की लौ की ओर अपलक देख रही थी।

घर में कितनी शान्ति थी! घड़ी की टिक-टिक तक सुनायी न दे रही थी। मामा कोल्या, जो अब अपना अधिकांश समय अपने साथी इंजीनियर बिस्त्रीनोव के साथ व्यतीत किया करता था, घर लौटकर सो गया। सब के सब सो रहे थे, मरीना भी, नन्हा-सा भतीजा भी, नानी भी। सिर्फ़ माँ ही जग रही थी, प्यारी माँ!

किन्तु इस समय सबसे ज़रूरी बात यह थी कि वह अपनी अनुभूतियों पर न जाये...उसे माँ के पास के चुपचाप गुजर जाना और फौरन अपने बिस्तर पर पड़ जाना था...

लम्बा क़द, भारी-सा बदन। वह धीरे-धीरे माँ के पास आया और घुटनों के बल पड़कर अपना मुँह उसकी गोद में छिपा लिया। माँ के हाथ उसके गालों पर फिरे, और उसे अपूर्व स्निग्धता का अनुभव हुआ। कहीं दूर से आती हुई-सी चमेली की ख़ुशबू और चिरायते या बैंगन की पत्तियों की तीखी-सी गन्ध उसकी घ्राणेन्द्रियों में प्रवेश करने लगी... पर इससे क्या!

"प्यारी, प्यारी माँ!" वह फुसफुसाया। उसकी आँखों में चमक दौड़ गयी। "प्यारी माँ, तुम तो सब कुछ समझती हो, सब कुछ!"

"हाँ, मैं सब समझती हूँ," यह फुसफुसायी और बिना उसकी ओर देखे कुछ झुक गयी।

बेटे ने माँ की आँखों में आँखें डालकर देखने का प्रयत्न किया, किन्तु माँ ने अपनी आँखें उसके रेशमी बालों में छिपा लीं। वह बराबर फुसफुसाये जा रही थी :

"मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ... हर जगह! हिम्मत रखना, मेरे लाल...आख़िरी दम तक..."

"माँ, अब कुछ मत कहो... अब तुम्हें सोना चाहिए..." वह फुसफुसाया। "तुम्हारे बालों के पिन निकाल दूँ?"

और जैसा वह बचपन में किया करता था एक के बाद एक सभी पिनें निकालने लगा। तभी उसकी चोटियाँ बगीचे मे बोझिल सेबों की तरह-नीचे गिर पड़ीं और माँ

उनके तले ढक गयी।

अध्याय 9

कुछ दिनों के लिए नीज़्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की जाने के वास्ते वान्या जेम्नुखोव को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर से अनुमति लेनी ज़रूरी थी।

"सुनो, यह किसी लड़की से मिलने का बहाना नहीं है," उसने ओलेग से कहा। "मैं बहुत दिनों से उसे कज़्ज़ाक बस्तियों में युवक-युवतियों को संघटित करने का काम सौंपने की सोच रहा हूँ," उसने कुछ शर्माते हुए कहा।

किन्तु ओलेग ने वान्या के इन अकाट्य तर्कों को सुना-अनुसुना कर दिया।

"दो-एक दिन ठहर जाओ," वह बोला, "तुम्हारे लिए कोई दूसरा काम भी निकल सकता है... नहीं, यहाँ नहीं, वहीं," वान्या के चेहरे पर आत्म-नियन्त्रण का भाव दिखायी पड़ते ही ओलेग ने मुस्कराकर कहा। जब वान्या अपनी वास्तविक अनुभूतियाँ छिपाना चाहता था, तो उसकी शक्ल ऐसी ही लगने लगती।

पिछले कुछ दिनों से पोलीना गेओर्गियेव्ना ओलेग से बराबर यह अनुरोध करती आ रही थी कि वह ल्युतिकोव के पास एक ऐसे होशियार छोकरे को भेजे, जो क्रास्नोदोन और नीज़्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की के बीच सन्देशवाहक के रूप में काम कर सके। ओलेग ने इसके लिए जेम्नुखोव का नाम सोच रखा था।

ओलेग को ल्यूतिकोव का सन्देह देते हुए चाची पोल्या ने उससे ज़ोर देकर कहा कि इस काम के लिए साथ चुनने में यह ध्यान रखा जाये कि वह सबसे अधिक होशियार और सबसे अधिक विश्वसनीय व्यक्ति हो।

ओलेग से जेम्नुख़ोव के बातचीत कर लेने के दूसरे ही दिन, वान्या स्तेपी से होकर जाता हुआ दिखायी दिया। उस के नंगे पैरों में कैनवस के जूते थे और सिर पर रूमाल बँधा था। उसके दोनों ओर खड़ी अनाज की बालियाँ लहरा रही थीं, जो अभी तक काटी नहीं गयी थीं।

उसके मन में अपनी इस नयी भूमिका और उसे चरम उद्देश्य के महत्व के सम्बन्ध में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे। सफर के समय अपने ही विचार में खो जाना कमज़ोर दृष्टिवाले वान्या की एक आदत-सी बन गयी थी। वह स्तेपी से गुजरता हुआ न जाने कितने गाँवों से होकर निकल गया, किन्तु रास्ते की किसी भी चीज़ पर उसका ध्यान न गया।

यदि कोई स्थिति से अनभिज्ञ व्यक्ति जर्मन अधिकृत किसी इलाके से गुजर रहा होता, तो वह अपनी आँखों के सामने पड़नेवाला असाधारण रूप से निराशाजनक

दृश्य देखकर अवश्य ही विचलित हो उठता। वहाँ सैकड़ों गाँव जलकर राख हो गये थे। हाँ, यहा-क़दा कुछ ऐसी बस्तियाँ भी मिल रही थीं, जहाँ किसी भी जर्मन के क़दम नहीं पड़े थे।

और ऐसे गाँव भी थे, जहाँ जर्मन शासन की स्थापना हो चुकी थी और इस ढंग से, जिसे जर्मन अपने राज्य के लिए सबसे अधिक लाभप्रद और सुविधाजनक समझते थे। वहाँ सैनिक लूट-पाट अर्थात् गुजरती हुई फ़ौजों द्वारा की जानेवाली लूट-मार तथा हर क़िस्म की निर्दयता और हिंसा बरती जाती थी। यह सब काण्ड उतने ही बड़े पैमाने पर हो रहे थे, जितने बड़े पैमाने पर जर्मन सेनाओं द्वारा रूस के अन्य अधिकृत क्षेत्रों पर हो रहे थे। लूट-मार जर्मन प्रशासन का अभिन्न अंग थी।

नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की का कज़्ज़ाक गाँव ऐसा ही एक गाँव था। वहाँ क्लावा कोवल्योवा और उसकी माँ को उनके रिश्तेदारों ने आश्रय दे रखा था।

वे दोनों क्लावा के मामा के मकान में रहती थीं। क्लावा का मामा जर्मनों के आने के पहले एक मामूली किसान था और अपने परिवार के साथ सामूहिक फार्म के खेतों में काम करता था। इसी कमाई तथा अपने बगीचे से प्राप्त आमदनी पर वह गुजर-बसर करता था। न वह टोली-नायक रहा था, न ही साईस।

जर्मन शासन काल में प्रत्येक साधारण कृषक परिवार की तरह क्लावा के मामा इवान निकनोरोविच तथा उसके परिवार के बहुत-से संकटों का सामना करना पड़ा। आगे बढ़ती हुई जर्मन सेनाओं ने उन्हें बुरी तरह लूटा था। लेकिन उन्हें अपनी सारी सम्पदा से हाथ धोना पड़ा, ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि दुनिया भर में रूसियों के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसे किसान नहीं, जो आड़े वक्त के लिए अपना सामान छिपाये रखने में इतने हिकमती हों।

सेनाओं के निकल जाने और व्तकदनदह-'नयी व्यवस्था' की स्थापना के बाद दूसरे सभी लोगों की तरह इवान निकनोरोविच को भी यह सूचना दी गयी कि नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की की जो भूमि युद्ध से पहले सदा के लिए सामूहिक किसानों को दी गयी थी, वह अन्य सारी ज़मीन के साथ-साथ, अब जर्मन शासन की सम्पत्ति होगी। किन्तु कीयेव के राइख कमिश्नर की मार्फत व्तकदनदह-'नयी व्यवस्था' ने यह फरमान निकाला था कि यह ज़मीन, जिसे पहले इतने परिश्रम से एक सामूहिक फार्म का रूप दिया गया था, अब फिर छोटी-छोटी पट्टियों में बाँटी जायेगी और एक-एक पट्टी की जोताई-बुआई एक-एक कज़्जाक परिवार करेगा। किन्तु यह कार्रवाइयाँ तब तक के लिए स्थगित रहेंगी, जब तक सभी कज़्जाक और किसानों को खेतीबारी के औजार और घोड़े नहीं मिल जाते। और तब तक ज़मीन अपनी पहली ही स्थिति में रहेगी, फर्क यही होगा कि अब वह जर्मन राज्य की सम्पत्ति बन जायेगी। ज़मीन की

खेतीबारी के निरीक्षण के लिए जर्मन अधिकारी हर कज़्ज़ाक गाँव में एक रूसी मुखिया नियुक्त करेंगे। वस्तुतः यहाँ उसकी नियुक्ति पहले से ही हो चुकी थी। कृषक परिवारों को दस-दस के समूहों में बाँटा जाना था और एक-एक समूह के लिए जर्मनों द्वारा एक-एक रूसी नायक की नियुक्ति होनी थी। और ऐसी कार्रवाई सम्पन्न भी हुई। ज़मीन पर काम करने के बदले किसानों को कुछ अनाज दिये जाने के व्यवस्था थी और किसान अच्छा काम करे इसके लिए उन्हें पहले से ही बता दिया गया था कि निजी खेत सिर्फ़ उन्हीं किसानों को दिया जायेगा, जो इस समय अच्छा काम करेंगे।

अभी जर्मन सरकार न तो उन्हें मशीनें दे सकती है, न पेट्रोल, न घोड़े। किसानों को अपने हलों, हँसियों, गायों से काम चलाना था। जो लोग अपनी गायों से काम न लेना चाहेंगे, उन्हें इस बात की आशा नहीं हो सकती कि आगे चलकर उन्हें निजी खेत मिलेगा भी। इस सबके बावजूद जर्मन अधिकारियों ने श्रम-शक्ति को सुरक्षित करने के बजाय सबसे स्वस्थ और कार्यकुशल स्थानीय लोगों को जर्मनी भेज देने के सम्बन्ध में सभी आवश्यक कार्रवाइयाँ कर ली थीं।

चूँकि इस समय जर्मन सरकार यह तख्मीना नहीं लगा सकती थी कि उसे कितने गोश्त, दूध और अण्डों की आवश्कता होगी, अतएव उसने नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की गाँव पर आरम्भ में हर पाँच के परिवारों पीछे एक-एक गाय तथा हर परिवार के पीछे एक-एक सुअर, आधा-आधा क्विंटल आलू, बीस-बीस अण्डों और तीन-तीन सौ लीटर दूध का टैक्स बाँध दिया था। किन्तु चूँकि अधिक की ज़रूरत पड़ सकती थी-और हमेशा पड़ती ही थी-अतएव कोस्सकों और किसानों को अपने लिए किसी भी मवेशी या मुर्गे-मुर्गी को काटने का अधिकार न था। किन्तु यदि किसी को यह सुअर काटने की ज़रूरत पड़े, तो चार परिवार मिलकर एक सुअर काट सकते थे, किन्तु ऐसा करने पर उन्हें जर्मन राज्य को तीन सुअर भेंट करने पड़ते थे।

इवान निकनोरोविच तथा अन्य किसान परिवारों से यह सारी चौथी वसूल करने के लिए सोन्दरफ़्यूरर साण्डेर्स के अधीन एक जिला कृषि कमाण्डाण्टुर की स्थापना की गयी। यह सोन्दरफ़्यूरर अपर-लेफ़्टिनेण्ट श्प्रीक की नकल करने की कोशिश में था। उसे गाँवों की आबोहवा गर्म लगती थी और वह एक जांघिया और सैनिक कोट पहले गाँवों व बस्तियों का दौरा किया करता था। हाँ, जब कभी वह कज़्ज़ाक औरतों के सामने पड़ जाता, तो वे अपने शरीर पर सलीब का निशान बनाने और ज़मीन पर ऐसे थूकने लगतीं, मानो उन्होंने शैतान का साक्षात देख लिया हो। यह जिला कृषि कमाण्डाण्टुर प्रान्तीय कृषि कमाण्डाण्टुर के अधीन था, जिसके पास कहीं अधिक कर्मचारी थे। प्रान्तीय कृषि कमाण्डाण्टुर का अध्यक्ष था सोन्दरफ़्यूरर ग्ल्यूक्केर, जो पतलून तो पहनता था, किन्त अपने को इतना बड़ा समझता था कि गाँवों का दौरा

करके अपने पद को हीन न करना चाहता था। प्रान्तीय कृषि कमाण्डाण्टुर भ्ंदकूपतजेबींजिहतनचचम अथवा संक्षेप में ग्रुप 'लै' के अधीन था, जिसका अध्यक्ष था मेजर श्तान्देर। ग्रुप 'लै' इतने ऊँचे स्तर का था कि किसी ने उसे कभी नहीं देखा था। पर यह ग्रुप ॅपतजेबींजिावउउंदकव अथवा संक्षेप में 'विक्दो 9' का एक विभाग मात्र था। इसका प्रधान था डाक्टर ल्यूदे। और 'विक्दो 9' एक ओर तो वोरोशीलोवग्राद के नगर में फेल्दकमाण्डाण्टुर यानी जर्मन पुलिस हेडक्वार्टर के अधीनस्थ था और दूसरी ओर राइख कमिश्नर के अन्तर्गत काम करनेवाले सरकारी सम्पत्ति के प्रमुख कार्यालय के अधीनस्थ, जो कीयेव में था।

इस विस्तृत शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत बड़े-बड़े पदों पर आसीन इन चोर-डाकुओं की काली करतूतों को देखते हुए इवान निकनोरोविच और दूसरे गाँववासी अपने अनुभव से यह अच्छी तरह समझ चुके थे कि जर्मन फासिस्टों का शासन न सिर्फ़ अत्याचारी शासन है, अपितु तुच्छ, मूढ़ और लुटेरा भी है। दुर्बोध जवान बोलनेवाले इन लुटेरों को खिलाना-पिलाना भी था।

बेशक, इस समय तक इवान निकनोरोविच और उसके साथी तथा पास-पड़ोस के कज़्ज़ाक गाँवों-गुन्दोरोव्स्काया, दवीदोवो और मकारोवयार-के निवासी जर्मन अधिकारियों के प्रति उसी ढंग से व्यवहार करने लगे थे, जैसे स्वाभिमानी कज़्ज़ाकों को मूर्ख अधिकारियों के साथ करना चाहिए। वे उनकी आँखों में धूल झोंकने लगे थे।

अधिकारियों को धोखा देने का उनका मुख्य ढंग यह था कि वे खेतों में सचमुच काम करने के बजाय केवल काम करने का बहाना करते थे, जो कुछ उगा लेते थे, उसे नष्ट कर डालते थे और अगर मौक़ा लग जाता था, तो उसे उड़ा लेते थे, पशु, मुर्गे-मुर्ग़ियाँ और खाद्यान्न छिपा देते थे। इस धोखेबाजी को आसानी से करने की दृष्टि से कज़्ज़ाक और किसान पूरी-पूरी कोशिश करते थे कि मुखियों के पदों पर अपने लोग नियुक्त किये जायें। वैसे जर्मन अधिकारियों को तो मुखियों के पदों पर नियुक्त करने के लिए काफ़ी क्रूर लोग मिल जाते थे। पर जैसा कि कहते हैं, इंसान अमर नहीं है। मुखिया एक दिन नियुक्त हुआ, तो दूसरे दिन वह नहीं रहता, मानो हवा में मिल गया हो।

क्लावा कोवल्योवा की उम्र कोई 18 साल की थी। वह इन सब कार्रवाइयों से दूर ही रहा करती। उसे एक ही बात का दुख था कि अब रहन-सहन पर अनेकानेक प्रतिबन्ध लग चुके थे, कि उसकी शिक्षा ठप पड़ गयी थी और सहेलियाँ भी दूर थीं। उसे अपने पिता की भी चिन्ता लगी रहती थी, जो लापता था। वह वान्या के सपने देख-देखकर अपने को ख़ुश करती रहती थी। उसे पक्का विश्वास था कि एक दिन वह भी आयेगा, जब ये सारी मुसीबतें ख़त्म होंगी, वान्या के साथ उसका ब्याह होगा,

उनके बच्चे होंगे और वे दोनों, अपने बाल-बच्चों के साथ सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। उसकी कल्पना बड़ी स्पष्ट और व्यावहारिक हुआ करती थी।

उसने किताबें पढ़-पढ़कर भी समय काटने का प्रयत्न किया, किन्तु नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की में तो पुस्तकें हासिल करना आसान काम न था। अतएव जब उसे पता चला कि गाँव में एक नयी अध्यापिका आ गयी है, तो उसने निश्चय किया कि उससे पुस्तकें माँगने में कोई हर्ज नहीं।

नयी अध्यापिका स्कूल में उस कमरे में रहने लगी, जहाँ उससे पहले पुरानी अध्यापिका रहती थी। स्थानीय गप्पियों के अनुसार, नयी अध्यापिका पुरानी अध्यापिका का फर्नीचर और उसकी निजी चीज़ें भी इस्तेमाल कर रही थी। क्लावा ने दरवाज़ा खटखटाया और कोई उत्तर न मिलने पर अपने मजबूत हाथ से द्वार खोल दिया। वह उस कमरे में पहुँची, जहाँ सूरज की किरणें पहुँच नहीं पा रही थीं और जिसकी खिड़कियों पर परदे पड़े थे। उसने इधर-उधर नज़रें दौड़ाई। अध्यापिका खिड़की के पास झुककर पंख से दासा साफ़ कर रही थी। उसने सिर घुमाया, घनी भोंहें ऊपर उठायीं, सहसा चौंकी और दासे के सहारे खड़ी हो गयी। उसकी दृष्टि क्लावा पर टिकी हुई थी।

"आप.."

उसने अपनी बात पूरी नहीं की। उसके चेहरे पर अपराधियों जैसी मुस्कराहट बिखर गयी और वह क्लावा से मिलने के लिए आगे बढ़ आयी। यह छरहरे बदन, सुनहरे बालोंवाली स्त्री थी। वह साधारण पोशाक पहने थी, उसके होंठ पतले और खिंचे हुए थे। उसकी भूरी आँखें कठोर भाव से सीधे देख रही थीं। उसके होंठों पर प्रायः मुस्काराहट बिखर जाती, जिससे उसका चेहरा काफ़ी आकर्षक लगने लगता।

"जिस अलमारी में स्कूली पुस्तकें रखी थीं, उसे उसी इमारत में रहनेवाले जर्मनों ने नष्ट कर डाला था। पुस्तकों पन्ने गन्दी से गन्दी जगहों में पड़े मिले। पर कुछ किताबें अब भी साबुत बच गयी हैं। आइये देखें," वह एक-एक शब्द तौल-तौलकर और शुद्ध बोल रही थी, जैसे प्रायः एक अच्छी रूसी अध्यापिका बोलती है। "आप यहीं रहती हैं क्या?"

"कहने को तो यहीं की हूँ," क्लावा ने अटककर जवाब दिया।

"आप क्यों अटक गयीं?"

क्लावा घबरा उठी।

अध्यापिका ने सीधे उसपर एक निगाह डाली।

"आइये, बैठें," वह बोली।

पर क्लावा बराबर खड़ी रही।

“मैंने आपको क्रास्नोदोन में देखा है,” अध्यापिका बोली।

क्लावा ने उसे कनखियों से देखा पर कोई उत्तर न दिया।

“मैंने सोचा था आप चली गयी हैं,” अध्यापिका ने अपनी बात जारी रखी। उसके होंठों पर मुस्कान वैसे ही खेल रही थी।

“मैं कहीं नहीं गयी थी।”

“तो फिर किसी को छोड़ने गयी होंगी!”

“आपको कैसे मालूम?” क्लावा ने घबराहट और उत्सुकता के साथ उसे कनखियों से देखा।

“जानती हूँ...पर चिन्ता न कीजिये... आप शायद यह सोच रही हों, मुझे यहाँ जर्मनों ने भेजा है और...”

“मैं कुछ भी नहीं सोच रही हूँ...”

“नहीं, सोच रही हैं! अध्यापिका हँस दी और उसका चेहरा कुछ-कुछ लाल हो उठा। “आप किसे छोड़ने गयी थीं?”

“अपने पिता को।”

“नहीं, वह आपके पिता नहीं थे!”

“पिता ही थे।”

“अच्छी बात है, और आपके पिता काम क्या करते हैं?”

“ट्रस्ट में काम करते हैं,” क्लावा बोली और शर्म से लाल हो उठी।

“बैठ जाइये, लजाने की कोई बात नहीं।”

अध्यापिका ने कोमलता से क्लावा का हाथ छू लिया। क्लावा बैठ गयी।

“तो आपका मित्र चला गया है?”

“कैसा मित्र?” क्लावा का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

“मुझसे मत छिपाना। मैं सब जानती हूँ।” अब अध्यापिका की आँखों में कठोरता का भाव जाता रहा और उनमें हँसी आ गयी।

“भले ही तुम मुझे मार डालो, मैं तुम्हें कुछ न बताऊँगी!” सहसा उग्र होकर क्लावा ने सोचा।

“आप क्या कह रही हैं, मैं नहीं जानती... ऐसी बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं!” उसने खुलकर कहा और खड़ी हो गयी। अध्यापिका से रहा नहीं गया और वह ज़ोर से हँस पड़ी और धूप से तपे अपने हाथ और सुनहरे बालोंवाला अपना सिर हिलाने-डुलाने लगी। सहसा वह उठी और झट से क्लावा से सट गयी।

“मेरी प्यारी... मुझे माफ़ करना। आपका दिल तो हथेली में रहता है,” वह बोली और उसे अपने और निकट खींच लिया। “मैं तो केवल मज़ाक कर रही हूँ। आपको

मुझसे नहीं डरना चाहिए। मैं सिर्फ़ रूसी अध्यापिका हूँ। हमें जीना है और यह ज़रूरी नहीं कि जर्मनों के अधीन हम केवल बुरी बातें ही लोगों को सिखायें।"

दरवाज़े पर जोरों की दस्तक हुई।

अध्यापिका तेजी से दरवाज़े तक गयी और किवाड़ कुछ खोलकर झाँकी।

"मार्फा..." उसने धीरे-से, ख़ुश होकर कहा। चमचमाता हुआ सफ़ेद रूमाल लपेटे मजबूत हड्डियोंवाली एक लम्बी औरत ने कमरे में प्रवेश किया। उसके नंगे साँवले पैर धूल से सने थे। बगल में उसने एक गठरी दबा रखी थी।

"नमस्ते!" उसने कहा और एक प्रश्नसूचक दृष्टि क्लावा पर डाली। "हम लोग काफ़ी पास रहते हैं, फिर भी मैं एक अरसे से तुमसे मिलने न आ सकी," उसने अध्यापिका से ऊँची आवाज़ में कहा और अपने मजबूत दाँत निकाल दिये।

"क्लावा," अध्यापिका बोली, "मैं आपको कक्षा में ले चलूँगी और वहाँ आपको अपने लिए कुछ किताबें मिल जायेंगी। बस चली न जाना, मुझे ज़्यादा देर न लगेगी।"

अध्यापिका और कोई नहीं येकतेरीना पाव्लोव्ना प्रात्सेंको थी। वह कुछ मिनटों बाद वापस आ गयी।

"क्या बात है? क्या खबर है?" उसने उत्तेजित होकर पूछा।

मार्फा बैठ चुकी थी। उसने अपना बड़ा और मेहनत से कठोर पड़ा हाथ अपनी आँखों पर रखा हुआ था। उसके होंठों पर अभी तक जवानी झलक रही थी, किन्तु उसके कोनों में परेशानी की गहरी रेखाएँ उभर आयी थीं।

"समझ में नहीं आता, हसूँ या चिल्लाऊँ," आँखों पर से हाथ हटाती हुई मार्फा उक्राइनी भाषा में बोली, "पोगोरेली गाँव से एक लड़का आया था। उसने मुझे बताया कि मेरे पति गोर्देई कोर्नियेंको को बन्दी बना लिया गया है। कात्या, बताओं क्या करूँ?" उसने सिर उठाया और रूसी में कहने लगी, "पोगोरेली फोरेस्ट्री स्टेशन पर कोई साठ क़ैदी काम करते हैं और उनके चारों तरफ़ पहरा रहता है। वे सेना के लिए लकड़ी काटते हैं। मेरा गोर्देई भी वहीं है। वे लोग बैरकों में रहते हैं। और उन्हें बाहर नहीं निकलने दिया जाता... वह भूखों मर रहा है। बताओ न, मैं क्या करूँ? जाऊँ वहाँ?

"उसने तुमसे कहलाया कैसे?"

"कुछ और लोग भी वहाँ काम करते हैं, जो क़ैदी नहीं हैं। उसे एक गाँववाले के कान में कुछ कहने का मौक़ा मिल गया था। जर्मन लोग यही नहीं जानते कि वह इसी इलाके का रहनेवाला है।"

येकेतेरीना पाव्लोव्ना कुछ क्षणों तक चुपचाप उसे देखती रही। इस मामले में कोई सलाह नहीं दी जा सकती थी। मार्फा हफ़्तों पोगोरेली गाँव में तड़प-तड़पकर रहते

हुए भी पति से नहीं मिल सकती थी। ज़्यादा से ज़्यादा वे एक दूसरे पर दूर से निगाह भर डाल सकते थे, पर इससे तो शारीरिक कष्ट से पीड़ित उसके पति की असह्य दिमागी परेशानी ही बढ़ेगी। और उसके पास खाना पहुँचाना भी असम्भव ही होगा-ये युद्धबन्दियों की बैरकें किस प्रकार की थीं, इसकी कल्पना करना कठिन न था।

"तुम्हें ख़ुद निश्चय करना होगा।"

"तुम ख़ुद चली जातीं?" मार्फा ने पूछा।

"हाँ, मैं चली जाती," आह भरते हुए येकतेरीना पाव्लोव्ना ने कहा, "और तुम भी जाओगी-लेकिन यह सब बेकार है।"

"और मैं भी यही कहती हूँ यह सब बेकार है... इसलिए मैं नहीं जा रही हूँ," मार्फा बोली। उसने आँखें अपने हाथ से ढँक लीं।

"क्या कोर्नेई तीखोनोविच यह बात जानता है?"

"उसका कहना है कि अगर उसे अपना दस्ता ले आने की इजाजत मिल जाये, तो वह उसे छुड़ा लेगा..."

येकतेरीना पाव्लोव्ना के चेहरे पर परेशानी और उदासी के भाव आ गये। वह जानती थी कि कोर्नेई तीखोनोविच के अधीन लड़नेवाले छापेमार दस्ते को इस कार्य के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

सभी प्रमुख जर्मन संचार-लाइनें अब वोरोशीलोवग्राद प्रदेश से होकर जाती थीं। इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेंको के हाथों में जो कुछ था, उसने जिन नये-नये दस्तों को संगठित किया था, उन सभी का एक ही उद्देश्य था कि दोनबास से सैकड़ों मील दूर स्तालिनग्राद की बड़ी लड़ाई में विजय प्राप्त करने में लाल सेना को मदद दें। प्रदेश के सभी छापेमार दस्तों को कई छोटे-छोटे दलों में बाँट दिया गया था, जो अब पूर्व और दक्षिण को जानेवाले समस्त राजमार्गों, देहाती सड़कों और तीन रेलवे लाइनों पर कार्रवाई कर रहे थे। इन दलों की शक्ति अभी तक कम थी। इसीलिए इवान फ़्योदोरोविच ने, जिसका पता-ठिकाना उसकी पत्नी तथा मार्फा कोर्नियेंको और सन्देशवाहिका क्रोतोवा को ही मालूम था, सभी ख़ुफ़िया जिला समितियों को सड़कों पर तोड़-फोड़ करने का आदेश दे दिया।

येकतेरीना पाव्लोव्ना यह सब कुछ अच्छी तरह जानती थी, क्योंकि दलों के असंख्य संचार-सूत्र आकर उसी के छोटे-छोटे हाथों में मिलते थे। वह अकेली ही इवान फ़्योदोरोविच से सीधा सम्पर्क कर सकती थी। इसलिए जब मार्फा ने उसके सामने कोर्नेई तीखोनोविच का परोक्ष सुझाव रखा, तो उसने कोई उत्तर न दिया हालाँकि उसने यह समझ लिया था कि उसके पास मार्फा के आने का एक ही उद्देश्य था-अपनी गुप्त आशा को फलीभूत होते हुए देखना।

पति के साथ येकतेरीना पाव्लोव्ना का सम्पर्क मार्फा, या कहना चाहिए, मार्फा के घर के जरिये होता था। उसने इवान फ़्योदोरोविच के बारे में कुछ पूछ-ताछ भी नहीं की। अगर मार्फा ने उसके पति के बारे में कुछ नहीं कहा, तो इसके माने यह है कि उसकी कोई खबर नहीं है।

इसी बीच क्लावा अलमारी के पास खड़ी-खड़ी यह देख रही थी कि कौन-कौन-सी पुस्तकें बच गयी हैं। ये वे किताबें थीं, जो उसने बचपन में पढ़ी थीं। वह उन्हें और खाली डेस्कों को देखकर उदास हो गयी। सायंकालीन सूर्य की किरणें तिरछी होकर खिड़की से प्रवेश कर रही थीं और उनके स्निग्ध प्रकाश में जैसे विदाई की उदास और प्रौढ़ मुस्कराहट छिपी थी। इस समय ज़िन्दगी क्लावा को इतनी दुखभरी लग रही थी कि वह अपनी उत्सुकता तक को भूल गयी थी कि अध्यापिका उसे जानती कहाँ से।

"कुछ मिला आपको?" अध्यापिका सीधे क्लावा पर दृष्टि गड़ाये थी। उसके होंठ कसकर जड़े थे, किन्तु उसकी भूरी आँखों में उदासी की झलक थी। "तो देख रही हैं न! कभी-कभी ज़िन्दगी कितनी निर्मम हुआ करती है," वह बोली। "जवानी में तो हम जल्दबाजी में इस बात पर ध्यान ही नहीं देते कि उस समय हमें जो कुछ मिलता है, वह ज़िन्दगी भर हमारे साथ रहेगा... यदि मैं फिर कभी आप जैसी जवान बन सकती, तो मैं इस सत्य को याद रखती। पर मैं इस सत्य को आपको समझा भी नहीं सकती। अगर आपका मित्र यहाँ आ जाये, तो मुझसे परिचय ज़रूर करा देना।"

येकतेरीना पाव्लोव्ना यह अनुमान भी न लगा सकती थी कि ठीक उसी समय वान्या जेम्नुखोव गाँव में प्रवेश कर रहा था और उसके लिए कोई सन्देश ला रहा था।

वान्या ने उसे संकेत-भाषा में लिखित सन्देश थमा दिया, जिसमें क्रास्नोदोन जिला ख़ुफ़िया समिति के कार्यों की रिपोर्ट दी गयी थी। इस पर येकतेरीना पाव्लोव्ना ने उसे अपने पति के निर्देश से अवगत कराया कि क्रास्नीदोन ख़ुफ़िया संगठन को एक छापामार लड़ाकू दस्ता बन जाना चाहिए और सभी सड़कों पर तोड़-फोड़ के कार्य और भी तेज गति से किये जाने चाहिए।

"अपने साथियों से कहना कि मोर्चे की स्थिति खराब नहीं है। हो सकता है कि शीघ्र ही हमें बन्दूकों से काम लेना पड़े," येकतेरीना पाव्लोव्ना बोली और अपने सामने बैठे हुए इस बेडौल-से युवक को पैनी दृष्टि से देखने लगी, मानो यह जानता चाहती हो कि उसके चश्मे के पीछे क्या छिपा है।

वान्या चुपचाप बैठा बार-बार अपने हाथ से बालों को ठीक कर रहा था। काश, वह जान पाती कि वान्या के दिल में कौन-सी ज्वाला धधक रही थी!

पर शीघ्र ही वे बातचीत में मगन हो गये।

"क़िस्मत का फेर देखिये," वान्या के मुँह से शुल्गा और वाल्को की मृत्यु

सम्बन्धी हृदयविदारक समाचार सुनने के बाद येकतेरीना पाव्लोव्ना बोली। "ओस्तपचुक का सारा परिवार शत्रुअधिकृत प्रदेश में रह गया। हो सकता है, उन्हें भी तड़पा-तड़पाकर मार डाला गया हो। या तो उनकी बेचारी पत्नी अपने बच्चों को लेकर अजनबियों के बीच रह रही हो और उसे यह आशा लगी हो कि एक दिन वह आयेगा और उसकी तथा उसके बच्चों की रक्षा करेगा। पर वह अब तो इस दुनिया में रहा ही नहीं... अभी एक औरत मुझसे मिलने आयी..." और येकतेरीना पाव्लोव्ना ने मार्फा तथा उसके पति के बारे में वान्या को बताया। "वे एक-दूसरे के इतने निकट हैं, फिर भी मिल नहीं सकते। दुश्मन उसके पति को किसी भी दिन दूर-दराज इलाकों में खदेड़ सकते, जहाँ वह घुट-घुटकर मर जायेगा... इन दुष्टों के लिए कठोर से कठोर दण्ड भी कम है!" उसने कसकर मुट्ठी भींच ली।

"पोगोरेली-यह जगह हमसे दूर नहीं है। हमारा एक साथी वहाँ रहता है," वान्या बोला। उसे वीत्या पेत्रोव की याद आ रही थी। सहसा उसके मस्तिष्क में एक अस्पष्ट-सा विचार आया। "वहाँ बहुत-से क़ैदी हैं क्या? और पहरेदार कितने हैं?" उसने पूछा।

"आप बता सकते हैं कि क्रास्नोदोन में अब भी कुछ योग्य संगठनकर्त्ता जीवित रह गये हैं या नहीं?" अपने विचारों की श्रृंखला को आगे बढ़ाती हुई अचानक वह बोली।

वान्या ने कुछ लोगों के नाम गिना दिये।

"वहाँ घायल सैनिकों को भी आश्रय मिल गया होगा?"

"हाँ, ऐसे बहुत-से लोग हैं," वान्या को उन घायल सैनिकों की याद आ गयी, जो स्थानीय लोगों के घरों में रह रहे थे। उसे सेर्गेई से मालूम हो चुका था कि नताल्या अलेक्सेयेव्ना उन्हें गुप्त रूप से चिकित्सा-सहायता पहुँचा रही है।

"जिन लोगों ने आपको यहाँ भेजा है, उनसे कहना कि उन सैनिकों से सम्पर्क स्थापित किये जायें... बहुत शीघ्र ही तुम्हें उनकी आवश्यकता पड़ेगी। हाँ, उनकी ज़रूरत पड़ेगी तुम युवकों की अगुवाई करने के लिए। तुम लोग अच्छे हो, जवान हो, पर वे लोग तुमसे अधिक अनुभवी हैं," येकतेरीना पाव्लोव्ना बोली।

वान्या ने क्लावा के घर को एक गुप्त सम्पर्क-सूत्र का रूप देने की अपनी योजना येकतेरीना पाव्लोव्ना को बतायी। उद्देश्य यह था कि 'तरुण गार्ड' गाँव के युवकों के साथ सहयोग करे। उसने येकतेरीना पाव्लोव्ना से इस मामले में क्लावा की मदद करने को कहा।

"अच्छा तो यह होगा कि क्लावा को यह पता न चले कि मैं कौन हूँ," येकतेरीना पाव्लोव्ना ने मुस्कराते हुए कहा, "हम सिर्फ़ सहेलियाँ बनकर रहेंगी"।

“पर आपने क्लावा और मेरे बारे में जाना कैसे?” वान्या ने पूछा। वह अपनी उत्सुकता दबाये रखने में असमर्थ था।

“यह बात मैं आपको कभी न बताऊँगी-इससे आप लजा सकते हैं,” वह बोली और उसके चेहरे पर सहसा शरारती चमक झलक उठी।

“तुम्हारे और उसके बीच कौन-सी राज की बातें हो रही थीं?” जब क्लावा ने वान्या से यह प्रश्न किया, तो उसके स्वर में ईर्ष्या साफ़-साफ़ झलक रही थी। दोनों इवान निकनोरोविच के घर में, घुप अँधेरे में, बैठे थे। क्लावा की माँ काफ़ी समय से, और खासकर नावों वाले पुल की घटनाओं के बाद से, वान्या को अपने परिवार का ही एक सदस्य समझने लगी थी। इस समय वह गुदगुदे बिस्तर पर बड़े चैन से सो रही थी।

“तुम कोई राज अपने दिल में रख सकती हो?” वान्या ने क्लावा के कान में फुसफुसाते हुए कहा।

“यह भी कोई पूछने की बात है?..”

“सौगन्ध खाओ...”

“मैं सौगन्ध खाती हूँ।”

“उसने मुझसे कहा कि क्रास्नोदोन का हमारा एक साथी कहीं पास ही में छिपा है और यह कि मैं उसे घर में खबर कर दूँ। उसके बाद हमने कुछ इधर-उधर की बातचीत की... क्लावा!” वह उसका हाथ अपने हाथ में लेकर धीरे-से और बड़ी गम्भीरता से बोला। “हमने हमलावरों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए युवक-युवतियों का एक संगठन बनाया है। तुम उसमें भर्ती होना चाहती हो?”

“तुम शामिल हो उसमें?”

“ज़रूर।”

“फिर तो मैं भी भर्ती होऊँगी!” उसने अपने गर्म-गर्म होंठ उसके कान से सटा दिये। “मैं तो तुम्हारी ही हूँ, हूँ न?”

“तुम्हें मेरी मौजूदगी में शपथ लेनी होगी। यह शपथ मैंने और ओलेग ने मिलकर लिखी थी। मुझे तो वह जबानी याद है और तुम्हें भी याद रखनी होगी।”

“मैं याद कर लूँगी-तुम तो जानते ही हो कि मैं तुम्हारी ही हूँ...”

“तुम्हें यहाँ और पास-पड़ोस के गाँवों के नवयुवकों को संगठित करना होगा।”

“तुम्हारे लिए मैं उन सभी को संगठित करूँगी।”

“पर इसके बारे में तनिक भी लापरवाही न बरतना। कहीं गलत क़दम रखा कि ज़िन्दगी खतरे में पड़ जायेगी।”

“तुम्हारी भी?”

"हाँ, मेरी भी!"

"तुम्हारे साथ मरने में मुझे कोई डर नहीं।"

"पर मैं समझता हूँ साथ-साथ जिन्दा रहना कहीं बेहतर है, है न?"

"बेशक!"

"सुनो, मेरे लिए अपने साथियों के साथ ही बिस्तर बिछाया गया है। अब मुझे चलना चाहिए।"

"तुम वहाँ क्यों जाओगे? समझते नहीं, मैं तुम्हारी ही हूँ। केवल तुम्हारी," क्लावा के गर्म-गर्म होंठ उसके कान में फुसफुसाये जा रहे थे।

अध्याय 10

'तरुण गार्ड' संगठन पेर्वोमाइका खान, वोस्मीदोमिकी मोहल्ले और खान 1-बी के आस-पास के क्षेत्र में फैल चुका था। सितम्बर समाप्त होते-होते यह संगठन युवकों के प्रमुख ख़ुफ़िया दलों में से एक हो गया था। पेर्वोमाइका स्कूल की उच्च कक्षाओं के सबसे अधिक जागरूक भूतपूर्व छात्र-छात्राएँ इस संगठन में शामिल हो चुके थे।

पेर्वोमाइका के युवक-युवतियों ने अपना वायरलैस रिसीवर तैयार कर लिया। उसी दिन वे सोवियत सूचना केन्द्र के बुलेटिन और परचे निकालने लगे।

वायरलैस रिसीवर बनाने के लिए उन्हें कितनी ही कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। वैसे कई टूटे-फूटे वायरलेस सेट और पुर्जे भिन्न-भिन्न घरों में बिखरे पड़े थे, जिन्हें चुपके से चुरा लिया गया। एक मोल्दावियाई बोरीस ग्लवान (जिसे दल के लोग 'अलेको' के नाम से जानते थे) ने इन पुर्जों से एक वायरलैस रिसीवर तैयार करने का जिम्मा लिया। बोरीस ग्लवान के माता-पिता बेस्सराबिया के शरणार्थी थे और अब क्रास्नोदोन में बस गये थे। बोरीस को घर लौटते समय सड़क पर एक पुलिसवाले ने गिरफ़्तार कर लिया और उसके पास से कई बाल्ब और रेडियो के पुर्जे बरामद हुए।

थाने पर ग्लवान रूमानियन भाषा में चिल्ला-चिल्लाकर यही कहता रहा कि पुलिस उसके परिवारवालों की रोटी छीने जा रही है, क्योंकि उसके पास जो सामान निकला है, वह सिगरेट-लाइटर बनाने के काम आता है, जो उसकी जीविका है। उसने कसम खा-खाकर यह भी कहा कि वह रूमानियाई सैनिक-कमाण्ड से इस बात की शिकायत करेगा। क्रास्नोदोन में कई रूमानियाई अधिकारी रहते ही थे। ग्लवान के घर की तलाशी ली गयी, तो कई तैयार लाइटर निकले और कई ऐसे जो अधबने थे। वह सचमुच सिगरेट-लाइटर बनाकर ही अपनी रोटी-रोजी चलाता था। पुलिस ने मित्र राष्ट्र के इस नागरिक को छोड़ दिया, पर रेडियो के पुर्जे छीन ज़रूर लिये गये। फिर

भी उसके पास जो कुछ पुर्जे थे उन्हीं से उसने एक वायरलैस रिसीवर तैयार कर ही लिया।

पेर्वोमाइका के युवक पास-पड़ोस की खेतिहर बस्तियों से लील्या ईवानीखिना के जरिये सम्पर्क रखते थे। जर्मनों की क़ैद से छूटने के बाद लील्या धीरे-धीरे कारावास के कटु अनुभवों को भूलने लगी और सुखोदोल की खेतिहर बस्ती में अध्यापिका बन गयी। पेर्वोमाइका के युवक स्तेपी में हथियार इकट्ठा करते थे और इसके लिए उन्हें कभी-कभी दोनेत्स नदी के आसपास युद्ध क्षेत्र में दूर-दूर तक जाना पड़ता था। वे उन जर्मन और रूमानियाई सिपाहियों और अफ़सरों के हथियार भी हथिया लेते थे, जो गाँवों में आकर ठहरते थे। जब पेर्वोमाइका के युवक तथा दल के सभी सदस्य हथियारों से लैस किये गये, तो फिर शेष हथियार सेर्गेई त्युलेनिन के सुपुर्द किये जाने लगे। त्युलेनिन ने सारे हथियार एक गोदाम में रख दिये, जिस का पता-ठिकाना इने-गिने लोगों को ही मालूम था।

जिस प्रकार 'तरुण गार्ड' के मुखिया ओलेग कोशेवोई और इवान तुर्केनिच थे, और क्रास्नोदोन की बस्ती के संगठन के कोल्या सुम्स्कोई और तोस्या येलिसेयेंको, उसी प्रकार पेर्वोमाइका के मुखिया थे ऊल्या ग्रोमोवा और अनातोली पोपोव।

अनातोली पोपोव को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर ने पेर्वोमाइका दल का कमाण्डर नियुक्त किया था। कोमसोमोल में रहकर वह संगठनात्मक कौशल में दक्ष हो चुका था। उसका दृष्टिकोण भी गम्भीर था। अतएव अपने इन्हीं गुणों के आधार पर वह पेर्वोमाइका बस्ती के युवकों में कठोर अनुशासन और दृढ़ साहस का भाव पैदा कर सकता था। युवकों के सब काम सामूहिकता तथा सद्भावना के आधार पर सम्पन्न होने लगे।

दूसरी ओर ऊल्या ग्रोमोवा सभी पहलक़दमियों की प्रेरक और अधिकांश अपीलों व परचों की लेखिका थी। अब जाकर यह बात स्पष्ट हुई कि उसके साथी तभी से उसकी बड़ी इज़्ज़त करते आ रहे हैं, जब वह उनके साथ स्कूल में पढ़ती थी, स्तेपी में घूमती थी, उनके साथ नाचती, गाती या कविता पाठ करती थी। उसका क़द लम्बा था, चोटियाँ काली और भारी थीं, आँखें प्रायः चमकती रहती थीं। और अक्सर लगता मानो उनमें कोई रहस्यपूर्ण शक्ति भरी हुई है। वह चुप ज़्यादा रहती थी, नट-खट कम थी, संयम से काम लेती थी, आवेश से कम। फिर भी उसमें इन सभी भावनाओं का समावेश था।

जवानी में लोग गहरे पर्यवेक्षण और अनुभव के आधार पर नहीं, एक ही नज़र में अथवा एक ही बात सुनकर, नकली और सच्ची भावनाओं, रोचकता और ऊबाऊपन, तुच्छता और महत्ता के बारे में अपना निर्णय दे डालते हैं। इस समय

ऊल्या की घनिष्ठ सहेली न थी। वह सभी के प्रति समान रूप से सदय, चिन्ताशील और कठोर रहती थी। किन्तु लड़कियाँ ऊल्या से दो बातें करके ही समझ जातीं कि वह अपने आप में एक दुनिया है और पूरी तीव्रता के साथ अपनी भावनाएँ प्रकट कर सकती है, विशेषकर उस समय, जब किसी से कोई नैतिक भूल हो जाती। ऊल्या जैसे लोगों का समान व्यवहार ही दूसरे लोगों को ख़ुशी से भर देता है-और अगर वे एक क्षण के लिए ही सही अपनी भावनाएँ प्रकट करें, तो उनकी ख़ुशी का कोई ठिकाना ही नहीं रहेगा!

लड़कों के साथ भी वह समान रूप से व्यवहार करती थी। यह कोई न कह सकता था कि वह दूसरों की अपेक्षा उसी से अधिक मित्रता निभाती है। यह विचार किसी के दिमाग में आ भी नहीं सकता था। उसकी नज़रों और चाल-ढाल से ही प्रत्येक व्यक्ति यह समझ लेता था कि वह कोई अहंकारी या भावशून्य लड़की नहीं है, बल्कि उसके अन्तम् में उन वास्तविक भावोद्वेगों का अम्बार निहित है, जिन्हें पूर्णतया तथा स्वच्छता के साथ न्योच्छावर करने के लिए अभी तक कोई योग्य पात्र नहीं नही मिला। ऊल्या के इन्हीं गुणों पर युवक रीझते थे, उसकी उपासना करते थे। ऐसी उपासना उन्हीं लड़कियों के प्रति सम्भव है, जिनके मन अत्याधिक शुद्ध हो हैं, अत्यधिक सुदृढ़।

बस इसी कारण ऊल्या ने स्वतंत्र तथा स्वाभाविक रूप से पेर्वोमाइका की अपनी सहेलियों ओर साथियों के दिलों में घर कर लिया। तिस पर वह ख़ूब पढ़ी-लिखी और बुद्धिमान भी थी।

एक दिन कुछ लड़कियाँ इवानीखिना बहनों के यहाँ एकत्र हुई। वे प्रायः इसी घर में मिला करती थीं, जहाँ घायलों के लिए पट्टियों के पैकेट बनाती थीं।

ल्यूबा ने ये पट्टियाँ जर्मन चिकित्सा दल के उन अधिकारियों के पास से चुरा ली थीं, जो एक रात उसकी माँ के घर ठहरने आये थे। ये पट्टियाँ उसने यों ही चुरा ली थीं। और इस चोरी को कोई महत्व न दिया था। किन्तु ऊल्या ने उन पट्टियों को तुरन्त काम में लाने की सोची।

"हमारे हर छोकरे को पट्टियों का एक-एक पैकेट हमेशा अपने साथ रखना चाहिए। उन्हें तो लड़ना भी पड़ेगा," वह बोली।

उसे शायद कोई बात मालूम हो गयी थी, तभी तो वह कह रही थी :

"शीघ्र ही वह समय आयेगा, जब हम सबको जूझना होगा। उस समय हमें ढेरों पट्टियों की आवश्यकता होगी..."

वस्तुतः ऊल्या अपने शब्दों में वही बात कह रही थी, जो वान्या जेम्नुखोव ने 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर की एक बैठक में कही थी। वान्या को इस बात का कहाँ

से पता चला था, यह ऊल्या नहीं जानती थी।

इस प्रकार लड़कियाँ बैठी-बैठी पैकेट बना रही थीं। यहाँ तक कि शूरा दुब्रोविना भी, जो पहले गैरमिलनसार और अहंवादी समझी जाती थी, अपने हिस्से का काम कर रही थी। वह 'तरुण गार्ड' दल में इसलिए भर्ती हुई थी कि वह माय्या पेग्लिवानोवा को बहुत मानती थी, उससे स्नेह करती थी।

"जानती हो, लड़कियो, इस समय हम कैसी लग रही हैं?" दुबली-पतली साशा बोन्दरेवा बोली, "हम लग रही हैं उन बूढ़ी औरतों की तरह, जो कभी खानों में काम करती थीं और अब पेंशन पर हैं, मैंने ऐसी औरतों को प्रायः अपनी दादी के यहाँ देखा है। वे एक के बाद एक आतीं और जम जातीं-कोई कुछ बुनने लगती, कोई सीने-पिरोने लगती, कोई ताश लेकर बैठ जाती और कोई आलू छीलने में मेरी दादी की मदद करने लगती। सब चुप रहतीं। फिर सहसा उनमें से कोई औरत उठ खड़ी होती और कहती : 'यह सब क्या है। चलो कोई हँसी-खेल की बात करो'। फिर वे मुस्कराकर कहतीं : 'भला तुम इसे पाप कहोगी?' और वे सब थोड़े रुपये में मिलाने लगती; 'मेज पर एक बोतल आ जाती! इन बूढ़ियों को ज़्यादा नहीं चाहिए। वे घूँट भर तो गटकती हैं, फिर हाथों पर गाल रखती हैं, इस तरह, और गाना शुरू कर देती हैं,-'मेरी उँगली में सोने की अँगूठी है एक,..."

"साशा, तुम हमेशा कोई न कोई ऐसी ही बात ढूँढ़ निकालती हो।" लड़कियाँ जी खोलकर हँस दीं। "कोई गाना हो जाये, तो कैसा रहे, उन्हीं बूढ़ियों की तरह?"

किन्तु ठीक उसी क्षण नीना इवान्त्सोवा आ गयी। अब तो वह बहुत ही कम यहाँ आती और आती भी तो काम से ही। वह हमेशा हेडक्वार्टर की सन्देशवाहिका के रूप में ही आती। किन्तु कोई भी लड़की हेडक्वार्टर का पता-ठिकाना अथवा उसके सदस्यों के सम्बन्ध में कुछ भी न जानती थी। उनके मस्तिष्क में 'हेडक्वार्टर' शब्द उन प्रौढ़ लोगों का चित्र खड़ा कर देता था, जो किसी अनजान तहखाने में छिपकर किसी ख़ुफ़िया बैठक में भाग ले रहे हों, जिनके सामने दीवारों पर ढेरों नक्शे टंगे हों, जो स्वयं अच्छी तरह हथियारों से लैस हों और रेडियों द्वारा इच्छानुसार मोर्चे या मास्को तक सम्पर्क कर सकते हों। नीना इवान्त्सोवा कमरे में आयी और तुरन्त ऊल्या को बुलाकर बाहर ले गयी। लड़कियों ने फौरन समझ लिया कि नीना उन्हें कोई न कोई नया काम सुपुर्द करने आयी है। कुछ ही क्षणों में ऊल्या वापस आकर बोली कि उसे अभी जाना होगा। उसने माय्या पेग्लिवानोवा को एक ओर बुलाकर कहा कि लड़कियाँ पट्टियों के पैकेट अपने-अपने घर ले जायें और वह ख़ुद सात-आठ पैकेट ऊल्या के घर छोड़ जाये। शीघ्र ही इन पट्टियों की ज़रूरत पड़ सकती है।

कोई पन्द्रह मिनट के भीतर ऊल्या अपना स्कर्ट समेटकर, अपने घर का बाड़ा

पार करके पोपोव के बगीचे में उतर रही थी। वहाँ चेरी के एक पुराने वृक्ष की छाया में मुरझाई हुई घास के ऊपर अनातोली पोपोव और विक्टर पेत्रोव पेट के बल लेटे हुए जिले के नक्शे का अध्ययन कर रहे थे।

उन्होंने दूर से ही ऊल्या को देख लिया, लेकिन वैसे ही नक्शे पर से आँखें उठाये बिना, बातचीत में लगे रहें। ऊल्या लापरवाही से अपनी चोटियाँ कन्धे पर डालकर उनके पास उकड़ूँ बैठी और घुटने समेटकर नक्शे का अध्ययन करने लगी।

जिस काम की सूचना अनातोली और विक्टर को पहले ही दी जा चुकी थी और जिसके लिए ऊल्या को भी बुलाया गया, वह पेर्वोमाइका बस्ती के युवकों की पहली कठिन परीक्षा थी-'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर ने उन्हें पोगोरेली फोरेस्ट्री स्टेशन में काम करनेवाले युद्धबन्दियों को मुक्त कराने का काम सौंपा था।

"पहरेदार कहाँ रहते हैं?" अनातोली ने पूछा।

"सड़क की दाहिनी ओर, गाँव में ही। और बंदियों की बैरक पेड़ों के कुंज के निकट बायीं ओर स्थित है। वहाँ कभी एक गोदाम हुआ करता था, याद है तुम्हें? उन्होंने वहाँ कुछ फलक-शय्याएँ डालकर सारी जगह कंटीली तारों से घेर दी है। वहाँ सिर्फ़ एक सन्तरी पहरा देता है... मेरा ख़याल है कि सभी पहरेदारों के चक्कर में न पड़कर उसी सन्तरी को ही ठिकाने लगा दिया जाये... दरअसल तो उन सबको मार डालना चाहिए, लेकिन अफसोस", विक्टर क्रुद्ध होकर बोला।

अपने पिता की मृत्यु के बाद से विक्टर पेत्रोव में बहुत अधिक परिवर्तन आ गया। इस समय वह गहरे रंग की एक मखमली जैकेट पहने घास का एक तिनका चबा रहा था। उसकी साहसपूर्ण आँखें बड़ी उदासी के साथ अनातोली पर लगी थीं।

"रात में क़ैदी तालाबन्द कर दिये जाते हैं। किन्तु हम अपने साथ ग्लवान को ले जा सकते हैं। वह अपने औजारों से चुपचाप सारा काम निपटा लेगा," उसने जैसे बड़ी अनिच्छा से कहा।

अनातोली ने सिर उठाकर ऊल्या की ओर देखा।

"तुम्हारा क्या ख़याल है?" उसने पूछा।

हालाँकि ऊल्या ने शुरू से बातें नहीं सुनी थीं, फिर भी उसने यह समझ लिया कि विक्टर असन्तुष्ट क्यों है। जब से इन लोगों ने साथ-साथ काम करना शुरू किया था, तब से वे कुछेक शब्द सुनकर ही बातचीत का आशय समझ लेते थे।

"मैं विक्टर की बात अच्छी तरह समझ रही हूँ-अच्छा होगा अगर सभी पहरेदारों का सफाया कर दिया जाये। किन्तु हमें ऐसा काम इतने बड़े पैमाने पर करने का कोई अनुभव नहीं," उसने अपनी शान्त व स्वच्छन्द आवाज़ में कहा।

"हाँ, मेरा भी यही ख़याल है," अनातोली बोला। "हमें सबसे आसान और

कारगर उपाय काम में लाना चाहिए।"

दूसरे दिन शाम होते-होते पाँच लड़के दोनेत्स के तट पर, पोगोरेली गाँव के निकट के वन में मिले-अनातोली, विक्टर, उनके स्कूल के दो साथी वोलोद्या रगोजिन और जेन्या शेपेल्येव तथा बोरीस ग्लवान। सभी के पास रिवाल्वर थे। विक्टर के पास उसके पिता का पुराना शिकारी चाकू भी था, जिसे वह हमेशा अपनी मखमली जैकेट के नीचे एक पेटी में लटकाये रखता था। बोरीस ग्लवान के पास कुछ ज़रूरत के औजार थे-तारकट प्लायर, पेचकश और सब्बल।

शदकालीन आकाश पर तारे चमकने लगे, किन्तु चाँद अभी निकला नहीं था। पाँचों लड़के नदी के दाहिने ढालवें तट के नीचे लेट गये। उनके ऊपर सरसराती झाड़ी की ध्वनि नीचे पानी की सतह तक आ-आकर विलीन हो रही थी। नदी निःशब्द बहे जा रही थी। हाँ कुछ दूरी पर पानी का टपटपाना सुनायी दे रहा था। वहाँ किनारा धँस गया था और वह आवाज़ इसलिए हो रही थी कि मिट्टी के रन्ध्रों से होकर पानी रिस रहा था। ऐसा लग रहा था, माना कोई बछड़ा दूध चूस रहा हो। नदी का दूसरा समतल किनारा धुन्ध की चादर से आच्छादित हो चुका था।

आधी रात को संतरियों का तबादला होनेवाला था। वे इसी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

नदी के पार फैल रहा शरदकालीन रात का चमत्कारपूर्ण सौन्दर्य और पानी की प्यारी-प्यारी ध्वनियाँ। इन युवकों के मन में एक विचित्र भाव उठ रहा था कि क्या सचमुच उन्हें इस नदी, इन प्यारी-प्यारी ध्वनियों से मुँह मोड़कर जर्मन सन्तरी पर आक्रमण करना होगा, कांटेदार बाड़े और तालाबन्द द्वारों से जूझना होगा? आख़िर यह नदी, ये ध्वनियाँ उनके लिए कितनी परिचित और प्यारी थीं, जबकि वह काम उन्हें जीवन में पहली बार करना था। यह काम कैसा बनेगा, इसकी कल्पना भी वे नहीं कर सकते थे। किन्तु अपनी अनुभूतियों को उन्होंने वाणी नहीं दी और परिचित चीज़ों के बारे में फुसफुसाते हुए बातें करने लगे।

"वोत्या, याद है तुम्हें इस जगह की? यह वही जगह है, है न?" अनातोली ने पूछा।

"नहीं वह जगह यहाँ से कुछ दूरी पर है,-वहाँ जहाँ किनारा बैठ गया है और जहाँ से चूसने की आवाज़ आ रही है। मुझे दूसरे किनारे से तैरकर आना पड़ा था। मुझे तो यह भय लग रहा कि तुम और नीचे बहकर कहीं भँवर में न फँस जाओ।"

"सच कहूँ मेरी भी उस वक्त जान खुश्क हो रही थी", अनातोली ने दाँत निकालते हुए कहा। "मैं तो डूबते-डूबते बचा।"

"जेन्या मोश्कोव और मैं जंगल से बाहर निकल रहे थे... हे भगवान! मैं तो एक

हाथ भी नहीं तैर सकता था," वोलोद्या रगोजिन बोला। वह एक दुबला-पतला छोकरा था, जिसका चेहरा छज्जेदार टोपी के नीचे छिप गया था। टोपी उसने आँखों तक सरका ली थी। "अगर जेन्या मोश्कोव सारे कपड़े पहने-पहने कगार से पानी में न कूद पड़ा होता, तो तुम उसे खींचकर कभी निकाल न पाये होते," उसने विक्टर से कहा।

"बेशक मैं नहीं निकाल पाता," विक्टर ने स्वीकार किया। "क्या तबसे किसी ने मोश्कोव के बारे में कुछ सुना है?"

"एक शब्द भी नहीं," रगोजिन बोला, "वह तो एक सब-लेफ़्टिनेण्ट है और वह भी पैदल में। यह अफ़सर अब मक्खियों की तरह मर रहे हैं..!"

"कुछ भी हो तुम्हारी यह दोनेत्स नदी है बहुत शान्त, जबकि हमारी दूनेस्त्र-ओह, कुछ न पूछो उसका!" बोरीस ग्लवान कोहनी के बल उठता हुआ बोला। उसके दाँत अँधेरे में चमक उठे। "वह कितनी तेज बहती है। कितनी आकर्षक है वह! अगर तुम दूनेस्त्र नदी में डूबने लगो, तो फिर बच नहीं सकते! और यहाँ के जंगल-ये भी कोई जंगल हैं? हम भी स्तेपी में रहते हैं, दूनेस्त्र के किनारे-किनारे उगे जंगल देखते ही बनते हैं। पेड़ इतने मोटे होते हैं कि वे तुम्हारी दोनों बाँहों की लपेट में नहीं आ सकते। और इतने ऊँचे कि आकाश को छूने लगते हैं..."

"तब तो तुम्हें वहीं रहना चाहिए," जेन्या शेपेल्येव बोला। "अफ़सोस की बात है कि जहाँ लोग रहना चाहते हैं वहाँ नहीं रह पाते। ये लड़ाइयाँ कमबख़्त... अगकर यह सब न होता, तो लोग जहाँ चाहते रहते। अगर ब्राजील में रहना चाहते, तो वहीं रहते। मैं तो यहीं दोनबास में रहना चाहूँगा। यहाँ बड़ी शान्ति है, मुझे यहाँ बड़ा अच्छा लगता है।"

"सुनो, अगर तुम सचमुच शान्ति के साथ रहना चाहते हो तो लड़ाई ख़त्म हो जाने के बाद हमारे पास आकर सोरोका में रहो-यह हमारे जिले का केन्द्र है। बेहतर होगा यदि तुम हमारे गाँव में रहो। हमारे गाँव का ऐतिहासिक नाम है-जारग्राद,*" ग्लवान मुस्कराते हुए बोला, " हाँ, वहाँ आकर कोई जिम्मेदाराना काम मत करना! ख़ुदा न करे कहीं तुम्हें मवेशी खरीद-विभाग के कर्मचारी का पद न सँभालना पड़े! हाँ, स्थानीय रेड क्रास सोसाइटी के अध्यक्ष बनकर आओ, तो अच्छा रहेगा-फिर तो तुम्हें नाइयों की ही दुकानों का मुआइना करना होगा। सच पूछो तो दिन भर कोई काम नहीं-बैठे-बैठे शराब की चुस्कियाँ लिया करो। ख़ुदा की कसम, यह एक ऐसी नौकरी है, जिसके लिए सभी तरसते है," उसने हँसते हुए कहा।

"बेवकूफी की बातें बन्द भी करो!" अनातोली से सहृदयता से कहा। तभी उन

---

* जार का शहर।

सबको नदी से वही प्यारी ध्वनि आती सुनायी दी।

"बस, वक्त हो गया है," अनातोली बोला। और एक ही क्षण में प्रकृति और जीवन मे आह्लाद की अनुभूति ने उनका साथ छोड़ दिया।

विक्टर पास-पड़ोस का एक-एक पौधा जानता था। वह अपने साथियों को लेकर मैदान से बचते हुए पेड़ों के उस कुंज की ओर बढ़ रहा था, जिसके पास बैरक स्थित थी। कुंज में घुसकर वे लेट गये और कान लगाकर सुनने लगे-चारों और सन्नाटा छाया हुआ था। विक्टर ने हाथ से इशारा किया और वे रेंगने लगे।

अन्ततः वे कुंज के किनारे पहुँच गये। उनके सामने एक साधारण बैरक खड़ी थी। लेकिन वह क़ैदियों से ठसाठस भरी हुई थी और इसी कारण बड़ी भयानक और मनहूस लग रही थी। उसके आस-पास के पेड़ काटे जा चुके थे। बैरक की बायीं ओर सन्तरी की काली-सी आकृति दिखायी पड़ रही थी। कुछ दूरी पर सड़क थी, जिसके उस पार गाँव के मकान स्थित थे। लेकिन वे यहाँ से नज़र नहीं आ रहे थे।

सन्तरी की ड्यूटी ख़त्म होने में कोई आधा घण्टा रहा गया था। वे सब सन्तरी की उस काली और निश्चेष्ट आकृति पर आँखे गड़ाये अपनी जगह पड़े रहे।

आख़िर उन्होंने सामने के दो व्यक्तियों को मार्च करते, सड़क पर मुड़ते और अपनी ओर आते हुए सुना। उनमें से एक पहरेदार-कारपोरल और दूसरा वह सन्तरी था, जिसे पहले सन्तरी की जगह लेनी थी। काली परछाइयाँ ड्यूटीवाले सन्तरी की ओर बढ़ीं। सन्तरी फौरन सावधान की मुद्रा में खड़ा हो गया।

कोई घुटा-घुटा-सा आदेश सुनायी पड़ा, बन्दूकें खड़कीं, ज़मीन पर बूटों की धमक हुई और दो आकृतियाँ चलती बनीं।

अनातोली ने धीरे-से अपना सिर जेन्या शेपेल्येव की ओर घुमाया। तब तक जेन्या पेड़ों के कुंज के बीचोबीच रेंगने लगा। उसका काम बस्ती के छोर पर आकर उस छोटे-से मकान पर निगाह रखना था, जहाँ पहरेदार रहते थे।

सन्तरी पिंजड़े के भेड़िये की भाँति काँटेदार बाड़े के सहारे चक्कर लगा रहा था। उसके कन्धे पर बन्दूक का पट्टा पड़ा था। वह फुर्ती से पैर पटक रहा था और हाथ भी मल रहा था। सम्भवतः बिस्तर से उठकर बाहर आने के बाद उसे ठण्ड लग रही थी।

अनातोली ने विक्टर का हाथ दबा दिया, जो अप्रत्याशित रूप से गर्म था।

"चलो, हम दोनों चलते हैं?" वह फुसफुसाया।

एक साथी के नाते उसका दिल पसीज उठा। विक्टर ने इनकार में सिर हिलाया और आगे बढ़ने लगा।

अनातोली, बोरीस ग्लवान और वोलोद्या रगोजिन साँस रोके हुए सन्तरी और

उसकी और देख रहे थे। जब कभी विक्टर की ओर से जरा भी सरसराहट सुनायी पड़ती, तो उन्हें लगता कि दुश्मन को उसका पता चल गया है। किन्तु विक्टर वैसे ही रेंगता रहा, जब तक वह आँखों से ओझल न हो गया। वे अपनी आँखें सन्तरी पर गड़ाये रहे, क्योंकि किसी भी क्षण वह घटना घट सकती थी। किन्तु उसकी काली आकृति बाड़े में आगे-पीछे मँडराती रही और कुछ हो ही नहीं रहा था। उन्हें लगा कि काफ़ी समय बीत गया और शीघ्र ही दिन निकलने वाला है...

जैसे विक्टर अपने बचपन के उन अर्द्धविस्मृत खेलों में, ड्यूटी पर अपने किसी साथी को चकमा के लिए किया करता था, ठीक वैसे ही इस समय भी वह ज़मीन से चिपके-चिपके अपने अत्यधिक लचकीले हाथों और पैरों की सहायता से आगे बढ़ता जा रहा था। जब-जब सन्तरी उसकी ओर मुड़कर चलने लगता, तब-तब विक्टर जड़वत वहीं रुक जाता। और जब सन्तरी विपरीत दिशा में मार्च करता, तो वह फिर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगता।

उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, किन्तु उसे डर जरा भी न था। जब तक उसने रेंगना शुरू नहीं किया, तब तक वह अपने पिता के बारे में सोचता रहा, ताकि उसके दिमाग में प्रतिशोध की भावना कूट-कूटकर भर्ती जाये। पर इस समय वह यह सब कुछ भूल चुका था। उसकी सारी मानसिक शक्ति इसी प्रयास में चुक गयी कि वह किसी प्रकार चुप चाप सन्तरी के पास तक रेंगकर पहुँच जाये।

वह बैरक के चारों ओर लगे हुए कांटेदार बाड़े के एक छोर पर पहुँचकर रुक गया। सन्तरी विपरीत छोर से लौट रहा था। विक्टर अपना शिकारी चाकू दाँतों के बीच दबाकर उसकी ओर रेंगने लगा। उसकी आँखे अँधेरे की अभ्यस्त हो चुकी थीं कि वे बाड़े के तार तक को देख सकती थीं। उसे लग रहा था कि इस समय तक सम्भवतः सन्तरी की आँखें भी अँधेरे की अभ्यस्त हो चुकी होंगी और वह विक्टर के पास पहुँचते ही उसे आसानी से देख सकेगा। किन्तु सन्तरी बाड़े के प्रवेश द्वार पर अचानक रुक गया। विक्टर साँस रोककर प्रतीक्षा कर रहा था, किन्तु सन्तरी जेबों में हाथ डाले, अपने कन्धे से बन्दूक हटाये बिना, बैरक की ओर पीठ किये वहीं खड़ा रहा। उसका सिर तनिक झुका हुआ था।

विक्टर के मित्र फड़कते हुए हृदय से यह इन्तज़ार करते रहे कि वह अपना काम पूरा करे। मित्रों की ही भाँति सहसा विक्टर को भी ऐसा लगा कि शीघ्र ही दिन निकलनेवाला है। तब यह सोचे बिना कि अब सन्तरी के लिए उसकी आवाज़ सुन लेना आसान होगा-क्योंकि उसकी अपनी पदचाप अब अन्य ध्वनियों को दबा नहीं सकती थी-वह सीधे सन्तरी की ओर रेंगने लगा।

अब वह सन्तरी से कोई दो गज की दूरी पर रह गया था। सन्तरी अब भी उसी

स्थिति में खड़ा था-हाथ जेबों में डाले हुए, बन्दूक कन्धे से लटकती हुई, सिर किश्तीनुमा टोपी में नीचे झुका हुआ, बदन एड़ियों पर थोड़ा हिलता हुआ। विक्टर उस समय कुछ रेंगा या उछल पड़ा, यह उसे याद न रहा। कुछ भी हो, यह सहसा हाथ में चाकू पकड़े सन्तरी की बगल में खड़ा हो गया। सन्तरी ने आँखें खोली और जल्दी से सिर घुमाया। वह एक दुबला-पतला और काफ़ी बढ़ी दाढ़ीवाला अधेड़ उम्र का जर्मन था। उसकी आँखों मे ख़ून उतर आया। वह जेब से हाथ भी न निकाल पाया था कि उसके मुँह से एक हल्की-सी चीख़ निकली-'उफ...'

विक्टर ने उसकी ठुड्डी की बायीं ओर गरदन में पूरी ताकत के साथ अपना चाकू घुसेड़ दिया। जर्मन गिर पड़ा। विक्टर उस पर टूट पड़ा, लेकिन तब तक जर्मन के शरीर में ऐंठन-सी हुई और उसके मुँह से ख़ून निकलने लगा। विक्टर एक ओर हट गया, ख़ून से सना चाकू एक तरफ़ फेंका और सहसा इतनी तेजी से वमन करने लगा कि उससे होने वाली आवाज़ दबाने के लिए उसने अपने मुँह को कोट की बायीं आस्तीन से ढांप लिया।

सहसा अनातोली उसके सामने खड़ा दिखायी दिया और चाकू उसकी ओर बढ़ाते हुए फुसफुसाकर बोला :

"हम इसे यहाँ नही छोड़ सकते। इस से सुराग लग सकता है..."

विक्टर ने चाकू छिपा लिया और रगोजिन उसकी बाँह पकड़ते हुए बोला :

"आओ, अब चलते हैं!.."

विक्टर ने अपना रिवाल्वर निकाला और दोनों दौड़कर सड़क तक आये और वहाँ लेट गये।

अँधेरे में काँटेदार बाड़े में फँस जाने का खतरा बना था, अतएव बोरीस ग्लवान ने कुशलतापूर्वक प्लायर से दो खम्भों के बीच लगा तार काट डाला और अन्दर जाने का रास्ता बना लिया। इसके बाद वह और अनातोली बैरक के दरवाज़ों की ओर दौड़े। ग्लवान ने ताला टटोला, कुण्डे में सब्बल को फँसाया और तोड़ डाला। उन्होंने अत्यधिक उत्तेजित होकर द्वार खोल दिया। उनकी ओर गन्दी गर्म हवा का एक झोंका आया। उनके सामने, दायें और बायें, लोग अपने-अपने तख़्तों पर से उठने लगे। एक उनींदी और भयाकुल आवाज़ यह जानना चाहती थी कि मामला क्या है।

"साथियो..." अनातोली ने कहना शुरू किया, किन्तु उसका गला रुँध गया।

इधर-उधर कुछ प्रसन्नतापूर्ण आवाज़ें सुनायी दीं, किन्तु दूसरों ने उन्हें चुप करा दिया।

अनातोली ने अपने को संयत किया : "तुम लोग जंगल से होकर नदी की ओर भागो, फिर नदी की धारा के अनुकूल और विपरीत, दोनों ही दिशाओं में बँट जाना"

वह बोला। "क्या गोर्देई कोर्नियेंको नहीं हैं?"

"जी हाँ," किसी की आवाज़ आयी।

"आप तो घर जाइये, आपकी पत्नी आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं..." यह कहकर अनातोली बैरक के दरवाज़े पर खड़ा हो गया।

"शुक्रिया...भाइयों...रक्षकों..." ऐसी कई आवाज़ें अनातोली को सुनायी दीं।

अब सामने के लोग बन्द द्वार की ओर भागने लगे कि ग्लवान ने उन्हें बाड़े की तरफ़ मोड़ दिया जहाँ रास्ता बनाया जा चुका था। सहसा कोई व्यक्ति अनातोली के पास आया और उसके कन्धे दोनों हाथों से पकड़ता हुआ, हर्षातिरेक में फुसफुसाया :

"तोल्या?... तोल्या?.."

अनातोली चौंक पड़ा और उस व्यक्ति के चेहरे में झाँकने लगा।

"जेन्या मोश्कोव, " वह बोला। पता नहीं क्यों उसकी आवाज़ में आश्चर्य का कोई पुट न था।

"मैंने तुम्हारी आवाज़ पहचान ली," माश्कोव ने कहा।

"जरा ठहरो... हम लोग साथ चलेंगे..."

भोर के झुटपुटे से पहले ही तीनों साथी-अनातोली, विक्टर और जेन्या मोश्कोव-एक सँकरे खड्ड की घनी झाड़ियों में बैठ गये। मोश्कोव नंगे पैर था। उसके चिथड़ों से बदबू आ रही थी। उसके बाल उलझे हुए थे।

अभी कुछ समय पूर्व वे दोनेत्स के तट पर बैठ-बैठे मोश्कोव के बारे में ही बातें कर रहे थे। वे इतना शीघ्र उसे मुक्त भी करा पायेंगे, इसकी तब वे कल्पना तक नहीं कर सकते थे। अनातोली थककर चूर हो चुका था फिर भी बड़ा ख़ुश था, बड़ा ही उत्साहित। उसने विक्टर और ग्लवान तथा अपने दूसरे साथियों की भी प्रशंसा की, जिन्होंने इस अभियान को सफल बनाया, फिर बात जेन्या मोश्कोव को छुड़ाने की आश्चर्यजनक घटना पर आ गयी। विक्टर उदासी के साथ संक्षिप्त उत्तर देता रहा। और मोश्कोव सारा समय चुप रहा। अन्ततः अनातोली भी चुप हो गया। खड्ड में काफ़ी अँधेरा और सन्नाटा छाया था।

सहसा दोनेत्स के पार, नीचे की ओर आग की लपटें भड़क उठीं। सारा आकाश एकदम लाल हो उठा : यहाँ तक कि खड्ड में भी रोशनी छा गयी।

"कहाँ जल रहा है?" विक्टर ने धीमे स्वर में पूछा।

"गुन्दोरोव्स्काया के आस-पास," कुछ क्षणों तक संकोचवश चुप रहने के बाद अनातोली बोला। "यह काम सेर्गेई का है," वह फुसफुसाया। "वह गंजियों में आग लगा रहा है। वह यह काम अब हर रात करता है..."

“हम साथ-साथ स्कूल में पढ़े हैं। हमें तब अपनी ज़िन्दगी की राह साफ़-साफ़ नज़र आती थी और अब हमें ये खुराफातें करनी पड़ रही हैं!” विक्टर उत्तेजित होकर बोल पड़ा। “पर दूसरा रास्ता भी तो नहीं है!”

“मेरे दोस्तो! क्या मैं सचमुच आज़ाद हूँ?..मेरे दोस्तो, मेरे दोस्तो!” जेन्या मोश्कोव ने भर्रायी आवाज़ में कहा और हाथों में अपना चेहरा छिपाकर सूखी घास पर गिर पड़ा।

अध्याय 11

एक समय वह भी आया जब ठेलोंवाले शरणार्थी तक कच्ची और अन्य पक्की सड़कों पर जाने से डरने लगे, क्योंकि वहाँ बिछायी गयी सुरंगों से बहुत ज़्यादा लारियाँ, कारें और पेट्रोल-टैंकर टकराकर नष्ट हो रहे थे। इसीलिए वे लोग अपनी-अपनी ठेलागाड़ियाँ देहातों की गलियों या सीधे खुली स्तेपी से होकर ले जाने लगे।

सुनने में आया कि दक्षिण में मत्वेयेव कुर्गान और नोवोशाख्तिन्स्क के बीच किसी सड़क पर एक गम्भीर दुर्घटना घटी। साथ ही साथ यह अफवाह भी गरम थी कि उत्तर में स्तारोबेल्स्क और बेलोवोद्स्क के बीच पेट्रोल-टैंकरों का एक पूरा का पूरा काफिला उड़ा दिया गया है।

स्तालिनग्राद की ओर जानेवाले राजमार्ग पर क्रेपेन्का नदी पर बना कंक्रीट का एक पुल भी उन्हीं दिनों उड़ा दिया गया था। यह दुर्घटना कैसे घटी, यह समझ में आनेवाली बात न थी, क्योंकि पुल बोकोवोप्लातोवो नामक एक घनी आबादीवाली बस्ती के बीचोंबीच बना था और जर्मन उस पर कड़ा पहरा रखते थे। कुछ दिनों बाद वोरोनेज-रोस्तोव रेलवे पर कामेंस्क के निकट एक बड़ा-सा पुल भी ढहकर नदी में गिर पड़ा। इस पुल पर चार मशीनगनों और तीस टामी-गनों से लैस एक पूरी जर्मन पलटन का पहरा रहता था। पुल के विस्फोट से रात में इतना तेज धमाका हुआ कि उसकी गूँज क्रास्नोदोन तक सुनायी दी।

ओलेग को अनुमान था कि वह विस्फोट सम्भवतः क्रास्नोदोन और कामेंस्क के खुफ़िया पार्टी संगठनों के मिले-जुले प्रयासों के परिणामस्वरूप हुआ, क्योंकि उस घटना के कोई दो हफ़्ते पहले पोलीना गेओर्गियेव्ना ने उसे ल्यूतिकोव का यह अनुरोध सुनाया था कि उसे एक सन्देशवाहक की ज़रूरत है, जिसे वह कामेंस्क भेजना चाहता है।

ओलेग ने इस काम के लिए ओल्गा इवान्त्सोवा को चुना था।

अगले दो हफ़्तों तक ओल्गा ‘तरुण गार्ड’ के कार्य-क्षेत्र से एक तरह से बाहर रही। हाँ, नीना से ओलेग को यह पता अवश्य चल गया कि ओल्गा इस बीच कई

बार क्रास्नोदोन में अपने घर आयी और चली भी गयी। उक्त विस्फोट के दो दिन बाद वह ओलेग के घर पहुँची और 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर की सन्देशवाहिका के रूप में पुनः चुपचाप काम करने लगी। ओलेग जानता था कि उससे कुछ पूछताछ नहीं की जा सकती है फिर भी कभी-कभी वह बड़ी उत्सुकता से उसका चेहरा देखा करता था। पर वह यह सब देखा-अनदेखा कर रही थी और हमेशा की तरह शान्त तथा गुप-चुप नज़र आ रही थी। उसका नाक-नक्शा बेडौल-सा था। मुस्कराहट तो उसके चेहरे पर विरले ही खेलती थी। ऐसा लगता मानो ख़ुफ़िया बातों को छिपाने के लिए उसका चेहरा विशेष रूप में बनाया गया है।

इस समय तक 'तरुण गार्ड' के तीन लड़ाकू दल जिले की सड़कों पर और उसकी सीमाओं के पर बहुत दूर-दूर तक काम कर रहे थे।

एक दल क्रास्नोदोन और कामेन्स्क सड़क पर मंडराता रहता था। वह आम तौर पर जर्मन अफ़सरों की कारों पर ही आक्रमण करता था। इस दल का नेता विक्टर पेत्रोव था।

दूसरा दल वोरोशीलोवग्राद और लिखाया की सड़कों पर गश्त लगाता था। इसका नेता लाल सेना का लेफ़्टिनेण्ट जेन्या मोश्कोव था, जिसे अभी हाल ही में मुक्ति दिलायी गयी थी। इसका काम पेट्रोल टैंकरों की खबर लेना अर्थात टैंकरों के ड्राइवरों और पहरेदारों को मौत के घाट उतारना और पेट्रोल को ज़मीन पर बहा देना था।

तीसरा दल त्यूलेनिन के नेतृत्व में चारों ओर चक्कर काटता रहता था। वह हथियार, रसद और कपड़ा ले जानेवाली जर्मन लारियों को रोकता था और इक्के-दुक्के भटके जर्मन सैनिकों की खोज में रहता था। वह शहर तक में उन्हें गोली से उड़ा देता था।

प्रत्येक दल के लोग अलग-अलग रास्तों से आकर एक जगह जमा होते थे और काम पूरा करते ही बिखर जाते थे। हर लड़का अपना हथियार स्तेपी में छिपाकर रखता था।

क़ैद से मोश्कोव को छुटकारा मिलते ही 'तरुण गार्ड' को एक और अनुभवी नेता मिल गया।

वह बलूत की तरह हृष्ट-पुष्ट और मजबूत था और झूम-झूमकर घूमता था। उसके गले में एक बना हुआ गुलूबन्द लिपटा रहता, जिसकी वजह से वह भारी-भरकम दिखायी पड़ता। उसके पैरों में ऊँचे-ऊँचे बूट होते थे और उन पर रबड़ के जूते, जिन्हें उसने शेविरेव्का गाँव के थाने पर हमला करते समय एक पुलिसवाले से उतार लिया था। मारे गये उस पुलिसवाले और मोश्कोव के पैरों की नाप एक ही थी। वैसे देखने में मोश्कोव बहुत गुस्सैल लगता था, लेकिन सच बात तो यह थी

कि वह कोमल स्वभाव का था। उसे सैनिक सेवा में, खासकर उस दिन से जब वह मोर्चे पर पार्टी में भर्ती हुआ था, आत्मानुशासन और धैर्य रखने की शिक्षा दी गयी थी।

मोश्कोव पेश से फ़िटर था। अतएव वह प्रशासन-कार्यालय न. 10 के अन्तर्गत स्थापित वर्कशाप के मशीन विभाग में काम करने लगा। ल्यूतिकोव के सुझाव पर उसे 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर का सदस्य भी बना लिया गया।

अभी तक इस बात का कोई प्रमाण न मिला था जिससे पता चलता कि जर्मन 'तरुण गार्ड' जैसे किसी भी दल के अस्तित्व के बारे में चिन्तित थे, हालाँकि इस समय तक यह संगठन कई बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न कर चुका था।

जिस प्रकार पृथ्वी के नीचे अदृश्य जल के रिसते रहने से बड़े-बड़े झरने और नदियाँ बनती हैं, उसी प्रकार 'तरुण गार्ड' के कार्य भी उन लाखों व्यक्तियों के गुप्त, गहरे तथा विशाल आन्दोलन का अंग बन गये, जो जल्द से जल्द उन स्वाभाविक परिस्थितियों को पुनः लाने के लिए प्रयत्नशील थे जिनमें वे जर्मनों के आने से पहले रह रहे थे। इसीलिए जर्मनों के ख़िलाफ़ चलनेवाली छोटी-बड़ी कार्रवाइयों के बीच दुश्मनों को 'तरुण गार्ड' के अस्तित्व का कोई भी विशेष चिह्न नज़र न आया।

उस समय मोर्चा इतनी दूर था कि क्रास्नोदोन में बसे हुए जर्मनों को यह नगर जर्मन राइख का एक दूरस्थ नागरिक प्रान्त-सा लग रहा था। अगर सड़कों पर छापामारों की कार्रवाइयाँ न होती रहतीं, तो यही समझा जाता कि यहाँ हमेशा के लिए 'नयी व्यवस्था' की स्थापना हो चुकी है।

युद्ध के सभी मोर्चों पर एक तरह से सन्नाटा-सा छा गया, मानो सब के सब स्तालिनग्राद के महायुद्ध की गरज सुन रहे हों। सितम्बर और अक्टूबर के महीनों में स्तालिनग्राद और मोज्दोक क्षेत्रों में होनेवाली लड़ाईयों के सम्बन्ध में प्रसारित संक्षिप्त विज्ञप्तियों में एक ऐसी स्थायी बात ज़रूर रहती थी, जिसे सुनने के लोग आदी हो गये थे। लगता था जैसे हमेशा सब कुछ इसी प्रकार चलता रहेगा।

रूसी क़ैदियों का जो तांता क्रास्नोदोन से होकर पश्चिम की ओर गुजरा करता था, अब एकदम ख़त्म हो गया। किन्तु जर्मनी और रूमानिया के सैनिक दस्ते, रसद-गाड़ियाँ, तोपें और टैंक पश्चिम से अब भी पूर्व की ओर बराबर जा रहे थे। वे शहर से बाहर जाते थे, किन्तु लौटते न थे। लगता था जैसे यह स्थिति भी हमेशा बनी रहेगी।

कई दिनों तक कोशेवोई और कोरोस्तिल्योव के घर में एक श्रेष्ठ जर्मन हवाबाज, जो घावों से चंगा हो जाने के बाद फिर मोर्चे पर लौट रहता था, और एक रूमानियाई अफ़सर अड्डा जमाये रहे। रूमानियाई अफ़सर के साथ एक अर्दली भी था। वह ख़ुशदिल जवान था, रूसी बोलता था और जिस चीज़ पर भी उसका हाथ पड़ जाता,

उसे चुरा लेता-चाहे वह लहसुन हो या पारिवारिक चित्र का फ्रेम।

रूमानियाई अफ़सर छोटे क़द का था। उसकी मूँछें पतली और काली थीं तथा आँखें छोटी और बाहर की ओर निकली हुई थी। वह बेहद फुर्तीला था। उसकी नाक की नोक तक बराबर हिलती रहती थी। वह मामा कोल्या के कमरे में जम गया था, पर अपना सारा दिन असैनिक कपड़े पहने-पहने खानों, दफ़्तरों और सैनिक दस्तों का चक्कर लगाते हुए बिताता था।

"तुम्हारा चीफ असैनिक कपड़ों में क्यों घूमता है?" मामा कोल्या ने उसके अर्दली से पूछा। इस समय तक उसने अर्दली से एक प्रकार से दोस्ती गाँठ ली थी।

घूशदिल अर्दली ने सर्कस के जोकर की तरह गाल फुलाये, उन पर हाथ मारे और स्नेहपूर्वक कहा :

"वह जासूस है!"

इस बातचीत के बाद मामा कोल्या को अपना पाइप फिर कभी नहीं मिला।

जर्मन हवाबाज येलेना निकोलायेव्ना को नानी वेरा के कमरे में और ओलेग को शैड में खदेड़कर बड़े कमरे में जम गया। उसका क़द लम्बा, बाल सुनहरे और आँखें ख़ून की तरह लाल थीं। उसे फ्रांस और खार्कोव पर हुए हवाई हमलों में बहुत-से पदक मिले थे। जब उसे यहाँ कमाण्डाण्टुर से लाया गया, तो उसने बुरी तरह पी रखी थी। कई दिनों तक वह इसलिए इसी घर में पड़ा रहा, क्योंकि वह रात-दिन नशे में धुत्त रहता था। वह घर के सभी लोगों को पिलाने की कोशिश करता था, सिवाय रूमानियन सैनिकों के, जिनसे उसे चिढ़ थी। वह किसी से बिना बातचीत किये एक क्षण भी न रह पाता। वह अपनी जर्मन और रूसी की खिचड़ी भाषा में यह समझाता रहता था कि वह किस प्रकार सबसे पहले बोल्शेविकों को, फिर अंग्रेजों और अमेरिकनों को ज़मीन चटायेगा और तब सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। परन्तु अपने निवास के आख़िरी दिनों में वह अत्यन्त उदास हो उठा।

"स्तालिनग्राद!.. हाँ!" उसने अपनी लाल तर्जनी उठाकर कहा। "बोल्शेविक गोलियाँ बरसाता है.. हूँह! हम Kaputt!* ।" और उसकी लाल-लाल आँखों में निराशा के आँसू छलछला आये।

जाने से पहले वह इतने होश में आ गया कि अपनी पिस्तौल से अहाते में किलबिलाती मुर्ग़ियों पर गोली चला सका। किन्तु इन मुर्ग़ियों को वह रखता कहाँ? अतः उसने उनके पैर बाँध दिये और अपना सामान समेटने लगा।

रूमानियाई अर्दली ने ओलेग को पुकारा, जोकर की तरह अपने गाल फुलाये

---

* हम अब बच नहीं सकते।

और मुर्ग़ियों की ओर इशारा किया।

"सभ्यता है सभ्यता!" उसने कोमलता से कहा।

इसके बाद ओलेग का एक छोटा-सा चाकू ऐसा गायब हुआ कि फिर उसका नाम-निशान भी न मिला।

'नयी व्यवस्था' के अधीन क्रास्नोदोन में भी एक 'सर्वश्रेष्ठ वर्ग' का जन्म हुआ। यहाँ भी पदों का ऐसा श्रेणी-क्रम स्थापित हुआ, जैसा जर्मनी के नगरों हैडेलबर्ग या बाडन-बाडन में देखने को मिलता था। सबसे बड़े पद पर थे हाप्तवह्टमिस्टर ब्रुक्नेर, वाह्टमिस्टर बाल्डेर और प्रशासन-कार्यालय का ओबेर लेफ़्टिनेण्ट श्वैदे। श्वैदे उन जर्मन कारखानों के स्वच्छ वातावरण में काम करने का आदी था, जिनका प्रबन्ध प्रमाणिक कोटि का था तथा जहाँ हर चीज़ की व्यवस्था थी। एक दिन उसने बराकोव को अपने अधीनस्थ उद्यमों की स्थिति से अवगत करा दिया था। यदि मज़दूर, मशीनें, औजार, लकड़ी, यातायात और सही-सलामत खाने नहीं हैं, तो कोयला मिल भी कहाँ से सकता है! वह अपने कर्तव्य का पालन बस इसी हद तक ईमानदारी से कर सकता था कि इस बात की बाकायदा देख-रेख करता रहे कि रूसी साईस प्रशासन-कार्यायिल के जर्मन घोड़ों को हर रोज़ सुबह जई खिलाते हैं या नहीं। इसके अलावा कागजों पर दस्तखत करना भी उसका एक काम था। वह अपना बाक़ी समय कहीं अधिक उत्साह से अपने निजी मुर्ग़ीखाने, सुअर तथा मवेशियों के बाड़े और दावतों में लगाता था।

पदों के श्रेणी-क्रम में कुछ नीचे आते थे-श्वैदे का डिप्टी फेन्द्नेर, अपरलेफ़्टिनेण्ट श्प्रीक और निकरवाला सोन्दरफ़्यूरर साण्डेर्स। कुछ और भी नीचे पद पर थे-पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की और बुरगोमिस्टर स्तात्सेंको। स्तात्सेंको दिन भर शराब पीकर मस्त रहता था। प्रतिदिन सुबह स्तात्सेंको छाता लेकर बड़ी सावधानी से कीचड़ को लाँघता हुआ म्युनिसिपल दफ़्तरों की ओर चल देता और शाम को उसी तरह गम्भीरता से लौटता, मानो सारे दफ़्तर का भार अकेले उसी के कन्धों पर हो। इस श्रेणी-क्रम के अन्त में नम्बर आता था एन.सी.ओ. फेनबोंग और उसके सैनिकों का। वस्तुतः वे लोग ही सारा काम करते थे।

अक्टूबर की मूसलाधार वर्षा आरम्भ हुई और यह प्यारा छोटा-सा खान-नगर बड़ा ही उजड़ा व बदनसीब लगने लगा! हर जगह कीचड़ ही कीचड़ था। न ईंधन, न प्रकाश। सारे बाड़े तोड़े जा चुके थे, सामने के बगीचों के पेड़ और और झाड़ियाँ काट डाली गयी थीं, खाली घरों की खिड़कियाँ टूट चुकी थीं। उधर से गुजरते हुए जर्मन सैनिक घरों का सारा सामान और जर्मन प्रशासन के कर्मचारी वहाँ का सारा फर्नीचर चुरा ले गये थे। जब रूसी लोगों की कहीं मुलाकात हो जाती तो वे एक दूसरे को पहचान भी न पाते। वे इतने दुर्बल, क्षीण और निर्धन हो चुके! कभी-कभी तो एक

साधारण व्यक्ति भी सड़क के बीचोंबीच सहसा रुक जाता अथवा रात में जगकर सोचने लगता : "क्या यह सब सच है? कोई दुःस्वप्न तो नहीं? या कहीं मेरा दिमाग तो नहीं खराब हो गया?"

तब सहसा किसी दीवार या खम्भे पर चिपका कोई गीला परचा लोगों को चेता देता : 'स्तालिनग्राद!' या फिर कहीं सड़क पर विस्फोट का धमाका गूँज उठता, तो लोग मन ही मन कहने लगते : "नहीं, यह दुःस्वप्न नहीं, भ्रमजाल भी नहीं! सत्य है सत्य! संघर्ष जारी है!"

एक ऐसे दिन ल्यूबा एक भूरी जर्मन कार में वोरोशीलोवग्राद से आयी। कार रुकते ही एक युवा लेफ़्टिनेण्ट कूदकर बाहर आया, उसने कार का दरवाज़ा खोला और सलामी मारी। ल्यूबा हाथ में सूटकेस लिये कार से उतरी और भागकर अपने घर की ड्योढ़ी की सीढ़ियाँ चढ़ने लगी।

इस बार उसकी माँ, येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना से रहा नहीं जा सका; सोने की तैयारी करती हुई वह बोलीं :

"बेटी ल्यूबा, तुम्हें बहुत सावधान रहना चाहिए... लोग कहते हैं कि तुमने जर्मनों के साथ दोस्ती गाँठ ली है..."

"यही कहते हैं न? यह तो बड़ी अच्छी बात है, प्यारी माँ, सचमुच मेरे लिए यह बड़े काम की बात है," ल्यूबा मुस्कराती हुई बोली और बिस्तर पर सिकुड़-सिमटकर सो गयी।

वान्या जेम्नुखोव ल्यूबा के आने का समाचार पाकर दूसरे दिन सुबह उससे मिलने के लिए निकल पड़ा। उसके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। वह घुटनों तक कीचड़ में सन गया और बारिश में भीग जाने के कारण ठिठुरने लगा। आख़िर वह बिना दरवाज़ा खटखटाये ही शेव्त्सोव परिवार के बड़े कमरे में घुस गया।

ल्यूबा घर में अकेली थी। उसके एक हाथ में छोटा दर्पण था और दूसरे हाथ से वह अपने बालों में कंघी कर रही थी। साथ ही साथ अपनी हरी फ्राक को ठीक भी कर रही थी। कमरे में नंगे पैर चहलक़दमी करती हुई वह अपने आपसे बातें कर रही थी :

"अरी प्यारी ल्यूबा! ये छोकरे तुम्हें प्यार क्यों करते हैं, मेरी समझ में नहीं आता। आख़िर तुम्हारी ख़ूबी क्या है? उफ... मुँह इतना बड़ा, आँखें इतनी छोटी, चेहरा इतना सादा, डीलडौल... हाँ, डीलडौल उतना बुरा नहीं... नहीं, सचमुच बुरा नहीं। और अगर सोचा जाये... कम से कम तुम छोकरों के पीछे लगी होती तो, लेकिन यह तुम बिलकुल नहीं करती हो... उफ! छोकरों के पीछे लगना! नहीं, यह सब बातें मेरी समझ में नहीं आतीं..."

उसने अपने घुँघराले बाल हिलाते हुए पहले सिर एक ओर झुका लिया, फिर दूसरी ओर। अन्ततः नंगे पैरों से फर्श धमधमाती हुई नाचने और गाने लगी :

प्यारी ल्यूबा,
ओ मेरी ल्यूबा प्यारी...

वान्या चुपचाप उसे बड़ी देर तक देखता रहा। आख़िर वह खाँस दिया।

पर ल्यूबा जरा भी न घबरायी। इसके विपरीत उसने ऐसी मुद्रा बना ली मानो उसे चिढ़ हुई हो। उसने धीरे-धीरे अपना दर्पण नीचा किया, वान्या की ओर मुड़ी, अपनी नीली आँखें मिचकायी और खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"सेर्गेई लेवाशोव की क़िस्मत में क्या है, यह मैं साफ़-साफ़ देख रहा हूँ," वान्या ने अपनी मन्द्र आवाज़ में कहा, "उसे रानी के पास जाकर तुम्हारे लिए उसकी जूतियाँ चुरानी होंगी।"*

"वान्या, जानते हो, मेरे लिए यह आश्चर्य की बात ज़रूर है, पर मैं उस सेर्गेई की अपेक्षा तुम्हें अधिक प्यार करती हूँ," ल्यूबा बोली और कुछ-कुछ शर्मा गयी।

"मेरी आँखें इतनी कमज़ोर हैं कि दरअसल मुझे सभी लड़कियाँ एक जैसी लगती हैं। मैं तो उन्हें उनकी आवाज़ से पहचानता हूँ। मुझे तो मन्द्र आवाज़वाली लड़कियाँ पसन्द है। पर तुम्हारी आवाज़ तो घण्टी की भाँति खनकदार है!" वान्या ने शान्ति से कहा। "इस समय घर पर कौन-कौन है?"

"कोई नहीं... माँ इवान्त्सोवा के घर गयी हुई हैं।"

"तो फिर चलो बैठें। और हाँ, ख़ुदा के वास्ते यह दर्पण हटा दो... अब मेरी बात सुनो। ल्यूबोव ग्रियोर्येव्ना! तुम्हें याद है कि महान अक्टूबर क्रान्ति की पच्चीसवीं वर्षगाँठ आनेवाली है?"

"बेशक मुझे याद है," ल्यूबा बोली। पर सच बात तो यह थी कि वह इसके बारे में बिलकुल भूल ही गयी थी।

वान्या ने झुककर उसके कान में कुछ कहा।

"ख़ूब! शाबाश! बहुत अच्छा ख़याल है! यह कहकर ल्यूबा ने तहे दिल से वान्या के होंठों पर चुम्बन जड़ दिया। किंकर्तव्यविमूढ़ावस्था में खड़े वान्या का चश्मा गिरते-गिरते बचा।

---

* प्रसिद्ध रूसी लेखक न. गोगोल (1809-1852) की परीकथा 'क्रिसमस से पहले' में वकूला लुहार को अपनी प्रेयसी का मन जीतने के लिए उसके आगे रानी की जूतियाँ पेश करनी थीं।-**सं.**

"माँ, क्या कभी तुमने कपड़े रँगे थे?"

ल्यूबा की माँ हैरानी से उसकी ओर देखने लगी।

"मेरा मतलब यह है कि तुम्हारे पास कभी कोई ऐसा सफ़ेद ब्लाउज था, जिससे तुम नीले रंग में रंगना चाहती थीं?"

"हाँ बेटी, कभी-कभी ऐसा भी काम करना पड़ता था।"

"और कभी कोई चीज़ तुमने लाल रंग में रंगी थी?"

"रंग से कोई फर्क नहीं पड़ता, बेटी..."

"तो मुझे भी रंगना सिखा दो, मम्मी। शायद कभी किसी दिन मुझे भी कुछ न कुछ रंगना पड़ेगा!"

"...चाची मरूस्या, यह तो बताओ कि कभी तुम्हें कोई कपड़ा रंगना पड़ा?" वोलोद्या ओस्मूखिन ने लित्वीनोवा से पूछा। उसकी चाची ओस्मूखिन परिवार के घर के पास ही एक छोटे-से मकान में अपने बच्चों के साथ रहती थी।

"बेशक रंगना पड़ा, वोलोद्या!"

"तुम मेरे लिए दो-तीन तकिए के गिलाफ रंग दोगी-लाल रंग में?"

"लेकिन, प्यारे वोलाद्या, कभी रंग पक्का नहीं होता, अतः तुम्हारे कान और गाल तक लाल हो उठेंगे।"

"मैं उन पर सोऊँगा नहीं। बस दिन भर अपने पलंग पर रखे रहूँगा अच्छे लगेंगे. .."

"पापा, मुझे पक्का यकीन हो गया है कि तुम लकड़ी और धातुओं की रंगाई में सचमुच बड़े माहिर हो। क्या तुम मेरे लिए एक चादर लाल रंग में रंग दोगे? जानते हो, उन्हीं ख़ुफ़िया काम करने वालों ने मुझसे कहा : 'हमें एक लाल चादर चाहिए'। भला में क्या कह सकता था!" जोरा अपने पिता से बोला।

"मैं रंग तो सकता हूँ। किन्तु... चादर! तुम्हारी माँ क्या कहेगी? उसके पिता ने बड़ी सतर्कता से जवाब दिया।

"आख़िर तुम लोग हमेशा के लिए यह सवाल तय क्यों नहीं कर डालते कि घर का मालिक कौन है-तुम या माँ? कुछ भी हो, बात साफ़ है-मुझे एक लाल चादर मिलनी ही चाहिए..."

वाल्या बोर्त्स को सेर्गेई का पत्र मिल चुका था, किन्तु उसने कभी उसका जिक्र न किया और न ही सेर्गेई ने बात चलायी। किन्तु उस दिन से वे जैसे एक ही शरीर के दो अंग बन गये। दिन निकलते ही दोनों एक-दूसर के लिए तड़पने लगते। प्रायः सेर्गेई ही पहले-पहल देरेव्यान्नाया सड़क पर आ टपकता। घुँघराले बालोंवाला यह

दुबला-पतला छोकरा अक्टूबर के ठण्डे और बरसाती दिनों में भी नंगे पैर चलता था। मरीया अन्द्रेयेव्ना और खासकर नन्हीं ल्यूस्या उसे पसन्द करने लगी थी, हालाँकि उनकी मौजूदगी में वह विरले ही बात करता था।

"आप जूते क्यों नहीं पहनते?" एक दिन नन्हीं ल्यूस्या ने पूछ लिया।

"नंगे पैर नाचना आसान होता है," उसने दाँत निकालते हुए उत्तर दिया।

पर इसके बाद वह जूते पहनकर आने लगा-बात यह थी कि इससे पहले जूतों की मरम्मत करने के लिए उसे समय ही नहीं मिला था।

उन्हीं दिनों जब 'तरुण गार्ड' के सदस्य सहसा चीज़ें रंगने में रुचि दिखाने लगे, सेर्गेई और वाल्या को चौथी बार परचे बाँटने का काम करना था। उन्हें ये परचे ग्रीष्म थियेटर में एक फिल्म-प्रदर्शन के दौरान बाँटने थे।

इस ग्रीष्म थियेटर में पहले लेनिन नामक क्लब हुआ करता था। यह लकड़ी की एक ऊँची और लम्बी इमारत थी। खुले रंगमंच पर फिल्म दिखाने के लिए परदा लटकाया जाता था। दर्शक ज़मीन में गड़ी सादी बेंचों पर बैठते थे। क्रास्नोदोन पर जर्मनों का अधिकार हो जाने के बाद से वहाँ जर्मन फिल्में दिखायी जाने लगीं, जो अधिकांशतः युद्ध समाचार सम्बन्धी होती थीं। कभी-कभी दौरा करनेवाली सरकस-मँडलियाँ भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया करती थीं। सीटों पर नम्बर न थे। टिकट का दाम एक ही रहता था। दर्शक जहाँ चाहें, वहाँ बैठ जायें।

हमेशा की तरह वाल्या हाल के ऊपरी अर्द्धभाग की ओर, यानी पीछे चली गयी और सेर्गेई आगे बढ़ गया। रोशनी गुल होते ही, जब सीटों के लिए अभी भी दर्शक खलबली मचा रहे थे, उन्होंने परचे हवा में फेंक दिये, जो बिखरकर दर्शकों के सिरों के ऊपर गिरने लगे।

शोर-गुल मचाते हुए दर्शक उन परचों पर टूट पड़े। सेर्गेई और वाल्या चौथे खंभे के पास चले आये। परस्पर मिलने का यह स्थान उन्होंने पहले से ही तय कर लिया था। हमेशा की तरह वहाँ सीटों से अधिक दर्शकों की संख्या थी, फलतः सेर्गेई और वाल्या अन्य बहुत-से दर्शकों की तरह खड़े-खड़े फिल्म देखने लगे। प्रोजेक्टर से निकलनेवाली नीली रोशनी परदे पर पड़ी, तो सेर्गेई ने वाल्या को हल्के-से टहोका मारकर परदे की बायीं ओर इशारा किया, जहाँ एक बड़ा-सा नाजी झण्डा फहरा रहा था।

"मैं वहाँ जाऊँगा। जब फिल्म ख़त्म हो जायेगी, तो भीड़ के साथ तुम भी बाहर निकल जाना और टिकट-चैकर से बातें शुरू कर देना। अगर कोई हॉल साफ़ करने के लिए आये, तो उसे बाहर कोई पाँच मिनट तक रोके रखना," सेर्गेई वाल्या के कान में फुसफुसाया।

उसने चुपचाप सिर हिला दिया।

परदे पर फिल्म का नाम जर्मन में लिखा था। साथ ही साथ सफ़ेद रंग के शब्दों में उसका रूसी अनुवाद भी आ गया-'लड़की का पहला अनुभव'।

"इसके बाद हम लोग तुम्हारे मकान में मिलेंगे न?" सेर्गेई ने तनिक लजाते हुए पूछा।

वाल्या ने हामी भरी।

फिल्म के अन्तिम भाग के शुरू होने के कुछ ही पहले सेर्गेई वाल्या के पास से हटकर गायब हो गया। बगल में खड़े हुए लोगों में कहीं भी कोई हरकत नहीं हुई। वाल्या यह देखने के लिए बड़ी उत्सुक थी कि वह कैसे यह काम करेगा। परदे के दाहिनी ओर के छोटे-से दरवाज़े पर अपनी निगाहें गड़ाये वह धीरे-धीरे प्रवेशद्वार की ओर बढ़ी। सेर्गेई इसी दरवाज़े में ही मंच तक पहुँच सकता था। फिल्म ख़त्म हुई और लोग शोर मचाते हुए प्रवेशद्वार की ओर बढ़े। वाल्या को सेर्गेई का कोई सुराग मिलने से पहले ही बत्तियाँ जल गयीं।

वह भीड़ के साथ ही थियेटर से बाहर आ गयी और द्वार के ठीक सामने वृक्षों के नीचे प्रतीक्षा करने लगी। अँधेरे पार्क में सर्दी भी थी और नमी भी। पेड़ों पर बची-खुची पत्तियाँ इस तरह हिल रही थीं मानो कराह रही हों। उस समय हॉल में से आख़िरी लोग निकल रहे थे। वाल्या तत्काल टिकट-चैकर के पास दौड़ी-दौड़ी आयी और झुककर ज़मीन पर कुछ ढूँढ़ने लगी।

"आपको चमड़े का कोई छोटा-सा पर्स तो नहीं मिला?"

"मुझे कैसे मिलता, बेटी? अभी-अभी तो लोग बाहर निकले हैं!" अधेड़ उम्र की टिकट-चैकर ने उत्तर दिया।

वाल्या बार-बार झुककर कीचड़ में उँगलियाँ घुसेड़ने लगी।

"यहीं कहीं होगा... मैंने बाहर निकलते ही अपने रूमाल निकाला और कुछ ही क़दम चली कि देखा तो मेरा पर्स गायब!"

वह औरत भी पर्स ढूँढ़ने में लग गयी।

इस बीच सेर्गेई मंच पर पहुँच चुका था-दरवाज़े से होकर नहीं बल्कि आर्केस्टा-पिट के रेलिंगों पर से चढ़कर। वह सारी शक्ति लगाकर झण्डा गिराने लगा। पर वह बड़ी मजबूती से सधा था। उसने उसे और ऊँचाई पर पकड़ा और अपना पूरा भार डालते हुए हवा में उछला। झण्डा नीचे आ गया और सेर्गेई आर्केस्ट्रा-पिट में गिरते-गिरते बचा।

हॉल के दरवाज़े बाहर पार्क में खुलते थे। सेर्गेई हॉल की मद्धिम रोशनी में मंच पर खड़ा-खड़ा बड़े आराम के साथ झण्डे को तह करता जा रहा था। आख़िर वह इतना

छोटा हो गया कि वह उसे अपनी क़मीज के नीचे खोंस सकता था।

पहरेदार प्रोजेक्शन-कक्ष का दरवाज़ा बन्द करके अँधेरे में से उस स्थान पर आया, जहाँ हॉल से रोशनी निकलकर बाहर पहुँच रही थी। टिकट बेचनेवाली को देखकर वह क्रोध से चिल्लाया :

“उधर की बत्ती क्यों जल रही है? किसी ने देख लिया, तो तुम्हारी क्या दशा होगी! उसे बन्द करो! हम अब ताला लगाने जा रहे हैं...”

वाल्या दौड़ी-दौड़ी उसके पास आयी और उसने उसका कोट पकड़ लिया।

“एक सेकेण्ड!” और इन्तज़ार कीजिये!” वह गिड़गिड़ायी। “मेरा पर्स खो गया है। बत्ती बुझ जाने पर तो हमें कुछ भी न दिखायी देगा... बस एक सेकेण्ड!” वह कहती गयी।

“लेकिन वह तुम्हें मिलेगी कहाँ!” पहरेदार ने कहा। वह कुछ पिघल गया और स्वयं भी आँखें घुमा-घुमाकर पर्स ढूँढ़ने लगा।

ठीक उसी क्षण आँखों तक टोपी खिसकाये एक तोंदियल छोकरा खाली थियेटर-हॉल से बाहर निकला। वह अपनी दुबली-पतली टाँगों पर हवा में उछला और मिमियाकर अँधेरे में विलीन हो गया।

वाल्या ने पाखण्डभरे स्वर में कहा :

“ओह! बड़े दुख की बात है!..”

उसे इतने ज़ोर से हँसने की इच्छा हुई कि उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया और अपनी हँसी दबाती हुई चलती बनी।

अध्याय 12

ओलेग अपनी माँ को सब कुछ समझा चुका था। अब उसके रास्ते की सारी बाधाएँ दूर हो गयीं। और तो और सारा परिवार उसके कामों में भाग लेने लगा। उसके सारे सम्बन्धी उसके सहायक हो गये और माँ उनकी अगुआई कर रही थी।

इस सोलह साल के लड़के के दिल में बुजुर्गों के अनुभव, पुस्तकों की सीख और अपने सौतेले पिता द्वारा सुनायी जानेवाली कथा-कहानियों के लाभकर अंश किस तरह घर कर गये यह कोई न जानता था। विशेष रूप से फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव का एक-एक शब्द उसके मस्तिष्क पर अंकित हो गया। और यह सब उन नये अनुभवों के साथ मिलकर एक हो गया, जो उसे अब अपने काम में मिल रहे थे। बेशक, उसे और उसके साथियों को पहले-पहल विफलताएँ भी मिलीं, पर साथ ही उसकी पहली योजनाएँ कामयाब भी हुईं। धीरे-धीरे ‘तरुण गार्ड’ के कार्यकलापों का पैमाना बढ़ता

गया और साथ ही साथ ओलेग का भी अपने साथियों पर प्रभाव बढ़ता गया और वह स्वयं भी इस तथ्य को अधिकाधिक अनुभव करने लगा।

वह इतना मिलनसार, उत्साही और निष्कपट था कि अपने साथियों पर रोब गाँठना क्या, उनके विचारों व अनुभवों तक को नज़रअन्दाज़ करना उसके स्वभाव के ही विरुद्ध था। किन्तु वह महसूस करता जा रहा था कि उनके कामों की सफलता काफ़ी हद तक उसकी दूरदर्शिता पर निर्भर है। वह बड़ा ही फुर्तीला, हँसमुख और साथ ही विश्वस्त, सतर्क और कठोर था। जिन बातों का सम्बन्ध अकेले उसी के साथ था, उनमें उसकी स्कूली बच्चे जैसी प्रवृत्ति बराबर झलका करती थी-उसे अकेले जाकर परचे चिपकाना अनाज के ढेर में आग लगाना या जर्मनों पर छिपकर हमला करना बहुत अच्छा लगाता था। पर वह अपने हर साथी तथा हर बात के लिए जिम्मेदार था और वह अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह समझता था। अतएव वह स्वयं को काबू में रखता था।

वह अपने से अधिक उम्र की एक लड़की से हिला-मिला था। वह बड़ी ही स्पष्टवादी, निर्भय, मितभाषी और रोमाण्टिक स्वभाव की लड़की थी। उसके काले-काले बाल छल्लों के रूप में उसके मजबूत, सुडौल कन्धों पर लहराते थे। उसकी बाँहे ख़ूबसूरत तथा साँवली थी। उसकी धनुषाकार भौहों और बड़ी-बड़ी भूरी आँखों में उत्तेजना तथा आवेग की झलक थी। नीना इवान्त्सोवा ओलेग की हर दृष्टि और हाव-भाव का अर्थ समझती थी और उसके सभी निर्देशों का बिना किसी हिचक के अक्षरशः पालन करती थी।

वे दोनों परचे तैयार करने, कोमसोमोल की सदस्यता के अस्थायी कार्ड बनाने अथवा नक्शों का अध्ययन करने में चुपचाप घण्टों बिता देते और जरा भी न ऊबते। पर जब उन्हें बातचीत का मौक़ा मिल जाता, तो वे आसमान में कल्पना की उड़ानें भरने लगते-मानव मस्तिष्क की सारी महान सृष्टियों की चर्चा करने से न चूकते। कभी-कभी तो वे इतने ख़ुश हो उठते कि हँसते-हँसते उनके पेटों में बल-पड़ जाते। ओलेग को हँसी बच्चों जैसी निर्बाध होती। हँसते समय वह प्रायः अपनी उँगलियों के पोर मला करता। और नीना की हँसी में लड़कियों की मृदुता एवं मधुरता होती, फिर सहसा उसमें स्त्रियों जैसी गूढ़ता और ऐसी रहस्यपूर्णता आ जाती मानो वह कोई राज उससे छिपा रही हो।

एक दिन ओलेग ने बहुत शर्माते-सकुचाते हुए नीना से कहा कि वह उसे एक कविता सुनाना चाहता है।

"तुम्हारी अपनी कविता है?" उसने साश्चर्य पूछा।

"तुम सुनो तो..."

यह कविता पढ़ने लगा। पहले तो उसकी जबान कुछ-कुछ लड़खड़ायी किन्तु कुछ पंक्तियों के बाद उसमें रवानी आ गयी।

> अरी सहेली प्यारी मेरी, गीत जुझारू तुम गाओ
> मत उदास हो, मत घबराओ, और न हिम्मत बिसराओ-
>
> बहुत जल्द ही अपने प्यारे
> वे उकाब-से वीर हमारे,
> आ जायेंगे यहाँ, द्वार सब खोलेंगे,
> तहखानों में बन्द अँधेरे डोलेंगे।
> वहाँ धूप में तब ये सब आँसू सूखें
> जो अब तेरी प्यारी पलकों पर चमकें,
> फिर स्वतंत्र हो, तुम आज़ादी पाओगी,
> मई दिवस की तरह रंग में आओगी,
> प्यारी, बदला लेने तब हम जायेंगे
> जुल्म किये जो उनका मजा चखायेंगे।

“मैंने अभी इसे अन्तिम रूप नहीं दिया है,” ओलेग लजाकर बोला। “अन्त में मैं यह लिखना चाहता था कि कैसे हम साथ-साथ सेना में भर्ती होते हैं.. भर्ती होगी तुम?”

“तुमने कविता मेरे लिए लिखी है? मेरे लिए लिखी है न?..” अपनी चमकती हुई आँखों से उसकी ओर देखकर वह बोली। “मैंने तुरन्त समझ लिया कि यह तुम्हारी ही कविता होगी। तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि तुम कविता लिखते हो?”

“मैं हिचकिचा रहा था,” उसने दाँत निकालते हुए कहा। नीना को कविता पसन्द आयी, यह जानकार वह बड़ा ख़ुश हो उठा। “मैं बहुत समय से कविता करता आ रहा हूँ, लेकिन अपनी कविताएँ किसी को नहीं दिखाता, खासकर वान्या को। वह तो सचमुच अच्छा लिखता है! मेरी कविता तो बस.. मुझे लगता है जैसे मेरी कविता में वृत्त ठीक नहीं रह पाता और अन्त्यानुप्रास मेरे लिए कठिन होता है।”

वस्तुतः हुआ यह कि संकट के समय में उसने जीवन के सबसे सुखद काल में प्रवेश किया।

छः नवम्बर के दिन, अर्थात अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति की रजत जयन्ती की पूर्ववेला में कोशेवोई के घर में ‘तरुण गार्ड’ के हेडक्वार्टर के सभी सदस्यों और सन्देशवाहिकाओं-वाल्या बोर्त्स और नीना तथा ओल्या इवान्त्सोवा-की बैठक हुई। ओलेग ने निश्चय किया कि यह दिन रादिक युर्किन को कोमसोमोल में भर्ती करके

मनाया जायेगा।

अब रादिक युर्किन वह छोटा-सा, शान्त विनम्र आँखोवाला बालक न था, जिसने जोरा अरुत्युन्यान्त्स से कभी कहा था : "मैं जल्दी सो जाने का आदी हूँ।" फ़ोमीन को फाँसी देने के बाद यह त्युलेनिन के दल का सदस्य बन गया और रातों में जर्मन लारियों पर होनेवाले आक्रमणों में हिस्सा लेने लगा। इस समय वह दरवाज़े के पास कुर्सी पर बैठा खिड़की में देख रहा था। उसे अपने पर पूरा विश्वास था। ओलेग ने आरम्भिक भाषण दिया, जिसके बाद त्युलेनिन ने रादिक के चरित्र पर प्रकाश डाला। रादिक उत्सुक हो उठा : उसके भाग्य का फैसला करनेवाले यह लोग कौन हैं। और वह, अपनी लम्बी-लम्बी बरौनियों के नीचे से खाने की बड़ी मेज के चारों ओर बैठे हेडक्वार्टर के सदस्यों की ओर देखने लगा। मेज ऐसी लगी थी, मानो कोई दावत हो रही हो, पर तभी दो सलोनी लड़कियाँ, जिनमें से एक सुनहरे बालोंवाली थी और दूसरी काले बालोंवाली, उसकी ओर देखकर ऐसे मुस्करायी कि रादिक असामान्य रूप से घबरा गया और उसने अपनी आँखें हटा लीं।

"क्या किसी को साथी रादिक युर्किन से कोई प्रश्न करना है?" ओलेग ने जानना चाहा।

"वह हमें अपने बारे में बताये," वान्या तुर्केनिच बोला।

रादिक युर्किन खड़ा हो गया और खनकदार आवाज़ में ऐसे बोलने लगा, मानो कक्षा में पाठ पढ़ रहा हो।

"मैं क्रास्नोदोन में 1928 में पैदा हुआ। मैं गोर्की स्कूल में पढ़ने लगा..." और इस वाक्य पर उसकी जीवनी समाप्त हो गयी। उसे लगा कि उसके जीवन में कोई खास बात नहीं हुई, फिर कुछ अविश्वास के साथ बोला : "जब से जर्मन आये हैं, मैं स्कूल नहीं गया..."

सब चुप्पी साधे बैठे रहे।

"तुमने कभी कोई सामाजिक कार्य किया है?" वान्या जेम्नुखोव ने पूछा।

"नहीं," रादिक ने गहरी साँस लेकर कहा।

"कोमसोमोल सदस्य के कर्त्तव्यों को जानते हो?" सिंग के फ्रेमवाले चश्मे में से मेज को ताकते हुए वान्या ने प्रश्न किया।

"कोम्सोमोल सदस्य का कर्त्तव्य है कि जर्मन फासिस्ट हमलावरों से तब तक लड़ता रहे जब तक उसमें से एक भी ज़िन्दा न रहे," रादिक ने दो-टूक जवाब दिया।

"मेरा ख़याल है कि लड़का राजनीति की बातें समझता है," तुर्केनिच ने कहा।

"मेरा प्रस्ताव है कि उसे सदस्य बना लिया जाये!" ल्यूबा बोली।

"बिलकुल ठीक!" हेडक्वार्टर के अन्य सदस्यों ने कहा।

“तो मैं इस प्रस्ताव पर वोट ले रहा हूँ! साथी रादिक युर्किन को कोमसोमोल का सदस्य बना लिया जाये,” स्वयं हाथ उठाते और एक-एक सदस्य की ओर देखकर दाँत निकालते हुए ओलेग ने कहा।

बाक़ी सभी लोगों ने भी हाथ उठाये।

“सर्वसम्मति से प-पास,” ओलेग बोला और कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। “जरा इधर आओ।”

रादिक का चेहरा पीला-सा पड़ गया। तुर्केनिच और ऊल्या ग्रोमोवा ने बड़ी गम्भीरता से उसकी ओर देखा और एक ओर हटकर उसे निकल जाने की जगह दे दी। वह मेज तक चला आया।

“रादिक!” ओलेग ने बड़ी गम्भीरता के साथ कहना शुरू किया। “‘तरुण गार्ड’ के हेडक्वार्टर के निर्देशानुसार मैं तुम्हें कोमसोमोल की सदस्यता का अस्थायी कार्ड देता हूँ। इसकी रक्षा करना अपनी इज़्ज़त की तरह। तुम अपने ही दल में चन्दा अदा करना। लाल सेना के लौटने पर कोमसोमोल की जिला समिति तुम्हें इस अस्थायी कार्ड के स्थान पर स्थायी कार्ड दे देगी...”

रादिक ने अपना सांवला हाथ बढ़ाकर कार्ड ले लिया। कार्ड उपयुक्त आकार का था और मोटे कागज का बनाया गया था। ऐसा कागज आम तौर से नक्शों और प्लानों के लिए काम में लाया जाता है। बाहर सिरे पर छोटे-बड़े टाइपों में छपा था : “जर्मन हमलावर मुर्दाबाद!” और कुछ ही नीचे लिखा था : “अखिल संघीय लेनिन तरुण कम्युनिस्ट लीग!” कुछ और नीचे मोटे टाइपों में छपा था : “कोमसोमोल की सदस्यता का अस्थायी कार्ड”, अन्दर बायीं ओर के पन्ने पर रादिक का नाम कुलनाम, पिता का नाम और उसके जन्म की तिथि अंकित थी। उसके नीचे भर्ती होने की तारीख लिखी थी : “छह नवम्बर 1942। क्रास्नोदोन नगर के ‘तरुण गार्ड’ कोमसोमोल संगठन द्वारा जारी किया गया। सेक्रेटरी : कशूक।” दाहिने पन्ने पर कुछ चौकोर खाने बने थे, जिनमें चन्दे का भुगतान दिखाया जाना था।

“मैं इसे अपने कोट के अन्दर सी लूँगा और तब यह हमेशा मेरे साथ रहेगा,” रादिक ने इतने धीरे-से कहा कि उसकी आवाज़ मुश्किल से ही सुनायी पड़ी। उसने कार्ड अपने कोट की भीतरी जेब में रख लिया।

“अब तुम जा सकते हो,” ओलेग बोला।

तत्पश्चात् सभी ने रादिक को बधाई दी और उससे हाथ मिलाये। रादिक युर्किन बाहर सादोवाया मार्ग पर चला आया। उस समय वर्षा नहीं हो रही थी, अपितु तेज़ और ठण्डी हवा चल रही थी। संध्या हो चुकी थी। उस रात को उसे अक्टूबर क्रान्ति की जयन्ती के उपलक्ष्य में एक ख़ुफ़िया कार्रवाई में तीन छोकरों के एक दल का नेतृत्व

करना था। उसके मुँह पर दृढ़ता तथा ख़ुशी का भाव था, क्योंकि वह जानता था कि उसकी जेब में कोमसोमोल की सदस्यता का कार्ड रखा है। जिला समिति की इमारत से होकर गुजरते समय, जिसमें फिलहाल कृषि कमाण्डाण्टुर का दफ़्तर था, उसने ज़ोर से सीटी बजायी, सिर्फ़ इसलिए कि जर्मनों को उसके अस्तित्व का पता चल जाये।

उस रात जयन्ती के सम्मान में होनेवाले महत्वपूर्ण कार्य में अकेले रादिक को ही नहीं बल्कि क़रीब-क़रीब सारे संगठन को भाग लेना था।

"भूलना मत। काम पूरा होते ही सीधे मेरे यहाँ चले आना," ओलेग ने कहा। "पेर्वोमाइका के साथियों को छोड़कर!"

पेर्वोमाइका के साथियों ने उस रात इवानीखिना के घर में एक समारोह-दावत की योजना बनायी थी।

ओलेग, तुर्केनिच, वान्या जेम्नुखोव और सन्देशवाहिकाएँ-नीना और ओल्या ही कमरे में रह गयीं। सहसा ओलेग उत्तेजित हो उठा।

"ल... लड़कियों, उठो, च...चलो...व...वक्त हो गया," उसने कहा। वह जाकर निकोलाय निकोलायेविच के कमरे का दरवाज़ा खटखटाने लगा : "मामी मरीना! व. ..वक्त हो गया..."

मरीना रूमाल अपने सिर से लपेटती हुई कमरे में बाहर निकल आयी। वह कोट पहने थी। पीछे-पीछे मामा कोल्या भी निकल आया। नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना भी अपने कमरे से निकल आयीं।

ओल्या और नीना ने अपने-अपने कोट पहने और मरीना के साथ घर से बाहर निकल गयीं। उन्हें पास-पड़ोस की सड़कों की निगरानी करनी थी।

उसका काम खतरे से खाली न था, क्योंकि अभी तक लोग अपने-अपने घरों में सोये न थे और रास्तों पर इक्के-दुक्के राहगीर नज़र आ रहे थे। किन्तु मौक़े को हाथ से जाने देना भी तो बेवकूफी होती न?!

अँधेरा बढ़ रहा था। नानी वेरा ने खिड़की पर काला परदा डाला और दिया जला दिया। ओलेग घर से बाहर निकल आया। उसे देखकर मरीना दीवार के पास से हट आयी।

"आस-पास कोई नहीं," वह फुसफुसायी।

मामा कोल्या ने झरोखे में से सिर निकाला, अपने इर्द-गिर्द निगाह डाली और ओलेग को तार का सिरा थमा दिया। ओलेग ने उसे लग्गी के साथ जोड़ा, फिर लग्गी को हुक के सहारे खंभे के पास ही बिजली के बड़े तार के साथ अटका दिया। लग्गी बिलकुल खंभे के साथ जुड़ी थी। अँधेरे में वह नज़र नहीं आती थी।

ओलेग, तुर्केनिच और वान्या जेम्नुखोव मामा कोल्या के कमरे में मेज के

इर्द-गिर्द बैठे गये। उनकी पेंसिलें तैयार थी। नानी वेरा तनकर बैठ गयी। उसके भावों की थाह पाना उसम्भव था। कुछ आगे झुकी हुई येलेना निकोलायेव्ना भी भोलेपन का भाव लिये, किन्तु कुछ डरी हुई, नानी वेरा के ही पास बिस्तर पर बैठी थी। सब की आँखें वायरलैस-सेट पर लगी थीं।

मामा कोल्या की कुशल और फुर्तीली उँगलियाँ ही शीघ्रता से और बिना आवाज़ किये अपेक्षित मीटर ढूँढ़ सकती थीं। रेडियो से तालियों की गड़गड़ाहट सुनायी दी। वायुमण्डल की गड़बड़ी के कारण वक्ता की आवाज़ मुश्किल से ही सुनायी पड़ रही थी :

"साथियो, आज हम अपने देश में सोवियत क्रान्ति की विजय की 25वीं जयन्ती मना रहे हैं। हमारे देश में सोवियत प्रणाली को स्थापित हुए पच्चीस वर्ष हो चुके हैं। अब हम सोवियत शासन के 26वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं..."

तुर्केनिच बाह्यतः बड़ा गम्भीर और चुप लग रहा था। और वान्या कागज पर इस क़दर झुका हुआ था कि उसका चश्मा क़रीब-क़रीब उसे छू रहा था। वे दोनों ही उक्त समाचार घसीटे जा रहे थे। यह काम बहुत कठिन न था, क्योंकि स्तालिन धीरे-धीरे बोल रहा था। कभी-कभी वह चुप हो जाता और गिलास में पानी उँडेले जाने और गिलास नीचे रखे जाने की आवाज़ सुनायी पड़ने लगती। कोई चीज़ लिखने से छूट न जाये इसके लिए पहले-पहल तो उन्हें पूरी सावधानी बरतनी पड़ी, किन्तु बाद में वे भाषण की गति के अभ्यस्त हो गये। उन्हें इस बात का आभास हुआ कि वे बड़ी ही असाधारण घटना के साक्षी हैं।

यदि आपने टिमटिमाते दिये की रोशनी में किसी ऐसे कमरे में, जहाँ गर्मी की कोई व्यवस्था न हो, अथवा किसी खाई-खन्दक में-जिसके बाहर शरद के बर्फीले तूफ़ान गरजते हों और सर्वत्र लोगों पर अत्याचार किया जाता हो, उन्हें अपमानित किया जाता हो-अपने देश की स्वतंत्र आवाज़ गुप्त रेडियो-सेट से न सुनी हो, तो आप उन लोगों की भावनाएँ नहीं समझ सकते, जो मास्को से प्रसारित होनेवाले इस भाषण को सुन रहे थे।

"...यह नरभक्षी हिटलर कहता है 'हम रूस को इतना बरबाद कर देंगे कि वह फिर उठ भी न सकेगा'। वैसे उसकी बात स्पष्ट है, किन्तु है मूर्खतापूर्ण।"

इसके तुरन्त ही बाद उन्हें उस बड़े हॉल से आती हुई हँसी की जो गूँज सुनायी पड़ी, उसने इनके चेहरों पर मुस्कराहट बिखेर दी। नानी वेरा को तो अपने मुँह पर हाथ तक रख लेना पड़ा।

"जर्मनी को बरबाद करने का हमारा कोई उद्देश्य नहीं, क्योंकि जर्मनी और रूस को बरबाद करना असम्भव है। किन्तु हिटलरी शासन को नष्ट किया जा सकता है

और अवश्य नष्ट किया जाना चाहिए... सचमुच हमारा पहला फर्ज यह है कि... हम हिटलरी शासन और उसके प्रेरकों को नष्ट कर डालें।"

हॉल में तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी। इससे इन लोगों की इच्छा हुई कि वे भी शोर मचा-मचाकर अपनी अनुभूतियाँ प्रकट करें, किन्तु वे ऐसा नहीं कर सकते थे। सोलह साल के लड़के से लेकर एक बूढ़ी औरत तक के दिलों में देशभक्ति की जो भावनाएँ अंगड़ाइयाँ ले रही थीं, वे अब तथ्यों और आँकड़ों की सीधी-सरल, स्पष्ट भाषा का रूप धारण करने लगीं। बेशक यह इन्हीं सीधे-सादे लोगों की आवाज़ थी, जिन पर अकथनीय अत्याचार किये गये थे और जिन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था। यही आवाज़ सारी दुनिया से कह रही थी :

"हिटलर के बदमाश... हमारे देश के अधिकृत प्रदेशों की नागरिक आबादी पर, हमारे स्त्री-पुरुषों, बच्चों, बूढ़ों हमारे भाई-बहनों पर... अत्याचार कर रहे हैं, उनका वध कर रहे हैं। सम्मान की भावना से च्युत और पशुओं के स्तर तक गिरे हुए कमीने लोग ही निरीह और निहत्थे लोगों पर इतना वहशियाना अत्याचार कर सकते हैं... हम इन अत्याचारों के अपराधियों, 'यूरोप में नयी व्यवस्था' के निर्माताओं, सभी नये बने गवर्नर-जनरलों, मामूली गवर्नरों, कमाण्डेण्टों और उप-कमाण्डेण्टों को जानते हैं। उनके नाम हजारों पीड़ितों की जबान पर है। इन कसाइयों को यह मालूम रहे कि वे अपने अपराधों की जिम्मेदारियों से मुक्ति नहीं पा सकते और न ही पीड़ित जनगण के प्रतिशोध से बच सकते हैं..."

इन शब्दों में बोल रहा था उनका प्रतिशोध और उनकी आशा।

ये शब्द विराट संसार की उन्मुक्त साँस, उनके देश की सिहरन और मास्को के हृदय की धड़कन के समान थे। वे उनके कमरे में प्रवेश करके उनके दिलों में ख़ुशी का संचार कर रहे थे और उन्हें यह याद दिला रहे थे कि वे भी अपने पददलित नगर के बाहरवाले संसार का ही एक अंग हैं...

भाषण का प्रत्येक टोस्ट तालियों की गड़गड़ाहट में डूब गया।

"हमारे छापामार ज़िन्दाबाद!.."

"सुन रहे हो?" ओलेग बोला। उसकी आँखें ख़ुशी से चमक रही थीं।

मामा कोल्या ने रेडियो बन्द कर दिया, और कमरे में भयानक सन्नाटा छा गया। एक ही क्षण में हवा में सारे स्वर विलीन हो गये... हाँ, झरोखे में से हल्की-हल्की-सी सरसराहट ज़रूर सुनायी पड़ रही थी। बाहर शरद की वायु सनसना रही थी। अब वे उस अर्ध प्रकाशित कमरे में अकेले रह गये। उन्हें और उस संसार को, जिस की आवाज़ उन्हें अभी-अभी सुनायी पड़ी, यातना की सैकड़ों मीलों की दूरी अलग किये हुए थी।

अध्याय 13

रात इतनी अँधेरी थी कि हाथ को हाथ न सूझ रहा था। सड़कों और चौराहों पर ठण्डी और नम हवा सरसरा रही थी। वह छतों पर हहराती, चिमनियों में कराहती, तारों और खम्भों पर घरघराती हुई चल रही थी। अँधेरे में कीचड़भरे रास्तों से होकर सीधे गेस्टहाउस पहुँचने के लिए आदमी को नगर की उतनी ही जानकारी होनी ज़रूरी थी, जितनी कि उन्हें थी...

सामान्यतः यहाँ वोरोशीलोवग्राद जानेवाले मार्ग और गोर्की क्लब के बीच की सड़क पर हर रात ड्यूटीवाला पुलिसमैन गश्त लगाया करता था। किन्तु उसने शायद सर्दी और कीचड़ से बचने के लिए कहीं सिर छिपा लिया था।

गेटहाउस की इमारत पत्थर की बनी थी जो किसी दुर्ग के बुर्ज जैसी ज़्यादा लगती थी। नीचे कार्यालय और एक फाटक था, जहाँ से कोयले की ख़ान को रास्ता जाता था। बुर्ज के दाहिनी और बायीं ओर पत्थर की एक ऊँची दीवार थी।

चौड़े कन्धोंवाला सेर्गेई लेवाशोव और आग जैसी हल्की, मजबूत टाँगोंवाली ल्यूबा उस कार्य के योग्य थे, जो आज उन्हें सम्पन्न करना था। सेर्गेई ने अपना घुटना और हाथ ल्यूबा की सेवा में पेश किये। ल्यूबा ने सेर्गेई की ओर देखे बिना उसके हाथ थाम लिये और धीरे-धीरे हँस पड़ी। वह सेर्गेई के घुटने पर अपना पैर रखकर एक ही क्षण में उसके कन्धों पर खड़ी हो गयी और बढ़कर दीवार का सिरा पकड़ लिया। सेर्गेई उसके टखनों को मजबूती से पकड़े रहा, ताकि वह गिर न पड़े। हवा में उसका स्कर्ट ऐसे फड़क रहा था, मानो कोई झण्डा लहरा रहा हो। वह दीवार पर लेट गयी। बेशक उसके हाथों में इतनी शक्ति तो न थी कि वह सेर्गेई को खींचकर दीवार के सिरे तक ले जाती, हाँ, वह दीवार से कसकर चिपकी हुई थी। सेर्गेई ने उसकी कमर पकड़ी और दीवार के सहारे ऊपर चढ़ गया।

मोटी दीवार का सिरा ढलवाँ और गीला था। वे किसी भी क्षण फिसलकर नीचे गिर सकते थे। किन्तु सेर्गेई बुर्ज के सहारे अपना माथा और हाथ टिकाये मजबूती से खड़ा हो गया। लयूबा उसकी पीठ पर चढ़कर उसके कन्धों पर जम गयी। बुर्ज के कंगूरे उसकी छाती तक आ रहे थे। बुर्ज के सिरे पर चढ़ जाना अब उसके लिए मुश्किल न था। हवा उसकी पोशाक और जैकेट को जैसे फाड़े दे रही थी और उसे लग रहा था कि किसी भी क्षण वह बुर्ज से नीचे गिर पड़ेगी। किन्तु सबसे कठिन चढ़ाई पूरी हो चुकी थी...

उसने अपनी बगल में छिपाकर रखा हुआ कपड़े का एक बण्डल निकाला,

उसकी डोरी टटोली और झण्डा ध्वजदण्ड से बाँध दिया। हवा कपड़े को इतने ज़ोर से फहराने लगी कि ल्यूबा का दिल धक धक कर उठा। उसने एक और झण्डा खींचा और उसे बुर्ज के अन्दर ध्वजदंड के नीचे बाँध दिया। फिर वह झुकी और पहले की तरह सेर्गेई के पीठ का सहारा लेकर दीवार पर उतर आयी। शीघ्र ही वह दीवार से पैर लटकाकर बैठ गयी। उसे नीचे कीचड़ में कूदने में संकोच हो रहा था। इसी बची सेर्गेई ज़मीन पर कूद पड़ा और दोनों हाथ बढ़ाकर उसे धीमे-से पुकारने लगा। ल्यूबा का दिल धक-से रह गया। वह अपने हाथ बढ़ाकर और आँखें मींचकर कूद पड़ी। वह उसकी बाँहों ही में गिरी। और कुछ क्षणों तक सेर्गेई उसे अपनी बाँहों में पकड़े रहा। किन्तु उसने अपने को छुड़ाया, ज़मीन पर उतरी और उसके चेहरे पर साँस छोड़ती हुई उत्तेजित होकर फुसफुसाने लगी :

"सेर्गेई! तो अपना गिटार साथ ले चलेंगे?"

"ठीक है! मैं कपड़े भी बदलूँगा। तुमने मुझ पर अपने जूते रख-रखकर मेरा तो तमाशा बना दिया," वह ख़ुश होकर बोल उठा।

"नहीं, कपड़े बदलने की कोई ज़रूरत नहीं। हम जैसे भी हैं, वे हमें उसी हालत में स्वीकार कर लेंगे!" वह खुलकर मुस्करा दी।

वाल्या और सेर्गेई त्युलेनिन को नगर के केन्द्रीय भाग में काम करना था, जो सबसे खतरनाक क्षेत्र था-कार्यकारिणी समिति के भवन और श्रम-केन्द्र में जर्मन सन्तरी पहरा दे रहे थे। पुलिस का एक सिपाही प्रशासन-कार्यालय के पास गश्त लगा रहा था। पुलिस का हेडक्वार्टर पहाड़ी के ऐन नीचे था। किन्तु अँधेरा और ठण्डी हवा दोनों ही उनकी सहायता कर रहे थे। सेर्गेई ने 'पगले रईस' के वीरान घर पर झण्डा फहराने की सोची। वाल्या घर के उन हिस्से का चक्कर लगा रहा रही थी, जो कार्यकारिणी समिति के सामने पड़ता था। सेर्गेई दरबे को जानेवाली जीर्ण-शीर्ण सीढ़ी पर चढ़ गया। सारा काम कुल पन्द्रह मिनट में पूरा हो गया।

वाल्या को सर्दी लग रही थी। उसे ख़ुशी भी थी कि सब कुछ इतनी जल्दी हो गया। किन्तु सेर्गेई हँसते हुए बोला :

"मेरे पास एक फालतू झण्डा है। चलो, प्रशासन-कार्यालय पर फहरा दें!"

"वहाँ पुलिस का सिपाही जो है।"

"अग्नि-सोपान भी तो है!"

वस्तुतः वह सीढ़ी इमारत के पिछवाड़े थी, जो मुख्य द्वार से दिखायी नहीं पड़ती थी।

"तो चलो चलें," वह बोली।

चारों और घुप अँधेरा था। वे दोनों उतरकर रेलवे लाइन पर आ गये और बहुत

समय तक पटरियों के किनारे-किनारे चलते रहे। वाल्या ने सोचा कि वे वेर्ख्नेदुवान्नाया की तरफ़ जा रहे होंगे; किन्तु वह गलती पर थी। सेर्गेई अँधेरे में बिल्ली की तरह देख सकता था।

"अब पहुँच गये," वह बोला, "बस मेरे पीछे-पीछे चली आओ, नहीं तो तुम सीधे पुलिस ट्रेनिंग स्कूल में पहुँच जाओगी..."

पार्क में हहराती हवा पेड़ों से टकरा रही थी और नंगी-नंगी शाखाएँ एक-दूसरे से सटकर उन दोनों पर पानी की ठण्डी बूँदें बरसा रही थीं। सेर्गेई उसे एक के बाद एक कई वाटिकाओं में से ले गया। स्कूल की छत की खड़खड़ से वाल्या को पता चल गया कि उन्हें दूर नहीं जाना है।

सेर्गेई लोहे की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। वह ऊपर चढ़ता जा रहा था और वाल्या उसकी आहट सुन रही थी। आहट बन्द भी हुई, लेकिन सेर्गेई लौट नहीं रहा था.. . वाल्या अग्नि-सोपान के नीचे बिलकुल अकेली खड़ी रही... उफ, कितनी भयानक थी यह रात! पत्रहीन शाखाएँ करुण स्वर में कराह रही थीं। वाल्या, उसकी माँ और ल्यूस्या इस अँधेरी और भयानक दुनिया में कितनी निरीह और निर्बल लग रही थीं! और उसका पिता? कौन जाने, इस समय वह कहीं निराश्रय भटक रहा हो! अन्धों की तरह!.. वाल्या की आँखों के सामने दोनेत्स स्तेपी का अनन्त विस्तार कौंध गया-सारी खानें उड़ा दी गयी थीं, छोटे-छोटे नगर और गाँव भीगे-भीगे थे... सहसा वाल्या को लगा कि सेर्गेई उस खड़खड़ाती हुई छत से कभी न उतरेगा। उसकी हिम्मत जैसे उसका साथ छोड़ने लगी। किन्तु तभी से जीना हिलता-डुलता-सा लगा। फलतः तुरन्त सेर्गेई के चेहरे पर उसके स्वाभाविक दृढ़ता तथा स्वच्छन्छता के भाव झलक उठे।

"तुम यहाँ हो न?" वह अँधेरे में मुस्कराया।

वाल्या को लगा जैसे सेर्गेई ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया है। उसने उसका हाथ थाम लिया। सेर्गेई का हाथ बर्फ जैसा ठण्डा था। यह दुबला-पतला लड़का घण्टों अपने फटे-पुराने जूतों में घूमता था। जूतों में शायद पानी भर गया होगा। फिर उसकी बटनहीन पुरानी जैकेट भी उसे कम कष्ट न पहुँचा रही थी। वाल्या ने उसका चेहरा अपने हाथों में ले लिया। चेहरा भी बर्फ की तरह ठण्डा हो गया था।

"तुम तो बिलकुल जम गये हो," वह बोली।

वे दोनों कई क्षणों तक जड़वत खड़े रहे। उनके सिरों के ऊपर नंगी शाखाएँ एक-दूसरे को झकझोर रही थीं। आख़िर सेर्गेई ने फुसफुसाकर कहा :

"चलो, अब चक्कर काटकर नहीं, बाड़े में से निकलकर ही चलेंगे..."

वाल्या ने उसके चेहरे पर से अपने हाथ हटा लिये।

वे पड़ोस के मकान से होकर ओलेग के घर पहुँच गये। सहसा सेर्गेई ने वाल्या

का हाथ पकड़ा और दोनों दीवार से सट गये। वाल्या की समझ में कुछ नहीं आया। उसने अपना कान सेर्गेई के होंठों के पास कर दिया।

"दो व्यक्ति इस ओर आ रहे थे। उन्होंने हमारी आहट सुन ली है और रुक गये हैं," वह फुसफुसाया।

"तुम्हारा भ्रम होगा!"

"नहीं, वे अब भी वहीं हैं..."

"तो चलो पीछे अहाते की तरफ़ चलें!"

जैसे ही वे दोनों मकान की बगल से होकर गुजरे, सेर्गेई ने उसे फिर रोक लिया-दूसरे दोनों व्यक्ति भी मकान की दूसरी ओर ठीक यही कर रहे थे।

"तुम्हें भ्रम हो रहा है..."

"नहीं, वे लोग वहीं हैं।"

कोशेवोई के घर का दरवाज़ा खुला, कोई बाहर निकला और उन व्यक्तियों से टकरा गया, जिनसे सेर्गेई और वाल्या छिपना चाहते थे।

"ल्यूबा? तुम अन्दर क्यों नहीं आती?" येलेना निकोलोयेव्ना की आवाज़ सुनायी पड़ी।

"श-श-श-श!"

"दोस्त हैं!" वाल्या को अपने साथ खींचते हुए सेर्गेई बोला।

उन्होंने अँधेरे में ल्यूबा की हँसी सुनी। उसके साथ ही हाथों में गिटार लिये हुए लेवाशोव भी था। अब चारों व्यक्ति हँसते-हँसते हाथों में हाथ डाले कोशेवोई के रसोईघर में पहुँच गये। सभी इतने भीगे, कीचड़ में सने और प्रसन्न थे कि नानी वेरा फूलदार आस्तीनों से ढँकी हुई अपनी लम्बी बाँहें उठाती हुई चिल्ला पड़ी :

"हे भगवान! तुम सब थे कहाँ?"

ठण्डे कमरे में, टिमटिमाते दिये की मद्धिम रोशनी में उस दिन की पार्टी में इन लोगों को जितना सुख मिला था, उतना ज़िन्दगी में पहले कभी न मिला था।

किस प्रकार बारहों लोग एक ही सोफे पर सटकर बैठ गये, यह सचमुच बड़ी असाधारण बात थी। वे बारी-बारी से भाषण को पढ़कर सुना रहे थे। उनके चेहरों पर वही भाव झलक रहा था, जिसका अनुभव उनमे से कुछ लोगों को उसी दिन रेडियो के पास बैठे-बैठे हुआ था, और बाक़ी लोगों को रात में कीचड़भरी गालियों को पार करते समय हुआ था। उनके चेहरों पर प्रेमानुराग का पुट था। उनके हृदय में असाधारण साम्य की भावना अंगड़ाइयाँ लेने लगी, जो तभी जन्म ले सकती है जब युवक-युवतियाँ किसी महान मानवीय विचार के सम्पर्क में आते हैं, जो उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। उनके चेहरों पर मैत्री, यौवन

और भविष्य में पूर्ण विश्वास की भावना इतनी अधिक साकार हो उठी कि उनकी संगत में स्वयं येलेना निकोलायेवना तक जवान और ख़ुश दिखने लगी...सिर्फ़ नानी वेरा ही बादामी हाथ पर अपना चेहरा साधे भये और दया की भावना के साथ अपनी उम्र की बुलन्दी से इन युवक-युवतियों की निहार रही थी।

भाषण पढ़कर सुनाने पर वे सोच-विचार में डूब गये। नानी वेरा के चेरहे पर चतुराई का भाव दौड़ गया।

"जरा अपनी तरफ़ देखो!" वह बोली। "ऐसे अद्भुत समारोह के दिन भी तुम लोग यों गुम-सुम कैसे बैठे रह सकते हो? जरा मेज की तरफ़ देखो। यहाँ रखी हुई शराब केवल सजावट के लिए नहीं है, वह पीने के लिए है।"

"अरे नानी! अगर दुनिया में सबसे अच्छा कोई है, तो वह तुम हो...चलो मेज पर टूट पड़ें!.." ओलेग चिल्लाकर बोला।

इस समय ज़रूरत इस बात की थी कि लोग बहुत शोर न मचायें। जब कभी कोई तेज आवाज़ में बोलता तो सब लोग एक साथ ही 'हुश' कहने लगते और इसमें उन्हें बड़ा मजा आता। उन्होंने बारी-बारी से बाहर की निगरानी रखने का निश्चय किया और जो लड़की या लड़का अपने बगलगीर के साथ ज़रूरत से ज़्यादा तकल्लुफ से बातें करने या बहुत चहकने लगता, उसे डूयूटी पर भेजने में उन्हें बड़ा मजा आ रहा था।

सुनहरे बालोंवाला स्त्योपा सफोनोव अपनी सामान्य स्थिति में किसी भी विषय पर बातें कर सकता था। किन्तु जब उसे शराब की चुस्कियाँ लेने का मौक़ा मिल जाता, तो फिर उसके लिए बातचीत का एक ही विषय रह जाता। उसकी चित्तीदार चिपटी नाक पर पसीने की बूँदें चुहचुहा आयीं और वह अपने पास बैठी हुई नीना इवान्त्सोवा को फ़्लैमिंगों पक्षी के बारे में बताने लगा। उसे तुरन्त चुप कराया गया और पहरे की ड्यूटी पर भेज दिया गया। वह ठीक उस समय लौटा, जब मेज को एक ओर हटाया जा रहा था और सेर्गेई लेवाशोव अपना गिटार संभालनेवाला था।

सेर्गेई ने उसी मस्त ढंग से गिटार बजाया, जो रूसी वादकों में विशेष रूप से प्रचलित है। उसकी मुख-मुद्रा को देखकर ऐसा लग रहा था कि नाचनेवालों, दर्शकों और बाजे से उसका कोई सरोकार नहीं है। दरअसल उसकी निगाह किसी खास चीज़ पर टिक नहीं पा रही थी, लेकिन उसकी उँगलियाँ ऐसी धुन की रचना कर रही थी कि बरबस लोगों का मन नाचने के लिए मचल उठा।

सेर्गेई 'बोस्टन' नामक विदेशी नाच की धुन बजाने लगा। स्त्योपा नीना की ओर लपका और वे दोनों नाचने लगे।

अभिनेत्री ल्यूबा यह विदेशी नाच ज़रूर सबसे बढ़िया नाची। पर पुरुषों में सबसे

अच्छा नर्तक साबित हुआ वान्या तुर्केनिच। लम्बा, सुडौल और शिष्ट! वह था असली अफ़सर। पहले ल्यूबा तुर्केनिच के साथ नाची, फिर ओलेग के साथ, जो स्कूल में सर्वोत्तम नर्तकों में से एक समझा जाता था। स्त्योपा सफोनोव नीना को संभाले रहा। नीना बिलकुल चुप थी-बुत जैसी। स्त्योपा उसके साथ नाचता रहा और उसे पूरे निवरण सहित नर और मादा फ़्लैमिंगों के परों में फर्क बताता रहा। उसने यह भी बताया कि मादा फ़्लैमिंगों कितने अण्डे देती है।

सहसा नीना का चेहरा लाल और विकृत हो उठा। वह बोली :

"स्त्योपा, तुम्हारे साथ नाचना भी एक मुसीबत है। एक तो तुम नाटे हो, मेरे पैर कुचलते हो। और तो और अपनी बाहियात बातें भी बन्द नहीं करते।"

वह अपने को छुड़ाकर भाग खड़ी हुई।

स्त्योपा वाल्या की ओर बढ़ा कि वह तुर्केनिच के साथ नाचने लगी। फिर उसने ओल्गा इवान्त्सोवा को पकड़ लिया। वह शान्त और गम्भीर स्वभाव की लड़की थी और अपनी बहन से अधिक गुप-चुप। अतः स्त्योपा से बेधड़क फ़्लैमिंगों की विचित्र आदतों के बारे में समझा सकता था।

किन्तु यह न भूला कि उसे किसने खिझाया है। अतएव उसकी आँखें नीना को ढूँढ़ने लगीं। वह ओलेग के साथ नाच रही थी और ओलेग पूरे विश्वास और धैर्य के साथ उसके गठीले बदल को इधर-उधर घुमा रहा था। नीना के होंठों पर मुस्कान खेल रही थी, आँखों में ख़ुशी की चमक आ गयी। वह बेहद आकर्षक लग रही थी।

नानी वेरा अधिक बर्दाश्त न कर सकी और चिल्लाकर बोली :

"यह कैसा नाच है? इन्हें विदेशी नाच ही सूझते हैं! सेर्गेई, 'गोपाक'* शुरू करो, 'गोपाक'!"

सेर्गेई ने तुरन्त 'गोपाक' बजाना शुरू कर दिया। ओलेग ने दो ही छलाँगों में कमरे को पारकर झट से नानी की कमर पकड़ ली। नानी के चेहरे पर घबराहट का कोई चिह्न न दिखायी दिया। वह बड़ी फुर्ती से उसके साथ नाचने लगी। पता चला कि नानी भी एक अच्छी नर्तकी थी। उसके नृत्य-कौशल का परिचय उसके पैरों की अपेक्षा उसके हाथों और चेहरे की भंगिमा से अधिक मिल रहा था....

नाच-गाना ही एक ऐसी चीज़ है, जिससे लोक-चरित्र का परिचय मिलता है। ओलेग की भौहों के काँपते हुए सिरों पर एक शरारत की चमक कौंध गयी। उसकी उक्राइनी क़मीज के कॉलर के बटन खुले थे, उसके माथे पर पसीने की बूँदें छलछला आयीं, उसका बड़ा सिर और कन्धे सन्तुलित और निश्चेष्ट-से हो गये। वह इतनी

---

* एक उक्राइनी नृत्य है।-सं.

फुर्ती और उत्साह से 'गोपाक' नाच में चौकड़ियाँ भर रहा था कि सबको स्पष्ट हो गया- यह जन्मजात उक्राइनी ही था।

काली आँखों और बर्फ़ जैसे सफ़ेद दाँतोंवाली मरीना से रहा नहीं जा सका : वह पैर पटकती हुई तथा हाथ झटकारती हुई ओलेग के इर्द-गिर्द तेजी से नाचने लगी। पर तभी मामा कोल्या ने उसकी कमर पकड़ी। ओलेग ने फिर नानी की कमर में हाथ डाला और दोनों जोड़ों का नाच जारी रहा।

सहसा नानी वेरा सोफे पर गिर पड़ी और रूमाल से अपने लाल चेहरे पर हवा करती हुई चिल्लाकर बोली : "ओह! इसके लिए मेरी पुरानी हड्डियाँ बेकार हैं।"

सब लोग तालियाँ बजाने लगे। उन्होंने नाचना बन्द कर दिया। किन्तु लेवाशोव, अपने आस-पास की दुनिया से बेखबर, लगातार 'गोपाक' बजाय जा रहा था। सहसा उसकी हथेली ने तारों को छूकर उनकी झनझनाहट बन्द कर दी।

"उक्राइन ने बाजी मार ही ली!" ल्यूबा चिल्लायी। "तो सेर्गेई, अब एक हमारी धुन भी हो जाय।" सेर्गेई ने तारों पर हाथ फेरा ही था कि ल्यूबा रूसी नाच नाचने लगी। उसकी एड़ियाँ इतनी ताल-लय के साथ फर्श पर बज रही थीं कि सबकी नज़रें उसके पैरों पर टिकी की टिकी रह गयी। उसका सिर गर्व से तना था। वह नाचती हुई सेर्गेई त्युलेनिन के पास आ गयी और उसको जगह देती हुई पीछे हट गयी। बाजा बजाते अथवा नाचते समय रूसी कलाकारों के चेहरे पर तटस्थता का जो भाव आता है, ठीक वही भाव चेहरे पर लाते हुए सेर्गेई ल्यूबा के सामने आया। उसके फटे-पुराने जूते फर्श पर पटपटाने लगे। उसने कमरे का एक चक्कर लगाया, ल्यूबा के पास वापस आया और एड़ियाँ पटपटाते हुए हट गया। ल्यूबा ने अपना रूमाल निकाला और उसकी तरफ़ बढ़ी। ऐसा लगा मानो वह हवा में उड़ रही हो। उसकी एड़ियाँ पटपटायीं और उसने सारे कमरे का गोल-गोल चक्कर लगा डाला। सेर्गेई उसके पीछे हो लिया। उसके पैरों की गति देखते ही बनती थी।

ल्यूबा ने गिटार की लय के साथ अपना थिरकना भी तेज कर दिया और सेर्गेई के सामने आने के लिए एक पूरा चक्कर लगा डाला। सेर्गेई इतनी उत्तेजना और उन्माद के साथ पैर पटपटा रहा था कि जूते से चिपके कीचड़ के टुकड़े तक सभी दिशाओं में उड़ने लगे।

उसके नृत्य की विशेषता थी उसका ताल-लय सम्बन्धी ज्ञान और दिलेरी-वह दिलेरी, जिसे वह छिपाये रखता था। और ल्यूबा? वह तो अपने मजबूत और सुघड़ पैरों को इस तरह पटपटा रही थी कि पूछो मत। उसका चेहरा अधिकाधिक लाल होता जा रहा था, उसकी सुनहरी घुँघराली लटें हिलती जा रही थीं। सबकी निगाहों का अर्थ स्पष्ट था : "रंग जमा दिया हमारी ल्यूबा ने! रंग जमा दिया हमारी अभिनेत्री ने!"

अकेला सेर्गेई लेवाशोव ही, जो ल्यूबा को प्यार करता था, तटस्थ मुद्रा में बैठा था। उसकी मजबूत, काँपती उँगलियाँ बराबर गिटार के तारों पर दौड़ रही थी।

सेर्गेई ने निराशा में भरकर हाथ झटकारा, मानो अपनी टोपी फर्श पर फेंक रहा हो और ल्यूबा की ओर बढ़ा। उसने हथेलियाँ घुटनों और जूतों के तलों पर बराबर ताल-लय के साथ पटपटायी। वह ल्यूबा को दर्शकों के बीचोंबीच ले गया और अपनी एड़ियों की अंतिम पटापट के साथ दोनों रुक गये। सभी जी भरकर हँसने और तालियाँ बाजने लगे। तब सहसा ल्यूबा ने करुण आवाज़ में कहा :

"यह था हमारा रूसी नृत्य..."

इसके बाद वह अपना छोटा-सा सफ़ेद हाथ सेर्गेई लेवाशोव के कन्धे पर रखकर उसके पास बैठ गयी और पार्टी के अन्त तक उठी नहीं।

उसी दिन ख़ुफ़िया जिला पार्टी समिति की आज्ञा पाकर 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर ने मोर्चे पर लड़नेवाले लाल सैनिकों के कुछ परिवारों को आर्थिक सहायता दी।

'तरुण गार्ड' की निधि चन्दों से उतनी नहीं जमा होती थी, जितनी सिगरेटों, दियासलाइयों, कपड़ों तथा अन्य बहुत-सी चीज़ों और खासकर स्प्रिट की बिक्री से। ये सभी चीज़ें 'तरुण गार्ड' के सदस्य जर्मन लारियों में से चुरा लाते थे।

वोलोद्या ओस्मूखिन दोपहर के समय अपनी चाची लित्वीनोवा से मिलने आया और उसे सोवियत रूबलों की एक गड्डी पकड़ा दी। सोवियत रूबल जर्मन मार्क के साथ प्रचलित थे, लेकिन उनकी विनिमय-दर बहुत ही कम थी।

"चाची मरूस्या, हमारे लोगों ने आप और कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना के लिए यह रकम भेजी है," उसने कहा, "त्योहार के अवसर पर कुछ चीज़ें बच्चों के लिए खरीद लेना!"

कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना लित्वीनोवा की ही भाँति लाल सेना के एक अफ़सर की पत्नी थी। दोनों के घरों में बच्चे थे और दोनों ही जैसे-तैसे गुजर कर पा रही थीं-जर्मन उनकी एक-एक चीज़ लूट ले गये थे।

दोनों स्त्रियों ने इस उत्सव को शाम के समय दावत करके मनाने का निश्चय किया। उन्होंने घर की बनी वोद्का की दो-एक बोतलें खरीदीं और पत्तागोभी तथा आलू के समोसे बना लिये।

कोई आठ बजे वोलोद्या की माँ येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना, वोलोद्या की बहन ल्युदमीला और अपनी दो बेटियों सहित चाची मरूस्या कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना के मकान में जमा हुईं। लड़कों ने बाद में आने का वादा किया-उन्होंने कहा कि पहले उन्हें अपने मित्रों से मिलना है। मेहमानों ने दो-एक जाम चढ़ाये और इस बात पर

खेद प्रगट किया कि इतना बड़ा त्योहार गुप्त ढंग से मनाना पड़ रहा है। बच्चों ने धीमी-धीमी आवाज़ में कई सोवियत गीत गाये और माता-पिताओं ने कुछ आँसू बहाये। ल्यूद्मीला ऊब रही थी। इसके बाद बच्चों को सोने के लिए भेज दिया गया।

रात में काफ़ी देर गये जोरा अरुत्युन्यान्त्स आया। वह कीचड़ में सना था और जब उस पर रोशनी पड़ी, खासकर जब उसने देखा कि अभी तक वहाँ दूसरे लड़के नहीं आये हैं और उसे ल्यूद्मीला के पास बैठना पड़ रहा है, तो उसे बेहद झेंप होने लगी। वह इतना घबरा गया कि जब ल्यूद्मीला ने उसे आधा गिलास वोदका दिया तो वह गटागट पी गया और फौरन ही नशे में झूमने लगा। कुछ देर बाद तोल्या ओर्लोव और वोलोद्या लौटे। उन्होंने देखा कि जोरा बहुत निराश बैठा है।

तोल्या ओर्लोव और वोलोद्या ने भी पी। प्रौढ़ लोग अपनी बातचीत में तल्लीन थे। लड़के भी आपस में बातें करने लगे। कान में पड़ी उनकी बातों से ल्यृदमीला ने शीघ्र ही समझ लिया कि वे सिर्फ़ दोस्तों से मिलने-जुलने ही नहीं गये थे।

"कहाँ?" वोलोद्या जोरा के कान में फुसफुसाया।

"अस्पताल में," जोरा ने उदास होकर उत्तर दिया। "और तुम?"

"स्कूल में..."-वोलोद्या की छोटी और काली आँखों में साहस और चतुराई की चमक आ गयी और वह जोरा की ओर झुककर उसके कान में कुछ कहने लगा।

"क्या? यह झूठमूठ तो नहीं?" जोरा की उदासी एक क्षण के लिए जाती रही।

"नहीं, सच है," वोलोद्या बोला, "स्कूल के लिए अफ़सोस है, पर चिन्ता करने से क्या फायदा? हम नया स्कूल बना लेंगे!"

"देखो अगर किसी से मिलने का वादा किया, तो घर पर ही रहा करो," ल्यूद्मीला ने वोलोद्या से कहा। उसे इन गोपनीय बातों में शामिल नहीं किया जा रहा था, इससे उसे खीझ हो रही थी। "दिन भर तुमसे मिलने के लिए लड़कों और लड़कियों का ताँता लगा रहा। सभी एक ही सवाल करते थे : 'वोलोद्या घर है? वोलोद्या घर पर है या नहीं?'"

वोलोद्या ने हँसकर इस प्रश्न को मज़ाक में उड़ा दिया।

सहसा 'घर्घरक' तोल्या अपनी कुर्सी से उठा और बेसुरी आवाज़ में बोलने लगा :

"महान् अक्टूबर क्रान्ति की पच्चीसवीं जयन्ती के अवसर पर सभी को मेली बधाईयाँ!"

उसने ऐसा कहने की हिम्मत बटोर ली, क्योंकि वह नशे में था। उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था, उसकी आँखों में धूर्तता खेल रही थी और वह एक लड़की-फीमोच्का-का नाम ले-लेकर वोलोद्या को चिढ़ाने लगा।

जोरा की काली आर्मीनियाई आँखें मेज पर जमी थीं। उसने सहसा अपने आपसे कहा :

“बेशक मैं लेर्मोन्तोव के पेचोरिन को अच्छी तरह समझ सकता हूँ... यह हमारे समाज की चेतना के अनुकूल भले ही न हो... पर कभी-कभी उनके साथ इसी तरह व्यवहार करना चाहिए...” वह चुप हो गया और फिर उदास होकर बोला : “स्त्रियों के साथ...”

ल्युदमीला जैसे सभी को दिखाती हुई , अपनी कुर्सी से उठी, ‘घर्घरक’ तोल्या के पास गयी और बड़े प्यार से उसका कान चूमती हुई बोली :

“प्यारे तोल्या, आज तुम बहुत पी गये हो, है न?”

तो इस प्रकार हर कोई अपना-अपना राग अलापने लगा। अतः येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना ने साफ़-साफ़ कह दिया कि अब घर जाने का समय हो गया है।

चाची मरूस्या को जल्दी उठने की आदत थी। उस दिन भी वह भोर हुए उठी, पैरों में स्लीपर डाले, अपनी पोशाक पहनी और तुरन्त जाकर रसोईघर का चूल्हा जला दिया। उसने चूल्हे पर केतली रखी और विचारों में खोयी हुई उस खिड़की तक आयी, जो मैदान की ओर खुलता था। बायीं ओर बच्चों का अस्पताल और वोरोशीलोव स्कूल था और दायीं ओर के टीले पर कार्यकारिणी समिति की इमारत और ‘पगले रईस’ का मकान। सहसा उसके मुँह से एक दबी हुई-सी चीख़ निकल गयी... वोरोशीलोव स्कूल की छत पर एक लाल झण्डा लहरा रहा था। उससे हवा इतने जोरों से टकरा रही थी कि वह एक काँपते हुए चतुर्भुज जैसा लग रहा था। कभी वह झुक जाता, कभी तन जाता, कभी परतों में मुड़ जाता और कभी उसके सिरे खुलते, कभी मुँद जाते।

एक इससे भी बड़ा झण्डा ‘पगले रईस’ के मकान पर लहरा रहा था। जर्मन सैनिकों और नागरिकों का एक बड़ा जत्था लकड़ी की एक सीढ़ी के नीचे खड़ा झण्डे को घूर रहा था। दो सैनिक सीढ़ी चढ़ गये, जिनमें से एक तो छत तक पहुँच गया और दूसरा उससे कुछ ही नीचे था। वे झण्डे की ओर देख रहे थे। उन्होंने ज़मीन पर खड़े लोगों से कुछ बातें की और फिर झण्डे की ओर ताकने लगे। न जाने क्यों झण्डे को उतारने की उनको हिम्मत नहीं हुई और झण्डा पूरी शान से लहराता रहा। झण्डा नगर की सबसे ऊँची जगह पर लहरा रहा था।

चाची मरूस्या ने जोश में अपने स्लीपर फेंके, जूते पहने और बेतरतीब बालों पर बिना रूमाल लपेटे पड़ोसिन के पास दौड़ चली।

उसने देखा कि कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना अपने भीतरी कपड़े पहने दासे पर घुटने टेककर ख़ुशी-ख़ुशी झण्डों को ताक रही थी। उसके धँसे हुए गालों पर आँसू बह रहे थे।

"मरूस्या!" वह बोली। "मरूस्या! यह काम उन्होंने हमारे लिए किया है। हम सोवियत जनता के लिए। हमारे लोग हमें भूले नहीं हैं। ओह, मरूस्या...इस महान दिवस पर मेरी बधाइयाँ..."

और वे दोनों एक-दूसरे के आलिंगन में बँध गयीं।

अध्याय 14

लाल झंडे केवल 'पगले रईस' के घर और वोरोशीलोव स्कूल पर ही नहीं, बल्कि और भी कई इमारतों पर लहरा रहे थे, जैसे-प्रशासन-कार्यालय, जिला सहकारिता-कार्यालय, 12,7-10, 2(बी) और 1(बी) खानों के ऊपर तथा पेर्वोमाइका और क्रास्नोदोन खनिक-बस्तियों की सभी खानों पर।

झण्डों का दर्शन करने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ी चली आ रही थी। जर्मन पुलिस वाले भीड़ को तितर-बितर करने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहे थे, पर झण्डे उतारने के लिए आगे बढ़ने की कोशिश तक नहीं कर रहे थे, क्योंकि हर झण्डे के नीचे सफ़ेद कपड़े का एक टुकड़ा लगा था :

"विस्फोटक सुरंग।"

एन.सी.ओ. फेनबोंग वोरोशीलोव स्कूल की छत पर चढ़ा। उसने देखा कि एक तार झंडे से निकलकर छत के अँधेरे में चला गया है। और उसे अटारी के नीचे एक विस्फोटक सुरंग मिली भी।

सुरंगों को न तो जर्मन पुलिस का ही कोई कर्मचारी हटा सका, न एस.एस का ही कोई व्यक्ति। हाप्तवाहटमिस्टर ब्रूक्नेर ने सुरंगबाजों को बुलवाने के लिए अपनी कार रोवन्की में स्थित जर्मन पुलिस हेडक्वार्टर में भेजी थी, किन्तु वहाँ भी ऐसे लोग न मिले। अतः कार को वोरोशीलोवग्राद जाना पड़ा।

आख़िर अपरान्ह में कोई दो बजे वोरोशीलोवग्राद से कुछ सुरंगबाजों ने आकर स्कूल की अटारी में रखी सुरंग हटा दी। अन्यत्र कहीं कोई सुरंग न मिली।

अक्टूबर क्रान्ति के सम्मान में क्रास्नोदोन में फहराये गये लाल झण्डों की खबर दोनबास के सभी नगरों और गाँवों में बिजली की तरह फैल गयी। साथ ही यूजोव्का में प्रादेशिक फेल्दकमाण्डाण्टुर के मेजर-जनरल क्लेर से यह बात भी न छिपी रह सकी कि क्रास्नोदोन की जर्मन पुलिस पर कलंक का टीका लग चुका है। फलतः मिस्टर ब्रूक्नेर को आज्ञा दी गयी कि वह ख़ुफ़िया संगठन के लोगों का पता लगाये और किसी भी दशा में उन्हें गिरफ़्तार करे। वरना वह ख़ुद एक साधारण सैनिक के रूप में मोर्चे पर भेज दिया जायेगा।

मिस्टर ब्रूक्नेर को इस संगठन की कोई भी जानकारी न थी, अतः उसने वही व्यवहार किया, जैसा कि ऐसी स्थिति में कोई भी जर्मन सैनिक या गेस्टापों का एजेण्ट करता। उसने एक 'घना जाल'-सेर्गेई लेवाशोव ने एक बार इस व्यवस्था को यही नाम दिया था-डाल दिया और दर्जनों निरपराध व्यक्तियों को गिरफ़्तार कर लिया। फिर भी उसमें जिला पार्टी संगठन का, जिसने झण्डे फहराने के निर्देश निकाले थे, या 'तरुण गार्ड' का एक भी सदस्य न फँसा। जर्मनों के पास यह अनुमान करने का कोई कारण भी न था कि जिस संगठन ने इतना बड़ा काम किया है, उसमें सिर्फ़ लड़के-लड़कियाँ ही थे।

और सचमुच यह अनुमान करना कठिन था, क्योंकि जिस रात अन्धाधुन्ध गिरफ़्तारियाँ हुई थीं, उस रात अग्रणी खुफ़िया कार्यकर्त्ताओं में से एक स्त्योंपा सफोनोव एक ओर सिर लटकाये, पेंसिल चूसते हुए अपनी डायरी में यह लिख रहा था :

"सेन्का पाँच बजे आया। उसने मुझे गोलुब्यात्निकी जिले में अपने मकान में बुलाया और कहा कि वहाँ कुछ सुन्दर लड़कियाँ मिल जायेंगी। हम लोग वहाँ गये और कुछ देर तक बैठे रहे। दो-तीन लड़कियाँ तो अच्छी थीं लेकिन बाक़ी बिलकुल मामूली ..."

नवम्बर के उत्तरार्द्ध में 'तरुण गार्ड' को गाँवों के सम्पर्क-व्यक्तियों से सूचना मिली कि जर्मन कोई पन्द्रह सौ मवेशी रोस्तोव क्षेत्र से हाँककर पीछे के इलाकों की ओर लिये जा रहे हैं। मवेशियों का कामेंस्क के निकट एक जगह दोनेत्स पार कर दाहिने तट पर पहुँचाया जा चुका है और अब उन्हें नदी और उस बड़ी सड़क के बीच से हाँककर ले जाया जा रहा है जो कामेंस्क से गुन्दोरोव्स्काया की ओर जाती है। दोन के उक्राइनी चरवाहों के अलावा मवेशियों के झुण्ड के साथ एक रसद टुकड़ी के कोई एक दर्जन जर्मन सैनिक भी थे, जो बन्दूकों से लैस थे।

उसी रात त्येलेनिन, पेत्रोव और मोश्कोव के दल, बन्दूकों और टामीगनों से लैस होकर उत्तर दोनेत्स में गिरनेवाली एक छोटी-सी नदी के पास जंगली खड्ड में एकत्र हुए। यही नदी के दोनों तटों को जोड़ने वाला लकड़ी का पुल था और झुण्ड यहीं से गुजनेवाला था। जासूसों ने खबर दी कि रात में सारे मवेशियों को यहाँ से पाँच किलोमीटर की दूरी पर एक जगह गंजियों के पास ठहरा दिया गया है।

उस रात बारिश के साथ-साथ बर्फ भी पड़ रही थी। स्तेपी पार करते समय लड़कों के बूटों पर ढेरों कीचड़ लग गया। वे एक-दूसरे से सट गये और मज़ाक में कहने लगे :

"यह स्वास्थ्य-केन्द्र तुम्हें कैसा लग रहा है?"

उषा की लाली इतनी बोझिल, मेघाच्छन्न और तन्द्रिल थी, मानो दिन निकलने

से पूर्व सोच में पड़ गयी हो कि "इस बेतुके मौसम में उठने से क्या लाभ, क्यों न मैं लौट चलूँ और एकाध झपकी और ले लूँ।" परन्तु इन विचारों पर कर्त्तव्य की भावना ने विजय पायी और दोनेत्स की भूमि पर प्रभात का प्रकाश फैल गया। फिर भी वर्षा, बर्फ और कुहरे के कारण तीन सौ क़दम के आगे कुछ देख पाना मुश्किल था।

तीनों दलों का कमाण्डर था तुर्केनिच। उसी की आज्ञा के अनुसार उसी लड़के ठण्ड से ठिठुरते हाथों में अपनी-अपनी बन्दूकें सँभाले नदी के दाहिने तट पर कायदे से जम गये। इसी ओर से जर्मनों को पुल पर आना था।

इस कार्रवाई में ओलेग भी भाग ले रहा था। वह पुल से कुछ हटकर नदी के छोटे-से मोड़ के पास छिप कर पड़ा रहा। इसके साथ स्तखोविच भी था। वे यह देखना चाहते थे कि इस प्रकार की कार्रवाइयों में वह कैसा ठहरता है। हेडक्वार्टर से निकाले जाने के बाद उसने 'तरुण गार्ड' की कई कार्रवाइयों में भाग लेकर अपनी धाक जमा ही दी। यह काम कोई कठिन न था, क्योंकि 'तरुण गार्ड' के अधिकांश सदस्यों की निगाहों में उसकी धाक यों भी कम नहीं हुई थी।

मानव प्रकृति की कमज़ोरी प्रायः उन लोगों में भी पायी जाती है, जो बड़े सिद्धान्तवादी होते हैं। इस कमज़ोरी के कारण वे किसी व्यक्ति के प्रति अपनी धारणा नहीं बदलना चाहते, जो उनके स्वभाव, उनके जीवन का अंग बन चुकी होती है। अकाट्य तथ्यों के बावजूद भी उन्हें ऐसा करना बड़ा बेतुका लगता है। ऐसे मौक़ों पर लोग यह कह डालते हैं : "वह सुधर जायेगा। आख़िर हम सभी में कोई न कोई कमज़ोरी है ही।"

न केवल 'तरुण गार्ड' के साधारण सदस्य ही, जो स्तखोविच के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, बल्कि वे बहुत-से लोग भी, जो 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के निकट सम्पर्क में रहते थे, उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करते थे, मानो कुछ हुआ ही न हो।

ओलेग और स्तखोविच एक झाड़ी में गिरी पत्तियों पर लेटे-लेटे सामने के नग्न आर्द्र और ऊर्मिल भूखण्ड को ताक रह थे। सहसा उनहें सैकड़ों मवेशियों के रंभाने की आवाज़ सुनायी दी, जो बराबर बढ़ती ही गयी। लगता था जैसे शैतान अपना साज बजा रहा है।

"चौपाये प्यासें है," ओलेग धीरे-से बोला। "वे उन्हें नदी में पानी पिलायेंगे। यही मौक़ा हमारे लिए सबसे ठीक रहेगा..."

"उधर देखो, उधर!" जोश में आकर स्तखोविच फुसफुसाया।

उनके सामने और बायीं ओर धुन्ध में से लाल-लाल सिर निकलते हुए दिखायी दिये-एक, दो, तीन...दस, बीस और फिर अनगिनत। सभी के सिरों पर पतले-पतले सींग थे, जो सीधे ऊपर की ओर निकले थे। पीछे से, कहीं बहुत दूर से रंभाने की

तेज आवाज़ सुनायी पड़ रही थी और हजारों खुरों की पटपट से ज़मीन हिल रही थी।

ठीक इसी समय ओलेग और स्तेखोविच को कहीं अपने पास ही सड़क की दाहिनी ओर जर्मन में बातचीत सुनायी दी। उनकी आवाज़ से स्पष्ट था कि जर्मनों ने अच्छी नींद मारी है और अब बड़े ख़ुश हैं। वे हँसी-ख़ुशी अपने रास्ते पर बढ़ रहे थे और उनके बूट कीचड़ में सने हुए थे।

ओलेग और स्तखोविच नीचे झुके-झुके झट से उस स्थान पर आ गये, जहाँ दूसरे लड़के लेटे हुए थे।

तुर्केनिच पुल से अधिक से अधिक दस गज की दूरी पर एक गड्ढे में खड़ा था। उसकी टामी-गन उसकी बायीं बाँह पर सधी थी, उसका सिर गीली, मुरझायी घास में से झांक रहा था। उसके पास जेन्या मोश्कोव बैठा था। सुनहरे बाल, चेहरे पर क्रोध का भाव और गले में लिपटा गुलूबन्द। वह भी हाथ में टामी-गन लिये पुल पर नज़र गड़ाये था। बाक़ी लोग ढालवें तट के सहारे-सहारे लेटे थे। सबसे आगे सेर्गेई त्युलेनिन और अन्त में विक्टर ओर्लोव था। दोनों ही के पास टामी-गनें थी। ओलेग और स्तखोविच मोश्कोव और त्युलेनिन के बीच ज़मीन पर पड़े रहे।

अधेड़ उम्र के जर्मन सैनिकों की निश्चिन्त-सी बातचीत अब ठीक सिर के ऊपर सुनायी पड़ रही थी। तुर्केनिच एक घुटने के बल बैठ गया और अपनी टामी-गन का घोड़ा चढ़ा लिया। मोश्कोव लेट गया, उसने अपनी फतूही सीधी की और अपनी टामी-गन उठा ली।

ओलेग बाल-सुलभ सीधे, सरल दृष्टि से पुल की ओर देख रहा था। सहसा पुल पर बूटों की पटापट सुनायी दी और कीचड़ से सने ओवरकोट पहने, जर्मन सैनिकों का एक जत्था पुल पर दिखायी दिया। कुछेक ने लापरवाही से बन्दूक हाथों में उठा रखी थीं, और कुछेक की बन्दूकें कन्धों पर लटक रही थी।

सबसे आगे लम्बे क़द का और भूरी मूँछोंवाला एक कार्पोरल जा रहा था। वह जब-तब पीछे घूमकर कुछ कहता जा रहा था, ताकि पीछे के लोग भी उसकी बात सुन लें। उसने अपने इर्द-गिर्द निगाह डाली और तट पर लेटे हुए लड़कों की दिशा में भी अपना सिर घुमाया। उसके साथी भी किसी अपरिचित स्थान से गुजरनेवाले व्यक्तियों की स्वाभाविक उत्सुकता के साथ पुल के दायें बायें नदी की दिशा में देख रहे थे। पर चूँकि उन्हें इन इलाकों में किन्ही छापेमारों से सामना हो जाने की आशा न थी, इसलिए उन्हें कोई भी नज़र नहीं आया।

ठीक इसी क्षण तुर्केनिच ने टामी-गन दाग दी। इसके बाद मोश्कोव ने गोलियाँ बरसायी और बाक़ी लोगों ने भी अपनी बन्दूकों से छिटपुट गोलाबारी की।

सारी घटना इतनी अकस्मात घटी कि ओलेग को गोली चलाने का मौक़ा भी न

मिला। एक सेकेण्ड तक वह सब कुछ बाल-सुलभ आश्चर्य के साथ देखता रहा, फिर उसकी अन्तश्चेतना ने भी उसे गोली बरसाने को प्रेरित किया। परंतु तब तक सब कुछ समाप्त हो चुका था। अब पुल पर एक भी सैनिक नज़र न आ रहा था। उनमें से अधिकतर धराशायी हो चुके थे। दो बचे सैनिक सिर पर पाँव रखकर वापस सड़क पर दौड़ चले। सेगेई, मीश्कोव और स्तखोविच ने किनारे पर कूदकर उन्हें भी गोलियों का निशाना बना दिया।

तुर्केनिच तथा उसके कुछ साथी पुल पर आ गये। एक जर्मन सैनिक अभी भी तड़प रहा था। उन्होंने उसका भी काम तमाम किया। फिर वे उन सबको झाड़ियों में खींच ले गये, ताकि कोई उनको सड़क पर से न देख सके और उनकी बन्दूकें उतार लीं। मवेशियों का झुण्ड दूर-दूर तक नदी किनारे फैल गया। सभी मवेशी नदी में अपनी प्यास बुझा रहे थे।

बहुत बड़े झुण्ड में सभी तरह के मवेशी थे-साधारण बैल, लाल, भूरे, चितकबरे, मोटे सींगोंवाले शक्तिशाली साँड़। गायें भी सभी नस्ल की थीं।

बूढ़े चरवाहे ज़िन्दगी भर गायों को हाँकते आ रहे थे और इसलिए जल्दी न मचाने के आदी हो गये थे शायद युद्धकालीन विपत्तियों से भी उन्हें कई बार गुजरना पड़ा। कुछ भी हो, उन्होंने चार क़दम पर होनेवाली गोलीबारी पर कोई ध्यान न दिया, गीली ज़मीन पर आराम से बैठ गये और अपने पाइप सुलगा लिये। किन्तु जब उन्होंने हथियारबन्द लोगों को अपनी ओर आते देखा, तो वे उठकर खड़े हो गये।

लड़कों ने अदब से अपनी-अपनी टोपियाँ उतारकर उनका अभिवादन किया।

“नमस्ते, प्यारे साथियो!” एक बूढ़े ने उत्तर दिया। गठीला बदन, नाटा क़द, बाहर की ओर मुड़े हुए पैर। शरीर पर एक सूती क़मीज और उसके ऊपर भेड़ की कच्ची खाल के बिना आस्तीनोवाला कोट। उसके हाथ में दूसरों की तरह लम्बा चाबुक नहीं, बल्कि एक शिाकरी कोड़ा था। यह इस बात का सूचक था कि इनका वह मुखिया है। अपने साथियों को सम्बोधित करते हुए वह बोला :

“ये तो छापामार हैं...”

“भले आदमियो, हमें माफ़ करना,” ओलेग शिष्टतापूर्वक बोला, “हमने जर्मन पहरेदारों को ठिकाने लगा तो दिया है, और अब आप लोगों से निवेदन है कि आप स्तेपी में इन मवेशियों को खेदेड़ने में हमारी सहायता करें, ताकि वे जर्मनों के साथ में न पड़े।...”

कुछ क्षणों तक मौन छाया रहा। “हूँह...उन्हें खदेड़ दे” एक टुइँया-से चुस्त बूढ़े ने कहा। “वे हमारे अपने मवेशी हैं, दोन के इलाके के। हम उन्हें यहाँ क्यों खदेड़ दें?”

“अच्छी बात है। तो फिर इन्हें वापस ले जाइये,” ओलेग ने दाँत निकालते हुए कहा।

“हम अब ऐसा नहीं कर सकते,” टुइँयाँ-से बूढ़े ने उदास होकर कहा।

“अगर हम उन्हें खदेड़ देंगे, तो वे हमारे अपने लोगों के हाथों में ही पड़ेंगे।”

“हाय, कितने ताकतवर मवेशी हैं ये!” सहसा वह टुइँयाँ-सा बूढ़ा बोला उठा। उसने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। इन बूढ़ों पर क्या बीत रही होगी? उन्हें इतने बड़े पशु-समूह को अपने वतन से खदेड़कर विदेशी भूमि पर, जर्मन भूमि पर ले जाने के लिए मजबूर किया गया था। लड़कों को मवेशियों और बूढ़ों दोनों ही पर दया आ रही थी, किन्तु वहाँ एक क्षण भी बरबाद नहीं किया जा सकता था।

“बाबा, मुझे देना तो अपना चाबुक,” ओलेग बोला और झुण्ड की ओर चल दिया।

गाय-बैल छककर पानी पी चुकने के बाद नदी को पार कर उसके दूसरे किनारे पर पहुँच गये औ सूखी घास की तलाश में घूमने लगे थे। कुछ जानवर एक जगह खड़े अपने इर्द-गिर्द निराशा से देख रहे थे : “हमें हाँकने वाले कहाँ गायब हो गये? अब हमें करना क्या है?”

ओलेग पूरे विश्वास के साथ मवेशियों के बीच घुसा और किसी जानवर को धकेलता हुआ, किसी की पीठ या गर्दन थपथपाता हुआ या फिर किसी को चाबुक से सटकारता हुआ आगे बढ़ा। भेड़ की खाल का कोट पहने बूढ़ा भी अपना शिकारी कोड़ा लेकर उसकी मदद को आ पहुँचा। उसके पीछे-पीछे दूसरे बूढ़े और लड़के भी चले आये।

आख़िर कोड़े सटकारते और चीख़ते-चिल्लाते हुए उन्होंने सारे झुण्ड को दो हिस्सों में बाँट दिया, किन्तु इस काम में उन्हें बहुत समय लग गया...

लड़के एक-एक होकर जब अपने-अपने रास्ते चल पड़े, तो काफ़ी देर तक उनकी मुलाकात स्तेपी में इधर-उधर मँडराते हुए चौपायों से होती रही।

कुछ समय बाद स्तेपी के आकाश में धुएँ का बादल उठता हुआ दिखायी दिया। तुर्केनिच के आदेश का पालन करते हुए सेर्गेई त्युलेनिन ने लकड़ी के पुल में आग लगा दी थी।

ओलेग और तुर्केनिच साथ-साथ गये।

“क्या तुमने उन गायों पर ध्यान दिया, जिनके सींग उनके सिर में से सीधे निकले हुए थे तथा जिनके सिरे ऊपर जाकर जैसे एक-दूसरे का स्पर्श कर रहे थे?” ओलेग ने उत्तेजित होकर पूछा। “वे साल्स्क स्तेपी के पूर्वी भागों की हैं और हो सकता है, आस्त्रखान की हों। ये हिन्दुस्तानी मवेशी हैं। वे हमारे यहाँ ‘स्वर्ण दल’* के जमाने

से आये है।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" अविश्वास के साथ तुर्केनिच ने पूछा।

"बचपन में मेरे सौतेले पिता अक्सर दौरे पर जाया करते थे। वह मुझे हमेशा अपने साथ ले जाया करते। उन्हें इन बातों का बड़ा अच्छा ज्ञान था।"

"आज स्तखोविच ने बड़ी बहादुरी दिखायी है न?" तुर्केनिच बोला। "हाँ-आँ. ..." ओलेग ने अनिश्चय के साथ उत्तर दिया। "हमारी यात्राएँ यानी मेरी और मेरे सौतेले पिता की-बड़ी दिलचस्प हुआ करती थीं। जरा सोचो-नीपर, घूप और स्तेपी में मवेशियों के बड़े-बड़े झुण्ड...

उस समय कौन सोच सकता था कि मैं...हम..." ओलेग ने हाथ झटकाकर कहा। उसके माथे पर फिर कुछ सिलवटें पड़ गयीं। घर पहुँचने तक वह एक शब्द भी न बोला।

अध्याय 15

चूँकि जर्मनों ने धोखा देकर नगरवासियों के पहले जत्थे को जर्मनी भेज दिया था, अतः अब सभी होशियार हो गये और श्रम-केन्द्र में अपना नाम दर्ज कराने से कतराने लगे।

फलतः अब जर्मन लोगों को सड़कों पर अथवा उनके घरों में पकड़ लेते, ठीक उसी तरह जिस तरह गुलाबी के दिनों में नीग्रों लोगों को जंगलों में पकड़ा जाता था।

वोरोशीलोवग्राद फेल्दकमाण्डाण्टुर के विभाग नं. 7 द्वारा 'नया जीवन' नामक एक छोटा-सा अखबार निकलता था। उसके प्रत्येक अंक में अपने माता-पिता के नाम जर्मनी भेजे गये बच्चों के पत्र छपते थे। उनमें लिखा रहता था कि मानो वे जर्मनी में बड़े सुख-चैन से रह रहे हैं।

कभी-कभी ऐसे युवक-युवतियों के पत्र भी क्रास्नोदोन में पहुँच जाया करते, जो पूर्वी प्रशिया में, खेतों में मज़दूरों के रूप में अथवा घरेलू काम-काज सम्बन्धी निम्न स्तर की नौकरियाँ कर रहे थे। पत्रों में सेंसर-विभाग का कोई ठप्पा न होता और यद्यपि उनमें रहन-सहन की वाह्य परिस्थितियों की ही चर्चा रहती, फिर भी पढ़नेवाला ऐसी बहुत-सी बातों का अनुमान लगा लेता था, जो पत्रों में अनकही छोड़ दी जाती थीं। अधिकांश माता-पिताओं को तो एक भी पत्र नहीं मिला।

डाकखाने में काम करनेवाली एक औरत ने ऊल्या को बताया कि पुलिस कार्यालय का एक कर्मचारी जर्मनी से आनेवाले सभी पत्रों की डाकखाने में जाँच करता

---

* तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पूर्वी यूरोप के अधिकृत क्षेत्रों में मंगोलों द्वारा स्थापित राज्य।**-सं.**

है। वह एक के बाद एक पत्र लेता जाता है, उन्हें अपनी मेज की दराज में बन्द करता जाता है और जब उनकी संख्या बहुत बढ़ जाती है, तो उन्हें जला देता है।

'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर में निर्देशों पर चलते हुए ऊल्या ग्रोमोवा ने वह सब कार्य अपने कन्धों पर ले लिया था, जो युवक-युवतियों को जर्मनी भेजने के विरुद्ध किया जाता था। वह परचे लिखती और बाँटती थी, जिन युवकों को जर्मनी भेजे जाने का खतरा होता था, उनके लिए नगर में काम का इन्तज़ाम करती थी, या कभी-कभी बीमारी के बहाने उन्हें नताल्या अलेक्सेयेव्ना की सहायता से मुक्त करा देती थी। कभी-कभी वह उन लोगों को फार्मों में पनाह भी दिलाती थी, जो श्रम-केन्द्र में अपने नाम दर्ज कराने के बाद भाग जाते थे।

ऊल्या पूरे मन से यह सारा काम करती थी-सम्भवतः वह वाल्या को दुर्भाग्य से बचा न सकने के लिए अपने को ही अपराधी समझती थी। अपराध की यह चेतना ऊल्या को और भी कचोटती थी, क्योंकि न तो उसको वाल्या की कोई खबर मिली थी, न वाल्या की माँ को ही।

एक दिन, दिसम्बर के शुरू में, डाकखाने की औरत की सहायता से पेर्वोमाइका बस्ती के छोकरे रात को सेंसर की दराज में से सारे पत्र चुरा ले गये। अब पत्रोंवाला बोरा ऊल्या के सामने पड़ा था।

सर्दी बढ़ते ही वह अपने घर में आकर रहने लगी। किन्तु 'तरुण गार्ड' के अधिकांश सदस्यों की भाँति उसने अपनी सदस्यता की बात अपने सम्बन्धियों से गुप्त रखी।

उन दिनों, जब ऊल्या के माँ-बाप उसके लिए नौकरी तलाश करने लगे, उसको बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। उसकी बीमार माता अपनी काली, भयग्रस्त आँखों से अपनी बेटी को निहारती और परेशान होकर रोने लगती। और इधर कई वर्षों में पहली बार बूढ़ा मत्वेई मक्सीमोविच अपनी बेटी पर बुरी तरह बरस पड़ा। उसका चेहरा और गंजी खोपड़ी तक बैंगनी हो उठे। उसके भारी-भरकम शरीर और भयानक मुट्ठियों के बावजूद ऊल्या को उस पर बड़ी दया आयी।

फिर भी ऊल्या ने अपने माता-पिता से साफ़-साफ़ कह दिया कि यदि वे नौकरी को लेकर उसे झिड़की देने लगे, तो वह घर छोड़कर चली जायेगी। ऊल्या उनकी दुलारी बेटी थी, अतः वे सचमुच बड़े पेरशान हो उठे। यह बात पहली बार स्पष्ट लग रही थी कि मत्वेई मक्सीमोविच का अपनी बेटी पर कोई अधिकार न रहा और उसकी बीमार पत्नी ऊल्या को किसी भी सूरत में मनवा नहीं सकती है।

चूँकि ऊल्या अपने कार्यों को छिपाती थी, अतः वह गृहस्थी चलाने पर बराबर ध्यान देती रहती थी, और जब कभी उसे काफ़ी देर तक बाहर जाना पड़ता, तो घर

आकर कहने लगती कि अब ज़िन्दगी इतनी नीरस हो गयी है कि उसे मजबूर होकर अपनी सहेलियों के साथ उठ-बैठकर मन बहलाना पड़ता है। प्रायः उसकी माँ काफ़ी देर तक और बड़े दुख के साथ उसकी ओर देखा करती, मानो उसकी आत्मा में उतरने का प्रयास कर रही हो। उसका पिता तो ऊल्या से शरमाता रहता था।

अनातोली के घर की स्थिति भिन्न थी। उसका पिता मोर्चे पर चला गया था और इसीलिए अनोतोली परिवार का मुखिया बन गया। उसकी माँ ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना और उसकी छोटी बहन उसकी बड़ी इज़्ज़त करती थीं। इस समय ऊल्या अपने सामने पत्रों का बोरा लिये अनातोली के घर में बैठी थी। अनातोली सुखोदोल गया हुआ, वहाँ उसे लील्या इवानीखिना से मिलना था। अपनी पतली-पतली उँगलियों से वह सेंसर द्वारा खोले गये लिफाफों में से पत्र निकाल रही थी, उन पर एक सरसरी निगाह डालकर मेज पर रख रही थी।

उसकी नज़रें नामों, उपनामों और सामान्य अभिवादन के साथ-साथ माता-पिता अथवा बहनों के लिए लिखी गयी खबरों पर पड़ रही थी। पत्रों की संख्या इतनी अधिक थी कि उन्हें सरसरी नज़र से देखने पर भी बहुत-सा समय लग गया। किन्तु इनमें वाल्या का कोई पत्र न था...

ऊल्या अपनी कुर्सी पर झुकी, हाथ नीचे डाले और असहाय-सी शून्य की ओर ताकने लगी...घर में सर्वत्र शान्ति थी। ताईस्या प्रोकोफ़्योव्ना और नन्हीं लड़की सोने जा चुकी थीं। दिये की लौ टिमटिमा रही थी। ऊल्या के सिर के ऊपर दीवारघड़ी टिकटिक करती हुई सेकेण्डों की गिनती कर रही थी। पोपोव परिवार का मकान भी खेतिहरों की वस्ती में एकाकी-सा था बचपन से ही ऊल्या में यह अनुभूति घर पर गयी थी कि उसकी ज़िन्दगी जैसे दूसरों की ज़िन्दगी से अलग, कटी-कटी बीत रही है। यह अनुभूति शरद और जाड़ों की शामों में विशेष रूप में प्रबल हो उठती थी। पोपोव परिवार का मकान पुख़्ता बना था। बाहर सनसनाती सर्द हवा की आवाज़ बन्द झिलमिलियों से होकर बहुत हल्की-सी प्रवेश कर पाती थी।

ऊल्या को लग रहा था जैसे इस रहस्यपूर्ण और अरुचिकर ध्वनियों वाली दुनिया में वह बिलकुल अकेली है और उसका साथ देने के लिए झिलमिलाता हुआ दिया ही है।

आख़िर यह दुनिया इस तरह बनी कैसे कि लोग अपने दिल पूर्णतया दूसरों को नहीं दे पाते?...बचपन से ही उसकी और वाल्या की अनुभूतियों से साम्य रहा है, फिर भी उसने सब कुछ भूल-भालकर वाल्या को बचाने का प्रयास क्यों नहीं किया? किन्तु उसकी अन्तश्चेतना उसे उत्तर देती "नहीं, यह सम्भव न होता, क्योंकि तुमने वाल्या की अपेक्षा किसी और बड़े लक्ष्य के लिए मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपनी

ज़िन्दगी लगा दी है।” ऊल्या ने मन ही मन प्रतिवाद किया : “नहीं, बहाने मत बनाओ। समय रहते तुमने कुछ नहीं किया, क्योंकि तुमने वैसा करने की इच्छा ही अपने दिल में न आने दी। तुम वैसी ही बनी रही, जैसे बाक़ी दूसरे हैं।”

“पर क्या मैं अब यह नहीं कर सकती?” ऊल्या ने सोचा। और वह बच्चों के-से सपनों में खो गयी-वह ऐसे-ऐसे हिम्मती लोगों को जुटायेगी, जो उसके इशारे पर चलेंगे। वे अपने रास्ते की सारी बाधाएँ पार करेंगे, जर्मन कमांडेंटों को बेवकूफ बनायेंगे और वहाँ, उस भयानक देश में वह वाल्या से मिलकर कहेगी : ‘मुझसे जो कुछ हो सकता था, वह मैंने तुम्हें बचाने के लिए किया, कुछ भी उठा नहीं रखा और अब तुम मुक्त हो...’ काश यह सब सम्भव होता! पर यह सम्भव न था। ऐसे लोग थे भी कहाँ! वह ख़ुद बहुत कमज़ोर थी। यह काम कोई मित्र ही कर सकता था-कोई लड़का, यदि वाल्या का कोई ऐसा मित्र होता तो!

पर क्या उसका अर्थात ख़ुद ऊल्या का वैसा कोई मित्र है? यदि वह स्वयं वाल्या की तरह फँस जाती, तो उसके लिए यह सब कौन करता? नहीं, उसका ऐसा कोई मित्र नहीं...

तो क्या दुनिया में ऐसा भी कोई है जिसे वह कभी प्यार करेगी? वह होगा कैसा? वह उसकी कल्पना तो कर सकी, किन्तु वह रहता उसी के दिल में था-लम्बा, गठीला, नेक और सच्चा, बहादुर। उसके दिल में प्रेम करने की उत्कट आकांक्षा उठी... ऊल्या की काली-काली आँखों में दिये की झिलमिलाती हुई सुनहरी लौ प्रतिबिम्बत हो रही थी... वह कभी उसकी सुखद अनुभूतियों का आश्रय पाकर चमक उठती, तो कभी उसके दुख से बोझिल होकर घूमिल पड़ जाती...

सहसा ऊल्या ने एक हल्की-सी कराह सुनी। लगा मानो कोई उसे धीरे-से पुकार रहा हो। वह सिहर उठी और उसके बारीक नथुने धीरे-धीरे काँपने लगे...किन्तु यह तो अनातोली की ही बहन थी, जो नींद में कराह रही थी। ऊल्या के सामने मेज पर पत्रों का ढेर पड़ा था। लौ से धुआँ उठ रहा था। बाहर से हवा की हल्की-हल्की सरसराहट सुनायी पड़ रही थी और घड़ी बराबर सेकेण्डों की गिनती कर रही थी... टिक, टिक, टिक...

ऊल्या के गालों पर गुलाबी आ गयी। वह इस लज्जा का कारण स्वयं ही न जानती थी-क्या इसका कारण यह था कि वह कुछ समय के लिए अपने काम के बारे में भूल गयी है? या फिर सपनों में कुछ और बातें कहनी थीं, कुछ ऐसी बातें, जिन पर उसे लज्जा आ सकती थी? उसे अपने ऊपर क्रोध आया और वह पुनः बड़े ध्यान से पत्रों की जांच करने लगी। वह उन पत्रों को ढूँढ़ रही थी, जो उनके काम आ सकते थे।

"काश तुमने उन्हें पढ़ा होता! रोगटें खड़े हो जाते हैं!" ओलेग और तुर्केनिच से मिलने पर ऊल्या बोली। "नताल्या अलेक्सेयेव्ना का कहना है कि जर्मनों ने कुल मिलाकर 800 लोगों को जर्मनी भेजा है। और निर्वासित किये जानेवाले अन्य 1500 व्यक्तियों की एक गुप्त सूची तैयार की गयी है, जिसमें पते वगैरह लिखे हुए हैं। निश्चय ही बड़े पैमाने पर कुछ किया जाना चाहिए... पहरेदारों पर हमला करना चाहिए, या उस बदमाश श्प्रिक को ही मौत के घाट उतार देना चाहिए!"

"हम उसे मार तो सकते हैं, पर वे उसकी जगह और किसी को भेजे देंगे," ओलेग बोला।

"हमें उस सूची को नष्ट कर डालना चाहिए... यह काम कैसे किया जाये, यह मैं जानती हूँ-हम पूरे श्रम-केन्द्र को ही जलाकर राख कर देंगे," सहसा वह बोल उठी। उसके चेहरे पर प्रतिकार का भाव आ गया।

'तरुण गार्ड' के इस वीरतापूर्ण कार्य को वीत्या लुक्याँचेकों की सहायता से त्युलेनिन और ल्यूबा ने पूरा कर दिया।

हवा में नमी बहुत पहले ही आ चुकी थी। रात में पाला पड़ता और लारियों द्वारा छितरायी मिट्टी के सख्त लोंदे और गहरी लीकें पूरी तरह जम जातीं और दोपहर होते-होते वे कुछ-कुछ पिघलने लगते थे।

मित्र ल्यूक्याँचेकों के बगीचे में मिले। वहाँ से वे रेलवे लाइन के किनारे-किनारे सिधे टीले की ओर चल पड़े। सेर्गेई और वित्या के पास पेट्रोल की एक टंकी और विस्फोटक द्रव्य से भरी हुई कुछ बोतलें थीं। वे दोनों हथियारों से लैस थे। ल्यूबा के पास सिर्फ़ एक बोतल शहद और 'नया जीवन' समाचार-पत्र का एक अंग था।

रात्रि इतनी नीरव थी कि सुई के गिरने की आवाज़ तक सुनायी पड़ सकती थी। अगर पैर ज़ोर से पड़ा या असावधानी के कारण टंकी झनझनायी, तो उनकी खैर न थी। अँधेरा इतना घना था कि वहाँ के स्थानों की अच्छी जानकारी होने के बावजूद उन्हें कभी-कभी यह पता न चल पाता कि वे हैं कहाँ। वे एक क़दम चलते और कुछ सुनने लगते, फिर एक क़दम बढ़ते और फिर सुनने लगते...

उन्हें अपनी मंजिल तक पहुँचने में बड़ा समय लग गया। आश्चर्य की बात यह है कि जब उन्होंने श्रम-केन्द्र के बाहर सन्तरी के पैरों की आहट सुनी, तो उनका डर कम हो गया। रात में यह आहट साफ़-साफ़ सुनायी पड़ रही थी।

श्रम-केन्द्र की इमारत के सामने कृषि कमाण्डाण्टुर स्थित था। सन्तरी के पैरों की आहट से उन्हें मालूम हुआ कि वे इमारत की बायी ओर पहुँच गये हैं। यहाँ से वे धीरे-धीरे पिछवाड़े की ओर चलने लगे।

वीत्या लुक्याँचेंको इमारत से कोई बीस गज की दूरी पर गया, ताकि शोर और

भी कम हो। ल्यूबा और सेर्गेई दबे पाँव खिड़की की पास पहुँच गये। ल्यूबा ने शीशा के निचले पल्ले पर शहद लगाया और उस पर अखबार का कागज चिपका दिया। सेर्गेई ने सावधानीपूर्वक उसे दबा दिया, शीशा धीरे-से चिटका किन्तु गिरा नहीं। इसके बाद उस ने पूरा शीशा हटा दिया।

फिर वे कुछ सुस्ताने लगे। सन्तरी को शायद ठण्ड लग रही थी। वह ड्योढ़ी पर पैर पटपटा रहा था। उन्हें कुछ इन्तज़ार करना पड़ा, ताकि वह इमारत के भीतर से आती हुई ल्यूबा के पैरों की आहट न सुन ले। तत्पश्चात सेर्गेई तनिक झुका और अपने दोनों हाथ कसकर जकड़ लिये। ल्यूबा ने खिड़की का चौखटा पकड़ा, एक पैर सेर्गेई के हाथों पर रखा और दूसरा खिड़की के दासे पर। चौखटा उसके पैरों को काट रहा था। किन्तु इन छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने का समय न था। आख़िर उसने पैर नीचे किया और बड़ी सावधानी से खिसकने लगी। इस प्रकार वह इमारत के भीतर पहुँच ही गयी।

सेर्गेई ने उसे पेट्रोल की टंकी थमा दी।

वह बहुत देर तक अन्दर रही। सेर्गेई को भय लग रहा था कि कहीं वह अँधेरे में किसी कुर्सी या मेज से न टकरा जाये।

अन्ततः जब वह फिर खिड़की पर दिखायी दी, तो उसके बदन से पेट्रोल की बू आ रही थी। वह सेर्गेई को देखकर मुस्करायी और लपककर दासे पर आ गयी। सेर्गेई ने उसे सहारा देकर बाहर निकाल लिया।

सेर्गेई अकेला खिड़की के पास रह गया। उसके नथुनों में पेट्रोल की तेज गन्ध भर्ती जा रही थी। वह वहाँ तब तक खड़ा रहा, जब तक उसे यह यकीन न हो गया कि ल्यूबा और वीत्या दूर निकल गये हैं।

उसने अपनी क़मीज की भीतरी जेब से विस्फोटक द्रव्य वाली बोतल निकाली और खिड़की के भीतर ज़ोर से फेंक दी। आग का शोला इतने ज़ोर से भभककर उठा कि क्षण भर के लिए उसकी आँखें चौंधिया गयीं।

वह सिर पर पैर रखकर टीले से रेलवे लाइन की ओर दौड़ पड़ा।

सन्तरी चिल्लाया और उसने उसके पीछे गोली दाग दी। सेर्गेई ने अपने सिर से बहुत ऊपर सनसनाती हुई गोली की आवाज़ सुनी। उस पूरे स्थान में प्रकाश फैल गया। लगा मानो सहसा दिन निकल आया हो।

उस रात ऊल्या बिना फ्राक उतारे ही सोने चली गयी। रह-रहकर वह उठ जाती, दबे पाँव खिड़की तक जाती और काले परदे का कोना उठाकर देखने लगती। लेकिन बाहर घुप अँधेरा था। उसे सेर्गेई और ल्यूबा की चिन्ता हो रही थी। कभी-कभी उसे लगता कि यह सारी योजना उसने व्यर्थ ही बनायी। रात बीते न बीत रही थी। ऊल्या

बुरी तरह थक गयी और उसकी आँख लग लगी।

सहसा उसकी आँख खुली। वह एक कुर्सी से टकराकर दरवाज़े की ओर लपकी। उसकी माँ ने उनींदी तथा डरी हुई आवाज़ में कुछ पूछा, किन्तु ऊल्या बिना उत्तर दिये अपने महीन कपड़ों में ही बाहर अहाते में निकल आयी।

टीले के उस पार आग की लपटें उठ रही थी। काफ़ी दूरी पर गोलियाँ दगने की आवाज़ भी सुनायी पड़ रही थी। ऊल्या को लगा मानो कोई वहाँ चीख़ रहा हो।

आग का नजारा देखकर ऊल्या को वैसी ख़ुशी न हुई, जिसकी उसे आशा थी। आग की लपटें, चीख़-पुकार, गोलियों की धांय-धांय और माँ की डरी हुई आवाज़ सुनकर उसका मन विकल हो उठा। उसे ल्यूबा और सेर्गेई की फिक्र हो रही थी। खास तौर से वह यह सोच रही थी कि इस समय, जब उनके संगठन का सुराग लगाने का हर सम्भव प्रयत्न हो रहा है, इस घटना का सारे संगठन पर न जाने कैसा प्रभाव पड़े। उसे आशंका हो रही थी कि मजबूरी में किये जानेवाले इन भयानक और विनाशकरी कार्यो के बीच कहीं उसे ऐसी किसी चीज़ से हाथ न धोना पड़े, जो बहुत नेक है, उदार है, दुनिया में अभी तक ज़िन्दगी की साँसें ले रही है और जिसे वह दिल की धड़कन में महसूस कर रही है। ऊल्या को यह अनुभूति उसके जीवन में पहली बार हुई थी।

अध्याय 16

22 नवम्बर 1942 को वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के सभी जिलों में दर्जनों गुप्त रेडियो-सेटों पर सोवियत सूचना-केन्द्र का अभी-अभी मिला 'ताजा समाचार' सुनने को मिला कि सोवियत सेनाओं ने उन दो रेलवे लाइनों को काट दिया है, जिनमें स्तालिनग्राद के जर्मन मोर्चे को सप्लाई मिलती थी और ढेरों क़ैदियों को पकड़ लिया है। तभी वे तमाम ख़ुफ़िया कार्रवाइयाँ, जिन्हें इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेंको धीरे-धीरे संघटित और रात-दिन निर्देशित कर रहा था, सहसा सतह पर आ गयीं और उन्होंने 'नयी व्यवस्था' के ख़िलाफ़ जन-आन्दोन का रूप लेना शुरू किया।

समाचार आ रहे थे कि स्तालिनग्राद में सोवियत सेनाओं को बराबर सफलताएँ मिलती जा रही हैं। इन समाचारों ने प्रत्येक सोवियत नागरिक के मन में असीम उत्साह भर दिया। जहाँ पहले उनके हृदय में एक धूमिल-सी आशा का भाव बना रहता था, अब वहाँ यह विश्वास पैदा हो गया कि "वे आ रहे हैं!"

30 नवम्बर को सुबह पोलीना गेओर्गियेव्ना ने हमेशा की भाँति ल्यूतिकोव के घर दूध पहुँचाया। फिलीप्प पेत्रोविच ने वर्कशॉपों में काम करने के पहले ही दिन से

जो ढर्रा अपना लिया, उसमें कभी कोई हेर-फेर नहीं हुआ। उस दिन सोमवार था। पोलिना गेओर्गियेव्ना ने देखा कि फिलीप्प पेत्रोविच काम पर जानेवाला है।

उसने पोलीना गेओर्गियेव्ना को देखते ही समझ लिया कि वह उसके लिए कोई अच्छा समाचार लायी है। दोनों साथ-साथ ल्यूतिकोव के कमरे में आये, लगे हाथ पेलगेया इल्यीनिच्ना के साथ थोड़ा बहुत हँसी-मज़ाक भी किया, जो वैसे ज़रूरी नहीं था, क्योंकि इस दौरान पेलगेया इल्यीनिच्ना ने कभी यह संकेत नहीं किया कि वह किसी बात की ओर ध्यान देती है।

"यह खबर मैंने खास तौर से आपके लिए लिखी है... यह कल रात को ही प्रसारित हुई," उसने बड़ी उत्तेजना के साथ कहा और अपनी चोली के नीचे से कागज का एक परचा निकालकर उसे थमा दिया।

पिछले दिन वह सोवियत सूचना-केन्द्र का 'ताजा समाचार' लायी थी। उसमें लिखा था कि केन्द्रीय मोर्चे के वेलीकिये लूकी और र्ज़ेव इलाकों पर सोवियत सेनाओं ने बड़े पैमाने पर आक्रमण किया है। इस समय खबर यह थी कि सोवियत सेनाएँ दोन के पूर्वी तट पर पहुँच गयी हैं।

कुछ क्षणों तक तो ल्यूतिकोव कागज के टुकड़े को ताकता और घूरता रहा, फिर अपनी कठोर आँखें ऊपर उठायीं और बोला :

"ह्रांचनजज... हिटलर ह्रांचनजज..."

उसने उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया, जिनका प्रयोग आत्मसमर्पण करते समय जर्मन सैनिक करते थे। किन्तु ये शब्द उसने बड़ी गम्भीरता से कहे और पोलीना गेओर्गियेव्ना को अपनी छाती से लगा लिया। पोलीना गेओर्गिव्ना की आँखों में भी ख़ुशी के आँसू छलक आये।

"क्या हम इसकी और प्रतियाँ बना डालें?" उसने पूछा।

पिछले कुछ समय से उन्होंने परचे निकालना बन्द कर दिया था और सोवियत सूचना-केन्द्र के छपे बुलेटिन बाँटने लगे थे। सोवियत विमान इन बुलेटिनों को उनके लिए निश्चित स्थानों पर फेंक जाया करते थे। लेकिन पिछली रात का समाचार इतना महत्वपूर्ण था कि ल्यूतिकोव ने उसे परचे के रूप में छापने का निश्चय किया।

"दोनों समाचारों को एक में कर दो। हम उन्हें आज रात में चिपका देंगे," उसने कहा।

उसने जेब से लाइटर निकाला, एक राखदानी के ऊपर कागज के टुकड़े को जलाया, राख हाथ से मली और झरोखा खोलकर बगीचे में पीछे की तरफ़ उड़ा दी। बाहर से पालेदार हवा का एक झोंका आया। उसकी नज़र सूरजमुखी और लौकी की पालामारी पत्तियों पर पड़ी।

"बेहद पाला पड़ा है क्या?" उसने चिन्तित-से स्वर में पूछा।

"जी, हाँ। डबरों में पानी पेंदे तक जम गया है और बर्फ अभी तक पिघलने का नाम नहीं ले रही है।"

ल्यूतिकोव के माथे पर झुर्रियाँ पड़ गयीं। वह कुछ देर तक अपने विचारों में खोया हुआ खड़ा रहा। पोलीना गेओर्गियेव्ना आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा कर रही थीं किन्तु ल्यूतिकोव को तो जैसे उसकी उपस्थिति का ख़याल ही नहीं रहा।

"तो अब मैं जा रही हूँ", वह धीरे-से बोली।

"हाँ-हाँ," वह होश में आते हुए-से बोला और इतनी गहरी साँस ली कि पोलिना गेओर्गियेव्ना के दिमाग में ख़याल आया : "कहीं वह अस्वस्थ तो नहीं है?"

सचमुच ल्यूतिकोव अस्वस्थ था। वह गठिया का रोगी था और उसकी साँस भी फूलती थी। परन्तु इस अस्वस्थता के कारण वह अपने विचारों में नहीं खो गया था।

ल्यूतिकोव जानता था कि ख़ुफ़िया कार्यकर्ताओं पर मुसीबत हर क्षण पड़ सकती है, लेकिन फिर भी वह प्रायः अप्रत्याशित ही होती है!

ख़ुफ़िया संगठन के नेता के रूप में ल्यूतिकोव की स्थिति अच्छी थी, चूँकि जर्मन प्रशासन के साथ उसका कोई सीधा सम्पर्क न था। अतः वह बेधड़क उनके ख़िलाफ़ कार्रवाइयाँ कर सकता था। सारी जिम्मेदारी बराकोव की थी। और सिर्फ़ इसी कारण ल्यूतिकोव के निर्देशों का पालन करते हुए बराकोव ख़ुद को जर्मन प्रशासन और श्रमिकों की निगाह में जर्मनों का सबसे अधिक भला चाहनेवाला डाइरेक्टर दिखाना चाहता था। साथ ही साथ वह ल्यूतिकोव की जर्मन विरोधी कार्रवाइयों को नज़रअन्दाज़ कर देता था।

वाह्य स्थिति कुछ इस प्रकार की थी-उत्साही और योग्य बराकोव हर चीज़ का निर्माण करने के लिए यथा सम्भव सब कुछ करता था, और उसके ये प्रयास सभी लोग देखते थे। उधर एक नगण्य और विनम्र ल्यूतिकोव फिर हर चीज़ चौपट कर देता था और उसके इस काम को कोई न देख पाता था। क्या काम रुक जाता था? नहीं, कुल मिलाकार काम चालू रहता था किन्तु उसकी गति अपेक्षित गति से कम थी। कारण? कारण यही थे : 'न मज़दूर है, न मशीनें, औजार, न यातायात। जब कुछ है ही नहीं, तो तोहमत लगाने की गुंजाइश ही कहाँ!'

बराकोव और ल्यूतिकोव के बीच जो श्रमविभाजन था, उसके अनुसार बराकोव बड़ी विनम्रता से प्रशासन के ढेरों आदेश और निर्देश प्राप्त करने के बाद ल्यूतिकोव को आगाह कर देता और ख़ुद इनको कार्यान्वित करने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा देता, किन्तु ल्यूतिकोव उसकी कोशिशों पर पानी फेर देता।

उत्पादन को बढ़ाने के लिए बराकोव के सारे प्रयास बिलकुल निष्फल रहते।

किन्तु उसके ये प्रयास उसके दूसरे कामों पर परदा डालने के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध होते-वह क्रास्नोदोन और पास-पड़ोस के जिलों में से जानेवाली सड़कों पर तोड़-फोड़ के कामों और छापेमारों के आक्रमणों की योजनाएँ बनाता और इनका नेतृत्व भी करता था।

वाल्को की मृत्यु के बाद ल्यूतिकोव ने नगर और जिले की सभी कोयला-खानों तथा कारखानों और सबसे अधिक केन्द्रीय बिजली-मेकेनिकल शॉपों में तोड़-फोड़ के कामों का संगठन अपने जिम्मे ले लिया, क्योंकि इन्ही पर उत्पादन का पुनरुद्धार निर्भर करता था।

जिले भर में कारखानों की संख्या बहुत अधिक थी। बेशक ऐसे लोगों की कमी थी, जिन पर जर्मन प्रशासन को भरोसा हो सकता था, फलतः जर्मन प्रशासन उन कारखानों का नियंत्रण नहीं कर पा रहा था। सभी जगह लोग काम को टालते रहते थे।

ऐसे लोग भी थे जो इन काम टालनेवालों के नेता बने हुए थे। मसलन निकोलाई निकोलायेविच का दोस्त विक्टर बिस्त्रीनोव प्रशासन-कार्यालय में मुनीम था। वह स्वयं भी प्रशासन-कार्यालय में कोई काम नहीं करता था और साथ ही उसने उन लोगों का एक दल भी बना लिया, जो खानों में कोई काम नहीं करना चाहते थे। पेशे से इंजीनियर होने के नाते वह उन्हें सिखा रहा था कि खानों में बाक़ी काम को टालने के लिए क्या करना चाहिए।

पिछले कुछ समय से बूढ़ा कोन्द्रोताविच भी उससे मिलने आने लगा। अपने साथियों-शेव्त्सोव, वाल्को और शुल्गा की मौत के बाद से बूढ़ा नंगी पहाड़ी पर खड़े किसी एकाकी बलूत वृक्ष की भाँति अकेला रहा गया। बूढ़े को यकीन था कि जर्मनों ने उसे इसीलिए गिरफ़्तार नहीं किया, क्योंकि उसका बेटा शराब वगैरह बेचता था, अतः पुलिसवालों से उसकी अच्छी छनती थी।

वैसे एक दिन उसके बेटे ने साफ़-साफ़ कह दिया कि ख़ुद उसके लिए भी जर्मन शासन सोवियत शासन की अपेक्षा कम लाभकर है।

"लोग बेहद ग़रीब हो चुके हैं। किसी के पास पैसा नहीं रहा!" उसने दुखभरी आवाज़ में स्वीकार किया।

"जरा मोर्चे से तुम्हारे भाइयों को लौटने दो! तब तुम परलोक सिधार जाओगे, वहाँ तुम्हें किसी चीज़ की फिक्र नहीं रहेगी," बूढ़े ने अपनी धीर, गम्भीर और रूखी आवाज़ में उत्तर दिया।

कोन्दातोविच कोई काम नहीं करता था और पूरे दिन छोटी-छोटी खानों और खान-मज़दूरों के घरों के चक्कर लगाया करता था। जर्मन प्रशासन खानों में

कैसी-कैसी गलतियाँ, मूर्खता या गन्दे काम कर रहा था, इन सबका तो वह एक प्रकार से कोष ही बन गया। एक अनुभवी श्रमिक के नाते वह जर्मन प्रशासकों और उनके कामों से घृणा करता था।

"तुम लोग युवा इंजीनियर हो! तुम लोग तो ख़ुद ही समझ सकते हो," उसने बिस्त्रीनोव और कोल्या से कहा। "हर चीज़ उनकी मुट्ठी में है, पर उन्हें मिलता क्या है? सारे जिले से प्रतिदिन दो टन! तुम बता सकते हो कि यह पूँजीवाद है, जबकि हम अपने लिये, देश के हित में काम करने के आदी हैं। पर उनके पीछे डेढ़ सौ बर्षो का अनुभव है। हमारा अनुभव तो कुल पच्चीस साल का है। उनको कुछ न कुछ ट्रेनिंग मिली होगी। वे तो व्यवस्थापकों और वित्त-प्रबन्धकों के रूप में दुनिया भर में मशहूर हैं, हर जगह डकैती करते रहते है। थूकता हूँ मैं उन पर!" बूढ़े ने भर्रायी आवाज़ में कहा।

"नौबढ़ कहीं के! बीसवीं शताब्दी में भी डकैती करने पर तुले हुए हैं-1914 में उन्हें मुँह की खानी पड़ी थी और इस बार भी खानी पड़ेगी। वे हमेशा कुछ न कुछ हड़पने के चक्कर में ही रहते हैं, पर रचनात्मक कल्पना उन्हें छू तक नहीं गयी है। ओछे लोग हैं, अपनी दो दिन की कामयाबी पर इतरा रहे हैं... उद्योगों का संचालन करने में उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। सारी दुनिया इसे देख सकती है!" बिस्त्रीनोव ने घृणा से नाक चढ़ाते हुए कहा।

बूढ़ा श्रमिक और दोनों युवा इंजीनियर कोयले का उत्पादन बढ़ाने के श्वैदे के थोड़े-बहुत प्रयासों को बड़ी आसानी से विफल कर देते थे।

इस प्रकार बीसियों लोगों की कार्रवाइयों से ख़ुफ़िया जिला पार्टी समिति के प्रयासों को सहारा मिलता था।

ल्यूतिकोव के लिए वर्कशाप में तोड़-फोड़ का काम चलाना कठिन भी था और खतरनाक भी। उसने यह कायदा बना रखा था-वह छोटे-छोटे आर्डरों से सम्बन्धित उन सभी निर्देशों का पूर्णतया पालन करेगा, जिनका उत्पादन-प्रक्रिया में कोई निश्चित महत्व न होगा। हाँ, बड़े-बड़े आर्डरों को पूरा करने में वह ज़रूर ढील करेगा। जब से वे जर्मन प्रशासन के अधीन काम करने लगे, तभी से कई प्रेसिंग और पम्पिंग मशीनों की मरम्मत शुरू हुई, किन्तु न तो अभी तक उनकी मरम्मत ही हो सकी, न उन्हें उनकी पूर्वस्थिति में ही लाया जा सका।

फिर भी डायरेक्टर बराकोव को खतरे में डाला नहीं जा सकता था इसलिए कुछ काम पूरे या क़रीब-क़रीब पूरे कर लिये जाते थे लेकिन किसी न किसी अप्रत्याशित टूट-फूट से सारी की सारी मशीन ठप्प हो जाती थी। मसलन अगर बालू के थोड़े-से कण किसी इंजन में डाल दिये जाये, तो वह झट-से ठप्प हो जायेगा। इधर इसकी

मरम्मत होगी, उधर मोटर बेकार हो जायेगा। ल्यूतिकोव के आदमी सभी विभागों में मौजूद थे, औपचारिक रूप से ये लोग अपने ही विभाग के फोरमैनों की मातहती में थी, किन्तु वस्तुतः वे करते वही थे, जो ल्यूतिकोव करने को कहता था।

पिछले कुछ समय से बराकोव ने ऐसे बहुत-से लोगों को काम पर लगा रखा था, जो पहले फ़ौज में थे। लाल सेना के दो अफ़सर लुहार की शॉप में हथौड़ा चलाते थे। दोनों ही कम्युनिस्ट थे। वे छापेमारों के उन जत्थों के कमाण्डर थे, जो रात में सड़कों पर जबर्दस्त हमले करते थे। बहुत-से लोगों को काम से छुट्टी देनी पड़ती थी। इस लिए उन्हें दूसरे जिलों के कारखानों से औजार और सामान लाने के बहाने भेज दिया जाता था। कभी-कभी ऐसे दौरों पर उन लोगों को भी भेजा जाता था, जो ख़ुफ़िया संगठन में नहीं होते थे, ताकि उन्हें शक न हो। इस प्रकार श्रमिकों को यह यकीन हो जाता कि औजार या सामान प्राप्त करना असम्भव है और प्रशासन को यह विश्वास हो जाता कि डाइरेक्टर और विभाग के फोरमैन यथा शक्ति सब कुछ कर रहे हैं। इस प्रकार काम में कोई प्रगति न होती और साथ ही इस विफलता के लिए एक वैध कारण भी मिल जाता।

यह वर्कशाप क्रास्नोदोन ख़ुफ़िया संगठन का केन्द्र-बिन्दु बन गयी। सारे भूमिगत कार्यकर्त्ता एक ही स्थान पर काम कर रहे थे। उनसे सम्पर्क बनाये रखना आसान भी था और सुगम भी। लेकिन साथ ही साथ यह खतरे में खाली भी न था।

बराकोव पूरी हिम्मत, आत्मनियंत्रण और सुव्यवस्थित तरीके से काम करता था। सैनिक और इंजीनियर होने के नाते वह ब्योरों पर बहुत ध्यान देता था।

“सुनो, मैंने हर चीज़ की व्यवस्था कर ली है,” किसी मौक़े पर बराकोव ने ल्यूतिकोव से कहा। “और हम यह क्यों मान लें कि हम उनसे ज़्यादा मूर्ख है,” वह बोला। “उन्हें हर हालत में चकमा देना चाहिए और हम निश्चय ही ऐसा करके दिखायेंगे!”

फिलीप्प पेत्रोविच सिर सुकाकर बैठ गया, जिससे उसका चेहरा और भी उतरा हुआ-सा लगने लगा। यह इस बात की निशानी थी कि वह किसी बात पर नाराज है।

“तुम बात को गम्भीरता से नहीं ले रहे हो,” वह बोला। “ये तो फासिस्ट हैं। हाँ, ये तुमसे ज़्यादा होशियार तो नहीं हैं। और तो और उन्हें इसकी फिक्र नहीं रहती कि तुम ठीक कहते हो या गलत। जब वे देखेंगे कि सब कुछ चौपट हो रहा है, तो पलक झपकते ही तुम्हारी गर्दन मरोड़ देंगे और तुम्हारी जगह किसी बदमाश को बिठा देंगे। तब तो हमारे सामने मौत और ज़िन्दगी का सवाल खड़ा हो जायेगा। हमें यहाँ से भागने का अधिकार नहीं है। मेरे दोस्त, हम तलवार की धार पर चल रहे है। हमें

तिगुनी सावधानी बरतनी चाहिए।"

ल्यूतिकोव अँधेरे कमरे में करवटें बदल रहा था। उसकी आँखों में नींद न थी, दिमाग में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। वह यह भी सोच रहा था कि समय बीतता जा रहा है...

जैसे ही जैसे आर्डर पूरा करने में विलम्ब होता गया और टूट-फूट और दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ती गयी, वैसे ही वैसे जर्मन प्रशासन के साथ बराकोव के सम्बन्ध भी संदिग्ध और अनिश्चित होते गये। पर सबसे खतरनाक यह था कि कालान्तर में वर्कशाप में काम करनेवाले बहुत-से लोग इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते कि इस वर्कशाप में कोई व्यक्ति ऐसा ज़रूर है, जो उत्पादन में जान-बूझकर रोड़ा अटका रहा है।

बरोकोव हमेशा ही जर्मनों के साथ दिखायी पड़ता था, उनकी भाषा बोलता था। वह मज़दूरों के साथ कठोरता से पेश आता था, इसीलिए सब लोगों ने उसे जर्मनों का पिछ-लगा समझ रखा था। लोग इन दुर्घटनाओं को लेकर उस पर शक कर भी नहीं सकते थे। शक तो सिर्फ़ ल्यूतिकोव पर ही हो सकता था। फिर भी क्रास्नोदोन में उन लोगों की संख्या बहुत कम थी, जिन्हें यह विश्वास हो गया कि सचमुच ल्यूतिकोव जर्मनों के लिए काम कर रहा है। वह एक ऐसा रूसी श्रमिक था, जिसे पुराने जमाने में श्रमिक-वर्ग की अन्तः चेतना समझा जाता था। हर शख़्स उसे जानता था, उस पर विश्वास करता था-और जनसमुदाय कभी गलती नहीं करता।

विभाग में कई दर्जन लोग उसके अधीन काम करते थे। भले ही वह कितना भी कम क्यों न बोलता, कितनी ही विनम्रता का व्यवहार क्यों न करता, पर कामगार यह ज़रूर समझ लेते कि वह चलते-चलाते कठिनाइयों के सामने सिर झुकाकर जो भी निर्देश देता, वे उत्पादन के हितों के विरुद्ध होते। उसकी तोड़-फोड़ की क्रियाशीलता के अन्तर्गत छोटी-छोटी बातें आती थीं। यदि इन बातों को अलग-अलग देखा जाये, तो उन पर कोई ध्यान भी न देगा। किन्तु समय बीतने के साथ ही साथ ये छोटी-छोटी बातें गम्भीर रूप धारण करने लगी। अब लोगों का ध्यान भी ल्यूतिकोव पर जाने लगा। अधिकांश कामगारों पर वह विश्वास कर सकता था। उसको पता था कि उनमें बहुत-से ऐसे लोग हैं, जो उसकी मकान-मालकिन पेलगेया इल्यीनिच्ना की भाँति हर चीज़ देख रहे हैं, उसका पक्ष ले रहे हैं, किन्तु सब देखा-अनदेखा कर रहे हैं। पर किसी गुप्त कार्यकर्त्ता का सुराग लगाने के लिए एक ही बदमाश काफ़ी होता है।

वर्कशाप के जिम्मे सबसे ज़रूरी कार्य था-क्रास्नोदोन के उस बड़े पम्पिंग स्टेशन का पुनरुद्धार, जो न सिर्फ़ खानों को ही पानी सप्लाई करता था, बल्कि नगर के केन्द्रीय भाग को भी। कोई दो महीने पहले यह कार्य बराकोव के सुपुर्द किया गया

था और बराकोव ने उसे ल्यूतिकोव के हवाले कर दिया था।

काम तो आसान था; पर अन्य सभी कार्यों की भाँति वह जान-बूझकर टाला जा रहा था। फिर भी पम्पिंग स्टेशन की बड़ी आवश्यकता थी, अतः फेल्द्नेर काम की शिथिलता देखकर बड़ा क्रुद्ध हुआ। पम्पिंग स्टेशन तैयार हो जाने के बाद भी ल्यूतिकोव उसे यह कहकर चालू नहीं कर रहा था कि पहले स्टेशन की जांच की जानी चाहिए। पम्पिंग स्टेशन के नल और नालियाँ पानी से भरी थीं, जबकि उस वर्ष सुबह का पाला कुछ पहले ही पड़ने लगा था और सख्त पड़ता जा रहा था।

एक दिन शनिवार को ल्यूतिकोव पम्पिंग स्टेशन का चार्ज लेने आया। वह रिसती हुई टंकी और पाइपों के बारे में न जाने कब तक झींकता-बोलता रहा। उसने बड़ी सावधानी से पेचों और ढिबरियों को कसा। उसके पीछे फोरमैन भी आया। उसने देखा कि सब कुछ ठीक है, पर बोला कुछ नहीं मज़दूर बाहर खड़े इन्तज़ार कर रहे थे।

आख़िर ल्यूतिकोव और फोरमैन बाहर आये। ल्यूतिकोव ने अपनी जेब से तम्बाकू का एक बटुआ, 'नया जीवन' अखबार की कुछ पुर्जियाँ निकालीं और बिना कुछ कहे-सुने मज़दूरों को कच्चा तम्बाकू देने लगा। वे प्रसन्न हो उठे, क्योंकि उन दिनों तम्बाकू की बड़ी तंगी थी।

वे लोग चुपचाप पम्पिंग स्टेशन के पास खड़े तम्बाकू पी रहे थे। कभी-कभी कोई ल्यूतिकोव या फोरमैन पर एक प्रश्नसूचक दृष्टि डाल लेता। अन्ततः ल्यूतिकोव ने अपनी सिगरेट का अधजला टुकड़ा ज़मीन पर फेंका और उसे बूट से मसल दिया।

"अभी तो लगता है कि आख़िर सारा काम ख़त्म हो गया," वह बोला। "पर आज हम काम किसी को सौंप नहीं सकते : काफ़ी देर हो चुकी है। हम सोमवार तक इन्तज़ार करेंगे।"

उसे लगा कि सभी उसकी ओर चकित दृष्टि से देख रहे हैं-ज़मीन जो जम चुकी थी।

"पाइपों से पानी निकाल देना चाहिए," फोरमैन ने अनिश्चय के साथ कहा।

"अभी जाड़ा तो है नहीं। क्यों?" ल्यूतिकोव ने सख्ती से कहा। उसे फोरमैन से आँख मिलाने की जरा भी इच्छा न थी, पर हुआ ऐसा कि उसे फोरमैन की ओर देखना ही पड़ा। एक नज़र डाली। कड़ाके की सर्दी के कारण पत्तियाँ काली पड़ गयी थीं।

जैसी कि उसने आशा की थी, टोली के सारे मज़दूर पम्पिंग स्टेशन पर उसका इन्तज़ार कर रहे थे। उसे यह बताने की ज़रूरत नहीं रह गयी थी कि पाइप फूलकर फट गये हैं और सारी मेहनत बेकार हो गयी है।

"अफसोस की बात है... किन्तु किसे मालूम था कि ऐसा होगा? ऐसा कड़ाके का पाला!" ल्यूतिकोव बोला। "फिर भी हिम्मत न हारो। हम पाइप बदल देंगे। बेशक पाइप है तो कहीं नहीं, पर हम कुछ पाइपों का बन्दोबस्त करने की पूरी कोशिश करेंगे।"

मज़दूरों ने घबराकर उसकी ओर देखा। वे लोग उसकी इज़्ज़त करते तो थे, पर उसके कार्य से डर भी गये थे। उसके शान्त रवैये से तो वे और भी भयभीत हो उठे।

हाँ, ल्यूतिकोव उन लोगों पर विश्वास कर सकता था। पर आख़िर वह नियति को कब तक भुलावे में रख सकता था?

किसी गुप्त समझौते के अनुसार बराकोव और ल्यूतिकोव फुरसत के समय एक-दूसरे से कभी न मिलते। यह व्यवस्था इसलिए की गयी थी कि किसी को उनकी दोस्ती का सुराग न मिले। जब कभी बराकोव को ल्यूतिकोव से बातें करना आवश्यक होता, तो वह उसको अपने दफ़्तर में बुलाता था। वह दूसरे फोरमैनों को बुलाने से भी नहीं चूकता, जो ल्यूतिकोव के आने से पहले और उसके चले जाने के बाद आते थे। इस समय ल्यूतिकोव से बातचीत करना आवश्यक था।

ल्यूतिकोव शॉप में अपने छोटे-से दफ़्तर में आया, अपने कपड़े बदलकर सफ़ेद बाल ठीक किये और बराकोव के पास चला गया।

उसका दफ़्तर अहाते में ही एक छोटी-सी ईटों की बनी इमारत में स्थित था।

क्रास्नोदोन के अधिकांश दफ़्तरों और मकानों के भीतर का तापमान सर्दी बढ़ने के कारण सड़कों के तापमान से भी नीचे गिर गया था। किन्तु यहाँ इतनी ही गर्मी थी, जितनी उन दफ़्तरों या मकानों में होती थी, जिनमें जर्मन काम करते या रहते थे। बराकोव नीले रंग की क़मीज के ऊपर सर्ज की ढीली जैकेट पहने और चमकीली टाई लगाये बैठा था। वह पहले से दुबला-पतला और साँवला हो गया, अतः पहले से जवान भी लग रहा था। उसके बाल बढ़ गये थे और ललाट पर एक लट लहरा रही थी। माथे पर लहराती लट, उसकी ठुड्ढी का गड्ढा, उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की स्पष्ट, सीधी और साहसपूर्ण दृष्टि, कसकर दबाये हुए होंठ, जिनसे उसकी शक्ति का पता चलता था, वर्तमान परिस्थितियों में दोहरा प्रभाव डाल रहे थे।

बराकोव हाथ पर हाथ धरे दफ़्तर में बैठा था। वह ल्यूतिकोव को देखकर खिल उठा।

"तुम्हें पता चल गया?" फिलीप्प पेत्रोविच ने हाँफते हुए पूछा।

"ऐसा होना ही चाहिए था!" बराकोव के मोटे-मोटे होंठों पर एक हल्की-सी मुस्कान बिखर गयी।

"नहीं, मेरा मतलब बुलेटिन से है।"

"मैं वह भी जानता हूँ..." बराकोव का एक अपना रेडियो-सेट था।

"तो क्या इससे उक्राइन में हम सब पर असर पड़ेगा?" दाँत निकालते हुए ल्यूतिकोव ने उक्राइनी भाषा में पूछा। वह था तो रूसी, किन्तु दोनबास में पलकर बड़ा हुआ था, इसलिए कभी-कभी उक्राइनी बोलने की छूट ले लेता था।

"असर पड़ेगा," बराकोव ने भी उक्राइनी में उत्तर दिया, "हम आम विद्रोह की तैयारी करेंगे। जैसे ही हमारी सेनाएँ नगर के पास आयेंगी..." उसने हाथ मेज के उस पार तक बढ़ाया और मुट्ठी बन्द कर ली।

"बिलकुल ठीक," ल्यूतिकोव अपने मित्र की इस बात से खिल उठा।

"कल मैं तुम्हें अपनी सारी योजना समझाऊँगा। बच्चों की कोई कमी नहीं है, बल्कि ढोल की डण्डियों और मिठाइयों की कमी है..." उसके कहने का मतलब था कि लड़ाई लड़ने के इच्छुक व्यक्तियों की कमी न होगी, बल्कि बन्दूकों और गोला-बारूद की कमी पड़ेगी।

"मैं लड़कों को इस काम पर लगा दूँगा। वे यह सब बना डालेंगे। हमारा मकसद पम्पिंग स्टेशन को नष्ट करना ही नहीं है," सहसा ल्यूतिकोव उस विषय पर आ गया जो उसके मस्तिष्क पर छाया था। हमारा मकसद तो... मेरा मतलब तुम ख़ुद समझ ही गये होगे।

बराकोव की त्योरियाँ चढ़ गयीं।

"सुनो, मेरा सुझाव होगा कि मैं तुम्हें बरखास्त कर दूं," उसने दृढ़ता से कहा। "मैं पम्पिंग स्टेशन के मामले को लेकर तुम्हें काम से हटा दूँगा।"

ल्यूतिकोव सोच में पड़ गया : वैसे समस्या का इस तरह हल हो सकता है।

"नहीं," कुछ देर बाद उसने कहा। "मेरे छिपने की कोई जगह नहीं और अगर होती भी तो भी हमें यह क़दम नहीं उठाना चाहिए। वे लोग सब कुछ तुरन्त भाँप लेंगे। इसमें तुम तो बर्बाद होगे ही, दूसरे भी होंगे। इस समय हमारा जो प्रभाव है, वह भी ख़त्म हो जायेगा-नहीं, इससे काम न चलेगा" ल्यूतिकोव ने दृढ़तापूर्वक कहा, "नहीं, हम देखेंगे ऊँट किस करवट बैठता है। अगर हमारी सेनाएँ तेज गति से आगे बढ़ेंगी, तो हम जोश-खरोश के साथ जर्मनों के लिए काम करना शुरू करेंगे। अगर किसी को हम पर कोई शक भी रहा हो, तो वह यह समझ लेगा कि वह गलती पर था। और सबसे बड़ी बात यह है कि हमारी इस मेहनत का फल मिलेगा हमारे अपने लागों को।"

एक क्षण के लिए बराकोव इस चाल की असाधारण सुगमता पर मुग्ध हो गया।

"पर अगर मोर्चा बहुत निकट आ गया, तो वे हमें हथियारों की मरम्मत पर लगा देंगे," वह बोला।

“तब तो हम सब कुछ छोड़-छाड़कर छापामारों से जा मिलेंगे!”

“ख़ूब दूर की सोची!” ख़ुश होकर बराकोव ने सोचा।

“हमें नेतृत्व का एक दूसरा केन्द्र स्थापित करना चाहिए, एक तरह का रिजर्व,” ल्यूतिकोव बोला, “वर्कशाप के बाहर, बिना तुम्हारे, बिना मेरे।” वह कुछ दिलासे की बात, कुछ मज़ाक की बात कहने के मूड में था। पर तभी उसे लगा कि इसकी न उसे ख़ुद ही कोई ज़रूरत है, न बराकोव को। “हमारे लोग अनुभवी है। और अगर कोई बात हो भी जाये, तो वे ख़ुद सँभाल लेंगे। है न?” उसने कहा।

“हाँ, यह तो ठीक है।”

“हमें जिला पार्टी समिति की एक बैठक बुलानी चाहिए। हमने पिछली बार बैठक की थी जर्मनों के आने से पहले। मैं जानना चाहूँगा कि हमारे लोकतन्त्र का क्या हुआ?” ल्यूतिकोव ने बराकोव की ओर सख़्ती से देखकर आँख मारी।

बराकोव हँस पड़ा। सचमुच उन्होंने जिला पार्टी समिति की बैठक नहीं बुलायी थी, क्योंकि क्रास्नोदोन की स्थिति को देखते हुए यह असम्भव हो गया था। किन्तु सबसे महत्वपूर्ण मामलों पर जिले के अन्य प्रमुख लोगों की सलाह लेने पर ही निर्णय किया जाता था।

वर्कशाप से होकर लौटते हुए ल्यूतिकोव का सामना मोश्कोव, वोलोद्या ओस्मूखिन और तोल्या ओर्लोव से हो गया। ये लोग साथ-साथ काम करते थे।

वह फिटरों के पास से गुजरा, मानो उनके काम की जाँच कर रहा हो। सब के सब लड़के सिगरेट पी रहे थे और गप्प लड़ा रहे थे। उसे देखकर वे बेमन से काम पर जुट गये।

ल्यूतिकोव जरा क़रीब आ गया, तो मोश्कोव ने उसकी ओर देखा, दाँत निकाले और बुदबुदाया :

“ख़ूब फटकार सुनायी क्या?”

ल्यूतिकोव को समझते देर न लगी कि मोश्कोव को पम्पिंग स्टेशन के बारे में पता चल गया है। उसका मतलब बराकोव से था। दूसरे लड़कों की तरह मोश्कोव भी बराकोव का असली रूप नहीं जानता था और उसे जर्मनों का पिट्ठू समझता था।

“पूछो मत...” ल्यूतिकोव ने धीरे-से अपना सिर हिलाया, मानो सचमुच फटकार खायी हो। “काम कैसा चल रहा है?” उसने ओस्मूखिन से पूछा और ऐसे झुक गया, मानो उसके काम का मुआयना कर रहा हो, फिर मूँछों ही मूँछों में बुदबुदाया :“ओलेग से कहना आज रात मैं उससे मिलना चाहता हूँ। उसी जगह...”

यहाँ से भी क्रास्नोदोन के ‘तरुण गार्ड’ ख़ुफ़िया संगठन को नुकसान पहुँच सकता था।

अध्याय 17

न सिर्फ़ स्तालिनग्राद और दोन के आस-पास, बल्कि उत्तरी काकेशिया और वेलीकिये लूकी के क्षेत्र में भी लाल सेना को भारी सफलताएँ मिल रही थीं। साथ ही साथ 'तरुण गार्ड' की क्रियाशीलता भी बढ़ती जा रही थी और उसके कार्य अधिकाधिक साहसपूर्ण होते जा रहे थे।

इस समय तक 'तरुण गार्ड' बड़ा सशक्त संगठन बन चुका था। उसके सौ से अधिक सदस्य थे और जिले भर में उसकी शाखाएँ फैल गयी थीं। 'तरुण गार्ड' के सहायकों की संख्या भी बेहद बढ़ गयी थी।

अपनी क्रियाशीलता बढ़ाने के साथ ही साथ संगठन नये-नये सदस्यों की भी भर्ती करता जा रहा था, क्योंकि यह भी उसका एक महत्वपूर्ण कार्य था। यह भी सच था कि वे प्रकाश में आने लगे थे। पर, वे कर ही क्या सकते थे? कुछ हद तक यह अपरिहार्य था।

'तरुण गार्ड' के कार्य जितने ही अधिक विस्तृत होते जाते, गेस्टापों और पुलिस का 'जाल' उनके ईद-गिर्द उतना ही कसता जाता।

हेडक्वार्टर की एक बैठक में सहसा ऊल्या ने पूछ लिया :

"हममें से कौन मोर्स कोड जानता है?"

इस पर किसी ने कुछ नहीं कहा, न ही इस प्रश्न को मज़ाक में उड़ा दिया। शायद अब पहली बार उनके मन में यह विचार आया कि उन्हें गिरफ़्तार भी किया जा सकता है। यह ख़याल जैसे आया, वैसे चला भी गया, क्योंकि फिलहाल उन्हें किसी तरह का खतरा नज़र नहीं आ रहा था।

उन्हीं दिनों ल्यूतिकोव ने व्यक्तिगत रूप से बातचीत करने के लिए ओलेग को बुलाया।

अपनी पहली मुलाकात के बाद से दोनों एक-दूसरे से नहीं मिले थे। अब की बार उन्होंने एक-दूसरे को काफ़ी बदला हुआ पाया। फिलीप्प पेत्रोविच के बालों में और अधिक सफ़ेदी आ गयी थी और वह पहले से अधिक भारी और मोटा हो गया। उसे देखते ही बताया जा सकता था कि यह अच्छी सेहत की निशानी नहीं है। वह अपनी बातचीत के दौरान बार-बार उठकर कमरे में चहलक़दमी करने लगता था। ओलेग उसकी भारी साँसे सुन रहा था। उसे लगा जैसे ल्यूतिकोव को अपना भारी-भरकम शरीर घसीटना भी दूभर हो रहा है। उसकी आँखों में अब भी कठोरता का वही भाव था। थकान तो उनमें लेशमात्र भी न थी।

उधर ल्यूतिकोव ने इस बात पर गौर किया कि ओलेग का शरीर परिपक्व हो चुका है। अब वह अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्षों से गुजर रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों और मोटे होंठों में ही लड़कपन की झलक रहा-रहकर कौंध जाया करती थी। इस समय वह उदास लग रहा था। उसके माथे पर गहरे बल पड़े रहते थे।

ल्यूतिकोव कई बार अपने विषय पर आया। उसने पुराने और नवसंघटित दोनों ही प्रकार के कार्यवाहक दलों के सम्बन्ध में पूरे विस्तार के साथ जानने की इच्छा प्रगट की। वह खोद-खोदकर सदस्यों के चरित्र की विशेषताओं के बारे में पूछ रहा था। ज़ाहिर था कि इस समय उसकी दिलचस्पी दल के कामों में उतनी न थी-जिसकी सारी सूचना उसे पोलीना गेओर्गियेव्ना से मिल जाती थी-जितनी कि संगठन की अन्दरूनी स्थिति में थी। खास तौर से वह इस बारे में स्वयं ओलेग के विचार जानना चाहता था।

ल्यूतिकोव यह भी जानना चाहता था कि कितने सदस्य एक-दूसरे को जानते हैं, हेडक्वार्टर और दलों के बीच किस प्रकार सम्पर्क स्थापित किया जाता है, दलों के कामों का समन्वय कैसे होता है। उसने मवेशियों को छुड़ानेवाली घटना का भी उल्लेख किया। उसने पूछा कि दल के लीडरों ने सदस्यों को किस प्रकार सूचना दी थी और वे किस प्रकार मिले थे। उसे परचे चिपकाने जैसी छोटी-छोटी बातों में भी दिलचस्पी थी, विशेषकर सम्पर्क और नेतृत्व की दृष्टि से।

हम इस बात पर फिर से ज़ोर देना चाहते हैं कि जब कभी ल्यूतिकोव किसी से बात करता था, तो वह उसे सारी बात कह डालने का मौक़ा देता था। उसे अपनी राय ज़ाहिर करने की कभी जल्दी न रहती। वह हर किसी के साथ एक समान अधिकार प्राप्त साथी कि रूप में बड़े स्वाभाविक ढंग से बातचीत करता था।

ओलेग यह सब कुछ जानता था। ल्यूतिकोव उससे इस तरह बात कर रहा था, मानो वह कोई राजनैतिक नेता हो। यदि कोई और अवसर होता, तो ल्यूतिकोव का यह रुख देखकर उसका हृदय गर्व और ख़ुशी से भर गया होता। किन्तु इस समय उसे लगा कि ल्यूतिकोव 'तरुण गार्ड' से बहुत प्रसन्न नहीं है। ल्यूतिकोव उससे सवाल करते ही सहसा खड़ा हो जाता और कमरे में चहलक़दमी करने लगता। यह बात उसकी आदत से मेल न खाती थी। फिर उसने सवाल पूछने बन्द कर दिये, बस कमरे में चहलक़दमी ही करता रहा। ओलेग भी चुप हो गया था। आख़िर ल्यूतिकोव एक कुर्सी पर धम-से बैठ गया और कठोर आँखें ओलेग पर गड़ा दीं।

"अब तुम अनुभवी हो चुके हो। संगठन भी बड़ा हो गया है और तुम लोग भी," उसने कहना शुरू किया, "यह तो अच्छा ही है। लोग तुम्हारी सरगर्मियाँ महसूस करने लगे हैं। और वह समय ज़रूर आयेगा, जब वे तुम्हें इसके लिए धन्यवाद देंगे।

लेकिन अब मैं तुम्हारी कमियों के बारे में बताना चाहता हूँ... आगे से बिना मेरी अनुमति के अपने दल में किसी और को न लेना। तुम्हारे पास काफ़ी सदस्य हैं। अब वह वक़्त आ गया है, जब सबसे बुज़दिल और क़ाहिल व्यक्ति भी, बिना किसी संगठन में शामिल हुए, हमारी मदद करेगा। मेरी बात समझ रहे हो न?"

"समझ रहा हूँ," ओलेग धीरे-से बोला।

"तुम्हारा सम्पर्क..." ल्यूतिकोव कुछ देर तक खामोश रहा। "सम्पर्क का तुम्हारा इन्तज़ाम कच्चा है। तुम्हारे सदस्य, एक-दूसरे के पास, एक-दूसरे के घर बहुत अधिक आते-जाते हैं, विशेष रूप से तुम्हारे और तुर्केनिच के घर। यह खतरनाक है। अगर मैं ही उस सड़क पर रहता होता, तो मैं तुम्हारे यहाँ आने-जानेवालों को देखकर सोचता-'आख़िर ये लड़के-लड़कियाँ, दिन में भी और रात में भी, जब किसी को घर के बाहर निकलने की अनुमति नहीं दी जाती, बराबर तुम्हारे घर के चक्कर क्यों लगाते हैं?' यदि मैं तुम्हारी गली में रहता होता तो यही समझता। यह मत भूलना कि जर्मन तुम्हारी टोह में हैं, वे तुम्हारे घर में लोगों के आने-जाने के क्रम को देखेंगे अवश्य। तुम लोग जवान हो। कभी-कभी मन-बहलाव के लिए भी एक-दूसरे से मिला करते होंगे। है न?" ल्यूतिकोव ने सद्भावना से मुस्कराते हुए कहा।

ओलेग कुछ लजाकर मुस्कराया और हामी भरी।

"इससे काम नहीं चलेगा। तुम्हें ये पार्टियाँ-वार्टियाँ बन्द करनी ही पड़ेगी। जब हमारी सेनाएँ वापस आ जायेंगी, तभी हम ख़ूब मजे करेंगे," ल्यूतिकोव ने गम्भीरता से कहा, "और तुम्हारे हेडक्वार्टर की बैठकें भी कम होनी चाहिए। अब ज़रूरत है सैनिक कार्रवाइयों की। तुम्हारे पास एक कमाण्डर है ही, एक कमीसार भी। तुम लोग यह मानकर काम करो, जैसे युद्ध की स्थितियों में मोर्चे पर कार्य कर रहे हो। तुम्हारे सम्पर्क-प्रबन्ध को भी तुम्हारे दल के स्तर पर लाना चाहिए। अच्छा तो यह होगा कि तुम लोग किसी ऐसे स्थान की व्यवस्था करो, जहाँ हर व्यक्ति बिना किसी रुकावट के आ-जा सके और किसी बाहरी आदमी को उसमें कोई असाधारण बात भी न नज़र आये। इन दिनों गोर्की क्लब में क्या हो रहा है?"

"वह खाली पड़ा है," ओलेग बोला। उसे उस रात की याद आ गयी, जब उसने क्लब की दीवार पर परचे चिपकाये थे और पुलिसवाले के हाथ में पड़ने से बाल-बाल बचा था। "वह तो किसी काम का नहीं। इसीलिए खाली पड़ा है," ओलेग ने समझाया।

"अच्छी बात है, फिर प्रशासन से अनुमति माँगो और उसमें एक क्लब चालू कर दो!"

कुछ क्षणों तक ओलेग चुप रहा। उसके माथे पर बल पड़ गये।

"बात मेरी समझ में नहीं आयी," वह बोला।

"इसमें समझने की कोई बात नहीं-युवकों के लिए, समस्त जनता के लिए क्लब चालू कर देना चाहिए। उन लड़के-लड़कियों को संगठित करो, जिन्हें राजनीतिक में कोई रुचि नहीं, जो ऊब महसूस कर रहे हैं। उन्हें बुरगोमीस्टर के पास भेजो। उससे कहो 'नयी व्यवस्था' के अनुरूप जनता को सांस्कृतिक सुविधाएँ प्राप्त होनी चाहिए, बेकार की गप्पों से बचने और दिमागों में खुराफातें न आने देने के लिए युवक-युवतियों को नाचने की सुविधाएँ दी जायें। वह गधा ख़ुद तो कुछ निर्णय करता नहीं, वह अपने अधिकारियों से पूछेगा। वे शायद तुम्हें अनुमति दे देंगे। वे ख़ुद ऊब से मर रहे हैं," ल्यूतिकोव बोला।

ओलेग कुशाग्रबुद्धि और व्यवहार कुशल था। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि वह हेडक्वार्टर के सदस्यों को क्लब में रख सकेगा और उसकी मार्फत दलों के नेताओं से सम्पर्क बनाये रखेगा। किन्तु इस पैशाचिक समाज में प्रवेश पाना, उसके घृणित मामलों में, अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, भाग लेना उसकी आत्मा के विरुद्ध था. .. कुछ भी हो, वह यह नहीं करेगा। उसने चुपचाप अपना सिर झुका लिया। ल्यूतिकोव की ओर देखने की उसकी हिम्मत न हो रही थी।

"मेरा अनुमान ठीक था," ल्यूतिकोव ने शान्ति से कहा। "तुमने मेरी बात समझी नहीं! अगर समझी होती, तो मेरे लिए और सारे संगठन के लिए यह एक बहुत बड़ी चीज़ होती," वह उठा और कमरे में चहलक़दमी करने लगा, "बच्चे को डर लग रहा है... कि कहीं वह ख़ुद गन्दा न हो जाये... पवित्र पर कभी कलंक नहीं लगेगा! आख़िर उनके भ्रष्ट प्रचार का असर होगा भी क्या? अगर वे लोग एक और लाउडस्पीकर क्लब में लगा भी दें, तो भी क्या? क्लब हमारी मुट्ठी में रहे, इसके लिए हमें यह सब बरदाश्त करना ही होगा। हमारा प्रचार ऊँची आवाज़ में नहीं होगा, पर उसका असर उनके प्रचार से ज़्यादा होगा। मैं तुम्हें यह साफ़-साफ़ बता दूँ कि तुम्हारे कार्यों में हमारा भी कुछ हाथ होगा, जिसे तुम अधिक न देख सकोगे और इसके लिए तुम हमें क्षमा करोगे। किन्तु तुम्हारा कार्यक्रम तटस्थ होना चाहिए। इस तरह के कार्यों का संगठन मोश्कोव, जेम्नुखोव और ओस्मूखिन, या उनसे भी अच्छे ढंग से, ल्यूबा शेव्त्सोवा कर सकती है..."

अन्ततः ओलेग उसकी बात से सहमत हो गया, किन्तु बूढ़ा ल्यूतिकोव फिर भी उसे बड़ी देर तक समझाता रहा।

"यह सब मैं तुम्हें इसलिए समझा रहा हूँ, क्योंकि तुम्हारे साथी तुमसे वही सब कुछ कहेंगे, जो तुमने अभी-अभी मुझसे कहा है। मैं चाहता हूँ कि तुम उन्हें ठीक-ठीक जवाब दे सको," वह बोला और ओलेग को उपदेश देना जारी रखा।

खान 1(बी) के व्यवस्थापकों का समर्थन प्राप्त हो जाने के बाद वान्या जेम्नुखोव, मोश्कोव तथा दो लड़कियाँ, जिनका 'तरुण गार्ड' से कोई सरोकार नहीं था, बुरगोमिस्टर स्तात्सेंको से मिलने गयीं।

स्तात्सेंको, हमेशा की भाँति, नशे में धुत्त था। वह उनसे नगर परिषद् के सर्द और गन्दे मकान में मिला। उसने सूजी हुई उँगलियों वाले अपने छोटे-छोटे हाथ हरे मेजपोश पर रख दिये और स्थिर दृष्टि से वान्या की ओर देखने लगा। विनम्र, शिष्ट और भद्र वान्या बुरगोमिस्टर की ओर नहीं बल्कि हरे मेजपोश की ओर देखे जा रहा था।

"स्तालिनग्राद में जर्मन फ़ौज की हार हो रही है, ऐसी-ऐसी झूठी खबरें नगर में फैल रही हैं। इसकी वजह से," वान्या की पतली-पतली उँगलियाँ हवा में लहरा उठीं, "हमारे युवक-युवतियों के दृष्टिकोण में कुछ अस्थिरता आ गयी है। हमें मि. पॉल," उसने खान 1(बी) के माइनिंग बटालियन के कमिश्नर का नाम लिया, "और उन सज्जन का समर्थन मिल चुका है, जो नगर परिषद् के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष हैं। इसके बारे में आपको निश्चय ही सूचना मिल चुकी होगी। 'नयी व्यवस्था' के प्रति वफादार सभी युवक-युवतियों की ओर से, वसीली इल्लारिओनोविच, हम आपसे प्रार्थना करते हैं, आप तो कितने उदार, कितने दयावान हैं!..."

"सज्जनो और देवियो, प्यारे लड़को! जहाँ तक मेरा सवाल है," सहसा स्तात्सेंको बड़े स्नेह से बोला, "नगर परिषद..." उसकी आँखों में आँसू छलछला आये।

स्तात्सेंको, 'वे सज्जन' और 'प्यारे लड़के' अच्छी तरह जानते थे कि नगर परिषद स्वयं किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता था, क्योंकि सारे निर्णय किये जाते थे पुलिस के सीनियर वाह्टमिस्टर द्वारा। किन्तु स्तात्सेंको पूरी तरह से इस प्रस्ताव के पक्ष में था। ल्यूतिकोव ने ठीक ही अनुमान लगाया था : स्तात्सेंको ख़ुद ऊब से घुट-घुटकर मर रहा था।

हाप्तवाह्टमिस्टर ने अनुमति दे दी और 19 दिसम्बर 1942 के दिन गोर्की क्लब में पहला रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

इमारत को गर्म रखने की कोई व्यवस्था न थी। क्लब लोगों से खचाखच भर गया। दर्शक ओवरकोट और पोस्तीन पहने हुए थे। शीघ्र ही हॉल में उनकी गर्म-गर्म साँसों के कारण भाप उठने लगी।

सामने की कतारों में हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूक्नेर, वाह्टमिस्टर बाल्डेर, लेफ़्टिनेण्ट श्वैदे, उसका सहायक फेल्द्नेर, सोन्दरफ़्यूरर साण्डेर्स, कृषि कमाण्डाण्टुर के सभी अफ़सर, ओबेरलेफ़्टिनेंट श्प्रीक और नेम्चीनोवा, बुरगोमिस्टर स्तात्सेंको, पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की, उसकी पत्नी, और नवनिर्वाचित इंस्पेक्टर कुलेशोव बैठे थे। कुलेशोव

शान्त और शिष्ट आदमी था। चित्तीदार गोल चेहरा, नीनी आँखें, विरल हल्की लाल भौंहें, शरीर पर लम्बा काला ओवरकोट, सिर पर कज़्ज़ाक टोपी, जिस पर सुनहरी डोरी लगी थी। वहाँ हेरेन पॉल, जुनर, बेकेर, ब्लोश्के, श्वार्त्स और माइनिंग बटालियन के कई अन्य कारपोरल भी मौजूद थे। इनके अलावा वहाँ दुभाषिया शूर्का रैबन्द, हाप्तवाह्टमिस्टर का रसोइया और लेफ़्टिनेण्ट श्वैदे का मुख्य रसोइया भी था।

कुछ दूरी पर पुलिस-कर्मचारियों तथा उन जर्मन और रूमानियाई सैनिकों की कतारें थी, जो इधर से होकर मोर्चे पर जा थे। वहाँ फेनबोंग उपस्थित न था। उसके पास बहुत काम था और उसे मनोरंजन का शौक भी न था।

'प्रतिष्ठित मेहमानों' के सामने एक पुराना और भारी परदा टँगा था, जिन पर सोवियत संघ के राजचिह्न अंकित थे। जब घण्टी के साथ-साथ परदा उठा, तो रंगमंच के पीछे, स्थानीय चित्रकारों द्वारा रचित फ़्यूरर का एक बड़ा-सा रंगीन चित्र दिखायी पड़ा। चित्र में अनुपात-दोष तो था ही, पर चेहरा मूल से बहुत कुछ मिलता-जुलता था।

समारोह का आरम्भ एक पुराने मज़ाकिया नाटक के प्रदर्शन से हुआ, जिसमें वान्या तुर्केनिच ने वधू के बूढ़े बाप की भूमिका निभायी। परम्परा और अपने कलात्मक सिद्धान्तों का अनुसरण करते हुए, उसने बूढ़े बागवान दलीचिन का मुखौटा चुन लिया। क्रास्नोंदोन के लोगों ने तालियाँ बजा-बजाकर अपने इस प्रिय पात्र का स्वागत किया। जर्मन नहीं हँसे, क्योंकि हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूक्नेर के चहरे पर गम्भीरता थी। किन्तु नाटक की समाप्ति पर मिस्टर ब्रूक्नेर ने दो-एक बार अपनी हथेलियाँ सटायी और तब जर्मनों ने तालियाँ बजायीं।

उसके बाद आर्केस्ट्रा ने 'शरद-स्वप्न' वाल्ज और 'जाऊँ क्या मैं नदी किनारे' गीत की धुन बजायी। इस आर्केस्ट्रा में नगर के दो सर्वश्रेष्ठ गिटारवादकों-वीत्या पेत्रोव और सेर्गेई लेवाशोव-ने मुख्य भूमिका निभाई।

तत्पश्चात् क्लब-मैनेजर और कार्यक्रम-संचालक दुबला-पतला स्तखोविच मंच पर आया। वह काला सूट और चमचमाते हुए बूट पहने था।

"ल्यूबोव शेव्त्सोवा, लुगांस्को प्रादेशिक वेरायटी ट्रुप की कलाकार!"

दर्शकों ने तालियाँ बजानी शुरू कीं।

ल्यूबा अपनी नीली रेशमी पोशाक में मंच पर अवतरित हुई। उसके जूते भी पोशाक से मेल खा रहे थे। उसने पहले तो कुछ करुण गीत गाये और बाद में ख़ुशी के गीत भी। वाल्या बोर्त्स टूटे-फूटे पियानों पर संगत कर रही थी। ल्यूबा को अपने प्रदर्शन में बड़ी सफलता मिली और दर्शकों ने तालियाँ बजा-बजाकर उसे कई बार मंच कर बुलाया। वह फिर से फुदकती हुई मंच पर आयी। इस बार वह अपनी

भड़कीली पोशाक और हल्के रंग के जूते पहले थी। वह मुँह-बाजा बजाती हुई नाचने लगी। उसके सुघड़ पैर बड़ी तेजी से थिरक रहे थे। जर्मन ख़ुशी से फूल उठे।

स्तखोविच फिर मंच के बीचोंबीच आ गया।

"जिप्सी रोमांसों की पैरोडी! व्लादीमिर ओस्मूखिन। गिटार पर संगत कर रहे हैं। सेर्गेई लेवाशोव।"

वोलोद्या बाँहें झुला-झुलाकर और सिर आगे को बढ़ाये बड़ी फुर्ती से नाचने लगा। वह गा रहा था-"ओह, मेरी माँ, ऊब से मरा जा रहा हूँ मैं!" सेर्गेई लेवाशोव मुँह लटकाये उसके पीछे-पीछे चल रहा था सारे दर्शकगण हँस रहे थे।

वोलोद्या ने बड़े अस्वाभविक ढंग से अपना सिर घुमाया और अपना चेहरा फ़्यूरर के चित्र की ओर करके गाने लगा।

अरे बताओ, मुझे बताओ, आवारा
किसके वंशज, और कहाँ से तुम आये?
बहुत जल्द तुम करनी का फल पाओगे,
जैसे ही कुछ गर्म सूर्य ऊँचा होगा
चिर-निद्रा में उस क्षण तुम सो जाओगे...

दर्शकगण अपनी-अपनी कुर्सियों पर से उछल पड़े। सभी उत्साह से भरकर चिल्ला रहे थे और वोलोद्या को बार-बार मंच पर आना पड़ रहा था।

प्रदर्शन के अन्त में कोवल्योव के नेतृत्व में सरकस के खेल भी दिखाये गये।

इधर कंसर्ट चल रहा था, उधर ओलेग और नीना 'ताजा समाचार' लिख रहे थे। समाचार में कहा गया था कि मध्य दोन क्षेत्र में सोवियत सेना ने बड़ा ज़ोरदार हमला करके नोवया कलीत्वा, कन्तेमीरोका और बोगुचार पर फिर से क़ब्ज़ा कर लिया है। ये वे स्थान थे, जिन पर, जुलाई में, दक्षिण में घुसने के कुछ ही पहले, जर्मनों ने अधिकार कर लिया था।

ओलेग और नीना रात भर उस समाचार की प्रतिलिपियाँ बनाते रहे। सुबह के समय सहसा उन्हें हवाई जहाजों की भनभनाहट सुनायी दी। वे चौंककर बहार अहाते में आ गये। उन्होंने देखा कि स्वच्छ, पालेदार वायु को चीरते हुए सोवियत बमवर्षक विमान नगर के ऊपर मन्द गति से उड़ रहे है। वे कहीं बोरोशीलोबग्राद के निकट पहुँचकर बम गिराने लगे। विस्फोट की धमक क्रास्नोदोन में भी सुनायी पड़ रही थी। दुश्मन के लड़ाकू विमानों का कहीं नामोनिशान तक नहीं था। विमानमार तोपों के मुँह काफ़ी देर से खुले, तब तक बमवर्षक विमान वापस जा चुके थे।

अध्याय 18

1942 के नवम्बर और दिसम्बर के ऐतिहासकि महीनों मे सोवियत लोग, खासकर वे जो जर्मन सेना के पिछवाड़े में रह गये थे, उस घटना के महत्व को समझ नहीं सकते थे, जो विश्व के इतिहास में एक प्रतीकात्मक शब्द 'स्तालिनग्राद' के रूप में अंकित कर दिया गया।

स्तालिनग्राद की ख्याति केवल इस कारण नहीं है कि वोल्गा नदी के संकरे-से तट-बँध की रेखा अद्वितीय साहस के साथ की गयी। दुश्मन ने सभी प्रकार के शस्त्रों से सज्जित विपुल सेनाएँ इस नगर के विरुद्ध लगा दी। मानव-इतिहास में इतने बड़े हमले की मिसाल ढूँढ़ना मुश्किल है।

स्तालिनग्राद इस बात का प्रमाण है कि नयी सोवियत प्रणाली के अधीन प्रशिक्षित सेनानायकों ने अपनी अभूतपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया। छह सप्ताह से भी कम समय में सोवियत सेनाओ ने तीन चरणों में एकीकृत और सोद्देश्य योजना पूरी कर ली। इस प्रकार वोल्गा एवं दोन के बीच स्तेपी के विशाल क्षत्रों में दुश्मनों के 22 डिवीजनों को घेर लिया गया और 36 के पाँव-उखाड़ दिये गये। और घिरे हुए दुश्मानों का सफाया करने में महीना भर ही लागा।

स्तालिनग्राद नयी सोवियत प्रणाली द्वारा प्रेरित लोगों की संगठन-प्रतिभा का ज्वलन्त उदाहरण है। यह इसी प्रणाली की देन है कि अथाह जन-शक्ति और सैन्य-सज्जा को एकीकृत योजना, एकीकृत इच्छाशक्ति के अनुसार गतिशील बनाया जा सका; सामग्री और जन-शक्ति के उन विशाल संचयों की कल्पना कीजिये, जिन्हें इस योजना की क्रियान्विति के लिए जुटाना पड़ा। इसी प्रणाली के अन्तर्गत विश्व-ऐतिहासिक महत्व का वह शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्य संपन्न किया जा सका, जिसके परिणाम स्वरूप सार्जेण्ट से लेकर मार्शल तक लाखों कमाण्डर और सेनानायक इस महान अभियान का नेतृत्व करके उसे करोड़ों सशस्त्र व्यक्तियों के एक सचेत आन्दोलन का रूप प्रदान करने में सफल हुए।

स्तालिनग्राद अराजकतावादी पूँजीवादी व्यवस्था पर नयी समाजवादी योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था की श्रेष्ठता का ज्वलन्त उदाहरण है। देश के अन्दर दुश्मन के करोड़ों सैनिक घुस चुके थे, जिन्हें यूरोप के अधिकांश देशों के उद्योगों और खेतीबारी की उपल बाकायदा उपलब्ध थी। वे चारों ओर अभूतपूर्व भैतिक विनाश और तबाही ढाते जा रहे थे। किसी भी पूँजीवादी राज्य के लिए आर्थिक दृष्टि से ऐसे आक्रमण को असफल बनाना असम्भव होता।

स्तालिनग्राद पूँजी की जंजीरों से मुक्त जनता की आध्यात्मिक शक्ति और

ऐतिहासिक सूझ की अभिव्यक्ति है। इतिहास के पन्नों में वह इसी रूप में अंकित किया गया।

अन्य सोवियत लोगों की भाँति इवान फ़्योदोरोविच प्रात्सेंकों भी उस घटना के असली पैमाने से वाकिफ नही हो सकता था। किन्तु वह रेडियो और लोगों की मार्फत उक्राइनी छापामार हेडक्वार्टर और दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे की सैन्य परिषद के सम्पर्क में रहता था। इसीलिए वह वोरोशीलोवग्राद क्षेत्र में दुश्मन से लड़नेवाले अन्य सोवियत लोगों की अपेक्षा सोवियत सेनाओं के आक्रमण के बारे में कहीं अधिक जानकारी रखता था।

वोरोशीलोवग्राद नगर में चार ख़ुफ़िया जिला पार्टी समितियाँ बनायी गयी थीं। प्रोत्सेंको को उन्हें सक्रिय बनाना था। यह कार्य पूरा करते ही वह वहाँ से प्रस्थान कर गया। सोवियत सेना जर्मन मोर्चे को भेदकर मध्य दोन में घुस चुकी थी, तब तक वह अपना निवास-स्थान कई बार बदल चुका था। नवम्बर के अन्त से वह मुख्यतया वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी जिलों में काम कर रहा था।

उसने अपनी सहज बुद्धि और अन्तश्चेतना के आधार पर समझ लिया कि उसकी उपस्थित उस क्षेत्र में ज़्यादा ज़रूरी है जहाँ आगे बढ़ती हुई सोवियत सेनाओं के साथ छापामार दस्तों का सैन्य समन्वय शीघ्रातिशीघ्र स्थापित किया जा सकता था।

इवान फ़्योदोरोविच ने जिस घड़ी की इतनी मुद्दत से प्रतीक्षा की थी, वह अब पास आती जा रही थी और वह घड़ी थी-छोटे-छोटे छापामार दलों को एकत्रित करके बड़े पैमाने पर अभियान चलाने की।

इस समय उसकी कार्रवाईयों का अड्डा बेलोवोदूस्क जिले के एक गाँव में मार्फा कोर्नियेंको के किसी रिश्तेदार के मकान में था। वहीं मार्फा का पति, सार्जेण्ट गोर्देई कोर्नियेंको भी ठहरा हुआ था। उसे अभी हाल ही में दुश्मानों की क़ैद से छुड़ाया गया था। कोर्नियेंको ने उस गाँव मे एक छापामार दल का संगठन किया। यह दल अपने सामान्य कार्यों के अलावा, इवान फ़्योदोरोविच की रक्षा भी कर रहा था। बेलोवोदूक्स जिले के सभी छापामार दल उसी सरकारी फार्म के डाइरेक्टर की कमान में थे, जहाँ गर्मियों में क्रास्नोदोन के गोर्की स्कूल के छात्रों ने काम किया था। इसी व्यक्ति ने बच्चों को खतरनाक क्षेत्रों से हटाने के लिए मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स को अपनी अखिरी लारी दे दी थी। प्रोत्सेंको ने उसी डायरेक्टर को निर्देश दिया कि वह बेलोवादूस्क जिले के सभी छापामारों को इकट्ठा करे और दो सौ व्यक्तियों का एक दस्ता बनाये।

मध्य दोन क्षेत्र में सावियत सेनाओं के एक नये जबर्दस्त हमले के बारे में दुनिया को मलूम होने से पहले ही, प्रोत्सेंको के रेडियो-आपरेटर को संकेतलिपि में यह खबर मिल चुकी थी कि उत्तर-पूर्व से नोवया कलीत्वा-मोनस्तीर्श्चिना क्षेत्र पर, और पूर्व से

चीर नदी पर बोकोव्स्कोये क्षेत्र में, जर्मनों का मोर्चा तोड़ दिया गया है। उसी समय इवान फ़्योदोरोविच के लिए भी यह आदेश दिया गया कि वह उत्तर में कन्तेमीरोव्का और मार्कोव्का तथा पूर्व में मील्लेरोवो, ग्लुबोकाया, कामेंस्क और लिखाया में दुश्मनों की संचार-लाइनें नष्ट करने के लिए सभी छापामारों सहित कूच कर दे। यह मोर्चे की सैन्य-परिषद का आदेश था।

"हमारी भी बारी आ गयी है," प्रोत्सेंको ने उत्साहपूर्वक कहा और रेडियो-आपरेटर को सीने से लगा लिया।

उन्होंने भाईयों की तरह एक-दूसरे को चूमा। सहसा वह रेडियो-आपरेटर से अलग हुआ और बिना ओवरकोट पहने जल्दी से बाहर निकल गया।

स्वच्छ, ठण्डी, तारों भरी रात थी। पिछले कुछ दिनों से काफ़ी बर्फ गिरी थी। गाँव की छतें तथा दूरस्थ पहाड़ियाँ बर्फ की मोटी चादर ओढ़े ऊँघ रही थीं। प्रोत्सेंको की ख़ुशी का कोई छिकाना नहीं रहा। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, जो गालों पर जमते जा रहे थे।

उसे घर पहुँचने में कोई एक घण्टा लग गया। वह अपने साथ रेडियो-आपरेटर और उसके सामान को भी लेता आया। बलवान गोर्देई कोर्नियेंकी, जिसने कई खेतिहर बस्तियों की पुलिस चौकियों का सफाया करने में भाग लिया था, कुछ ही घण्टे पहले लौटा और अब सो रहा था। किन्तु जैसे ही इवान फ़्योदोरोविच ने उसक कन्धा छुआ और उसे खबरें सुनायीं कि उसकी नींद काफूर हो गयी।

"मोनस्तीर्श्चिना के निकट!" वह कह उठा और उसकी आँखों में चमक आ गयी। "मैं उसी मोर्चे से तो आया हूँ। वहीं मुझे क़ैद किया गया... थोड़े ही दिनों में हमारी फ़ौज यहाँ भी पहुँच जायेगी। मेरी बात याद रखना।"

बूढ़ा सैनिक उत्तेजिना से सिसका और जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा।

गोर्देई कोर्नियेकों को सभी उत्तरी छापामार दलों का नायक बना दिया गया। उसे तुरन्त ही मोर्कोव्का-कान्तेमीरोव्का क्षेत्र के लिए कूच कर देना था। प्रोत्सेंको को रेडियो-आपरेटर और दो छापामारों सहित गोरोदीश्ची गाँव में पहुँचना था, जो सकरारी फार्म के डाइरेक्टर और उसके दस्ते की कार्रवाइयों का अड्डा था-अब समय आ गया, जब प्रोत्सेंको को स्थायी रूप से दस्ते के ही साथ रहना चाहिए।

प्रोत्सेंको ने अपनी पत्नी की सहेली, माशा शूविना को भी वोरोशीलोवग्राद से अपने साथ ले लिया। माशा प्रोत्सेंको की स्थायी सन्देशवाहिका बनी रही। जैसी कि प्रोत्सेंको ने आशा की थी, माशा बड़ी ही कर्त्तव्यनिष्ठ वीरांगना साबित हुई। वह उन शालीन व्यक्तियों में से थी, जिन्हें जन्मजात संगठनकर्ता की अनुभवी आँखें ही परख सकती है। किन्तु एक बार चुन लिये जाने पर ऐसे लोग कल्पनातीत सामर्थ्य का

परिचय देते हैं और सारे व्यावहारिक कार्यों को अपने जिम्मे ले लेते हैं। ऐसे लोगों के बिना सबसे आवश्यक कार्य भी अधूरे रह जाते हैं।

माशा शूबिना को दम लेने की फुरसत नहीं मिलती थी। उसके साथियों को ऐसा लगता था कि माशा कभी सोयी भी नहीं थी।

इस औरत के दिल में कार्य के प्रति उत्साह कूट-कूटकर भरा था। व्यक्तिगत रूप से उसकों एक ही बात से राहत मिलती थी कि वह अकेली नहीं है। हाँ, अपनी सहेली कात्या के साथ अब उसका सीधा सम्पर्क न था। किन्तु माशा जानती थी कि उसकी सच्ची सहेली कहीं पास ही रह रही है और वह भी एक साझे ध्येय की प्राप्ति में लगी हुई है। इवान फ़्योदोरोविच को माशा पर पक्का विश्वास था। इस विश्वास के बदले वह उस पर अपने प्राण तक निछावर कर सकती थी।

इस समय बहुत ही महत्वपूर्ण घटनाएँ हो रही थीं, जिनके विकास में प्रोत्सेंको ने अपनी योग्यता का भरपूर योग दिया था। उन्हीं घटनाओं के चिन्तन में डूबे हुए वह माशा को आख़िरी निर्देश दे रहा था :

"मार्फा के यहाँ तुम्हें मित्याकिन्स्काया दस्ते का कमाण्डर मिलेगा। उसके कार्यक्षेत्र में वे सड़कें शामिल हैं, जो ग्लुबोकाया और कामेंस्क जाती हैं। उससे कहना कि तुरन्त रवाना हो जाये और रात-दिन कार्रवाइयाँ करता रहे, ताकि दुश्मन को साँस लेने का मौक़ा तक न मिले मार्फा से कहना कि कात्या अध्यापिका की नौकरी छोड़-छाड़कर यहाँ चली आये..."

"यहाँ, इस मकान में?" माशा ने पूछा।

"हाँ... और तुम बिना समय बरबाद किये क्सेनिया क्रोतोवा से मिलना। तुम उसे ढूँढ़ सकती हो न?"

"ढूँढ़ लूँगी।"

जिस समय प्रोत्सेंकों ने माशा को उसकी ड्यूटी समझायी थी, उस समय उसने उसे एक पता दिया था-डॉक्टर वलेन्तीना कोतोवा, उपचार केन्द्र, ग्राम उस्पेंका। वेलेन्तीना की बहन, क्सेनिया, इस समय प्रोत्सेंको की पत्नी कात्या और दोनेत्स के दक्षिण में स्थित समस्त जिला पार्टी समितियों के बीच सन्देशवाहिका के रूप में काम कर रही थी।

"क्सेनिया से कहना : अब कार्रवाई के इलाके लिखाया, शाख़्ती, नोवोचेर्कास्का, रोस्तोव और तगनरोग जानेवाली सड़कें होंगे," प्रोत्सेंको कहता गया, "कार्रवाइयाँ रात-दिन चलनी चाहिए, ताकि दुश्मन को साँस लेने का भी मौक़ा न मिले। मोर्चे के निकटवर्ती क्षेत्रों पर क़ब्ज़ा करके दुश्मन को उलझा दिया जाये। अब तो कात्या का मुख्य सम्पर्क-पता बन्द किया जाता है। अब से मुख्य सम्पर्क पता है-मार्फा के

घर पर। संकेत शब्द भी नया है," उसने माशा के कान में कुछ कहा। "भूलोगी तो नहीं?"

"नहीं।"

वह कुछ सोचकर बोला :

"बस इतना ही।"

"इतना ही?" माशा ने आँखें उठाकर उसकी ओर देखा। उसके प्रश्न का असली अर्थ था, "और मेरे लिए भी कुछ?"

प्रोत्सेंको की याददाश्त अच्छी थी। अतः उसने मन ही मन सोचा कि कहीं उसने कोई बात छोड़ तो नहीं दी और तभी उसे याद आया कि उसने माशा के लिए कोई निर्देश दिया ही नहीं।

"हाँ...आज से तुम क्सेनिया के अधीन काम करोगी। तुम दोनों का मार्फा के साथ सम्पर्क रहेगा। हाँ, उससे मेरी ओर से यह भी कह देना कि वह तुम्हें कहीं दूसरी जगह न भेजे।"

माशा ने आँखे नीची कर लीं। उसने कल्पना की कि वह अकेली जा रही है और उन जगहों से दूर होती जा रही है, जहाँ किसी भी दिन सोवियत सेना आ सकती है। हाँ, कुछ ही दिनों में जिस जगह वह प्रोत्सेंको के साथ खड़ी है, वहाँ दुश्मन का एक भी सैनिक न रह जायेगा। जिस उज्जवल संसार की वे इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसके लिए उन्होंने अपनी ज़िन्दगी की बाजी लगा दी, वह शीघ्र ही अवतरित होगा।

"अच्छा तो माशा," प्रोत्सेंको बोला, "अब तो न मेरे पास समय है, न तुम्हारे पास...तो तुम्हें बहुत-बहुत धन्यावाद..."

उसने माशा को कसकर गले लगाया और उसके होंठ चूम लिये। एक क्षण के लिए वह उसकी बाँहों में निश्चेष्ट पड़ी रही।

जब वह घर से बाहर निकली, तो जर्मन अधिकृत प्रदेशों में रहने वाली ग़रीब से ग़रीब औरतों की तरह कपड़े पहने और कन्धे पर थैला लटकाये थी। इवान फ़्योदोरोविच उसे दरवाज़े तक छोड़ने नहीं आया। अभी भोर होने में काफ़ी देर थी। उसके पैरों तले बर्फ़ कड़कड़ा रही थी। उसके चेहरे पर तरुणाई की झलक आ गयी थी। यह मामूली-सी किन्तु दृढ़-संकल्पवाली औरत अपने लम्बे और एकाकी रास्ते पर बढ़ती जा रही थी।

कुछ समय बाद प्रोत्सेंको भी अपनी छोटी-सी टोली के साथ बाहर निकल गया। सुबह शान्त थी और चारों ओर पाला पड़ा था। पृथ्वी और आकाश सुनसान थे-हवा की सरसराहट तक सुनायी नहीं दे रही थी। जहाँ तक नज़र जाती थी, हर चीज़ बर्फ

की मोटी-सी चादर के नीचे सो रही थी। इवान फ़्योदोरोविच इस निस्सीम क्षेत्र को पार कर रहा था। उसका उफनता हुआ हृदय विजय के उल्लास से नाच रहा था।

कोई पाँच दिन बाद एक छापामार, गहरी रात गये प्रोत्सेंका की पत्नी कात्या को उस जगह लाया, जहाँ प्रोत्सेंका गोरोदीश्ची के निकट एक सुनसान घर में उसका इन्तज़ार कर रहा था। उस विशाल प्रदेश में घमासान लड़ाइयाँ हो रही थीं, जिनकी भयंकर गरज से ज़मीन और आसमान दोनों काँपने लगे थे। बारूद से काला हो गया प्रोत्सेंको, बैठा-बैठा अपनी पत्नी का सुन्दर मुखड़ा निहार रहा था।

चारों ओर खलबली मची हुई थी। रात में प्रकाश-राकेटों की चमक और तोपों से निकलनेवाली आग मीलों तक दिखायी पड़ती थी। टैंकों और विमानों की घमासान लड़ाइयाँ चल रही थीं। प्रोत्सेंको के दस्ते के लोगों को पता था कि गार्ड्स की उपाधि प्राप्त टैंक दस्ता दुश्मनों का घेरा तोड़ता हुआ उनसे मिलने आ रहा है, अतः यह भ्रम उनके दिमाग से टूटता ही न था कि वे युद्धरत टैंकों की धमक सुन रहे हैं। आसमान में बहुत ऊपर युद्धरत सोवियत और शत्रु के विमान सफ़ेद धारियाँ छोड़ते जा रहे थे।

जर्मन सेना की रसद टुकड़ियाँ अस्त-व्यस्त दशा में पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम की ओर पक्की सड़कों पर रेंगती चली जा रही थीं। अनगिनत कच्ची सड़कों पर प्रोत्सेंको के आदमियों का अधिकार था। जैसा घोर पराजय के समय प्रायः होता है, जर्मनों की सभी सेनाएँ, जिनमें मुकाबिला करने की कुछ भी शक्ति रह गयी थी, तेजी से आगे बढ़ते हुए सोवियत सेनिकों से जूझ रही थीं। ऐसे नाजुक समय में वे छापामारों से भला कैसे मार्चा ले सकती थीं!

छोटे-बड़े, सभी आबादीवाले इलाकों में, और खासकर उत्तरी दोनेत्स में गिरनेवाली कमीश्नाया, देर्कूल और येवसूग नदियों के किनारे-किनारे पहले से ही स्थायी किलेबन्दी की जा चुकी थी। हालाँकि सोवियत सेनाएँ ऐसे स्थानों को घेरकर आगे बढ़ चुकी थीं, फिर भी वहाँ भयानक लड़ाइयाँ लड़ी जा रही थीं। जर्मन सैनिकों को हिटलर का यह आदेश मिला था कि वे न तो पीछे हटें और न आत्मसमर्पण ही करें। जहाँ तक भागते हुए जर्मन सैनिकों का सवाल है, वे छापामारों का शिकार बन रहे थे।

सोवियत सेना के आक्रमण की रफ़्तार का अन्दाज़ इस बात से भी लग सकता था कि जर्मनों के पृष्ठवर्त्ती हवाई अड्डे, जो कई महीनों से बेकार पड़े थे, अब पाँच दिनों के अन्दर-अन्दर असाधारण रूप से सक्रिय हो उठे थे और सोवियत वायु-सेना की भयंकर मार का निशाना बन रहे थे। जर्मनों ने शीघ्र ही अपने भारी बमवर्षकों को काफ़ी पीछे के अड्डों से हटा लिया था।

पति-पत्नी उस सुनसान घर में बैठे थे। कात्या का चेहरा अब भी लाल हो रहा

था। उसने भेड़ की खालवाला अपना कोट उतार लिया। कम सोने के कारण प्रोत्सेंको का चेहरा भारी लग रहा था, किन्तु उसकी आँखों में शरारत की चमक आ गयी। उसने उक्राइनी भाषा में कहा :

"हमें गार्ड्स टैंक कोर के राजनीतिक विभाग द्वारा जो कुछ भी करने की सलाह दी गयी थी, वह सब कुछ हम कर रहे हैं, और ठीक से कर रहे हैं," वह हँस पड़ा। "कात्या, एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम है, मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है। तुम तो अनुमान लगा ही सकती हो कि काम कौन-सा होगा?"

वह अब भी उसके प्रथम उद्वेगपूर्ण आलिंगन का और अपनी आँखों पर उसके चुम्बनों का अनुभव कर रही थी। कात्या की आँखें अब भी भीगी थीं और चमक रही थीं, क्योंकि वे इवान फ़्योदोरोविच पर जमी थीं। किन्तु प्रोत्सेंको इस समय सिर्फ़ काम की ही बात कह सकता था, वह जो उसके दिमाग पर छायी हुई थी। कात्या तुरन्त ही अपने बुलाये जाने का कारण भाँप गयी। वस्तुतः अनुमान लगाने की कोई भी ज़रूरत न थी। कुछ ही घण्टों में वह फिर उसे छोड़कर चली जायेगी। कहाँ जायेगी, यह वह जानती थी। पर कहाँ से वह जानती थी, यह बात वह स्वयं समझा नहीं सकती थी। वह उसे प्यार जो करती थी। येकेतेरीना पाव्लोव्ना ने हामी भरते हुए अपना सिर हिला दिया और फिर अपनी गीली चमकती हुई आँखें उस पर गड़ा दीं।

प्रोत्सेंको उछलकर खड़ा हो गया। उसने पहले यह देखा कि दरवाज़ा अच्छी तरह बन्द है या नहीं। उसके बाद मैपकेस में से कुछ महीन कागज निकाल लिये।

"देखो..." उसने यह पन्ने मेज पर बड़ी सावधानी से फैला दिये, "मैंने सब कुछ संकेतलिपि में लिख दिया है। पर नक्शे को तो संकेतलिपि में नहीं दिखाया जा सकता।"

हर कागज के दोनों ओर बहुत महीन पेंसिल से बारीक अक्षर लिखे थे। एक कागज पर वोरोशीलोवग्राद प्रदेश का बढ़िया नक्शा खिंचा था, जिस पर वर्ग, छोटे वृत्त और त्रिकोण बने थे। इस काम में कितना श्रम लगाया गया, इसका पता इस बात से लग सकता था कि सबसे बड़ा चिह्न खटमल से बड़ा न था और सबसे छोटा पिन के सिरे जितना। इन पन्नों में वह सारी सूचना अंकित थी, जो पिछले पाँच महीनों से एकत्र की गयी थी और जिसकी अच्छी तरह जांच की जा चुकी थी। नयी सूचनाओं का ब्योरा भी इनके साथ दिया गया था। इस लेख में जर्मन प्रतिरक्षा के मुख्य मोर्चों, किलेबन्दी के स्थानों, तोपें रखने की जगहों, हवाई अड्डों, विमानमार तोपें और लारियाँ रखने की जगहों की पूरी सूची थी। साथ ही उसमें जर्मन सैनिकों की संख्या और शस्त्रास्त्रों के परिमाण आदि के भी ब्योरे थे।

"उनसे कह देना कि वोरोशीलोवग्राद में और दोनेत्स के किनारे-किनारे बहुत-से

परिवर्तन देखने में आयेंगे, जो दुश्मनों ने अपने मोर्चे को मजबूत बनाने के लिए किये होंगे। बाक़ी सब कुछ वैसा ही होगा, जैसा मैंने लिखा है। यह भी बता देना कि मिऊस नदी की बड़ी मजबूती से किलेबन्दी की जा रही है। वे इसका निष्कर्ष स्वयं ही निकाल लेंगे। मैं उन्हें क्या सिखाऊँगा! हाँ, यह मैं तुमसे ज़रूर कह सकता हूँ कि यदि वे मिऊस की किलेबन्दी कर रहे हैं तो इसके माने यह हैं कि हिटलर को यह विश्वास नहीं कि उसकी फ़ौज रोस्तोव को अपने हाथ में रख सकेगी। समझीं?"

इवान फ़्योदोरोविच बड़ी ख़ुशी से खुलकर हँस पड़ा, इस तरह वह अपने परिवार में और खास तौर से बाल-बच्चों के बीच उस समय हँसता था, जब वह काम में व्यस्त न होता था। एक क्षण के लिए वे दोनों भूल गये कि उनके आगे कैसी-कैसी कठिनाइयाँ होंगी। प्रोत्सेंको ने कात्या का मुँह अपने हाथों में ले लिया और तनिक पीछे को हटकर, वात्सल्यपूर्ण आँखों से उसको निहारते हुए फुसफुसाया :

"आह, मेरी प्यारी, मेरी जान...हाँ," वह ख़ुशी से झूम उठा। "सबसे ज़रूरी खबर-मैंने तुम्हें सुनायी ही नहीं-हमारी सेना उक्राइन में घुस आयी है। देखो।"

अपने बस्ते में से उसने एक बड़ा-सा फ़ौजी नक्शा निकाला, जो कई टुकड़ों में गोंद से जुड़ा था। उसने नक्शा मेज पर फैला दिया। सबसे पहले कात्या की निगाह वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तर-पूर्व के सीमावर्त्ती भागों में स्थित कई बस्तियों पर पड़ी, जिन्हें लाल, नीली पेंसिल से घेर दिया गया था। इन स्थानों को सोवियत सेनाएँ मुक्त कर चुकी थीं। कात्या का दिल बल्लियों उछलने लगा-आख़िर कुछ बस्तियाँ गोरोदीश्ची के बिलकुल निकट थीं।

उन्हीं दिनों महान स्तालिनग्राद युद्ध का दूसरा और तीसरा चरण जारी था। अभी स्तालिनग्राद में जर्मन सेनाओं के इर्द-गिर्द दूसरा घेरा पूरी तरह कस न पाया था। पर उसी रात खबर आयी कि घेरे में पड़ी जर्मन सेनाओं की मदद करने के लिए बढ़ती हुई टुकड़ियों को कोतेल्निकोवो क्षेत्र में बुरी तरह से परास्त किया जा चुका है और उत्तरी काकेशिया मे सोवियत सेना ने हमला कर दिया है।

"हमारी टुकड़ियों ने लिखाया से स्तालिनग्राद जानेवाली रेलवे लाइन को दो स्थानों पर काट दिया है-यहाँ चेर्निशेव्स्काया में और तत्सींस्काया में," प्रोत्सेंको बड़े उत्साह से बोल रहा था, "किन्तु मोरोजोव्स्की अब भी जर्मनों के अधिकार में है। और यहाँ, कलीत्वा नदी के किनारे-किनारे की सभी बस्तियाँ अब हमारे हाथों में हैं। हमारी सेनाएँ मील्लेरोवो-वोरोनेज रेलवे लाइन को पार करते हुए, कन्तेमीरोव्का के उत्तर में यहाँ तक आ गयी हैं, पर मील्लेरोवो अब भी जर्मनों के हाथ में है। और वहाँ उन्होंने बहुत जबर्दस्त किलेबन्दी की है। पर लगता है जैसे हमारी सेनाएँ दूसरे रास्ते से होकर निकल आयी हैं-देखो न टैंक कितनी दूर तक चले आये हैं..." हम नक्शे पर

कमीश्नाया नदी के किनारे-किनारे उँगली चलाते-चलाते मील्लेरोवो के पश्चिम में एक स्थान पर रुक गया और कात्या की ओर देखने लगा।

वह बड़े ध्यान से नक्शे की ओर देख रही थी, खासकर गोरोदीश्ची के निकटवर्त्ती स्थानों की ओर। उसकी आँखों में प्रतिशोध का भाव आ गया। इसका कारण इवान फ़्योदोरोविच जानता था, और उसने कुछ भी न कहा। कात्या ने नक्शे पर से अपनी आँखें उठायीं। इवान फ़्योदोरोविच ने एक आह भरी और महीन कागज पर बना हुआ नक्शा बड़े फ़ौजी नक्शे पर रख दिया।

"इसे अच्छी तरह देख लो। तुम्हें यह सब याद रखना होगा, क्योंकि रास्ते में यह नक्शा फिर तुम्हें देखने को न मिलेगा..." वह बोला। "यह कागज इस तरह छिपा लेना कि किसी भी क्षण उन्हें निकालकर निगल सको और हाँ, अब अपना नया परिचय भी याद रखना। तुम होगी एक शरणार्थी, चीर नदी के तटवर्ती इलाकों में काम करनेवाली अध्यापिका, लाल सैनिकों से पीछा छुड़ाने के लिए भागी हुई एक अबला। जर्मनों और पुलिसवालों से तुम यही कहना। स्थानीय निवासियों को यह बताना कि तुम चीर की रहनेवाली हो और स्तारोवल्स्क में अपने रिश्तेदारों के पास जा रही हो, क्योंकि तुम्हारे लिए अकेले जीना मुश्किल हो गया। अच्छे लोग तुम्हारी दुर्दशा पर दुख प्रगट करेंगे, तुम्हें पनाह देंगे और बुरे लोग भी नहीं दुतकारेंगे," प्रोत्सेंको ने अपनी पत्नी की ओर देखे बिना, विनम्र स्वर में कहा, "याद रखना, जिस अर्थ में हम मोर्चे को समझते हैं, वैसा कोई मोर्चा अब नहीं रहा। हमारे टैंक इधर-उधर बढ़े रहे हैं। जर्मनों की किलेबन्दियों से दूर रहो। किन्तु तुम्हें रास्ते में भी जर्मन मिल सकते हैं, जिनसे खास तौर से होशियार रहना है। जब तुम इस रेखा पर पहुँच जाओ, तो रुककर हमारी फ़ौज का इन्तज़ार करना। देखों मैंने यहाँ नक्शे में कुछ भी नहीं दिखाया है, क्योंकि हमें इस क्षेत्र के बारे में कोई सूचना नहीं मिली। और तुम किसी पूछ भी नहीं सकोंगी। ऐसा करना खतरनाक होगा। किसी अकेली बुढ़िया या विधवा के साथ टिक जाना। अगर लड़ाई बिलकुल सिर पर आ जाये, तो तहखाने में घुसकर बैठी रहना. .."

कात्या से यह सब कहने की कोई खास ज़रूरत न थी, किन्तु वह उसकी सहायता करना चाहता था। वह केवल सलाह ही दे सकता था। अगर वह उसकी जगह ख़ुद गया होता, तो उसे कितनी प्रसन्नता हुई होती!

"जैसे ही तुम यहाँ से चल दोगी, मैं अपने लोगों को इसकी खबर दे दूँगा। और यदि तुमसे कोई मिलने न आये, तो जो भी लाल सैनिक तुम्हें मिले, उससे कहना कि वह तुम्हें टैंक कोर के राजनीतिक विभाग तक पहुँचा दे..." उसकी आँखों में सहसा शरारत की चमक आ गयी। "और जब तुम राजनीतिक विभाग में पहुँच

जाओगी, तो यह न भूलना कि तुम्हारा एक पति भी है। वे मुझे इस बात की खबर कर दें कि तुम सुरक्षित पहुँच गयीं।"

"मैं उनसे यह तो ज़रूर कहूँगी, बल्कि यह भी कहूँगी, 'या तो तुम लोग अपनी रफ़्तार बढ़ाओ और मेरे पति को छुड़ा लो या फिर मुझे ही जल्दी से उसके पास जाने दो,'" कात्या बोली और हँस दी।

प्रोत्सेंको किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया।

"मैं इस प्रसंग को उठाना ही नहीं चाहता था, लेकिन अब देखता हूँ कि उठाना ही पड़ेगा," वह बोला। उसका चेहरा गम्भीर हो उठा। "हमारी फ़ौजें चाहे जिस गति से भी आगे क्यों न बढ़ें, मैं उनकी प्रतीक्षा नहीं करूँगा। हमारा कार्य जर्मनों के साथ-साथ पीछे हटना है। जब तक आख़िरी जर्मन हमारे वोरीशीलोवग्राद प्रदेश से नहीं खदेड़ दिया जाता, तब तक मैं उनसे लड़ता रहूँगा। अन्यथा हमारे ख़ुफ़िया लड़ाके और स्तारोबेल्स्क, वोरोशीलोवग्राद, क्रास्नोदोन, रुबेजान्स्क और क्रास्नी लूच के हमारे छापामार मेरे बारे में क्या कहेंगे? और तुम्हारे लौट आने की कोई ज़रूरत नहीं। मेरी बात सुनो।" प्रोत्सेंको ने कात्या की ओर झुककर, उसकी नाजुक उँगलियों को अपने कड़े हाथों में लेते हुए कहा : "कोर के साथ न रहना। वहाँ तुम्हारे लायक कोई काम नहीं। उनसे कहना कि वे तुम्हें बच्चों से मिलने की अनुमति दें। इसमें शर्माने की कोई बात नहीं। वस्तुतः हम यह नहीं जानते कि हमारे बच्चे हैं कहाँ-सरातोव में या कहीं और?"

कात्या उसकी ओर चुपचाप देख रही थी। रात में दूर कहीं हो रही लड़ाई की गरज उस छोटे-से मकान को हिलाये दे रही थी।

प्रोत्सेंको का हृदय अपनी प्रिय पत्नी के प्रति प्रेम और सहानुभूति से विभोर हो उठा। अकेला वही जानता था कि कात्या कितनी विनम्र, कितनी नेक थी, कितने धैर्य से वह सभी खतरों, कष्टों और अपमानों पर विजय प्राप्त करती थी। उसे इच्छा हुई कि वह कात्या को दूर ले जाये, जहाँ लोग आज़ादी से रहते हों, जहाँ सुख हो, सद्भावना हो, बच्चे हों। पर कात्या तो दूसरी ही बात सोच रही थी।

वह अपने पति के चेहरे पर से अपनी आँखें न हटा सकी। उसने अपना हाथ छुड़ाया और धीरे-धीरे पति के सुनहरे बालों पर फेरा। पिछले कुछ महीनों में उसके बाल कनपटियों के और भी पीछे हट गये थे, फलतः उसका ललाट और भी ऊँचा लगने लगा था। वह कोमल स्वर में बोली :

"बोलो मत, कुछ मत कहो... मैं सब कुछ ख़ुद जानती हूँ। वे जैसा उचित समझें, मुझसे काम लें। कुछ भी हो, मैं यह कभी न कहूँगी कि मुझे कहीं भेज दिया जाये। जहाँ तक सम्भव होगा, मैं तुम्हारे निकट रहूँगी।"

उसने कुछ आपत्ति करनी चाही, किन्तु सहसा उसके चेहरे का तनाव दूर हो गया, उसने कात्या के दोनों हाथ पकड़े और उनसे अपना चेहरा ढाँप लिया।

तत्पश्चात उसने अपनी नीली आँखें उसकी आँखों में डालते हुए धीरे-से कहा :

"कात्या..."

"हाँ, समय हो गया," उसने कहा और उठ खड़ी हुई।

अध्याय 19

कात्या के साथ पड़ोस के गाँव का एक बूढ़ा गया। लोग उसे बूढ़ा फोमा कहते थे। वह भालू की तरह विशालकाय था। यात्रा के आरम्भ में कात्या और बूढ़े फोमा को आपस में कुछ बातचीत करने का मौक़ा मिला, तो कात्या को पता चल गया कि उसका नाम कोर्नियेंको है। वह गोर्देई कोर्नियेंको का एक दूर का रिश्तेदार था।

आगे चलकर कोई बातचीत न हुई।

दोनों रात भर देहात की सड़कों पर अथवा स्तेपी में चलते रहे। ज़मीन पर पड़ी बर्फ गहरी न थी, अतः चलना आसान था। समय-समय पर लारियों-मोटरों की बत्तियों का प्रकाश दिखायी पड़ता था। सड़कें दूर थीं, फिर भी उनहें कारों की घरघराहट सुनायी दे रही थी। मील्लेरोवो क्षेत्र में परास्त की गयी जर्मन टुकड़ियाँ दक्षिण की ओर हट रही थीं। और उत्तर में अन्य जर्मन फ़ौजें भाग रही थीं, जिन्हें वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के वरान्निकोव्को गाँव से खदेड़ा जा रहा था।

कात्या और बूढ़ा फोमा पूर्व की ओर बढ़ रहे थे, किन्तु अकसर उन्हें गाँवों और गुमटियों की वजह से अपना रास्ता बदलना पड़ता था। कात्या को लग रहा था जैसे यह सड़क समाप्त ही न होगी, जब कि वे धीरे-धीरे रण-क्षेत्र के निकट पहुँचते जा रहे थे-तोपों के धमाके अब ज़ोरों से सुनायी पड़ने लगी और छूटते हुए गोलों से निकलनेवाली आग साफ़-साफ़ दिखायी दे रही थी। प्रातः काल बर्फ गिरने लगी, जिससे सभी ध्वनियाँ दब-सी गयीं और हर चीज़ निगाह से छिप गयी।

कात्या की पीछ पर सफरी झोला लटक रहा था। उसका सारा बदन बर्फ से ढंक गया। वह शरणार्थियोंवाले फेल्ट के जर्जर बूट पहने अपने रास्ते पर बढ़ती जा रही थी। उसे लग रहा था कि उसके आस-पास की हर चीज़ मायावी है-समूर की कनटोपी पहने बूढ़े फोमा की विशाल आकृति भी, उनकी पदचापें भी, और उनकी आँखों के आगे गिरती हुई मुलायम बर्फ भी। उसका मस्तिष्क शिथिल हो रहा था, वह एक प्रकार

से अर्द्ध निद्रा में निमग्न हो गयी। सहसा बूढ़ा फोमा रुक गया। कात्या के दिमाग में विचार कौंध गया-इसी जगह उन्हें एक-दूसरे से अलग होना है।

बूढ़ फोमा ने उसे चिन्ता और सहानुभूति की दृष्टि से देखा और अपने साँवले हाथ से गाँव को जानेवाली सड़क की ओर इशारा किया। सुबह का उजाला फैलने लगा। बूढ़े ने अपने बड़े-बड़े हाथ कात्या के कन्धों पर रखे, उसे अपने पास खींच लिया और फुसफुसाते हुए बोला :

"और पाँच सौ गज चलना है। समझीं?"

"अच्छा तो विदा," वह फुसफुसायी।

वह कुछ क़दम चली और मुड़कर देखने लगी। फोमा कोर्नियेंको अब भी सड़क पर खड़ा था। कात्या ने समझ लिया कि वह तब तक वहाँ खड़ा रहेगा, जब तक वह उसकी आँखों से ओझल न हो जायेगी। पचास गज आगे बढ़ने के बाद भी उसे बूढ़े की बर्फ़ से ढँकी आकृति दिखायी दे रही थी। किन्तु जब वह तीसरी बार मुड़ी, तो बूढ़ा फोमा आँखों से ओझल हो चुका था। यह अन्तिम गाँव था, जहाँ कात्या किसी की मदद की आशा कर सकती थी। गाँव के पूर्व में ऊँची-ऊँची किलेबन्दियाँ बनायी गयी थीं, जो जर्मनों की प्रतिरक्षा पंक्ति का अंग मात्र थीं। प्रोत्सेंको ने कात्या को पहले ही बता दिया था कि गाँव के सबसे आरामदेह मकानों पर किलेबन्दी का संचालन करनेवाले जर्मन अफ़सरों ने क़ब्ज़ा कर रखा है। उसने अपनी पत्नी को आगाह कर दिया था कि यदि गाँव में कमीश्नाया नदी की प्रतिरक्षा-पंक्ति से खदेड़ी गयी टुकड़ियों ने पनाह ले रखी हो, तो कात्या के लिए स्थिति जटिल भी हो सकती है। यह नदी दोनेत्स की एक सहायक नदी देर्कूल में गिरती थी। यह नदी रोस्तोव प्रदेश की सीमा के पास उत्तर से दक्षिण की ओर और कन्तेमीरोव्का-मील्लेरोवो रेलमार्ग के समानान्तर बहती थी। कात्या को कमीश्नाया के किनारे स्थित एक गाँव में जाकर वहाँ सोवियत फ़ौज के आने का इन्तज़ार करना था।

उसे बर्फ के आवरण में से गाँव के पहले मकान की धूमिल आकृति-सी दिखायी देने लगी। वह मकानों की छतों पर निगाह रखे-रखे सड़क से हट गयी और खेतों से होकर जाने लगी। उसे तीसरे मकान में जाना था। दिन निकलने को था। वह उस छोटे-से मकान के पास पहुँची और झिलमिली से कान सटाकर कुछ सुनने की कोशिश की। भीतर सन्नाटा था। उसने खिड़की को खटखटाया नहीं, बल्कि प्राप्त निर्देश के अनुसार उसे केवल हाथ से खुरचा।

काफ़ी देर तक उसे कोई उत्तर न मिला। उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। सहसा भीतर से किसी किशोर की धीमी-सी आवाज़ आयी। वह फिर हाथ से खिड़की को खुरचने लगी। मिट्टी के फर्श पर चलते छोटे पैरों की आहट सुनायी दी फिर दरवाज़ा

खुला। कात्या अन्दर आयी। कमरे में घुप अँधेरा था।

"कहाँ से आ रही हैं आप?" एक बच्चे ने धीरे-से उक्राइनी में पूछा।

कात्या ने वही शब्द कहे जो पहले से तय हो चुके थे।

"माँ, सुन रही हो न?" बालक बोला।

"चुप..." एक औरत की फुसफुसाहट सुनायी दी। "तुम रूसी नहीं जानते क्या? यह तो रूसी है। मेहरबानी करके अन्दर आयें और यहाँ बिस्तर पर बैठें। साशा, इन्हें अन्दर ले आओ..."

बालक कात्या का हाथ थामकर उसे अपने साथ ले गया।

"जरा ठहरो," कात्या बोली, "मैं अपना कोट उतार लूँ।"

किन्तु उस स्त्री ने कात्या का हाथ पकड़ा और उसे बिस्तर के पास खींच लिया।

"आप ऐसे ही बैठ जाइये। यहाँ सर्दी है। आपको कोई जर्मन गश्ती सैनिक तो नहीं मिला?" उस औरत ने पूछा।

"नहीं।"

कात्या ने अपना सफरी झोला और शाल उतारकर बर्फ झाड़ी। इसके बाद उसने भेड़ की खाल के कोट के बटन खोले और उस औरत की बगल में बिस्तर पर बैठ गयी। बालक भी बिस्तर पर चढ़कर अपनी माँ से सट गया।

"गाँव में बहुत-से जर्मन हैं क्या?" कात्या ने पूछा।

"दरअसल बहुत तो नहीं हैं। अब जर्मन गाँव में नहीं, बल्कि दूर के तहखानों में सोते हैं।"

"तहखानों में," बालक ने दाँत निकाले, "तुम्हारा मतलब है खाइयों में।"

"एक ही बात है। उनका कहना है कि शीघ्र ही कुमक आनेवाली है, क्योंकि वे यहाँ के मोर्चे पर जमे रहेंगे।"

"आपका नाम गलीना अलेक्सेयेव्ना तो नहीं है?" कात्या ने उससे पूछा।

"गाल्या ही कहिये। मैं कोई बुढ़िया नहीं हूँ। मेरा पूरा नाम है गाल्या कोर्नियेंको।"

कात्या को बताया गया था कि उसकी भेंट एक और कोर्नियेंको से होगी।

"क्या आप मोर्चा पार करना चाहती हैं?" बच्चे ने धीरे-से पूछा।

"हाँ। यह सम्भव तो है न?"

लड़का कुछ चुप रहा, फिर गूढ़ भाव से बोला :

"कुछ लोग तो पार कर चुके हैं..."

"अभी हाल ही में?"

लड़के ने कोई जवाब न दिया।

"मैं आपको किस नाम से पुकारूँ?" उस औरत ने पूछा।

“पासपोर्ट में तो मेरा नाम वेरा लिखा है।”

“तो वेरा ही सही। यहाँ के लोगों पर विश्वास किया जा सकता है। कुछ भी हो, आपके बारे में कोई मुखबिरी नहीं करेगा। अगर कोई गद्दार हो, तो भी इस समय हिम्मत नहीं कर कर सकता।” वह औरत बोली और धीरे-से हँस दी। “सभी जानते हैं कि शीघ्र ही हमारी फ़ौज आ धमकेगी... अब कपड़े उतारकर बिस्तर पर लेट जाइये। मैं आपको कुछ ओढ़ा दूँगी, जिससे कुछ गरमाहट आ जायेगी। मैं अपने बेटे के साथ सोती हूँ, इसलिए हमें ठण्ड की फिक्र नहीं।”

“मैं आपका ओढ़ना-बिस्तर नही छीन सकती! नही, नहीं,” कात्या जोश में आकर बोली। “मैं बेंच या फर्श पर लेट सकती हूँ। कुछ भी हो, रात मुझे पलकों में बितानी है।”

“आप आराम से सो लीजिये। हमें वैसे ही जल्दी उठने की आदत है।”

उस घर में सचमुच बहुत सर्दी थी। जाड़ों के आरम्भ से उसे कभी गर्म नहीं किया गया। यह बिलकुल स्पष्ट था। कात्या को पता था कि जर्मनों के कारण ही घरों को गरम रखने की व्यवस्था नहीं है। वह तो इस विचार की जैसे आदी हो चुकी थी। गाँव वाले चैलियाँ या घास-फूस जलाकर ही रूखा-सूखा भोजन बना लेते थे।

कात्या अपना कोट और फेल्ट के बूट उतारकर लेट गयी। औरत ने उसके ऊपर एक दुलाई डाल दी और ऊपर से भेड़ की खाल का कोट भी। कात्या को तुरन्त नींद आ गयी।

उसकी आँखें तेज और भयानक धमाके से खुल गयीं। वह उनींदी-सी उठ बैठी और तभी उसे कई भयानक विस्फोटों के धमाके सुनायी दिये। उसने इंजनों की भनभनाहट भी सुनी। विमान एक के बाद एक बहुत निचाई पर उड़ चले। कात्या को समझने में देर नहीं हुई कि ये ‘इल्यूशिन’ विमान थे।

“ये हमारे विमान हैं,” वह बोली।

“हाँ, हमारे ही,” खिड़की के पास बेंच पर बैठे लड़के ने संक्षिप्त रूप में कहा।

“साशा, अपने कपड़े पहन लो, और वेरा, आप भी। यहाँ मत बैठना, ये विमान बेशक हमारे ही हैं। लेकिन अगर वे यहाँ बम बरसाने लगे, तो फिर आप बिस्तर से कभी न उठ सकेंगी!” गाल्या बोली। वह कमरे के बीचोंबीच, हाथ में एक झाडू लिये नंगे पैर खड़ी थी। उसकी बाँहें भी नंगी थीं। लड़के ने भी बहुत कम कपड़े पहन रखे थे।

“ये यहाँ कुछ नहीं गिरायेंगे,” लड़का अपनी बुद्धिमानी का परिचय देते हुए बोला। “वे किलेबन्दीवाली जगहों पर बमबारी कर रहे हैं।”

“हमारे ‘इल्यूशिन’ विमान और इस भयानक मौसम में! कात्या चिन्तित स्वर

में बोली।

"खराब मौसम कल रात को था," लड़के ने कात्या को खिड़की के सर्द पल्ले पर आँखें गड़ाये देखकर कहा। "इस समय तो मौसम अच्छा है। बेशक धूप नहीं है, पर बर्फ भी नहीं पड़ रही है..."

अध्यापिका के रूप में कात्या को इस किशोर के हमउम्रों से अनेकों बार साबिका पड़ा था। उसने समझ लिया कि लड़का उसमें दिलचस्पी ले रहा है और चाहता है कि कात्या भी उसकी ओर ध्यान दे। लेकिन आत्म-सम्मान की भावना उसे कात्या का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने नहीं दे रही थी।

गाँव के बाहर कहीं विमानमार मशीनगनों की भयानक तड़तड़ाहट सुनायी दे रही थी। मानसिक उत्तेजना के बावजूद कात्या यह समझे बिना न रह सकी कि पास-पड़ोस में जर्मनों के पास विमानमार तोपें नहीं हैं, यानी इन किलेबन्दियों का महत्व पिछले कुछ ही दिनों में अप्रत्याशित रूप से बढ़ गया होगा।

"काश, हमारे सैनिक जल्दी से आ जाते!" गाल्या बोली। "हमारे यहाँ तो कोई तहखाना तक नहीं। उन दिनों जब हमारी फ़ौजें पीछे हट रही थीं, तो जर्मनों के हवाई हमलों के समय हम या तो पडो़सियों के तहखाने में छिपते थे या खुले मैदान में निकल जाते थे। हम ऊँची-ऊँची घास में या मेड़ में पड़ जाते, कानों को हाथ से कसकर बन्द कर लेते और बस इन्तज़ार करते रहते..."

एक, दो, तीन कई बम गिरे। छोटा-सा मकान हिल उठा एक बार फिर सोवियत विमान गाँव के ऊपर शोर करते निकल गये।

"हाय, हमारे अपने, हमारे प्यारे!" गाल्या चीख़ी और अपने कानों पर दोनों हाथ रखकर फर्श पर उकडू बैठ गयी।

विमानों की आवाज़ से फर्श पर उकडू बैठ जानेवाली यह औरत, इस जिले के मुख्य छापामार संपर्क-केन्द्र की गृहप्रबन्धिका थी। उसके घर से होकर लाल सेना के वे सैनिक गुजरा करते थे, जो क़ैद से भाग निकलते थे या दुश्मनों का घेरा तोड़कर निकल जाते थे। कात्या जानती थी कि गाल्या का पति लड़ाई के शुरू-शुरू में ही मारा गया था और उसके दो बच्चे पेचिश से मरे थे। गाल्या की सादगी और सहज मानवीयता को देखकर कात्या बड़ी प्रभावित हुई और भागकर उसकी कमर में बाँहें डाल दीं।

"डरना मत!.." कात्या ने द्रवित होकर कहा।

"मैं डरती नहीं, पर एक स्त्री के नाते मुझे ऐसा ही करना चाहिए।" गाल्या ने अपना शान्त चेहरा कात्या की ओर उठाया और मुस्करा दी। उसके चेहरे पर बहुत-से काले तिल थे।

कात्या ने सारा दिन घर में ही बिताया। अँधेरा होने तक प्रतीक्षा करने में उसे अपनी सारी मनःशक्ति लगा देनी पड़ी-वह जाकर सोवियत सेना से मिलने के लिए इतनी उत्सुक जो थी! दिन भर सोवियत बमवर्षक और लड़ाकू विमान किलेबन्दी पर बम बरसाते रहे। बमवर्षकों की संख्या अधिक न थी-शायद उनके दो या तीन दल रहे होंगे। वे बम गिराकर लौट जाते और पुनः आकर बम बरसाने लगते। तड़के सुबह से, जब से इनके कारण कात्या की आँखे खुली थीं, रात होने तक उनका यही क्रम बना रहा।

दिन भर गाँव के ऊपर, काफ़ी ऊँचाई पर सोवियत लड़ाकू विमानों और जर्मन 'मेस्सेर' विमानों के बीच हवाई लड़ाइयाँ चलती रहतीं। जब-तब भारी सोवियत बमवर्षक बहुत ऊँचाई पर भनभनाते हुए जर्मनों की दूरस्थ प्रतिरक्षा पंक्तियों पर हमला करने के लिए निकल जाया करते। शायद वे दोनेत्स में गिरनेवाली देर्कूल नदी के तटवर्तीय इलाकों पर बम बरसा रहे थे। वहीं एक कन्दरा में प्रोत्सेंको की जीप छिपाकर रखी हुई थी। दिन में कई बार जर्मन विमान भी कहीं पास ही-शायद कमीश्नाया नदी के उस ओर बम गिराने के लिए गुजरे। उसी दिशा से तोपों की गड़गड़ाहट बराबर सुनायी पड़ रही थी।

एक बार बहुत पास ही में जर्मन किलेबन्दियों के उस पार सहसा गोलाबारी शुरू हो गयी। इसी क्षेत्र में होकर तो कात्या को जाना था। गोलाबारी पहले कुछ दूरी से, फिर और भी पास आती हुई लगी, और सहसा बन्द हो गयी। शाम के समय गोलाबारी फिर शुरू हुई और गोले गाँव के आस-पास फटने लगे। जवाब में जर्मन तोपों की गड़गड़ाहट इतने ज़ोरों से सुनायी दी कि मकान में बातचीत करना असम्भव हो गया।

कात्या और गाल्या ने एक-दूसरे पर सारगर्भित दृष्टि डाली, पर साशा बराबर शून्य में देखता रहा और उसके चेहरे पर रहस्यपूर्ण भाव झलक रहा था।

हवाई लड़ाइयों और तोपों की गड़गड़ाहट के कारण स्थानीय लोग अपने-अपने घरों और तहखानों में दुबके रहे। अतएव कात्या की उनसे भेंट न हुई। जर्मन फ़ौज प्रकटतः अपने आवश्यक कार्यों में फँसी थी। सारा गाँव उजड़ा हुआ-सा लग रहा था।

कात्या के प्रस्थान करने का क्षण जितना ही निकट आता जा रहा था, अपनी अनुभूतियों पर नियंत्रण रख सकना उसके लिए उतना ही कठिन हो रहा था। उसे जिस रास्ते पर जाना था, उसके बारे में वह गाल्या से खोद-खोदकर पूछ रही थी, उसने यह भी जानना चाहा कि कोई उसे वह रास्ता दिखा सकता है। किन्तु गाल्या ने केवल इतना ही कहा :

"आप परेशान मत होना, अच्छी तरह आराम करना। बाद में चिन्ता करने के लिए आपके पास बहुत समय होगा।"

सम्भवतः गाल्या स्वयं कुछ भी न जानती थी और उसे शायद कात्या के लिए खेद हो रहा था। इससे कात्या की मानसिक व्यग्रता ही बढ़ी। फिर भी यदि उस समय घर में आकर किसी ने कात्या से बातचीत की होती, तो उसे उसकी व्यग्रता का एक भी निशान देखने को नहीं मिलता।

सांझ घिरती आ रही थी। सोवियत बमवर्षकों ने अपना अन्तिम आक्रमण पूरा कर लिया और विमानमार मशीनगनों के मुँह बन्द हो गये। चारों ओर नीरवता छा तो गयी, पर काफ़ी दूरी पर युद्ध और संहार की ज्वाला अभी भी धधक रही थी। साशा ने बेंच के नीचे से अपने पैर हटाये। वह दिन में पैरों में फेल्ट के बूट पहन चुका था। अब वह दरवाज़े के पास गया और चुपचाप भेड़ की खाल का फटा-पुराना कोट पहनने लगा।

"वेरा, यही समय है," गाल्या बोली, "ठीक यही समय। सब शैतान आराम कर रहे हैं। तिस पर हमारे कुछ लोग यहाँ आ सकते हैं। अच्छा हो यदि आप पर उनकी निगाह न पड़े।"

झुटपुटे में उसके चेहरे का भाव पढ़ना मुश्किल था। उसकी आवाज़ रूखी थी।

"यह लड़का कहाँ जा रहा है?" कात्या ने चिन्तित होकर पूछा।

"साथ जाने दो इसे, कोई बात नहीं," गाल्या ने शीघ्रता से कहा। वह घर में इधर-उधर दौड़ी और अपने बेटे व कात्या को कोट पहनने में मदद करने लगी।

कात्या ने बालक के पीले चेहरे पर एक ममताभरी निगाह डाली। तो यही है वह मशहूर पथप्रदर्शक, जो जर्मनों के आधिपत्य के पाँच महीनों में सोवियत लोगों को दुश्मन की किलेबन्दी की गहराइयों में से निकाल-निकालकर ले जाता रहा है, जिसमें सैकड़ों और शायद हज़ारों लोगों को उनकी मंजिल तक सुरक्षित पहुँचाया है! इस समय वह कात्या की ओर नहीं देख रहा था। उसकी एक-एक गतिविधि मानो कह रही थी-"तुम्हें मेरी ओर देखने का काफ़ी मौक़ा मिला था, फिर भी तुमने अब तक भी ऐसी कोई इच्छा प्रकट नहीं की। और अब अच्छा हो यदि तुम मेरे काम में बाधा न डालो।"

"आप जरा ठहरिये। मैं इधर-उधर निगाह दौड़ाऊँ, फिर आकर आप से कहूँगी।" गाल्या ने कात्या के झोले को पीठ पर रखने में उसकी सहायता की। "अभी एक-दूसरी से विदा हो लें, बाद में शायद समय न मिले। भगवान करे आप सदा सुखी रहें।

दोनों ने एक-दूसरे को चूमा। तत्पश्चात् गाल्या बाहर चली गयी। कात्या को इस बात पर कोई आश्चर्य न हुआ कि माँ ने बेटे को प्यार नहीं किया, उससे विदाई भी नहीं ली। "वे इसके आदी हो गये हैं," ये शब्द उन पर लागू नहीं होते-यह वह अच्छी तरह समझ रही थी। यदि कात्या को अपने बेटे को इस प्रकार के खतरनाक काम के लिए भेजना पड़ता, तो वह बिना उसे चूमे या उसके लिए आँसू बहाये न

रहती। साथ ही उसे यह भी मन ही मन स्वीकार करना पड़ा कि गाल्या इस समय ठीक ही व्यवहार कर रही है। साशा माँ के प्यार-दुलार को ठुकरा ही देता। क्योंकि इसकी वजह से उसका निश्चय केवल ढुलमुल हो सकता था।

कात्या को उसके साथ अकेले जाना बड़ा अटपटा लग रहा था। उसे लगा कि वह चाहे जो भी बात कहे, वह बनावटी ही प्रतीत होगी। फिर भी उससे कहे बिना रहा नहीं जा सका :

“मेरे साथ बहुत दूर तक जाने की ज़रूरत नहीं। बस मुझे यह बता दो कि उस किलेबन्दी से होकर किधर जाना है। बाक़ी सब कुछ मैं ख़ुद जानती हूँ।”

साशा ने न कोई उत्तर दिया और न उसकी ओर देखा ही। ठीक उसी समय गाल्या ने थोड़ा दरवाज़ा खोला और फुसफुसाती हुई बोली : “चलिये, कोई नहीं है।”

रात बादलों से भरी और शान्त थी। न बहुत सर्द, न बहुत काली। कुहरे के पीछे छिपे चाँद और बर्फ़ के कारण कुछ-कुछ उजाला हो रहा था।

साशा फेल्ट के जूते पहने और एक बड़ी गुड़ी-मुड़ी छज्जेदार टोपी लगाये सीधे खेत की तरफ़ बढ़ चला। वह जानता था कि उसकी माँ गलती न करेगी-यदि उसने कह दिया है कि आस-पास कोई नहीं है, तो इसके माने हैं कि सचमुच आस-पास कोई नहीं।

उन्हें पहाड़ियों की टूटी हुई श्रृंखला पार करनी थी। उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई ये पहाड़ियाँ देर्कूल और उसकी सहायक नदी कमीश्नाया के बीच एक जलविभाजक बनाये हुए थीं। गाँव दो टीलों के बीच बसा था। आगे-आगे चलता हुआ साशा एक टीले की तरफ़ मुड़ गया। साशा ने यह रास्ता क्यों पकड़ा, यह बात कात्या की समझ में आ चुकी थी-हालाँकि टीला नीचा था फिर भी उसकी ओट में वे बेझिझक चल सकते थे क्योंकि गाँव से उन्हें कोई नहीं देख सकता था। टीले को पार करते ही वह पूर्व की ओर मुड़ चला। अब वे पहाड़ियों की उस श्रृंखला की दिशा में बढ़ने लगे, जहाँ जर्मनों की किलेबन्दी थी।

अभी तक साशा यह देखने के लिए नहीं मुड़ा कि कात्या उसके पीछे आ भी रही है या नहीं। वह चुपचाप उसके पीछे चली आ रही थी। ज़मीन पर बर्फ की पतली चादर में लिपटी खूंटियाँ दिखायी दे रही थी। वे दोनों इन्हीं खूटियों के बीच से अपने रास्ते पर बढ़ते रहे। पिछली रात की तरह उन्हें इस समय भी पीछे हट रही जर्मन फ़ौज का शोर सुनायी पड़ रहा था। तोपों की आवाज़ भी अब थमती जा रही थी। लेकिन दक्षिण-पूर्व में, मील्लेरोवो के निकट उनकी गरज ज़ोरदार होती जा रही थी। काफ़ी दूर पर, शायद कमीश्नाया नदी के पार जर्मन फ़्लेवरों की दमक आसमान में फैली हुई

थी। पर उसमें इतनी शक्ति न थी कि वह आस-पास के झुटपुटे को दूर कर सके। यदि ऐसी कोई बत्ती इन दोनों के सामने की किसी पहाड़ी पर लटकी होती, तो उन्हें आसानी से देखा जा सकता था।

उनके पैर नर्म बर्फ में निःशब्द धँसते गये। बस वहाँ एक ही आवाज़ हो रही थी-खरखराहट की आवाज़, और वह भी उस समय जब उनके बूट खूंटियों से रगड़ खाते थे। अब वह आवाज़ भी थम गयी, क्योंकि वहाँ खूँटियाँ नहीं रह गयी थीं। साशा ने अपने पीछे देखा कात्या को और निकट आ जाने का संकेत किया। जब वह उसके पास आयी, तो साशा उकडू बैठ गया और उसे वैसा ही करने को कहा। वह तो धम-से बर्फ़ पर बैठ गयी। साशा ने पहले उसकी ओर फिर अपनी ओर संकेत किया और बर्फ़ में पूर्व की ओर जाती हुई एक लकीर खींच दी। साशा ने आस्तीनों से अपने हाथ निकाले और उस लकीर पर मुट्ठी भर बर्फ डाल दी। कात्या ने समझ लिया कि साशा का संकेत उस बाधा की ओर है, जिसे उन्हें पार करना होगा। इसके बाद उसने मुट्ठी भर बर्फ में दो छेद बना दिये, मानो यह जताना चाहता हो कि किलेबंदियों के आर-पार दो रास्ते हैं। कात्या ने उसकी बात समझ ली। साशा उसे दो सम्भावित मार्ग दिखा रहा है।

कात्या का सुवोरोव* का यह सिद्धान्त याद आ रहा था कि हर सैनिक को अपनी चालों की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। जहाँ तक इस दस वर्षीय सुवोरोव की बात है, कात्या ही उसकी एकमात्र सैनिक थी। कात्या ने सिर हिलाकर जता दिया कि उसे 'अपनी चाल' की जानकारी है और वे फिर अपनी राह पर चल पड़े।

अब वे उत्तर-पूर्व की दिशा में चक्कर काटकर जाने लगे और कंटीले तारों के बाड़े के पास तक पहुँच गये। लड़के ने कात्या को इशारा किया कि वह वहीं लेट जाये और ख़ुद तार के किनारे-किनारे चलकर शीघ्र ही आँखों से ओझल हो गया।

कात्या के सामने कंटीले तार कोई एक दर्जन पंक्तियों में, एक के पीछे एक फैले हुए थे। इस बाड़ को लगाये एक अरसा हो गया होगा, तार पर जंग लग चुका था। इन क्षेत्रों में सोवियत बमवर्षकों के हमलों का कोई चिह्न नज़र नहीं आ रहा था। जर्मनों ने ये तार छापामारों से बचने के लिए लगाये होंगे, क्योंकि ये पीछे से पहाड़ी की रक्षा करते थे और मुख्य किलेबन्दी से काफ़ी दूर थे।

कात्या की व्यग्रता बढ़ती जा रही थी। समय बीते न बीत रहा था, पर साशा लौट ही नहीं रहा था। एक घण्टा बीता, फिर दूसरा बीता। किन्तु कात्या को लड़के की चिन्ता न थी-वह एक सच्चा तरुण सैनिक था और उस पर भरोसा किया जा

---

* सुवोरोव अ. व. (1719-1800)-महान रूसी सेनानायक।-सं.

सकता था।

वह इतनी देर तक निश्चेष्ट लेटी रही कि ठिठुरने लगी। उसने पहले इधर-उधर करवटें बदलीं, लेकिन अन्ततः अधिक बर्दाश्त न कर सकी और उठ बैठी। भले ही नन्हा सुवोरोव इसके लिए उसकी भर्त्सना करे लेकिन कात्या हर हालत में पता लगाना चाहती थी कि वह किस इलाके में आयी है। बालक पैदल गया है, रेंगकर नहीं, इसलिए वह भी झुककर तो जा ही सकती है।

यह मुश्किल से पचास क़दम चली होगी कि उसने एक ऐसी चीज़ देखी, जिससे उसे ख़ुशी भी हुई और आश्चर्य भी-उसके आगे एक ताजा गड्ढा था। कोई गोला यहाँ हाल ही में फटा होगा। निश्चय ही यह किसी गोले द्वारा बना हुआ गड्ढा था, न कि बम द्वारा। इसका पता इस बात से चलता था कि सारी मिट्टी मुख्तः गड्ढे के एक ओर गिरी थी, उस ओर जिधर से साशा और कात्या आये थे। साशा का भी इस बात पर ध्यान गया होगा-उसके पदचिह्नों से इसकी पुष्टि हो रही थी।

कात्या ने बर्फ पर दूर तक निगाह दौड़ायी, किन्तु कम-से-कम उसके आस-पास तो वैसे दूसरे गड्ढे न थे। उसका मन उत्तेजना से भर गया-यह गड्ढा सोवियत गोले से ही बना है, और वह भी किसी भारी दूरमार तोप से नहीं, बल्कि औसत दर्जे की तोप से छोड़े गये गोले से। इसके माने थे कि सोवियत सैनिक कहीं आस-पास ही होंगे। पिछली शाम गाल्या के मकान में जो भयंकर गोलाबारी सुनी थी, यह गड्ढा उसी का एक निशान मात्र था।

हमारी सेना कहीं पास ही है! कहीं बिलकुल निकट! यह नारी पूरे पाँच महीनों तक, बच्चों से दूर रहकर, दुश्मन से अविराम लोहा लेती रही और अपने मन में उस क्षण के सपने देखती रही, जब ख़ून से सना ओवरकोट पहने वह अतिमानव शत्रु-कलुषित अपनी धरती पर फिर से पाँव रखेगा और कात्या को भ्रातृ-आलिंगन में कस लेगा। सचमुच इस नारी की अनुभूतियाँ शब्दों में नहीं पिरोयी जा सकतीं! कात्या की व्यथित आत्मा उस अतिमानव के लिए तड़प उठी, जो इस समय उसे अपने पति, अपने भाई से भी अधिक प्यारा लग रहा था!

कात्या को नमदे के जूतों की कोमल चरमराहट सुनायी दी और साशा उसके पास आ गया। शुरू-शुरू में तो उसने इस बात पर ध्यान न दिया कि उसका कोट घुटने और फेल्ट के बूट बर्फ से नहीं, मिट्टी से सने हैं। उसने अपने हाथ आस्तीनों में डाल लिये थे। शायद उसे बहुत समय तक रेंगना पड़ा था। तो वह उसे कौन-सी खबर सुनायेगा? कात्या ने बड़ी व्यग्रता से उसके चेहरे की ओर देखा। बालक के कानों तक खिसक आयी छज्जेदार टोपी के नीचे छिपे चेहरे के भावों को पढ़ पाना मुश्किल था। उसने हाथ निकालकर हिलाये जिसका मतलब था-"हम यहाँ से होकर नहीं

निकल सकते।”

कात्या को बड़ी निराशा हुई। लड़के ने गोलेवाला गड्ढा देखा और फिर आँखें कात्या की ओर उठा दीं। उन दोनों की आँखें चार हुईं और बालक सहसा मुस्करा दिया। वह समझ गया कि कात्या पर क्या बीत रही है। उसकी मुस्करा दिया। उसकी मुस्काराहट मानो कह रही थी-“कोई बात नहीं, यदि इम इधर से होकर नहीं जा सकते, तो कहीं और से होकर चलेंगे।”

उसके सम्बन्ध ने एक नया रूप ले लिया-अब वे एक-दूसरे को समझने लगे। उन्होंने एक-दूसरे को कुछ न कहा, किन्तु दोनों गहरे गित्र बन गये।

कात्या की आँखों के आगे वह दृश्य घूम गया, जब साशा अपने दुबले-पतले हाथों के बल बर्फीली भूमि पर रेंगता हुआ आगे बढ़ रहा था। पर बालक आराम किये बिना भी कात्या को बुलाकर चल पड़ा।

कात्या के मन में बालक के प्रति तरह-तरह की भावनाएँ उठ रही थीं-दोस्ती, विश्वास, अधीनता और सम्मान की। ये सारी भावनाएँ ममता में मिलकर एकाकार हो गयीं।

कात्या ने उससे इस बारे में कोई पूछ-ताछ न की कि कौन सी चीज़ उन्हें यहाँ से होकर गुजरने में बाधक बन रही है। बेशक, उसे एक क्षण के लिए भी यह सन्देह न हुआ कि वह उसे वापस घर ले जाने के लिए नहीं, बल्कि चक्कर काटकर दूसरे रास्ते से ले जाने के लिए मुड़ा है। कात्या ने उसे अपने हाथ गर्म रखने के लिए अपने दस्ताने भी उसकी ओर नहीं बढ़ाये, वह जानती थी कि वह उन्हें नहीं लेगा।

कुछ समय बाद वे उत्तर की ओर, फिर उत्तर-पूर्व की मुड़े और अन्ततः उन कंटीले तारों तक पहुँच गये, जो एक-दूसरे टीले की तलहटी को घेरे हुए थे। साशा फिर अकेला निकल गया और फिर कात्या को उसका बड़ी देर तक इन्तज़ार करना पड़ा। आख़िर वह आता दिखायी दिया। उसके हाथ आस्तीनों में घुसे थे और उसके शरीर पर और भी अधिक मिट्टी जमी थी। कात्या बर्फ़ पर बैठी उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने उसके पास आकर आँख मारी और और दाँत निकाल दिये।

कात्या से रहा नहीं गया और वह उसे अपने दस्ताने देने लगी, पर उसने उन्हें लेने से इनकार कर दिया।

जैसा प्रायः होता है, कात्या ने जिस बात को सबसे मुश्किल समझ रखा था, वह बहुत ही आसान निकली। उसे मालूम ही न पड़ा कि कब दो किलेबन्द स्थलों के बीच गुजर गये। इसका कारण उसे तुरन्त नहीं, बाद में ही समझ में आया। उसे बस इतना ही याद था कि ज़मीन की अंतड़ियाँ तक निकल गयी थीं। यह सब दिन में ‘इल्यूशिन’ बमवर्षकों के हमले के कारण हुआ था। और यह बात उसके दिमाग

में तब आयी, जब खुले खेतों में पहुँचकर उसने देखा कि उसका कोट, फेल्ट के बूट और दस्ताने भी मिट्टी में सन गये हैं।

कुछ समय तक वे खुले में साफ़ बर्फ पर चलते रहे। अन्ततः साशा रुक गया और मुड़कर कात्या की प्रतीक्षा करने लगा।

"उधर एक सड़क है। देख रही हो न?" उसने फुसफुसाकर कहा और आगे की ओर संकेत कर दिया।

साशा ने उसे बताया कि वह देहात की उस सड़क पर किस प्रकार पहुँच सकती है। यह सड़क उस फार्म तक जाती थी जहाँ से उसकी यात्रा का दूसरा चरण शुरू होना था। वह अब उस इलाके में पहुँच चुकी थी, जहाँ, प्रोत्सेंको के नक्शे के अनुसार, जर्मनों की प्रतिरक्षा-पक्तियाँ अधिक तो नहीं थी, लेकिन जो थीं, वे सब की सब अस्त व्यस्त दशा में थीं, क्योंकि जर्मन तेजी से पीछे हट रहे थे। पीछे हटने वाले जर्मन दस्तों ने उस इलाके में अस्थायी मोर्चा कायम कर लिया होगा। कौन जाने छिटपुट सैनिक कहीं मँडरा रहे हों और आबादीवाले क्षेत्र जर्मनों की अगली प्रतिरक्षापंक्ति का अंग बन गय हों। प्रोत्सेंको ने यात्रा के इस भाग को सबसे खतरनाक बताया था।

किन्तु सड़कों पर जर्मनों की भाग-दौड़ और दक्षिण-पूर्व में मील्लेरोवो की दिशा से आने वाली गोलाबारी अविराम गड़गड़ाहट को छोड़कर वहाँ ऐसी कोई खास बात न थी।

"आपकी यात्रा सफल हो!" हाथ नीचे गिराते हुए साशा बोला।

कात्या के हृदय में ममता उमड़ पड़ी। वह उसे अपनी बाँहों में भरकर सारी दुनिया के खतरों से बचाना चाहती थी। किन्तु ऐसा करने से उनके सम्बन्ध एकदम बिगड़ सकते थे।

"अलविदा! धन्यवाद," दस्ताना उतारकर साशा से हाथ मिलाती हुई कात्या बोली।

"आपकी यात्रा सफल हो," उसने फिर कहा।

"अरे, मैं तो पूछना ही भूल गयी," कात्या के होंठों पर एक हल्की-सी मुस्कराहट बिखर गयी। "दूसरे दर्रे से होकर गुजरना क्यों सम्भव नहीं था?"

साशा की भौंहें चढ़ गयीं :

"जर्मन वहाँ अपने मुर्दों को दफ़ना रहे थे। उन्होंने वहीं पास में एक बड़ा-सा गड्ढा खोदा था।"

कात्या चल पड़ी। वह बार-बार पीछे देखती जा रही थी। किन्तु साशा ने एक बार भी पीछे मुड़कर न देखा और शीघ्र ही अँधेरे में गायब हो गया।

सहसा कात्या को इतना बड़ा धक्का लगा, जिसे वह ज़िन्दगी भर भुला न सकी।

कोई दो सौ गज तय करने के बाद टीले के सिरे पर पहुँचते ही उसे एक बहुत बड़ा टैंक दिखायी दिया। उसकी नज़र बुर्जी पर पड़ी, तो उसने देखा-कोई गेंद जैसी विचित्र वस्तु कुलबुला रही है। ध्यान से देखने पर पता चला कि वह हेल्मेट पहने टैंकचालक खड़ा है।

उसने कात्या पर अपनी टामी-गन का निशाना इतनी तेजी से साधा कि कात्या को लगा मानो वह उसी का इन्तज़ार कर रहा था।

"रुक जाओ!"

यह शब्द स्थिरता के साथ, किन्तु ऊँची आवाज़ में बोला गया। लहजे में दृढ़ता किन्तु साथ ही नम्रता थी, क्योंकि बोलनेवाला एक नारी को सम्बोधित कर रहा था। पर सबसे बड़ी बात यह थी कि उसने शुद्ध रूसी में कहा।

कात्या में कुछ बोलने की शक्ति नहीं रही थी और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

अध्याय 20

ये दोनों टैंक एक अगामी टैंक-दस्ते के अग्रणी गश्ती टैंक थे। कात्या शुरू में दूसरे टैंक को देख भी न पायी, क्योंकि वह सड़क के उस पार एक टीले के पीछे खड़ा था। उसे रोकनेवाला टैंकची हरावाल का कमाण्डर था। इस बात का अनुमान लगाना मुश्किल था, क्योंकि वह मामूली-सा लबादा डाले हुए था। ये सारी बातें कात्या को बाद में मालूम हुई।

अफ़सर ने उसे नीचे उतरने का हुक्म दिया और टैंक से कूद पड़ा। उसके साथ ही एक और व्यक्ति भी कूदा। इधर अफ़सर कात्या से उसके बारे में पूछताछ कर रहा था, उधर वह उसके चेहरे का अध्ययन कर रही थी। वह आदमी जवान था और बेहद थका हुआ। उसकी पलकें भारी हो रही थीं। और आँखें खोले रखना उसे बहुत ही मुश्किल लग रहा था।

कात्या ने उसे अपना परिचय दिया और बताया कि वह इस सड़क पर क्यों जा रही है। अफ़सर के चेहरे से इस बात का कोई पता न चल रहा था कि उसे उसकी कहानी पर विश्वास है या नहीं, किन्तु कात्या ने इस पर ध्यान दिया।

अँधेरे में से मोटर-साइकिल सड़क पर आकर टैंक के पास रुक गयी।

"क्या मामला है?" मोटरसाइकिल-सवार ने सामान्य लहजे में सवाल किया।

इस प्रश्न से कात्या को यह पता चल गया कि उस मोटरसाइकिल सवार को उसी के कारण बुलाया गया है। दुश्मनों के ख़िलाफ़ पाँच महीनों तक काम करते हुए

उसमें छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देने की आदत-सी पड़ गयी थी, यदि मोटरसाइकिल-सवार को रेडियो द्वारा भी बुलाया जाता, तो भी वह इतनी जल्दी न आ पाता। तो फिर उसे बुलाया कैसे गया?

इस समय तक दूसरे टैंक का कमाण्डर भी उनके पास आ चुका था। उसने कात्या पर एक उड़ती-सी नज़र डाली और उन लोगों को एक ओर बुलाकर उनसे बातचीत करने लगा। इसके बाद मोटरसाइकिल-सवार झट-से अँधेरे में गायब हो गया।

टैंक-कमाण्डर फिर कात्या के पास आये और उनमें से एक ने कुछ संकोच के साथ कात्या से कागजात माँगे। कात्या ने बताया कि सिवा सुप्रीम कमाण्ड के अन्य किसी को भी ये कागजात देने का उसे अधिकार नहीं है।

वे कुछ क्षणों तक चुप रहे, फिर दूसरे कमाण्डर ने, जो पहले कमाण्डर से कम उम्र का था, मन्द्र स्वर में पूछा :

"आप किधर से निकलकर आयी हैं? क्या जर्मनों की किलेबन्दी बहुत मजबूत है?"

कात्या ने किलेबन्दी के बारे में, वह जो कुछ जानती थी, उन्हें बता दिया। उसने उन्हें यह भी बताया कि किस प्रकार एक दस साल का बालक उसे इन किलेबन्दियों के बीच से निकाल ले आया। उसने मरे हुए जर्मनों को दफनाये जाने के सम्बन्ध में भी सूचना दी और यह भी बताया कि उसने सोवियत गोले द्वारा बना एक गड्ढा भी देखा है।

"तो वहाँ गिरा वह! सुन रहे हो?" छोटा कमाण्डर बोला। वह दूसरे कमाण्डर की देखकर बच्चों की तरह मुस्करा रहा था।

इसी समय कात्या को पता चला कि गाल्या के मकान में, दिन को उसने गोलाबारी की जो आवाज़ सुनी थी, वह दुश्मनों की किलेबन्दी पर हमला करनेवाले की जो आवाज़ सुनी थी, वह दुश्मनों की किलेबन्दी पर हमला करनेवाले इन्हीं सोवियत अग्रणी टैंकों की ही आवाज़ थी।

अब कात्या और टैंक कमाडरों के सम्बन्ध बेहतर हो गये। उसने उनसे यह पूछने की हिम्मत भी की कि मोटरसाइकिल-सवार को इतनी जल्दी बुला कैसे लिया गया। कमाण्डर ने बताया कि टैंक के पीछे एक बत्ती लगी रहती है, जिससे किसी को भी संकेत किया जा सकता है।

इतने मे हवा से बातें करती हुई मोटरसाइकिल-सवार ने चुस्ती से कात्या के पास आकर सम्मानपूर्वक फ़ौजी सलामी मार दी।

वह साइड-कार में बैठ गयी और उस पर एक नयी अनुभूति हावी हो गयी, जो

कई दिनों बाद तक बनी रही। वह समझ रही थी कि वह एक छोटे-से टैंक-दस्ते में पहुँच गयी है, जो अन्य सोवियत यूनिटों को पीछे छोड़कर जर्मन अधिकृत प्रदेश में घुस आया। किन्तु अब उसके लिए दुश्मन की ताकत का कोई महत्व ही नहीं रहा। दुश्मन, वे सारी कठिनाइयाँ भी, जो कात्या को इन पाँच महीनों में झेलनी पड़ीं, अतीत की बात हो चुकी थी।

एक महान नैतिक विभाजन-रेखा उसे दुश्मन से अलग कर रही थी। अब वह फिर से उन लोगों के पास लौट चुकी थी, जिनकी अनुभूतियाँ, अनुभव, दृष्टिकोण और मत उसके अपने जैसे ही थे। यह दुनिया विशाल और असीम थी। चाहे इस मोटर-साइकिल पर वह पूरे दिन, पूरे साल सफर करे, हर जगह उसे अपनी दुनिया मिलेगी। इस दुनिया में उसे कुछ भी छिपाने, झूठ बोलने और अस्वाभाविक नैतिक एवं शारीरिक प्रयास करने की कोई आवश्कता न थी। अब कात्या को एक बार फिर, और हमेशा के लिए, अपनी स्वाभाविकता वापस मिल गयी, सर्द हवा उसके चेहरे को जैसे काटे दे रही थी, पर उसका जी गाने को कर रहा था।

मोटरसाइकिल उसे लेकर एक दिन या एक घण्टे तक नहीं ज़्यादा से ज़्यादा दो मिनट ही दौड़ी होगी। एक छोटे-से पुल को पार करते हुए चालक ने ब्रेक लगाये। कात्या ने खड्ड में खड़े कोई एक दर्जन टैंक और कुछ दूर सड़क पर खड़ी कई लारियाँ देखीं। टामी-गन चालक इन लारियों के इर्द-गिर्द खड़े या उनमें बैठे थे।

यहाँ कात्या का पहले से ही इन्तज़ार किया जा रहा था। मोटरसाइकिल के रुकते ही दो टैंकची उसके पास आये और अपने बाजुओं का सहारा देकर साइड-कार से उतरने में कात्या की मदद करने लगे।

"कामरेड, माफ करना..." एक अधेड़ उम्र के टैंकची ने उसे सलाम करते हुए कहा और उसे चीर गाँव की अध्यापिका के नाम से सम्बोधित करने लगा, जो उसके नकली पासपोर्ट में दर्ज था। "माफ़ कीजिये, पर यह औपचारिकता हमें निभानी ही पड़ती है..."

उसने उसके पासपोर्ट को एक जेबी टार्च की रोशनी में देखा और फिर उसे वापस कर दिया।

"सब ठीक है, कामरेड कप्तान!" उसने दूसरे टैंकची को सूचना दी। इस टैंकची के माथे से लेकर नाक के ऊपरी भाग और बायें गाल तक एक ताजे घाव का निशान था।

"आपको ठण्ड लग रही होगी?" कप्तान बोला और उसकी विनम्र सदय और शिष्ट आवाज़ तथा सीधे, सरल किन्तु साहस और अधिकारपूर्ण व्यक्तित्व से कात्या ने समझ लिया कि वह टैंक दस्ते का कमाण्डिंग अफ़सर है। "इतना समय नहीं है

कि आपका बदन गरम रखने के लिए कुछ कर सकें-हम बढ़े जा रहे हैं। मगर यदि आपको कोई एतराज न हो तो...” उसने पेटी से एक फ़्लास्क उतारा और उसकी डाट खोली।

कात्या ने फ़्लास्क दोनों हाथों में पकड़ा और एक बड़ा-सा घूँट भर लिया।

“धन्यवाद।”

“थोड़ा और लीजिये!”

“बस काफ़ी है...”

“हमें आदेश मिला है कि हम आपको कोर के हेडक्वार्टर तक पहुँचायें,” कप्तान मुस्कराते हुए बोला, “यद्यपि हमने सड़क के किनारे-किनारे दुश्मनों की टुकड़ियों का सफाया कर दिया है, पर यह एक ऐसा इलाका है कि शैतान तक नहीं बता सकता कि यहाँ कब क्या हो सकता है! इस लिए हम आपको टैंक में बिठाकर ले जायेंगे।”

“आपको मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?” कात्या ने पूछा। स्पिरिट उस पर अपना प्रभाव डालने लगी।

“आपका इन्तज़ार किया जा रहा है।”

इसके माने थे कि वान्या ने सारा इन्तज़ाम पहले से ही कर दिया था। उसके बदन में गर्मी आ गयी।

एक बार फिर कात्या को गाँव के बाहर स्थित दुश्मनों की प्रतिरक्षा-पंक्तियों के बारे में बताना पड़ा। उसे लगा कि ऊँचाइयों पर जमे दुश्मनों पर हमला करने के लिए टैंकों को भेजा जानेवाला है। उसी क्षण टैंक घरघरा उठे और टामी-गन धारी अपनी-अपनी लारियों की ओर लपके। कात्या को पहले टैंक की बुर्जी पर चढ़ाया गया और वहाँ से वह अन्दर उतर गयी। टैंक के भीतर बड़ी ठण्ड थी।

जिस टैंक में उसे अपनी यात्रा पूरी करनी थी, उसमें चार व्यक्तियों का दल था। हर एक के बैठने की अपनी-अपनी जगह थी। कात्या फर्श पर कमाण्डर के पैरों के पास बैठ गयी। टैंक के भीतर जगह तंग थी। चारों सैनिकों में से अकेला टैंक-चालक ही घायल नहीं हुआ था।

टैंक कमाण्डर के सिर पर चोट लगी थी। उसके सिर पर मोटी रूई रखकर एक पट्टी बाँध दी गयी थी, अतः हेल्मेट पहनना उसके लिए असम्भव हो गया था। इसीलिए वह एक साधारण सैनिक टोपी लगाये था। उसकी बाँह पर भी घाव था। वह इस बात का ध्यान रख रहा था कि बाँह में किसी चीज़ से धक्का न लग जाये। जब कभी टैंक में झटके लगते थे, तो उसके माथे पर बल पड़ जाते थे।

अपने साथियों का साथ छोड़ना उन्हें बहुत बुरा लगा। इसीलिए पहले-पहल उन्होंने कात्या के प्रति रुखाई बरती-आख़िर उसी के कारण तो उन्हें पीछे लौटना पड़

रहा था। बाद में, जब वे कुछ नरम पड़ गये, तो पता चला कि ड्राइवर और कमाण्डर को छोड़कर बाक़ी दोनों को दूसरे टैंकों से तबदील करके इस टैंक में बिठाया गया था। इस तबादले का इन लोगों ने काफ़ी विरोध किया था। इस टैंक के दो स्वस्थ लोगों को इनकी जगह दूसरे टैंकों पर भेज दिया गया था। जब कात्या को टैंक पर लाया गया था, उस समय टैंक कमाण्डर और कप्तान के बीच कटु विवाद चल रहा था। कप्तान-जिसके चेहरे पर ताजा घाव लगा था-उससे अपनी बात मनवाकर ही रहा। उसे कात्या की यात्रा से अपने दस्ते से घायलों को हटा देने का मौक़ा मिल गया था।

जब टैंक चल पड़ा और सैनिकों ने देखा कि उनके साथ एक जवान औरत सफर कर रही है, तो उन्होंने उसके प्रति अपना रुख बदल दिया। शीघ्र ही उन्हें पता चल गया कि कात्या उन्हीं प्रतिरक्षा-पंक्तियों से होकर आयी है, जिन पर टैंक दस्ता अधिकार करनेवाला है। सभी की बाछें खिल गयीं। सभी युवक थे, कात्या से यही कोई पाँच-सात साल छोटे।

इसी मौक़े पर कमाण्डर ने 'दूसरा मोर्चा' खोलने का हुक्म दिया। उसका आशय अमरीकी डिब्बाबन्द मांस से था। गनर-रेडियो-आपरेटर ने पलक झपकते ही 'दूसरा मोर्चा' खोल डाला और रोटी के कुछ बड़े-बड़े टुकड़े काट लिये। कमाण्डर ने बायें हाथ से अपना मदिरा पात्र कात्या को देना चाहा, किन्तु उसने इनकार कर दिया। हाँ, रोटी और मांस उसने मजे से खाया। एक के बाद एक टैंकचियों ने मदिरा के घूंट लिये और टैंक के भीतर वातावरण मैत्रीपूर्ण हो गया।

वे पूरी गति से चले जा रहे थे। कात्या को बराबर झटके लग रहे थे। सहसा बुर्जी पर खड़ा तोपची कुछ झुका और कमाण्डर के कान के पास होंठ लाकर बोला :

"सुन रहे हैं, कामरेड सीनियर लेफ़्टिनेण्ट?"

"उन्होंने अपना काम शुरू कर दिया है न?" कमाण्डर ने भर्रायी आवाज़ में कहा और ड्राइवर के कन्धे को छू लिया। ड्राइवर ने टैंक रोक दिया और गोलाबारी की तेज धमक उनके कानों में पड़ी। यह आवाज़ गाँव की ओर से आ रही थी।

"हा-हा! जर्मनों के पास फ़्लेयर नहीं है?" तोपची ने सन्तोष के साथ कहा, "हमारे साथी उन्हें मजा चखा रहे हैं। मैं फटते हुए गोलों की आग भी देख रहा हूँ।"

"जरा देखने तो दो?"

सीनियर लेफ़्टिनेंट तोपची की जगह खड़ा हुआ और बड़ी सावधानी से अपना जख्मी सिर ऊपर निकाला। उधर वह आक्रमण का नजारा देख रहा था और इधर टैंकवाले, कात्या की उपस्थिति भूलकर, तर्क-वितर्क कर रहे थे। उन्हें इस बात पर

फिर क्रोध आ रहा था कि वे अपने टैंकों के साथ इस आक्रमण में भाग नहीं ले रहे हैं।

कमाण्डर ने अपना घायल सिर फिर टैंक के भीतर कर लिया। उसका मुँह लटका हुआ था। सहसा उसे कात्या की उपस्थिति का ध्यान आ गया और उसने सारी बातचीत बन्द कर दी। फिर भी उसके चेहरे पर वैसे ही हवाइयाँ उड़ रही थीं। स्पष्ट था कि युद्ध में भाग न ले सकने के कारण उसे बहुत बुरा लग रहा था। उसने बाक़ी लोगों को भी युद्ध का नजारा देखने का मौक़ा दिया। इसके बाद ही वे आगे चल सके।

इस तरह उन पर थोड़ी उदासी-सी छा गयी। कात्या समझदार औरत थी। उनका गम गलत करने के लिए उसने तुरन्त उनसे सैनिक कार्रवाइयों के सम्बन्ध में प्रश्न करने शुरू कर दिये। इंजनों की घरघराहट के कारण बातचीत करना बड़ा ही कठिन हो रहा था। उन्हें बराबर चीख़ना पड़ा रहा था। वे बड़े उत्साह से अपनी कार्रवाइयों के बारे में बताने लगे और उस क्षेत्र की सैनिक कार्रवाइयों पर भी कुछ रोशनी डाली।

सोवियत टैंक दस्तों ने रोस्सोश और मील्लेरोवो के बीच वोरोनेजरोस्तोव रेलवे के एक बड़े भाग को पार कर लिया था, कमीश्नाया नदी के किनारे पर स्थित प्रतिरक्षा-पंक्तियों से जर्मनों को खदेड़ दिया था; और अब देर्कूल नदी के उद्गम-स्थल के पास पहुँच चुके थे। पीछे हटनेवाली जर्मन फ़ौज ने कमीश्नाया और देर्कूल के बीच के जल-विभाजक को जल्दी एक अग्रणी प्रतिरक्षा-क्षेत्र का रूप दे दिया था। इसी क्षेत्र में वे टीले भी शामिल थे, जिन्हें पार कर कात्या यहाँ पहुँची थी। यह नयी पंक्ति लिमरेव्का, बेलोवोद्स्क और गोरोदीश्ची से होकर-इन सभी जगहों में प्रोत्सेंको के छापामार दस्ते कार्रवाई कर रहे थे-दोनेत्स पर उस स्थान तक जाती थी, जिसके निकट मित्याकिन्स्काया छापामार दस्ते का अड्डा था। कात्या इन सभी स्थानों को अच्छी तरह जानती थी और अब जाकर लाल सेना के प्रहार का असली चित्र उसकी आँखों के आगे खड़ा हो गया। वह उन सभी कठिनाइयों को भी देख रही थी, जो सोवियत सेना की राह में आ सकती थीं-सैनिकों को देर्कूल, येव्सूग, ऐदार और बोरोवाया नदियों के किनारे स्थित किलेबन्दियों को नष्ट करना तथा स्तारोबेल्स्क और स्तनीच्नो-लुगांस्काया के बीच रेलवे लाइन ओर दोनेत्स नदी को पार करना था।

जिस अग्रगामी टैंक दस्ते से कात्या मिली थी, वह अपनी यूनिट से दो दिन पहले अलग हो चुका था। यूनिट दसेक मील पीछे रह गयी थी। इस दस्ते ने पश्चिम की ओर बढ़कर, अपने रास्ते पर पड़नेवाली दुश्मन की सभी प्रतिरक्षा-पंक्तियों का सफाया कर दिया और कई गाँवों और फार्मों पर क़ब्ज़ा कर लिया। इनमें वह गाँव भी शामिल था, जहाँ प्रोत्सेंको के निर्देशों के अनुसार कात्या को जाना था।

जिस टैंक में कात्या सफर कर रही थी, वह दिन के समय हरावल में था और

उसने उन्हीं टीलों पर हमला किया। सहसा वह दुश्मन की खन्दकों के क़रीब आ गया और उन पर गोले बरसाने लगा। दुश्मन की जवाबी गोलाबारी से टैंक को नुकसान पहुँचा और कमाण्डर को सिर और बाँह में चोट लगी।

इस समय वे युद्धक्षेत्र से दूर होते जा रहे थे। धीरे-धीरे कात्या और ड्राइवर को छोड़कर सभी टैंकचियों को नींद आ गयी, जैसे कि सख़्त लड़ाई के बाद हर सैनिक के साथ हुआ करता है। कात्या का दिल उनके प्रति सहानुभूति से भर गया।

वे कई बस्तियों से होकर गुजर चुके थे कि सहसा ड्राइवर कात्या की ओर मुड़ा और चिल्लाकर बोल उठा :

“ये रहे हमारे ब्रिगेड के लोग, ये रहे!”

टैंक सड़क पर से हटकर खेत में मुड़ा और रुक गया।

रात अँधेरी थी। सन्नाटा पास और दूर होनेवाली उसी युद्ध ध्वनि से भंग होता था, जिससे सैनिकों के कान पक चुके थे। सहसा ढेर सारे टैंकों की घरघराहट सुनायी पड़ी, जो क्षण प्रति क्षण ज़ोर पकड़ती गयी। ड्राइवर ने अपनी धूमिल हेडलाइट से संकेत किया। कमाण्डर ओर तोपची नीचे ज़मीन पर आ गये। कात्या बुर्जी में से बाहर सिर निकालकर सीधी खड़ी हो गयी।

कई मोटरसाइकिलें सर्र से गुजर गयीं। उनके पीछे टैंक तथा बख़्तरबन्द मोटरें सड़क और स्तेपी पर बढ़ती हुई दिखायी दीं। कात्या ने दोनों हाथ अपने कानों पर रख लिये। टैंक घरघराते हुए आगे निकल रहे थे।

एक छोटी-सी बख़्तरबन्द मोटर उनके टैंक के पास आकर रुक गयी। उसमें से दो सैनिक अफ़सर निकले। वे लम्बे-लम्बे ओवरकोट पहने थे। उन्होंने टैंक कमाण्डर से ज़ोर-ज़ोर से बातें कीं और टैंक पर खड़ी हुई कात्या की ओर जब-तब देखा। फिर वे अपनी बख़्तरबन्द गाड़ी पर चढ़े और अपने टैंकों को पीछे छोड़ते हुए स्तेपी में बढ़ चले।

टैंकों के पीछे-पीछे लारियाँ भी आ रही थीं, जिनमें पैदल सैनिक भरे थे। टामी-गन धारी स्तेपी में खड़े उस एकाकी टैंक को देख रहे थे और कानों पर हाथ रखे एक औरत उन्हें देख रही थी।

कात्या इस विशाल जनसमूह और ढेर सारे टैंकों को देखकर चकित रह गयी। सम्भवतः इन्हीं क्षणों में आन्तरिक मुक्ति की उसकी अनुभूति में एक नयी अनुभूति घुल-मिल गयी, जो बहुत समय तक उसके साथ बनी रही। उसे लगा कि वह स्वयं नहीं, बल्कि कोई दूसरा आदमी यह सब देख-सुन रहा है। वह अपने को उसी प्रकार बाहर से देख रही थी, जैसे कि कोई अपने को स्वप्न में देखता है। उसे प्रथम बार महसूस हुआ कि वह अपने प्यारे समाज के लिए किस तरह तरस गयी है। और बहुत

समय तक तो वह इन असंख्य चेहरों, घटनाओं, बातों और अन्ततः मानवीय धारणाओं के बीच अपना स्थान ही न पा सकी, जिनमें से कुछ तो उसके लिए बिलकुल ही नयी थी।

उसे अपने पति को देखने और उसकी निकटता का अनुभव करने की उत्कट इच्छा होने लगी। पति की चिन्ता उसे खाये जा रही थी। प्रेम और विछोह के कारण उसका हृदय तड़प रहा था, खासकर इसलिए कि वह बहुत समय पहले ही यह भूल चुकी थी कि रोना भी क्या होता है।

उस समय तक लाल सेना को बड़ी-बड़ी सफलताएँ प्राप्त हो चुकी थीं।

युद्ध के अठारह महीनों में यह विजयी सेना साज़-सामान की दृष्टि से कमज़ोर नहीं, बल्कि अत्यन्त शक्तिशाली बन चुकी थी। यह शक्ति दुश्मन की उन दिनों की शक्ति से भी अधिक थी, जब उसकी फ़ौजें बाढ़ की तरह जलती दोनेत्स स्तेपी में फैलती जा रही थीं। पर कात्या सबसे ज़्यादा प्रभावित हुई सोवियत सैनिकों को देखकर। हाँ, सच्चे अर्थों में ये नयी क़िस्म के लोग थे। ये लोग न सिर्फ़ अपने नये और शक्तिशाली शस्त्रास्त्रों पर ही नियंत्रण रख सकते थे, बल्कि मानसिक रूप से भी वे मानव इतिहास के एक नये, उत्तम चरण में प्रवेश कर चुके थे।

कात्या को लगता था कि ये लोग उससे इतना आगे निकल चुके हैं कि वह अब कभी उन तक नहीं पहुँच सकेगी।

इस टैंक के चुने हुए दल ने कात्या का टैंक-ब्रिगेड के हेडक्वार्टर में पहुँचा दिया। सच पूछा जाये, तो वहाँ कुछ फ़ौजी अफ़सरों के साथ केवल एक ब्रिगेड कमाण्डर रहता था। ये लोग एक छोटी-सी बस्ती में जमे हुए थे, जिसे अभी पिछली सुबह को ही दुश्मन में हुई भीषण लड़ाई में बहुत बड़ी क्षति पहुँची थी।

आग्नेय आँखों व थके-हारे चेहरेवाला जवान कर्नल कात्या से इस छोटे-से मकान में मिला। वस्तुतः बस्ती में यही एक मकान था, जिस पर कोई आँच न आयी थी। उसने उससे इस बात की क्षमा माँगी कि वह उसकी अच्छी तरह खातिर न कर सका, क्योंकि वह बस एक ही मिनट के लिए आया है और उसे तुरन्त लौट जाना है। फिर भी उसने सुझाव दिया कि कात्या को यहाँ रुककर कुछ देर सो लेना चाहिए।

"हमारी दूसरी टुकड़ी शीघ्र ही यहाँ आयेगी। तो वे लोग आपकी अच्छी तरह खातिरदारी करेंगे," वह बोला।

इस छोटे-से मकान को गरम रखने की अच्छी व्यवस्था थी। अफ़सरों ने कात्या से आग्रहपूर्वक ओवरकोट उतार डालने और गर्म चाय पीने को कहा।

गाँव को बुरी तरह नष्ट किया गया था, किन्तु अब भी वहाँ बहुत-से गाँववाले टिके हुए थे, जिन में से अधिकांश स्त्रियाँ, बच्चे और बूढ़े थे। उनके लिए सोवियत

सैनिकों को, विशेषकर टैंक चालकों को देखना, नयी बात थी। और वे बेहद ख़ुश थे। वे सब सैनिकों और खासकर अफ़सरों के इर्द-गिर्द घूमते रहते थे। स्टाफ की सुविधा आदि के लिए सिगनलर उस छोटे-से मकान तथा पास-पड़ोस के टूटे-फूटे मकानों में टेलीफोन के तार बिछा रहे थे।

कात्या ने एक प्याली चाय ली-बहुत बढ़िया चाय थी। कोई आध घण्टे बाद कमाण्डर की बन्द जीपगाड़ी उसे तेजी के साथ कोर हेडक्वार्टर की ओर लिये जा रही थी। इस समय वह टामी-गन से लैस एक सार्जेण्ट के साथ थी। घायल सीनियर टैंक लेफ़्टिनेण्ट, आग्नेय आँखोंवाले कर्नल और दर्जनों दूसरे लोगों के चेहरे कात्या की स्मृति में समा चुके थे।

प्रातः काल जबर्दस्त पाला पड़ा और सारा इलाका बर्फ की मोटी चादर से ढक गया। कोहरे के उस पार कहीं सूरज निकल रहा था और कात्या ठीक उसी की ओर बढ़ रही थी।

पक्की सड़क पर फ़ौजी टुकड़ियाँ मार्च करती हुई आ रही थीं। कात्या की जीप बार-बार सड़क पर से उतरकर सीधी स्तेपी में बर्फ की पतली चादर रौंदती हुई बढ़ती जा रही थी। यदि वह जीप में न होती, तो उसे अपनी मंजिल तक पहुँचने में बहुत समय लग गया होता। शीघ्र ही कार कमीश्नाया नदी के छिछले, गन्दले पानी को पार करने लगी।

कोहरा छितरने लगा और सूर्य क्षितिज के कुछ ही ऊपर लटका हुआ नज़र आया। इस समय सूर्य की ओर देखने से आँखें चुंधियाती नहीं थीं। इस छोटी-सी नदी के दोनों ओर कात्या ने जर्मनों की वह किलेबन्दी देखी, जो अब सोवियत सेना के अधिकार में आ चुकी थी। सारी धरती को गोलों, टैकों और भारी ट्रैक्टरों ने मथ डाला था।

नदी के उस पार चलना और भी मुश्किल हो गया था, क्योंकि असंख्य सैनिक दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे, जबकि युद्ध-बन्दियों को विपरीत दिशा में ले जाया जा रहा था। ये बन्दी सैनिक छोटे-छोटे दलों और बड़े-बड़े दस्तों के रूप में चल रहे थे। उन सबकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। फटे-पुराने ओवरकोट पहने वे सड़क पर या स्तेपी में ही पैर घसीटते हुए चले आ रहे थे। पराजय और क़ैद से अपमानित उनके लिए सिर लटक गये। जिस क्षेत्र से होकर उन्हें ले जाया जा रहा था, उस पर उनके अपने विध्वंस और संहार के चिह्न थे। जो उपजाऊ स्तेपी शताब्दियों से अन्न का भंडार रही थी, उसकी अब बुरी हालत थी। गाँव जलकर राख हो चुके थे। जहाँ-तहाँ जले हुए टैंकों या टूटी-फूटी लारियों के ढांचे, बेकार तोपों की नालें और जर्मन हवाई जहाजों के मुड़े-तुड़े डैने ज़मीन चाट रहे थे। दुश्मन की अनगिनत लाशें स्तेपी में और सड़क

पर पड़ी हुई थीं। उन्हें उठा ले लाने के लिए न कोई था वहाँ, और न ही किसी को समय मिला था। टैंकों और भारी तोपों ने उनका भुरता बना दिया था।

मार्च करते, टैंकों और लारियों में बैठे हुए थके-मांदे व्यक्तियों के चेहरों पर आह्लाद और उत्साह के भाव झलक रहे थे, क्योंकि दस दिन की घमासान लड़ाइयों में वे विजयी रहे थे। इस समय उनका ध्यान दुश्मनों की लाशों पर न था। वहाँ केवल कात्या रह-रहकर इन लाशों की ओर उपेक्षा की दृष्टि डाल लेती थी।

यह इतिहास की सबसे घमासान लड़ाइयों में से एक थी और स्तालिनग्राद में हिटलर की फ़ौज को परास्त करने में काम आनेवाली एक कड़ी। जितना ही युद्ध दक्षिण-पश्चिम की ओर फैलता गया, उतना ही वह ज़ोर पकड़ता गया। छँटते हुए कोहरे में जहाँ-तहाँ हवाई लड़ाइयाँ शुरू हो गयीं, स्तेपी के विशाल क्षेत्र में भारी-भारी तोपें आग उगल रही थीं। और जहाँ तक नज़र आती थी, मार्च करती सेना, रसद, सामान और शस्त्रास्त्रों का ही दृश्य दिखायी देता था।

दोपहर के समय तक कोहरा बहुत कुछ छँट चुका था, लेकिन अग्निदग्ध स्थानों का धुआँ अब भी हवा में तैर रहा था। कात्या गार्ड्स टैंक कोर के हेडक्वार्टर में पहुँची। वस्तुतः यह भी मुख्य हेडक्वार्टर न था, बल्कि कोर कमाण्डर की अस्थायी कमान-चौकी थी, जो मील्लेरोवो के उत्तर में, एक रेलवे स्टेशन की इमारत में बना ली गयी थी। यह सचमुच आश्चर्य की बात थी कि यह स्टेशन गोलों का निशाना बनने से बच गया था। पासवाले गाँव की तो ईंट-ईंट गिर गयी थी। किन्तु जैसा कि सभी नवमुक्त स्थानों में देखने को मिलता है, यहाँ भी सैनिक तथा सोवियत नागरिक जीवन का विलक्षण रूप से तालमेल बिठाया जा रहा था।

कमान-चौकी में क़दम रखते ही जिस पहले व्यक्ति पर कात्या की नज़र पड़ी, उसने उसके मस्तिष्क में युद्धपूर्व जीवन का, अपने पति का, अपने परिवार का, अध्यापिका और शिक्षा विभाग की एक साधारण कर्मचारिणी के रूप में अपने कार्यों का चित्र खड़ा कर दिया।

"अन्द्रेई येफीमोविच! आप!" वह अनायास कह उठी और दौड़कर उससे गले मिल गयी।

वह उक्राइनी छापामार हेडक्वार्टर का एक नेता था, जिसने पाँच महीने पहले प्रोत्सेंको को ख़ुफ़िया कार्रवाइयों के बारे में निर्देश दिये थे।

"अब तो आप हम सभी को सीने से लगायें," लम्बी-लम्बी बरौनियों, भूरी आँखोंवाले एक दुबले-पतले चुस्त जनरल ने कहा।

कात्या ने जनरल के सख़्त, साँवले चेहरे पर एक निगाह डाली। उसकी दाढ़ी बड़ी सावधानी से बनायी गयी थी। कनपटी पर उसके बाल सफ़ेद हो रहे थे। सहसा

कात्या झेंप गयी। उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया और अपने गर्म किसानी शॉल में मुँह दुबका लिया। उसके आस-पास चुस्त-दुरुस्त सैनिक खड़े थे।

"देखो न, तुमने उसे आते ही पेरशानी में डाल दिया। तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि औरतों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए?" मुस्कराते हुए अन्द्रेई येफीमोविच ने कहा।

सभी अफ़सर हँस पड़े।

"माफ कीजिये," जनरल बोला और अपने पतले हाथ से धीरे-से कात्या का कन्धा छू लिया।

कात्या ने अपने चेहरे पर से हाथ हटा लिये। उसकी आँखें चमक रही थीं।

"कोई बात नही," वह बोली। जनरल ओवरकोट उतारने में उसकी मदद करने लगा।

उन दिनों के अधिकांश सोवियत अफ़सरों की भाँति कोर-कमाण्डर भी अपने पद और कर्त्तव्य को देखते हुए, अभी तरुण ही था। परिस्थितियों के बावजूद वह स्वाभाविक रूप से शान्त, गम्भीर, विश्वस्त, व्यवहार कुशल, विनोदप्रिय और शिष्ट था। उसके साथ के सभी सैनिकों पर भी उसी स्थिरता, शिष्टता और करीने की छाप थी।

इधर प्रोत्सेंको की रिपोर्ट की संकेतभाषा का रूपान्तर किया जा रहा था और उधर जनरल ने महीन कागज पर बने वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के छोटे-से नक्शे को मेज पर फैले हुए एक बड़े-से फ़ौजी नक्शे पर रख दिया। यही काम प्रोत्सेंको ने कात्या की आँखों के सामने केवल दो रात पहले किया था। हाँ, केवल दो रात पहले! जनरल की पतली उँगलियों ने महीन कागज को सीधा किया।

"कमाल है!" वह ख़ुशी से भरकर बोल उठा। "जरा देखना तो, अन्द्रेई येफीमोविच, ये बदमाश फिर मिऊस पर किलेबन्दी कर रहे हैं।"

अन्द्रेई येफीमोविच नक्शे पर झुक गया। उसके चेहरे की झुर्रियाँ गहराने लगी। और वह अपनी उम्र से अधिक बड़ा लगने लगा। दूसरे अधिकारी भी नक्शे के इर्द-गिर्द खड़े हो गये।

"वैसे मिऊस के किनारे हमारा-उनका सामना न होगा, पर जानते हो इसके माने क्या हैं?" अन्द्रेई येफीमोविच पर एक प्रसन्नतापूर्ण दृष्टि डालते हुए जनरल बोला। "वे इतने बेवकूफ नहीं कि यह भी न समझें कि उन्हें उत्तरी काकेशिया और कुबान से हटना होगा!"

जनरल हँस पड़ा। कात्या का चेहरा ख़ुशी से लाल हो गया, क्योंकि जनरल के शब्दों और उसके पति के अनुमानों का अर्थ एक ही था।

"अच्छा, अब हम यह देखें कि यहाँ हमारे लिए नयी कौन-सी बात है।" जनरल ने नक्शे पर पड़ा हुआ एक बड़ा-सा आतशी शीशा उठाया और छोटे-से नक्शे पर प्रोत्सेंको के कुशल हाथ से बने चिह्नों और वृतों की जांच करने लगा। "यह हम पहले से ही जानते है, हूँह, यह भी जानते हैं...हूँह...तो..." उसने टिप्पणियाँ देखे बिना ही प्रोत्सेंकों के संकेत-चिह्न समझ लिये। टिप्पणियों को अभी तक संकेत भाषा से रूपान्तरित नहीं किया गया था। "इसके माने हैं कि हमारे वसीली प्रोखोरोविच का काम बुरा नहीं है, जब कि तुम हमेशा-'ख़ुफ़िया विभागवाले अच्छा काम नहीं करते,' की रट लगाय रहते हो," जनरल ने हल्के व्यंग्य से अपनी बात समाप्त की। वह अपनी बगल में खड़े कोर के स्टाफ-चीफ, कर्नल को संबोधित कर रहा था, जिसका डील-डौल भारी और मूँछें काली थीं।

एक गंजे, मोटे और नाटे अधिकारी ने, जिसकी पीली किन्तु सजीव-सी आँखों में चतुराई झलक रही थी, कर्नल के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना कह दिया :

"कामरेड कमाण्डर, यह सूचना भी हमें ठीक उसी सूत्र से मिली थी।

यही अधिकारी कोर-हेडक्वार्टर के गुप्तचरों का चीफ वसीली प्रोखोरोविच था।

"अरे! और मैंने सोचा था कि सूचना तुमने ख़ुद मालूम की है!" निराश होकर जनरल बोला।

अफ़सर हँस पड़े। किन्तु वसीली प्रोखोरोविच ने न तो जनरल के ताने पर ही ध्यान दिया और न अपने साथियों की हँसी पर ही। प्रत्यक्षतः वह इन बातों का आदी हो चुका था।

"कामरेड जनरल, जरा यहाँ ध्यान से देखिये", वह आश्वस्त लहजे में बोला। "मैं सोचता हूँ, देर्कूल इलाके के बारे में हम अधिक जानकारी रखते हैं।"

कात्या को लगा जैसे वसीली प्रोखोरोविच की बातों से उस सूचना का महत्व कम हो गया, जो प्रोत्सेंको ने भेजी है और जिसके लिए उसने स्वयं भी इतना लम्बा सफर तय किया है।

"जिस साथी ने यह रिपोर्ट भिजवायी है," उसने तीखेपन से कहना शुरू किया, "उसने कहलवाया है कि वह आपको दुश्मन के पीछे हटने के सम्बन्ध में और भी विस्तृत सूचना देगा। टिप्पणियों सहित इस नक्शे से तो प्रदेश की सामान्य स्थिति का ही पता चलता है।"

"ठीक है," जनरल बोला, "इस सूचना की ज़रूरत कामरेड वतूतिन* को अधिक होगी। हम यह नक्शा उन्हीं को भेज देंगे। हमारे लायक जो सूचना का मौक़ा मिला हो, हम उसी का इस्तेमाल करेंगे।"

रात देर गये ही कात्या को अन्द्रेई येफीमोविच से खुलकर बातचीत करने का

मौक़ा मिला।

वे उस गर्म और खाली कमरे में अकेले खड़े थे। कात्या पूछ रही थी :

"यह आप यहाँ कैसे आ पहुँचे, अन्द्रेई येफीमोविच?"

"इससे आपको आश्चर्य क्यों होता है? हम फिर अपनी उक्राइनी धरती पर लौट आये। अभी इसके अधिकांश भाग पर हमारा अधिकार नहीं हुआ है, पर कुछ भी हो, यह ज़मीन हमारी है, अपनी है। हमारी मातृभूमि में सोवियत सत्ता फिर से लौट रही है।" अन्द्रेई येफीमोविच मुस्कराया और उसके मजबूर झुर्रीदार चेहरे पर सहसा तरुणाई झलकने लगी। "आप को मालूम ही है कि हमारी सेना उक्राइनी छापामारों साथ कन्धे से कन्धा मिलकर ही आगे बढ़ रहीं है। बिना छापामारों के सैनिकों को काफ़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता!" उसने कात्या पर एक निगाह डाली। उसकी आँखों में चमक आ गयी। सहसा उसका चेहरा गम्भीर हो उठा। "मैं चाहता था कि आप कुछ आराम कर लेतीं। काम के बारे में हम कल बात कर सकते थे। आप तो बड़ी बहादुर हैं," उसने कुछ शर्माते हुए कहा। किन्तु उसकी आँखें कात्या की आँखों में गड़ी थी। "हम आपको फिर बोरोशीलोवग्राद भेजना चाहेंगे। हमें बहुत कुछ जानते की ज़रूरत है और यह सूचना आप ही प्राप्त कर सकती हैं।" कुछ देर बाद वह प्रश्नसूचक मुद्रा में धीरे-से बोला, "हाँ, यदि आप बहुत अधिक थक गयी हैं तो..."

किन्तु कात्या ने उसे अपनी बात पूरी करने न दी। उसका हृदय गर्व और आभार से भर गया था।

"धन्यवाद," वह फुसफुसायी, "धन्यवाद अन्द्रेई येफीमोविच! आगे कुछ मत कहना। इससे अधिक प्रसन्नता की बात मेरे लिए और कोई भी नहीं हो सकती," उसके शब्दों में उत्तेजना का पुट था। उसके सुनहरे बालों ने उसके चेहरे की खूबसूरती में चार चाँद लगा दिया। "मेरी आपसे एक ही प्रार्थना है-कल मुझे जाने दीजिये, मुझे मोर्चे के राजनीतिक विभाग में मत भेजिये। मुझ आराम की कोई ज़रूरत नहीं!"

येफीमोविच सिर मटकाकर मुस्करा दिया।

अन्द्रेई हम इतनी जल्दी में नहीं है," वह बोला। "हमें अपनी स्थिति मजबूत बनानी है। देर्कूल और खास तौर से दोनेत्स पर हम आसानी से विजय न प्राप्त कर सकेंगे-मील्लेरोवो और कामेंस्क जो हमें रोके हुए है। और आपको राजनीतिक विभाग में बहुत कुछ बताना है।

"किन्तु कात्या ने उसे अपनी बात पूरी करने न दी। उसका हृदय गर्व और आभार से भर गया था।

---

* वतूतिन न. फे. (1901-1944)-प्रसिद्ध सोवियत सेनानायक।-सं.

“धन्यवाद,” वह फुसफुसायी, “अन्द्रेई येफीमोविच! आगे कुछ मत कहना। इससे अधिक प्रसन्नता की बात मेरे लिये और कोई भी नहीं हो सकती,” उसके शब्दों में उत्तेजना का पुट था। उसके सुनहरे बालों ने उसके चेहरे की ख़ूबसूरती में चार चाँद लगा दिया। “मेरी आपसे एक ही प्रार्थना है-कल मुझे जाने दीजिये, मुझे मोर्चे के राजनीतिक विभाग में मत भेजिये। मुझे आराम की कोई ज़रूरत नहीं!”

अन्द्रेई येफीमोविच सिर मटकाकर मुस्करा दिया।

“हम इतनी जल्दी में नहीं है,” वह बोला। “हमें अभी अपनी स्थिति मजबूत बनानी है। देर्कूल और खास तौर से दोनेत्स पर हम आसानी से विजय न प्राप्त कर सकेंगे-मील्लेरोवो और कामेंस्क जो हमें रोके हुए हैं। और आपको राजनीतिक विभाग में बहुत कुछ बताना है। इसलिए हमें कोई खास जल्दी नहीं है। आप दो-तीन दिन में जा सकती हैं।”

“पर कल क्यों नहीं? कात्या बोली। उसका हृदय बुरी तरह तड़प रहा था।

तीन दिन बाद, रात के समय कात्या फिर गाल्या के मकान में आ गयी। वह भेड़ की खालवाला वही ओवरकोट और काली शॉल डाले थी। उसके पास वहीं पासपोर्ट था, जिसमें वह चीर की अध्यापिका के रूप में दर्ज थी।

सोवियत सेना उस छोटे-से गाँव में घुस चुकी थी, किन्तु उत्तर और दक्षिण की पहाड़ियाँ अभी तक दुश्मनों के हाथ में थीं। जर्मन प्रतिरक्षा-पंक्तियाँ कमीश्नाया और देर्कूल के बीच जल-विभाजक के साथ-साथ तथा देर्कूल पर दूर पश्चिम तक चली गयी थीं।

रात में साशा, पहले की ही तरह गुप-चुप्प और आश्वस्त कात्या को उसी सड़क पर ले गया, जिस पर वह पहले बूढ़े फोमा के साथ आयी थी। और अन्ततः वह उस मकान में भी पहुँच गयी, जहाँ से कुछ दिन पहले प्रोत्सेंको ने उसे उसकी इस यात्रा पर भेजा था।

वहाँ कोर्नियेंको नाम के अनेक लोगों में से एक ने बताया कि उसके पति को उसकी वापसी की सूचना दे दी गयी है और उसका पति सुरक्षित है, किन्तु अभी उससे मिल न सकेगा।

इसके पश्चात! कात्या ने मार्फा कोर्नियेंको के पास जाने की तैयारी की और बिलकुल अकेली रात-दिन चलती रही। अपनी मंजिल पर पहुँचने पर उसे यह हृदयविदारक समाचार सुनने को मिला कि माशा शूबिना को मार डाला गया है।

जर्मनों को उस्पेंस्कोये गाँव के प्रथम उपचार-केन्द्र पर स्थित फ़्लैट का पता चल गया था। जर्मन पुलिस में काम करनेवाले अपने ही एक आदमी ने क्रोतोवा बहनों को आगाह कर दिया। किन्तु जब यह खबर मार्फा कोर्नियेंको को पहुँची, तब तक

देर हो चुकी थी-माशा उस्पेंस्कोये की ओर रवाना हो गयी थी।

माशा को रास्ते में रोकने की सारी कोशिशें बेकार सिद्ध हुई। माशा जर्मन पुलिस के हाथ पड़ गयी और उस्पेंस्कोये में उसे यंत्रणाएँ दे-देकर मार डाला गया। पुलिस के उसी अपने आदमी से बाद में यह पता भी चला कि माशा शूबिना बराबर यही कहती रही कि उसका सम्बन्ध किसी भी ख़ुफ़िया संगठन से नहीं है। उसने किसी का नाम नहीं बताया।

सचमुच यह हृदयविदारक समाचार था! किन्तु कात्या को दुखी होने को कोई अधिकार न था-उसे अपनी सारी ताकत से काम लेना होगा।

दो दिन बाद वह वोरोशीलोवग्राद पहुँच गयी।

अध्याय 21

इस समय तक जर्मन अधिकृत क्षेत्र के उन लोगों तक को, जो समाचारों से अनभिज्ञ थे, और सैनिक कार्रवाइयों के बारे में तनिक भी न जानते थे, यह पता चल गया था कि हिटलरवादियों का अन्त निकट है।

क्रास्नोदोन जैसे स्थानों में भी, जो मोर्चे से बहुत दूर थे, इस बात का पता यह देखकर चल रहा था कि हिटलरवादियों के लूट के साथी-हंगेरियन और इतालवी भाड़े के टट्टू और अन्तोनेस्कू की सेना के बचे-खुचे लोग सिर पर पैर रखकर भाग रहे थे।

रूमानियाई अफ़सर और सैनिक मोटरें और तोपें छोड़-छाड़कर सभी सड़कों पर भागते नज़र आते थे। रात-दिन अपनी बग्घियों में, जिनमें मरियल घोड़े जुते होते थे, या पैदल, अपने जर्जर ओवरकोटों की आस्तीनों में हाथ डाले, फ़ौजी टोपियाँ या बकरे की खाल के हैट लगाये, पाले से सुन्न हुए चेहरों, पर तौलिये या औरतों के गरम जांघिये लपेटे भाग रहे थे।

इस तरह की एक बग्घी कोशेवोई के घर के दरवाज़े पर आकर रुक गयी। उसमें से एक परिचित अफ़सर कूदा और घर में घुस गया। उसके पीछे उसका अर्दली अपना और अपने अफ़सर को सूटकेस लिये आ रहा था। अफ़सर का सूटकेस बड़ा और अर्दली का छोटा था। अर्दली पाले से मारा हुआ अपना कान छिपाने की पूरी कोशिश कर रहा था।

अफ़सर का चेहरा दाँतों में दर्द के कारण सूजा हुआ था। उसके कन्धों पर से सुनहरी पट्टियाँ नदारद थीं। वह दौड़ता हुआ रसोईघर में गया और स्टोव पर तुरन्त अपने हाथ सेंकने लगा।

"हाँ, तो क्या मामला है?" मामा कोल्या ने उससे पूछा।

अफ़सर के चेहरे पर वही भाव आया, जब उसकी नाक की नोक हिलने लगती थी, किन्तु इस समय तो उसकी नाक को पाला मार चुका था। इसीलिए उसका हिलना बन्द हो गया। उसने सहसा हिटलर की नकल करते हुए अपना मुँह बनाया। वह उसमें कामयाब भी हुआ, क्योंकि उसकी मूँछें छोटी-छोटी और आँखों में पागलों का-सा भाव था। फिर वह अपने पंजों के बल खड़ा हुआ और भागने का स्वांग करने लगा। उसके चेहरे पर कोई मुस्कारहट न थी। क्योंकि वस्तुतः वह मज़ाक नहीं कर रहा था।

"हम अपनी पत्नी के पास घर जा रहे है।," अर्दली ने मृदुल स्वर में टूटी-फूटी रूसी में कहा और अफ़सर पर एक तिरछी निगाह डालते हुए मामा कोल्या को आँख मारी।

उन्होंने कुछ पेट में डाला और अपने सूटकेस लेकर घर से निकले ही थे कि नानी ने येलेना निकोलायेव्ना के पलंग के कम्बल उठाकर देखा-दोनों चादरें गायब हैं।

नानी को इतना ताव आ गया कि वह झट-से मेहमानों के पीछे लपकी और उन पर बुरी तरह बरस पड़ी। अफ़सर ने समझ लिया कि किसी भी समय चिल्ल-पों करती हुई औरतों का झुण्ड का झुण्ड वहाँ इकट्ठा हो सकता है। उसने अर्दली को अपना छोटा सूटकेस खोलने का हुक्म दिया। एक चादर सूटकेस में से निकली। नानी ने उसे हाथों में लिया और चीख़ने लगी।

"दूसरी कहाँ है?"

अर्दली ने अपने मालिक की ओर संकेत करते हुए आँखें मिचकायीं, किन्तु तब तक वह बग्घी में चढ़ चुका था। तो इस तरह वह उस चादर को रूमानिया लेता गया, अगर रास्ते में किसी उक्राइनी या मोल्दावान छापामार ने उसे परलोक न भेज दिया हो।

कभी-कभी सबसे जोखिमभरे काम सफलतापूर्वक पूरे हो जाते हैं, क्योंकि वे एकदम अप्रत्याशित होते हैं। दूसरी तरफ़ कई बार ऐसे कामों में अधिक सफलता नहीं मिल पाती, जिनके लिए बड़ी तैयारी की गयी होती है। अकसर एक ही गलत क़दम के कारण बड़े से बड़े कामों का भयंकर परिणाम निकलता है।

30 दिसम्बर की शाम को, सेर्गेई, वाल्या और कुछ अन्य साथी क्लब जा रहे थे। सहसा उन्होंने देखा कि बोरों से लदी एक जर्मन लारी एक मकान के सामने खड़ी है। लारी पर न ड्राइवर था और न कोई पहरेदार ही।

सेर्गेई और वाल्या ने लारी पर चढ़कर बोरे टटोले और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उनमें नववर्ष के उपहार भरे हुए हैं। पिछली रात थोड़ी-सी बर्फ पड़ी थी, चारों ओर

उजाला हो रहा था। लोग अभी तक सड़कों पर घूम रहे थे, फिर भी इन जवानों ने मौक़ा पाकर कई बोरे लारी से नीचे गिराये और उन्हें घसीटते हुए पड़ोस के अहातों और सायबानों में ले आये।

क्लब के डाइरेक्टर जेन्या मोश्कोव और आर्ट मैनेजर वान्या जेम्नुखोव ने यह सुझाव दिया कि जैसे ही रात में क्लब से सभी लोग चल जायें, बोरों को वहीं पहुँचा दिया जाये, क्योंकि क्लब के तहखाने में जगह बहुत है।

जर्मन सिपाही लारी के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये और नशे में गालियाँ बकने लगे। खासकर कुत्ते की खाल के कालरवाला कोट और बनावटी फेल्ट के बूट पहने हुए एक कार्पोरल तो जामे से बाहर हुआ जा रहा था। घर की मालकिन वहाँ बिना कोट पहने खड़ी थी और जर्मनों से बार-बार कह रही थी कि उसका कोई दोष नहीं है। बेशक जर्मन ख़ुद देख रहे थे कि उसका इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं। आख़िर जर्मन कूदकर लारी पर बैठे, वह औरत घर में भागी और लारी थाने को चल दी।

इसके बाद छोकरे बोरे खींचकर क्लब में लाये और उन्हे तहखाने में छिपा दिया।

सुबह वान्या जेम्नुखोव और मोश्कोव क्लब में मिले। उन्होंने नववर्ष के उपहारों के एक भाग, खासकर सिगरेटों को तुरन्त ही बाजार में बेच डालने का निश्चय किया। संगठन को पैसे की ज़रूरत थी। संयोग से स्तखोविच भी क्लब में आ गया। उसने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

जर्मन चीज़ों की चोर-बाजारी ख़ूब हुआ करती थी। दूसरों से अधिक यह काम जर्मन सिपाही करते थे। वे वोद्का, गर्म कपड़ों और खाने की चीज़ों के बदले में सिगरेटें, तम्बाकू, मोमबत्तियाँ और पेट्रोल दिया करते थे। जर्मन सामान हाथों-हाथ बिकते रहते और पुलिसवाले उसे अनदेखा कर देते थे। मोश्कोव के अधीन ऐसे बहुत-से लड़के थे, जो कुछ कमीशन लेकर सिगरेटें बेचा करते थे।

उस दिन पुलिसवालों ने घटनास्थल के पास-पड़ोस के मकानों की तलाशी ली थी, किन्तु उन्हें नववर्ष के उपहारों का कोई सुराग न लगा। तब वे सभी व्यापारियों पर निगाह रखने लगे। आख़िर ख़ुद पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की ने एक लड़के को पकड़ लिया, जिसके पास सिगरेटें थीं।

जब उससे पूछ-ताछ की गयी, तो उसने बताया कि उसे ये सिगरेटें रोटी के बदले में एक आदमी से मिली हैं। उस लड़के पर कोडे बरसाये गये। किन्तु उसे तो ज़िन्दगी में अनेक बार कोड़े पड़ चुके थे-उसने अपने साथियों के साथ कभी गद्दारी नहीं की थी। पिटे-पिटाये, रोते हुए लड़के को रात तक जेल की एक कोठरी में रखा गया।

दूसरे कामों के सिलसिले में रिपोर्ट देते हुए पुलिस चीफ ने मिस्टर ब्रूक्नेर को उस लड़के की गिरफ़्तारी की भी बात बतायी, जिसके पास से जर्मन सिगरेटें निकली

थीं। ब्रूक्नेर ने इस घटना का सम्बन्ध लारियों से हुई दूसरी चोरियों से जोड़ लिया और उस बालक से पूछताछ करने का निश्चय किया।

बालक कोठरी में ही सो गया था। शाम देर गये उसे जगाकर ब्रूक्नेर के कमरे में लाया गया। वहाँ दो और आदमी खड़े थे-एक था पुलिस चीफ और दूसरा दुभाषिया।

उस लड़के ने नकियाते हुए सारी कहानी दुहरा दी।

मिस्टर ब्रूक्नेर को क्रोध आ गया। उसने लड़के का कान पकड़ा और उसे दालान से खींचते हुए ले गया।

लड़के को एक कोठरी में पहुँचा दिया गया, जहाँ ऊँचे-ऊँचे पायोंवाले ख़ून से सने दो तख़्त रखे थे। छत पर से रस्सियाँ लटक रही थीं। एक लम्बे मेज पर लोहे की छड़ें, बरमें बिजली के तारोंवाले कोड़े, एक कुल्हाड़ी और जाने क्या-क्या भयंकर चीज़ें रखी थीं। लोहे के एकस्टोव में आग जल रही थी। एक कोने में बाल्टी में पानी रखा था। कमरे के दो ओर वैसी ही नालियाँ बनी थीं, जैसी हमामों में देखने को मिलती हैं।

एक मोटा और गंजा जर्मन सिपाही एक मेज के पास बैठा सिगरेट पी रहा था। उसके रोयेंदार हाथ बड़े-बड़े और लाल थे। वह काली पोशाक पहने था और सींगवाले हल्के फ्रेम का चश्मा लगाये था।

बालक ने उसकी ओर देखा और डर से काँपते हुए बता दिया कि ये सिगरेटें उसे मोश्कोव, जेम्नुखोव और स्तखोविच ने दी थीं।

उसी दिन पेर्वोमाइका बस्ती की वीरिकोवा नामक एक लड़की की बाजार में अपनी एक सहेली ल्यादूस्काया से अचानक मुलाकात हो गयी। वे दोनों एक ही स्कूल में, एक ही कक्षा की एक ही बेंच पर बैठकर पढ़ा करती थीं। किन्तु लड़ाई के आरम्भ में, जब ल्यादस्काया के पिता का तबादला क्रास्नोदोन बस्ती में किसी पद पर हुआ था, वे एक-दूसरे से बिछुड़ गयी थीं।

उनकी आपसी मित्रता उतनी अधिक गहरी नहीं थी। लेकिन वे ऐसे माहौल में पली थीं कि उन्होंने मौक़े का महत्व समझना सीख लिया था। और इस प्रकार की शिक्षा से दोस्ती को बल नहीं मिलता। उन दोनों की रुचियाँ एक-सी थीं, और उन दोनों को ही आपसी सम्बन्धों से लाभ मिलता था। उनको अपने बचपन से ही, अपने माता-पिता और उनसे सम्बद्ध लोगों से दुनिया की जो जानकरी हुई थी, उससे उनका यह विश्वास दृढ़ होने लगा था कि सभी लोग स्वार्थ के लिए जीते हैं, और ज़िन्दगी का लक्ष्य और उद्देश्य नुकसान पहुँचाना नहीं, बल्कि दूसरों के मत्थे फलना-फूलना है।

स्कूल में वीरिकोवा और ल्यादूस्काया भिन्न-भिन्न सामाजिक कार्यों में लगी रहती

थीं। और अभ्यासवश सभी आधुनिक सामाजिक और नैतिक धारणाओंवाली शब्दावली का प्रयोग किया करती थीं। किन्तु उन्हें विश्वास था कि ये सारे सामाजिक कार्य, यह सारी शब्दावली और यहाँ तक कि स्कूली ज्ञान भी-इन सबकी व्यवस्था लोगों ने इसलिए की है, ताकि वे अपने स्वार्थ-प्रयासों और अपना मतलब गाँठने के लिए दूसरों का इस्तेमाल करने पर परदा डाल सकें।

उस दिन एक-दूसरे से मिलने पर उन्होंने कोई खास उत्साह नहीं दिखाया, फिर भी दिल ही दिल में उन्हें ख़ुशी ज़रूर हुई। उन्होंने एक-दूसरे से हाथ मिलाये। छोटी वीरिकोवा टोपी पहने हुए थी, उसकी छोटी-छोटी चोटियाँ कोट के कालर के बाहर निकले हुए थी। ल्यादूस्काया का क़द लम्बा, जबड़े की हड्डियाँ बड़ी, बाल लाल और उँगलियों के नाख़ून रँगे हुए थे। वे बातचीत करने के लिए बाजार की भीड़ से एक ओर हट आयी।

"बड़े आये ये जर्मन, स्वयं को मुक्तिदाता बतानेवाले," ल्यादूस्काया बोली। "तहजीब... तहजीब की रट लगाये रहते हैं, लेकिन वे एक ही बात सोच सकते हैं-अपना पेट कैसे भरा जाये और मुफ़्त में मौज कैसे उड़ायी जाये... नहीं मैं यह ज़रूर कहूँगी कि मुझे उनसे यह आशा न थी... तुम काम कहाँ करती हो?"

"वहाँ जहाँ कभी मवेशी कार्यालय हुआ करता था..." वीरिकोवा के चेहरे पर क्षोभ और क्रोध का भाव झलक उठा। आख़िर उसे एक ऐसे आदमी से बातचीत करने का मौक़ा मिल ही गया, जो सही दृष्टिकोण से जर्मनों की आलोचना करना जानता था। "मुझे सिर्फ़ रोटी और 200 मार्क मिलते हैं, बस! वे गधे हैं! वे अपने सच्चे दोस्तों की बिलकुल क़द्र नहीं करते। वे मेरी आशाएँ पूरी नहीं कर सके," वीरिकोवा बोली।

"मैंनें तुरन्त समझ लिया था कि इस काम से कोई लाभ नहीं। इसीलिए तो मैंने उनकी सेवा नहीं की," ल्यादूस्काया बोली, "पहले मेरी ज़िन्दगी कोई बुरी नहीं कटी। हमारी एक अच्छी मित्र-मण्डली बन गयी। मैं चीज़ें खरीदने-बेचने के लिए गाँवों का दौरा करने लगी। किसी ईर्ष्यालु लड़की ने पुलिस में रिपोर्ट कर दी कि मैं श्रम-केन्द्र में रजिस्टर्ड नहीं हूँ। मैंने भी उस हूठा दे दिया! मै श्रम-केन्द्र के एक अधेड़ आदमी को जानती थी। बड़ा मजेदार आदमी था। वह जर्मन न था, लोरेन या ऐसी ही किसी जगह का रहनेवाला था। मैं कुछ समय तक उसके साथ घूमती-फिरती रही। बाद में वह ख़ुद मेरे लिए शराब और सिगरेटों का बन्दोबस्त करने लगा। इसके बाद वह बीमार पड़ गया और उसकी जगह काम करने के लिए एक कुत्ता आ गया। उसने मुझे आनन-फानन खान के काम पर भेज दिया। मुझे दिन भर बोझ उठानेवाली मशीन का हैंडिल घुमाया पड़ता था। यह कोई आसान काम नहीं था। इसीलिए मैं यहाँ आयी हूँ, शायद श्रम-केन्द्रवाले मुझे किसी अच्छे काम पर लगा दें। तुम्हारी वहाँ कोई

सिफारिश लड़ सकती है?"

वीरिकोवा ने इठलाते हुए होंठ फुला लिये।

"मुझे उनसे क्या लेना-देना है? पर मैं तुम्हें यह बता दूँ-फौजियों के साथ रहने में बड़ा लाभ है। वे यहाँ थोड़े समय के लिए है। देर सवेर उन्हें जाना ही होगा। फिर तुम्हें उनके लिए कुछ नहीं करना होगा। और वे कंजूस भी नहीं है। वे जानते हैं कि किसी भी दिन वे मौत के मुँह में जा सकते हैं, इसलिए कुछ मौज मजा कर लेना उन्हें बुरा नहीं लगता। कभी आओ न!"

"कैसे आ सकती हूँ? तुम्हारी पेर्वोमाइका बस्ती तक अठारह किलोमीटर का फासला है!"

"मेरी पेर्वोमाइक! कुछ दिन पहले यह तुम्हारी भी तो थी न! आ ही जाओ। मुझे अपने नये काम के बारे में बताना। मैं तुम्हें कुछ दिखाऊँगी, शायद दूँगी भी। मेरा मतलब समझ गयीं न। ज़रूर आना!" और वीरिकोवा ने उसकी ओर अपना छोटा-सा हाथ बढ़ा दिया।

शाम को एक पड़ोसिन ने, जो उस दिन श्रम-केन्द्र में गयी थी, वीरिकोवा को एक रुक्का थमा दिया : "श्रम-केन्द्र में तुम्हारे कुत्ते हमारे कुत्तों से गये-गुजरे हैं।" ल्यादूसकाया ने यह भी लिखा था कि उसकी योजनाएँ पूरी नहीं हुई और वह 'निराश होकर' घर जा रही है।

नववर्ष की पूर्ववेला में पेर्वोमाइका समेत नगर भर में अन्यत्र तलाशियाँ ली गयीं। वीरिकोवा के घर में पुलिस को ल्यादूस्काया का रुक्का मिल गया, जो उसने स्कूल की किसी पुरानी कापी में आसावधानी से डाल दिया था। पुलिस इंस्पेक्टर कुलेशोव को नाम का पता चलाने में कोई तकलीफ न हुई। वीरिकोवा ने, डरकर, ल्यादूस्काया की 'जर्मन विरोधी' भावनाओं का मनगढ़न्त वर्णन करना शुरू किया।

कुलेशोव ने वीरिकोवा से छुट्टी के बाद थाने पर आने को कहा। उसने रुक्का अपने पास रख लिया था।

मोश्कोव, जेम्नुखोव और स्तखोविच की गिरफ़्तारी के खबर सबसे पहले सेर्गेई त्युलेनिन को मिली। उसने यह बात अपनी बहनों, नादूया और दाशा से कहीं, अपने मित्र वीत्का लुक्याँचेंको को आगाह किया और भागा-भागा ओलेग से मिलने गया। वहाँ उसे वाल्या और इवान्त्सोवा बहनें मिल गयी। वे ख़ुफ़िया कामों के सिलसिले में हर सुबह ओलेग के घर आती थी।

पिछली रात ओलेग और मामा कोल्या ने सोवियत सूचना-केन्द्र की विज्ञप्ति लिख ली थी। विज्ञप्ति में स्तालिनग्राद क्षेत्र में लाल सेना के छः सप्ताह के आक्रमण के परिणाम बताये गये थे : वहाँ तैनात विशाल जर्मन सेनाओं पर दुहरा घेरा डाल दिया

गया था।

लड़कियों ने हँसते हुए सेर्गेई को यह ख़ुशखबरी सुनायी। बेशक, सेर्गेई पक्के दिल का आदमी था, फिर भी जब उसने उन्हें गिरफ़्तारी की भयानक खबर सुनायी, तो उसके होंठ काँप उठे।

कुछ क्षणों तक ओलेग निष्चेष्ट बैठा रहा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया, बड़े हाथों की लम्बी उँगलियाँ बँध गयीं, माथे पर गहरी झुर्रियाँ पड़ गयी। आख़िर वह उठ खड़ा हुआ और उसके चेहरे पर कुछ करने के दृढ़निश्चय का भाव आ गया।

"सुनो लड़कियो," वह धीरे-से बोला, "तुर्केनिच और ऊल्या से मिलो। फिर 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर के निकट सम्पर्क में आनेवाले लोगों के पास जाकर कहो कि वे सभी चीज़ें छिपा लें या नष्ट कर डालें। आगे क्या करना है, यह हम उन्हें दो घण्टे के भीतर ही बात देंगे। अपने रिश्तदारों को भी आगाह कर देना... और हाँ, ल्यूबा की माँ को मत भूलना," वह बोला (ल्यूबा वोरोशीलोवग्राद में थी)। "अब कुछ देर के लिए मुझे भी जाना होगा।"

सेर्गेई ने अपनी रुई की जैकेट और टोपी पहन ली।

"कहाँ जा रहे हो?" ओलेग ने पूछा।

वाल्या को सहसा यह सोचकर शर्म आयी कि सेर्गेई उसके साथ जाने की तैयारी कर रहा है।

"मैं सड़क पर निगाह रखने जा रहा हूँ। इस बीच तुम सब तैयार हो जाओ," वह बोला।

तब पहली बार उनको ख़याल आया कि जो घटना वान्या, मोश्कोव और स्तखोविच के साथ घटी है, वह किसी भी समय उनके साथ भी घट सकती है।

लड़कियाँ, परस्पर यह निश्चय करने के बाद कि कौन कहाँ जायेगी, घर से बाहर निकल पड़ी।

जब वाल्या अहाता पार कर रही थी, तो सेर्गेई ने उसे रोककर कहा :

"सावधानी से काम लो। अगर हम तुम्हें यहाँ न मिलें, तो अस्पताल में जाकर नताल्या अलेक्सेयेव्ना से मिलना। मैं भी वहीं जाऊँगा। तुम्हारे बिना मैं कहीं न जाऊँगा।"

वाल्या ने चुपचाप सिर हिलाया और तुर्केनिच के पास दौड़ी।

ओलेग अपनी सामान्य चाल से चलते रहने का प्रयत्न करता हुआ पोलीना गेओर्गियेव्ना के पास गया, जो श्रम-केन्द्र के निकट रहती थी।

जब उसने उसके घर में प्रवेश किया, तब वह आलू छील-छीलकर कढ़ाई में डाल रही थी। ओलेग ने उसे अपने साथियों की गिरफ़्तारी की बात बतायी, तो उसके चेहरे

का रंग उड़ गया। उसके हाथ में चाकू छूट पड़ा और कुछ क्षणों के लिए वह स्तब्ध रह गयी। फिर उसने अपने को सँभाला।

उस दिन नववर्ष की छुट्टी थी, अतः कोई भी काम कर पर न गया था। "सचमुच ल्यूतिकोव घर ही में होगा, पर सुबह दूध दे आने के बाद अब दिन में वहाँ जाना ठीक नहीं"-पोलीना गेओर्गियेव्ना ने सोचा। साथ ही देर करना भी उचित नहीं। बहुत कुछ घण्टों में नहीं, मिनटों में हल हो सकता था।

वैसे पोलीना गेओर्गियेव्ना 'तरुण गार्ड' के मामलों से अवगत थी, फिर भी उसने ओलेग से पूछ ही लिया कि क्या गिरफ़्तार व्यक्तियों को पता है कि ओलेग और तुर्केनिच का सम्बन्ध जिला पार्टी समिति से है। बेशक वे इस बारे में जानते होंगे, किन्तु यह सम्बन्ध व्यक्तिगत रूप से किस-किस के साथ था, यह कोई न जानता था। मोश्कोव स्वयं जिला पार्टी समिति के सम्पर्क में रहता था, लेकिन उस पर हर दशा में भरोसा किया जा सकता था। जेम्नुखोव तो पोलीना गेओर्गियेव्ना की मार्फत जिला पार्टी समिति से सम्पर्क करता था। वह वान्या को इतनी अच्छी तरह जानती थी कि उसे उस पर पूरा विश्वास था।

बेशक दुर्भाग्य की बात यह थी कि स्तखोविच को 'तरुण गार्ड' दल की इतनी अधिक जानकारी थी। ओलेग का कहना था कि वह ईमानदार तो है, किन्तु कमज़ोर है।

पोलीना गेओर्गियेव्ना ओलेग को अकेला छोड़कर बाहर चली गयी। वह यह बताकर गयी कि यदि कोई उसे पूछने आये, तो वह क्या उत्तर दे।

ओलेग के लिए वह घण्टा पहाड़ हो गया। सौभाग्य से कोई पोलीना गेओर्गियेव्ना को पूछने न आया। हाँ, दीवार के दूसरी ओर पड़ोसियों के घर में कुछ खटपट ज़रूर हुई।

आख़िर पोलीना गेओर्गियेव्ना लौट आयी... बाहर की ठण्डक से उसके गाल फिर लाल हो गये थे। ल्यूतिकोव ने प्रत्यक्षतः अपनी बातों से उसके हृदय में आशाएँ भर दी थीं।

"अब सुनो!" वह शॉल उतारकर ओलेग के सामने बैठ गयी। "उसने कहा है कि तुम निराश न हो। और उसने निर्देश दिया है कि तुम सब फौरन नगर छोड़कर चले जाओ। यह निर्देश 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के सभी सदस्यों और दल अथवा गिरफ़्तार लोगों से सम्पर्क रखनेवाले सभी लोगों के लिए है। दो-तीन भरोसे के आदमियों को संगठन का चार्ज दे दो, उसके लीडर को मेरे सम्पर्क में कर दो और चले जाओ। अगर किसी को किसी नगर या गाँव में पनाह मिल सके, तो वह वहीं छिप जाये। जहाँ तक हेडक्वार्टर के सदस्यों और उनसे सम्पर्क रखनेवालों की बात

है, तो वह इन को उत्तरी जिलों में , दोनेत्स के दूसरी ओर चले जाने की सलाह देता है। वहाँ से मोर्चे को भेजा जा सकता है या फिर वहीं लाल सेना के आने तक प्रतीक्षा की जा सकती है... ठहरो, एक बात और है...” ओलेग के प्रश्न का पूर्वानुमान करके वह बोली। “उसने तुम्हारे लिए मुझे एक पता दिया है। अब ध्यान से सुनो,” पोलीना गेओर्गियेव्ना के चेहरे पर कठोरता झलक उठी। “यह पता तुम तुर्केनिच को ही दे सकते हो। तुम दोनों ही इसका इस्तेमाल कर सकते हो। और यह किसी दूसरे के हाथ में न पड़ने पाये, भले ही वह व्यक्ति तुम्हें जान से ज़्यादा से ज़्यादा प्यारा क्यों न हो। समझ गये न मेरी बात?” पोलीना गेओर्गियेव्ना धीमी आवाज़ में बोली और ध्यान से ओलेग की ओर देखा। वह समझ गया कि उसका इशारा किस ओर है।

ओलेग कुछ क्षणों तक निश्चेष्ट-सा बैठा रहा। उसके माथे पर लम्बी-लम्बी झुर्रियाँ पड़ गयीं।

“क्या मुझे और तुर्केनिच को हर हालत में इस पते पर जाना चाहिए?” उसने धीरे से पूछा।

“नहीं, बिलकुल नहीं। पर यह पूर्णतः भरोसे का पता है। वहाँ तुम न सिर्फ़ छिपकर रह सकोगे, अपितु तुम्हें करने के लिए कुछ काम भी दिया जायेगा!”

ओलेग के मस्तिष्क में जो पीड़ाजनक संघर्ष चल रहा था, उसका आभास पोलीना गेओर्गियेव्ना को भी हो रहा था। किन्तु उसने जो प्रश्न पूछा, उसकी उसने आशा न की थी।

“और हमारे जो साथी जेल में हैं? उन्हें छुड़ाने का प्रयत्न तक किये बिना हम कैसे जा सकते हैं?”

“उनकी मदद अब तुम लोग नहीं करोगे,” पोलीना गेओर्गियेव्ना दृढ़तापूर्वक बोली, “जिला पार्टी समिति से जो कुछ हो सकेगा वह करेगी। स्थानीय नौजवान भी मदद करेंगे। तो तुम चार्ज किसे दोगे?”

“अनातोली पोपोव यहाँ रहेगा,” एक क्षण विचार करने के बाद ओलेग बोला। “यदि उसे कुछ हो गया, तो फिर कोल्या सुम्स्कोई काम करेगा। उसे जानती हैं आप?”

वे दोनों कुछ मिनटों तक चुपचाप बैठे रहे। अब उसे अपने रास्ते चल देना था।

“कहाँ जाने की सोच रहे हो?” पोलीना गेओर्गियेव्ना ने धीरे-से पूछा। अब वह उसके और उसके परिवार के हितैषी के नाते पूछ रही थी।

ओलेग का चेहरा इतना उदास हो उठा कि उसको अपने प्रश्न पर पछतावा होने लगा।

“आप तो जानती ही हैं कि मैं इस पते का इस्तेमाल क्यों नहीं कर सकता. . .” वह बड़ी कठिनाई से बोला।

बेशक वह जानती थी-नीना! वह बिना नीना के नहीं जा सकता था।

"हम मोर्चा साथ-साथ पार करने का प्रयत्न करेंगे," ओलेग बोला।

"अलविदा।"

वे एक-दूसरे से गले मिले।

इस बीच वान्या तुर्केनिच ओलेग के घर आया। कुछ समय बाद स्त्योपा सफोनोव और सेर्गेई लेवाशोव भी आये, यद्यपि उन्हें नहीं बुलाया गया था। तत्पश्चात् जोरा अरुत्युन्सान्त्स आया, पर बिना ओस्मूखिन को लिये। आज एक जनवरी को वोलोद्या ओस्मूखिन की अठारहवीं वर्षगाँठ मनायी गयी। इस अवसर पर उसकी बहन ल्यूद्मीला ने उसे उपहार में एक जोड़ी अपने बुने हुए ऊनी मोजे दिये। और वे अपने बाबा से मिलने गाँव चले गये।

तुर्केनिच ने घर के इर्द-गिर्द निगरानी रखने के लिए कुछ लड़कों को बाहर भेज दिया। फिर वह और सेर्गेई बिना ऊल्या की प्रतीक्षा किये आपस में परामर्श करने लगे।

उनका अगला क़दम क्या हो? इस प्रश्न का उत्तर उन्हें फौरन देना था। उन्हें मालूम था कि इससे न सिर्फ़ उनके गिरफ़्तार साथियों का ही, बल्कि सारे संगठन का भाग्य बँधा है। उन्हें किसी भी क्षण गिरफ़्तार किया जा सकता था। तो वे छिप जायें क्या? किन्तु उन्हें छिपने की भी कोई जगह न थी। सभी उन्हें जानते थे।

वाल्या लौट आयी, फिर ओल्या इवान्त्सोवा ऊल्या के साथ और नीना भी आ गयी। नीना उन्हें रास्ते में मिल गयी थी। नीना ने आकर खबर दी कि इस समय क्लब पर पुलिसवालों का पहरा है और किसी को भी अन्दर नहीं जाने दिया जा रहा है। पास-पड़ोस के सभी लोगों को क्लब लीडरों की गिरफ़्तारी और इस बात का पता चल गया है कि जर्मनों के नववर्ष के उपहार क्लब के तहखाने से बरामद हुए थे।

तुर्केनिच और नीना ने यह मत ज़ाहिर किया कि लड़कों के पकड़े जाने का सिवा इसके और कोई कारण नहीं। बेशक स्थिति गम्भीर थी, किन्तु इसका यह अर्थ न था कि सारे संगठन का पर्दाफाश हो गया है।

"वे लोग हमारे साथ गद्दारी नहीं करेंगे," तुर्केनिच विश्वासपूर्वक बोला।

इसी समय ओलेग आकर मेज के पास बैठ गया। उसके चेहरे की मुद्रा गम्भीर थी। उसने तुर्केनिच को अपनी नानी के कमरे में बुलाया और उसे पोलीना गेओर्गियेव्ना का दिया हुआ पता थमा दिया। उन्होंने थोड़ी-सी बातचीत की, फिर सेर्गेई और लड़कियों के पास लौट आये। सभी चुपचाप उनका इन्तज़ार कर रहे थे। वे प्रश्नसूचक मुद्रा में ओलेग की ओर देखने लगे।

ओलेग बोल पड़ा और उसके चेहरे पर कठोरता झलकने लगी :

"हमें समझ लेना च...चाहिए कि हमारे लिए सुरक्षा की कोई आशा नहीं," उनकी ओर सीधा देखते हुए उसने कहना शुरू किया। "भले ही इससे हमें कितना ही धक्का क्यों न पहुँचे, पर हमें इस विचार को ठुकरा देना चाहिए कि हम यहाँ ल. ..लाल सेना के आने तक ठहर सकते हैं, उसकी म...मदद कर सकते हैं, अपनी योजनाएँ पूरी कर सकते हैं... वरना हम अपने सभी लोगों को खतरे में डालेंगे।" यह मुश्किल से ही अपने को सँभाल पा रहा था। सब के सब निश्चेष्ट होकर उसकी बात सुन रहे थे। उनके चेहरे कठोर पड़ गये थे और रंग उड़ चुके थे। "पिछले कई महीनों से जर्मन हमारी तलाश में हैं। वे जानते हैं कि हम जिन्दा हैं। उन्हें हमारे संगठन के अस्तित्व के बारे में मालूम है। अब उनका हाथ सीधा हमारे संगठन के केन्द्र पर पड़ गया है। अगर उन्हें इन उपहारों के अतिरिक्त कुछ मालूम न हो और आगे भी किसी बात का पता न चले," उसने ज़ोर देकर कहा, "तो भी वे उन सभी लोगों पर झपटेंगे जिनका किसी न किसी रूप में क्लब से सम्पर्क रहा हो। वे दर्जनों निरपराध लोगों को भी गिरफ़्तार कर लेंगे... तो किया क्या जाये?" उसने कुछ सोचा और बोला-"हमें ज़रूर चले जाना चाहिए। नगर से चले जाना चाहिए... बेशक क्रास्नोदोन बस्ती के लोगों को इस आघात से कोई खास चोट नहीं पहुँची है। यही बात पेर्वोमाइका के साथियों के लिए कही जा सकती है। वे अपना काम चालू रख सकते हैं।" सहसा उसने ऊल्या पर एक गम्भीर दृष्टि डाली। "ऊल्या को छोड़कर, क्योंकि हमारे हेडक्वाटर की सदस्या होने के नाते उसे किसी भी समय गिरफ़्तार किया जा सकता है। हमने अपनी लड़ाई इज़्ज़त के साथ लड़ी है, हमने अपना कर्तव्य पूरा किया। हमें अपने तीन साथियों से हाथ धोना पड़ा, जिनमें हमारा सबसे अच्छा साथी, वान्या जेम्नुखोव भी शामिल था। किन्तु हमें निराशा के आगे घुटने टेके बिना अपने रास्ते पर चलना चाहिए। हमसे जो भी हो सकता था, वह हमने किया..."

उसने अपनी बात पूरी की। दूसरे लोग न कुछ कहना ही चाहते थे, न कहने के क़ाबिल ही लग रहे थे।

उन्होंने पाँच महीनों तक एक-दूसरों से कन्धे से कन्धा भिड़ाकर काम किया था। जर्मन शासन के अधीन एक-एक दिन शारीरिक और नैतिक कष्ट से परिपूर्ण था। पाँच लम्बे महीने-वे कितनी जल्दी बीत गये। और इस बीच वे सब के सब ख़ुद कितने बदल गये। इन पाँच महीनों में उन्होंने नेकी और बुराई, महान वीरता और कायरता में भेद करना सीख लिया। आम ध्येय तथा एक-दूसरे के हित के लिए इन महीनों में उन्होंने कितने विलक्षण प्रयास किये, कितना कुछ सोचा, विचारा। अब जाकर उन्हें पता चला कि यह 'तरुण गार्ड' संगठन उनके लिए कितना महत्व रखता है। फिर भी उन्हें इस संगठन से नाता तोड़ना पड़ रहा था।

वाल्या, नीना और ओल्या चुपचाप रो रही थीं... ऊल्या बाहर से शान्त लग रही थी, किन्तु उसकी आँखों में एक तेज चमक आ गयी थी। सेर्गेई का सिर मेज पर झुक गया। वह नाख़ून से मेजपोश पर कुछ रेखाएँ खींचने लगा। तुर्केनिच की स्वच्छ आँखें सीधी अपने सामने की ओर देखे जा रही थीं-उसके सुन्दर होंठों की रेखाएँ गहरा गयी थीं।

"कोई और सु-सुझाव?" ओलेग ने पूछा।

किसी को कोई सुझाव न देने थे। किन्तु तभी ऊल्या बोल उठी।

"इस समय मेरे जाने की कोई ज़रूरत नहीं। हम पेर्वोमाइका बस्ती के रहनेवालों को क्लब से कोई वास्ता नहीं था। मैं यहाँ कुछ ठहरूँगी, शायद कुछ और काम कर सकूँ यहाँ। मैं सतर्क रहूँगी।"

"तुम्हें ज़रूर चले जाना चाहिए," ओलेग ने कहा और उस पर बड़ी गम्भीर निगाह डाली।

सेर्गेई, जो अब तक चुप रहा, बोला :

"उसे निश्चय ही जाना होगा!"

"मैं सतर्क रहूँगी," ऊल्या ने एक बार फिर कहा।

उन्होंने भारी दिल से और एक-दूसरे की आँखें बचाते हुए, हेडक्वार्टर के तीन सदस्यों को यहीं छोड़ जाने का निश्चय किया-अनातोली पोपोव, सुम्स्कोई और ऊल्या को। यदि ल्यूबा लौट आये और यह पता चले कि वह ठहर सकती है, तो वह चौथी होगी। उन्होंने एक प्रस्ताव पास किया-हर आदमी जल्द से जल्द यहाँ से निकल जाये। ओलेग ने बताया कि वह और सन्देशवाहिकाएँ तब तक रहेंगी, जब तक सबको आगाह नहीं कर दिया जाता और जब तक पोपोव और सुम्स्कोई से सम्पर्क स्थापित नहीं हो जाता। किन्तु 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर का कोई भी सदस्य और हेडक्वार्टर से निकट से सम्बन्धित कोई भी व्यक्ति रात अपने घर पर न बितायेगा।

उन्होंने जोरा, सेर्गेई लेवाशोव और स्त्योपा सफोनोव को बुलाया और उन्हें हेडक्वार्टर के निर्णयों की सूचना दी।

अब विदा लेने की बारी आयी। ऊल्या ने ओलेग को गले लगाया।

"ध-धन्यवाद," ओलेग बोला, "इस बात के लिए धन्यवाद कि तुम थीं और अब भी हो।"

ऊल्या उसके बाल सहलाने लगी।

किन्तु जब लड़कियाँ ऊल्या से विदा होने लगीं, तो ओलेग से रहा नहीं जा सका और वह बाहर अहाते में निकल आया। उसके पीछे-पीछे सेर्गेई त्यूलेनिन भी चला आया। वे दोनों 1943 के पाले और आँखें चौंधिया देनेवाली धूप में बिना कोट पहने

खड़े हुए थे।

"सब कुछ समझ लिया?" ओलेग ने धीरे-से पूछा।

सेर्गेई ने हामी भरी।

"सब कुछ साफ़ है। तो स्तखोविच उगल सकता है... है न?"

"जी हाँ... पर इसका जिक्र करना ठीक न होगा। जब हम असलियत जानते ही नहीं, तो विश्वास न करना भी गलती ही होगी। शायद जर्मन उस पर अत्याचार कर रहे हैं, जबकि हम आज़ाद हैं।"

वे कुछ क्षणों तक मौन रहे।

"तुम कहाँ जाने की सोच रहे हो?" सेर्गेई ने मौन भंग किया।

"मोर्चा भेदने का प्रयत्न करूँगा।"

"वही मैं भी करना चाहता हूँ। चलो, साथ चलें।"

"अच्छी बात है। बस मेरे साथ नीना और ओल्या रहेगी।"

"मैं समझता हूँ वाल्या भी हमारे ही साथ चलेगी," सेर्गेई बोला।

सेर्गेई लेवाशोव खोया-खोया-सा तुर्केनिच के पास आया।

"ठहरो, क्या बात है?" उसके चेहरे की ओर घूरते हुए तुर्केनिच ने पूछा।

मैं कुछ समय यहाँ ठहरूँगा," लेवाशोव ने दुखी होकर उत्तर दिया।

"ऐसा करना अक्लमन्दी की बात नहीं," तुर्केनिच ने धीरे-से कहा। "तुम उसकी सहायता या रक्षा न कर सकोगे। और इधर तुम उसकी प्रतीक्षा करोगे, उधर वे तुम्हें धर लेंगे। वह होशियार लड़की है-या तो भाग निकलेगी, या उन्हें बेवकूफ़ बनायेगी ..."

"मैं नही जाऊँगा," लेवाशोव ने कहा।

"तुम्हें मोर्चा भेदना ही पड़ेगा!" तुर्केनिच ने तीखे स्वर में कहा। "अभी मुझे मेरे पद से नहीं हटाया गया है! मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ!"

लेवाशोव ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तो, साथी कमीसार, तुम मोर्चा पार करने जा रहे हो? यह निश्चित है न?" ओलेग के लौट आने पर तुर्केनिच ने उससे पूछा। ओलेग ने उस पते का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया। इससे तुर्केनिच नाराज हो उठा पर उसने ओलेग के निश्चय को बदलना अनुचित समझा। जब उसने सुना कि ओलेग के दल में पाँच लोग रहेंगे, तो सिर हिलाता हुआ बोला : "यह तो बहुत लोग हो गये... तो फिर यहीं पर मिलने तक के लिए नमस्कार। उम्मीद है हम सब के सब लाल सैनिकों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ेंगे!"

उन्होंने एक-दूसरे से हाथ मिलाये और गले लगने ही वाले थे कि सहसा

तुर्केनिच एक ओर हटा और अपने दोनों हाथ झुलाता हुआ मकान के बाहर निकल गया। सेर्गेई लेवाशोव ने ओलेग को गले लगाया और तुर्केनिच के पीछे चल दिया।

स्त्योपा सफोनोव के रिश्तेदार कामेंस्क में रहते थे। उसने उनके पास जाने और वहीं लाल सेना के आने तक ठहरने का निश्चय किया। जोरा के दिमाग में एक संघर्ष चल रहा था, जिसके बारे में वह किसी को बता नहीं सकता था। पर वह समझ रहा था कि उसे हर हालत में यहाँ नहीं रुकना चाहिए। शायद उसे नोवोचेर्कास्क में अपने उसी चाचा के पास जाना पड़े जिसके पास पिछली बार वह और वान्या जेम्नुखोव न पहुँच सके थे... सहसा जोरा को वान्या के साथ अपने उस सफर की याद आ गयी, उसकी आँखों में आँसू छलछला आये और वह सड़क पर निकल आया।

इसके बाद कुछ मिनटों तक पाँचों कमरे में बैठे रहे-ओलेग, सेर्गेई त्युलेनिन तथा सन्देशवाहिकाएँ। उन्होंने यह निश्चय किया कि अच्छा हो, यदि सेर्गेई घर न जाये और ओल्या, वीत्या लुक्यांचेंको की मार्फत, उसके घरवालों को आगाह कर दे। तत्पश्चात् वाल्या, नीना और ओल्या सम्बन्धित लोगों को अपने निश्चयों की सूचना देने के लिए कमरे से निकल गयीं। इधर सेर्गेई ने अपना ओवरकोट पहना और निगरानी रखने बाहर चला गया। वह समझ गया कि ओलेग को कुछ देर के लिए अपने परिवारवालों के साथ बैठना ज़रूरी है। ओलेग के घरवाले जेम्नुखोव तथा दूसरे लोगों की गिरफ़्तारी की बात जानते थे। उन्हें यह भी मालूम था कि खाने के कमरे और नानी के कमरे में इसी मामले पर बैठक हो रही है।

येलेना निकोलायेव्ना और मामा कोल्या ने बन्दूकें, परचे और झंडे बनाने का लाल कपड़ा छिपा या जला दिये। मामा कोल्या ने अपना रेडियो-सेट रसोईघर के फर्श के नीचे छिपा दिया और उसके ऊपर मिट्टी हमवार करके खट्टी बन्दगोभी का पीपा रख दिया।

इसी के बाद परिवार के लोग मामा कोल्या के कमरे में एकत्र हुए और हमेशा की तरह मरीना के तीन साल के बेटे की भोली-भाली बातें सुनने और मन बहलाने लगे। सबके चेहरे उतरे हुए थे। वे बैठक के परिणाम की प्रतीक्षा ऐसे कर रहे थे, जैसे उन्हें मौत की सजा सुनायी जानेवाली हो।

आख़िरी साथी के बाहर चले जाने के बाद दरवाज़ा बन्द हुआ और ओलेग कमरे में दाखिल हुआ। सभी उसकी ओर मुखातिब हुए। इस समय उसके चेहरे पर मानसिक द्वन्द्व और संघर्ष के कोई चिह्न न थे, साथ ही वह बाल-सुलभ भाव भी न रह गया था, जो प्रायः उसके मुँह पर खेला करता था। हाँ, चेहरे पर दुख की छाया ज़रूर मँडरा रही थी।

"माँ," वह बोला, "नानी, तुम कोल्या, मरीना।" बच्चा भागता हुआ उसके पास

पहुँचा और ख़ुशी से चीख़ता हुआ उसकी टाँगों से चिपट गया। ओलेग ने अपना हाथ बच्चे के सिर पर रख दिया। "मैं तुम सबसे विदा लेने आया हूँ। कुछ चीज़ें इकट्ठा करने में मेरी मदद करो। इसके बाद हम कुछ क्षण साथ-साथ बैठेंगे, जैसे कभी बैठा करते थे... बहुत दिन पहले..." उसकी आँखों में और ओठों पर एक हल्की-सी मृदु मुस्कान बिखर गयी।

सब लोग उसके इर्द-गिर्द खड़े हो गये।

...माँ के हाथ हमेशा व्यस्त रहते हैं। उसके हाथ तब भी चहचहाती चिड़ियों की भाँति नन्हें-से महीने कपड़ों पर दौड़ते हैं, जब उन्हें पहननेवाला अभी संसार में आया ही नहीं होता और माँ के शरीर में हिल-डुल रहा होता है। जब बच्चा पहली बार हवाखोरी के लिए भेजा जाता है, तब, जब पहली बार स्कूल जाता है, तब... हाँ, तब भी यही हाथ उसे सँवारते हैं। जब बच्चा पहली बार दूर देशों की यात्रा करता है, तब भी यह हाथ उसे सहलाते हैं। फिर माँ की सारी ज़िन्दगी अपने बच्चे से मिलने-बिछुड़ने की एक कड़ी मात्र बनकर रह जाती है। ये हाथ व्यस्त रहते हैं, उस समय जब बच्चा माँ के सामने होता है या तब भी जब वह उसे कब्र में रख रही होती. ..

हरेक को कुछ न कुछ काम मिल ही गया। मामा कोल्या को कागजात छाँटने थे, डायरी को आग में झोंकना था। किसी ने उसका कोमसोमोल का कार्ड और सदस्यता के कुछ अस्थायी कार्ड उसकी जैकेट में सी दिये। सारा ज़रूरी सामान उसके थैले में भरा जा चुका था-खाना, साबुन, ब्रुश, सुई, काला-सफ़ेद धागा। सेर्गेई त्युलेनिन के लिए भी फर की एक पुरानी कनटोपी मिल गयी। एक-दूसरे थैले में भी खाना रख दिया गया था-आख़िर पाँच लोग एक-साथ जा रहे थे न...

पर पहले की तरह वे मिल-जुलकर न बैठ सके। सेर्गेई बराबर अन्दर-बाहर चक्कर लगाता रहा। फिर वाल्या, नीना और ओल्या आयीं, रात पड़ चुकी थी। अब उन्हें विदा लेनी थी...

किसी ने आँसू नहीं बहाया। नानी वेरा ने उन पर एक निगाह डाली, किसी का बटन टाँका, किसी का थैला ठीक किया। फिर भावावेश में उसने हरेक को गले लगाया। ओलेग को वह देर तक छाती से चिपकाये रही। उसकी नुकीली ठुड्डी ओलेग की टोपी से सटी थी।

ओलेग ने माँ का हाथ छुआ : वे बगलवाले कमरे में चले गये।

"मुझे माफ़ करना, माँ," वह बोला।

ओलेग की माँ दौड़कर अहाते में आ गयी। पाला उसके चेहरे और पैरों में तीर की तरह चुभ रहा था। अब वह युवकों को देख न पा रही थी। उसे तो उनके क़दमों

की आहट भर सुनायी दे रही थी। धीरे-धीरे यह आवाज़ भी थम गयी। पर वह बहुत समय तक ताराच्छादित आकाश के नीचे खड़ी रही...

भोर में रात भर पलक से पलक न लगा पायी येलेना निकोलायेव्ना ने दरवाज़े पर दस्तक सुनी। उसने जल्दी से कपड़े पहने और पूछा :

"कौन?"

बाहर चार आदमी थे-पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की, एन.सी.ओ. फेनबोंग और दो सिपाही। आते ही उन्होंने ओलेग के बारे में पूछा। येलेना निकोलायेव्ना ने बताया कि वह खाने की कुछ चीज़ों का सौदा करने गया हुआ है।

उन्होंने मकान की तलाशी ली और वहाँ रहनेवाले सभी लोगों को गिरफ़्तार कर लिया-नानी वेरा, मरीना और उसके नन्हें बेटे को भी। नानी को पड़ोसियों से यह कहने का मुश्किल से मौक़ा मिला कि वे घर पर निगाह रखें।

जेल में उन्हें अलग-अलग कोठरियों में रखा गया। मरीना और उसके मुन्ने को उस कोठरी में डाला गया, जहाँ बहुत-सी ऐसी औरतें थीं, जिनका 'तरुण गार्ड' दल से कोई सम्बन्ध नहीं था। लेकिन वहाँ मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स थी और सेर्गेई त्युलेनिन की बहन फेन्या भी, जो माता-पिता से अलग अपने निजी मकान में बच्चों के साथ रहती थी। मरीना को पता चला कि फेन्या की बूढ़ी माँ अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना और अपाहिज बाप तक को, मय उसकी वैसाखी के, गिरफ़्तार कर लिया गया है। सेर्गेई की बहनें, नाद्या और दाशा, समय रहते निकल भागी थीं।

अध्याय 22

वान्या जेम्नुखोव को प्रभात के समय गिरफ़्तार किया गया था। वह क्लावा से मिलने के लिए नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की जाना चाहता था और मुँह-अँधेरे ही उठ गया था। उसने अपने साथ रोटी का एक टुकड़ा लिया, अपना ओवरकोट एवं कनटोपी पहनी और सड़क पर निकल आया।

हल्के गुलाबी कोहरे से आच्छादित स्वच्छ आकाश में चमकीला सुनहरा भोर दृष्टिगोचर हो रहा था। यत्र-तत्र पीले और गुलाबी कोहरे के छोटे-छोटे पुंज नगर के ऊपर तैर रहे थे। वान्या ने यह सब कुछ न देखा। उसने अपना चश्मा अपनी भीतर की जेब में रख लिया था, क्योंकि उस पर धुन्ध जमने लगी थी। किन्तु इस स्वच्छ भोर का सौन्दर्य बचपन से ही उसके मन पर छाया हुआ था। उसका चेहरा पुलकित हो उठा। तभी उसने चार व्यक्तियों को अपने घर की ओर आते देखा। उसने उनहें निकट से देखा और पहचान लिया-वे जर्मन पुलिस के सिपाही थे, उनमें थाने का नया

इंस्पेक्टर कुलेशोव भी था।

वान्या ने तुरन्त समझ लिया कि वे लोग उसी के लिए आये हैं। और जैसे किसी संकट-घड़ी में उसके जीवन में हमेशा होता था, वान्या एकदम शान्त और स्थिर हो गया और कुलेशोव के प्रश्नों से उसे कोई परेशानी न हुई।

“हाँ, मैं ही हूँ, यह बोला।

“अब लो मजा!” कुलेशोव बोला।

“मैं अपने लोगों को खबर तो कर दूं,” वान्या ने कहा, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वे उसे घर में घुसने न देंगे। वह घूमा और मुट्ठी से सबसे पास की खिड़की खटखटाने लगा।

कुलेशोव और एक सिपाही ने तुरन्त उसके हाथ पकड़े और उसकी जेबें टटोलने लगे। झरोखा खुला और वान्या की बहन बाहर देखने लगी। उसके चेहरे का भाव वान्या न पढ़ सका।

“माँ और पिता जी से कह देना कि मुझे थाने पर बुलाया है। वे मेरे लिए परेशान न हों। मुझे देर न लगेगी,” वह बोला।

कुलेशोव ने खीसें निपोड़ीं, अपना सिर हिलाया और एक सिपाही के साथ घर की ड्योढ़ी लाँघ गया। उन्हें तलाशी लेनी थी। जर्मन सार्जेण्ट और दूसरा सिपाही वान्या को लेकर सड़क पर चल दिये। इस सड़क पर बहुत कम लोग आते-जाते थे। सड़क पर हल्की बरफ की चादर बिछी थी, उसके बीचोंबीच एक पगडण्डी-सी बन गयी थी। उसी पर वे चले जा रहे थे। सार्जेण्ट और सिपाही वान्या के पीछे-पीछे चल रहे थे।

सिपाहियों ने उसे एक छोटी-सी अँधेरी कोठरों में डाल दिया। उसके शरीर पर ओवरकोट, सिर पर कनटोपी और पैरों में फटे हुए जूते थे। कोठरी की दीवारों पर पाला जम रहा था और फर्श लसलसा रहा था। दरवाज़ा खट से बन्द कर दिया गया और उस पर ताला चढ़ा दिया गया। वह वहाँ बिलकुल अकेला था।

छत की एक सँकरी-सी दरार से प्रातःकाल का प्रकाश कोठरी में आने का प्रयास कर रहा था। कोठरी में न कोई फलक-शय्या थी, न बेंच। एक बाल्टी में से बदबू आ रही थी।

वह अपनी गिरफ़्तारी के कारणों के बारे में सोच रहा था-क्या उन्हें उसके गुप्त कामों का पता चला गया है, अथवा किसी ने गद्दारी की है। उसे बार-बार क्लावा, अपने माता-पिता और साथियों का ख़याल आने लगा। फिर पूरी दृढ़ता के साथ, जो उसके चरित्र की विशेषता थी, उसने अपना सारा ध्यान सबसे महत्वपूर्ण बात पर केन्द्रित कर दिया-“वान्या, शान्त रहो, धीरज रखो! देखो, आगे क्या होता है...”

वान्या के हाथ सरदी के कारण जकड़े आ रहे थे। उसने उन्हें अपने ओवरकोट

की जेबों में डाल लिया। और दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया। उसका सिर आगे की ओर झुका हुआ था। वह बड़े धैर्य के साथ बड़ी देर तक खड़ा रहा।

गलियारे में पैरों की आहट बराबर सुनायी पड़ती रही। फिर कोठरियों के दरवाज़ों के ज़ोर से खुलने-मुँदने की आवाज़ें आयी। दूर और पास से आती हुई बातचीत की ध्वनियाँ उसकी कोठरी में प्रवेश करने लगीं।

उनकी कोठरी के बाहर कई लोग आकर रुक गये और एक कर्कश आवाज़ गूँज उठी।

"इसी कोठरी में? उसे मिस्टर के पास भेजो!"

यह कहकर वह आदमी आगे बढ़ गया। उसी क्षण ताले में चाबी घुमाने की आवाज़ आयी।

वान्या दीवार से हटकर खड़ा हो गया। एक जर्मन सिपाही भीतर आया। उसके हाथ में एक चाबी थी और शायद वह इस गलियारे में कोठरियों का पहरा दे रहा था। उसके साथ एक पुलिस का सिपाही भी था, जिसका चेहरा वान्या को परिचित-सा लगा। सभी पुलिसवालों के चेहरों को याद रखना वान्या और उसके साथियों का एक काम था। वह वान्या को मिस्टर ब्रूक्नेर के दफ़्तर के प्रतीक्षा-कक्ष में ले गया। वहाँ वान्या ने उस लड़के को देखा, जिसे उन्होंने सिगरेटें बेचने बाजार भेजा था।

वह लड़का मैला-कुचैला और दुबला-पतला-सा लग रहा था। उसने वान्या पर एक नज़र डालकर कन्धे झटके, नाक बजायी और मुँह फेर लिया।

वान्या को कुछ राहत मिली। फिर भी उसे सभी बातों से इनकार करना होगा। अगर वह यह मान भी लेगा कि उसने कुछ पैसे बनाने के लिए उपहार चुराये थे, तो से अपने साथियों के नाम बताने का हुक्म दिया जायेगा। नहीं, यह सोचना बेकार है कि यह घटना उसके लिए अनुकूल सिद्ध होगी।

मिस्टर ब्रूक्नेर के दफ़्तर से एक जर्मन क्लर्क बाहर आया और उसने एक ओर खड़े होकर दरवाज़ा खोल दिया।

"चलो, चलो, अन्दर चलो," पुलिसवाला हड़बड़ाकर बोला और वान्या को दरवाज़े की ओर ढकेला। दूसरे सिपाही ने उस बालक को दरवाज़े की ओर धकेला और दोनों एक-साथ दहलीज लाँघ गये। उनके पीछे दरवाज़ा बन्द हो गया। वान्या ने अपनी टोपी उतार ली।

दफ़्तर में कई लोग थे। वान्या ने मिस्टर ब्रूक्नेर को पहचान लिया, जो कुर्सी पर टेक लगाये बैठा था। उसकी गर्दन की मोटी-मोटी परतें उसकी वर्दी के कालर पर लहरा रही थीं। उसकी गोल-गोल आँखें सीधे वान्या पर लगी थीं।

"आगे बढ़ो! देखिये, कैसा सीधा बन रहा है..." सोलिकोव्स्की कर्कश आवाज़

में बोला। वह मिस्टर की मेज के एक ओर खड़ा था। उसकी बड़ी-सी मुट्ठी में चाबुक था।

इंस्पेक्टर कुलेशोव सोलिकोव्स्की के ठीक सामने खड़ा था। अपनी लम्बी-सी बाँह आगे बढ़ाकर, उसने उस लड़के की कोहनी पकड़ी और झटके से उसे मेज के पास खींच लिया।

"यही है वह आदमी?" कुलेशोव ने दाँत दिखाते हुए पूछा और वान्या की ओर इशारा करके आँख मिचकायी।

"हाँ," उस लड़के ने झट-से कहा, फिर ज़ोर से साँस खींचकर जड़वत खड़ा हो गया।

कुलेशोव ने ख़ुश होकर पहले मिस्टर की ओर फिर सोलिकोव्स्की की ओर देखा। मेज के पीछे खड़ा दुभाषिया सिर नवाकर बड़ी विनम्रता के साथ मिस्टर को जर्मन भाषा में कुछ समझा रहा था। यह शूर्का रैबन्द था। क्रास्नोदोन में रहनेवाले दूसरे लोगों ही की तरह वान्या भी उसे अच्छी तरह जानता था।

"सुन लिया?" सोलिकोव्स्की ने आँखें सिकोड़ते हुए वान्या की ओर घूरकर देखा। उसकी आँखें उसकी गालों की हड्डियों से छिप-सी गयी थीं। "हर मिस्टर को बताओ कि तुम्हारे साथ कौन काम कर रहा था। जल्दी करो!"

"आप किस बारे में बातें कर रहे हैं, मैं नहीं जानता," वान्या अपनी मन्द्र आवाज़ में बोला और आँखें सीधी सोलिकोव्स्की के चेहरे पर गड़ा दीं।

"देखा?" सोलिकोव्स्की कुलेशोव की ओर घूमा। क्रोध से उसका चेहरा तमतमा रहा था। "सोवियत राज्य में इन्हें यही शिक्षा मिली!"

जेम्नुखोव का उत्तर सुनकर वह लड़का घबराकर उसकी ओर देखने लगा और ऐसे सिकुड़ गया, मानो सर्दी से बचना चाहता हो।

"तुम्हें शर्म नहीं आती? इस लड़के पर रहम करो, वह कष्ट झेल रहा है तुम्हारी वजह से," कुलेशोव ने उलाहना देते हुए कहा, "जरा इधर देखो-इसे तुम क्या कहोगे?"

दीवार के सहारे उपहारों को एक खुला हुआ बोरा पड़ा था-उसकी कुछ चीज़ें फर्श पर भी बिखरी पड़ी थीं।

"इस सबसे मुझे क्या लेना-देना, मैं नहीं समझ पाया। मैंने इस लड़के को पहले कभी नहीं देखा," वान्या बोला। वह अधिकाधिक शान्त और स्थिर होता जा रहा था।

मिस्टर ब्रूक्नेर वान्या की बातें सुनते-सुनते उकता गया। उसने रैबन्द पर एक सरसरी निगाह डाली और कुछ बुदबुदाया। कुलेशोव बड़े अदब से चुप हो गया। सोलिकोव्स्की सीधा तनकर खड़ा हो गया।

"हर मिस्टर यह जानना चाहते हैं कि तुमने कितनी बार लारियों को लूटा है,

और किस लिए। तुम्हारी मदद किसने की, और इसके अलावा तुम और क्या-क्या करते रहे... शूर्का ने, वान्या से आँखें चुराते हुए, रुखाई से कहा।”

“मैं लारियों को कैसे लूट सकता हूँ? मैं तो तुमको भी देख नहीं सकता। तुम यह अच्छी तरह जानते हो!” वान्या बोला।

“हर मिस्टर के सवाल का जवाब दो!”

किन्तु हर मिस्टर मामले की तह तक पहुँच चुका था। उसने उँगलियाँ चटकाते हुए कहा :

“फेनबोंग के पास ले चलो!”

पलक मारते सब कुछ बदल गया। सोलिकोव्स्की ने वान्या का कालर पकड़ा, उसे वहशियाना ढंग से झंझोड़ते हुए प्रतीक्षा-कक्ष में लाया और उसके दोनों गालों पर कसकर हण्टर जमाये। वान्या के चेहरे पर लाल घाव पड़ गये। एक चोट तो उसकी बायीं आँख के कोने पर पड़ी, जिससे वह तेजी से सूजने लगी। एक पुलिसवाले ने उसका कालर पकड़ा और उसे गलियारे में खींचने और लतियाने लगा।

वान्या को घसीटकर एक कमरे में लाया गया, जिसमें एन.सी.ओ. फेनबोंग और एस.एस. के दो आदमी बैठे सिगरेट पी रहे थे।

“बदमाश, अगर तू मुझे तुरन्त यह नहीं बताता कि तेरे साथ दूसरे कौन-कौन लोग थे तो...” सोलिकोव्स्की चीख़ा। वह बड़े भयानक ढंग से फुँकार रहा था। उसके फौलादी पंजे वान्या का चेहरा नोच रहे थे।

सिपाहियों ने बूटों से सिगरेट के टुकड़े मसल दिये, फिर सधे हुए हाथों से वान्या का ओवरकोट और उसके बाक़ी कपड़े उतारने लगे। उन्होंने उसे नंगा कर ख़ून से सने तख़्ते पर धकेल दिया।

फेंनबोंग ने मेज पर से बिजली के तारोंवाले दो हण्टर उठाये, एक सोलिकोव्स्की को थमाया और दूसरा हवा में लहराया और वे दोनों बारी-बारी से वान्या पर हण्टर बरसाने लगे। उधर सिपाही कसकर उसके पैर और सिर पकड़े हुए थे। ख़ून तो पहले ही प्रहार में बहने लगा था।

जैसे ही वान्या पर हण्टर बरसने शुरू हुए थे, उसने एक भी प्रश्न का उत्तर न देने और एक भी आह न निकालने की कसम खा ली।

वह सारा वक्त चुप रहा। कभी-कभी दोनों जल्लाद दम लेने के लिए रुक जाते और सोलिकोव्स्की पूछने लगता :

“अभी होश ठिकाने नहीं आये?”

वान्या न कोई जवाब ही देता, न सिर ही उठाता, और हण्टरबाजी फिर शुरू हो जाती।

इसी तख़्ते पर कोई आधा घण्टा पहले मोश्कोव को भी इसी तरह पीटा गया। मोश्कोव ने भी उनके सारे आरोपों का साफ़-साफ़ खण्डन कर दिया।

स्तखोविच का मकान नगर के छोर पर था। उसे बाद में गिरफ़्तार किया गया।

स्वाभिमान स्तखोविच की मुख्य विशेषता था। इसी की बदौलत वह कुछ न कुछ दृढ़ भी बन सकता था और वीरता के काम भी कर सकता था, बशर्ते कि उसे अपने लोगों की प्रशंसा मिलती रहे। पर अकेले में खतरे या कठिनाई में पड़ जाने पर वह निरा बुजदिल साबित होता था।

जैसे ही उसे गिरफ़्तार किया गया उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। किन्तु वह बहुत चालाक था। और अपनी गद्दारी की नैतिक सफाई झट-से पेश कर सकता था।

सिगरेट बेचनेवाले लड़के को देखते ही उसने तुरन्त समझ लिया कि नये वर्ष के उपहार ही वे प्रमाण थे, जो उसके और उसके साथियों के ख़िलाफ़ रखे जा सकते थे। एक ही क्षण में उसने सारे मामले को एक साधारण चोरी का रूप देने और साफ़-साफ़ यह स्वीकार कर लेने का निश्चय कर लिया कि इसमें तीन आदमी शरीक थे। वह अपनी ग़रीबी और भूख का रोना रोने लगा और वायदा किया कि अब से वह ईमानदारी से काम करके अपने पापों का प्रायश्चित करेगा। मिस्टर ब्रुक्नेर और दूसरे जर्मनों को फौरन पता चल गया कि उनका सामना कैसे आदमी से पड़ा है। उन्होंने उसे दफ़्तर ही में पटका और उसके साथियों का नाम जानना चाहा। उनका कहना था कि वे तीनों सारा सामान ढो कैसे सकते थे।

उसके भाग्य से मिस्टर ब्रूकनेर और वाह्टमिस्टर बाल्डेर के दोपहर के खाने का वक्त हो गया। अतएव उसे शाम तक के लिए शान्ति से रहने दिया गया।

शाम के समय पहले तो उन लोगों ने उसके साथ नरमी का बरताव किया और वादा किया कि जैसे ही वह अपने उन साथियों के नाम बता देगा, जिन्होंने उपहारों की चोरी में भाग लिया था, वैसे ही वे उसे छोड़ देंगे। उसने फिर वही बात दुहरायी-चोरी मैंने और मेरे दो साथियों ने की है। फिर उसे फेनबोंग के सुपुर्द किया गया और उसकी तब तक मरम्मत हुई, जब तक कि उसने त्युलेनिन का नाम न बता दिया। इसके बाद उसने बताया कि अँधेरे के कारण वह दूसरे लोगों के चेहरे न पहचान सका था।

वह नीच न जान सकता था कि त्युलेनिन का नाम बताकर उसने अपने को और भी मुसीबत में डाल लिया और उसे अब और भी जुल्मों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि वे लोग अब उससे सब उगलवाये बिना नहीं छोड़ सकते थे।

उन्होंने उसे बुरी तरह मारा, फिर उस पर पानी उँड़ेला और फिर मारा। और सुबह होते-होते उसकी हिम्मत जवाब दे गयी और उसने उनसे दया की भीख माँगी। कहने लगा कि वह इस सारी यातना के लायक नहीं है, क्योंकि वह दूसरों के हाथ की

कठपुतली ही बना रहा, दूसरों ने उसे चोरी करने का हुक्म दिया था अतः खबर उनकी ली जानी चाहिए। और इस प्रकार उसने 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के सभी सदस्यों और सन्देशवाहिकाओं के नाम बता दिये। न जाने क्यों अकेली ऊल्याना ग्रोमोवा का ही नाम उसने न लिया। पल भर के लिए उसके आगे उसकी खूबसूरत काली-काली आँखे नाच उठीं और वह उसका नाम मुँह पर लाने से रह गया।

उन्हीं दिनों ल्यादुस्काया को भी क्रोस्नोदोना की खनिज बस्ती से पुलिस-कार्यालय लाया गया, जहाँ उसका सामना वीरिकोवा से हो गया। वे दोनों बाल्डेर और कुलेशोव के सामने एक-दूसरे पर दोषारोपण करती हुई कुंजड़ियों की तरह लड़ने लगी। बाल्डेर सारा वक्त गम्भीर रहा, पर कुलेशोव की बाछें खिल रही थीं।

"चुड़ैल कहीं की! तू ही तो पायोनियरों की लीडर थी।" ल्यादुस्काया चीख़ उठी। उत्तेजना से उसका चेहरा इतना लाल हो गया कि उसकी झाँइयाँ तक छिप-सी गयीं।

"अपना मुँह तो देख! पेर्वोमाइका बस्ती के सारे निवासी जानते हैं कि तू ओसोविआखिम* के लिए चन्दा माँगा करती थी!" मुट्ठियाँ भींचती हुई वीरिकोवा गुर्रायी। उसकी चोटियाँ भी इस जबानी लड़ाई में भाग ले रही थीं।

वे तो हाथापाई पर भी उतर आतीं, किन्तु उन्हें छुड़ा दिया गया और दिन भर के लिए हिरासत में रखा गया। फिर उन्हें वाह्टमिस्टर वाल्डेर के सामने एक-एक करके लाया गया। कुलेशोव पहले वीरिकोवा से निपटा (और बाद में वैसे ही ल्यादुस्काया से) उसने उसका हाथ पकड़ा और फुंफारकर बोला :

"बहुत भोली बनने की कोशिश मत करो। संगठन के सदस्यों के नाम बताओ।"

पहले बीरिकोवा, और बाद में ल्यादुस्काया, फूट-फूटकर रोयीं और कसमें खा-खाकर बोलीं कि संगठन की सदस्या होने की बात तो दूर हम तो ज़िन्दगी भर बोल्शेविकों से वैसे ही नफरत करती रही, जैसे वे हमसे करते थे। उन्होंने पेर्वोमाइका और क्रास्नोदोन खनिज बस्ती में रहनेवाले सभी कोमसोमोल-मेम्बरों और सक्रिय काम करनेवाले तरुणों के नाम गिना डाले। बेशक वे जिस स्कूल में पढ़ती थीं, वहाँ की अपनी सभी सहेलियों व दोस्तों को जानती थी। दोनों ने कोई बीस-बीस नाम बताये। और इस प्रकार, 'तरुण गार्ड' दल से सम्बन्धित तरुणों की सूची तैयार हो गयी।

वाह्टमिस्टर बाल्डेर ने भयानक ढंग से आँखें नचाते हुए, दोनों से साफ़-साफ़ कह दिया कि वह उनके संगठन में न होने की बात नहीं मानता। वस्तुतः उन्हें भी वैसी ही सख्त सजा मिलनी चाहिए, जैसी कि उन अपराधियों को मिलेगी, जिनके

---

* हवाई और रसायन प्रतिरक्षा का स्वयंसेवी समाज।

नाम उन्होंने लिये हैं। पर उसने कहा, "मुझे तुम्हारे लिए अफ़सोस है। हाँ, बचने का एक रास्ता ज़रूर है..."

वीरिकोवा और ल्यादूस्काया को जेल से एक साथ ही छोड़ा गया। उन दोनों को अनुमान था कि वे निर्दोष नहीं जा रही हैं। प्रत्येक को तेईस मार्क माहवार का वेतन बाँध दिया गया था। बिछुड़ते समय उन्होंने हाथ मिलाया, मानो उनके बीच कुछ हुआ ही न हो।

"सस्ते छूटे," वीरिकोवा बोली। "किसी समय आओ न।"

"हाँ, सस्ते छूटे। कभी मिलूँगी तुमसे," लयादूस्काया ने उत्तर दिया। फिर वे अपने-अपने रास्ते चल दीं।

अध्याय 23

जिस ढंग से गिरफ़्तारियाँ की गयी उसमें विचित्र क्रमबद्धता थी। इन गिरफ़्तारियों की खबर नगर भर में दावग्नि की तरह फैल गयी। पहले 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर के उन सदस्यों के माता-पिताओं को गिरफ़्तार किया गया, जो शहर छोड़कर जा चुके थे। फिर अरुत्युन्सान्त्स, सफोनोव और लेवाशोव के माता-पिताओं को गिरफ़्तार किया गया, अर्थात उन युवकों के माता-पिताओं को, जो हेडक्वार्टर के निकट सम्पर्क में रहते थे।

फिर सहसा तोस्या माश्चेंको और 'तरुण गार्ड' दल के अन्य साधारण सदस्य गिरफ़्तार किए गये। पर खास तौर पर इन लोगों को ही क्यों पकड़ा गया?

जो लोग अभी तक आज़ाद थे, उन्हें यह अनुमान तक न हुआ था कि जिस क्रम से गिरफ़्तारियाँ हो रही थीं-कभी कम, कभी ज़्यादा-उनके पीछे स्तखोविच की गद्दारी है। बात यह थी कि जैसे ही वह किसी एक आदमी का नाम बताता, तो उसे कुछ सुस्ताने का मौक़ा मिलता, जब वे उस पर पुनः अत्याचार करने लगते, तो वह फिर कुछ नाम बता देता।

मोश्कोव, जेम्नुखोव और स्तखोविच को गिरफ़्तार हुए कई दिन बीत चुके थे, फिर भी ल्यूतिकोव और बराकोव के नेतृत्व में काम करनेवाले ख़ुफ़िया संगठन का एक भी आदमी गिरफ़्तार न हुआ था। केन्द्रीय वर्कशॉप में सारा काम ज्यों का त्यो होता रहा।

वोलोद्या ओस्मूखिन ने नये साल के पहले तीन दिन गाँव में अपने बाबा के साथ बिताये। चार जनवरी को वह वापस काम पर गया। रात को माँ ने उसे गिरफ़्तारियों के बारे में बताया और यह सूचना दी कि 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर ने आदेश दिया है

कि वह फौरन नगर छोड़कर निकल जाये। किन्तु उसने जाने से इनकार कर दिया।

"कोई भी दोस्त गद्दारी नहीं करेगा," उसने माँ को समझाया। अब माँ से कोई बात छिपानी बेकार थी।

वोलोद्या क्यों नहीं जाना चाहता था, इसके अनेक कारण थे। उसे अपनी माँ और बहन को अकेले छोड़ने में दुख हो रहा था। आख़िर उन्हें उसी की बीमारी के कारण अन्यत्र न जाकर यही रहना पड़ा था। किन्तु खास कारण यह था कि ओलेग के घर में होनेवाली बैठक में वह उपस्थित न हो सका था और इसलिए अपने सिर पर मँडराते हुए खतरे को न देख पा रहा था। और तो और उसे पूरा विश्वास था कि हेडक्वार्टर के सदस्यों ने अपने निर्णयों में जल्दबाजी की थी जो तीन लड़के गिरफ़्तार हुए थे, वे वोलोद्या के गहरे दोस्त थे। वह बहादुर था, इसीलिए उसके दिमाग में उन्हें छुड़ाने की तरह-तरह की योजनाएँ आने लगीं।

वोलोद्या ने कारखाने में क़दम रखा ही था कि किसी बहाने ल्यूतिकोव ने उसे अपने दफ़्तर में बुलाया। ओस्मूखिन परिवार के साथ उसकी पुरानी दोस्ती थी। वह वोलोद्या को बहुत चाहता था। बूढ़े का दिल बता रहा था कि उसके इस तरुण मित्र और शिष्य पर कितना जबरदस्त खतरा मँडरा रहा है। उसने वोलोद्या को सुझाव दिया क वह तुरन्त ही नगर छोड़कर चला जाये। उसने वोलोद्या की एक न सुनी। वह उसे सलाह नहीं, हुक्म दे रहा था।

पर देर हो चुकी थी। इसके पहले कि वोलोद्या सोचे कि वह कब और कहाँ जाये, उसे उसी वर्कशाप में गिरफ़्तार कर लिया गया।

स्तखोविच पर ज़ोर-जुल्म करनेवाले उससे केवल 'तरुण गार्ड' के सदस्यों के नाम ही नहीं उगलवा रहे थे, बल्कि वे कोई ऐसा सूत्र भी जान लेना चाहते थे, जिससे उन्हें नगर में काम करनेवाले ख़ुफ़िया कम्युनिस्ट संगठन का पता चल जाय। अनेकों तथ्यों के आधार पर जर्मन पुलिस के सीनियर और जूनियर अफ़सरों को यह अनुमान हो रहा था कि तरुण लोग प्रौढ़ों के नेतृत्व में काम कर रहे थे और इसीलिए क्रास्नोदोन साजिश का केन्द्र था-बोल्शेविक ख़ुफ़िया संगठन।

किन्तु स्तखोविच को सचमुच यह पता न था कि ओलेग किस प्रकार जिला पार्टी समिति से सम्पर्क किया करता था। वह सिर्फ़ यही कह सकता था कि इस प्रकार का सम्पर्क था ज़रूर। जब उन्होंने उससे यह जानना चाहा कि कोशेवोई परिवार में कौन-कौन प्रौढ़ लोग आते-जाते थे, तो बहुत सोचने-विचारने के बाद आख़िर उसे सोकोलोवा का नाम सूझा। वास्तव में उसने वहाँ दूसरों की अपेक्षा पोलीना गेओर्गियेव्ना को अधिकतर आते-जाते देखा था। उस समय उसने पोलीना गेओर्गिव्ना की उपस्थिति को कोई महत्व नहीं दिया था। पर इस समय उसका ध्यान इस बात

पर गया कि ओलेग उसके साथ प्राय : एक कोने में जाकर फुसफुसाया करता था। इसीलिए उसने पोलीना गेओर्गियेव्ना नाम ही बता दिया।

सोकोलोवा का प्रायः शान्त और चुप रहने वालों का ल्यूतिकाव से सीधा संपर्क था, जो अब मिस्टर ब्रूक्नेर की नज़र से छिप नहीं सकता था। उसने इतना ज़रूर समझ लिया कि क़ैदी मोश्कोव और ओस्मूखिन ल्यूतिकोव के साथ एक ही वर्कशाप में संयोग से काम नहीं कर रहे थे, उसने ल्यूतिकोव के जीवन के सारे व्योरों की जाँच की और कारखाने में होने वाली तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों पर नये सिरे से गौर किया।

5 जनवरी को सुबह पोलीना गेओर्गियेव्ना हमेशा की तरह ल्यूतिकोव को दूध देने गयी और लौटते समय अपने ब्लाउज में एक परचा छिपाकर लेती आयी। परचा 'तरुण गार्ड' के नाम से स्वयं ल्यूतिकोव ने लिखा था। परचे में तरुणों की गिरफ़्तारी के बारे में एक शब्द भी न था। ल्यूतिकोव यह दिखाना चाहता था कि दुश्मन का निशाना चूक गया है और 'तरुण गार्ड' अब भी ज़िन्दा और सक्रिय है।

जब वह शाम को घर लौटा, तो उसकी पत्नी और बेटी राया रसोईघर में पेलगेया इल्यानिच्ना के साथ बैठी थीं। वे इस समय गाँव में रहती थीं। और उसे देखने आयी थीं। उन्हें देखकर ल्यूतिकोव बाग-बाग हो उठा। उसने कामवाले कपड़े उतारे, धुली हुई सफ़ेद क़मीज पहनी, भूरी धारीवाली नीले रंग की टाई लगायी और सबसे अच्छा सूट पहन लिया, जिसे पेलेगया इल्यीनिच्ना ने उसके लिए धोकर साफ़ किया था। इस प्रकार छुट्टी के कपड़े पहनकर इस शान्त, स्थिर और विनम्र स्वभाववाले व्यक्ति ने यह शाम अपने रिश्तेदारों के मध्य बितायी और इस प्रकार हँसी-मज़ाक करता रहा, मानो कुछ हुआ ही न हो।

क्या फिलीप्प पेत्रोविच को पता था कि उसके सिर पर घोर विपत्ति मँडरा रही है? जी नहीं। किन्तु इसकी सम्भावना बराबर बनी रहती थी, वह हमेशा उसका सामना करने को तैयार रहता था और पिछले कुछ दिनों से तो वह महसूस करने लगा था कि यह खतरा बढ़ गया है।

श्वैदे अब बार-बार बराकोव की कटु आलोचना करने लगा। कई बार तो आपे से बाहर होकर उस पर तोड़-फोड़ का दोष लगाने लगा। इस बात की क्या गारंटी थी कि जर्मन को पक्का सुराग नही मिल गया है?

कुछ दिन पहले कोयले की चार गाड़ियाँ अनाज के बदले में सौदा करने के बहाने पड़ोस के गाँवों में भेजी गयी थीं। कोयले का ले जाया जाना ही 'नयी व्यवस्था' का अभूतपूर्व उल्लंघन था। किन्तु ल्यूतिकोव और बराकोव के आगे और कोई रास्ता न था, फिर उन्हें और अधिक प्रतीक्षा करने का अधिकार भी न था। कोयले के नीचे बन्दूकें छिपाकर भेजी गयी थीं। ये बन्दूकें क्रास्नोदोन के छापामार दल के लिए थीं।

इस दल को मित्याकिन्स्काया दस्ते के साथ मिलकर काम करना था। और इस बात की भी क्या गारण्टी हो सकती थी कि उस जोखिमभरी कार्रवाई की और किसी का ध्यान ही न गया हो?

दुश्मन 'तरुण गार्ड' दल के, एक के बाद एक, कई सदस्यों को गिरफ़्तार कर चुका था। किसी को कुछ पता ही नहीं था कि यह सब क्यों हो रहा था।

बूढ़ा फिलीप्प पेत्रोविच स्थिति को जानता था, समझता था। किन्तु उसके लिए पीछे हटने का कोई कारण और सम्भावना न थी। वस्तुतः वह मन ही मन नदियों और स्तेपी, बर्फ और हिम को पार करता हुआ मुक्ति की विशाल सेना के साथ मार्च कर रहा था। और भले ही वह अपनी पत्नी और बेटी के साथ किसी भी विषय पर कोई बात क्यों न कर रहा हो, वह घूम-फिरकर एक ही विषय पर आ जाता था-सोवियत सेनाओं ने कितना जबदस्त हमला किया है। वह केवल अनुमानों के आधार पर ही अपना स्थान कैसे छोड़ सकता था। और ऐसे समय, जब उसे अपनी पूरी ताकत से काम लेना था! कुछ ही हफ़्तों के भीतर शायद कुछ ही दिनों में, वह अन्ततः अपना झूठा बाना उतारकर जनता के सामने अपने असली रूप में आयेगा... और हाँ, अगर उसके भाग्य में उस दिन का सुख देखना बदा ही नहीं है, तो उस काम को पूरा करने के लिए दूसरे लोग मौजूद हैं। बारकोव के दफ़्तर में हुई उस स्मरणीय बातचीत के बाद एक दूसरी अर्थात 'रिजर्व' जिला पार्टी समिति का निर्माण हुआ था, जिसके पास सभी गुप्त पते और सम्पर्क-ठिकाने थे।

फिलीप्प पेत्रोविच बड़ा ख़ुश और विनम्र नज़र आ रहा था। उसके रिश्तेदारों को यह सब विचित्र लग रहा था। और तो और वह लगातार बातें कर रहा था। उसकी बेटी ख़ुशी-ख़ुशी अपने पिता को देख रही थी। किन्तु उसकी पत्नी येव्दोकीया फेदोतोव्ना जब-तब उस पर एक पैनी, चिन्तित दृष्टि डाल लेती, मानों कह रही हो : "यह भड़कीली पोशाक, ये मीठी-मीठी बातें-मुझे ये सब कुछ अच्छा नहीं लगता।" उसने तो उसके साथ ज़िन्दगी का एक लम्बा सफर तय किया था। वह उसके मूड के छोटे-से-छोटे परिवर्तन तक को समझती थी।

जब उसकी पत्नी पेलगेया इल्यीनिच्ना से बात करने रसोइघर में चली गयी, तो फिलीप्प पेत्रोविच ने मौक़े का लाभ उठाकर अपनी बेटी को 'तरुण गार्ड' दल की गिरफ़्तारियों के बारे में बताया। राया सिर्फ़ तेरह बरस की ही थी। उसे 'तरुण गार्ड' दल के अस्तित्व के बारे में मालूम था। साथ ही उसे अपने पिता के कामों के बारे में भी पता था। वह उनकी मदद करने के सपने भी देखा करती थी। किन्तु उसे उसके बारे में कुछ कहने का साहस न होता था।

"तुम लोग यहाँ ज़्यादा मत ठहरो! रात ही रात सीधे स्तेपी में चली जाओ। अँधेरे

में तुम्हें कोई न देख सकेगा," फिलीप्प पेत्रोविच धीमी आवाज़ में बोला। "माँ से कहना यही ठीक होगा। उसके सामने लम्बी-चौड़ी व्याख्या नहीं की जा सकती। तुम तो ख़ुद ही सब कुछ समझती हो न," उसने मुस्कराते हुए कहा।

"तो आप खतरे में हैं? राया ने पूछा और उसका चेहरा उतर गया।

"मैं कुछ नहीं कह सकता, पर हम लोग हमेशा खतरे में रहते हैं। फिर मैं तो उसका आदी हो चुका हूँ। मैनें तो अपनी ज़िन्दगी ऐसे कोमों में लगा दी। मैं चाहता हूँ तुम भी वैसी ही बनो," वह धीरे-से बोला।

लड़की सोच में पड़ गयी, फिर अपनी पतली-पतली बाँहें उसके गले में डालकर अपना चेहरा उसके चेहरे से सटा लिया। माँ आयी और उन्हें साश्चर्य देखने लगी। ल्यूतिकोव हँसी-मज़ाक करते हुए, उन्हें वहाँ से रवाना करने की कोशिश करने लगा। जर्मनों के अधीन रहते हुए जब कभी ल्यूतिकोव के कार्यों में घरेलू मामले बाधक बनते, तो वह कठोर हो उठता था और येव्दोकीया फेदोतोव्ना इसकी आदी हो चुकी थी। वह हमेशा चुप हो जाती, हालाँकि इससे कभी-कभी उसे क्लेश होता था।

अब वह अपने पति को नयी दृष्टि से देख रही थी। सहसा उसने अपने पति का मुँह चूम लिया-पति ने अभी-अभी तो हजामत बनायी थी, फिर भी उसके मुँह पर ठूँठ गड़ रहे थे। वह उसकी छाती से सट गयी। ल्यूतिकोव के भारी जबड़ों में हल्का-सा कम्पन हुआ, उसने धीरे-से उसे एक ओर हटाया और हँसी-मज़ाक करने लगा। उसकी बेटी की आँखों में आसू आ गये। वह मुँह फेरकर माँ की आस्तीन खींचने लगी।

उस रात पोलीना गेओर्गिव्ना को गिरफ़्तार किया गया। ल्यूतिकोव और बराकोव को अगले दिन यानी छः जनवरी को, उसके कार्यस्थल पर गिरफ़्तार किया गया। और भी कई दर्जन लोग कारखाने में पकड़े गये। दुश्मन के लिए दलीलों का कोई महत्व न रह गया-गिरफ़्तार हुए अधिकांश लोगों का संगठन से कोई भी सम्बन्ध न था।

बस 'घर्घरक' तोल्या ही गिरफ़्तार होने से रह गया। काम का दिन काटे नहीं कट रहा था। जैसे ही वह काम से छूटा तो, सीधे ओस्मूखिन के घर पहुँचा। उन्हें गिरफ़्तारियों की खबर मिल चुकी थी।

"अभी तक तुम यहाँ कर क्या रहे हो? दुश्मन तुम्हें मारकर ही छोड़ेंगे। जाओ, जल्दी करो!" ममता और निराशा की भावना से भरकर येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना बोल उठी।

"मैं नहीं जाऊँगा," तोल्या ने धीरे-से कहा। "मैं क्यों जाऊँ?"

नहीं, जब तक वोलाद्या जेल में है, वह कहीं नहीं जा सकता।

उन्होंने तोल्या को रात वहीं बिताने को कहा, लेकिन वह चला गया। उसने वीत्या लुक्याँचेंको के पास जाने की सोची। वह अपने साथियों को जेल से छुड़ाने के

सम्बन्ध में बातचीत करना चाहता था। अँधेरा हो चुका था। हमेशा की तरह वह पुलिस की गश्ती चौकियों से दूर चक्कर काटकर गया। उसे बोलाद्या, जेम्नुखोव, मोश्कोव, जोरा अरुत्युन्सान्त्स तथा दूसरे साथियों के अभाव में अपने ही नगर में अकेलापन महसूस हो रहा था... उसके मस्तिष्क में निराशा और प्रतिकार की मिली-जुली भावनाएँ उमड़ रही थी।

सुबह ओस्मूखिन परिवार के दरवाज़े पर ज़ोरों की खटखट हुई। येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना ने स्वभावानुसार दृढ़तापूर्वक दरवाज़ा खोल दिया। तोल्या ओर्लोव को देखते ही वह भौचक्की-सी रह गयी। वह इतना थका-माँदा, सर्दी से इतना ठिठुरा हुआ था और उसकी आँखें इतनी जल-सी रही थीं कि उसे पहचानना मुश्किल था।

"इसे पढ़िये," एक गुड़ा-मुड़ा कागज येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना और ल्यूसा को थमाते हुए वह बोला।

वह बड़ा उत्तेजित हो रहा था।

"अब मैं आपको सारी बात बता सकता हूँ...यह कागज एक सिपाही ने वीत्या को दिया था। वीत्या ने कभी उसकी मदद की थी। मैं और वीत्या सारी रात इन कागजों को नगर भर में चिपकाते रहे। यह जिला पार्टी समिति का निर्देश है। पिछली रात दर्जनों लोगों ने उन्हें जगह-जगह चिपकाया है। इस समय सारे शहर, सारे फार्मों और गाँवों के लोग इसे पढ़े होंगे।" ये शब्द तोल्या के मुँह से झरते-से चले जा रहे थे, क्योंकि उसको यही लग रहा था कि उसने उन्हें सबसे ज़रूरी बात अभी तक नहीं बतायी।

किन्तु येलिजोवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्यूस्या उसकी बातों पर कोइ ध्यान न देकर परचा पढ़ने में लगी थीं।

"क्रास्नोदोन के नागरिको! खनिज श्रमिको, सामूहिक किसानो, कर्मचारियो! सोवियत लोगों! भाइयों और बहनो!

शक्तिशाली सोवियत सेना ने दुश्मन को कुचलकर रख दिया है। दुश्मन भाग रहा है! वह असहाय पाशविक क्रोधावेश में निरीह, निरपराध लोगों पर झपट रहा है, उन पर अमानुषिक अत्याचार कर रहा है। ये राक्षस इस बात का ध्यान रखें कि हम अभी तक यहीं मौजूद हैं! उन्हें सावियत लोगों के ख़ून की एक-एक बूँद की कीमत अपनी नापाक ज़िन्दगी से चुकानी पड़ेगी। हमारा प्रतिकार इतना भयानक होगा कि रोंगटे खड़े हो जायेंगे! दुश्मन पर कोई दया मत दिखाओ, जहाँ पाओ उसका सफाया करो! ख़ून का बदला ख़ून! मौत का बदला मौत!

हमारी सेना आ रही है! हमारी सेना आ रही है! हमारी सेना आ रही है!

अखिल सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की क्रास्नोदोन ख़ुफ़िया जिला

समिति।”

अध्याय 24

गिरफ़्तारियाँ शुरू होने के बाद कुछ रातों तक ऊल्या घर से बाहर रही। किन्तु जैसी ओलेग ने भविष्यवाणी की थी, इन गिरफ़्तारियों के जाल में न तो पेर्वोमाइका बस्ती का कोई निवासी फँसा, न क्रास्नोदोन की खनिक बस्ती का ही। अतः ऊल्या घर लौट आयी।

इतनी रातों तक घर से बाहर रहकर ऊल्या अब पहली बार अपने ही बिस्तर पर जगी। उसकी इच्छा हुई कि वह अपने दिमाग से उन सारे विचारों को निकाल फेंके, जो उसे भीतर ही भीतर घोंट रहे थे। अतएव वह पूरे उत्साह के साथ घरेलू कामों में जुट गयी-उसने फ़र्श साफ़ किया, नाश्ता तैयार किया। उसकी माँ, उसकी उपस्थिति से फूली न समा रही थी। वह अपने बिस्तर से उठी और नाश्ते के लिए मेज पर बैठ गयी। उसके पिता उदास और चुप थे। इन दिनों ऊल्या प्रायः गायब रहती थी। हाँ, कभी-कभी दो एक घण्टे के लिए अपने माता-पिता से मिलने अथवा कुछ लेने आ जाया करती। उसकी अनुपस्थिति में मत्वेई माक्सीमोविच और मत्र्योना सवेल्येब्ना गिरफ़्तारियों के विषय पर ही बातें करते रहते थे। किन्तु ऐसी बातें करते समय उन्हें एक-दूसरे से आँखें मिलाने की हिम्मत न होती।

नाश्ते के समय ऊल्या ने कुछ इधर-उधर की बातें करने का प्रयत्न किया और उसकी माँ ने अटपटे ढंग से उसकी हाँ में हाँ मिलायी, किन्तु ये बातें कुछ इतनी बनावटी-सी लग रही थी कि दोनों चुप हो गयीं। ऊल्या विचारों में खो चुकी थी। उसे याद भी न रही कि उसने कब मेज साफ़ की और बर्तन माँजे।

उसके पिता अपना काम करने लगे।

ऊल्या सफ़ेद बुन्दियोंवाला अपना प्रिय नीले रंग का हाउस-कोट पहने खिड़की के पास खड़ी हो गयी। उसकी पीठ अपनी माँ की तरफ़ थी। उसकी भारी, लहराती हुई चोटियाँ उसकी सुडौल कमर तक आ रही थी। चमचमाती हुई धूप खिड़की से होकर कमरे में प्रवेश कर रही थी और उसके घुंघराले बालों से खेल रही थी।

ऊल्या स्तेपी की ओर देख रही थी और धीरे-धीरे गीत गा रही थी। जर्मनों के आने के बाद से एक बार भी उसके मुँह से गाना नहीं फूटा था। उसकी माँ बिस्तर पर अधलेटी होकर कुछ रफू कर रही थी। उसे अपनी बेटी का गाना सुनकर इतना आश्चर्य हुआ कि उसने अपना काम एक तरफ़ रख दिया। बेटी अपनी मीठी गहरी आवाज़ में कोई अपरिचित गाना गा रही थी।

...तुमने बेशक थोड़ी सच्ची सेवा की
मातृभूमि की तेरी जिससे कीर्ति बढ़ी...

बेटी के गाने में करुणा और उदासी का पुट था।

वह कठोर प्रतिशोधक अब विद्रोह करेगा
हमसे उसका पलड़ा भारी कहीं रहेगा...

ऊल्या ने गाना बन्द कर दिया और स्तेपी की ओर ताकती हुई खिड़की के पास खड़ी रही।

"तुम क्या गा रही थीं?" उसकी माँ ने पूछा।

"बस, जो मुँह में आया गाने लगी?..."बिना घूमे हुए ऊल्या ने उत्तर दिया।

उसी क्षण दरवाज़ा खुला और ऊल्या की बड़ी बहन हाँफते हुए कमरे में आ गयी। वह अपने पिता पर गयी थी। गठीला बदन, सुनहरे बाल, लाल-लाल गाल। पर उस समय उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था।

"जर्मन सिपाहीं पोपोव के यहाँ आ धमके हैं!" उसने फुसफुसाते हुए कहा, मानो उसकी आवाज़ पोपोव के घर तक पहुँच सकती हो।

ऊल्या घूम पड़ी।

"सचमुच? इनसे दूर रहना बेहतर है," ऊल्या ने शान्त स्वर में कहा। उसके चेहरे पर किसी भी तरह का परिवर्तन नहीं आया। वह दरवाज़े के पास गयी, धीरे-से ओवरकोट पहना और शाल से अपने बाल ढँक लिये।

किन्तु तभी सीढ़ियाँ चढ़ते भारी बूटों की आवाज़ उसके कानों में पड़ी। वह कुछ क़दम पीछे हटकर उस फूलदार परदे से सटी, जिसके पीछे परिवार भर के ओवरकोट टँगे थे और दरवाज़े की ओर घूम पड़ी।

उसकी यही शक्ल-सूरत ज़िन्दगी भर के लिए माँ के मानस-पटल में अंकित हो गयी- फूलदार परदे की पृष्ठभूमि में तीखे नाक-नक्श, काँपते हुए नथुने, अधमुँदी लम्बी-लम्बी बरौनियाँ, जो मानो उसकी आँखों की जलती हुई लपटें बुझाने की कोशिश कर रही हों, सफ़ेद शाल, जिसे वह बाँध न पायी थी और जो ढीला-ढाला उसके कन्धों पर पड़ा था।

पुलिस-चीफ सोलिकोव्स्की, एन. सी. ओ. फेनबोंग तथा एक बन्दूकधारी सिपाही ने कमरे में प्रवेश किया।

"यह रही सुन्दरी!" सोलिकोव्स्की बोला। " भाग नहीं पायी क्या? हाय-हाय.. " उसने उसके सुगठित शरीर पर नज़र डाली। ऊल्या ओवरकोट पहन चुकी थी।

उसके सिर पर ढीला-ढाला शाल पड़ा था।

"दया करो, हम पर दया करो..'' माँ गिड़गिड़ायी और पलंग से उठने का प्रयत्न करने लगी।

ऊल्या ने माँ को क्रोधपूर्ण नज़रों से देखा। माँ चुप हो गयी और वह आगे कुछ भी न कह सकी। उसका जबड़ा काँपने लगा।

तलाशी शुरू हो गयी। ऊल्या के पति ने दरवाज़ा खोलना चाहा, किन्तु सैनिक ने उसे भीतर न आने दिया।

ठीक उसी समय अनातोली के मकान में भी तलाशी हो रही थी। तलाशी लेनेवाला था।-इंस्पेक्टर कुलेशोव।

अनातोली के सिर पर टोपी न थी, उसके ओवरकोट के बटन खुले थे। वह कमरे के बीचोबीच खड़ा था। एक जर्मन सिपाही उसकी पीठ के पीछे उसके हाथ पकड़े हुए था। एक पुलिसवाला ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना की ओर बढ़ा और चिल्लाकर बोला :

"रस्सा लाओ!"

लम्बे क़द की ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना का मुँह क्रोध से तमतमा उठा। वह सिपाही पर बरस पड़ी।

"तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया? मैं तुम्हें रस्सा दूँ कि तुम मेरे ही बेटे को बाँधो, ऐं?"

"चिल्ल-पों बन्द करने के लिए इसे रस्सा दे ही दो, माँ," अनातोली बोला। उसके नथुने फैल गये। "ये बेचारे छः तो आदमी है। अगर मुझे बाँधा न गया, तो ये मुझे सँभाल कैसे पायेंगे?"

ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना के आँसू निकल पड़े, वह ड्योढ़ी में से एक रस्सा उठा लायी और उसे अपने बेटे के पैरों के पास फर्श पर पटक दिया।

ऊल्या को उस कोठरी में डाल दिया गया था, जिसमें मरीना और उसका नन्हा बेटा, मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स और त्युलेनिन की बहन फेन्या तथा 'तरुण गार्ड' दल की एक सदस्या क़ैद थी, जो स्तखोविच के पाँच के दल में काम करती थी। वह पीले रंग की, फूले हुए गालों और गदराये वक्षवाली लड़की थी। उसका नाम था आन्ना पोपोवा। उसकी इतनी बुरी तरह पिटाई की गयी थी कि बेचारी मुश्किल से लेट पा रही थी। कोठरी से बाक़ी सभी क़ैदी हटा दिये गये और दिन भर पेर्वोमाइका बस्ती की लड़कियाँ डाली गयी। उनमें माय्या पेग्लिवानोवा, साशा बोन्दरेवा, शूरा दुब्रोविना, बहनें लील्या ओर तोन्याइवानीखिना आदि थीं...

इस कोठरों में न पलंग थे, न फलक-शय्याएँ। औरतें तथा लड़कियाँ या तो खड़ी रहती थीं या फर्श पर बैठती थीं। कोठरी में इतने लोग भरे थे कि छत से पानी की

बूँदें चूने लगीं।

पास की कोठरी भी काफ़ी बड़ी थी। उसमें लड़कों को डाला गया होगा। वहाँ बराबर नये-नये क़ैदी आ रहे थे। ऊल्या ने संकेत भाषा में खटखट की : "उधर कौन है?" और उसे तुरन्त उत्तर मिला : "कौन यह बात जानना चाहता है?" ऊल्या ने अपना नाम बताया। उसे अनातोली का उत्तर मिला। पेर्वोमाइका बस्ती के बहुत-से लड़के पास के कमरे में थे-विक्टर पेत्रोव, बोर्या ग्लवान, रगोजिन, जेन्या शेपल्वेव और वास्या बोन्दरेव। लड़कियों को कुछ सन्तोष हुआ-कुछ भी हो, पेर्वोमाइका बस्ती के लड़के उनके साथ हैं।

"मुझे मार-पीट से बेहद डर लगता है," तोन्या इवानीखिना ने स्वीकार किया। वह लम्बी टाँगों और बच्चों की-सी सूरत शक्लवाली लड़की थी। वह खड़ी-खड़ी उन लड़कियों को देख रही थी, जो दीवार के पास फर्श पर बैठी थीं "चाहे मुझे मार भी डाले, तो भी मैं उन्हें कुछ नहीं बताऊँगी, पर मुझे बेहद डर लग रहा है..."

"डरने की कोई ज़रूरत नहीं। हमारी सेनाएँ दूर नहीं हैं और शायद अब भी यहाँ से निकल भागने का मौक़ा हाथ लग जाये!" साशा बोन्दरेवा बोली।

"मुसीबत तो यह है कि तुम द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का एक भी अक्षर नहीं जानतीं..." सहसा माय्या ने कहना शुरू किया। सभी लड़कियाँ दुखी थीं फिर भी वे ठहाका मारकर हँस पड़ी। क्योंकि ऐसी बात यहाँ जेल में बड़ी अजीब लग रही थी। पर माय्या जरा भी न हिचकी, "बेशक ऐसी कोई पीड़ा नहीं जिसका आदमी अभ्यस्त न हो सकता हो!"

शाम होते-होते कोठरी में सन्नाटा छा गया। छत से, तार के सहारे एक छोटा-सा बल्ब लटका था, जिससे हल्का-सा प्रकाश आ रहा था। कोठरी के कोने अन्धकार में निमग्न थे। कभी-कभी दूर से किसी आदमी की ऊँची, कड़ी आवाज़ सुनायी देती। वह जर्मन भाषा में कोई आदेश दे रहा होता। जवाब में कोठरी के बाहर भागते क़दमों की आवाज़ आती। रह-रहकर कई लोग हथियार झनझनाते हुए गुजर जाते। सहसा उनके कानों में एक भयंकर चीख़ पड़ी और वे डरकर उछल पड़ीं-सचमुच कोई आदमी बुरी तरह चीख़ रहा था।

ऊल्या ने दीवार खटखटाकर संकेत-भाषा में पूछा :

"यह आवाज़ तुम्हारी कोठरी से आ रही है?"

उसे उत्तर मिला :

"नहीं। बड़ों की..." प्रौढ़ ख़ुफ़िया कार्यकर्ताओं के लिए वे इसी गुप्त नाम का प्रयोग करते थे।

फिर बगलवाली कोठरी से किसी को ले जाया गया। लड़कियों ने यह आवाज़

अपने कानों से सुनी। तुरन्त खटखट सुनायी दी :

"ऊल्या...ऊल्या..."

ऊल्या ने जवाब दिया।

"यह विक्टर बोल रहा है...वे तोल्या को ले गये हैं..."

ऊल्या की आँखों के आगे अनातोली का चेहरा घूम गया। अनातोली की आँखें हमेशा गम्भीर रहने के साथ ही साथ सहसा चमक उठती थीं और शक्ति का प्रदर्शन करने लगती थी। यह सोचकर कि अब तोल्या के साथ क्या होनेवाला है वह सिर से पैर तक काँप उठी। पर तभी ताले में एक चाबी घूमी, कोठरी का दरवाज़ा खुला और एक बेतकल्लुफ आवाज़ सुनायी दी :

"ग्रोमोवा!.."

उसके साथ आगे क्या हुआ, उसकी उसे यही याद रही थी...कुछ समय तक उसे सोलिकोव्स्की के प्रतीक्षालय में खड़ा रखा गया। दफ़्तर में किसी को पिटाई हो रही थी। सोफे पर बैठी सोलिकोव्स्की की पत्नी अपने पति की प्रतीक्षा करती हुए जम्हाइयाँ ले रही थी। उसके लहरदार बाल सन के रंग के थे। उसकी गोद में एक बण्डल था और पास में उनींदी आँखोंवाली एक नन्हीं-सी लड़की बैठी हुई थी। वह सेब का मुरब्बेवाला समोसा खा रही थी। दरवाज़ा खुला और वान्या जेम्नुखोव को बाहर निकाला गया। उसका चेहरा इतना सूजा हुआ था। कि पहचाना तक न जा रहा था। वह ऊल्या से टकराते-टकराते बचा। ऊल्या तो चीख़ते रह गयी।

इसके बाद वह सोलिकोव्स्की के साथ मिस्टर ब्रूक्नेर के पास आयी। मिस्टर ब्रूक्नेर ने लापरवाही से उससे एक प्रश्न पूछा। स्पष्ट था कि यह प्रश्न वह पहली बार नहीं पूछ रहा था। शूर्का रैबन्द वहीं खड़ा था। लड़ाई पूर्व के दिनों में वह उसके साथ क्लब में नाची थी और शूर्का ने उस पर डोरे डालने का भी प्रयत्न किया था, पर इस समय वह ऐसा बन रहा था, मानो उसे जानता ही न हो। उसने मिस्टर ब्रूक्नेर के सवाल का रूसी में अनुवाद कर दिया। किन्तु ऊल्या कुछ सुन न पायी, क्योंकि वह अपनी वह बात बताना चाहती थी, जो उसने गिरफ़्तारी से पहले सोच रखी थी। उसने चेहरे पर रुखाई का भाव लाते हुए कहा :

"मैं तुम्हारे एक भी सवाल का जवाब न दूंगी, क्योंकि तुम्हें मुझ पर मुकद्दमा चलाने का कोई अधिकार नहीं। कुछ भी हो, पर मेरे मुँह से दूसरा शब्द तुम सुन न सकोगे।"

पिछले कुछ दिनों में मिस्टर ब्रूक्नेर को सम्भवतः इस प्रकार के वाक्य अनेकों बार सुनने को मिले होंगे। उसे क्रोध नहीं आया। वह उँगलियाँ चटकाता हुआ बोला।

"इसे फेनबोंग के हवाले करो!...

बेशक जुल्म की पीड़ा भयानक थी। पर वह हर तरह की पीड़ा सहन कर सकती थी। उसे तो यह भी याद न रहा कि उसे कब पीटा गया। किन्तु सबसे बुरी बात उस समय हुई, जब वे उसके कपड़े नोचने के लिए झपटे और उनके हाथों के स्पर्श से बचने के लिए उसे स्वयं कपड़े उतारने पड़े....

जब उसे वापस कोठरी में ले जाया जा रहा था, तो सामने से अनातोली पोपोव को घसीटकर ले जाया गया। उसका सुनहरे बालोवाला सिर लटक गया था, उसके हाथ फर्श से रगड़ खा रहे थे, उसके मुँह के एक कोने से ख़ून बह रहा था। ऊल्या को याद आ गया कि कोठरी में प्रवेश करते समय उसे अपनी अनुभूतियों पर नियंत्रण करना होगा और सम्भवतः वह उसमें सफल भी हुई। वह कोठरी में घुसी और पुलिसवाल चिल्ला उठा :

"अन्तोनीना इवानीखिना!.."

तोन्या की भयग्रस्त आँखे एक क्षण के लिए ऊल्या पर टिकीं और दरवाज़ा बन्द हो गया। ठीक उसी समय जेल में एक बच्ची की चीख़ गूँज गयी, यह तोन्या की आवाज़ न थी।

"उन्होंने मेरी नन्ही बच्ची को पकड़ लिया," मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स चीख़ उठी और शेरनी की भाँति दरवाज़े पर झपट पड़ीः "ल्यूस्या! वे तुम्हें पकड़कर ले गये हैं, मेरी बेटी! उसे छोड़ दो, उसे छोड़ दो!.."

मरीना का नन्हा बच्चा जग पड़ा और रोने लगा।

अध्याय 25

इस बीच लयूबा वोरोशीलोवग्राद में, फिर कामेंस्क और रोबेनकी में रही और एक बार मील्लेरोवो तक हो गयी। मील्लेरोवो के इर्द-गिर्द तो सोवियत सेना का घेरा कसता जा रहा था। शत्रु अफ़सरों के बीच उसकी जान-पहचान का दायरा भी काफ़ी बढ़ गया। उसकी जेबें सदा बिस्कुट, मिठाइयों और चाकलेटों से भरी रहती थीं। ये चीज़ें उसे जर्मन अफ़सरों से मिलती थीं और वह उन्हें सभी मिलनेवालों में बाँटती रहती थी।

बड़ी निडरता और लापरवाही से वह तलवार की धार पर चल रही थी। उसके अधरों पर एक निष्कपट मुस्कराहट खेलती रहती और उसकी नीली आँखें, जिनमें कभी-कभी निर्दयता का भाव भी झलक उठता था, सिकुड़ी-सी रहती थीं।

वोरोशीलोवग्राद आने पर उसने एक बार फिर अपने चीफ से सम्पर्क स्थापित किया। चीफ ने उसे बताया कि नगर में जर्मनों का नंगा नाच जारी है। चीफ प्रायः प्रतिदिन ही अपने रहने की जगह बदलता रहता था। नींद की कमी के कारण उसकी

आँखें सुर्ख रहती थीं। दाढ़ी बढ़ी हुई, कपड़े गन्दे। फिर भी मोर्चे से आनेवाली खबरों के कारण वह बड़ा उत्साहित रहता था। सबसे निकट क्षेत्र में जर्मन रिजर्व कितनी संख्या में हैं, उनकी सप्लाई-लाइनों की स्थिति कैसी है, जर्मन यूनिटों का व्यूह क्या है-मतलब यह कि उसे बहुत-सी बातों के बारे में सूचना एकत्र करने की अवश्यकता थी।

ल्यूबा को एक बार फिर क्वार्टर-मास्टर कर्नल के साथ सम्पर्क स्थापित करना पड़ा। और एक मौक़े पर तो ऐसा लगा कि वह उनके बीच से निर्बाध निकल भी न सकेगी। क्वार्टरमास्टर का सारा का सारा विभाग और उसका चीफ़-पिलपिले और लटके गालोंवाला कर्नल वोरोशीलोवग्राद छोड़कर भागे जा रहे थे। फलतः सभी अफ़सरों में एक तरह की उद्दण्डता आ गयी। पियक्कड़ कर्नल शराब के हर जाम के साथ अधिकाधिक निश्चेष्ट होता जा रहा था।

ल्यूबा इसीलिए वहाँ से बचकर निकल सकी, चूँकि उस पर मर मिटनेवाले अफ़सर ज़रूरत से ज़्यादा थे। वे उसे लेकर एक-दूसरे से झगड़ते रहते थे। अन्ततः वह उस मकान में फिर आ गयी, जहाँ गोल-मटोल, फूले गालोंवाली लड़की रहती थी। ल्यूबा अपने साथ लेफ़्टिनेण्ट द्वारा भेंट में दिया गया बढ़िया जैम का डिब्बा भी लेती आयी-लेफ़्टिनेण्ट अब भी ल्यूबा को पाने की आशा लगाये बैठा था।

ल्यूबा ने कपड़े उतारे और ऊँची छतवाले सर्द कमरे में बिस्तर पर लेट गयी। सहसा कोई दरवाज़ा भड़भड़ाने लगा। ल्यूबा ने सिर उठाया। बगलवाले कमरे में लड़की और उसकी माँ उठ गयी थीं। दरवाज़े पर बराबर घूँसे पड़ रहे थे, मानो कोई उसे तोड़ देना चाहता हो। सर्दी के कारण ल्यूबा चोली और लम्बे मोजे पहने सो रही थी। उसने कम्बल उतार फेंका, अपनी ड्रेस पहनी और पैरों में जूते पहन लिये। कमरे में घुप अँधेरा था। ड्योढ़ी में से मकान मालकिन की डरी-डरी आवाज़ आ रही थी : "कौन है?" उत्तर में कई रुखी-रुखी आवाज़ें सुनायी पड़ीं। यह जर्मन थे। ल्यूबा ने सोचा कि नशे में धुत्त अफ़सर उससे मिलने आये होंगे और उसकी सुध-बुध जाती रही।

इससे पहले कि वह कुछ कर पाये, मोटे तलेवाले भारी बूटों की धमक गूँज उठी। तीन आदमियों ने कमरे में प्रवेश किया। उनमें से एक उस पर टार्च की रोशनी फेंक रहा था।

"Licht!"* कोई चिल्लाया और ल्यूबा ने लेफ़्टिनेण्ट की आवाज़ पहचान ली।

हाँ, वह लेफ़्टिनेट ही था। उसके साथ पुलिस के दो सिपाही और थे। उसने ल्यूबा को उस मोमबत्ती की रोशनी में देखा, जो मकान मालकिन ने उस दरवाज़े के पीछे से बढ़ायी। लेफ़्टिनेट का चेहरा क्रोध से विकृत हो उठा। उसने मोमबत्ती एक सिपाही को थमायी और ल्यूबा के गालों पर कसकर तमाचा जड़ दिया। फिर वह किसी

चीज़ की तलाश में ल्यूबा का तेल-पाउडर वगैरह इधर-उधर फेंकने लगा। एक रूमाल के नीचे पड़ा मुँह-बाजा फर्श पर जा गिरा। उसने रौंदकर उसे मसल डाला।

फिर वह सिपाहियों को सारे फ़्लैट की तलाशी लेने के लिए छोड़ वहाँ से चला गया। ल्यूबा ने समझ लिया कि वह स्वयं इन पुलिसवालों को न लाया, बल्कि उन्होंने लेफ़्टिनेण्ट की मार्फत उसका पता चलाया था। कहीं किसी बात का पता चल गया होगा। पर किस बात का-यह वह न जान सकी।

मकान मालकिन और गोल गालोंवाली लड़की ने कपड़े पहन लिये और सर्दी से काँपती हुई तलाशी का अवलोकन कर रही थी और लड़की अत्यधिक उत्सुकता और रुचि के साथ ल्यूबा को ताके जा रही थी। जाने से पूर्व ल्यूबा ने उस लड़की को गले से लगाया और उसके गुलाबी गाल चूम लिये।

ल्यूबा को वोरोशीलोवग्राद के थाने में ले जाया गया। वहाँ एक अधिकारी ने उसके कागजों की जाँच की और एक दुभाषिये की मार्फत उससे पूछा : "तुम्हीं ल्यूबोव शेव्त्सोवा हो, तुम किस नगर में रहती हो?" पूछताछ के समय वहाँ एक युवक भी मौजूद था। वह एक कोने में बैठा था, जिससे ल्यूबा उसका चेहरा न देख सकी। वह सारा वक्त घबराहट से काँपता रहा। ल्यूबा के पास से उसका सूटकेस वगैरह ले लिये गये। हाँ, छोटी-छोटी चीज़ें, जैम का एक डिब्बा और एक रंगीन स्कार्फ ज़रूर नहीं हथियाया गया। यह स्कार्फ वह कभी-कभी पहना करती थी। उसने उसे यह कहकर रख लिया कि वह अपनी निजी चीज़ें उसी में बाँध लेगी।

इस प्रकार रंगीन चीनी क्रेप की पोशाक पहने, साबुन-तेल वगैरह का बण्डल और जैम का डिब्बा लिये वह उसे कोठरी में लायी गयी, जहाँ 'पेर्वोमाइका' बस्ती की लड़कियाँ बन्द थी। दिन का वक्त था और जेल में पूछ-ताछ चल रही थी।

पुलिसवाले ने कोठरी का दरवाज़ा खोला, उसे भीतर ढकेला ओर बोला :

"यह रही वोरोशीलोवग्राद की अभिनेत्री!"

बाहर के पाले से ल्यूबा के गाल लाल हो रहे थे। उसने यह देखने के लिए कि कोठरी में कौन-कौन है, आँखें सिकोड़कर चारों ओर निगाह डाली। वहाँ उसने ऊल्या, बेटे सहित मरीना और साशा बोन्दरेवा को बैठे पाया। सभी उसकी सहेलियाँ यही पर थीं। उसने हाथ गिरा लिये। उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

ल्यूबा के आने से पूर्व क्रास्नोदोन जेल प्रौढ़ों, 'तरुण गार्ड' के सदस्यों और उनके सम्बन्धियों से भर चुकी थी। यहाँ तक कि कुछ लोगों और बच्चों को गलियारे में ही ठहराया गया। अभी क्रास्नोदोन की खनिज बस्ती के क़ैदियों के लिए भी जगह का

---

* रोशनी!

इन्तज़ाम किया जाना था।

स्तखोविच नये-नये नाम उगलता जा रहा था, अतएव शहर में गिरफ़्तारियाँ जारी थीं। उसकी दशा मरियल जानवर की-सी हो गयी। उसे तभी थोड़ा आराम दिया जाता, जब वह अपने किसी साथी का नाम बता देता। पर प्रत्येक गद्दारी के साथ उसे दी जानेवाली यंत्रणा तीव्र से तीव्रतर होती गयी। कभी उसे कोवल्योव और पिरोज्होक की सारी कहानी याद आ जाती, फिर उसे यह याद आता कि त्युलेनिन का एक दोस्त था-बेशक वह उसका नाम न जानता था, हाँ, उसका हुलिया ज़रूर बता सकता था। उसका घर 'शंघाई' मुहल्ले में था।

सहसा स्तखोविच को याद आया कि ओस्मूखिन का भी एक मित्र हुआ करता था-तोल्या ओर्लोव। इसके कुछ ही समय बाद बुरी तरह पिटे वोलोद्या के सामने वाह्टमिस्टर बाल्डेर के दफ़्तर में 'घर्घरक' तोल्या को लाकर खड़ा किया गया।

"नहीं, मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा," तोल्या धीरे-से बोला।

"नहीं, मैं इसे बिलकुल नहीं जानता," वोलोद्या बोला।

स्तखोविच को याद आया कि जेम्नुखोव की प्रेमिका नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की में रहती है, और दो-एक दिन बाद जेम्नुखोव और क्लावा, मिस्टर ब्रूक्नेर के सामने, एक-दूसरे से मिले। जेम्नुखोव को पहचानना मुश्किल था। क्लावा कुछ भेंगी थी। फुसफुसाहट की आवाज़ में क्लावा बोली :

"नहीं... हम एक ही स्कूल में पढ़ते ज़रूर थे। पर लड़ाई शुरू होने के बाद से मैंने उसे कभी नहीं देखा। मैं तो देहात में रहती हूँ..."

जेम्नुखोव कुछ न बोला।

क्रास्नोदोन खनिक बस्ती के सारे के सारे दल को स्थानीय जेल में रखा गया। उनके साथ गद्दारी की थी ल्याद्स्काया ने, पर उसे यह पता न था कि संगठन में कौन सदस्य क्या काम करता था। पर वह यह जानती थी कि लीदा अन्द्रोसोवा कोल्या सुम्स्कोई को प्यार करती थी।

लीदा अन्द्रोसोवा एक ख़ूबसूरत लड़की थी, ठुड्डी नुकीली और आकृति लोमड़ी के बच्चे जैसी। उसे बन्दूक की पेटियों से पीटा गया। ताकि वह संगठन में सुम्स्कोई के कामों के बारे में सब कुछ बता दे। वह ज़ोर-ज़ोर से कोड़ों की गिनती गिन तो रही थी, किन्तु उसने कुछ भी बताने से साफ़ इनकार कर दिया।

प्रौढ़ों को तरुणों से अलग रखा गया, ताकि वे उन पर कोई प्रभाव न डाल सकें। और इस बात की सख्त निगरानी रहती थी कि उनके बीच किसी प्रकार का सम्पर्क स्थापित न हो सके।

किन्तु हद तो जल्लादों के जुल्मों की भी होती है। न सिर्फ़ तपे-तपाये

बोल्शेविकों, बल्कि 'तरुण गार्ड' के सदस्यों ने भी अपने साथियों के साथ गद्दारी नहीं की और यह नहीं माना कि वे संगठन के सदस्य हैं। कोई सौ लड़के-लड़कियों की इस अभूतपूर्व दृढ़ता-इन्हें बच्चे कहना चाहिए-के कारण उनके रिश्तेदारों तथा निरपराधों को पहचानना आसान हो गया। अपनी स्थिति कुछ सुधारने के निमित्त जर्मन धीरे-धीरे उन सब को छोड़ने लगे, जो इत्तिफाक से गिरफ़्तार हुए थे। उन्होंने उन रिश्तेदारों को भी छोड़ दिया, जो बँधकों के रूप में पकड़े गये थे। इस प्रकार कोशेवोई, त्युलेनिन, अरुत्युन्यान्त्स तथा कुछ अन्य व्यक्तियों के सम्बन्धियों को, जिनमें मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स भी थी, रिहा कर दिया गया। नन्हीं ल्यूस्या को एक दिन पहले मुक्त कर दिया गया था। जब मरीया अन्द्रेयेव्ना घर पर आयी, तो उसे पता चला कि उसकी नन्हीं बेटी सचमुच जेल में थी, कि माँ के कानों ने धोखा नहीं खाया था। जो आवाज़ उसने जेल में सुनी थी वह सचमुच ल्यूस्या की ही थी। अब कसाइयों की क़ैद में खुफ़िया संघर्षकारी प्रौढ़, उनके नेता ल्यूतिकोव और बराकोव तथा 'तरुण गार्ड' के सदस्य रह गये।

सुबह से लेकर रात तक इन क़ैदियों के रिश्तेदार जेल के बाहर मजमा लगाये रहते थे और भीतर जाने या बाहर आनेवाले पुलिसवालों एवं जर्मन सिपाहियों का हाथ पकड़-पकड़कर चिरौरी करते रहते थे कि वे उन्हें क़ैदियों की खबर दें या उन्हें पार्सल पकड़ा दें। सैनिक इन लोगों को ढकेल-ढकेलकर पीछे हटा देते थे, किन्तु वे फिर वहाँ जमा हो जाते और उन्हें देखकर कुछ राहगीर या तमाशाई भी वहाँ आ जाते। कभी-कभी क़ैदियों की चीख़-पुकार लकड़ी की दीवार के पीछे से सुनायी पड़ती। जेल में दिन भर एक ग्रामोफोन बजा करता था, जिससे क़ैदियों की चीख़-पुकार सुनायी न दे। सारे नगर में सनसनी मची थी : एक भी व्यक्ति ऐसा न था, जो जेल के पास न आया हो। आख़िर मिस्टर ब्रूक्नेर ने क़ैदियों को पार्सल दिये जाने की अनुमति दे ही दी। और इस प्रकार ल्यूतिकोव व बराकोव को यह सन्देश मिल गया कि नयी जिला पार्टी समिति काम कर रही है और 'बड़ों' व 'छोटों' को मुक्त कराने के उपाय खोज रही है।

तरुण लोगों को क़ैद हुए दो हफ़्ते हो चुके थे। निर्ममतम कारावास-दशाओं में उनकी ज़िन्दगी बड़ी अस्वाभाविक थी, पर धीरे-धीरे उनकी दिनचर्या निश्चित-सी हो गयी। हालाँकि उनके शरीरों और आत्माओं पर कल्पनातीत अत्याचार हो रहा था फिर भी उनके आपसी सम्बन्ध-प्रेम, मित्रता और अपने को ख़ुश रखने के उनके पुराने तरीके-ज्यों के त्यों बने रहे।

"लड़कियो, मुरब्बा खाओगी?" ल्यूबा ने कोठरी के बीचोंबीच फर्श पर पालथी मारकर बैठते ही अपनी गठरी खोलते हुए पूछा। "उल्लू का पट्ठा! उसने मेरा मुँह-बाजा

तोड़ डाला। उसके बिना मैं यहाँ रह भी कैसे सकती हूँ?..”

“ठहरो, वे तुम्हारी पीठ पर ऐसा बाजा बजायेंगे कि मुँह का बाजा भूल जाओगी,” शूरा दुब्रोविना ने गर्म होते हुए कहा।

“तुम अपनी ल्यूबा को नहीं जानतीं। तुम्हारा ख़याल है कि जब वे मुझे पीटेंगे, तो मैं चुप रहूँगी? मैं उन पर चीखूँगी, उन्हें गालियाँ दूँगी। इस तरह-‘ओ-ओ-ओ। अरे मूर्खो! ल्यूबा को क्यों मार रहे हो?” वह कर्णभेदी आवाज़ में चिल्ला उठी।

लड़कियाँ हँस पड़ीं।

“हाँ, तो सहेलियो, हम शिकायत करें। तो किस बात की? हमसे कहीं ज़्यादा मुसीबत हमारे माता-पिताओं को उठानी पड़ रही है। वे बेचारे यह भी नहीं जानते कि हमारी हालत कैसी है। और कौन जाने उन्हें क्या देखना बदा हो!” लील्या इवानीखिना बोली।

गोल चेहरे और सुनहरे बालोंवाली लील्या बन्दी शिविरों की कठिनाइयाँ बरदाश्त कर चुकी थी। वह किसी बात की शिकायत न करती, हर व्यक्ति का ध्यान रखती थी।

शाम को ल्यूबा को भी पूछताछ के लिए मिस्टर ब्रूक्नेर के आगे पेश किया गया। यह एक असाधारण मौक़ा था, क्योंकि वहाँ जर्मन सशस्त्र पुलिस के सभी अफ़सर मौजूद थे। उन्होंने उसे मारा-पीटा नहीं, उलटे उसके साथ नर्मी का व्यवहार किया। ल्यूबा ने उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया, जैसा वह हमेशा जर्मनों के साथ करती थी-उसने बड़े नाज नखरे से बातचीत की, हँसती-चहकती रही और कान पर हाथ रख लिये। उन्होंने यह भी संकेत किया कि यदि वह उन्हें वायरलेस ट्रांसमिटर और कोड दे दे, तो बहुत अच्छा होगा।

यह तो उनका अनुमान मात्र था, क्योंकि उनके पास इस बात का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण न था। किन्तु उन्हें इस बात में कोई सन्देह भी न रह गया था कि ऐसी चीज़ें उसके पास थीं ज़रूर। वह संगठन की सदस्या थी, भिन्न-भिन्न नगरों में आती-जाती थी, और साथ ही जर्मनों के साथ उसके अच्छे सम्बन्ध थे, यह बात अपनी कहानी आप कह रही थी। जर्मन गुप्तचर विभाग को पता था कि इस इलाके में कई गुप्त ट्रांसमिटर काम कर रहे हैं। वोरोशीलोवग्राद पुलिस कार्यालय में हुई पूछताछ में जो युवक मौजूद था, वह पहले कभी बोर्या दुबीन्स्की के साथ रहा था। बोर्या वायरलेस स्कूल में ल्यूबा का एक मित्र था। उस युवक ने इस बात की पुष्टि की थी कि वह गुप्त-वायरलेस कोर्स में पढ़ती थी।

ल्यूबा से कहा गया कि वह इस बात पर विचार करे कि क्या सब कुछ स्वीकार कर लेना उसके लिए हितकर नहीं होगा। इसके बाद उसे फिर कोठरी में बन्द कर

दिया गया।

उसकी माँ ने उसके लिए एक थैले में खाने का सामान भेज दिया था। ल्यूबा थैला घुटनों के बीच दबाये, फर्श पर बैठ गयी, कभी उसमें से कोई रस्क निकालती, कभी कोई अण्डा और सिर झुलाती गाने लगी :

प्यारी ल्यूबा, ओ मेरी ल्यूबा प्यारी
मेरे सिर पर बोझ बनी हो तुम प्यारी...

जो पुलिसवाला उसके लिए थैला लाया था, उससे ल्यूबा ने कहा :

"माँ से कह देना ल्यूबा जिन्दा है, ठीक है, पर वह कुछ और 'बोर्श्च' खाना चाहती है।" वह लड़कियों की ओर घूमकर चिल्ला पड़ी :

"आओ लड़कियो, आओ। टूट पड़ो!..."

आख़िर उसे फेनबोंग के सुपुर्द कर ही दिया गया। उसे बुरी तरह पीटा गया। पर वह अपने बात की पक्की निकली-इधर उस पर मार पड़ रही थी और उधर उसकी गालियाँ सारे क़ैदखाने में गूँजती हुई बाहर के खुले मैदान तक सुनायी पड़ रही थीं।

"गंजे बदमाश! उल्लू के पट्ठे! कुत्ते की औलाद!" यह थीं सबसे शिष्ट गालियाँ, जिनसे वह फेनबोंग का स्वागत कर रही थी।

दूसरी बार फेनबोंग ने उसे मिस्टर ब्रुक्नेर और सोलिकोव्स्की के सामने गिरहदार तारों से बने कोड़े से पीटा। ल्यूबा ने कसकर अपने होंठ भींच लिये किन्तु वह अपने आँसू न रोक सकी। वह कोठरी में आयी, पेट के बल फर्श पर लुढ़क पड़ी और अपना चेहरा बाँहों में छिपा लिया।

ऊल्या एक कोने में बैठी थी। उसने घर से आया एक श्वेत ब्लाउज पहन रखा था, जो उसकी काली आँखों और बालों को देखते हुए उस पर ख़ूब जँच रहा था। दूसरी लड़कियाँ उसके इर्द-गिर्द बैठी थीं। उसकी आँखों में एक रहस्यमय चमक थी और वह लड़कियों को 'पवित्र मगदालेन मठ के रहस्य' की कहानी सुना रही थी। वह प्रतिदिन उन्हें किसी न किसी रुचिकर कहानी का अंश सुनाती थी। अब तक वे 'जहरीली मक्खी,' 'हिम-गृह ' तथा 'रानी मार्गोत' की कहानियाँ सुन चुकी थीं।

कोठरी की हवा साफ़ करने के लिए दरवाज़ा खोल दिया गया था। दरवाज़े के ठीक सामने एक स्टूल पर एक रूसी सिपाही बैठा हुआ था। वह भी 'पवित्र मगदालेन मठ के रहस्य' की कहानी सुन रहा था।

ल्यूबा की तबीयत कुछ सुधरने लगी। वह उठ बैठी। उसके भी कान कुछ-कुछ इस कहानी की ओर लगने लगे। उसने माय्या पेग्लिवानोवा की ओर देखा, जो कई दिनों से बिना हिले-डुले पड़ी हुई थी। वीरिकोवा ने जर्मनों को बताया था कि माय्या

कभी स्कूल के कोमसोमोल दल की सेक्रेटरी रही थी, इसीलिए उस पर दूसरों से अधिक जुल्म किये जा रहे थे। माय्या को देखकर ल्यूबा के हृदय में अत्याचारियों के ख़िलाफ़ प्रतिकार की अदम्य भावना उठी।

"साशा... साशा..." उसने धीरे-से बोन्दरेवा को पुकारा, जो ऊल्या के इर्द-गिर्द बैठी लड़कियों में थी। "न जाने क्यों हमारे लड़के बिलकुल चुप हो गये है..."

"हाँ..."

"कहीं उनके मुँह लटक तो नहीं गये?"

"तुम तो जानती ही हो, उन पर हमसे ज़्यादा जुल्म हो रहे हैं," साशा आह भरकर बोली।

यों तो साशा के तौर-तरीके और आवाज़ लड़कों जैसी और रूखी थी, पर इधर जेल में उसमें कन्या-सुलभ कोमलता उभरने लगी। इस विलंबित परिवर्तन पर उसे स्वयं लज्जा हो रही थी।

"चलो, उनका मन बहलाया जाये," ल्यूबा चहक उठी। "आओ, उनका व्यंग्य-चित्र बनायें।"

उसने अपनी गठरी में से एक कागज और लाल-नीली पेंसिल निकाल ली। ल्यूबा और साशा एक-दूसरे के पास पेट के बल लेट गयीं और व्यंग्य-चित्र के भाव के बारे में फुसफुसाने लगीं। फिर एक-दूसरे से पेंसिल झपटते हुए, उन्होंने एक दुबले-पतले मरियल जवान की तस्वीर खींची जिसका सिर लटका था और नाक ज़मीन छू रही थी। उन्होंने जवान को नीली पेंसिल से रंग दिया, लेकिन चेहरा सफ़ेद छोड़ दिया। उसकी नाक उन्होंने लाल पेंसिल से रंग दी। चित्र के नीचे उन्होंने लिख दिया :

क्यों उदास हो, वीरो, क्यों मुरझाये हो
अरे निराशा से क्यों शीश झुकाये हो?

ऊल्या अपनी कहानी की किश्त पूरी कर चुकी थी। लड़कियाँ उठीं, उन्होंने कमर सीधी की और अपने-अपने कोनों में चली गयीं। कुछेक ल्यूबा और साशा के पास आ गयीं। व्यंग्य-चित्र हाथों-हाथ घूमने लगा। लड़कियाँ हँस पड़ीं।

"तुम अब तक अपनी प्रतिभा हमसे छिपा रही थीं!"

"यह चित्र हम उन तक कैसे पहुँचायें?",

ल्यूबा कागज उठाकर दरवाज़े तक चली आयी।

"दवीदोव! इन लड़कों की तस्वीर तो जरा उन्हें दे आओ!" उसने पुलिसवाले को चुनौती देते हुए कहा।

"तुम्हें यह कागज-पेंसिल कहाँ से मिले? भगवान कसम, मैं चीफ से तुम सब

की तलाशी लेने को कहूँगा!" वह भौंहें चढ़ाते हुए बोला।

शूर्का रैबन्द गलियारे से होकर गुजर रहा था। उसने ल्यूबा को दरवाज़े पर खड़े देखा।

"हलो, ल्यूबा! मेरे साथ वोरोशीलोवग्राद की सैर को कब चलोगी?" उसने छेड़-छाड़ करते हुए करते हुए कहा।

"मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी... पर अगर तुम यह तस्वीर उन लड़कों को दे दोगे, तो मैं चल सकती हूँ!.."

रैबन्द ने चित्र पर एक निगाह डाली, उसके मुरझाये चेहरे पर वक्र मुस्कान खेल गयी ओर उसने कागज दवीदोव को थमा दिया।

"दे दो, इसमें कोई हर्ज नहीं," उसने लापरवाही से कहा और आगे चल दिया।

दवीदोव चीफ के साथ रैबन्द के अच्छे सम्बन्धों को जानता था और और दूसरे पुलिसवालों की तरह उसकी ख़ुशामद करता था। फलतः उसने बिना कुछ कहे लड़कों वाली कोठरी का दरवाज़ा थोड़ा-सा खोला और कागज अन्दर फेंक दिया। कोठरी में कहकहे गूँज उठे और कुछ ही क्षणों के बाद दीवार पर दस्तक सुनायी दी :

"लड़कियों, तुम्हें भ्रम हुआ। हमारे सभी बाशिन्दे कायदे से पेश आ रहे हैं... यह वास्या बोन्दरेव है। मेरी नन्ही बहन को शुभकामनाएँ..."

साशा ने सिरहाने में से शीशे का एक खाली डिब्बा निकाला, जिसमें उसकी माँ ने उसे दूध भेजा था, और दीवार के पास जाकर खटखटाने लगी :

"वास्या, मेरी बात सुन रहे हो न?"

फिर उसने डिब्बे का पेंदा दीवार से सटाया, अपने होंठ उसके मुँह पर रखे और अपने भाई का प्रिय गान-'सुलिको'-गाने लगी।

किन्तु गाने के शब्दों ने उसके सामने अतीत के ऐसे चित्र खड़े कर दिये कि उसकी आवाज़ बैठने लगी। लील्या उसके पास गयी, उसका हाथ सहलाया और विनम्र, मृदु आवाज़ में बोली :

"बस करो, मेरी सखी... रोना मत..."

"जब आँसू गिरते हैं, तो मैं अपने आपसे घृणा करने लगती हूँ," साशा बोली। उसके होंठों पर कृत्रिम मुस्कराहट खेल रही थी।

"स्तखोविच!" सोलिकोव्स्की की भर्रायी आवाज़ गलियारे में गूँज गयी।

"फिर शुरू हुआ," ऊल्या बोली।

पुलिसवाले ने दरवाज़ा बन्द किया।

"अच्छा हो हम सुने ही नहीं," लील्या बोली, "प्यारी ऊल्या, तुम तो मेरी प्रिय कविता जानती ही हो। तुमने पहले भी 'दैत्य' कविता सुनायी थी न! याद है? वैसे ही फिर सुनाओ!"

ऊल्या ने एक हाथ उठाया और कविता पाठ करने लगी :

...क्या ये लोग! क्या जीवन, क्या श्रम उनका?
वे आये हैं, और चले जायेंगे वे...
यह आशा है-आख़िर होगा न्याय कभी-
दे सकता वह दण्ड, क्षमा कर सकता है
लेकिन मेरे दिल में दर्द दहकता है,
मेरा इसका अन्त नहीं हो पायेगा।
नहीं, कब्र में भी जाकर सो पायेगा!
कभी साँप-सा यह मुझको सहलाता है
कभी-कभी अंगारे-सा दहकाता है
वह पत्थर-सा कभी विचार दबाता है,
सभी मिटी आशाओं की इच्छाओं की
चिर समाधि है यह तो मेरी चाहों की।

इन पंक्तियों ने लड़कियों के दिलों को झँझोड़कर रख दिया। लगता था वे साफ़-साफ़ कह रही हों : "यह तुम्हारे बारे में है! तुम्हारी अतृप्त वासना और चूर हुई आशाओं के बारे में!"

"ठीक कहती हो! हमारे लोगों के संकल्प को तोड़ सकनेवाला कोई पैदा नहीं हुआ!" सहसा ल्यूबा बोल उठी। उसकी आँखों में चमक आ गयी। "क्या हमारे जैसे लोग कहीं और है दुनिया में? कौन इतनी सारी मुसीबतें झेल सकता है? शायद मौत हमारे क़दम चूमे-मुझे इसका डर नहीं। जरा भी डर नहीं।" उसने यह बात इतने उत्साह से कही कि उसका सारा शरीर हिलने लगा। "पर मैं मरना नहीं चाहती हूँ. .. मैं अपना हिसाब उनसे चुकाना चाहती हूँ। मैं गीत भी गाना चाहती हूँ... हमारे देश में इस बीच अच्छे-अच्छे गीतों की रचना हुई होगी! जरा सोचो, हमारे छः महीने जर्मनों की मातहती में ऐसे कटे, जैस हम क़ब्र में पड़ चुके हों-न गाना, न हँसी! सिर्फ़ आँसू, रोना-धोना, ख़ून!" ल्यूबा ने ज़ोर देते हुए कहा।

"तब तो हम एक गाना गायेंगी! भाड़ में जायें ये सब!" साशा बोन्दरेवा बोली और अपने पतले, साँवले हाथ से ताल देती हुई गाने लगी :

लाँघ घाटियों, टीलों को
डिवीजन बढ़ता जाता था...

लड़कियाँ अपनी-अपनी जगहों से उठीं, उन्होंने गीत की लड़ी पकड़ी और साशा के इर्द-गिर्द खड़ी हो गयी। समवेत गीत सारे क़ैदखाने में गूँज उठा। लड़कों ने भी

उसमें अपना कण्ठ-स्वर मिलाया।

कोठरी का दरवाज़ा भड़भड़ाकर खुला। क्रोध और भय से त्रस्त सिपाही उन पर बरस पड़ा।

"तुम सब पागल हो गयी हो क्या? चुप हो जाओ!"

कीर्ति कभी भी मन्द न होगी
इन दिवसों का यश-आधार,
छापामारों के दस्ते नित
करते शहरों पर अधिकार

पुलिसवाले ने दरवाज़ा ज़ोर से बन्द किया और जल्दी-जल्दी वहाँ से निकल गया।

कुछ ही समय बाद गलियारे में भारी-भारी क़दमों की धमक सुनायी दी। दरवाज़े पर मिस्टर ब्रूक्नेर खड़ा था-लम्बा क़द, पेटी से कसी हुई भारी तोंद, पीला चेहरा, आँखों के नीचे काली उभरी खाल, गरदन पर कालर तक आती हुई मांस की परतें। उसने काँपते हाथ में सिगार पकड़ रखा था।

"Platz nehemen! Ruhe!..*" उसकी तेज आवाज़ सुनायी दी। यह कर्णभेदी ध्वनि मानो नकली पिस्तौल दागकर निकाली गयी।

...दूर बत्तियाँ जैसे चिर आह्वान करें
हम रातों को स्पास्सक पर धावे बोलें
दिन को वोलोचायेव्स्क क़ब्ज़े में लें...

लड़कियाँ बराबर गाती जा रही थीं।

जर्मन सिपाही और पुलिसवाले कोठरी में घुस आये। लड़कों की कोठरी में धक्का-मुक्की शुरू हो गयी। लड़कियाँ एक के बाद एक फर्श पर गिरने लगीं।

अकेली ल्यूबा कोठरी के बीचोंबीच खड़ी रही। उसके छोटे-छोटे हाथ उसकी कमर पर थे और उसकी नफरतभरी आँखें अपने सामने घूर रही थीं। वह अपनी एड़ियाँ पटपटाकर नाचने लगी और सीधे ब्रूक्नेर की ओर बढ़ने लगी।

"शैतान की बच्ची कहीं की!" वह चीख़ पड़ा। उसकी साँस फूल रही थी। अपने चौड़े हाथ से उसने ल्यूबा की बाँह पकड़ी, और उसे मरोड़ते हुए गलियारे में घसीटने लगा।

ल्यूबा ने फुफकार भरकर सिर झुकाया और उसका पीला हाथ कसकर काट

---

* अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो जाओ! चुप रहो!

लिया।

"लानत है!" ब्रूक्नेर गरजा और ल्यूबा के सिर के पर घूँसे मारने लगा। पर वह उसका हाथ छोड़नेवाली नहीं थी।

सिपाहियों ने बड़ी कठिनाई से उसे अलग किया और फिर ब्रूक्नेर की सहायता से, जो हवा में कलाई घुमा रहा था, उसे गलियारे में से घसीटते हुए ले गये।

सिपाही उसे कसकर पकड़े हुए थे और ब्रूक्नेर तथा फेनबोंग उस पर तारोंवाले हण्टर बरसा रहे थे। हण्टर उसकी पीठ के उन घावों पर पड़ रहे थे, जो कुछ-कुछ भरने लगे थे। ल्यूबा ने कसकर अपने होंठ भींच लिये पर मुँह से एक शब्द भी न निकाला। सहसा ऊपर कहीं उसे हवाई जहाजों की भनभनाहट सुनायी दी। उसका दिल जोश से भर गया।

"कुत्ते की औलाद! पीट लो मुझे, मन भरकर पीट लो! ऊपर हमारे साथियों की ललकार सुनायी देने लगी है!" वह चीख़ पड़ी।

एक हवाई जहाज ने गोता लगाया। उसकी दहाड़ कमरे में गूँज गयी। ब्रूक्नेर और फेनबोंग ने अपना काम बन्द कर दिया। किसी ने तुरन्त रोशनी बुझा दी। सिपाहियों ने ल्यूबा को छोड़ दिया।

"अरे बदमाशो! बुजदिलो! तुम्हारी घड़ी आ गयी है, निकम्मों! आहा!".. ल्यूबा चीख़ी। वह करवट तक लेने में असमर्थ हो रही थी और ख़ून से सनी बेंच पर पैर धुन रही थी।

विस्फोट के धमाके से क़ैदखाने की इमारत तक हिल उठी। हवाई जहाज नगर पर बम बरसा रहे थे।

उस दिन 'तरुण गार्ड' दल के सदस्यों के बन्दी जीवन में एक नया मोड़ आया। अब से उन्होंने संगठन की अपनी सदस्यता को छिपाना छोड़ दिया और अपने अत्याचारियों का खुलकर विरोध करने लगे। वे उनसे रुखाई के साथ पेश आते, उनका उपहास करते। वे अपनी कोठरियों में क्रान्तिकारी गीत गाते और नाचते। जब कभी किसी को कोठरी से घसीटते हुए ले जाया जाता, तो वे ज़ोरों का हो हल्का मचाते।

और जर्मन उन पर कल्पनातीत जुल्म ढाये जा रहे थे। मानव विवेक और अन्तःकरण कभी इन भयंकर अत्याचारों की कल्पना तक नहीं कर सकता था।

अध्याय 26

अपने साथियों में ओलेग मोर्चे की गतिविधि को सबसे बेहतर जानता था। जमी हुई उत्तरी दोनेत्स को पार करने की दृष्टि से वह अपने दल को उत्तर की ओर

गुन्दोरोव्स्काया क्षेत्र में ले गया। वह चाहता था कि वोरोनेज-रोस्तोव पर स्थित ग्लुबोकाया स्टेशन तक पहुँच जाये।

सभी अपने परिवारों और साथियों के लिए चिन्तित थे। वे रात भर चलते रहे और परस्पर एक शब्द भी न बोले।

गुन्दोरोव्स्काया पहुँचकर उन्होंने सुबह के समय दोनेत्स निर्बाध पार की। फिर एक पक्की सैनिक सड़क पर चलते हुए दुबोवोई खेतिहर बस्ती की दिशा में जाने लगे। उनकी आँखें स्तेपी में किसी झोपड़ी की खोज में लगी थीं जहाँ वे थोड़ी गर्मी का सुख लेते और पेट भरते।

हवा बन्द थी। सूर्य चढ़ता जा रहा था। धूप में गर्मी बढ़ रही थी। स्तेपी दूर-दूर तक चमचमा रही थी। सड़क पर पड़ी बर्फ की पतली परत पिघल रही थी। सड़क से भाप उठ-उठकर हवा में मिल रही थी और मिट्टी की सोंधी-सोंधी महक तेज होती जा रही थी।

प्रायः उन्हें जर्मन पैदल सेना, तोपखानों, आर्मी सर्विस और सप्लाई यूनिटों के आदमी जहाँ-तहाँ दिखायी पड़ जाते। ये टुकड़ियाँ स्तालिनग्राद के महाघेरे में पड़ने से रहीं और बाद के मुकाबले में बुरी तरह कुचल दी गयीं। ये जर्मन कोई साढ़े पाँच महीने पहले के जर्मनों से बिलकुल भिन्न थे। उस समय वे इन्हीं इलाकों में हजारों लारियों पर शान से बैठे-बैठे घुसे थे। पर, आज के जर्मनों के ओवरकोट चिथड़े-चिथड़े हो गये थे। उन्होंने ठण्ड से बचने के लिए अपने सिर और पैरों में कपड़े लपेट रखे थे। उनके हाथ और बढ़ी हुई दाढ़ीवाले चेहरे इतने काले पड़ गये थे, मानो वे सीधे चिमनी से निकलकर आ रहे हों।

एक जगह नौजवानों को इटालियन सैनिकों का एक जत्था भी मिला। यह जत्था पूर्व से होकर पश्चिम जानेवाली सड़क पर चला जा रहा था। कई इटालियन सैनिक कन्धों पर उल्टी बन्दूकें रखे चले जा रहे थे। वे बन्दूकों को उनकी नलियों के सहारे पकड़े हुए थे। बहुतों के पास तो बन्दूकें भी न थीं। एक हल्का लबादा ओढ़े अफ़सर के सिर पर अर्धफ़ौजी टोपी अटकी हुई थी। इसे उसने बच्चों के पाजामे से सिर पर बाँध रखा था। वह एक गधे पर बिना जीन के बैठा था और उसके बड़े-बड़े बूट ज़मीन को छू रहे थे। दक्षिणी देश के इस निवासी की नाक से टपकनेवाली बूँदें ऊपरी होंठ तक पहुँचते-पहुँचते जम गयी थीं। यह एक ऐसा मजेदार प्रतीकात्मक तमाशा था कि ओलेग और उसके साथी एक-दूसरे की ओर देखकर ठहाका मारकर हँस पड़े।

युद्ध ने बहुत-से नागरिकों को गृहविहीन कर दिया था। वे सड़कों पर चलते दिखायी पड़ जाते थे। अतः पीठ पर सफरी थैले बाँधे इन दो लड़कों और तीन लड़कियों की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया। वे बराबर अपने रास्ते पर बढ़ते

रहे।

उनका मूड अच्छा था। जवानी को खतरे की परवाह नहीं रहती। ये साहसी युवक-युवतियाँ अपनी कल्पना में अभी से मोर्चे की पंक्तियों के उस ओर पहुँच चुके थे।

नीना फेल्ट के जूते पहने थी। उसकी कनटोपी के नीचे से उसके घुँघराले बालों की भारी-भारी लटें उसके गर्म ओवरकोट के कालर पर गिर रही थी। चलने से उसके गालों पर लाली आ गयी थी। ओलेग निरन्तर उसकी ओर देखे जा रहा था और जब दोनों की आँखे चार होती थीं, तो वे मुस्करा देते थे। सेर्गेई और वाल्या तो एक बार बर्फ़ के गोले बना-बनाकर एक-दूसरे पर फेंकने लगे और एक-दूसरे के पीछे भागते हुए इतनी दूर निकल गये कि उनके साथी बहुत पीछे छूट गये। उस दल में ओल्या ही सबसे बड़ी थी। वह गहरे रंग के कपड़ों में थी और चुपचाप चल रही थी। उन दो जोड़ों के साथ वह एक सरलहृदया माँ जैसा व्यवहार कर रही थी।

वे लगभग चौबीस घण्टे तक दुबोवोई की खेतिहर बस्ती में रहे। उन्होंने मोर्चे की गतिविधि के सम्बन्ध में बड़ी सतर्कता से पूछ-ताछ की। युद्ध में अपंग हुआ एक भूतपूर्व सैनिक, जिसका एक बाजू कट गया था-इसी बस्ती में बस गया था। उसने उन्हें यह सलाह दी कि वे और भी उत्तर में दृयाच्किनों गाँव की ओर चले जायें।

इस गाँव तथा पास-पड़ोस की खेतिहर बस्तियों में रहकर उन्होंने कुछ दिन काटे। इस अवधि में वे जर्मनों की रसद-टुकड़ियों और तहखानों में छिपकर रहनेवाले ग्रामीणों के बीच घूमे-फिरे। वे मोर्चे के बिलकुल निकट पहुँच चुके थे। तोपों की गरज बराबर उनके कानों में पड़ रही थी। रात में वे तोपों के मुँह से निकलती आग भी देख सकते थे। जर्मन अड्डों पर बराबर बमबारी हो रही थी। स्पष्ट था कि सोवियत सेना के दबाव से जर्मन मोर्चा टूट रहा है, क्योंकि इस समय इस इलाके में जहाँ कहीं भी जर्मन फ़ौज की टुकड़ियाँ नज़र आतीं, सभी का मुँह पश्चिम की ओर ही होता।

हर सैनिक ओलेग और उसके साथियों को तिरछी नज़रों से देखता था। गाँववाले भी, बिना यह जाने-समझे कि वे कैसे लोग हैं, उन्हें अपने घरों में ठहराने से डरते थे। इस क्षेत्र में घूमते रहता खतरे से खाली न था। फिर पाँच लोगों के दल के लिए मोर्चा पार करने का तो सवाल ही नहीं उठता था। एक बस्ती में एक किसान औरत ने उन्हें शकभरी नज़रों से घूरा और जब रात हुई तो गर्म कपड़े पहनकर बाहर निकल गयी। ओलेग जग रहा था। उसने अपने साथियों को जगाया और सब के सब बस्ती से निकलकर खुली स्तेपी की ओर चल दिये। नींद के मारे उनकी पलकें भारी हो रही थीं, किन्तु कहीं लेटने का कोई ठिकाना न था। इसके अलावा हहराती हवा का मुकाबला करना भी उनके लिए बड़ा कठिन लग रहा था। पिछले रोज से ही तेज हवा

चलने लगी थी। उन्होंने अपने को इतना निस्सहाय, इतना परित्यक्त कभी अनुभव न किया था। अन्ततः ओल्या बोल उठी, जो उम्र में सबसे बड़ी थी।

"मैं जो कुछ कहने जा रही हूँ, उसका तुम लोग बुरा न मानना," वह बोली। उसने नज़र हटा ली और हवा से बचने के लिए गाल को आस्तीन से ढाँप ली। "इतने बड़े दल के लिए मोर्चा पार करना असम्भव है। और एक लड़की या औरत के लिए तो यह बिलकुल ही नामुमकिन है..." उसने यह सोचकर ओलेग और सेर्गेई की ओर देखा कि वे कुछ आपत्ति करेंगे, किन्तु वे कुछ न बोले। वह ठीक ही कह रही थी। "हम लड़कियों को चाहिए कि लड़कों के काम में बाधा न डालें," उसने दृढ़ता से कहा। नीना और वाल्या समझ गयीं कि वह उन्हीं के बारे में कह रही है। नीना आपत्ति कर सकती है। पर याद रखना, नीना तुम्हारी माँ ने तुम्हें मेरे सुपुर्द किया है। हम फोकिनो गाँव में चली जायेंगी। वहाँ मेरी एक सहपाठिनी रहती है। वह हमें ठहरा लेगी, और हम वहाँ हमारे सैनिकों का इन्तज़ार कर सकती हैं।"

यह पहला मौक़ा था, जब ओलेग कुछ न कह सका। सेर्गेई और वाल्या भी चुप रहे।

"मैं क्यों आपत्ति करूँ? नहीं, मैं आपत्ति नहीं करूँगी," नीना ने कहा और उसकी आँखों में आँसू छलछला आये।

पाँचों बिना कुछ कहे-सुने वहाँ काफ़ी देर तक खड़े रहे। वे उदास थे और आख़िरी क़दम उठाने में झिझक रहे थे।

"ओल्या ठीक कहती है," तब ओलेग बोला। "आख़िर जब लड़कियों के लिए आसान रास्ता है, तो वे जोखिम क्यों उठाये। वास्तव में इससे हमारा काम भी आसान हो जायेगा। त-तो तुम अपने रास्ते ज...जाओ," सहसा हकलाते हुए वह बोला। उसने ओल्या को गले से लगा लिया।

फिर वह नीना के पास गया और बाक़ी सबने मुँह फेर लिये। नीना उसकी छाती से चिपट गयी और उसके चेहरे पर चुम्बनों की वर्षा करने लगी। ओलेग ने भी उसे गले लगाया और उसके होंठ चूम लिये।

"तु-तुम्हें याद है, मैंने इस बात के लिए तुम्हें कितना तंग किया था कि तुम मुझे अपना गाल ही चूमने दो। याद है मैंने कहा था-'सिर्फ़ गाल पर, सिर्फ़ गाल पर?' तो देखो, मेरी इच्छा पूरी होने में कितना समय लग गया," वह फुसफुसाया और उसके चेहरे पर प्रसन्नता का बालसुलभ भाव छा गया।

"मुझे याद है। मुझे सब याद है, जितना तुम समझ रहे हो, उससे भी ज़्यादा मुझे याद है... मैं हमेशा तुम्हें याद रखूंगी... मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूँगी," वह फुसफुसायी।

ओलेग ने फिर उसे चूमा और उससे दूर हट गया।

कुछ क़दम चलने पर नीना और ओल्या ने लड़कों की ओर देखकर हाथ हिलाये। उसके बाद वे आँखों से ओझल हो गयीं, और उनकी आवाज़ तक आनी बन्द हो गयी। हवा हिम की पतली-सी पर्त पर बर्फ़ के बगूले उड़ा रही थी।

"और अब तुम दोनों क्या करोगे?" वाल्या और सेर्गेई की ओर मुड़ते हुए ओलेग ने पूछा।

"हम साथ-साथ मोर्चा पार करने की कोशिश करेंगे," अपराधी की तरह सेर्गेई बोला। "हम मोर्चे के समानान्तर चलते रहेंगे और हो सकता है कि हम किसी जगह उसे पार कर लें! और तुम?"

"मैं तो यहीं कहीं पार करने की कोशिश करूँगा। यहाँ कम-से-कम मुझे पास-पड़ोस की जानकारी तो है," ओलेग ने जवाब दिया।

एक बार फिर अवसादपूर्ण सन्नाटा छा गया।

"अरे प्यारे दोस्त, मुँह न लटकाओ। इसमें शर्माने की कोई बात नहीं... त-तो?" ओलेग बोला। सेर्गेई के मन में क्या बीत रही थी, यह वह अच्छी तरह जानता था।

वाल्या ने ओलेग को सीने से लगाया। सेर्गेई भावुकता का प्रदर्शन करना नहीं चाहता था। उसने ओलेग से हाथ मिलाया, उसका कन्धा हल्के-से दबाया और इधर-उधर देखे बिना, आगे बढ़ गया। वाल्या उसके साथ हो ली।

यह सात जनवरी की बात है।

लेकिन वे भी साथ-साथ मोर्चे को पार नहीं कर सके। वे गाँव-गाँव चलते रहे और आख़िर कामेंस्क पहुँच गये। वे लोगों को यही बताते कि वे भाई-बहन हैं और मध्य दोन के पासवाले युद्ध-क्षेत्र में अपने परिवार से बिछुड़ गये हैं। लोगों को उनके लिए अफ़सोस होता और वे मिट्टी के ठण्डे फर्श पर बिस्तरा बिछा देते। सुबह उठकर वे फिर चल पड़ते। वाल्या किसी भी जगह मोर्चा पार कर लेना चाहती थी, किन्तु सेर्गेई यथार्थवादी था और मोर्चा पार करने के बिलकुल ख़िलाफ़ था।

आख़िर लड़की ने समझ लिया कि जब तक वह सेर्गेई के साथ रहेगी तब तक वह दुश्मनों की पंक्ति पार न करेगा-बेशक अकेला सेर्गेई तो कहीं भी मोर्चा पार कर सकता था, पर शायद वह उसे खतरे में नहीं डालना चाहता।

"मुझे इस गाँव में सिर छिपाने की जगह आसानी से मिल सकती है, मैं यहाँ बैठे-बैठे हमारी सेना के आगमन का इन्तज़ार कर सकती हूँ" आख़िर वह उससे बोली।

पर वह कुछ भी सुनने को तैयार न था।

फिर भी उसे लड़की की बात माननी ही पड़ी। अभी तक दोनों ने मिलकर जितने भी काम किये थे, सभी में वह अगुआ रहा था। और वह उसकी मातहती में रही थी।

किन्तु निजी मामलों में उसी की चलती थी। सेर्गेई ने कभी इस बात पर गौर न किया था कि वह उसके कितने अधिक कहने में था! इस समय वाल्या ने उसे समझाया कि वह लाल सेना की किसी टुकड़ी में शामिल हो जाये, उन्हें बताये कि क्रास्नोदोन में 'तरुण गार्ड' के सदस्यों पर कितने जुल्म हो रहे हैं, और टुकड़ी के साथ मिलकर साथियों को बचाये और स्वयं उसकी भी सहायता करे।

"मैं कहीं पड़ोस में ही तुम्हारा इन्तज़ार करूँगी," वह बोली।

दिन में वे दोनों बहुत थक गये। अतः वाल्या रात में गहरी नींद सोयी। पर जब वाल्या भोर से कुछ पहले ही जगी, तो सेर्गेई जा चुका था।

इस प्रकार वाल्या अकेली रह गयी।

येलेना निकोलायेव्ना 11 जनवरी की वह सर्द रात ज़िन्दगी भर न भूली। सड़क की ओर खुलनेवाली खिड़की पर किसी ने धीरे-से दस्तक दी। उस समय सारा परिवार सो रहा था। येलेना निकोलायेव्ना ने तत्काल समझ लिया कि उसका बेटा घर आया है।

ओलेग कुर्सी पर धम्म-से बैठ गया। उसके गाल पाले से सुन्न हो चुके थे और वह इतना थक गया कि अपनी टोपी तक न उतार सका। तब तक सभी जग चुके थे। नानी ने मोमबत्ती जलायी और मेज के नीचे रख दी, ताकि सड़क से उसकी रोशनी न दिखायी दे। प्रति दिन कई बार उसके यहाँ पुलिसवाले चक्कर लगाया करते थे। ओलेग की कन-टोपी की किनारियों पर पाला पड़ा हुआ था। उसके चेहरे पर रोशनी पड़ रही थी। उसके गाल की हड्डियों पर काले दाग दिखायी दे रहे थे। वह सूखकर काँटा हो गया था।

उसने मोर्चा पार कर लेने के कई असफल प्रयास किये थे, किन्तु वह सैनिक टुकड़ियों और दस्तों के व्यूह से परिचित न था। इसके अलावा, वह इतना बड़ा था और उसके कपड़े भी इतने बड़े और गहरे रंग के थे कि बिना किसी की निगाह पड़े उसका बर्फ पर रेंगकर निकल जाना असम्भव था। नगर में रह गये अपने साथियों की चिन्ता उसे खाये जा रही थी। अन्ततः उसने अपने आपको विश्वास दिला ही दिया कि अब काफ़ी समय बीत चुका है, और वापस नगर को लौटने में कोई खतरा न होगा, इस समय किसी का भी ध्यान उस पर न जायेगा।

"जेम्नुखोव की कोई खबर है?" उसने पूछा।

"वही, पहले जैसा..." माँ ने उसकी आँखें बचाते हुए जवाब दिया।

माँ ने उसका कोट व कनटोपी उतारने में उसकी सहायता की। घर में जलावन तक न था कि वह उसके लिए थोड़ी चाय ही बना देती। परिवारवालों को डर था कि कहीं ओलेग को गिरफ़्तार न किया जाये।

"ऊल्या कैसी है?" उसने पूछा।

चुप्पी।

"ऊल्या गिरफ़्तार हो गयी," उसकी माँ ने धीमी आवाज़ में कहा।

"और ल्यूबा?"

"ल्यूबा भी..."

उसके चेहरे का भाव तुरन्त बदल गया। वह कुछ देर तक चुप बैठा रहा, फिर बोला :

"क्रास्नोदोन बस्ती का क्या हाल है?"

इस यंत्रणा को और लम्बा नही किया जा सकता था।

"कौन गिरफ़्तार नहीं हुआ, यह बताना अधिक आसान होगा," मामा कोल्या बोला।

उसने केन्द्रीय वर्कशाप में ल्यूतिकोव और बराकोव के नेतृत्व में मज़दूरों के एक बड़े दल की गिरफ़्तारी की खबर सुनायी। क्रास्नोदोन में किसी को भी इस बात में सन्देह न रह गया कि इन लोगों को विशेष काम से जर्मनों के बीच छोड़ा गया था।

ओलेग का सिर लटक गया, उसने आगे कोई प्रश्न न किया।

परिस्थिति पर विचार करके ओलेग को तुरन्त मरीना के देहाती रिश्तेदार के पास भेज देने का निर्णय कर लिया गया। मामा कोल्या उसके साथ-साथ जाने को तैयार हो गया।

वे सुनसान स्तेपी से होते हुए रोवेन्की की तरफ़ चल रहे थे। तारे बर्फ़ पर हल्का नीला प्रकाश बिखेर रहे थे और वे उस विशाल भूप्रदेश पर दूर तक देख सकते थे।

कई दिनों तक, प्रायः बिना खाये-पिये और आराम किये, ओलेग मारा-मारा फिरता रहा था। उसे आराम करना जैसे नसीब ही न था। इसके अलावा वह घर पर दिल हिला देनेवाली खबरें भी सुन चुका था। यह सब होते हुए भी, वह अपने ऊपर नियंत्रण रखे रहा। रास्ते में उसने मामा कोल्या से 'तरुण गार्ड' दल के पतन और ल्यूतिकोव तथा बराकोव की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में सभी विवरण मालूम किये। उसने अपनी आपबीती भी मामा कोल्या को सुनायी।

उन्हें पता ही नहीं चला कि यहाँ सड़क हमवार नहीं थी, ऊँची होती जा रही थी। वे ढलान के ऊपरी सिरे पर पहुँच चुके थे। कोई पचास गज आगे एक बड़े-से गाँव के धूमिल मकान दिखायी दे रहे थे।

"हम सीधे गाँव की ओर बढ़ रहे हैं। हमें कुछ घूमकर चलना चाहिए," मामा कोल्या ने कहा।

वे सड़क से मुड़ गये और बायीं ओर से गाँव का चक्कर लगाकर चलने लगे।

वे सबसे पास के मकानों से कोई पचास गज की दूरी पर चले रहे थे। वैसे बर्फ गहरी नहीं थी, केवल कहीं-कहीं बर्फ़ के ढेर लगे थे।

वे गाँव को जानेवाली एक सड़क पार ही करनेवाले थे कि सबसे पास के मकान से कुछ भूरी-भूरी आकृतियाँ उनका रास्ता काटती हुई, दौड़ पड़ीं। वे दौड़ती जातीं और फटी आवाज़ में जर्मन में चिल्लाती जातीं।

मामा कोल्या और ओलेग भाग पड़े।

थका-हारा ओलेग तेजी से दौड़ नहीं पा रहा था। उसका पीछा करनेवालों की आहट निकट आती जा रही थी। उसने अपनी सारी शक्ति बटोरी और भागा, किन्तु फिसलकर गिर पड़ा। कई आदमी उस पर टूट पड़े और उसके हाथ मरोड़ने लगे। दो आदमी मामा कोल्या के पीछ भागे और रिवाल्वर से गोलियाँ भी चलायीं। पर कुछ देर बात वे खाली हाथ लौट आये।

ओलेग को एक बड़ी-से मकान में ले जाया गया, जहाँ कभी शायद ग्राम सोवियत का कार्यालय हुआ करता था। अब वहाँ गाँव के मुखिये का दफ़्तर था। फर्श पर पुआल डाले सशस्त्र पुलिस के कुछेक सिपाही पड़े सो रहे थे। अब ओलेग को पता चला कि वह और निकोलाई निकोलायेविच चलते-चलते सीधे जर्मन पुलिस थाने के पास आ गये थे। वहाँ मेज पर, चमड़े के गहरे रंग के एक केस में फील्ड-टेलीफोन रखा था।

एक कारपोरल ने लालटेन की बत्ती बढ़ायी और गुस्से से चिल्ला-चिल्लाकर ओलेग की तलाशी लेने लगा। सन्देह की कोई भी चीज़ न पाकर उसने ओलेग की जैकट उतारी और उसे जगह-जगह टटोलने लगा। उसकी बड़ी-बड़ी चम्मच के आकार जैसी उँगलियाँ अपना काम बड़ी ही दक्षता और कायदे से कर रही थीं। उन्हें ओलेग का कोमसोमोल कार्ड मिल गया और इसके साथ ही ओलेग ने समझ लिया कि अब उसकी घड़ी भी आ पहुँची।

कारपोरल ने हाथ से उसके कोमसोमोल कार्ड और सदस्यता के अस्थायी कार्डों को ढँका और टेलीफोन पर फटे लहजे में कुछ कहा, फिर चोंगा रखा और ओलेग को पकड़कर लानेवाले सैनिक को कुछ आज्ञा-सी दी।

दूसरे दिन ओलेग को एक स्लेज में बिठाकर रोवेन्की ले जाया गया। उस पर एक कारपोरल और एक सिपाही पहरा दे रहे थे। रात को थाने में पहुँचकर ओलेग को ड्यूटीवाले सिपाही के हवाले कर दिया गया।

ओलेग कोठरी के अभेद्य अन्धकार में घुटनों पर बाँहें डाले, अकेला बैठा था। यदि उस समय कोई आदमी उसका चेहरा देख पाता, तो उस पर उसे शान्ति तथा दृढ़ता का भाव मिलता। वह नीना, अपनी माँ या अपनी मूर्खतापूर्ण गिरफ़्तारी की बात

नहीं सोच रहा था। गाँव के मुखिये के दफ़्तर में और स्लेजगाड़ी पर यात्रा करते समय वह इन बातों के बारे में सोच चुका था। आगे क्या होनेवाला था इस पर भी वह सोच-विचार नहीं कर रहा था-वह इसे अच्छी तरह जानता था। वह शान्त और दृढ़ था, क्योंकि अब उसकी छोटी-सी ज़िन्दगी के दिन पूरे हो रहे थे।

"मैं सोलह का ही सही, पर इसमें मेरा क्या दोष कि मेरी ज़िन्दगी रास्ता इतना छोटा निकला... भय काहे का? मौत का? जुल्म का? मैं उनका सामना कर सकता हूँ... बेशक मैं चाहता कि लोगों के दिलों में मेरी याद बनी रहे। पर मान लो मैं दुनिया की नज़रों से दूर अँधेरे में मारा जाऊँ-इस समय लाखों लोग ऐसे ही मर रहे हैं; ऐसे लोग, जिनमें शक्ति है, जीवन के लिए प्रेम है। तो मेरा क्या दोष है? मैंने कभी झूठ नहीं बोला, आसान रास्ता नहीं चुना। हाँ, कभी-कभी मैंने ठण्डे दिमाग से काम नहीं लिया, दृढ़ता में भी ढील दिखायी, लेकिन यह सब अपने हृदय की दयालुता के कारण। लेकिन सोलह वर्ष की उम्र में यदि मैंने ऐसा किया है, तो इसे अपराध नहीं कहा जा सकता... जिस सुख का मैं अधिकारी था, वह भी मुझे नसीब न हुआ। फिर भी मैं ख़ुश हूँ! ख़ुश हूँ, इसलिए कि मैंने किसी के आगे घुटने नहीं टेके, गिड़गिड़ाया नहीं, उल्टे मैंने मोर्चा ही लिया है। माँ मुझे हमेशा 'उकाब मेरे' कहकर दुलारा करती थी। मैं उसके और अपने साथियों का विश्वासपात्र रहूँगा। मेरी मृत्यु उतनी ही पवित्र हो, जितना मेरा जीवन था-मुझे अपने आपसे यह कहते शर्म नहीं आती। ओलेग, तुम इज़्ज़त के साथ मरोगे, इज़्ज़त के साथ..."

उसके चेहरे की रेखाएँ समतल हो गयीं। वह ठण्डे और लसलसे फर्श पर लेट गया और सिरहाने में टोपी रखकर तुरन्त सो गया।

जब वह जगा, तो उसे लगा कि कोई उसके पास खड़ा है। सवेरा हो चुका था।

गठीले बदन का एक बूढ़ा उसके सामने खड़ा था। चेहरे पर झांइयाँ, बड़ी बैंगनी-सी नाक, शरीर पर कज़्ज़ाकी ओवरकोट, बड़े और भूरे बालोंवाले सिर पर पोलिश टोपी अटकी हुई थी। वह अपनी दुखती पगली आँखों से ओलेग को घूर रहा था। कोठरी का दरवाज़ा उसके पीछे छिप-सा गया।

ओलेग फर्श पर बैठ गया और साश्चर्य उसकी ओर देखने लगा।

"मैं सोच रहा था-यह कोशेवोई भी देखने में कैसा होगा? तो ऐसा है वह-संपोला! बदमाश! मुझे अफ़सोस है कि मैं नहीं बल्कि गेस्टापो तुझे सीख देगा-हमारे साथ रहता, तो आराम से कटती। मैं केवल खास-खास लोगों को ही पीटता हूँ। तो तू ऐसा है देखने में! तू तो पुश्किन के दुब्रोव्स्की की तरह मशहूर है। बेशक तूने पुश्किन को तो पढ़ा ही होगा। अरे, संपोले! अफ़सोस है कि तू मेरे पंजे में नही फँसा!" बूढ़ा उसके ऊपर झुका और एक लसलसी आँख नचाते तथा वोद्का की बू छोड़ते हुए बड़े

रहस्यपूर्ण ढंग से बुदबुदाया : "तुझे आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं इतने सबेरे क्यों आ गया! आश्चर्य कर रहा है न?" उसने आँख मारी, "आज मैं एक जत्था वहाँ, ऊपर, रवाना कर रहा हूँ!" उसने अपनी एक सूजी हुई उँगली आकाश की ओर उठायी। "मैं अपने साथ एक नाई लाया हूँ, उनकी हजामत बनाने के लिए, क्योंकि मैं हमेशा ऐसा लोगों की हजामत बनवाता हूँ," वह फुसफुसाया। फिर वह सीधा खड़ा हुआ, कांखा और अंगूठा उठाकर बोला, "सभ्य ढंग से... लेकिन तू गेस्टापो के हाथ में पड़ गया है, मैं तुझसे ईर्ष्या नहीं करता। Au revoir!' उसने अपनी सूजी उँगली से अपनी टोपी की नोक छुयी और बाहर निकल गया। दरवाज़ा फटाक से बन्द हो गया।

जब ओलेग को एक बड़ी कोठरी में तब्दील किया गया, जो बिलकुल अपरिचित लोगों से खचाखच भरी थी, तब कहीं उसे पता चला कि वह बूढ़ा रोवेन्की पुलिस का चीफ ओर्लोव था, एक बेरहम जल्लाद और कसाई, जो पहले देनीकिन के श्वेत गार्डों का एक अफ़सर हुआ करता था।

दो-तीन घण्टों के बाद उसे पूछ-ताछ के लिए ले जाया गया। गेस्टापो के अधिकारी ही उससे पूछ-ताछ कर रहे थे। उनका दुभाषिया था एक जर्मन कारपोरल।

उस कमरे में कई जर्मन अफ़सर मौजूद थे। सभी उसे बड़े कौतूहल और आश्चर्य से देख रहे थे। बहुत-से मामलों में ओलेग का दृष्टिकोण अभी तक बाल-सुलभ था। इसीलिए वह इस बात की कल्पना तक नहीं कर सकता था कि 'तरुण गार्ड' की प्रसिद्धि कहाँ तक फैल चुकी है। वह स्वयं भी सब की नज़रों में पौराणिक नायक की भाँति बन गया था इसके दो कारण थे-एक तो स्तखोविच का विश्वासघात और दूसरे यह बात कि जर्मन इतने समय तक उसे पकड़ने में असमर्थ रहे थे। एक लचीला जर्मन उससे सवाल कर रहा था। लगता था उसके बदन में एक भी हड्डी नहीं उसके चेहरे पर गहरे नीले रंग के भयानक घेरे-से पड़े थे। उसे देखकर आदमी को लगता था, मानो किसी दुःस्वप्न में उसे देख रहा हो।

ओलेग से कहा गया कि वह 'तरुण गार्ड' दल के कार्यों के बारे में बताये और उसके सदस्यों और समर्थकों के नाम गिनाये। इस पर उसने यह जवाब दिया :

"मैं ही 'तरुण गार्ड' का नेता रहा हूँ और मेरे आदेशों से उन लोगों ने जो कुछ किया है, उसके लिए अकेला मैं ही जिम्मेदार हूँ। अगर मुझ पर किसी सार्वजनिक अदालत में मुकद्दमा चलाया गया होता, तो मैंने 'तरुण गार्ड' के कार्यों के विवरण दिये होते। किन्तु मैं उन लोगों के सामने अपने दल के कार्यों की चर्चा करना बिलकुल बेकार समझता हूँ, जो निरपराधियों तक को मौत के घाट उतारते हैं," वह चुप हो गया,

---

* ख़ुदा हाफ़िज! (फ़्रासीसी)

फिर अफ़सरों पर एक निगाह डालकर बोला : "और फिर तुम सब तो मुर्दों की तरह हो, बिलकुल मुर्दों की तरह..."

उस लाशनुमा जर्मन ने दूसरा सवाल किया।

"मुझे जो भी कहना था, वह तुम लोग सुन ही चुके हो," ओलेग ने इस पर कहा और पलकें नीची कर लीं।

इसके बाद ओलेग को गेस्टापो के क़ैदखाने में डाला गया। उस पर ऐसे-ऐसे भयानक ज़ुल्म हुए, जो न सिर्फ़ आदमी की बरदाश्त के बाहर ही थे, बल्कि जिनके बारे में दिल रखनेवाला कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं लिख सकता।

ओलेग यह भयानक अत्याचार महीने के अन्त तक सहता रहा। उसे मौत के हवाले इसलिए नहीं किया गया, क्योंकि इलाके के फेल्डकमाण्डाण्टुर मेजर-जनरल क्लेर का इन्तज़ार किया जा रहा था। मेजर-जनरल दल के लीडरों से स्वयं पूछ-ताछ करने के बाद ही उनकी क़िस्मत का फैसला करना चाहता था।

ओलेग को यह मालूम न था कि फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव को भी फेल्डकमाण्डाण्टुर द्वारा पूछताछ के लिए रोवेन्की गेस्टापो में लाया गया। बेशक दुश्मन यह पता न चला सका कि ल्यूतिकोव क्रास्नोदोन ख़ुफ़िया कम्युनिस्ट संगठन का भी लीडर है, किन्तु उन्होंने यह समझ लिया और अपनी आँखों से देख भी लिया कि सभी क़ैदियों में ल्यूतिकोव ही सबसे महत्वपूर्ण आदमी था।

अध्याय 27

त्रिकोण के कोनों की तरह तीन ओर से मशीन-गनें पहाड़ियों के बीच स्थित घाटी को छलनी कर रही थीं। यह घाटी दो कूबड़ोंवाले ऊँट की काठी जैसी दिखायी पड़ रही थी। गोलियाँ लसलसी बर्फ और कीच में धँसती हुई "ए यू... एयू" जैसी आवाज़ करती-सी लग रही थीं। किन्तु सेर्गेई घाटी को पार कर चुका था और किसी के मज़बूत हाथ उसे खन्दक में घसीट चुके थे।

"तुम क्या करने जा रहे हो?" गोल आँखोंवाले एक नाटे-से सार्जेण्ट ने शुद्ध कुर्स्क उच्चारण में कहा।

"तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम रूसी लड़के हो और इस तरह पेश आ रहे हो... वे तुम्हें धमकियाँ देते रहे हैं, या फिर कुछ देने का वादा किया था और उन्होंने?"

"मैं सोवियत आदमी हूँ," सेर्गेई बोला, "मेरी जैकेट में कागजात सिले हुए हैं। मुझे कमाण्डर अफ़सर के पास ले चलो। मैं एक ज़रूरी खबर सुनाना चाहता हूँ!"

डिवीजनल चीफ आफ स्टाफ के साथ सेर्गेई एक छोटे-से मकान में डिवीजनल

कमाण्डर के सामने खड़ा था। रेलवे लाइन के निकट स्थित इस बस्ती में अकेला यही मकान बमों से अछूता बचा हुआ था। एक समय था, जब यह बस्ती बबूल के पेड़ों की छाया में रहती थी, किन्तु अब बमों और गोलों ने उन्हें धराशायी कर दिया। यह डिवीजनल हेडक्वार्टर था, इधर से टुकड़ियाँ नहीं गुजरती थीं और मोटर यातायात रोक दिया गया था। पहाड़ियों के पीछे हो रहे युद्ध की निरन्तर गोलाबारी को छोड़कर, इस बस्ती और मकान के भीतर प्रायः शान्ति थी।

"मैं केवल उसके कागजात से ही नहीं, इसकी बातों से भी अपनी धारणा बना रहा हूँ, यह लड़का तो बहुत कुछ जानता है-इस क्षेत्र का चप्पा-चप्पा, भारी तोपों की स्थिति, और 27, 28, 17 नम्बर के चौकोर क्षेत्रों में रखी हुई तोपों तक..." चीफ आफ स्टाफ बोला और कुछ नम्बर और गिना डाले। इस लड़के से मिली बहुत-सी सूचनाएँ हमारे ख़ुफ़िया विभाग को प्राप्त तथ्यों से मेल खाती है। कुछ आँकड़ों का तो उसने स्पष्टीकरण किया है। और हाँ, दुश्मनों ने नदी के तटों पर टैंकमार सीधी ढाल बना ली है। याद है?" चीफ बोला। वह युवा अफ़सर था, बाल घुँघराले और कन्धों पर तीन पट्टियोंवाला बिल्ला लगा था। वह बार-बार भौंहें सिकोड़कर मुँह के एक कोने से हवा खींच रहा था। उसका एक दाँत दर्द कर रहा था।

डिवीजनल कमाण्डर ने सेर्गेई के कोमसोमोल कार्ड तथा भद्दे ढंग से हस्त-लिखित दस्तावेज की जाँच की, जिसमें 'तरुण गार्ड' के कमाण्डर तुर्केनिच और कमीसार कशूक के हस्ताक्षरों सहित एक सादी मुहर लगी थी। कागज इस बात का प्रमाण-पत्र था कि सेर्गेई त्युलेनिन क्रास्नोदोन नगर में कार्यरत 'तरुण गार्ड' ख़ुफ़िया संगठन के हेडक्वार्टर का एक सदस्य है। डिवीजनल कमाण्डर ने ये दोनों चीज़ें चीफ आफ स्टाफ को नहीं, बल्कि ख़ुद सेर्गेई को लौटा दीं और उसे सिर से पैर तक बड़ी दिलचस्पी के साथ देखने लगा।

"हूँ," डिवीजनल कमाण्डर बोला।

चीफ आफ स्टाफ का चेहरा दर्द से विकृत हो उठा।

"वह आपको एक महत्वपूर्ण खबर सुनाना चाहता है," वह बोला।

सेर्गेई ने उन्हें 'तरुण गार्ड' दल के बारे में बताया और प्रस्ताव रखा कि क़ैदियों को बचाने के लिए डिवीजन तुरन्त आगे बढ़े।

डिवीजन को क्रास्नोदोन तक बढ़ाने की इस सामरिक योजना को सुनकर चीफ आफ स्टाफ मुस्कराया। पर तुरन्त कराहकर एक हाथ अपने गाल पर रख लिया। किन्तु डिवीजनल कमाण्डर जरा भी न मुस्कराया, क्योंकि वह डिवीजन को क्रास्नोदोन तक बढ़ाने के प्रस्ताव को महज हवाई नहीं समझ रहा था।

"तुम कामेंस्क का रास्ता जानते हो?" उसने पूछा।

"जानता हूँ। किन्तु इस ओर से नहीं, दूसरी ओर से। मैं उधर से ही होकर यहाँ तक आया हूँ..."

"फेदोरेंको!" कमाण्डर इतनी तेज आवाज़ में चीख़ा कि बाहर कहीं बरतन झनझना उठे।

उन तीनों के अलावा कमरे में और कोई न था, फिर भी सहसा, एड़ियाँ चटकाता हुआ फेदोरेंको, जैसे सीधे आसमान से उतरकर कमाण्डर के सामने खड़ा हो गया।

"जो हुक्म!" वह बोला।

"इस लड़के को बूट दो, फिर कुछ खाना, और किसी गर्म जगह में तब तक सोने दो, जब तक मैं उसे न बुलाऊँ!"

"बूट, खाना, सोना, जब तक आप न बुलायें।"

"किसी गर्म जगह में..." चेतावनी स्वरूप उँगली दिखाते हुए कमाण्डर ने हुक्म दिया। "हम्माम तैयार है?"

"जल्दी तैयार हो जायेगा, कामरेड जनरल!"

"तो फिर जाओ!"

सार्जेट फेदोरेंको ने सेर्गेई के कन्धे में दोस्ताना ढंग से हाथ डाला और दोनों घर से बाहर निकले।

"कमाण्डर-इन-चीफ आ रहे हैं," मुस्कराते हुए कमाण्डर बोला।

"सच!" स्टाफ चीफ ख़ुश हो उठा और क्षण भर के लिए दाँत का दर्द भूल गया।

"तब हमें तहखाने में रहना पड़ेगा। चूल्हे में आग तेज करने को कहो। वरना कोलोबोक* तुम्हें उल्टा टाँग देगा," हँसते हुए डिवीजनल कमाण्डर बोला।

इस बीच कमाण्डर-इन-चीफ सो रहा था, डिवीजनल कमाण्डर ने उसे सैनिकों द्वारा दिये गये उपनाम 'कोलोबोक' से सम्बोधित किया था। कमाण्डर-इन-चीफ अपनी कमान-चौकी पर था, जो किसी मकान या बस्ती में न होकर पेड़ों के एक झुरमुट में किसी भूतपूर्व जर्मन तहखाने में बना ली गयी थी। यद्यपि सेना बहुत तेजी से आगे बढ़ रही थी, फिर भी कमाण्डर-इन-चीफ अपने इसी नियम को निभाये जा रहा था कि कमान-चौकी कभी बस्ती में न हो। वह हर नयी जगह कमान-चौकी उन्हीं किलाबन्दियों में बनाता था, जिन्हें छोड़-छाड़कर जर्मन भाग जाते थे। और यदि ऐसी सारी किलाबान्दियाँ नष्ट हो चुकी होतीं, तो वह अपने और अपने कर्मचारियों के लिए नयी खन्दकें खुदवाता था, उसी तरह जिस तरह लड़ाई के शुरू के दिनों में किया करता

---

* कोलोबोक-छोटा गोल-मटोल गुलगुला। एक रूसी लोक-कथा के अनुसार कोलोबोक तरह-तरह के हिंसकों को चकमा देता हुआ, पहाड़ों और मैदानों को पार करता चला जाता है।-**सं.**

था। वह इस सिद्धान्त पर बड़ी दृढ़ता से अमल करता था, क्योंकि वह जानता था कि लड़ाई के आरम्भिक दिनों में उसके बहुत-से प्रमुख सैनिक साथी इसीलिए हवाई हमलों में मारे गये थे कि उन्होंने अपने लिए खन्दकें ख़ुदवाना बेकार समझा था। यह वही डिवीजन थी, जिसे ठीक छः महीने पहले इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेंको के छापामार दस्ते के साथ मिलकर कार्रवाइयाँ करनी थीं। और कमाण्डर-इन-चीफ ने छः महीने पूर्व, डिवीजनल कमाण्डर के नाते, क्रास्नोदोन जिला पार्टी समिति के दफ़्तर में प्रोत्सेंको के साथ इन सारी बातों को तय किया था। इसके बाद उस जनरल ने पहले वोरोशीलोवग्राद की रक्षा करते हुए, फिर कामेंस्क के आस-पास और अन्ततः जुलाई और अगस्त 1942 में हुई घमासान लड़ाइयों में नाम कमाया था।

कमाण्डर-इन-चीफ का एक सीधा-सादा और किसानी कुल-नाम था, और उसके बाप-दादा से चला आ रहा था। उपर्युक्त युद्धों के बाद उसकी ख्याति उत्तरी दोनेत्स और मध्य दोन के लोगों के बीच बहुत फैल गयी थी। और अब, दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे पर हुई दो महीनों की लड़ाइयों के बाद, स्तालिनग्राद के महान युद्ध में नाम कमानेवाले अन्य सोवियत सेनानायकों की तरह उसे राष्ट्रव्यापी ख्याति मिल गयी। 'कोलोबोक' उसका नया उपनाम था, किन्तु वह स्वयं इस नाम से बिलकुल अनभिज्ञ था।

कुछ अर्थों में यह नाम उसके अनुरूप भी था। नाटा-सा क़द, चौड़े कन्धे, चौड़ी छाती और गोल, मजबूत सरल रूसी चेहरा। उसकी चाल-ढाल में ज़रूर भारीपन नज़र आता था।, किन्तु उसमें फुर्ती कूट-कूटकर भरी थी। उसकी छोटी-छोटी आँखें ख़ुशी से छलकती रहती थीं। किन्तु 'कोलोबोक' नाम उसे उसकी सूरत-शक्ल के कारण नहीं दिया गया था।

क़िस्मत का फेर देखिये। अब वह उसी ज़मीन पर आगे बढ़ रहा था, जहाँ से उसे जुलाई-अगस्त के महीनों में पीछे हटना पड़ा था। उन दिनों बड़ा भयंकर युद्ध चल रहा था। फिर भी वह बड़ी आसानी के साथ दुश्मनों के चंगुल से छूटकर ऐसे गायब हुआ, जैसे उसका नाम-निशान तक मिट गया हो।

इसके बाद वह उन सैनिक टुकड़ियों में शामिल हुआ, जिनसे बाद में दक्षिण-पश्चिमी मोर्चा बनाया गया। वे सब दृढ़तापूर्वक दुश्मन से लोहा लेते रहे और मौक़ा पाकर बाहर निकले। तत्पश्चात अपनी डिवीजन, फिर सेना को लेकर वह दुश्मन की सेना को खदेड़ने लगा। उनहोंने दोन से चीर तक और फिर चीर से और आगे दोनेत्स तक बढ़ने के समय हजारों क़ैदियों को गिरफ़्तार किया था और सैकड़ों तोपों पर क़ब्ज़ा किया था। उसने दुश्मन की खास टुकड़ियों को ज़मीन चटायी थी और शत्रु के छितरे हुए दस्तों को इसलिए छोड़ दिया था कि दूसरी टुकड़ियाँ उनकी खबर लें।

तभी 'कोलोबोक' का परीकथावाला नाम उसके सिपाहियों के दिलों से निकलकर उस पर चस्पां हो गया। और वह परीकथावाले 'कोलोबोक' की ही भाँति बराबर आगे बढ़ता रहा।

सेर्गेई जनवरी के मध्य में सोवियत सैनिकों के साथ जा मिला। उन दिनों युद्ध में नया मोड़ आया था। सोवियत सेना ने वोरोनेज, दक्षिणी-पश्चिमी, दोन, दक्षिण, उत्तरी काकेशिया तथा वोलोखोव और लेनिनग्राद मोर्चों पर जबरदस्त हमले किये थे। फलत : स्तालिनग्राद के निकट घेरे में पड़ी फासिस्ट सेना को अन्तिम रूप से नष्ट किया गया, दो वर्षों से भी अधिक समय से लेनिनग्राद पर पड़ा दुश्मन का घेरा तोड़ डाला गया; और कोई छह सप्ताह के भीतर वोरोनेज, कुर्स्क, खार्कोव, क्रास्नोदोन, रोस्तोव, नोवोचेर्कास्क और वोरोशीलोवग्राद नगर आज़ाद कर लिये गये।

सेर्गेई सेना में तब पहुँचा जब देर्कूल, ऐदार और ओस्कोल-दोनेत्स की तीन उत्तरी सहायक नदियों पर स्थिति जर्मनों की रक्षा-पंक्तियों पर टैंकों से जबरदस्त हमला किया जा रहा था; जब मील्लेरोवो में जर्मन सेना का मोर्चा तोड़ा जा चुका था और दो दिन पहले ग्लुबोकाया स्टेशन पर क़ब्ज़ा कर चुकने के बाद सोवियत सेना उत्तरी दोनेत्स को पार करने की तैयारी कर रही थी।

डिवीजनल कमाण्डर सेर्गेई से बातचीत कर रहा था। इस बीच कमाण्डर-इन-चीफ सो रहा था। सभी कमाण्डिंग-अफ़सरों की भाँति वह भी आदतन, सभी ज़रूरी तैयारियाँ तथा काम रात ही में कर लेता था, जब कोई उसे परेशान नहीं कर सकता था और वह स्वयं मुक्त रहता था। इस समय सार्जेण्ट-मेजर मीशिन अपनी कलाई-घड़ी पर निगाह डाल-डालकर सोच रहा था।-जनरल को जगाये कि नहीं। (सार्जेण्ट-मेजर मीशिन पीटर महान की तरह ही भारी-भरकम आदमी था, जिसका कमाण्डर-इन-चीफ के तहत वही स्थान था, जो सार्जेंट फेदोरेंको का डिवीजनल कमाडर के तहत था)।

कमाण्डर-इन-चीफ की नींद हमेशा कच्ची होती थी। उस दिन तो उसे और दिनों से पहले ही उठना था। यह एक संयोग की ही बात है-और ऐसे संयोग युद्धकाल में प्रायः देखने को मिलते हैं-कि जिस डिवीजन ने जुलाई में उसकी कमान में कामेंस्क की रक्षा की थी, अब वही नगर को आज़ाद करनेवाली थी। 'पुराने सैनिकों' में से बहुत कम अब डिवीजन में रह गये थे। उसका कमाण्डर, जो अभी हाल ही में जनरल बनाया गया था, उस समय एक रेजीमेण्टल कमाण्डर था। बेशक ऐसे 'पुराने अफ़सर' अब भी मिल सकते थे, किन्तु साधारण सैनिकों में उनकी संख्या बहुत कम थी। डिवीजन के 9/10 सैनिक ऐसे थे, जो मध्य दोन पर हुए हमले से पहले शामिल हुए थे।

सार्जेंट-मेजर मीशिन ने अन्तिम बार अपनी घड़ी पर निगाह डाली और उस तख़्ते की ओर बढ़ा, जिस पर जनरल सो रहा था। यह साधारण-सा तख़्ता था। जनरल को

हमेशा नमी से डर लगता था, अतः वह अपना बिस्तर रेल के डिब्बे में ऊपरी बर्थ की भाँति, दूसरी मंजिल पर ही लगवाता था।

जनरल गहरी नींद में सो रहा था। उसके चेहरे पर उस स्वस्थ व्यक्ति जैसा बाल-सुलभ भाव था, जिसकी आत्मा निर्दोष, निष्कपट होती है। मीशिन ने जनरल को जगाने के लिए उसे ज़ोर से झकझोरा किन्तु इससे उसकी नींद न टूटी। यह तो पहला क़दम था। इसके बाद मीशिन हमेशा दूसरा क़दम उठाता था। उसने एक हाथ जनरल की कमर में और दूसरा कन्धों के इर्द-गिर्द डाला और उसे एक बच्चे की तरह बिठा दिया।

जनरल पलक मारते ही जग गया और मीशिन को ऐसी साफ़ नज़रों से देखा मानो सोया ही न हो।

"धन्यवाद," वह बोला। उसने बड़ी फुर्ती से बिस्तर से कूदकर अपने बालों पर हाथ फेरा और एक स्टूल पर बैठकर इधर-उधर नाई को देखने लगा। मीशिन ने उसके पैरों के पास एक जोड़ी स्लीपर रख दिये।

नाई, चमड़े के बड़े-बड़े बूट और अपने फ़ौजी कोट पर बर्फ जैसा सफ़ेद एप्रिन पहने हुए, खन्दक के रसोईघरवाले भाग में खड़ा-खड़ा साबुन का फेन तैयार कर रहा था। वह प्रेत की तरह चुपचाप कमाण्डर की बगल में आया, एक तौलिया उसके चोगे के कालर में खोंसा, और हल्के-हल्के उसकी दाढ़ी पर ब्रश से फेन लगाने लगा।

कोई पन्द्रह मिनट के भीतर ही जनरल, पूरी वर्दी पहने मेज पर बैठा था। उधर नाश्ता मेज पर लगाया जा रहा था, इधर एडजुटेण्ट लाल अस्तरवाली चमड़े की एक फाइल में से कुछ कागजात निकाल-निकालकर उसके सामने रख रहा था। जनरल एक-एक कर इन कागजों पर निगाह दौड़ाये जा रहा था। पहले कागज में अभी-अभी प्राप्त एक रिपोर्ट थी, जिसमें मील्लेरोवो पर अधिकार कर लिये जाने की सूचना दी गयी थी, किन्तु वस्तुतः जनरल के लिए यह कोई नयी खबर न थी। वह जानता था कि निश्चय ही मील्लेरोवो पर रात में या सुबह क़ब्ज़ा हो जायेगा। फिर दैनिक मामलों की बारी आयी।

"उनको शैतान कान न फूँके, चीनी हाथ लगी है, तो वे उसे अपने पास रखें!.. . सफ्रोनोव को 'साहस के लिए' तमगा नहीं, बल्कि 'लाल सैनिक ध्वज' पदक दिया जाये। डिवीजनल स्टाफ के लोग शायद समझते हैं कि साधारण सैनिकों के लिए केवल तमगों की सिफारिश की जा सकती है, और अफ़सरों के लिए पदकों की!.. अभी तक उन्होंने उसे गोली से नहीं उड़ाया? यह तो फ़ौजी अदालत न हुई, बल्कि 'खुली बातचीत'* के सम्पादक-मण्डल जैसी कोई चीज़ लग रही है। उसे तुरन्त गोली मार दी जानी चाहिए, वरना वे ख़ुद फ़ौजी अदालत के सामने आयेंगे। हुँह! उसको

शैतान कान न फूँके : 'मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे तबादले का निमंत्रण दें...' मैं खुद एक साधारण सैनिक रहा हूँ, पर मुझे पक्का विश्वास है कि रूसी में ऐसी बात इस प्रकार नहीं कहीं जाती। क्लेपिकोव ने बिना पढ़े इन कागजों पर दस्तखत मार दिये हैं। उससे कहो इसे अच्छी तरह पढ़े, उसकी गलतियाँ नीली या लाल पेंसिल से ठीक करे और खुद यह कागज मुझे सौंपे!.. नहीं, नहीं, आज तुम मेरे सामने ढेरों बेकार कागज ले आये हो। वे सब पड़े भी रह सकते हैं," जनरल बोला और नाश्ते पर टूट पड़ा।

कमाण्डर-इन-चीफ अभी कॉफी पी रहा था कि फाइल लिये एक जनरल उससे मिलने अन्दर आया। वह नाटे क़द का आदमी था-गम्भीर, चुस्त उसकी प्रत्येक हरकत से संयम तथा यथार्थता का भास होता था। उसका निर्मल माथा कुछ ऊँचा लग रहा था, शायद इसलिए कि सामने उसका सिर गंजा था और बाल कनपटी पर महीन कटे थे। वह सैनिक अफ़सर कम, प्रोफेसर अधिक लग रहा था।

"बैठिये," कमाण्डर-इन-चीफ बोला।

स्टाफ-चीफ ज़रूरी काम से आया था। किन्तु ऐसे किसी भी काम को उठाने से पहले उसने, मुस्कराते हुए, मास्को से प्रकाशित एक ताजा अखबार उसके हाथों में थमा दिया। यह अखबार हवाई जहाज द्वारा मोर्चे पर लाया गया और सुबह सेना के भिन्न-भिन्न हेडक्वार्टरों में बाँट दिया गया था।

इस पत्र में उन अफ़सरों और जनरलों के नाम थे, जिन्हें अभी-अभी सम्मानित और पदोन्नत किया गया था। इनमें से कई लोग स्वयं उसी की सेना के थे।

उत्कट अभिरुचि दिखाते हुए कमाण्डर-इन-चीफ ने इन लोगों के नाम शीघ्रता से और ज़ोर-ज़ोर से पढ़े। और जब कभी किसी परिचित व्यक्ति का नाम आता, तो वह स्टाफ-चीफ पर भी एक नज़र डाल लेता था। उसकी यह नज़र कभी बड़ी सारगर्भित, कभी आश्चर्यचकित और कभी सन्देहभरी-सी लगती थी। अपनी सेना के किसी अफ़सर का नाम पाकर उसका चेहरा बच्चों की तरह खिल उठता।

उस सूची में उस डिवीजन के कमाण्डर का नाम भी था, जो कभी 'कोलोबोक' के अधीन रही थी। स्टाफ-चीफ ने भी उसी डिवीजन में सेवा की थी। उस डिवीजनल कमाण्डर को पहले भी कई बार सम्मानित किया जा चुका था। इस बार भी उसे उसकी पिछली सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया था। हाँ, सम्बन्धित सिफारिश को सामान्य प्राधिकारियों से होकर गुजरने में कुछ समय ज़रूर लग गया था। समाचार-पत्रों में तो यह खबर अब छपी थी।

---

* क्रान्तिपूर्व रूस में बच्चों की एक पत्रिका।

“यह कौनसा मौक़ा है उसे खबर देने का-जब कि उसे कामेंस्क पर अधिकार करना है!” कमाण्डर-इन-चीफ बोला, “इससे वह जरा ठण्डा पड़ जायेगा।”

“नहीं, बल्कि उसका उत्साह बढ़ेगा,” मुस्कराते हुए स्टाफ-चीफ ने कहा।

“मैं जानता हूँ, मैं तुम्हारी सारी कमजोरियाँ जानता हूँ!... आज मैं उससे मिलकर उसे बधाई दूँगा। चुवीरिन और खारचेंको को बधाई के तार भेज दो। कूकोलेव को भी कोई मैत्री पूर्ण बात लिख देना। किन्तु उसमें औपचारिकता जरा भी न हो, बस दोस्ताना बात हो। मुझे सचमुच उसके लिए बड़ी ख़ुशी है। मैं तो सोच रहा था कि व्याज्मा की लड़ाई के बाद वह फिर कभी सन्तुलित हो भी सकेगा या नहीं,” कमाण्डर-इन-चीफ बोला और सहसा उसके चेहरे पर एक चतुरतापूर्ण मुस्कान बिखर गयी। “कन्धे की पट्टियाँ कब तक आ रही हैं?”

“वे भेजी जा चुकी है,” स्टाफ-चीफ ने जवाब दिया।

हाल ही में आदेश छपा था कि सैनिकों, अफ़सरों और जनरलों का कन्धे की पट्टियों के बिल्ले दिये जायेंगे और इस आदेश में सारी सेना की दिलचस्पी थी।

डिवीजन कमाण्डर ने तो केवल अपने स्टाफ-चीफ से कहा ही था कि कमाण्डर-इन-चीफ आनेवाले हैं कि यह खबर बिजली की गति से सारी डिवीजन में फैल गयी और उन लोगों के कानों में भी पड़ी, जो दोनेत्स के समतल किनारे पर बर्फ़ और कीचड़ में लेटे हुए अपनी आँखें नदी के दाहिने किनारे और कामेंस्क की इमारतों पर गड़ाये हुए थे। इमारतों से धुएँ के काले-काले बादल उठ रहे थे। नगर के ऊपर सोवियत बमवर्षक विमान बम बरसा रहे थे।

कमाण्डर-इन-चीफ अपनी कार मे डिवीजन के दूसरे व्यूह में आ पहुँचा और वहाँ उसकी मुलाकात कमाण्डर से हुई। इसके बाद दोनों पैदल ही डिवीजनल हेडक्वार्टर की ओर बढ़े। रास्ते में उन्हें अलग-अलग, या छोटी-छोटी टोलियों मे, सैनिक और अफ़सर आते मिले, प्रत्येक जनरल का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता था। वे बड़ी चुस्ती से उसे सेल्यूट मार रहे थे, उनके चेहरों पर उत्सुकता और मुस्कान झलक रही थी।

“तुम्हें तहखाने में आये अभी एक ही घण्टा हुआ होगा। शैतान तुम्हें कान न फूँके! अजी, इसकी दीवारें तक अभी नम नहीं हुई हैं,” कमाण्डर-इन-चीफ बोला। उसे डिवीजनल कमाण्डर की चाल समझने में देर नहीं लगी।

“ठीक-ठीक कहूँ तो दो घण्टे हो गये। और जब तक हम कामेंस्क पर क़ब्ज़ा नहीं कर लेंगे, इसे छोड़ेंगे नहीं,” डिवीजनल कमाण्डर ने कहा। वह बड़े आदर के साथ कमाण्डर-इन-चीफ के सामने खड़ा हुआ था। उसकी आँखों में चालाकी की चमक थी, उसके मुख का शान्त भाव मानो यह कहता-सा लग रहा था, “मैं अपनी डिवीजन का

सर्वेसर्वा हूँ और आप मुझे पूरी गम्भीरता के साथ किस बात के लिए फटकार बता सकते हैं, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। पर यह तो बड़ी मामूली बात है।"

कमाण्डर-इन-चीफ ने उसे बधाई दी। मौक़े का लाभ उठाकर डिवीजनल कमाण्डर ने बातों ही बातों में कहा :

"महत्वपूर्ण बातों पर बात करने से पहले... यहाँ से कुछ दूर एक देहात में हम्माम है। हम पानी गर्म कर रहे हैं। मेरा ख़याल है कि आप भी बहुत समय से नहा नहीं पाये होंगे, कामरेड जनरल?"

"सच?" जनरल ने बड़ी गम्भीरता से कहा। "पर क्या पानी तैयार है?"

"फेदोरेंको!"

तभी पता चला कि हम्माम शाम तक तैयार होगा। डिवीजनल कमाण्डर ने फेदोरेंको पर एक खा जानेवाली नज़र डाली।

"आज शाम तक..." कमाण्डर-इन-चीफ सोच रहा था कि शायद कोई चीज़ स्थगित की जा सकती है, या शायद बिलकुल रद्द की जा सकती है। तभी उसे याद आया कि रास्ते में उसने एक और काम करने का निश्चय किया था। "हम्माम फिर कभी," वह बोला।

स्टाफ-चीफ की सेना में बड़ी प्रतिष्ठा थी। उसके परामर्श से डिवीजनल कमाण्डर ने कामेंस्क पर क़ब्ज़ा करने की अपनी योजना बनायी थी, जिसे इस समय वह कमाण्डर-इन-चीफ को सुनाने लगा। कमाण्डर-इन-चीफ ने कुछ असन्तोष प्रकट किया।

"देखो, वहाँ तो ऐसा जबर्दस्त त्रिकोण है : नदी, रेलवे, नगर के बाहर की सीमाएँ-सभी पर किलाबन्दी है।"

"मुझे भी वही सन्देह हुआ था, किन्तु इवान इवानोविच ने इस पर बिलकुल सही जवाब दिया कि..."

इवान इवानोविच सेना का स्टाफ-चीफ था।

"तुम नदी को पार तो कर लोगे, लेकिन बड़े पैमाने पर आक्रमण नहीं कर सकोगे जगह की कमी की वजह से। वे तो तुम्हें दूर से मारते रहेंगे," कमाण्डर-इन-चीफ ने इवान इवानोविच के सवाल को सामने न लाते हुए कहा।

किन्तु डिवीजनल कमाण्डर जानता था कि इवान इवानोविच की प्रतिष्ठा उसकी स्थिति को मजबूत बनाती है। इसलिए उसने फिर कहा :

"इवानोविच की राय है कि दुश्मन सम्भवतः इस बात की आशा नहीं करता कि उस पर इस दिशा से कोई सीधा आक्रमण किया जायेगा। वह यही समझेगा कि यह हमारी एक चाल है। हमारे गुप्तचरों की रिपोर्टें भी इसी की पुष्टि करती हैं।"

"तुम जैसे ही यहाँ से नगर में घुसोगे कि वे लोग सड़कों से और यहाँ स्टेशन से नदी की बाढ़ की तरह तुम पर टूट पड़ेंगे..."

"इवान इवानोविच..."

कमाण्डर-इन-चीफ को लगा कि जब तक इवान इवानोविच नामक बाधा दूर नहीं की जाती, तब तक वे किसी निष्कर्ष पर न पहुँच सकेंगे।

"इवान इवानोविच गलती पर है," वह बोला।

कमाण्डर-इन-चीफ ने अपना विचार, अपने चौड़े हाथ और छोटी-छोटी उँगलियों के सारपूर्ण इशारों से समझाना शुरू किया। वह नक्शे पर दिखाकर बताने लगा कि चक्कर काटकर नगर को घेरना और एक बिलकुल ही भिन्न दिशा से उस पर हमला करना ठीक होगा।

डिवीजनल कमाण्डर को उस लड़के की याद आयी, जो सुबह नगर की बाहरी सीमा से मोर्चा पार कर आया था, जिस पर कमाण्डर-इन-चीफ निर्णायक आक्रमण कराना चाहता था। सहसा, बिना किसी प्रयास के, उसके मस्तिष्क में नगर पर आक्रमण करने की सारी योजना स्पष्ट हो गयी।

रात होते-होते डिवीजनल हेडक्वार्टर में सभी प्रमुख और निर्णायक मामले तय हुए और रेजीमेण्टों को उनकी सूचना दे दी गयी। अफ़सर अब हम्माम में गये। यह समचुच बड़ी विचित्र बात थी कि वह बमबारी से अछूता रह गया था।

सुबह पाँच बजे डिवीजनल कमाण्डर और राजनीतिक विभाग का निदेशक रेजीमेण्टों की तैयारियों की जाँच-पड़ताल करने चल दिये।

रेजीमेण्टल कमाण्डर मेजर कोनोनेंको के तहखाने में रात भर कोई भी न सोया था। सारी रात सीनियर अफ़सरों से लेकर जूनियर कमाण्डर तक को आगामी आक्रमण के सभी पहलुओं के सम्बन्ध में आज्ञाएँ दी जाती रहीं। निश्चय ही ये सारे ब्योरे बहुत ही आवश्यक और निर्णायक थे।

यद्यपि सारी आज्ञाएँ और व्याख्याएँ स्पष्ट की जा चुकी थीं, फिर भी डिवीजनल कमाण्डर ने अपनी कार्यपद्धति के अनुसार वह सभी कुछ एक बार फिर दुहराया जो पिछले दिन कहा जा चुका था और मेजर कोनोनेंकों की कार्रवाइयों की जांच-पड़ताल की।

मेजर एक जवान आदमी थी। एक मेहनती सैनिक। उसका चेहरा दुबला-पतला किन्तु साहसी और फुरतीला था। स्वेटर के ऊपर फ़ौजी क़मीज और क़मीज के ऊपर रूईभरी जैकेट और पतलून पहने हुए था। उसने अपना फ़ौजी ओवरकोट निकाल फेंका था, क्योंकि उससे उसके चलने-फिरने और काम करने में बाधा पड़ती थी। इस समय वह संयम के साथ डिवीजनल कमाण्डर की बातें सुन रहा था, हालाँकि उसका

ध्यान उस ओर न था, क्योंकि यह सब उसे जबानी याद था। उसने तुरन्त रिपोर्ट दी कि सारी तैयारी की जा चुकी है।

सेर्गेई को इसी रेजीमेण्ट में रखा गया। उसे एक टामी-गन और दो हथगोले दिये गये और उस आक्रमणकारी दल में शामिल किया गया, जिसे सबसे पहले कामेंस्क में घुसना था।

पिछले कुछ दिनों से मामूली-सा बर्फ़ीला तूफ़ान उस खुले और ऊर्मिल क्षेत्र में उठ रहा था। सहसा दक्षिणी वायु के कारण कुहरा बढ़ गया। बर्फ़ पिघलने लगी, सड़कों और मैदानों में कीचड़भरा पानी बहने लगा।

बमों और गोलों ने दोनेत्स के दोनों किनारों पर बसे हुए समस्त गाँवों और बस्तियों को गहरा नुकसान पहुँचाया था। सैनिक पुरानी ख़न्दकों, तहखानों और खेमों में या खुले आकाश के नीचे ठहरे हुए थे।

आक्रमण की पूर्ववेला में नदी के उस पार स्थित नगर कोहरे मे डूब गया-नगर काफ़ी बड़ा था, वीरान सड़कों का जाल, गगनचुम्बी पम्प-स्टेशन, गिरजों की ध्वस्त मीनारें, और कारखानों की कुछेक चिमनियाँ जो अभी तक सही-सलामत खड़ी थीं। नगर के सीमा-क्षेत्रों और बाहर की पहाड़ियों पर जर्मनों की गुमटियाँ दिखायी दे रही थीं।

इस नगर को आज़ाद करने के लिए युद्ध शुरू होनेवाला था। ऐसे युद्ध की पूर्ववेला में फ़ौजी ओवरकोट पहने सोवियत नागरिक को एक विचित्र-सी अनुभूति होती है। वह अपने को नैतिक रूप से बहुत उत्साहित महसूस करता है, क्योंकि उसे अपनी मातृभूमि को आज़ाद कराने के लिए दुश्मन पर हमला करना होता है। नगर के प्रति तथा सर्द तहखानों और नम ख़न्दकों मे छिपे उसके निवासियों के प्रति, माताओं और नन्हे-नन्हे बच्चों के प्रति उसकी सहानुभूति उमड़ती है और उसे अपने दुश्मनों पर क्रोध आता है, क्योंकि वह अपने अनुभव से जानता है कि उसका शत्रु दूनी और तिगुनी ताकत से उसका सामना करेगा, जिससे अपने अपराधों के लिए मिलनेवाले दण्ड को कुछ टाला जा सके। उसका मस्तिष्क इस विचार से कुछ-कुछ व्यथित रहता है कि उसके आगे मौत का खतरा है और काम कठिन है। और ऐसे कितने ही दिल होंगे, जो भय की स्वाभाविक अनुभूति से दहल उठते हैं!

किन्तु ऐसी अनुभूतियाँ कोई भी सैनिक प्रकट नहीं कर रहा था। सभी ख़ुश थे, चहक रहे थे, हँसी-मज़ाक कर रहे थे।

“एक बार जब ‘कोलोबोक’ काम अपने हाथ में ले लेता है, तो वह लुढ़कता-पुढ़कता ठीक जगह पर पहुँच ज़रूर जाता है,” उन्होंने कहा, मानो स्वयं वे नहीं, बल्कि ख़ुद परीकथा का प्रसिद्ध ‘कोलोबोक’ ही नगर में घुसनेवाला था।

सेर्गेई जिस आक्रामक दल में था, वह उसी सार्जेंट की कमान में था, जिससे वह मोर्चा पार करने के बाद पहले-पहल मिला था। वह नाटा, खुमिजाज और फुरतीला था। उसके पूरे चेहरे पर बारीक झुर्रियाँ थीं, आँखें नीली और बड़ी-बड़ी। आँखों में इतनी चमक थी कि वे जब तब रंग बदलती-सी लगती थीं। उसका नाम था कयूत्किन।

"तो तुम क्रास्नोदोन के रहनेवाले हो" उसने सेर्गेई से पूछा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता मिश्रित अविश्वास का भाव झलक रहा था।

"तुम्हें वहाँ जाने का मौक़ा मिला है क्या?" सेर्गेई ने पूछा।

"मेरा एक मित्र था, सच कहूँ तो लड़की ही, वह वहाँ की रहनेवाली थी," कयूत्किन ने कुछ उदास होकर कहा, "वह नगर से बाहर रहने जा रही थी। तभी हमारा परिचय हुआ... वह सचमुच बड़ी ख़ूबसूरत थी... मैं क्रास्नोदोन से होकर गुजर रहा था।" वह कुछ रुका और फिर कहने लगा, "कामेंस्क की रक्षा में भी मैंने भाग लिया था। नगर की रक्षा करनेवाले सभी लोग या तो मार डाले गये थे या बन्दी बना लिये गये थे। सिवा मेरे... और आख़िर मैं यहाँ लौट आया। तुमने ये पंक्तियाँ सुनी हैं? उसने बड़ी गम्भीरता से कविता-पाठ शुरू कर दिया :

घायल हमलों में मैं बारम्बार हुआ
दाग रह गये हल्के, एक न घाव रहा
तीन बार दुश्मन के घेरे में आया
मैं बच निकला, धता उसको बतलाया

बेशक थी बेचैनी और परेशानी
दुश्मन मेरा बाल न बाँका कर पाया
बेशक दायें-बायें, आगे-पीछे से
रेला हर क्षण, सतत गोलियों का आया...

कई बार जानी-पहचानी राहों पर
धूल-दर्द के उड़े जहाँ भारी बादल
कुछ सीमा तक मैंने अपने को खोया
मैं कुछ हद तक मिटा हुआ इतना घायल

"यह कविता मेरे जैसे लोगों के बारे में लिखी गयी है," वह दाँत दिखाते हुए बोला और सेर्गेई को आँख मारने लगा।

दिन बीता। रात आयी। इधर डिवीजनल कमाण्डर मेजर कोनोनेंको को अपनी योजना के मुद्दों को एक बार फिर समझा रहा था, उधर वे सैनिक सो रहे थे, जिन्हें

हमले में भाग लेना था। सेर्गेई भी सो रहा था।

सुबह छः बजे उन्हें परहेदारों ने जगाया। उन्हें एक-एक जाम वोदका, एक-एक कटोरा गोश्त का शोरबा और दलिया दिया गया। फिर कोहरे, झाड़ियों और घास में लुकते-छिपते वे अपने आक्रमण-स्थलों की ओर बढ़ने लगे।

उनके पैरों के नीचे की ज़मीन बर्फ और कीचड़ से लसलसी हो रही थी। दो सौ गज की दूरी पर कुछ भी नहीं दिखायी दे रहा था। जैसे ही आख़िरी दल दोनेत्स के किनारे पहुँचे और लसलसी भूमि पर लेटे कि भारी तोपें गरज उठीं।

गोलाबारी बड़े क्रम से हो रही थी, किन्तु तोपें इतनी अधिक थीं कि वे निरन्तर गूँज रही थीं। कयूत्किन की बग़ल में लेटे-लेटे, सेर्गेई ने आग के लाल-लाल गोले सिर के ऊपर से जाते और नदी को पार करते देखे। कुछ गोले एकदम गोल थे, तो कुछ दुमदार। उसने गोलों की सनसनाहट और नगर में होने वाले विस्फोटों के धमाके सुने। इन सभी ध्वनियों से वह और उसके साथी उत्साहित हो उठे।

जर्मन केवल उन्हीं स्थानों पर मोर्टर बम फेंक रहे थे, जहाँ उनके ख़याल से फ़ौजी टुकड़ियाँ जमी हुई थीं। सोवियत सैनिकों को जब-तब नगर की ओर से छह नलियोंवाले मॉर्टर के दग़ने की आवाज़ सुनायी पड़ती थी। कयूत्किन कुछ भय से कह रहा था :

"बाप रे... इसकी आवाज़ तो सुन!"

सहसा सेर्गेई के पीछे कहीं दूर से भयानक गरज सुनायी पड़ी, जो बढ़ती-बढ़ती सारे क्षितिज तक फैल गयी। दूसरे किनारे पर घना काला धुआँ उठने लगा।

"कत्यूशा* के मुँह खुल गये हैं," कयूत्किन बोला। उसका झुर्रीदार चेहरा सख़्त पड़ गया। "अब इवान घरघरक** की बारी आयेगी। फिर..."

भनभनाहट की आवाज़ अभी दबी भी न थी कि सेर्गेई अपनी खन्दक में से उछलकर नदी पर जमी बर्फ पर दौड़ने लगा। कोई आज्ञा दी गई या नहीं यह उसने न सुना। उसने तो कयूत्किन को उछलते और भागते हुए देखा और ख़ुद भी भागने लगा।

उसे लगा कि सैनिक बिलकुल निःशब्द दौड़ रहे हैं। वस्तुतः दूर के किनारे से उन पर गोलाबारी हो रही थी और लोग बर्फ़ पर गिर रहे थे। काला-काला धुआँ और गन्धक की तेज गन्ध हमला बोल रही सेना को आच्छादित कर रही थी। किन्तु सैनिकों को पक्का विश्वास हो चुका था कि सभी कुछ ठीक-ठाक किया गया है और उसका परिणाम भी बहुत सुखद होगा।

---

* कत्यूशा-राकेट मोर्टर।-सं.

** इवान घरघरक-भारी राकेट मोर्टर।-सं.

सहसा खामोशी छा गयी, जिससे स्तम्भित होकर सेर्गेई एक गड्ढे में कयूत्किन की बगल में लेट गया। वहाँ उसे होश आया। कयूत्किन का चेहरा विकृत हो उठा। वह ठीक अपने सामने टामी-गन से गोलियाँ चला रहा था। सेर्गेई ने कोई पचास फुट दूर एक अधपटी खाई में से एक मशीनगन की हिलती हुई नली देखी और वह स्वयं भी खाई में गोली चलाने लगा। मशीन-गन चलानेवाले ने न तो सेर्गेई को ही देखा और न कयूत्किन को ही, वह तो किसी दूर की चीज़ को निशाना बना रहा था। दोनों ने उसे फौरन मौत के घाट उतार दिया।

नगर उनकी दाहिनी ओर काफ़ी दूरी पर था। पर अब गोलाबारी नहीं हो रही थी। वे स्तेपी में घुसते चले जा रहे थे पर कुछ देर बाद नगर से चलाये जानेवाले गोले स्तेपी में, उनके आस-पास फटने लगे।

कुहरे से आच्छादित छोटी-छोटी बस्तियों से, जिन्हें सेर्गेई अच्छी तरह जानता था, उन पर मशीन-गनों और टामी-गनों से गोलियाँ चलायी गयीं। वे एक गड्ढे में उस समय तक पड़े रहे, जब तक उनका हल्का तोपखाना नहीं पहुँच गया और बस्तियों पर सीधी गोलाबारी शुरू नहीं कर दी। अन्ततः सैनिकों के दल अपनी-अपनी हल्की तोपें धकेल-धकेलकर बस्तियों में घुस गये। सभी तोपची जैसे मतवाले हो रहे थे। तभी बटालियन कमाण्डर आया और सिगनलर एक गिरे हुए पक्के मकान के तहखाने में टेलीफोन के तार बिछाने लगे।

इस समय तक उन्हें नगर के चौराहे की ओर बढ़ने में पूरी सफलता मिल चुकी थी। यही चौराहा उनकी इस साधारण कार्रवाई की मंजिल था। यदि उनके पास टैंक होते, तो वे न जाने कब के इस चौराहे पर पहुँच गये होते, किन्तु इस बार टैंकों का प्रयोग नहीं किया गया, क्योंकि दोनेत्स पर जमी बर्फ उनका भार संभालने में असमर्थ थी।

अब तक पूरी तरह अँधेरा छा चुका था। फिर भी सोवियत सैनिकों की चढ़ाई जारी थी। जैसे ही दुश्मन ने गोलाबारी शुरू की बटालियन कमाण्डर को अपनी मौजूदा टुकड़ियों की सहायता से हमला करने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि मुख्य सेना अभी वहाँ पहुँच न पायी थी। सैनिक गाँव में घुस गये और कयूत्किन की टुकड़ी ने, मुख्य सड़क को काटकर, स्कूल की इमारत पर क़ब्ज़ा कर लेने के लिए युद्ध छेड़ दिया।

स्कूल की ओर से इतनी जबरदस्त जवाबी गोलीबारी शुरू हुई कि सेर्गेई ने अपना मुँह पिघलती बर्फ़ में छिपा लिया। बायें हाथ की कोहनी के ऊपर आकर एक गोली लगी, किन्तु हड्डी पर जरब नहीं आयी। युद्ध की उत्तेजना में उसे पीड़ा तक का अनुभव न हो रहा था। आख़िर जब उसने सिर उठाया, तो देखा कि वह बिलकुल अकेला रह

गया है।

शायद उसके साथी, गोलियों की बौछार के कारण पीछे हट गये हों। किन्तु अनुभवहीन सेर्गेई को लगा कि उसके साथी मारे गये हैं। वह डर से काँप उठा, रेंगता हुआ एक मकान के पीछे पहुँचा और सुनने लगा। दो जर्मन उसके पास से भागते हुए निकल गये। उसे दायें, बायें और पीछे जर्मनों की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। पास में गोलीबारी बन्द हो चुकी थी और अब गाँव की चौहद्दी पर हो रही थी। अन्ततः वह भी ठण्डी पड़ गयी।

नगर के ऊपर, बहुत दूर आग की लपटें उठ रही थीं जो आसमान को नहीं, बल्कि निरन्तर सघन होते हुए काले-काले धुएँ को प्रकाशित कर रही थीं। उसी दिशा से भयानक बमबारी की गूँज आ रही थी।

सेर्गेई जर्मनों द्वारा अधिकृत एक बस्ती के बीचोंबीच बर्फ के ढेर पर पड़ा था-अकेला, घायल।

अध्याय 28

मेरे दोस्त! मेरे दोस्त!.. अब मैं अपनी कहानी के सबसे दुखद पृष्ठों पर आ रहा हूँ और बरबस मुझे तुम्हारी याद आ जाती है...

काश! तुम जानते कि जब मैं और तुम नगर के स्कूल में पढ़ने गये थे, उन दिनों, यानी अपने बचपन के दिनों में, मेरे दिमाग में कितनी उथल-पुथल मची रहती थी। मेरा घर तुम्हारे घर से कोई पैंतीस मील दूर था और जब मैं घर से निकला था, तो मुझे इस बात का डर बराबर बना रहा था कि तुम मुझे न मिलोगे, कि तुम पहले ही घर से निकल गये होगे-आख़िर गर्मी के तीन महीनों से हमें एक-दूसरे को देखने का मौक़ा न मिला था! इस डर से कि शायद तुम न मिलो, मैं बेकरार हो रहा था।

रात देर गये मेरे पिता के छकड़े ने तुम्हारे गाँव में प्रवेश किया और थका हुआ घोड़ा सड़क पर धीरे-धीरे चलता रहा। तुम्हारा घर आने से बहुत ही पहले मैं छकड़े से कूद पड़ा था। मैं जानता था कि तुम हमेशा अटारी में सोते हो, और यदि मैं तुमसे वहाँ न मिला, तो इसके माने थे कि तुम जा चुके हो... पर क्या तुम मेरा इन्तज़ार किये बिना कभी गये भी हो? मैं जानता हूँ कि तुम्हें स्कूल में देर से पहुँचना मंजूर था, पर मुझे अकेले छोड़ना मंजूर नहीं... हमने रात पलकों में काटी थी, अटारी में बैठे-बैठे बातें करते रहे और जब-तब मुँह पर हाथ रखकर हँस पड़ते। मुर्ग़ियाँ अपने पंख फड़फड़ाती रहीं। सूखी घास से सौंधी-सौंधी गंध आ रही थी और शरद के प्रातः कालीन सूर्य ने वनों के पीछे से उदय होकर सहसा हमारे चेहरों को प्रकाशित किया।

तभी हमारा ध्यान इस बात पर गया कि गर्मियों के दौरान हम कितने बदल गये है. ..

मुझे एक बात की याद अभी तक है। हम नदी में घुटनों-घुटनों तक पानी में खड़े थे। तुमने मेरे सामने अपना दिल खोलकर कहा कि तुम्हें एक लड़की से प्यार है... सच पूछो, तो वह लड़की मुझे पसन्द न थी, किन्तु मैंने तुमसे कहा था :

"प्यार तुम्हें हो गया है, मुझको नहीं! तुम सुखी रहो..."

और तुमने हँसकर कहा था :

"सचमुच किसी को गलत रास्ते से हटाने के लिए आदमी को कभी-कभी तो दोस्ती से भी हाथ धोना पड़ता है, किन्तु कोई दिल के मामलों में सलाह दे सकता है? कितनी बार गहरे से गहरे दोस्त मुहब्बत के मामलों में दखल देते है, दो प्राणियों को परस्पर मिलाते हैं, अलग करते हैं, प्रेमियों के सम्बन्ध में तरह-तरह की बातें सुनाते हैं... काश, वे जानते होते कि इस प्रकार वे स्वयं कितनी हानि पहुँचाते हैं, उन पवित्र क्षणों में जहर घोल देते हैं, जो फिर लौटकर नहीं आते।"

और फिर मुझे उस व्यक्ति 'न.' की याद आती है। मैं उसका नाम तक लेना नहीं चाहता। वह एक दिन मेरे पास आया और अपने दोस्तों को उपहास का पात्र बनाकर बड़ी लापरवाही के साथ ऐसी वैसी बातें बकने लगा : "फलाँ-फलाँ लड़का फलाँ-फलाँ लड़की की मुहब्बत में इतना चूर है कि उसके पैर चाटता है। और हाँ, यह बात तुम्हारे और मेरे बीच की है-उस लड़की के नाख़ून बड़े गन्दे रहते हैं। और जानते हो, फलाँ लड़का पिछली रात एक दावत में इतनी पी गया कि उलटियाँ करने लगा-पर यह बात किसी और से न कहना। और फलाँ लड़का फटे-पुराने कपड़े पहनता है, वह ग़रीब बनता है, पर सचमुच है मक्खीचूस। और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उसे दूसरों के आगे हाथ पसारकर बियर पीने में भी शर्म नही आती... किन्तु यह बात किसी और से न कहना..."

और तुमने उसकी ओर देखकर कहा था :

"सुन... निकल जा यहाँ से, फौरन!"

"इसका क्या मतलब?" आश्चर्यचकित 'न.' ने कहा।

"यही कि दफ़ा हो जाओ... जिस आदमी को अपने साथियों की केवल पीठ ही नज़र आती है, अभी चेहरा नज़र नहीं आता, उससे ज़्यादा घृणित कोई नहीं हो सकता। चुगलखोर से बुरा हो भी कौन सकता है?"

इस सबके लिए मैंने तुम्हारी कितनी सराहना की थी! मेरी भी इस बारे में वैसी ही राय थी। किन्तु मैं शायद इतनी खरी-खरी न सुना सकता...

किन्तु सबसे अधिक मुझे गर्मी के उन दिनों की याद आती है, जब मैंने यह

समझ लिया था कि सिवा कोमसोमोल में भर्ती होने के मेरे पास और कोई चारा नहीं है। उन दिनों भी मैं तुमसे बहुत दूर रह रहा था।

और तब हम शरद में हमेशा की तरह उसी अटारी में मिले। उस समय मुझे लगा जैसे मेरे प्रति तुम्हारे रुख में कुछ अलगाव-सा आ गया है। साथ ही तुम्हारे प्रति अपने रुख में भी मुझे कुछ-कुछ ऐसा ही लगा। हम अपने नंगे पैर झुलाते हुए चुपचाप बैठे रहे। फिर तुम बोले :

"शायद तुम मुझे न समझ सको, और, सम्भव है, तुम इस बात के लिए मेरी भर्त्सना भी करो कि मैंने बिना तुमसे परमर्श किये कोई निश्चय कर लिया था, किन्तु उस समय मैंने समझ लिया था कि मेरे लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं। जानते हो, मैंने कोमसोमोल में भर्ती होने का निश्चय कर लिया है।"

"पर इसके माने होंगे-नये-नये उत्तरदायित्व, नये-नये दोस्त! फिर, मेरा क्या होगा?" मैंने अपनी मित्रता को कसौटी पर कसने की दृष्टि से कहा था।

"हाँ," तुमने उदास होकर जवाब दिया था। "निश्चय ही बात यही होगी। हाँ, यह बात अपने-अपने मन की ज़रूर है, किन्तु अच्छा तो यही होगा कि तुम भी कोमसोमोल में भर्ती हो जाओ।"

मैं तुम्हें अधिक परेशान न कर सका। हमारी आँखे चार हुईं और हम ठहाका मारकर हँस पड़े।

फिर इसके बाद अटारी में बैठे-बैठे हमने ऐसी अच्छी-अच्छी बातें की थीं, जो मुझे हमेशा याद रहेंगी। अटारी में हमारी यह आख़िरी मुलाकात थी। हमने अपने रास्ते से कभी न हटने और अपनी दोस्ती बनाये रखने की शपथ ली...

दोस्ती! इस संसार में कितने लोग इस शब्द का उच्चारण करते हैं और उससे अक्सर उनका अर्थ होता है-शराब की चुस्कियाँ लेते हुए कुछ मीठी-मीठी बातें करना तथा एक-दूसरे की कमजोरियों के प्रति सहानुभूति रखना। इसका दोस्ती से क्या मतलब?

हम बार-बार लड़े-झगड़े थे, हमने एक-दूसरे के गौरव पर भी चोट की थी और एक-दूसरे से सहमत न होने पर एक-दूसरे की भावनाओं पर भी आघात किया था। पर इससे हमारी दोस्ती पर जरा भी आँच न आयी थी, वह तो आग में तपकर सोने जैसी खरी और इस्पात जैसी मजबूत निकली थी...

मैंने प्रायः तुम्हारे साथ अनुचित व्यवहार किया था, पर जब मुझे अपनी गलती मालूम होती थी, तो मैं उसे तुम्हारे आगे स्वीकार भी कर लेता था। बेशक, मैं केवल इतना ही कह पाता मैं कि गलती पर था और तुम कहने लगते थे :

"परेशान होना बेकार है... अब जब तुमने अपनी गलती मान ली है, तो उसे

भूल जाओ। ऐसी बातें होती ही रहती हैं। यह तो संघर्ष का एक अंग है।"

और फिर तुमने मेरी परिचर्या सदय नर्स की भाँति की, शायद मेरी अपनी माँ से भी अधिक अच्छी तरह, क्योंकि तुम रूखे-से, भावुकताहीन युवक थे।

और अब मुझे यह बताना पड़ेगा कि मैंने तुम्हें किस प्रकार खोया। यह बात बहुत समय पहले की है, किन्तु न जाने क्यों मुझे लगता है कि यह बात पिछली लड़ाई की नहीं, इसी लड़ाई की है... मैं तुम्हें झील से दूर, नरकलों की झाड़ियों में से खींचता हुआ लाया था। तुम्हारा ख़ून मेरे हाथों पर बह रहा था। धूप बड़ी तेज थी। हमारे पीछे, नदी के किनारे शायद कोई ज़िन्दा न बचा था-तट की उस संकरी-सी, नरकलों से ढँकी पट्टी पर बेहद गोलाबारी हुई थी। मैं तुम्हें घसीटकर ले जा रहा था, क्योंकि मैं कल्पना भी न कर सकता था कि तुम कभी मर सकते हो... अब तुम नरकलों की झाड़ियों के बिस्तर पर पड़े थे, तुम होश में थे, किन्तु तुम्हारे होंठ बहुत सूख गये थे। तुमने कहा था :

"पानी... मुझे कुछ पानी दो..."

वहाँ पानी न था। फिर हमारे पास लोटा या गिलास जैसी भी कोई चीज़ न थी, वरना मैं झील से पानी ले आया होता। तभी तुमने कहा था :

"मेरे बूट उतार लो, सावधानी से। वे कहीं से भी फटे नहीं हैं।"

मैंने तुम्हारी बात समझ ली थी। मैंने तुम्हारा वह सैनिक बूट उतारा। इसी बूट ने न जाने कितना लम्बा रास्ता तय किया था। हम न जाने कितने दिनों तक लगातार चलते रहे थे, किन्तु कभी मोजे बदलने की नौबत न आयी थी। फिर भी मैंने बूट लिया और रेंगता-रेंगता किनारे की ओर चला गया। मैं ख़ुद प्यास से मरा जा रहा था। बेशक, गोलाबारी के इस तूफान में मैं स्वयं पानी के लिए वहाँ रुकने की कल्पना भी न कर सकता था। निश्चय ही यह एक चमत्कार रहा होगा कि मैं बूट में पानी भर सका और रेंगता-रेंगता लौट आया।

पर जब मैं तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुम्हारे प्राण पखेरू उड़ चुके थे। तुम्हारा चेहरा शान्त था। तुम्हारा क़द कितना बड़ा था, यह मैंने उसी दिन पहली बार देखा था। अकारण ही लोग यह नहीं समझते थे कि हम दोनों बहुत मिलते-जुलते थे। मेरी आँखों से आँसू झरने लगे। मुझे इतनी प्यास लगी थी कि सहन से बाहर हो रही थी। मैंने अपने होंठ तुम्हारे बूट से लगा लिये। यह हमारी सैनिक मित्रता का कटु जाम था, जिसे मैं रो-रोकर पिये जा रहा था, पिये जा रहा था...

वाल्या मोर्चे के किनारे-किनारे एक बस्ती से दूसरी की ओर चलती रही। उसे न सर्दी परेशान कर रही थी, न भय। वह थककर चूर हो चुकी थी। वह इतनी भूखी थी कि भेड़िये की तरह खाने पर टूट पड़ने को तैयार थी। उसे प्रायः रातें खुली स्तेपी

में बितानी पड़ती थीं। जब मोर्चा और आगे बढ़ जाता, तब पीछे भागते हुए जर्मनों का रेला उसे अपने नगर की ओर खिसकने को विवश कर देता।

वह एक दिन, दो दिन, एक हफ़्ता, बराबर मारी-मारी फिरती रही। क्यों फिरती रही, यह वह स्वयं नहीं जानती थी। शायद वह अभी तक मोर्चा पार कर लेने की आशा कर रही थी, या शायद सेर्गेई को दिये अपने सुझाव में स्वयं विश्वास करने लगी थी। आख़िर सेर्गेई लाल सेना की यूनिट के साथ क्यों नहीं लौटे? उसने वादा जो किया था-“डरो मत, मैं अवश्य लौटूँगा।” और वह अपना वचन हमेशा निभाता था।

जिस रात कामेंस्क में लड़ाई शुरू हुई और धुएँ के घने-घने बादलों से आच्छादित आग की लपटें मीलों दूर से दिखायी दीं, उस रात वाल्या को नगर से कोई दस मील दूर एक बस्ती में शरण मिल गयी। वहाँ जर्मन नहीं थे, फिर भी अधिकांश ग्रामवासियों की भाँति, वाल्या की भी रात भर पलकें न लगीं। वह तो आकाश में उठनेवाली लपटें देख रही थी। कोई चीज़ थी, जो उसे इन्तज़ार करने को विवश कर रही थी, इन्तज़ार करने को...

दिन में कोई ग्यारह बजे गाँव में खबर आयी कि लाल सेना की टुकड़ियाँ कामेंस्क में घुस चुकी हैं, वहाँ ज़ोरों की लड़ाई हो रही है और नगर के अधिकतर हिस्से से जर्मन खदेड़ दिये गये हैं। अब किसी भी समय, लड़ाई में हारा हुआ दुश्मन,-जो सब दुश्मनों से ज़्यादा खूँखार होता है-गाँव से होकर गुजर सकता है। वाल्या ने फिर अपना थैला अपने कन्धे पर रखा और गाँव छोड़कर चली गयी। किसान महिला ने दया से द्रवित होकर उसके थैले में रोटी का एक टुकड़ा रख दिया था।

वह निरुद्देश्य आगे बढ़ती जा रही थी। बर्फ पिघल रही थी, किन्तु हवा का रुख बदल जाने से सर्दी बढ़ने लगी। कुहरा छँट गया। भिन्न-भिन्न आकार के बर्फ़ीले बादल आकाश में छा गये। वाल्या सड़क के बीचोबीच रुकी और वहाँ बड़ी देर तक खड़ी रही। वह दुबली-पतली हो रही थी। कन्धे पर थैला और टोपी के नीचे से निकल-निकलकर हवा में लहराती हुई बालों की भीगी लटें। तत्पश्चात वह पिघली बर्फ़ पर पैर घसीटते हुए क्रास्नोदोन की ओर चल दी ।

इस बीच, सेर्गेई उसी बस्ती के विपरीत छोर पर बने आख़िरी मकान की खिड़की खटखटा रहा था। उसका बाजू ख़ून से सनी आस्तीन में से लटक रहा था। सेर्गेई के पास बन्दूक तक न थी।

नहीं, इस समय मरना उसकी क़िस्मत में न लिखा था। वह उस गीले और कीचड़भरे चौराहे पर तब तक पड़ा रहा, जब तक जर्मन खामोश न हो गये। यह आशा नहीं की जा सकती थी कि सोवियत सेनाएँ उसी रात फिर उस गाँव में घुस पायेंगी। उसे मोर्चे से दूर और दूर हट जाना था। वह वर्दी में न था। उसने अपनी बन्दूक भी

वहीं छोड़ दी। दुश्मन के बीच से होकर निकलने का उसका यह कोई पहला मौक़ा न था!

भोर होते-होते वातावरण में कुहरा छा गया। वह जख़्मी बाँह लटकाये बड़ी कठिनाई से रेलवे लाइन के उस पार रेंग गया। वैसे तब तक बहुधा किसान घरों की मालकिनें उठ जाती हैं और दिया जला देती हैं। किन्तु इस वक्त सभी सुगृहिणियाँ अपने-अपने बच्चों के साथ तहखानों में छिपी थीं।

सेर्गेई रेलवे लाइन से कोई सौ मीटर दूर तक रेंगता गया, फिर उठा और बस्ती की ओर चल दिया।

सुनहरी लटोंवाली एक लड़की ने एक पुराने कपड़े को फाड़कर उसकी बाँह पर बाँध दिया। फिर अभी-अभी कुएँ से लाये पानी से उसकी आस्तीन का ख़ून धोया और उस पर राख रगड़ दी। घर के लोग डर रहे थे कि कहीं जर्मन न घुस आयें। इसीलिए उन्होंने सेर्गेई को गर्म खाना खिलाया नहीं, बस रास्ते में पेट में डाल लेने को कुछ दे दिया।

सेर्गेई, जो रात भर सोया न था, मोर्चे के किनारे-किनारे की बस्तियों में वाल्या की तलाश में निकल पड़ा।

जैसे दोनेत्स स्तेपी में प्रायः होता है, मौसम एक बार फिर सर्द हो गया। घनी बर्फ़ गिरने लगी, जो पिघलने का नाम तक न ले रही थी। फिर वह जमनी शुरू हो गयी।

एक दिन जनवरी के अन्त में सेर्गेई की विवाहिता बहन फेन्या बाजार से घर आयी। पर घर का दरवाज़ा बन्द था।

"तुम अकेली हो क्या, माँ?" उसके बड़े बेटे ने दरवाज़े के पीछे से पूछा।

सेर्गेई मेज पर बैठा था। उसकी एक बाँह मेज पर सधी और दूसरी नीचे लटक रही थी। वह हमेशा दुबला-पतला रहा था, इस समय तो उसका चेहरा फक पड़ गया और सिर लटक गया। हाँ, बहन पर लगी हुई उसकी आँखों में अभी तक पहले जैसी फुर्ती, पहले जैसी चमक दिखायी पड़ रही थी।

फेन्या ने उसे केन्द्रीय कारखानों में हुई गिरफ़्तारियों के बारे में बताया और साथ ही यह सूचना दी कि 'तरुण गार्ड' के अधिकांश सदस्य जेल में है। मरीना से उसने ओलेग कोशेवोई की गिरफ़्तारी के बारे में पहले ही सुन लिया था। सेर्गेई ने एक शब्द भी न कहा। उसकी आँखें चढ़ गयी।

"मैं जा रहा हूँ, डरो नहीं," आख़िर वह बोला।

उसे लगा जैसे फेन्या अपने बच्चों और उसके लिए बड़ी चिन्तित हो उठी है।

उसकी बहन ने उसकी मरहमपट्टी की और उसे औरतों के कपड़े पहना दिये।

फेन्या ने सेर्गेई के कपड़ों का एक बण्डल बनाया और धुँधलका होते ही उसके साथ उसके घर की ओर चल दी।

उसके पिता को जेल में जो यातनाएँ भुगतनी पड़ी थीं। उनके कारण उन्होंने खाट पकड़ ली। उसकी माँ किसी प्रकार चल-फिरकर थोड़ा-बहुत काम कर लेती थी। उसकी बहनें घर पर नहीं थीं। दोनों बहनें, यानी दाशा और नाद्या-जिसे वह सबसे अधिक चाहता था-मोर्चे की दिशा में चली गयी थीं।

सेर्गेई ने पूछा कि क्या उन्हें वाल्या बोर्त्स के बारे में कुछ पता है? इस काल में 'तरुण गार्ड' के सदस्यों के माता-पिता एक-दूसरे के और भी निकट आ गये थे, किन्तु मरीया अन्द्रेयेव्ना ने अपनी बेटी के बारे में सेर्गेई की माँ से कुछ भी नहीं कहा था।

"वाल्या जेल में तो नहीं है?" सेर्गेई ने दुखी होकर पूछा।

नहीं, वह जेल में न थी, यह बात वे लोग निश्चयपूर्वक जानते थे।

सेर्गेई ने कपड़े उतारे और इस महीने में पहली बार अपने साफ़-सुथरे बिस्तर पर लेटा।

दीप मेज पर जल रहा था। हर चीज़ ठीक वैसी ही थी, जिसका वह बचपन से आदी हो चुका था। किन्तु उसका दिमाग कहीं और था। बगलवाले कमरे में लेटा उसका पिता खाँस-खाँसकर दीवारें हिलाये दे रहा था। फिर भी, सेर्गेई के लिए कमरे में हर चीज़ अस्वाभाविक रूप से शान्त लग रही थी। वहाँ अब उसकी बहनों की चहल-पहल न थी, जो पहले सुनायी पड़ा करती थी। उसका छोटा भानजा ही अपने नाना के कमरे में रेंगता हुआ चल रहा था और तुतला-तुतलाकर अपने आपसे बातें कर रहा था।

सेर्गेई की माँ अहाते में चली गयी। सेर्गेई को बूढ़े के कमरे में एक जवान औरत के आने की आवाज़ सुनायी दी। यह औरत उनकी पड़ोसिन थी। वह प्रायः रोज आती थी, और सेर्गेई के माता पिता इतने सीधे थे कि उन्होंने कभी यह तक न सोचा था कि आख़िर उसके रोज-रोज आने का कारण क्या है। सेर्गेई ने उसे बूढ़े से बातचीत करते सुना।

कमरे में रेंगते हुए बच्चे ने फर्श पर से कोई चीज़ उठायी और सेर्गेई के कमरे में रेंग आया।

"मामा... मामा..." वह तुतलाया।

उस औरत ने तुरन्त कमरे में से एक नज़र डाली और सेर्गेई को देखते ही उसकी आँखें चमक उठीं। फिर उसने बूढ़े से कुछ मिनटों तक और बातें की औंर आख़िर घर से निकल गयी।

सेर्गेई ने करवट ली और सोने का प्रयत्न करने लगा।

आख़िर उसके माता-पिता सो गये। घर में अँधेरा और सन्नाटा छा गया। किन्तु सेर्गेई जग रहा था, उसका हृदय तड़प रहा था...

सहसा दरवाज़े पर ज़ोरों की दस्तक हुई।

"दरवाज़ा खोलो!.."

अभी एक ही क्षण पहले उसे लगा कि जो अक्षय जीवनशक्ति उसे समस्त परीक्षाओं के बीच से होकर लिये जा रही थी, वह जैसे उसका साथ छोड़ रही थी। उसकी हिम्मत टूट-सी रही थी। पर जैसे ही उसने दरवाज़े पर खटखट सुनी कि उसके शरीर में फुर्ती-सी दौड़ गयी। वह चुपचाप बिस्तर से कूदा और खिड़की की ओर बढ़कर काले परदे का एक कोना उठा दिया। सब कुछ चाँदनी में नहाया लग रहा था। बर्फ़ की पृष्ठभूमि में एक जर्मन सैनिक की आकृति और उसकी छाया साफ़-साफ़ झलक रही थी। सैनिक टामी-गन ताने खिड़की के पास खड़ा था।

माता-पिता जगकर डरे-डरे आपस में उनींदी आवाज़ में फुसफुसाने लगे, फिर दरवाज़े की खटखट सुनकर चुप हो गये। इस समय तक सेर्गेई ने एक हाथ से अपना पतलून, क़मीज और बूट पहने, किन्तु डिवीजन से प्राप्त फ़ौजी बूटों में फीते न बाँध सका। तब वह अपने माता पिता के कमरे में आ गया।

"कोई जाकर दरवाज़ा खोल दे, पर रोशनी न करना," उसने धीरे-से कहा।

सारा मकान दरवाज़े पर पड़ती ठोकरों से काँप रहा था।

माँ कमरे में भागने-दौड़ने लगी। उसे कुछ भी सूझ नही रहा था।

पिता धीरे-से बिस्तर से उतरे। सेर्गेई को महसूस हुआ कि उनके लिए चलना-फिरना बहुत कठिन है। यह सब सहना इससे भी कठिन था।

"हमें दरवाज़ा खोलना ही होगा," बूढ़े ने कुछ अजीब-सी कोमल आवाज़ में कहा।

सेर्गेई को समझने में देर न लगी कि उसके पिता रो रहे हैं।

तब बूढ़ा बैसाखी पटपटाते हुए गलियारे तक आया और बोला :

"अभी आया..."

सेर्गेई चुपचाप अपने पिता के पीछे खिसक आया।

माँ पाँव घसीटती हुई गलियारे में आयी, और लोहे की कुण्डी पर हाथ रखा। सर्द हवा का एक झोंका-सा आया। पिता ने बाहरी दरवाज़ा खोला और एक पल्ला थामे हुए एक तरफ़ खड़े हो गये।

तीन आकृतियाँ एक के बाद एक दरवाज़े से होकर अँधेरे गलियारे में आयी। आख़िरी व्यक्ति ने दरवाज़ा बन्द कर लिया और एक शक्तिशली टार्च की रोशनी ने

सारा गलियारा रोशन कर दिया। प्रकाश की किरण पहले माँ पर पड़ी, जो सायबान में खुलनेवाले दरवाज़े पर खड़ी थी। सेर्गेई एक अँधेरे कोने में खड़ा था। वहीं से उसने देख लिया कि दरवाज़ा आधा खुला है। उसने समझ लिया कि यह काम उसके लिए उसकी माँ ने किया था। किन्तु तभी टार्च की रोशनी पिता और उनके पीछे खड़े सेर्गेई पर पड़ी। सेर्गेई ने सोचा तक न था कि वे गलियारे में टार्च का प्रयोग करेंगे। उसे उम्मीद थी कि जब वे अन्दर आयेंगे, तो वह अहाते में खिसक जायेगा।

दो व्यक्तियों ने सेर्गेई की बाँहें पकड़ीं। उसकी घायल बाँह में इतनी पीड़ा हुई कि वह कराह उठा।

वे उसे कमरे में घसीट लाये।

“बुत की तरह खड़ी मत रहो। रोशनी जलाओ,” सोलिकोव्स्की माँ पर बरस पड़ा।

पर माँ के हाथ इतने ज़ोरों से काँप रहे थे कि वह बहुत समय तक दिया न जला सकी। सोलिकोव्स्की ने अपना लाइटर जलाया। एक एस.एस. सैनिक और फेनबोंग सेर्गेई को पकड़े हुए थे।

उन्हें देखते ही माँ रो पड़ी और उनके पैरों पर गिर गयी। अपने गोल, झुर्रीदार हाथों से मिट्टी का फर्श रगड़ने और उनकी ओर रेंगने लगी। बूढ़ा बैसाखी के बल झुका-झुका काँप रहा था।

सोलिकोव्स्की ने घर की एक मामूली-सी तलाशी ली। त्युलेनिन के मकान की कई बार तलाशी ली जा चुकी थी। सैनिक ने अपने पतलून की जेब से एक रस्सी निकाली और सेर्गेई के हाथ बाँधने लगा।

“यह मेरा इकलौता बेटा है... इसे छोड़ दो... बाक़ी सब कुछ ले लो... गाय, कपड़े-लत्ते...”

भगवान जाने उसने और क्या-क्या कहा... सेर्गेई को उसके लिए बहुत दुःख हो रहा था, वह इस डर से बोल भी नहीं रहा था कि कहीं उसके आँसू न ढुलक पड़ें।

“ले जाओ इसे,” फेनबोंग ने सैनिक को कहा।

माँ ने फेनबोंग को रोकने का प्रयत्न किया, किन्तु उसने उसे बूट से ठोकर मारकर हटा दिया।

सैनिक सेर्गेई को धक्का देकर दरवाज़े की ओर बढ़ा। फेनबोंग और सोलिकोव्स्की उनके पीछे हो लिये।

“अलविदा माँ, अलविदा पिताजी,” सिर घुमाते हुए सेर्गेई बोला।

माँ फेनबोंग पर झपटी और अपने हाथों से, जो अब भी मजबूत थे, उसकी पीठ पर घूंसे बरसाने लगी।

"कसाइयों! वह चीख़ी। "तुम्हारी सजा मौत ही नहीं है... आने दो जरा हमारे सैनिकों को!"

"तेरी ऐसी की तैसी... तो तू फिर वहीं जाना चाहती है!" सोलिकोव्स्की गरजा और बूढ़े की गिड़गिड़ाहट को सुना-अनसुना करते हुए उसे उसी हालत में घर से बाहर घसीट लाया।

बूढ़े को उसके लिए शॉल और ओवरकोट फेंक देने का भी मुश्किल से ही मौक़ा मिल सका।

अध्याय 29

सेर्गेई को बुरी तरह मारा-पीटा गया, फिर भी वह चुप रहा। उसके घायल बाजू में बेहद दर्द हो रहा था, फिर भी उसके मुँह से उफ तक न निकली। और जब फेनबोंग ने उसके घाव में सलाख घुसेड़ी, तो उसने दाँत भींच लिये।

उसकी सहनशक्ति बड़े गजब की थी। उसे काल-कोठरी में डाल दिया गया और वह तुरन्त दीवारों को ठकठकाने लगा। वह पंजों पर खड़ा हुआ छत की एक दरार की जाँच करने लगा कि वह उसे चौड़ा कर सकता है, उसका कोई तख़्ता हटा सकता है और निकल सकता है या नहीं। यदि उसे कोठरी के बाहर निकल जाने का रास्ता मिल जाता, तो वह झट-से भाग जाता। वह बैठ गया और उन कमरों की खिड़कियों का क्रम याद करने की कोशिश करने लगा, जिनमें उससे पूछ-ताछ की गयी थी, उस पर जुल्म किया गया था। वह यह याद करने की कोशिश करने लगा कि गलियारे से अहाते को जानेवाले दरवाज़े में ताला लगा था या नहीं। काश, उसकी बाँह घायल न होती!... कुछ भी हो, वह हिम्मत हारनेवाला नहीं था। दोनेत्स पर तोपखाने की गरज कोठरियों तक में साफ़-साफ़ सुनायी पड़ रही थी।

सुबह उसका सामना वीत्या लुक्यांचेंको से हुआ।

"नहीं... मैं यही जानता था कि यह कहीं पास ही में रहता था, पर मैंने उसे देखा कभी नहीं," वीत्या लुक्योंचेंको सेर्गेई को देखा-अनदेखा करके बोला। उसकी गहरी और विनम्र आँखें ही सजीव-सी लग रही थी। सेर्गेई कुछ न बोला।

सैनिक वीत्या लुक्याँचेकों को हटा ले गये कुछ मिनटों बाद सोलिकोव्स्की सेर्गेई की माँ को ले आया।

उन्होंने ग्यारह बच्चों की माँ, उस बूढ़ी औरत के कपड़े फाड़े और उसे ख़ून से सने तख्त-पोश पर लिटाकर उस पर बेटे के देखते-देखते हण्टर बरसाने लगे। सेर्गेई ने मुँह नहीं फेरा।

इसके बाद माँ के सामने उस पर मार पड़ी और वह कुछ न बोला। फेनबोंग क्रोध से पागल हो उठा। उसने मेज पर से एक सब्बल उठाया और सेर्गेई के दूसरे बाजू की कोहनी तोड़ दी। सेर्गेई सफ़ेद पड़ गया और उसके माथे पर पसीना चुहचुहा आया।

"अब ख़त्म..." वह बोला।

उसी दिन जर्मन उस सारे दल को भी क़ैदखाने में ले आये, जिसे क्रोस्नोदोन की खनिज बस्ती में गिरफ़्तार किया गया था। उनमें से अधिकांश अब चलने-फिरने में असमर्थ हो चुके थे। उन्हें घसीट-घसीटकर उन कोठरियों में फेंका गया, जो ठसाठस भरी हुई थीं। कोल्या सुम्स्कोई कुछ चल-फिर तो सकता था किन्तु हण्टरों की चोट से उसकी एक आँख निकाल दी गयी थी। जो तोस्या येलिसेयेंकों कभी आकाश में उड़ते हुए कबूतर को देखते ही ख़ुशी से चीख़ उठी थी, वही अब केवल पेट के बल लेट सकती थी। इस जेल में लाने के पहले उसे दहकती अँगीठी पर बिठाया गया था।

जैसे ही क़ैदी लाये गये एक सिपाही लड़कियों वाली कोठरी में आया और ल्यूबा को ले गया। ल्यूबा तथा दूसरी सभी लड़कियों को विश्वास था कि उसे अभी मौत की सजा दी जानेवाली है... उसने अपने सहेलियों से विदा ली और बाहर निकल गयी।

किन्तु उसे प्राणदण्ड नहीं दिया जा रहा था। प्रादेशिक फेल्दकमाण्डाण्टुर मेजर-जनरल क्लेर के आदेश पर उसे रोवेन्की ले जाया रहा था। फेल्दकमाण्डाण्टुर स्वयं उससे पूछ-ताछ करना चाहता था।

उस दिन ज़ोरदार पाला पड़ रहा था। हवा बहने का नाम ही नहीं ले रही थी। क़ैदियों को पार्सल दिये जाने का दिन था। कुल्हाड़ी की खट-खट, कुएँ में बाल्टी की ठन-ठन, राहगीरों के पैरों की आहट, धूप और बर्फ से प्रकाशित शान्त वायुमण्डल में दूर दूर तक सुनायी पड़ती थी। येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना और ल्यूद्मीला क़ैदखाने में हमेशा साथ ही साथ पार्सल ले जाती थीं। उन दोनों ने खाने का बण्डल बनाया, वोलोद्या के लिए एक तकिया लिया और क़ैदखाने की लम्बी इमारत की ओर चल दीं। क़ैदखाने की इमारत की दीवारों के सफ़ेद थीं और छत पर बर्फ जमी थी और इस तरह वह आस-पास के वातावरण से घुले-मिल गयी थी। इमारत का साये में पड़नेवाला आधा भाग कुछ नीला पड़ गया था।

माँ और बेटी इतनी दुबली हो गयी थी कि इस समय वे हमेशा से ही अधिक एक जैसी लग रही थीं। और उनके बहनें होने का आसानी से भ्रम हो सकता था। माँ जो इतनी मुँहफट और तेज-तर्रार हुआ करती थी, इस समय बात-बात पर घबरा रही थी।

क़ैदखाने के बाहर औरतों की भीड़ लगी हुई थी। उनके पार्सल अभी उनके हाथों में थे और वे क़ैदखाने की ओर बढ़ने का कोई प्रयत्न न कर रही थीं। इससे और उनकी आवाज़ों से येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युदमीला को लगा कि दाल में कुछ काला है। जर्मन सन्तरी औरतों की भीड़ को अनदेखा करके हमेशा की तरह ड्योढ़ी के पास खड़ा था। भेड़ की खाल का पीला कोट पहने हुए एक पुलिसवाला रेलिंग पर बैठा था। पर वह कोई पार्सल न ले रहा था।

कौन-कौन-सी औरतें वहाँ मौजूद थीं, यह देखने के लिए येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना और ल्यूद्मीला को अपने इर्द-गिर्द निगाह दौड़ाने की कोई आवश्यकता न रह गयी थी, क्योंकि वे सब रोज ही मिला करती थीं।

जेम्नुखोव की माँ नाटे क़द की एक बूढ़ी-सी औरत थी। वह एक बण्डल और गठरी थामे सीढ़ियों के सामने खड़ी थी।

"थोड़ा-सा खाना ही ले जाओ..." वह गिड़गिड़ा रही थी।

"कोई ज़रूरत नहीं। उसे जितने खाने की ज़रूरत होगी, हम देंगे," बिना उसकी ओर देखे पुलिसवाले ने कहा।

"उसने मुझसे एक चादर माँगी थी..."

"आज उसे बढ़िया बिस्तर मिलेगा।"

येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना ड्योढ़ी तक गयी और रुखाई से पूछने लगी :

"तुम हमारे पार्सल क्यों नहीं ले रहे हो?"

पुलिसवाले ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया।

"हमें कोई जल्दी नहीं। हम यहाँ तब तक रहेंगी, जब तक कोई हमें जवाब देने नहीं आयेगा," येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना ने औरतों की भीड़ पर निगाह डालते हुए कहा।

अतः वे वहीं खड़ी रहीं। सहसा उन्हें अन्दर, क़ैदखाने के अहाते में ढेरों लोगों के क़दमों की आहट और किसी के फाटक खोलने की आवाज़ सुनायी दी। औरतें ऐसे मौक़ों पर कोठरियों की खिड़कियों पर निगाह डालने से न चूकती थी। कभी-कभी उनकी निगाह कोठरियों में बन्द अपने बेटे-बेटियों पर भी पड़ जाती थी। औरतों की भीड़ फाटक की बायीं ओर दौड़ पड़ी। तभी सार्जेण्ट बोल्मन सहित एक दस्ता बाहर निकला और औरतों को तितर-बितर करने लगा।

औरतें इधर-उधर हट गयीं, पर फिर लौट आयीं। बहुत-सी तो चिल्ला-चिल्लाकर रोने भी लगीं।

येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युदमीला कुछ दूर हटकर चुपचाप सब कुछ देख रही थीं।

"आज उन्हें मौत के घाट उतारा जायेगा," ल्युदमीला बोती।

"मेरी तो भगवान से यही प्रार्थना है कि वह अडिग रहें, इन कुत्तों के आगे काँपे नहीं, उनके मुँह पर थूकें," येलिजावेता अलेक्सेयेव्ना बोली। उसकी आवाज़ घुट रही थी और उसकी आँखें भयानक रूप से चमक रही थीं।

इस बीच उनके बच्चे अपने जीवन की सबसे अन्तिम और सबसे संकटपूर्ण परीक्षा से होकर गुजर रहे थे।

वान्या जेम्नुखोव ब्रूक्नेर के आगे खड़ा हुआ था। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे। उसके चेहरे से ख़ून टपक रहा था। उसका सिर एक ओर झुका जा रहा था, किन्तु वह उसे ऊपर उठाये रखने की पूरी कोशिश कर रहा था और आख़िर वह अपने इस प्रयत्न में सफल हुआ, और चार हफ़्तों की खामोशी के बाद पहली बार बोला।

"तो यह तुम्हारे बूते से बाहर है न?" वह बोला, "तुम्हारे बूते से बाहर। तुमने कितने ही देशों को हथिया लिया है... तुमने इज़्ज़त और अन्तःकरण को ताक पर रख दिया...फिर भी तुम कुछ नहीं कर सकते... तुम इतने मजबूत नहीं हो!"

और वह उन्हीं के सामने हँस पड़ा।

शाम देर गये दो जर्मन सिपाही ऊल्या को उसकी कोठरी में लाये। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। और उसकी चोटियाँ फर्श पर घिसट रही थीं। उन्होंने उसे दीवार पर पटक दिया। वह कराह उठी और करवट लेकर पेट के बल लेट गयी।

"प्यारी लील्या," उसने इवानीखिना से कहा, "मेरी पीठ पर से ब्लाउज़ उठा दो-बड़ी जलन हो रही है।"

लील्या स्वयं मुश्किल से ही हिल सकती थी, पर उसने आख़िर तक, नर्स की तरह, दूसरों की परिचर्या की। उसने ख़ून से सना ब्लाउज धीरे-से उलट दिया, तो भय से सिहर उठी और रोने लगी-ऊल्या की पीठ पर ख़ुदा हुआ पाँच कोनोंवाला एक सितारा जगमगा रहा था।

क्रास्नोदोन के लोग उस रात को तब तक न भूलेंगे, जब तक कि इस पीढ़ी का आख़िरी नामलेवा कब्र में नहीं पहुँच जायेगा। डूबता हुआ चाँद तिरछा लटका हुआ था। वह असाधारण रूप से स्वच्छ था, जगमगा रहा था। कोई भी व्यक्ति खुली स्तेपी में अपने इर्द-गिर्द मीलों दूर तक देख सकता था। पाला हड्डी में चुभता-सा लग रहा था। उत्तर में दोनेत्स नदी पर गोले फट रहे थे और युद्ध की गरज, कभी तेज और कभी मन्द पड़ती हुई, सुनायी पड़ रही थी।

क़ैदियों के सगे-सम्बन्धियों की उस रात पलकें तक न लगीं। वे लोग भी जग रहे थे, जिनका उनसे कोई रिश्ता न था। सभी जानते थे कि उस रात 'तरुण गार्ड' के सदस्यों को प्राणदण्ड दिया जायेगा। वे अपने दियों के आस-पास, अथवा घुप अँधेरे

में, अपने सर्द कमरों में बैठे हुए थे। जब तब कोई बाहर निकल जाता और सुनने लगता कि कहीं चीख़-पुकार, लारियों की गड़गड़ाहट या बन्दूकें दगने की आवाज़ें तो नहीं आ रही हैं।

कोठरियों में भी कोई न सोया था, सिवा उन लोगों के, जिन्हें इतनी मार पड़ी थी कि वे बेहोश हो गये थे। सब बाद जिन क़ैदियों को यंत्रणा दी गयी, उन्होंने बुरगोमिस्टर स्तात्सेंको को क़ैदखाने में आते हुए देख लिया। सभी जानते थे कि क़ैदियों को मौत को घाट उतारने से पहले बुरगोमिस्टर क़ैदखाने में आता था, क्योंकि इसके लिए उसके हस्ताक्षर की ज़रूरत पड़ती थी...

दोनेत्स से होकर आती हुई युद्ध-ध्वनि कोठरियों में प्रवेश कर रही थी।

अर्धलेटी ऊल्या ने सिर दीवार के सहारे टिकाकर लड़कों को ठकठकाकर बताया :

"सुन रहे हो, लड़कों सुन रहे हो न? हिम्मत रखो... हमारे सैनिक आ रहे हैं। कुछ भी हो, हमारे सैनिक आ रहे हैं..."

गालियारे में फ़ौजी बूटों की पटापट सुनायी दी। दरवाज़े फटाक से खुल रहे थे। क़ैदियों को गलियारे में निकाला गया और क़ैदखाने के अहाते से नहीं बल्कि मुख्य द्वार से होकर सड़क पर ले जाया गया। ओवरकोट या गर्म जैकेटें पहनकर बैठी हुई लड़कियाँ कनटोपियाँ पहनने और शॉल बाँधने में एक-दूसरे की मदद करने लगी। आन्ना सोपोवा फर्श पर निश्चेष्ट पड़ी थी। लील्या ने किसी प्रकार उसे कोट पहनाया। शूरा दुब्रोविना ने अपनी प्यारी सहेली माय्या की सहायता की। कुछ लड़कियों ने अपनी अन्तिम चिट्ठियाँ लिखकर कपड़ों में खोंस दी।

ऊल्या को आख़िरी पार्सल में अन्दर पहनने के नये कपड़े भेजे गये थे। वह अपने मैले कपड़ों का बण्डल बनाने लगी। सहसा उसकी आँखों में आँसू भर आये। वह उन्हें रोक न सकी और अपनी सिसकियों पर काबू पाने के लिए अपना मुँह ख़ून से सने कपड़ों में छिपाकर कई क्षणों तक निश्चेष्ट बैठी रही।

उन्हें चाँदनी में नहाये खुले मैदान में लाकर दो लारियों में भरा जाने लगा। सबसे पहले वे स्तखोविच को लाये और उसे झटके से लारी में पटक दिया। इस समय वह पूरी तरह असहाय और बेसुध हो रहा था। 'तरुण गार्ड' के बहुत-से सदस्य तो चल भी नहीं सकते थे। अनातोली पोपोव को उठाकर लाया गया। उसका एक पैर काट डाला गया था। जेन्या शेपेल्येव ओर रगोजिन वीत्या पेत्रोव को ले आये। उसकी आँखें निकाल दी गयी थीं। वोलोद्या ओस्मूखिन का दाहिना हाथ काट डाला गया था, फिर भी वह बिना किसी की सहायता के चल-फिर सकता था। तोल्या ओर्लोव और वीत्या लुक्याचेंकों वान्या जेम्नुखोव को उठाकर लाये। उनके पीछे घास के तिनके की तरह

हिलता हुआ सेर्गेई त्युलेनिन चला आ रहा था।

लड़कियों और लड़कों को अलग-अलग लारियों में भरा गया।

सैनिकों ने लारियों के तख्ते चढ़ा दिये और ठसाठस भरी लारियों में चढ़ गये। एन.सी.ओ. फेनबोंग पहली लारी के ड्राइवर के पास बैठ गया। दोनों लारियाँ सड़क से होती हुई खुले मैदान को पार करती चली गयीं और बच्चों के अस्पताल एवं वोरोशीलोव स्कूल से होकर गुजर गयीं। पहली लारी में लड़कियाँ बैठी थीं। ऊल्या, साशा बोन्दरोवा और लील्या गाने लगीं :

तुमने जाना कैसी पीड़ा है बन्धन
इसीलिए तो किया मृत्यु का अभिनन्दन

दूसरी लड़कियों ने भी सुर में सुर मिलाये । पीछे से लारी में बैठे युवक भी गा उठे। गाना शान्त, पालेदार हवा में दूर तक गूँजने लगा।

अन्तिम मकान पीछे छोड़कर, लारियाँ खान नं. 5 को जाने वाली सड़कर पर मुड़ गयीं।

सेर्गेई लारी की पिछाड़ी से सटा हुआ, पालेदार हवा को प्यासे की तरह खाये जा रहा था। वह सड़क पीछे रह गयी, जो नवनिर्मित गाँव की ओर जाती थी। शीघ्र ही लारियाँ खड्ड को भी पार करनेवाली थीं। नहीं, सेर्गेई जानता था कि वह अपनी कमज़ोरी के कारण ख़ुद भाग नहीं सकता। किन्तु अनातोली कोवल्योव में अब भी ताकत थी। इसीलिए उसके हाथ पीठ पर बँधे थे। वह सेर्गेई के सामने उकड़ूँ बैठा हुआ था। सेर्गेई ने उसे सिर लगाकर टहोका दिया। कोवल्योव ने पीछे मुड़कर देखा।

“अनातोली, हम खड्ड पर पहुँच ही रहे हैं,” सेर्गेई ने फुसफुसाकर कहा और सिर हिला दिया।

अनातोली ने पीछे देखा और अपने बँधे हुए हाथों को झकोरने लगा। सेर्गेई ने उसकी सहायतार्थ अपने दाँतों से गाँठ खोलना शुरू किया। वह इतना कमज़ोर था कि लारी के सहारे दम लेने के लिए उसे कई बार रुकना पड़ा। उसके माथे से पसीना बहने लगा। किन्तु वह उसी तरह जुटा रहा मानो ख़ुद ही अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहा हो। आख़िर गाँठ खुल गयी। अनातोली अपने हाथ पीछे ही रखे रहा, हाँ उन्हें थोड़ा हिला-डुला ज़रूर लिया।

वह कठोर प्रतिशोधक अब विद्रोह करेगा
हमसे उसका पलड़ा भारी कहीं रहेगा...

लड़के-लड़कियाँ गा रहे थे।

लारियाँ खड्ड में उतर चुकी थीं। सामने की लारी तो ढलान चढ़ रही थीं। दूसरी भी घरघराती और फिसलती हुई चढ़ने लगी थी। अनातोली उठकर नीचे कूद गया और बर्फ़ को रौंदता हुआ भागने लगा।

इससे पहले कि सैनिक कुछ कर पायें, तब तक लारियाँ ढलान पर चढ़ चुकी थीं। अनातोली उनकी निगाहों से ओझल हो चुका था। सैनिकों को लारी से कूदने की हिम्मत नहीं हो रही थी कि कहीं दूसरे क़ैदी भाग न जायें। वे वहीं से अलल-टप्पू गोलियाँ बरसाने लगे। फेनबोंग ने गोलियों की आवाज़ सुनी, लारी रोकी और बाहर निकल पड़ा। फिर वह उन्हें अपनी जनानी आवाज़ में कोसने लगा।

"भाग गया... भाग गया..." सेर्गेई विजय के उल्लास में चिल्ला उठा। फिर वह भद्दी से भद्दी गालियाँ देने लगा, किन्तु ऐसे मौक़े पर सेर्गेई के मुँह से निकलती गालियाँ भी पवित्र शपथ जैसी लग रही थीं।

खान न. 5 का इंजनघर अब दिखायी पड़ने लगा था। विस्फोट के कारण वह एक ओर को धँस गया था।

तरुण लोग कम्युनिस्टों का गीत 'इण्टरनेशनल' गाने लगे।

उन्हें खानों के पास बनें हम्माम की सर्द इमारत में ले जाकर ब्रूक्नेर, बाल्डेर ओर स्तात्सेंको के आने तक रखा गया। सिपाही उन लोगों के कपड़े और जूते उतारने लगे, जो अच्छी हालत में थे।

'तरुण गार्ड' के सदस्यों को अलविदा कहने का अवसर मिल गया। क्लावा कोवल्योवा वान्या के पास आ गयी और उसके माथे पर हाथ फेरने लगी। वह अन्त तक उसके साथ रही।

उन्हें छोटे-छोटे दलों में बाँटकर, एक-एक कर खान के गहरे गड्ढे में ढकेल दिया गया। हर क़ैदी दुनिया को अपना अन्तिम पैगाम देने की कोशिश कर रहा था।

गड्ढे में कई दर्जन लोग गिराये जा चुके थे। कहीं वे बच न जायें, इसलिए जर्मनों ने उन पर कोयले के दो वैगन झोंक दिये। किन्तु कराहने की आवाज़ें वहाँ से कई दिन तक आती रहीं।

फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव और ओलेग कोशेवोई, जिनके हाथों में हथकड़ी डाली गयी थी, फेल्दकमाण्डाण्टुर क्लेर के सामने खड़े थे। जब तक वे रोवेन्की में रहे, तब तक यह न जान सके कि वे एक ही क़ैदखाने में हैं। किन्तु आज सुबह उन्हें साथ-साथ लाया और बाँधा गया और उनसे इस आशा में पूछताछ की गयी कि वे सारे ख़ुफ़िया संगठन का-अकेले जिले ही में नहीं, वरन प्रदेश भर में-पर्दाफाश करेंगे।

उन्हें क्यों बाँधा गया था? पहली बात तो यह कि दुश्मन को उनसे डर था।

फिर दुश्मन यही दिखाना चाहता था कि इन दोनों ने ख़ुफ़िया संगठन में जो काम किया है, वह उससे अवगत है।

ल्यूतिकोव के सिर के सफ़ेद बाल ख़ून से सने थे, उसके फटे हुए कपड़े उसके विशाल शरीर के घावों में चिपक गये थे और उसकी एक-एक हरक़त उसे असह्य पीड़ा पहुँचा रही थी। किन्तु उसने किसी भी प्रकार इस पीड़ा का आभास न होने दिया। निर्मम अत्याचारों और भूख से उसका शरीर सूख गया था। उसके चेहरे की जो सुदृढ़ रेखाएँ उसकी जवानी में इतनी स्पष्ट थीं कि उसकी महान मानस-शक्तियों का परिचय देती थीं, वहीं इस समय बहुत अधिक गहरा गयी थी। उसकी आँखें हमेशा की तरह शान्त और कठोर थीं।

ओलेग की दाहिनी बाँह तोड़ दी गयी थी। अब वह एक ओर लटक रही थी। उसके चेहरे में तो कोई खास तब्दीली नहीं आयी थी।, हाँ उसकी कनपटी के बाल ज़रूर सफ़ेद पड़ गये थे। गहरी सुनहरी बरौनियों से ढ़की उसकी बड़ी-बड़ी आँखें पहले से अधिक स्वच्छ थीं।

इस प्रकार वे फेल्दकमाण्डाण्टुर क्लेर के सामने खड़े रहे। दोनों ही जनता के नेता थे-एक बूढ़ा था, दूसरा जवान।

फल्दकमाण्डाण्टुर क्लेर लोगों की जानें ले-लेकर बड़ा कठोर हो गया था। इसके अतिरिक्त कुछ करने की उसमें योग्यता भी नहीं थी। उसने उन पर बड़े निर्मम अत्याचार किये, किन्तु उन्हें तो जैसे किसी चीज़ की भी अनुभूति न होती थी-उनकी आत्माएँ उन अनन्त ऊँचाइयों तक पहुँच चुकी थीं, जहाँ तक मानव की महान सृजनशील आत्मा ही पहुँच सकती है।

इसके बाद उन्हें एक-दूसरे से अलग किया गया और ल्यूतिकोव को क्रास्नोदोन की जेल में भेज दिया गया। केन्द्रीय वर्कशाप के मामले की जांच जारी थी।

ख़ुफ़िया रूप से काम करनेवाले साथी बन्दियों की मदद करने में असमर्थ थे, कारण, जेल पर भारी पहरा रहता था और नगर में दुश्मन की पीछे हट रही फ़ौजों के सिपाही भरे पड़े थे।

फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव, निकोलाई बराकोव और दूसरे साथियों का वहीं अंजाम हुआ, जो 'तरुण गार्ड' के सदस्यों का हुआ था-उन्हें भी खान न. 5 के गहरे गड्ढे में ढकेला गया।

ओलेग कोशेवोई को 31 जनवरी की दोपहर को रोवेन्की में गोली मारी गयी। उसका शरीर, उसी दिन मौत के घाट उतारे गये अन्य साथियों की लाशों के साथ एक ही गड्ढे में दफ़ना दिया गया।

जर्मन 7 फरवरी तक ल्यूबा शेव्सोवा पर अत्याचार करते रहे, जिससे किसी

प्रकार कोड और वायरलेस ट्रांसमिटर का पता लगाया जा सके। गोली से मारे जाने के पहले उसने अपनी माँ को यह परचा भेज दिया :

"अलविदा माँ, तुम्हारी बेटी ल्यूबा धरती-माँ की गोद में समाने जा रही है।

उधर दुश्मन उसे गोली मारने के लिए जा रहे थे इधर वह अपना एक प्रिय गाना गा रही थी :

चौड़े-चौड़े मास्को के विस्तारों में...

एस.एस. राटेनफ़्यूरर चाहता था कि ल्यूबा झुककर गोली गर्दन के पिछले भाग पर खाये। किन्तु उसने घुटने टेकने से इनकार किया और गोली चेहरे पर खायी।

अध्याय 30

वान्या तुर्केनिच और ओलेग को पोलीना गेओर्गियेव्ना की मार्फत पता देते समय ल्यूतिकोव ने बता दिया था कि वह इस बात को गुप्त रखे। वह जानता था कि मार्फा कोर्नियेंको, जिसके पास उन्हें जाना था, प्रोत्सेंको अथवा उसकी पत्नी को उनके आने की सूचना दे देगी। फिर वे अपने आप ही समझ लेंगे कि इन 'तरुण गार्ड' के नेताओं का इस्तेमाल कैसे किया जाये।

इस सबसे अधिक गुप्त पते को ओलेग और तुर्केनिच को बता देने का ल्यूतिकोव का निश्चय इस बात का प्रमाण था कि उसे इन दोनों में कितना विश्वास था, कि वह उनकी कितनी कद्र करता था, कि उसे उनकी कितनी चिन्ता थी।

यद्यपि पोलीना गेओर्गियेव्ना ने ओलेग को यह बात न बतायी थी कि ल्यूतिकोव और तुर्केनिच को कहाँ भेज रहा है, फिर भी वान्या ने यह ज़रूर समझ लिया था कि उन्हें छापामारों के पास भेजा जा रहा है।

'तरुण गार्ड' दल के सदस्यों में सिर्फ़ वह और मोस्कोव ही प्रौढ़ थे। वान्या तुर्केनिच और उसके साथियों को अपने मित्रों की गिरफ़्तारी से बहुत बड़ी चोट पहुँची। उसकी सारी मानसिक शक्तियाँ एक ही समस्या पर केन्द्रित हो गयीं कि उन लोगों को किस प्रकार आज़ाद कराया जाये। किन्तु, अपने साथियों की तुलना में तुर्केनिच ने घटनाओं को वास्तविक दृष्टिकोण से देखा था। वह अपने दोस्तों की व्यावहारिक रूप से मदद करना चाहता था।

अपने मित्रों को छुड़ाने का सबसे सीधा रास्ता छापामारों से जुड़ा हुआ था। तुर्केनिच जानता था कि सोवियत सेनाएँ वोरोशीलोवग्राद प्रदेश में घुस चुकी हैं और क्रास्नोदोन में सशस्त्र विद्रोह की तैयारियाँ हो रही हैं। उसे इस बात में ज़रा भी सन्देह

न था कि सैनिक अनुभव होने के नाते उसे भी एक दस्ता अथवा उसका गठन करने का मौक़ा दिया जायेगा। उसने बिना किसी संकोच के उस पते का इस्तेमाल किया, जो ओलेग ने उसे दे रखा था।

उसका अनुमान था कि पुलिस को उसके नाम का पता चल गया होगा, इसीलिए उसने अपने साथ कोई परिचय-पत्र न लिया। उसके पास जाली कागजात थे ही नहीं और ऐसे कागजात बनाने के लिए समय भी न था। इस प्रकार वह उत्तर की ओर चल पड़ा। बचपन से ही उसकी बायीं कलाई पर उसके नाम का प्रथमाक्षर गोदा हुआ था, अतएव उसने उसी नाम से चलने का निश्चय किया था, पर उसने अपना उपनाम क्रपीविन रख लिया।

वह कठिन परिस्थिति में पड़ गया था। अपनी सूरत-शक्ल अथवा उम्र से वह ऐसा आदमी न लगता था, जो मोर्चे के बिलकुल निकट बिना किसी कागज-पत्र अथवा काम-धन्धे के मटरगश्ती कर सकते हैं। गेस्टापों या पुलिस के हाथों में पड़ जाने पर उसने रोस्ताव प्रदेश स्थित ओल्खोव रोग से लाल सिपाहियों के डर से भाग जाने का बहाना बनाने की सोची। वह उन्हें बतायेगा कि इसीलिए उसे अपने साथ कागज-पत्र लाने का मौक़ा न मिला-ऐसी सफाई से उसकी जान बच ज़रूर सकती थी। लेकिन इसका नतीजा यह होगा कि उसे जर्मन सेनाओं के पृष्ठभाग में काम करना पड़ेगा या फिर जर्मनी भेज दिया जायेगा।

वान्या उन गाँवों को छोड़ता हुआ, जहाँ उसे पुलिस के हाथों पड़ जाने का सन्देह रहता था, बराबर रात-दिन चलता रहा। जब उसे यह सन्देह होता कि लोगों का ध्यान उसकी ओर जा सकता है, तो वह दिन में कहीं छिप जाता और रात भर चलता रहता। उसे सर्दी और भूख सता रही थी। मानसिक कष्टों ने उसकी आत्मा को मजबूत बना दिया था। उसकी सहनशक्ति निराली ही थी, जो एक जवान रूसी कामगार की विशेषता होती है। तिस पर वह देशभक्त युद्ध की कसौटी पर खरा उतर चुका था।

इस प्रकार वह मार्फा कोर्नियेंको के घर पहुँच गया।

गाँव भर में दुश्मनों की टुकड़ियाँ थीं। और दवीदोवो, मकारोव यार आदि पास-पड़ोस की खेतिहर बस्तियों में थी। उत्तरी दोनेत्स के किनारों पर मजबूत किलेबन्दियाँ बनायी जा रही थीं। इनकी वजह से वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी और दक्षिणी भाग अलग हो गये। अतः मार्फा और प्रोत्सेंको के बीच सम्पर्क बनाये रखना प्रायः असम्भव हो गया। वैसे अब उसकी कोई आवश्यकता न रह गयी थी। वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी जिलों के छापामार दस्ते लाल सेना के निकट सम्पर्क में आ चुके थे और उन यूनिटों की कमान में लड़ रहे थे, न कि प्रोत्सेंको के अधीन। दक्षिणी जिलों के दस्ते फरवरी के मध्य में ही मोर्चे के प्रसार क्षेत्र के अन्दर आ सके

थे। वे अब परिस्थिति के अनुसार कार्य कर रहे थे। प्रोत्सेंको उनसे बीसियों मील दूर था और उन छापामार दस्तों की कार्रवाइयों का संचालन नहीं कर सकता था।

प्रोत्सेंको बोलोवोद्स्क बस्ते से सम्बद्ध था। इस दस्ते ने गोरोदीश्ची गाँव में स्थित अपना अड्डा छोड़ दिया था, क्योंकि गाँव पर अब जर्मनों का अधिकार था। दस्ते का अब कोई स्थायी अड्डा न रह गया था और वह सोवियत कमान के निर्देशों के अनुसार जर्मन सेना के पृष्ठभाग में काम कर रहा था। मार्फा का प्रोत्सेंको और अपने पति से कोई सम्पर्क न रह गया था। उसका कोर्नेई तीखोनोविच और मित्याकिंस्काया दस्ते के किसी अन्य व्यक्ति से भी सम्बन्ध टूट चुका था। इस दस्ते ने भी अपना अड्डा छोड़ दिया था-जर्मन वहाँ अब किलेबन्दी कर रहे थे। येकतेरीना पाव्लोव्ना प्रोत्सेंको पिछले कुछ समय से वोरोशीलोवग्राद में रह रही थी और उसके साथ किसी भी प्रकार का सम्पर्क टूट गया था। ऐसे ही समय वान्या तुर्केनिच मार्फा के घर पहुँचा।

वान्या और मार्फा का एक-दूसरे से मिलना इसीलिए सम्भव हो सका कि वान्या ने पूरे साहस और सूझ-बूझ से काम लिया था। फिर यह भी ख़ुशक़िस्मती ही थी कि मार्फा ने उस पर, उसके शब्दों पर विश्वास किया था। मार्फा ने शुरू में उसकी शान्त, गम्भीर आँखों की ओर कृत्रिम उदासीनता के भाव से देखा। उसके थके हुए और झुर्रियों से भरे दुबले-पतले चेहरे को देखते ही वह बड़ी प्रभावित हुई। उसने तुरन्त और बिना गलती किये उस पर उसी तरह विश्वास किया जैसे केवल स्लाव नारी ही कर सकती है। बेशक उसने वान्या को तुरन्त ही यह नहीं मालूम होने दिया कि वह उस पर भरोसा करती है, लेकिन फिर एक और चमत्कारपूर्ण घटना घटी। यह सुनने पर कि उसका नाम मार्फा कोर्नियेंको है, वान्या को गोर्देई कोर्नियेंको का नाम याद आ गया, जिसे युद्ध-बन्दी कैम्प से छुड़ाने से सम्बन्धित घटना उसे वान्या जेम्नुखोव और उन दूसरे लोगों ने बतायी थी, जिन्होंने उस कार्रवाई में भाग लिया था। उसने मार्फा से पूछा : "क्या गोर्देई आपका कोई रिश्तेदार है?"

"मान लो है, तो क्या?" वह बोली और सहसा उसकी युवा आँखों में चमक आ गयी।

"उसे हमारे ही 'तरुण गार्ड' के लड़कों ने छुड़ाया था।" और उसने उसे सारी घटना सुना दी।

उसके पति ने उसे यह कहानी कई बार सुनायी थी। मुक्तिदाताओं के प्रति उसे अपना नारी-सुलभ, ममताभरा आभार प्रकट करने का अवसर अब तक न मिल पाया, इसलिए उसने वान्या तुर्केनिच के आगे दिल खोलकर रख दिया-शब्दों या भावों से नहीं, बल्कि उसे गोरोदीश्ची के अपने सम्बन्धियों का पता देकर।

"वहाँ से मोर्चा बिलकुल निकट है। वे लोग तुम्हें उसे पार करने में पूरी मदद

देंगे," उसने वान्या से कहा।

वान्या ने हामी भरी। वह मोर्चा पार करना नहीं, बल्कि उन छापामारों से मिलना चाहता था, जो सोवियत सेनाओं की मदद कर रहे थे। वहाँ वह उन छापामारों से आसानी से मिल सकता था।

उन्होंने ये सारी बातें गाँव में नहीं, एक पहाड़ी के पीछे खुली हुई स्तेपी में कीं। झुटपुटा होने को था। मार्फा ने वादा किया कि वह किसी ऐसे आदमी को भेज देगी, जो उसे रात में दोनेत्स के पार ले जायेगा। वान्या ने संकोच और स्वाभिमानवश मार्फा के आगे खाने का उल्लेख न किया। किन्तु मार्फा ऐसी चीज़ें भूलनेवाली औरत न थी। नाटे क़द का एक बूढ़ा-वही जिसने इवान प्रोत्सेंको से कपड़ों की अदला-बदली की थी-अपनी टोपी में चर्बी और कुछ रस्क ले आया। उस बूढ़े बातूनी ने फुसफुसाते हुए वान्या को समझाया : "मैं तुम्हारे साथ दोनेत्स को पार नहीं करूँगा, क्योंकि इस समय नदी पार करना खतरे से खाली नही, तिस पर किसी छापामार के साथ। पर मैं तुम्हें वह रास्ता ज़रूर दिखा दूँगा, जहाँ नदी पार करना सबसे आसान है।"

वान्या तुर्केनिच ने नदी पार की। कुछ दिनों बाद वह चूगिंका गाँव पहुँचा, जो गोरोदीश्ची के दक्षिण में कोई बीस मील दूर था। जगह-जगह दुश्मन की किलेबन्दियाँ थीं। उसने वहाँ बड़े पैमाने पर जर्मन सेनाओं का आना-जाना देखा। स्थानीय निवासियों से उसने पता लगा लिया कि चूगिंका में एक छोटी-सी पुलिस-चौकी थी और जर्मन तथा रूमानियाई दस्ते प्रायः गाँव से होकर गुजरा करते थे। उसे यह भी बताया गया कि चूगिंका देर्कूल और कमीश्नाया नदियों के संगम-स्थल पर बसे वोलोशिनो गाँव से सबसे नजदीक था। सोवियत सेनाएँ वोलोशिनो पर अधिकार कर चुकी थीं। वान्या ने किसी भी दशा में चूगिंका में घुसने का निश्चय किया, क्योंकि उसका ख़याल था कि ग्रामवासी सोवियत सेनाओं के सम्पर्क में होंगे ही।

किन्तु उसे असफलता ही हाथ लगी-उसे गाँव के निकट पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया। उसे ग्राम परिषद के भवन में ले जाया गया। वहाँ जर्मनों की सेवा करनेवाले रूसी पुलिसवालों का कल्पनातीत पतन हो रहा था। वे सब के सब नशे में इतने चूर थे कि पूछिये मत।

वान्या के सारे कपड़े उतार डाले गये, उसके हाथ-पैर बाँधे गये और उसे एक तहखाने में डाल दिया गया, जिसकी दीवारें बेहद ठण्डी थीं। वह अपनी यात्रा, तरह-तरह की कठिनाइयों और इस अन्तिम घटना से बुरी तरह थक गया था और सर्दी से काँप रहा था। उस दुर्गन्धपूर्ण तहख़ाने के मिट्टी के फर्श पर रेंग-रेंगकर उसे एक जगह गन्दी दरी पड़ी मिली और वह उसी पर लेटकर सो गया।

उसकी नींद एक कार की आवाज़ से टूटी। उसे लगा मानो बन्दूक से गोलियाँ

छूट रही हों। तभी उसे कई लारियों के इंजनों की घरघराहट सुनायी दी। तहखाने की छत हिलने लगी, दरवाज़ा खुला और सुबह के धुँधले प्रकाश में वान्या ने देखा कि सोवियत सैनिक गहरे रंग की फतूहियाँ पहने, हाथों में टामी-गनें उठाये, कोठरी में प्रवेश कर रहे हैं। आगे-आगे एक सार्जेण्ट जा रहा था। उसने अपनी टार्च की रोशनी वान्या पर फेंकी।

वान्या को उस सोवियत गश्ती टुकड़ी ने मुक्त किया, जो जर्मनों से तीन बख़्तरबन्द गाड़ियाँ छीनकर गाँव में घुस आयी। सभी पुलिसवालों को गिरफ़्तार कर लिया गया। इनके अलावा गाँव में जर्मन सैनिकों की एक कम्पनी भी तैनात थी-एक अफ़सर, एक रसोइया और पाँच सैनिक। रसोइये ने खाना बनाना शुरू ही किया था कि जर्मन बख़्तरबन्द गाड़ियाँ आ गयीं। वह जरा भी न घबराया, बल्कि सावधान की मुद्रा में खड़ा हो गया। उसे लगा शायद जर्मन अफ़सर आये हों। पर अपनी गिरफ़्तारी के कुछ मिनट बाद उसने बड़ी ख़ुशी से वह जगह दिखायी, जहाँ कम्पनी कमाण्डर सो रहा था। वह बनावटी फेल्ट के बड़े-बड़े बूटों में आगे-आगे जा रहा था और उसके पीछे-पीछे सोवियत टामीगनर जा रहे थे। कभी-कभी वह चतुरता से आँख मारा करता और होंठों पर उँगली रखकर कहता "र-र-श"..."

गश्ती यूनिट को पेट्रोल की कमी के कारण अपनी मुख्य यूनिट में लौटना था। इस यूनिट के कमाण्डर सीनियर लेफ़्टिनेण्ट ने कहा कि तुर्केनिच उन्हीं के साथ जाये। किन्तु वान्या ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। स्थानीय लोग बख़्तरबन्द गाड़ियों को घेरे खड़े थे और लाल सैनिकों से गिड़गिड़ाते हुए कह रहे थे कि वे गाँव छोड़कर न जायें। पता चला कि एक ऐसा आदमी भी है, जो उन्हें छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहता... लोग? यहाँ बहुत-से लोग हैं। वे सब के सब उसके दस्ते में शामिल हो जायेंगे। और हथियार? बस, उन्हें जर्मन कम्पनी से मिली हुई बन्दूकें भर दे दो, बाक़ी का वे स्वयं इन्तज़ाम कर लेंगे। हाँ, कमीश्नाया में तैनात सोवियत यूनिटों से सम्पर्क स्थापित करवा दो...

इस प्रकार इवान क्रपीविन के छापामार दस्ते का गठन हुआ, जिस ने बाद में सारे इलाके में बड़ा नाम कमाया। एक सप्ताह बाद इस दस्ते में कोई चालीस व्यक्ति हो गये। उनके पास तोपखाने को छोड़कर बाक़ी सभी क़िस्म के आधुनिकतम हथियार थे। दस्ते ने अपना अड्डा अलेक्सान्द्रोवो गाँव के डेरी फार्म पर बनाया और उस जिले की रक्षा करने लगा, जिसके अन्तर्गत जर्मन मोर्चे के निकटतम पृष्ठभाग में कई गाँव आते थे। जर्मन उस इलाके से इवान क्रपीविन के दस्ते को खदेड़ न सके। अन्ततः सोवियत सेनाएँ भी वहीं आ गयीं।

फिर भी वान्या 'तरुण गार्ड' को मदद न दे सका। इस भाग का मोर्चा 20

जनवरी तक निश्चेष्ट-सा बना रहा। सोवियत सेनाएँ फरवरी में ही उत्तरी दोनेत्स को पार कर सकीं। सबसे पहले उन यूनिटों ने नदी पार की, जो नदी के ऊपरी क्षेत्रों-क्रास्नी लिमान, इज्यूम और बलक्लेया में जर्मनों से जूझ रही थीं।

'तरुण गार्ड' के अधिकांश सदस्यों को कितनी निर्ममता के साथ मौत के घाट उतारा गया था, इसके सम्बन्ध में वान्या कुछ भी न जानता था। क्रास्नोदोन की ओर सेनाओं की चढ़ाई में जितना विलम्ब होता गया, उसके हृदय की पीड़ा और व्यथा उतनी ही अधिक बढ़ती गयी तथा उसकी आँखों के सामने उसके साथियों का उतना ही स्वच्छ, उतना ही निष्कलुष चित्र उभरता गया।

एक बार कुछ दूध दोहनेवाली लड़कियों ने उसके एक आदेश का पालन करने में आनाकानी की और साफ़-साफ़ बताया कि उन्हें जर्मन फासिस्टों से डर लगता है। पर क्रपीविन यानी वान्या तुर्केनिच ने बस इतना ही कह दिया :

"अरे लड़कियो! तुम्हारा यह व्यवहार सोवियत लड़कियों को शोभा देता है क्या?"

फिर सब कुछ भूलकर उसने उन्हें ऊल्या ग्रोमोवा, ल्यूबा शेव्सोवा तथा उनकी अन्य सहेलियों के बारे में सुनाया। लड़कियाँ वान्या की आँखों की चमक देखती रह गयीं। उन्हें अपने ऊपर शर्म आयी। अचानक वान्या चुप हो गया और अपनी बात अधूरी छोड़कर चलता बना।

फरवरी में ही वान्या तुर्केनिच के दस्ते ने लाल सेना की एक यूनिट के साथ मिलकर उत्तरी दोनेत्स को पार किया और क्रास्नोदोन के क़रीब आ गया।

इस बीच भागती हुई जर्मन सेना क्रास्नोदोन के लोगों पर बराबर जुल्म ढाये जा रही थी। एस. एस. यूनिटों ने नगरवासियों को लूटा, उन्हें उनके घरों से निकाल बाहर किया और नगर तथा जिले की सभी बड़ी-बड़ी इमारतें, खानें और फैक्ट्रियाँ उड़ा दीं।

लाल सेना के क्रास्नोदोन और वोरोशीलोवग्राद में प्रवेश करने से कोई एक सप्ताह पहले ही ल्यूबा शेव्सोवा की मृत्यु हुई थी। 15 फरवरी को सोवियत टैंकों ने दुश्मन का मोर्चा तोड़कर क्रास्नोदोन में प्रवेश किया और उसके तुरन्त ही बाद नगर में सोवियत शासन की पुनःस्थापना हुई।

खनिक कई दिनों तक खान नं. 5 में से कम्युनिस्टों तथा 'तरुण गार्ड' के सदस्यों की लाशें निकालते रहे। लोगों की बहुत बड़ी भीड़ वहाँ खड़ी रही। मृतकों की माताएँ और पत्नियाँ गड्ढों के पास बराबर खड़ी रहीं और अपने लाड़लों तथा पतियों की क्षत-विक्षत लाशें सँभालती रहीं।

जब येलेना निकोलायेव्ना रोवेन्की पहुँची, तब ओलेग अभी जीवित था। पर वह बेटे के लिए कुछ भी न कर सकी। ओलेग को तो यह भी न मालूम हो सका कि

उसकी माँ बिलकुल निकट ही थी।

और अब ओलेग की माँ और अन्य सम्बन्धियों के देखते-देखते रोवेन्की के निवासियों ने गड्ढो में से ओलेग और ल्यूबा की लाशें निकालीं।

येलेना निकोलायेव्ना कोशेवाया को तो पहचानना तक मुश्किल हो गया था। वह दुबली और बूढ़ी हो गयी थी। उसके धँसे गाल और आँखें उन बड़े कष्टों की प्रतीक थीं, जो दृढ़स्वभाव लोगों को विशेषतया झँझोड़कर रख देते हैं। वह पिछले कुछ महीनों से अपने बेटे के कामों में हाथ बँटाती रही थी। उसके बेटे की दर्दनाक मौत ने उसे मार्मिक पीड़ा पहुँचायी थी। किन्तु इन्हीं व्यथाओं ने, उसकी आध्यात्मिक शक्तियों को जगा दिया था और उसे अपने व्यक्तिगत दुख से बहुत ऊपर उठा दिया था। ऐसा लग रहा था कि उसकी आँखों से तुच्छ दैनिक जीवन का वह परदा उठ गया है, जिसने उसकी आत्मा से मानव प्रयासों, संघर्षों, उत्साहों और उत्तेजनाओं के संसार को छिपा रखा था। अब वह अपने बेटे के चरण-चिह्नों पर चलकर इस संसार में प्रवेश कर चुकी थी और उसके सामने जन-सेवा का विशाल पथ प्रशस्त हो गया था।

इन्हीं दिनों जर्मनों का एक और अपराध प्रकाश में आया-पार्क में खनिकों की क़ब्र खोदी गयी। उसमें सभी लाशें सड़ी हुई दशा में मिलीं-पहले सिर दिखायी दिये, फिर कन्धे, फिर धड़ और अन्ततः हाथ-पैर। इनमें वाल्को, शुल्गा, पेत्रोव और एक औरत की भी लाशें थीं, जिसके हाथ में बच्चा था।

'तरुण गार्ड' के सदस्यों और उनके बुजुर्ग साथियों को दो क़ब्रों में दफ़नाया गया, जो पारस्परिक बन्धुत्व की परिचायक थीं।

लाशें दफ़नाने के समय क्रास्नोदोन ख़ुफ़िया संगठन और 'तरुण गार्ड' के सभी जीवित सदस्य उपस्थित थे-इवान तुर्केनिच, वाल्या बोर्त्स, जोरा अरुत्युन्यात्स, ओल्या और नीना इवान्त्सोवा, रादिक युर्किन आदि।

तुर्केनिच की यूनिट क्रास्नोदोन के बाहर मिऊस नदी की ओर बढ़ चुकी थी, किन्तु उसे कुछ समय के लिए छुट्टी मिल गयी, ताकि वह अपने अभिन्न मित्रों को अलविदा कह सके।

वाल्या बोर्त्स कामेंस्क से अपने घर लौट आयी थी। इसके बाद उसकी माँ ने उसे वोरोशीलोवग्राद में अपने परिचितों के घर भेज दिया। जब लाल सेना ने नगर में प्रवेश किया, तो वाल्या वहीं पर थी।

सेर्गेई लेवाशोव भी बच नहीं पाया। उसे उस समय मार डाला गया, जब वह मोर्चा पार करने का प्रयत्न कर रहा था।

स्त्योपा सफोनोव भी मौत को गले लगा चुका था। वह कामेंस्क के उस भाग में था, जिस पर लड़ाई की पहली ही रात में लाल सेना का क़ब्ज़ा हो गया। वह लाल

सेना के एक दस्ते में शामिल हो गया और लड़ते-लड़ते मारा गया।

लारी से कूदने के बाद अनातोली कोवल्योव को कुछ समय तक नवनिर्मित गाँव के एक मज़दूर ने अपने घर में छिपाये रखा। अनातोली का सारा शक्तिशाली शरीर मार-पीट के कारण एक बड़ा-सा घाव लग रहा था। उसकी मरहम-पट्टी किये जाने की कोई सम्भावना न थी। उसे केवल गर्म पानी से धोकर एक चादर में लपेट दिया गया था। वह कई दिनों तक छिपा रहा, किन्तु उसका वहाँ अधिक समय तक रहना खतरे से खाली न था। वह अपने सम्बन्धियों के यहाँ दोनबास के एक भाग में चला गया, जो अभी तक आज़ाद न हुआ था।

इवान प्रोत्सेंको और उसका दस्ता भागते हुए जर्मनों के साथ तब तक मोर्चा लेता रहा जब तक कि लाल सेना ने वोरोशीलोवग्राद पर अधिकार न कर लिया। यहाँ प्रोत्सेंको की भेंट अपनी पत्नी कात्या से हुई-गोरोदीश्ची के बाहर उनके बिछुड़ने के बाद पहली बार।

प्रोत्सेंको के आदेश पर कोर्नेई तीखोनोविच सहित छापामारों के एक दस्ते ने मित्याकिन्स्काया के निकट पत्थरों की एक खान में से वही प्रसिद्ध गाजिक कार खोद निकाली। कार ठीक दशा में थी। उसकी पेट्रोल की टंकी भरी थी, बल्कि पेट्रोल का एक फालतू टीन भी उसी में रखा था। यह कार उसी युग की तरह अमर लग रही थी, जिसने उसे जन्म दिया था।

इवान प्रोत्सेंको और कात्या 'गाजिक' में क्रास्नोदोन आये। रास्ते में उन्होंने गोर्देई कोर्नियेंको को कार में बिठाकर उसे उसकी पत्नी मार्फा के पास छोड़ दिया। वहाँ उन्हें मार्फा से गाँव में जर्मनों के आख़िरी दिनों की कहानी सुनने को मिली।

गाँव पर सोवियत सेनाओं का क़ब्ज़ा होने से एक दिन पहले मार्फा और वही बूढ़ा देहाती, जो कभी कोशेवोई के रिश्तेदारों को अपनी गाड़ी में ले गया था और जिसने प्रोत्सेंको को अपने कपड़े दिये थे, ग्राम्य परिषद की इमारत में गये। इसी इमारत में पुलिसवाले और दोनेत्स के उस पार से भागकर आनेवाले जर्मन सिपाही ठहरे हुए थे। वहाँ गाँववालों की भीड़ जमा हो गयी। सब यह खबर सुनने को बेचैन हो रहे थे कि लाल सेना कितनी दूर है। उन्हें भगोड़े फासिस्टों की दशा की देखने में भी मजा आ रहा था।

मार्फा और बूढ़ा देहाती वहीं खड़े रहे कि एक पुलिस अधिकारी स्लेज गाड़ी पर वहाँ आया। उसने कूदकर, वहशियाना ढंग से इधर-उधर देखते हुए बूढ़े से पूछा :

"हर चीफ कहाँ है?"

बूढ़े ने आँखें सिकोड़कर कहा :

"हर चीफ! लगता है कामरेड आ रहे हैं!"

पुलिस अधिकारी गालियाँ देने लगा, किन्तु वह इतनी जल्दी में था कि बूढ़े को मारा तक नहीं।

जर्मन, मुँह में ग्रास चबाते हुए, झट-से इमारत से निकले और स्लेज गाड़ियों पर बैठकर अपने पीछे बर्फ के बादल उड़ाते हुए भाग गये।

दूसरे दिन गाँव में लाल सेना ने प्रवेश किया।

इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेंको एवं कात्या वीरगति को प्राप्त कम्युनिस्टों और 'तरुण गार्ड' के सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित करने आये।

प्रोत्सेंको को वहाँ एक और काम भी था-उसे क्रास्नोदोन कोयला ट्रस्ट तथा खानों की व्यवस्था ठीक करनी थी। इसके अलावा वह वयस्क ख़ुफ़िया कामगारों और 'तरुण गार्ड' के सदस्यों की मौत के सारे ब्योरे जानना चाहता था, और यह भी कि उनके हत्यारों का क्या हुआ।

स्तात्सेंको और सोलिकोव्स्की किसी प्रकार अपने मालिकों के साथ भाग गये थे, किन्तु इंस्पेक्टर कुलेशोव को लोगों ने पहचान लिया था। उसे रोककर सोवियत न्याय अधिकारियों के हवाले कर दिया गया था। उसी से यह पता चला कि 'तरुण गार्ड' के साथ गद्दारी करने में वीरिकोवा और ल्याद्स्काया का कितना हाथ था और स्तखोविच के बयान ने कितना काम किया था।

मृत कम्युनिस्टों और 'तरुण गार्ड' के सदस्यों की क़ब्रों पर उनके बचे हुए साथियों ने उनका बदला लेने का प्रण किया। उनकी क़ब्रों पर लकड़ी के अस्थायी स्तूप खड़े कर दिये गये। प्रौढ़ ख़ुफ़िया बोल्शेविकों की क़ब्र के स्तूप पर फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव और बराकोव सहित सभी वीरों के नाम अंकित किये गये। 'तरुण गार्ड' वाले स्तूप पर उन सभी वीरों के नाम अंकित किये गये, जिन्होंने दल के निर्देशन में लड़ते हुए मातृभूमि के लिए अपने प्राण निछावर किये थे। उनके नाम इस प्रकार हैं :

आलेग कोशेवोई, इवान जेम्नुखोव, ऊल्याना ग्रोमोवा, सेर्गेई त्युलेनिन, ल्यूबोव शेव्त्सोवा, अनोतोली पोपोव, निकोलाई सुम्स्कोई, व्लादीमिर ओस्मूखिन, अनातोली ओर्लोव, सेर्गेई लेवाशोव, स्तेपान सफोनोव, विक्टर पेत्रोव, अन्तोनीना येलिसेयेंको, विक्टर लुक्यांचेंको, क्लाव्दिया कोवल्योवा, माय्या पेग्लिवानोवा, अलेक्सान्द्रा बोन्दरेवा, वसीली बोन्दरेव, अलेक्सान्द्रा दुब्रोविना, लीदिया अन्द्रोसोवा, अन्तोनीना माश्चेंको, येव्गेनी मोश्कोव, लील्या इवानीखिना अन्तोनीना इवानीखिना, बोरीस ग्लवान, व्लादीमिर रगोजिन, येव्गेनी शेपेल्येव, आन्ना सोपोवा, व्लादीमिर ज्दानोव, वसीली पिरोज्होक, सेम्योन ओस्तापेंको, गेन्नादी लुकाशेव, अंगेलीना समोशिना, नीना मिनायेवा, लेओनीद

दादिशेव, अलेक्सान्द्र शीश्चेंको, अनातोली निकोलायेव, देम्यान फ़ोमीन, नीना गेरासिमोवा, गेओर्गी श्चेरबाकोव, नीना स्तार्त्सेवा, नदेज्दा पेत्ल्या, व्लादीमिन कुलिकोव, येव्गेनिया कीइकोवा, निकोलाई जूकोव, व्लादीमिर जगोरूइको, यूरी वित्सेनोव्स्की, मिखाईल ग्रिगोर्येव, वसीली बोरीसोव, नीना केजीकोवा, अन्तोनीना द्याचेंको, निकोलाई मिरोनोव, वसीलीत्काचोव, पावेल पलागूता, दिमीत्री ओगुर्त्सोव, विक्टर सुब्बोतिन।

1943-1945-1951
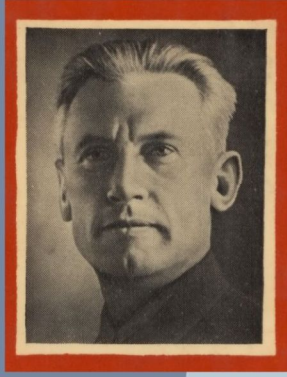
बेहतर ज़िन्दगी का रास्ता
बेहतर किताबों से होकर जाता है!

जनचेतना
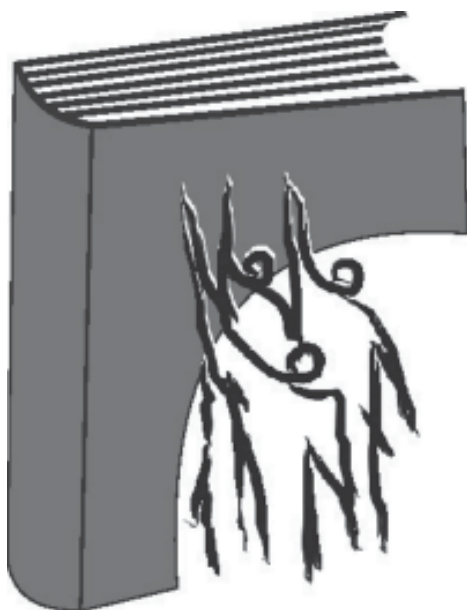
सम्पूर्ण सूचीपत्र
2021

हम हैं सपनों के हरकारे
हम हैं विचारों के डाकिये

आम लोगों के लिए
ज़रूरी हैं वे किताबें
जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिंगारी।
घर-घर तक चिंगारी छिटकाने वाला
तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा
ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन-जन तक पहुँचाना होगा।

तीन दशक से भी पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी-सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी-सी दुकान और फुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी-छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर-घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। अपने प्रदर्शनी वाहनों के माध्यम से भी जनचेतना कई राज्यों के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी, मराठी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला-सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन-संघर्ष-सृजन-प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

आइए, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिए।

सम्पूर्ण सूचीपत्र

परिकल्पना प्रकाशन

उपन्यास

नयी
1. **पहला अध्यापक**/चिंगीज़ आइत्मातोव 50.00
2. **तरुणाई का तराना**/याङ मो ...
3. **तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट ...
4. **माँ**/मक्सिम गोर्की 275.00
5. **वे तीन**/मक्सिम गोर्की 75.00
6. **मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की ...
7. **जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की ...
8. **मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की ...
9. **फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की 55.00
10. **अभागा**/मक्सिम गोर्की 40.00
11. **बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की 25.00
12. **असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई 260.00
13. **तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव (दो खण्डों में) 160.00
14. **गोदान**/प्रेमचन्द ...
15. **निर्मला**/प्रेमचन्द ...
16. **पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र ...
17. **चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र ...
18. **गृहदाह**/शरत्चन्द्र ...
19. **शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र ...
20. **इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का ...
21. **इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव ...
22. **दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव 70.00
23. **वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव 60.00
24. **मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ ग्रीगोरी बकलानोव 40.00
25. **बख़्तरबन्द रेल 14-69**/ व्सेवोलोद इवानोव 30.00
26. **अश्वसेना**/इसाक बाबेल 40.00
27. **लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श 50.00
28. **रिक्शावाला**/लाओ श 65.00
29. **चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन 55.00

30. **एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय 70.00

31. **Mother**/*Maxim Gorky* 250.00

32. **The Song of Youth**/*Yang Mo* ...

कहानियाँ

1. **श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट) 450.00
2. **वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया** (मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ) 60.00

मक्सिम गोर्की

नयी 3. **इटली की कहानियाँ** 150.00

4. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00
5. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 200.00
6. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3) 150.00
7. **हिम्मत न हारना मेरे बच्चो** 15.00
8. **कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी** 10.00

अन्तोन चेख़व

9. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00
10. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 150.00

11. **दो अमर कहानियाँ**/लू शुन ...
12. **श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द 80.00
13. **पाँच कहानियाँ**/पुश्किन ...
14. **तीन कहानियाँ**/गोगोल 30.00
15. **तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच 60.00
16. **वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव 60.00
17. **वसन्तागम**/रओ शि 50.00
18. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00
19. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00
20. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00
21. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00
22. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00
23. **समय के पंख**/ कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...
24. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...
25. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00
26. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00
27. **दोन की कहानियाँ**/ मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00
28. **अब इन्साफ़ होने वाला है** (भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन) (ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/ स. **शकील सिद्दीक़ी** ...
29. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...
30. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/ मदन मोहन 35.00

कविताएँ

नयी 1. **कौन देखता है कौन दिखता**/लाल्टू 150.00
नयी 2. **अनिश्चय के गहरे धुएँ में**/ निर्मला गर्ग 100.00
3. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/ पाब्लो नेरूदा 60.00
4. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/ लैंग्सटन ह्यूज़ 60.00
5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ - बेर्टोल्ट ब्रेष्ट** (मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल) 130.00 (ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित)
6. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो** (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) ...
7. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ** (राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00
8. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/ हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00
9. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00
10. **ओस की बूँदें और लाल गुलाब**/ होसे मारिया सिसों 25.00
11. **इन्तिफ़ादा :** फ़िलस्तीनी कविताएँ/ स. रामकृष्ण पाण्डेय 100.00
12. **लोहू और इस्पात से फूटता गुलाब :** फ़िलस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन) **A Rose Breaking Out of Steel and Blood** (Palestinian Poems) ...
13. **लहू है कि तब भी गाता है**/पाश 125.00
14. **समर तो शेष है...** (इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00
15. **पाठान्तर**/विष्णु खरे 50.00
16. **लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/ विष्णु खरे 60.00
17. **वाचाल दायरों से दूर**/मलय 125.00
18. **दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय 120.00
19. **देखते न देखते**/मलय 65.00
20. **असम्भव की आँच**/मलय 100.00
21. **इच्छा की दूब**/मलय 90.00
22. **देश एक राग है**/भगवत रावत ...
23. **ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ 60.00
24. **बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी 50.00
25. **कविता का जीवन**/असद ज़ैदी 75.00
26. **सामान की तलाश**/असद ज़ैदी 50.00
27. **कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/ शशिप्रकाश 50.00
28. **पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश 75.00
29. **सात भाइयों के बीच चम्पा**/ कात्यायनी 120.00
30. **इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी 120.00
31. **जादू नहीं कविता**/कात्यायनी 150.00
32. **फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी 80.00
33. **राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी 15.00
34. **नगर में बर्बर**/कविता कृष्णपल्लवी 100.00 (अँधेरे समय की कुछ कविताएँ और कुछ क़िस्से)

35. **यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार 50.00
36. **यह जो वक़्त है**/कपिलेश भोज 60.00
37. **बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/नरेश चन्द्रकर 60.00
38. **इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार 90.00
39. **तो**/शैलेय 75.00
40. **पानी है तो फूटेगो**/राजेश सकलानी 100.00
41. **सवालों का कारख़ाना**/सरिता तिवारी (नेपाली कविताएँ) 100.00

नाटक

1. **करवट**/मक्सिम गोर्की 40.00
2. **दुश्मन**/मक्सिम गोर्की 35.00
3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/निकोलाई पोगोदिन 30.00

संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

स्त्री-विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी 130.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यंत्ररत मृतात्माओं के बीच** (साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की 50.00

वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा 25.00

साहित्य–विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय ...
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/बेलिंस्की, हर्ज़ेन, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव 65.00
4. **सृजन-प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की 40.00
5. **मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन 20.00

नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1. **एक पुस्तक माता-पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको ...
2. **मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुख़ोम्लीन्स्की ...

सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका शृंखला

1. **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक कार्यभार**
   कात्यायनी, सत्यम 25.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी 50.00

——::——

राहुल फाउण्डेशन

नौजवानों के लिए विशेष

1. **नौजवानों से दो बातें**/ पीटर क्रोपोटकिन 15.00
2. **क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/ भगतसिंह 15.00
3. **मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह 15.00
4. **बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह 15.00
5. **जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह 15.00
6. **भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह 15.00

क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1. **भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़** स. सत्यम 350.00
2. **शहीदेआज़म की जेल नोटबुक** भगतसिंह 100.00
3. **विचारों की सान पर**/भगतसिंह 50.00

क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1. **बहरों को सुनाने के लिए** एस. इरफ़ान हबीब 160.00 (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम)
2. **क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा 25.00
3. **भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र 25.00
4. **यश की धरोहर**/भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर 50.00
5. **संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा 100.00
6. **शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/ स. डॉ. हरदीप सिंह 40.00

महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है** ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 80.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 100.00

दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 30.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 20.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 20.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 20.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 25.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00
6. **मार्क्सवाद-लेनिनवाद और राष्ट्रीय प्रश्न** (एक बहस)/शिवानी, अभिनव 150.00

बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. **कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा**/लेनिन 20.00
2. **मकड़ा और मक्खी**/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00
3. **ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े**/सेर्गेई रोस्तोवस्की ...
4. **मई दिवस का इतिहास**/ अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
5. **पेरिस कम्यून की अमर कहानी** 20.00
6. **अक्टूबर क्रान्ति की मशाल** 15.00
7. **जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा**/डॉ. दर्शन खेड़ी 10.00
8. **लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस** ...
9. **संशोधनवाद के बारे में** 10.00
10. **शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी**/हावर्ड फ़ास्ट 20.00
11. **मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए** 20.00
12. **मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा** 15.00
13. **चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही** ...
14. **बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ** ...
15. **राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन**/अभिनव 30.00
16. **फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?**/अभिनव 120.00
17. **नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार**/ आलोक रंजन 55.00
18. **कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है** आलोक रंजन/आनन्द सिंह 150.00
19. **तीन कृषि विधेयक और मज़दूर वर्ग का नज़रिया**/अभिनव 40.00

मार्क्सवाद

1. **धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स ...
2. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र** मार्क्स–एंगेल्स 50.00
3. **साहित्य और कला**/मार्क्स–एंगेल्स 150.00
4. **फ़्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स 40.00
5. **फ़्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स 20.00
6. **लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स 35.00
7. **उज़रती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स 15.00
8. **मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/ कार्ल मार्क्स 20.00
9. **गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/ कार्ल मार्क्स 40.00
10. **लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 20.00
11. **जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 30.00
12. **समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स ...
13. **पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन 15.00
14. **एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन ...
15. **जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन 25.00
16. **समाजवाद और युद्ध**/लेनिन 20.00
17. **साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन 30.00
18. **राज्य और क्रान्ति**/लेनिन ...
19. **सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन ...
20. **दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन 15.00
21. **गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन 50.00
22. **मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन 20.00
23. **कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन ...
24. **क्या करें?**/लेनिन ...
25. **"वामपन्थी" कम्युनिज़्म - एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन ...
26. **पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन 15.00
27. **जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन 70.00
28. **धर्म के बारे में**/लेनिन ...
29. **तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन 10.00
30. **मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ** जी. प्लेख़ानोव 30.00
31. **जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव 35.00
32. **लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन 50.00
33. **सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास** 90.00

34. **माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में) ...

35. **कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ ...

36. **सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना**/ माओ त्से-तुङ ...

37. **दर्शन विषयक पाँच निबन्ध**/ माओ त्से-तुङ 70.00

38. **कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़**/माओ त्से-तुङ 15.00

39. **माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण** 50.00

अन्य मार्क्सवादी साहित्य

नयी

1. **दर्शन कोई रहस्य नहीं** 50.00 (जब किसानों ने अपने अध्ययन को व्यवहार में उतारा)
2. **राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** 300.00
3. **ख़ुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र 300.00
4. **राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी) 160.00
5. **पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
6. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/ डी. रियाज़ानोव ... (विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)
7. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/ डेविड गेस्ट ...
8. **इतिहास ने जब करवट बदली**/ विलियम हिण्टन 25.00
9. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/ वी. अदोरात्स्की 50.00
10. **अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन** अल्बर्ट रीस विलियम्स 90.00 (महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)
11. **सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस 50.00

राहुल साहित्य

1. **तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन 40.00
2. **दिमाग़ी ग़ुलामी**/राहुल सांकृत्यायन 40.00
3. **वैज्ञानिक भौतिकवाद**/ राहुल सांकृत्यायन 65.00
4. **राहुल निबन्धावली**/ राहुल सांकृत्यायन 50.00
5. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

परम्परा का स्मरण

1. **चुनी हुई रचनाएँ**/ गणेशशंकर विद्यार्थी 100.00
2. **सलाखों के पीछे से**/ गणेशशंकर विद्यार्थी ...
3. **ईश्वर का बहिष्कार**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
4. **लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी 20.00
5. **धर्म का ढकोसला**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
6. **स्त्रियों की स्वाधीनता** राधामोहन गोकुलजी 30.00

जीवनी और संस्मरण

1. **कार्ल मार्क्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ ज़ेल्डा कोट्स 25.00
2. **फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स 80.00
3. **कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख** 35.00
4. **अदम्य बोल्शेविक नताशा** (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/ एल. काताशेवा 30.00
5. **लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा 70.00
6. **लेनिन विषयक कहानियाँ** 75.00
7. **लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/ लीदिया फ़ोतियेवा ...
8. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

विविध

1. **फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ़्यूचिक ...
2. **पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर 100.00
3. **सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर ...

——::——

Rahul Foundation

MARXIST CLASSICS

KARL MARX

1. **A Contribution to the Critique of Political Economy** …
2. **The Civil War in France** …
3. **The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte** 80.00
4. **Critique of the Gotha Programme** 50.00
5. **Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy** 25.00
6. **The Poverty of Philosophy** 80.00
7. **Wages, Price and Profit** 50.00
8. **Class Struggles in France** 50.00

FREDERICK ENGELS

9. **The Peasant War in Germany** 70.00
10. **Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy** 65.00
11. **On Capital** 80.00
12. **The Origin of the Family, Private Property and the State** 100.00
13. **Socialism: Utopian and Scientific** 60.00
14. **On Marx** 30.00
15. **Principles of Communism** 5.00

MARX and ENGELS

16. **Historical Writings** (Set of 2 Vols.) 700.00
17. **Manifesto of the Communist Party** 50.00
18. **Selected Letters** 75.00

V. I. LENIN

19. **Theory of Agrarian Question** 160.00
20. **The Collapse of the Second International** 25.00
21. **Imperialism, the Highest Stage of Capitalism** 80.00
22. **Materialism and Empirio-Criticism** 150.00
23. **Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution** 55.00
24. **Capitalism and Agriculture** 50.00
25. **A Characterisation of Economic Romanticism** …
26. **On Marx and Engels** 35.00
27. **“Left-Wing” Communism, An Infantile Disorder** 75.00
28. **Party Work in the Masses** 55.00
29. **The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky** 75.00

30. **One Step Forward, Two Steps Back** …
31. **The State and Revolution** 80.00

MARX, ENGELS and LENIN

32. **On the Dictatorship of Proletariat,** ***Questions and Answers*** 50.00
33. **On the Dictatorship of the Proletariat:** ***Selected Expositions*** 10.00

PLEKHANOV

34. **Fundamental Problems of Marxism** …

J. STALIN

35. **Marxism and Problems of Linguistics** 25.00
36. **Anarchism or Socialism?** 60.00
37. **Economic Problems of Socialism in the USSR** …
38. **On Organisation** 15.00
39. **The Foundations of Leninism** 70.00
40. **The Essential Stalin** …
Major Theoretical Writings 1905–52 (Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)

LENIN and STALIN

41. **On the Party** 30.00

MAO TSE-TUNG

42. **Five Essays on Philosophy** 80.00
43. **A Critique of Soviet Economics** 70.00
44. **On Literature and Art** 80.00
45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** …
46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** …

OTHER MARXISM

1. **Political Economy, *Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 375.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 150.00
3. **Reader in Marxist Philosophy**/ *Howard Selsam & Harry Martel* …
4. **Socialism and Ethics**/ *Howard Selsam* …
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)/*Howard Selsam* 100.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics**/*Maurice Cornforth* 70.00

George Thomson

7. **From Marx to Mao Tse-tung** 120.00
8. **Capitalism and After** 100.00
9. **The Human Essence** 80.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions**/*Bob Avakian* …
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00

12. **The Lessons of the Paris Commune**/*Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

13. **Subversive Interventions** (An Anthology**)** *Abhinav Sinha* 500.00

BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) ...
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov 150.00
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* 80.00

PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle Red Papers 7** 175.00
2. **Preface of Class Struggles in the USSR**/*Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** *Shashi Prakash* 40.00

ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University *William Hinton* ...
2. **The Cultural Revolution at Peking University**/*Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** *William Hinton* 50.00
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution** / *Iris Hunter* 50.00

ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1. **Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969
   Joshua S. Horn 125.00
2. **Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China / *Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel* …
3. **Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work) …

ON THE CASTE QUESTION

1. **On the Caste Question:**
   Towards a Marxist Understanding
   Abhinav Sinha 200.00
2. **Caste and Class:**
   A Marxist Viewpoint / Ranganayakamma 60.00

DAYITVABODH REPRINT SERIES

1. **Immortal are the Flames of Proletarian Struggles /** *Deepayan Bose* 30.00
2. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** */ Shashi Prakash* 40.00
3. **Why Maoism? /** *Shashi Prakash* 25.00

AHWAN REPRINT SERIES

1. **Where Should Students and Youth Make a New Beginning?** 20.00
2. **Reservation: Support, Opposition and Our Position** 20.00
3. **On Terrorism : Illusion and Reality /** *Alok Ranjan* 20.00

"The books that help you most are those which make you think the most. The hardest way of learning is that of easy reading; but a great book that comes from a great thinker is a ship of thought, deep freighted with truth and beauty."

– Pablo Neruda

BIGUL REPRINT SERIES

1. **Still Ablaze is the Torch of October Revolution** 30.00
2. **Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00

WOMEN QUESTION

1. **The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin* 100.00
2. **Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation** / *Mary Lou Greenberg* 50.00

MISCELLANEOUS

1. **Probabilities of the Quantum World** / *Daniel Danin* …
2. **An Appeal to the Young** / *Peter Kropotkin* 20.00

अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलनः निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलनः दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद** (चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

जनचेतना इन पुस्तकों की भी मुख्य वितरक है

1. **बच्चों के लिए अर्थशास्त्र (मार्क्स की 'पूँजी' पर आधारित पाठ)**/रंगनायकम्मा 120.00
2. **घरेलू काम और बाहरी काम**/रंगनायकम्मा 40.00
3. **For the Solution of the 'Caste' Question, Buddha is not enough, Ambedkar is not enough either, Marx is a must**/Ranganayakamma 100.00
4. **Economics for Children [Lessons based on Marx's 'Capital']**/Ranganayakamma 150.00
5. **Household Work and Outside Work** 60.00

अनुराग ट्रस्ट

1. **बच्चों के लेनिन** 35.00
2. **Stories About Lenin** 35.00
3. **सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर 25.00
4. **औज़ारों की कहानियाँ** 20.00
5. **गुड़ की डली** /कात्यायनी 20.00
6. **फूल कुण्डलाकार क्यों होते हैं**/सनी 20.00
7. **धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव ...
8. **कज़ाकी**/प्रेमचन्द 35.00
9. **नीला प्याला**/अरकादी गैदार 40.00
10. **गड़रिये की कहानियाँ**/ क़यूम तंगरीकुलीयेव 35.00
11. **चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/ अ. मित्यायेव 35.00
12. **अन्धविश्वासी शेकी टेल**/ सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
13. **चलता-फिरता हैट**/ एन. नोसोव, होल्कर पुक्क 20.00
14. **चालाक लोमड़ी** (लोककथा) 20.00
15. **दियांका-टॉमचिक** 20.00
16. **गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
17. **गुफ़ा मानवों की कहानियाँ**/ मैरी मार्स 20.00
18. **हम सूरज को देख सकते हैं**/ मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच 20.00
19. **मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
20. **नन्हे आर्थर का सूरज**/ हद्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा 20.00
21. **आकाश में मौज-मस्ती**/ चिनुआ अचेबे 20.00
22. **ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन 40.00
23. **एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की 20.00
24. **बहादुर**/अमरकान्त 15.00
25. **बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/ शस्या हर्ष ...
26. **दान्को का जलता हुआ हृदय**/ मक्सिम गोर्की 10.00
27. **नन्हा राजकुमार**/ आतुआन द सैंतेक्ज़ूपेरी 40.00
28. **दादा आर्खिप और ल्योंका**/ मक्सिम गोर्की 30.00
29. **सेमागा कैसे पकड़ा गया**/ मक्सिम गोर्की 15.00
30. **बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की 15.00
31. **वांका**/अन्तोन चेख़व 15.00
32. **तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 15.00
33. **पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर ...
34. **काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 20.00

35. **अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र 15.00
36. **दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर 25.00
37. **रामलीला**/प्रेमचन्द 15.00
38. **दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द 25.00
39. **ईदगाह**/प्रेमचन्द ...
40. **लॉटरी**/प्रेमचन्द 20.00
41. **गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द ...
42. **बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द 20.00
43. **मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द ...
44. **हार की जीत**/सुदर्शन ...
45. **इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव 40.00
46. **चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन 55.00
47. **उल्टा दरख़्त**/कृश्नचन्दर 35.00
48. **हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव 25.00
49. **दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) ...
50. **आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी 30.00
51. **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 35.00
52. **नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन ...
53. **लाखी**/अन्तोन चेख़व 25.00
54. **बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव 12.00
55. **हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक 25.00
56. **घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव 10.00
57. **बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव 20.00
58. **मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन 35.00
59. **पराये घोंसले में**/फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की 20.00
60. **कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय 30.00
61. **मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव 30.00
62. **सदानन्द की छोटी दुनिया**/ सत्यजीत राय 15.00
63. **छत पर फँस गया बिल्ला**/ विताउते जिलिन्सकाइते 35.00
64. **गोलू के कारनामे**/रामबाबू 25.00
65. **दो साहसिक कहानियाँ**/ होल्गार पुक्क 15.00
66. **आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गार पुक्क 20.00
67. **कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गार पुक्क 20.00
68. **रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गार पुक्क 20.00
69. **अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गार पुक्क ...
70. **नये ज़माने की परीकथाएँ**/ होल्गार पुक्क 25.00
71. **किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/ मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन 15.00
72. **पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन) / कमला पाण्डेय 30.00
73. **यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण) / कमला पाण्डेय 100.00
74. **हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ) / कमला पाण्डेय 60.00
75. **कालमन्थन** (उपन्यास) / कमला पाण्डेय 60.00

हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल-साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाएँ
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों-चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि...

ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य-निर्माण के लिए प्रेरित करता है!

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

किताबें नहीं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं
किताबें नहीं,
हम असली इन्सान की तरह
जीने का संकल्प लेकर आये हैं

परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास और **ऐरण प्रकाशन** की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्रोतों - सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और देशी-विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

हमसे पुस्तकें मँगाने के लिए इन बातों का ध्यान रखें

- प्रत्येक पत्र तथा आदेश-पत्र पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) और फ़ोन नम्बर साफ़-साफ़ लिखें।
- मनीऑर्डर के पीछे सन्देश वाले स्थान पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) साफ़-साफ़ ज़रूर लिखें।
- चेक/ड्राफ़्ट 'जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति' (JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI) के नाम से लखनऊ में देय भेजें। बैंक खाते की जानकारी :
  खाता सं. 0762002109003796
  पंजाब नेशनल बैंक, निशातगंज, लखनऊ
  IFSC: PUNB0076200
- पुस्तकों पर डाक-व्यय तथा रेल या ट्रांसपोर्ट का भाड़ा अलग से देय होगा।
- पुस्तक विक्रेताओं तथा वितरकों द्वारा पुस्तकें मँगाने की शर्तों के लिए हमसे पत्र, ईमेल अथवा फ़ोन से सम्पर्क करें।

जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति द्वारा संचालित